शालिग्रामनिघण्टुभूषणम्

Acc. No. 32325

G.K.V.
Hardwar

R. 420.09 R.

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित १५वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५ पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब- दण्ड लगेगा।

32,324

स्टाक प्रमाणीकरण १९८४-१९८५

112654

॥ श्रीः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषणम्।

अर्थात्

बृहन्निघण्टुरत्नाकरान्तर्गतौ

सप्तमाष्टमभागौ ७-८

(वैद्यकोपयुक्तसमस्तपदार्थनामगुणकोशः)

श्रीमाथुरवैश्यवंशोद्भवमुरादाबादस्थकविकुलकुमुद-
कलानिधिश्रीशालिग्रामवैश्यवर्यविरचितौ।

CHECKED
Initial

सोऽयं ग्रंथः

क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालये

112654

संवत् १९८०, [illegible]

अस्य पुनर्मुद्रणाद्यधिकारा राजनियमानुसारेण मुद्रणालया-
ध्यक्षाधीनाः सन्ति।

५३०.०९
EI
३२,३२५

लाला शालिग्रामजी वैश्य.

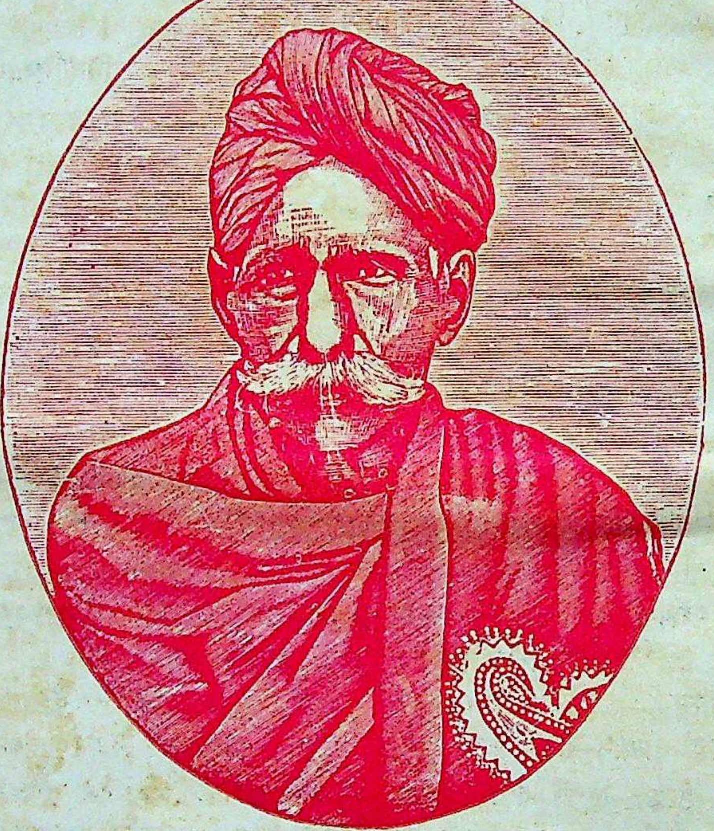

मुरादाबादवास्तव्यः कृष्णात्कृष्णान्तरः ।
आयुर्वेदसमुद्धर्ता शालिग्रामो जयत्ययम् ॥ १ ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

धन्यवादाः ।

भवन्तु भूयांसो भव्यभूतये विश्वकर्त्रे महीयसे परमेश्वराय प्रणामाः। येन भगवता विविधं जगत्सिसृक्षता प्रथमतः सृष्टिक्रमानुसारेण महदादिपृथिव्यन्तो महान्सर्गः स्वात्मनि विकाशमानीयत ।

अस्मिंश्च सर्गे तत्तद्रीतिकनिकायाः सर्वे प्राणिनस्तस्यैव परमेशितुः संकेतमनुवर्तमाना यथावत्कल्पितवृत्तयो विचरन्तीति स्वाभाविकं सृष्टिसौन्दर्यमेतत् । तत्रापि सृष्टिक्रमपराकाष्ठाभूतायां पृथिव्यामस्मदादिजीवानां पुरोक्तपरमेश्वरेणैव पृथिवीनिकायत्वमाकलयता विशेषतः कौतुकेनैव विविधवृक्ष—लता—सस्य—जल—रत्न—धातु—प्रभृतयः पदार्था असृज्यन्त तदनु प्राणिनः । इति सृष्ट्युपक्रमे पुराणेषु शोश्रूयते सर्वतः। अथ च प्रकृतं तत्र विमृश्यते ।

इह पृथिव्यां जन्यमानानां नानाजीवानां निजपारंपराकीनन्तजन्मोपार्जितविविधदुष्कृतपरिणतानेकव्याधिपरिपीडितकलेवराणां परित्राणैकार्थसमुद्भवानां नानाविधवृक्ष—लता—सस्य—जल—रत्न—धातु—प्रभृतीनां पदार्थानां यथोचितोपयोगार्थं परमकारुणिकैरात्रेय—दस्र—शक्र—धन्वंतरि—दिवोदास—सुश्रुत—चरक—वाग्भट—प्रभृतिभिर्महानुभावैरायुर्वेदशास्त्रं स्वस्वानुभवानुगमानुसारेणोपबृंहितमासीत् । यतः परावरदृशां महर्षीणां बुद्धिवैभवेन प्रसिद्धिं गतेभ्य आयुर्वेदग्रन्थेभ्य औषधीनां गुणदोषान्विज्ञाय वैद्यजना रोगिणां रोगान्यथोचितौषधप्रयोगेण निर्मूल्योपकुर्वन्ति समन्ततः । तथापि तत्तन्महर्षिस्वस्वबुद्धिविनिर्मितानामनेकग्रन्थानामध्ययनाध्यापने कालातिक्रममन्वीक्षमाणैः परमकारुणिकैः श्रीमन्मुरादाबादनगरीवासिभिः श्रीमन्माथुरवैश्यवंशावतंसश्रीलालाशालिग्रामसुगृहीतनामधेयैरस्मत्परममित्रैः केवलं परोपकाराय निजमतिमन्थानेनायुर्वेदमहोदधिं विनिर्मथ्य सकलौषधिगुणगणप्रतिमण्डितोऽयं "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" नामा नवीनो ग्रन्थो विनिर्मितः ।

अस्मिन् "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" ग्रन्थे प्रोक्तमहाशयैर्विविधदेशभाषाप्रचरिततत्तदौषधीनां नामानि—तत्तदौषधीनां गुणाश्च सविस्तरं प्रत्यपाद्यन्त । येन च कृत्वा प्रायश्चैष ग्रन्थः—संस्कृत—हिन्दी—वांगी—महाराष्ट्री—गौर्जरी—कार्णाटकी—द्राविडी-तामिली—औत्कली—इंग्लिश्—लैटिन्—फारसी—आरवी—भाषानिविष्टौषधीनामतया सर्वतः संचरतां सर्वदेशीयानां जनानां परमोपयोगीति को नानुमन्येतनाम सहृदयः सारासारविवेकनिपुणो जनः ।

अयं ग्रन्थश्च तैरुदारबुद्ध्या सर्वलोकोपकृत्यर्थं प्रकाशनार्थं मत्समीपे प्राहीयत । स च मया तेभ्यः सादरं स्वीकृत्य स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशमानीयत । तस्येयं तृतीयावृत्तिर्भूयसा परिश्रमेण सम्यक्परिशोध्य विदुषां मुदे पुनर्मुद्रिता ।

अत एतादृशग्रन्थनिर्माणपरिश्रमपरिक्लिष्टबुद्धिवैभवानां नानाविधग्रन्थनिर्माणजन्यातिनिर्मलयशोभासुरीकृतविबुधजनमनसां श्रीमतां श्रीलालाशालिग्रामनामधेयानां यावन्तो धन्यवादा देयास्ते सर्वथा रवेर्दीपदानमिवेति मन्ये ।

विबुधगणप्रेमाभिलाषी—

क्षेमराज—श्रीकृष्णदासः

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्षः—मुंबई.

भूमिका ।

देखो इस असारसंसारमें उस निराकार निर्विकार परब्रह्म परमेश्वरने साकार रूप धारण कर चार वेद, षट् शास्त्र और अष्टादश पुराण अपने हृदयसे प्रगट किये, उनमेंसे अथर्वणवेदका सार लेकर अत्यन्त अनुपम और अद्वितीय, प्राणियोंके कष्टका हरनेवाला और दीर्घायु करनेवाला आयुर्वेद निकाला, जिसमें एक लक्ष श्लोक और सहस्रअध्यायमें नियत करके आयुर्वेदसंहिता नाम रक्खा और प्रजाके रचनेसे पहिले ब्रह्माके हृदयमें उसका प्रकाश किया ब्रह्माने उसके आठ भाग किये, फिरभी कठिन समझ कर कोष और निघण्टुको मुख्य रक्खा, और सम्पूर्ण कर्म्मोंमें चतुर बुद्धिविशारद और अग्रगामी जानकर दक्षप्रजापतिको सर्वांगसहित आयुर्वेदका उपदेश किया, दक्षने स्वर्गीय वैद्य, मार्तण्डके समान प्रचण्ड शक्तिवाले महाविद्वान् देवताओंमें श्रेष्ठ अश्विनीकुमारोंको आयुर्वेदसंहिता विस्तारपूर्वक पढाई, जिसके प्रभावसे अश्विनीकुमार तैंतीसकोटि देवताओंके पूर्ण वैद्य हुए, ब्रह्माका मस्तक जोडा, देवताओंको अंग जोड व्रणरहित किया, इन्द्रकी भुजाका कष्ट हरा, चन्द्रमाको सुखी करा, इन्द्र अश्विनीकुमारोंके इन अद्भुत कर्मोंको देख उत्साहपूर्वक आयुर्वेद पढनेके लिये अश्विनीकुमारोंसे प्रार्थना करनेलगा जब सत्यसिन्धु इन्द्रने इसप्रकार प्रार्थना की तब वैद्यशिरोमणि अश्विनीकुमारोंने जिसप्रकार आप पढाथा उसीप्रकार आयुर्वेदसंहिता विस्तारसहित देवराज इन्द्रको पढाई, इन्द्रने ऋषियोंमें प्रधान आत्रेयको पढाया उस समय लोग उत्तमरीतिसे आहार विहार करतेथे, इसलिये उनको कोई रोग नहीं होताथा, उनकी आयुभी पूर्ण होतीथी, और शरीरमें बलभी अधिक होताथा, पश्चात् कुछ कालोपरान्त समयके हेरफेरसे मनुष्योंकी बुद्धिभी विपरीत हो गई, उससे रोग और क्लेशादिक अधिक बढनेलगे, उस समय करुणानिधान परोपकारी बडे बडे ऋषि मनुष्योंको रोगोंसे दुःखी देख मनमें अत्यन्त दुःखी हो हिमालयपर्वतकी ओरको चले, वहां दैवयोगसे बहुतसे ऋषिलोग एकत्र थे, भारद्वाज, अंगिरा, मरीचि, भृगु, भार्गव, पुलस्त्य, अगस्त्य, असित, वसिष्ठ, पराशर, हारीत, गौतम, सांख्य, मैत्रेय, च्यवन, जमदग्नि, गर्ग, काश्यप, कश्यप, नारद, मार्कण्डेय,

कपिञ्जल, वामदेव, कौण्डिन्य, शाण्डिल्य, शाकुनेय, शौनक, आश्वलायन, सांकृत्य, विश्वामित्र, परीक्षक, देवल, गालव, धौम्य, काम्य, कात्यायन, कांकायन, बैजवाप, कुशिक, बादरायण, हिरण्याक्ष, लौगाक्षी, शरलोमा, गोभिल, वैखानस और वालखिल्यादिक अनेक महर्षिलोग थे, वह ब्रह्मऋषि, ब्रह्मज्ञानी, यमनियमके समुद्र और होमाग्निके समान प्रकाशमान, तपस्तेजःपुंज, आनन्दपूर्वक सब मुनिपुंगव यह चर्चा कर रहेथे कि मनुष्यका धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चतुर्वर्गके साधनका मूल यह शरीर है यदि यह शरीर अच्छाहै तो यह चतुर्वर्ग साधसक्ताहै और जो यह शरीरही रोगग्रसित रहै तो कदापि नहीं साधसक्ता।

रोगाः कार्श्यकरा बलक्षयकरा देहस्य चेष्टाहराः।
दृष्ट्यादीन्द्रियशक्तिसंक्षयकराः सर्वाङ्गपीडाकराः॥
धर्मार्थाखिलकाममुक्तिषु महाविघ्नस्वरूपा बलात्।
प्राणानाशु हरन्तिसन्ति यदि ते सौख्यंकुतः प्राणिनाम्॥
तत्तेषां प्रशमाय कश्चन विधिश्चिन्त्यो भवद्भिर्बुधैः।
योग्यैरित्यभिधाय संसदि भरद्वाजं मुनिं तेऽब्रुवन्॥

अर्थ-रोग मनुष्योंके देहको दुर्बल करतेहैं, बलका क्षय करतेहैं, शरीरकी चेष्टाको विनाश करते हैं, नेत्रादिक इन्द्रियोंकी शक्तिको हरण करतेहैं, सब अंगोंमें पीडाको उत्पन्न करतेहैं, धर्म, अर्थ, अखिल काम और मोक्षके लिये तो महाविघ्नकारी है; अधिक बढनेपर बलात्कार शीघ्रही प्राणोंको हरलेतेहैं जब इसप्रकारके रोग शरीरमें सदा विद्यमान हैं तो फिर प्राणियोंके प्राणोंकी कुशल कहां! इसकारण तुम सब रोगोंके प्रयत्नमें तत्पर और पूर्ण विद्वान् एकत्रित हुए हो तो रोगोंके दूर करनेका कोई उपाय विचारो। इसप्रकार भारद्वाजके वचनोंको सुनकर सब ऋषि अत्यन्त हर्षित होकर उच्चस्वरसे जयजय शब्दकर, तालध्वनि करने लगे और भारद्वाजजीसे बोले कि, हे भगवन्! आपही इस कार्य करनेके योग्यहैं, इसकारण तुम परिश्रम करके इन्द्रके पास जाकर प्रार्थना करो, और विधिपूर्वक आयुर्वेदको पढो, जिससे प्रजाके लोग रोगरहितहों, भयसे छूटें इसप्रकार जब सब मुनियोंने विनययुक्त प्रार्थना की, तब उनकी आज्ञानुसार मुनिपुङ्गव भारद्वाज इन्द्रलोकको गये, इन्द्रको आशीर्वाद दे स्तुति करी, और सब ऋषि-

योंके वचन देवराजसे कहे, फिर कहा हे इन्द्र ! सब प्राणियोंके प्राण रहनेके लिये महा भयानक रोग संसारमें उत्पन्न हुयेहैं, उनके दूर होनेका कोई उपाय बताओ, इन्द्रने परम चतुर भारद्वाजको आयुर्वेद पढाया, जिसके प्रभावसे रोगरहित हो प्राणी एक सहस्रवर्ष जीयें, भारद्वाजने थोडेही दिनमें आयुर्वेद पढ उसके आशयको जानलिया, इसी आयुर्वेदके प्रभावसे भारद्वाज मुनि रोगोंसे छूट दीर्घायु हुए, और अनेक मुनियोंको रोगरहित कर पूर्णायु किया, पश्चात आत्रेय मुनिनेभी इन्द्रहीसे आयुर्वेद पढा और अपने नामकी आत्रेय संहिता रच अग्निवेश, भेड, जातूकर्ण्य, पराशर, क्षीरपाणि, और हारीतको पढाई, इन छहोंने अपने अपने नामकी संहिता निर्माण कीं. और अग्निवेशादिक छहों शिष्योंने अत्रिनन्दनको अपनी अपनी संहिता सुनाई, और आत्रेयने अत्यन्त आनन्दित होकर आशीर्वाद दिया, वह छहों संहिता आजतक संसारमें प्रसिद्ध हैं, और अत्यन्त उपयोगी हैं परन्तु इनमें सबसे प्रधान अग्निवेशकृत तंत्र उत्कृष्टतासे सबके मनको आकर्षण करनेवाला हुआ, किसी समय चरकमुनिने उन सब तंत्रोंको एकत्र करके संस्कार किया और अपने नामसे नवीन संहिता रचकर प्रचार की, जो आजतक चरकके नामसे विख्यातहै, अग्निवेशकृत तंत्र जो कि चरकका संस्कार किया हुआ है उसमें शल्यादिक अष्टांगमयी नवीन संहिता आठ भागोंमें विभाग कीगई, उस संहितामें खनिज, उद्भिज्ज, प्राणिवाची द्रव्योंको तीनभागोंमें विभाग करके, फिर प्राणियोंके जरायुजादिकोंको चारभागोंमें विभाग करके उद्भिज्जोंको वनस्पति वृक्षवीरुध औषधियोंको चारभागोंमें विभाग किया, फिर उन उद्भिद द्रव्योंको जीवनादिक पंचांशगणोंमें विभाग किया, इसकी भाषा प्राकृत नहीं है, प्राचीन होनेसे विषयरचनाप्रणालीशोधन नहीं की गई है, इसलिये अत्यन्त गडबड है, इसके सिद्धकल्प दो स्थान सत्रह अध्यायोंसे संयोजना करके पञ्चनदपुरवासी दृढबलने सम्पूर्ण किया इस संहिताके सिद्धस्थानकी पहिली समाप्तिमें लिखा है:-

"अखण्डार्थं दृढबलो जातः पञ्चनदे पुरे।
कृत्वा बहुभ्यस्तंत्रेभ्यो विशेषाच्च बलोच्चयम्॥
सप्तदशौषधाध्यायैः सिद्धकल्पैरपूरयत्।"

अर्थ-इस संहिताके सम्पूर्ण करनेके लिये दृढबल पञ्चनदपुरमें उत्पन्न हुआ उसने अनेक ग्रन्थोंका अनुसन्धान करके सत्रह अध्या-

योंमें सिद्धकल्पको पूर्ण किया। सुश्रुतसंहिता–इसीप्रकार सुश्रुतसंहिता शल्यनेत्रके उपदेशसे प्रधान अष्टांगमयी धन्वन्तरिसम्प्रदायकी पहिली और चरकसंहितासे पिछली है इसमें काशीराजरूप धारणकिये हुए भगवान् धन्वन्तरि वक्ता, और विश्वामित्र महर्षिपुत्रसुश्रुत श्रोता, और परमरासायनिक सिद्धनागार्जुन संस्कारकर्ता हैं, सूत्रादिपञ्चस्थानात्मक पूर्व तंत्रमें चिकित्सा किये हुए रोग, रसायन, वाजीकरणतंत्रोंके साथ चिकित्सक शल्यतंत्रको प्रधानतासे वर्णन कियाहै। कल्पमें चिकित्सक विषतंत्रको चिकित्सा स्थानमें रसायन, वाजीकरणतंत्र वर्णन किये हैं, उत्तरतंत्रमें शालाक्यकायचिकित्सा; कौमार, भृत्य, भूतविद्या वर्णन की है।

एक समय सुश्रुताचार्य पिता विश्वामित्रकी आज्ञा पाकर अपने सहगामी मुनिकुमारोंके साथ काशीको गये, जहां वानप्रस्थ आश्रममें स्थित देवताओंमें श्रेष्ठ, अनेक मुनि जिनकीस्तुतिकररहे, उन सर्वानन्ददायक धन्वतंरि काशीनरेश दिवोदासका विनयपूर्वक सुश्रुतादिक सब ऋषिपुत्रोंने नमस्कार किया, अनन्तकीर्तिस्वरूपद्रव्यवाल दिवोदास उन ऋषिपुत्रोंको समीप खडा देखकर बोले कि, हे ऋषियो! तुम कुशलपूर्वक हो? किसकारण आगमन हुआ, तब उन सब ऋषिकुमारोंने सुश्रुतद्वारा उत्तर दिया, कि हे भगवन्! रोगोंसे भयभीत हाहाकार करते और मरतेहुए प्राणियोंको देखकर हमारेचित्तमें अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ है, इसलिये आपके पास रोगोंको दूर करनेका उपाय पूछनेको हम आये हैं, सो आप कृपा करके हम सबको आयुर्वेद अध्ययन कराओ. तब काशीनरेश सुश्रुतादि ऋषिपुत्रोंके वचन स्वीकार कर उनको आयुर्वेद पढाना आरम्भ किया, उस व्याख्याको वह मुनिनन्दन परमानन्दपूर्वक पढने लगे अपने कार्यको सिद्ध करके चलते समय काशीराजको आशीर्वाद दिया कि, जयहो, जयहो आपकी सदा जयहो यह कहसब अपने अपने आश्रमपर आये और उन मुनिपुत्रादिकोंमें प्रथम सुश्रुतने अपना ऐसा स्फुट तंत्र रचा, जोकि एकसौ बीस १२० अध्यायमें सम्पूर्ण हुआ; और ऋषिपुत्रोंनेभी पृथक् पृथक् अपने तंत्र रचे, सुश्रुतके रचे हुए तंत्रको बहुत लोगोंने सुना, इसीकारण उसका नाम सुश्रुत संसारमें प्रसिद्ध हुआ, परन्तु हमको यह बडा भारी सन्देहहै कि सुश्रुत नामके दो आचार्य्य हुए हैं एक सुश्रुत, दूसरा वृद्धसुश्रुत, इनमें यह निश्चय नहीं होसक्ता कि प्रसिद्ध सुश्रुतसंहिताका कर्त्ता कौनहै? जब बौद्धोंने प्रबल होकर वाद विवादसे पण्डितोंका तिरस्कार करके वैदिक क्रियाका लोप

करनेका प्रारम्भ किया,उस बौद्धसंग्राम समयमेंही (विक्रमके संवत्से एक हजार १००० वर्ष पहिले) संसारमें प्रसिद्ध परम रासायनिक बौद्धपालक सिद्धनागार्ज्जुन सुश्रुतनाम तंत्रको संस्कारमुखसे सूत्रादिपञ्चकस्थानोंमें अर्थवशसे विभाग करके विस्तारपूर्वक स्पष्ट व्याख्या कर शेष उत्तर तंत्रमें शेष अर्थोंको प्रगट करके एक नवीन संहिताको रचा। वह सुश्रुतसंहिता संसारमें प्रचलित है, यह उल्वणाचार्य्यका मतहै. इसकी भाषा प्राचीन है,रचनारीति यथाभागानुकूलहै, इसमें शरीरास्थिमालाकी प्रगटता, रोगोंका निश्चय; और व्रणचिकित्सादिके ज्ञानका वर्णन है, इस लिये श्रेष्ठकोटिकी अधिरूढताका अतिनिर्विकल्प स्वीकार करना चाहिये इसका मूढगर्भ अश्मरी प्रकरण अत्यन्त प्रशंसा करने योग्य है,अधिक क्या ? बडे बडे विदेशीय वैद्योंने मूढ गर्भादिक प्रकरणकी समालोचना करके विस्मयपूर्वक प्रशंसा की है.

वाग्भटसंहिता-कुछ कालोपरान्त चिकित्सकोंमें परमोत्तम धन्वन्तारिके समान भूमण्डलमें वाग्भट भिषक् उत्पन्न हुआ, यह महाराजाधिपति सत्यसिन्धु परमज्ञानी राजा युधिष्ठिर पाण्डुकुलभूषणकी सभामें सर्व रोगनाशक महाश्रेष्ठ एक वैद्य था, उसने जगत्के उपकारार्थ आयुर्वेदके अनेक ग्रन्थ निर्माण किये, उनमें अष्टांगहृदयसंहिता सब संसारमें प्रसिद्ध हुई और वही वाग्भटाभिधानसे भूमण्डलमें सूर्यके समान प्रकाशमान है। चरकसुश्रुतादि अनेक ग्रन्थोंको मथकर संसारके हितार्थ बडे प्रयत्नसे इस सुखसञ्चारिणी संहिताका संग्रह किया। इस संहितामें और इसकी औषधियोंमें उन्होंने ऐसी अपूर्व चातुर्य्यता प्रगट की है, वह और ग्रन्थोंमें नहीं दिखाई देती, जो बात चरकसुश्रुतमें बीस पचीस श्लोकोंसे वर्णन की है वह बात इस संहिताके तीनही चार श्लोकोंमें दर्शा दीहै, सत्य तो यह है कि, इन्होंने सब संसारके उपकारके लिये आयुर्वेदका उद्धार किया इसीलिये इस वाग्भटसंहिताकी बृहत्त्रयीमें वैद्योंने गणना कर रक्खी है। यथा-

सुश्रुतो न श्रुतो येन वाग्भटो नैव वाग्भटः।
नाधीतश्चरको येन स वद्यो यमकिङ्करः॥

अर्थ-जिस वैद्यने सुश्रुत सुना नहीं, वाग्भट कण्ठाग्र किया नहीं और चरक पढा नहीं वह वैद्य नहीं है, वह साक्षात् यमका दूत है। इसीलिये बृहत्त्रयीपाठक वैद्योंका अत्यन्त गौरव और सत्कार होताहै; और जो अठारह १८ संहिता हैं वह औरही और युगोंके

निमित्त हैं परन्तु अष्टांगहृदयसंहिता केवल कलियुगहीके लिये निर्मित हुईहै । यथा–

अत्रिः कृतयुगे चैव त्रेतायां चरको मतः ।
द्वापरे सुश्रुतः प्रोक्तः कलौ वाग्भटसंहिता ॥

अर्थ–सत्ययुगके लिये अत्रिसंहिता रचीगई थी, त्रेताके लिये चरकसंहिता निर्माण कीगई, द्वापरके लिये सुश्रुत; और कलियुगके लिये वाग्भटसंहिता बनीहै । और जो किसीके चित्तमें संदेह हो कि, वह अठारह संहिता कौनसी हैं जो और और युगोंके लिये निर्माण की गई हैं,इसलिये उनके नामभी लिखे देताहूं वह अठारह संहिताओंके नाम हारीतसंहितामें इसप्रकार हैं:–

हारीतसुश्रुतपराशरभोजभेडभृग्वग्निवेशचरकाश्च्यवनोऽप्यगस्तिः । वाराहवाग्भटनरायणनारसिंहा आत्रेयकात्रिशशिनः शिवभास्करौ च॥सन्त्यष्टादशशिक्षा धन्वन्तरेर्वाग्भटं बहिष्कृत्य ॥

अर्थ–हारीत, सुश्रुत, पराशर, भोज, भेड, भृगु, अग्निवेश, चरक, च्यवन, अगस्ति, वाराह, वाग्भट, नारायण, नारसिंह, आत्रेय, अत्रि, चन्द्रमा, शिव और सूर्य इनमेंसे वाग्भटको छोडकर अठारह संहिता आयुर्वेदकी वर्णन की हैं । इस संहिताका जिसप्रकार प्रचार हुआ सो विस्तारसहित लिखताहूं, अत्रिसंहिता पञ्चनदादि प्रदेशमें प्रसिद्धहै, अत्रिमुनिकृत चरकादिकके समान प्राचीनहै, यह संहिता न बहुत संक्षिप्त है न बहुत विस्तृत है, यही आदिमें प्रामाणिक और स्मृतिसंहिताकार थी, वाग्भटसंहिताका वृत्तान्त वाग्भटसंहितामें इसप्रकार लिखा है कि, वाग्भटसंहितादि आत्रेयसंप्रदाय और धन्वन्तरिसम्प्रदायके अनेक चिकित्सातंत्रोंसे आदिमेंही स्वयंसंगृहीत अष्टांगहृदयसंग्रहसे लेकर वाग्भटाचार्यने रचीहै । जैसा उसमें लिखाहै–

अष्टांगवैद्यकमहोदधिमन्थनेन
योऽष्टांगसंग्रहमहामृतराशिराप्तः ।
तस्मादनल्पफलमल्पसमुद्यमानां
प्रीत्यर्थमेतदुदितं पृथगेव तन्त्रम् ॥ वा. उ. ४० अ

अर्थ–अष्टांगवैद्यक समुद्रके मथनेसे जो अष्टांगसंग्रह बडे अमृतकी राशि प्राप्त हुई, उससे अल्प उद्यम करनेवालोंके लिये यह अन-

ल्प फल तंत्र पृथक् ही कहा है, इसीप्रकार यह अलकारादि साहित अपने नामसे अनेक शास्त्रोंको रचता हुआ ऐसासुना जाताहै कि, यह आदिमें ब्राह्मणधर्मावलम्बी निरन्तर वैदिकाचारका अनुष्ठान करताथा,उसके उपरान्त किसीसमय इसने बौद्धधर्म्मके तत्वको जाननेके लिये किसी बौद्धाचार्य्यको गुरु किया,इसप्रकार बहुतकालतक निश्चलचित्त होकर उसके अनुसार वर्त्ततारहा और उस धर्मके परम रहस्यको प्राप्तकरके उसमें बडी श्रद्धा करतारहा, फिर वह अपने गुरुकेपास आया उस धर्म्मके अनुरागको धारणकरता हुआ उसके गुरुने देखकर उसे उसी धर्म्मके अवलम्बनके लिये उपदेश दिया,इसप्रकार दक्षिणके पण्डितोंका कथनहै. और बहुतलोग इस वाग्भटको अमरसिंहकृत कहतेहैं, परन्तु काश्मीरराजतरंगिणीकी समालोचनासे यही विदित होताहै कि, सिंहगुप्तसुत पर बौद्ध वाग्भटाचार्य्य काश्मीर नरपति जयसिंहके प्रजापालन समयमें (संवत् विक्रम१२५३ शके११९८)में वर्त्तमान था,तथा विजयनगराधिपति बुक्कराजके समयमें माधवने अपने ग्रन्थमें वाग्भटका उद्धार कियाहै इसकोभी९०० नौसौ वर्ष बीते, इसके उपरान्त उसी समयमें वाग्भटने अपनी संहिता रची. बहुतसे वैद्योंका यह मत है, कोई वैद्यलोग यह कहतेहैं वाग्भटसंहिता बहुत प्राचीनहै. चरक,सुश्रुतसे पीछेकी रची अनुमान कीजातीहै, उसमें सब प्रकारकी चिकित्साओंके अंग समान हैं, इसके मुष्टियोग रोगलक्षणादिक और इसकीभाषाप्रणाली अत्यन्तशुद्ध और परम प्रशंसनीयहै, वाग्भटका जन्म लोग कईप्रकारसे कहते हैं, कोई उसको धन्वन्तरि बतलातेहैं, कोई उसको समुद्रके मथनेसे उत्पन्न हुआ एक रत्न कहतेहैं, कोई उसको कलियुगका प्रधान बुद्ध गोतमऋषि कहतेहैं, अपने रचेहुए अष्टांगहृदयसंग्रहमें उसने सिन्धुदेशमें अपना उत्पन्न होना लिखाहै । जैसे कि-

"भिषग्वरोवाग्भटइत्यभून्मेपितामहोनामधरोऽस्मियस्य ।
सुतोऽभवत्तस्यचसिंहगुप्तस्तस्याप्यहंसिन्धुषुजातजन्मा ॥"

अर्थ-मेरे पितामह वाग्भट वैद्यवर हुए जिनका मैं नाम धारण कररहाहूं (मैंनेभी वही वाग्भट नाम अपना रक्खाहै) उनके पुत्र सिंहगुप्त हुए और मैंभी उसी अनुपम विद्यालयसिन्धुमें उत्पन्न हुआ.

अरुणदत्त वैद्यवर मृगांकदत्तका पुत्र वैद्यवंशमें उत्पन्नहुआ, उसने सुप्रसिद्धा वाग्भटसंहिताकी सर्वाङ्गसुन्दरी नाम टीका निर्माण की।

हेमाद्रि बडा प्रसिद्ध ग्रन्थकारहै,उसने वाग्भटसंहिताके सूत्रस्या-

नकी आयुर्वेदरसायनटीका रची, चतुर्वर्गचिन्तामणिनामक स्मृतिसंग्रहभी उसीका कहते हैं।

भावप्रकाश-वैद्यवर लटकमिश्रके पुत्र श्रीमान् भावमिश्रकृतहै, यह बहुत विस्तारयुक्त, रोगोंका निश्चय करनेवाला, चिकित्साका संग्रह है, अनेक प्राचीन संहितासंग्रहकोष, निघण्टुकी समालोचना और अपनी कल्पनासे रोगोंके लक्षण, चिकित्सा, पथ्य, द्रव्यगुण, रसवीर्यविपाक, जारण, मारण, शोधनादिकोंका संग्रह करके लिखाहै, इन भावमिश्रने वैदेशिक पूर्टगीज व ईरानसे लायेहुए उपदंशरोग विशेष अन्तर लक्षण सम्पन्न फिरंग रोगको अपने ग्रंथमें चिकित्सासहित वर्णन कियाहै और नवीन चोबचीनी, छुहारे इत्यादि बहुत वैदेशिक द्रव्य गुणसहित उसमें मिलाये हैं उसमें उपदंशनाशक चोपचीनी मूल चीनदेशसे और भारतखण्डके गोवा प्रदेशमें तीन सौ३०० वर्षसे अधिक पहिले संवत् १५९६ में लाया, यह बुइलसन् साहेबका मत है।

भावमिश्रका प्रादुर्भाव उस कालमें वा उसके उपरान्त हुआ, इस भावप्रकाशसंग्रहको वैद्यलोग सब देशोंमें अधिक मानतेहैं, और इसीको आयुर्वेदका मुख्य ग्रन्थ जानतेहैं, इसीसे यह भावप्रकाश सब संसारमें प्रसिद्ध है।

माधवनिदान-माधवकरका रचाहुआहै, इसमें माधवकरने अनेक प्रकारके प्राचीन तंत्र, वैद्यकसंहितादिकोंसे, कहीं आदर्शके उद्धारसे, कहीं अपनी रचीहुई भाषासे, कहीं सारसंग्रहसे और कहीं पर्य्यायके अनुक्रमसे संग्रह करके अनेक रोगोंके निदानका लक्षण लिखकर भारतवासी चिकित्सकोंके पढनेके लिये बडा उपकार सिद्ध कियाहै यह ग्रन्थ माधवाचार्य्यकृत है, ऐसा बहुत विद्वानोंको मतहै. परंतु वह ठीक नहीं जानपडता, क्योंकि माधवकर ऐसी उपाधिवाला अत्यन्त प्राचीन वैद्यजातीय ग्रन्थकार था, संसारमें ऐसी प्रसिद्धि है, दूसरा चक्रपाणिदत्तने माधवनिदानके रोगोंकी अनुक्रमणिकाके अनुसार अपने ग्रन्थको निर्माणकिया यह माधवकर चक्रपाणिसे पहिले था ऐसा ज्ञान होताहै, और यह चक्रपाणि बारहसौ १२०० संवतमें गौड राज्यकी पाठशालाके अध्यक्षहोनेको अपने ग्रन्थमें लिखताहै. और यहभी है कि माधवकर अपने ग्रन्थके उपसंहारमें जो वृद्ध भोज गोविन्द पातञ्जलि वृत्तिकारके समयमें सातवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, उसके रचेहुए सूक्तिकरुणामृत नामक ग्रन्थके मुक्तावलिकार गोविन्दसे पीछे गुरुको स्वीकार करके अपने आपको उसके समान समयानुसार, ना उसके पीछे इस ग्रन्थकारको अनुपम

प्रतिपादन करताहै, उसका निदान आठवीं शताब्दीमें अरबी भाषामें अनुवाद हुआ और "एदान" नाम रक्खा, यह ग्रन्थ अरबी भाषामें प्रसिद्धहै यह पहिले तत्त्वविद् उइल्सनसाहेबका मत है।

व्याख्यामधुकोष-माधवनिदानकी टीका-वैद्यवर श्रीविजयरक्षित श्रीकण्ठ दत्तने रचीहै (श्रीकण्ठवृन्दकृत सिद्धयोगका टीकाकारभीहै, वह टीका कुसुमावली नामसे प्रसिद्धहै) इसकी भाषा पं० दत्तराम चौबेने अच्छी कीहै ।

शार्ङ्गधरसंग्रह-प्रसिद्ध शार्ङ्गधरपद्धतिकार शार्ङ्गधरवैद्यकृतहै, यह ग्रन्थ न अति संक्षिप्त न अति विस्तृत है, हमारे देशके विद्यार्थी लोग इस ग्रंथको अधिक पढतेहैं, यह ग्रन्थकार विश्वप्रकाशकृत महेश्वरसे पीछे हुआ, इसकी प्रसिद्ध संस्कृतव्याख्या आढमल्लीहै. और उसीके अनुसार इसका भाषानुवाद पण्डित दत्तराम चौबेने कियाहै ।

रसेन्द्रसारसंग्रह-प्रामाणिक रसग्रंथ गोपालभट्टने रचाहै, इसमें रसोंका जारण मारण शोधनादिसहित रोगोंके सम्पूर्ण प्रकारके रसघटित योग संग्रह कियेहैं, इस ग्रंथको देखकर हमारे देशके अनेक वैद्य अपने अपने ग्रंथोंमें संग्रह करतेहैं यह ग्रंथकार विक्रमकी तेरहवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, इसकी भाषाटीका मुरादाबादनिवासी शंकरलाल जैनने कीहै ।

रसेन्द्रचिन्तामणि-राधाविनोदकाव्यके रचयिता रामचन्द्र कविवरका निर्माण किया हुआ यह रसग्रन्थ है, परन्तु यह ग्रन्थ सब रसग्रन्थोंसे प्राचीन है, ऐसा वैद्योंके मुखसे सुननेमें आयाहै, इस ग्रन्थमें रसोंका जारण मारणादिक विधिपूर्वक वर्णन किया है, रसपारिजात ग्रन्थभी रामचन्द्रकाही रचा हुआ है । और एक रसेन्द्रचिंतामणी ढुण्ढनाथकृतभी है, उसमें भी रसोंके बनानेकी क्रिया अच्छी रीतिसे लिखी है, और प्राचीन भी है, परन्तु इस देशमें उसका प्रचार नहीं, वङ्गदेशमें अधिक प्रचार है ।

चक्रदत्तसंग्रह-चक्रपाणिदत्तविरचित रोगोंकी चिकित्साका संग्रह है, इसमें माधवकरप्रणीत रोगोंका निदान, ग्रन्थानुसार रोगोंका अनुक्रम और ज्वरादिक रोगोंकी चिकित्सा कही है, उसमें रोगोंके तत्प्रणीत सिद्ध योग हैं, वह परम दृष्ट फल हैं, इसप्रकार यह संग्रह सर्वत्र सत्कारपूर्वक ग्रहण कियाहुआ संसारके हितको सिद्ध करनेवाला है, चक्रपाणि वीरभूमि देशवासी प्रसिद्ध रोध्रबलनाम दत्तकुलमें उत्पन्न नारायणदत्तका पुत्र, और नरदत्तका शिष्यथा वह विद्याकुलसम्पन्न. वैद्यभानुदत्तके अन्तरंगभावसे उसके पीछे गौडराज्यकी

पाकशालाका अध्यक्ष हुआ, उसका प्रादुर्भाव सातसौ पचास ७५० वर्षका अनुमान जान पडता है, यह भी सुननेमें आया कि, उसकी जन्मभूमिमें उसका स्थापन किया हुआ चक्रपाणीश्वर शिवालय है, इस कार्य्यसे उसका धर्म्म शैव जान पडता है ।

"गौडाधिनाथरसवत्यधिकारिपात्रं
नारायणस्य तनयः सुनयोऽन्तरङ्गात् ॥
भानोरनुप्रथितरोध्रबली कुलीनः
श्रीचक्रपाणिरिहकर्तृपदाधिकारी ॥
यः सिद्धयोगलिखिताधिकसिद्धयोगान्
तत्रैव निक्षिपति केवलमुद्धरेद्वा ॥

अर्थ-गौडाधिनाथकी रसोईके अधिकारियोंमें पात्र नारायणका पुत्र नीतिमान् भानुदत्तके अन्तरंगसे प्रसिद्ध रोध्रबली कुलीन श्री चक्रपाणि कर्त्तापदका अधिकारी जो सिद्धयोग लिखित अधिक सिद्धि योगोंको उसमेंही केवल उद्धार कर्त्ता है.

सिद्धयोग-वृन्दकुण्डकृत अत्यन्त प्रमाणिक चिकित्सा ग्रन्थ है, उसकी कुसुमावली नाम टीका श्रीकण्ठकृत है, जिसे चक्रपाणिने अपने ग्रन्थमें इस ग्रन्थका समुल्लेखन किया है, इससे यह चक्रपाणिसे पहिला समझना चाहिये ।

रसकौमुदी-वैद्य माधवकृत है, माधवने इसमें रसघटिक दृष्ट फल औषधियोंको अनेक रस ग्रन्थोंसे लेकर अपने रचे हुये ग्रन्थमें समायोजना करके चिकित्सा औषधसंग्रह किया,और बहुत रोगोंमें अनेक योग स्वयमेव स्थापना किये, यह ग्रन्थकार निदानका कर्त्ता माधवकर नाम वृद्धपरम्परासे सुनाजाता है परन्तु इस ग्रन्थको किसी और माधव नाम वैद्यने प्रसिद्ध किया यदि यह बात सत्यभी हो तो भी इसको कोई शीघ्र सिद्ध नहीं कर सक्ता,क्योंकि माधवकरके समयमें अहिफेन प्रयोग, रसादिकोंका जारण मारण आदिका प्रथम प्रचार न था ।

रसरत्नाकर-नित्यनाथकृत वडा रसोंका संग्रह है, उसने रसोंका जारण मारणादिक इस ग्रन्थमें विस्तारपूर्वक दर्शाकर अपने रचे हुए और संग्रह कियेहुए तैल औषधादिक बहुत सन्निवेश किये हैं, नित्यनाथ वङ्गदेशवासी न था, परन्तु पश्चिम देशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा अनुमान किया जाता है,

अलौकिक देखकर मैंने इसकी हिन्दीभाषामें टीका की जो जगत्में सर्वसाधारण मनुष्योंके लिये उपयोगी हो ।

योगचिन्तामणि-श्रीहर्षसूरिकृत है, इसमें सिद्ध चिकित्सा उपयोगी बहुतसे योग हैं उसका समय ग्यारहसौ ११०० अथवा साढे ग्यारहसौ ११५० संवत् विक्रममें रचा गया, यह राजतरंगिणीमें लिखा है, और इसकी भाषाटीका माथुरीमंजूषा नाम पण्डित दत्तराम चौबेने निर्माण की है ।

योगतरंगिणी-वैद्यक रसोंका ग्रन्थ अत्यन्त प्रामाणिक त्रिमल्लभट्टकृत. यह ग्रन्थ हमारे देशमें अधिक प्रचलित है, इसका भाषानुवाद पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र मुरादाबादनिवासीने किया है, इनही त्रिमल्लभट्टके बनाये हुए वैद्यचन्द्रोदय, रसदर्पण,योगचन्द्रिका, द्रव्यगुणशतकादि और भी ग्रन्थ हैं, इसी द्रव्यगुणशतककी भाषाटीका मैंने लिखी है ।

वैद्यामृत और वैद्यवृन्द-भिषक् नारायणकृत रसग्रन्थ है, यह ग्रन्थ नवीन होनेके कारण अधिक प्रचलित नहीं है, यह ग्रन्थकार संवत् १८५० में विद्यमान था ।

वैद्यजीवन-वैद्यवर लोलिम्बराजकृत है, परन्तु बहुत प्राचीन नहीं है, उसने इसमें काव्यकरणके छलसे चिकित्साके उपकारी औषध अनुपानादिका उपदेश किया है ।

सारकौमुदी-आनन्दवर्म्मकृत अर्वाचीन वैद्यकसंग्रह एक सौ पचाश १५० वर्षके लगभगमें रचागया है. इस ग्रन्थका वङ्गदेशमें अधिक प्रचार है ।

भैषज्यरत्नावली-१०० सौ वर्षसे अधिक पहिले गोविन्ददाससेनने रची है, हमारे देशमें इस ग्रन्थकी अधिक प्रतिष्ठा नहीं है.

वैद्यरहस्य-वैद्यवर विद्यापतिप्रणीत. यह ग्रन्थ आजकलके सब नवीन ग्रन्थोंसे उत्तम है, इसमें अत्युत्तम प्रयोग हैं, इस कविके बनाये और भी चिकित्साञ्जनादि अच्छे अच्छे ग्रन्थ हैं ।

चिकित्सासारसंग्रह-भिषग्वर क्षेमशर्म्माआचार्यकृत सर्वोपयोगी है,इन्होंने सब रोगोंका उपाय बहुत अच्छी रीतिसे लिखा है।

हारीतसंहिता-महर्षि आत्रेय और हारीत मुनिके संवादमें रची गई है, ऐसा प्राचीन वैद्योंने लिखाहै, परन्तु हमको यह वह ग्रन्थ निश्चय नहीं होता,क्योंकि इसमें बहुतसे प्रयोग और श्लोक अशुद्ध दिखाई देतेहैं,हमारी समझमें तो किसी वैद्यने नवीन कल्पनाकीहै।

प्रयोगामृत-यह अत्यन्त विस्तृत चिकित्साग्रन्थ नृसिंहधन्वन्तरिशिष्य वैद्य चिन्तामणिकृत है, यह ग्रन्थकार श्रीखण्डसमाजके अन्तर्गत नारोल ग्राममें १०० वर्षसे अधिक पहिले उत्पन्न हुआ ।

नाडीप्रकाश-नाडीके जाननेका ग्रन्थ क्षत्रियगोत्रज आनन्दसेनके वंशमें उत्पन्न शङ्करसेनने रचाहै, वैद्यविनोद और रसशङ्कर ग्रन्थभी उसी कविकृत हैं ।

अर्कप्रकाश-यह चिकित्सासंग्रह रावणकृतहै, परन्तु हमको रावणकृत होनेमें सन्देह है क्योंकि, इस ग्रन्थमें नवीन औषधि बहुत लिखी हैं जैसे कि, गुलदाउदी, गुलाब, इससे रावणकृत नहीं जान पडता, किसी नवीन वैद्यने अपना नाम रावण रखलिया अथवा रावणके नामसे रचदिया है, इसका भाषानुवाद मैंने कियाहै ।

चिकित्साक्रमवल्ली-यह अर्वाचीन ग्रन्थ काशीनाथद्विवेदीप्रणीतहै, अभीतक विशेष प्रसिद्धि नहीं पाई, कविता, प्रयोग अत्यन्त उत्तम हैं।

निघण्टुरत्नाकर-यह नवीन ग्रंथ विष्णु वासुदेव गोडबोलेकृत है, परन्तु गणेश रामचन्द्रशास्त्री दातार, भास्करानन्दशास्त्री तामनकर कृष्णशास्त्री महाबल, तथा विश्वनाथ विनायक पाटीलकी सहायतासे रचागयाहै और यह ग्रन्थ एक लाख श्लोकोंमें समाप्त हुवा है. अकारादिकोष, द्रव्यगुणदोष, शारीरक अष्टविध परीक्षा, निदानसहित चिकित्सा, धातुशोधनमारणविधि, यंत्राध्याय, पुटविधि और अजीर्णमञ्जरी इत्यादि विषयोंसे परिपूर्णहै, इसमें अनेक औषधि द्वीपान्तरकी लाई हुई लिखीगईहैं, तथा यूनानी औषधियोंका नाम गुणदोष, संस्कृत और मराठी भाषामें लिखे हैं, इसमें नाना प्रकारके विषय अंग्रेजी और फारसीसे लेकर सन्निवेशित कियेहैं, आज कल इस ग्रन्थके समान दूसरा गन्थ विदित नहीं होता, किसी ग्रन्थमें केवल चिकित्साही है, किसीमें रोगोंके लक्षण, किसीमें निदानसहित चिकित्सा, किसीमें धातुशोधन मारण, किसीमें परिभाषा, किसीमें निघण्टु, किसीमें मानपरिभाषा, किसीमें नाडीविज्ञान, किसीमें कोष, किसीमें पाकप्रणाली, किसीमें पथ्यापथ्य, किसीमें चर्य्या और किसीमें धात्रीचिकित्साहै परन्तु इसको तो सम्पूर्ण विषयोंसे विभूषित करादियाहै, जो विषय कहीं नहीं पायेजाते वह सब इस ग्रन्थमें विद्यमानहैं इसलिये विष्णु वासुदेव गोडबोलेको हम वारंवार धन्यवाद देतेहैं कि, जिसने अनेक ग्रन्थोंको संग्रह करके यह निघण्टुरत्नाकर निर्माण किया, अब हम सूर्य्यवंशीय श्रीरघुराजभूषण रामचन्द्रसूनु लववंशचूडामणि सेठ हंसराज करमसीको धन्यवाद देतेहैं कि, जिन्होंने अपनी

सहायतासे इस ग्रन्थको प्रकाशित किया, ग्रन्थकारने यह निघण्टुरत्नाकर संवत् १९२४में रचाथा यह विष्णु वासुदेव गोडबोले पावसग्रामनिवासी जिले रत्नागिरिके थे।

अमरकोष-अमरसिंहकृतहै, अमरसिंह वा अमरदेव विक्रमादित्यके समयमें हुवा, ऐसा निश्चय होताहै, परन्तु विक्रमादित्य तीन हुए, न जानिये वह अमरसिंह किसके समयमें हुवा, इसमें अनेक मत दिखाई देतेहैं, उइलू फोर्ड साहिबके मतसे नौ ९ विक्रमादित्यहैं. उन सबने शालिवाहनादिकसे युद्ध किया, (विद्याकल्पद्रुममें) पर माधुनिक ऐतिहासिक रहस्यकी अनुसन्धि करनेवालोंने कारण प्रदर्शनपूर्वक किसी समय यह सन् ५६ ई० प्रथम विक्रमादित्य नरपतिकी सभामें नवरत्न थे ।

धन्वंतरिः क्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटकर्परकालिदासाः। ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥ (काव्य संग्रह)

अर्थ-धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि राजा विक्रमकी सभामें यह नवरत्न थे ।

धारानगराधिपति दूसरे वृद्ध भोजकी सभामें किसी समय सन् १००५ ई० में अन्यतम भोजकी सभामें उसी प्रकारके रत्नोंमें अन्यतम होनेसे स्थापन किया, परन्तु इन तीनों कल्पोंमें कौनसा कल्प मुख्यहै, यह निश्चय नहीं होसक्ता, हमें तो संवत् प्रवृत्तकरनेवाले विक्रमादित्यके संवत् तीनमें था, ऐसा विश्वास है, अमरसिंह बौद्धमतावलम्बी था, यह बात सब संसारमें प्रसिद्धहै, उसका कोष प्राचीन रीतिसे छन्दोबद्ध सब कोषोंमें श्रेष्ठ होनेसे सब जगत्में आदर किया गयाहै, वह इसको स्वर्गादिक वर्गोंमें विभाग करके बीच बीचमें वर्णानुक्रमकी रीतिसे रचताहुआ ।

अमरकोषके प्रचलित टीकाकारोंमें-

मथुरेश प्राचीनहै, शाकेशालिवाहनके ६०० वर्षमें उत्पन्न हुआ, वह किसी मुसलमान वीरकी सहायतासे सदा शास्त्रका आन्दोलन करताथा, यह उइलूसन्साहिबका मत है, वही कवि शब्दरत्नावलीका रचनेवाला था ।

क्षीरस्वामी-काश्मीरपति ललितादित्यके राज्यसमयमें उत्पन्न हुआथा, जयापीडनाम कोई राजा इसीसे शब्दविद्याको पढकर

अन्तमें ललितादित्य पण्डित ऐसी प्रसिद्धिको प्राप्त हुआ सन् ७०५। ७३१ राजतरंगिणी ।

रायमुकुट-(सन् १४३०) में हुआथा, राजतरंगिणी ।

गौरांगमल्लिका पुत्र भरतमल्लिक बहुत प्राचीन ग्रन्थकार और टीकाकार है. यह वर्द्धमान देशके पातिल पल्लिग्राममें कुलीन वैद्यवंशमें एकसौ पचास १५० वर्षके लगभग पाहेले उत्पन्न हुवाथा, यह कवि प्रसिद्ध शाब्दिककार कोल्लासका रचनेवाला और रघुवंश आदि काव्य कुमारसंभवादिकोंका टीकाकार है, उसकी रची हुई अमरकोषकी टीकासे उसकी कीर्त्ति भारतमें चिरकालतक स्थित रहैगी.

धन्वन्तरिनिघण्टुभी-अमरसिंहकृत अमरकोषके सदृश प्रमाणोंसे वैसाही पायाजाताहै. वह ६०० छःसौ वर्ष पहिला है ।

हेमचन्द्राभिधान-अभिधानचिन्तामणिके नामसे प्रसिद्ध है, उत्तमरीतिसे विशेष करके दो भागोंमें विभाग करके हेमचन्द्राचार्यने रचा है. उसमें पहिला स्वर्गादिक छः भागोंमें विभाग किया है, शब्दोंकी श्रेणीका विभाग अन्ततक क्रमसे किया है, दूसरा नानार्थघटित है. परन्तु हेमचंद्र अवतरणिकामें अपने अभिधानके केवल प्रथमभागकी शब्दरचनाप्रणालीको वर्णन करके दूसरेका कुछ वृत्तान्त नहीं लिखा और पहिलेके समान दूसरे भागकी टीका भी नहीं जान पडती, इससे दूसरे भागको हेमचन्द्रकृत होनेमें वैद्य लोग सन्देह करतेहैं कि,महेश्वरकृतनानार्थवर्ग इसमें मिलादियाहै,"विद्वान् लोग ऐसी तर्कना करते हैं"

हेमचन्द्र वा हेमाचार्य्ययति-प्राचीन जैनग्रंथलेखक और जैनधर्म्मावलम्बी था, यह संवत् १२३० में हुवा. और पाटलीपुत्र नगरनिवासी था,इसने अपने जीवनके पहिलेभागको नानाशास्त्रकीरचनासे व्यतीतकरके अन्तिमअवस्थामें गुजरातदेशकी ओर जाकर वहां जैनधर्म्मकी समालोचनासे बडी प्रतिष्ठा पाई. और वहां प्रकृति सहित राजत्व और जैनधर्म्मको ग्रहण किया सुनाजाताहै कि जैनधर्म्मावलम्बी हेमाचार्य्य यतिने उसीसमयमें राजपूत नरपति गुणमरपालकोभी जैनधर्म्ममेंही दीक्षित करलिया, इस प्रकार प्रसिद्धिहै जैसा कि यह हलायुध गुरु लक्ष्मणसेनकी सभामें था(संवत १२३०)ऐसा उइलसन् साहिबका मत है ।

शब्दमाला-रामेश्वरशर्म्माकृत अतिसंक्षिप्त अभिधानसंग्रहहै, अमरकोषकी शेषभूत वंगभाषामें कहीगईहै,यह मेदिनीकोषसे पहिलीहै यह उइलसन् साहिबका मत है ।

नाममाला-धनञ्जयकृत है, उसमें श्रेणीविभागके असद्भाव होनेसे यह प्राचीन अनुमान कीजातीहै, महर्षि जैनधर्म्मावलम्बी मानतुंगाचार्य्यका शिष्य धनञ्जय विक्रमकी दशवीं शताब्दीमें वर्त्तमान था, वैद्यलोगोंने ऐसा लिखाहै ।

भूरिप्रयोग-दामोदरदत्तके पुत्र प्रसिद्ध सुपद्म व्याकरणकार पद्मनाभदत्तने रची है और तीनभागोंमें विभाग की है, पद्मनाभ मेदिनीकारके पीछे हुआ, स्वयं अपने ग्रन्थमें मेदिनीके उल्लेखसे प्रमाण किया है ।

शब्दरत्नावली-मूँसेखाँ नाम किसी मुसलमान वीरके आश्रयसे अमरटीकाकार मथुरेशने अमरकोषकी प्रणालीसे रची है, उसमें शब्दोंके भिन्न रूप पाठ किये गये हैं ।

जटाधरकोष-चट्टग्रामनिवासी जटाधरने रचा है, जटाधरने अमरको बिना देखे जटाधरकोष निर्माण किया, यह बहुत प्राचीन अनुमान नहीं कियाजाता ।

अभिधानरत्नमाला-हलायुधकृत है, यह संक्षिप्त कोष स्वर्ग, भू, नरक, वारि, मिश्र नाम पाँचभागोंमें विभाग की गई है, हलायुध भट्ट भास्करका शिष्य केरलदेशीय ब्राह्मण अति प्राचीन बौद्ध धर्म्मका अवलम्बन करनेवाला विक्रमकी द्वादश शताब्दीमें वर्त्तमान था, उसके कोषमें उद्भिज्ज द्रव्य खनिजद्रव्योंकी मनोरमसूची वंग भाषासे व्याख्यान कीगई, ऐसा सुना जाताहै कि, हलायुध लक्ष्मणनरेशकी सभामें पण्डित था ।

शब्दचन्द्रिका-नाम, द्रव्य, गुणादिके कोष यह चक्रपाणिदत्तका रचाहुआ प्रसिद्ध है यह उद्भिज्ज, खनिज, प्राणी, पथ्यापथ्यादिकोंके कार्य्योपयोगी होनेके संग्रहसे सर्वत्र प्रशंसनीय है, इसके द्रव्योंके नाम वंग भाषामें कहे हैं, यह वंगदेशहीके रहनेवाले थे ।

विश्वप्रकाश-यह कोष बहुत प्राचीन है, जब कान्यकुब्जमें विद्याके उत्साहका अत्यन्त समादर था, तब महेश्वरने संवत्१०६६ में संग्रह किया, उस समय शाके १०३३ थे. महेश्वर गाधिपुरनिवासी साहसांक नरपति चिकित्साधिकारी श्रीकृष्णके वंशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा पहिले तत्त्वके जाननेवाले, उइल्सन् साहबका मत है ।

अजयपालकृतसंग्रह-संक्षिप्तहै, परन्तु बहुत प्रमाणोंसे बडा है, अजयपाल मेदिनीकरसे पीछे हुआ और जैनमतावलम्बी था यह भी उइलसन् साहबका मतहै ।

धरणीकोष-कान्यकुब्जदेशके ब्राह्मण धरणीधरने निर्माण किया है, यह मल्लिनाथसे पहिले हुआ, यह उइल्सन् साहबका मत है ।

त्रिकाण्डशेष-परम जैन पुरुषोत्तम देवकृत तीन अध्यायमें यह ग्रन्थ अमरादिकोष परिशिष्टमात्र प्रसिद्धशब्दोंसे पूर्ण है।

हारावलिकोष-संक्षिप्त प्रसिद्ध सामान्यशब्दोंसे ग्रथित दोभागोंमें विभाग किया हुआहै उनमें पहिला भाग नामपर्य्यायसंग्रह, दूसरा भाग नानार्थसंग्रहहै, यह ग्रन्थकार नववीं वा दशवींशताब्दीमें हुआ, ऐसा उइल्सन् साहबका मत है।

मेदिनीकोष-प्राणकरके पुत्र मेदिनीकरका रचाहुआ है, और यह अभिधान रत्नमालाके नामसे संसारमें प्रसिद्ध है, मेदिनीकर महेश्वरसे पीछे चौदहवींशताब्दीके अन्तमें और महेश्वर, रायमुकुट इन दोनोंके मध्यवर्ती समयमें हुआ, यह कोष अन्त्यादि क्रमसे सुलभ समझने योग्य और प्रशंसनीय है "कर" उपाधिसे अनुमान किया जाता है कि, यह वैद्य वङ्गवासी है।

इत्यादि अनेक कोष देखनेमें आये और वनस्पतियों सम्बन्धक बहुधा प्राचीन ग्रन्थकारोंने अपने अपने ग्रन्थोंमें वर्णन किये हैं, इसके अतिरिक्त निघण्टु नामक स्वतंत्र ग्रन्थभी है, निघण्टु शब्दका अर्थ कोष वा संग्रह है, निघण्टु और निघण्ट इन दोनों शब्दोंका अर्थ एकही है, प्राचीन निघण्टुओंकी पुस्तकोंमें वनस्पतियोंके नाम, गुण, दोष, उपयोग, किस रोगपर कौन औषधि देनीचाहिये इत्यादि बातें लिखी हैं।

आत्रेय, हारीत, चरक, सुश्रुत, वाग्भट और भावप्रकाशादि अनेक ग्रन्थकारोंने अपने २ ग्रन्थोंमें निघण्टुका वर्णन लिखाहै, परन्तु ज्यों ज्यों शास्त्रका विचार बढतागया त्यों त्यों एकएकविषयपर अनेक अनेक ग्रन्थ बनने लगे, और इसी वनस्पतिशास्त्रपर बहुतसे निघण्टु नामक ग्रन्थ बनगये, जितने निघण्टु आजतक निर्माण हुए हैं, उनमें कुछ कुछ मतभेद है, एक गुडूच्यादि निघण्टु है इसीको बहुत लोग धन्वतरिनिघण्टु मानते हैं, परन्तु यह बात निश्चय नहीं है, गुडूच्यादिनिघण्टु व धन्वन्तरिनिघण्टु दोनों धन्वन्तरिजीके बनाये हैं, गुडूच्यादीनिघण्टु बहुत दिन हुए कि, छपगया, परन्तु वह दूसरा धन्वन्तरिनिघण्टु कहीं नहीं मिलता जहांतक मुझसे बनपडा मैंने बहुत अनुसन्धान किया।

एक राजनिघण्टु नरहरि पण्डितप्रणीत है, जिसको छपे बहुत दिनहुए, इस निघण्टुका दूसरा नाम "चूडामणि" है, बहुतसे लोग कहतेहैं कि, राजनिघण्टु एकही है, परन्तु काशीराजप्रणीत भी एक निघण्टुहै काशीराजका नाम दिवोदासभी था, इसकोही धन्वंतरिका अवतार मानतेहैं इसमें यह संशय होता है

कि, पहिला कहाहुआ धन्वंतरिनिघण्टुही कदाचित् काशीराजकृत 'राजनिघण्टु' हो, "धन्वंतरिः क्षपणकामरसिंहशंकु" इस श्लोकके आधारसे ज्ञात होताहै कि, विक्रमादित्यकी सभामें जो नव रत्नथे उनहींमें एक धन्वंतरिजी भी थे· आश्चर्य नहीं कि जो इन्होंनेही धन्वंतरि नामक निघण्टु रचाहो विक्रमकी सभाके नौओं रत्न महाविद्वान् थे उनके रचे हुए ग्रन्थोंका आजतक अधिक प्रचार है, इसलिये यहभी कहाजासक्ता है कि, धन्वन्तरिनिघण्टु इनहीं धन्वन्तरिजीका रचाहुआ है ।

धन्वंतरिके बनाये दो निघण्टु, तीसरा नरहरिपंडितकृत निघण्टुचूडामणि कि, जिसको राजनिघण्टु भी कहते हैं, चौथा काशीराज (कि जिनको धन्वंतरिका अवतार कहते हैं) कृत राजनिघण्टु है, नरहरिरचित निघण्टुको लोग अबतक नहीं जानते, पंडित शङ्करदास शास्त्रीने लिखा है कि,एक जगह उसका भी पता लगता है परन्तु राजनिघण्टु नाम राजनिघण्टु नहीं है इस निघण्टुका कर्त्ता अपने मंगलाचरणमें लिखता है ।

प्रारम्भि भैषजहिताय निघण्टुराजः ।

और समाप्तिमें भी ऐसा लिखा है ।

इति काश्मीरमण्डलप्रसिद्धवसातिश्रीमठसिद्धगुहाक्षास्थानास्थितश्रीनंदिस्फोटाप्रसिद्धमहिमानन्दश्रीसोमानन्दाचार्यवंशोद्भवचतुर्दशविद्याविनोदपरिणतसमागमद्विजवैराग्ययो(ग्यश्रीपरमहंसजगद्विज्ञानतिमिरमार्तण्डश्रीचण्डेश्वरापरनामधेयश्रीराजराजेन्द्रागिरिश्रीपादपद्मसर्वशास्त्रमकरन्दामोदमुदितसद्वैद्यविद्याविशारददासविशारदमानसंहतारिधुरन्धरनानाधनाद्रहणसत्त्वगुणसहजश्रीमदीश्वरसूरिसूनुश्रीमदमृतेशानन्दचरणारविन्दमकरन्दानन्दोदितश्रीनरहरिपंडिताविरचिते निघण्टुराजापरपर्यायवत्यभिधानचूडामणौचैकार्थाद्यभिधानत्रयोविंशो वर्गः ।

इससे ज्ञात हुआ कि,ग्रन्थकर्त्ताने इस निघण्टुके दो नाम रक्खे हैं, एक निघण्टुराज, और दूसरा चूडामणि,दो वास्तविक नामोंके रहते हुएभी न जानिये कि, फिर किसने इसका तीसरा नाम राजनिघण्टु रखदिया ?।

इसप्रकार चार निघण्टु हुए· पाँचवाँ नाम निघण्टु ज्ञातहोताहै निघण्टुप्रकाशमें लिखा है कि,चन्द चन्दनकृत गणनिघण्टुहै जिसको मदनादिनिघण्टु भी कहते हैं,यह अभी कहीं छपा नहीं है, और मदननिघण्टु मदनपाल राजाका बनाया हुआ छपगया है, इसका दूसरा नाम मदनादिनिघण्टुभी है, परन्तु गणनिघण्टु भोजराज-

निघण्टु और शेषराजानिघण्टु दशवीं शताब्दीमें वर्त्तमानथे यह प्रमाण पायाजाता है इन तीनों निघण्टुओंका आजतक कहीं पता नहीं लगता, और मदनपालनिघण्टु तो सर्वत्र प्रसिद्ध विस्तृत और प्रशंसनीय है,यह निघण्टु मदनपालनरेशके विनोदार्थ किसी वैद्यने निर्माण किया था ऐसा निश्चय होता है,विद्यार्थियोंमें इसका अधिक प्रचार है,क्योंकि इसमें नाम,द्रव्य,गुण विस्तारपूर्वक वर्णन कियेहैं।

इसप्रकार सात निघण्टु प्रमाणित हुए आठवां बोपदेवकृत "हृदयदीप" निघण्टु है, नवां मुद्गलकृत "द्रव्यरत्नाकर" दशवां कैयदेवकृत "कैयदेवरत्नाकर निघण्टु" ग्यारहवां "केशवकृत सिद्धमंत्र" यह चारों निघण्टु अभी कहीं छपेनहीं हैं, केवल विश्वनाथसेनकृत पथ्यापथ्यानिघण्टु छपाहै, और बडे खोजसे एक त्रिमल्लभट्टविरचित "द्रव्यगुणशतश्लोकी" निघण्टु मुझको मिला मैंने वैद्यजनोंके हितार्थ उसका भाषानुवाद कियाहै।

राजवल्लभीयद्रव्यगुण-यह परमोत्तम ग्रन्थ वैद्यवर राजवल्लभकृत है, परन्तु श्रीनारायणदास कविराजने विस्तारपूर्वक व्याख्या करके इस ग्रन्थका संस्कार कियाहै, राजवल्लभ वैद्यपरम्परासे सुनते आते हैं कि,सम्वत्१७६०सत्रहसै साठमें वर्तमानथा,यह ग्रन्थ छः परिच्छेदोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ श्रेणीसे विभाग किया हुआ वैद्योंको उपयोगीहै,इस ग्रन्थका नामही सुनाजाताथा परन्तु कहीं देखनेमें नहीं आताथा, मैंने अपने मित्रोंके पास देशदेशांतरोंमें राजवल्लभके लिये पत्र भेजे परंतु कहींसे प्राप्त न हुआ बहुतदिन पश्चात् कलकत्तेसे एक मेरे मित्रने भलीभाँति खोज करके इसग्रन्थकी एक प्रति मेरे पास भेजी वास्तवमें यह संक्षिप्त ग्रन्थ जैसा सुनाथा वैसाही निकला, मैंने अत्यंत हर्षसहित भाषानुवाद करके वैश्यवंशअवतंस श्रेष्ठी खेमराज श्रीकृष्णदासको समर्प्पण किया।

निघण्टुसंग्रह- जूनागढ निवासी वैद्यशिरोमणि रघुनाथजी इन्द्रजी उपनामकताभटरचितहै,अनेक ग्रन्थोंका संग्रह कियाहुआ तो है परन्तु आज कलके समयमें यह निघण्टु सब निघण्टुओंका शिरमौरहै इसकीप्रणालीधन्वन्तरिनिघण्टुकीसदृशहै,यहशके१८१५मेंरचागयाहै।

वैद्यकशब्दसिंधु-बाबू उमेशचन्द्रकृत नवीन कोषोंमें बहुत उत्तमहै।

जब इन प्राचीन ग्रन्थोंको मैंने देखा,तो विचार किया कि, देखो पृथ्वीपर कैसे कैसे विद्वान् और बुद्धिमान् हुए, कि जिन्होंने यह अनुपम ग्रन्थ निर्माण कियेहैं, परन्तु सब वैद्योंने वैद्यकमें कोष और निघण्टुहीको मुख्य समझा, कि वैद्यककी मूल यही दोहैं, उन वैद्योंको सर्वज्ञ और गुणज्ञ जानकर

वारम्वार धन्यवाद देताहूं, जो महादुस्तर रोगरूपी समुद्रसे तारनेके लिये यह अद्भुत नौका बनागये, परन्तु आजकल विद्याकी न्यूनतासे पठन पाठन कठिन होगया, लोगोंने भाषानुवाद कियाभी परन्तु उससे किसीका कार्य ठीक ठीक सिद्ध न हुआ; और ठीक ठीक औषधियोंके नाम भी समझने दुर्लभ होगये, और संस्कृतनामोंका चालचलन छूट गया पंसारियोंकी दूकानपर जो वह औषधि होतीभीहै तोभी कहदेतेहैं कि हमारी दूकानपर नहीं है, क्योंकि वह लोग उनकी भाषा तो जानतेही नहीं, लोग हार मान, यूनानी और अंग्रेजी औषधि करने लगे, उनकी यह दशा देख मेरे चित्तमें अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ कि, ऐसी ऐसी भारी नौका वृथा आलस्यरूपी वारिधिमें डूबीजाती हैं इनके बचानेका कोई उपाय होना चाहिये । यह विचार मैंने उसीसमय ऊपर लिखे हुए ग्रन्थोंकी सहायतासे और अपनी बुद्धिसे "शालिग्रामौषधशब्दसागरनाम अकारादिक्रमसे एक नवीन कोष रचा" जिसमें प्रथम संस्कृत नाम, उसके आगे हिन्दीभाषाका नाम, जब यह पूर्ण होगया, तो फिर चित्तमें विचार किया कि, कोषका प्रचार तो होगया, परन्तु संसारके उपकारके लिये एक निघण्टु और निर्माण करना चाहिये, क्योंकि बिना निघण्टु औषधियोंके नाम, गुण, दोष, नहीं जाने जाते यथा-

निघण्टुना विना वैद्यो विद्वान्व्याकरणं विना ।
अनभ्यासेन धानुष्कस्त्रयो हास्यस्य भाजनम् ॥ १ ॥
वैद्येन पूर्वं ज्ञातव्या द्रव्यनामगुणागुणाः ।
तदायत्तं हि भैषज्यं यज्ज्ञाने स्यात्क्रियाक्रमः ॥ २ ॥

अर्थ-विना निघण्टुके वैद्य, विना व्याकरण विद्वान् (पण्डित) और विना अभ्यास धनुष चलानेवाला (तीरन्दाज) यह तीनों मनुष्य अपनी हँसी करानेवाले हैं॥ १॥ इसलिये प्रथम वैद्यको ओषाधियोंका गुण अवगुण विचारना चाहिये, क्योंकि उनही द्रव्योंके आधीन सब ओषधादिकका बनाना है, और बुद्धिके आश्रयसे सम्पूर्ण क्रिया कर्म जानेजाते हैं ॥ २ ॥

ऐसा विचार करके मैंने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" नाम नवीन निघण्टु निर्माण किया है, इस निघण्टुमें सब निघण्टुओंका सार और नवीन नवीन औषधि जिनका आजकल अधिक प्रचार है, जैसे कि, अकरकरा, शोरा, सत्वगिलोय, सनाय, कालादाना,

चाय, सालममिश्री, कलमीआम, नासपाती, अनन्नास, पिस्ता, बादाम, छुहारा, आलुबुखारा, माजु, ब्रह्मदण्डी, रेवटचीनी, तमाखू, ईसफलगोल, भिण्डी, फूट, अंडखरबूजा, शकरकन्दी, घुँइयाँ, सलजम, बेला, चँवेली, मोतिया, हारसिंगार, गुलाब, महँदी, समुद्रसोख, पोदीना, सफरी, बिहारीनिम्बू, मक्का, बाजरा, महुआ और कालाजीरी इत्यादि अनुसन्धान करके उसमें लिखे । फिर उनके नाम गुणागुणका विचार और लक्षण लिखे, पचीस वर्गोंमें यह ग्रन्थ पूर्ण किया है, प्रथम कर्पूरादि वर्गमें औषधियोंके नाम और ब्राकट (कोष्ठ) में अनेक कोष निघण्टुओंसे उनके पर्य्याय, फिर प्रत्येक औषधिका प्रसिद्ध संस्कृतनाम, पश्चात् हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गुजराती, कर्णाटकी, तैलङ्गी, अंग्रेजी लैटिन, फारसी अरबी, और कहीं कहीं औत्कली, द्राविडी, लुसाई, ब्रह्मी, पंजाबी, तुरकी, फरहंगी, और यूनानी आदि भाषाओंमें नाम लिखेहैं, फिर अनेक ग्रन्थोंसे उसके गुण, दोष, लक्षण, भेद, परीक्षा, स्वरूप और विवरण लिखाहै, किसी किसी औषधिकी मात्रा, व्यवहार, अनुपान, उत्पत्ति, शोधन और सेवन करनेकीभी विधि लिखीहै ।

प्रथम कर्पूरादिवर्गमें सम्पूर्ण सुगन्धित द्रव्योंका विस्तारपूर्वक वर्णन ॥ १ ॥

दूसरे हरीतक्यादिवर्गमें, हरडसे आदि लेकर चूकपर्यंत औषधियोंका वर्णन ॥ २ ॥

तीसरे गुडूच्यादिवर्गमें नागवल्ली, बिल्व, गम्भारी, पाटला, शालिपर्णी आदिका वर्णन ॥ ३ ॥

चौथे पुष्पवर्गमें चम्पा, चँवेली, मालती, माधवी और केतकी, इत्यादि पुष्पोंका धारण, सुगन्ध, शोभाका वर्णन ॥ ४ ॥

पञ्चम फलवर्गमें आम, जामुनप्रभृति फलोंका वर्णन ॥ ५ ॥

छठे वटादिवर्गमें वड, पीपल, पाकर इत्यादि बडे बडे शाखीवृक्षोंका विस्तारसहित वर्णन ॥ ६ ॥

सातवें धातूपधातुवर्गमें सुवर्ण, चांदी, ताँबे इत्यादिसे लेकर शिलाजीतपर्य्यंतका वर्णन ॥ ७ ॥

आठवें रत्नोपरत्नवर्गमें वज्र, विद्रुम, वैदूर्य्य, नीलमणि आदिका वर्णन ॥ ८ ॥

नवम विषवर्गमें सबप्रकारके विषोंका विस्तारयुक्त वर्णन ॥ ९ ॥

दशवेंधान्यवर्ग में शालिआदि अनेक प्रकारके उत्तमोत्तम धान्योंका वर्णन ॥ १० ॥

ग्यारहवें शाकवर्गमें बथुवा, कुलफा, चूका, मरसा, चौलाई, पालक आदिका वर्णन ॥ ११ ॥

बारहवें वारिवर्गमें नदी, कूप, तडाग, वर्षा आदि सब प्रकारके पानीका वर्णन ॥ १२ ॥

तेरहवें दुग्धवर्गमें गाय, भैंस, बकरी इत्यादि सब प्रकारके दूधका वर्णन ॥ १३ ॥

चौदहवें दधिवर्गमें सब प्रकारके दधिका सविस्तर वर्णन ॥ १४ ॥

पन्द्रहवें तक्रवर्गमें सब प्रकारकी छाँछ, मट्ठेका सम्पूर्ण वर्णन ॥ १५ ॥

सोलहवें नवनीतवर्गमें मक्खन (नैनीघी) का भलीभाँति वर्णन ॥ १६ ॥

सत्रहवें घृतवर्गमें सबप्रकारके घृतोंका भिन्न २ वर्णन कियाहै १७

अठारहवें मूत्रवर्गमें, मनुष्य, हाथी, घोडा, बकरी आदिके मूत्रोंका सम्पूर्ण वर्णन ॥ १८ ॥

उन्नीसवें तैलवर्गमें तिल, सरसों, लाही, इत्यादिके तैलका वर्णन १९

बीसवें अर्कवर्गमें सब ओषधियोंके अर्कोंके गुण दोष ॥ २० ॥

इक्कीसवें इक्षुवर्गमें सब प्रकारकी ईखोंका वर्णन ॥ २१ ॥

बाईसवें सन्धानवर्गमें सबप्रकारकी काँजी, अचार, सिरका, मदिरा (शराब), आसवप्रभृतिका वर्णन ॥ २२ ॥

तेईसवें संख्यावर्गमें त्रिफला, त्रिकुटा, पञ्चवर्गादि औषधियोंका वर्णन ॥ २३ ॥

॥ इति पूर्वार्द्ध ॥

अथ उत्तरार्द्ध ।

चौबीसवें (प्रथम अनूपादि वर्ग) में अनूपदेश जांगल देश और साधारण देशके लक्षण, ब्राह्मणक्षेत्र, क्षत्रियक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र, शूद्रक्षेत्र इन चार क्षेत्रोंमें उत्पन्न होनेवाली औषधियोंके गुण, उन चारों क्षेत्रोंके देवता, फिर पार्थिव, आप्य, तैजस, वायव्य, आन्तरिक्ष यह पांच प्रकारके क्षेत्रोंका वर्णन करके फिर उन पांचोंक्षेत्रोंमें उत्पन्न-होनेवाले द्रव्योंके गुण, फिर उन क्षेत्रोंके देवता, फिर वृक्षोंकी उत्पत्ति, और ब्राह्मणादिक भेद उनके देनेकी विधि, चारप्रकारसे ओषधियोंका निर्णय, जंगम, पार्थिव, औद्भिज्ज द्रव्योंके पांच भेद वृक्षोंकी स्त्री, पुरुष, नपुंसक जाति और उनके गुण, फिर वृक्षोंकी क्षुधा, पिपासा और निद्राका वर्णन, वृक्षादिकोंमें पञ्चमहाभूतात्मत्व फिर उन वृक्षोंके उपकारका वर्णन फिर उनके गर्भ और सन्तान होनेका वर्णन करके अश्विन्यादि सत्ताईस २७ नक्षत्रवाले वृक्ष और जन्मनक्षत्रके वृक्षका औषधमें त्यागना, फिर विंध्याचल और हिमालयकी ओषधियोंके गुण, ओषधियोंके लानेमें मुहूर्त्तका विचार, उनके उखाडनेकी विधि, मंत्र, और समय, दुष्ट ओषधियोंका त्यागना; और श्रेष्ठ ओषधियोंके रखनेकी विधि, स्वभावमें हितकारी ओषधियोंका वर्णन, उनकी परीक्षा, उपयोगविरुद्ध ओषधि लेनेमें संकर, प्रतिनिधि द्रव्यान्तर्गत पदार्थ, फिर मधुरादि रसोंका वर्णन, वीर्य्य, विपाक, प्रभाव, शक्ति इत्यादिका वर्णन ।

पच्चीसवें(दूसरे मिश्रवर्गमें)उत्थानकालनिर्णयादि–हाथ पांव और मल मार्गको स्वच्छ रखनेके गुण,सूर्य्योदयसे पहले जलपीनेके गुण, नासिकासे जल पीनेके गुण, दतौन करनेकी विधि,दतौनमें वृक्षोंका निषेध, दतौन करनेके समय दिशाका निर्णय,किन किन रोगियोंको दतौनका निषेध, जिह्वाको घिसनेके गुण,चक्षुधावनविधि,गण्डूष (कुल्ला) करनेका गुण,मुखप्रक्षालनगुण,अञ्जन लगानेका गुण,किस किस रोगीको अञ्जन न लगाना चाहिये, कंघीसे बाल स्वच्छ करनेका गुण, पगडी शिरपर बांधनेके गुण, श्मश्रु (दाढी मूछ क्षौरकर्म और नख) कटवानेके गुण, नाकके बाल उखाडनेके दोष,प्रातःकाल उठकर क्या देखना चाहिये, अग्निसे तापनेके गुण, धुएँ और हिमको सेवनके गुण, ओसके गुण, कुहरके गुण, छत्री

लगानेके गुण, दृष्टिके गुण, आतपके गुण, छायाके गुण, लाठी धारणके गुण, व्यायाम (कसरत) करनेके गुण, अंगमर्दनके गुण, शरीर घिसनेके गुण, मार्ग चलनेके गुण, अत्यन्त भ्रमण करनेके गुण, पादुका धारण करनेके गुण, नंगे पांव फिरनेके दोष, हाथी इत्यादिपर बैठनेके गुण, पाँव धोनेके गुण, पूर्व दिशाकी पवन (पुर्वाई) के गुण, ग्निकोणकी पवनके गुण, दक्षिण दिशाकी (दक्षिणी) पवनके गुण, नैर्ऋत कोणकी पवनके गुण, पश्चिम दिशाकी (पछाहियां) पवनके गुण, वायव्यकोणकी पवनके गुण, उत्तर दिशाकी (पहाडी) पवनके गुण, ईशानकोणकी पवनके गुण, नीहारादि संयुक्त पवनके गुण, बबूलेके गुण, खजूरके पंखेकी पवनके गुण, ताड, केला, बांस, खस, मोरपंख, वाल, वस्त्र, और फूलोंके पंखेकी पवनके गुण, ऋतुविशेषसे वायुके गुण, अभ्यंग (पांवोंमें तेल) मलनेके गुण, अभ्यंग वर्जित मनुष्य अवगाहनयुक्त तेलके गुण, तैलमर्दनकी विधि, शिरसे तेल मलनेके गुण, कानमें तेल डालनेके गुण, उबटन करनेके गुण, मुखप्रलेपके गुण, स्नानके गुण, गरमजलसे स्नान करनेके गुण, आंवले आदि शरीरसे मलकर स्नानकरनेके गुण, स्नानवर्जित रोगी, किसरोगमें स्नान करना नहीं चाहिये, शरीरमार्जनके गुण, वस्त्र धारण करनेकी विधि, रत्नाभरण धारण करनेके गुण, गुरु और देवतादिकके पूजनकी विधि दर्पण देखनेके गुण, अनुलेपनके गुण, पुष्पादिधारण गुण, भोजनकी आदिमें लवणादि पदार्थ भक्षणके गुण, क्रमसे अन्नादिकोंके गुणोंकी विशेषता, आहार करनेके गुण, आहार करनेके समय दिशाका निर्णय, भोजनादि करनेका परिमाण, आचमनके गुण, भोजनके अन्तमें कर्त्तव्यता, भोजनके अन्तमें शयनादिकके गुण, पान, सुपारी, इलायची आदि खानेके गुण, अध्ययनादिकके गुण, बुद्धिके गुण, तत्काल प्राणकारक षट्क, तत्काल प्राणहारक षट्क आयुके भेदसे स्त्रियोंकी बाल्यादि संज्ञा, बालास्त्रीसंसर्गगुण, मैथुनकालनिर्णय, सन्तानोत्पत्तिनिर्णय, सुखपूर्वक सोने और उत्तम भोजनके गुण, पृथ्वी और खाटपर सोनेके गुण, चांदनीके गुण, अन्धकारके गुण, मैथुनके गुण, निद्राके गुण, रात्रिमें जागने और दिनमें सोनेके गुण, हेमन्त, शिशिरकृत्य, वसंतकृत्य, ग्रीष्मकृत्य, वर्षाकृत्य, शरत्कृत्य॥

॥ इति उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

परिशिष्टमें, माजूफल,समुद्रफल, रेवटचीनीसे आदि लेकर अण्डखरबूजेतक नवीन नवीन औषधियोंका विस्तारपूर्वक वर्णन लिखाहै

जिन जिन ग्रन्थोंसे यह निघण्टुभूषण संग्रह कियागयाहै उनके चिह्न एक एक अक्षरसे लिखेहैं, अब वैद्यजनोंके जाननेके लिये उन ग्रन्थोंके पूरे नामभी लिखताहूं।

नि० र०	निघण्टुरत्नाकर
रा० नि०	राजनिघण्टु
म० नि०	मदनपालनिघण्टु
म० वि०	मदनविनोद
रा० व०	राजवल्लभ
ग० नि०	गणनिघण्टु
सो० नि०	सोढलनिघण्टु
आ० सं०	आत्रेयसंहिता
चं० नि०	चंद्रिकानिघण्टु
भै० चि०	भैषज्यचिन्तामणि
सु० सं०	सुश्रुतसंहिता
च० सं०	चरकसंहिता
भा० प्र०	भावप्रकाश
वै० नि०	वैद्यकनिघण्टु
ध० नि०	धन्वंतरिनिघण्टु
वि० ति० भा०	विकारतिमिरभास्कर
के० दे०	केयदेव
नि० चू०	निघण्टुचूडामणि
लंकेश०	अर्कप्रकाश
ड० मि०	डल्लनमिश्र
र० चं०	रसचंद्रिका
र० सं०	रसेन्द्रसारसंग्रह
नि० सं०	निघण्टुसंग्रह

और जिस परिश्रमसे वृक्षोंके चित्र एकत्र किये मेराही जी जानताहै, मेरी इच्छा तो यह थी कि, जिस जिस पृष्ठमें द्रव्योंके नाम गुणहैं, वहीं २ वृक्षोंके चित्रभी होने चाहिये, परन्तु चित्रोंके बनानेमें विलम्बहोनेके कारण चित्र एकही जगह लगाये गये हैं।

अब सब आयुर्वेदरसिकोंसे मेरी यह प्रार्थनाहै कि, इस परिश्रमका ध्यान करें कि, मैंने इस ग्रन्थके लिये कितना परिश्रम किया, इस बातका वैद्यलोगही पहिचानेंगे, सैकडों पुस्तकें देश देशान्तरोंसे संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, गुजराती, महाराष्ट्री, बंगला इत्यादिकी मँगाई, उनमेंसे एक एक शब्द ढूँढ ढूँढकर निकाला तब यह ग्रन्थ रचागया, जब यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ तो "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" इसका नाम रक्खा और वैद्यजनोंके हितार्थ इस निघण्टुको श्रीमान् वैश्यकुलदिवाकर, सकलगुणभाण्डागार, परमोदार, गोब्राह्मणहितकारी, सत्यव्रतधारी, सर्वविद्याविभूषित, श्रीमद्रत्ना-

कर सन्निकट मुम्बईपत्तननिवासी श्रीयुतश्रेष्ठि खेमराज श्रीकृष्णदासजीको पूर्णप्रतापी जानकर मैंने यह "शालग्रामनिघण्टुभूषण" इनको समर्पण किया, और इनको कोटिशः धन्यवाद हैं कि, जिन्होंने अपना धन व्यय करके इस "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" को अपने जगद्विख्यात "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यंत्रालयमें मुद्रितकरके मेरा नाम प्रसिद्ध किया, मेरे परिश्रमको देखकर गुणीजन अवश्य मेरे गुणकी श्लाघा करेंगे, यह मुझको पूर्ण विश्वास है, और दुष्टजन अपना नीचपना प्रगट करैंहींगे, यहभी मुझे दृढ आशा है, जब सज्जनोंकी कृपादृष्टि मेरे ऊपर है तो दुर्जन मेरा क्या करसक्ते ।

इति प्रथमावृत्ति भूमिका ।

वि० संवत् १९६३
आषाढपूर्णिमायां भृगौ ।

आपका कृपाभिलाषी-
आयुर्वेदोद्धारक--शालिग्रामवैश्य,
मुरादाबाद.

श्रीः ।

द्वितीयवारकी भूमिका.

औषधिशास्त्र आयुर्वेदका मुख्य अंग और वैद्यकका प्रथम आवश्यकीय विषय है क्योंकि सम्पूर्ण क्रियाक्रमोंकी मूल चिकित्साहै और चिकित्साकी मूल औषधिशास्त्र अर्थात् निघण्टु इसी कारण सर्वत्र लिखाहै कि-"विना निघण्टुके वैद्य नहीं होता है" जो वैद्य केवल रोगकेही ज्ञानको जानतेहैं औषधिकल्पको नहीं जानते उनकी संसारमें कदापि प्रतिष्ठा नहीं होती। और न वह वैद्यके योग्यही कहे जासक्ते हैं। हमारे पूर्वज महर्षियोंने संसारके उपकारके लिये अनेक प्रकारके औषधिशास्त्रके ग्रन्थ निर्म्माण किये। अनुमान आठसौं वर्ष पूर्व उन समस्त आर्षग्रन्थोंके पढनेका इस देशमें अधिकतासे प्रचार था पश्चात् वारंवार मुसलमानबादशाहोंके चढनेपर सब विद्याओंकी अवनतिके साथ आयुर्वेदीय चिकित्साकी भी अवनति होतीगई और आयुर्वेदीय चिकित्साकी अवनति होनेसे सम्पूर्ण औषधिशास्त्रके ग्रन्थोंके पठन पाठन और औषधिशिक्षाका एकसाथ प्रचार उठसागया। यहांतक आयुर्वेदीय चिकित्साकी दुर्दशा हुई कि, आजतक भी हमारे देशकी उत्पन्न हुई और हमारी प्रकृतिके अनुकूल सुलभ औषधियें भी हमको ठीक ठीक प्राप्त नहीं होतीं। बडे कष्टका विषय है कि-यूनानी और डाक्टरी विदेशी औषधि होनेपर भी भारतके प्रत्येक प्रदेश, जिले, कसबे और गांवोंमें सुगमतासे प्राप्त होजातीहैं और आयुर्वेदीय औषधियें हमारी कहलानेपर भी हमको ठीक२ किसी स्थानपरभी नहीं मिलतीं। यदि किसी पसारीसे पूछते है कि, तुम्हारे पास अमुक औषधि है? तब प्रथम तो वह नाहीं कहदेताहै और जो कहीं विशेष खोज करनेसे एक दो मिल भी गईं तो गली, सडी बर्षोंकी पडीहुई होंगीं।

इत्यादि उपर्युक्त आयुर्वेदीय चिकित्साकी जो दुर्दशा हुई उसको वारंवारलिखनेकी यहां आवश्यकता नहींहै किंतु इतनाअवश्य कहेंगे कि, आयुर्वेदीय चिकित्साकी इसप्रकार अवनति रहनेपर तुम्हारी कदापि उन्नति नहीं होगी। क्योंकि यह बात अच्छे प्रकारसे सिद्ध होचुकी है कि, हमारे लिये हमारेही देशकी औषधि सात्म्य होसक्तीहै

उपर्युक्त सम्पूर्ण दुर्दशाका केवल अविद्याका प्रभाव देखपडताहै यद्यपि इस नवीन शताब्दीके आविष्कारमें कुछ कुछ आयुर्वेदीय चिकित्सा और औषधिशास्त्रकी

उन्नति हुई है किन्तु जितनी उन्नतिकी आवश्यकताहै उसका सोलहवां भाग नहींहै। यद्यपि अनेक स्थानोंमें चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश, हारीत, अत्रि, धन्वन्तरि आदि ग्रन्थोंमें निघण्टुखंड छपचुकाहै तथा मदनपाल, राजनिघंटु, धन्वंतरीनि० शोढलनि० निघण्टुशिरोमणि आदि कितनेकानिघंटुक स्वतंत्र ग्रन्थ भी छपचुकेहैं किन्तु ऐसा ग्रंथ कहीं भी नहीं छपा कि, जिस एकही ग्रन्थसे सम्पूर्ण औषधियोंके गुण दोष लक्षण परीक्षा विवरणादि पूरी पहचान मालूम होजाय। इसी अभावको दूर करनेके लिये प्रायः सम्पूर्ण अर्वाचीन और प्राचीन द्रव्य गुण, कोष और निघण्टुओंका सार लेकर लाला शालिग्रामजीने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" निर्माण कराहै। इस इकले ग्रन्थसेही समस्त आयुर्वेदीय औषधियोंका अच्छे प्रकारसे अनुभाव हो सक्ताहै। यद्यपि लालाजीने इस ग्रन्थको सर्वांगसुन्दर और सम्पूर्ण विषयोंसे परिपूर्ण लिखाह किन्तु उनकी इच्छानुसार इसमें कितनी एक त्रुटि रहगईथीं सो अबकीबार लालाजीकी आज्ञानुसार वह सब त्रुटियां पूर्ण करदी गई हैं।

इस आवृत्तिम बनप्सा, आलू, गोभी, फूलगोभी, पत्रगोभी, गांठगोभी, गुलेबनप्सा, झाऊ, झिल्ल, देशीबादाम आदि अनुमान २०-२५ अर्वाचीन औषधियोंके गुण दोष विवरण आदि संस्कृत श्लोक और भाषा बनाकर लिखदी गई ह। पहली बारमें सम्पूर्ण औषधियोंके विवरण विस्तारपूर्वक नहीं लिखेगये थे सो अबकीबार अनुमान ३००-४०० औषधियोंके विशेष विवरण परिवर्द्धित करदिये गयेहैं। इसके अतिरिक्त २०० चित्र औषधियोंके बढादिये हैं। तथा अकारादि क्रमकी बंगला, मराठी और गुजराती यह तीन अनुक्रमणिका पाठकोंके सुभीतेके लिये विशेष लगादीगई हैं। इसमें प्रमादके वश अथवा अल्पज्ञतासे जो त्रुटि रहगई हों उनको पाठक महाशय क्षमा करैं अथवा पत्रद्वारा लिखकर भेजदेंगे तो आगामी आवृत्तिमें ठीक करदी जायँगी।

इति द्वितीयावृत्तिभूमिका।

तारीख-४-४-१९०४.

भवदीय-कृपाकांक्षी-
वैद्य-शंकरलाल हरिशंकर,
"आयुर्वेदोद्धारक-कार्य्यालय"
मुरादाबाद.

॥ श्रीः ॥

तीसरीवारकी भूमिका.

पाठक महाशयोंकी गुणग्राहकतासे इसका तीसरा संस्करणभी शीघ्र होगया। शीघ्रताके कारण अबकीबार कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं किया जासका, तथापि ग्राहकोंके संतोषार्थ इस बार भी कुछ न कुछ अवश्य नवीन संशोधन कियागयाहै । पहले और दूसरे संस्करणोंमें वनौषधियोंके सब चित्र ग्रन्थकी आदिमें एकत्र लगाये गयेथे, प्रत्येक औषधिके चित्रको अलग अलग ढूंढनेमें तब बहुत देरलगतीथी। अबकीबार इसी दिक्कतको दूर करनेके लिये प्रत्येक औषधिका चित्र उसके विवरणके साथ यथास्थानमें लगा दियागयाहै तथा दूसरे संस्करणकी अशुद्धियोंकाभी यथासाध्य संशोधन कियागयाहै।

भवदीय—कृपाकांक्षी—

तारीख १ मई सन् १९१२ वैद्य-शंकरलाल हरिशंकर

"आयुर्वेदोद्धारक—कार्य्यालय"

मुरादाबाद. U.P.

श्रीः ।

आयुर्वेदोद्धारक वनौषधालय.

हमने सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये बहुतसा द्रव्य खर्च करके बडे परिश्रमसे अनेक देश, वन, पर्वत और जंगलकी बहुतसी दिव्य और दुष्प्राप्य वनौषधियोंको मँगाकर अपने औषधालयमें रखीहैं जैसे-ब्रह्मी, शंखपुष्पी, शिवलिंगी, पातालगरुडी, देवदाली, अपराजिता, विष्णुक्रांता, अशोक, भुँइआंमला, बिदारीकंद, वाराहीकन्द, मूर्वा, कालाभांगरा, कालाधतूरा इत्यादि सब प्रकारकी हरी और सूखी आषोध मिलसक्तीहैं। जिस किसी महाशयको किसी जडी बूटीकी आवश्यकता हो उसका खुलासा नाम देशभाषामें अथवासंस्कृत भाषामें लिखभेजे तो औषधितत्काल भेजदीजायगी। किन्तु यह अच्छे प्रकारसे स्मरण रहै कि, एकरुपयेसे कम मूल्यकी कोईभी वनौषधि नहीं भेजीजाती ।

इसके अतिरिक्त इस औषधालयमें प्रायः सब प्रकारके रोगोंकी शास्त्रोक्त विधिसे बनाई हुई और लालाशालिग्रामजी तथा हमारी वारंवार परीक्षा कीहुई औषधियेंभी विक्रीके लिये सदैव तैय्यार रहती हैं। जैसे-रस, धातु, सुवर्ण, रौप्य, ताम्र, वंग, अभ्रक, हरिताल, नाग, लोह, मंडूर; मौक्तिक, प्रवाल, मकरध्वज, चन्द्रोदय, स्वर्णसिन्दूरप्रभृति रसायन तथा चूर्ण, गुटिका, वटी, अवलेह; पाक, मोदक, आसव, अरिष्ट, पाचन, कषाय, तैल, घृत, गूगल आदि समस्त औषधियें उचित मूल्यसे मिलसक्तीहैं । अधिक माल मँगानेवालोंको और वैद्यलोगोंको विशेष कमीशन दियाजाताहै । आध आनेका टिकट भेजकर औषधालयके नियम और सूचीपत्र मँगाकर देखो ।

पता-वैद्य-शङ्करलाल हरिशंकर.
आयुर्वेदोद्धारक-औषधालय.
मुरादाबाद. यू. पी.

शत शत प्रशंसापत्रप्राप्त

अस्सी प्रकारके वात रोगोंकी एकमात्र औषधि ।

महा नारायण तैल

नारायणं नाम महच्च तैलं वातामये वैद्यवरेण योज्यम् ।
नारायणोक्तं सुरबृंहणार्थं नारायणं तेन वदन्ति तज्ज्ञाः ॥

इस तैलके सेवन करनेसे सम्पूर्ण शरीरकी पीडा, लकवा, आधेशरीरका रहजाना, एक हाथका रहजाना, एक पांवका रहजाना, निरन्तर शरीरका कांपना,ग्रीवाका रहजाना,टोडीका जकडजाना, कमरकी पीडा, संधिवात (जोडोंकी पीडा) कुबरापन, लूलापन, जिह्वाकी जडता,हाथ पांवका कांपना,शिरकी पीडा,घुटनोंकी पीडा, अर्दितरोग,पुरानीसे पुरानी सूजन (वरम) चोटकी पीडा और सब प्रकारके वात रोग नष्ट होते हैं।जो वातरोग किसी औषधिसे आरोग्य नहीं होते वह इससे निश्चय आरोग्य होजाते हैं । मू० २० तोलेकी सीसिका २) रु० डा० म० ॥) आ०

हमारा महानारायण तैल सिर्फ इसी देसमें प्रसिद्ध है ऐसा नहीं बल्के इसका प्रचार सम्पूर्ण हिन्दोस्थान, आसाम, बर्म्मा, सीलोन और आफ्रिका आदिदेशोंमें भी दिनोंदिन बढता जाताहै। हमारे पास हजारों सार्टीफिकट मौजूद हैं ।

VAIDYA SHANKAR LAL HARI SHANKAR,
AYURVEDODHARAK,
Medical Hall,
MORADABAD, U. P.

पता—वैद्य शङ्करलाल हरिशङ्कर,
आयुर्वेदोद्धारक—औषधालय,
मुरादाबाद. यू. पी.

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुकी-

विषयानुक्रमणिका ।

विषयः पृष्ठांकः

कर्पूरादिवर्गः ।

कर्पूरनामानि.... ... ... १
कर्पूरगुणाः २
कर्पूरलक्षणम्... ... ... ३
पोतास--भीमसेनी--वरास--कर्पूरगुणाः ४
शंकरावासकर्पूरगुणाः ... ... ,,
हिमकर्पूरगुणाः ५
उदयभास्करकर्पूरगुणाः... ... ,,
पर्णकर्पूरगुणाः ... ... ,,
चीनकर्पूरनामानि ... ... ,,
चीनकर्पूरगुणाः ... ... ,,
कस्तूरीनामानि ... ६
कस्तूरीभेदाः ... ७
कस्तूरीपंचभेदाः ... ,,
कस्तूरीपरीक्षा ८
कस्तूरिकागन्धभेदलक्षणम् ... ,,
दुष्टकस्तूरीलक्षणानि ... ९
दुष्टकस्तूरीपरीक्षा ... ... ,,
कस्तूरीगुणाः... ... ... १०
गन्धमार्जारवीर्यम् ११
लताकस्तूरीगुणाः ... ... ,,
कुंकुमनामानि १२
कुंकुमभेदाः १३
कुंकुमलक्षणम् १४
कुंकुमगुणाः... ... ... ,,
तृणकुंकुमनामानि १५
तृणकुंकुमगुणाः ... ... ,,
चन्दननामानि ... ... ,,

विषयः पृष्ठांकः

चन्दनलक्षणम् १६
चन्दनगुणाः १७
चन्दनभेदाः १८
वेट्टचन्दनगुणाः ... ... ,,
सुक्कडिचन्दनगुणाः १९
शम्बरचन्दननामानि ... ... ,,
शम्बरचन्दनगुणाः ... ... ,,
पीतचन्दननामानि ... ... ,,
पीतचन्दनगुणाः ... ... ,,
रक्तचन्दननामानि २०
रक्तचन्दनगुणाः ... ... ,,
पतंगनामानि २१
पतंगगुणाः ... ... ,,
बर्बरचन्दननामानि २२
बर्बरगुणाः ... ... ,,
हरिचन्दननामानि ... ... ,,
हरिचन्दनगुणाः ... ... ,,
अगरुनामानि... ... ... २३
अगरुगुणाः २४
कृष्णागरुनामानि ... ... ,,
कृष्णागरुगुणाः ... ... ,,
काष्ठागरुगुणाः २५
दाहागरुनामानि ... ... ,,
दाहागरुगुणाः... ... ... ,,
मङ्गलागरुनामानि ... ... ,,
मङ्गलागरुगुणाः ... ... ,,
देवदारुनामानि २६
देवदारुगुणाः... ... ... ,,
देवदारुभेदाः... ... ... ,,

विषयः ... पृष्ठांकः

स्निग्धदारुगुणाः २६
काष्ठदारुगुणाः २७
चीडानामानि ... ... ,,
चीडागुणाः ... ... ,,
सरलनामानि २८
सरलगुणाः ... ... ,,
तगरनामानि २९
तगरगुणाः ३०
पद्मकनामानि ... ... ,,
पद्मकगुणाः ३१
गुग्गुलुनामानि... ... ... ,,
गुग्गुलोः प्रकारभेदलक्षणगुणाः ... ३२
गुग्गुलुगुणाः ३३
गुग्गुलोत्पत्तिः... ... ... ३४
गुग्गुलुपरीक्षा ... ... ,,
अस्यशोधनविधिः ३५
गन्धराजगुग्गुलुनामानि ३६
गन्धराजगुग्गुलुगुणाः ... ... ,,
भूमिजगुग्गुलुनामानि ... ,,
भूमिजगुग्गुलुगुणाः ,,
रालनामानि ३७
रालगुणाः ३८
रालतैलगुणाः ३९
कुन्दुरुनामानि ... ... ,,
कुन्दुरुगुणाः ... ... ,,
श्रीवासनामानि ४०
श्रीवासगुणाः ४१
श्रीवाससारगुणाः ४२
सिह्लकनामानि ... ... ,,
सिह्लकगुणाः ४३
लवंगनामानि ४४
लवंगगुणाः ४५
लवंगतैलगुणाः ... ... ,,
जातीफलनामानि ४६
जातीफललक्षणम् ४७
जातीफलगुणाः ... ... ,,

विषयः ... पृष्ठांकः

जातीफलतैलगुणाः ४७
जातीपत्रीनामानि ४८
जातीपत्रीगुणाः ... ... ,,
स्थूलैलानामानि ४९
स्थूलैलागुणाः ५०
सूक्ष्मैलानामानि ५१
सूक्ष्मैलागुणाः ५२
द्विविधैलागुणाः ... ... ,,
कङ्कोलनामानि ५३
कंकोलगुणाः ५४
नागकेशरनामानि ... ... ,,
नागकेशरगुणाः ५५
त्वचगुडत्वङ्नामानि ५६
दारुसितागुणाः ५७
त्वचतैलगुणाः ५८
तेजपत्रनामानि ... ... ,,
तेजपत्रगुणाः ५९
तालीसपत्रनामानि ६०
तालीसपत्रगुणाः ६१
जटामांसीनामानि ... ... ,,
गन्धमांसीनामानि ६२
आकाशमांसीनामानि ... ... ,,
जटामांसीगुणाः ६३
गन्धमांसीगुणाः ... ... ,,
आकाशमांसीगुणाः ... ... ,,
प्रियंगुनामानि ६५
प्रियंगुगुणाः ... ... ,,
अन्यसुगन्धप्रियंगुगुणाः ६६
उशीरनामानि ६७
उशीरगुणाः ६८
गोरोचनानामानि ... ... ,,
गोरोचनागुणाः ६९
नखनामानि ७०
नखपञ्चभेदाः ... ... ,,

विषयः ... पृष्ठांकः
नखशुद्धिः ७१
द्विविधनखगुणाः ... ... ”
नखगुणाः ... ... ”
व्याघ्रनखगुणाः ७२
द्विविधनखगुणाः ... ... ”
वालकनामानि ... ... ”
वालकगुणाः ७३
मुस्तकनामानि ७४
नागरमुस्तकनामानि ... ... ”
भद्रमुस्तकनामानि ... ... ”
श्रेष्ठमुस्तकलक्षणम् ७५
श्रेष्ठमुस्तकशुद्धिः ... ... ”
भद्रमुस्तकगुणाः ... ... ”
मुस्तकगुणाः ... ... ”
नागरमुस्तकगुणाः ७६
भद्रमुस्तकगुणाः ... ... ”
कैवर्तकमुस्तकनामानि ... ... ”
कैवर्त्तकमुस्तकगुणाः ... ... ”
शैलेयनामानि ७७
शैलेयगुणाः ७८
रेणुकानामानि ... ... ”
रेणुकागुणाः ७९
ग्रन्थिपर्णनामानि ८०
ग्रन्थिपर्णलक्षणम् ... ... ”
ग्रन्थिपर्णगुणाः ... ... ”
स्थौणेयकनामानि ... ... ”
स्थौणेयकगुणाः ... ... ”
चोरकनामानि ८१
चोरकगुणाः ... ... ”
कुष्ठनामानि ८२
कुष्ठगुणाः ... ... ”
कर्चूरनामानि ८३
कर्चूरगुणाः ८४
गन्धपलाशीनामानि ८५
गन्धपलाशीगुणाः ... ... ”
मुरानामानि ८६

विषयः ... पृष्ठांकः
मुरागुणाः ८६
लामज्जकनामानि ८७
श्रेष्ठलामज्जकलक्षणम् ... ... ”
लामज्जकगुणाः ... ... ”
स्पृक्कानामानि ८८
स्पृक्कागुणाः ८९
एलावालुकनामानि ९०
एलावालुकगुणाः ... ... ”
प्रपौण्डरीकनामानि ९१
प्रपौण्डरीकगुणाः ... ... ”
पर्पटीनामानि ९२
पर्पटीगुणाः ... ... ”
नलिकानामानि ९३
नलिकागुणाः ... ... ”
पुदिनानामानि ... ... ”
पुदिनागुणाः ९४

हरीतक्यादिवर्गः ।

हरीतकीनामानि ९५
हरीतकीसप्तधा ९७
सातोंके पृथक्पृथक्लक्षण ... ”
जन्मस्थान ... ... ”
सातोंके भिन्नभिन्न प्रयोग ... ”
दोप्रकारकीचेतकीहरडकास्वरूप ९८
सर्वप्रकारकीहरड़ोंकेरेचनगुण ... ”
चेतकीहरडोंकेरेचनगुण ... ”
विजयाहरडकीप्रशंसा ९९
हरीतकीगुणाः ... ... ”
हरीतक्याःपञ्चरसावस्थितिनिर्णयः १०१
श्रेष्ठहरीतकीलक्षणम् ... ... ”
चर्वितादिहरीतकीगुणाः ... ”
भक्तान्वितहरीतकीगुणाः १०२
मुक्तोपरिसेवितहरीतकीगुणाः ... ”
हरीतक्याविशेषगुणाः ... ... ”
ऋतुहरीतकीगुणाः ... ... ”
हरीतक्याः श्रेष्ठगुणत्वम् ... ”

विषयः पृष्ठांकः

अन्यद्रव्ययुक्तहरीतकी ... १०३
हरीतकीसेवननिषेधः ... ... ,,
हरीतकीशब्दस्यनिरुक्तिः ... १०४
हरीतकीबीजगुणाः ... ... ,,
बिभीतकीनामानि ... ... ,,
बिभीतकीगुणाः १०५
आमलकीनामानि १०७
आमलकीगुणाः १०८
शुष्कामलकीगुणाः ... ... ,,
शुष्कामलकीमज्जागुणाः ... १०९
शुण्ठीनामानि ... ... ,,
शुण्ठीगुणाः ११०
आर्द्रकनामानि १११
आर्द्रकगुणाः ११२
द्रव्यगुणाः ११३
निषेधः ... ... ,,
मरिचनामानि ११४
सितमरिचनामानि ... ... ,,
मरिचगुणाः ११५
सितमरिचगुणाः ... ... ,,
अन्येचमरिचगुणाः ... ... ,,
पिप्पलीनामानि ११६
पिप्पलीगुणाः ११७
पिप्पलीमूलनामानि ११८
पिप्पलीमूलगुणाः ११९
चविकानामानि ... ... ,,
चविकागुणाः १२०
गजपिप्पलीनामानि १२१
गजपिप्पलीगुणाः ... ... ,,
सैंहलीपिप्पलीनामानि १२२
सैंहलीपिप्पलीगुणा ... ... ,,
वनपिप्पलीनामानि ... ... ,,
वनपिप्पलीगुणाः १२३
मर्कटीपिप्पलीगुणाः ... ,,
चित्रकनामानि ... ... ,,
रक्तचित्रकनामानि ... ... ,,
चित्रकगुणाः १२४

विषयः पृष्ठांकः

रक्तचित्रकगुणाः १२५
कृष्णचित्रकगुणाः ... ... ,,
शतपुष्पानामानि १२६
शतपुष्पागुणाः १२७
शतपुष्पाकृतिः ... ... ,,
मधुरिकानामानि ... ... ,,
मधुरिकागुणाः १२८
मधुरिकाजलगुणाः १२९
मेथिकानामानि ... ... ,,
मेथिकागुणाः १३०
चन्द्रशूरनामानि १३१
चन्द्रशूरगुणाः १३२
यवानीनामानि ... ... ,,
यवानीगुणाः १३३
अजमोदानामानि १३४
अजमोदागुणाः १३५
पारसीकाजमोदानामानि ... १३६
पारसीकाजमोदागुणाः... ... ,,
खुरासानीयवानीनामानि ... ,,
खुरासानीयवानीगुणाः ... १३७
साधारणजीरकनामानि ... १३८
गौरजीरकनामानि १३९
सामान्यजीरकगुणाः ... ... ,,
श्वेतजीरकगुणाः ... ... ,,
कृष्णजीरकनामानि १४०
कृष्णजीरकगुणाः १४१
पीतजीरकगुणाः ... ... ,,
द्विविधजीरकगुणाः ... ,,
स्थूलजीरकनामानि १४२
स्थूलजीरकगुणाः ... ... ,,
त्रिविधजीरकगुणाः १४३
अरण्यजीरकनामानि ... ... ,,
अरण्यजीरकगुणाः ... ... ,,
धन्याकनामानि ... १४४
धन्याकगुणाः १४५
हिंगुनामानि ... ... ,,
हिंगुगुणाः १४६

विषयः पृष्ठांकः
हिंगुशोधनविधिः १४७
हिंगुपत्रीनामानि १४८
हिंगुपत्रीगुणाः ... ... ”
नाडीहिंगुनामानि ... ... ”
नाडीहिंगुगुणाः १४९
वचानामानि ... ... ”
पारसीकवचानामानि १५०
वचागुणाः ... ... ”
शुक्लवचागुणाः १५१
महाभरीवचागुणाः ... ... ”
वचाद्भुतगुणाः ... ... ”
कुलिञ्जननामानि १५२
कुलिञ्जनगुणाः ... ... ”
चोपचीन्युत्पत्तिलक्षणम् ... १५३
चोपचीनीगुणाः १५४
निषेधः १५५
चोपचीनीलक्षणम् ... ... ”
आकारकरभनामानि ... ... ”
आकारकरभगुणाः १५६
हपुषानामानि ... ... ”
हपुषागुणाः... ... ... ”
स्वल्पहपुषागुणाः ... ... ”
विडंगनामानि १५७
बिडंगगुणाः ... ... ”
तुम्बुरुनामानि १५८
तुम्बुरुगुणाः... ... ... ”
वंशलोचननामानि १५९
वंशलोचनगुणाः १६०
तवक्षीरनामानि ... ... ”
तवक्षीरगुणाः १६१
समुद्रफेननामानि १६२
समुद्रफेनगुणाः ... ... ”

अष्टवर्गः ।

जीवकनामानि १६३
जीवकगुणाः ... ... ”
जीवकस्वरूपम् १६४
विषयः पृष्ठांकः
ऋषभकनामानि १६४
ऋषभकगुणाः ... ... ”
जीवकर्षभकगुणाः १६५
जीवकर्षभकस्वरूपम् ... ... ”
मेदानामानि ... ... ”
मेदागुणाः ... ... ”
मेदालक्षणम् १६६
महामेदानामानि ... ... ”
महामेदागुणाः ... ... ”
महामेदामेदागुणाः ... ... ”
महामेदालक्षणम् १६७
ऋद्धिनामानि ... ... ”
ऋद्धिगुणाः ... ... ”
वृद्धिनामानि १६८
वृद्धिगुणाः ... ... ”
ऋद्धिवृद्ध्युत्पत्तिलक्षणम् ... ”
काकोलीनामानि ... ... ”
काकोलीगुणाः ... ... ”
क्षीरकाकोलीनामानि १६९
क्षीरकाकोलीगुणाः ... ... ”
द्विविधकाकोलीगुणाः ... ... ”
काकोलीक्षीरकाकोल्योरुत्पत्तिलक्षणम् १७०
अष्टवर्गनामानि ... ... ”
अष्टवर्गगुणाः ... ... ”
एतस्यप्रतिनिधीनाह १७१
यष्टीमधुनामानि ... ... ”
यष्टीमधुगुणाः १७२
जलयष्ट्यर्कगुणाः १७३
कम्पिल्लनामानि ... ... ”
कम्पिल्लगुणाः १७४
आरग्वधनामानि १७५
आरग्वधगुणाः १७६
आरग्वधफलगुणाः ... ... ”
अस्यपत्रगुणाः ... ... ”
आरग्वधपुष्पगुणाः ... ... ”
आरग्वधमज्जागुणाः १७७

पिषयः	पृष्ठांकः
आरग्वधमूलगुणाः	१७७
कर्णिकारगुणाः	"
कटुकानामानि	"
कटुकागुणाः	१७९
कटुकाशोधनविधिः	"
चिरतिक्तनामानि	"
नेपालनिम्बनामानि	१८०
भूनिम्बगुणाः	"
नेपालनिम्बगुणाः	१८१
कुटजनामानि	"
कुटजगुणाः	१८२
श्वेतकुटजगुणाः	"
कुटजपुष्पगुणाः	"
कुटजशिम्बीशाकगुणाः ...	१८३
अन्यच्चरवग्गुणाः	"
इन्द्रयवनामानि	"
इन्द्रयवगुणाः	"
मदनफलनामानि	१८४
मदनफलगुणाः	१८५
रास्नानामानि	१८६
रास्नायाःप्रकारभेदाः	१८७
रास्नागुणाः	"
नाकुलीनामानि	१८८
नाकुलीगुणाः	१८९
माचिकानामानि	१९०
माचिकागुणाः	"
तेजोवतीनामानि	"
तेजोवतीगुणाः	१९१
ज्योतिष्मतीनामानि	"
महाज्योतिष्मतीनामानि ...	१९२
ज्योतिष्मतीगुणाः	"
पुष्करमूलनामानि	१९३
पुष्करमूलगुणाः ... :	१९४
स्वर्णक्षीरीनामानि	"
स्वर्णक्षीरीगुणाः	१९५
अस्याःस्वरूपम्	१९६
कर्कटशृंगीनामानि	"
कर्कटशृंगीगुणाः	१९७

विषयः	पृष्ठांकः
कट्फलनामानि	१९७
कट्फलगुणाः	१९८
भार्गीनामानि	१९९
भार्गीगुणाः	"
भार्गीपत्रगुणाः	२००
पाषाणभेदनामानि	"
पाषाणभेदगुणाः	२०१
क्षुद्रपाषाणभेदगुणाः	"
धातकीनामानि	"
धातकीगुणाः	२०२
मञ्जिष्ठानामानि	२०३
मंजिष्ठागुणाः	२०४
मंजिष्ठाशाकगुणाः	२०५
कुसुम्भनामानि	"
कुसुम्भगुणाः	२०६
कुसुम्भपुष्पगुणाः	"
कुसुम्भपत्रशाकगुणाः	"
कुसुम्भबीजगुणाः	२०७
कुसुम्भतैलगुणाः	"
लाक्षानामानि	"
लाक्षागुणाः	२०८
आलक्तकगुणाः	"
हरिद्रानामानि	२०९
हरिद्रागुणाः	२१०
कर्पूरहरिद्रानामानि	"
कर्पूरहरिद्रागुणाः	२११
वनहरिद्रानामानि	"
वनहरिद्रागुणाः	२१२
दारुहरिद्रानामानि	"
दारुहरिद्रागुणाः	२१३
दार्विकाथोद्भवरसांजननामानि	
अस्याःकषायः	२१४
अस्यागुणाः	"
अस्याःशोधनविधिः	"
वाकुचीनामानि	२१५
वाकुचीगुणाः	२१६
वाकुचीभेदवाकुचीगुणाः ...	"
वाकुचीस्वरूपम्	"

विषयः पृष्ठाङ्कः
चक्रमर्द्दनामानि २१७
चक्रमर्दगुणाः ... ... ,,
अतिविषानामानि २१९
अतिविषागुणाः ... ... ,,
अतिविषाप्रकारभेदाः २२०
लोध्रनामानि ... ... ,,
लोध्रगुणाः २२१
भल्लातकनामानि २२२
भल्लातकगुणाः ... ,,
भल्लातकफलगुणाः २२३
पक्वभल्लातकगुणाः ... ... ,,
अस्यफलत्वग्गुणाः ... ... ,,
अस्यमज्जागुणाः २२४
अस्यवृन्तगुणाः ,,
भल्लातकशोधनविधिः ... ... ,,
नदीभल्लातकनामानि ... ... ,,
नदीभल्लातकगुणाः २२५
विजयानामानि ... ... ,,
गञ्जानामानि ... ... ,,
भङ्गागुणाः ... ... ,,
गञ्जागुणाः २२६
भङ्गोत्पत्तिः ... ... ,,
खाखसफलनामानि २२९
खाखसफलगुणाः २३०
अहिफेननामानि २३१
अहिफेनगुणाः ... ... ,,
खसखसनामानि २३२
खसखसगुणाः २३३
यवक्षारनामानि ... ... ,,
यवक्षारगुणाः २३४
स्वर्जिकाक्षारनामानि ... ... ,,
स्वर्जिकाक्षारगुणाः २३५
टङ्कणक्षारनामानि ... ... ,,
टङ्कणक्षारगुणाः २३६
श्वेतटङ्कणगुणाः २३७
टङ्कणशोधनविधिः ... ... ,,
सैन्धवनामानि २३८

विषयः पृष्ठाङ्कः
सैन्धवगुणाः २३९
साम्भरीलवणनामानि ... ... ,,
साम्भरीलवणगुणाः २४०
समुद्रलवणनामानि ... ... ,,
समुद्रलवणगुणाः ... ... ,,
विड्लवणनामानि २४१
विड्लवणगुणाः २४२
सौवर्चललवणनामानि ... ... ,,
सौवर्चललवणगुणाः २४३
कांचलवणनामानि ... ... ,,
कांचलवणगुणाः २४४
औद्भिदनामानि ... ... ,,
औद्भिदगुणाः ... ... ,,
औषरलवणनामानि ... ... ,,
औषरलवणगुणाः २४५
रोमकलवणगुणाः ... ... ,,
द्रौणीलवणनामानि ... ... ,,
द्रौणीलवणगुणाः ... ... ,,
नरसारनामानि ... ... ,,
नरसारगुणाः २४६
अस्यप्रस्तुतप्रकरणम् ... ... ,,
अस्यशोधनविधिः २४७
सूर्यक्षारनामानि ... ... ,,
सूर्यक्षारगुणाः ३
सर्वक्षारगुणाः २४८
लवणक्षारगुणाः ... ... ,,
चणकाम्लगुणाः ... ... ,,
चुक्रगुणाः ... ... ,,

गुडूच्यादिवर्गः ।

गुडूच्या उत्पत्तिः २४९
गुडूचीनामानि २५०
कन्दगुडूचीनामानि २५१
गुडूचीगुणाः ... ... ,,
गुडूचीपत्रशाकगुणाः २५२
गुडूचीसत्त्वगुणाः ... ... ,,
कन्दगुडूचीगुणाः २५३

विषयः	पृष्ठांकः
गिलोयकेसत्त्वबनानेकी विधि ...	२५३
नागवल्लीनामानि	"
ताम्बूलगुणाः	२५४
श्रीवाटीपर्णगुणाः	२५५
अम्लवाटीपर्णगुणाः	"
खातसीपर्णगुणः:	"
जीर्णपर्णगुणाः	"
मालवोद्भवांगरापर्णगुणाः ...	"
आंध्रदेशोद्भवपोटकुलीपर्णगुणाः ...	२५६
हैसणीयापर्णगुणाः	"
नवीनप्राचीनपर्णगुणाः	"
कृष्णशुभ्रपर्णगुणाः	"
पर्णस्यशिरादिगुणाः	२५७
पर्णस्यशिरादिफलगुणाः ...	"
पर्णरहितपूगगुणाः ...	"
पर्णभक्षणनिषेधः	"
बिल्वनामानि	२५८
बिल्वगुणाः	"
अम्बेचपत्रगुणाः	२५९
बिल्वपुष्पगुणाः	"
बिल्वमज्जाभवतैलगुणाः	२६१
बिल्वपेषिकागुणाः	"
कांजिकस्थितबिल्वगुणाः... ...	"
पक्वबिल्वस्यदोषोक्तिः ...	"
गम्भारीनामानि ...	"
गम्भारीगुणाः ...	"
गम्भारीफलगुणाः	"
अपिचगम्भारीगुणाः	"
गम्भारीपुष्पगुणाः	"
गम्भारीमूलगुणाः	२६४
पाटलानामानि	२६५
श्वेतपाटलाकाष्ठपाटलानामानि ...	"
पाटलागुणाः ...	२६६
श्वेतपाटलागुणाः	२६७
भूमिपाटलागुणाः	"
क्षुद्रपाटलागुणाः	"
वल्लीपाटलागुणाः	"

विषयः	पृष्ठांकः
अग्निमन्थनामानि	"
क्षुद्राग्निमन्थनामानि	२६८
अग्निमन्थगुणाः	"
क्षुद्राग्निमन्थगुणाः	२६९
तेजोमन्थगुणाः	"
श्योनाकनामानि	२७०
श्योनाकभेदनामानि	"
श्योनाकगुणाः	२७१
अस्यकोमलफलगुणाः	"
श्योनाकतरुणफलगुणाः ...	२७२
द्विविधश्योनाकगुणाः	"
शालिपर्णीनामानि	"
शालिपर्णीगुणाः	२७३
पृश्निपर्णीनामानि	२७४
पृश्निपर्णीगुणाः	२७५
शालपर्णीपृश्निपर्ण्योर्गुणाः	"
बृहतीनामानि	"
बृहतीगुणाः	२७६
बृहतीफलगुणाः	२७७
क्षुद्रबृहतिकागुणाः	"
श्वेतबृहतीगुणाः	"
बृहतीभेदगुणाः	"
कण्टकारीनामानि	"
कण्टकारीगुणाः	२७८
कण्टकारीफलगुणाः	२७९
श्वेतकण्टकारीगुणाः	२८०
गोक्षुरनामानि	"
क्षुद्रगोक्षुरनामानि	"
द्विविधगोक्षुरगुणाः	२८१
गोक्षुरशाकगुणाः	२८२
गोक्षुरबीजगुणाः	"
गोक्षुरक्षारगुणाः	"
पंचमूलगुणाः	२८३
बृहत्पंचमूलगुणाः	"
दशमूलगुणाः	"
जीवन्तीनामानि	"
जीवंतीगुणाः	२८४

विषयः पृष्ठांकः
बृहज्जीवन्तीनामानि २८५
बृहज्जीवन्तीगुणाः .... ,,
स्वर्णजीवन्तीनामानि ... ... ,,
स्वर्णजीवन्तीगुणाः २८६
तिक्तजीवन्तीनामानि ... ... ,,
तिक्तजीवन्तीगुणाः ... ... ,,
विषमुष्टिगुणाः २८७
मुद्गपर्णीनामानि ... ... ,,
मुद्गपर्णीगुणाः ... ... ,,
माषपर्णीनामानि २८८
माषपर्णीगुणाः ... २८९
एरण्डनामानि २९०
रक्तैरण्डनामानि ... ... ,,
स्थूलैरण्डनामानि २९१
द्विविधैरण्डगुणाः ... ... ,,
एरण्डपत्रगुणाः ... ... ,,
एरण्डफलगुणाः २९२
एरण्डमज्जागुणाः ... ... ,,
एरण्डमूलगुणाः ... ... ,,
एरण्डपुष्पगुणाः ... ... ,,
श्वेतैरण्डगुणाः ... ... ,,
रक्तैरण्डगुणाः २९३
एरण्डतैलगुणाः २९४
अर्कनामानि २९५
श्वेतार्कनामानि २९६
अर्कगुणाः ... ... ,,
अर्कक्षीरगुणाः २९७
अर्कमूलस्यत्वग्गुणाः... ... ,,
द्विविधार्कगुणाः ... ... ,,
स्नुहीनामानि २९८
स्नुहीगुणाः २९९
स्नुहीदुग्धगुणाः ३००
स्नुहीपत्रगुणाः ... ,,
सातलानामानि ३०१
सातलागुणाः ३०२
अस्थिसंहारीनामानि... ... ३०३

विषयः पृष्ठांक
अस्थिसंहारगुणाः ३०३
कलिकारीनामानि ३०५
कलिकारीगुणाः ३०६
करवीरनामानि ३०७
श्वेतादिकरवीरगुणाः... ... ३०८
रक्तकरवीरनामानि ... ... ,,
धत्तूरनामानि ३०९
धत्तूरगुणाः ३१०
कृष्णधत्तूरनामानि ३११
राजधत्तूरनामानि ... ... ,,
वासकनामानि ३१३
वासकगुणाः ३१४
पर्पटनामानि ... ,
पर्पटगुणाः ३१५
निम्बनामानि ३१६
निम्बगुणाः ३१७
निम्बकोमलपल्लवगुणाः ... ३१८
निम्बसामान्यपत्रगुणाः ... ,,
निम्बजीर्णपत्रगुणाः ... ... ,,
निम्बपुष्पगुणाः ... ... ,,
निम्बसूक्ष्मशाखादिगुणाः ... ,,
निम्बपक्वफलगुणाः ३१९
निम्बबीजस्यमज्जागुणाः ... ,,
निम्बतैलगुणाः ... ... ,,
निम्बपञ्चांगगुणाः ... ... ,,
महानिम्बनामानि ३२०
महानिम्बगुणाः ... ... ,,
कैडर्यनामानि ३२१
कैडर्यगुणाः ... ... ,,
पारिभद्रनामानि ३२२
पारिभद्रगुणाः ... ... ,,
काञ्चनारनामानि ... ... ,,
कोविदारनामानि ३२३
काञ्चनारगुणाः ३२४
श्वेतकाञ्चनारगुणाः ३२५
कोविदारगुणाः ... ... ,,

विषयः ... पृष्ठांकः
पीतकाश्चमारगुणाः ३१५
काश्चनीगुणाः ... ... "
शोभांजननामानि ३२६
श्वेतशिग्रुना० ... ... "
रक्तशिग्रुना० ... ... "
शोभाञ्जनगुणाः ... ... "
श्वेतशिग्रुगुणाः ३२७
रक्तशिग्रुगुणाः ... ... "
शिग्रुबीजगुणाः ३२८
शिग्रुशाकगुणाः ... ... "
शिग्रुपुष्पगुणाः ... ... "
शिग्रुफलगुणाः ... ... "
अपराजितानामानि ३२९
नीलापराजितान० ... ... "
अपराजितागुणाः ३३०
कृष्णगोकर्णिकागुणाः ... ... "
सिन्दुवारनामानि ...३३१
नीलसिन्दुवारना० ... ... "
सिन्दुवारगुणाः ३३२
कर्त्तरीनिर्गुण्डीगुणाः ३३३
अरण्यनिर्गुण्डीगुणाः ... ... "
कुटजनामानि ३३४
कुटजगुणाः ३३५
करञ्जनामानि ... ... "
करञ्जगुणाः ३३७
करञ्जतैलगुणाः ३३८
महाकरञ्जगुणाः ... ... "
घृतकरञ्जगुणाः ... ... "
गुच्छकरञ्जगुणाः ... ... "
पूतिकरञ्जगुणाः ३३९
पूतिकरञ्जपत्रगुणाः ... ... "
कण्टकरञ्जनामानि ... ... "
कण्टकरञ्जगुणाः ३४०
गुञ्जानामानि ... ... "
श्वेतगुञ्जानामानि ३४१
गुञ्जागुणाः ... ... "
द्विविधगुञ्जागुणाः ... ३४२

विषयः ... पृष्ठांकः
कपिकच्छुनामानि ... :३४३
कपिकच्छुगुणाः ... ३४४
कपिकच्छुबीजगुणाः... ... "
लघुकपिकच्छुगुणाः ... ... "
मांसरोहिणीनामानि... ... ३४५
मांसरोहिणीगुणाः ... ... "
रोहिणीगुणाः ३४६
द्विविधरोहिणीगुणाः ... ... "
चिरहक्षगुणाः ... ... "
टंकारीगुणाः ... ... "
वेतसनामानि ३४७
जलवेतसनामानि ... ... "
वेतसगुणाः ... ... "
जलवेतसगुणाः ३४९
द्विविधवेतसगुणाः ... ... "
बृहद्वेत्रगुणाः ... ... "
बृहज्जलवेत्रगुणाः ... ... "
हिज्जलनामगुणाश्च ३५०
अंकोटनामानि ... ... "
अंकोटगुणाः ... ... "
बलानामानि ३५२
बलागुणाः ... ... "
बलाबीजगुणाः ३५३
महाबलानामानि ... ... "
महाबलागुणाः ३५४
अतिबलानामानि ... ... "
अतिबलागुणाः ३५५
त्रिविधबलागुणाः ... ... "
नागबलानामानि ... ... "
नागबलागुणाः ३५६
नागबलाफलगुणाः ... ... "
बृहन्नागबलागुणाः ... ... "
चतुर्विधबलागुणाः ३५७
लक्ष्मणानामानि ... ...
लक्ष्मणागुणाः ३५८
स्वर्णवल्लीनामगुणाश्च... ... "
कार्पासीनामानि ... "

विषयः ... पृष्ठांकः
वनकार्पासीना० ... ... ३५९
कालाञ्जनीना० ... ... ,,
कार्पासीगुणाः ३६०
वनकार्पासीगुणाः ... ... ,,
कालांजनीगुणाः ... ... ,,
वंशनामानि ३६१
वंशगुणाः ३६२
वंशकरीरगुणाः ... ... ,,
वंशयवगुणाः ... ... ,,
द्विविधवंशगुणाः ३६३
नलनामानि ... ... ,,
देवनलनामानि ... ... ,,
नलगुणाः ३६४
देवनलगुणाः ३६५
भद्रमुञ्जमुञ्जनामानि ... ... ,,
द्विविधमुञ्जगुणाः ... ... ,,
काशनामानि ३६६
काशगुणाः ३६७
गुन्द्रनामानि ... ... ,,
गुन्द्रगुणाः ... ... ,,
एरकानामानि ३६८
एरकागुणाः ... ... ,,
कुशदर्भनामानि ... ... ,,
द्विविधदर्भगुणाः ३६९
कत्तृणनामानि ... ... ,,
कत्तृणगुणाः ३७०
दीर्घरोहिषनामानि ३७१
दीर्घरोहिषगुणाः ... ... ,,
भूस्तृण नामानि ... ... ,,
भूस्तृणगुणाः ... ... ,,
सुगन्धभूस्तृणनामानि ३७२
सुगन्धभूस्तृणगुणाः ... ... ,,
बल्वजातृणनामानि ३७३
बल्वजातृणगुणाः ... ... ,,
कषणतृणनामानि ... ... ,,
कषणतृणगुणाः ... ... ,,
इक्षुदर्भनामानि ... ... ,,

विषयः ... पृष्ठांकः
इक्षुदर्भागुणाः ३७३
गोमूत्रिकातृणनामानि ... ... ,,
गोमूत्रिकातृणगुणाः ... ... ,,
शिलिन्ध्रकातृणनामानि ३७४
शिलिन्ध्रकातृणगुणाः ... ... ,,
निःश्रेणिकानामानि ... ... ,,
तिःश्रेणिकागुणाः ... ... ,,
अरडीतृणनामानि ... ... ,,
अरडीतृणगुणाः ... ... ,,
मञ्जरतृण नामानि ... ... ,,
मञ्जरतृणगुणाः ... ... ,,
तृणाख्य नामानि ३७५
तृणाख्यगुणाः ... ... ,,
वंशपत्रीतृणनामानि ... ... ,,
वंशपत्रीतृणगुणाः ... ... ,,
मन्थानकतृणनामानि ... ... ,,
मन्थानकतृणगुणाः ... ... ,,
पल्लिवाहतृणनामगुणाश्च ... ,,
लवणतृणनामानि ... ... ,,
लवणतृणगुणाः ३७६
पण्यन्धातृणनामानि ... ... ,,
पण्यन्धातृणगुणाः ... ... ,,
गुण्डतृणनामानि ... ... ,,
वृत्तगुण्डनामानि ... ... ,,
वृत्तगुण्डगुणाः ... ... ,,
चण्डिकातृणनामानि ३७७
चण्डिकातृणगुणाः ... ... ,,
गुण्डासिनीतृणनामानि ... ,,
गुण्डासिनीतृणगुणाः ... ... ,,
शूलीतृणनामानि ... ... ,,
शूलीतृणगुणाः ... ... ,,
नीलदूर्वानामानि ३७८
श्वेतदूर्वानामानि ... ... ,,
गण्डदूर्वानामानि ... ... ,,
सामान्यदूर्वागुणाः ३७९
नीलदूर्वागुणाः ... ,,

विषयः ... पृष्ठांकः
श्वेतदूर्वागुणाः ३८०
गण्डदूर्वागुणाः ... ... ,,
विदारीनामानि ३८१
क्षीरविदारीनामानि ... ... ,,
विदारीकन्दगुणाः ३८२
क्षीरविदारीगुणाः ३८३
मुसली नामानि ३८४
मुसलीगुणाः ... ... ,,
शतावरीमहाशतावरीनामानि ... ३८५
शतावरीगुणाः ... : ३८६
महाशतावरीगुणाः ३८७
द्विविधशतावरीगुणाः ३८८
शतावर्यङ्कुरगुणाः ... . ,,
अश्वगन्धानामानि ... ... ,,
अश्वगन्धागुणाः ३८९
पाठानामानि ३९०
पाठागुणाः ३९१
लघुपाठागुणाः ... ... ,,
त्रिवृन्नामानि ३९२
कृष्णत्रिवृन्नामानि ३९३
श्वेतत्रिवृन्नामानि ... ... ,,
रक्तत्रिवृन्नामानि ... ... ,,
सामान्यत्रिवृद्गुणाः ... ... ,,
श्यामत्रिवृद्गुणाः ३९४
श्वेतत्रिवृद्गुणाः ... ... ,,
रक्तत्रिवृद्गुणाः ... ... ,,
दन्तीनामानि ३९५
दन्तीगुणाः ३९६
वृहद्दन्तीनामानि ३९७
वृहद्दन्तीगुणाः ... ... ,,
वृहद्दन्तीबीजगुणाः ३९८
भद्रदन्तीनामानि ... ,,
भद्रदन्तीगुणाः ... ... ,,
जयपालनामानि ... ... ,,
जयपालगुणाः ३९९
जयपालबीजशोधनविधिः ... ,,

विषयः ... पृष्ठांकः
जयपालबीजतैलगुणाः ४००
इन्द्रवारुणीनामानि ... ... ,,
महेन्द्रवारुणीनामानि ४०१
इन्द्रवारुणीगुणाः ४०२
महेन्द्रवारुणीगुणाः ... ... ,,
स्वर्णपत्रीनामानि ४०३
स्वर्णपत्रीगुणाः ... ... ,,
कृष्णबीज नामानि ... ... ,,
कृष्णबीजगुणाः ४०४
नीलिकानामानि ... ... ,,
नीलिकागुणाः ४०५
महानीलीनामानि ... ... ,,
महानीलीगुणाः ४०६
शरपुंखानामानि ... ... ,,
श्वेतशरपुंखनामानि ... ... ,,
कण्ठपुंखनामानि ... ... ,,
शरपुंखागुणाः ४०७
कण्ठपुंखागुणाः ४०८
दुरालभानामानि ... ... ,,
दुरालभागुणाः ४०९
यवासनामानि ... ... ,,
यवासगुणाः ४१०
मुण्डीनामानि ४११
महामुण्डीनामानि ... ... ,,
मुण्डीगुणः ४१२
महाश्रवणिकागुणाः ... ... ,,
अपामार्गनामानि ४१३
अपामार्गगुणाः ४१४
रक्तापामार्गनामानि ४१५
रक्तापामार्गगुणाः ... ... ,,
द्विविधापामार्गगुणाः ४१६
कोकिलाक्षनामानि ... ... ,,
कोकिलाक्षगुणाः ४१७
कोकिलाक्षपत्रगुणाः ४१८
कोकिलाक्षबीजगुणाः ... ... ,,
घृतकुमारीनामानि ... ... ,,
घृतकुमारीगुणाः ४१९

विषयः ... पृष्ठांक
अस्यदण्डादिगुणाः ४१९
एलीयकनामानि ४२०
एलीयकगुणाः ... ... ”
क्षुद्रकेतकीनामानि ... ... ”
क्षुद्रकेतकीगुणाः ४२१
पाण्डुफलीनामानि ... ... ”
पाण्डुफलीगुणाः ... ... ”
पनसीनामानि ४२२
पनसीगुणाः ... ... ”
गङ्गाटीनामानि ... ... ”
गङ्गाटीगुणाः ... ... ”
श्वेतपुनर्नवानामानि ... ... ”
रक्तपुनर्नवाना० ... ... ४२३
नीलपुनर्नवाना० ... ... ”
श्वेतपुनर्नवागुणाः ४२४
रक्तपुनर्नवागुणाः ४२६
नीलपुनर्नवागुणाः ... ... ”
पुनर्नवापत्रशाकगुणाः ... ... ”
प्रसारणीनामानि ४२७
प्रसारणीगुणाः ... ... ”
शारिवानामानि ४२९
कृष्णशारिवाना० ... ... ”
श्वेतशारिवागुणाः ४३०
कृष्णशारिवागुणाः ... ... ”
द्विविधशारिवागुणाः ... ... ”
केशराज, भृङ्गराजनामानि ... ४३१
पीतभृङ्गराजना० ... ... ”
नीलभृङ्गराजना० ... ... ”
भृङ्गराजगुणाः ४३२
शणपुष्पीनामानि ४३३
शणनामानि ... ... ”
शणपुष्पीगुणाः ... ... ”
क्षुद्रशणपुष्पीगुणाः ४३४
महाश्वेतागुणाः ४३५
शणगुणाः ... ... ”
शणबीजगुणाः ... ... ”
त्रायमाणनामानि ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांक
त्रायमाणगुणाः ४३६
यवतिक्तानामानि ... ... ”
यवतिक्तागुणाः ४३७
लिङ्गिनीनामानि ४३८
लिङ्गिनीगुणाः ... ... ”
मूर्वानामानि ४३९
मूर्वागुणाः ... ... ”
काकमाचीनामानि ४४०
काकमाचीगुणाः ४४१
काकजंघानामानि ४४२
काकजंघागुणाः ४४३
काकनासानामा० ... ... ”
काकनासागुणाः ४४४
नागपुष्पीनामानि ... ... ”
नागपुष्पीगुणाः ४४५
मेषशृंगीनामानि ... ... ”
मेषशृंगीगुणाः ... ... ”
हंसपादीनामानि ४४६
हंसपादीगुणाः ४४७
सोमलतानामानि ... ... ”
सोमलतागुणाः ... ... ”
आकाशवल्लीनामानि ... ४४८
आकाशवल्लीगुणाः ४४९
पातालगरुडीनामानि ... ”
पातालगरुडीगुणाः ४५०
वन्दानामानि ... ... ”
वन्दागुणाः ४५१
वटपत्रीनामानि ४५२
वटपत्रीगुणाः ... ... ”
मत्स्याक्षीनामानि ... ... ”
मत्स्याक्षीगुणाः ... ... ”
सर्पाक्षीनामानि ४५३
सर्पाक्षीगुणाः ... ... ”
शंखपुष्पीनामानि ... ... ”
शंखपुष्पीगुणाः ४५४
श्वेतशंखपुष्पीगुणाः ४५५
अर्कपुष्पीनामानि ... ... ”

विषयः पृष्ठांकः

अर्कपुष्पीगुणाः ४५६
लज्जालुनामानि ... ... ,,
लज्जालुगुणाः ४५७
विपरीतलज्जालुनामानि ... ,,
विपरीतलज्जालुगुणाः ... ... ,,
अलम्बुषानामानि ४५८
अलम्बुषागुणाः ... ... ,,
दुग्धिकानामानि ... ... ,,
दुग्धफेनीना० ... ... ,,
नागार्जुनीना० ... ... ,,
दुग्धिकागुणाः ४५९
दुग्धफेनीगुणाः ... ... ,,
नागार्जुनीगुणाः ... ... ,,
भूम्यामलकीनामानि ४६०
भूम्यामलकीगुणाः ४६१
ब्राह्मीनामानि ... ... ,,
मण्डूकपर्णीनामानि ४६२
ब्राह्मीगुणाः ... ... ,,
मण्डूकपर्णीगुणाः ४६३
मण्डूकपर्ण्यर्कगुणाः ... ,,
द्रोणपुष्पीनामनि ... ... ,,
द्रोणपुष्पीगुणाः ... ... ,,
द्रोणपुष्पीपत्रगुणाः ४६५
आदित्यभक्तानामानि ... ... ,,
आदित्यभक्तागुणाः ४६६
ब्रह्मसुवर्चलागुणाः ... ... ,,
आदित्यपत्रगुणाः ४६७
वन्ध्याकर्कोटकीनामा ... ... ,,
वन्ध्याकर्कोटकीगुणाः ४६८
वन्ध्याकर्कोटकीकन्दगुणाः ... ४६९
मार्कण्डिकानामानिनि ... ,,
मार्कण्डिकागुणाः ... ,,
देवदालीनामानि ४७०
देवदालीगुणाः ... ... ,,
जलपिप्पलीनामानि ४७१
जलपिप्पलीगुणाः ४७२

विषयः पृष्ठांकः

गोजिह्वानामानि ४७३
गोजिह्वागुणाः ... ... ,,
नागदमनीनामानि ४७४
नागदमनीगुणाः ४७५
छिक्कनीनामानि ४७६
छिक्कनीगुणाः ... ... ,,
कुकुन्दरनामानि ४७७
कुकुन्दरगुणाः ... ... ,,
सुदर्शननामानि ४७८
सुदर्शनगुणाः ... ... ,,
आखुकर्णीनामानि ... ... ,,
आखुकर्णीगुणाः ४७९
बृहदाखुकर्णीगुणाः ४८०
मयूरशिखानामानि ... ... ,,
मयूरशिखागुणाः ... ... ,,
पुष्पवर्गः । ४८१
पुष्पनामानि ४८१
पुष्परसनामानि ... ... ,,
पुष्पधारणगुणाः ४८२
पुष्पद्रवगुणाः ... ... ,,
जातीनामानि ... ... ,,
जातीगुणाः ४८३
स्वर्णजातीगुणाः ... ... ,,
उपजातीनामानि ४८४
उपजातीगुणाः ... ... ,,
वार्षिकीमल्लिकामुद्गरनामानि ... ४८५
वार्षिकीगुणाः ... ... ,,
मल्लिकागुणाः ४८६
मुद्गरगुणाः ... ... ,,
नेपालीवनमल्लिकानामानि ... ४८७
नेपालीवनमल्लिकागुणाः ... ,,
यूथिकानामानि ... ... ,,
त्रिविधयूथिकागुणाः ४८८
माधवीनामानि ४८९
माधवीगुणाः ... ... ,,
मालतीनामानि ४९०

विषयः	पृष्ठांकः
मालतीगुणाः	४९०
तरुणीशतपत्रीकुब्जकनामानि	”
शतपत्रीगुणाः	४९२
तरुणीगुणाः	”
रक्तकुब्जकगुणाः	”
कुब्जकगुणाः	४९३
चम्पकनामानि	”
चम्पककलिकानामानि	४९४
चम्पकगुणाः	”
चम्पकपुष्पगुणाः	”
चम्पकभेदाः	४९५
श्वेतादिचम्पकगुणाः	४९६
बकुलनामानि	४९७
बकुलगुणाः	”
बकुलपुष्पगुणाः	”
बकुलफलगुणाः	४९८
वृद्धबकुलनामानि	”
वृद्धबकुलगुणाः	४९९
मुचुकुन्दनामानि	५००
मुचुकुन्दगुणाः	”
कुन्दनामानि	५०१
कुन्दगुणाः	”
तिलकनामानि	५०२
तिलकगुणाः	”
कदम्बनामानि	५०३
धाराकदम्बनामानि	”
भूमिकदम्बनामानि	”
कदम्बगुणाः	५०४
राजकदम्बगुणाः	”
धाराकदम्बगुणाः	५०५
धूलिकदम्बगुणाः	”
कदम्बिकागुणाः	”
भूमिकदम्बगुणाः	”
द्विविधकदम्बगुणाः	५०६
कर्णिकारनामानि	”
कर्णिकारगुणाः	”
किंकिरातनामानि	”

विषयः	पृष्ठांकः
किंकिरातगुणाः	५०७
केतकीनामानि	५०८
सुवर्णकेतकीनामानि	”
केतकीसुवर्णकेतकीगुणाः	५०९
अशोकनामानि	५१०
अशोकगुणाः	”
पुन्नागनामानि	५११
पुन्नागगुणाः	५१२
सैरेयकनामानि	५१३
कुरण्टनामानि	”
नीलझिण्टी(आर्त्तगल)नामानि	”
कुरवकनामानि	”
सैरेयकगुणाः	५१४
कुरण्टकगुणाः	५१५
आर्तगलगुणाः	”
नीलझिण्टीगुणाः	”
कुरवकगुणाः	”
बन्धूकनामानि	५१६
बन्धूकगुणाः	”
सिद्धेश्वरनामानि	५१७
सिद्धेश्वरगुणाः	”
शंखोदरीनामानि	”
शंखोदरीगुणाः	५१८
झण्डूकनामानि	”
झण्डूकगुणाः	”
सिन्दूरपुष्पीनामानि	”
सिन्दूरपुष्पीगुणाः	”
प्राजक्तनामानि	५२०
हारशृंगारगुणाः	”
जपापुष्पनामानि	”
जपापुष्पगुणाः	५२१
घृतभर्जितजपापुष्पगुणाः	”
अगस्त्यनामानि	५२२
अगस्त्यगुणाः	”
अस्यपुष्पगुणाः	५२३
अस्यपत्रगुणाः	”
अस्यशिम्बीगुणाः	”

विषयः ... पृष्ठांकः
तुलसीनामानि ५२४
कृष्णतुलसीनामानि ... ... ”
तुलसीगुणाः ... ... ”
मरुवकनामानि ५२५
मरुवकगुणाः ५२६
दमनकनामानि ५२७
दमनकगुणाः ५२८
वनदमनकगुणाः ... ... ”
अग्निदमनकगुणाः ... ... ”
अर्जकनामानि ५२९
सितार्जकनामानि ... ... ”
कृष्णार्जकनामानि ... ... ”
बर्वरीनामानि ... ... ”
वनबर्वरीनामानि ... ... ”
अर्जक सीतार्जक-कृष्णार्जकगुणाः ... ५३०
वनबर्वरिकागुणाः ५३१
अथ पंकजनामानि ... ... ”
श्वेतकमलनामानि ५३२
रक्तकमलनामानि ... ... ”
नीलकमलनामानि ... ... ”
नीलोत्पलनामानि ... ... ”
कमलगुणाः ५३३
श्वेतकमलगुणाः ५३४
रक्तकमलगुणाः ... ... ”
नीलकमलगुणाः ... ... ”
नीलोत्पलगुणाः ... ... ”
पद्मिनीनामानि ... ... ”
पद्मिनीगुणाः ५३५
पद्मसंवर्तिकादिनामानि ... ... ”
संवर्तिकागुणाः ५३६
कार्णिकागुणाः ... ... ”
पद्मकेशरनामानि ... ... ”
पद्मकेशरगुणाः ... ... ”
पद्मबीजनामानि ५३७
पद्मबीजगुणाः ... ... ”
मकरन्दपद्ममधुगुणाः ५३८
कमलिनीपत्रगुणाः ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
पद्मनालनामानि ५३८
मृणालगुणाः ... ... ”
पद्मकन्दनामानि ५३९
शालूकगुणाः ... ... ”
कुमुदनामानि ५४०
कुमुदगुणाः ... ... ”
कुमुदबीजगुणाः ५४१
उत्पलनामानि ... ... ”
उत्पलगुणाः ... ... ”
रक्तकुमुदनामानि ... ... ”
उत्पलिनीनामानि ... ... ”
उत्पलिनीगुणाः ... ... ”
स्थलपद्मिनीनामानि ५४२
स्थलपद्मिनीगुणाः ... ... ”

फलवर्गः ।

आम्रनामानि ५४३
आम्रपुष्पगुणाः ५४४
बालतरुणाम्रगुणाः ... ... ”
आम्रपेषी गुणाः ५४५
पक्काम्रगुणाः ... ... ”
वृक्षपक्काम्रगुणाः ५४६
कृत्रिमपक्काम्रगुणाः ... ... ”
आम्ररसगुणाः ... ... ”
चोषिताम्रगुणाः ५४७
शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणाः ... ... ”
आम्रावर्त्तः ... ... ”
आम्रावर्त्तगुणाः ... ... ”
आम्रखण्डगुणाः ... ... ”
अतिशयाम्रभक्षणगुणाः ५४८
मधुयुताम्रगुणाः ... ... ”
घृतयुक्ताम्रगुणाः ... ... ”
दुग्धयुक्ताम्रगुणाः ... ... ”
आम्रास्थिगुणाः ... ... ”
आम्रस्थितैलगुणाः ५४९
आम्रत्वचादिगुणाः ... ... ”

विषयः पृष्ठांकः
आम्रान्तरत्वग्गुणाः ५४९
आम्रमूलगुणाः ... ... ”
आम्रपल्लवगुणाः ... ... ”
राजाम्रनामानि ... . ”
आम्रातकनामानि ५५०
आम्रातकफलगुणाः ५५१
कोशाम्रनामानि ५५२
कोशाम्रगुणाः ... ... ”
कोशाम्रापक्वफलगुणाः ५५३
कोशाम्रपक्वफलगुणाः ... ... ”
कोशाम्रमज्जागुणाः ... ... ”
कोशाम्रतैलगुणाः ... ... ”
दाडिमनामानि ५५४
दाडिमगुणाः ५५५
दाडिमपुष्पादिगुणाः ५५७
कदलीनामानि ... ... ”
कदलीसाधारणफलगुणाः ... ५५८
कोमलकदलीफलगुणाः ५५९
मध्यमकदलीफलगुणाः ... ... ”
अपक्वकदलीफलगुणाः ... ... ”
पक्वकदलीफलगुणाः ... ... ”
सामान्यकदलीफलगुणाः ... ५६०
कदलीपुष्पगुणाः ५६१
कदलीमोचकगुणाः ... ... ”
कदलीजलगुणाः ... ... ”
कदलीकन्दगुणाः ५६२
कदलीक्षारगुणाः ... ... ”
आरण्यकदलीगुणाः ... ... ”
काष्ठकदलीगुणाः ५६३
सुवर्णकदलीगुणाः ... ... ”
महेन्द्रकदलीगुणाः ... ... ”
कृष्णकदलीफलगुणाः ५६४
नारिकेलनामानि ... ... ”
नारिकेलसाधारणगुणाः ५६५
कोमलनारिकेलगुणाः ५६६
किनारिकेलगुणाः ... ... ”
शुष्कनारिकेलगुणाः ... ... ”
नारिकेलजलगुणाः ५६७

विषयः पृष्ठांकः
नारिकेलपुष्पगुणाः ५६७
नारिकेलपुष्पजलगुणाः ५६८
नारिकेलताडीगुणाः ... ... ”
नारिकेलफलतैलगुणाः ... ... ”
मधुनारिकेलगुणाः ... ... ”
ग्राम्यखर्जूरीनामानि ५६९
पिण्डखर्जूरिकानामानि ... ... ”
छोहारानामानि ... ... ”
त्रिविधखर्जूरीगुणाः ५७०
खर्जूरीताडीगुणाः ५७१
खर्जूरादिमस्तकगुणाः ... ... ”
पिण्डखर्जूरीगुणाः ... ... ”
सुलेमानिखर्जूरीनामानि ... ५७२
सुलेमानिखर्जूरीगुणाः ... ”
बदामनामानि ... ... ”
बदामगुणाः ५७३
बदामतैलगुणाः ... ... ”
सेवफलनामानि ५७४
सेवफलगुणाः ... ... ”
अमृतफलगुणाः ... ... ”
पेरुकफलनामानि ५७५
पेरुकफलगुणाः ५७६
नागरंगनामानि ... ... ”
नागरंगफलगुणाः ५७७
बीजपूरनामानि ५७८
बीजपूरफलगुणाः ५७९
ऋतुपरत्वे अनुपानगुणाः... ... ५८१
वनबीजपूरगुणाः ... ... ”
मधुरमातुलुंगगुणाः ... ... ”
निम्बूकनामानि ... ... ”
जम्बीरनामानि ५८२
निम्बूकगुणाः ५८३
जम्बीरगुणाः ५८४
लिम्पाकगुणाः ५८५
करुणगुणाः ... . ”
निम्बूकसाधारणगुणाः ... ... ”
बृहज्जम्बीरगुणाः ... ... ”
मधुकर्कटिकागुणाः ... ... ”

विषयः	पृष्ठांकः
मिष्टनिम्बूगुणाः ...	... ५८६
मधुकर्कटीगुणाः ...	... ,,
जम्बीरपत्रगुणाः ...	... ,,
तिन्तिडीनामानि ...	... ,,
तिन्तिडीफलगुणाः ...	... ५८७
आलूकनामानि ...	... ५८९
आलूकगुणाः ...	... ५९०
भव्यनामानि ...	... ५९१
भव्यगुणाः ...	... ,,
वृक्षाम्लनामानि ...	... ५९२
वृक्षाम्लगुणाः ...	... ,,
अम्लवेतसनामानि ...	... ५९३
अम्लवेतसफलगुणाः ...	... ,,
पनसनामानि ...	... ५९४
पनसफलगुणाः ...	... ५९५
लकुचनामानि ...	... ५९६
लकुचगुणाः ...	... ५९७
तिन्दुकनामानि ...	... ,,
तिन्दुकगुणाः ...	... ५९८
काकतिन्दुकनामानि ...	... ५९९
काकतिन्दुकगुणाः ...	... ६००
कारस्करनामानि ...	... ,,
कारस्करगुणाः ...	... ६०१
मधूकनामानि ...	... ६०२
मधूकगुणाः ...	... ६०३
मधूकपुष्पगुणाः ...	... ६०४
मधूकतैलगुणाः ...	... ,,
मधूकसारगुणाः ...	... ,,
जलमधूकगुणाः ...	... ,,
पीलुनामानि ...	... ,,
महापीलुनामानि ...	... ,,
पीलुगुणाः ...	... ६०५
बृहत्पीलुगुणाः ...	... ,,
अखरोटनामानि ...	... ६०६
अखरोटगुणाः ...	... ,,
गुवाकनामानि ...	... ६०७
गुवाकगुणाः ...	... ६०८
पक्वपूगफलगुणाः ...	... ,,
शुष्कफलगुणाः ...	... ,,
अपक्वपूगफलगुणाः ...	... ,,
पूगस्यबालमध्यादिभेदमाह	... ,,
तालनामानि ...	... ६११
श्रीतालनामानि ...	... ,,
हिन्तालनामानि ...	... ,,
हिन्तालफलगुणाः ...	... ६१२
तालगुणाः ...	... ,,
अस्यामफलगुणाः ...	... ,,
अस्य पक्वफलगुणाः ...	... ६१३
अस्यार्द्रफलबीजगुणाः ...	... ,,
अस्य फलमज्जागुणाः ...	... ,,
तालफलोद्भवजलगुणाः ...	... ,,
तालमणिकागुणाः ...	... ,,
तालमलकगुणाः ...	... ६१४
तालपंजरगुणाः ...	... ,,
तालवृन्तवायुगुणाः ...	... ,,
तालमूलगुणाः ...	... ,,
श्रीतालगुणाः ...	... ,,
हिन्तालगुणाः ...	... ६१५
कपित्थफलनामानि ...	... ,,
कपित्थफलसाधारणगुणाः	... ६१६
अपक्वकपित्थफलगुणाः	... ,,
पक्वकपित्थफलगुणाः ...	... ,,
कर्मरङ्गनामानि ...	... ६१७
कर्मरङ्गगुणाः ...	... ६१८
कदलीफलनामानि ...	... ,,
कदलीफलगुणाः ...	... ६१९
प्राचीनामलकनामानि ...	... ,,
प्राचीनामलकगुणाः ...	... ६२०
करमर्दकनामानि ...	... ,,
करमर्दकगुणाः ...	... ६२१
बदरीनामानि ...	... ६२३
बदरीफलनामानि ...	... ,,

विषयः	पृष्ठांकः
बदरलक्षणानि गुणाश्च	६२३
हस्तिकोलिगुणाः	६२५
राजबदरगुणाः	"
भूबदरीगुणाः	"
बदरफलमज्जागुणाः	"
बदरस्य पत्रगुणाः	६२६
विकङ्कतनामानि	"
विकङ्कतगुणाः	६२७
प्रियालनामानि	६२८
प्रियालगुणाः	"
प्रियालमूलादिगुणाः	६२९
राजादननामानि	"
राजादनगुणाः	६३०
आतृप्यनामानि	६३१
आतृप्यगुणाः	"
लवनीफलनामानि	६३२
लवनीफलगुणाः	"
अननासनामानि	६३३
अननासगुणाः	"
निकोचकनामानि	६३४
निकोचकगुणाः	"
अंजिरनामानि	"
अंजिरगुणाः	"
परूषकनामानि	६३५
परूषकफलगुणाः	६३६
अस्य त्वग्गुणाः	६३७
तूतनामानि	"
तूतगुणाः	६३८
पारेवतनामानि	६३९
पारेवतगुणाः	"
महापारेवतगुणाः	"
श्लेष्मातकनामानि	६४०
भूकर्बुदारनामानि	"
श्लेष्मातकगुणाः	६४१
भूकर्बुदारगुणाः	"
कतकनामानि	६४२

विषयः	पृष्ठांकः
कतकगुणाः	६४२
द्राक्षानामानि	६४३
कपिलद्राक्षाना०	"
काकलीद्राक्षाना०	"
काकलीद्राक्षागुणाः	६४४
गोस्तनीद्राक्षानामानि	६४६
लघुद्राक्षागुणाः	"
मण्डपीनामानि	६४७
मण्डपीगुणाः	"
काजूतकनामानि	"
काजूतकगुणाः	६४८
जम्बूनामानि	"
महाजम्बूना०	"
क्षुद्रजम्बूना०	६४९
काकजम्बूना०	"
भूमिजम्बूना०	"
जम्बूगुणाः	"
राजजम्बूगुणाः	६५०
जलजम्बूगुणाः	"
क्षुद्रजम्बूगुणाः	६५१
जम्बूफलमज्जागुणाः	"
वटादिवर्गः । ६५१.	
वटनामानि	६५१
वटगुणाः	६५२
अश्वत्थनामानि	६५३
अश्वत्थगुणाः	६५४
पारिशपिप्पलनामानि	"
पारिशपिप्पलगुणाः	६५५
नन्दीवृक्षनामानि	६५६
प्लक्षना०	"
प्लक्षगुणाः	६५७
उदुम्बरनामानि	"
उदुम्बरगुणाः	६५८
नद्युदुम्बरनामानि	६५९
नद्युदम्बरगुणाः	"
काकोदुम्बरिकानामानि	"

विषयः	पृष्ठांकः
काकोदुम्बरिकागुणाः	६६०
शिरीषनामानि	६६१
शिरीषगुणाः	६६२
शिंशपानामानि	”
श्वेतशिंशपानामानि	६६३
कपिलशिंशपाना०	”
शिंशपागुणाः	”
श्वेतशिंशपागुणाः	६६४
कपिलशिंशपागुणाः	”
त्रिविधशिंशपागुणाः	”
सालनामानि	६६५
सालगुणाः	”
शालभेदः	६६६
शालगुणाः	”
शल्लकीनामानि	६६७
शल्लकीगुणाः	”
अर्जुननामानि	६६८
अर्जुनगुणाः	६६९
असननामानि	६७०
असनगुणाः	”
असनपुष्पगुणाः	”
खदिरनामानि	६७१
श्वेतखदिरना०	”
खदिरगुणाः	६७२
श्वेतखदिरगुणाः	”
खदिरनिर्यासादिगुणाः	”
खदिरसारनामानि	”
खदिरसारगुणाः	६७३
विटखदिरनामानि	”
विट्खदिरगुणाः	”
अस्य निर्यासगुणाः	६७४
लघुखदिरगुणाः	”
बरछौखदिरगुणाः	”
रोहितकनामानि	६७५
श्वेतरोहितकनामानि	”

विषयः	पृष्ठांकः
श्वेतरोहितकगुणाः	६७५
बर्बुरनामानि	६७६
बर्बुरगुणाः	६७७
बर्बुरफलगुणाः	६७८
बर्बुरनिर्यासगुणाः	”
अरिष्टकनामानि	”
अरिष्टकगुणाः	६७९
पुत्रजीवकनामानि	”
पुत्रजीवगुणाः	६८०
इंगुदीनामानि	”
इंगुदीगुणाः	६८१
इंगुदीफलमज्जागुणाः	६८२
जिङ्गिनीनामानि	”
जिङ्गिनीगुणाः	”
तमालनामानि	६८३
तमालगुणाः	”
तूणीनामानि	”
तूणीगुणाः	६८४
भूर्जपत्रनामानि	”
भूर्जपत्रगुणाः	६८५
पलाशनामानि	”
पलाशगुणाः	६८६
पलाशनिर्यासगुणाः	६८८
हस्तिकर्णपलाशनामानि	६८९
हस्तिकर्णपलाशगुणाः	”
शालमलीनामानि	”
मोचरसनामानि	”
शालमलीगुणाः	६९०
शालमलीपुष्पशाकगुणाः	६९१
मोचरसगुणाः	”
कूटशालमलीनामानि	”
कूटशालमलीगुणाः	६९२
धवनामानि	”
धवगुणाः	”
धन्वंगनामानि	६९३
धन्वंगगुणाः	”
धन्वननामानि	”

विषयः पृष्ठांकः

धन्वगुणाः ६९३
करीरनामानि ६९४
करीरगुणाः ... ... ,,
शाखोटनामानि ६९६
शाखोटगुणाः ... ... ,,
शाकनामानि ... ... ,,
शाकगुणाः ६९७
वरुणनामानि ६९८
वरुणगुणाः ... ... ,,
कटभीनामानि ७००
श्वेतकटभीनामानि ... ... ,,
कटभीगुणाः ... ... ,,
मुष्ककनामानि ७०१
मुष्ककगुणाः ... .. ,,
अम्बुशिरीषिकानामानि ... ७०२
अम्बुशिरीषिकागुणाः ७०३
शमीनामानि ... ,,
शमीगुणाः ७०४
सप्तपर्णनामानि ... ... ,,
सप्तपर्णगुणाः ७०५
तिनिशनामानि ... ... ,,
तिनिशगुणाः ७०६
हरिद्रुनामानि ... ... ,,
हरिद्रुगुणाः ७०७
रुद्राक्षनामानि ... ,,
रुद्राक्षगुणाः ... . ,,
माडनामानि ७०८
माडगुणाः ... ... ,,
साजडनामानि ... ... ,,
साजडगुणाः ७०९
ढोलसमुद्रिकागुणाः ... ... ,,
धातूपधातुवर्गः । ७०९
सुवर्णनामानि ७०९
सुवर्णगुणाः ७१०
सुवर्णपरीक्षा ... ... ,,
असम्यङ्मारितस्वर्णगुणाः ... ७११

विषयः पृष्ठांकः

अशुद्धस्वर्णस्यदोषाः ७११
स्वर्णस्योत्पत्तिः ७१२
रूप्यकनामानि ... ... ,,
रौप्यपरीक्षा ७१३
रौप्यगुणाः ... ... ,,
अशोधितरौप्यगुणाः ७१४
रौप्यस्योत्पत्तिः ... ... ,,
ताम्रनामानि ... ... ,,
उत्कृष्टताम्रस्य लक्षणम् ... ७१५
दूषितताम्रस्य लक्षणम् ... ,,
ताम्रगुणाः ... ... ,,
असम्यङ्मारितताम्रस्य दोषाः ... ७१६
ताम्रोत्पत्तिः ... ... ,,
रंगनामानि ... ... ,,
रंगगुणाः ७१७
अशोधितवंगदोषाः ... ... ,,
वङ्गस्य प्रकारभेदाः ७१८
श्रेष्ठवंगस्य लक्षणम् ... ... ,,
सीसकनामानि ... ... ,,
सीसकगुणाः ७१९
नागस्य प्रकारभेदाः ... ,,
अशोधितवंगनागदोषाः... ... ७२०
नागोत्पत्तिः ... ... ,,
जसदनामानि ... ... ,,
जसदगुणाः ... ... ,,
कान्तलोहनामानि ... ... ,,
कृष्णलोहनामानि ७२१
कान्तलोहगुणाः ... ... ,,
कान्तलोहस्य लक्षणम् ... ... ,,
सर्वविधशुद्धलोहस्य गुणाः ... ७२२
अशोधितलोहस्य दोषाः ... ,,
लोहस्य स्वाभाविकदोषाः ... ,,
मुण्डलोहगुणाः ... ... ,,
लोहस्योत्पत्तिः ७२३
लोहसेविनः कार्याणि ... ,,
मण्डूरनामानि ... ... ,,
मण्डूरलक्षणगुणाः ... ... ,,

विषयः ... पृष्ठांकः
सर्वविधमण्डूरप्रकारभेदाः ... ७२३
कांस्यनामानि २२४
कांस्यगुणाः ... ... ”
पित्तलनामानि ७२५
पित्तलगुणाः ... ... ”
पारदनामानि ७२६
पारदगुणाः ७२७
पारदे पथ्यानि ७२८
पारददोषाः ... ... ”
अशोधितपारददोषाः ७२९
पारदस्योत्पत्तिजातिलक्षणानि ... ”
पारदप्रशंसा ७३०
हिंगुलनामानि ... ... ”
हिंगुलगुणाः ७३१
हिंगुलभेदलक्षणम् ... ... ”
हिंगुलोत्पत्तिः ७३२
स्रोतोंजननामानि ... ... ”
सौवीरांजननामानि ... ... ”
स्रोतोऽञ्जनगुणाः ७३३
श्रेष्ठस्रोतोऽञ्जनस्य लक्षणम् ... ”
सौवीरांजनगुणाः ... ... ”
पुष्पांजननामानि ... ... ”
पुष्पांजनगुणाः ७३४
तुत्थकनामानि ... ... ”
तुत्थकगुणाः ७३५
खर्परनामानि ७३६
खर्परगुणाः ... ... ”
अशोधितखर्परदोषाः ७३७
स्वर्णमाक्षिकनामानि ... ... ”
तारमाक्षिकनामानि ... ... ”
स्वर्णमाक्षिकगुणाः ... ... ”
अशुद्धमाक्षिकदोषाः ७३८
तारमाक्षिकगुणाः ७३९
वोदारनामानि ... ... ”
वोदारगुणाः ... ... ”
वोदारोत्पत्तिलक्षणम् ७४०
अभ्रकनामानि ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
मारिताभ्रकगुणाः ७४१
अभ्रस्य जातिवर्णभेदाः ... ... ”
चतुर्विधाभ्रस्य नामलक्षणगुणाः ... ७४२
अशोधिताभ्रदोषाः ७४३
अभ्रकोत्पत्तिः ... ... ”
अभ्रपथ्यम् ... ... ”
गन्धकनामानि ... ... ”
गन्धकगुणाः ७४४
अशुद्धगंधकदोषाः ... ... ”
गन्धकस्य प्रकारभेदाः ७४५
श्वेतगन्धकलक्षणम् ... ... ”
गन्धकस्योत्पत्तिः ७४६
सिन्दूरनामानि ... ... ”
सिन्दूरगुणाः ... ... ”
सिंदूरस्य स्वरूपम् ... ... ”
मनःशिलानामानि ७४७
मनःशिलागुणाः ... ... ”
अशोधितमनःशिलादोषाः ... ”
हरितालमनःशिलयोर्भेदः ... ”
हरितालनामानि ... ... ”
हरितालगुणाः ७४८
अशुद्धहरितालदोषाः ... . ”
हरितालस्य प्रकारभेदाः ... ७४९
हरितालभस्मानुपानम् ७५०
हरितालभक्षणप्रमाणम् ... ... ”
हरितालप्रयोज्य० ... ... ”
हरितालादीनामुत्पत्तिः ७५१
कासीसनामानि ... ... ”
पुष्पकासीसनामानि ... ... ”
कासीसगुणाः ७५२
कासीसलक्षणम् ... ”
गैरिकनामानि ७५३
सुवर्णगैरिकनामानि ... ... ”
पाषाणगैरिकनामानि ... ... ”
गैरिकगुणाः ... ... ”
सुवर्णगैरिकगुणाः ७५४
द्विविधगैरिकगुणाः ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
खटीनामानि ७५४
खटीगुणाः ७५५
कपर्दकनामानि ... ... ”
कपर्दकगुणाः ... ... ”
कपर्दकभेदाः ७५६
शुक्तिनामानि ... ... ”
जलशुक्तिनामानि ७५७
शुक्तिगुणाः ... ... ”
जलशुक्तिगुणाः ७५८
शंखनामानि ... ... ”
शंखस्य प्रकारभेदाः ७५९
श्रेष्ठशंखलक्षणम् ७६०
कृमिशंखनामगुणाश्च ... ... ”
क्षुद्रशंखनामानि ... ... ”
क्षुद्रशंखगुणाः ... ... ”
कंकुष्ठनामानि ... ... ”
कंकुष्ठगुणाः ७६१
कंकुष्ठोत्पत्तिलक्षणम् ... ... ”
शंखजीरकनामानि ७६२
शंखजीरकगुणाः ... ... ”
स्फटीनामानि ... ... ”
स्फटीगुणाः ७६३
चुम्बकनामानि गुणाश्च ... ”
राजावर्त्तगुणाः ... ... ”
सौराष्ट्रीनामानि ७६४
सौराष्ट्रीगुणाः ... ... ”
वालुकानामानि ... ... ”
वालुकागुणाः ७६५
कर्दमनामानि ... ... ”
कृष्णमृत्तिकानामानि ... ... ”
पंकगुणाः ७६६
कृष्णपङ्कगुणाः .. ... ”
बोलनामानि ७६७
बोलगुणाः ... ... ”
शिलाजतुनामानि ७६८
अस्योत्पत्तिलक्षणं गुणाश्च ... ”
श्रेष्ठशिलाजतुलक्षणम् ... ७६९
विषयः ... पृष्ठांकः
अन्यच्च शिलाजतुगुणाः ... ७७०
अशुद्धशिलाजतुदोषाः ... ”

रत्नोपरत्नवर्गः। ७७०

अथ रत्नस्य निरुक्तिः ७७०
रत्नानां निरूपणम् ७७१
रत्नगुणाः ... ... ”
हरिकनामानि ७७२
हीरकगुणाः ... ... ”
हीरकभेदलक्षणगुणाः ... ... ”
हीरकगुणाः ७७३
अशुद्धहीरकदोषाः ७७४
माणिक्यनामानि ... ... ”
माणिक्यगुणाः ७७५
माणिक्यभेदवर्णाश्च ... ... ”
बहुमूल्यमाणिक्यगुणाः ... ”
अथ तोलः ७७६
अथ मूल्यम् ... ... ”
रत्नपरीक्षा ७७७
माणिक्यगुणाः ७७८
मौक्तिकनामानि ७७९
मौक्तिकगुणाः ... ... ”
मौक्तिकोत्पत्तिः ७८०
गजमौक्तिकम् ... ... ”
वराहमौक्तिकम् ... ... ”
वेणुमौक्तिकम् ७८१
मत्स्यमौक्तिकम् ... ... ”
दर्दुरमौक्तिकम् ... ... ”
शंखमौक्तिकम् ७८२
सर्पजमौक्तिकम् ... ... ”
लक्षणम् ... ... ”
शुक्तिमौक्तिकम् ७८३
मौक्तिकपरीक्षा ... ... ”
प्रवालनामानि ७८४
प्रवालगुणाः ... ... ”
प्रवालमंजरीगुणाः ७८५
प्रवालोत्पत्तिलक्षणम् ... ... ”

विषयः पृष्ठांकः
मरकतनामानि ७८६
मरकतगुणाः ... ... ,,
मरकतमणि र० ... ... ,,
पुष्परागनामानि ७८७
पुष्परागगुणाः ... ... ,,
पुष्परागलक्षणम् ७८८
नीलमणिनामानि ... ... ,,
नीलगुणाः ७८९
नीलस्य वर्णभेदाः ... ... ,,
गोमेदनामानि ... ... ,,
गोमेदकगुणाः ७९०
गोमेदपरीक्षा ... ... ,,
वैदूर्यनामानि ७९१
वैदूर्यगुणाः ७९२
उत्तमवैदूर्यलक्षणम् ... ... ,,
वैक्रान्तनामानि ... ... ,,
वैक्रान्तगुणाः ७९३
सूर्यकान्तनामानि ... ... ,,
सूर्यकान्तगुणाः ... ... ,,
चन्द्रकान्तनामानि ७९४
चन्द्रकान्तोद्भवजलगुणाः ... ,,
चन्द्रकान्तस्य स्वरूपम् ... ,,
स्फटिकनामानि ७९५
स्फटिकगुणाः ... ... ,,
पेरोजनामानि ... ... ,,
पेरोजगुणाः ७९६
काचनामानि ... ... ,,
काचगुणाः ... ... ,,
दुग्धपाषाणनामानि ... ... ,,
दुग्धपाषाणगुणाः ... ७९७
विषवर्गः। ७९७
विषनामानि ७९७
वत्सनाभविषगुणाः ७९८
विषस्य प्रकारभेदाः ७९९
अथ वत्सनाभस्य स्वरूपम् ... ,,
अथ हारिद्रस्वरूपम् ... ... ,,
अथ सक्तुकस्य स्वरूपम् ... ८००
विषयः पृष्ठांकः
अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम् ... ८००
अथ सौराष्ट्रीकस्वरूपम् ... ,,
अथ शृंगिकस्य स्वरूपम् ... ,,
अथ कालकूटस्य स्वरूपम् ... ,,
अथ हाहकस्य स्वरूपम् ... ,,
अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम् ... ८०१
विषस्य वर्णभेदाः ... ... ,,
स्थावरविषस्य दशप्रकाराः ... ,,
स्थावरविषस्य भक्षणदोषाः ... ८०२
जंगमविषस्य स्वरूपम् ... ,,
जंगमविषस्य षोडशप्रकाराः ... ,,
जंगमविषस्य भक्षणदोषाः ... ,,
शोधितविषगुणाः ... ... ,,
अथ विषसेवनप्रकारः ८०३
विषमात्राप्रमाणम् ... ... ,,
विषसेवनमें पथ्यपदार्थ ... ८०४
मात्राधिकभक्षणस्य परीक्षा ... ,,
विषको उतारना ८०५
आखुपाषाणनामानि ८०६
आखुपाषाणगुणाः ... ... ,,
अथ उपविषनामानि ८०७
धान्यवर्गः। ८०७
धान्यनामानि ८०७
धान्यभेदाः ... ... ,,
शालिधान्यनामानि ८०८
शालिधान्यलक्षणम् ८०९
शालिधान्यगुणाः ... ... ,,
रक्तशालिगुणाः ८१०
महाशालिधान्यगुणाः ... ... ,,
तेषां गुणाः ८११
व्रीहिधान्यलक्षणम् ८१२
षष्टिकलक्षणं नामानि च ... ८१३
षष्टिकगुणाः ८१४
यवनामानि ८१५
यवस्य प्रकारभेदाः ८१६
यवगुणाः ... ... ,,
गोधूमनामानि ८१७

विषयः पृष्ठांकः

गोधूमगुणाः ८१८
अपि च लक्षणगुणाः ... ... ”
यावनालनामानि ८१९
धवलयावनालनामानि ... ... ”
तुवरयावनालनामानि ... ... ”
यावनालगुणाः ८२०
धवलयावनालगुणाः ८२१
शारदयावनालगुणाः ... ... ”
आजकनामानि ... ... ”
आजकगुणाः ... ... ”
शमीधान्यनामानि ८२२
शमीधान्यगुणाः ... ... ”
मुद्गनामानि ... ... ”
मुद्गगुणाः ८२३
कृष्णमुद्गनामानि ८२४
कृष्णमुद्गगुणाः ... ... ”
हरिन्मुद्गनामानि ८२५
हरिन्मुद्गगुणाः ... ... ”
धूसरमुद्गगुणाः ... ... ”
मकुष्टनामानि ... ... ”
मकुष्टगुणाः ८२६
अस्य सूपगुणाः ... ... ”
माषनामानि ... ... ”
माषगुणाः ८२७
राजमाषनामानि ८२८
राजमाषगुणाः ८२९
अस्य सूपगुणाः ८३०
निष्पावनामानि ... ... ”
निष्पावगुणाः ८३१
रक्तनिष्पावगुणाः ८३२
नदीनिष्पावगुणाः ... ... ”
मसूरनामानि ... ... ”
मसूरगुणाः ८३३
चणकनामानि ८३४
चणकगुणाः ... ... ”
भृष्टचणकगुणाः ८३६
कृष्णचणकगुणाः ... ... ”
चणकस्य पत्रशाकगुणाः ... ”
आढकीनामानि ८३७
आढकीगुणाः ... ... ”
श्वेताढकीगुणाः ८३८
रक्ताढकीगुणाः ... ... ”
कृष्णाढकीगुणाः ८३९
कलायनामानि ... ... ”
कलायगुणाः ८४०
त्रिपुटनामानि ... ... ”
त्रिपुटगुणाः ८४१
कुलित्थनामानि ८४२
कुलित्थगुणाः ... ... ”
तिलनामानि ८४३
तिलगुणाः ८४४
तिलपिण्याकगुणाः ८४५
अतसीनामानि ... ... ”
अतसीगुणाः ८४६
सर्षपनामानि ८४७
गौरसर्षपनामानि ... ... ”
सर्षपगुणाः ८४८
सिद्धार्थगुणाः ८४९
सर्षपशाकगुणाः ... ... ”
राजिकानामानि ... ... ”
राजसर्षपनामानि ... ... ”
राजिकागुणाः ८५०
राजसर्षपगुणाः ८५१
राजिकापत्रशाकगुणाः ... ... ”
अथ तृणधान्यनामानि ... ... ”
तृणधान्यगुणाः ... ... ”
कङ्गुनामानि ८५२
कङ्गुनीगुणाः ... ... ”
चीनकनामानि ८५३
चीनकगुणाः ... ... ”
नीवारनामानि ८५४
नीवारगुणाः ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
वरकनामानि ८५५
वरकगुणाः ... ... ”
नर्त्तकनामानि ... ... ”
नर्त्तकगुणाः ८५६
श्यामाकनामानि ... ... ”
श्यामाकगुणाः ... ... ”
कोद्रवनामानि ८५७
कोद्रवगुणाः ... ... ”
कटिधान्यनामानि ८५८
कटिधान्यगुणाः ८५९
गवेधुकानामगुणाश्च ८६०
वरटानामानि ... ... ”
वरटागुणाः ... ... ”
चारुकनामगुणाश्च ... ... ”
वेणुयवगुणाः ... ... ”
यवनालगुणाः ८६१
नूतनपुरातनादिभेदेन धान्यगुणाः ”

शाकवर्गः ८६१

शाकदोषाः ८६२
तत्रादौ वास्तूकशाकनामानि ... ”
वास्तूकगुणाः ८६३
चिल्लीगुणाः ८६४
लोणीबृहल्लोणीनामानि ... ”
लोणीगुणाः ८६५
घोलिकागुणाः ... ... ”
क्षुद्रघोलिकागुणाः ८६६
चुकनामानि ... ... ”
चुक्रगुणाः ८६७
मारिषनामानि ... ... ”
मारिषगुणाः ८६८
तण्डुलीयनामानि ... ... ”
कञ्चटनामानि ८६९
तण्डुलीयगुणाः ... ... ”
अस्य पत्रगुणाः ८७०
तण्डुलीयमूलगुणाः ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
कञ्चटगुणाः ८७०
पालङ्क्यनामानि ... ... ”
पालङ्क्यगुणाः ८७१
कुणञ्जरनामानि ८७२
कुणञ्जरगुणाः ... ... ”
उपोदकीनामानि ... ... ”
उपोदकीगुणाः ८७३
सहस्रमूलीनामानि ८७४
सहस्रमूलीगुणाः ... ... ”
चंचुनामानि ... ... ”
महाचंचुनामानि ८७५
क्षुद्रचंचुनामानि ... ... ”
चंचुगुणाः ८७५
महाचंचुगुणाः ... ... ”
क्षुद्रचंचुगुणाः ... ... ”
चंचुबीजगुणाः ८७६
नाडीकनामानि ... ... ”
नाडीकगुणाः ... ... ”
नाडीशाकपट्टशाकनामानि ... ”
नाडीशाकगुणाः ८७७
कलम्बीनामानि ... ... ”
कलम्बीगुणाः ८७८
हिलमोचिकानामानि ... ... ”
हिलमोचिकागुणाः ... ... ”
सुनिषण्णकनामानि ... ... ”
सुनिषण्णकगुणाः ८७९
सुनिषण्णकबीजगुणाः ... ... ”
मूलकस्य पत्रशाकगुणाः... ... ८८०
चम्पकपत्रशाकगुणाः ... ... ”
सुष्ककपत्रशाकगुणाः ... ... ”
करलीनामानि ... ... ”
करलीगुणाः ... ... ”
शतपुष्पापत्रशाकगुणाः ८८१
मेथिकापत्रशाकगुणाः ... ... ”
राजिकापत्रशाकगुणाः ... ... ”
सर्षपपत्रशाकगुणाः ... ... ”

विषयः पृष्ठांकः

शिग्रुपत्रशाकगुणाः ८८२
दद्रुघ्नपत्रशाकगुणाः ... ... ”
कासमर्दनामानि ... ... ”
कासमर्दपत्रगुणाः ८८३
कौसुम्भशाकगुणाः ... ... ”
वर्षाभूशाकगुणाः ... ... ”
गोजिह्वाशाकगुणाः ८८४
पटोलपत्रगुणाः ... ... ”
गुडूचीपत्रशाकगुणाः ... ... ”
पर्पटशाकगुणाः ... ... ”
सेहुण्डपत्रशाकगुणाः ... ... ”
यवानीपत्रशाकगुणाः ... ... ”
द्रोणपुष्पीपत्रशाकगुणाः... ... ८८५
चणकपत्रशाकगुणाः ... ... ”
कलायपत्रशाकगुणाः ... ... ”

पुष्पशाकम्। ८८५

अगस्तिपुष्पगुणाः ८८५
जीवन्तीपुष्पशाकगुणाः ... ”
कदलीपुष्पगुणाः ८८६
शिग्रुपुष्पगुणाः ... ”
शाल्मलीपुष्पशाकगुणाः ... ”
वरणपुष्पगुणाः ... ”
मधुकपुष्पगुणाः ... ”
कोविदारादिपुष्पशाकगुणाः ... ८८७

फलशाकम्। ८८७

कूष्माण्डनामानि ८८७
कूष्माण्डफलगुणाः ... ... ”
पीतकूष्माण्डनामानि ८८९
पीतकूष्माण्डगुणाः ८९०
कूष्माण्डीनामगुणाश्च ... ”
अलाबुनामानि ... ... ”
अलाबुगुणाः ८९१
कटुतुम्बीनामानि ... ”
कटुतुम्बीगुणाः ९९२
कटुतुम्बीपत्रगुणाः ... ... ”

विषयः पृष्ठांकः

कर्कटीनामानि ८९३
कर्कटीगुणाः ... ... ”
अरण्यकर्कटीगुणाः ८९५
तिक्तकर्कटीगुणाः ... ... ”
चीनाकर्कटीगुणाः ... ... ”
सर्वकर्कटीगुणाः ८९६
त्रपुषनामानि ... ... ”
त्रपुषगुणाः ८९७
चिर्भिटनामानि ८९८
मृगेर्वारुनामानि ... ... ”
चिर्भिटगुणाः ८९९
चिर्भिटपुष्पगुणाः ... ”
मृगाक्षीगुणाः ... ९००
खर्बूजनामानि ... ... ”
खर्बूजगुणाः ९०१
कालिङ्गनामानि ९०२
कालिङ्गगुणाः ९०३
कोशातकीनामानि ९०४
कोशातकीगुणाः ९०५
महाकोशातकीनामानि... ... ”
महाकोशातकीगुणाः ९०६
तिक्तकोशातकीनामानि ... ”
तिक्तकोशातकीगुणाः ९०७
चिचिण्डनामानि ९०८
चिचिण्डगुणाः ९०९
पटोलनामानि ... ... ”
पटोलगुणाः ... ... ”
राजपटोलीनामानि ९१०
तिक्तपटोलनामानि ... ... ”
तिक्तपटोलगुणाः ९११
बिम्बीनामानि ९१२
बिम्बीगुणाः ९१३
तिक्तबिम्बीनामानि ९१४
तिक्तबिम्बीगुणाः ... ... ”
कर्कोटकीनामानि ९१५
कर्कोटकीगुणाः ... ... ”
कारवेल्लनामानि ९१६

विषयः ... पृष्ठांकः
कारवेल्लीनामानि ९१७
कारवेल्लगुणाः ... ... ”
डिण्डिशनामानिगुणाश्च ... ९१९
पिण्डारगुणाः ... ... ”
भिण्डानामानि ... ... ”
भिण्डागुणाः ९२०
वार्त्ताकुनामानि ... ... ”
वार्त्ताकुगुणाः ९२१
गोराणीनामानि ९२३
गोराणीगुणाः ... ... ”
हरितनिष्पावीनामानि ९२४
शुभ्रनिष्पावीनामानि ... ... ”
द्विविधनिष्पावीगुणाः ... ... ”
शिम्बीनामानि ९२५
कोलशिम्बीनामानि ... ... ”
द्विविधशिम्बीगुणाः ९२६
कोलशिम्बीगुणाः ... ... ”
दधिपुष्पीनामानि ... ... ”
दधिपुष्पीगुणाः ९२७
सौभाञ्जनशिम्बीगुणाः ... ... ”
डोडिकानामगुणाश्च ९२८
मुनिशिम्बीगुणाः ... ... ”
शृंगाटकनामानि ... ... ”
शृंगाटकगुणाः ९२९

अथ नालशाकम् ९३०

सर्षपनालगुणाः ९३०
शूरणनालगुणाः ... ... ”

अथ कन्दशाकम् ९३०

रसोननामानि ९३०
रसोनगुणाः ९३१
पलाण्डुनामानि ९३२
राजपलाण्डुनामानि ... ... ”
पलाण्डुगुणाः ९३४
राजपलांडुगुणाः ... ... ”
पलाण्डुबीजगुणाः ९३५
मूलकनामानि ... ... ”
चाणक्यमूलकनामानि ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
मूलकगुणाः ९३७
चाणक्यमूलकगुणाः ... ... ”
गर्जरनामानि ९३८
गृञ्जननामानि ९३९
पिण्डमूलनामानि ... ... ”
गर्जरगुणाः ... ... ”
गृञ्जनगुणाः ९४०
पिण्डमूलगुणाः ... ... ”
सूरणनामानि ... ... ”
सूरणगुणाः ९४१
वनसूरणनामानि ९४२
वनसूरणगुणाः ... ... ”
रक्तालुनामानि ... ... ”
पिण्डालुनामानि ... ... ”
रक्तालुगुणाः ९४३
आलुकीगुणाः ... ... ”
गजकर्णालुनामानि ... ... ”
गजकर्णालुगुणाः ९४४
मुखालुनामानि ... ... ”
मुखालुगुणाः ... ... ”
कासालुनामानि ९४५
कासालुगुणाः ... ... ”
कोण्डालुनामानि ... ... ”
कोंडालुगुणाः ... ... ”
पानीयालुनामानि ... ... ”
पानीयालुगुणाः ... ... ”
नीलालुनामानि ... ... ”
नीलालुगुणाः ९४६
शुभ्रालुनामानि ... ... ”
शुभ्रालुगुणाः ... ... ”
हस्तिकन्दनामानि ... ... ”
हस्तिकन्दगुणाः ... ... ”
कोलकन्दनामानि ९४७
कोलकन्दगुणाः ... ... ”
वाराहीकन्दनामानि ... ... ”
वाराहीकन्दगुणाः ९४८
विष्णुकन्दनामानि ९४९
विष्णुकन्दगुणाः ... ... ”

विषयः पृष्ठांकः

धरणीकन्दनामानि ९४९
धरणीकन्दगुणाः ९५०
नाकुलीकन्दनामानि ... ... ”
गन्धनाकुलीनामानि ... ... ”
द्विविधनाकुलीकन्दगुणाः ... ”
मालाकन्दनामानि ... ... ”
मालाकन्दगुणाः ९५१
विदारीकन्दनामानि ... ... ”
विदारीकन्दगुणाः ... ... ”
क्षीरविदारीनामानि ... ... ”
क्षीरविदारीगुणाः ... ... ”
चण्डालकन्दनामानि ९५२
चण्डालकन्दगुणाः ... ... ”
तैलकन्दनामानि ... ... ”
तैलकन्दगुणाः ... ... ”
त्रिपर्णीनामानि ९५३
त्रिपर्णीगुणाः ... ... ”
लक्ष्मणाकन्दनामानि ... ... ”
लक्ष्मणाकन्दगुणाः ... ... ”
हस्तजोडिनामगुणाः ... ... ”
गुच्छकन्दनामानि ... ... ”
गुच्छकन्दगुणाः ९५४
मानकन्दनामानि ... ... ”
मानकन्दगुणाः ... ... ”
शंखालुनामानि ... ... ”
काष्ठालुनामानि ... ... ”
सर्वविधआलुगुणाः ... ... ”
राजालवादिगुणाः ९५५
कसेरुनामानि ... ... ”
द्विविधकसेरुगुणाः ९५६
केमुकनामानि ... ... ”
केमुकगुणाः ९५७
शाल्मलीकन्दनामानि ... ”
शाल्मलीकन्दगुणाः ... ... ”
कदलीकन्दगुणाः ... ... ”
अथसंस्वेदजशाकनामानि ... ९५८
संस्वेदजगुणाः ... ... ”

विषयः पृष्ठांकः

अथ वारिवर्गः। ९५९

जलनामानि ९५९
जलगुणाः ९६०
धारकादिचतुर्विधजलस्य लक्षणम् ९६५
अथ करकाः ... ... ”
गुणाः ... ... ”
अथ तौषारलक्षणं गुणाश्च ... ९६६
अथ हिमजललक्षणम् ९६७
हिमजलगुणाः ... ... ”
अथ भौमजलम् ९६८
अथाष्टविधं जलम् ... ... ”
नदीजलम् ... ... ”
अथ गंगाजलगुणाः ... ... ”
यमुनाजलगुणाः ९७०
नर्मदाजलगुणाः ... ... ”
गोदावरीजलगुणाः ... ... ”
कावेरीनदीजलगुणाः ... ... ”
कृष्णवेणीजलगुणाः ... ... ”
औद्भिदभूमिगुणाः ९७३
औद्भिदजललक्षणं गुणाश्च ... ९७४
अथ प्रस्रवणजलस्य लक्षणं गुणाश्च ”
अथ चोण्ड्यस्य लक्षणं गुणाश्च ”
अथ कौपास्यलक्षणं गुणाश्च ... ९७५
तडागजलस्य लक्षणं गुणाश्च ... ”
सारसलक्षणं गुणाश्च ... ... ”
वाप्यलक्षणं गुणाश्च ... ... ”
पाल्वलस्य लक्षणं गुणाश्च ... ”
विकिरस्य लक्षणं गुणाश्च ... ”
कैदारस्य लक्षणं गुणाश्च ... ”
वृष्टिजललक्षणं गुणाश्च ... ९७७
क्षारजलगुणाः ... ... ”
समुद्रजलगुणाः ... ... ”
सर्वऋतुसम्बन्धीयजलगुणाः ... ”
वार्षिकजलगुणाः ... ... ”
शारदीयजलगुणाः ... ... ”
हैमन्तिकजलगुणाः ९७८
शैशिरजलगुणाः ... ... ”

विषयः पृष्ठांकः
वासन्तिकजलगुणाः ९७८
ग्रैष्मिकजलगुणाः ... ... ”
अथ ऋतुपरत्वे जलगुणाः ... ”
पापोदक० ... ... ९७९
रोगोदक० ... ... ९८०
अंशूदक० ... ... ”
आरोग्योदक० ... ... ९८१
जलग्रहणकाल०... ... ... ”
शीतजलगुणाः ... ... ”
उष्णोदकलक्षणं गुणाश्च ... ९८२
ऋतुभेदे उष्णजलभेदः ... ९८३
पर्युषितजलगुणाः ... ... ”
शृतशीतजलगुणाः ... ... ”
उष्णजलनिषेधः ९८४
शीतलजलनिषेधः ९८५
अथाल्पजलपानविषयाः ... ”
अथ जलपानविधिः ... . ”
अथ जलपानावश्यकता ... ९८७
अथ प्रशस्तजलगुणाः ... ... ”
अथ निन्दितजलम् ९८८
अथ दुष्टजलनिर्दोषीकरणम् ... ”
सुवासितजलगुणाः ९८९
अथ पीतजलपाकविधिः ... ”
अथ दुग्धवर्गः । ९८९
दुग्धगुणाः ९९०
गोदुग्धगुणाः ९९१
अथ वर्णविशेषे गुणविशेषाः ... ९९२
अथ तर्केनीगोदुग्धगुणाः ... ”
अथ देशविशेषे गुणविशेषाः ... ”
अथ आहारविशेषे गुणविशेषाः ... ”
अथावस्थाविशेषगुणाः ... ९९३
गोदुग्धानां प्रशस्ताप्रशस्तभेदाः ... ”
गोदुग्धग्रहणकालनिर्णयः ... ”
माहिषदुग्धगुणाः ९९४
छागीदुग्धगुणाः ९९५
मेषीदुग्धगुणाः ... ... ”
मृगीदुग्धगुणाः ... ... ”
अश्वीदुग्धगुणाः ९९६
विषयः पृष्ठांकः
उष्ट्रीदुग्धगुणाः ९९६
हस्तिनीदुग्धगुणाः ... ... ”
गर्दभीदुग्धगुणाः ... ... ”
स्त्रीदुग्धगुणाः ९९७
अथ दुग्धस्य सात्म्यासात्म्यविधिः ”
अथ धारोष्णादिदुग्धगुणाः ९९८
प्रभातादिभवदुग्धगुणाः ”
समयविशेषे दुग्धसेवनगुणाः ९९९
अथ निन्दितदुग्धम् १०००
अथ क्षीरसात्म्यम् ... ... ”
पर्युषितक्षीरगुणाः १००२
अथ पीयूषकिलाटक्षीरशाकतक्रपिण्डमोरटानां लक्षणानि गुणाश्च ... ... ”
क्षीरसन्तानिकागुणाः ... ”
दण्डाहतक्षीरगुणाः १००३
गोदुग्धाभिभवफेनगुणाः ... ”
अथ दधिवर्गः १००३
साधारणदधिगुणाः १००४
अथ दधिभेदाः १००५
अथ मन्दादीनां लक्षणानि गुणाश्च ... ... ”
गव्यदधिगुणाः १००६
माहिषीदधिगुणाः १००७
छागदधिगुणाः ... ... ”
आविकदधिगुणाः १००८
हस्तिनीदधिगुणाः ... ... ”
अश्वीदधिगुणाः १००९
गर्दभीदधिगुणाः ... ... ”
उष्ट्रीदधिगुणाः ... ... ”
मानुषीदधिगुणाः १०१०
वार्षिकदधिगुणाः ... ... ”
शारदीयदधिगुणाः ... ... ”
हैमन्तिकदधिगुणाः ... ... ”
शैशिरदधिगुणाः ... ... ”
वासन्तिकदधिगुणाः ... ... ”
ग्रैष्मिकदधिगुणाः १०११

विषयः पृष्ठाङ्कः
पक्वदुग्धभवदधिगुणाः ... १०११
निःसारदधिगुणाः ... ... "
गालितदधिगुणाः ... ... "
सितायुक्तदधिगुणाः ... "
गुडयुक्तदधिगुणाः १०१२
दधिभक्षणनिषिद्धता ... "
अक्रमदधिभक्षणदोषाः ... "
त्रिकटुवादियुक्तदधिगुणाः ... "
सारःमस्तुनश्चलक्षणानिगुणाश्च १०१३
दधिकूर्चिकलक्षणं गुणाश्च ... "
तक्रवर्गः १०१३
तक्रभेदः १०१४
तेषां गुणाः ... ... "
अथ पक्वापक्वतक्रगुणाः ... १०१७
अथ दोषविशेषे व्याधिविशेषे च तक्रविशेषाः ... ... "
अथ तक्रसेवननिमित्तानि ... १०१८
अथ रोगविशेषे तक्रनिषेधः ... "
अथ गव्यादीनां तक्राणां विशिष्टा गुणाः ... ... "
गोतक्रगुणाः ... ... "
महिषीतक्रगुणाः १०१९
छागीतक्रगुणाः ... ... "
आविकतक्रगुणाः ... ... "
हस्तिनीतक्रगुणाः ... ... "
अश्वीतक्रगुणाः ... ... "
उष्ट्रीतक्रगुणाः १०२०
गर्दभीतक्रगुणाः ... ... "
स्त्रीतक्रगुणाः ... ... "
नवनीतवर्गः १०२०
साधारणनवनीतगुणाः ... १०२१
गव्यनवनीतगुणाः १०२२
महिषीनवनीतगुणाः ... "
छागीनवनीतगुणाः १०२३
आविकनवनीतगुणाः ... "
हस्तिनीनवनीतगुणाः ... "
अश्वीनवनीतगुणाः ... ... "
गर्दभीनवनीतगुणाः ... ... "

विषयः पृष्ठाङ्कः
उष्ट्रीनवनीतगुणाः १०२४
स्त्रीनवनीतगुणाः ... ... "
दुग्धजातनवनीतगुणाः ... "
नवीननवनीतगुणाः ... ... "
प्राचीननवनीतगुणाः ... "
घृतवर्गः १०२५
घृतगुणाः १०२५
गव्यघृतगुणाः १०२७
माहिषघृतगुणाः ... ... "
छागीघृतगुणाः ... ... "
मेषीघृतगुणाः ... ... "
हस्तिनीघृतगुणाः १०२९
अश्वीघृतगुणाः ... ... "
गर्दभीघृतगुणाः १०३०
एकशफपशुघृतगुणाः ... "
उष्ट्रीघृतगुणाः ... ... "
स्त्रीघृतगुणाः ... ... "
हैयंगवीनघृतगुणाः १०३१
दुग्धोद्भवघृतगुणाः ... ... "
शतधौतघृतगुणाः ... ... "
नूतनघृतगुणाः ... ... "
पुराणघृतम् ... ... "
नूतनघृतविषयाः १०३२
मूत्रवर्गः १०३३
गोमूत्रगुणाः १०३३
छागीमूत्रगुणाः १०३४
आविकमूत्रगुणाः ... ... "
माहिषमूत्रगुणाः ... ... "
गजमूत्रगुणाः ... ... "
अश्वीमूत्रगुणाः १०३५
गर्दभीमूत्रगुणाः ... ... "
औष्ट्रीमूत्रगुणाः ... ... "
मानुषमूत्रगुणाः ... ... "
मूत्रविशेषगुणाः १०३६
तैलवर्गः १०३७
तिलतैलगुणाः १०३८
सर्षपतैलगुणाः १०४०
राजिकातैलगुणाः १०४१

विषयः ... पृष्ठांकः
तुवरीतैलगुणाः १०४१
अतसीतैलगुणाः ... ... ,,
कुसुम्भतैलगुणाः १०४२
गोधूमादितैलगुणाः १०४३
एरण्डतैलगुणाः ... ... ,,
करञ्जतैलगुणाः १०४४
इंगुदीतैलगुणाः १०४५
निम्बतैलगुणाः ... ... ,,
शिग्रुतैलगुणाः ... ... ,,
ज्योतिष्मतीतैलगुणाः ... ,,
बिभीतकतैलगुणाः १०४६
हरीतकीतैलगुणाः ... ... ,,
कोशाम्रतैलगुणाः ... ... ,,
कर्पूरतैलगुणाः ... ... ,,
त्रपुषादितैलगुणाः १०४७
भल्लातकतैलगुणाः ... ... ,,
त्रिवृत्तैलगुणाः ... ... ,,
देवदारुतैलगुणाः ... ... ,,
राळतैलगुणाः ... ... ,,
आम्रतैलगुणाः १०४८
मधूकतैलगुणाः ... ... ,,
वंदातैलगुणाः ... ... ,,
अंकोलतैलगुणाः ... ... ,,
दन्तीतैलगुणाः ... ... ,,
पुत्रजीवकतैलगुणाः ... ... ,,
त्रायमाणतैलगुणाः १०४९
शंखिनीतैलगुणाः ... ... ,,
पुन्नागतैलगुणाः ... ... ,,
कपित्थतैलगुणाः ... ... ,,
खसखसतैलगुणाः ... ... ,,
नारिकेलतैलगुणाः ... ... ,,
पीलुतैलगुणाः ... ... ,,
शिशपादितैलगुणाः १०५०
पृथ्वीकादितैलगुणाः ... ... ,,
अवगाहनयुक्ततैलगुणाः ... ,,
शिरसितैलमर्द्दनगुणाः ... १०५१
कर्णतैलपूरणगुणाः ... ... ,,
मर्द्दने तैलगुणाः ... ... ,,

विषयः ... पृष्ठांकः
अर्कवर्गः १०५१
हरीतक्यर्कगुणाः १०५२
बिभीतकार्कगुणाः ... ... ,,
आमलक्यर्कगुणाः ... ... ,,
नागरार्कगुणाः ... ... ,,
आर्द्रकार्कगुणाः ... ... ,,
पिप्पल्यर्कगुणाः ... ... ,,
मरीचार्कगुणाः ... ... ,,
पिप्पलीमूलार्कगुणाः ... ,,
चव्यार्कगुणाः ... ... ,,
गजपिप्पल्यर्कगुणाः १०५३
चित्रकार्कगुणाः ... ... ,,
यवान्यर्कगुणाः ... ... ,,
अजमोदार्कगुणाः ... ... ,,
पारसीकयवान्यर्कगुणाः ... ,,
जीरकार्कगुणाः ... ... ,,
कृष्णजीरकार्कगुणाः ... ,,
कारवीजीरकार्कगुणाः ... ,,
धान्यकार्कगुणाः ... ... ,,
शतपुष्पार्कगुणाः १०५४
मिश्रेयार्कगुणाः ... ... ,,
श्वालामरिचार्कगुणाः ... ,,
मेथिकार्कगुणाः ... ... ,,
वनमेथिकार्कगुणाः ... ... ,,
चन्द्रसूरार्कगुणाः ... ... ,,
हिंग्वर्कगुणाः ... ... ,,
वचार्कगुणाः ... ... ,,
पारसीकवचार्कगुणाः ... ,,
कुलिञ्जनार्कगुणाः १०५५
स्थूलग्रन्थिवचार्कगुणाः ... ,,
द्वीपान्तरवचार्कगुणाः ... ,,
हपुषार्कगुणाः ... ... ,,
क्षुद्रहपुषार्कगुणाः ... ... ,,
विडंगार्कगुणाः ... ... ,,
तुम्बुरोरर्कगुणाः ... ... ,,
वंशलोचनार्कगुणाः ... ... ,,
समुद्रफेनार्कगुणाः ... ... ,,
जीवकार्कगुणाः १०५६
ऋषभकार्कगुणाः ... ... ,,
मेदार्कगुणाः ... ... ,,

विषयः	पृष्ठांकः
महामेदार्कगुणाः ...	... १०५६
काकोल्यर्कगुणाः ...	... ”
क्षीरकाकोल्यर्कगुणाः ...	... ”
ऋद्ध्यर्कगुणाः ...	... ”
वृद्ध्यर्कगुणाः ...	... ”
मधुकार्कगुणाः ...	... ”
जलमधुयष्ट्यर्कगुणाः ...	... १०५७
काम्पिल्लार्कगुणाः ...	... ”
आरग्वधार्कगुणाः ...	... ”
भूनिम्बार्कगुणाः ...	... ”
वत्सार्कगुणाः ...	... ”
मदनफलार्कगुणाः ...	... ”
रास्नार्कगुणाः ...	... ”
नागभिन्नार्कगुणाः ...	... ”
माचिकार्कगुणाः ...	... ”
तेजस्विन्यर्कगुणाः ...	... १०५८
ज्योतिष्मत्यर्कगुणाः ...	... ”
कुष्ठार्कगुणाः ...	... ”
पौष्करार्कगुणाः ...	... ”
क्षीरिण्यर्कगुणाः ...	... ”
शृंग्यर्कगुणाः ...	... ”
कट्फलार्कगुणाः ...	... ”
भार्ग्यर्कगुणाः ...	... ”
पाषाणभेद्यर्कगुणाः ...	... १०५९
धातक्यर्कगुणाः ...	... ”
समङ्गार्कगुणाः ...	... ”
कुसुम्भार्कगुणाः ...	... ”
लाक्षार्कगुणाः ...	... ”
हरिद्रार्कगुणाः ...	... ”
आरण्यहरिद्रार्कगुणाः ...	... ”
कर्पूरहरिद्रार्कगुणाः ...	... ”
दारुहरिद्रार्कगुणाः ...	... ”
रसाञ्जनार्कगुणाः ...	... १०६०
अवल्गुजार्कगुणाः ...	... ”
चक्रमर्दार्कगुणाः ...	... ”
अतिविषार्कगुणाः ...	... ”
लोध्रार्कगुणाः ...	... ”

विषयः	पृष्ठांकः
बृहत्पत्रार्कगुणाः ...	... १९६०
भल्लातकार्कगुणाः ...	... ”
गुडूच्यर्कगुणाः ...	... ”
बिल्वार्कगुणाः ...	... ”
काश्मर्यर्कगुणाः ...	... १०६१
पाटलार्कगुणाः ...	... ”
अग्निमन्थार्कगुणाः ...	... ”
श्योनाकार्कगुणाः ...	... ”
शालपर्ण्यर्कगुणाः ...	... ”
पृश्निपर्ण्यर्कगुणाः ...	... ”
बृहत्यर्कगुणाः ...	... ”
श्वेतकण्टकार्यर्कगुणाः ...	... ”
कण्टकार्यर्कगुणाः ...	... १०६२
गोक्षुरार्कगुणाः ...	... ”
जीवन्त्यर्कगुणाः ...	... ”
मुद्गपर्ण्यर्कगुणाः ...	... ”
माषपर्ण्यर्कगुणाः ...	... ”
श्वेतैरण्डार्कगुणाः ...	... ”
रक्तैरण्डार्कगुणाः ...	... ”
मन्दारार्कगुणाः ...	... ”
अर्क्यर्कगुणाः ...	... ”
वज्र्यर्कगुणाः ...	... १०६३
खाखलार्कगुणाः ...	... ”
लांगल्यर्कगुणाः ...	... ”
श्वेतकरवीरार्कगुणाः ...	... ”
रक्तकरवीरार्कगुणाः ...	... ”
धत्तूरबीजार्कगुणाः ...	... ”
वासार्कगुणाः ...	... ”
पर्पटार्कगुणाः ...	... ”
निम्बार्कगुणाः ...	... ”
महानिम्बार्कगुणाः ...	... १०६४
पारिभद्रार्कगुणाः ...	... ”
कांचनारार्कगुणाः ...	... ”
कोविदारार्कगुणाः ...	... ”
रक्तशोभाञ्जनार्कगुणाः ...	... ”
श्वेतशोभाञ्जनार्कगुणाः ...	... ”
शिग्रुजार्कगुणाः ...	... ”
गिरिकर्ण्यर्कगुणाः ...	... ”
सिन्धुवारार्कगुणाः ...	... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
निर्गुण्ड्यर्कगुणाः १०६४
कुटजार्कगुणाः १०६५
करंजार्कगुणाः ... ... ”
घृतकरंजार्कगुणाः ... ... ”
गुंजार्कगुणाः ... ... ”
श्वेतगुञ्जार्कगुणाः ... ... ”
रक्तगुञ्जार्कगुणाः ... ... ”
शूकशिम्ब्यर्कगुणाः ... ... ”
मांसरोहिण्यर्कगुणाः ... ... ”
चिरहृक्कार्कगुणाः ... ... ”
वेतसार्कगुणाः १०६६
जलवेतसार्कगुणाः ... ... ”
हिजलार्कगुणाः ... ... ”
अंकोटार्कगुणाः ... ... ”
बलार्कगुणाः ... ... ”
अतिबलार्कगुणाः ... ... ”
लक्ष्मणाभूलार्कगुणाः ... ... ”
स्वर्णवल्ल्यर्कगुणाः ... ... ”
कार्पास्यर्कगुणाः ... ... ”
वंशार्कगुणाः १०६७
नलार्कगुणाः ... ... ”
पाठ्यर्कगुणाः ... ... ”
शरपुंखार्कगुणाः ... ... ”
दुरालभार्कगुणाः ... ... ”
मुंड्यर्कगुणाः ... ... ”
अपामार्गार्कगुणाः ... ... ”
रक्तापामार्गार्कगुणाः १०६८
कोकिलाक्षार्कगुणाः ... ... ”
अस्थिसंहारिकार्कगुणाः ... ... ”
कुमार्यर्कगुणाः ... ... ”
पुनर्नवार्कगुणाः ... ... ”
रक्तपुनर्नवार्कगुणाः ... ... ”
प्रसारण्यर्कगुणाः ... ... ”
शारिवार्कगुणाः ... ... ”
भृंगराजार्कगुणाः ... ... ”
शणपुष्प्यर्कगुणाः ... ... ”
त्रायन्त्यर्कगुणाः ... ... ”
मूषार्कगुणाः ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
काकमाच्यर्कगुणाः १०६९
काकनासार्कगुणाः ... ... ”
काकजंघार्कगुणाः ... ... ”
नागाह्वार्कगुणाः ... ... ”
मेषशृंग्यर्कगुणाः ... ... ”
हंसपद्यर्कगुणाः ... ... ”
सोमवल्ल्यर्कगुणाः ... ... ”
आकाशवल्ल्यर्कगुणाः ... ... ”
पातालगरुडार्कगुणाः १०७०
वन्दाकार्कगुणाः ... ... ”
वटपत्रार्कगुणाः ... ... ”
हिंगुपत्र्यर्कगुणाः ... ... ”
वंशपत्र्यर्कगुणाः ... ... ”
मत्स्याक्ष्यर्कगुणाः ... ... ”
सर्पाक्ष्यर्कगुणाः ... ... ”
शंखपुष्प्यर्कगुणाः ... ... ”
अर्कपुष्पार्कगुणाः ... ... ”
लज्जालुकार्कगुणाः १०७१
अलम्बुषार्कगुणाः ... ... ”
दुग्धिकार्कगुणाः ... ... ”
ब्राह्म्यर्कगुणाः ... ... ”
ब्रह्ममण्डूक्यर्कगुणाः ... ... ”
द्रोणपुष्प्यर्कगुणाः ... ... ”
सूर्यमुख्यर्कगुणाः ... ... ”
वन्ध्याकर्कोटक्यर्कगुणाः ... ... ”
मार्कण्डिकार्कगुणाः १०७२
देवदाल्यर्कगुणाः ... ... ”
धत्तूरार्कगुणाः ... ... ”
गोजिह्वार्कगुणाः ... ... ”
नागपुष्प्यर्कगुणाः ... ... ”
बिल्वतर्यर्कगुणाः ... ... ”
छिक्कन्यर्कगुणाः ... ... ”
कुकुन्दरार्कगुणाः ... ... ”
सुदर्शनार्कगुणाः १०७३
मधुवर्गः १०७३
मधुनामानि ... ... ”
मधुसामान्यगुणाः ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
मधुजातिभेदाः १०७५
नवपुराणमधुगुणाः १०७६
पक्कापक्कमधुगुणाः १०७७
मधुनःशीतस्यगुणाधिक्यम् ... ”
सिक्थकनामानि ... ... ”
सिक्थकगुणाः ... ... ”
इक्षुवर्गः १०७८
इक्षुनामानि ... ... ”
इक्षुसाधारणगुणाः १०७९
सितेक्षुगुणाः ... ... ”
कृष्णेक्षुगुणाः ... ... ”
रक्तेक्षुगुणाः ... ... ”
पौण्ड्रकभीरुकयोर्गुणाः ... १०८०
कोशकारगुणाः ... ... ”
कान्तारेक्षुगुणाः ... ... ”
दीर्घपोरवंशकयोर्गुणाः ... ... ”
शतपोरकगुणाः ... ... ”
मनोगुप्तागुणाः १०८१
तापसेक्षुगुणाः ... ... ”
काण्डेक्षुगुणाः ... ... ”
सूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपोराणां गुणाः ... ... ”
इक्षुमूलादिगुणाः ... ... ”
वाक्षुवानृद्धेक्षुगुणाः ... ... ”
दन्तनिष्पीडितेक्षुरसगुणाः ... १०८२
यन्त्रनिष्पीडितेक्षुरसगुणाः ... ”
पर्युषितेक्षुरसगुणाः १०८३
इक्षुपक्करसगुणाः ... ... ”
इक्षुविशेषगुणाः ... ... ”
इक्षुरसविकाराणांगुणाः... ... ”
फाणितलक्षणगुणाश्च ... १०८४
मत्स्यंडीलक्षणंगुणाश्च ... ... ”
गुडनामानि ... ... ”
गुडलक्षणम् ... ... ”
गुडगुणाः १०८५
पुरातनगुडगुणाः ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
नूतनगुडगुणाः १०८६
खण्डनामानि १०८७
खण्डगुणाः ... ... ”
गुडखण्डगुणाः १०८८
शर्करानामानि ... ... ”
शर्करागुणाः १०८९
लक्षीकादीनामुत्तरोत्तरंनिर्मलादीनांगुणवत्त्वमाह १०९०
यावनालशर्करानामानिगुणाश्च ... ”
यवासशर्करागुणाः १०९१
मधुशर्करागुणाः ... ... ”
पुष्पशर्करागुणाः १०९२
सन्धानवर्गः १०९२
कांजिकनामानि ... ... ”
कांजिकलक्षणंगुणाश्च ... ... ”
कांजिकविशेषगुणाः १०९३
तुषोदकलक्षणंगुणाश्च १०९४
सौवीरनामानि ... ... ”
सौवीरलक्षणंगुणाश्च १०९५
आरनाललक्षणंगुणाश्च ... ... ”
आरनालकगुणाः ... ... ”
धान्याम्लकलक्षणंगुणाश्च... ... १०९६
शिण्डाकीलक्षणंगुणाश्च ... ... ”
शुक्तलक्षणं गुणाश्च ... ... ”
सन्धानलक्षणंगुणाश्च ... ... ”
मद्यनामानि १०९७
साधारणमदिरागुणाः ... ... ”
अरिष्टलक्षणंगुणाश्च १०९९
सुरालक्षणंगुणाश्च ... ... ”
वारुणीलक्षणंगुणाश्च ... ... ”
सीधुलक्षणंगुणाश्च ११००
गौडीमदिरागुणाः ११०१
माध्वीकमद्यगुणाः ... ... ”
पैष्टीमद्यगुणाः ११०२
इक्षुभवमद्यगुणाः ... ... ”
सर्ववृक्षभवमद्यगुणाः ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
द्राक्षामदिरागुणाः ११०२
खर्जूरमद्यगुणाः ११०३
तालमद्यगुणाः ... ... ”
आसवलक्षण गुणाश्च ... ... ”
सुरासवगुणाः ... ... ”
गुडासवगुणाः ११०४
मध्वासवगुणाः ... ... ”
द्राक्षासवगुणाः ... ... ”
शर्करासवगुणाः ... ... ”
जाम्बवासवगुणाः ... ... ”
मैरेयमद्यगुणाः ११०५
नवीनमद्यगुणाः ... ... ”
प्राचीनमद्यगुणाः ... ... ”
विधियुक्तमद्यपानगुणाः... ... ”
सुराप्रयोगविधिः ११०६
अथमद्यानां गन्धनाशनोपायः ... ”
संख्यावर्गः ११०७
क्षारत्रयम् ११०७
लवणत्रयम् ... ... ”
त्रिकटु ११०८
कटूषणम् ... ... ”
त्रिफला ... ... ”
त्रिफलागुणाः ... ... ”
मधुरत्रिफला ११०९
सुगंधत्रिफला ... ... ”
सुगंधत्रिफलागुणाः ... ... ”
त्रिसुगंधि १११०
मधुरत्रयम् ... ... ”
त्रिसमम् ११११
त्रिकार्षिका ... ... ”
त्रिसिता १११२
त्रिकण्टकम् ... ... ”
कण्टकत्रितयम् ... ... ”
कण्टकारीत्रयम् ... ... ”
त्रिलोहम् १११३
विषयः ... पृष्ठांक
अञ्जनत्रयम् १११३
अथोपविषात्रयम् ... ... ”
चतुरूषणम् ... ... ”
चतुर्जातकम् ... ... ”
कटुचतुर्जातकम् १११४
चातुर्भद्रकम् ... ... ”
चतुर्बीजम् ... ... ”
चातुर्थिकगणः ... ... ”
बलाचतुष्टयम् ... ... ”
कटुग्रंथिचतुष्कम् १११५
पंचकोलम् ... ... ”
द्वितीयपंचकोलम् ... ... ”
पंचत्वक् १११६
पंचपल्लवाः ... ... ”
पंचांगम् १११७
निम्बपंचांगम् ... ... ”
अस्यगुणाः ... ... ”
क्षारपंचकम् १११८
लवणपंचकम् ... ... ”
लघुपंचमूलम् ... ... ”
महापञ्चमूलम् ... ... ”
मध्यमपञ्चमूलम् १११९
बालाख्यपञ्चमूलम् ... ... ”
जीवनपञ्चमूलम् ... ... ”
तृणपञ्चमूलम् ११२०
गोक्षुरादिपञ्चमूलम् ... ... ”
पञ्चमहाविषाणि ११२१
पञ्चोपविषाणि ... ... ”
पञ्चगव्यम् ... ... ”
पञ्चमाहिषम् ... ... ”
सुगन्धपञ्चकम् ११२२
अम्लपञ्चकम् ... ... ”
द्वितीयफलाम्लपञ्चकम्... ... ”
पञ्चमठाः ११२३
पञ्चसमम् ... ... ”
द्वितीयपञ्चसमम् ... ... ”
पंचांगलेपः ... ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः
पंचभृङ्गम् ... ११२३
पंचमूत्रम् ... ”
पंचबीजम् ... ११२४
पंचसिद्धौषधी ... ”
पंचरत्नानि ... ”
पंचसूरणाः ... ”
पंचपित्तानि ... ११२५
औषधीपंचामृतम् ... ”
पंचामृतम् ... ”
षड्रसाः ... ”
क्षारषट्कम् ... ”
षडूषणम् ... ११२६
सुगन्धषट्कम् ... ”
महासुगन्धषट्कम् ... ”
प्राणकरषट्कम् ... ”
सप्तोपविषाणि ... ११२७
प्राणहरषट्कम् ... ”
शरीरस्थसप्तधातवः ... ”
सुवर्णादिसप्तधातवः ... ”
शरीरस्थधातूद्भवधातवः ... ११२८
सप्तोपधातवः ... ”
सप्तसन्तर्पणम् ... ”
सप्तविधक्काथः ... ”
सप्तोपरत्नानि ... ११२९
अष्टधातवः ... ”
अष्टविधचिकित्सा ... ११३०
अष्टगंधाः ... ”
अष्टवर्गाः ... ”
अष्टवर्गप्रतिनिधयः ... ११३१
अष्टमंगलघृतम् ... ”
नवधातवः ... ”
नवरत्नानि ... ”
क्षारदशकम् ... ”
दशांगधूपः ... ११३२
दशमूलम् ... ”
दशमूत्रम् ... ”

विषयः ... पृष्ठांकः

उत्तरार्द्धः ।

मंगलाचरण ... ११३३
अनूपादिवर्गः ११३३
अनूपदेशकालक्षण ... ११३३
जांगलदेशकालक्षंण ... ११३४
साधारणदेशकालक्षंण ... ११३५
अथक्षेत्रभेदाः ... ”
ब्राह्मक्षेत्रकालक्षण ... ११३६
क्षात्रक्षेत्र ... ”
वैश्यक्षेत्र ... ”
शूद्रक्षेत्र ... ”
चतुर्विधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः ... ११३७
पार्थिवक्षेत्र ... ”
आप्यक्षेत्र ... ”
तैजसक्षेत्र ... ११३८
वायवीयक्षेत्र ... ”
आन्तरिक्षक्षेत्र ... ”
पंचविधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः ... ”
पञ्चक्षेत्रोंके देवता ... ११३९
वृक्षोत्पत्तिः ... ”
वृक्षोंके ब्राह्मणादि भेद ... ”
तल्लक्षणानि ... ”
ब्राह्मणादि वृक्षोंको योजनेकी विधि ... ११४०
अथौषधिनिर्णयश्चतुर्विधः ... ”
तच्चतुर्विधं यथा ... ”
जंगमद्रव्य ... ”
पार्थिवद्रव्य ... ११४१
औद्भिदद्रव्यम् ... ”
अथ वृक्षादीनां पुंस्त्वादिकथनम् ११४२
वृक्षादीनांक्षुत्पिपासादिकथनम् ”
वृक्षादीनांपञ्चभूतात्मकत्वकथ० ११४३
वृक्षादीनांपरोपकारः ... ”
अथनक्षत्रवृक्षाः ... ११४५
औषधिकेलेनेमेंमुहूर्तविचार ... ११४६
औषधिलेनेकीविधिः ... ”
औषधिग्रहणमंत्रः ... ११४७

विषयः ... पृष्ठांकः

औषधिउखाड़नेकी विधि ... ११४७
दुष्टऔषधि ... ”
औषधसंग्रह अथवा रखनेकी विधि ११४८
द्रव्य लक्षण ... ११५०
स्वभावसेश्रेष्ठ ... ११५१
स्वभावसे अश्रेष्ठ ... ११५२
उपयोगविरुद्ध ... ”
औषधिलेनेमें संकेत ... ११५४
प्रतिनिधि ... ”
द्रव्यांतर्गतपदार्थ ... ११५७
मधुररसकावर्णन ... ११५९
अम्लरसकावर्णन ... ११६०
लवणरसकावर्णन ... ११६१
तिक्तरसकावर्णन ... ”
कटुरसकावर्णन ... ११६२
कषायरसकावर्णन ... ११६३
अथद्वन्द्वरस ... ११६४
मिश्रितरसके ६३ भेद ... ११६५
रसोंके ६३ भेदजाननेकेलिये यंत्र ११६६
मिश्ररस ... ११६७
परस्परविरुद्धरस ... ”
अथगुणाः ... ”
अथगुणप्रस्तावाद्दीपनादयोगुणाः ११६८
अथवीर्य ... ११७१
उष्णशीतवीर्ययोर्गुणमाह ... ”
रसानांवीर्यभेदमाह ... ११७२
अथविपाकः ... ”
प्रभाव ... ११७३
मिश्रवर्गः ११७३
पादमलमार्गाणांशौचगुणाः ... ११७४
उषःपानगुणाः ... ”
नासिकयाजलपानगुणाः ... ”
दन्तधावनविधिः ... ११७५
निषिद्धंयथा ... ”
दन्तधावनेदिङ्निर्णयः ... ”
दन्तकाष्ठव्यवहारनिषिद्धजनाः ”
जिह्वालेखनगुणाः ... ११७६
चक्षुर्धावनविधिः ... ”
गण्डूषगुणाः ... ”
मुखप्रक्षालनगुणाः ... ११७७
अंजनधारणगुणमाह ... ”
कंकतीगुणाः ... ”
उष्णीषधारणगुणाः ... ”
श्मश्रुनखादिच्छेदनगुणाः ... ११७८
प्रभातद्रष्टव्याः ... ”
अग्निसेवनगुणाः ... ”
धूमदिनगुणाः ... ”
शिशिरगुणाः ... ११७९
कुज्झटिगुणाः ... ”
छत्रगुणमाह ... ”
वृष्टिगुणमाह ... ”
आतपगुणमाह ... ”
छायागुणमाह ... ”
यष्टिधारणगुणमाह ... ११८०
व्यायामगुणाः ... ”
अंगमर्दनगुणानाह ... ११८२
शरीरघर्षणगुणानाह ... ”
पथभ्रमणगुणानाह ... ”
अतिभ्रमणगुणाः ... ११८३
पादुकाधारणगुणाः ... ”
अधारणेदोषोयथा ... ”
हस्त्यादिगमनगुणाः ... ”
विश्रामगुणाः ... ११८४
पादप्रक्षालनगुणाः ... ”
प्राग्वातगुणमाह ... ”
आग्नेयपवनगुणाः ... ”
दक्षिणमारुतगुणाः ... ११८५
नैर्ऋत्यमारुतगुणाः ... ”
पश्चिमपवनगुणाः ... ”
वायव्यपवनगुणाः ... ११८६
उत्तरवायुगुणाः ... ”
ऐशानवायुगुणाः ... ”
नीहारादिसंयुक्तवायुगुणाः ... ११८७

विषयः ... पृष्ठांकः
विष्वग्वायुगुणाः ११८७
व्यजनानिलगुणाः ... ... "
तालपत्रवायुगुणाः ... ... "
वंशव्यजनवायुगुणाः ... ... "
उशीरमूलादिव्यजनगुणाः ... ११८८
वालव्यजनवायुगुणाः ... ... "
मयूरपक्षादिनिर्मितव्यजनवायुगुणाः "
ऋतुविशेषे वायुगुणाः ... ... "
अभ्यंगगुणाः ११८९
पादाभ्यंगगुणाः ... ... "
अभ्यंगवर्जितजनाः ... ... "
अवगाहनयुक्ततैलगुणाः ... "
तैलमर्दनविधिः ११९०
शिरसितैलमर्दनगुणाः ... ... "
कर्णतैलपूरणगुणाः ... ... "
उद्वर्त्तनगुणाः ... ... "
मुखप्रलेपगुणाः ११९१
अथस्नानगुणमाह ... ... "
उष्णाम्बुनास्नानगुणमाह ... "
द्रव्यविशेषेणस्नानगुणमाह ... ११९२
स्नानस्यविशेषगुणमाह ... "
स्नाननिषिद्धजनाः ... ... "
शरीरमार्जनगुणाः ... ... "
वस्त्रधारणगुणाः ... ... "
रत्नाभरणधारणगुणाः ११९३
गुर्वादेरर्चनगुणाः ... ... "
दर्पणगुणाः ... ... "
अनुलेपनगुणाः ११९४
पुष्पादिधारणगुणाः ... ... "
भोजनादौलवणार्द्रकादिभक्षणगुणाः "
क्रमादन्नादिनागुणाधिक्यमाह ... ११९५
आहारगुणाः ... ... "
आहारेदिङ्निर्णयः ... ... "
भक्षणविषयेअन्नादिनांपरिमाणमाह "
आचमनगुणाः ... ... "
भोजनान्तेकर्त्तव्यता ११९६

विषयः ... पृष्ठांकः
भोजनान्तेउपवेशनादिगुणाः ... ११९६
ताम्बुलगुणाः ... ... "
पूगफलगुणाः ११९७
ताम्बूलपत्रगुणाः ... ... "
पर्णमूलादिगुणाः ... ... "
चूर्णगुणाः ... ... "
शंखचूर्णगुणाः ११९
खदिरगुणाः ... ... "
एलागुणाः ... ... "
लवंगगुणाः ... ... "
जातीफलगुणाः ... ... "
जातीकोषगुणाः ... ... "
कर्पूरगुणाः ... ... "
पूगस्यबालमध्यादिभेदेनगुणमाह "
ताम्बूलभक्षणनिषिद्धता ... ११९९
ताम्बूलस्यानुपयोगगुणाः ... "
अध्ययनादिगुणाः ... ... "
बुद्धिगुणमाह ... ... "
सद्योमांसादिगुणाः ... ... "
पूतिमांसादिगुणाः १२००
वयोभेदेनारीणांबालादिकथनम् "
बालादिस्त्रीसंसर्गगुणाः ... "
बालादिभेदेमैथुनकालनिर्णयः ... "
मैथुन निषिद्धता ... ... "
मैथुनकालनिर्णयः १२०१
अतिमैथुनगुणाः ... ... "
सन्तानोत्पत्तिकालनिर्द्दिशन्नाह "
सुखशय्यासनगुणाः ... ... "
भूमिशय्यागुणाः ... ... "
खट्वापटशय्ययोर्गुणमाह ... १२०२
ज्योत्स्नागुणाः ... ... "
अन्धकारगुणाः ... ... "
मैथुनगुणाः ... ... "
अतिमैथुनगुणाः ... ... "
मैथुनाकरणगुणाः ... ... "
परिमितमैथुनगुणाः ... ... "

विषयः पृष्ठांकः

निद्रागुणाः १२०२
रात्रिजागरणदिवास्वप्नयोर्गुणाः १२०३
हेमन्तशिशिरकृत्यानि... ... ,,
वसन्तकृत्यम् १२०५
ग्रीष्मकृत्यम् २०६
वर्षाकृत्यम् ... ... ,,
शरत्कृत्यम् १२०७
अथ ग्रन्थकर्तुर्वंशवर्णनम् ... १२०८
परिशिष्टभागः १२१२
मायाफलनामानि ... ... ,,
मायाफलगुणाः ... ... ,,
समुद्रफलनामानि १२१३
समुद्रफलगुणाः ... ... ,,
ब्रह्मदंडीनामानि १२१४
ब्रह्मदण्डीगुणाः ... ... ,,
रेवटचीनीनामानि १२१५
रेवटचीनीगुणाः ... ... ,,
चाहनामानि १२१६
चाहगुणाः १२१७
तमाखुनामानि ... ... ,,
तमाखुगुणाः १२१८
ईषद्गोलनामानि ... ... ,,
ईषद्गोलगुणाः ... ... ,,
सुधामूलीनामानि १२१९
सुधामूलीगुणाः ... ... ,,
रक्तमरिचनामानि ... ... ,,
कटुवीरागुणाः १२२१
वनकुलत्थनामानि ... ... ,,
वनकुलत्थगुणाः ... ... ,,
महाराष्ट्रीनामानि १२२२
महाराष्ट्रीगुणाः ... ... ,,
कीटमारीनामानि १२२३
कीटमारीगुणाः ... ... ,,
सर्पदंष्ट्रीनामानि ... ... ,,
सर्पदंष्ट्रीगुणाः १२२४
उष्ट्रीकंटनामानि ... ... ,,

विषयः पृष्ठांकः

उष्ट्रीकंटगुणाः १२२५
नखरंजकनामानि ... ... ,,
नखरंजकगुणाः १२२६
अंधपुष्पीनामानि ... ... ,,
अंधपुष्पीगुणाः १२२७
दण्डोत्पलनामानि ... ... ,,
द्विविधदण्डोत्पलगुणाः ... ,,
हदन्तीनामानि १२२८
हदन्तीगुणाः ... ... ,,
चिरपोटानामानि ... ... ,,
चिरपोटागुणाः १२२९
कुण्डिकानामानि ... ... ,,
कुण्डिकागुणाः ... ... ,,
कुम्भिकानामानि १२३०
कुम्भिकागुणाः ... ... ,,
शैवालनामानि १२३१
शैवालगुणाः ... ... ,,
अत्यम्लपर्णीनामानि ... ... ,,
अत्यम्लपर्णीगुणाः १२३२
मखान्ननामानि ... ... ,,
मखान्नगुणाः ... ... ,,
मर्यादवल्लीनामानि १२३३
मर्यादवल्लीगुणाः ... ... ,,
झिल्लनामानि १२३४
झिल्लगुणाः ... ... ,,
एकवीरनामानि ... ... ,,
एकवीरगुणाः १२३५
कंथारीनामानि ... ... ,,
कंथारीगुणाः ... ... ,,
आरिनामानि १२३६
आरिगुणाः ... ... ,,
भ्रमरछल्लीनामानि ... ... ,,
भ्रमरछल्लीगुणाः १२३७
अजगंधानामानि ... ... ,,
अजगंधागुणाः १२३८
वृद्धदारुकनामानि ... ... ,,
जीर्णदारुकनामानि ... ... ,,

विषयः	पृष्ठांकः
द्विविधवृद्धदारुगुणाः	...१२३९
समुद्रशोषगुणाः	... "
समुद्रपुष्पगुणाः	... "
कंजिकानामगुणाश्च	...१२४०
वेल्लतरुनामानि	... "
वेल्लतरुगुणाः	... "
ककटनामानि	...१२४१
कर्कटगुणाः	... "
किंकिणीनामानि	...१२४२
किंकिणीगुणाः	... "
गोरक्षीनामानि	...१२४३
गोरक्षीगुणाः	... "
पातालतुम्बीनामानि	... "
भूतुम्बीगुणाः	...१२४४
हेरंबनामानि	... "
हेरंबगुणाः	... "
वृश्चिकानामानि	...१२४५
वृश्चिकागुणाः	... "
तुवरनामानि	... "
तुवरगुणाः	...१२४६
एरण्डचिर्भिटनामानि	... "
एरण्डचिर्भिटगुणाः	...१२४७
क्षुद्रबादामनामगुणाश्च	...१२४८
काम्बोजीनामगुणाश्च	... "
निर्विषीनामानि	...१२४९
अस्यागुणाः	... "
नागजिह्वानामगुणाश्च	...१२५०
माकन्दीनामानि	... "
अस्यागुणाः	...१२५१
क्षुल्लपुष्पनामगुणाश्च	... "
आखराणीनामगुणाश्च	...१२५२
झावुकनामगुणाश्च	... "
राजाद्रिनामगुणाश्च	...१२५३
अस्यागुणाः	... "
सप्तपुत्रीनामानि	... "
अस्यागुणाः	...१२५४
वनप्सानामानि	... "
अस्यागुणाः	... "
आलुकनामगुणाश्च	...१२५५
अस्यगुणाः	... "
पुष्पगोभीनामानि	... "
अस्यागुणाः	... "
पुत्रगोभीगुणाः	...१२५६
ग्रन्थगोभीगुणाः	... "

इति।

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणकी अकारादिक्रमसे हिन्दी-अनुक्रमणिका ।

विषयः	पृष्ठांकः	विषयः	पृष्ठांकः
अकरकरा	१५५	अपराजिता	३२९
अखरोट ✓	६०६	अपामार्ग	४१३
अगर	२३	अफीम	२३१
अगस्तिया	५२२	अभ्रक	७४०
अगेथू	२६८	अमरबेल	४४६
अग्निदमन	५२८	अमरूद	५७४
अंकोल	३५०	अमलबास	७७५
अंगरापन	२५५	अमलबेत	५९३
अंगूर ✓	६४३	अमृतफल	५७४
अजकर्णशाक	६६६	अम्बाडा	५५०
अजवा (म) यन	१३२	अम्लघाटीपान	२५५
अजमोद	१२३	अरणी	२६७
अंजन	७३२	अरण्ड	२९१
अंजीर ✓	६३४	अरलू	२७०
अडूसा	३१२	अरहर	८३७
अड़हर	८३७	अरिमेद	६७३
अण्ड	२९२	अरिष्टक	६७८
अण्ड खरबूजा ✓	१२४६	अर्कपुष्पी	४५५
अतिबला	३५४	अर्कवर्ग	१०५१
अतीस	२१९	अर्जक	५२९
अत्यम्लपर्णी	१२३१	अर्जुन	६६८
अदरख ✓	१११	अलंबुषा	४५८
अनन्तमूल	४२९	अलसी	८४५
अनन्नास ✓	६३३	अलाबू	८९०
अनार	५५४	अवरक	७४०
अनूपादिवर्ग	११३३	अशोक	५१०
अन्धाहुली	४५५--१२२६	अश्वकर्ण	६६५
अन्ध्रदेशकी सुपारी	६०८		

विषयः ... पृष्ठांकः
असगंध ... ३८८
असन ... ६७०
असवरग ... ८८
अष्टवर्ग ... १७०
आक ... २९६
आकाशबेल ... ४४८
आकाशमांसी ... ६१
आखुपाषाण ... ८०६
आतशीशीशा ... ७९३
आदित्यपत्रा ... ४६७
आदित्यभक्ता ... ४६५
आम ... ५४३
आमड़ा ... ५५०
आमला ... १०७
अम्लिया ... २१०
आरग्वध ... १७५
आरी ... १२३६
आलुकी ... ९४३
आलू ... ९४३
आलू बुखारा ... ५८९
आसन ... ६७०
इंगुदी ... ७३०
इन्द्रजौ ... १८३
इन्द्रायण ... ४०२
इमली ... ५८६
इलायची ... ४९
इस्पात ... ७२१
इक्षुदर्भ ... ३७३
इक्षुवर्ग ... १०७८
इक्षुविकार ... १०८३
ईख ... १०७८
ईश्वरलिंगी ... ४३८
ईसबगोल ... १२१८
उटंगण ... ८७८
उड़द ... ८२६
उदयभास्करकपूर ... ५

विषयः ... पृष्ठांकः
उदुम्बर ... ६५७
उपजाती ... ४८४
उपविष ... ८०७
उपोदकी ... ८७२
उशीर ... ६७
ऊख ... १०७८
ऊसल तृण ... ३७२
ऊंटकटीरा ... १२२४
ऋद्धि ... १६७
ऋषभक ... १६४
एकवीर ... १२३४
एकांगी ... ८६
एनोना ... ६३२
एरकातृण ... ३६७
एरण्ड ... २९१
एरवारु ... ८९२
एला ... ४९
एलुआ ... ८९
एलुवा ... ४२०
ओखराणी ... १२५२
ओंगा ... ४१३
ओट ... ५९१
ओटहुल ... ५२०
ओल ... ९४०
औदद्भिनोम ... २४४
औंधाहुली ... १२२६
औषरनोन ... २४५
ककंच ... ३४३
ककड़ी ... ८९३
ककरोंदा ... ४७७
ककड़िया ... ३५४
ककोड़ा ... ९१५
ककुष्ठ ... ७६०
कक्कोल ... ५२
कंगुनी ... ८५२
कंघी ... ३५४

विषयः	पृष्ठांकः
कचनार	३२२
कचारया	८९९
कचियानोन	२४३
कचूर	८३
कचूर भेद	२११
कञ्ज	७९७
कञ्जट शाक	८६९
कज्जूआ	३३५
कटभी	७००
कटसरैया	५१३
कटहर	५९४
कटाई	२७५
कटिधान्य	८५८
कटीलानोन	२४१
कटुकी	१७७
कटेरी	२७८
कटेय्या	२७८
कट्फल	१९७
कटपाडर	२६५
कठपुड्ला	४०६
कठिनी	७५४
कठूमर	६५९
कटैल	५९४
कड़वीककड़ी	८९५
कड़वीकन्दूरी	९१४
कड़वीजीवन्ती	२८३
कड़वीतुम्बी	८९१
कड़वीतोरई	९०६
कड़वेपरवल	९१०
कटसरैया	५१३
कण्टकारी	२७८
कण्टाई	६२६
कण्टाफल	५९४
कण्टालु	९२०
कणगूगल	३६
कतकफल	६४२
तृण	३७०

विषयः	पृष्ठांकः
कत्था	६७२
कदली	५५७
कदलीकन्द	९५७
कद्दू	८९०
कदम	५०३
कनकधतूरा	३११
कनेर	३०७
कन्तार ईख	१०८०
कन्धारी	१२३५
कन्द	१०८८
कन्दगिलोय	२५३
कन्दूरी	९१२
कन्नालींबू	५८१
कपर्दक	७५५
कपास	३५८
कपित्थ	६१५
कपिलद्राक्षा	६४३
कापिलशिंशपा	६६३
कपूर	१
कपूर कचरी	८४
कपूर हलदी	२१०
कमरख	६१७
कमल	५३१
कमलकन्द	५३९
कमलकी नाल	५३८
कमलके नवीन पत्ते	५३५
कमलकेशर	५३६
कमलगट्टा	५३७
कमलगट्टेका घर	५३७
कमलिनी	५३८
कम्बोह	१२४९
करली	८८०
करन्दा	६२०
करियसेम	९२६
करियाशाक	४३०
करील	६९४

विषयः	पृष्ठांकः
करेला	९१६
करौंदा	६२०
करञ्ज	३३९
करञ्जुवा	३२
कर्तरिनिर्गुण्डी	६३३
कर्दम	७६५
कर्कटाशिंगी	१९६
कर्णिकार	१७७-५०६
कर्पूरा हलदी	२१०
कर्पूरादि वर्ग	१
करई	८६०
कलई	७१६
कलगा	५०२
कलगाघास	१२५३
कलपती हींग	१४८
कलमी आम	५५०
कलमी शाक	८७७
कलम्बक	८१
कलाय	८२८
कलिंग	९०२
कलिहारी	३०५
कल्हार	५४०
कवाबचीनि	२५
कवीला	१७३
कवैया	४४०
कसीस	७५२
कसूम	२०६
कसेरू	९५५
कसौंदी	८८२
कस्तूरी	६
कस्सा	८४०
काँस	६७९
काँसी	७२४
काकजंघा	४४२
काकड़शिंगी	१२६
काकतेंदू	५९९
काकनासा	४४३
काकमाची	४४०
काकोली	१३७
कागजी नींबु	५८१
काशुनी	८५२
काचलवण	२४३
काजूतक	६४७
काञ्चनार	३२२
काञ्चनी	३२५
कांथ	७९६
काठआमला	१२४२
काण्डेक्षु	१०८०
कायफल	१९८
कालकूट	८००
काला केला	५६४
कालागन्ना	१०७९
काला गूलर	६५९
कालाचंदन	१८
कालाचीता	१२५
कालाजीरा	१४०
कालाजीरी	१४३
कालाञ्जनी	३५९
कालादाना	४०३
कालाधतूरा	३११
कालानिशोथ	३९३
कालानोंन	२४३
कालाशीशम	६६३
कालासुरमा	७३२
कालासेमर	६९०
कालिंग	९०२
कालीअगर	२४
कालीकनेर	३०७
कालीकपास	३५८
कालीतुलसी	५२४
कालीदाख	६४३
कालीमट्टी	७६५
कालीमिरच	११४
कालीमुसली	२८४

विषयः ... पृष्ठांकः

कालीनूग ८२४
कालीसर ४३०
कालीहलदी ८३
कालेतिल ८५६
कांस ३६६
कांसा ७२४
कास्तालु ९४५
काथीफल ८८९
काष्ठकदली ५६३
काष्ठदेवदारु २७
काष्ठागुरु २४
काष्ठालू ९५४
किंकिणी ६१६
किंकिरात ५०६
किन्दुरु ३८
किवांच ३४३
किरमानी अजवायन ... १३६
किरमाला १७५
किसमिस ६४३
कीकर ६७६
कीच ७६५
कीड़ामारी १२२३
कुकरौंदा ४७७
कुकुरभांगरा ४३१
कुचला ६००
कुटकी १७७
कुडा ... १८१–२३३
कुणक्षर ८६२
कुन्द ५०१
कुन्दुरु ३८
कुब्जक ४९०
कुमारी ४१८
कुमुद ५४०
कुमुदनी ५४२
कुम्भेर २६२
कुम्हडा ८८७
कुरण्टका वृक्ष १२२९

विषयः ... पृष्ठाङ्कः

कुलथी ८४२
कुलफा ८६४
कुलींजन १५२
कुशा ३६८
कुसुमाञ्जन ७३३
कूआ ४१०
कूट ८२
कूटशाल्मली ६९१
कृमिशंख ७६०
कृष्णनिम्ब ३२१
कृष्णमृत्तिका ७६५
कृष्णबोल ४२०
कृष्णशुभ्रधान ३५६
कृष्णव्रीही ८१३
कृष्णमुद्ग ८२४
कृष्णागुरु २४
कृष्णार्जक ५२९
कृष्णेक्षु १०७९
केऊआ ९५६
केतकी ५०८
केराव ८३९
केला ५५७
केवडा ५०८
केवटीमोथा ७६
केसर १२
केमू ९५६
कैथ ६१५
कैवर्त मुस्तक ७६
केसरनीफल ५४१
कैडया ४१६
कोहली ३२९
कोई ५४०
कोकम ५९२
कोकरुन्दा ४७७
कोकिलाक्ष ४१६
कोदों ८५७
कोरैया १८१

विषयः	पृष्ठांकः
कोयल	३२९
कोलकन्द	९४७
कोलसिम्बी	९२५
कोलेका शाक	८८७
कोशम्भ	५५२
कोशातकी	९०४
कोशाम्र	५५२
कोषकार इक्षु	१०८०
कोह	७०९-६६७
कोहडो	८८९
कोआठोडी	४४३
कौच	३४३
कौडयाली	४५३
कौडी	७५५
कौरैया	३३३
कौहा	६६८
खखसा	९१५
खजूर	५६९
खडिया	७५४
खपरिया	७५६
खरबूजा	९००
खस	६७
खसखस	२३२
खाड	१०८७
खारी	२४४
खिरनी	६२९
खिरैंटी	३५२
खिसारी	८४०
खिरा	८९६
खुरासानी अजवायन	१३६
खुरासानी अजमोद	१३५
खुरासानी वच	१५०
खेखसा	८१५
खेसारी	८४०
खैर	६७१
खैर सार	६७२

विषयः	पृष्ठांक
खोपडा	५६४
गङ्गत्रिया	७१
गङ्गेटी	४२२
गगेरुआ	१२४३
गङ्गेरन	३५५
गजकरण आलू	९४३
गजपीपल	१२१
गजहन्दू	६३४
गठिवन	८०
गण्डनी	४५३
गधहपूर्णा	४२२
गनयारी	२६३
गंधक	७४८
गंधनाकुली	९५०
गन्धपलाशी	८५
गंधप्रसारणी	४९७
गंधप्रियंगु	६४
गन्धविरोजा	४०
गन्धमांसी	६२
गन्धमार्जारवीर्य	११
गन्धराजगूगल	३६
गन्धेजघास	३७०
गन्ना	१०७८
गरहेडुआ	८६०
गवेधुका	८६०
गाजर	९३१
गाँजा (व)	९२५
गाँडर	६७
गाँडरदूब	३७७
गारा	७६६
गिलोय	२४९
गिलोयका सत्त	२५२
गुग्गुल	३१
गुच्छकरञ्ज	३३८
गुच्छकन्द	९५४
गुजराती इलायची	५१
गुञ्जा	३४०

विषयः ... पृष्ठाङ्कः
गुठवा ८७८
गुड १०८४
गुडकी खाँड १०८७
गुडहर (छ) ५२०
गुडूच्यादिवर्ग २४९
गुडेहर ४४३
गुण्डतृण ३७६
गुण्डासिनीतृण ३७६
गुदवरोसा ३९
गुन्द्रपटेर ३६७
गुरभीहूँ ८९९
गुलतुरो ५१७
गुलतीरा ... ... ”
गुलदुपहरिया ... ... ”
गुलपरी ... ... ”
गुलबनपला १२५४
गुलसकरी ३५५
गुलाब ४९०
गुहागरीसुपारी ६०८
गूगरी ४२
गूगाल ३१
गूमा ४७४
गूलर ६५७
गेजुनिया ५१७
गेटी ९४७
गे[illegible] ७५३
हूगे ८१७
गैदा ५४२
गोखरू २८०
गोजिया ४७३
गोंदपटेर २६७
गोंदी २६७
गोधूम ८१७
गोपीचंदन ७६४
गोभी ४७३
गोमा ४६
गोमूत्रतृण ३७३

विषयः ... पृष्ठाङ्कः
गोमेदमणि ७८९
गोरखइमली १३४२
गोरखककडी ८९१
गोरखमुण्डी ४१
गौराणी ९३३
गोरोचन ६८
गोलकद्दू ८८
गोलमिरच ११५
गोलमूली ९३५
गोरसर्षप ८४
गौराशाख ११
गौरियावाखाऊँ ४३०
गौरीसर ... ... ”
गौलोचन ६८
गृञ्जन ९३९
ग्रन्थिपर्ण ७९
ग्वारपट्ठा ४१८
ग्वारकी फली ९३९
वनबहेडा १७५
वागडी ४३६
वियातोरई ९०४
घीकुवार ४१८
घुइयां ९४३
घूंघचमोतिया ४८५
घुघुची ३४१
घृतकरञ्ज ३३५
घृतवर्ग १०२५
घोंघा ७६०
घोडाकरञ्ज ३३५
घोडावच १५०
चकवड २१७
चकोतरा ५८५
चचेंडा ९०८
चंचू ८७७
चण्डालकन्द ९५२
चणक ८३४
चणिकातृण ३७

विषय. पृष्ठांक.
चनकबाघ ५३
चने ८३४
चनेकाखार २५८
चनेकाशाक ८३६
चन्दनसफेद १५
चन्दापुरीसुपारी ६०८
चन्द्रकान्तमणि ७९४
चन्द्रस ४०
चन्द्रसूर १३१
चमरियासेम ९२६
चम्पईकेला ५६४
चम्पा ४९३
चम्पापुरीसुपारी ६०८
चम्बेली ... ४८२–४८४
चरेली ४६२
चवरा ८२६
चव्य ११९
चांदी ७१२
चावल ८०८
चारुक ८६०
चाह १२१२
चाक्षु १२२१
चित्रक १२३
चिरचिटा ४१३
चिरपोटन १२२८
चिरभिटी ३४१
चिरायता १७९
चिल्लक ३४६
चिल्लीशाक ८६४
चिरोंजी ६२८
चीढ २७
चीता १२३
चीना ८५२
चीनाककड़ी ८९५
चीनाभेद ८५५
चिनियाकपूर ५
चीनीकबाव ५३

विषय. पृष्ठांक.
चुम्बक ७६३
चूक २४८
चूका ८६६
चूर्णहार ४३९
चैना ८५२
चोक १९४
चोरक ८१
चोबचीनी १५३
चौंटली ३४१
चौपतिया ८७०
चौरा ८२८
चौंलाई ८६८
चौहादकोड़ा २४२
छतिवन ७०४
छसौना ९५८
छरीला ७७
छिकनी ४७६
छिरहटा ४५०
छिलहिण्ड ४५०
छुईछुई ४५६
छुहारीअजमोद १३६
छुहारा ५६९
छोकरा ७०३
छोटाकचूर ८४
छोटाकिरायता १२५०
छोटागोखरू २८०
छोटाजवासा ४९
छोटीभरनी २६८
छोटीइलायची ५०
छोटीकटाई २७७
छोटीकौंच ३४४
छोटीजामुन ६५१
छोटीमुण्डी ४११
छोका ८३४
जङ्गमविष ८०२
जङ्गलीगाजर ९३७
जङ्गलीसूरण ९४२

विषय.	पृष्ठांक.
जङ्गलीहलदी	२११
जटामांसी	६१
जतुका	९२
जमालगोटा	३९८
जमीकन्द	९४०
जम्भीरीनींबू	५८२
जवापुष्प	५२०
जरडीतृण	३७४
जल	९५९
जलकुम्भी	१२३०
जलचौलाई	८६९
जलजामुन	६५०
जलनीली	१२३०
जलपीपल	४७१
जलपुष्प	१२५१
जलमहुवा	६०४
जलमुलेटी	१७३
जलवेंत	३४७
जलसिरस	७०२
जलसीप	७५७
जवादिकस्तूरी	११
जवाखार	२३३
जवानी	१३६-२३५
जवासा	४०९
जस्त	७२०
जातीपुष्प	४८३
जाफर	५२०
जामुन	६४९
जायफल	४५
जावित्री	४८
जिंगनी	६८२
जियापोता	६७९
जीरा	१३८
जीवक	१६३
जीवन्ती	२८३
जुही	४८७
जेठीमधु	१७१
जौ	८१५
ज्वार	८१९
झड़बेर	६२५
झाऊवृक्ष	१२५२
झिरनी	९०६
झिल	१२३४
झुनझुनिया	४३३
टङ्कारी	३४६
टिण्टेका शाक	९१९
टेंटू	२७०
टेरा	३५०
टेसू	६८५
डाभ	३६८
डावड़ा	२७४
डिकामाली	१४८
डोडी	२८३-२८६
ढाक	६८५
ढाढौन	७०३
ढेरा	३५०
ढेंढस	९१९
ढोलसमुद्र	७०३
तक्रवर्ग	१०१३
तगर	२९
तङ्कारी	३४६
तज	५६
तमाखू	१२१७
तमाल	६८३
तरबूज	९०२
तवरक	१२४५
तवाखीर	६०
ताल	६११
तापसेक्षु	१०८१
तांबा	७१४
ताम्बूल	२५३
ताल	६११
तालमखाना	४१६
तालीसपत्र	६०

विषय. पृष्ठांक.
तितलौआ ८९१
तितलौंकी ८९१
तिधारीकांडवेल ३०३
तिनछ ७०५
तिनसुना ७०४
तिरच्छ ६०५
तिरीफल ३९५
तिल ८४२
तिलक ५०२
तिलवन १२३७
तिली ८४३
तिसी ८४५
तिनी ८५३
तीखरीसनपुष्पी ४३३
तुन ६८४
तुवर १२४५
तुंबुरु १५८
तुम्बा ८९०
तुरञ्जबीन १०९१
तुलसी ५३४
तूत ६३७
तूतिया ७३४
तृणधान ८५१
तृणाख्य ३७१
तेजपात ५८
तेजबल १९०
तेजोमन्थ ३७०
तेंदू ५९७
तैलकन्द ९५२-९३८
तैलवर्ग १०३७
तौंबी ८९०
तोर ८३७
तोरई ९०
तृणकेशर १५४
तृशाख्यतृण ३७५
त्रायमाण ४३५
त्रियपर्णीकन्द ... ९५३-९३८

विषय. पृष्ठांक.
थुनेर ८०
थूहर २९८
दण्डोत्पल १२२७
दधियार ४५५
दधिवर्ग १००३
दन्ती ३९५
दवनपापड़ा ३१४
दवना ५२७
दक्षिणीमिरच ११४
दाख ६४३
दाडिम ५५६
दाभ ३६८
दारुहलदी २१२
दालचीनी ५५
दाहागरु २५
दीर्घरोहिष ३६३
दुग्धफेनी ४५८
दुग्धवर्ग ९८९
दुद्धी ४५९
दुपहरिया ५१६
दुर्गन्धखैर ६७३
दुलाह ४०९
दूधविदारी ३८१-३७१
दूधिया ४५९
दूधी ४५९
दूधीकलम ४५९
दूब ३७८
दूसरा लज्जालू ४५७
दूसरा सौनाक २७०
दूसरी सनपुष्पी ४३३
देवदारु २५
देवदाली ४७०
देशीबादाम ११४८
दौना ५२७
दौका २७४
द्रोणीलवण २४५
धतूरा ३०९

विषय. पृष्ठांक.
धनियाँ १४४
धन्वङ्गवृक्ष ६९३
धन्वनवृक्ष ६९३
धमासा ४०८
धरणीकन्द ९४९
धव ६९२
धवाईके फूल २०१
धातुउपधातुवर्ग ७०९
धान्य ८०७
धान्यवर्ग ८०७
धामिन ६९२
धायके फूल २०१
धाराकदम्ब ५०३
धावाई २०१
धूपसरल ... - ... २७
धूलिकदम्ब ५०५
धूसरभृंग ८२४
धौ ६९२
नकछिकनी ४७६
नकुलकन्द १८८
नख ६९
नखी ६९
नदीगूलर ६५०-६५९
नदीजामन २२५
नदीभल्लातक ६५०
नरकचूर ८३
नरमावाडी ३५८
नरसल ३६४
नरसार २४५
नरियल ५६४
नर्त्तक ८५५
नल ३६३
नलिका ९३
नवडा ८६७
नवनीतवर्ग १०२०
नवसादर २४५
नवीन प्राचीन धान ८६१

विषय. पृष्ठांक.
नवीन प्राचीन पान २५६
नाई १८८
नाकुछिकनी ९५०-४७६
नाकुलीकन्द १८८
नागकेशर ५४
नागचम्पा ४९५
नागदौन ४७४
नागपुष्पी ४४४
नागरपान २५३
नागरमोथा ७४
नागार्जुनी ४५९
नाडीकाशाक ८७६
नाडीहिंगु १४८
नारियल ५६४
नारंगी ५७६
नालशाक ९३०
नासपाती ५७४
निर्गुण्डी ३३३
निर्विषी १२४९
निर्मलीफल ६४२
निष्पाव ८३१
निष्पावी ९२४
निःश्रेणीतृण ३७४
निसोथ ३९२
निसोरे ६४०
नींबू ५८१
नीम ३१६
नीलकमल ५३२
नीलका वृक्ष ४०४
नीलमणि ७८८
नीलछझालू ३३१
नीलथोथा ७३४
नीलालू ९४६
नीलीकोयल ३३०
नीलीचम्पा ४९४
नीलीदूब ३७८
नीलीसाँठ ४२३

विषय. ... पृष्ठांक.
नीलेकुमुद ५४०
नीलेफूलकी कटसरैया ... ५१२
नीलोत्पल ५४०
नीवारधान ८५४
नेत्रवाला ७३
नेत्रुआ ९०५
नेपालनीम १८०
नेवारी ४८७
नैकवत ग्रामकी सुपारी ... ६०
नोनियाका शाक ८६४
नोसादर २४५
पटसण ४३४
पटुआशाक ८७६
पटेर ३६६
पठानीलोध २२६
पण्यन्धातृण ३७०
पतंग ३०
पताकआमरा ४६०
पतिजिया ६७१
पत्रज ५८
पत्थरका फुल ७७
पद्माख ३०
पनिडी ९२
पनिक्कर ३९१
पनिसी ४२२
पम्बिलिगा ४७१
पन्ना ७८३
पपरियाकत्था ६७१
पपरी ९१
पमार २१७
परवल ९१०
परूषा ६३५
पर्णकपूर ५
पलाण्डु ९३३
पलाद्ध ६८५
पल्लिवाहतृण ३७५
पवाड २१७

विषय. ... पृष्ठांक.
पखारी ९५
पखरन ४२७
पाखर ६५६
पखानभेद २४०
पाँगानोन २४०
पाटली ४२१
पाठा ३९०
पाढ ३९०
पाढर २६५
पाढल २६
पाण्डुफली ४२१
पातालगरुडी ४४९
पातालतौंबी १२४३
पान २५३
पानी ९५९
पानीआमला ६१९
पानीयालू ९४५
पाँचपखारी ६४२
पारसीकअजमोद १३६
पारसीकवच १५०
पारा ७२६
पारिसपीपल ६५४
पारेवत ६३९
पालककाशाक ८७०
पिठवन २७४
पिठौनी २७४
पिण्डखजूर ५६९
पिण्डमूल ९३९
पिण्डार ९१९
पिण्डालू ९४२
पितौंजिया ६७९
पित्तपापड़ा ३१५
पियासाल ६७०
पियाबाँसा ५१३
पिलखन ६५६
पिस्ता ६३४
पीतचन्दन १९

विषय. पृष्ठांक.

पीतल ७२५
पीपरामूल ११८
पीपल ११६
पीपलकावृक्ष ६५३
पीलाकेला ५६३
पीलागेरू ७५३
पीलाचन्दन १९
पीलाभांगरा ४३१
पीलीकचनार ३२५
पीलीकनेर ३०७
पीलीकेतकी ५०८
पीलीचमेली ४८३
पीलीजाती ४८३
पीलीजीवन्ती २८५
पीलेफूलका भांगरा ४३१
पीलेफूलकी कटसरैया ... ५१२
पीलू ६०४
पुखराज ७८७
पुण्डरीक ९१
पुनर्नवा ४२३
पुनेरा ८६१
पुन्नागपुष्प ५११
पुरानेपान २५५
पुरी ८८
पुष्प ४८१
पुष्पकासीस ७५१
पुष्पवर्ग ४८१
पुष्परस ४८१
पुष्पशर्करा १०९२
पुष्पशाक ८८५
पुष्पाञ्जन ७३३
पूतिकरंज ३३९
पूरबीइलायची ५०
पृष्ठपर्णी २७४
पेठा ८८७
पैमदीवेर ६२३

विषय. पृष्ठांक.

पोईकाशाक ८७२
पोटकुलीपान २५६
पोदीना ९४
पोस्त २३०
पोस्तके डोडे २३०
पोहकरमूल १९३
पौंड़ा १०७९
पौंदेबेर ६२३
पौंडकईख १०७९
प्याज ९३३
प्रदीपन ८००
प्रपौण्डरीक ९१
प्रसारणी ४२७
प्रियंगू ६५
फञ्जी १२४०
फटकिरी ७६२
फटिकमणि ७९५
फणसी ४२२
फरकेंदू ४०२
फरवाह ७०१
फरहद ३२१
फरेन्द्र ६४९
फलवर्ग ५४३
फलशाक ८८७
फाणित १०८४
फालसा ६३५
फिरोजा ७९५
फूट ८९९
फूलगोभी १२५५
फूलप्रियंगू ६५
फोण्डालू ९४५
फौलाद ७२०
वंशपत्रीतृण ३७५
वंशलोचन १५९
बक २१
बकाइन ३२३
बकुल ४९७

विषय. ... पृष्ठांक.

बचौला ५४०
वंग ७१६
वच १४९
वच्छनाभ ७९८
वज्रदन्ती १२४५
वज्रवल्ली ३०३
वटादिवर्ग ६५१
वट ६५१
वटपत्री ४५२
बडहर ५९६
बड़ीअण्ड २९२
बड़ीजम्भीरी ५८२
बड़ाजलवेंत ३४९
बड़ानल ३६३
बड़ानील ४०५
बड़ापीलू ६०४
बड़ाबथुआ ८६२
बड़ावेंत ३४९
बड़ीइन्द्रायण ४०२
बड़ीइलायची ४९
बड़ीकटेरी २७७
बड़ीकदम्ब ५०३
बड़ीगङ्गेरन ३५२
बड़ीजीवन्तीं २८५
बड़ीदन्ती ३९८
बड़ी नौनिया ८६४
बड़ीमालकांगनी १९२
बड़ीमुण्डी ४११
बड़ीमूली ९३५
बड़ीमूषाकर्णी ४८०
बड़ीमौलसिरी ४९९
बड़ीशताबर ३८५
बदर ५९६
बणखणै ४३३
बत्सनाभ ७९८
बथुआ ८६३
बदाम ५७२

विषय. ... पृष्ठांक.

बनउर्दी २८८
बनककड़ी ८९५
वनकदली ५६२
वनकपास ३५९
वनकुलथी १२२१
बनतुलसी ५२९
वनदौना ५२८
बननिर्गुण्डी ३२३
वनपीपल १२२
वनबथुआ ८६२
वनविजोरा ५८१
बनवेला ४८५
बनमोगरा ४८५
बनमोतिया ४८५
वनहलदी २११
बनहुला ४९८
बन्दा ४५०
बन्दाक ... ४७०-४५०
बन्धूक ५११
बबूर ६७६
वमनेटी १९९
बबूला ५४०
वरना ६९८
वरबरचन्दन २१
बरबरी ५२९
बरबेल १२४०
बरवेला ४८५
बरसंग ३२१
बरहण्टा २७५
ब्राह्मी ४६२
बरियारी ३५२
बलगुलग्रामकी सुपारी ... ६०८
बलाचतुष्टय ३५७
बल्लीखदिर ६७४
बल्लीपाढल २६७
बल्लीयष्टिमधु १७१
वल्लिजातृण ३७३

विषय.	पृष्ठांक.
बबुवार	६४०
बहेडा	१०३
बाकुची	२१५
बाकुचीभेद	२१६
बाजरा	८२१
बाँझककोडा	४६७
बांझखखसा	४६७
बादाम	५७१
बांदा	४५०
बायविडंग	१५७
बाराहीकन्द	९४७
बारिवर्ग	९५९
बार्षिकी	४८५
बालछड	६१
बालमखीरा	८९६
बावची	२१५
बालू	७६४
बांस	३६१
बांसकेचावल	८६०
बासन्ती	४८७
बाँसा	३१३
बास्तुक	३१३
विकंकत	६२६
बिछवाघास	१२४५
विजयसार	६७०
विजरा	२२५
बिजौरा	५७८
बिडियासंचरनोन	२४१
बिदारीकन्द	३८१
बिधारा	१२३८
विपरीतलज्जालू	४५७
बिलारीकन्द	९५१-३८२
विष	७९७
विषखपरा	४२२
विषवर्ग	७९७
बिषाबिल	५९२
बिष्णुकन्द	९४९

विषय.	पृष्ठांक.
बिहारीनींबू	५८१
बीजबन्द	२५३
बिजाबोल	७९७
बीरण	६६
बीरतरु	१२४०
बीह	५७४
बूरा	१०८९
बूलशुण्ड	३७६
बृद्धि	१६८
बृश्चिका	१६८
बृहती	२७५
बृहतीभेद	२७७
बेट्टचन्दन	१८
बेदनजीर	११
बेर	६३३
बेरीकापेड	६३३
बेलफल	२५९
बेलन्तर	१२४०
बेलियापीपल	६५६
बैक्रान्तमणि	७९२
बैगुन	९२०-९०५
बैत	३४७
बैडूर्यमणि	७९१
बोदार	७३९
बोल	७६७
बोलखिरी	४९७
ब्रह्मदण्डी	१२२७
ब्रह्मनेठी	१९९
ब्रह्मपुत्रविष	८०१
ब्रह्ममण्डूकी	४६२
ब्रह्मसोंचली	४६६
ब्रह्मी	४६२
ब्राह्मी	४६२
ब्रीहिधान	८१२
भंग	२२५
भंगरा	४३१
भटकटैया	२७७

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
भटवास	८३१	मगरेला	१४२
भटेउर	८३१	मेंगळाशुरु	२४
भण्टा	९५०	मछेछी	४५२
भद्रदन्ती	३९८	मजारतृण	३७४
भद्रमोथा	७४	मजीठ	२०३
भव्यफल	५९१	मटर	८३८
भल्लातक	२२५	मडुवा (चीनाभेद)	८५५
भसींडा	५३९	मण्डूर	७२३
भाँगरा	४३२	मण्डूकपर्णी	४६२
भारंगी	१९९	मत्स्यण्डी	१०८४
भिण्डी	९१९	मदिरा	१०९७
भीरुकईख	१०८०	मधुककडी	५८६
भिर्वोळीकन्द	९४७	मधुवर्ग	१०७३
भिळयाकद्दू	८८९	मधुशर्करा	१०९०
भिलावे	२२४	मनोगुप्ता	१०८१
भुईआमला	४६०	मन्थानकतृण	३७५
भुईकदम	५०५	मन्दार	२९५
भुईखखसा	४६९	मयूरशिखा	४८०
भुईचम्पा	४९४	मरसा	८६७-८५१
भुईजामुन	६४९	मरिच	११४
भुईपाढर	२२७	मरुआ	५२५
भुकुर	८९८	मरोडी	१२२२
भूमिजगूगल	२६	मर्कटीपीपल	१२३
भूस्तृण	३७१	मर्यादवेल	१२३३
भूरिछरीला	७७	मल्लिका	४८६
भेरवन्द	१८९	मघवन	२८८
भैसियागूगल	३१	मसी	४४२
भैढियाकन्द	९४६	मसीना	८४५
भोजपत्र	६८४	मसूर	८३२
भ्रमरछल्ली	१२३६	महँदी	१२२५
मकरन्द	५३८	महाकरंज	३२८
मकरतेंदुआ	६००	महाचंचु	८७५
मकोय	४४०	महापारेवत	६३९
मक्का	८६७	महाभरीवच	१५१
मखमली	५१८	महामुण्डी	४११
मखाने	१२३१	महामेदा	१६६
		महावर	२०८

विषय. पृष्ठांक.

महाशालिधान ८१०
महाशतावर ३८७
महिषकन्द ९४६
महुआ ६०२
महेन्द्रकदली ५६३
माइमूल १२५०
माजूफल १२१२
मांड ७०८
माणिक ७७४
माधवी ४८९
मानकन्द ९५४
मालकांगनी ... : १९१
मालती ४९०
मालाकन्द ९५०
माषपर्णी २८८
मांसरोहिणी ३४५
मिट्टी ७६५
मिरचकाली ११४
मिरचलाल १२१९
मिरचियागन्ध ३७१
मिश्रवर्ग ११७३
मिश्री १०८८
मीठाजम्भीरी ५८६
मीठानींबू ५८१
मीठानीम ३२१
मीठाविजौरा ५८१
मीठाविष ... : ७९८
मुक्ता ७७९
मुखालू ९४४
मुगवन २८७
मुगलाई अण्ड ५०१
मुद्गपर्णी २८७
मुचकुन्द ५००
मुण्डलोह ५२२
मुण्डी ४११
मुरदासिंग ७३९
मुरा ८६

विषय. पृष्ठांक.

मुलैठी १७१
मुस्कआँडी ११
मुस्कदाना १२
मुस्तक ७३
मूंग ८२२
मूंगफली ६४७
मूंगा ७८४
मूंज ३६५
मूत्रवर्ग १०३२
मूर्वा ४३९
मूली ९३५
मूसली ३८४
मूषाकानी ४७८
मृणाल ५३८
मेऊडी ३३
मेढाशिंगी ४४
मेथी ... ...२३[illegible]
मेदा १६
मेहदी १२२५
मैनफल १८
मैनशिल ७४७
मोइया १९
मोरवा ७०१
मोंगरा ४८५
मोचरस ६९१
मोठ ८२५
मोतिया ४८५
मोती ७७९
मोतीकी सीप ७५६
मोथा ७३
मोथीतृण ३५०
मोम १०७७
मोरशिखा ४८०
मोसमीशुक्काब ४९०
मोखा ७०१
मौआ ६०२
मौलसिरी ४९७

विषय. ... पृष्ठांक.
यवारी ... ९३
यवासशर्करा ... १०९०
यष्टिमधु ... १७१
यावनाल ... ८१९
यावनालशर्करा ... १०९०
रक्तआक ... २९६
रक्तकनेर ... ३०८
रक्तचन्दन ... १९
रक्तचिर्चिटा ... ४१५
रक्तशालिधान ... ८१०
रक्तसरसौं ... ८४९
रक्तैरण्ड ... २९३
रत्नजोत ... ३९८
रताल्‌ ... ९४३
रत्नोपरत्नवर्ग ... ७७०
रन्ध्रवंश ... ३६१
रसाञ्जन ... २१३
रसौत ... २१३
रहसनी ... १८५
राई ... ८४९
राँग ... ७१६
राजकदम्ब ... ५०४
राजजामन ... ६५०
राजधतूरा ... ३११
राजपटोली ... ९१०
राजपलाण्डु ... ९३३
राजाम्र ... ५४९
राजार्क ... २९५
राजालू ... ९४०
रामचना ... १२३१
रामतोरई ... ८९०
रामबबूर ... ५०६
रामवांस (न) ... ४२१
रामसर ... ३६५
रायसन ... १८६
राल ... ३७
रासन ... १८६
रास्ना ... १८६
रीठा ... ६७८

विषय. ... पृष्ठांक.
रुई ... ३५८
रुदन्ती ... १२२८
रुद्राक्ष ... ७०७
रूषा ... ७१२
रूपामाँखी ... ७३९
रूसा ... ३१३
रेंगणी ... २७८
रेणुका ... ७८
रेवा ... ७६४
रेवटचीनी ... १२१५
रेवटी ... ७६४
रेहगवाँ ... २४४
रोटसुपारी ... ६०८
रोमकलवण ... २४५
रोहिषतृण ... ३७१
रोहिषतृणखंड ... ३७१
रोहिषखौंधिया ... ३७१
रोहिणी ... ३४६
रोहितक ... ६७५
रोहेड़ा ... ४७५
लघुकटाह ... २७७
लघुखेर ... ६७५
लघुपाठ ... ३९१
लज्जावंती ... ४५६
लज्जालू ... ४५६
लटकण ... ५१८
लटजीरा ... ४१३
लताकस्तूरी ... ११
लवण ... २४०
लवणतृण ... ३७५
लवनीफल ... ६३२
लवलीफल ... ६१८
लभेरा (डा) ... ६४०
लसीका ... १०९०
लहसुन ... ९३०
लहसुनिया ... ७९०
लक्ष्मणा ... ३५७-९५३
लाई ... ८४९
लाख ... २०७

विषय. पृष्ठांक.
लामज्जक ८७
लाणा १२२८
लाल ७२५
लालअरण्ड २९३
लालआक ४९५
लालइलायची ५०
लालईख १०७९
लालओंगा ४१५
लालकनेर ३०८
लालकमल ५२२
लालकुमुद ५४१
लालचन्दन २०
लालचिर्चिटा ४१५
लालचिता १२३
लालज्वार ८२०
लालनिशोत ३९३
लालपेठा ८८९
लालप्याज ९३३
लालफूलकी कटसरेया ५१३
लालविषखपरा ४२६
लालमरिच १११९
लालमुरगा ५१८
लालशल्ज्मालु ४१५
लालसहंजना ३२६
लाही २०७
लिसौडे ६४०
लीख ४०४
लेसवा ८७२
लोध २२०
लोनारखार २४८
लोनीशाक ८६४
लोबिया ८२८
लोहा ७२१
लोहेका मैल ७२२
लोहेकी कीट ७२३
लौका ८९०
लौकी ८९०
लौंग ४४
लौनी ८६४

विषय. पृष्ठांक
शकरकन्द ९६३
शंकरावासकपूर ४
शङ्ख ७५८
शङ्खजीरक ७६
शङ्खनी ४१७
शङ्खपुष्पी ४५३
शङ्खाहुली ४१३
शङ्खालु ९५४
शंखिया ८०६
शणई ४३३
शणपुष्पी ४३३
शणहुली ४३३
शतवीरक १०८०
शमीधान २११
शम्बरचन्दन १९
शर्करा १०८८
शर्मानी ४५७
शाक के प्रकारका ८६१
शाकवर्ग ८६१
शाकवृक्ष ६९१
शातला ३०१
शारदयावनाल ८२१
शाल ६६५
शालिधान ८०८
शालमलि ६९०
शालमलिकन्द ९५७
शिम्बीधान ८११
शिरगोला ७९६
शिलाजीत ७६८
शिलारस ४२
शिल्पकातृण ३७४
शिवलिंगी ४३८
शीतलचीनी ५२
शीरेखिस्त १०९१
शुभ्रालु ९४
शुर्मा ७६३
शूलीतृण ४७७
शृङ्गकविष ८००
शैलेय ७७

विषयः ... पृष्ठाङ्कः
श्रीमलखार ८०६
श्यामकमाल ६८२
श्यामपनिलर ३९२
श्याममुसली ... ३८५-३७५
श्योनाक २७०
श्रीखण्डचन्दन १७
श्रीताल ६११
श्रीवाटीपात्र २५५
श्रीवास ४१
श्वेतकचनार ३२५
श्वेतकटभी ७००
श्वेतकनेर ३०८
श्वेतगुञ्जा ३४१
श्वेतपनिलर ३९३
श्वेतवच १५१
श्वेतमन्दार १५१
श्वेतमरिच ११४
षड्ग्रन्थ ३३५
संस्वेदजशाक ९५८
सक्तुकविष ८००
सखुआ ६६४
संखदावर्ग ११०७
संगजराहत ७६२
सज्जी २३४
सतवन ७०४
सतपुतीतोरई ११५३
सतावरि ३८६
सतोना ७०४
सत्यानाशीकटेरी १९४
सदागुलाब ४९०
सन ४३३
सनाय ४९०
सन्धानवर्ग १०९२
सफरी ५७५
सफरियाकूष्माण्ड ८८०
सफेदअरण्ड २९२
सफेदआक २९६
सफेदइलायची ५१
सफेदकटेरी २८०
सफेदकनेर ३०७

विषयः ... पृष्ठाङ्कः
सफेद कमल ५३२
सफेदकीकर ७०१
सफेदकुडा १८२
सफेदकोयल ३२९
सफेदखैर ६७१
सफेदगन्ने १०७९
सफेदचम्पा ४९१
सफेदचोंटली ३४५
सफेदजीरा १३९
सफेदज्वार ८१९
सफेददूब ३७८
सफेदनिसोत ३९२
सफेदपाढल २६५
सफेदफूलकीकटखरैया ... ५१२
सफेदबृहती २७७
सफेदमरिच ११५
सफेदमुशली २८४
सफेदरुइडा ... ६७५-६५५
सफेदशंखाहुली ४२५
सफेदसरसों ८४७
सफेदसहंजना ३२६
सफेदसारिवा ४३०
सफेदसीसम ६६३
सफेदसुरमा ७३७
सफेदसुहागा २३६
सफेदशरपुंखा ४०३
समा ८५६
समी ७०३
समुद्रदेशकेपान २५६
समुद्रफल १२१३
समुद्रफूल १२३९
समुद्रफेन १६२
समुद्रलौन २४०
समुद्रशोष १२३९
सरपता ३६५
सरफोंका ४०६
सरबीज ८६०
सरल २७
सरलकागोंद ४१

विषयः	पृष्ठांकः
सरलकारस	४१
सरलनिर्यास	४१
सरसों	८४७
सरहटी	४५३
सरिवन	२७२
सरीफा	६
सर्पाक्षी	४५२
सर्पिणी	४५३
सलगम	९३९
सहस्रमूली	८७४
सहजना	२२६
सहतूत	६२७
सहदेई	२५३
सहोडा	६९६
सम्हालू	३३१
सम्हालूकेबीज	७८
साखू	६६५
सागवन	६९६
सागौन	६९६
सामड	७०८
सांठ	४२२
साठीधान	८१४
सातला	२०१
सातसीपात्र	२५५
साँपकीछत्री	९५८
साँभरलौन	२३९
साल	६६५
सालई	६६७
सालपर्णी	२७२
सालममिश्री	१२१९
सालसा	४३०
सावरलोध	२२०
साबुन	२४७
सिंगरफ	७३०
सिक्रियाविष	७६७
सिंघाडे	९२८
सिताब	२२११
सितारजक	७३०
सिन्दूर	७४६

विषयः	पृष्ठांकः
सिन्दूरिया	५१८
सिरयारी	८७८
सिरस	६६३
सिलारस	४१
सिलिपकातृण	३७४
सिवार	११३१
सिंहरू	३३१
सिंहलीपीपल	१२२
सीताफल	६३१
सीप	७५६
सीसम	६६१
सीसा	७२९
सुअरासेम	९३५
सुकड़िचन्दन	१८
सुगन्धजटामांसी	६१
सुगन्धप्रियंगु	६२
सुगन्धभूतृण	३७२
सुगन्धवाला	७२
सुदर्शन	
सुपारी	६०७
सुवर्ण	७०९
सुलतानचम्पा	४९५
सुलेमानीखजूर	५७२
सुहागा	२३५
सूचीपत्रादिईश	१०८१
सूरन	९४०
सूर्यकान्तमणि	७९३
सूर्यक्षार	१४७
सेन्दूरिया	५१८
सेंध	८९९
सेम	९२४
सेमकीफली	९२४-९१०
सेमल	६९०
सेमलका गोंद	६९०
सेब	५७४
सेवती	४९०
सेहुण्ड	२९८
सैंधानोन	२३८
सोनामाखी	७३७

विषयः ... पृष्ठांकः
सोंचलनोन २४२
सोंचली ४६५
सोंठ १०८
सोंधियातृण ३७०
सोना ७१०
सोनापाठा ७१०
सोनैया ४७०
सोमवल्ली ४४७
सोमलता ४४७
सोया १२७
सोरठकीमट्टी ७६४
सोरा २४७
सौनजुही ४८८
सौंफ १२७
सौराष्ट्रिकविष ८००
सौराष्ट्री ७६४
सौवीराञ्जन ७३२
स्थलकमलिनी ५४२
स्थावरविष ९०२
स्थौणेयक ८०
स्निग्धदेवदारु २६
स्नेहक्षार २४७
स्वर्णवल्ली ३५८
हाड़जोड़ा ३०३
हड़फाड़वड़ी ६१८
हड़संहारी ३०३
हड़गा ५२३
हरड़ ५७३
हरकाईचन्द्रा १०३
हरिचन्दन २२
हरिताल ७४७
हरीतक्यादिवर्ग ९५
हरीदूब ३६७
हलक्रियावृक्ष ७०६
हलदू ७०६
हलदी २०९
हंसपदी ४४६
हस्तजोड़ी ९५२

विषय. ... पृष्ठांक.
हस्तीकन्द ९४६
हस्तीकर्णपलाश ६८९
हाऊबेर १५६
हारशृंगार ५२०
हरफारेवड़ी ६१८
हारिद्रकविष ७९९
हलाहल ८००
हालों १२१
हिंगु १४५
हिंगुणा ४०८
हिंगुपत्री १४८
हिंगुलू ७३१
हिंगोट ६८०
हिज्जल ३५०
हिन्ताल ६११
हिमकर्पूर ५
हिरौंजी ७५३
हिलमोचिका ८७१
हींग १४५
हीरा ७७२
हीराबोल ७६७
हुलहुल ४६५
हुलहुल ८७१
हेरम्ब १२४५
हंसणियापान २५६
क्षीरकाकोली १७९
क्षीरविदारी ९५१
क्षीरा ८९६
क्षुद्रकेतकी ४१०
क्षुद्रचञ्चु ८७५
क्षुद्रजम्बू ६५१
क्षुद्रपाटल २६७
क्षुद्रपाषाणभेद २०१
क्षुद्रबादाम ११४८
क्षुद्रबृहती ७०२
क्षुद्रशंख ७६०
क्षुल्लक ७६०

इति शालिग्रामनिघण्टुकी अकारादि हिन्दी अनुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषणान्तर्गत--वंगभाषाकेशब्दोंकीअकारादि-अनुक्रमणिका.

विषय.	पृष्ठांक.
अकनादि-निमुक-आंखाँदि	३९०
अकोरखोरा ...	... १५५
अगर ...	... २३
अजकर्णशाल ...	... ६६६
अजगन्धा ...	... १२३७
अर्जुनगाछ ...	... ६६८
अडहर, आढरि ...	... ८३७
अत्यम्लपर्णी ...	... १२३१
अतिबला ...	... ३५४
अनन्तमूल,श्यामलता, कलवणिट इत्यादि ...	... ४२९
अनन्नास ...	... ६३३
अनूपादिवर्ग ...	... ११३२
अपराजिता, नीलअपराजिता	... ३२७
अभ्र ...	... ७४०
अम्बुशिरीषका ...	... ७०३
अर्कपुष्पी ...	... ४५५
अर्कवर्ग ...	...१०५१
अलम्बुषा ...	... ४५८
अश्वगन्धा ...	... ३८८
अश्वत्थ, आशोथगाछ ...	... ६५३
अस्पाल ...	... ५१०
आक, कुक्षिर ...	...१०७९
आंकड, धोला आंकड, आंकोड ...	३५०
आकंद ...	... २९६
आकनादि ...	... ३९०
आकोट ...	... ६०६

विषय.	पृष्ठांक.
आखुपाखाण ...	... ८०६
आंजीर, पेयारा ...	... ६३४
आतइच ...	... २१९
आतशपाथर ...	... ७९३
आता ...	... ६३१
आदा ...	... १०९
आपाङ्ग ...	... ४१३
आफिङ्ग ...	... २३१
आम ...	... ५४३
आमआदा ...	... २१०
आमडा ...	... ५५०
आम्ला ...	... १०५
आरि ...	...१२३६
आरुक ...	... ५८९
आलकुशी,धुनारगुंड, दया, शुपाशिम्बी ...	... ३४३
आलू ...	... १२५५
आलोकलता, आकाशबेल	... ४४८
इन्दुर कानीपाना ...	... ४७९
इन्द्रजव ...	... १८३
इक्षुदर्भतृण ...	... ३७३
इषदगोल ...	...१२१८
उडीधान ...	... ८५४
उंदिरकानी पाना ...	... ४७९
उष्ट्रकंट ...	...१२२४
उलूपकतृण ...	... ३७३
ऋद्धि ...	... १६७

विषय.	पृष्ठांक.
ऋषभक	१६४
एकवीर	१२३४
एकांगी	८३
एलाइच, बडएलाइच	५०
एलवालुका	९१
एलियो	४२०
ओल	९४०
ओषड	१२५२
कटकी	१७७
कटभी, श्वेतकटभी	७००
कटराशिम	९२६
कटनराइ, तिरपल्ला वेत्केन्दुरुकी	९१४
कडि	७५६
कण्टकारी	२७८
कंथारी	१२३५
कदमगाछ, केलिकदम	५०३
कदलीकन्द	९५७
कमलगुंडि गुण्डारोचनी	१७३
कयेद्राछ	६१५
करकचनुन	२४३
करमुचा	६२०
करवी लालकरवी	३०७
करली	८८०
करील, कचरा	६९४
कर्पूर	१
कलमी	८७८
कला	५५७
काकडाशिंगी	१९६
काकडुमर	६५९
कॉंकरोल	४७०
कॉंकरोलभेद	४७०
कांकला	५३
काकुड	८९२-८९९
कांकुड, बडकांकुड	८९२
काकोली	१६८
कागदीलेबु जामीरलेबु, पातीलेबु... कमलालेबु	५८१
कांगुनी, कांगनिधान	८५२
काच	८००
काचडाघास, पनिखिगा	४७१
काञ्चन, सफेदकांचन	३२२
काजूतक	६४७
काट आमला	१२४१
काटविष, अमृतविष	७९९
कांटाकरञ्ज	३३९
कांटाल	५९४
कांदा, माटी, कांदमाटी	७६६
कामराङ्गा	६१७
काम्बोइ	१२४८
कायफल, कायशाल	१९७
कार्पास, वनकार्पास, कालिकर्पासिकिनी	३५९
कालकासुन्दा	८८२
कालतेडडी	३९३
कालालोण	२४३
कालेजीरे	१४०
कांशा	७२४
कांवालु	९४५
काष्टालु	९५४
किंकिणी	१२४२
किंकिरात	५०६
किसमिस	६४३
कीटमारी	१२२३
कुंकुम	१२
कुक्कुरशोका, कुक्कुरमुता	४७७
कुंच, सादाकुंच	३४१
कुंचुले	६००
कुड	८२
कुडचिगाछ	१८१
कुडचि, कुरचि	३३५
कुन्द	७०१
कुन्दरु खोटी	९
कुमडागाछ	७

विषय. पृष्ठांक.
कुरण्टिका १२२९
कुलगाछ, कुलफल
गाछ, वइइ, शियाकुल ... ६२३
कुलञ्जन १५२
कुलथ, कलाय ८४२
कुलिया, खाडा, कुलेकांटा,
कुलकशूकमर्दन इत्यादि ... ४१६
कुलीचाभाजी ८८०
कुश २६८
कुसुम्भफूल, फल २०६
कृष्णचूड ५१७
केउंगाछ, केलूरयेंया ९५६
केउडा जलपाइ ५५२
केश्याठुंठी ४२३
केश्याठडा ४४३
केंद, माकडागाब, माकडतंदू ६००
केयागाछ, सोनाकेया ... ५०८
केशुर ९५५
केशेवास ३६६
कोशेवात्र ८५७
कोलकन्द ९४७
खडिपामाटी, चाखडे ७५४
खयेर ६७३
खयेरगाछ, पापरीखयेरगाछ ... ६७२
खरपत्रक, पुथक, नालकुंकुमरा-
गपुष्पी ५२०
खरमुज, खरबुजा ९००
खांड १०८७
खापर ७३६
खारीनुन २४५
खुरचांका ४९५
खुरशाणीयोयान १३६
खेजूर, पिण्ड खजूर, छोहारा ५६९
खेसारि कलाय ८४०
गजकर्णालु ९४३
गजपिपुल १२१
गजशुंडी ६५४
गठेला, ग्रन्थिपर्ण ८०

विषय. पृष्ठांक.
गणिर, आगगन्त, छोटोगणिरी २६५
गन्धक ७४३
गन्धनाकुली ९५०
गन्धरेणा ८७
गन्धमादला, गाँधाली, गन्धभादु-
लिया ४२७
गन्धरस, बोल, हिराबोल, खुन-
खाराबी ७६७
गम ८१७
गरमोटिकातृण ३७४
गांगेटी ४२२
गाजर ९४९
गाब तंदू ५९७
गाम्भारी, गांभर २६२
गिरिमाटी ७२३
गुग्गुल ३१
गुच्छकुन्द ९५३
गुड १०८४
गुण्डतृण ३७७
गुण्डासिनी ३७७
गुन्द्र २६७
गुयेबाब्ला, विट्खयेर ६७३
गुलंच २४९
ग्रन्थिपर्णभेद ८०
गोपाललता १२५५
गोभी १२५५
गोमूत्रिकातृण २७३
गोमेद ७८९
गोयालेलता ४७९
गोरख, कुले, पानखाडा ... ३५४
गोरक्षी १२४३
गोराणी ९१३
गोरोचना ६८
गोखरि २८०
घण्टापारुल ७०१
घिघृत १०२५
घृतकुमारी ४१८

विषय. पृष्ठांक.
घोड़ा निम विशेष ३२१
घोल १०१४
घोषकलताविशेष ९०४
चइगाछ ... ११९-४७०
चणिकातृण ३७७
चण्डालकन्द ९५२
चन्द्रकान्त ७९४
चन्दन १६
चाकुन्दा, एडांचि २१५
चाकुले, चाकुलिया २७४
चांपा ४९४
चामालु, चुमडिआलु ९४७
चामिली ४८४
चालते ५९१
चाह १२१६
चिचिङ्गा ९०८
चितेगाछ, राङ्गू. चिते चिता, ... १२३
चिनी, मिछरी १०८७
चिने ८५२
चिरता, चिराता, नेपालेनिम्ब ... १८०
चिरपोटा १२२८
चिरौजी, पियाल ६२८
चीढ २७
चीना विशेष ८५३
चुकापालङ्क ८६६
चेंचको ८७५
चोरक ८१
चोरहुली १२२६
छगलंकुरी १२३४
छागलदांडी, वामानदांडी ...१२१४
छातकुड ९५७
छातिमगाछ ९५८
छोलारगाछ ८३४
जटामांसी ६१
जबाफुलेर गाछ ५२०
जरणी तृण ३७४
जल ९५९

विषय. पृष्ठांक.
जाती, चामिली, स्वर्णजाती ... ४८३
जामगाछ, बडजाम, क्षुद्रजाम,
  वनजाम ६४८
जायफल ४६
जिंगिनी ६८२
जियापुता, पुतजिया ६७९
जीवई, जीवानी, जीवन्ती ... २८३
जीवक १६२
जीरे, शाहाजीरे १२८
जुई, स्वर्ण जुई ४८८
जैपाल २९८
जैत्री, जयित्री ४८
जोवार, जानार, श्वेतजनार
  कालजनार, लालजनार ... ८१९
झण्डू, स्थूलपुष्पा, झण्डूक ... ५१८
झलइ १२५१
झाऊगाछ १२५२
झांटि, कृष्णझांटि, पीतझांटि,
नील झांटि, लालझांटि ५१३
झिंगा ९०६
झिनुक, शामुक ७५६
झिल्ल १२३४
टार्पिनतेल, नवनीतखोटी, गन्ध
  विरोजा ४१
टाबालेबु ५७८
डहरकरञ्ज, नाटाकरञ्ज इत्यादि ... ३३५
डानिपोका, डानकुनी १२२७
ओ, मान्दार ५९६
डेलगर पादुका २९
तवक्षीर १६०
तमाकू १२१७
तरमुज चेलना ९०२
तामां ७१५
तामालगाछ ६८३
ताल :श्रीताल, हेन्ताल ६११
तालमूली ३८४
तालीशपत्र ६०

विषय. पृष्ठांक.
तिल्काकरोक तिल्काकडो ... ४६७
तितलाडु ८९१
तिनाश, सादन, जारुलगाछ ... ७०५
तिलक पुष्पवृक्ष ५०२
तिलगाछ ८४३
तुतिया ७३४
तुवर १२४५
तुम्बरु, नेपालेधने १५८
तुलसी ५२४
तूँत ६३७
तृणाख्यतृण ३७५
तेजपाता, तेजपत्र ५८
तेजबल १९०
तेडुी ३९२
तेंतुल ५८६
तेलाकुच ९१२
तैल १०३८
तैलकन्द ९५२
तोपचीनी १५३
थैकड अमलवेत ५९३
दही १००४
दन्तीगाछ ३९५
दरवा ७२
दाडिम, दालिम ५५८
दाडिशाक ४७३
दारुचिनी ५६
दारुहरिद्रा २१२
दुध ९९
दुधि, दुध्या, दुदेल, क्षीरद, खिरइ ... ४४८
दुरालभा ४०९
दूर्वा, नीलदूर्वा सादादूर्वा, गेंटदूर्वी ३७८
देवदारु २६
देशवर्णन ११३७
दोना, दना ५२३
द्रोणपुष्पी (घलघसे) ४६४
द्रोणलवण २४५

विषय. पृष्ठांक.
धने १४४
धरणीकन्द ९४४
धतुरा ३०९
धतुरा, कनकधतुरा ३११
धाइफूल २०२
धाउयागाछ ६९२
धातुकासीस ७५२
धूनो ३७
नखीगन्धद्रव्य, छोटीनखी ... ३९
ननी, माखन १०२१
नन्दीवृक्ष ६५९
नर्त्तक ८५६
नल, वडनल ३६३-९३
नलिका ९३
नाकुली, गन्धनाकुली... ... ९५०
नाकुलीकन्द १८८
नागदना ४७४
नागजिह्वा १२५०
नागपुष्पी ४४५
नागेश्वर ५४
नारंगालेबु ५७६
नारिकेल ५६४
निमागाछ ३१६
निर्विषी १२४९
निर्मलफल ६४२
निशादल २४५
निशिन्दा, नीलनिशिन्दा ... ३३१
निःश्रेणिकातृण ३७
नीलकलनी ४०४
नीलगच्छी ४०४
नीलमणि ७८८
नीलालु ९४६
नेपाली ४८७
नोना, लोना ६३२
पण्यन्धतृण ३७६
पद्म, श्वेतपद्म, रक्तपद्म, नीलपद्म... ५३२
पद्मकाष्ठ ३१

विषय. पृष्ठांक.
पद्मवीचि ५३७
पद्मेरगेंडो ५६९
पद्मेरडांटा ५३८
पनसी ४२२
पर्पटी ९३
पलताळता ९१०
पळा, मुंगा ७८४
पळाशगाछ ६८५
पक्षिवाहतृण ३७५
पाकुडगाछ ६५६
पाठशाक, कोषटारशाक, नालेत ८७६
पांडुफळी ४२१
पाणीफळ, शिंघाडे ९२८
पाताळतुम्बी १२४३
पाथरचुरी, हिमसागर, पाथरकुचा २००
पान २५३
पाना, टोकापाना १२३०
पात्रा ७८६
पानीआंवला ६१९
पानीयाळु ९४५
पारसी १३६
पारा ७२६
पारुळ, घण्टापारुळ ३६५
पार्वतीमृत्तिकाविशेष ... ७६१
प्राजक्त, पारिजात, हारशिंगार ५२०
पारेवत ६३९
पाळतेमान्दार ३२२
पालंशाक ८७०
पिडिंगशाक ८८
पितळ, कांचपितळ ७२५
पिपुळ ११६
पिपुळमूळ ११९
पियाशाळ ८७०
प्रियंगू, गंधप्रियंगू ६५
पीतपुष्पतेडेळा ३५३
पीलुगाछ ६०४
पुइशाक ८७२

विषय. पृष्ठांक.
पुदिना ९४
पुन्नागगाछ, राजचम्पक ... ५१२
पुष्करमूळ १९३
पुष्पांजन ७१३
पुष्पराग ७८७
पेयाज, लाळपेयाज ९३३
पेयारा ६२४
पेरुक, अमृतफल ५७५
पेरोज ७९५
पेस्तागाछ ६३४
पोस्तदाना २३२
पोस्तदानारगाछ, पोस्तटेंडिसाकसी २१९
प्रपौण्डरीक ९१
कंजी, कंजिका, पद्मा, आजांनी, अपराजित १२४०
फटकिरी ७६२
फटिक ७९५
फणशी ४२२
फळसा ६३६
फलशाकविशेष ९१५
फुळ, फुळरस, गोलापजळमभृतिवामधु ४८२
फोगालु ९४५
वइंचगाछ ६२६
वक ५२२
वकुळगाछ ४९७
वच, खुरशाणीवच, श्वेतवच ... १९४
वट ६५१
वटकरेळा, उच्छे, छोटका उच्छे ... ९१६
वडणुनी, क्षुद्रेणुनी, वनणुनी ... ८६४
वडपाथरकुचि ४६२
वडनीळ ४०५
वनकुळथी ८४२
वनजीरे १४३
वननीळ खादवननीळ ४०६
वनवेतुया ८७२
वनमूग ८३५

विषय. पृष्ठांक.

वनयवानी १३२
वनशणइ, झनझन, शोणोरगाछ ४३४
वनहलद २११
वयडा, बडेडा १०२
व्याकुड तितवैंगुन २७६
व्याणारमूल,वेणारमूल, वीरणमूलिखस ६७
वरवटीकलाय, बोरा ८२८
वरुणगाछ ६९८
वर्जरी, साजक ८२१
वलवजातृण २७३
वलाडुमुर, वला बहुलावनभादुलियाइत्यादि ४२५
वंशपत्रीतृण ३७५
वंशलोचन, बांसकावर ... १५९
बहुयार, बालसागाछ, बोहरी ६४०
बाकस, छोटबाकस २१२
बाँड्लामटर, मटर, सेओडामटर ८३९
बाबकुभ १२४६
बान्धुलिफूलेरगाछ ...५१६
बादाम ५७२
बांद, परगाछा, मान्दडा ... ४५०
बानप्सा १२५४
बावुइतुलसी ५२९
बाबलागाछ ६७६
बामुनहाटी १९९
वाह्य,गन्धवाला ७३
वाली ७६४
वाश ३६१
बिछुटी १२४५
विद्नुन ३४१
विडंग १५७
विजतारक,वीजतारक, विछुडका १२३८
विदारीकन्द ... ९५१-३८१
विकाति कुमडा ८८९
विषमुष्टी, तिक्तजीवन्ती ... २८६
विषलागला ३०५
विष्णुकन्द ९४९

विषय. पृष्ठांक.

वृन्तगुण्ड ३७६
वृद्धि १६८
वृहद्दन्ती ३९७
बेगुनगाछ ९२०
बेडेला ३५२
बेथा, बयसा, जलबेत ... ३४७
बेतुया वेतोशाक ८६३
बेलफुलगाछ, मल्लिकाफूलेर गाछ ४८६
बेल, बिल्व २५९
बेलतक १२४०
बैदूर्य ७५२
बोडानिम्ब महानिम्ब ... ३२०
बोदार, नागसत्व ७३९
बोरा बरवटी ९४२
ब्रह्मीशाक ४६२
भडजीवइ २८५
भिण्डा ९१९
भीमराजकेशुरे ४३२
भुइ आंवला ४६०
भुइकुमडा, श्वेतभुइकुमडा, २८
कालभुइकुमडा २८३
भूर्जिपत्र ६८४
भूतृण ३७१
भ्रमरछल्ली १२३६
भेला २२२
भेराण्डा, सादारेंडी, वालभेराण्डा वडभेराण्डा ... २९१
मकाय ८५८
मखाना १२३६
मज्जरतृण ३७४
मंजिष्ठा २०३
मंडपी ६४७
मत्स्याक्षी ४५२
मदन, मधुनि शुडकामाइ ... ४४१
मद्य १०९७
मधु, मौ १०७३
मन्थानकतृण ३७५

विषय. ... पृष्ठांक.
मनछाल ७४७
मनसागाछ, सिजवृक्ष २९८
मयनाकाँटा १८४
मयूरशिखा ४८०
मरिच, गोलमरिच, सादामरिच ... ११४
मरुवा ५२५
मखिना, तिसी ८४५
महादा, अम्लकुटा (चुका) ... ५९२
महामेदा १६६
महाराष्ट्री १२२२
माइफल १११२
माखना १०२१
माड ७०८
माणिक ७७४
माधवी ४८९
माधवीलता ४८९
मानकन्द ९५४
मालती ४८०
मालाकन्द ९५०
माषकलाय ८३६
माषाणी २८८
मिश्रवर्ग ११७३
मुक्ता ७७९
मुखालु ९४४
मुग ८३२
मुगानि २८७
मुचकुन्द ५००
मुंज, रामशर, सरपत ... ३६५
मुडिरी, मुण्डी, थुलकुडि वड-थूलकुडी ४११
मुत १०३२
मुता (था) नागरमुता, भाद्-लामुता ७४
मुरामांसी ८६
मुला ९३५
मुसुरिकलाय ८३२
मूर्वा, मुर्गा, मुरहर, शोचमुची
मोडाचकइत्यादि ४३९

विषय. ... पृष्ठांक.
मृगनाभि ७
मेडाशिंगे, गाडलशिंगे, छाग-लबेटे ४५५
मेथी १२९
मेदा १६५
मेदी १२२५
मोइया १९०
मोटा केलजीरे १४१
मोम १०७७
मौल, मैडल, मौया, जलमैडल ... ६०२
मौरी १२७
यव ... ८१५-१३२
यवाक्षार २३३
यवानी, योयान १३२
यवासा ४०९
यवेची, श्वेतवेना ४३७
यष्टिमधु १७१
यज्ञडुमुर ६५७
रक्तचन्दन २०
रसवत २१३
रसुन ९३०
राइसर्षे, कालसर्षे, राजसर्षा, राइसरिया ... ८४९
रांग, वँग ७१६
राङ्गा आपांगु ४१५
राजशाक १२५३
राजशिम्बिका ८३१
रामकर्पूर ३७०
रामवांस ४२०
रास्ना १८६
राखालशशा, राखालताडु, कुन्द-रुकीवडमाकाछ ४०२
रिठेगाछ ६७८
रुदन्ती १२२८
रुद्राक्ष ७०७
रूप ७१२
रेउचीनी १२१५
रेणुक ७८
रोथा, रयना, नयना, काडर ... ६७५

विषय. पृष्ठांक.
रोहिणी मांसरोहिणी ३४५
लंकामरिच, झाल १२१९
लताफटकी, वड़लताफटकी ... १९२
लक्ष्मणाकन्द ९५३
लवंग ४४
लवणतृण ३७५
लसुन ९३०
लाजुक लज्जावंती ४५६
लाउ, कदु ८९०
लालपिण्डालु, गोलआलु, चुबडिआलू ९४२
लाहा २०७
लोधकाष्ठ, पाटियालोध ... २२०
लोह. तिरवा, इष्पात् कालालोह ७२०
शंखजीरक ७६२
शंखालु ९५४
शंखाहुली, डानकुनी ४५३
शंखोदरी ६१७
शटी, आम, आदा, गन्धशठी ... ८५
शतमूली ३८६
शलइ, शालविशेष ६६७
शशा ८९६
शाँइछुइबाला ७०३
शाँकू, शंख ७५८
शामाधान ८५५
शालगाछ, शाल ६६५
शालपान, शालपानी २७२
शालमलीकन्द ९५७
शालीधान, चाउल ८०८
शिववल्ली, बृहद्धकुल ४९८
शिवलिंगिनी ४३८
शिमूल, शिमुलेरआठा ... ६९०
शिरगोला ७९६
शिरीषगाछ ६६१
शिलिपकातृण ३७४
शिलाजतु ७६८
शिलारस ४२

विषय. पृष्ठांक.
शिलिन्द्रा ४५०
शिशुगाछ, सादाशिशुगाछ ... ६६३
शुंठ १०९
सुपारी ६०७
शुभ्रालु ९४६
शुलफा १२६
शूलीतृण ६७७
शेओडा, शांडा ६९६
शेओथाला १२३१
शेगुनगाछ ६९६
शेमगाछ ९२५
शैलज ७७
श्वेतकांटानेटेरशाक ८६७
श्वेतगांदावन्ने, श्वेतपुष्पा गान्दा ... ४२३
श्वेतचम्पक ४९६
श्वेततेउडी ३९४
श्वेतसुरमा, नीलसुर्मा, नीलाञ्जनकालसुर्मा ७३२
संख्यावर्ग ११०७
सचललवण २४२
सजिने ३२६
संधानवर्ग १०९२
समुद्रफल १२१३
समुद्रफेना १६२
सरलगाछ, सार्पिनतेलेरगाछ ... २८
सरिषा सर्षे, श्वेतसर्षे ८४७
सर्वविधआलु ९५४
सरदंष्ट्रा १२२३
सर्पाक्षी ४५३
सहस्रमूली ८७४
साजड ७०८
साजिखार, साझिमाटी ... २३४
सातपुती १२५३
सानरलुण २४०
सिजविशेष ३०१
सिद्धि, भांग, गांजा २२५
सिन्दूर ७४६

विषय. ... ... पृष्ठांक.
सिन्दूरपुष्पी ५१८
सीसा ७१८
सुगन्धभूतृण ३७२
सुदशन ४७८
सुधामूली १२१९
सुषुणीशाक ८७८
सूर्य्यक्षार २४७
सेउ ५७४
सेउती ४९०
सेतपापड़ा ३१४
सैंधवलवण २३९
सोनचाँफा ४९४
सोना ७१०
सोना, सोनालु ... १७५-२७१
सोनामुखी, सोनाराता ... ४०३
सोमलता ४४७
सोहागा ३३५
सौराष्ट्रदशीयमृत्तिकाविशेष ... ७६४
स्फटिक ५७९
स्वर्णजीवन्ती २८५
स्वर्णवल्ली ३५८
स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक ७३७
स्वर्णक्षीरी, शोणाखिदइ (चोक) १९४
स्थलपद्म ५४२

विषय. ... ... पृष्ठांक.
हपुषा १५६
हलुद् २०९
हरिताल ७४७
हरितकी ९६
हस्तिकन्द ९४५
हस्तिघोषा ९०५
हस्तिजोड़ी ९५३
हाड़भांगा २०३
हाकुच, सोमराल २१५
हाँचुटी ४७६
हालिम १३१
हिंगु १४५
हिंगुविशेष १४८
हिंगुल ७३०
हिञ्चेशाक ६७८
हिरे ७७२
हुडहुडे, वनश्वलते ४६५
हेलाफुल, नालिफुल, श्वेतशुन्दि ५४०
हेरम्ब १२४४
क्षीरकाकोली १६९
क्षीरणी राजणी ६२९
क्षीरविदारी ९५१
क्षुदेनटे ८६९
क्षेतपापड़ा ३१४
त्रिपर्णीकन्द ९५३

इति.

श्रीः।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणांतील मराठीशब्दांची अकारादि अनुक्रमणिका।

विषय.	पृष्ठांक.
अक्कलकरा	१५५
अक्रोड	६०६
अगर	२३
अगस्ता, हदगा	५२२
अघाडा	४१३
अंकोळीवृक्ष	३५०
अजकर्णशाळ	६६६
अजमोदा	१३४
अंजीर	६३४
अडूळसा	३१३
अतिविष	२१९
अननस	६३३
अनूपादिवर्ग	११३३
अफू, अपू, कडवी	२३१
अवलगुन्दर, खाजकुइली	३९
अभ्रक	७४०
अर्क	१०५१
अळवाचाकांदा	९४३
अलम्बुषा	४५८
अशोक	५१०
असाणा	१२३४
आकाशवेल, अमरवेल	४४८
आग्या विंचवा	१२४५
आंवटचुका, लघु व थोर	८६६
आंवळे	१०७
आंबा	५४३
आंबाडा, आंबचार	५५१
आंबेहळद	२१०
आमसोल, कोकम रसोल	५९२
आयन	७०८
आरइ, वेलयाखैर	१२३६
आळू	१२५५
आलें	१११
आसकन्द	३८८
आसन्ध	३८८
आहळींव	१३१
इसबगोल	१२१८
इक्षुदर्भ	३७३
उटकटारा	१२२४
उडीद	८२६
उदक, पाणी	९५९
उंदरकानी	४७८
उन्हाळी	४०६
उपरत्नविशेष	७९५
उम्बर	६५७
उपलतृण	३७३
ऊंस	१०७८
ऋद्धि	१६७
ऋषभक	१६४
एकांगीमुरा, मोरमांसी	८६
एरंड, एरंडोली	२९०
औंढराडच	१२५२

विषय. पृष्ठांक.
ओंटीचें झाड ५९१
ओवा १३२
ओसारी १२२७
कंकुष्ठ ७६०
कंकोळ ५३
कचरा, कुरडया ९५५
कचोरा, नरकचोरा, काचरी ८४
कडवेवाल, श्वेतपावटे, तांबडे पावटे ८१०
कडूभोपळा ८९१
कडमकवल्ली, आंबटवेल ...१२३१
कडयानिम्ब ३२१
कडर्चा ८५९
कर्डीचें फळ, कडया २०६
कडूजिरें १४३
कडूदोडकी, दीवाळी, कडूशिराळी ९०७
कडूतोंडकी ९१४
कडूनिम्ब ३१६
कडूपडवळ ९६०
कण्हेर २०७
कंथार १२३५
कथील ७१६
कदलीकन्द ९५७
कपिला १७३
कपडी ७५५
कविठ ६१४
कमळ ५३१
कमलाक्ष ५३७
कमळाचेंडे (ई)ट(ठ) ... ५३८
करवंदी ६२०
कर्मर ६१७
करळी ८८०
कळलावरी ७३६
कलिंगड ९
कलौंजीजिरें १४१
कसई ३६६
कस्तूरी ७

विषय. पृष्ठांक
काकटेंभुर्णी ५९९
काकडाशिंगी १९६
कांकडी ८९३
काकोळी १६८
कांग ८५२
कागदीलिंबु. ईडलिंबु, मीठाईडलिंबु साखरलिंबु ५८१
कांगाचेंझाड ४४२
कांच ७९६
काजरा, कारस्कार, कुचला ... ६००
काजूचेंझाड ६४७
कांटलीकरटोली ९१५
कांटेचुबुक, तांबडाधमासा ... ४०९
कांटेधोत्रा १९४
कांडवेल ३०३
कांदा, पाणीचाकांदा ९३३
कानफोडी १२३७
कापशी, कापूस, सरकी, कालीकापशी ३५८
कापूर १
कापूरकचरी ८५
कारलें, क्षुद्रकारली ९१६
काळाडम्बर, बोरवाडा ... ६५९
काळाकुडा, सफेदकुडा ... १८१
काळावाळा ६७
काळाबोळ, एळयाबोळ ४२०
काळाशिसवा ६६३
कालासुरमा ७३२
कालीमुसळी ३८४
काळेद्राक्ष ६४३
कासाळू ९४५
कांसे ७२४
काष्टालु ९५४
किरमाणी ओंवा. सुरवंदीचावेल ... १२६
किराईत १५९
किरमजणी ३७०
किडामार १२२३
कुकुरवंदा ४७७

विषय पृष्ठांक
कुटकी १७७
कुडकाकाकडा १२४१
कुडा ३३४
कुड्याचेबीज १८३
कुणजीर ८७२
कुन्द ५०१
कुंभ्याचीशाक व फळ १९७
कुम्भा तुम्बा ४६४
कुरडू ८७८
कुरण्डिका ११२९
कुळीची भाजी ३४४
कुळीथ ८४२
कुहिली.चेंबीज ३४४
कृष्णचित्रा २९३
कृष्णबीज ४०२
केळ ५५७
केशर १३
कोबी ९५६
कोरफड,कोरकांटा ४१८
कोरल, काञ्चनवृक्ष ३२४
कोलकन्द ९८७
कोळिञ्जन १५२
कोशाम्र ५५२
कोष्ठ ९१७
कोहोळा ८८
खडशांवळ, आवईचीशेंग ... ९२५
खड्यानाग, चगमोड्या ... ३०५
खडू ७५४
खरबूज ९००
खसखस २३२
खारादिमीठा ३८
खिरडी ६२९
खुरचांफा, नागचांफा, सुलतान—चांफा ४९४
खुरशाणीओंवा, खुरमाण ... १२६
खैर, पांढराखैर ६७१
खैराचाझाड, नारकात, शेण्याखैर, गन्धियाहिवर, घणिराखैर ६७३

विषय. पृष्ठांक
गठोना २८
गन्धक ७४३
गन्धनाकुली ९५०
गरमोटिकातृण ३७३
गह्ला ६५
गहू काठेकालरंगाचे, पोटेगुळधुने ८१७
गांगटी गांडेधामण ३५५
गाजर ९३८
गुग्गुळ ३२
गुच्छाकन्द ९५३
गुंजा-माड्ळवेल ३४१
गुण्डतृण ३७७
गुण्डासिनीतृण ३७७
गुळवेल २४९
गुलाबांचेफूल, शेवती, काटेशेवती ४९
गुळी. लघुनीळी ४०४
गूळ १०८४
गेळ १८४
गोकर्णीकाळी ३२९
गोडतोंडली ९१२
गोडाकरवंदा ६२०
गोड्यासुरण ९४०
गोडी उंडीण ५१२
गोडीकोहळी ९२६
गोडेतगर २९
गोडेबदाम ५९९
गोपीचन्दन ७६४
गोभी १२५५
गोमुक, फुटी ३७३
गोमूत्रिकातृण ३७३
गोमेदमणि ७८९
गोरखचिंच १२४३
गोरोचन ६९
गोवारीच्या शेंगा (बांवच्या) ... ९२३
घेवडा ९२४
घेंटुलीपांढरी खरपच्या रक्तवसु ... ४२२
घोळ ८६५

विषय. ... पृष्ठांक.
चकाणी निम्ब, कडुनिम्ब ... ३२६
चण्डालकन्द ९५२
चणिकातृण ३७७
चन्द्रकान्तमणि ७९४
चन्दन १६
चमेली ४८४
चवळया ९२६
चाकवत, चिविल, चाकवताची भाजी ८६२
चापडा करंज ३३५
चाफा ४९४
चारोळीं, चारवृक्षबीज ... ६२८
चाहा १२१६
चिखलमाती गारा ७६६
चिंच ५८६
चिफळी १२४९
चिबूड ८९९
चिरपोटाणी १२२९
चिरफळ १५८
चित्रक, चित्रकरक्त १२३
चीढ २७
चुका ५९३
चोपचीनी १५३
चोपडाकरंज, धाडेराकरंजवाळा ३३५
चोरक ८९
जटामांसी ६३
जव, जौ ८१५
जवाखार २३३
जवस, अळशी ८४५
जरणी तृण ३७४
जलपिप्पली ४७१
जलमंडपी १२३०
जलसिरसी ७०२
जस्त ७२०
जायपत्री ४८
जायफळ ४६
जासवंद ५२०
जीवक २६१

विषय. ... पृष्ठांक.
जीवन्ती २८३
जिरें, पांढरें जीरें १३८
जेष्ठमध १७१
जैपाळ ३९८
जोंधळे, ज्वारी ८१९
झरेर १२५१
झाबु १२५२
झेंडू मखमाल ५१८
टरकांकडी ९१९
टांकाळा तरोटा २१
टेंट २७०
टेंभुर्णी ५९५
डाळिंब ५५५
डिकेमाली १४८
डुकरकांद ९४७
तबकीर १६०
तवसे ८९६
तमालपत्र ५८
तम्बाकू १२१७
ताक ... १०१४-४३४
ताड, काटेताड, माळाताड ... ६११
तांदुळजा, चवळाई ८६८
तानवडीचेंझाड १२५०
तामीचावेल, भूप पाड ... ४५९
तांबडाभोंपळा ८८०
तांबे ७१४
तिवस ७०६
तिलक वृक्ष ५०२
तीमर १२४५
तीळ ८४३
तुर्टी फटकी ७६२
तुंत ६३७
तुरी ८३७
तुळसी ५१४
तूप १०२५
तृणाख्यतृण ३७५
तेजबळ १९०

विषय	पृष्ठांक
तैलकन्द	९५२
तेल्यादेवदारु	२६
तैल	१०३८
तोंडें	८९६
थुणेर	८०
थोरपेरण	२७१
थोळजाई, वित, पिंवळी, जाई ...	४८३
थोरजांभूळ, नदीजीम्भूल ...	६४९
थोरडोरली	२९८
थोरताग	४३४
थोरदन्ती	३९७
थोरनीळी	४०५
थोर बकुळ	४९८
थोरवेत, वेत	४९८
थोरवेला, वेलदोडे	५०
थोरशमी, लघुशमी	७०३
थोरश्वेतकावळी	४४४
थोर सोमवल्ली	४४७
दगडीसोनामुखी, रौप्यमुखी ...	७३७
दगडफूल	७१
दवणा	५२७
दम	१००४
दारुहळद	३११
दालचीनी	५६
दातूणी, हेरम्बवृक्ष	१२४४
दुधाभोपळा	८९०
दुपारीचेंफूल	५१६
दूध	९९०
दूर्वा, नील, श्वेत, हरळी गंडूरदूर्वा	३७१
देवदाली, देवडुंगराफळ ...	४७०
देवबाभूळ	५०६
देवभात	८५४
द्रोणलवण	२४५
धने, कोथिंबीर	१४४
धमासा	४०८
धरणीकन्द	९४९
धावडा	६९२

विषय.	पृष्ठांक
धायटी	२०१
धोत्रा	३०९
धोत्रा, राताधोत्रा	३११
नखला, वाघनख	७०
नन्दीवृक्ष	६५६
नवसागर	२४५
नल, देवनल थोर देवनल ...	३६३
नलिका	९३
नाकस्किणी	४७६
नागकुलीकन्द	९५०
नागकेशर, तांबडा नागकेशर	५४
नागतुम्बी	१२४३
नागदमणी	४७४
नागपुष्पी	४४४
नागवेल	२५३
नाचणी	८५५
नाडीशाक	८७६
नावलीच्यामुळ्या	१८६
नारळी, नारळ	५६४
नारिंग	५७६
निवडुंग फणाचेनिवडुंगविकाडि	२९८
निवळीच्याबिया चिह्लार गजरा	६४२
निर्विषी	१२४९
निर्गुण्डी	३४२
निशोतर, तेड	३९३
निःश्रणिकातृण	३७४
नीलमणि	७८८
नीलालु	९४६
नेवती	६९४
नेवाळी	४८७
पतंग	२१
पण्यन्धतृण	३७६
पद्मकन्द, भिसखाण्ड	५३९
पद्मकाष्ठ	३१
पनसी	४२२

विषय.	पृष्ठांक.
पर्पटी	९२
पळस	६८५
पल्लिवाहतृण	३७५
पहाडमूळ	३९०
पाचूरत्न	७८५
पांढऱ्याफुलांचें निशोत्तर	९३
पांढरफळी	४२१
पांढराकांदा	९३३
पांढरीलसूण	९३०
पांढरीलहानजुई	४८८-४८३
पांढरेंउत्पल	५४०
पाणआंवळे	६१९
पाणगवत, लव्हा	३६७
पाणी	९५९
पाणगवत, पाण्यातीललव्हा	३६७
पाथरी	११८८-४७६
पादेलोण	२४२
पानरी, पारिंगा	३२३
पानीयालु	९४५
पारसापिंपळ.भेद, भगेरवृक्ष	६५४
पारा	७२६
पारेवत	६३९
पालख, पोइशाक	८७०
पाषाणभेद	२००
पिंडीशाखर, खडीशाखर	१०८८
पितळ, सोनपितळ	७२५
पितळेचें कीट, पुष्पाञ्जन	७३३
पिपरीवृक्ष	६५६
पित्तपापडा	३१४
पिंपळ	६५३
पिंपळमूळ	११८
पिंपळी	११६
पिवळाकोरंटा, सांबळाकोरंटा	५१८
पिस्ते	६३४
पिठवण	३७४
पीतवेल	४८९
पुण्डरीकवृक्ष	९१
पुदिना	९४
पुष्करमूल	१९३
पुष्कराज	७८७
पुत्रजीवकवृक्ष	६७९
पेरूपांढरे, पेरूतांबडे	५७१
पेरोज	५७५
पोकळ्याचीभाजी, माठाचीभाजी	८६७
पोपया	१२४६
पोंकळे	७८३
पोस्त	२२९
प्रसारणी	४२७
प्राजक्त, पारिजात	५२०
फटिक	७८९
फणशी	४२२
फणस	५९४
फांशी	१२४०
फालसा	६३४
फोंडालु	९४५
बकानिम्ब	३२०
बकुळी, बगोले	४२७
बहुनाग	७९८
बडारफळ, इक्षुफणस	५९६
वड	६५१
वडवती	४५२
बडीशोप	१२७
बदामगोंडे, बदामकडु	५७३
वनप्सा	१२५४
वरसवोडी, वोळधरा	४११
वरुथा	८५५
वंशपत्रीतृण	३७६
वल्वजातृण	३७३
वंशलोचन	१५९
बहेडा, धाटींगवृक्ष	१०४
वाकुंभा	७१०
वागडखार	२४३
वांगे	९२०

विषय. ... पृष्ठांक.
वाघेटी १२४२
बाजरी ८२२
वांझकंटोली ४६७
वाटाणे ८३९
वादांगुल, कारस्ख ४५०
बाभूळ, ब्राबूळ कीकर, बाभळीचा गोंद ६७६
वायवरणा ६९८
बळांतशोष १२७
वाळा ७२
वाळू ७६४
बावची २१५
वायविडंग १५७
बाहवा, बाहव्याच्या शेंगा ... १७५
विकेकती, आककइ, कांबुली ... ३५४
विखरा ४१६
विडलोण २४१
विदारीकन्द ९५१
बिवळा, बिवळयाचा गोंद ... ६७०
विषडोडी २८६
विष्णुकन्द ९४९
वीरारुक ५८९
वृत्तगुण्डतृण ३७६
वृद्धि १६८
बृहज्जीवन्ती २८५
वेखण्ड, पांढरें वेखण्ड १५०
वेलची ५०१
वेलवृक्ष २५९
वेल्लतूर १२४०
वेलचीभाजी ८७६
वेलु, पोकळवेलु, भरीववेलु ... ३६१
वेहण्यांचफळ ६२६
वैडूर्यरत्न ७९१
बोरीचेंझाड, बोर, रायबोर, लघुबोर ६२३
बोळ ७६७
ब्रह्मदण्डी १२१४
ब्राह्मी ४६१
भ्रमरशाली १२२७

विषय. ... पृष्ठांक.
भांग, गांजा २२५
भांगुर्डी ३५३
भारंगी १९९
भुईकोहळा, वेन्द्रिचावेल ... ३८१
भुइफोड अळंबी ९५८
भुइमुगाच्याशेंगा ६४७
भूतृण ३७१
भुयआंवळी ४६०
भूर्जपत्र ६८४
भेंडे, रानभेंडे ९१९
भोंकर, शेलवट, भोंकरी, गोंधणी ६४०
मका ८५८
मखाणे १२२२
मजारतृण ३७४
मंजिष्ठ २०३
मटवया ८३६
मात्स्याक्षी ४५२
मद्य १०९७
मध १०७३
मनशीळ ७४७
मन्थानकतृण ३७५
मयूरशिखा ४८०
मर्यादालता १२३३
मराठी १२२२
कस्तूरा ८३२
महामेदा १६६
महाळुंग ५७८
माषा ४३२
माड ७०८
माणिक ७७४
मादु ७०८
मानकन्द ९५४
मायफळ १२१२
मायमूळ, माइनी १२५०
मायाळु ८७२
मालकांगनी १९२
मारुती ४९

विषय. ... पृष्ठांक.
माळाकन्द ९५०
मिरवेलीचें मूळ, चवक ... ११९
मिरें, पांढरीं मिरें ११४
मिश्रवर्ग ११७३
मीठ २४०
मुखालु ९४४
मुंगुसवेल, मार, सापसंद ... १८८
मुचकुन्द ५००
मुरकुट १२३४
मुरदारशिंग ७३९
मुळा ९३५
मूत, मूत्र १०३३
मेण्डफळी, केपडांच्याशेंगा ... ४४४
मेण १०७७
मेथी १२९
मेदा १६५
मेंदी १२२६
मोइया १२२६
मोई, मोक ८८२
मोकळी, मोखावृक्ष ७०१
मोगरी, रानमोगरी, खाडीमोगरा ४८५
मोठेंबेर ६२३
मोत्यांचीशिंप, नदींतीलशिंप ७५६
मोती ७७९
मोथे, नागरमोथे भद्रमोथे ... ७४
मोरचूत ७३४
मोरवेल १२१
मोळ ३६५
मोहरी, रायी ८४९
मोहाचावृक्ष, मोहवृक्ष, जलमोहा ६०७
यवेची, टोटवी ४३६
रक्तचन्दन ३०
रक्तपाढळ ३६५
रक्तरोहिणी ६७५
रसाळ गोडरसाळें ९४२
रसोन २१२
रानकदम्ब, धूलिकदम्ब, कळंबभूम ५०५
राजगिरा १२५३
रानउडीद २८८
रानकासविन्दा ८८२
रानकुळीथ १२२१
रानतुळस ५२९
रानमूग २८७
रामफळ ६२२
रामबांस ४२०
राळ ३७
राळयाचें झाड ६६५
रिंगणी, भुईरिंगणी, लघुरिंगणी २७७
रिठा ६७८
रुई २९५
रुदंती १२२८
रुद्राक्ष ७०७
रूपे ७१२
रेणुकबीज ७८
रेवाचीनी १२१५
रोहिणी, मांसरोहिणी ... ३४५
रोहिष सुगन्धरोहिषतृण ... ३६०
लघुइड्लिंबु, साखरलिंबु ... ५८१
लघुइंद्रवण, कवंडळ, थोरकवंडळ ४०१
लघुकावळी, कामोनी ४४०
लघुकुरण्डका १२२९
लघुचंचु, थोरचंचु ८७४
लघुचिकणा, हिवरहटी, थोरचिकणा ३५२
लघुतालीसपत्र ६०
लघुदन्ती ३९५
लघुदर्भ, थोरदर्भ ३६८
लघुदुधी, थोरदुधी ४५८
लघुपीलु, थोरपीलु, किकळेचा वृक्ष ६०४
लघुशतावर, शतमुळी, आलतळी २८५
लवंग ४४
लवणतृण ३७५
लक्ष्मणाकन्द ९५३
लाख २६०

विषय. पृष्ठांक.

लांग, लाक ८४०
लाजाळू, लाजरी, संकोरणी ... ४५६
लामज, पिंवळा वाळा ... ८७
लाल अघाडा ४१५
लाल मिरची १२१९
लाल रताळ ९४२
लाल लाजाळू ४४६
लोखंड, पोलाद, किट्ट ... ७२०
लोणी १०२१
लोध २२१
शंख ७५८
शंखाळू ८५४
शंखासुर, धाकटीगुळ ... ५१७
शंखाहुली, शंखोनी ४५३
शहाजिरें १४०
शालवृक्ष, धूपशाल ६६७
शाल्मली कन्द ९५७
शिंगाडे ९२८
शिताफळ ६११
शिंदी, खजूरी ५६८
शिवलिंगी, बाहुपरकी ... ४९८
शिरगोळा ७९६
शिरडोडी ४६१
शिरस, श्वेत शिरस ... ८४७
शिरसी ६६१
शिराळी ९०४
शिरपकातृण ३७४
शिलाजीत ७६८
शिलारस ४२
शिसें ७१८
शीवणा गम्भारी २६२
शुभ्रालु ९४६
शूकीतृण ३७७
शेगट, शेवगा ३२६
शेण्याखैर, गन्धियाखैर, घाणेरा खैर ६७३
शेंद्री ५१८

विषय. पृष्ठांक

शेंदूर ७४६
शेवाळ ११३१
शोली रान हळद २११
श्वेत उपलसरी, कृष्ण उपलसरी ४३०
श्वेतकावळी ४४४
श्वेतकेवडा, केतकी ५०८
श्वेतचम्पक ४९६
श्वेतवरधारा १२३९
संख्यावर्ग ११०७
सज्जीखार २३४
सताप १२२४
संधानवर्ग १०९२
सबजा, मर्वा ५२५
समुद्रफळ १२१३
समुद्रफेण १६२
सरलदेवदार २६
सरलाडीक ४१
सराटे, लहान गोखरू २८०
सर्पाक्षी ४५३
सर्व विधिभालु ९५४
सहोड ६९६
साखर १०८७
साग ६९६
सागरगोटा १३९
सातपुती १२५३
सांवरी, शेवरी, सांवरीचा डीक ६८९
सांवे, कथील ८५६
सामरमीठ, साम्बरलोण ... २३९
सारढोल ६६८
सालवण २७
सालम्मिश्री १२१९
सालवीण ७०४
साळी, भात ८००
सिन्दूर ७४६
सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ ५१७
सिरपटी ३१४

विषय. ... पृष्ठांक.
सीताफळ ६३१
सुंठ १०९
सुदर्शन ४६८
सुपारी ६०७
सूर्य्यकान्तमणि ७१३
सूर्य्यफूल ४६५
सोंदेकोण २३८
सोनगेरु, तांबेरु, हुरमुँजी ... ७१३
सोनवेल ३५८
सोनचांफा ४१४
सोनामुखी ४६९-४०३
सोनें ७०९
सोमल. शंखिया ८०६
सोमलता ४४७
सोरा २४७
स्वागीखार २३४
स्थलकमलिनी ५४२
स्पृक्का, गगौना, कापूरी शाक ... ८८
स्फटिक ७१५
[illegible]शागुग्गुळ गुग्गुळ २१
हरताळ ७४७
विषय. ... पृष्ठांक.
हरवेली २८५
हरभरे ८३४
हरीतकी, बाळहरडी २६
हरीक ८५७
हळद २०९
हळदीचा वृक्ष ७०६
हस्तजोडी ९५३
हस्तिकन्द ९४६
हिंग १४५
हिंगणबेट ६८०
हिंगूळ ७३०
हिरवा बदाम १२४८
हिरवेमूग, पिंवळे मूग ८२३
हिरा ७७१
हिराकस, श्वेतनीळी ७२१
हिक्कमोचिका ८७८
होळ १५६
क्षीरकाकोली ११९
क्षीरविदारी ९५१
क्षुद्रबदाम १२४८
त्रायमाण ४३५
त्रिपर्णीकन्द ९५३

इति ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणने-गुजरातीशब्दोनीअकारादि-अनुक्रमणिका ।

विषय. पृष्ठांक.

अक्कलकरो १५५
अखोड ६०६
अगथियो ५२२
अगन्दचस्मानोखाच ७९३
अगर २३
अघेडी ४४२
अघेडो ४१२
अंकोल्य ३५०
अजकर्णसाल ६६४
अजमा १२२
अंजीर ६३४
अडदवेल्य २८८
अडदवेल्यकाडोमकिया ... ९२६
अडवाड २८८
अडवाडमगवेल्य २८७
अनन्नसनीकळी २१९
अनन्नास ६३३
अनूशादिवर्ग ११२३
अफीण ६२१
अफीणनाडोडवा ६२९
अभरख ७४०
अभेडा ५५८
अम्लशिरीषका ७०३
अमरवेल्य ४४९
अमलवेत ५२३
अरणी, ऐरण ३६९
अरडुसो ३१३
अरडुसोमरमव्व ३७०
अरीठा ६५८

विषय. पृष्ठांक.

अर्क १०५१
अलची ९६३
अलम्बुषा ४५८
अलसी ८४५
अशोळियो १३१
आकडो २९६
आखराख्य १२५२
आखसंध ३८८
आगियो १२४४
आलूप्य ६३०
आडु १११
आंबो ५४३
आंबळा १०७
आंबळी ५८६
आंबाहळदर २१०
आम्रातक ५५०
आलु ५१०
आलुपाळो ५१०
इंगोरियो ६९१
इंद्रजव १८३
इंद्रवाणीयु गायसुडणु... ... ४०२
इरिमेद ६५७
इक्षुदर्भ ३७३
उडद ८२६
उंकडो ११३४
उधमुनीरु १२१८
उमरो ६२७
उंदरकनी ४७२
ऊभीभोरिंगणी २५५

विषय. ... पृष्ठांक.
ऊंबाहुळी १२२६
ऊषलतृण ३७३
ऋद्धि १६७
ऋषभक १६४
एकलकंटो १२३५
एखरो ४१६
एळचीकागदी ५२
एळवालुक ९०
एळियो, शकोतरिएळियो ... ४२०
ओटकळ, करमळ ५९१
ओटिंगण ८७८
ओलिया ८३०
औषरखघण ३४४
कचूर ८३
कचोरा ८३
कंडाळीथोर २९८
कटुवीरा १२२१
कंटोळी ९१५
कडवापटोळ ९१०
कडवीखरखोडी २८३
कडवीघोळी ९१४
कडापो ६६८
कडीदुधळा १८१
कडु १७७
कडो ३८४
कणेझरो ८७२
कणेर ३०७
कंथार १२३५
कदम्ब, कळम्ब ५०३
कपरीकाळी वेलय ४३०
कपीलो १७३
कपुर १
कपुरकाचरी ८५
कमरकरबांधामीठावेडे ६१७
कमळ ५३१
कमळकाकडी ५३७
करञ्ज, चरणवे ६२५
विषय. ... पृष्ठांक.
करपटां १२४१
करमदी, करमद्य ६२०
करळीनोभाजी ८८०
करियातु १७९
कळइ, कथीर, खरिपारी ... ७१६
कळथी ८४२
कळम्बी ८७७
कलौंजीजीरु १४२
कसांजण ७३३
कसेरु ९५५
कस्तूरी ७
कांकच, तेनाफळकाकचिया ... ३३९
काकटिंबरवो ५९९
काकडाशिंगी ७९६
काकड़ी ८९३
काकनासा ४४३
काकोली १३७
कांग ८५२
कागदीलिंबु ५८१
काच ८००
काजुकळिया ६४७
कांडा, अशेळियो ५१३
कारेला, कडवावेला ९१६
कासोंदरी ८८२
कायफळ १९८
काळाजीरी, कडवीजीरी ... ७४३
काळीपाट ३९०
काळीमूसळी, पांढरीमूसळी ... ३८४
काळोवाळो मोच्यसावाळजिनागीमसुळ ६७
कांबडो ६७९
कासालु ९४५
कांसु ७२४
कष्टालु ९५४
किङ्कड, शेषगुन्दर ३९
कीडामारी १२२३
कुकुडवेलय ४७०

विषय. ... पृष्ठांक.
कुठ, उपलेट ८२
कुन्द ५०१
कुवाडियो २१७
कुवार ४१८
कुवो ४६४
कुलिञ्जन १५२
कुसुम्बाभाजी ८६०
कुसुम्बो, करड २०६
कृष्णबीज ४०३
कृष्णत्रिवृता ३९३
केतकी ४२०
केवडो ५०८
केर ६९४
केलय ५५७
केशर १२
कोकम ५९२
कोकरुंदा ४७७
कोठ, कौठ, कोठवडी ६१५
कोडी ७५५
कोद्रो ८५७
कोबीं २५६
कोलकन्द ९४७
कोशम ५५२
कौचो ३४३
खजुरी, खजूर, खारक... ... ५६९
खडी ७५४
खपाटय ३५४
खरखोडी २८६
खसखस ३३२
खरणेर ४६१
खाखरो ६८५
खाजवणी १२४४
खाट, खटूवावेलय १२३१
खाटी आंबली ६१७
खांड १०८७
खापरियुकाथु ११५
खारीजाल्य ६०४
खिजडो ७०३

विषय. ... पृष्ठांक.
खुरसाणीअजमा १३६
खेहा, कम्बोइ १२४९
खेडियो, गोरड ६७१
खेरडेलय १२३६
खैरसार काथो ६७२
गजपीपर १२१
गन्धक ७४३
गरणी ३२९
गरमर १२५०
गरमाळो, गरमाळोनो गोळ ... १७५
गलका ९०६
गली ४०४
गलो २४९
गाजर ९३९
गारो ७६६
गुगुळ ३१
गुच्छकन्द ९५४
गुण्डतृण ३७६
गुण्डाशिलीतृण ३७६
गुन्दो ६४०
गुवार ९२३
गेरु ७५३
गोखरु २८०
गोपीचन्दन ७६४
गोभी १२५५
गोमूत्रिकातृण ३७३
गोमेदगोमूत्रजवुपीळारंगनु ... ७८९
गोरोचन्दन, गोरोचन ... ६८
गोळ १०८४
घउं ८१७
घडला ६५
घी ९२५
घोडोवच ,खुरशाणीवच, वाळ—वच १५०
घोळामिठां ९१२
चण्डालकन्द ९५२
चणकयाव ५२
चणिकातृण ३७७
चणोठी ३४१

विषय. पृष्ठांक.

चण्या ८३४
चन्द्रकान्त ७९४
चन्द्रस, जनार्जन, गन्धवेरिजो ४१
चवक ११९
चँवेली ४८२
चम्पाकाटी, चम्पोकाचनार ... ३२२
चमेडनु आंद्रनु भरण ...१२२१
चा १२१६
चासेली ६२८
चिमडो, राजगरां, कोठीवां ... ८९९
चित्रो १२३
चीणो ८५२
चुकोखाटीभाजी ८६६
चोपचीनी १५३
चोला ८२८
छास, घोलवुं १०१४
छिगडियो, वछनाग ... ७९८
छुछराजगरीनी भाजी ... ८७५
छुवारीअजमोद, करमाणी दीनेची १३६
जव ८१५
जवखार २३३
जवासो ४०९
जरणीतृण ३७४
जलकुम्भी १२३०
जसत ७२०
जाइफल ४६
जाती, स्वर्णजाती ४८२
जाबित्री ४८
जामफल ५७५
जायफल ४६
जारटच ८१९
जासुस ५२०
जीवक १६३
जुइजिगरी, पीळीजुइ ... ४८७
जेठीमधनोमूल, जेठीमधनोशीरो १७१
झरेर १२५१
झावू १२५२
झिपटो ४१५

विषय. पृष्ठांक.

झिरय १२३३
झुमकडांकडवाते कडवी घीसोडी ९०६
झुमखडा १२५३
झेरकोचला ६००
टंकणपाडियो टंकणधुळियो ... २३५
टांको, चीक ८६२
टिंबरवो ५९७
टेंढगवरो ६५९
डमरो ५२७
डांभो ८६७
डिकामारी १४८
डुंगली ९३३
डुधियो, वछनाग ३०५
ढोल १८४
तगर २९
तज ५६
तडवूच ९०२
तवखीर १६०
तवरिया १२४५
तमाकु १२१७
तमाल ६८३
तमालपत्र ५८
तल ८४३
तलवणी १२३७
तलिया, शकरटेंटी ९००
तांजलजो ८६८
ताड़, श्रीताड, हेन्ताल ... ६११
तालीसपत्र ६०
तांसलि ८९६
तिलकवृक्ष ५०२
तुम्बरु १५८
तुरदादय ८३७
तुरीयाघीसोडी ... ९०४-९०५
तुलसी ५२४
तृणाख्यतृण ३७५
तेजवल १९०
तेल १०३७
तेलकन्द ९५२

विषय. पृष्ठांक.
थुणेर ८०
थोरदांडलियो, फटाली, हातलो, तरधारी २९८
दधि १००३
दरभ, डाभ ३६८
दाडम ५५४
दांत पटके नेपालना मुल ... ३९५
दारु १०९७
दारुणी १९५
दारुहलदर ११२
दुध ९८९
दुधिपोपाणो ७९६
दुधीयु ८९०
दुधेली मोटी, थोरदुधी ... ४५८
देवदारु २६
द्रोणी लवण २४५
धतुरो ३०९
धमासो ४०८
धरणीकन्द ९४९
धराख ६४३
धाणा, कोथंबीर १४४
धावडो ६९२
धावणो २०१
धामण ६३५
धो. लीलीधो, धोलीधो, गंडूरधो ३७८
धोला फूलनो निसोतर ... ३९३
धोला मिठां ९१२
धोलो एरंडो, रातो एरंडो ... २९०
धोलो चम्पो, नाग चम्पो, सुलतान चम्पो ४१४
नखला, खावजतना नख ... ७०
नन्दीवृक्ष ६५६
नवसार २४५
नसोतर ३९२
नाक छीकणी ४७६
नाकुली, गन्धनाकुली १८८–९५०
नागकेशर ५४
नागडमण ४७४
नागद्य, नागद्य नानी ... २३१

विषय. पृष्ठांक.
नागपुष्पी ४४४
नागवला ३५५
नागरवेलपान २५३
नागरमोथ ७४
नागली ८५५
नानो आगियो १२२९
नारंगी लिंबु ५७६
नालानी भाजी ८७६
नाली ३६४
नालीयर ५६४
निर्मली ६४२
निर्विषी १२४९
निःश्रेणिकातृण ३७४
नीलम, कालुनम ७८८
नीलालू ९४६
नेतर ३४७
नेपालो ३९८
नेवरी ४८७
पंडोला ९१०
पणस ५९४
पण्यन्ध तृण ३७६
पतकोलु, थाकरकोलु ... ८८९
पतंग ११
पत्थरमूल ७६
पद्मक सुलाकंदु ३१
पद्मकन्द ५३९
पनसी ४२२
पपोटी १२२८
परवाला ७८४
परवो लिसा, वरवारडी ... ९२५
पलियो ... १२२८–९१
पल्लिवाह तृण ३७५
पहलां ६३४
पांडेरवो ३२२
पाणी आंवला ६१९
पाणी ९५९
पाताल तुम्बडी १२४३
पानीयालु ९४

विषय. ... पृष्ठांक.
पान्य धाडाडी ... ३८
पारसपीपळी ... ६५४
पारेवत ... ६३९
पारो ... ७२६
पालखनी भाजी ... ८७०
पाषाणभेद ... २००
पीसपापडो, खडी खडियो ... ३१४
पीतमूळी ... १२१५
पीलल ... ७२५
पीपरीमूळना गंठोडा ... ११८
पीपर्य ... ६५६
पीपळो ... ६५३
पीलियो ... ७६०
पीलुडी ... ४४०
पीरोजो ... ७९५
पुखराज ... ७८७
पुन्नाग, सरपुन्नाग ... ५११
पुत्रजीवक ... ६८०
पृष्ठपर्णी ... २७४
पोकर मूळ ... १९२
पोषी ... ८७२
पोपणा ... ५४०
पोपया ... १२४६
प्रशारणी वळ (नारी) ... ४२७
फग बेळानो कन्द, भोंकोळु ... ३८२
फांगय ... १२०१
फाटक मणि ... ७९५
फुग्यमोद डानोवळी ... ९५७
फुष्ठ ... ४८१
फोडालु ... ९४५
फोदिनो ... ९४
वकान्य ... ३२०
वंगडीखार ... २४३
वज्रदन्ती ... १२४०
वटपत्री ... ४५२
वटी ... ८५४
वड ... ६५१
वडागरु मीठ ... २४०

विषय. ... पृष्ठांक
वणछकपास, हिरवळीक पशिया ... ३५९
बदाम मीठी, बदाम कडवी ... ५७२
वधारणी ... १४५
वनप्सा ... १२५४
वन छूळदर ... २११
वन्यो ... ८५५
वपोरियो ... ५१६
वरचा ... ८५५
वरधारा ... १२३८
वरशोली ... ४९८
वरियाळि ... १२७
वरुणो ... ६९८
वळदाणा खिरेटा ... ३५१
वल्वजतृण ... ३७३
वंशपत्रीतृण ... ३७५
वंशलोचन, वंशकपूर ... १५९
वाघाटी ... १२०३
वाजरो ... ८२१
वांझ कण्ठोली- ... ४६७
वादाम नीळी ... १२४२
वांशो ... ४५०
वापुगा ... ७००
वावची ... २१५
वावची मावी ... २१५
वावडींग ... १५७
वाघळ ... ६७६
वाराहीकन्द, सुअरिया शालिवनावइय ... ९४६
वाळछड ... ६२
वाळो ... ७३
वाळोक ... २२४
वांश ... ३६१
विकळो ... ६२६
विडलवण ... २४१
विदारीकन्द ... ९५१
विलो, विलु ... ३५९
विष्णुकन्द ... ९४९
वीजाह लिङ्ग ... ५७८

विषय ... पृष्ठांक
बीया, हीराद्खण ६७०
बुद्धि १६८
बूरतृण ३७६
बेठीभोरिंगणी २७८
बेडां १०४
बेवडीओळप ४५०
बेलण, बोळर, जंगळीचिखळयो, रानमोगरो ४८५
बेल्यतरु १२४०
बोडीअजमोद १३४
बोदारकांकरो ७३९
बोळसरी ४९७
ब्रह्मदण्डी १२१४
ब्राह्मी ४६२
भद्रमुञ्ज ३६५
भमर छालप १२३७
भांग्य, गांजो, चरस २२५
भांगरो ४३२
भारंगी १९९
भिलामां २२२
भींढा ९१९
भुँइआंबळा ४६०
भुँइकोळु ८८७
भूतृण ३७१
भोजपत्र ६८४
भोपाथरी ४६४
मकाइ ८६०
मखाना १२३२
मगळीळा, काळाकच्छी ... ८२२
मज्जरतृण ३७४
मजीठ २०३
मठर ८३८
मटाणा ८३८
मठ ८४५
मढाशिंगी, आटईंमशींग ... ४४५
मात्स्याक्षी ४५२
मध १०७३
मन्यानकतृण ३७५

विषय. ... पृष्ठांक.
मनःशिला ७४७
मवेळी, मालेडु ६८२
मरखो ७०१
मरजादवेल्य १२३३
मरवो ५२५
मरी तीखा, धोळामरी ... ११४
मरेटी १२२२
मसूर ८३२
महामेदा १६६
महुडो, जळमहुडो ६०२
माखण १०२०
मांडवी ६४७
मांड, भेंढिमांड ९०८
माणक, चुन्नी ७७४
माधवीलता ४७९
मानककन्द ९५४
मामेजवो १२५०
माया १२१२
माळकांगणी १९१
मालती ४९०
माळाकन्द ९९०
मिजरानी आंख्यजेवो हसनिया ७९०
मिण १०७७
मिश्रवर्ग ११७३
मीठीआखय ४६९
मेठू २४०
मुखमळ ५१८
मुखालु ९४४
मुचकन्द ५००
मुंडी, गोरखमुंडी, बोरियोकळारमृणाळ ४११
मुतर १०३२
मूर्वा ४३९
मूळा, मूळाकळी, मोगरी ... ९३५
मृणाल ५३८
मेथी ११९
मेदा १६५
मेदी १२२५

विषय. पृष्ठांक.
मोटीगळी ४०५
मोटीखरखोडी तृणधारमी ... २८५
मोटी बोरडी, ननीबोरडी ... ६२३
मोटीएळची, एलचा ... ५०
मोटो लीवडो ३२१
मोथी ७७९
मोती सींप ७५६
मोरमांखी ८६
मोरशिखा ४८०
रगतरोहिणी ६७५
रतनजोत ३९८
रतवेळियो ४७१
रतांजळी २०
रताळु, शकरकन्द, श्वेताळु ... ९४३
रखबत्ती २१३
राई ८४९
राजगरो १२५३
राज जांबु, रावणा वेळवोया जांबु, दुंगरिया जांबु, ... ६५०
राडारडी, वाछंटी २८३
रातफूलना पांडल श्वेतपांडर कांकच २६५
रानतुलसी भेद ५२९
रामकळ ६३१
रामबावळ ५०६
रायखड्वो ४९४
रायण ६२९
राळ ३७
राशंगडी ५१७
रासना १८६
रिगना ९२०
रिशामणि ४५६
रुंपु ७१२
रुद्राक्ष ७०७
रुरघडो १२४२
रेती, वेळु ७६४
रोण्व ३४७
रोहिषतृण ३७१

विषय. पृष्ठांक.
लकुच ५९६
लवणतृण ३७५
लवींग ४४
लसण ९३०
लक्ष्मणाकन्द ९५३
लाख २०७
लिंडि पीपळ ११६
लिंबडो ३१६
लीलुपालु ७८६
लुणीझिणी, लुणीमोटी ८६४
लोढु, मोलु, गजवेलय ... ७२१
लोदर, पठाणी लोदर ... २२०
शंख ७५८
शंखजीरु ७६२
शंखवेलय–आलपुकुटामाणा भगलिंगी ४३८
शंखावळी ४५३
शंखालु ९५४
शण ४३३
शतावरी, एकलकण्डो, शाषवायुवा १८६
शवन्थ २६२
शरघवो ३२६
शरपुंखा ४०६
शरशेष ८४७
शाकलुजीरु १३८
शाकर १०८८
शाग ६९६
शाजीरु १४०
शामो ८५६
शालपर्णी २७२
शालेन्डु, धूपेडो ६६७
शालमळीकन्द ९५७
शालय, चोखा ८०८
शिंगोडा ९२८
शिवलिंगी ४३८
शिरीष, शेरशडो ६६१
शिलिपका तृण ३७४
शिलाजीत ७६८

विषय. ... पृष्ठांक.
शिसम ६६२
शिषमूळी ८७४
शीआळी, हाण शणगार ... ५२०
शीशु ७१९
शुण्ठ्य ११०
शुवानी भाजी, शुवाडाणा ... १२६
शुभालु ९४६
शेतूर ६३७
शेदरणी १२२७
शेय ५७४
शेवती गुलाब मोशमीगुलाब ... ४९०
शेवाळ, लील १२३१
शेमळनोगुन्द, मोचरस ६९०
शेरडी १०७८
शेलारस ४२
शोणवी ४२१
सोपारी ६०७
सोमल, सोमलखार, संखियों ८०६
संख्यावर्ग ११०७
संचळ २४२
सताव १२२४
सन्धानवर्ग १०९२
सन्धेशरो ५१७
सप्तपर्ण ७०४
समदरफीण १६२
समर फळ १२१३
सरळ देवदार २८
सहदेवी ३५३
साजड ७०८
साजीखार २३४
साटोडी ४१३
सायेर ३०१
साळ ६६५
साहोडा ६९६
सिन्दूर ७४६
सिन्दूरी ५१८
सिंधालुण २३८

विषय. ... पृष्ठांक.
सुखड १६
सुगन्धपीलु ८७
सुगन्धतृण ३७२
सुदर्शन ४७८
सुधामूळी १२१९
सुरमो ७३३
सुरोखार २४७
सुरजमुखी ४६५
सूरण ९४०
सोनामाखी रुपामाखी ७३७
सोनु ७१०
सोमवल्ली ३४७-३५८
स्वर्जपत्री ४३०
स्थलपद्मिनी ५४२
स्पृक्का ८८
स्फटिक ७९५
हपुषा १५६
हर्मो ७०५
हरडे, हिमज ९६
हरिताल ७४७
हरेणु ७८
हळदर २०९
हळदरवो ७०६
हस्तिकन्द ९४६
हस्ति जोडी ९५६
हंसराज, काळो झाळकीनो ... ४४६
हाडसाकळा ३०३
हिंगळो ७३१
हिराबोळ ७६७
हिरो ७९२
हिलमोचिका ८७८
हीराकसी ७५२
क्षीरकाकोली १७३
क्षीरविदारी ९५१
त्रायमाण ४३५
त्रांबो ७१४
त्रिपर्णी कन्द ९५३

इति ।

A

Acacia Catechu 671
Acacia Arabia 677
Acacia tree 677
Acacia Peneta 1236
Aconitum 219
Aconite-leaved Kidney Bean 826
Aconite 797
Acute-angled Cucumber ... 905
Adhatoda vasica 314
Albizzia lebbeck 662
Alangium lamarchii ... 350
Alhagi Manrorum... ... 410
Aloe American 421
Alexandrian Sena 469
Alstonia scholaris 705
Almond 1248
Amaranthus tricolor ... 868
Amaranthus Polygonoides 872
Amarphophallus Pamculatus 941
Ammonia 1229
Ammonium Chloridum ... 246
Andrographis Pamculata ... 436
Andropagon Nordoides ... 369
Andropagon Citratus ... 371
Andropagon Muricatum ... 68
Andropagon Muricatus ... 73
Andro-graphis Pamculata... 437
Anogisus Latifolia ... 692
Anthocephalus Cadumba ... 504
A nut which clears water ... 642
Apium Gravoolens ... 135
Apple 574
Asperagus Racemosus ... 386
Artimisia Marituma ... 136
Artimisia Vulgaris ... 475
Artocarpus Intergrifolia ... 595
Artocarpus Lucoocha ... 597
Arrow Root 161
Asiatic Grewia 636
Avicimia Tomentosa ... 1246

B

Babreng 157
Bamboo Cane 362
Bohenia Variegata ... 324
Banyan Tree 652
Banduc Nut 340
Barleria Prionilis 514
Barbadoes Aloes 419
Baringtonia Acutangula ... 1213
Black Pepper 115
Black Caraway seed ... 141
Black Helebore 178
Black Jack... 736
Black seeded Dolichos ... 924
Black wood sisso Tree ... 663
Bladdered Dock 867
Blepharis Edulis 879
Bell Metal 724
Bengal Kins 259
Berberis Aristata 212
Betel leaf 254
Betel Nut Palm 608
Bishop's weed seed ... 133
Bead Tree 341
Bitter Luffa 907
Blumea Odorate 477
Bitter Barley 815
Brisdelia Montana ... 1234
Bringal 921
Borax Baborate of soda ... 236
Bottle Gourd 892
Boswelia Therifera ... 667

Brass 725
Bristly Luffa 470
Briyonia Lacihiosa ... 438
Brovista species 1244
Brackteated Birthwort ... 1223
Bulb Onion 934
Bushy Gardenia 185
Buchnania Latifolia ... 628
Butter 1021
Butter Milk Whey... ... 1014
Byophytum Sensatioum ... 1252

C

Cabbage Rose 491
Camphor 2
Cane 347
Canavalia 926
Caper 694
Carbonate of soda... ... 235
Carbonate of Potash ... 233
Carbonate of soda 245
Carambola... 618
Careya Arboria 198
Careys Tree 700
Carrot Root 939
Cashew Nut 648
Castor oil plant 291
Caesalpinia Pulcherrma ... 517
Catechu 673
Cats eye 791
Cattle Fish bone 162
Cauliflower 1255
Cedrus Deodara 26
Celosia Crostata 480
Cephalandra Indica ... 914
Chavica Roxburghii ... 119
Cherry Plumprune ... 590
Ciceodisticha 619
Cissampelos Pareira ... 391
Citrus Acida 579
China Root 153
Chinese Dolicas 829
Chickling Vetch 841
Chirata 180
Cinnamon Bark 56
Clarified Butter 1025
Clero-dendron Serrotium ... 199
" Phlomodes 269
Cletoria Ternatea 330
Clemates Trileba 439
Chloride of Sonium ... 238
Chlorodendron Phlomides 269
Cloves 44
Clustared Hiptage... ... 489
Cocculus Villosus... ... 450
Cobculus Corbiflious ... 251
Cocoanut Palm 565
Colens Bor Brutus... ... 1251
Common Cress 131
Common Soral 593
Common Flax seed ... 846
Common Rue 1224
Colocynth 402
Copper 714
Coriender seed 145
Corcharus Acutangularis... 875
Costus Root 82
Cotton Plant 360
Couch 778
Cowries 755
Cowhage 344
Cox berbata 367
Crateva Roxburghii ... 698
Cressa Critica 1228
Creep Cynodon 379
Crocussivut 13
Croten Seed 396

Cubeb Pepper 53
Cuscutare Plexa 448
Cucumber 893
Cucumber 896
Cumin seed 139
Curdled Milk 1004
Custard apple 631
Cyamopsee Psoralioidas ... 923
Cyperus Rotundous ... 75

D

Date Palm... 570
Delil 681
Delphineum Denudatum ... 1249
Desmodium Gangeticum ... 273
Dikamaliegium 149
Dill seed 126
Diamond 772
Dioscorea Sativa 948
Downy Branch Butea ... 686
Dryginger 110

E

Eagle wood 23
Ebony 598
Echites Caryophyllata ... 490
Elephant grass 367
Elphantopus scabar ... 473
Elloopa Tree 603
Emblic Myrobalan ... 107
Emerald 786
Epicarpus Orientalis ... 1244
Erythrina Indica 322
Esculent lacourtia... ... 215
Eugenia Jambolano ... 649
Eureyeli Ferox 1232
Euphorbia Hirta 459
Evolvulus 454
Extract of Indian Berbery... 213

F

Fegonia Arabica 409
Fenel seed... 128
Fenugreck... 130
Ferula Narthex 146
Fielus Virance 657
Field pea 840
Fig tree 635
Five Leaved Chaste Tree... 332
Flacourtia Cataphracta ... 620
Flax Hemp 434
Flower 482
French Mary Gold ... 518
Flugea Leucopyrus ... 421
Folia Malabathy 59
Four Leaved Cassia ... 1221

G

Gall Nut 1212
Gallstone Bijoor 69
Gamboge Thistle 195
Garlic Root 931
Gourd 890
Garuga Pinnata 1241
Garcima 591
Gigantic swallow wort ... 296
Ginger Root 111
Gmelina Arboria 262
Gold 710
Glass 796
Grangea Madras Patana ... 289
Grape Rasins 644
Green Grain 823
Gram 834
Great leaved Caledium ... 844
Great Milet 820
Greater Galangal 152
Ground Nut Pea Nut ... 647

Gumcopoal Sandarak ... 41
Guatterera Longifolia ... 510
Guava white Guava red ... 576
Gymbrima sylvestree ... 444
Gynandropsis Pentraphylla 1237
Gyrardinia Heterophylla ... 1245

H

Hairy Mordica 917
Hedychum Spicatum ... 85
Henben 137
Hermaphrodite Amaranth 869
Henna 1226
Hibischus Eseulentus ... 920
Hibixeus 655
Hippion Orientale... ... 1250
Holarehena Antidysentinia 183
Holostema Rheedii ... 456
Honey 1073
Hornbeam heart 352
Horse Radish Tree ... 326
Hymono-dictyon Excelsum 1236
Hypoxis Orchioides ... 384

I

Indian Dellium 32
Indian Sarsaparilla ... 429
Indian Hemp 225
Indian Mallow 355
Indisn Robaco 364
Indigo 405
Indian Pennywort ... 462
Indian Kinotree 670
Indian Corn Maize ... 459
Indian Tobacco 1218
Indigofora Pansiflora ... 1234
Indigofera Tinctoria ... 406
Indian Teak Tree 697
Ionium Suffruticosum ... 542
Ipomcea Renefornus ... 479
Ipomoea Reptans 877
Ipomoca Biloba 1233
Ipomoea Digitata 382
Iron 721
Iron Pyrites 737
Irissp 200
Isphagul Seed 1218
Ixora Farviflora 487

J

Jaequemontii 685
Jasminum Flexeles ... 483
Jasminum Grandiflorium... 484
Jasminum Sambac ... 485
Jasminum Auriecu'atum ... 488
Jasmine flowered Carisa ... 621
Jujub 623
Justicia Procum bans ... 315

K

Kamila Rottlera 174
Keg Tree Ficus Glomiarata } 658
Keg Tree Ficus Opposilafelia 660
Kidney Bean 827
Kokum Butter Tree ... 592

L

Lablab Vulgaris 831
Large Cardamom 50
Large Flowered Agita ... 522

Lead 719
Lea Hirta 443
Lemon 582
Lemonum Acidum ... 582
Leucas Cephalotus ... 464
Lentil 833
Liquid Amber 43
Liquorice Root 172
Large Cardamom 50
Litharge 739
Long leaved Pine... ... 28
Long leaved Barlaria ... 417
Long Pepper 117
Long zedoary 83
Loranthus Longifolious ... 451
Lotus 533
Luffa Pentandra 906

M

Madder Root 204
Maiden Hair 446
Mango Ginger 211
Mango Tree 544
Melon 901
Marking Nut 222
Melia Azdarach 320
Michelia Champaca ... 494
Milks Hedge Prickly Pear 299
Milk 989
Millet 853
Mimosa Sensitiva... ... 457
Magnifying Glass... ... 793
Mollu Gohirsta 1252
Momordica Dioicamale ... 468
Mucuna Monosperma ... 927
Mud Black Clay 765
Mercury 727
Mustard Seeds 850
Mustard Tree of Scripture 605
Mulberies 638
Mushroom 958
Musk 7
Muriya Kornigii 321
Muhelia Champaca ... 494
Myrha Bulsa 767
Myrobalons Black Myronelans 96
Myrovallon Bellirica ... 105
Myristica Fragrans ... 48

N

Narrow leaved Sepistun ... 641
Naoclea Cardifolia ... 707
Netted custard apple ... 632
Nimb Tree... 317
Nitre Saltpeter 247
Nutmeg 46

O

Obtuse leaved Mimusops ... 630
Ocimum Gratissimum ... 530
Ochre 753
Ochrocarpus Longifolium 512
Ochrocarpus Mesuoferrea 55
" Songifolium ... 512
Odina Wodier 682
Oil 1037
Onion (Bulb) 934
Onix 789
Olibanum 39
Opium 231
Orange 577
Origanum Vulgaris ... 802
Ornatto 519
Orocylum Indicum ... 271
Officinal Carthamus ... 206
Ougenia Dabergiaoides ... 706
Oyster Shell 757
Oval leaved Rose Bay ... 181

Oval leaved Caia 217
Oval leaved Rose Bay ... 335
Oxide of Arsenic 806

P

Pallatory Root 155
Palmyra Palm 612
Panicum Frumentaceum ... 856
Pamicum Italicum ... 854
Paederiafoetida 427
Pandanus Odoratissimus ... 509
Parging Broton 399
Parmelia Perforata ... 77
Panicum Milliaceum ... 852
" Frumentaceum 856
Papaw 1247
Pedalum 281
Perotapeo Phoenicea ... 516
Pearl 779
Prunus Padam 31
Penny Royal 1222
Phaseolus Trilobetus ... 287
Phylanthus Niruri ... 461
" Multiflorus ... 1249
Physic Nut 397
Physalis Minima 1229
Pine apple 633
Pipe Clay 755
Pigeon Pea 837
Piper Root 119
Pistacheo Nut 634
Pistacea Inlageirruna ... 197
Plantago Amplexicaulis ... 121
Plantain 558
Plumbago Rosea 124
Plumieria Acutifolia ... 496
Poplar leaved Fig Tree ... 654
Poison Nut 601
Poinceaua Regina ... 517
Poppy Seed 232
Poppy Capsules 230
Pomegranate 554
Potato 1255
Pterospermum Suberifolium 500
Pubescent Cucumber ... 898
Pudding Pipe Tree ... 176
Punctured Paspalum ... 857
Pumpkin 887
Putraywa Roxburgii ... 680
Purple Fleabane 143
Purple Lippia 472
Purslane 865
Purified Sugar Candy ... 1088
Purple Tephrosia 407
" Lippia 472
Pedalum Murex 281
Prunus Padam 31
" Mahaleb ... 65

R

Radish 936
Ranwolfea serpentina ... 189
Red Sandal wood... ... 20
Redwood Tree 345
Red Lumber stone ... 753
Red Malabar Night Shade 873
Red Coral 784
Rice : 809
Ruby 774
Round Podded Cassia ... 882
Rough Chaif Tree ... 414
Rourea Santaloides ... 1238
Rota Cane 347

S

Sapphire 789
Safiron Crasistiunata ... 13

Salt 240
Sal Tree 665
Sand 765
Sandal wood 16
Sappan wood 21
Sarcostemma Brevistigma 447
Sarsaparilla 285
Schrebera Swietenioides ... 701
Selstrus Montana 627
Sentipida Orbicularis ... 476
Serratophyllum Submersum 1231
Shell 70
Shellac 207
Silver 713
Shelesar 52
Silk Cotton Tree 690
Small fennel flower ... 142
Shoe flower 521
Solanum Jequinii ... 276
Solanum Xanthocarpum ... 278
Solanum Nigrum 441
Soap Stone 762
Sidaspamosa 356
Sida Rhombifolia 353
Spike Nard 63
Spondias Mangefera ... 551
Sponge Tree 673
Staff Tree 192
Socotrine Aloes 420
Screw Tree 445
Soap Berri Soap Nut ... 679
Spunge Tree 703
Scirpus Kysor 956
Sissamum Niger Seeds ... 844
Sinapis Alba 848
Snake Gourd 908
Smooth leaved Pongamia... 337
Spider wort 874
Spinage 871
Spiked Millet 821
Sphorranthus Indicus ... 412
Spreading Hogneed ... 424
Spanish Jasmine 484
Square Stalked 520
Strychnos Potaterum ... 642
Streplusasper 696
Staff Tree 192
Sugar 1087
Sugar Cane 1079
Sulphate of Mercury ... 731
Sulphurate of Antimony... 733
Sulphate of Copper ... 735
Sulphate of Iron 751
Sun flower 466
Sterculia Uranus 669
Surinman Medlar 497
Sweet Almond 573
Sweet Marjaran 526
Sweet Potato 943
Sweet Flag Root 150
Sweet Scented Oleander ... 308
Symploces Racemosa ... 221

T

Talc Glimmer 741
Tallredment 94
Tamarind Tree 587
Taxus Bacata 60
Tea 1216
Tecoma Undulata 675
Thalictum Foliolosum ... 436
Thesiliceous Concretion ... 159
Thevetia Nerifolia ... 156
Thistle ... ...1214 and 1225
Thorn Apple 310
Thorny Caper Brush ... 1242
Tin 716

Trailing Eclipta 432
Topaz 787
Tricosanthus Cucumerina... 912
Treacle Molasses 1085
Trichodesma Indicum ... 1226
Tricolaps Glaberrina ... 1213
Tooth Ache Tree 191
Turmeric 209
Turbithroot 392
Turquoise 795
Torn leaved Cargota ... 708
Two flowered Dolicus ... 842

U

Unaqua Sodium Chloride... 242
Uraria Lagopoides ... 274
Urine 1033

V

Veleriana Hardivicka ... 30
Veronia Cineria 1237
Vitis Quadrangularis ... 303
Vitis Pendaphylla... ... 1232
Vittex Speciosa 79
Vignonia 265

W

Walnut Belgaum Walnut 606
Water Melon 903
Water Caltrop 929
Water 960
White Basil 524
Winter Cherry 389
Wheat 817
White goose foot 863
White gourd 891
Wine 1097
Wolf Bane... 305
Wood fordia 202
Wood Apple 616
Worm Wood 528
W 212

Y

Yelow Resin 37

Z

Zinc Oxide 734
Zinc 720

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषण ।

सप्तमअष्टमभाग ।

नत्वा सिद्धिविनायकं च विविधा भाषाः समालोच्य ता
आयुर्वेदमहोदधिं विमलया बुद्ध्या विनिर्मथ्य वै ॥
शालिग्रामबुधेन केवलमिदं लोकोपकृत्यै कृतं
शालिग्रामनिघण्टुभूषणगतं सप्ताष्टमांशद्वयम् ॥ १ ॥

कर्पूरादिवर्गः ।

कर्पूरनामानि ।

ओषधीशश्च कर्पूरं सोमसंज्ञं सिताभ्रकम् ।
शिला हिमांशुः शीतांशुश्चंद्रभस्म निशापतिः ॥

अर्थ–ओषधीश, कर्पूर, सोमसंज्ञ, सिताभ्रक, शिला, हिमांशु, शीतांशु, चंद्रभस्म, निशापति, (तरुसार, भस्माह्वय, रेणुसार, हनु, हिमाह्वय, वेधक, रेणुसारक, शीतमरीचि, भस्मवेधक, विधु, शीतमयूख, घनसार, चन्द्रसंज्ञ, जैवातृक, ग्लौ, कुमुद्बान्धव, सिताभ्र, हिमवालुका, इन्दु, द्विजराज, नक्षत्रेश, निशीथिनीनाथ, यामिनीपति, शशधर, सोम. क्षपाकर, हिमाह्व, क्षपापति, सिताभ, शीत, घनसारक, शीतकर. शशाङ्क, हिमवालुक, हिमकर, शीतप्रभ, शाम्भव, शुभ्रांशु, स्फटिकाभ्र. कारमिहिका, ताराभ्र, चन्द्रार्द्रक, चंद्र, नाकतुषार, गौर, कुमुद, शीतलरज, सिताह्व, स्फटिक, शशि और हिमोपल) ॥

हिन्दीभाषामें	कपूर.
बंगभाषामें	कर्पूर.
महाराष्ट्रभाषामें	कापूर.
गुर्जरभाषामें	कपुर, कपूर.
कर्णाटकीभाषामें	कर्पूर.

तैलङ्गीभाषामें	कर्पूरामु.	
अँग्रेजीभाषामें	केम्फर.	Camphor.
लैटिनभाषामें	केम्फोरा.	Camphora.
फारसीभाषामें	कापूर.	
अरबीभाषामें	काफूर कहते हैं.	

कर्पूरभेद।

पोतास, भीमसेन, सितकर, शङ्करावाससंज्ञ, पांशु, पिञ्ज, अब्दसार, हिमवालुक, जूतिका, तुषार, हिम, शीतल, पत्रिकाख्य यह १३ भेद हैं।

कर्पूरगुणाः।

स तिक्तः सुरभिः शीतः कर्पूरो लघुलेखनः।
तृष्णायां मुखशोषे च वैरस्ये चापि पूजितः॥ (सुश्रुत)

अर्थ-कर्पूर-कडुवा, सुगंधि, शीतल, हलका, लेखन तथा तृषा, मुखशोष और विरसताको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

कर्पूरः शीतलो वृष्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः।
सुरभिर्मधुरस्तिक्तः कफपित्तविषापहः॥
दाहतृष्णास्यवैरस्यमेदोदौर्गन्ध्यनाशनः।
आक्षेपशमनो निद्राजननो धर्मवर्द्धनः।
वेदनाहारकः कामशान्तिकृच्छुक्रमेहकृत्॥
कर्पूरो द्विविधः प्रोक्तःपक्वापक्वप्रभेदतः॥
पक्वात्कर्पूरतः प्राहुरपक्व गुणवत्तरम्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ- कपूर-शीतल, वीर्यजनक, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, हलका, सुगंधि, मधुर और कडुवा है तथा कफ, पित्त, विष, दाह, तृष्णा, मुखकी विरसता (स्वाद बिगड जाना), मेदरोग और दुर्गन्धिका नाश करेहै॥ पक्व और अपक्व इन भेदोंसे कपूर दो प्रकारका है। पक्व कपूरसे अपक्व (कच्चे) कपूरके अधिक गुण हैं॥

अपिच।

कर्पूरो मधुरस्तिक्तः शीतलः सुरभिर्लघुः।
नेत्र्यो लेखनकृद्वृष्यः कटुः प्रीतिकरो मृदुः॥

मदकारी च संप्रोक्तः कफदाहतृषापहः ।
रक्तपित्तं कण्ठरोगं नेत्ररोगं विषं तथा ॥
पित्तं च मुखवैरस्यं दौर्गन्ध्यमुदरं तथा ।
मूत्रकृच्छ्रं प्रमेहञ्च मलगन्धं च नाशयेत् ॥
स एव नूतनः स्निग्धस्तिक्तश्चोष्णश्च दाहकृत् ।
सोपि जीर्णो दाहशोषनाशनः परिकीर्त्तितः ॥
सोपि धौतो गुणैः श्रेष्ठः प्रोक्तो वैद्यैः पुरातनैः ॥
(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–गुण । कपूर-मधुर, कडुवा, शीतल, सुगन्धि, हलका, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, चरंपरा, प्रीतिकारक, मृदु और मद (नसा) करनेवाला है तथा कफ, दाह, पियास, रक्तपित्त, कण्ठरोग, नेत्ररोग, विष, पित्त, मुखकी विरसता, दुर्गंध, उदररोग, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और मलकी दुर्गंधको दूर करेहै. वही नवीन कपूर स्निग्ध, कडुवा, गरम और दाहजनक है । वही पुराना कपूर दाह और शोषनाशक है और धुलाहुआ कपूर गुणोंमें श्रेष्ठ है ॥

कपूरलक्षणम् ।

शिरो मध्यं तलं चेति कर्पूरस्त्रिविधः स्मृतः ।
शिरःस्तम्भाग्रजं मध्ये मध्यं पर्णतले तलम् ॥
भास्वद्विदर्शपुलकं शिरो जातं तु मध्यमम् ।
सामान्यपुलकं स्वच्छं तले चूर्णं तु गौरवम् ॥
स्तम्भगर्भस्थितं श्रेष्ठं स्तम्भबाह्ये च मध्यमः ।
स्वच्छमीषद्धरिद्राभं शुभं तन्मध्यजं स्मृतम् ॥
सदृढं शुभ्ररूक्षञ्च पुलकं बाह्यजं वदेत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–शिर, मध्य और तल इन भेदोंसे कपूर तीन प्रकारके हैं. स्तम्भके अग्रभागमें होनेवाला कर्पूरं शिरसंज्ञक है; मध्यमें होनेवाला मध्यम है और पत्तोंके तले होनेवाला तलसंज्ञक कहलाताहै. प्रकाशवान् निर्मल फूलाहुआ शिर है, सामान्य फूलाहुआ स्वच्छ

मध्यम है और तलेमें होनेवाला चूर्णस्वरूप भारी है. स्तम्भके गर्भमें स्थित कर्पूर श्रेष्ठ है, स्तम्भके बाहर होनेवाला मध्यम है, निर्मल और कुछ हलदीके रंगके सदृश रंगवाला श्रेष्ठ कपूर मध्यमें होनेवाला है; कडा, सपेद, रूक्ष और फूलाहुआ बाह्य कपूर कहलाता है ॥

अपिच ।

स्वच्छं भृङ्गारपत्रं लघुतरविशदं तोलनं सिक्तकं चेत्-
स्वादे शैत्यं सुहृद्यं बहलपरिमलामोदसौम्यत्वदायि ।
निःस्नेहं दार्ढ्यपत्रं शुभतरमिति चेद्राजयोग्यं प्रशस्तं
कर्पूरं चान्यथा चेद्बहुतरसमलस्फोटदायि व्रणाय ॥
(रा० नि०)

अर्थ-स्वच्छ भाँगरेके पत्तोंके समान, छोटे २ टुकडे बहुत हलके और तोलमें बहुत चढे, स्वादमें तिक्त हो, ठण्ढा, हृदयको प्रिय, जो अत्यन्त सुगन्धिका प्रवाह देनेवाला, तेलरहित, दृढ पत्रवाला ऐसा कपूर अत्यन्त उत्तम राजाओंके योग्य है। इससे दूसरे प्रकारका कपूर विशेष करके फोडे और घावको उत्पन्न करनेवाला है ॥

पोतास-भीमसेनी-वरास-कर्पूरगुणाः ।

पोताश्रयः स्वादु शीतो वृष्यस्तिक्तः कटुः स्मृतः ।
तृड्दाहरक्तपित्तानां कफस्य च विनाशकः ॥
त्रयोप्येते तु कर्पूराः पक्कापक्कविभेदतः ।
द्विप्रकारः स उद्दिष्टः पक्कोतिगुणदः स्मृतः ॥
(नि० र०)

अर्थ-(पोतास,भीमसेनी और वरास,कपूर,) स्वादिष्ठ, शीतल, शुक्रजनक, तिक्त, कटु तथा तृषा, दाह, रक्तपित्त और कफका नाश करेहै. यह तीनों कपूर पक्क और अपक्क इन भेदोंसे दो प्रकारके हैं. इनमें पक्क कपूर गुणोंमें अधिक है ॥

शङ्करावासकर्पूरगुणाः ।

ईशावासश्च कर्पूरो भेदीवृष्यो मदापहः ।
अतिशुभ्रोन्मादतृषाश्रमकासक्रमिक्षयान् ।
स्वेदं चैवांगदाहञ्च नाशयेदिति कीर्त्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-शंकरावास कपूर-दस्तावर, वृष्य, मदनाशक और अत्यन्त शुभ्र है तथा उन्माद, पियास, श्रम, खाँसी, कृमि, क्षईरोग, पसीना और अंगके दाहको दूर करेहै ॥

हिमकर्पूरगुणाः ।

हिमकर्पूरकः शुभ्रो वृष्यः शीतो रसे कटुः ।
तृड्दाहमोहस्वेदानां नाशकः परमो मतः॥ (नि० र०)

अर्थ-हिमकपूर-शुभ्र, वीर्यजनक, शीतल, रसमें चरपरा, तथा तृषा, दाह, मोह और पसीनेको दूर करेहै ॥

कर्पूरोदयभास्करो निगदितः पीतः सरः स्वच्छकः
स प्रोक्तः कठिनः कटुः समुदितः स्याद्दीपकोग्नेर्लघुः ॥
श्रीदः पित्तकरः कफक्रिमिविषान्वातश्च नासाश्रुतिं
लालास्रावगलग्रहौ च शमयेज्जिह्वाजडत्वापहः॥ (नि०र०)

उदयभास्करकर्पूरगुणाः ।

अर्थ-उदयभास्कर कपूर-(पक्क सदल निर्दल दोनों प्रकारका) पीत, दस्तावर, निर्मल, कठिन, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, हलका, लक्ष्मीदायक, पित्तकारक तथा कफ, कृमि, विष, वात, नाकसे पानी गिरना, मुखसे लार गिरनी, गलग्रह और जिह्वाकी जडता इनको दूर करेहै ।

पर्णकर्पूरगुणाः।

पर्णकर्पूरकस्तिक्तः शुद्ध्युन्मादकरो मतः ।
मूत्रकृत्पीनसं दाहं नाशयेदिति कीर्त्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-पानकपूर-कडवा, शोधक, उन्माद करनेवाला तथा मूत्ररोग, पीनस और दाहनिवारक है ॥

चीनकर्पूरनामानि ।

चीनकश्चीनकर्पूरः कृत्रिमो धवलः कटुः ।
मेघसारस्तुषारश्च द्वीपकर्पूरजः स्मृतः ॥

अर्थ-चीनक चीनकपूर, कृत्रिम, धवल, कटु, मेघसार, तुषार, द्वीपकर्पूरज ॥

चीनकर्पूरगुणाः ।

चीनकः कटुतिक्तोष्ण ईषच्छीतः कफापहः ।
कण्ठदोषहरो मेध्यः पाचनः कृमिनाशनः॥ (रा०नि०)

अर्थ–चीनियाकपूर–चरपरा, कडवा, गरम, किंचित् शीतल कफनाशक, कंठरोगनिवारक, मेधाजनक, पाचक और कृमिनाशक है

अपिच।

चीनाकसंज्ञः कर्पूरः कफक्षयकरः स्मृतः ।
कुष्ठकण्डूवमिहरस्तथा तिक्तरसश्च सः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–चीनियाकपूर कफ, कोढ, कण्डू और वमनको हरनेवाला है तथा तिक्तरसान्वित है ॥

विवरण।

कपूरके वृक्ष चीन और जापानदेशमें होतेहैं, यह वृक्ष तजकी जातिमेंही गिनेजाते हैं। इनकी शाखाओंकी छाल ऊपरसे खरदरी और भीतरसे चिकनी होतीहै, इस वृक्षके ऊपर मोर आताहै, फल मटरकी समान होतेहैं फलके बीजोंमें कपूरकी समान सुगंधी आतीहै और इस वृक्षकी छाल गोदनेसे दूध निकलताहै उस दूधका कपूर बनताहै। कपूरकी अनेक जाति हैं, जैसे भीमसेनी, पिञ्ज, पोतास, हिम, सित, पांशु, शङ्करावाससंज्ञ, अब्दसार, जूतिका, तुषार, पत्रिकारूप, शीतल और पर्णकपूर इत्यादि। दूसरे चिनिया कपूर और कृत्रिम कपूर होतेहैं उत्तम कर्पूर केलेके अन्दरसे निकलता है, कपुर के वृक्ष भारतमेंभी बहुत हैं केलेके पेडसे कपूरके पेडसे, वरासवृक्षसे, कपूरलतासे ऐसे कइ जातिके पेडोंसे कपूर बनता और निकलता है।

कस्तूरीनामानि ।

गन्धधूलिश्च कस्तूरी मदाह्वा मृगनाभिजा ।
कस्तूरिकाण्डजा नाभिर्मिश्रा योजनगन्धिका ॥
(रा० नि०)

अर्थ–गन्धधूलि, कस्तूरी, मदाह्वा, मृगनाभिजा, कस्तूरिका, अण्डजा, नाभि, मिश्रा, योजनगन्धिका, (गन्धशेखर, मृगनाभि, मृगमद, मृग, मृगी, नाभि, मदलता, योजनगन्धा, मार्ग, गन्धबोधिका, कालाङ्गी, धूपसञ्चारी, गन्धपिशाचिका, वातामोद, मदनी, गन्धकेलिका, वेधमुख्या, मार्जारी, सुभगा, बहुगन्धदा, सहस्रवेधी, श्यामा, कामान्धा, मृगाण्डजा, कुरङ्गनाभि, ललिता, श्यामला, मोदिनीसहस्रभित्) ॥

हिन्दीभाषामें	कस्तूरी.	
बङ्गभाषामें	मृगनाभी.	
महाराष्ट्रभाषामें	कस्तूरी.	
गुर्जरभाषामें	कस्तूरी.	
कर्णाटकीभाषामें	कस्तूरी.	
तैलङ्गभाषामें	कास्तूरी.	
अँग्रेजीभाषामें	मस्क.	Musk.
लैटिन्भाषामें	मोस्कस्	Moscus.
फारसीभाषामें	मुष्क.	
अरबीभाषामें	मिस्क.	

कस्तूरीभेदाः ।

कपिला पिङ्गला कृष्णा कस्तूरी त्रिविधा क्रमात् ।
नेपालिका च काश्मीरे कामरूपे च जायते॥ (रा० नि०)
कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा नैपाली मध्यमा भवेत् ।
काश्मीरदेशसम्भूताकस्तूरी ह्यधमा भवेत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ–कस्तूरी वर्णके भेदकरके तीनप्रकारकी है । जैसे कपिलवर्ण, पिङ्गलवर्ण और कृष्णवर्ण. तहां नेपालमें उत्पन्न होनेवाली कपिलवर्ण अर्थात् भूरेरंगकी होतीहै; काश्मीरमें उत्पन्न होनेवाली पिङ्गलवर्णकी होतीहै और कामरूदेशमें उत्पन्न होनेवाली काले रंगकी होतीहै; किन्तु भावमिश्रने नेपालदेशकी कस्तूरी नीले रंगकी और काश्मीरकी कपिलरंगकी लिखी है । कामरूदेशमें उत्पन्न होनेवाली श्रेष्ठ है, नेपालदेशमें उत्पन्न होनेवाली मध्यम है और काश्मीरमें उत्पन्न होनेवाली कस्तूरी अधम होती है ॥

कस्तूरीपञ्चभेदाः ।

साप्येका खरिका ततश्च तिलका ज्ञेया कुलित्थापरा
पिंडान्यापि च नायिकेति च परा या पंचभेदाभिधा ॥
(रां० नि०)

अर्थ–खरिका, तिलका, कुलित्था, पिण्डा और नायिका इस भांति पांच प्रकारकी कस्तूरी है:॥

चूर्णाकृतिस्तु खरिका तिलका तिलाभा
कौलित्थबीजसदृशा च कुलत्थका च ।
स्थूला ततः कियदियं किल पिण्डकाख्या
तस्याश्च किंचिदधिका यदि नायिकाख्या ॥

(रा० नि०)

अर्थ-चूर्णके सदृश खरिका, तिलके सदृश तिलका, कुलथीके बीजोंके समान कुलथा; कुलथाकस्तूरीसे कुछ मोटी पिण्डिका और पिण्डिकासे किंचित् अधिक स्थूल नायिका कस्तूरी होती है ॥

कस्तूरीपरीक्षा ।

स्वादे तिक्ता पिञ्जरा केतकीनां गन्धं धत्ते लाघवं तोलनेन ।
याप्सुन्यस्तानैववैवर्ण्यमीयात्कस्तूरीसाराजभोग्याप्रशस्ता ॥

(रा० नि०)

अर्थ-स्वादमें कडवी, पीतवर्ण, केतकीके फूलकी समान सुगंधिवाली, तोलमें हलकी और पानीमें गेरनेसे जिसका रंग न बदले, वह कस्तूरी राजाओंके सेवने योग्य है ॥

अपिच ।

या गन्धं केतकीनां हरति परिमलैर्वर्णतः पिञ्जराभा
स्वादे तिक्ता कटुर्वा लघुरथतुलितामर्दिताचिक्कणास्यात् ॥
दाहं या नैति वह्नौ चिमिचिमिकुरुते चर्मगन्धा हुताशे
सा कस्तूरी प्रशस्ता वरमृगतनुजा राजते राजभोग्या ॥

(रा० नि०)

अर्थ-जो केतकीके फूलकी सदृश गन्धवाली हो, रंगमें हाथियोंके मदको हरै, स्वादमें कडवी तथा चरपरी हो, तोलमें हलकी, मलनेसे चिकनी होजाय, आगमें डालनेसे नहीं जलै, परन्तु बहुत कालतक चिमचिम शब्द करै और चमडा चलनेके समान गध आवे, वो मृगके तनसे उत्पन्न हुई कस्तूरी राजाओंके भोगने योग्य है ॥

कस्तूरिकागन्धभेदलक्षणम् ।

बाले जरति च हरिणे क्षीणे रोगिणि च मंदगन्धयुता ।

कामातुरे च तरुणे कस्तूरी बहलपरिमला भवति ॥
(रा० नि०)

दुष्टकस्तूरीलक्षणानि ।

या स्निग्धा धूमगंधा वहति विनिहिता पीततां या वस्त्रांत-
र्निःशेषं या निविष्टा भवतिहुतवहे भस्मसादेव सद्यः ।
या च न्यस्ता तुलायां कलयति गुरुतां मर्दिता रूक्षणं च
ज्ञेया कस्तूरिकेयं खलकृतमतिभिः कृत्रिमा नैव सेव्या ॥
(रा० नि०

अपिच ।

शुद्धो वा मलिनोस्तु वा मृगमदः किं जातमेतावता
कोप्यस्याऽनवधिश्चमत्कृतिनिधिः सौरभ्य एको गुणः ।
येनासौ स्मरमण्डनैकवसतिर्भाले कपोले गले
दोर्मूले कुचमण्डले च कुरुते संगं कुरङ्गीदृशाम् ॥
(रा० नि०)

दुष्टकस्तूरीपरीक्षा ।

करतलजलमध्ये स्थापनीया महद्भिः
पुनरपि तदवस्थं चिंतनीयं मुहूर्त्तम् ।
यदि भवति च रक्तं तज्जलं पीतवर्णं
न भवति मृगनाभिः कृत्रिमोऽयं विकारः ॥(का०)

अर्थ-बालक, वृद्ध, क्षीण और रोगी मृगकी कस्तूरी मंद गंधवाली होतीहै । कामातुर और तरुण मृगकी कस्तूरी बहुत उज्ज्वल और अत्यन्त सुगंधिवाली होतीहै । जो कस्तूरी छूनेमें चिकनी हो और धुयेंकेसी गंध आवै, वस्त्रमें रखनेसे वस्त्र पीतवर्ण होजाय, आगमें रखतेही तत्काल भस्म होजाय, तराजूमें रक्खी हुई भारी हो, अर्थात् कम चढै और मलनेसे रूखी होजाय, उस कस्तूरीको बनावटी समझकर सेवन करना नहीं चाहिये. शुद्ध व मलिन जातिका कस्तूरी नपुंसक मृग और मृगीकी होतीहैं, इसके अतिरिक्त और कोई दूसरीकी पहिचान नहीं. इसमें केवल एक सुगंधही बडा

चमत्कृत गुण है। जो कि यह कामका शृंगार मस्तक, कपोल कण्ठ, भुजा और कुचमण्डलमें स्त्रियोंके लगाई जातीहै, हथेलीमें जल रखकर एक मुहूर्त्तमात्रतक उसमें कस्तूरी पडी रहनेदे यदि उसका जल लाल व पीला होजाय तो वोह कस्तूरी असल नहीं है कृत्रिम अर्थात् बनावटी विकार है ॥

कस्तूरीगुणाः।

कस्तूरी छर्दिदौर्गन्ध्यरक्तपित्तकफापहा ॥ (रा० व०)

अर्थ--कस्तूरी--छर्दि, दुर्गन्ध, रक्तपित्त और कफरोगकी नाशक है॥

अपिच।

कस्तूरिका कटुस्तिक्ता क्षारोष्णा शुक्रला गुरुः।
कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गन्ध्यशोषहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कस्तूरी-चरपरी, कडवी, खारयुक्त, गरम, शुक्रकारक, भारी तथा कफ, वात, विष, छर्दि, शीत, दुर्गन्धता और शोषनाशक है॥

अन्यच्च।

कस्तूरिका तु चक्षुष्या कट्वी तिक्ता सुगंधिका।
उष्णा शुक्रप्रदा गुर्वी वृष्या क्षारा रसायनी ॥
किलासकुष्ठमुखरुक्कफदौर्गन्ध्यनाशिनी।
अलक्ष्मीमलवाततृट्छर्दिशोषविषापहा ॥
शीतघ्ना कासरोगघ्ना नाशयेदिति कीर्तिता ॥ (नि० रत्ना०)

अर्थ-कस्तूरी-नेत्रोंको हितकारी, चरपरी, कडवी, सुगंधित, गरम, शुक्रजनक, भारी, वृष्य, क्षार, रसायन तथा किलास, कोढ, मुखरोग, कफ, दुर्गन्ध, अलक्ष्मी, मल, वात, तृषा, छर्दि शोष, विष, खांसी और शीतका नाश करेहै ॥

विवरण। कस्तूरी हिरनकी नाभिमें होती है. उस हिरनको मारकर उसकी नाभिको काट लेते हैं, उसको कस्तूरीका नाभा कहते हैं. वह नाभा तोलमें तीन ३ तथा चार ४ तोलका होताहै और उसका आकार गोल होताहै उसके ऊपर छोटे छोटे बाल होते हैं. रंग भूरा होताहै, एक ओरसे कटेहुएका चिह्न होताहै. देखनेमें आडूकी बराबर होताहै, उस नाभेको चीरकर कस्तूरी निकालते हैं. किसीमें मक्काके चूनकी समान निकलतीहै, किसीमें तिलके समान निकलती है. किसीमें कुलथीके बीजके समान निकलतीहै. किसीमें

मटरके दानेके समान निकलतीहै, जिन हिरनोंकी नाभिसे कस्तूरी निकलती है, वह हिरन काश्मीर नेपाल ओर कामरूदेशमें होतेहैं ।

गंधमार्जारवीर्य (जवादिकस्तूरी अर्थात् गौरासार व वेदअंजीर)

माजारी वान्तिमाद्यन्ते चक्षुष्या कफवातजित् ॥

(मदनपालनि०)

अर्थ–गंधमार्जारवीर्य-वान्तिको उत्पन्न करे है, नेत्रोंको हितकारी है और कफ वातको जीतेहै ॥

अपिच ।

गन्धमार्जारवीर्यं तु वीर्यकृत्कफवातहृत् ।
कण्डूकुष्ठहरं नेत्र्यं सुगन्धिस्वेदगंधनुत् ॥

(भा० प्र०)

अर्थ–गंधमार्जारवीर्य–वीर्यको उत्पन्न करेहै, कफवातनाशक तथा कण्डू और कोढको दूर करेहै; नेत्रोंको हितकारी, सुगंधित और पसीनेकी वासको हरह ॥

अन्यच्च ।

ओतूद्भवा कस्तुरिका चक्षुष्योष्णा सुखावहा ॥
सुगंधिका च सुस्निग्धा वाते शस्ता च वान्तिदा ॥
शुक्रवृद्धिकरी वृष्या अङ्गकांतिकरी मता ॥
कण्डूकिटिभकुष्ठञ्च घर्मं गंधं विषं तथा ॥
कण्ठरोगञ्च कुष्ठञ्च नाशयेदिति कीर्तिता ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–गन्धमार्जारवीर्य–नेत्रोंको हितकारी, गरम, सुखजनक, सुगन्धित, वात रोगमें हितकारी, वान्तिदायक, वीर्यवर्धक, वृष्य, शरीरकी कान्ति बढानेवाली, तथा कण्डू, किटिभ, कुष्ठ, पसीना, दुर्गंध, विष, कण्ठरोग और कोढ़का नाश करनेवाली है ।

लताकस्तूरीगुणाः ।

लता कस्तूरिका स्वादुर्वृष्या शीता लघुः स्मृता ॥
नेत्र्या तिक्ता छेदनी च तीक्ष्णा वस्तिविशोधिनी ॥
वस्तिरोगं कफंतृष्णां मुखरोगञ्च नाशयेत् ।

लालास्रावं वमिं वातं दौर्गंध्यं च मदं जयेत् ॥
अलक्ष्मीनाशिनीप्रोक्ताभवेद्देशेचदक्षिणे ॥ नि० र०)

अर्थ-लताकस्तूरी (मुष्कदाना) स्वादिष्ठ, वीर्यजनक, शीतल, हलकी, नेत्रोको हितकारी, कडवी, छेदक, तीक्ष्ण, बस्तिशुद्धि करनेवाली तथा वस्तिरोग, कफ, तृषा, मुखरोग, लालास्राव, वान्ति, वात, दुर्गंध, मद और अलक्ष्मीका नाश करनेवाली है ॥

अपिच।

लता कस्तूरिका तिक्ता हृद्या शीतास्यरोगनुत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-लताकस्तूरी-(मुष्कदाना) कडवी, हृदयको हितकारी, शीतल और मुखरोगनाशक है ॥

विवरण। लताकस्तूरीकी बेल दक्षिणदेशमें होतीहै, ऐसा निघण्टुरत्नाकरमें लिखा है। किन्तु कहीं देखनेमें नहीं आती, संस्कृतमें लताकस्तूरी और दक्षिणदेशजा कहते हैं। हिंदी भाषामें लताकस्तूरी और मुष्कदाना कहते हैं। वङ्ग, गुर्जर, महाराष्ट्र, कर्णाटकादि देशोंमें लताकस्तूरीही नामसे प्रसिद्ध है। तैलङ्ग देशमें तक्कोल कळमु कहतेहैं। तामिलदेशमें कठेकस्तूरी कहते हैं। द्राविडदेशमें कस्तूरवेण्ड कहते हैं।

व्यवहार-बीज मात्रा सात मासेकी।

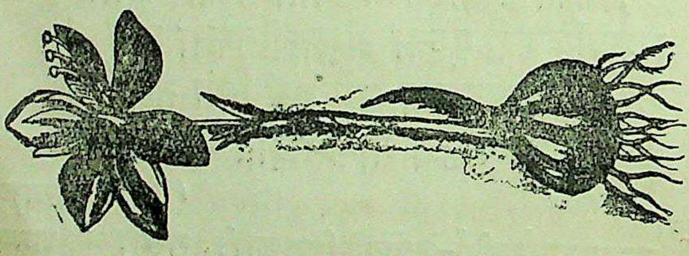

कुंकुमनामानि।

काश्मीरजं कुङ्कुमञ्च बाह्लिकं शोणिताह्वयम् ॥
कुसुमात्मकसंकोचं पीतनं रक्तचंदनम् ॥ (केचित्)

अर्थ-काश्मीरज, कुंकुम, बाह्लीक, शोणिताह्वय, कुसुमात्मक, सङ्कोच, पीतन, रक्तचन्दन, (पीतक, घस्र, रक्तसंज्ञ, सङ्कोचपिशुन, हरिचंदन, खल, रज, दीपक, लोहित, सौभर, चन्दन, कश्मीरजन्म, अग्निशिख, वर, रक्त, पिशुन, वीर, लोहित, चंदन, चारु, कश्मीरजन्म, बाल्हीक, वरबाल्हीक, अग्निशेखर, असृक्, काश्मीर, रुचिर, शठ,

शोणित, घुसृण, वरेण्य, अरुण, कालेयक, जागुड, कान्त, वह्निशिख, केसर, गौर, केशर, धीर, अस्र, रुधिर) ॥

हिन्दीभाषामें	केसर.	
वङ्गभाषामें	कुङ्कुम-केशर.	
मराठीमें	केशर.	
गुजरातीमें	केसर.	
कर्णाटकीम	कुंकुम.	
तैलङ्गीमें	कुंकुमपुवु.	
अंग्रेजीमें	सेफ्रन्	Saffron.
लैटिनमें	क्रोकस्सेटिवस्	Crocussivut.
द्राविडीमें	कुंकुमपूव	Cracistimat
फारसीमें	लरकीमास.	
अरबीमें	जाफरान.	

कुंकुमभेदाः ।

काश्मीरदेशजक्षेत्रे कुंकुमं यद्भवेद्धि तत् ।
सूक्ष्मकेशरमारक्तं पद्मगन्धि तदुत्तमम् ॥
बाह्लीकदेशसञ्जातं कुंकुमं पाण्डुरं भवेत् ।
केतकीगन्धयुक्तं तन्मध्यमं सूक्ष्मकेशरम् ॥
कुंकुमं पारसीकेयं मधुगंधि तदीरितम् ।
ईषत्पाण्डुरवर्णं तदधमं स्थूलकेशरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-केशर तीन प्रकारकी है, काश्मीर देशमें उत्पन्न होनेवाली, बाल्हीक (बुखारा) देशमें उत्पन्न होनेबाली और पारस (ईरान) देशमें उत्पन्न होनेवाली । जो केशर काश्मीरके खतोंमें उत्पन्न होती है, वह सूक्ष्म केशरसे युक्त कुछेक ललाई लिये और कमलकी सदृश सुगन्धियुक्त होतीह, यह सब केशरोंमें श्रेष्ठ है ॥ जो केशर बाल्हीक (बुखारा) देशमें उत्पन्न होतीह, वह पीली और केतकीके पुष्पकी समान सुगंधियुक्त होतीहै, और सूक्ष्मभी होतीहै यह मध्यम है ॥ जो केशर पारस (ईरान) देशमें उत्पन्न होतीहै, वह मधुकी गन्धयुक्त, कुछेक पीली और बडे केशवाली होतीहै, उसको अधम केशर जानना ।

कुङ्कुमलक्षणम् ।

अव्यक्तरक्तिमामोदि मर्द्दनात्कर्णिकात्मकम् ।
स्थिररागं करे लग्नं भग्नं कुङ्कुममुत्तमम् ॥
हीनमेवाग्निकाश्मीरं गरं पाण्डुरकेशरम् ॥ (द्रव्यचिह्न)

अर्थ-जिसमें अप्रगट लाली हो, और सुगंधवाली हो, तथा मलनेसे कर्णिकाकी समान हाथमें लगकर उसका रंग स्थिर रहे, वह केशर उत्तम है और जो केशर अग्निके रंगकी समान, विषयुक्त, पीले रंगकी केशरसे युक्त हो, वह हीन केशर समझनी ॥

कुङ्कुमगुणाः ।

कुङ्कुमं सुरभि तिक्तकटूष्णं कासवातकफकण्ठरुजाघ्नम् ।
मूर्द्धशूलविषदोषनाशनं रोचनं च तनुकांतिकारकम् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-केशर-सुगंधित, कडवी, चरपरी, गरम, रोचक, शरीरकी शोभा बढानेवाली, तथा कास, वात, कंठरोग, मस्तकपीडा और विषके विकारोंका नाश करे है ॥

अपिच ।

कुंकुमं कटुकं स्निग्धं शिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
तिक्तं वमिहरं वर्ण्यं व्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केशर-चरपरी है, स्निग्ध है, तथा शिरोरोग, व्रण और कृमिनाशक है, कडवी है, वमनको हरेहै, शरीरके रंगको सुन्दर करेहै, व्यङ्ग अर्थात् झांई और त्रिदोषका नाश करेहै ॥

अन्यच्च ।

कुंकुमं रेचकं प्रोक्तं कण्डूवैवर्ण्यनाशनम् ॥ (रा० दा०)

अर्थ-केशर-रेचक अर्थात् दस्त करानेवाली है, तथा खुजली और विवर्णताको दूर करे है ॥

अपिच ।

कुंकुमं कटुकं सिध्मशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
उष्णं हास्यकरं बल्यं व्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-केशर-चरपरी, गरम, हँसीको करनेवाली, बलको उत्पन्न करनेवाली तथा सिध्मरोग, शिरोरोग, व्रण, कृमि, व्यंग और त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कुंकुमं तीक्ष्णमुष्णञ्च प्रियं वर्ण्यसुगन्धिकम् ।
कटूष्णं कफवातघ्नं त्वग्दोषस्वेदपित्तजित् ॥ (केचित्)

अर्थ-केशर-तीक्ष्ण, गरम, प्रिय, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, चरपरी, कफवातनाशक, त्वचाके रोग, पसीना और पित्तको दूर करे है ॥

सूखीहुई सुगन्धियुक्त गर्म केशर, देशी वद्यक चिकित्साकी अपेक्षा ईरानी चिकित्सामें अधिक वर्त्तावमें आती है ।

तैलादि सुगन्ध और रंगके लिये अधिकतासे काममें लीजाती है । ईरान देशमें इसका व्यवहार अनेकप्रकारसे होताहै, आनन्दपूर्वक प्रसव करनेके लिये और प्रसवके उपरान्त जरायुकी पीडाके लिये ईरानदेशकी स्त्री केशरकी गोलियें अंचलमें बाँध रखतीहैं ।

होमियोपैथिकके मतसे रजसंबंधीय रोगोंमें इसका प्रयोग देखा जाता है ।

मात्रा चार रत्तीकी ।

तृणकुङ्कुमनामानि ।

तृणकुंकुमं तृणास्रं गन्धितृणं शोणितञ्च तृणपुष्पम् ।
गन्धाधिकं तृणोत्थं तृणगौरं लोहितञ्च नवसंज्ञम् ॥

अर्थ- तृणकुंकुम, तृणास्त्र, गन्धितृण, शोणित, तृणपुष्प, गन्धाधिक, तृणोत्थ, तृणगौर और लोहित ॥

अस्य गुणाः ।

तृणकुंकुमं कटूष्णं कफमारुतशोफनुत् ।
कण्डूतिपामाकुष्ठामदोषघ्नं भास्करं परम्॥ (राजनिघण्टुः)

अर्थ-तृणकेशर-चरपरी, गरम, तथा कफ, वात, सूजन, कण्डू, पामा, कोढ और आमको दूर करैहै और दीप्ति करैहै ॥

चन्दननामानि ।

श्रीखंडं चन्द्रकान्तञ्च गोशीर्षं भोगिवल्लभम् ।
भद्रसारं मलयजं गन्धसारञ्च चन्दनम् ॥

अर्थ-श्रीखण्ड, चन्द्रकान्त, गोशीर्ष, भोगिवल्लभ, भद्रसार, मलयज, गन्धसार, चन्दन, (भद्रश्री, एकांग, पटीर, वर्णक, भद्राश्रय, सेव्य, रौहिण, ग्राम्य, सर्पेष्ट, पीतसार, महार्ह, श्वेतचन्दन, तिलपर्ण, मंगल्य, मलयोद्भव, गन्धराज, सुगन्ध, सर्पावास, शीतल, गन्धाढ्य, पावन, शीतगन्ध, तैलपर्णिक, चन्द्रद्युति, भद्रश्रिय, सिताहिम, सर्वप्रिय, राजयोग्य) ॥

(क)

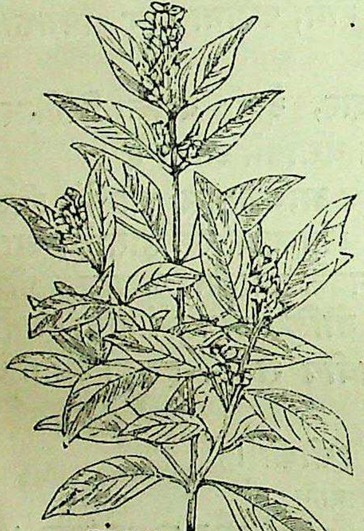

चंदन

(ख)

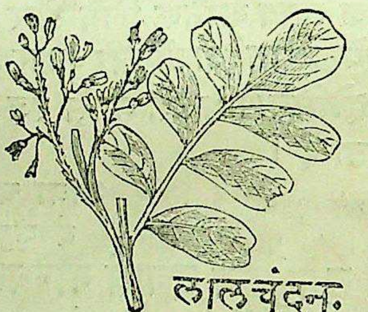

लालचंदन.

हिन्दीभाषामें द्राविडमें	चंदन.	
बंगला-मराठी-तैलङ्गीमें	चन्दन.	
कर्णाटकीभाषामें	गन्ध.	
गुजरातीभाषामें	सुखड.	
अँग्रेजीभाषामें	सेंडल वुड्	Sandal wood
लेटिन्भाषामें	सेन्टेलम्-आलबम	Santalum album
फारसीभाषामें	संदल सुफेद.	
अरबीभाषामें	संदले अबीयद	

चन्दनलक्षणम् ।

स्वादे तिक्तं कषे पीतं छेदे रक्तं तनौ सितम् ।
ग्रंथिकोटरसंयुक्तं चन्दनं श्रेष्ठमुच्यते॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-स्वादमें कडवा हो, घिसनेमें पीला हो, तोडनेमें लाल हो, देखनेमें श्वेत हो, और गांठ तथा कोटर करके संयुक्त हो, ऐसा चन्दन श्रेष्ठ होता है ॥

चन्दनगुणाः ।

चन्दनं शीतलं रूक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु ।
हृद्यं वर्ण्यं विषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहजित् ॥

(मदनपालनिघण्टु)

अर्थ-चंदन-शीतल, रूक्ष, कडुवा, आनन्दजनक, हलका, हृदयको हितकारी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा विष, कफ, तृषा, पित्तरक्त और दाहको दूर करे है ॥

अपिच ।

श्रीखण्डोयं द्वितीयः स्यादतिशीतश्च तिक्तकः ।
दाहपित्तज्वरच्छर्दिमोहतृष्णाविनाशनः ॥
रक्तरुङ्मूत्रकृच्छ्रघ्नःकासांश्चैव विनाशयेत् ॥

(गणनिघण्टु)

अर्थ--दूसरे प्रकारका श्रीखण्ड चंदन-अत्यन्तशीतल, कडुवा, तथा दाह, पित्त, ज्वर, छर्दि, मोह और तृषाको दूर करेहै ॥ तथा रक्तरोग, मूत्रकृच्छ्र और खांसीका विनाश करेहै ॥

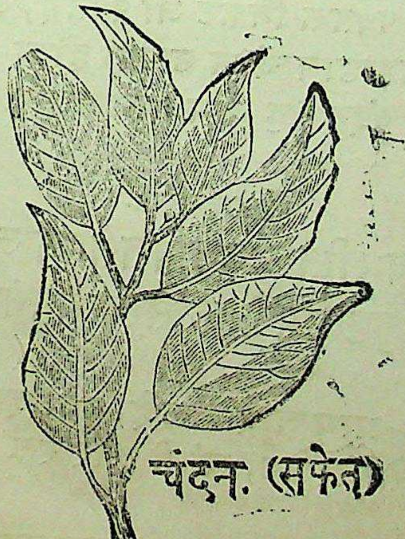

चंदन (सफेद)

अन्यच्च ।

श्रीखण्डः कटुकस्तिक्तो वृष्यः शीतकषायकः ।
कान्तिकृत्कामजनको हृद्यश्च सुरभिर्मतः ॥
आह्लादनो लघू रूक्षः पित्तभ्रान्तिज्वरापहः ।
छर्दितृट्कृमिसन्तापदाहश्रमविनाशनः ॥
मुखरोगंरक्तदोषंशोषश्चैव विनाशयेत्॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ--श्रीखण्ड चंदन-चरपरा, कड़वा, वीर्यजनक, शीतल, कषेला, कान्तिदायक, कामको उत्पन्न करनेवाला, हृदयको हितकारी, सुगन्धि, आल्हादजनक, हलका, रूखा तथा पित्त, भ्रम, ज्वर, वान्ति पियास, कृमि, सन्ताप, दाह, श्रम, मुखरोग, रुधिरविकार और शोषका नाश करे है ॥

चन्दनभेदाः ।

चन्दनं द्विविधं प्रोक्तं वेट्टसुक्कडिसंज्ञिकम् ।
वेट्टन्तु सार्द्रविस्फोटं स्वयं शुष्कंतु सुक्कडि ॥

अर्थ--चंदन, वेट्ट और सुक्कडि इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहां गीला और छिद्ररहित वेट्ट चंदन है और स्वयं शुष्क सुक्कडि है ।

मलयाद्रिसमीपस्थाः पर्वता वेट्टसंज्ञिकाः ।
तज्जातं चंदनं यत्तु वेट्टवाच्यं क्वचिन्मतम्॥ (नि० र०)

अर्थ--मलयाचल पर्वतके निकट जो पर्वत हैं, उनको वेट्ट कहते हैं उन वेट्ट नामवाले पहाडोंमें चंदन उत्पन्न होता है, इसी कारण किसीके मतसे वह चंदन वेट्ट नामवाला कहलाता है ।

(नि० र०)

वेट्टचन्दनगुणाः ।

वेट्टचंदनमतीव शीतलं दाहपित्तशमनं ज्वरापहम् ।
छर्दिमोहतृषिकुष्ठतैमिरोत्कासरक्तशमनं च तिक्तकम् ॥

(नि० र०)

अर्थ--वेट्ट चंदन--अत्यन्त शीतल है, तथा दाह, पित्त, ज्वर, वमन मोह, तृषा, कुष्ठ, तिमिररोग, खांसी और रक्त रोगको दूर करेहै, और कडवा है ।

सुक्कडिचन्दनगुणाः ।

सुक्कडिश्चंदनं तिक्तं कृच्छ्रपित्तास्रदाहनुत् ।
शैत्यं सुगंधिदं चार्द्रंशुष्कंलेपे तदन्यथा ॥ (नि० र०)

अर्थ--सुक्कडि चंदन--कडवा तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तरक्त और दाहको दूरकरै है शीतल और सुगंधिदायक है । यह गुण गीले चंदनके हैं और सूखे चंदनके गुण और प्रकारके हैं ।

शम्बरचन्दननामानि ।

कैरातं बहलं गन्धं बल्यं शम्बरचन्दनम् ॥

अर्थ-कैरात, बहलगन्ध, बल्य, शम्बर, चंदन, (गंधकाष्ठ, कैरातक शैलगन्ध) ।

शम्बरचन्दनगुणाः ।

कैरातकंशीतलतिक्तकंचश्लेष्मानिलघ्नंश्रमपित्तहारि ।
विस्फोटपामादिकनाशनंचतृषापहन्तापविमोहनाशनम् ॥
(रा० नि०)

अर्थ--शम्बरचंदन शीतल, कडवा, तथा कफ, वात, श्रम, पित्त, विस्फोटक, पामा, तृषा, ताप और मोहका नाश करे है ।

पीतचन्दननामानि ।

नारायणप्रियं पीतं पीताभं हरिचन्दनम्
कालीयकं पीतकाष्ठं जायकं कांतिदायकम् ॥

अर्थ--नारायणप्रिय, पीत, पीताभ, हरिचन्दन, कालीयक, पीतकाष्ठ, जायक, कान्तिदायक, (कालानुसार्य, जावक, कालेय, वर्णद, पीतगन्ध, पीतक, माधवप्रिय, कालेयक, कर्पूर, कालीय, हरिप्रिय, कालसार) हिं० कलम्बक, पीलाचन्दन । वं० कलम्बा । लैटिन्में० सेन्टेलम् प्लवं ।

अस्य गुणाः।

पीतश्च चंदनःशीतस्तिक्तःकांतिकरोमतः ।
विचर्चिकाकुष्ठकण्डूकफदद्रुविषापहः ॥ (नि० र०)

अर्थ-पीलाचंदन--शीतल, कडवा, कान्तिकारक तथा विचर्चिका कुष्ठ, कण्डू, कफ, दद्रु विष, रक्तपित्त, कृमि, व्यङ्ग, पित्त, तृषा, ज्वर और दाहको दूर करे है ।

रक्तचन्दननामानि।

ताम्राभंताम्रसारंचरञ्जनंरक्तचन्दनम् ।
रक्तसारंताम्रसारंरक्तबीजंकुचन्दनम् (नि० र०)

अर्थ--ताम्राभ, ताम्रसार, रञ्जन, रक्तचन्दन, रक्तसार, ताम्रसार, रक्तबीज, कुचन्दन, (क्षुद्रचन्दन, तिलपर्णी, पत्राङ्ग, कुमोद, रक्ताक्त, ताम्रवृक्ष, चंदन, लोहित, लोहितचन्दन, ताम्रसारक, रक्ताङ्ग, अर्क, तिलपर्णिका, पत्तङ्ग पत्रङ्ग, प्रवालफल, भास्करप्रिय, तिलपर्ण)

हिन्दीभाषामें	लालचंदन.
वंगभाषामें	रक्तचंदन,
मराठीभाषामें	रक्तचन्दन.
गुजरातीभाषामें	रतांजली.
कर्णाटीभाषामें	रक्तचन्दन.
तैलङ्गीभाषामें	एर्रगन्धपुचेक्क--रक्तचन्दनम्
तामिलीभाषामें	सेन् शाण्डनम्
अँग्रेजीभाषामें	रेडसेंडलवुड् Redsandal wood
लैटिनभाषामें	टेरकार्पससेन्टेलम् Teracarpus Santalum
फारसीभाषामें	संदले सुर्ख.
अरबीभाषामें	संदले अहमर.

अस्यगुणाः।

रक्तचन्दनमतीवशीतलंतिक्तलक्षणगदास्रदोषनुत् ।
वातपित्तकफकाससंज्वरभ्रांतिजंतुवमथुतृषापहम्॥ (रा० नि०)

अर्थ--लालचन्दन--अत्यन्त शीतल, कडवा, रक्तरोगनाशक, वात, पित्त, कफ, कासज्वर, भ्रान्ति कृमि, वमन और तृषाको शान्त करैहै ।

अपिच ।

रक्तपित्तहरंबल्यंचक्षुष्यंरक्तचन्दनम् (राजनिघण्टु)

अर्थ--लालचन्दन--रक्तपित्तनाशक, बलकारक और नेत्रोंको हितकारी है ।

अन्यच्च।

रक्तंशीतंगुरुस्वादुच्छर्दितृष्णास्रपित्तहृत् ।
तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--लाल चंदन--शीतल, भारी, स्वादिष्ठ, रक्तपित्तनाशक, वमन निश्शारक, तृष्णाको शान्त करनेवाला, कडवा नेत्रोंको, हितकारी वीर्यजनक तथा ज्वर, व्रण और विषको दूर करे है ।

पतङ्गनामानि ।

पतङ्गं रक्तसारश्च सुरङ्गं रञ्जनं तथा ।
पट्टरञ्जकमाख्यातं पत्तूरश्च कुचन्दनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पतङ्ग, रक्तसार, सुरङ्ग, रञ्जन, पट्टरञ्जक, पत्तूर, कुचन्दन (पत्राङ्ग, रक्तकाष्ठ, सुरंगद, पत्राण्य, पट्टरंग, भार्यावृक्ष, रक्तक, लोहितरंगकाष्ठ, रोगकाष्ठ, पट्टरञ्जनक)

हिन्दी, कर्णाटकी, गुजराती, मराठी,-	पतंग, पतंगवृक्ष ।
बंगला-	बकम् काष्ठ ।
तैलंगीमें-	औकनु कट्टु ।
तामिलीमें-	वट्टंगी ।
इंग्रेजीमें-	सेप्पनवुड । Sappan wood
लैटिन्में-	सिसालपिनियासेप्पन् । Coesalpinia Sappan
फारसी--अरबीमें--	बकम् ।

पतङ्गगुणाः ।

पत्राङ्गं कटुकं रूक्षं माल्लं शीतं तु गौल्यकम् ।
वातपित्तज्वरघ्नं च विस्फोटोन्मादभूतहृत् ॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-पतंग-चरपरा, रूखा, खट्टा, शीतल, गौल्य, तथा वात, पित्त, ज्वर, विस्फोटक, उन्माद और भूतनाशक है ॥

अपिच ।

पत्राङ्गस्तिक्तकः शीतो रूक्षोम्लो मधुरः कटुः ।
व्रणशुद्धिकरो वर्ण्यः सुगन्धिर्वातपित्तहृत् ॥
उन्मादज्वरविस्फोटमूत्रकृच्छ्रव्रणाञ्जयेत् ।
कफाश्मरीरक्तदोषभूतबाधानिवारणः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ--पतंग--कडवा, शीतल, रूक्ष, अम्ल, मधुर, चरपरा, व्रणशोधक, वर्णकारक, सुगन्धि, तथा वात, पित्त, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, कफ, पथरी, रुधिरविकार और भूतबाधाको दूर करे है ॥

अपिच।

हरिचन्दनवद्वेद्यं विशेषाद्दाहनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ--पतंगके गुण और पीले चन्दनके गुण समान जानने किन्तु विशेष करके दाहको दूर करे है।

बर्बरचन्दननामानि।

बर्बरोत्थं बर्बरकं श्वेतबर्बरकन्तथा।
शीतं सुगंधि पित्तारिः सुरभिश्चेति सप्तधा ॥

अर्थ--बर्बरोत्थ, बर्बरक, श्वेतबर्बरक, शीत, सुगन्धि, पित्तारि, सुरभि, (बर्बरोद्भव)

बर्बरगुणाः।

बर्बरं शीतलं तिक्तं कफमारुतपित्तजित्।
कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्ति विशेषाद्रक्तदोषजित्। (राजनिघण्टु)

अर्थ--बर्बरचन्दन--शीतल, कडवा, तथा कफ, वात, पित्त, कुष्ठ, कण्डू और व्रणनाशक है। विशेषकरके रुधिर विकारको दूर करेहै।

हरिचन्दननामानि।

हरिचन्दनं सुरार्हं हरिगन्धं चन्द्रचंदनं दिव्यम्।
दिविजं च महागन्धं नन्दनजं लोहितजं नवसंज्ञम् ॥

अर्थ-हरिचन्दन-सुरार्ह, हरिगन्ध, चन्द्रचन्दन, दिव्य, दिविज, महागन्ध, नन्दनज, लोहितज।

हरिचन्दनगुणाः।

हरिचन्दनं तु दिव्यं तिक्तहिमं तदिह दुर्लभं मनुजैः।
पित्ताटोपविलेपि चन्दनवच्छ्रमहरं च शोषहरम् ॥
(रा० नि०)

अर्थ--हरिचन्दन--दिव्य, कडवा, शीतल तथा पित्त, आटोप, श्रम [वमन, मन्दाग्नि, मेदोदोष] नाशक है ॥ और सामान्य चंदनकी समान, श्रम तथा शोषको दूर करे है। यह चन्दन मनुष्योंको मिलना दुर्लभ है।

चन्दनानि समानानि रसतो वीर्यतस्तथा।
भिद्यन्ते किन्तु गन्धेन तत्राद्यं गुणवत्तरम्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--सर्वप्रकारके चन्दन रस और वीर्यमें समान हैं । किन्तु आदिका अर्थात् श्रीखण्ड चन्दन सब चन्दनोंकी अपेक्षा सुगन्धिमें अधिक गुणवाला है.

विवरण--चन्दनकी अनेक जाति हैं. सफेतचंदन १ पीलाचन्दन २ शबरचन्दन ३ लालचन्दन ४ पतंगचन्दन ५ बर्बरचन्दन ६ और हरिचन्दन७इन सात जातिके चन्दनोंमें सफेद चन्दन सर्वोत्कृष्ट है ।

अगरुनामानि ।

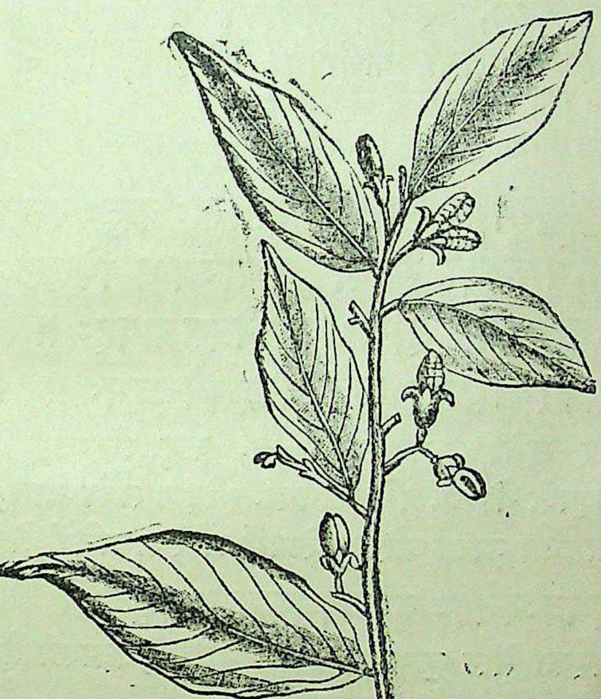

अगरु क्रिमिजं लोह राजार्हं वंशिकं लघु ।
लोहाख्यंजोङ्गकञ्चापिकृष्णंवर्णप्रसादनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगरु, कृमिज, लोह, राजार्ह, वंशिक, लघु, लोहाख्य, जोङ्गक, कृष्ण, वर्णप्रसादन, (कृमिज, अगरु, वंशक, पिच्छिल, भृङ्गज, पातक, अनार्यक, अनार्यज, असार, अग्निकाष्ठ, कृमिगन्ध, काष्ठक, प्रवर, योगज) हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तामिली इत्यादि सब भाषाओंमें "अगर" नामसेही प्रसिद्ध है।

तेलङ्गीभाषामें	हरुगुहचेट्टु ।	
इम्रजाभाषाम	इगलवुड ।	Eagle wood

लेटिन्भाषामें	एक्वीलेरिया । एगेलोका ।	Aquilaria
अरबीभाषामें	उदगरकी ।	Agallocha
फारसीभाषामें	कशववेवा ।	

अगुरुगुणाः ।

अगुरूष्णं कटु त्वच्यं तिक्तं तीक्ष्णं च पित्तलम् ।
लघुकर्णाक्षिरोगघ्नंशीतवातकफप्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगर-गरम, चरपरी, त्वचाको हितकारक, कडवी, तीक्ष्ण, पित्तजनक, हलकी तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, शीत, वात और कफनाशक है ।

अपिच ।

अगुरुस्तु सुगंधिः स्यादुष्णस्तिक्तः कटुः स्मृतः ।
स्निग्धो मंगलदो रुच्यो धूपयोग्यश्च पित्तलः ॥
तीक्ष्णो वातकफौ हन्ति कर्णनेत्ररुजापहः ॥
कुष्ठनाशकरः प्रोक्तो लेपे चोद्वर्त्तने शुभः ॥ (नि० र०)

अर्थ-अगर-सुगंधि, गरम, तिक्त, कटु, स्निग्ध, मंगलदायक, रुचिकारी, धूपके योग्य, पित्तजनक, तीक्ष्ण तथा वात, कफ, कर्णरोग और कोढका नाश करैहै । लेपमें और लगानेमें श्रेष्ठ है ।

अगरुप्रभवःस्नेहः कृष्णागरुसमः स्मृतः ।

अर्थ-अगरका तेल कृष्णागरुके समान गुणवाला है ।

कृष्णागरुनामानि ।

कृष्णागरु स्याद्वसुकं मंगल्यं विश्वरूपकम् ॥

अर्थ--कृष्णागरु--वसुक, मंगल्य, विश्वरूपक, (काकतुण्ड, अगरु शृङ्गारशीर्ष, कालागरु, केश्य, कृशाकाष्ठ, धूपार्ह, वल्लर, मिश्रवर्ण, गन्ध, राजार्ह, शीतमलिन, जोंगक, कृमिजग्ध और अलक्तक)

कृष्णागरुगुणाः ।

कृष्णागरु कटूष्णञ्च तिक्तं लेपे च शीतलम् ।
पानेपित्तहरंकैश्चित्त्रिदोषघ्नमुदाहृतम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--कालागरु-कटु, उष्ण, कडवी, लेपमें शीतल, पीनेमें पित्तनाशक और किसीके मतसे त्रिदोषनाशक है ।

काष्ठागरुगुणाः ।

काष्ठागरु कटुष्णञ्च लेपे रूक्षं कफापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-काष्ठागरु-चरपरी, गरम, लेपमें रूखी और कफनाशक है ।

दाहागरुनामानि ।

दाहागरु दहनागरु दाहककाष्ठञ्च वह्निकाष्ठञ्च ।
धूपागरु तैलागरु पुरञ्च पुरमथनवल्लभं चैव ॥

अर्थ-दाहागरु, दहनागरु, दाहककाष्ठ, वह्निकाष्ठ, धूपागरु, तैलागरु पुर और पुरमथनवल्लभ ।

दाहागरुगुणाः ।

दाहागरु कटुकोष्णं केशानां वर्द्धनञ्च वर्ण्यञ्च ।
अपनयति केशदोषानातनुतेसततञ्च सौगन्ध्यम् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-दाहागरु-चरपरी गरम, केशवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, केशोंके दोषोंको हरनेवाली और निरन्तर सुगंधिदायक है ।

मङ्गलागरुनामानि ।

मङ्गल्या मल्लिका गन्धमङ्गलागरुवाचका ॥

अर्थ--मङ्गल्या, मल्लिका, गन्धमङ्गला और जितन अगरके नाम हैं, सब इसके भी जानने ।

मङ्गलागरुगुणाः ।

मङ्गल्यागुरुशिशिरागन्धाढ्यायोगवाहिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--मङ्गलागरु--शीतल, गन्धवाली और योगवाही है ।

विवरण-आसामके पहाडी जंगल और प्रशांत सागरके टापुओंमें इसका वृक्ष होता है शाखा कभी साध उत्पन्न नहीं होती ।

अगर अनेक प्रकारकी होतीहै, उनमें काली अगरही उत्तम और वैद्यकमें कहीहुई औषधियोंके साथ व्यावहार कीजाती है, यह भारी होनेके कारण जलमें डूबजातीहै, और नरम ऐसी होतीहै कि दांतोंमें रखकर खानेसे चिपट जाती है, इसको पीसकर जलानेसे सुगन्धि निकलतीहै, काली अगरकी समान और अगरोंमें ऐसी सुगन्धि नहीं आती ॥

व्यवहार । इसका झांदरा अनेक प्रकारके तेलोंमें व्यवहार किया जाताहै और इसके वृक्षका गोंद वातरोगमें लेप करनेके लिये विलायतके मनुष्य काम में लातेहैं ।

देवदारुनामानि ।

सुरदारु द्रुकिलिमं भद्रदारु सुराह्वयम् ।
देवकाष्ठञ्च पित्तद्रुदेवदारु च भद्रवत् ॥

अर्थ-सुरदारु, द्रुकिलिम, भद्रदारु, सुराह्वय, देवकाष्ठ, पित्तद्रु, देवदारु, भद्रवत. (शतपादप, पारिभद्रक, पीतदारु, दारु, पूतिकाष्ठ, कल्पपादप, किलिम, अमरदारु, दारुक, स्निग्धदारु, शिवदारु, शम्भव, भूतहारि, भवदारु. शक्रद्रुम, इन्द्रवृक्ष, सुराह्वय, दारुभद्र इन्द्रदारु, मस्तदारु, सुरभूरुह, स्नेहवृक्ष, सुरद्रुम, सुरदारु और सुरकाष्ठ)

हिन्दीभाषामें	देवदारु ।
बङ्गभाषाम	देवदारु ।
मराठीभाषाम	तेल्यादेवदारु ।
गुजरातीभाषामें	देवदार ।
कर्णाटकीभाषामें	चोपडादेवदारु, काष्ठदेवदारु
तैलङ्गी भाषामें	देवदारुचेका
लैटिनभाषामें	सिड्रस्देवडा Cedrus Deodara
फारसीभाषामें	देवदार ।
इंग्रजीभाषामें	पाइन्सडीपोदर।

देवदारुगुणाः ।

देवदारु लघुस्निग्धं तिक्तोष्णं कटुपाकि च ।
विबन्धाध्मानशोथामतन्द्राहिक्काज्वरास्रजित् ॥
प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकण्डूसमीरनुत्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ--देवदारु-हलका, स्निग्ध, कडवा, गरम, पचनमें चरपरा, तथा विबन्ध, अफारा, शोथ, आम, तन्द्रा, हुचकी, ज्वर, रक्तविकार, प्रमेह, पीनस, कफ, खांसी कण्डू और वातनाश करनेवाला है ।

देवदारुभेदाः ।

देवदारु द्विधा ज्ञेयंतत्राद्यं स्निग्धदारुकम् ।
द्वितीयंकाष्ठदारुस्याद्द्वयोर्नामान्यभेदतः॥ (निरुक्तरत्नाकर)

अर्थ-देवदारु दो प्रकारका है पहिला स्निग्धदारु और दूसरा काष्ठदारु ।

स्निग्धदारुगुणाः ।

स्निग्धदारुः कटुः पाके स्निग्धोष्णस्तिक्तको लघुः ।

कफवातप्रमेहार्शोमलस्तम्भामदोषहा ॥
ज्वराध्मानश्वासकासशोथकण्डुविनाशकः ।
हिक्कातंद्रारक्तदोषंपीनसंचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ--स्निग्धदेवदारु-पचनेमें चरपरा, चिकना, गरम, कडवा, हलका तथा कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, मलस्तम्भ, आमदोष, ज्वर, अफारा, श्वास, खांसी, सूजन, खुजली, हिचकी, तन्द्रा, रुधिर विकार और पीनसको दूर करैहै ।

काष्ठदारुगुणाः ।

देवकाष्ठं मतं चोष्णं तिक्तं रूक्षं कफापहम् ।
वातं च भूतबाधां च लेपाद्व्यङ्गविनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ--काष्ठदारु-गरम, कडवा, रूखा, तथा कफ, वातरोग और भूतबाधाको दूर करैहै । इसका लेप करनेसे व्यंग (झाईं) दोष दूर होताहै ।

विवरणः-बडा वृक्ष होताहै, इसकी दो जाति हैं एकमें तैलके समान चिकनाईसी होतीहै, दूसरेमें रूखापन होताहै ॥ (व्यवहारपंचांग) दोनों प्रकारके देवदारु शिमला पहाड पर होते हैं कैलों और कैल नामसे प्रसिद्ध हैं ।

चीडानामानि ।

चीडा च दारुगन्धा गन्धवधूर्गंधमादिनी तरुणी ।
तारा च भूतमारी मङ्गल्याख्या कपाटिनी ग्रहजित् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-चीडा-दारुगन्धा, गन्धवधू, गन्धमादनी, तरुणी, तारा, भूतमारी, मङ्गल्या, कपाटिनी, ग्रहजित् ।

चीडागुणाः ।

चीडा कटूष्णा कासघ्नी कफजिद्दीपनी परा ।
अत्यन्तंसेवितासा तु पित्तदोषश्रमापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-चीड-गरम, कासनाशक, चरपरी, कफको दूर करे, अग्निको दीपन करे, इसका अत्यन्त सेवन करनेसे पित्त और श्रम दूर होता है। चीढ (चील्ह) के वृक्ष कसौली पहाड पर बहुत हैं चील्ह नामसे प्रसिद्ध हैं इसका गोंद विरोजा होता है इस विरोजेकाही तारवीन तेल होताहै ॥

सरलनामानि ।

सरलः पूतिकाष्ठश्च मनोज्ञो धूपवृक्षकः ।

अर्थ-सरल, पूतिकाष्ठ, मनोज्ञ, धूपवृक्षक, (पीतद्रु, धूपवृक्षक, पीतदारु, भद्रदारु, धूपवृक्ष, पीत, स्निग्धदारुसंज्ञक, स्निग्ध, मरिचपत्रक, पीतवृक्ष (सुरभिदारुक)

हिन्दीभाषामें	धूपसरल ।	
वङ्गभाषामें	सरलगाछ, सरलकाष्ठ ।	
कर्णाटकीभाषामें	सरलीदेवदारुविशेष ।	
तैलङ्गीभाषामें	सरलदेवदारि चेट्टु ।	
तामिलभाषामें	सरलदेवदारी ।	
गुजरातीभाषामें	सरलदेवदार ।	
मराठीभाषामें	सरलदेवदार ।	
इंग्रेजीभाषामें	लौंग लीवड् पाईन ।	Long leaued pine
लैटिनभाषामें	पाईनस्-लोंगि फोलिया ।	Pinus longifolia

सरलगुणाः ।

सरलो मधुरस्तिक्तः कटुपाकरसो लघुः ।
स्निग्धोष्णः कर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरः स्मृतः ॥
कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरल-मधुर, तिक्त, पाक और रसमें कटु, हलका, स्निग्ध, उष्ण तथा कर्णरोग, कण्ठरोग, नेत्ररोग, कफ वात, पसीना, दाह, कास, मूर्च्छा और व्रणको दूर करेहै ।

अपिच ।

सरलः कटुतिक्तोष्णःक फवातविनाशनः ।
त्वग्दोषशोफकण्डूतिव्रणघ्नः कोष्ठशुद्धिदः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सरल-चरपरा, कडवा, गरम, कफ वात नाशक, तथा त्वचाके रोग, सूजन, कण्डू और व्रणका नाश करेहै । और कोठको शुद्ध करेहै ।

अन्यच्च ।

सरलः कटुतिक्तोष्णो रूक्षः श्लेष्मानिलापहः ।
भूतदोषापहो रक्तो लिप्तोङ्गेषु सुकांतिदः ॥ (क्वचित्)

अर्थ-सरल-चरपरा, कडवा, गरम, रूक्ष तथा कफ, वात भूतबाधा और रक्तविकारको दूर करेहै । इसका शरीरमें लेप करनेसे कान्ति बढतीहै ।

अपिच ।

सरलो मधुरस्तिक्तो रसे पाके कटुर्लघुः ।
स्निग्धश्चोष्णः कर्णनेत्रकण्ठरोगविनाशनः ॥
कफं वातश्च यूकाश्च कासं स्वेदं व्रणं तथा
रक्षोबाधामलक्ष्मीं च नाशयेदिति कीर्तितः॥ (रा० नि०)

अर्थ-सरल-मधुर, कडवा, रसमें तथा पाकमें चरपरा, हलका, स्निग्ध, गरम तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, कण्ठरोग, कफ, वात, जूएँ, खांसी, पसीना, घाव, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करेहै ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष हिमालयमें होताहै. उसके भीतरसे गोंदकी समान रस निकलताहै. उसको चंद्ररस और सुंदरस कहतेहैं ।

तगरनामानि ।

कालानुसार्यं तगरं कुटिलं लघषं नतम् ।
अपरं पिण्डतगरं दण्डहस्ति च बर्हणम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कालानुसार्य, तगर, कुटिल, लघुष, नत । (जिह्म, दीपन, कालानुसारिवा, वक्र, कुञ्चिन, चक्र, शठ, महोरग, दीपन, तगर, पादिक, विनम्र, नहुषाख्य, दीन) दूसरा पिण्डतगर होताहै, उसके नाम यह हैं । पिण्डतगर, दण्ड, हस्ति, बर्हण, (दण्डहस्त, पिण्डीतगरक, पार्थिव, राजहर्षण, कालानुसारक, क्षत्र)

हिन्दीभाषामें	तगर ।
वङ्गभाषामें	तगरपाट्टुका ।
मराठीभाषामें	गोंडितगर ।
गुजरातीभाषामें	तगर ।
कर्णाटकीभाषामें	तगर ।
तैलङ्गीभाषामें	गन्धितगरपु चेट्टु, नांदिवर्द्धनचेट्टु ।
उत	पाणिफलरा ।
नेपालीभाषामें	चम्मा ।

लैटिनभाषामें	वेलिरीयाना हार्डविसिट्राई Vreleriana Hardwicitrii
अरबीभाषामें	अशारुन ।

तगरगुणाः ।

तगरद्वयमुष्णं स्यात्स्वादु स्निग्धं लघु स्मृतम् ।
विषापस्मारमूर्द्धाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-दोनों प्रकारकी तगर-गरम, स्वादिष्ट, स्निग्ध, हलकी तथा विष, अपस्मार, शिरोरोग, नेत्ररोग और त्रिदोषको दूर करेहै ।

अपिच ।

तगरं शीतलं तिक्तं दृष्टिदोषविनाशनम् ।
विषार्तिशमनं पथ्यं भूतोन्मादभयापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तगर-शीतल, कडवी, दृष्टिके विकारको दूर करे । विषके विकारको शान्ति करे, पथ्य तथा भूतोन्माद और भयनाशक है।

अन्यच्च ।

तगरं कुष्ठजित्प्रोक्तं दृक्शीर्षव्याधिजिल्लघु ॥ (शो० नि०)

अर्थ-तगर-कोढ, नेत्ररोग और मस्तकरोगको दूर करे, तथा हलकी है।

अपिच ।

तगरं शीतल पथ्यं तिक्तं मधु लघु स्मृतम् ।
स्निग्धं पाके च कटुक तुवरं विषनाशकम् ॥
नेत्रमस्तकरोगं च रक्तदोषं त्रिदोषकम् ।
भूतोन्मादमपस्मारं भूतबाधां च नाशयेत्॥(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तगर-शीतल, पथ्य, कडवी, मधुर, हलकी , स्निग्ध, पाकमें चरपरी, कषेली, विषनाशक, तथा नेत्ररोग, मस्तकरोग, रुधिरविकार, त्रिदोष, भूतोन्माद, मृगी और भूतबाधाको दुर करे है ।

पद्मकनामानि।

पद्मकं मलयश्चारुः पीतरक्तश्च सुप्रभः । (मदनपालनिघण्टु)

अर्थ-पद्मक, मलय, चारु, पीतरक्त, सुप्रभ, (पीत, पीतक, मालेय, शीतल, हिम, शुभ, केदारज, रक्त, पाटलापुत्रसन्निभ, पद्मवृक्ष, पद्मगन्धि, पद्माह्वय, पद्मकाष्ठ, केदार, शीतवीर्य,

पाटलापुष्पवर्णक)

हिन्दीभाषामें	पद्माक (ख)
वंगभाषामें	पद्मकाष्ठ ।
मराठीभाषामें	पद्मकाष्ठ ।
गुजरातीभाषामें	पद्मकतुलाकट्टं ।
कर्णाटकीभाषामें	पद्मक ।
तैलङ्गीभाषामें	पद्मपुच्चेका । (प्णुगुसहदेविं)
लैटिनभाषामें	प्रनसपदम् । (Prunus Padam)

पद्मकगुणाः ।

पद्मकं शीतलं तिक्तं रक्तपित्तविनाशनम् ।
मोहदाहज्वरभ्रांतिकुष्ठविस्फोटशांतिकृत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–पद्मक–शीतल, कडवा, रक्तपित्तनाशक तथा मोह, दाह, ज्वर, भ्रान्ति कोढ और विस्फोटकको दूर करे है ॥

अपिच ।

पद्मकं तुवरं तिक्तं शीतलं वातलं लघु ।
विसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तहृत् ।
गर्भसंस्थापनं रुच्यं वमिव्रणतृषाप्रणुत् ॥

अर्थ–पद्मक–कषेला, कडवा, शीतल, वादी, हलका, तथा विसर्प, दाह, विस्फोट, कुष्ठ, कफ और रक्तपित्तका नाश करेहै, गर्भको स्थापन करे है, रुचिको उत्पन्न करेहै, वमन, घाव और पियासको दूर करे है ।

विवरण । इसका साधारण वृक्ष केदार और शिमला आदि पर्वतों पर उत्पन्न होताह इसकी लकडी औषधीमें लीजातीहै इसको घिसकर पनिसे गर्भ न रहता हो तो गर्भ रहजाता है। और गर्भ गिरता हो तो स्थिर होजाता है शिमला पहाडमें पाजा नामसे प्रसिद्ध है ।

गुग्गुलुनामानि ।

गुग्गुलुः कालनिर्यासो महिषाक्षः पलङ्कषः ।
जटायुःकौशिकोधूर्तोदेवधूपःशिवःपुरः ॥ (मदनविनोद)

अर्थ–गुग्गुलु, कालनिर्यास, महिषाक्ष, पलंकष, जटायु, कौशिक धूर्त्त, देवधूप, शिव, पुर, (कुम्भ, उलूखलक, कुम्भोलु, कुम्भोलूख-

लक, गुग्गुलु, सर्वसह, उष, उलूखलक, कुम्भी, कुन्ती, उद्दीत, पवनद्विष्ट, भवाभीष्ट, निशाढक, जटाल, पुट, भूतहर, शाम्भव, दुर्ग) वायुघ्न, महिषाक्षक, देवेष्ट, मरुदिष्ट, रक्षोहा, पलंकषा, रूक्षगन्धक, दिव्य ।

हिन्दीभाषामें	गूगल. (र.) भैंसागूगल ।
वंगभाषामें	गुग्गुलु ।
गुजरातीभाषामें	गुगुल । भैंसो गुगुल ।
मराठीभाषामें	म्हशागुगुळ. गुगुळ ।
कर्णाटकीभाषामें	इडबोल ।
तैलङ्गीभाषामें	गुग्गिलमुचेट्टुमहिषाक्षी ।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियन् डेलियम् । Indian Dellum
लैटिनभाषामें	वालसमेडिन्ड्रन एक्स वुर्छिआई। वालस मोडेड्नमुकुल Walsams Raxburghii B. Makkul
फारसीभाषामें	बोएजहुदान ।
अरबीभाषामें	मुष्किलेअर्जक

गुग्गुलोः प्रकारभेदलक्षणगुणाः।

महिषाक्षो महानीलः कुमुदः पद्म इत्यपि ।
हिरण्यः पञ्चमो ज्ञेयो गुग्गुलोः पञ्च जातयः ॥
भृङ्गाञ्जनसवर्णस्तु महिषाक्ष इति स्मृतः ।
महानीलस्तु विज्ञेयः स्वनामसमलक्षणः ।
कुमुदः कुमुदाभः स्यात्पद्मो माणिक्यसन्निभः ।
हिरण्याक्षस्तु हेमाभः पंचानां लिंगमीरितम् ॥
महिषाक्षो महानीलो गजेन्द्राणां हिताबुभौ ।
हयानां कुमुदः पद्मः स्वस्त्यारोग्यकरौ परौ ॥
विशेषेण मनुष्याणां कनकः परिकीर्तितः ।
कदाचिन्महिषाक्षश्चमतःकश्चिन्नृणामपि ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म, और हिरण्य इन भेदोंसे गूगल पांच प्रकारका है । उनमें महिषाक्ष गूगल-भौंरेके रंगकी

समान कोयले और अञ्जनके सदृश वर्णवाला होताहै । महानील-गूगल-अत्यन्त नीले रंगका होता है । कुमुदगूगल-कुमुदके फूलकी समान वर्णवाला होता है । पद्मगूगल-माणिकरत्नके समान लाल रंगका होताहै । हिरण्याक्षगूगल-हेमके समान रंगवाला होता है । महिषाक्ष और महानील गूगल हाथियोंके लिये हितकारी है, घोडोंको आरोग्य करनेवाला कुमुद और पद्मगूगल है और मनुष्योंके लिये हिरण्याक्षगूगल अत्यन्त उपकारी है । कोई कोई ऐसाभी कहते हैं कि, मनुष्योंके लिये कहीं कहीं महिषाक्षगूगलभी हितकारी है ।

गुग्गुलुगुणाः ।

गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तो वीर्योष्णः पित्तलः सरः ।
कषायः कटुकः पाके कटू रूक्षो लघुः परः ॥
भग्नसन्धानकृद्वृष्यः सूक्ष्मः स्वर्यो रसायनः ।
दीपनः पिच्छिलो बल्यः कफवातव्रणापचीः ॥
मेदोमेहाश्मवातांश्च क्लेदकुष्ठाममारुतान् ।
पिण्डकाग्रन्थिशोफार्शोगण्डमालाकृमीञ्जयेत् ॥
माधुर्य्याच्छमयेद्वातं कषायत्वाच्च पित्तहा ।
तिक्तत्वात्कफजित्त्वेन गुग्गुलुः सर्वदोषहा ॥
स नवो बृंहणो वृष्यः पुराणस्त्वतिलेखनः ।
स्निग्धः काञ्चनसंकाशः पक्वजम्बूफलोपमः ॥
नूतनो गुग्गुलुः प्रोक्तः सुगन्धिर्यस्तु पिच्छिलः ।
शुष्को दुर्गन्धकश्चैव त्यक्तः प्रकृतिवर्णकः ॥
पुराणः स तु विज्ञेयो गुग्गुलुर्वीर्य्यवर्जितः ।
अम्लं तीक्ष्णाम्लजीर्णञ्च व्यवायं श्रममातपम् ॥
मद्यं रोषं त्यजेत्सम्यग्गुणार्थी पुरसेवकः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गूगल-विशद, कडवा, उष्णवीर्य्य, पित्तजनक, दस्तावर, कषैला, पाकमें चरपरा, चरपरा, रूखा, हलका, भग्नास्थिसंयोजक, वीर्य्य उत्पन्न करनेवाला, सूक्ष्म, स्वरको शुद्ध करनेवाला, उत्तम रसायन, अग्नि-

दीपक, पिच्छिल, बलकारक तथा कफ,वात, व्रण, अपची, मेदरोग, प्रमेह, पथरी, वातव्याधि, क्लेद,कोढ, आमवात,पिंडका, ग्रन्थिरोग, सूजन, बवासीर, गण्डमाला और कृमिरोगका नाश करेहै ।

यह मधुररसयुक्त होनेसे वातको, कषायरसान्वित होनेसे पित्तको और तिक्तरसयुक्त होनेसे कफको नष्ट करे है। इसकारण गूगल त्रिदोषनाशक है ।

नवीनगूगल-वीर्य्यजनक और बलकारक है । पुराना गूगल शरीरको अत्यन्त दुर्बलतादायक है जो गूगल चिकना हो, सुवर्णके समान निर्मल हो, सुगन्धित हो. पकी जामुनके समान स्वरूपवाला हो और पीला हो, ऐसा गूगल नवीन होता है। पुराना गूगल,सूखा, दुर्गन्धवाला, स्वाभाविक वर्णहीन और वीर्यवर्जित होता है। गुणाभिलाषी गूगलको सेवन करनेवाले मनुष्य अम्ल (खटाई) तीक्ष्ण (मिरचादि) अजीर्ण-(कच्चे पदार्थ) मैथुन करना, पारिश्रम करना, धूपमें फिरना, मदिरा पीना और क्रोधका करना इनको छोड दे ।

अस्योत्पत्तिः ।

जायन्ते पुरपादपा मरुभुवि ग्रीष्मेऽर्कसंतापिताः
शीतर्त्तौ शिशिरेपि गुग्गुलरसं मुञ्चन्ति ते पञ्चधा ।
हेमाभं महिषाक्षितुल्यमपरं सत्पद्मरागोपमं
भृङ्गाभंकुमुदद्युतिं च विधिना ग्राह्या परीक्षा ततः (रा०नि०)

अर्थ-गूगलके वृक्ष मारवाडकी भूमिमें उत्पन्न होतेहैं । ग्रीष्मऋतुमें सूर्यकी गरमीसे संतापित हो, शीतऋतुमें सरदी पाकर उन वृक्षोंमेंसे पांच प्रकारका रस निकलता है, १ सुवर्णवर्णवाला, दूसरा भैंसके नेत्रोंकी समान, तीसरा पद्मरागकी समान, चौथा भौंरेकी सदृश काला और पांचवाँ कुमुदके फूलके कान्तिके समान होता है, इसी रसका नाम गूगल है । इसको लेकर उत्तम विधिसे परीक्षा करनी ।

अस्य परीक्षा ।

वह्नौज्वलंति तपने विलयं प्रयान्ति क्लिद्यंति कोष्णसलिले पयसः समानाः ॥
ग्राह्याः शुभाः परिहरेच्चिरकालजातान्सक्षारवर्णसमपूयविगन्धवर्णान् ॥ (प्रयोगामृत)

अर्थ-जो आगमें गिरनेसे जलजाय गरमीमें रखनेसे पिघलजाय उष्ण जलमें डालनेसे गलकर जलके समान होजाय; ऐसा गूगल श्रेष्ठ होता है, इसीको औषधीके काममें लेना और जो क्षारके समान रंगवाला हो, तथा जिसमें राधके समान गन्ध आती हो, पुराना हो, ऐसा गूगल कभी भी ग्रहण नहीं करना, इसका पूर्ण वीर्य्य तीन मासपर्यन्त रहताहै ।

अस्य शोधनविधिर्यथा।

गुडूचीत्रिफलाक्काथे क्षीरे चैव विशेषतः ।
पक्का च खण्डशः शुद्धं गृह्णीयान्मृदुगुग्गुलुम् ॥

अर्थ--गिलोय और त्रिफलेके काढेमें और विशेष करके दूधमें टुकडे करके पकाना चाहिये वह गूगल मृदु और शुद्ध होताहै, उसे ग्रहण करना चाहिये ।

अपिच ।

क्काथे हि दशमूलस्य कोष्णे प्रक्षिप्य गुग्गुलुम् ।
आलोडय वस्त्रपूतं तं चण्डातपविशोषितम् ॥
घृताक्तपिण्डितं कुर्य्याच्छुद्धिमायाति गुग्गुलुः। (आ० सं०)

अर्थ-किंचित् उष्ण दशमूलके काढेमें गूगल डालकर वस्त्रसे छान कर उसे मिलाकर तेज धूपमें सुखावै. फिर घीमें मिलाकर गोली करले तो गूगल शुद्ध होजाताहै ।

अन्यच्च ।

अमृतायाः कषायेण शोषयित्वाऽथ गुग्गुलुम् ।
गृह्णीयादातपे शुष्कं तथाऽवकरवर्जितम् ॥(आत्रेयसंहिता)

अर्थ--गिलोयके रसमें गूगलको मिलाय धूपमें सुखाकर ग्रहण करले और धूलादिकसे रहित रक्खे ।

अन्यच्च ।

दुग्धे वा त्रिफलाक्काथे दोलायन्त्रे विपाचितः ।
वाससागालितो ग्राह्यःसर्वकर्म्मसुगुग्गुलुः॥(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-दूधमें अथवा त्रिफलाके काढेमें रखकर दोलायन्त्रमें पचावे फिर कपडेसे छानकर ग्रहण करले, सर्व काममें इसप्रकार शोध कर लेवे ।

विवरण-इसका वृक्ष रेतली और पर्वतीभूमिमें होताहै. पत्ते अनीरहित छोटे छोटे नीमके पत्तीके समान होतेहैं. फूल लालरंगका अतिसूक्ष्म पांच पखडीवाला मंजरीके बीचमें निकलताहै फल छोटे बेरकी समान और तीनधारवाला होताहै, इसके फलोंको गूगलिया कहतेहैं, यह फल उदरकी पीडाको दूर करते हैं। इस वृक्षके गोंदकोही गूगल कहतेहैं। व्यवहारमें शुद्ध किया हुआ गूगल लेना।

गन्धराजगुग्गुलुनामानि।

गन्धराजः स्वर्णकणः सुवर्णः कणगुग्गुलुः।
कनको वंशपीतश्च सुरभिश्च पलङ्कषः॥

अर्थ-गन्धराज, स्वर्णकण, सुवर्ण, कणगुग्गुलु, कनक, वंशपीत, सुरभि और पलङ्कष।

गन्धराजगुग्गुलुगुणाः।

कणगुग्गुलुः कटूष्णः सुरभिर्वातनाशनः।
शूलगुल्मोदराध्मानकफघ्नश्च रसायनः॥

अर्थ-कणगूगल-चरपरा, गरम, सुगन्धि, वातनाशक तथा गुल्म, उदररोग, आध्मान और कफको दूर करेहै और रसायन है।

भूमिजगुग्गुलुनामानि।

गुग्गुलुश्च तृतीयोन्यो भूमिजो दैत्यमेदजः।
दुर्गाह्वोदाइडाजात आशादिपुरसम्भवः।
मज्जाजो मेदजश्चैव महिषासुरसम्भवः॥

अर्थ-भूमिज गुग्गुलु, दैत्यमेदज, दुर्गाह्व, दाइडाजात, आशादिपुरसम्भव, मज्जाज, मेदज, महिषासुरसम्भव।

अस्य गुणाः।

गुग्गुलुर्भूमिजस्तिक्तः कटूष्णः कफवातजित्।
उमाप्रियश्च भूतघ्नो मेध्यः सौरभ्यदः सदा॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-भूमिजगूगल-कडवा, चरपरा, गरम, कफवातनाशक, उमाको प्यारा, भूतका नाश करे, मेधाजनक और सदा सुगंधिदायक है।

राळनामानि ।

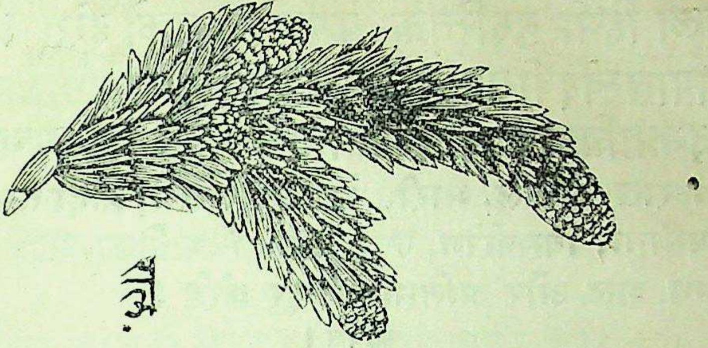

राळस्तु सालनिर्यासस्तथा सर्ज्जरसः स्मृतः ।
देवधूपो यक्षधूपो विरूपो वह्निवल्लभः ॥

अर्थ-राल-सालनिर्यास, सर्जरस, देवधूप, यक्षधूप, विरूप, वह्निवल्लभ, (कलकल, काल, कलयज, सर्वरस, बहुरूप, धूपन, सालज; शालनिर्यास, सर्ज्य धूनक, शालसार, शाल, शालवेष्ट, सालवेष्ट, अग्निवल्लभ, सर्ज्जमणि, साल, कलकलोद्भव, ललत, देवेष्टशीतल, सालरस, सुरभि, सर्जनिर्यासक, सुरधूप, कलकलज, महारूप, क्षण और शालरस)

हिन्दीभाषामें	राल ।	
वङ्गभाषामें	धूना·धूनो ।	
मराठीभाषामें	राळ पिंवळी ।	
गुजरातीभाषामें	राल ।	
कर्णाटकीभाषामें	सर्ज्जरस ।	
तैलिङ्गभाषामें	सर्ज्जरसमु-सर्ज्ज ।	
पंजाबीभाषामें	रालअर्लु ।	
इंग्रेजिभाषामें	यल्लेरिझिन् ।	Yellow Risin
लैटिन्भाषामें	रिझिनाल्फीना	Risina Flena
फिरङ्गीभाषामें	नारुस ।	
फारसीभाषामें	रालमगरेवी ।	
अरबीभाषामें	किकहर	

रालगुणाः ।

रालो हिमो गुरुस्तिक्तः कषायो ग्राहको हरेत् ।
दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविपादिकाः ।
ग्रहभग्नाग्निदग्धांश्च शूलातीसारनाशनः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-राल-शीतल, भारी, कडवा, कषैली, ग्राही तथा रुधिरदोष, पसीना, विसर्परोग, ज्वर, व्रण, विपादिका, ग्रह, भग्नरोग, अग्निदग्ध, शूल, और अतिसारको दूर करैहै ।

अपिच ।

रालस्तु शिशिरः स्निग्धः कषायस्तिक्तसंग्रहः ।
वातपित्तहरः स्फोटकण्डूतिव्रणनाशनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-राल-शीतल, स्निग्ध, कषैली, कडवी, संग्राही तथा वात, पित्त, स्फोट, कण्डू और व्रणनाशक है ।

अन्यच्च ।

सर्जनिर्यासकः शीतः स्निग्धश्च तुवरो गुरुः ।
ग्राहकः स्तम्भनस्तिक्तः स्वादुश्च व्रणरोपणः ॥
भग्नसन्धानकरणो मधुरो वातपित्तहा ।
त्रिदोषरक्तरुक्कण्डूविस्फोटव्रणशूलनुत् ॥
स्वेदज्वरविसर्पाणां ग्रहबाधाविनाशनः ।
विपादिकाग्निदग्धस्य भूतबाधाविषस्य च ।
अतिसारस्य शमन ऋषिभिः परिकीर्तितः ॥
(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-राल-शीतल, चिकनी, कषैली, भारी, मलरोधक, स्तम्भन, कडवी, स्वादिष्ठ, व्रणरोपण, टूटी अस्थिको जोडनेवाली, मधुर तथा वातपित्त, त्रिदोष, रुधिरविकार, खुजली, विस्फोट, घाव, शूल, पसीना, ज्वर, विसर्प, ग्रहबाधा, विपादिका, अग्निदग्ध, भूतबाधा, विष और अतिसारको दूर करे है ।

विवरण-रालका-वृक्ष देहरादूनमें होताहै, शालवृक्ष नामसे प्रसिद्ध है, उसके गोंदको राल कहतेहैं, उसमें मिश्री मिलाकर खानेसे

अतिसार दूर होताहै, इसके लेपसे और इसको पीनेसे प्रदररोग दूर होताहै । मात्रा सात रत्तीकी है ।

रालतैलगुणाः ।

तैलं सर्जरसोद्भूतं विस्फोटव्रणनाशनम् ।
कुष्ठपामाक्रिमिहरंवातश्लेष्मामयापहम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-रालका तेल-(तार्पिनतेल) विस्फोट, घाव, कोढ, पामा, क्रिमि, वात और कफका नाश करे है ।

कुन्दुरुनामानि ।

पालङ्क्या कुन्दुरुः कुन्दुः सौराष्ट्रीशिखरी वली ।

अर्थ-पालंक्या, कुन्दुरु, कुन्दु, सौराष्ट्री शिखरी वली, (मुकुन्द, पालंकी, मुकुंद, कुन्दु, कुन्दुर, तीक्ष्णगन्ध, कुन्दुरुक, कुन्दक, तीक्ष्ण गोपुरक, बहुगन्ध, पालिन्द, भीषण, सुगन्ध, कुन्दारु, बिडालाक्ष, पालंक, खपुर, स्वाक्ष, नागवधूप्रिय और शल्लकीनिर्य्यास)

हिन्दीभाषामें	कुन्दुरु । गुदवरोसा ।
वङ्गभाषामें	कुन्दुरुखोटी ।
मराठीभाषामें	अवलगुन्दर । सालईडीक ।
गुजरातीभाषामें	किन्दुरु, शेषगुन्दर ।
कर्णाटकीभाषामें	इडवोल ।
इंग्रेजीभाषामें	ओलिबेनम् । Olibanum
लाटिनभाषामें	वोझवेलिया, थेरीफेरा, विस्टेशिया, टैरीविथस् ।
फारसीभाषामें	कन्दुररुमी । खोटीमस्तकी ।
अरबीभाषामें	कुन्दुरेजकर । विस्तज ।
तैलिङ्गीभाषामें	कुन्दुरुमु ।

कुन्दुरुगुणाः ।

कुन्दुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यः कटुर्हरेत् ।
ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफानिलान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-कुन्दुरु-मधुर, कडवा, तीक्ष्ण, त्वचाको हितकारी, चरपरा तथा ज्वर, पसीना, ग्रहबाधा, अलक्ष्मी, मुखरोग, कफ और वातको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कुंदुरुर्मधुरस्तीक्ष्णस्तिक्तो रुच्यः कटुः स्मृतः ।
स्निग्धस्त्वच्यस्तथा चोष्णो ज्वरस्वेदकफापहः ॥
रक्तरुक्प्रदरंवातमलक्ष्मीग्रहपीडनम् ।
रक्तातिसारं यूकाश्चनाशयेदिति कीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-कुन्दुरु-मधुर, तीक्ष्ण, कडवा, रुचिकारक, चरपरा, स्निग्ध, त्वचाको हितकारक, गरम तथा ज्वर, पसीना, कफ, रक्तविकार, प्रदर, वायु, अलक्ष्मी, ग्रहबाधा, रक्तातिसार और जूओंको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

शर्करासहितं मेहं वृषणस्य व्यथां हरेत्। (शोढलनिघण्टु)

अर्थ-कुन्दुरु-शर्करायुक्त प्रमेहरोग और अण्डकोषोंकी पीडाको दूर करेहै ।

विवरण-शल्लकीके गोंदको कुन्दुरु कहतेहैं । इसका रंग सफेद और कुछ सुगंधियुक्त होताहै । कुन्दुरुको घिसकर बदपै लगानेसे बद बैठ जातीहै, इसके मरहमसे घावको आराम होताहै ।

श्रीवासनामानि ।

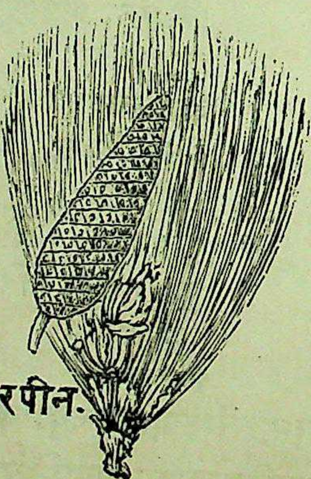

तारपीन.

श्रीवासः सरलस्रावः श्रीवेष्टो वृक्षधूपकः ।
वेष्टसारो रसावेष्टः श्रीपिष्टः पद्मदर्शनः ॥

अर्थ-श्रीवास-सरलस्राव, श्रीवेष्ट, वृक्षधूपक, वेष्टसार, रसावेष्ट, श्रीपिष्ट, पद्मदर्शन (पायस, वृकधूप, सरलद्रव, रक्तशीर्षक, रसाह्व, यास, यवास, वृताह्वय, दध्याह्वय, क्षीराह्वय, क्षीरश्री, वायस , (वृक्षधूप, चितागन्ध, रसायक, श्रीरस, वेष्ट, लक्ष्मीवेष्ट, वेष्टक क्षीरशीर्ष, सुधूपक, धूपांग तिलपर्ण, सरलांग, तैलपर्णी)

हिन्दीभाषामें-सरलका गोंद, सरलका रस, चन्द्रस गन्धविरोजा

वङ्भाषामें	टार्पिनतल नवनीत, खोटी-गन्ध विरजा ।
मराठीभाषामें	सरलाडीक चन्द्रूस ।
गुजरातीभाषामें	चन्द्रस । जनार्दन । गन्धवेरीजो ।
कर्णाटकीभाषामें	श्रीवेष्टक ।
तामिलिभाषामें	पिनैमारु ।
इंग्रेजीभाषामें	गमकोपल । संडरेक Gomcopal Sandarack
लैटिनभाषामें	ट्रेकिलोविअमहोर्निमेनिएनम्कोलिट्रिसकेड्रिवालविस् । Trachiloam Horniman monamIoColiitris Quadriawalvis
फारसीभाषामें	संदरुस । काइरुवा ।
अरबीभाषामें	संदरुस ।

श्रीवासगुणाः ।

श्रीवासो मधुरस्तिक्तः स्निग्धोष्णस्तुवरःसरः ।
पित्तलो वातमूर्द्धाक्षिस्वररोगकफापहः ॥
रक्षोघ्नः स्वेददौर्गन्ध्ययूकाकण्डूव्रणप्रणुत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-मधुर-कडवा, स्निग्ध, गरम, कषैला, दस्तावर, पित्तजनक तथा वायु, मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभंग,कफ, राक्षसबाधा, पसीना दुर्गंध, जूएं, खुजली और घावको दूर करे है ।

अपिच ।

श्रीवेष्टः कटुतिक्तश्च कषायः श्लेष्मपित्तजित् ।
योनिदोषरुजाजीर्णव्रणाध्मानप्रदोषजित्॥(रा० नि०)

अर्थ-कटु, तिक्त, कषाय, कफ पित्तनाशक तथा योनिरोग, अजीर्ण, व्रण और आध्मान रोगका नाश करे है ।

अपि च।

चन्द्रुसः कटुकः स्वादुः स्निग्धश्चोष्णश्च शुक्रलः ।
लघुवृष्यः कांतिकरः कंडुस्वेदज्वरापहः ॥
ग्रहपीडाकुष्ठदाहान्नोशयेदिति कीर्तितः । (नि० र०)

अर्थ-चंद्रुस-चरपरा, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, उष्ण, शुक्रकारक, हलका वृष्य, कान्तिको करनेवाला तथा खुजली, पसीना, ज्वर, ग्रहकी पीड़ा, कोढ और दाहको दूर करे है।

श्रीवाससारगुणाः ।

श्रीवाससारः कफनुन्मूत्रलो ज्वरसंहरः ।
शोफविम्लापनो लपात्क्रिमिहृद्वेदनापहः ॥ (आत्रेयसं)

अर्थ-श्रीवाससार अर्थात् गन्धविरोजा-कफनाशक, मूत्रवर्द्धक, ज्वरसंहारक और शोफको दूर करे है, इसका लेप करनेसे कृमिरोग और वेदनाकी शान्ति होती है। *

सिह्लकनामानि ।

कपिनामा कपितैलं कृत्रिमं कपिशश्चलः ।
तुरुष्को मुक्तिमुक्तश्च पिण्डितः सैंहिकारसः ॥

अर्थ-कपिनामा, कपितैल, कृत्रिम, कपिश, चल, तुरुष्क, मुक्तिमुक्त, पिण्डित, सैंहिकारस (कपि, तैल, कपिल, चला, पिण्डातवर सिह्लपिण्डक, सिद्ध, पावन, पवन, धूम्र, धूम्रवर्ण, सुगन्धिक, सिह्लक, सिह्लसार, पीतसार, कपि, पिण्याक, कपिज, कल्क, पिण्डितैलक, करेवर, कृत्रिमक, लेपन, शल्लकीद्रव, पिष्टक, तैलपर्णी, वृकधूप, कपिचश्चल, यावल, तैलाख्य, पिण्डक, याव, यावन जाव, शज, यवनदे, अश्मपुष्प और चश्चलतैलक)

हिन्दीभाषामें	शिलारस ।
वङ्गभाषामें	शिलारस ।
मराठीभाषामें	शिलारस ।
गुजरातीभाषाम	शेलारस ।
कर्णाटकीभाषामें	पिण्डतैल ।

---

*-चीढ़ वृक्षके गोंदको विराजो और श्रीवासके गोंदको सुंदरस कहते हैं तारपीनका तेल दोनोंसे बन सकता है प्राय ठंडे पहाडों पर इसके वृक्ष होते हैं।

इंग्रजीभाषामें	लिक्विडएम्बर । Liquidamber
लैटिनभाषामें	लिक्विडेम्बर ओरिएन्टेलिस Liquidamber Orientalis
फारसीभाषामें	सलारस ।
अरबीभाषामें	उसारेकमिया, मिथास साइला ।
दक्षिणीभाषामें	कपितेल ।

अस्य गुणाः ।

तुरुष्कः सुरभिस्तिक्तः कटुः स्निग्धश्च कुष्ठजित् ।
कफपित्ताश्मरीमूत्रघातभूतज्वरार्त्तिजित्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-शिलारस सुगन्धि, कडवा, चरपरा, स्निग्ध तथा कोढ, कफ, पित्त, पथरी, मूत्राघात, भूत और ज्वरका नाश करे है ।

अपि च ।

सिह्लकः कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः शुक्रकान्तिकृत्
वृष्यः कंडूस्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-शिलारस-स्वादु, चरपरा, स्निग्ध, गरम, शुक्रजनक, कान्तिकारक, वृष्य तथा कण्डू, पसीना, कोढ, ज्वर, दाह और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै.

अन्यच्च ।

तुरुष्करः कान्तिकरो वृष्योष्णः स्वादु शुक्रलः ।
वर्ण्यः सुगन्धिः कटुकस्तिक्तः स्निग्धश्च कुष्ठहा ॥
कफपित्ताश्मरीभूतबाधाज्वरविनाशनः ।
मूत्राघातस्वेदकण्डूदाहहा च त्रिदोषजित्॥ (निघ० र०)

अर्थ-शिलारस-कान्तिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, वर्णको सुंदरतादायक, सुगन्धि, चरपरा, कडवा, चिकना तथा कोढ, कफ, पित्त, पथरी, भूतबाधा, ज्वर, मूत्राघात, पसीना, खुजली, दाह और त्रिदोषका नाश करेहै.

लवङ्गनामानि ।

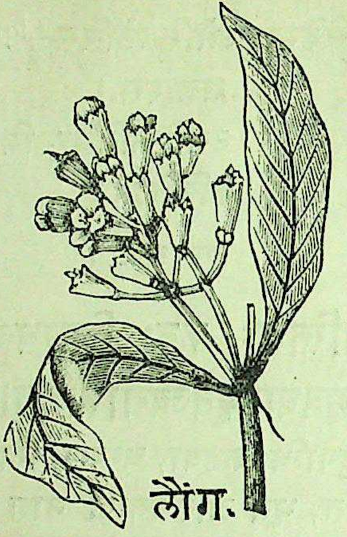

लौंग.

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसञ्ज्ञं कलिकोत्तमम् ।
भृङ्गारं सुषिरं तीक्ष्णं वारिजं शेखरं लवम् ॥

अर्थ–लवङ्ग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञ, कालकोत्तम, भृङ्गार, सुषिर, तीक्ष्ण, वारिज, लव (प्रसून, लवङ्गक, लवङ्गकलिका, दिव्य, श्रीपुष्प, रुचिर, ग्रहणीहर, तोयाधिप्रिय, वारिपुष्प, तीक्ष्णपुष्प, गीर्वाणकुसुम, चंदनपुष्प, दिव्यगन्ध, श्रीप्रसूनक)

हिन्दीभाषामें	लौंग ।	
वङ्गभाषामें	लवङ्ग ।	
मराठभाषामें	लवंग ।	
गुजरातीभाषामें	लवींग ।	
कर्णाटकीभाषामें	लवङ्गकलिका ।	
तैलिङ्गीभाषामें	लवङ्गलु ।	
तामिलीभाषामें	किरम् वेर ।	
दा०	लवङ् ।	
इंग्रेजीभाषामें	क्लोवस् ।	Cloves
लैटिन्भाषामें-केरियो फाइलस,ऐरोमेटिकस्।		Caroisphyllus
फारसीभाषामें	मेहक्र ।	Arramatices
अरबीभाषामें	करनफूल (फूल)	

अस्यगुणाः ।

लवङ्गं कटुकं तिक्तं लघुनेत्रहितं हिमम् ।
दीपनं पाचनं रुच्यं कफपित्तास्रनाशकृत् ॥
तृष्णां छर्दिं तथाध्मानं शूलमाशु विनाशयेत् ।
कासं श्वासं च हिक्कां च क्षयं क्षपयति ध्रुवम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-लौंग-चरपरी, कडवी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, दीपन, पाचन, रुचिकारक तथा कफ, पित्त,रक्तरोग, तृषा, छर्दि, आध्मान, शूल, कास, श्वास हुचकी और क्षयरोगका नाश करै है ।

अन्यच्च ।

आनाहवातशूलघ्नं मुखदौर्गन्ध्यनाशनम् ।

अर्थ-आनाह, वायु, शूल और मुखकी विरसताको दूर करेहै ।

अपिच ।

लवङ्गं शीतलं तिक्तं चक्षुष्यं भुक्तरोचनम् ।
वातपित्तकफघ्नं च तीक्ष्णं मूर्द्धरुजापहम् ॥ (क्वचित्)

अर्थ- लौंग-शीतल, तिक्त, नेत्रोंको हितकारी, भुक्तरोचन, तथा वात, पित्त, कफनाशक, तीक्ष्ण और मस्तकरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

लवङ्गं सोष्णकं तीक्ष्णं विपाके मधुरं हिमम् ।
वातपित्ताकफामघ्नं क्षयकासस्तु दोषनुत्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-लौंग-गरम, तीक्ष्ण, पाकके समय मधुर, शीतवीर्य्य, तथा त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) आम, क्षय और कासरोगका नाश कर

अन्यच्च ।

लवङ्गं विशदं तीक्ष्णं चक्षुष्यं भुक्तपाचनम् ।
वातपित्तहरं हृद्यं स्निग्धं मूर्द्धरुजापहम् ॥ (गणनिघंटु)

अर्थ-लौंग-विशद, तीक्ष्ण, नेत्रोंको हितकारी, भुक्तपाचक, वात-पित्तनाशक, हृदयको हितकारी, स्निग्ध और शिरोगको हरे है ।

लवङ्गतैलगुणाः ।

देवपुष्पोद्भवं तैलमग्निकृद्वातनाशनम् ।
दन्तवेष्टकफार्तिघ्नं गर्भिण्या वमनापहम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ- लौंगका तेल--अग्निजनक, वातनाशक तथा दन्तवेष्ट, कफ और गर्भिणीकी वमननाशक है ।

विवरण-इसके वृक्ष जंजीबारमें अधिक उत्पन्न होते हैं, देखनेमें सुंदर और इसके पत्तोंमें अत्यन्त सुगन्ध आता है.इसके फूलकी कली लौंग है. लौंग मलबारमेंभी होतीहै, यह मुखकी दुर्गन्धको दूर करतीहै और मसालेमेंभी पडतीहै । मात्रा तीन ३ मासेकी है ।

जातिफलनामानि ।

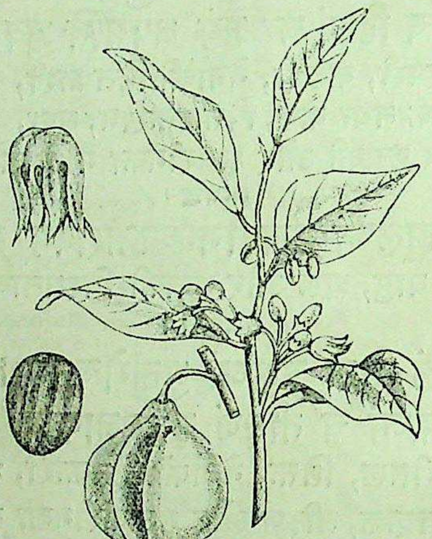

जातीफलं फलं जातिः कोषकं सुमनःफलम् ।

अर्थ-जातीफल, फलजाती, कोषक, सुमनःफल, (जातीकोष, फल, जाती, कोश, कोष,जातिकोष, राजभोग्य, जातिकोश,जातिफल, जातिशस्य, शालूक, मालतीफल, मज्जसार, जातिसार पुट और मदशौंड)

हिन्दीभाषामें	जायफल ।
वङ्गभाषामें	जायफल ।
मराठीभाषामें	जायफळ ।
गुजरातीभाषामें	जाईफल ।
कर्णाटकीभाषामें	जाईफल।
तैलङ्गीभाषामें	जाजिकाया ।
तामिलीभाषामें	जोदिकराय ।
ब्रह्मीभाषामें	जादिक्षु ।
इंग्रेजीभाषामें	नट्मेग । Nutmeg
लैटिन्भाषामें	मिरिस्टिका-ओफिसिनेलिस मिरिस्टिकामास्केटा Myristica officinalis M. Maschata

फारसीभाषामें	जोभोवुवा ।
अरबीभाषामें	जोझउतलीव ।

जातिफललक्षणम् ।

जातीफलं सशब्दं च स्निग्धं गुरु च शस्यते ।
लघुकं शब्दहीनं च रूक्षांगमतिनिंदितम् ॥ (भैषज्यचिकित्सा)

अर्थ-जातिफल-जिसमें शब्द होताहो, चिकना हो और भारी हो,ऐसा जायफल उत्तम होता है और जो तौलमें हलका हो,शब्दहीन हो रूखे अंगवला हो, ऐसा जायफल निंदनीय है ।

जातिफलगुणाः ।

जातीफलं रसं तिक्तं तीक्ष्णोष्णं रोचनं लघु ।
कटुकं दीपनं ग्राहि स्वर्यं श्लेष्मानिलापहम् ॥
निहन्ति मुखवैरस्यं मलदौर्गन्ध्यकृष्णताम् ।
कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहृद्रुजः ।(भावप्रकाश)

अर्थ-जायफल-रसमें कडवा, तीक्ष्ण, गरम, रोचक, हलका, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, स्वरको सँभालनेवाला तथा कफ, वात, मुखकी विरसता, मलकी दुर्गन्ध और कालापन, कृमि, खांसी, वमन, शोष, पीनस और हृदयरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

जातीफलं जातिकोशं तृष्णाशूलविनाशनम् । (केचित्)

अर्थ-जायफल-तृषा और शूलका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

जातीफलं कषायोष्णं कटुकण्ठामयार्तिहृत् ।
वातातीसारमेहघ्नं वृष्यं दीपनदं लघु ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-जायफल-कषैला, गरम, चरपरा, कण्ठरोगहारक, वातातिसारनिवारक, प्रमेहनाशक, वीर्य्यजनक,जठराग्निको दीपन करनेवाला और हलका है ।

अस्य तैलगुणाः ।

तैलं जातीफलोद्भूतं समुत्तेजनमग्निदम् ।
जीर्णातिसारशमनमाध्मानाक्षेपशूलहृत् ॥
आमवातहरं बल्यं दन्तवेष्टव्रणार्तिनुत् । (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-जायफलका तेल-उत्तेजक, अग्निजनक, जीर्णातिसारनिवारक आध्मानहर्त्ता, आक्षेपनाशकर्त्ता, शूलनाशक, आमवातहारक बलकारक तथा दन्तवेष्ट और व्रण रोगको दूर करे है।

विवरण-गुल्म होताहै, फल जामुनके समान होता है, इसकी छालके भीतर लाल गुच्छा होताहै। उसको जावित्री कहते हैं कुछ कालमें उसका वर्ण पीला पडजाताहै, उसके भीतर कठिन वल्कलका बीज होताहै, तोडनेसे जायफल कहते हैं, इसकी उत्पत्ति जावा बताविया और पिनाङ्गके टापुओंमें होतीहै इसका चित्र ऊपर दिखलाया है।

जातीपत्री नामानि।

जातीकोषा जातिपत्री सुमनःपत्रिकापि च।

अर्थ-जातीकोषा, जातिपत्री, सुमनः पत्रिका (जातीकोषी, सुरमनःपत्री, मलाती, पत्रिका, सौमनसायिनी और जातीफलत्वक्)

हिन्दीभाषामें	जावित्री।
वंगभाषामें	जैत्री, जयित्री।
मराठीभाषामें	जायपत्री।
गुजरातीभाषामें	जावंत्री।
कर्णाटकीभाषामें	जायपत्री।
तैलङ्गीभाषामें	जाजिपत्री।
इंग्रेजीभाषामें	मेस Mace
लैटिनभाषामें	मिरिष्टिका फेग्रन्स् Myristica Fragrans
फारसी भाषामें	जंवित्री। बजवार।
अरबी भाषामें	विसवासा।

अस्या गुणाः।

जातीफलस्य त्वक्प्रोक्ता जातीपत्री भिषग्वरैः।
जातीपत्री लघुः स्वादुः कटूष्णा रुचिवर्णकृत्॥
कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वैद्यलोक जायफलकी त्वचाको जावित्री कहतेहैं।

गुण। जावित्री-हलकी, स्वादिष्ठ, चरपरी, रुचिजनक, वर्णकारक तथा कफ, खांसी, वमन, श्वास, तृष्णा, कृमि और विषनाशक है।

अपिच ।

जातिपत्री कटुस्तिक्ता सुरभिः कफनाशिनी ।
वक्त्रवैशद्यजननी जाड्यदोषनिकृन्तनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-जावित्री, चरपरी, कडवी, सुगन्धि, कफनाशक वक्त्रवैशद्यजनक अर्थात् मुखको स्वच्छ करनेवाली और जडताको दूर करे है।

अन्यच्च ।

जातिपत्री कटुः स्निग्धाग्निकृद्दुर्गन्धनाशिनी । (केचित्)

अर्थ-जावित्री, चरपरी, स्निग्ध, अग्निजनक और दुर्गंधनाशक है।

विवरण-जावित्री जायफल एकही वृक्षसे होतेहैं। सुमात्रासिंहल, पिनाङ्गआदि देश और हिन्दोस्तानी महासमुद्रके टापुओंमें जायफल अधिकतासे होताहै। देखनेमें सुंदर हरे रंगका होताहै। आजकल दक्षिण देशमें भी इसकी कापन् होती है, जायफलके ऊपरकी छाल फटकर जो कुछ लाल लाल नाजसा निकलताहै, उसीको जावित्री कहते हैं। इस फलके बीजको जायफल कहते हैं। सुगन्धिवाली होनेसे जावित्री पानके साथ खाई जातीहै। बीजसे तेल निकलताहै।

जायफलको पकाकर अर्क निकाल लियाजाताहै इस अर्कसे हैजेकी पियास दूर होतीहै।

जावित्रीकी मात्रा साढतीन ३॥ मासेकी है।

स्थूलैलानामानि ।

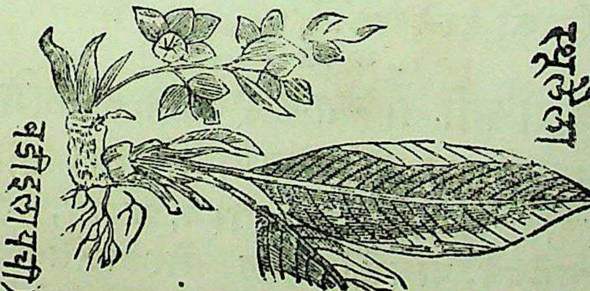

एला स्थूलैला बहुला मालेया ताडकीफलम् ।

अर्थ-एला, स्थूलैला, बहुला, मालेया, ताडकीफल, (स्थूला, बृहदेला, त्रिपुटा, त्रिदिवोद्भवा, सुरभित्वक्,महिला, कन्या-कुमारी कुमारिका, पृथ्वी, गोपुटा, कायस्था, कान्ता, घृताची, भद्रैला, गर्भसम्भवा, इन्द्राणी, ऐन्द्री, दिव्यगन्धा, निष्कुटी, निष्काटि, चर्म-

सम्भवा, बाला, बलवती, एलाकी सागरगाभिनी, गन्धालीगर्भ आर महैला)

हिन्दीभाषामें	बडीइलायची, इलायची, पूर्वी इलायची। लालइलायची ।
वंगभाषामें	एलाइच । बड इलाइच ।
मराठीभाषामें	थोरवेला । वैलदोडे ।
गुजरातीभाषामें	मोठी एलची । एलचा ।
कर्णाटकीभाषामें	परडूलक्की ।
तैलिङ्गभाषामें	पेद्द एलक्कुलु । एलुक्कचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	एलम् ।
इंग्रेजीभाषामें	लार्ज-कोर्डामोम् । Large Cardamom
लैटिन्भाषामें	एमोमं सुव्युलेटम् ।Amomum Sukhulatum
फारसीभाषामें	हलै कलां ।
अरबीभाषामें	काकले किबार ।

स्थूलैलागुणाः ।

स्थूलैला रक्तपित्तघ्नी वमिशुक्राश्मजिद्धिमा ।
तृष्णा हृल्लासकण्डूघ्नी पित्तश्लेष्मामयापहा ॥ (ग०नि०)

अर्थ-बडीइलायची-रक्तपित्तनाशक, वमननिवारक, शुक्रनाशक है, पथरीको दूर करनेवाली, शीतल तथा तृषा, हल्लास, कण्डू, पित्त और कफरोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

स्थूलैला रोचनी तीक्ष्णा लघूष्णा कफवातजित् ।
सुगंधिः पाचिका शीता चाग्निदीप्तिकरी मता ॥

अर्थ-बडी इलायची-रुचिकारक, तीक्ष्ण, हलकी, गरम, कफवातनाशक, सुगन्धित, पाचक, शीतल और अग्निदीपन करनेवाली है।

अपिच ।

स्थूलैला कटुका पाके रसे चानलकृल्लघुः ।
रूक्षोष्णा श्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषापहा ॥
हृल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ॥ (भा०)

अर्थ-बडीइलायची-पाक और रसमें चरपरी है । अग्निजनक है, हलकी है, रूखी और गरम है तथा कफ, रक्त, पित्त, कण्डू, श्वास, तृषा, हल्लास, विष, वस्तिरोग, मुखरोग, शिरोरोग, वमन और कासका नाश करे है ॥

अन्यच्च ।

स्थूलैला कटुका रूक्षा कोष्ठबन्धतृट्शूलनुत् । (क्वचित्)

अर्थ-बडी इलायची-चरपरी, रूखी तथा कोष्ठबद्धता, पियास और शूलको निर्मल करे है ।

सूक्ष्मैलानामानि ।

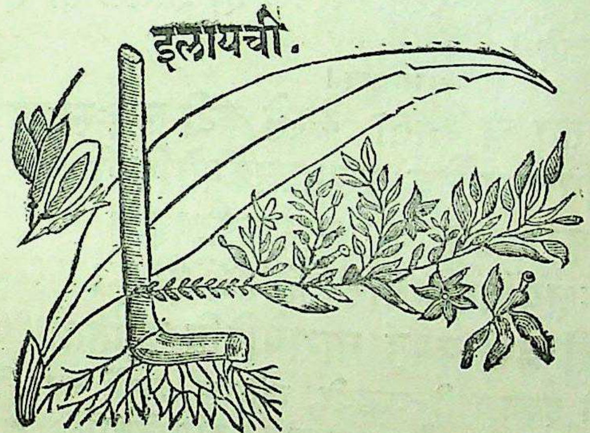

वयःस्था तीक्ष्णगंधा च सूक्ष्मैला द्राविडिस्त्रुटिः ।

अर्थ-वयःस्था, तीक्ष्णगन्धा, सूक्ष्मैला, द्राविडि, त्रुटि, (उपकुञ्चिका, कोरंगी, भृंगपर्णिका, उपकुञ्चिका, तुत्था, त्रिपुटा, क्षुद्रैला, त्रिपुटी, छर्दिकारिपु, त्वचिसुगन्धा, पुटिका, चन्द्रसम्भवा, कपोतवर्णी, दिवोद्भवा, चन्द्रबाला, बहुला, निष्कुटि, कुनटी, गौरांगी, गर्भारा, गन्धफालिका, सुगन्धि, चान्द्रिका, और श्वेतैला)

हिन्दीभाषामें	छोटी इलायची, गुजराती इलायची, सफेद इलायची ।
वंगभाषामें	छोटएलाच-गुजराती एलाइच ।
मराठीभाषामें	वेलची ।

गुजरातीभाषामें	एलची कागदी ।	
तैलिंगीभाषामें	एलाकु, चिल्लयालकुलु-एल्लकप ।	
द्राविडीभाषामें	एलोकुल्लकापु ।	
इंग्रेज़ीभाषामें	शिलिसर, कार्डामोम् ।	Sheleser, Cardamom
लैटिन्भा०	इलेटिरिया कार्डामाम्	Eleteria, Cardamom
फारसीभाषामें	हैल, हिल, हाल ।	
अरबीभाषामें	काकिलेसिगार ।	

अस्य गुणाः ।

एला सूक्ष्मा कफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत् ।
रसे तु कटुका शीता लघ्वी वातहरा मता ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-छोटी इलायची-कफ, कास, श्वास, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाशकरे है, रसमें चरपरी है, शीतल है, हलकी है और वातविनाशकहै ।

अन्यच्च ।

त्रुटिस्तिक्ता च शीता च रसे कटी लघुःस्मृता ।
सुगंधिःपित्तला चैव मुखमस्तकशोधिनी ॥
गर्भपातकरी रूक्षा वातश्वासकफापहा ।
कासार्शःक्षयविषरुग्बस्तिकंठरुजं हरेत् ।
मूत्राश्मरीं व्रणं कण्डूं नाशयेदिति कीर्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ-गुजराती इलायची-कडवी, शीतल, रसमें चरपरी, हलकी सुगन्धी, पित्तजनक, मुख और मस्तकको शोधनेवाली है, गर्भको गिरानेवालीहै, रूखी है तथा वात, श्वास, खांसी, बवासीर, क्षयरोग, विषविकार, वस्तिरोग, कण्ठरोग, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, घाव, और खुजलीका नाशकरे है ।

द्विविधा एलागुणाः ।

एलाद्वयं शीतलतिक्तमुष्णं सुगंधिपित्तार्त्तिकफापहारी ।
करोति हृद्रोगमलार्तिवस्तिपुंस्त्वघ्नमत्र स्थविरो गुणाढ्यः ॥
(रा० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी इलायची-शीतल, चरपरी, गरम, सुगंधि पित्तरोगको शांतिकरै, कफका नाशकरै, हृदयरोगको उत्पन्नकरै, तथा मल, वस्तिरोग, पुंस्त्व (पुरुषता) नाशक है । इन दोनोंमें बड़ी इलायची अधिक गुणवाली है ।

विवरण–छोटी इलायचीका क्षुप अदरखकी समान होताहै, फूल सफेद, और लाल इलायचीके सुगन्धकी समान होते हैं । इसके बीज काले और रसभरे होतेहैं ।

मात्रा बड़ी इलायचीकी १॥। मासे, छोटी इलायचीकी १ मासे ।

कङ्कोलनामानि ।

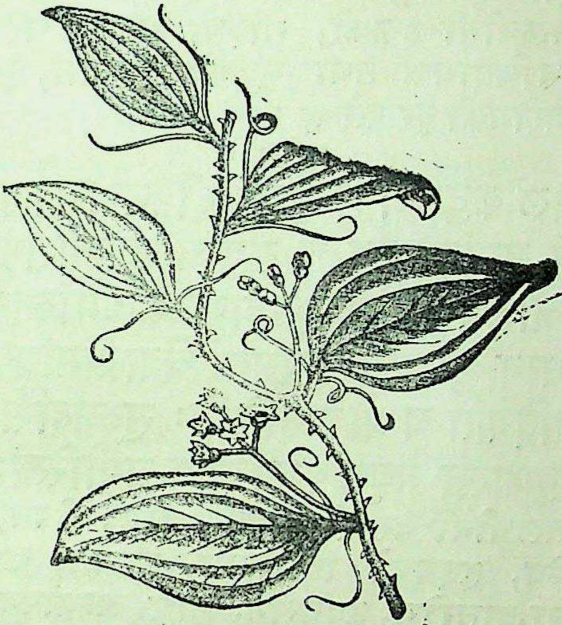

कङ्कोलकं कोषफलं कोलकं तैलसाधनम् ।

अर्थ–कङ्कोलक, कोषफल, कोलक, तैलसाधन, (कङ्कोल, कोषफल, फल, कोरक, काकोल, गन्धव्याकुल, कृतफल, कटुकफल, द्वेष्य, स्थूलमरिच, कंकोल, माधवोचित, कट्फल, काल, मरिच, कटुक, कोल, मारिच, मागधोषित, कृतफल, द्वीपसम्भव और सुगन्धिफल)

हिन्दीभाषामें	शीतलचीनी-कवाबचीनी, चिनीकवाब, कंकोला।
वंगभाषामें	कांकला ।
मराठीभाषामें	ककोळ, कापुरचीनी ।
गुजरातीभाषामें	चणकवाब ।
कर्णाटकीभाषामें	कक्कोलद्रुय ।
तैलङ्गीभाषामें	कवाकचीनी ।
अँग्रेजीभाषामें	क्युबेव पीपर । Cubeb Pepper
लैटिन्भाषामें	क्यूबेबा ऑफिसिनेलिस। Cubeba, *Officinalis*

फारसीभाषामें	कबाबह् ।
अरबीभाषामें	कबास, हेबुल, ऊरस, कबाबा ।

अस्य गुणाः ।

कंकोलं लघु तीक्ष्णोष्णं तिक्तं हृद्यं रुचिप्रदम् ।
आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयांध्यहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–शीतलचीनी–हलकी, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, हृदयको हितकारी, रुचिदायक तथा मुखकी दुर्गन्धता, हृदयरोग, कफ, वात और नेत्ररोगको दूर करे है ।

अपिच ।

कंकोलं कटुकं तिक्तमुष्णं दीपनपाचकम् ।
रुच्यं सुगन्धि हृद्यं च लघु च कफनाशकम् ॥
मुखजाड्यं वातरोगं हृद्रोगं च कृमींस्तथा ।
अन्धत्वं मुखदौर्गन्ध्यमामं चैवाग्निमांद्यकम् ॥
नाशदियेति च प्रोक्तमृषिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ।
एते गुणास्तु सुबृहत्कंकोलस्य समीरिताः ॥

अर्थ–शीतलचीनी-चरपरी, कडवी, गरम, दीपन, पाचन, रुचिकारी, सुगन्धि, हृदयको हितकारी, हलकी, कफनाशक तथा मुखकी जडता, वातरोग, हृदयरोग, कृमि, अन्धापन, मुखकी दुर्गन्धता और मंदाग्निको नाश करेहै, बडी शीतलचीनीके गुण इसीके समान जानने ।

नागकेशरनामानि ।

चाम्पेयः केसरो नागकेशरः कनकाह्वयः ।
महौषधं राजपुष्पः फलकः स्वरघातनः ॥

अर्थ–चाम्पेय, केसर, नागकेशर, कनकाह्वय, महौषध, राजपुष्प, फलक, स्वरघातन (केशर, काञ्चनाह्वय, सुवर्णाख्य, भुजङ्गाख्य, षट्पदप्रिय, इभाख्य, पुष्परेचन, नागाख्य, सुवर्णाख्य, नागकेशर, केशरी, किञ्जल्क, नागकिञ्जल्क, नागीय, काञ्चन, सुवर्ण, हेमकिञ्जल्क, रुक्म, हेम, पिञ्जर, फणिकेशर, पुन्नागकेशर, नागपुष्प नाग)

हिन्दीभाषामें	नागकेशर ।
वङ्गभाषामें	नागेश्वर ।
मराठीभाषामें	नागकेशर । तांबडा नागकेसर ।
गुजरातीभाषामें	नागकेशर ।
कर्णाटकीभाषामें	नागकेशर ।

तैलङ्गीभाषामें	नागकेशरालु ।
तामिली भाषामें	नांगल ।
वम्०	नागचम्प ।
लैटिन्भाषामें	ओक्रोकार्पस लोंगिफोलियम्‌मेस्यूआफेरिया Ocrocorpus longfolium Mesuoferrea
अरबीभाषामें	नारमुष्क ।

अस्यगुणाः ।

नागपुष्पं कषायोष्णं रूक्षं लघ्वामपाचनम् ।
ज्वरकण्डूतृषास्वेदच्छर्दिहृल्लासनाशनम् ॥
दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-नागकेशर-कषैली, गरम, रूखी, हलकी, आमपाचक तथा ज्वर, खुजली, पियास,पसीना वमन, उबकाई, दुर्गन्ध,कोढ विसर्प, कफ, पित्त और विषको दूर करेहैं ।

अपि च ।

नागकेशरकं तिक्तं कषायं चामपाचकम् ।
किञ्चिदुष्णं लघूरूक्षं पित्तच्छर्दिकफापहम् ॥
खुडवातं रक्तरुजं वातं कण्डूं च हृद्व्यथाम् ।
स्वेददौर्गन्ध्यविषतृट्कुष्ठवीसर्पनाशनम् ॥
वास्तिपीडावातरक्तकण्ठमस्तकशूलनुत् । (नि० र०)

अर्थ-नागकेशर-कडवी, कषैली, आमपाचक, किञ्चित् गरम, रूखी, हलकी तथा पित्त, वान्ति, कफ, खुडवात, रुधिररोग, वात, कण्डू, हृदयकी पीडा, पसीना, दुर्गन्ध, विष, तृषा, कोढ, विसर्प, वस्तिपीडा, पसीना, दुर्गन्ध, विष, तृषा, कोढ, विसर्प, वस्तिपीडा, वातरक्त, कण्ठरोग और मस्तकशूलका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

केसरं विषवीसर्परक्तार्शोवमिकुष्ठहृत ।
हृल्लासखुडदौर्गन्ध्यतृष्णापित्तबलासजित् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-नागकेशर-विष, विसर्प, रक्तरोग, अर्श, वमन,कुष्ठ, हृल्लास, वातरक्त, दुर्गन्ध, तृषा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुन्नागवृक्षकी केशरको और नागचंपाकी कलीको नागकेशर कहतेह, इसकी दो जाति ह, कोंकण, गोवाकी ओरसे आती है ।

त्वचगुडत्वङ्गनामानि ।

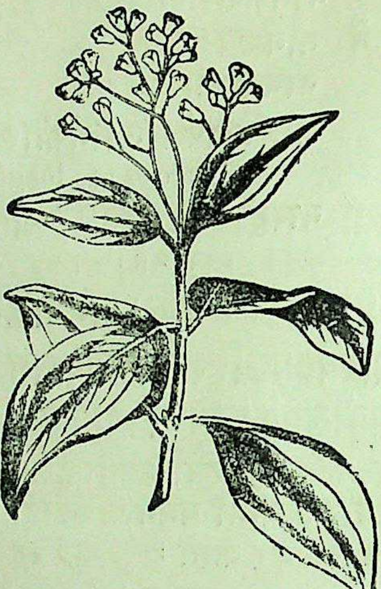

भृङ्गं वरांगं रामेष्टं विज्जुल त्वचमुत्कटम् ।
चोलं गुडत्वचं पत्रं चोचं सुरभिवल्कलम् ॥

अर्थ-भृंग, वराङ्ग, रामेष्ट, बिज्जुल, त्वच, उत्कट, चोल, गुडत्वच, पत्र, चोच, सुरभिवल्कल (सूतकट, त्वक्पत्र, वरांगक, त्वचा, हृद्य त्वक्, वल्कल, मुखशोधन, शकल, सिंहल, बल्य, सुरस, कामवल्लभ, बहुगन्ध, वनप्रिय, लटपर्ण, गन्धवल्कल, वर, शीत, त्वक्पत्र, सैंहल, रामवल्लभ, तनुत्वक् दारुसिता)

हिन्दीभाषामें	तज-दालचीनी ।
वंगभाषामें	दारुचिनी ।
मराठीभाषामें	दालचिनी ।
गुजरातीभाषामें	तज ।
कर्णाटकीभाषामें	तज ।
तैलिङ्गीभाषामें	सनलिंगु । डालचीनी, सनाल लींगपुता ।
तामिलीभाषामें	कारुवा, करु, उपट्टाई ।
इंग्रेजीभाषामें	सिन्नामन् वार्क Cinnamon Bark
लैटिन्भाषामें	सिन्नामोमी कोर्टेक्स । [छाल] सिन्नामोमं । ओफि सिलिस । [वृक्ष] Cunnamomi Cartex C. offlcinalis Cinnomomuw Cylnmcuw

फारसीभाषामें	दार्चिनी ।
अरबीभाषामें	सालीखा ।
ब्रह्मीभाषामें	मिट्ख्यावो ।
लुसाईभाषामें	थ्वाक, थ्विन ।

दारुसितागुणाः ।

उक्ता दारुसिता स्वाद्वी तिक्ता चानिलपित्तहृत् ।
सुरभिः शुक्रलावण्या मुखशोषतृषापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दालचीनी स्वादिष्ठ, कडवी, वात पित्तनाशक, सुगन्धि, शुक्रजनक, शरीरको सुंदर करनेवाली तथा मुखशोष और तृषाको हरनेवाली है ।

अपि च ।

त्वचं तु कटुकं शीतं कफकासविनाशनम् ।
शुक्रामशमनं चैव कण्ठशुद्धिकरं लघु ॥ (राजनि०)

अर्थ-तज-चरपरी, शीतल, तथा कफ और खांसीको दूर करै, शुक्र और आमको शान्ति करे और हलकी है ।

अपिच ।

त्वचं लघूष्णं कटुकं स्वादु तिक्तं च रूक्षकम् ।
पित्तलं कफवातघ्नं कण्डूामरुचिनाशनम् ॥
हृद्बस्तिरोगवातार्शःकृमिपीनसशुक्रहृत् । (भा०प्र०)

अर्थ-तज-हलकी, गरम, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी, रूखी, पित्तवर्द्धक, कफवातनाशक, तथा कण्डू, आम, अरुचि, वस्तिरोग, हृदयरोग, वातार्श, कृमि, पीनस और शुक्रको हरे है ।

अन्यच्च ।

त्वक्कट्वी पित्तला स्वाद्वी कंण्ठशुद्धिकरी लघुः ।
रूक्षा तिक्ता वस्तिशुद्धिकारिणी चोष्णदा मता ॥
कफहिक्कावातकासकण्डूहृद्रोगनाशिनी ।
आमं च वस्तिरोगं च पीनसं च विषं तथा ॥
शुक्रं चार्शःकृमींश्चैव नाशयेदिति कीर्तिता ।
तनुत्वक्सुरभिस्तिक्ता स्वाद्वी बलकरी मता ॥
धातुवृद्धिकरी वातपित्ततृण्मुखदोषनुत् ।

अर्थ-तज-चरपरी, पित्तको उत्पन्न करनेवाली, स्वादिष्ठ, कण्ठकी शुद्धि करनेवाली, हलकी, रूखी, कडवी, वस्तिशोधक, गरम तथा कफ, हुचकी, वात, खांसी, खुजली, हृदयरोग, आम, वस्तिरोग, पीनस, विष, शुक्र, बवासीर और कृमिरोगका नाश करे है । दालचीनी-सुगन्धि, कडवी, स्वादिष्ठ, बलकारक, धातुवर्धक, तथा वात पित्त, तृषा और मुखरोगको दूर करे है ।

त्वचतैलगुणाः ।

वह्निमान्द्यानिलहरमाध्मानाक्षेपनाशनम् ।
वान्त्युत्क्लेशप्रशमनं संग्राहि दशनार्तिहृत् ॥
त्वाचं तैलं रजःस्रावि तोये क्षिप्तं निमज्जति।(आ०सं०)

अर्थ-तजका तेल-मंदाग्नि, वात, अफरा और आक्षेपका विनाशक है, तथा वान्ति और उत्क्लेशका शान्ति करे है, संग्राहीहै, दन्तरोगको दूर करे है, रक्तस्राव अर्थात् रुधिरके गिरनेसे इसको पानीमें डालकर लगाना चाहिये ।

विवरण-छोटा पेड होता है । सिंहल, मलाबार, कोचीन, चीन, सुमात्रा, बजाभा आदि देशोंमें अधिकतासे होती है, इसके पत्ते तमालपत्रकी समान होते हैं, पत्तोंको सुखानेपर उनमेंसे लौंगकी समान सुगन्धि आतीहै। वृक्षकी डंडीके ऊपर सफेद फूल आता है, फूलमें गुलाबकी समान सुगन्धि आती है। फल करोंदेके समान होते हैं, इनमेंसे तेल निकलता है, इसके फूलोंका अर्क और इत्र बनाते हैं । सिंहलद्वीपकी दालचीनी बहुत उत्तम होती है। वृक्षकी पतली छालकोही दालचीनी कहते हैं ।

तेजपत्रनामानि ।

तेजपत्रं गन्धजातं पत्रकं पाकरञ्जनम् ।

अर्थ-तेजपत्र, गन्धजात, पत्रक, पाकरञ्जन, (पत्र, दलाह्वय, राम, गोमेद, वसनाह्वय, गोमेदक, पत्राख्य, छदन, दल, पालाश, अंकुश, वास, तापस, सुकुमारक, वस्त्र, तमालक, गोपन, वसन तमाल, सुरनिर्गन्ध, तमालपत्र, इष्टगन्ध, शीतरस, सुरस और रोमश)

हिन्दी भाषामें	तेजपात ।
वङ्गभाषामें	तेजपाता । तेजपत्र ।
मराठी भाषाम	तमालपत्र । संभारपान ।
गुजराती भाषामें	तमालपत्र ।

कर्णाटकी भाषामें	पत्रक ।	
तैलिङ्गी भाषामें	आकुपत्री ।	
इंग्रेजी भाषाम	फोलिया मालाबाथी ।	Folia Malabathy
लैटिन् भाषामें	सितामोमं टमाला ।	Cuinamodmaw Tamala
फारसी भाषामें	सादरस् ।	
अरबी भाषामें	साजिज ।	

अस्य गुणाः ।

पत्रमुष्णं लघुश्लेष्महृल्लासार्शोनिलापहम् ।
हृद्रोगं पीनसं चापि त्रिदोषं चैवनाशयेत् ॥(नि०र०)

अर्थ-तेजपात-गरम, हलका तथा कफ, उबकाई, बवासीर, वात, हृदयरोग, पीनस और त्रिदोषनाशक है ॥

अपिच ।

पत्रकं लघुतिक्तोष्णं कफवातविषापहम् ।
वस्तिकण्डूत्रिदोषघ्नं मुखमस्तकशोधनम्॥ (राजनि०)

अर्थ-तेजपात-हलका, कडवा, गरम, वात, विष, वस्तिरोग, खुजली और त्रिदोषनाशक है, मुख और मस्तकशोधक है ॥

अन्यच्च ।

पत्रकं मधुरं किञ्चित्तीक्ष्णोष्णं पिच्छिलं लघु ।
निहंति कफवातार्शोहृल्लासारुचिपीनसान्॥(भावप्रकाश)

अर्थ-तमालपत्र (तेजपात)-मधुर, कुछेक तीक्ष्ण, गरम, पिच्छिल, हलका, तथा कफ वात, बवासीर, हल्लास, अरुचि और पीनस रोगका नाशक है । तेजपत्र तजके पत्तोंकी समान होतेहैं, सुगन्धिके लिये मसालेमें डाले जातेहैं । मात्रा तीन ३ मासेकी है ।

तालीसपत्रनामानि ।

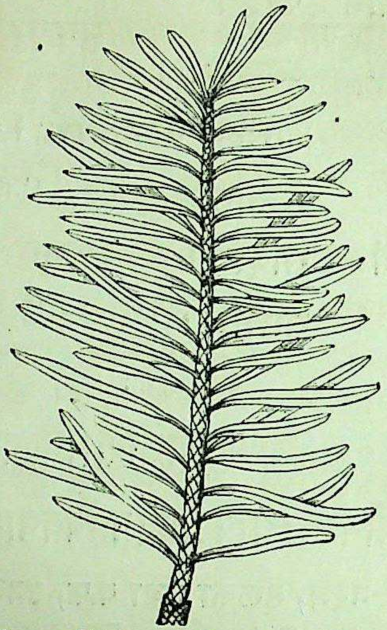

तालीसपत्रं तालीसं धात्रीपत्रं शुकोदरम् ।
अपरं ग्रंथिकापत्रं पत्राढ्यं तुलसीच्छदम् (मदन विनोद)

अर्थ-तालीसपत्र-तालीस, धात्रीपत्र, शुकोदर, ग्रंथिकापत्र, पत्राढ्य, तुलसीछद, (पत्राख्य, अर्कबंध, करिपत्र, करिच्छद, नील, नीलाम्बर, ताल, तालीपत्र, तमाह्वय, तालीसपत्रक, तामलकीदल, मुखरोगहर, हृद्य, सुपत्र, अर्कवाह, करीपत्र, आमलकीपत्र और घनच्छद)

हिन्दीभाषामें	तालीसपत्र-तालिशपत्र ।
वंगभाषामें	तालीशपत्र ।
मराठीभाषामें	लघुतालीसपत्र।
कर्णाटकीभाषामें	तालीसपत्र ।
तैलङ्गीभाषामें	तालीशपत्री ।
गुजरातीभाषामें	तालीसपत्र ।
वम्०	ताम्बठ।
द्राविडीभाषामें	पनिअल ।
लैटिनभाषामें	टेकसस् बेकेटा । Taxus bacata
फारसीभाषामें	जरनव।
अरबीभाषामें	तालीसफर ।

तालीसपत्रगुणाः ।

तालीसं लघु तीक्ष्णोष्णं श्वासकासकफानिलान् ।
निहंत्यरुचिगुल्मामवह्निमांद्यक्षयामयान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-तालीसपत्र-लघु, तीक्ष्ण गरम तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात अरुचि, गुल्म, आम मंदाग्नि और क्षयरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

तालीसपत्रं तिक्तोष्णं मधुरं कफवातनुत् ।
कासहिक्काक्षयश्वासछर्दिदोषविनाशकृत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तालीसपत्र-कडवे, गरम, मधुर, कफवातनाशक तथा खांसी हुचकी क्षयरोग, श्वास और वमनरोगको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

तालीसपत्रं मधुरं तिक्तं चोष्णं लघु स्मृतम् ॥
तीक्ष्णं स्वर्यं च हृद्यं च अग्निदीप्तिकरं मतम् ॥
श्वासं कासं कफं वातं क्षयंगुल्मारुचीस्तथा ।
रक्तदोषं वमिं चाममग्निमांद्यं च नाशयेत् ।
मुखरोगं च पित्तं च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-तालीसपत्र-मधुर, कड़वे, गरम, हलके, तीक्ष्ण, स्वरको सँभालनेवाले, हृदयको हितकारी, अग्नि दीपन करनेवाले तथा श्वास, खांसी, कफ, वात, क्षय, गुल्म, अरुचि, रुधिरविकार, वान्ति, आमदोष, अग्निमान्द्य, मुखरोग और पित्तका नाश करे हैं।

विवरण-वृक्ष अत्यन्त बडा होताहै देखनेमें अधिक तरफाऊसे मिलजाता है, इसके लट्ठेके तखते चीरकर चैकी बक्तोंमें लगाये जातेहैं । व्यवहारपत्र ।

जटामांसीनामानि ।

जटामांसी जटी पेषी लोमशा जटिला मिसिः ।
मांसी तपस्विनी हिंस्रा मिषिका चक्रवर्तिनी ॥

अर्थ-जटामांसी, जटी, पेषी, लोमशा, जाटिला, मिसि, मांसी, तपस्विनी, हिंस्रा, मिषिका, चक्रवर्तिनी, (नलद, वह्निनी, कृष्णजटा, किरातिनी, भूतजटा, क्रव्यादी, पिशिता, पिशी, पेशी, पेशिनी, जटा, मांसिनी, जटाला, नलदा, मेषी. तामसी, माता, अमृतजटा, जननी, जटावती, मृगभक्षा, जडामांसी, मिसि, मिसी, मिसिका, मिषि)

गन्धमांसीनामानि ।

द्वितीया गन्धमांसी च केशी भूतजटा स्मृता ।
पिशाची पूतनाचैव भूतकेशी च लोमशा ।
जटाला लघुमांसी च ख्याता अंकाभिधाह्वया ।

अर्थ-गन्धमांसी, केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, भूतकेशी, लोमशा, जटाला, लघुमांसी, (पिशाचिका और श्वेतकेशी)

आकाशमांसीनामानि ।

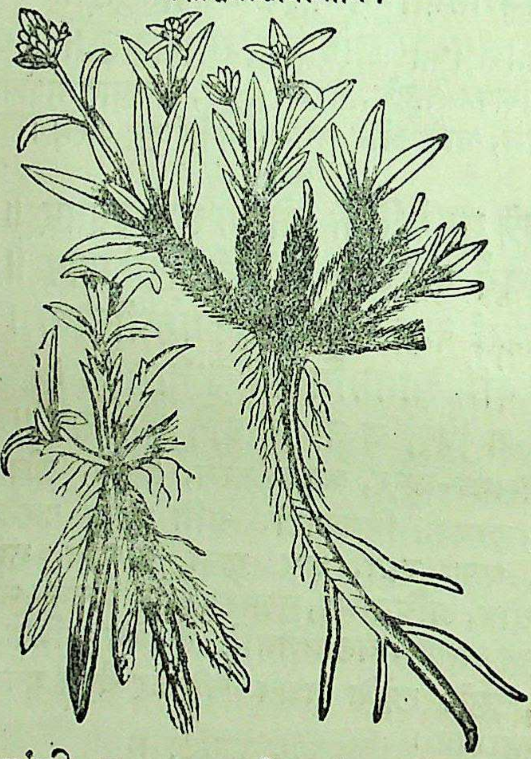

आकाशमांसी सूक्ष्मान्या निरालम्बा खसम्भवा ।
सेवाली सूक्ष्मपत्री च गौरी पर्वतवासिनी॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-आकाशमांसी, सूक्ष्मजटामांसी, निरालम्बा, खसम्भवा, सेवाली सूक्ष्मपत्री, गौरी, पर्वतवासिनी ।

हिन्दीभाषामें	जटामांसी, बालछड, कनुचर ।
वंगभाषामें	जटामांसी ।
मराठीभाषामें	जटामांसी ।
गुजरातीभाषामें	वालछड ।
कर्नाटकीभाषामें	बहुलगन्धजटामांसी आकाशजटामांसी।

तैलङ्गीभाषामें	जटामांसी ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पाइकनाड Spikenard
लैटिन्भाषामें	नार्डोष्टेकिस् जटामांसी। Nordostachys
फारसीभाषामें	सुबूल् ।
अरबीभाषामें	सुबलुत्तीब ।

जटामांसीगुणाः ।

मांसी तिक्ता कषाय च मेध्या कांतिबलप्रदा ।
स्वाद्वी हिमा त्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बालछड, कडवी, कषेली, मेधाजनक, कान्तिकारक, बलदायक, स्वादिष्ठ, शीतल, तथा त्रिदोष, रुधिरविकार, दाह विसर्प और कुष्ठरोगको नष्ट करे है ।

अपिच ।

सुरभिस्तु जटामांसी कषाया कटुशीतला ।
कफहद्भूतदाहघ्नी पित्तघ्नी मोदकांतिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जटामांसी (बालछड)-कषेली, चरपरी, शीतल, कफनाशक, भूतदाह और पित्तका नाशक, आनन्दको उत्पन्न करे, और कांतिको बढानेवाली है ।

अन्यच्च ।

अनुलेपनज्वरहृद्रूक्षतां चैव नाशयेत् । (राजवल्लभ)

अर्थ-इसका लेप करनेसे ज्वर और रूक्षता दूर होती है ।

गन्धमांसीगुणाः ।

गन्धमांसी तिक्तशीता कफकण्ठामया पहा ।
रक्तपित्तहरा वर्ण्या विषभूतज्वरपहा ॥

अर्थ-गन्धमांसी,कडवी, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, रक्त,पित्त, विष भूत और ज्वरको दूर करेहै तथा वर्णको उज्ज्वल करे है ॥

आकाशमांसीगुणाः ।

अभ्रमांसी हिमा शोफव्रणनाडीरुजापहा ।
लूता गर्दभजालादिहारिणीवर्णकारिणी ॥ (राजनि ०)

अर्थ-आकाशमांसी-शीतल तथा सूजन और नाडीरोगनाशक है, लूता, गर्दभक, जालादिनिवारक और शरीरके रंगको उज्ज्वल करेहै ।

अन्यच्च ।

जटामांसी तु तुवरा शीतला कांतिकारका ।
बल्या कट्वी स्वादुतिक्ता कफांतर्दाहपित्तहा ॥
विसर्पकुष्ठत्वग्दोषभूतबाधाजरापहा ।
दाहंत्रिदोषं वातं च रक्तदोषं विषं हरेत् ॥
कृष्णा सुगंधा मांसी तु केश्या सुरभितिक्तका ।
वर्ण्या च शीतला प्रोक्ता कफकण्ठरुजाहरा ॥
भूतबाधारक्तपित्तरक्षोबाधाज्वरापहा ।
विषवातहरा चान्ये गुणा मांसीवदीरिताः ॥
आकाशमांसी वर्ण्या तु शीतला व्रणशोथहा ।
जालगर्दभकं लूताविस्फोटं च मसूरिकाम् ॥
नाडीव्रणं विसर्पादि नाशयेदितिकीर्तिता ॥

अर्थ-जटामांसी (बालछड)-कषेली, शीतल, कान्तिकारका चरपरी, स्वादिष्ठ,कडवी तथाकफ, अन्तर्दाह,पित्त,विसर्प,कोढ बलकारक, त्वचाके रोग, जरा, दाह, त्रिदोष, वात, रक्तविकार और विषका विनाश करेहै । सुगन्धजटामांसी-केशोंको उज्ज्वल करनेवाली, सुगान्ध, कडवी, वर्णको सुंदर करनेवाली शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, भूतबाधा, रक्तपित्त, राक्षस बाधा, ज्वर, विष और बादीका नाश करेहै ॥ आकाशजटामांसी-शरीरके रगका शौभायमान करनेवाली, शीतल तथा व्रण, शोथ, जालगर्दभरोग, लूता विस्फाटक, मसूरिका(शीतलामाता) नाडीव्रण (नासूर) आर विसर्पादि अनेक रोगोंको दूर करेहै ।

विवरण-जटामांसी गुल्मजातिकी वनस्पति है, इसके पत्ते सरजीवनकी समान होतेहैं,यह हिमालयके जंगलमें उत्पन्न होतीह। इसकी जडपर धूसर रंगके रूँएँ जमे रहतेहैं, फूल गुलाबी आमा और गुच्छोंमें लगतेहैं ॥

व्यवहार–रुँवोंसे ढकी हुई जड बाजारमें जो जटामांसी अर्थात् बालछड बिकतीहै वह कृत्रिम बनीहुई होतीहै इस कारण देख भालके काममें लाना उचित है । मात्रा चार ४ मासेकी है ।

बहुतदिनोंसे जटामांसीका व्यवहार सुगंधि तैलादिक बनानेमें होताहै और सागनेसि आदि अंग्रेज डाक्टरलोग इसको भेलिरिन नामक इंग्रेजी औषधिकी तुल्य गुणवाली समझतेहैं, स्नायवादिकी दुर्बलतामें विशेष उपकारी होनेसे यह बहुत औषधियोंके अनुपानमें दीजातीहै, वैद्यलोक, उदरामय, श्वास, खांसी मूर्च्छादिरोगमें उसका व्यवहार करतेहैं । दक्षिणदेशमें जटामांसीसे एक प्रकारका तेल निकालकर केशोंमें लगाया जाताहै ।

प्रियंगुनामानि ।

प्रियंगुः फलिनी श्यामा गन्धफला गोवन्दनी ।
विष्वक्सेना कृष्णपुष्पी कृशाङ्गी महिलाह्वया ॥

अर्थ–प्रियङ्गु, फालिनी, श्यामा, गन्धफला गोवन्दनी, विष्वक्सेना, कृष्णपुष्पी, कृशाङ्गी, महिलाह्वया, लता (कान्ता, गुन्द्रा, कारम्भा, प्रियक, कटु, गोवर्णा, भेदिनी, मिथवल्ली, फलप्रिया, गौरी, वृत्ता, कङ्गु, कंगुनी, भंगुरा, गौरवल्ली, सुभंगा, पर्णभेदिनी, शुभा, पीता, मङ्गल्या, प्रेयसी, अङ्गनाप्रिया, वनिता, नारिवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	प्रियंगुः ।
हिन्दीभाषामें	फूलप्रियंगू प्रियंगु, फूलफेन,
वंगभाषामें	प्रियंगु, गन्धाप्रियगु ।
मराठीभाषामें	गह्वला ।
गुजरातीभाषामें	घडला ।
कर्णाटकीभाषामें	नेर्पिलगु ।
तैलिङ्गीभाषामें	प्रकणपुचेटट ।
तामिलीभाषामें	प्रियंगु ।
बम्	गहुली ।
लैटिनभाषामें	प्रुनस्–महालिबू । Prunus Mahaleb

अस्यगुणाः ।

प्रियंगुः शीतला तिक्ता तुवरानिलपित्तहृत् ।
रक्तातिसारदौर्गन्ध्यस्वेददाहज्वरापहा ॥
गुल्मतृड्वमिपमेहघ्नी तद्वद्गन्धप्रियंगुका ।

तत्फलं मधुरं रूक्षं कषायं शीतलं गुरु ॥
विबन्धाध्मानबलकृत्संग्राही कफपित्तजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-प्रियंगु-शीतल, कडवा, कषेला तथा वात, पित्त, रक्तातिसार, दुर्गन्ध, पसीना, दाह, ज्वर, गुल्म, तृषा और प्रमेहको दूर करेहैइसीके सदृश गन्धाप्रियंगुके गुण हैं ।

प्रियंगुका फल-मधुर, कषाय, भारी, शीतल तथा विबन्ध आध्मान और बलकारक है, मलरोधक तथा कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

प्रियंगुः शीतलो वांतिदाहपित्तज्वरास्रजित् ।
मुखकांतिप्रजननो गात्रदौर्गन्ध्यनाशनः ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-प्रियंगु-शीतल है वान्ति, दाह; पित्त ज्वर और रुधिरविकारको दूर करेहै तथा मुखकी शोभाको बढावेहै और शरीरकी दुर्गन्धको हारेहै ।

अन्यच्च ।

गन्धप्रियंगुस्तुवरस्तिक्तो वृष्यश्च शीतलः ।
केश्यो वांतिभ्रांतिदाहपित्तरक्तरुजस्तथा ॥
ज्वरमोहस्वेदकुष्ठमुखजाड्यतृषो हरेत् ।
वातं गुल्मं विषं मोहं मेदं चैव विनाशयेत् ।
रक्तपित्तं नाशयति बीजमस्य कषायम् ।
मधुरं शीतलं रूक्ष तुवरं ग्राहकं गुरु ॥
मलस्तम्भकरं बल्यं पित्तघ्नं कफनाशकनम्।
आध्मानकारकं चैव मुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥

अन्यसुगन्धयङ्गु

सुगग्धफलिनी शीता सुगन्धिः कुष्ठदाहनुत् ।
ज्वरं रक्तविकारञ्च नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-प्रियंगु-कषेला, कडवा, वीर्यजनक, शीतल, केशोंको उज्ज्वल करनेवाला तथा वमन, वान्ति, दाह, पित्त, रक्तरोग, ज्वर, मोह, पसीना, कोढ, मुखकी जडता, पियास, वात, गुल्म, विष, प्रमेह, मेदरोग और रक्तपित्तका नाश करेहै ।

इसक बीज-कषेले, मधुर, शीतल, रूखे, ग्राही, मलको स्तम्भन करनेवाले, बलकारक, पित्तका नाश करनेवाले, कफको दूर करनेवाले और अफारेको करनेवाले हैं ।

सुगंधप्रियंगु-(दूसरे प्रकारका प्रियंगु अर्थात् फूलप्रियंगु) शीतल सुगन्धित तथा कोढ,दाह,ज्वर और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै।*

उशीरनामानि ।

खस.

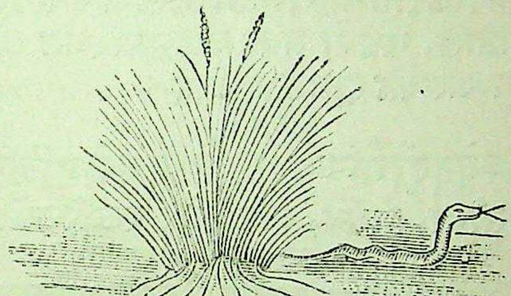

वीरणस्य तु मूलं स्यादुशीरं नलदं च तत् ।
अमृणालं च सेव्यं च समगन्धिकमित्यपि ॥

अथ-वीरण (गाडरघासकी जडको उशीर अर्थात् खस कहतेह। सं० उशीर. नलद, अमृणाल, सेव्य, समगन्धिक, (अभय,अवदाह, जलाशय, लामज्जक, लघुभय, अवदाह,इष्टकापथ, उशीर, मृणाल, लघुलय, अवदात, अवदाहेष्टकापत्र, इन्द्रगुप्त-उशीरक, जलवास, हरिप्रिय, वीर, वीरण, रणप्रिय, वीरतरु, शिशिर, शीतमूलक, वितानमूलक, दाहहरण, जलामोद, गन्धाढ्य, सुगन्धिक, सुगन्धिमूलक, सुगन्धिमूल, कम्बु, वीरण, कटायन, वीरतर, वीरभद्र, वीर और बहुमूलक)

हिन्दीभाषामें	खस, वारन, गाँडर ।
वंगभाषामें	व्याणारमूल, वेणारमूल,वीरणमूल-खस ।
मराठीभाषामें	काळावाळा ।
गुजरातीभाषामें	कालोवालो. मोथ्यसावालाजिनांगीणमूल
कर्णाटकीभाषामें	वालेरवस ।
तैलिंगीभाषामें	अवरुगट्टि, नल्ल वट्टिवेल्लु ।

---

* प्रियगु महदी महदीको कहतेहै गंध प्रियंगु गुलमहदी कहतेहैंधान्य प्रियंगु कंगुनी धान्यको कहतेहैं, लता प्रियंगु मालकंगुनी होती, यहा प्रियंगु महदी है

तामिलीभाषामें वेत्तेवर ।
धम् खसखस ।
उत् ावणा, गन्दविणा, वाधिवेरु ।
लैटिनभाषामें अन्द्रोपागन मूारकटम्। Andropagon Muricatum

उशीरगुणाः ।

उशीरं शीतलं तिक्तं दाहश्रमहरं परम् ।
पित्तज्वरार्तिशमनं जलसौगंध्यदायकम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-खस-शीतल, कडवी तथा दाह, परिश्रम और पित्तज्वरकी शान्ति करे तथा जलको सुगन्धि करेहै ॥

अपिच ।

उशीरं स्वेददौर्गन्ध्यदाहपित्तास्रगजित् ।(रा०व०)

अर्थ-खस-पसीना, दुर्गन्ध, दाह और रक्तपित्तको हरेहै ।

अन्यच्च ।

उशीरं स्वेदपित्तास्रदाहदौर्गन्ध्यनाशनम् ।
क्लमतृष्णाविषध्वंसि सतिक्तं मधुरं हिमम् ॥

अर्थ-खस-स्वेद, पित्त, रक्तविकार, दाह, दुर्गन्ध, क्लम, तृष्णा और विषको दूर करे तथा कडवी, मधुर और शीतल है ।

अपिच ।

उशीरं पाचनं शीतं स्तम्भनं लघुतिक्तकम् ।
मधुरं ज्वरहृद्वान्तिमदनुत्कफपित्तहृत् ॥
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-खस-पाचक, शीतल, स्तम्भन, हलकी,कडवी, मीठी तथा ज्वर, वमन, मद, कफ, पित्त, तृषा, रुधिरदोष,विष, वीसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ्र और व्रणरोगका नाश करेहै ।

गांडरके भी गुण इसीके समान हैं ।

विवरण-यह गांडर घासकी जड है ।

गोरोचनानामानि।

गोरोचना तु गोपित्तं वन्दनीया मनोरमा ।

अर्थ-गोरोचना-गोपित्त, वन्दनीया, मनोरमा (वन्द्या, रोचना रुचि, शोभा, रुचिरा, शोभना, शुभा, गौरी, रोचनी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, शिवा,पीता, गौतमी, गव्या,चन्दनीया,काञ्चनी, मेध्या, श्यामा, रामा, भूतविद्राविणी, गोपित्तसम्भवा, पिंगला, नन्दिनी, पाविनी, गोरुचि)

हिन्दीभाषामें	गोरोचन, गोलोचन ।	
वंगभाषामें	गोरोचना ।	
मराठीभाषामें	गोरोचन ।	
गुजरातीभाषामें	गोरोचन्दन, गोरोचन ।	
कर्णाटकीभाषामें	गोरोचन ।	
तैलिङ्गीभाषामें	गोरोचनमु ।	
इंग्रेजीभाषामें	गोलस्टोन बिझोर	Bijour Gollstone
लैटिनभाषामें	बोस्टोरस ।	Bastarou
फारसीभाषामें	गयरोहन ।	
अरबीभाषामें	हजरुलवक्कर ।	

गोरोचनागुणाः ।

गोरोचना हिमा तिक्ता वश्या मङ्गलकांतिदा ।
विषा लक्ष्मी ग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रहृत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-गोरोचना-शीतल, कडवी, वशीकरण, मङ्गलजनक, कान्तिदायक तथा विष, अलक्ष्मी, ग्रह, उन्माद, गर्भस्राव, क्षत और रक्तदोषनाशक है ।

अपिच ।

गोरोचना च शिशिरा विषदोषहन्त्री रुच्या च पाचनकरी कृमिकुष्ठहन्त्री । भूतग्रहोपशमनं कुरुते च पथ्या शृङ्गारमङ्गलकरी जनमोहिनी च ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-गोरोचन-शीतल, विषदोषनाशक, रुचिकारी, पाचक, कृमि और कुष्ठको नष्ट करनेवाला, भूतग्रहको शान्ति करनेवाला पथ्य, शृंगार और मंगलको करनेवाला तथा मनुष्योंको मोह करनेवाला है ।

अपिच ।

गोरोचनं चातिशीतं रुच्यं मंगलदायकम् ।
वशीकरं कांतिकरं वृष्यं तिक्तं समीरितम् ॥
पिशाचग्रहपीडां च विषं कुष्ठं कृमींस्तथा ।
अलक्ष्म्युन्मादशमनं गर्भस्रावहरं परम् ।
क्षतरक्तविकारं च नेत्ररोगं च नाशयेत्। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–गोरोचन– अत्यन्त शीतल, रुचिकारक, मंगलदायक, वश करनेवाला, कान्तिकारक, वीर्यजनक, कडवा तथा पिशाचबाधा, ग्रहकी पीडा, विष–विकार, कोढ, कृमि, अलक्ष्मी, उन्माद, गर्भस्राव, क्षत, रक्तविकार और नेत्ररोगका नाश करहै।

गोरोचन–गायके मस्तकका पित्त होताहै, इसका रंग पीला होताहै यह अधिक व्यवहारमें आताहै, औषधिप्रयोगमें भी अधिकतासे लिया जाताहै इसका मस्तकमें तिलक लगानेसे वशीकरण होताहै। मात्रा दो रत्तीकी।

नखनामानि।

नखं व्याघ्रनखं व्याघ्रायुधं तच्चक्रकारकम्।
नखं स्वल्पं नखी प्रोक्ता हनुर्हट्टविलासिनी॥ (भावप्र०)

अर्थ–नख, व्याघ्रनख, व्याघ्रयुध, चक्रकारक, (व्याडायुध, करजकूटस्थ, नखांक, नख्य, व्याघ्रनखी, चक्रनायक, चक्री, चक्रनख, त्र्यस्रफल, द्वीपिनख, खपुर, व्यालपाणिज, व्यालायुध, व्यालबल, व्यालखड्ग दूसरा छोटा नख जिसको नखी कहते हैं उसके पर्य्याय यह हैं। हनु, हट्टविलासिनी [शुक्ति, शंख, खुर, कोलदल, व्यालायुध, शंखनख, नखरी, करजाख्य, अपचखुर, नख, व्याघ्रनख, कररुह, शिम्बी, शफ, चलकाशी, करज, हनु, नागहनु, पाणिज, बदरीवच, रूप्य, पण्यविलासिनी, सन्धनाल, पाणिरुह] यह नाम साधारण नखके हैं।

हिन्दीभाषामें	दोनों नख, नख, नखी।
वंगभाषामें	नखी, गन्धद्रव्य, छोटनखी।
मराठीभाषामें	नखला, वाघनख।
गुजरातीभाषामें	नखला सावजना नख।
कर्णाटकीभाषामें	नख, वाघनख।
उत	नख, वाघनख।
इंग्रेजीभाषामें	शेल। Shell
लैटिनभाषामें	हेलिकासस्पेरा।
फारसीभाषामें	नाखुनपर्या, ग्राहकसर।
अरबीभाषामें	अजफारुतिव, इकालिलुलमुलुक।

नखपञ्चभेदाः।

नखी पञ्चविधा ज्ञेया गन्धार्था गन्धवत्परैः।
क्वचिद्बदरपत्राभा तथोत्पलदला मता॥

काचिदश्वखुराकारगजकर्णसमा परा ।
वराहकर्णसंकाशा पञ्चमे परिकीर्तिता ॥ (च० चि०)

अर्थ-गन्ध अथवाली और गन्धयुक्त नखी पांच प्रकारकी होती है, कोई बेरीके पत्तोंके समान, कोई कमलके पत्तेके समान, कोई घोडेके खुरकी आकारवाली, कोई हाथीके कानके समान और पांचवी सुअरके कानके समान होतीहै ।

अस्य शुद्धिर्यथा।

पञ्चपल्लवतोयेन गन्धानां क्षालनं तथा ।
शोधनं चापि संस्कारो विशेषश्चात्र वक्ष्यते ॥
चण्डीगोमयतोयेन यदि वा तिन्तिडीजलैः ।
नखं संस्कारयेदेभिरलाभे मृण्मयेन तु॥
पुनरुद्धृत्य प्रक्षाल्य भर्जयित्वा निषेचयेत् ।
गुडपथ्याम्बुना ह्येवं शुध्यते नात्र संशयः ॥ (च०)

अर्थ-पञ्चपल्लव (आमके पत्ते, जामुनके पत्ते, वेजोरेके पत्ते, कैथके पत्ते और बेलके पत्ते) के जलसे तथा गन्धोंके पुटसे इसका शोधन और संस्कारविशेष यहाँ कहते हैं भैंसके गोबरके जलसे अथवा इमलीके पानीमें नख औषधीका संस्कार करे और यदि उपरोक्त द्रव्य न मिलें तो मट्टीसेही शोधे, फिर निकालकर धो कर गुड और हरडके जलसे सींचै इसप्रकार शुद्ध होजायगा, इसमें संशय नहीं है ।

द्विविधनखगुणाः।

नखद्वयं ग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत् ।
लघूष्णं शुक्रलं वर्ण्यं स्वादु व्रणविषापहम् ॥
अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोः कटु । (भा०प्र०)

अर्थ- दोनों प्रकारके नख-ग्रहकी पीडाको दूर करे हैं तथा कफ, वातरक्त, ज्वर कोढ, व्रण, विष, अलक्ष्मी और मुखकी दुर्गन्धताको नाश करेहै, हलके, गरम, शुक्रजनक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाले, स्वादिष्ठ तथा पाकमें और रसमें चरपरी है ।

नखगुणाः।

नखः स्वादूष्णकटुको विषं हन्ति प्रयोजितः ।
कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्च भूतविद्रावणः परः ॥

अर्थ-नख-स्वादिष्ठ, गरम, चरपरा तथा कोढ, कण्डू और व्रणको दूर करे है, तथा भूतविद्रावक है ।

व्याघ्रनखगुणाः ।

व्याघ्रनखस्तु तिक्तोष्णः कषायः कफवातजित् ।
कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्च वर्ण्यः सौगन्ध्यदः परः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-व्याघ्रनख-कडवा, गरम, कषेला, कफ, वातनाशक तथा कोढ, खुजली और घावको दुर करेहै, शरीरके रंगको उज्ज्वल करे है और सुगन्धिदायक है ।

अपिच-द्विविधनखगुणाः ।

नखं सुगन्धि चोष्णं च कटु मेध्यं च शुक्रलम् ।
लघु वर्ण्यं स्वादु हृद्यं कफवातविषप्रणुत् ॥
दौर्गन्ध्यस्वेदकुष्ठादिज्वरालक्ष्मीव्रणापहम् ।
मुखदौर्गन्ध्यकण्डूघ्नं भूतग्रहनिवारणम् ॥
व्याघ्रस्य च नखस्तिक्तो वर्ण्यश्चोष्णः कषायकः ।
सुगन्धिः कुष्ठकण्डूतिकफवातग्रहाञ्जयेत् ॥
गुणास्त्वन्ये तु नखवन्मुनिभिः परिकीर्तिताः । (नि०र०)

अर्थ-नख-गरम,सुगन्धि चरपरा, मेधाकारक,शुक्रजनक,हलका, वर्णकारक, स्वादिष्ठ, हृदयको हितकारी तथा कफ, बादी, विष, दुर्गन्ध, पसीना, कोढ, ज्वर, अलक्ष्मी,घाव,मुखकी दुर्गन्धि,खुजली, भूतबाधा, ग्रहकी पीडा, वातरक्त और पित्तका नाश करेहै । व्याघ्रनख-कडवा, वर्णको सुंदर करनेवाला, उष्ण, कषेला, सुगन्धि तथा कोढ, खुजली, कफ, वात और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै । शेष गुण नखके समान जानने ।

विवरण-नखद्रव्य नदीके जिवोंका नख होताहै, यह सुगंधि पदार्थ है धूपमें और सुगन्धि तैलादिकके बनानेमें पडता है । घोडे हाथियोंके नख अनेक औषधियोंके प्रयोगमें लिये जातेहैं ऐसा चरकाचार्यने लिखा है ।

वालकनामानि ।

वालकं वारिदं वालं ह्रीवेरं केशनामकम् ।
कचामोदवरं पिङ्गं कुन्तलो वारिनामकम् ॥

अर्थ-वालक, वारिद, वाल, ह्रीबेर, केशनामक, कचामोद, वरपिङ्ग, कुन्तल, वारिनामक, (बर्हिष्ठ, उदीच्य, केशनामा, अम्बुनामक, ह्रीबेर, बर्हिष्ठ, केश, केश्य, वज्र, ललनाप्रिय, कुन्तलोशीर, ह्रीबेरक, वारि, तोय, जल) और जितने नाम पानीके तथा केशोंके हैं सो सब इसके भी जानने ।

हिन्दीभाषामें	सुगन्धवाला ।	
वंगभाषामें	वाल्य, गन्धवाला ।	
मराठीभाषामें	वाळा ।	
गुजरातीभाषामें	वालो ।	
कर्णाटकीभाषामें	बालद्बरु, खसमुष्टिवाल ।	
तैलिङ्गीभाषामें	वाट्टिवेलु ।	
दक्षिणीभाषाम	करवाल ।	
वम्	वाला ।	
लैटिन्भाषामें	एन्ड्रोपेगन ।	Andropagon
	म्यूरिकटस् ।	Muricatus
फारसीभाषामें	असारूं ।	

वालकगुणाः ।

वालकं शीतलं रूक्षं लघु दीपनपाचनम् ।
हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सुगन्धवाला-शीतल, रूखा, हलका, दीपन और पाचक है तथा हल्लास (उबकाई) अरुचि, वीसर्प, हृदयरोग और आमातिसारको दूर करे है ।

अपि च ।

वालकः शीतलस्तिक्तः केश्यः पाचनकृन्मधुः ।
दीपनी लघुरूक्षश्च कफपित्तवमीहरः ॥
तृषाकुष्ठातिसारघ्नो ज्वरश्वासारुचीहरः ।
व्रणवीसर्पहृद्रोगलालास्रावहरो मतः ॥
रक्तदोषं रक्तपित्तं कण्डूंदाहं च नाशयेत् ॥ (नि० रत्ना०)

अर्थ-सुगन्धवाला-शीतल, कडवा, केशोंका सुन्दर करनेवाला, पाचक, मधुर, दीपन, हलका, रूखा तथा कफ, पित्त, वान्ति, तृषा, कोढ,

अतिसार, ज्वर, श्वास, अरुचि व्रण, विसर्प, हृदयरोग, लालास्राव, रक्तविकार, रक्तपित्त कण्डू और दाहका नाश करे है। मात्रा एक मासेकी।

मुस्तकनामानि।

मेघाख्यं मुस्तकं मुस्तं वालेयं परिपेलवम्।

अर्थ-मेघाख्य, मुस्तक, मुस्त, बालेय, परिपेलव, (कुरुविन्द, मेघनामा, मुस्त, अम्बुवाह, अम्बुभृत, ताडित्वान्, वारिवाह, बलाकहस्तनयित्नु, तोयद तोयधर, अभ्रनामक, गाङ्गेय, भद्रमुस्तक, श्रीभद्रा, भद्रक, भद्रा, राजकसेरू, कसेरुक, कुरुविन्द)

नागरमुस्तकनामानि।

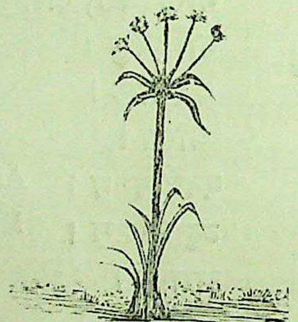

नागरमोथा.

नागरमुस्तानादेयी वृषध्मांक्षी कच्छरुहा।
चूडाला पिण्डमुस्ता च नागरोत्थाकलापिनी॥

अर्थ-नागरमुस्ता नादेयी, वृषध्मांक्षी, कच्छरुहा, चूडाला-पिण्डमुस्ता, नागरोत्था, कलापिनी, (नागरादि घनसंज्ञका, चक्रांक्षा। शिशिरा, चारुकेसरा, उच्चटा, पूर्णकोष्ठसंज्ञा)

भद्रमुस्तकनामानि।

गांगेयं कुरुबिल्वं च भद्रमुस्तं कुटन्नटम्।

अर्थ-गांगेय, कुरुबिल्व, भद्रमुस्त, कुटन्नट, (भद्रमुस्ता, मुस्तक, गुन्द्रा, कक्षोत्था वराही, ग्रन्थि, भद्रकाशी, कशरु, क्रोडेष्ट., कुरुविन्दाख्या, सुगन्धिग्रन्थिला, हिमा, वल्या, कच्छोला, अर्णोद वारिद, अब्द)

हिन्दीभाषामें	मोथा, नागरमोथा, भद्रमोथा।
वङ्गभाषामें	मुताथा, नागरमुता, मादमुथा।
मराठीभाषामें	मोथे, नागरमोथे, भद्रमोलथ

गुजरातीभाषामें	मोथ्य, नागरमोथ्य, भद्रमोथ्य ।
कर्णाटकीभाषामें	मुस्ता, नागरमुस्ता भद्रमुस्ता ।
तैलिंगीभाषामें	तुंगमुस्त(स्ता)सकहतुंग, विरु, तुंगगहुलविम।
तामिलीभाषामें	कारय, मुदहकाच ।
द्राविडीभाषामें	गरमाटा ।
लैटिनभाषाम	साइपरस् रोटंडस्, साइपरस्परटेन्यूइटिस् । Cyprusrotondous Cypruspertenuitis
फारसीभाषामें	शादकफी ।
अरबीभाषामें	मष्कजमीन ।

श्रेष्ठमुस्तकलक्षणम् ।

अनूपदेशे यज्जातं मुस्तकं तत्प्रशस्यते ।
तत्रापि मुनिभिः प्रोक्तं वरं नागरमुस्तकम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–अनूपदेश (सजलस्थान) में उत्पन्न होनेवाला मोथा श्रेष्ठ होताहै तोभी मुनियोंने नागरमोथेकोही उत्तम कहे हैं ।

तच्छुद्धिर्यथा ।

मुस्तकं तु मनाक्क्षुण्णं काञ्जिके त्रिदिनोषितम् ।
पञ्चपल्लवतोयेन स्विन्नमातपशोषितम् ॥
गुडाम्बुना सिच्यमानं भर्ज्जयेच्चूर्णयेत्ततः ।
आजशोभाञ्जनजलैर्भावयेच्चेति शुद्धयति ॥

अर्थ–मोथेको लेकर तीन दिन कांजीमें डाले, फिर पंचपल्लवके जलमें भिजोकर धूपमें सुखावे, फिर गुडके जलसे सींचकर भूनकर उसका चूर्ण करे, बकरीका दूध और सैंजिनेके जलकी भावना देनेसे शुद्ध होता है ॥

भद्रमुस्तकगुणाः ।

मुस्तं कटु हिमं ग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम् ।
कषायंकफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजन्तुनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ--भद्रमोथा–चरपरा, शीतल, ग्राही, कडवा, दीपन, पाचक, कषैला तथा कफ, रक्तपित्त, तृषा, ज्वर, अरुचि और कृमिरोगका नाश करे है ।

मुस्तकगुणाः ।

क्षुद्रमुस्ता तु कटुका मेध्या कान्तिप्रदा हिमा ।
सुगन्धिका तु तुवरा कट्वी रक्तरुजापहा ॥

कफपित्तज्वरकृमिवाय्वतीसारनाशिनी ।
रक्तरुग्व्रणदाहघ्नी कण्ड्वामशूलघर्महा॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-मोथा-चरपरा, मेध्य, कान्तिदायक, शीतल, सुगन्धि, कषला तथा रुधिरविकार, कफ, पित्तज्वर, कृमि, वात, अतिसार, रक्तरोग, व्रण, दाह, कण्डू, आम, शूल और पसीनेको दूर करे है।

नागरमुस्तकगुणाः ।

तिक्ता नागरमुस्ता कटुः कषाया च शीतला कफनुत् ॥
पित्तज्वरातिसारा रुचितृष्णादाहनाशिनी श्रमहृत् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-नागरमोथा-चरपरा, कषला, शीतल, कफनाशक तथा पित्त, ज्वर, अतिसार, अरुचि, तृषा, दाह और श्रमका नाश करे है ।

अपिच भद्रमुस्तागुणाः ।

भद्रमुस्ता तु तुवरा शीता तिक्ता च पाचका ।
कट्वग्निदीपनी ग्राही चाम्लपित्तकफापहा
अतिसारं रक्तदोषं ज्वरं चैव विनाशयेत् ।
अरुचिं च तृषां चैव कृमीनपि विनाशयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-भद्रमोथा-कषला, शीतल, कडवा, पाचक, चरपरा, अग्निदीपक, ग्राही, अम्ल तथा पित्त, कफ, अतिसार, रुधिरदोष, ज्वर, अरुचि, पियास और कृमिरोगका नाश करे है ।

मोथेकी अनेक जाति हैं, नागरमोथा वर्षातिमें सामान्य खेतोंमें उत्पन्न होताहै पञ्जाबमें डीला नामसे प्रसिद्ध है। और: भद्रमोथा सजल भूमिमें होताहै कोई पानामहोताहै, कोई मोटीडण्डीवाला और कोई छोटी डण्डाका होता है । किन्तु सर्वप्रकारके मोथोंमें नागरमोथा उत्तम होताहै ।

व्यवहार-जड । मात्रा साढेतीन ३॥ मासेकी ।

कैवर्तमुस्तकनामानि ।

कैवर्ती मुस्तकं वन्यं कुटं नटं कुटन्नटम् ।
सित पुष्पंदासपूरं वालेयं परिपेलवम् ॥

अर्थ-कैवर्त्तीमुस्तक, वन्य, कुट, नट, कुटन्नट, सितपुष्प, दासपूर, वालेय, परिपेलव, (कैवर्त्तमस्त, दशपूर, प्लव, गोपुर, गोनर्द, कैवर्त्ती, दाशपूर, दशपुर, पारपल, पारिपेल, कैवर्त्तिमुस्तक, कैवर्त्तमुस्तक, वनसम्भव, धान्य, शीतपुष्प, जीणबुध्नक)

अस्य गुणाः।

वितुन्नकं हिमं तिक्तं कषायं कटु कांतिदम् ।
कफपित्तास्रवीसर्पकुष्ठकण्डूविषव्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केवटीमोथा-शीतल, कडुवा, कषेला, चरपरा, कान्तिदायक तथा कफ, रक्त, पित्त, वीसर्प, कोढ, खुजली और विषविकारको दूर करेहै ।

अपि च ।

परिपेलं कटूष्णं च कफमारुतनाशनम् ।
व्रणदाहामशूलघ्नं रक्तदोषहरं परम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-केवटीमोथा-चरपरा, गरम कफवातनाशक तथा व्रण, दाह, आम, शूल और रक्तविकारको हरेहै ।

विवरण-इसकी तृणजाति है, इसकी जडमें सुगन्धि आतीहै, संस्कृतमें इसको कैवर्त्तीमुस्तक कहते हैं, हिन्दीमें केवटीमोथा, बंगलेमें केउदमुथा, केशुरीआमुथा, मराठीमें केवडीमोथा, गुजरातीमें कवर्त्तमोथा कहतेह ।

व्यवहार-जड । मात्रा एक मासेकी ।

शैलेयनामानि ।

शलाख्यं शैलेयं वृद्धं सुभगं गिरिपुष्पकम् ।

अर्थ-शैलाख्य, शैलेय, वृद्ध, सुभग, गिरिपुष्पक (शीतशिव, शिलासन, शैलज, शीतल, शैल, कालानुसार्य, शिलेय, शैलक, कालानुसारिवा, अश्मपुष्प, गृह, शिलाभव, शिलापुष्प, शिलोद्भव, स्थविर, पलित, जीर्ण, कालानुसार्यक, शिलोत्थ, शिलादद्रु, शिलाप्रसून, शिलापुष्प)

हिन्दीभाषामें	भूरिछरीला, पत्थरका फूल ।
वङ्गभाषामें	शैलज ।
मराठीभाषामें	दगडफूल ।
गुजरातीभाषामें	पत्थरफूल ।
कर्णाटकीभाषामें	कलहू, कलडू ।
तैलङ्गीभाषामें	शैलेयमने द्रव्यमु ।
लटिन्भाषामें	पारमेलिया परलेटा । परमेलिया परफोरेटा Parmelia perleta P. Perforata
फारसीभाषामें	दहाल ।
अरबीभाषामें	आशनी ।

अस्य गुणाः ।

शैलेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लघु ।
कण्डूकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्गुदरक्तहृत् ॥(भावप्रकाश)

अर्थ-छरीला-शीतल, हृदयको हितकारी, कफपित्तनाशक, हलका तथा कण्डू (खुजली), कुष्ठ, पथरी, दाह, विष और गुदासे रक्त, गिरनेंको दूर करै है ।

अपिच ।

शैलेयं शिशिरं तिक्तं सुगन्धि कफपित्तजित् ।
दाहतृष्णावमिश्वासव्रणदोषविनाशनम् । (रा० नि०)

अर्थ-छरीला-शीतल, कडवा, सुगन्धि तथा कफ, पित्त, तृषा, वमन, श्वास और व्रणदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

शलेयं कटुकं शीतं सुगंधि लघु हृद्यकम् ।
रुच्यं च कफपित्तघ्नं दाहतृष्णावमिप्रणुत् ॥
श्वासं व्रणं च कण्डूं च कुष्ठाश्मरीविषज्वरान् ।
रक्तदोषं वातरोगं रक्तार्शं चैव नाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-भूरिछरीला-चरपरा, शीतल, सुगन्धि, हलका, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा कफ, दाह, तृषा, वमन, श्वास, घाव, खुजली, कोढ, पथरी, विष, ज्वर, रुधिरविकार, वातरोग, और रक्तबवासीरका नाश करै है ।

मात्रा छै मासे की ।

रेणुका कपिला कौन्ती हरेणुर्भस्मगन्धिका ।
कृतान्ता राजपुत्री च नन्दिनी खरनादिनी ॥

अर्थ-रेणुका, कपिला, कौन्ती, हरेणु, भस्मगन्धिका, कृतान्ता, राजपुत्री, नन्दिनी, खरनादिनी, (द्विजा, अभीष्टा, वरत्करी, वरमुखी, वरा, कान्ता, महिला, हिमा, रेणु, हरेणुका, सुपर्णिका, पाण्डुपुत्री, शिशिरा, शान्ता, वृत्ता, हेमगन्धिनी, धर्म्मिणी, कपिलोमा, हैमवती, पाण्डुपत्नी)

हिन्दीभाषामें	संभालूके बीज, रेणुका ।
वंगभाषामें	रेणुक ।
मराठीभाषामें	रेणुकबीज ।

गुजरातीभाषामें	हरेणु ।
कर्णाटकीभाषामें	रेणुका ।
तामिलीभाषामें	येटी ।
लैटिन्भाषामें	वाइटैक्स स्पीशिओसा। Vitex Speciosa

अस्य गुणाः ।

रेणुका कटुका पाके तिक्ताऽनुष्णा कटुर्लघुः ।
पित्तला दीपनी मेध्या पाचनी गर्भपातिनी ॥
बलासवातवैक्लव्यतृट्कण्डूविषदाहनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-रेणुका पचनेमें चरपरी, कडवी, किञ्चित् उष्ण, चरपरी, हलकी, पित्तवर्धक, अग्निप्रदीपक, मेधाजनक, पाचक, गर्भको गिरा, नेवाली तथा कफ, वात, विकलता तथा कण्डू, विष और दाहका नाश करे है ।

अपिच ।

रेणुका तु कटुः शीता खर्जूकण्डूतिहारिणी ।
तृष्णा दाहविषघ्नी च मुखवैमल्यकारिणी ॥(रा० नि०)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतल तथा खर्जू, कण्डु, तृषा, दाह और विषनाशक है और मुखको विमल करेहै ।

अन्यच्च ।

रेणुका कटुका शीता मुखवैमल्यकारका ।
तिक्ताच पित्तला लघ्वी चाग्निमेधाकरी मता ॥
पाचनी गर्भपातस्य कारिणी दद्रुकण्डुहा ।
तृष्णा दाहविषक्लैब्यकफवातविनाशिनी ॥ (नि० रा०)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतल,मुखको स्वच्छ करनेवाली, कडवी, हलकी, पित्तजनक तथा अग्नि और मेधा इनको उत्पन्न करनेवाली, पाचक, गर्भको पतन करनेवाली तथा दाद, खुजली, तृषा, दाह, विष, नपुंसकता, कफ और वातका विनाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

रेणुका कफवातघ्नी दीपनी पित्तला लघुः । (रा० व०)

अर्थ-रेणुका-कफ वातनाशक, अग्निप्रदीपक, पित्तकारक और हलकी है। रेणुकाको कोई वैद्य निगुण्डी अर्थात् संभालुके बीज कहते हैं, और कोई मेंहदीके बीज कहते हैं । सो मेंहदीके बीजोंसे रेणुकामें बहुत अंतर है ।

ग्रन्थिपर्णनामानि ।

ग्रन्थिपर्णं बाहपुष्पं स्थौणेयं ग्रन्थिपर्णकम् ।

अर्थ-ग्रन्थिपर्ण, बर्हिपुष्प, स्थौणेय, ग्रन्थिपर्णक (शुक, कुकुर, बर्हिपुष्प, बर्ह, शुकबर्ह, विशीर्णाख्य, स्वारामगुच्छक, बार्हि, शुकपुच्छ, शुकच्छद, गुत्थक, बर्हिकुसुम, ग्रन्थिक, काकपुष्प, गुच्छक, नीलपुष्प, सुगन्ध, तैलपर्णक)

ग्रन्थिपर्णलक्षणम् ।

ग्रंथिकः पाण्डुरः किञ्चित्कनिष्ठः सर्वसम्मतः ।
उत्तमः कृष्णवर्णो यः स्थूलोऽतीव च निन्दितः॥ (ड० मि०)

अर्थ-कुछ पाण्डुरंगका गंठिवन कनिष्ठ होता है, काले रंगका उत्तम होता है और स्थूल अत्यन्त निन्दित है ।

ग्रन्थिपर्णगुणाः ।

ग्रंथिपर्णं तिक्ततीक्ष्णं कटूष्णं दीपनं लघु ।
कफवातविषश्वासकण्डूदौर्गन्ध्यनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ गंठिवन-कडवा, तीक्ष्ण, चरपरा, गरम, अग्निको दीपन करनेवाला, हलका तथा कफ, वात, विष, श्वास, कण्डु और दुर्गन्धका नाश करेहै । यह सुगन्धिपदार्थ है, यह शरीरपर लेप करनेसे रूक्षता उत्पन्न करे है, तथा अलक्ष्मी, ज्वर और राक्षसबाधाको हरे है इसको हिन्दीभाषामें गठिवन कहते हैं, वंगभाषामें गेंटेला, मराठीभाषामें गठोना और कर्णाटकीभाषामें गाठिवन कहते हैं ।

स्थौणेयकनामानि ।

स्थौणेयं विकीर्णसंज्ञं हरितं शुकपुच्छकम् ।

अर्थ-स्थौणेय, विकीर्णसंज्ञ, हरित, शुकपुच्छक, (स्थौणेयक, बर्हिशिख, शुकच्छद, मयूरचूड, विकीर्णरोम, कीरवर्णक, बर्हिचूड, शुकपिच्छ, शुकबर्ह, विकच, शीर्णरोमक, बार्हिबर्ह, कुक्कुर, शीर्णरोम)

स्थौणेयकगुणाः ।

स्थौणेयं कफपित्तघ्न सुगंधि कटु तिक्तकम् ।
पित्तप्रकोपशमनं बलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-थुनेर-कफपित्तनाशक, सुगन्धि, चरपरा, कडवा, पित्तके कोपको शान्त करनेवाला तथा बल और पुष्टिवर्द्धक है ।

अपिच ।

स्थौणेयकं कटु स्वादु तिक्तं स्निग्धं त्रिदोषनुत् ।
मेधाशुक्रकरं रुच्यं रक्षोघ्नं ज्वरजन्तुजित् ॥
हंतिकुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गन्ध्यतिलकालकान् । (भा० प्र०)

अर्थ-थुनेर-चरपरा, स्वादिष्ठ, कडवा, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, शुक्रकारक, रुचिकारी तथा राक्षसबाधा, ज्वर, कृमि, कोढ, रुधिरविकार, पियास, दाह, दुर्गन्ध और शरीरके तिलोंको दूर करनेवाला है ।

इसके अधिक गुण देखनेकी अभिलाषा हो तो भारतभैषज्यभास्करमें देखो । यह सुगन्धि द्रव्य है, इसको हिन्दीभाषामें थुनेर कहते हैं, वंगभाषामें ग्रन्थिपर्णभेद कहते हैं, मराठीभाषामें थुणोर, कर्णाटकी भाषामें स्थौज और लैटिन्भाषामें क्लेरोडेन्ड्रम् कहते हैं ।

चोरकनामानि ।

तस्करश्चोरकश्चण्डा कितवः क्रोधमूर्च्छितः ।

अर्थ-तस्कर, चोरक, चण्डा, कितव, क्रोधमूर्च्छित (दुष्कुलीन, विरोध, कोरक, धनहरी, क्षेम, राक्षसी, गणहासक, शंकित, खड्ग, दुष्पत्र, क्षेमक, रिपु, चपल, धूर्त, पटु, नीच, निशाचर, गणहास, कोपनक, चोर, फलचोरक, दुष्कुल, ग्रंथिक, सुगन्धि, पर्णचोरक, ग्रन्थिपर्ण, ग्रन्थिदल, ग्रन्थिपत्र, धनहर)

अस्य गुणाः ।

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णस्तिक्तो वातकफावहः ।
नासामुखरुजाजीर्णकृमिदोषविनाशनः ॥

अर्थ-चोरक-सुगन्धद्रव्य, तीव्रगन्ध, कडवा तथा वात, कफ, नासारोग, मुखरोग, अजीर्ण और कृमिदोषनाशक है ।

अपि च ।

चोरको मधुरस्तिक्तः कटुः पाके कटुर्लघुः ।
तीक्ष्णो हृद्यो हिमो हंति कुष्ठकण्डूकफानिलान् ॥
रक्षोश्रीस्वेदमेदोऽस्रज्वरगन्धविषव्रणान् । (भा० प्र०)

अर्थ-चोरक, मधुर, तिक्तरसयुक्त, पचनेमें चरपरा, हलका, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, शीतल, तथा कोढ, खुजली, कफ, वात, राक्षस, अलक्ष्मी, पसीना, रुधिराविकार, मेदरोग, ज्वर, गन्ध, विष और व्रणका नाश करे है ।

अन्यच्च

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णो मधुस्तिक्तो लघुः स्मृतः ।
पाके कटुश्च तीक्ष्णश्च हृद्यो वातविकारहा ॥
कण्डूकुष्ठकफस्वेदत्वग्दोषविषनाशनः ।
व्रणं मेदं रक्तदोषं मुखनासारुजं जयेत् ॥
कृमीनजीर्णं दौर्गन्ध्यमलक्ष्मीनाशनं विदुः ।
क्रव्यादबाधांशमयेदिति वैद्यैर्निरूपितः ॥ (नि० ९०)

अर्थ-चोरक-तीव्रगन्ध, उष्ण, मधुर, तिक्त, लघु, पाकके समय चरपरा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी तथा वात, कण्डू, कोढ, कफ, मेद त्वचाके विकार, विष, घाव, रुधिरविकार, मुखरोग, नासारोग कृमि, अजीर्ण, दुर्गन्ध, अलक्ष्मी और राक्षसबाधाको दूर करे है ।

यह सुगन्धित द्रव्य गठिवनहीका भेद है । इसको नैपाल देशमें भटेउर और पार्वती देशादिकोंमें चौरा कहतेह । मात्रा २ मासेकी ।

कुष्ठनामानि

कुष्ठं व्याधिः पारिभाव्यं व्याप्यं पाकलमुत्पलम् ।

अर्थ-कुष्ठ, व्याधि, पारिभाव्य, व्याप्य, पाकल, उत्पल (कदाख्य, दुष्ट, व्याप्य, गदाख्य, आप्य, जरण, कौबेर, भासुर, गदाह्व, गदाह्वय, कुठिक, काकल, नीरुज, आमय, रुजा, गद, वाणीराज, पारिभद्रक, राम, कुत्सित, पावन, पद्मक, रोग, रोगाह्वय, किञ्जल्क, हरिभद्रक)

हिन्दी भाषामें	कूठ
वंग भाषाम	कुड
मराठी भाषामें	कोष्ठ
गुजराती भाशामें	कुठ, उपलेट ।
कर्णाटकी भाषामें	कोष्ठ ।
तैलङ्गी भाषामें	चंगल कुष्ठं । चेंगलिकोष्ठ ।
इंग्रेजी भाषामें	कोस्टसरूट Costusroot
लैटिन् भाषामें	सौसुरीआलप्पा Sausurealappa ओकलेंडियाकोस्टस्
फारसी भाषामें	कोश्नह ।
अरबी भाषामें	कुस्तवेहरी

कुष्ठं कटूष्णतिक्तं स्यात्कफमारुतकुष्ठजित्।
विसर्पविषकण्डूतिखर्जूदद्रुघ्नकान्तिकृत् ॥ (रा० नि०)

अस्य गुणाः।

अर्थ-कूठ-चरपरा, गरम, कडवा तथा कफ, वात, कोढ विसर्प, विष, खुजली, खर्जू और दादोंको दूर करे है और कान्ति करे है।

अपिच।

कुष्ठं श्वासं कासकुष्ठं ज्वरं हिक्कां च नाशयेत।

अर्थ-कूठ गरम, चरपरा, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, कडवा, हलका तथा वातरक्त, वीसर्प, खांसी कोढ और वात, कफका नाश करे है।

अपिच।

कोष्ठमुष्णं कटुस्तिक्तं स्वादु वृष्यं च शुक्रलम्।
रसायनं कान्तिकरं लघुवातकफापहम्॥
कुष्ठं विषं विसर्पञ्च कण्डू दद्रू त्रिदोषकम्।
पामारक्तविकारं च कासं वान्ति तृषां तथा॥
नाशयेदिति च प्रोक्तं लेपनाद्वातव्याधिजित्।(नि०रा०)

अर्थ-कूठ-उष्ण, कटु तिक्त, स्वादु, वृष्य, शुक्रजनक, रसायन, कान्तिजनक, लघु, वातकफनाशक तथा कुष्ठ, विसर्प, कण्डू, दद्रु, त्रिदोष, पामा, रुधिरदोष खाँसी और वान्तिको दूर करेहै, इसका लेप करनेसे वातव्याधि दूर होतीहै, यह वृक्षकी सुगन्धियुक्त जड है, इसकी उत्पत्ति सिन्धु नदीके तीरपै है. मात्रा ६ रत्तीकी।

कर्चूरनामानि।

कर्चूरो वैद्यमुख्यश्च द्राविडः कल्पकः शठी।

अर्थ-कर्चूर-वैद्य, मुख्य, द्राविड, कल्पक, शठी, (कार्श्य, दुर्लभ, गन्धमूलक, गन्धसार, जटाल)

हिन्दीभाषामें	कचूर, काली हलदी।
वंग भाषामें	एकाङ्गी।
मराठी भाषामें	कचोरा। नरकचोरा। काचरी।
गुजराती भाषामें	कचूरी।
कर्णाटकी भाषामें	कचोरा।
तैलिङ्गी भाषामें	काचोरालु। ओकातो कचेट्टा।
इंग्रजीभाषामें	लोंग झेडीआरो Longzedearo

लैटिन् भाषामें	कर्क्यूमांझरंबेट्ट Curcumazerumbat
फारसी भाषामें	जरंबाद ।
अरबी भाषामें	एरकुलकाफुर ।

कर्चूरगुणाः ।

कर्चूरो दीपनो रुच्यः कटुकस्तिक्त एव च
सुगन्धिः कटुपाकः स्यात्कुष्ठार्शोव्रणकासनुत् ॥
उष्णो लघुर्हरेच्छ्वासं गुल्मवातकफक्रिमीन् । (भा०प्र०)

अर्थ-कचूर-अग्निको दीपन करनेवाला, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, कडवा, सुगन्धि, कटुपाकी तथा कोढ, बवासीर, घाव और खांसीको दूर करेहै । गरम, हलका और श्वास, गुल्म, वात कफ तथा कृमिरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

कर्चूरः कटुतिक्तोष्णः कफकासविनाशनः ।
मुखवैशद्यजननो गलगण्डादिदोषनुत्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कचूर-चरपरा, कडवा गरम मुखको स्वच्छ करनेवाला तथा, कफ, खांसी और गलगण्डादि रोगोंको नाश करे है ।

अन्यच्च ।

शठी तिक्ता च कटुका चोष्णा तीक्ष्णाग्निदीपनी ।
सुगन्धिर्रुचिरा लघ्वी मुखस्वच्छकरी मता ॥
कोपनी रक्तपित्तस्य गलगण्डादिरोगहा ।
कुष्ठार्शोव्रणकासघ्नी श्वासगुल्मकफापहा ॥
त्रिदोषक्रिमिवातानांज्वरप्लीहादिनाशकृत् । (नि०र०)

अर्थ-कचूर-कडवा, चरपरा, गरम, तीक्ष्ण, अग्निमें प्रदीपक, सुगन्धि रुचिकारक हलका, मुखको स्वच्छ करनेवाला, रक्तपित्तको कुपित करनेवाला तथा गलगण्ड, मंडलादिकोढ, बवासीर, घाव, खांसी, श्वास, गोला, कफ, त्रिदोष, कृमि, वात ज्वर और प्लीहा इत्यादि रोगोंका नाश करनेवाला है ।

अपिच ।

"कर्चूरो मरुदामघ्नो दीपनो रक्तपित्तकृत् ।
अजीर्णजरणश्वासेष्वपस्मारेपि पूजितः ॥"

अर्थ-कचूर-वात तथा आमनाशक है, दीपन है, रक्तपित्त, रागको उत्पन्न करनेवाला है, अजीर्ण रोगको दूर करनेवाला है तथा मृगीरोगमें और श्वास रोगमेंभी इसको प्रयोगमें लेतेहैं ।

विवरण-कचूरका क्षुप होताहै, पत्ते हलदीके समान होते हैं, इसके तले आंबिया हलदीके समान गांठ होतीहै हलदीके खेतोंमेंकचूर स्वयं उत्पन्न होताहै कचूर सफेद होताहै हलदी पीली होती है उस गांठको सुखालेतेहै, और उसी गांठको कचूर कहतेहैं, मात्रा ४ मासेकी।

गन्धपलाशीनामानि ।

शठी पलाशीषड्ग्रन्था सुव्रता गंधमूलिका ।
गन्धारिका गन्धवधूर्वधूः पृथुपलाशिका ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-शठी, पलाशी, षड्ग्रंथा, सुव्रता, गन्धमूलिका. गन्धारका, गन्धवधू, वधू, पृथुपलाशिका, (गन्धमूली, ग्रंथिका, कर्पूर, पलाशसटी, शठी, षटी, गन्धशटी, कर्बुर, कर्चुर, सुगन्धासटी, गन्धमूला, गन्धोलि, गन्धमूलक, सुगन्धा, गन्धसटी, गन्धमूल, गन्धपलाशी, जीमूतमूल, कच्छोरा, हिमजा, हैमी, षड्ग्रन्थि, गन्धोलि, पलाशा, हिमाग्रन्था, अम्लनिशा, सुगन्धमूला, गन्धोरी, शठिका, पलाशिका, समुद्रा, तूणी, दूर्वा. गन्धा, पृथुपलाशिका, सठी, अम्लहरिद्र, सौम्या, हिमोद्भवा, गन्धवधू.)

हिन्दीभाषाम	गन्धपलाशी, कचूरभेद, कपूरकचरी ।
वङ्गभाषामें	शटी, आम, आदा, गन्धशठी ।
मराठीभाषामें	कापूरकचरी ।
गुजरातीभाषामें	कपूरकाचरी ।
कर्णाटकीभाषामें	गन्धशटी ।
तैलङ्गभाषामें	किचलिरागट्टल ।
लैटिनभाषामें	हिडिक्यम् स्पिकेटम् । Hedychum Specatum-
अरबीभाषामें	जरंवाद ।
वम्	आंबेहलद ।

अस्य गुणाः ।

भवेद्गन्धपलाशी तु कषाया ग्राहिणी लघुः ।
तिक्ता तीक्ष्णा च कटुकानुष्णास्यमलनाशिनी ॥
शोथकासव्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा । (भा० ०)

अर्थगन्धपलाशी-कषेली, ग्राही, हलकी, कडवी, तीक्ष्ण, चरपरी, किञ्चित् उष्णा, मुखके मलका नाश करनेवाली तथा सूजन, खांसी, घाव, श्वास, शूल, हिध्म और ग्रहनाशक है।

अपिच ।

ससुगन्धः कर्चुरकस्तीक्ष्णो दाही कटुःस्मृतः ।
तिक्तश्च तुवरश्चैव शीतवीर्यो लघुः स्मृतः ॥
किञ्चित्पित्त कोपयति कासश्वासज्वरापहः ।
शूलहिक्कागुल्मरक्तरुजं वातं त्रिदोषकम् ॥
मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यव्रणामच्छर्दिहिध्महा । (नि० र०)

अर्थ-कपूरकचरी-(छोटाकचूर), तीक्ष्ण, दाहजनक, चरपरी, कडवी, कषेली, शीतवीर्य्य, हलकी, किंचित् पित्तकारक तथा खांसी, श्वास, ज्वर, शूल, हुचकी, गोला, रुधिररोग, बादि, त्रिदोष, मुखकी विरसता, दुर्गन्ध, घाव, आम, वमन और हिध्मरोगको नष्ट करेहै ।

विवरण । बेल होतीहै, इसकी जड सुगन्धियुक्त कन्दकी समान होतीहै, उसके टुकडे कर सुखालेतेहैं, उसीको गन्धपलाशी अर्थात कपूरकचरी कहतेहैं.

मुरानामानि ।

गंधिनी तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ।

अर्थ-गन्धिनी, तालपर्णी, दैत्या गन्धकुटी, मुरा, (पुरागन्धवती, दिव्या, गन्धाढ्या, गन्धमादिनी, सुरभि, भूरिगन्धा, कुटी, गन्धिनी, भूतगन्धा, तालपर्णिका और मुरामांसी)

हिन्दीभाषामें	एकांगी मुरा ।
वंगभाषामें	मरामांसी ।
मराठीभाषामें	एकांगीमुरा । मोरमांसी ।
कर्णाटकी भाषामें	मुरे ।
गुजराती भाषामें	मोरमासी ।

अस्यगुणाः ।

मुरा तिक्ता हिमा स्वाद्वी लघ्वी पित्तानिलापहा ।
ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नी कुष्ठकासविनाशिनी ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-एकाङ्गी-कडवी, शीतल, स्वादिष्ट, लघु तथा पित्त, वात, ज्वर, रुधिरदोष, भूत, राक्षस, कोढ और कासरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

एकांगी कटुका तिक्ता तुवरा शीतला मता ।
लघुस्वादुसुगन्धा स्यादिंद्रियाणां च हर्षदा ॥

कफपित्तश्वासवातरक्तदोषविषापहा ।
दाहभ्रमतृषामूर्च्छाज्वरकुष्ठविनाशिनी ॥
पिशाचराक्षसालक्ष्मीबाधानाशकरी मता । (नि० र०)

अर्थ–एकाङ्गी–चरपरी, कडवी, कषेली, शीतल, हलकी, स्वादिष्ठ, सुगन्धि, इंद्रियोंको तृप्त करनेवाली तथा कफ, पित्त, श्वास, वात, रुधिरविकार, विषविकार, दाह, भ्रम, तृषो, मूर्च्छा, ज्वर, कोढ, पिशाचबाधा, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करेहै ।

लामज्जकनामानि ।

लामज्जकं सुनालं स्यादमृणाल लयं लघु ।
इष्टकापथिकं सेव्यं नलदं चावदातकम् ॥

अर्थ–लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लय, लघु, इष्टकापाथिक, सेव्य, नलद, अवदातक, (सुनील, शीघ्र, दीर्घमूल, जलाशय और अवदाहक)

हिन्दी भाषामें	लामज्जक ।
बंगभाषामें	गन्धवेणा ।
मराठीभाषामें	लावज, पिंवळावाळा ।
गुजराती भाषामें	सुगंधिपीलु, खडजल, जलवाल्लो ।
तैलंगी भाषामें	तेल्लवट्टिवेरु ।

श्रेष्ठलामज्जकनामानि ।

दीर्घमूलं दृढं सूक्ष्ममुत्तमं गन्धसंयुतम् ।
देशे साधारणे जातं लामज्जं भद्रकं भवेत् ॥ (भै० चि०)

अर्थ–जिसकी बडी जड हो, दृढ हो, सूक्ष्म हो, सुगन्धियुक्त हो, साधारण देशमें उत्पन्न हुआ हो, ऐसा लामज्जक श्रेष्ठ होताहै ।

अस्य गुणाः ।

लामज्जकं हिमं तिक्तं लघुदोषत्रयास्रजित् ।
त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–लामज्जक–शीतल, कडवा, हलका, त्रिदोषनाशक तथा रक्तदोष, त्वचाके रोग, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, दाह और रक्तपित्त रोगको दूर करे है ।

अपि च ।

लामज्जकं हिमं तिक्तं मधुरं वातपित्तजित् ।
तृड्दाहश्रममूर्च्छार्त्तिरक्तपित्तज्वरापहम् ॥(रा०नि०)

अर्थ-लामज्जक-शीतल, कडवा, मधुर, वातपित्तनाशक तथा तृषा, दाह, श्रम, मूर्च्छा, रक्तपित्त और ज्वरको नष्ट करै है ।

अन्यच्च ।

लामज्जकन्तु मधुरं तिक्तं शीतञ्च पाचकम् ॥
स्तम्भनं लघुपित्तघ्नं वाततृड्दाहनाशनम् ॥
त्रिदोषश्रममूर्च्छास्रशूलवांतिविनाशम् ।
ज्वरञ्च रक्तदोषञ्च स्वेदकृच्छ्रं मदं कफम् ॥
व्रणं विषं विसर्पञ्च नाशयेदितिकीर्त्तितम् (नि० र०)

अर्थ-लामज्जक-मधुर, तिक्त (कडवा), शीतल,पाचन,स्तम्भन, हलका, पित्तनाशक तथा वात, तृषा, दाह, त्रिदोष, श्रम, मूर्च्छा, रक्त , शूल, वमन, ज्वर, रुधिरविकार, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, मद, कफ, घाव, विष और विसर्प इनको दूर करै है ।

यह एक प्रकारका सुगन्धि तृण नदीके तीर वंगदेशमें होताहै । मात्रा २ मासेकी ।

स्पृक्कानामानि ।

स्पृक्का लता कोटिवर्षा मरुन्माला लतामरुत् ।
लंकारिका समुद्रान्ता कुटिला देवपुत्रिका ॥

अर्थ-स्पृक्का,लता,कोटिवर्षा, मरुन्माला, लतामरुत, लङ्कारिका, समुद्रान्ता, कुटिला, देवपुत्रिका, (देवपुत्री, देवी, पृक्का, पिशुना, लघु, वधू, लङ्कायिका, लंकापिका, ब्राह्मणी, मनु, मालालिका, मालानी, लघ्वी, पञ्चगुप्तिरसा, समुद्रकान्ता, मरुत, माला, कोटी, वर्षा, लंकोपिका, वर्षालंकायिका, तस्कर, चोरक, चण्ड, अस्तृक,)

हिन्दीभाषामें	असवरग, अस्परकपुरी ।
वङ्गभाषामें	पिडिङ् शाक ।
मराठीभाषामें	स्पृक्का, गगौना कापूरी, शाक ।
कर्णाटकीभाषामें	हिके ।

तैलिङ्गीभाषामें	स्पृक्कुथनेडुद्रव्यमु ।
उत्	फिरिकिशाक ।

अस्या गुणाः ।

स्पृक्का स्वाद्वी हिमा वृष्या तिक्ता निखिलदोषनुत् ।
कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहास्रज्वररक्तहृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-असवरग-स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यजनक, कडवा, संपूर्ण दोषनाशक तथा कोढ, खुजली, विष, पसीना, दाह, : रक्तज्वर और रक्तविकारको हरेहै ।

अपिच ।

स्पृक्का कटुः कषाया च तिक्ता श्लेष्मार्तिकासजित् ।
श्लेष्ममेहाश्मरीकृच्छ्रनाशिनी च सुगंधिदा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-असवरग-चरपरा, कषैला, कडवा तथा कफसे उत्पन्न हुई पीडा, खांसी, कफ, प्रमेह, पथरी और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करे है और सुगन्धिदायक है ।

अन्यच्च ।

स्पृक्का तु मधुरा पाके हृद्या च कफपित्तनुत् । (रा०व०)

अर्थ-असवरग-पचनेमें मधुर, हृदयको हितकारी, और कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

गगौना कटुका तिक्ता तुवरा स्वादु शीतला ।
वृष्या चैव सुगंधिश्च कासतृण्मेहनाशिनी ॥
कण्डूं त्रिदोषकुष्ठं च विषदोषं ज्वरं कफम् ।
स्वेदं दाहं रक्तदोषं दौर्गन्ध्यञ्च तथाश्मरीम् ॥
मूत्रकृच्छ्रं च शूलञ्च नाशयेदिति कीर्तित्ता । (नि ० रा०)

अथ-असवरग-चरापरा, कडवा, कषेला, स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यजनक, सुगन्धि तथा, खांसी, पियास, प्रमेह, खुजली, त्रिदोष (वात, पित्त, कफ, कोढ, विषविकार, ज्वर, कफ, पसीना, दाह, रुधिरविकार, दुर्गन्ध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और शूलको निर्मूल करेहै ।

एलावालुकनामानि ।

एलावालुकमैलेयं सुगंधि हरिवालुकम् ।

अथ-एलावालुक-ऐलेय, सुगन्धि, हरिवालुक, (वालु, वालुक, एलवालुक, एलवालु, आलुक, एलवालुक, कपित्थत्वक्, गन्धत्वक्, कुष्ठगन्धी, कपित्थ, गन्धात्वक्, एलालु, एलवालु)

अस्य गुणाः

एलालु कटुकं पाके कषायं शीतलं लघु ।
हन्ति कण्डूव्रणच्छर्दितृट्कासारुचिहृद्रुजः ॥
बलासविषपित्तास्रकुष्ठमूत्रगुदक्रिमीन् । (भा० १०)

अर्थ-एलुआ-पचनेमें चरपरा, कषेला, शीतल, हलका तथा खुजली, घाव, छर्दि, प्यास, खांसी, अरुचि, हृदयरोग, कफ, विष, रक्तपित्त, कोढ, मूत्ररोग आर कृमिरोगको नष्ट करेहै ।

अपिच ।

एलावालुकमत्युग्रं कषायं कफवातनुत् ।
मूर्च्छार्तिज्वरदाहांश्च नाशयेद्रोचनं परम् ॥ (राजनिघंटु)

अर्थ-एलुआ-आतिउग्र, कषेला, कफवातनाशक तथा मूर्च्छा, ज्वर और दाहको दूर करेहै, और अत्यन्त रुचिको उत्पन्न करेहै ।

अन्यच्च ।

ऐलेय तुवरं रुच्यमत्युग्रं शीतल लघु ।
पाके कटु सुगंधि स्यात्तिक्तं शुद्धिकरं मतम् ॥
कफमूर्च्छावातदाहज्वरकण्डूविषव्रणान् ।
छर्दितृट्कासहृद्रोगपित्तरक्तरुजस्तथा ॥
वध्मरुक्कृमिकुष्ठानि ह्यरुचिंच विनाशयेत्। (नि० र०)

अर्थ-एलुआ-कषेला, रुचिकारक, अति उग्र, शीतल, हलका, पाकमें चरपरा, सुगन्धि, कडवा, शुद्धिकारक तथा कफ, मूर्च्छा, वात, दाह, ज्वर, खुजली, विष, व्रण, वमन, तृषा, खांसी, हृद्रोग, रक्तपित्त रोग, वध्मरोग, कृमि, कोढ और अरुचिको दूर करेहै ।

एलुआ-सुगन्धि पदार्थ है, इसमें कूठकी समानसुगन्धि आतीहै

संस्कृतमें	एलावालुक ।
हिन्दीमें	एलुवा ।
बङ्गलेमें	एलवालुका ।
तैलङ्गीमें	कुतुखुडम ।
मराठीमें	वेलची ।

प्रपौण्डरीकनामानि ।

श्रीपुष्पं पुंडरी शीतं पौण्डर्यं पुण्डरीयकम् ।
प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं पुण्डर्यं पौण्डरीयकम् ॥

अर्थ-श्रीपुष्प-पुण्डरी, शीत, पौण्डर्य, पुण्डरीयक प्रपौण्डरीक चक्षुष्य पुण्डर्य, पौण्डरीयक, (पुण्डरीक, पौण्डरीक, पौंडर्य्य, : तालपुष्पक, सालपुष्प, दाष्टिकृत्, स्थलपद्म, सुपुष्प, सानुज, अनुज)

अस्यगुणाः ।

प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं मधुरं तिक्तशीतलम् ।
पित्तरक्तव्रणान्हन्ति ज्वरदाहतृषापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पुण्डरिया-नेत्रोंको हितकारी, मधुर, तिक्त, शीतल तथा रक्त, पित्त, व्रण, ज्वर दाह और तृष्णाकी शान्ति करैहै ।

अपिच ।

पौण्डर्यं मधुरं तिक्तं कषायं शुक्रलं हिमम् ।
चक्षुष्यं मधुरं पाके वर्ण्यं पित्तकफास्रनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पुण्डरिया-मीठा, कडवा, कषेला, वीर्यवर्द्धक, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पचनेमें भी मीठा, शरीरके वर्णको सुन्दर करनेवाला, तथा पित्त कफ और रक्तदोषनिवारक है ।

प्रपौण्डरीक सुगंधि वृक्ष है, इसके रसको आंखमें लगानेसे आंखके रोग दूर होते हैं, इसका हिन्दीभाषामें पुण्डेरी, पुण्डरिया, बंगभाषामें पुण्डरिया । मराठीमें पुण्डरीक वृक्ष । तैलिङ्गीमें पुंडरीक मनुगे विध्मानमु । गुजरातीमें पांडरवा । कर्नाटकी भाषामें पुंडरीक कहते हैं । शिमला प्रांतमें काळकाके समीप इसके वृक्ष होते हैं पंडचारा नामसे प्रसिद्ध है ।

पर्पटिनामानि।

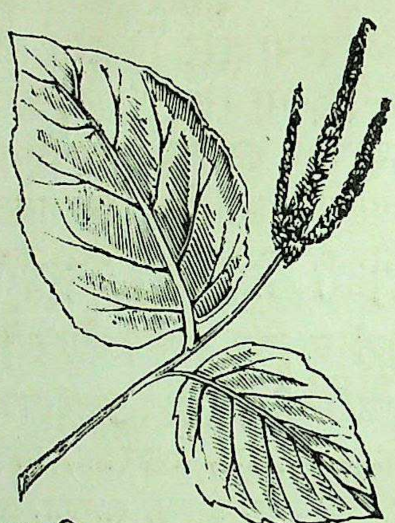

पनडी

जतुका रञ्जनी कृष्णा पर्पटी चक्रवातनी।
जतुकृज्जनि संस्पर्शा जनेष्टा जननी तथा ॥

अर्थ–जतुका, रञ्जनी, कृष्णा, पर्पटी, चक्रवर्त्तिनी, जतुकृत, जनि, संस्पर्शा, जनेष्टा, जननी, (जतुकारी, तिर्यक्फला, निशान्धा, सुपत्रिका, बहुपुत्री, राजवृक्षा, कपिकच्छु, फलोपमा, सूक्ष्मवल्ली, भ्रमरी, कृष्णवल्लिका, विञ्जुलिका, कृष्णरुहा, ग्रन्थिपर्णा, सुवर्च्चिकां, तरुवल्ली, दीर्घफला, रजनी, जतूका, जनिजन्तुका)

अस्या गुणाः।

पर्पटी तुवरा तिक्ता शिशिरा वणकृल्लघुः।
विषव्रणहरी कण्डूकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–पर्पटी–कषेली, कडवी, शीतल, वर्णकारक, लघु तथा विष, घाव, खुजली, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है।

अपिच।

जन्तुका शिशिरा तिक्ता रक्तपित्तकफापहा।
दाहतृष्णावमिघ्नी च रुचिकृद्दीपनी परा ॥ (रा० नि०)

अर्थ–जनी–शीतल, कडवी तथा रक्तपित्त, कफ, दाह, तृषा और वमननिवारक है तथा रुचिकारक और अग्निदीपक है।

अपिच ।

पर्पटी शीतला वर्ण्या तुवरा तिक्तका लघुः ।
अग्निदीप्तिकरी रुच्या रक्तपित्तकफाञ्जयेत् ॥
पित्तं च रक्तदोषं च कुष्ठं दाहं वमिं तृषाम् ।
कुष्ठरोगं कण्डुरोगं व्रणं चैव विनाशयेत्॥(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–पर्पटी–शीतल, वर्णकारक, कषेली, कडवी, हलकी, अग्निदीपक, रुचिकारक तथा रक्तपित्त, कफ, पित्त, रुधिरविकार, कोढ, दाह, वमन,तृषा, कोढ, विष, खुजली और व्रणका विनाश करे है। यह मालवदेशमें प्रसिद्ध है ।

नलिकानामानि ।

नलिका विद्रुमलता कपोतचरणा नटी ।
धमन्यंजनकेशी च निर्मध्या शुषिरा नली ।

अर्थ–नलिका–विद्रुमलता, कपोतचरणा, नटी, धमनी, अञ्जनकेशी निर्मध्या शुषिरा नली (कपोतांघ्रि, विद्रुमलतिका, कपोतबाणा, नलिनी, अध्मानी, स्तुत्या, रक्तदला, नर्त्तकी)

अस्यागुणाः ।

नलिका शीतला लघ्वी चक्षुष्या कफपित्तहृत् ।
कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ–नलिका–शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, पियास, रुधिरविकार, कोढ, कण्डू और ज्वरको नष्ट करे है ।

अपिच ।

नलिका कटुका तिक्ता तीक्ष्णा च मधुरा सरा ।
लघ्वी शीता च संप्रोक्ता चक्षुष्या वातपित्तहा ॥
रक्तपित्तक्रिमिविषकफवातोदरापहा ।
शूलाश्मरीमूत्रकृच्छ्ररक्तदोषतृषाहरा ॥
कण्डूकुष्ठज्वरव्रणदुर्नामानं च नाशयेत् (नि० र०)

अर्थ–नलिका–चरपरी कडवी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा,वातपित्त,रक्तपित्त कृमि,विष, कफ, वातोदर शूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरविकार, तृषा, खुजली, कोढ, ज्वर, घाव और बवासीरको दूर करे है ।

यह सुगंधिद्रव्य उत्तरखण्डमें नलीनामसे प्रसिद्ध है इसका स्वरूप मूँगेके समान होता है, कहीं कहीं पवारी और प्रवाली, नामसे प्रसिद्ध है कर्णाटकमें वेसनालिके कहते हैं। और तैलिङ्ग देशमें पक्केमुक सुगंधि द्रव्यमु कहते हैं ।

पुदिनानामानि।

व्यञ्जनो वान्तिहारी च रुचिश्यः शाकशोभनः ।

अर्थ–व्यञ्जन–वान्तिहारा, रुचिश्य, शाकशोभन, (सुगंधिपत्र, अजीर्णहर)

हिन्दीभाषामें	पोदीना ।	
वङ्गभाषामें	पुदिना ।	
मराठीभाषामें	पुदिना ।	
गुजरातीभाषाम	फोदिनो ।	
इंग्रेजीभाषाम	टोल् रेडमिंट्	Tallred mint
लैटिन्भाषामें	मेन्थमेन्थासिल्वेस्ट्रासिल्वेसट्रिस्।	Mentha Sylvestris
फिरङ्गीभाषामें	ओड टोलाव ।	
फारसीभाषाम	नोअना ।	
अरबीभाषामें	हवा ।	

अस्यगुणाः।

पुदिनस्तु गुरुः स्वादू रुच्यो हृद्यः सुखावहः।
मलमूत्रस्तम्भकरः कफकासमदापहः ॥
अग्निमांद्यविसूचिघ्नः संग्रहण्यतिसारहा ।
जीर्णज्वरंकृमींश्चैव नाशयेदितिकीर्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ–पोदीना–भारी, स्वादिष्ट, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, सुखावह–(सुखका देनेवाला), मल और मूत्रको रोकनेवाला तथा कफ, खांसी, मंदाग्नि, विसूचिका, संग्रहणी, अतिसार जीर्णज्वर और कृमिरोगका नाश करे है ।

विवरण–इसका छोटा क्षुप होताहै, मनुष्य घर और बागोंमें लगालेते हैं पोदीना प्राचीन नहीं है, कारण यह है कि, अतिरिक्त निघण्टुरत्नाकरके (जो कि थोडे दिनोंसे बनाहै) और किसी ग्रंथमें नहीं देखा जाता, पोदीनेका अर्क निकालते हैं, वह अर्क वमनादिक अनेक रोगोंको दूर करताहै, पोदीनेकी चटनी खानेसे अत्यन्त भूंख लगती है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे कर्पूरादिवर्गः ।

हरीतक्यादिवर्गः ।

दक्ष प्रजापतिं स्वस्थमश्विनौ वाक्यमूचतुः ।
कुतो हरीतकी जाता तस्यास्तु कति जातयः ॥
रसाः कति समाख्याताः कति चोपरसाः स्मृताः ।
नामानि कति चोक्तानि किं वा तासां च लक्षणम् ॥
के च वर्णगुणाः के च का च कुत्र प्रयुच्यते ।
केन द्रव्येण संयुक्ता कांश्च रोगान्व्यपोहति ॥
प्रश्नमेतद्यथा पृष्टं भगवन्वक्तुमर्हसि ।
अश्विनोर्वचनं श्रुत्वा दक्षो वचनमब्रवीत् ॥
पपात बिंदुर्मेदिन्यां शक्रस्य पिबतोऽमृतम् ।
ततो दिव्यात्समुत्पन्ना सप्तजातिर्हरीतकी ॥

अर्थ-प्रसन्नचित्त बैठेहुए दक्षप्रजापातिसे अश्विनीकुमारोंने पूछा कि, हे भगवन् ! हमारे प्रश्नके अनुसार आप विधिपूर्वक कहिये कि, हरीतकी कहां उत्पन्न हुई ? किस प्रकारसे इसका जन्म हुआ! कितने प्रकारकी है ? इसमें कितने रस और उपरस रहतेहैं, सर्व प्रकारकी हरीतकीके नाम क्या हैं ? उनके लक्षण क्या हैं ? उनके रंग और गुण क्या क्या हैं ? और कौनसी हरीतकी किसकिस प्रयोगमें आसकतीहै ? और हरातकी किसकिस द्रव्यके योगसे कोन कोनसै रोगोंका नाश करतीहै; इसप्रकार दोनों अश्विनीकुमारोंका वचन सुनकर दक्षप्रजापातिने उत्तर दिया कि, जिस समय देवराज इन्द्रने अमृतपान किया, तब उसमेंसे एक बूंद पृथ्वीपर गिरपडी, उस अमृतकी बूंदसे सातप्रकारसे हरीतकी उत्पन्न हुई ।

हरीतकीनामानि ।

हरीतक्यभया पथ्या कायस्था पूतनामृता ।
हैमवत्यव्यथा चापि चेतकी श्रेयसी शिवा ॥
वयस्था विजया चापि जीवन्ती रोहिणीति च ।

अथ–हरीतिकी–अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हैमवती, अव्यथा, चेतकी, श्रेयसी, शिवा, वयस्था, विजया, जीवन्ती, रोहिणी, (सुधा, बल्या, रसायनफला, पाचनी, प्रमथा, शाका, रुद्रप्रिया, वनतिक्ता, शक्रसृष्टा, सुधोद्भवा, जया, चेतनकी, प्रपथ्या, जीवप्रिया, जीवानिका, भिषग्वरा, भिषक्प्रिया, जीवन्ती, प्राणदा, जीव्या देवी, दिव्या, हिमजा, गिरिजा)

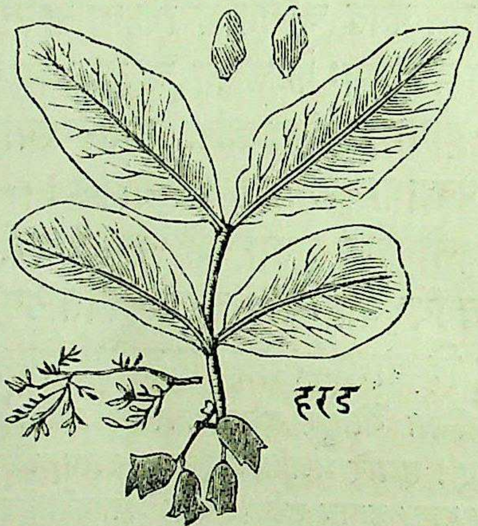

संस्कृतभाषामें	हरीतकी, बालहरीतकी ।
हिन्दीभाषामें	हरड, हर्र, हर्ड ।
वंगभाषामें	हरीतकी ।
मराठीभाषामें	हर्त्तकी । बाळहरडी ।
गुजरातीभाषामें	हरडे । हिमज ।
कर्णाटकीभाषामें	अणिलेय, प्रशसे ।
तैलिङ्गीभाषामें	करक्कायि, करकचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	कडकँ ।
उत	हरिडा । करेडा ।
द्रा०	कलूरा ।
इंग्रेजीभाषामें	मेरोबेलन्स् । Myrobaslon (हिमजा) ब्लाकमाइरोनेलन्स् । Black Myronelans
लैटिन्भाषामें	टरमिनेलिया, केबुला । Terminalia dhebul

फारसीभाषामें	हलैले कलांजीरेजवी अस्फर हलैले जर्द।
अरबीभाषामें	एहलीलज, कावली,अहलीजअस्फर, अहलीज असवद् ।

हरीतकी सप्तधा यथा ।

विजया रोहिणी चैव पूतना चामृताभया ।
जीवन्ती चेतकी चेति विज्ञेयाः सप्त जातयः ॥

अर्थ-विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी, इन भेदोंसे हर्ड सात जातिकी है ।

सातोंके पृथक् २ लक्षण ।

अलाबुवृत्ता विजया वृत्ता सा रोहिणी स्मृता ।
पूतनाऽस्थिमती सूक्ष्मा कथिता मांसलाऽमृता ॥
पंचरेखाभया प्रोक्ता जीवन्ती स्वर्णवर्णिनी ।
त्रिरेखा चेतकी ज्ञेया सप्तानामियमाकृतिः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-विजयाहरड-तोमडीके समान गोल और लम्बी होतीहै, रोहिणी हरड गोल होतीहै, पूतना हरड छोटी गुठलीवाली होती है, अमृतानामवाली हरड मोटी होती है, पांचरेखावाली अभया हरड होतीहै, जीवन्ती हरड स्वर्णके समान पीलेरंगकी होती है, और चेतकी हरड तीनरेखावाली होती है ।

जन्मस्थानम् ।

विंध्याद्रौ विजया हिमाचलभवा स्याच्चेतकी पूतना
सिंधौ स्यादथ रोहिणी तु विजया जाता प्रतिस्थानके ।
चम्पायाममृताभया च जनिता देशे सुराष्ट्राह्वये
जीवन्तीति हरीतकी निगदिता सप्तप्रभेदा बुधैः ॥

(नि० र०)

अर्थ-विजयाहरड विंध्याचल पर्वतमें उत्पन्न होतीहै । और चेतकी हरड हिमालय पर्वतपै होती है । पूतना नदीके तीरपै होती है । रोहिणी हरड सिंधु और विजया हरड प्रतिस्थानमें होतीहै, अमृता और अभया हरड चम्पादेशमें अत्यन्त होतीहै । और जीवन्ती हरड सौराष्ट्रदेशमें उत्पन्न होतीहै ।

सप्तानां प्रयोगभेदाः ।

विजया सर्वरोगेषु रोहिणी व्रणरोहिणी ।

प्रलेपे पूतना योज्या शोधनार्थेऽमृता हिता ॥
अक्षिरोगेऽभयाशस्ता जीवन्ती सर्वरोगहृत् ।
चूर्णार्थे चेतकी शस्ता यथायुक्तं प्रयोजयेत् ॥

अर्थ-सर्व प्रकारके रोगोंमें विजया हरड देनी चाहिये, व्रणको भरनेके लिये रोहिणी हरड उत्तम है, लेपमें पूतना लेनी चाहिये, विरेचनके अर्थ अमृता हरड हितकारी है, नेत्ररोगमें अभया हरड श्रेष्ठ है, जीवन्ती हरड सर्व रोगोंको हरनेवाली है और चूर्णमें चेतकी हरड डालनी चाहिये ।

दोप्रकारकी चेतकी हरडका स्वरूप ।

चेतकी द्विविधा प्रोक्ता सिता कृष्णा च वर्णतः ।
षडंगुलायता शुक्ला कृष्णा त्वेकांगुला स्मृता ॥

अर्थ-चेतकी हरड-सफेद और काली इन भेदोंसे दोप्रकारकी है, तहां सफेद रंगकी हरड छै अंगुल परिमाण लंबी होती है और काले रंगकी चेतकी हरड एक अंगुल परिमाण लम्बी होतीहै ।

सर्वप्रकारकी हरडोंके रेचनगुण ।

काचिदास्वादमात्रेण काचिद्गन्धेन भेदयेत् ।
काचित्स्पर्शेन दृष्टान्या चतुर्धा भेदयेच्छिवा ।

अर्थ-कोई हरड खानेसे, कोई सूंघनेसे, कोई स्पर्श करनेसे, और कोई दर्शनमात्रसेही दस्त लाती है, ऐसे चार प्रकारकी होती है ।

चेतकी हरडके रेचनगुण ।

चेतकी पादपच्छायामुपसर्पन्ति ये नराः ।
भिद्यन्ते तत्क्षणादेव पशुपक्षिमृगादयः ॥
चेतकी तु धृता हस्ते यावत्तिष्ठति देहिनः ।
तावद्भिद्येत वेगैस्तु प्रभावान्नात्र संशयः ॥
न धार्यं सुकुमाराणां कृशानां भेषजद्विषाम् ।
चेतकी परमा शस्ता हिता सुखविरेचनी ॥

अर्थ-चेतकी हरडके वृक्षकी छायामें जो मनुष्य, पशुपक्षी, मृगादिकगमनकरतेहैं, उन जीवोंको उसीसमयदस्त होनेलगतेहैं जबतक जो प्राणी

चेतकी हरडको हाथमें धारण किये रहेगा, तबतक उस प्राणीको उस हरडके प्रभावसे निश्चय दस्त होते रहेंगे, चेतकी हरडको सुकुमार दुर्बल और जो मनुष्य औषधिसे शत्रुता रखतेहैं, उनको कभीभी धारण नहीं करना चाहिये। चेतकी हरड अत्यन्त उत्कृष्ट हितकारी और सुखसहित दस्त करानेवाली है ।

विजयाहरडकी प्रशंसा ।

सप्तानामपि जातीनां प्रधाना विजया स्मृता ।
सुखप्रयोगा सुलभा सर्वरोगेषु शस्यते ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सातप्रकारकी हरडोंमें विजया नामवाली हरड सर्वमें प्रधान है, प्रयोगभी सुखकारक है । सुलभ अर्थात् सब स्थानोंमें मिलती है और सर्व रोगोंमें दी जातीहै ।

हरीतकीगुणाः ।

कषायाम्ला च मधुरा तिक्ता कटुरसान्विता ।
इति पंचरसा पथ्या लवणेन विवर्जिता ॥

अर्थ-कषाय, अम्ल, मधुर, तिक्त और कटु इस प्रकार हरड लवणरसके अतिरिक्त पांच रसवाली है ।

रूक्षोष्णा दीपनी मेध्या स्वादुपाका रसायनी ।
चक्षुष्या लघुरायुष्या बृंहणी चानुलोमिनी ॥
श्वासकासप्रमेहार्शःकुष्ठशोथोदरक्रिमीन् ।
वैस्वर्यग्रहणीरोगविबन्धविषमज्वरान् ॥
गुल्माध्मानतृषाच्छर्दिहिक्काकण्डूहृदामयान् ।
कामलां शूलमानाहं प्लीहानं च यकृत्तथा ॥
अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं च मूत्राघातं च नाशयेत् ॥

अर्थ-हरड-रूखी, उष्णवीर्य्य, अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक, पाकमें स्वादिष्ठ, नेत्रोंको हितकारी, हलकी आयुर्वर्धक, बृंहण, (बलकारक) और वायुको अनुलोमन करनेवाली है तथा श्वास, खांसी, प्रमेह, बवासीर, कोढ, सूजन, उदररोग, कृमी, स्वरभंग, संग्रहणी, विबन्ध, विषमज्वर, गुल्म, आध्मान (अफरा),

तृषा, वमन, हुचकी, कण्डू, हृदयरोग, कामला, शूल, आनाह, यकृत, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातका नाश करे है ।

अम्लभावाज्जयेद्वातं पित्तं मधुरतिक्ततः ।
कफं रूक्षकषायत्वात्त्रिदोषघ्नी ततोऽभया ॥

अर्थ-हरड-अम्लरससंयुक्त होनेसे वातका नाश करतीहै, मधुर और तिक्तरसयुक्त होनेसे पित्तका नाश करतीहै और कषाय तथा रूक्षतासे कफका नाश करतीहै, इसप्रकार हरड त्रिदोषनाशक है।

अन्यच्च ।

स्वादुतिक्तकषायत्वात्पित्तहृत्कफहृच्च सा ।
कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहृच्छिवा ॥

अर्थ-हरड-स्वादु, तिक्त, कषेलेपनसे पित्तको हरतीहै, कटु, तिक्त और कषेलेपनसे कफको हरतीहै और अम्लपनसे वातका नाश करतीहै ।

अन्यच्च ।

हरीतकी तु संप्रोक्ता पंचभिस्तु रसैर्युता ।
लवणेन च सा हीना योगवाही रसायनी ॥
अग्निदीप्तिकरी लघ्वी सरा मेध्या च लेखना ।
वातानुलोमनी हृद्या चक्षुष्या स्मृतिकारका ॥
वयसःस्थापनी बल्या बुद्धिदा कुष्ठनाशिनी ।
विवर्णता नाशिनी वै चेंद्रियाणां प्रसादनी ॥
शिरोरोगं नेत्ररोगं वैस्वर्यं विषमज्वरम् ।
पुराणं च ज्वरं पाण्डुं हृद्रोगं कामलां तथा ॥
शोषं शोथं मूत्रघातं ग्रहणीं चातिसारकम् ।
अश्मरीं च ज्वरं मेहं कृमिं श्वासं विषोदरम् ॥
कासं घर्मं मलस्तम्भमानाहं कर्णरोगकम् ।
अर्शः प्लीहां त्रिदोषञ्च गुल्मं हिक्कां व्रणं तथा ॥
ऊरुस्तम्भञ्च शूलञ्च नाशयेदरुचिं तथा॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-हरड-पांच रसोंसे युक्त है और लवणरसकरके वर्जित है। योगवाही, रसायन, अग्निप्रदीपक, हलकी, दस्तावर, मेधाजनक, लेखन, वातको अनुलोमन करनेवाली, हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, स्मृतिकारक, अवस्थास्थापक, बलकारक, कोढका नाश करनेवाली विवर्णतानाशक इन्द्रियोंको प्रसन्न करनेवाली तथा मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभंग, विषमज्वर, पुराना ज्वर, पाण्डु, हृदयरोग, कामला, शोष, सूजन, मूत्रा घात, संग्रहणी, अतिसार, पथरी, वमन, प्रमेह, कृमि, श्वास, विष, उदररोग, खाँसी, पसीना, मलस्तम्भ, आनाह, कर्णरोग, बवासीर, प्लीहा, त्रिदोष, गुल्म, हुचकी, व्रण, ऊरुस्तम्भ, शूल और अरुचिका नाश करे है।

हरीतक्याः पञ्चरसावस्थितिनिर्णयः ।

पथ्याया मज्जनिस्वादुः स्नाय्वामम्लो व्यवस्थितः ।
वृन्ते तिक्तस्त्वचि कटुरस्थिस्थस्तुवरो रसः ॥

अर्थ-हरडकी मज्जामें मधुर रस, नसोंमें अम्लरस, डंठलमें तिक्तरस, छालमें कटुरस और अस्थियोंमें कषैला रस रहताहै।

श्रेष्ठहरीतकीलक्षणम् ।

नवा स्निग्धा घना वृत्ता गुर्वी क्षिप्ता च यांभसि ।
निमज्जेत्सा प्रशस्ता च कथितातिगुणप्रदा ॥
नवादिगुणयुक्तत्वं तथैकद्विकर्षता ।
हरीतक्याः फले यत्र द्वयं तच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥

अर्थ-जो हरड नूतन, स्निग्ध, घन, गोल, भारी और पानीमें डालनेसे डूबजावे, तो हरड अत्यन्त गुणवाली और श्रेष्ठ होतीहै अथवा जो हरड पूर्वोक्त गुणयुक्त हो और चार तोले परिमाण भारी हो, उसको सर्वगुणवाली जानना।

चर्वितादिहरीतकीगुणाः ।

चर्विता वर्द्धयत्यग्निं पेषिता मलशोधिनी ।
स्विन्ना संग्राहिणी पथ्या भृष्टा प्रोक्ता त्रिदोषनुत् ।

अर्थ-हरड दातोंसे चबाकर खानेसे अग्निको बढातीहै पीसकर खानेसे मलको शोधन करेहै, अर्थात् मलको निकालकर उदरकी शुद्धि करती है, पकाईहुई खानेसे मलको रोकती है और भुनी हुई हरड त्रिदोषको नाश करे है।

भक्तान्वितहरीतकीगुणाः।

उन्मीलिनी बुद्धिबलेंद्रियाणांनिर्मूलिनी पित्तकफानिलानाम्।
विस्रंसिनी मूत्रशकृन्मलानां हरीतकी स्यात्सह भोजनेन ॥

अर्थ-हरड भोजनके साथ भक्षण कीहुई बुद्धि और बलको बढाती है तथा इन्द्रियोंको प्रकाशित करती है और पित्त, कफ, वातका नाश करतीहै तथा मल, मूत्र, और मलोंको निकालतीहै।

भुक्तोपरिसेवितहरीतकीगुणाः।

अन्नपानशतान्दोषान्वातपित्तकफोद्भवान्।
हरीतकी हरत्याशु भुक्तस्योपरि योजिता ॥

अर्थ-भोजनके पीछे भक्षण कीहुई हरड अन्नपानके दोष और वात, पित्त, कफसे उत्पन्न हुये दाषाका दूर करती है।

हरीतक्या विशेषगुणाः।

लवणेन कफं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करा।
घृतेन वातजान्रोगान्सर्वरोगान्गुडान्विता ॥

अथ-हरड-लवणके साथ कफको, मिश्रिके साथ पित्तको, घीके साथ वातसे उत्पन्न हुए रोगोंको और गुडके साथ खानेसे संपूर्ण रागाको नाश करती है।

ऋतुहरीतकीगुणाः।

सिन्धूत्थशर्कराशुण्ठीकणामधुगुडैः क्रमात्।
वर्षादिष्वभया प्राश्या रसायनगुणैषिणा॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-हरड-वर्षाऋतुमें सैन्धव लवणके साथ, शरद्ऋतुमें पीपलके साथ वसंतुऋतुमें मधुके साथ और ग्रीष्मऋतुमें गुडके साथ रसायन गुणोंकी चाहनावालोंको सवन करनी चाहिये।

हरीतक्याः श्रेष्ठगुणत्वम्।

हरीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी।
कदाचित्कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी[१]॥ (राजवल्लभ)

---

[१] चैत्र वैशाख-वसन्तऋतु ॥ ज्येष्ठ आषाढ-ग्रीष्मऋतु ॥ श्रावण भाद्रपद-वर्षाऋतु॥ आश्विन कार्तिक-शरद्तु ॥ मार्गशिर पौष-हेमन्तऋतु ॥ माघ फाल्गुन-शिशिरऋतु ॥

अर्थ-हरड मनुष्योंको माताकी समान हित करनेवाली है, माता तो कभी २ कुपितभी होजातीहै, परंतु उदरमें स्थित अर्थात् खाईहुई हरड कभी भी अपकारी नहीं होती ।

अन्यद्रव्ययुक्तहरीतकीगुणाः ।

द्राक्षां नियोज्य विधिना द्विगुणं शिवायाः
संचूर्ण्य चाक्षफलमानमितां प्रभाते ।
कल्याणिकाञ्च सुकृतां गुटिकामिमां यः
संसेवते भवति तस्य हि पित्तनाशः ॥
हृद्रोगरक्तविषमज्वरपाण्डुवान्ति-
कुष्ठानि कासकमलारुचिमेहमुख्याः ।
आनाहगुल्मपिटिकाप्रभवा विकाराः
सर्वे च ते विलयमाशु सुखेन यान्ति ॥

अर्थ-हरडसे दूनी दाख लेकर विधिपूर्वक चूर्ण करके बहेडेके फलकी समान गोली बनावै उस कल्याणकारी-गोलीका प्रातःकालमें जो मनुष्य सेवन करताहै, उसके पित्त, हृदयरोग, रक्तदोष, विषमज्वर, पाण्डुरोग, वमन, कुष्ठ, खांसी, कामला, अरुचि, प्रमेह, आनाह, गुल्म और पिडिका इत्यादि रोग नाश होते हैं ।

भुक्ते पथ्याऽभुक्ते पथ्याभक्ताभुक्ते पथ्यापथ्या ॥
जीर्णे पथ्याऽजीर्णे पथ्या जीर्णाजीर्णे पथ्यापथ्या ॥

अर्थ-हरड भोजनके उपरान्त और भोजनसे प्रथम दोनों समयमें पथ्य है, तथा जीर्णमें और अजीर्णमें भी पथ्य है ।

हरीतकी सेवननिषेधः ।

"अध्वातिखिन्नो बलवर्जितश्च रूक्षः कृशो लंघनकर्षितश्च ।
पित्ताधिको गर्भवती च नारी विमुक्तरक्तस्त्वभयां न खादेत्" ॥

अर्थ-मार्गमें चलनेसे थकाहुआ, बलहीन, रूक्ष, कृश, लंघन करनेसे दुर्बल हुआ, अधिक पित्तवाला, गर्भवती स्त्री और जिसका रुधिर निकालागया हो अर्थात् फस्त खुलीहोय, नवीनज्वरवाला, हनुस्तम्भरोगवाला और शोषयुक्त इत्यादि कहेहुये मनुष्योंको हर्ड खानी निषेध है ।

हरीतकीशब्दस्य निरुक्तिः।

हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हरेत्तु सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी ॥ (मदनपालनिघण्टु)

अर्थ-हर (महादेव) के भवनमें उत्पन्न हुई स्वभावसे हरे रंगवाली और सर्व रोगोंको हरतीहै, इसीकारण इसका नाम हरीतकी है ।

अस्य बीजगुणाः।

हरीतक्याः स्मृतं बीजं चक्षुष्यं गुरु वातनुत् ।
पित्तनाशकरं चैव मुनिभिः परिकीर्तितम्॥(नि० र०)

अर्थ-हरडके बीज नेत्रोंको हितकारी, भारी तथा वातपित्तहारी हैं।

विवरण-इसका बडा वृक्ष होताहै, पञ्जाब, शरद और काबुल देशमें अधिकतासे उत्पन्न होताहै । इसके पत्ते अडूसेकी समान होतेहैं, इसका फूल महीन आमके मौरकी समान होताहै, इस वृक्षको संस्कृतमें "नाभक" कहतेहैं । हरडकी अनेक जाति हैं ।

व्यवहार-हरडके फलकी छाल । मात्रा ६ मासेकी ।

बिभीतकीनामानि । (बहेडेके नाम)

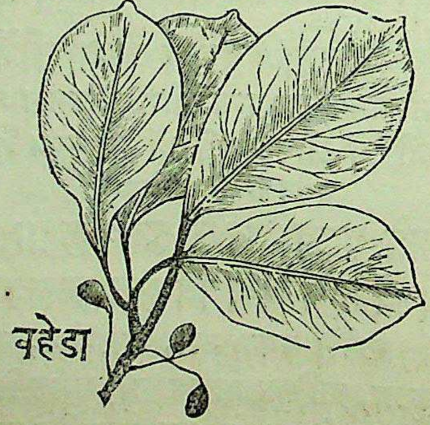

कलिद्रुमः कल्पवृक्षः संवर्ताक्षौ बिभीतकी ।

अर्थ-कलिद्रुम, कल्पवृक्ष, संवर्त, अक्ष, विभीतकी, (विभीतक, विभीत, तुष, कर्षफल, भूतवास, कालि, कुशिक, बहुवीर्य्य, तैलफल, भूतावास, संवर्त्तक, वासन्त, कलिवृक्ष, बहेडुक, हार्य, विषघ्न, कालिन्द, अनिलघ्नक, कासघ्न, कलियुगालय, तोलफल और तिलपुष्पक)

संस्कृतभाषामें	विभीतक ।
हिन्दी भाषामें	बहेडा ।
बंग भाषामें	वयडा-वहेडा ।
मराठी भाषामें	बेहेडा-धाटिंगवृक्ष ।
गुजराती भाषामें	वडां ।
कर्नाटकीभाषामें	तोरे ।
तैलिङ्गी भाषामें	वल्ला-तांडेचेट्टु ।
तामिली भाषामें	तनि, तण्डि, तोअण्डि ।
इंग्रेजीभाषामें	मेरोवेलन्-बेलिरिक Myrovallan Bellirica
लेटिन भाषामें	टरामिनेलिया-बेलिरिका TerumaliaBellirica
फारसीभाषामें	बलैले ।
अरबी भाषामें	बलैलज ।

अस्य गुणाः ।

विभीतकः कटुस्तिक्तो कषायोष्णः कफापहः ।
चक्षुष्यः पलितघ्नश्च विपाके मधुरो लघुः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-बहेडा-कटु, तिक्त, कषेला, कफनाशक, नेत्रोंको हितकारी, पलितरोगविनाशक, पाकमें मधुर और हलका है ।

अपि च ।

विभीतकं स्वादुपाकं कषायं कफपित्तनुत् ।
उष्णवीर्य्यं हिमस्पर्शं भेदनं कासनाशनम् ।
रूक्षं नेत्रहितं केश्यं कृमिवैस्वर्य्यनाशनम् ।
विभीतमज्जा तृट्छर्दिकफवातहरो लघु ॥
कषायो मदकृच्चाथ धात्रीमज्जापि तद्गुणः । (भावप्रकाश)

अर्थ-बहेडा-स्वादुपाकी, कषेला, कफपित्तनाशक, उष्णवीर्य्य,

स्पर्शमें शीतल, भेदक, कासनाशक, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुंदरतादायक, कृमि और स्वरभंगको नष्ट करेहै ।

बहेडेकी मींग तृषा, वमन, कफ और वातनाशक है। हलकी, कषेली और मदकारक है। आमलेकी मज्जाके गुण भी इसकी समान जानने,

अन्यच्च ।

विभीतकः कटुस्तिक्तस्तुवरोष्णो लघुः सरः ।
पाक च मधुरो रूक्षश्चक्षुष्यः केशवृद्धिकृत् ॥
हिमस्पर्शो भेदकश्च पलितस्वरभंगजित् ।
नासारोगं रक्तदोषं कण्ठरोगं च नेत्ररुक् ॥
जन्तूनां कासहृद्रोगनाशको मुनिभिः स्मृतः । (नि० र०)

अर्थ-बहेडा-चरपरा, कडवा, कषेला, हलका, दस्तावर, पाकके समय मधुर, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, केशवर्द्धक, शीतस्पर्श, भेदक तथा पलित, स्वरभंग, नासारोग, रुधिरदोष, कण्ठरोग, नेत्ररोग, खांसी, हृदयरोग और कृमिका नाश करहै ।

अपिच ।

"विभीतको लघुः शीतः पाके स्वादुः कफास्रजित् ।
कासहृत्क्षयकुष्ठघ्नः केशवृद्धिकरः परः ॥
परं केश्यस्तु तन्मज्जा नेत्रपुष्पहरोंजनात् ।
नासारोगनेत्ररोगकृमिशुक्रहरो लघुः ॥
अक्षवृक्षभवः कल्कश्चित्रपाण्डुगदापहः ।"

अर्थ-बहेडा-हलका, शीतल, तथा पाकमें स्वादिष्ठ, कफ रुधिरविकार, खांसी, क्षयीरोग और कुष्ठको नष्ट करेहै, केशवर्द्धक, नासारोग, नेत्ररोग, कृमि, शुक्रको हरेहै, हलका और केशोंको हितकारी है, इसकी मींग नेत्रके फूलेको दूर करेहै, इसके वृक्षकी छालका काढा, चित्रकोढ और पाण्डुरोगको दूर करेहै ।

विवरण-इसका बडा वृक्ष जंगल और पर्वतोंमें उत्पन्न होताहै, पत्ते वडके पत्तोंके समान होतेहैं, फूल अत्यन्त सूक्ष्म होता है, फल वरनाके फलकी समान और झुमकोंमें आतेहैं । व्यवहार-फलकी छाल । मात्रा ३ मासेकी ।

आमलकीनामानि ।

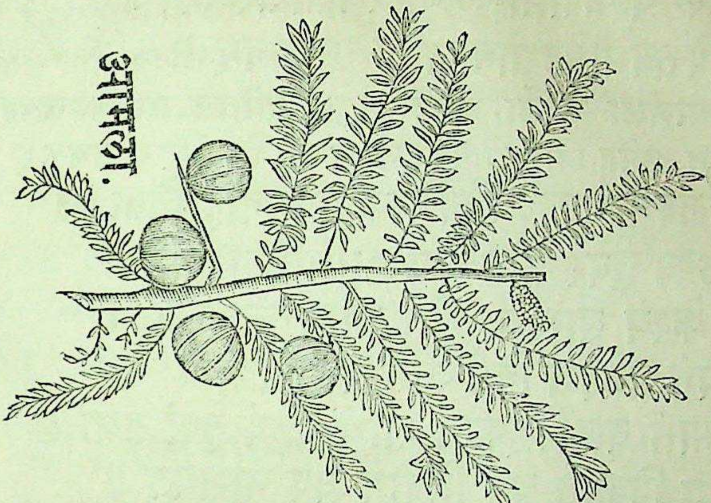

आमलकी पंचरसा श्रीफली धात्रिका शिवा ।
अकरामृता वयस्था च वृष्या तिष्यफला तथा ॥

अर्थ-आमलकी, पंचरसा, श्रीफली, धात्रिका, शिवा, अकरा, अमृता वयस्था, वृष्या, तिष्यफला,(वयःस्था, कायस्था, बहुफली, शान्ता, धात्री, अमृतफला, वृत्तफला, रोचनी, कर्षफला, तिष्या, धात्रीफल, श्रीफल, अमृतफल, शिव, आमलक, जातीफल)

संस्कृतभाषामें	आमलकी ।
हिन्दीभाषामें	आमला ।
वंगभाषामें	आम्ला ।
मराठीभाषामें	आंवळा ।
गुजरातीभाषामें	आंवला ।
कर्णाटकीभाषामें	नेल्लि ।
तैलङ्गीभाषामें	उसर काय
उत्	अंडा ।
इंग्रेजीभाषामें	एंब्लि कमिरो वेलन् । Emblic myrobalan
लैटिनभाषामें	फिलखस एंबलका Phylakhus Amblica
फारसीभाषामें	आम्लझं ।
अरबीभाषामें	अमूलज् ।

अस्या गुणाः ।

आमलं च कषायाम्लं मधुरं शिशिरं लघु ।
दाहपित्तवमीमेहशोषघ्नं च रसायनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-आमला-कषेला, अम्ल, मधुर, शीतल, हलका तथा दाह, पित्त, वमन, प्रमेह और शोषका नाश करे है और रसायन है ।

आमलक्याः फलं किंचित्कटुकं स्वादु तिक्तकम् ।
अम्लं च तुवरं शीतं जराव्याधिविनाशनम् ॥
वृष्यं केश्यं सारकञ्च हितं चारुचिनाशकम् ।
रक्तपित्तं प्रमेहञ्च विषं जूर्तिं वमिं तथा ॥
आध्मानं बद्धविट्कत्वं शोथं शोषं तृषां तथा ।
रक्तस्य विकृतिं चैव त्रिदोषं चैव नाशयेत् ॥
अम्लत्वाद्वातहं प्रोक्तं माधुर्याच्चैव शीततः ।
पित्तनाशकरं चोक्तं रूक्षत्वाच्च कषायतः ॥
कफनाशकरं प्रोक्तं पूर्वैर्विद्याविशारदैः ।

अर्थ-आमला-किञ्चित् कटु, स्वादिष्ठ, कडवा, अम्ल, कषेला, शीतल, जरा व्याधिनाशक, वायजनक, केशोंको हितकारी, दस्तावर, हितकारक, अरुचिनाशक, तथा रक्तपित्त, प्रमेह, विष, ज्वर, वमन, आध्मान-(अफारा) मलबद्धता, सूजन, शोष, पियास, रक्तविकार और त्रिदोषका नाश करेहै ।

आमला-खट्टेपनसे वातका, मधुरपन और शीतलतासे पित्तका और कषेलेपनस तथा रूक्षतासे कफका नाश करे है, इसप्रकार आमला त्रिदोषनाशक है ।

शुष्कामलकगुणाः ।

आमलस्य फलं शुष्कं तिक्तमम्लं कटु स्मृतम् ।
मधुरं तुवरं केश्यं भग्नसन्धानकारकम् ॥
धातुवृद्धिकरं नेत्र्यं लेपनात्कांतिकारकम् ।
पित्तं कफं तृषां घर्मं मेदोरोगं विषं तथा ॥
त्रिदोषं नाशयत्येवं पूर्वाचार्यैर्निरूपितम् । (नि० र०)

अर्थ-सूखा आमला-कडवा, खट्टा, चरपरा, मीठा, कषेला, कशोंको हितकारी, भग्नसन्धानकारक, धातुवर्द्धक, और नत्राका हितकारी है। इसका लेप करनेसे देहकी कांति बढती है, तथा पित्त, कफ, तृषा, पसीना, मेद, विष और त्रिदोषनाशक है।

अस्य मज्जागुणाः।

तन्मज्जा प्रदरच्छार्दिवातपित्तज्वरापहा।
कषाया मधुरा वृष्या श्वासकासनिबर्हणा॥

अर्थ-इसकी मींग प्रदररोग, वमन, वात, पित्त और ज्वरको दूर करेहै। तथा कषेली, मधुर, वीर्यजनक, श्वास और खांसीको नष्ट करेहै।

यस्य यस्य फलस्येह बीर्यं भवति यादृशम्।
तस्य तस्यैव वीर्य्येण मज्जानमपि निर्दिशत्॥(भा०प्र०)

अर्थ-जिस जिस वृक्षके फलमें जैसा जैसा वीर्य होताहै, वैसाही उसकी मींगमेंभी जानना।

विवरण-इसका बडा वृक्ष बाग और जंगलमें होताहै, पत्ते छोटे छोटे इमलीके समान होतेहैं, इसकी शाखाओंपै छोटी छोटी लाईके दानेकी समान पीले फूल होतेह, फल तेंदूकी समान गोल और झुमकोंमें लगते हैं। फलके ऊपर छः रेखा अत्यन्त सूक्ष्म होती हैं।

व्यवहार-फलकी छाल। मात्रा ४ मासेकी।

शुण्ठीनामानि।

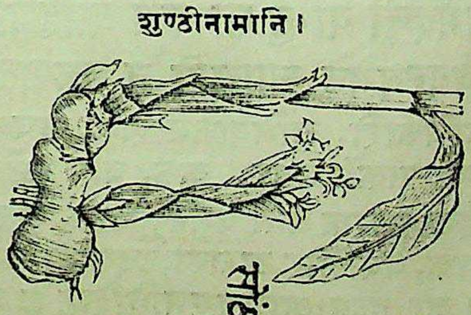

शुण्ठी महौषधी विश्वा शुष्कार्द्रं विश्वभेषजम्।
भेषजं शृङ्गबेरञ्च विश्वं कफारि नागरम्॥

अर्थ-शुण्ठी, महौषधी, विश्वा, शुष्कार्द्र, विश्वभेजष, भेषज शृंगबेर,

विश्व, कफारि, नागर (महौषध, शुण्ठि, इन्द्रभेषज, विश्वौषध, कटुग्रन्थि, कटुभद्र, शुण्ठ्य, कटूत्कटक, कटूषण, सौवर्ण, आर्द्रक, शोषण, नागराह्व, आर्द्रज, औषध)

संस्कृत भाषामें	शुंठी ।
हिन्दीभाषाम	सौंठ, शुंठी ।
वङ्गभाषामें	शुंट-ठ ।
मराठीभाषामें	सुंठ ।
गुजरातीभाषामें	शुण्ठ्य
कर्णाटकीभाषामें	शुंठि ।
तैलिङ्गीभाषामें	शोंठी ।
इंग्रेजीमें	ड्राइजञ्जर । Dryginger
फारसीभाषामें	जंजबील ।

अस्या गुणाः।

शुण्ठी रुच्यामवातघ्नी पाचनी कटुका लघुः ।
स्निग्धोष्णा मधुरा पाके कफवातविबन्धनुत् ॥
स्वरघ्नी [illegible] वृष्या स्वर्प्यावमिश्वासशूलकासहृदामयान् ।
हन्ति श्लीपदशीतार्शआनाहोदरमारुतान् ॥
आग्नेयगुणभूयिष्ठंतोयांशपरिशोषि यत् ।
संगृह्णाति मलं तत्तु ग्राहि शुण्ठ्यादयो यथा ॥
विबन्धभेदनी या तु सा कथं ग्राहिणी भवेत् ।
शक्तिर्विबन्धभेदे स्याद्यतो न मलपातने॥(भावप्रकाश)

अर्थ-सौंठ-रुचिकारी, अग्निवातनाशक, पाचक, चरपरी, हलकी स्निग्ध, उष्णवीर्य्य, पाकमें मधुर, कफ, वात और विबन्धको दूर करेहै। वीर्य्यवर्द्धक, सारक तथा वमन, श्वास, शूल, खांसी, हृदयरोग, श्लीपद, शोक, बवासीर, अफारा, उदररोग, और वातके रोगोंका नाश करेहै। जो द्रव्य आग्नेयगुणविशिष्ट है और जलांशशोषक है, मलका ग्रहण करताहै जिसप्रकार सौंठ आदि पदार्थ ग्राही हैं, कोई कहै कि जो विबन्धको भेदन करनेवाली है वह कैसे ग्राही होसकती है तो कहतेहैं कि सौंठमें विबन्धभेदकी शक्ति है, परन्तु मलपातकी नहीं ।

अन्यच्च ।

नागरं कफवातघ्नं विपाके मधुरं कटु ।
वृष्योष्णं रोचनं हृद्यं सस्नेहं लघुदीपनम् ॥
पाण्डुं संग्रहणीं पित्तं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ।

अर्थ-सोंठ-कफवातनाशक, पचनेमें मधुर, चरपरी, वीर्यवर्द्धक, गरम, रोचक, हृदयको हितकारी, स्नेहयुक्त, हलकी और दीपन है तथा पाण्डुरोग संग्रहणी और पित्तका नाश करे है ।

आर्द्रकनामानि ।

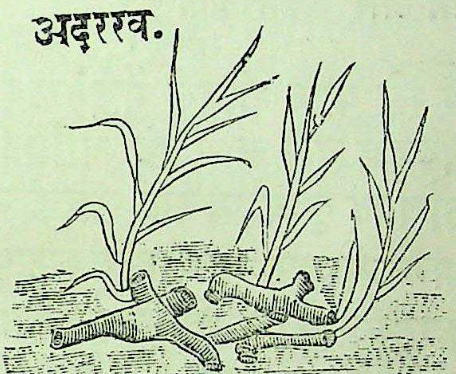

आर्द्रकं शृङ्गबेरं स्यात्कटुभद्रं कटूत्कटम् ।

अर्थ-आर्द्रक, शृङ्गबेर, कटुभद्र, कटूत्कट, (गुल्ममूल, मूलज, कन्दर, वर, महीज, सैकतेष्ट, अनूपम, अपाकृष्णक, चन्द्राख्य, राहुच्छत्र, सुशाकक, शार्ङ्ग, आर्द्रशाक, मच्छाक, आर्द्रिका)

संस्कृतभाषामें	आर्द्रक।
हिन्दीभाषामें	अदरख-क।
वंगभाषामें	आदा।
मराठीभाषामें	आलें।
गुजरातीभाषामें	आदु।
कर्णाटकीभाषामें	अल्ल।
तैलिङ्गीभाषामें	अल्ल।
इंग्रेजीभाषामें	जिंजिरुट्। Gingerroot
अरबीभाषामें	जिंजिविलतर।

लैटिन्‌भाषामें जिंजिबर ओफिसिनेली । Gingiber Officinale

फारसीभाषामें जिंजिविलरतब ।

अस्य गुणाः ।

आर्द्रिका भेदनी गुर्वी तीक्ष्णोष्णा दीपनीमता ।
कटुका मधुरा पाके रूक्षा वातकफापहा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अदरख-भेदक, भारी, तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, चरपरा, पाकमें मधुर, रूक्ष, वात और कफनाशक हैं ।

अपिच ।

शृङ्गबेरं रसे पाके शीतलं मधुरं लघु ।
कटुकोष्णञ्च हृद्यं च भेदकं चाग्निदीपकम् ॥
रूक्षं रुचिप्रदं वृष्यं पाचकं सारकं मतम् ।
कण्ठ्यमग्नेर्मांद्यहरं शोथारुचिकफापहम् ॥
वातं कण्ठरुजं कासं श्वासमानाहवातकम् ॥
मलबंधं वमिं शूलं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥
तस्यांकुरा रसाभावात्कफवातकरा मताः ।
रक्तदोषस्य शमनास्ते वृद्धाः कफनाशकाः ॥
काञ्जिका सैन्धवं चार्द्रं पाचकं चाग्निदीपनम् ।
मलबाधामवातानां कफवातविनाशकम् ॥
केवलं लवणेनाथ मिश्रितं चाग्निदीपनम् ।
रुच्यं प्रियं सरं प्रोक्तं शोथवातकफापहम् ॥
भोजनात्पूर्वपश्चात्तुकण्ठजिह्वाविशोधकम् ।
जम्बीरसैन्धवयुतं रुचिदं मुखशुद्धिकृत् ॥
मूत्रकृच्छ्रं पाण्डुरोगं रक्तपित्तं व्रणं तथा ।
मूत्राश्मरीं ज्वरं दाहं पित्तं ग्रीष्मे शरद्यपि ॥
नाशयेदिति च प्रोक्तं शेषा विश्वासमा गुणाः ।

अर्थ-अदरख रसमें और पाकमें शीतल, मधुर, चरपरा गरम हृदयको

हितकारी, भेदक (दस्तावर),अग्निको दीपन करनेवाला, रूखा, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, वीर्य्यजनक, पाचक, सारक, कण्ठको हितकारक तथा मंदाग्नि, सूजन, अरुचि, कफ, वात, कण्ठरोग, खाँसी, श्वास, आनाह, वात, मलबन्ध, वमन और शूलका नाश करेहै ।

कांजी-और सैन्धवलवणयुक्त अदरख-पाचक, अग्निप्रदीपक तथा मलबन्ध और आमवातका नाश करेहै ।

केवल लवणमिश्रित अदरख-अग्निको दीपन करे, रुचिको उत्पन्न करे, प्रिय, सारक तथा सूजन, वात और कफका नाशक है ।

भोजनके प्रथम भक्षण कियाहुआ अदरख-कण्ठ और जिह्वाको शुद्ध करेहै । जंभीरी नींबू और सैंधानोनके साथ अदरख मुखकी शुद्धि करेहै तथा मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, घाव, मूत्ररोग, पथरी, ज्वर, दाह और पित्तको शरदृतुमें तथा ग्रीष्मऋतुमें नष्ट करे है, शेष गुण सोंठकी समान जानने ।

द्रव्यगुणाः ।

वातपित्तकफेभानां शरीरवनचारिणाम् ।
एक एव निहंत्यत्र लवणार्द्रककेसरी ॥

अर्थ-वात, पित्त, कफरूपी हाथी जो वनरूपी शरीरमें विचरण करते हैं उनके मारनेको एकही महापराक्रमी लवण और अदरखरूपी सिंह हैं ।

भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रकभक्षणम् ॥

अर्थ-भोजनके आदिमें अर्थात् प्रथम लवणसहित अदरखका सेवन करना सदा पथ्य है ।

निषधः ।

कुष्ठपांड्वामये कृच्छ्रे रक्तपित्तव्रणज्वरे ।
दाहे निदाघे शरदि नैव पूजितमार्द्रकम् ॥

अर्थ-अदरख-कोढमें, पाण्डुरोगमें, मूत्रकृच्छ्रमें, रक्तपित्तमें, व्रणरोगमें, ज्वरमें, दाहरोगमें, ग्रीष्मऋतुमें और शरदृतुमें अपथ्य है। ऐसा भावमिश्रने लिखा है ।

विवरण । अदरखका गुल्म होताहै, रेतली भूमि और सजल स्थानमें अधिकतासे उत्पन्न होताहै, पत्ते छोटी इलायचीके समान

होते हैं, इसके कन्दकोही अदरख कहते हैं। उसी कन्दको सुखाकर सोंठ बनाते हैं, सोंठकी अनेक जातिहैं।

मरिचनामानि।

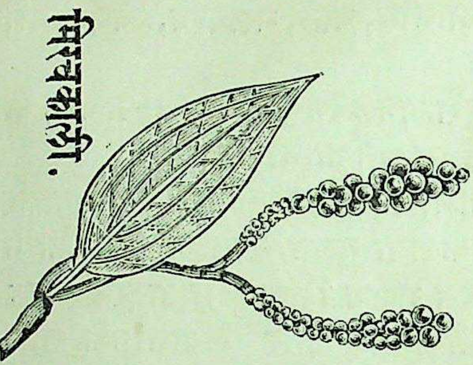

मरिचं पवितं श्यामं वेणुजं यवनप्रियम्॥
वल्लीजं वेल्लजं शुद्धं कोलकं धर्मपत्तनम्॥

अर्थ-मरिच-पवित, श्याम, वेणुज, यवनप्रिय, वल्लीज, वेल्लज, शुद्ध, कोलक, धर्मपत्तन, (कोल, ऊषण, वरिष्ठ, यवनेष्ट, वृत्तफल, शाकाङ्ग, वेणुक, कटुक, शिरोवृत्त, वार, कफविरोधि, मृष्ट, सर्वहित, कृष्ण)

सितमरिचनामानि।

सितमरिचं शीतोत्थं सितवल्लीजं च वालकं बहुलम्।
धवलं चन्द्रकमेतन्मुनिनामगुणाधिकं च वश्यकरम्॥

अर्थ-सितमिरच, शीतोत्थ, सितवल्लीज, वालक, बहुल, धवल, चन्द्रक, (सिताख्य)

संस्कृतभाषामें	मरिच, सितमरिच।
हिन्दीभाषामें	कालीमिरच, सफेद मिरच। दक्षिणी मिरच।
बंगभाषामें	मरिच, गोलमरिच, सादामरिच।
मराठीभाषामें	मिरें-पांढरें, मिरीं।
गुजरातीभाषामें	मरी, तीखा, धोलांमरी।
कर्णाटकीभाषामें	मेणसु, बिलेयमेणसु।
तैलिङ्गीभाषामें	मरिया, मिरियन॥
तामिलीभाषामें	मिलगु, मिलाओ।

अँग्रेजीभाषामें	ब्लाकपेपर	Black Papper
लैटिनभाषामें	पाईपर नाइज्रम ।	Piper Nigrum
फारसीभाषामें	पिल पिले अस्वद हल पिलेगिर्द ।	
अरबीभाषामें	फिल फिलेअवीद ।	

अस्य गुणाः ।

मरिचं कटुकं तीक्ष्णं दीपनं कफवातजित् ।
उष्णं पित्तकरं रूक्षं श्वासं शूलकृमीन्हरेत् ॥
तथार्द्रं मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु ।
किञ्चित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ॥ (भा० प्र०)

अन्यच्च ।

अर्थ-कालीमिरच-चरपरी, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाली, कफ वातनाशक, गरम, पित्तजनक, रूखी तथा श्वास, शूल और कृमिको नष्ट करेहै । कच्ची कालीमिरच-पाकमें मधुर, किंचित् उष्ण, चरपरी, भारी, ईषत् तीक्ष्ण, कफको निकालनेवाली और पित्तकारक नहीं है ।

सितमरिचगुणाः ।

कटूष्णं लघु तच्छुष्कमवृष्यं कफवातजित् ।
नात्युष्णं नातिशीतञ्च वीर्यतो मरिचं सितम् ॥
गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यश्च विशेषतः ॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ-सफेद मिरच-चरपरी, गरम, हलकी, अवृष्य, कफ वातनाशक इसका वीर्य न अत्यन्त गरम है और न अत्यन्त शीतल है, इसके गुण काली मिरचके समान हैं, परन्तु विशेषकरके नेत्रोंको हितकारी है ।

अपिच ।

कटूष्णं श्वेतमरिचं विषघ्नं भूतनाशनम् ।
अवृष्यं दृष्टिरोगघ्नं युक्तं चैव रसायनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेद मिरच-चरपरी, गरम, विषनाशक, भूतनाशक, अवृष्य, दृष्टिरोगविनाशक और किसीके साथ रसायन है ।

अन्यच्च-मरिचगुणाः ।

मरिचं कटुकं तिक्तं लघु चोष्णं रुचिप्रदम् ।
अग्निदीप्तिकरं तीक्ष्णमवृष्यं छेदि शोषकम् ॥

रूक्षं पित्तकरश्चैव कफवातं कृमीञ्जयेत् ।
श्वासं कासंच हृद्रोगं शूलं चैव विनाशयेत् ॥
प्रमेहं चार्शरोगञ्च पथ्यं प्रोक्तं पुराविदैः । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-कालीमिरच-कडवी, चरपरी, हलकी, गरम, रुचिदायक, अग्निदीपक, तीक्ष्ण, अवृष्य, छेदक, शोषक, रूक्ष, पित्तकारक,तथा कफ, वात, कृमि, श्वास, खांसी, हृदयरोग, शूल, प्रमेह और बवासीरका नाश करैहै ।

कच्चीमिरचका सेक करनेसे सूजन दूर होतीहै, गायके घीके साथ पिसीहुई मिरचका व्यवहार करनेसे अर्शरोगका वियोग होता है । एक मिरचको सुईके नोंकपर वेधकर उसको अग्नि अथवा दीपक लोहपै जलावै; उसका धुआँ सूँघनेसे हिचकी और शिरकी पीडा शान्त होतीहै । मिरचमें घी मिश्रितकर खानेसे अनेक प्रकारके नेत्ररोग विध्वंस होतेहैं ।

विवरण ।मिरच लता दक्षिणदेशके त्रिवांकुर मलबारादिकी खादर उपजाऊ भूमिमें अधिकतासे उत्पन्न होतीहै, वहाँके रहनेवाले इसलताके छोटे छोटे टुकडे करके बडे बडे वृक्षोंकी जडमें लगादेते हैं तीनवर्षमें लतापै फल आताहै फल पककर लाल होजाते हैं,परन्तु सूखजाने पर कालारंग आजाताहै ।शाक इत्यादिमें कालीमिरच मसाला होगईहै ।लाल मिरचके पर्य्याय आगे लिखेहैं ।

पिप्पलीनामानि ।

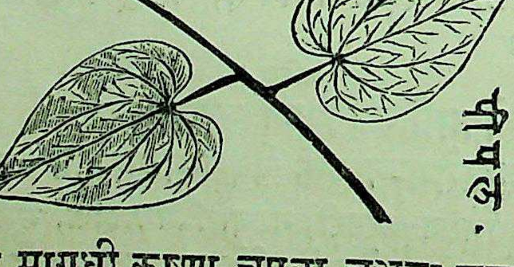

पिप्पली मागधी कृष्णा चपला चञ्चला कणा ।
उपकुल्या च कोल्या च वैदेही तिक्ततण्डुला ॥

अर्थ-पिप्पली, मागधी, कृष्णा, चपला, चञ्चला, कणा, उपकुल्या, कोल्या,वैदेही,तिक्ततण्डुला(उष्णा,शौण्डी,कोला,कटी,एरंडा,मगधा,

ऊषणा, पिप्पली, कृकला, कटुबीजा, कोरङ्गी, तिक्ततण्डुला, श्यामा, सूक्ष्मतण्डुला, दन्तकफा, मगधोद्भवा)

संस्कृतभाषामें	पिप्पली
हिन्दीभाषामें	पीपल (र)
वंगभाषामें	पिपुल।
मराठीभाषामें	पिंपळी।
गुजरातीभाषामें	लिंडिपीपल।
कर्णाटकीभाषामें	हिप्पली ।
तैलिंगभाषामें	पिप्पलु ।
तामिलिभाषामें	पिपाल ।
वम्	बङ्गालिपिम्परि ।
इंग्रेजीभाषामें	लागपाप्पर । Long pepper
लैटिनभाषामें	पाइपर लाँग । Piper Longuw
फारसीभाषामें	पिल्पिल् दराज ।
अरबीभाषामें	डारफिल, फिल् ।

अस्या गुणाः ।

पिप्पली दीपनी वृष्या स्वादुपाका रसायनी ।
अनुष्णा कटुका स्निग्धा वातश्लेष्महरी लघुः ॥
पिप्पली रेचनी हन्ति श्वासकासोदरज्वरान् ।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान् ॥
आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा शीतला मधुरा गुरुः ।
पित्तप्रशमनी सा तु शुष्का पित्तप्रकोपिनी ॥
पिप्पलीमधुसंयुक्ता मेदःकफविनाशिनी ।
श्वासकासज्वरहरा वृष्या मेध्याग्निवर्धिनी ॥
जीर्णे ज्वरेऽग्निमान्द्ये च शस्यते गुड़पिप्पली ।
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥
द्विगुणः पिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजांमतः । (भा० प्र०)

अर्थ-पीपल अग्निको दीपन करनेवाली,वीर्यको उत्पन्न करनेवाली, पाकमें स्वादिष्ठ, रसायन, किञ्चित् उष्ण, चरपरी,स्निग्ध, वात-कफ-नाशक, हलकी, दस्त लानेवाली तथा श्वास, कास, उदररोग,ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, (क्षयरोग) बवासीर, प्लीहा, शूल और आमवातका नाश करेहै ।

कच्ची पीपल-कफको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, शीतल, मधुर, भारी, पित्तको शान्त करनेवाली,और सूखी पीपल, पित्तको कुपित करनेवाली है ।

मधुयुक्त पीपल-मेदरोग, कफ, श्वास, खाँसी और ज्वरनाशकहै, वीर्यवर्द्धक, मेधाजनक और अग्निवर्द्धक है, गुडमिश्रित पीपल जीर्णज्वर, हृदयरोग, मंदाग्नि, खाँसी, अजीर्ण, अरुचि श्वास, पाण्डुरोग और कृमिरोगका नाश करेहै ।

पीपलका चूर्ण और सोंठका चूर्ण गुड मिलाकर खानेसे आम, शूल अजीर्ण और सूजन दूर होती है ।

पीपलको नीमके रसमें उबालकर नास देनेसे अपस्माररोग दूर होताहै ।

पीपलके काढेमें सहत मिलाकर खानेसे वातज्वर और कफज्वर दूर होताहै ।

सहतमें पीपलका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे मूर्च्छारोग दूर होताहै,

विवरण-पीपलकी बेल जंगवार और मगधदेशमें अधिकतासे उत्पन्न होतीहै, इसके पत्ते नागवल्ली अर्थात् पानके समान होतेहैं ।

पिप्पलीमूलनामानि।

मूलं तु पिप्पलीमूलं ग्रन्थिकं चटका शिरः ।
कणामूलं कोलमूलं चटिकासर्वग्रन्थिकम् ॥

अर्थ-मूल, पिप्पलीमूल, ग्रन्थिक, चटकाशिर,कणामूल, कोलमूल चटिका, सर्वग्रन्थिक, (ग्रंथीक, षड्ग्रन्थि, शिर, कटुग्रन्थि, कटुमूल। कटूषण, सर्वग्रन्थि, पत्राढ्य, विरूप, शोषसम्भव, सुगन्धि, ग्रंथिल, ऊषण, मागध, मागधी, जटा)

संस्कृतभाषामें	पिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	पीपरा (ला) मूल ।
वङ्गभाषामें	पिपुलमूल ।
मराठीभाषामें	पिंपळमूळ ।

गुजरातीभाषामें	पीपरीमूलना गंठोडा ।
कर्णाटकीभाषामें	पिप्पलियवेरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिप्पली वेरुपिप्पलीदुम्य ।
इंग्रजी भाषामें	पाई पररूट Piper root
लैटिन्भाषामें	पाइपर ओफिसिनेरं Piper officinarum
फारसीभाषामें	फिल्फिल् मोया ।
आरबीभाषामें	असलुल् फिलफिल ।

अस्य गुणाः ।

दीपनं पिप्पलीमूलं कटूष्णं पाचनं लघु ।
रूक्षं पित्तकरं भेदि कफवातोदरापहम् ॥
आनाहप्लीहगुल्मघ्नं कृमिश्वासक्षयापहम् (भा० प्र०)

अर्थ-पीपरामूल-जठराग्निको दीपन करे, चरपरा, गरम, पाचक, हलकां, रूखा, पित्तकारक, भेदक तथा कफ, वात, उदररोग, आनाह, प्लीहा, गुल्म, कृमि, श्वास और क्षयरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

भेदनं पिप्पलीमूलं कासामशूलनाशनम् ।
पित्तप्रकोपि तीक्ष्णोष्णं रूक्षं पाचनरोचनम् ॥

अर्थ-पीपरामूल-दस्तावर, खांसी, आम और शूलनाशक है । पित्तको कुपित करे, तीक्ष्ण, उष्ण, रूक्ष, पाचक और रोचक है ।

चविकानामानि ।

चव्यं चवणमुच्छिष्टं चविकाकोलवल्लिका ।

अर्थ-चव्य, चवण, उच्छिष्ट, चविका, कोलवल्लिका, (चव्या, चविक चवी, चावि, पुरन्दर, तेजोवंती, कोला, नाकुली, उषणा, चव्यक, वशिर, गन्धनाकुली, वल्ली, कोलवाल्लि, कोल कुक्कुटमस्तक. तीक्ष्णकारिकणावल्ली, कृकर, कुटिलसप्तक, कटुका, कटुपाकिनी)

संस्कृतभाषामें	चविका, चव्य ।
हिन्दीभाषामें	चव्य ।

बंगभाषामें	चई गाच्छ।
मराठीभाषामें	मिरवेलीचें मूळ, चावळ ।
गुजरातीभाषामें	चवक।
कर्णाटकीभाषामें	चव्य
तैलंगीभाषामें	सेवामु, चैकार्ण।
लेटिन्भा०	चविका, एक्स वर्धी आई पाइपरचव । Chavica Exwhrdhi Aye Piper Chava

अस्य गुणाः।

चव्यं स्यादुष्णकटुकं लघुरोचनदीपनम् ।
जन्तूद्रेकापहं कासश्वासशूलार्तिकृन्तनम् ॥ (राजनि०)

अर्थ-चव्य-गरम, चरपरी, हलकी, रोचक, जठराग्निप्रदीपक तथा कृमि, खांसी, श्वास और शूलविनाशक है।

अपिच ।

पिप्पलीमूलवत्तस्या विशेषाद्गुदजापहम् ।
चव्यपुष्पं गरश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥ (म० नि०)

अर्थ-चव्यके गुण पिपलामूलके समान हैं, विशेषकरके गुदाके रोगोंको दूर करे है।

इसका मूल-विष, श्वास, खांसी और क्षयरोगनाशक है।

अन्यच्च।

चवकं कटुकं चोष्णं रुच्यं चाग्नेश्च दीपनम् ।
लघूक्तं च कृमिश्वासकासवातकफापहम् ॥
ज्वरार्शःशूलशमनमृषिभिः परिकीर्तितम् ।
अन्ये गुणास्तु विज्ञेयाः पिप्पलीमूलवद्बुधैः ॥

अर्थ-चव्य-चरपरी, गरम, रुचिकारक, जठराग्निदीपक, हलकी तथा कृमि, श्वास, खाँसी, वादी, कफ, ज्वर, बवासीर और शूलका नाश करे है। शेष गुण पीपलामूलकी समान जानने. चव्यकी वेल मलबारमें होतीहै, इसके फलको गजपीपर कहते हैं।

गजपिप्पलीनामानि।

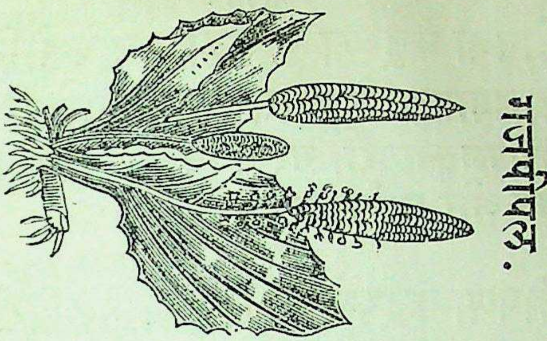

चविकायाः फलं प्राज्ञैः कथिता गजपिप्पली।
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरश्च सा॥

अर्थ-चव्यके फलकोही भिषक् लोक गजपीपल कहते हैं। कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर, गजकृष्णा, (करिपिप्पली, इभकणा, कापिवल्ली, कपिल्लिका, कपिवल्लिका, वसिर, गजाह्वा, इभोषणा, कुञ्जरपिप्पली, गजोषणा, चव्यफल, चव्यजा, छिद्रवैदेही, दीर्घग्रन्थि, तेजसी, वर्तुली स्थूलवैदेही)

संस्कृतभाषामें	गजपिप्पली।
हिन्दीभाषामें	गजपीपल।
वङ्गभाषामें	गजपिपुल।
मराठीभाषामें	मोरवेलीला पिंपळचा यतात ती।
कर्णाटकीभाषामें	गजाहिप्पली।
गुजरातीभाषामें	गजपीपर।
तैलङ्गीभाषामें	पैद्दापिप्पलु।
लैटिन्भाषामें	प्लैंटेगोएँप्लक्सिकोलिस् सिन्डाप्सन् जौफिसोनेलिस् Plantago Amplexicanlis Seandapans Officinalis

अस्यागुणाः।

गजकृष्णा कटुर्वातश्लेष्महृद्वह्निवर्द्धिनी।
उष्णा निहंत्यतीसारं श्वासकण्ठामयक्रिमीन्॥

अर्थ-गजपीपल-चरपरी वातकफनाशक, अग्निवर्द्धक, गरम तथा अतिसार, श्वास, कण्ठरोग और कृमीका नाश करैहै।

अपिच ।

गजोषणा कटूष्णा च रूक्षा मलविशोधिनी ।
बलासवातहन्त्री च स्तनकर्णविवर्द्धिनी ॥ (राजनि०)

अर्थ-गजपीपल-चरपरी, गरम, रूखी, मलशोधक, कफ वात नाशक, स्तन और कर्णवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

गजोषणा कटूष्णा च तीक्ष्णा मलविशोषिणी ।
बलासवातहंत्री च स्तनलिंगविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-गजपीपर-चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, मलशोषक तथा कफ, वातनाशक स्तन और लिङ्गवर्द्धक है ।

सैंहलीपिप्पलीनामानि ।

सैंहली सर्पदण्डा च सर्पाङ्गी ब्रह्मभूमिजा ।
पार्वती शैजामूलं लम्बबीजा तथोत्कटा ॥
अद्रिजा सिंहलस्था च लम्बदन्ता च जीवला ।
जीवाला जीवनेत्रा च कुरवी षोडशाह्वया ॥

अर्थ-सैंहली, सर्पदण्डा, सर्पाङ्गी, ब्रह्मभूमिजा, पार्वती, शैलजा-मूल, लम्बबीजा, उत्कटा, अद्रिजा, सिंहलस्था, लम्बदन्ता, जीवला, जीवाला, जीवनेत्रा, कुरवी ।

अस्या गुणाः ।

सैंहली कटुरुष्णा च जन्तुघ्नी दीपनी परा ।
कफश्वाससमीरार्त्तिशमनी कोष्ठशोधिनी॥(रा० नि०)

अर्थ-सिंहलीपीपल-चरपरी, गरम, कृमिनाशक, जठराग्निको दीपन करनेवाली तथा कफ, श्वास और वातकी पीडाकी शान्ति करनेवाली और कोठेको शुद्ध करे है ।

वनपिप्पलीनामानि ।

वनादिपिप्पल्यभिधानयुक्तं सूक्ष्मादिपिपल्यभिधानमेतत् ।
क्षुद्राचपिप्पल्यभिधानयोग्यं वनाभिधापूर्वकणाभिधानम्॥

अर्थ-वनपिप्पली, सूक्ष्मपिप्पली, क्षुद्रपिप्पली, वनकणा ।

अस्या गुणाः।

वनपिप्पलिका चोष्णा तीक्ष्णा रुच्या च दीपनी।
आमा भवेद्गुणाढ्या तु शुष्का स्वल्पगुणास्मृता॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-वनपीपल-गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक और अग्निप्रदीपक है, कच्ची वनपीपल अधिक गुणवाली है और सूखी स्वल्पगुणवाली है।

मर्कटीपिप्पलीगुणाः।

मर्कटीपिप्पली तिक्तातुवरासुरसा स्मृता।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीयोनिशूलविस्फोटकाञ्जयेत्॥ (नि॰ र॰)

अर्थ-वानरीपीपल-कडवी, कषेली, स्वादिष्ठ तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी' योनिशूल और विस्फोटकका नाश करेहै।

चित्रकनामानि।

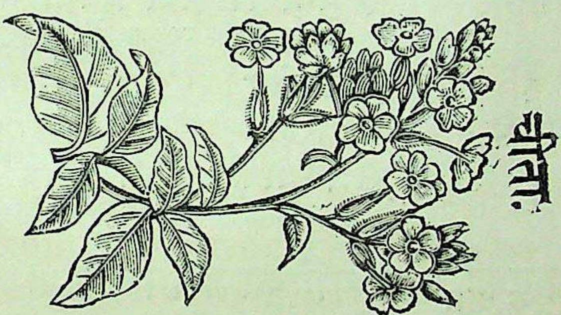

चित्रकोऽनलनामा च पाठी व्यालस्तथोषणः॥

अर्थ-चित्रक, अनलनामा, पाठी, व्याल, ऊषण, (कृष्णवर्त्मा, जातवेदा, बर्हि, विभाकर, विभावसु, बृहद्भानु, वैश्वानर, शिखावान्, शुचि, शुष्मा, सप्तार्चि, हिमाराति, हिरण्यरेता, अग्नि, शार्दूल, चित्र, पाठी, कुट, शिखी, कृशानु, दहन, व्याल, ज्योतिष्क, पालक, अनल, दारुण, वह्नि, पावक, शम्बर, द्वीपी, चित्राङ्ग, दाहक, शूर, पाठीन, दारुण, आग्निक, वल्लरी, पाली, कुट, शिखी, लोहिताङ्ग, हुतभुक्, माली, वह्नि, पाची, वह्निनामा)

रक्तचित्रकनामानि।

कालो व्यालःकालमूलोतिदीप्योमार्जारोग्निर्दाहकःपावकश्च।
चित्रागोयंरक्तचित्रोमहाङ्गःस्याद्रुद्राह्वश्चित्रकोन्योगुणाढ्यः॥

अर्थ-काल, व्याल, कालमूल, अतिदीप्य, मार्जार, अग्नि, दाहक, पावक, चित्राङ्ग, रक्तचित्र, महांङ्ग (रक्तचित्रक, उषर्बुधाह्वय, द्व्यग्नि, पाठी, ह्रस्वाग्नि)

संस्कृतभाषामें	चित्रक-रक्तचित्रक ।
हिन्दीभाषामें	चीता, लालचीता ।
वंगभाषामें	चितेगाछ, एङचिते, चिता ।
मराठीभाषामें	चित्रक, रक्तचित्रक ।
कर्णाटकीभाषामें	चित्रमूल केपिनचित्रमूल ।
तैलिंगीभाषामें	चित्रमूलमु, एरचित्र ।
तामिलीभाषामें	शिवपु, चित्रिर ।
उर्दू	चित्रचिता, रक्तचिता ।
गुजरातीभाषामें	चित्रो ।
लैटिन्भाषामें	प्लंबेगोरोझिया-प्लंबेगोझिलेनिका । Plumbago rosea Plumbago Zeylanica
फारसीभाषामें	वेखवरंदा ।
अरबीभाषामें	शितरज्ञ ।
इंग्रेजीभाषामें	पलंविगोकौरुलेऐसो ।

अस्य गुणाः ।

चित्रकः कटुकः पाक वह्निकृत्पाचनोलघुः ।
रूक्षोष्णो ग्रहणीकुष्ठशोफार्शःकृमिकासनुत् ॥
वातश्लेष्महरो ग्राही वातार्शश्लेष्मपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चीता-पाकमें चरपराहै, अग्निकारक, पाचक, हलका, रूखा, गरम तथा संग्रहणी, कोढ, सूजन, बवासीर, कृमि, खाँसी और वात कफका नाश करेहै । ग्राही है तथा वादीकी बवासीर, और कफपित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

चित्रकः पाचको रूक्षो लघुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पाके कटुर्ग्राहकश्च तिक्तोष्णो रुचिदो मतः ॥
रसायनोग्निसदृशः शोथकुष्ठार्शकासहा ।
कृमीन्वातोदरं कण्डू यकृतं ग्रहणीं तथा ॥

आमं क्षयं चोदरं च नाशयेदिति कीर्तितः।
कटुत्वात्कफहा प्रोक्तस्तिक्तत्वात्पित्तनाशकः॥
उष्णत्वाद्वातहा प्रोक्तो मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥(नि० र०)

अर्थ–चीता–पाचक, रूखा, हलका, अग्निदीपक, पाकके समय चरपरा, ग्राही, कडुवा, गरम, रुचिदायक, रसायन, अग्निकी समान पराक्रमी तथा सूजन कोढ, बवासीर, खांसी, कृमि, वातोदर, कण्डू, यकृत, संग्रहणी, आम, क्षय और उदररोगका नाश करेहै।

यह चरपरेपनसे कफका, कडवेपनसे पित्तका और उष्णतासे वातका नाश करेहै, इसप्रकार चीता त्रिदोषनाशक है।

रक्तचित्रकगुणाः।

स्थूलकायकरो रुच्यः कुष्ठघ्नो रक्तचित्रकः।
रसे नियामको लोहे वेधकश्च रसायनः॥(रा० नि०)

अर्थ–लालचीता–देहको स्थूल करनेवाला, रुचिकारी, कुष्ठनाशक, पारेको बांधनेवाला, लोहेमें वेध करनेवाला, रसायन और शरीरको नूतन करेहै।

कृष्णचित्रकगुणाः।

केशाः कृष्णाः प्रजायन्ते कृष्णचित्रकभक्षणात्।
कृष्णकृष्णं समुत्पाट्य गोभिराघ्रातमेव वा॥
क्षीरमध्ये क्षिपेद्वापि क्षीरं कृष्णं प्रजायते।

अर्थ–कालेचीतेको भक्षण करनेसे केशकाले होजातेहैं, गायके सूँघे हुए काले चीतेको लाकर दूधमें डालनेसे दूध काला होजाता है।

विवरण। क्षुप होताहै, चीतेकी अनेक जातीहैं, सफेद फूलका, लाल फूलका, काले फूलका, पीले फूलका, इनमें सफेद फूलका सर्वस्थानोंमें होताहै और लालफूलवाले तथा और फूलके चीते देखनेमें बहुत कम आतेहैं।

व्यवहार–मूल, मूलकी छाल, छाल मात्रा ४ रत्तीकी।

शतपुष्पानामानि ।

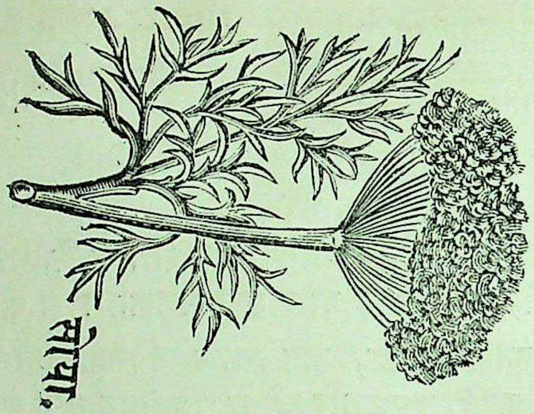

शताह्वा शतपुष्पा च शताक्षी शतपुष्पिका ।
कारवी तालपर्णी च माधवी शोफका मिसिः ॥

अर्थ–शताह्वा, शतपुष्पा, शताक्षी, शतपुष्पिका, कारवी, तालपर्णी, माधवी, शोफका, मिसि (घोषा, शिफा, अतिच्छत्रा, अवाक्पुष्पी, छत्रा, संघातपत्रिका, वज्रपुष्पी, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, बहला, पुष्पाह्वा, शतपत्रिका, शालेय, मिशी, सालेय, मिशी, पोति, अहिच्छत्रा, संघातपत्रिका, छत्रा, तालपर्णी, मिषी, शालेया, शीतशिवा, शालीना, वज्रना और अतिच्छत्रा)

संस्कृतभाषामें	शतपुष्पा ।
हिन्दीभाषामें	सोया–सोयेके बीज ।
वंगभाषामें	शुल्फा ।
मराठीभाषामें	बाळंतशोप ।
गुजरातीभाषामें	शुवानी भाजी–शूवादाणा ।
कर्णाटकीभाषामें	सब्जासिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्दसदापचेट्टु–सदापा ।
इंग्रेजीभाषामें	डिलसीड् । Dillseed
लैटिनभाषामें	एनिथं ग्रेवीयोलेन्स. ~~Anithum Gaveolens~~ Peucedanum Graveolens R
फारसीभाषामें	शुत–तुख्मेशूत ।
अरबीभाषामें	शीतव्वत वजरुल सीव्वत ।

शतपुष्पागुणाः।

शतपुष्पालघु स्तीक्ष्णा पित्तकृद्दीपनी कटुः।
उष्णा ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सोया हलका, तीक्ष्ण, पित्तजनक, जठराग्निको दीपन करनेवाला, चरपरा, गरम तथा ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगोंको हरैहै।

अपिच।

शतपुष्पा कटुस्तिक्ता तीक्ष्णोष्णा दीपनी लघुः।
पित्तला कफवातघ्नी विशेषाद्योनिशूलनुत्॥ (ग० नि०)

अर्थ-सोया-चरपरा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, अग्निप्रदीपक, हलका, पित्तकारक कफ वातनाशक और विशेष करके योनिशूलका नाश करैहै।

अन्यच्च।

शताह्वा पित्तला लघ्वी तिक्ता कट्वग्निदीपनी।
उष्णा मेध्या वस्तिकर्मप्रशस्ता कफनाशिनी॥
वातं ज्वरञ्चशूलञ्च योनिशूलञ्चनाशयेत्।
आध्मानं चक्षुरोगञ्च व्रणं चैव विनाशयेत्॥

अर्थ-सोया-पित्तजनक, हलका, कडवा, चरपरा, अग्निदीपक, गरम, मेधाजनक, वस्तिकर्ममें प्रशस्त तथा कफ, वात, ज्वर, शूल, योनिशूल, आध्मान, नेत्ररोग, व्रण और कृमिका नाश करैहै।

अस्या आकृतिः।

शतपुष्पा सूक्ष्मपत्रापीतपुष्पातिछत्रका।
प्रसिद्धा क्षेत्रविख्याता दीपनोक्ता महर्षिभिः॥

अर्थ-सोयेके पत्त सूक्ष्म होतेहैं, फूल पीला होताहै, छत्र बहुत होतेहैं, खेतमें उत्पन्न होतीहै और प्रसिद्धहै तथा दीपनहै।

मधुरिकानामानि।

सिता मधुरिका चापि माधुरी तापसप्रिया।
गन्धाधिका घोषवती सुगन्धा च तृषाहरा॥

अर्थ-सिता-मधुरिका, माधुरी, तापसप्रिया, गन्धाधिका, घोषवती, सुगन्धा, तृषाहरा, (छत्रा, शालेय, शालीन, मिश्रेया, मधुरा, मिसी, शीताशिवा, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, पुष्पाह्वा, मिशी, घोषा,

पोतिका, अहिच्छत्रा, माधवी, कारवी, संघातपत्रिका, अवाक्पुष्पी, तालपर्णी, मङ्गल्या, शतपत्रिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा, मधुरी और शतपुष्पा)

संस्कृतभाषामें	मधुरिका, शतपुष्पा, मिश्रेया।	
हिन्दीभाषामें	सौंफ ।	
वंगभाषामें	मौरी ।	
मराठीभाषामें	बडीशोफ ।	
गुजरातीभाषामें	वरियाली ।	
कर्णाटकीभाषामें	कासंछासिगे ।	
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्दाजिल कुरह सौंफ ।	
तामिलीभाषामें	सोहि किरे ।	
इंग्रेजीभाषामें	फेनलूसीड ।	Fennel Seed
लैटिन्भाषामें	फिनिक्युलमवल्गेरे ।	Faniculum Vulgare
फारसीभाषामें	बादियान ।	
अरबी भाषामें	एजियानज, असलुल एजियासज ।	

अस्या गुणाः ।

शतपुष्पा तु मधुरा वातपित्तहरा गुरुः । (राजवल्लभ)

अर्थ-सौंफ-मधुर, वात-पित्तनाशक और भारीहै ।

अपिच ।

शतपुष्पा त्रिदोषघ्नी मेध्या पथ्या रुचिप्रदा ।(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-सौंफ-त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, पथ्य और रुचिको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

माधुरी कटुका पाके स्त्रीणां गर्भप्रदा सरा।
तिक्ता कट्वी च मधुरा वृष्या चाग्निप्रदीपनी ॥
वातं ज्वरं च शूलं च दाहं नेत्ररुजं तृषाम् ।
व्रणं वान्तिमतीसारमामं चैव विनाशयेत्॥((वै० नि०)

अर्थ-मधुरिका अर्थात् सौंफ पचनेमें चरपरी, गर्भदायक, सारक, कडवी, चरपरी, मधुर, वीर्य्यजनक, अग्निप्रदीपक तथा वात, ज्वर, शूल, दाह, नेत्ररोग, पियास, घाव, अग्निसार और आमका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

मिश्रेया मधुरा स्निग्धा कटुः कफहरा परा ।
वातपित्तोत्थदोषघ्नी प्लीहजन्तुविनाशिनी ॥ (राजनिघंटु)

अर्थ-सौंफ-मधुर, स्निग्ध, चरपरी, कफनाशक तथा वातपित्तके दोष, प्लीहा और कृमिको दूर करेहै ।

अपि च ।

मिश्रेया रोचनी वृष्या दाहपित्तास्रनाशिका ।

अर्थ-सौंफ-रुचिकारी, वीर्यजनक, तथा दाह और रक्तपित्तका नाशकरे है ।

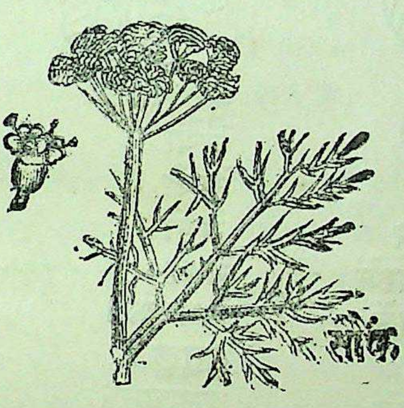

अस्या जलगुणाः ।

तज्जलं शीतलं रुच्यं कटुदीपनपाचनम् ।
मधुरं तृड्हृद्भ्रान्तिपित्तं दाहं च नाशयेत् ॥ (वि॰ति॰ भा॰)

अर्थ-सौंफका अर्क-शीतल, रुचिकारक, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, पाचक, मधुर तथा तृष्णा, वमन, पित्त और दाहको दूर करे है। इसके क्षुप सोयेकी समान खेत और बागोंमें होते हैं ।

मेथिकानामानि ।

मेथिका मेथिनी मेथी दीपनी बहुपत्रिका ।
वेधनी गन्धबीजा च ज्योतिर्गन्धफला तथा ॥
वल्लरी चन्द्रिका मन्था मिश्रपुष्पा च कैरवी ।
कुञ्चिका बहुपर्णी च पीतबीजा मुनीन्द्रिका ॥

अर्थ-मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, वेधनी, गन्ध-

बीजा, ज्योति, गन्धफला, वल्लरी, चन्द्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, कुञ्चिका, बहुपर्णी, पीतबीजा, मुनान्द्रिका ।

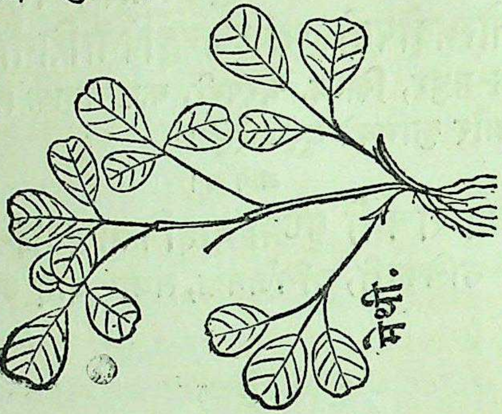

संस्कृतभाषामें	मेथिका ।
हिन्दी भाषामें	मेथी ।
वङ्गभाषामें	मेथी ।
मराठी भाषामें	मेथी ।
गुजराती भाषामें	मेथी।
कर्णाटकीभाषामें	मेथपक ।
तैलङ्गीभाषामें	मेतुलु ।
तामिलीभाषामें	वेन्डचम् ।
इंग्रेजीभाषामें	फनुग्रोक । Fenugreek
लैटिन्भाषामें	ट्राइगोनेला फेनंग्रिकम् Trigonella Faln um greecum
फारसीभाषामें	तुख्मे शमपीत ।
अरबीभाषामें	बजरुल् हुल्वा ।

अस्या गुणाः ।

मेथिका वातशमनी श्लेष्मघ्नी ज्वरनाशिनी ।
ततः स्वल्पगुणा बल्या वाजिनां सा तु पूजिता ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मेथी-वातको शांति करै, कफ और ज्वरका नाश करेहै, वनमेथी इसकी अपेक्षा स्वल्प गुणवाली है और घोडोंकेलिये अत्यन्त हितकारक है ।

अपिच ।

मेथिका कटुरुष्णा च रक्तपित्तप्रकोपिनी ।
अरोचकहरा दीप्तिकरी वातघ्नदीपिनी ॥ (राजनिघण्टु)

प्रकोपक

अर्थ-मेथी-चरपरी, गरम, रक्तपित्तभक्षक, अरुचिहारक, दीप्तिकारक, वातविनाशक और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

मेथिका कटुका चोष्णा रक्तपित्तप्रकोपनी ।
दीपनी च रसे तिक्ता मलावष्टम्भिका लघुः ॥
रूक्षा हृद्या बलकरी ज्वरारोचकवान्तिहा ।
वातरक्तं कफं कासं वातमर्शं कृमीन्क्षयम् ॥
शुक्रं च नाशयत्येषा प्रोक्ता पूर्वचिकित्सकैः । नि.र.

अर्थ-मेथी-चरपरी, गरम, रक्तपित्तको कुपित करनेवाली, दीपन, रसमें कड़वी, मलावष्टम्भक, हलकी, रूखी, हृदयको हितकारी, बलकारक तथा ज्वर, अरोचक, वमन, वातरक्त, कफ, खाँसी, वादी, बवासीर, कृमि और शुक्रका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

मेथिका वातशमनी वेजिका वातला मता ।

अर्थ-मेथी-वातको शान्त करेहै और वनमेथी वातको उत्पन्न करेहै मेथी खेतोंमें बोईजाती है, फूल पीला होताहै और कली आती हैं ।

चन्द्रशूरनामानि ।

चन्द्रिका चर्महन्त्री च पशुमेहनकारिका ।
नंदिनी कारवी भद्रा वासुपुष्पा सुवासरा ॥

अर्थ-चन्द्रिका, चर्महन्त्री, पशुमेहनकारिका, नन्दिनी, कारवी, भद्रा, वासुपुष्पा, सुवासरा, (अशालिक, कालमेषा, दरकृष्ण, दीर्घबीज, रक्तराजी, सिद्धप्रयोजना)

संस्कृतभाषामें	चन्द्रशूर, अहालिम ।	
हिन्दीभाषामें	हालो हालिम ।	
मराठी भाषाम	आहाळींव ।	
गुजराती भाषामें	अशेलियो ।	
वंग भाषामें	हालिम ।	
इंग्रेजीभाषामें	कामन् क्रेस् ।	Common cress
लैटिन्भाषामें	लेपिडियं, सटाइवम् ।	Lepidium Sativum

फारसी भाषामें हालमतुख्मतरातेजक ।
अरबीभाषामें हवुररशाद, हाकम, बजरुलजिरजिर ।

अस्या गुणाः ।

चन्द्रशूरं हितं हिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ॥
असृग्वातगदद्वेषि बलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-हालो-वात, कफ, अतिसार और वातरोगका नाश करेहै, तथा बल और पुष्टिवर्द्धक है ।

अपिच ।

दरकृष्णो वातशूलगुल्मघ्नः स्तन्यपुष्टिकृत् ।
बल्यो वाजीकरः पानाल्लेपाच्छोणितशूलनुत् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-हालो-वात, शूल और गुल्मनाशक है, स्तनोंमें दूध बढानेवाला है, बलकारक, वाजीकरणकारक, इसको पानीमें पीसकर पीनेसे तथा इसका लेप करनेसे रुधिरविकार और शूल नष्ट होता है ।

अन्यच्च ।

अहालिमं मतं चोष्णं तिक्तं त्वग्दोषनाशनम् ।
वातं गुल्मं नाशयतीत्येवं प्रोक्तं चिकित्सकैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-हालो-गरम, कडवा, त्वचाके दोषोंका नाश करै तथा वात और गुल्मनाशक है ।

अपिच।

अभिघातरुजं हन्ति सदुग्धो हरकृष्णकः ।
त्वग्दोषान्वातरोगांश्च नेत्ररोगान्सशोणितान् ॥ (वै० नि०)

अर्थ-दुग्धयुक्तहालो-अभिघातरोग, त्वचाके रोग, वातरोग, नेत्ररोग और रुधिरविकारोंको दूर करै है इसका सरसोंकी समान क्षुप होताहै, फूल नीलें रंगका होताहै । मात्रा ६ मासेकी ।

नीले

यवानीनामानि ।

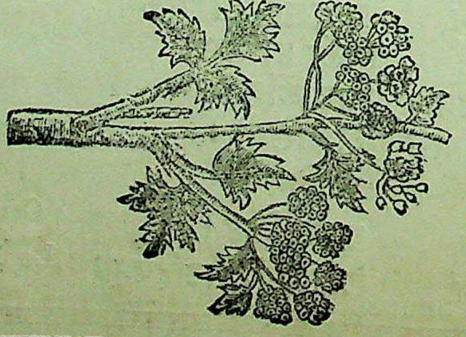

यवानी दीप्यको दीप्यो भूतिकश्च यवानिका ।
यवाग्रजोग्रगन्धा च यवाह्वा भूकदंबकः ॥

अर्थ– यवानी, दीप्यक, दीप्य, भूतिक, यवानिका, यवाग्रज, उग्रगन्धा, यवाह्वा, भूकदम्बक (ब्रह्मदर्भा, क्षेत्रयवानिका, यवराह्व, दीपनी, दीपिनी, वातारि, यवजदीपनीय, शूलहंत्री, यमानिका, उग्रा, तीव्रगन्धा, अजमोदिका, तीक्ष्णगन्धा, हृद्या, अग्निवर्धिनी, भूमिकदम्बक और अजमोदा)

संस्कृतभाषामें	यवानी ।
हिन्दीभाषामें	अजवाइन । अजमान ।
वंगभाषामें	यमानी योयान् ।
मराठीभाषामें	ओंवा ।
गुजरातीभाषामें	अजमा ।
कर्णाटकीभाषामें	ओड, डंडु ।
तैलिङ्गीभाषामें	वामु । ओममी ।
तामिलीभाषामें	अमन ।
इंग्रेजीभाषामें	बिशप्स विडसीड Bishops Weed Seed
लैटिन्भाषामें	केरं कोपटिकम् टेकोटिस्अजवान् । Carum Copticum Ptychotis
फारसीभाषामें	नानुखा ।
अरबीभाषामें	कमूनमुलूकी ।

यमानीगुणाः ।

यवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः ।
दीपनी च तथा तिक्ता पित्तला शुक्रशूलहृत् ॥
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् । (भावप्रकाश)

अर्थ–अजवायन– पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण, चरपरी, हलकी, दीपन, कडवी, पित्तवर्धक तथा शुक्र, शूल, वात, कफ, उदररोग, आनाह, गुल्म, प्लीहा और कृमिका नाश करेहै ।

अपिच ।

यवानी कटुतिक्तोष्णा वातार्शःश्लेष्मनाशिनी ।
शूलाध्मानकृमिच्छर्दिमर्दिनी दीपनी परा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कडवी, गरम तथा वातकी बवासीर, कफ,शूल,आध्मान, कृमि और वमनको दूर करेहै और परम दीपन है।

अन्यच्च

यवानी कुष्ठशूलघ्नी हृद्या पित्ताग्निवर्द्धिनी ।

अर्थ-अजवायन-कोढ और शूलनाशक है,हृदयको हितकारी है, पित्त तथा अग्निवर्द्धक है।

अपिच।

यवानी कटुका तिक्ता रुच्या चोष्णाग्निदीपनी ।
पाचनी पित्तला तीक्ष्णा लघुर्हृद्या च सारिका ॥
वृष्या वाताशकफरुक्शूलाध्मानवमिकृमीन् ।
शुक्रदोषोदरानाहहृद्रोगप्लीहगुल्मकान् ॥
द्वंद्वरोगामवातांश्च नाशयेदिति कीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम अग्निप्रदीपक, पाचक, पित्तजनक, तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, सारक, वीर्यजनक तथा बादीकी बवासीर, कफ, शूल, अफारा, वमन, कृमि, शुक्रदोष, उदररोग, आनाह, हृदयरोग, प्लीहा, गुल्म, द्वन्द्वजरोग और आमवातका नाश करेहै ।

अजमोदानामानि ।

अजमोदा खराश्वा च मयूरो दीप्यकस्तथा ।
तथा ब्रह्मकुशा प्रोक्ता कारवी लोचमस्तकः ॥

अर्थ-अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, कारवी, लोचमस्तक, (खराह्वा, वस्तमोदा, उग्रगन्धा, मर्कटी, मोदा, गन्धदला, हस्तिकावरी, अन्धपात्रिका, मायूरी, शिखिमोदा, मोदाढ्या, वह्निदीपिका, ब्रह्मकोशी, विशाली, हयगन्धा, उग्रगंधिका, मोदिनी, फलमुख्या और विशल्या)

संस्कृतभाषामें	अजमोदा ।
हिन्दीभाषामें	अजमोद ।
वंगभाषामें	वनयमानी, वनयुयान, वनयोयान्, वनजैन ।
मराठीभाषामें	अजमोदा ।

गुजरातीभाषामें	वोडीअजमोद ।
कर्णाटकीभाषामें	अजमोदा ।
तैलिङ्गीभाषामें	आजमौदा, वामं ।
लैटिन्भाषामें	एप्यंग्रेवियोलेन्स Apium Gravcolens
इंग्रजीभाषामें	सेलेरीसीड Celery seed
फारसीभाषामें	करफस ।
अरबीभाषामें	हवुलकर्जुकेरफस ।

अस्या गुणाः ।

अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत् ।
उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्या बलकरी लघुः ॥
नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्कावस्तिरुजो हरेत् (भा० प्र०)

अर्थ-अजमोद-चरपरा, तीक्ष्ण, जठराग्निप्रदीपक, कफवातनाशक, गरम, दाहजनक, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, हलका तथा नेत्ररोग, कफ, वमन, हिचकी और वस्तिरोगका नाश करेहै।

अपिच ।

अजमोदा कटुरुष्णा रूक्षा कफवातहारिणी रुचिकृत् ।
शूलाध्मानारोचकजठरामयनाशिनी चैव ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-अजमोद-चरपरा, गरम, रूखा, कफवातनाशक, रुचिकारक तथा शूल, अफारा, अरोचक और उदररोगका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

अजमोदो रुचिकरो दीपकः कटुरूक्षकः ।
उष्णो विदाही हृद्यश्च वृष्यो बलकरो लघुः ॥
तिक्तो मलस्तम्भकरो ग्राहकः पाचकः स्मृतः ।
आध्मानशूलकफहृद्वातो रोचकनाशनः ॥
उदराणि कृमींश्चैव वान्तिं नेत्ररुजं जयेत् ।
वस्तिशूलं दन्तरोगं गुल्मशुक्ररुजं तथा ॥ (नि० र०)

अर्थ-अजमोद-रुचिकारक, दीपन, चरपरा, रूखा, कडवा, मल-

स्तम्भक, उदरके रोग, कृमि, वमन, नेत्ररोग, वस्ति,शूल, दन्तरोग, गुल्म और (वीर्यके विकारको दूर करेंहै ।)

पारसीकाजमोदानामानि ।

यवानीया यवानी स्याच्चौहारो जन्तुनाशनः ।
पारसी यावनी गन्धा छारश्च खरपुष्पिका ॥

अर्थ-यवानीया, यवानी, चौहार,जन्तुनाशन, पारसी, यावनी, गन्धा, छार, खुरपुष्पिका ।

संस्कृतभाषामें	पारसी ।
हिन्दीभाषामें	छुहरी अजवाइन, छुहारी अजमोद ।
मराठीभाषामें	किरमाणीओंवा, सूरबंदीचें फूल ।
गुजरातीभाषामें	छुवारी अजमोद, करमाणी दीनेची ।
लैटिन्भाषामें	आर्टिमिस्या,मेरिटिमा Artimisia maritema
फारसीभाषामें	तुख्मइप्स ।

अस्या गुणाः ।

पारसीकयवानी तु तिक्तोष्णा कटुतीक्षणा ।
अग्निदीप्तिकरी वृष्या लघ्वी चैव प्रकीर्त्तिता ॥
त्रिदोषाजीर्णकृमितुच्छूलामस्य च नाशिनी ।
विशेषात्तु गुणास्त्वन्ये यवानीव प्रकीर्तिताः ॥ (नि० र०)

अर्थ-छुहारी अजवायन-कडवी, गरम,चरपरी,तीक्ष्ण,अग्निको दीपन करनेवाली, वीर्य्यजनक, हलकी तथा त्रिदोष,अजीर्ण,कृमि, शूल और आमको नष्ट करे है, शेष गुण अजवानयकी समान हैं इसका वृक्ष होताहै । पत्ते गुलदाउदीकी समान होतेहैं । फूल बारीक होताहै ।

खुरासानी यवानीनामानि ।

यवानी यावनी तीव्रा तुरुष्का मदकारिणी ।
दीप्यः श्यामः कुबेराख्यो मादको मदकारकः ॥

अर्थ-यवानी, यावनी,तीव्रा,तुरुष्का,मदकारिणी, दीप्य, श्याम कुबेराख्य, मादक, मदकारक ।

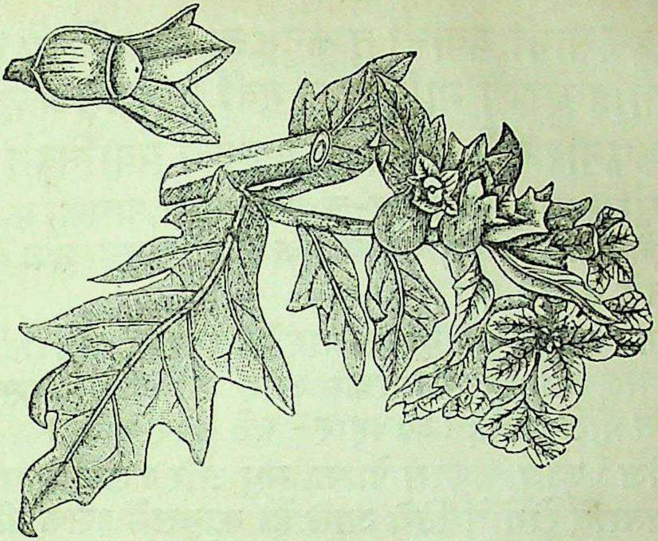

संस्कृतभाषामें	खुरसानी, पारसीक यवानी
हिन्दीभाषामें	खुरासानी, अजवायन ।
वङ्गभाषामें	खुराशानी, योयान् (यमानी)
मराठीभाषामें	खुरासाणी, ओवा, खुरसाण ।
गुजरातीभाषामें	खुरसाणी, अजमा ।
तैलिङ्गीभाषामें	खुरसाण वामु ।
वो०	खोरसनी, उभा ।
तामिलीभाषामें	खोरसनी, ओनाम शिट्टामुट्टि ।
अँग्रेजीभाषामें	हेनबेन । Henbane
लैटिन्भाषामें	हायो श्यामस् नाईजर HyoscyamusNiger
फारसीभाषामें	वंज, तुख्मवंजे ।
अरबीभाषामें	बजरुल वंज, अबीद शीकरान् ।

अस्या गुणाः ।

खुरासानी यवानी तु यवानीसदृशा गुणैः ।
विशेषात्पाचनी रुच्या ग्राहिणी मादिनी गुरुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-खुरासानी अजवायनके गुण अजवायनके समान हैं, किन्तु विशेष करके पाचक है, रुचिकारी है, ग्राही, मदकारक और भारी है।

अपिच ।

खुरासानी यवानी तु कटुरूक्षा च पाचिका ।
ग्राहिकोष्णा मादिका च गुर्वी वातकरी मता ॥
कफनाशकरी प्रोक्ता गुणास्त्वन्ये यवानिवत् ।

अर्थ-खुरासानी अजवायन-चरपरी, रूखी, पाचक, ग्राही, गरम, नशा करनेवाली, भारी, वातकारक और कफनाशक है, शेष गुण अजवायनके समान हैं ।

विवरण । इसका क्षुप यूरोप आर ऐशियाके महादेशोंमें उत्पन्न होता ह आजकल सहारनपुरकी ओर अधिकतासे इसकी खेती होतीहै पत्ते पीले होतेहैं । व्यवहार- पत्ते और बीज ।

यह बीज १/२ ड्राम १ ड्राम पोस्त, मधु और जलके साथ मिलाकर शरदी वातादि रोगोंमें दिये जाते हैं। काबुलमें इसके बीज घोडीके दूधके साथ पीसकर भैंसके चमडेमें लगाकर पेटके ऊपर बांधले तो गर्भ बंद होजाता है, यह कहावत यहांपर बराबर चली आतीहै ।

इसके पत्तोंका अर्क जौके आटेमें मिलायकर उसकी पुटली करे तो छाला तथा उसकी पीडा दूर होजायगी । एक बूंद इसको आँखमें लगानेसे आँखकी पीडा जातीरहतीह ।

साधारणजीरकनामानि ।

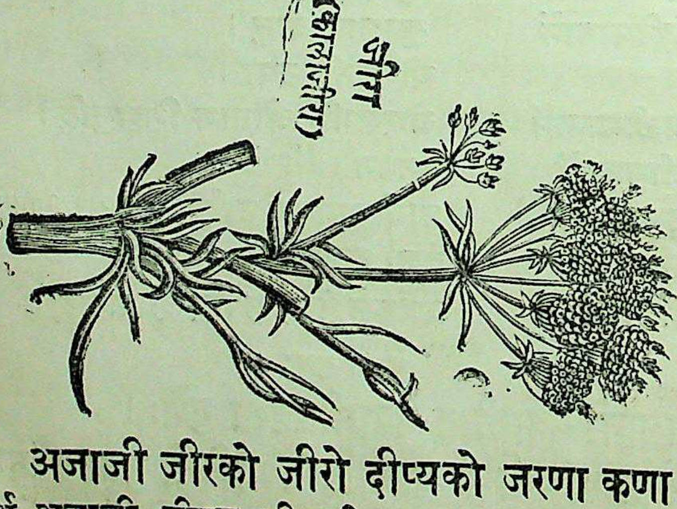

अजाजी जीरको जीरो दीप्यको जरणा कणा ।

अर्थ-अजाजी, जीरक, जीर, दीप्यक, जरणा, कणा (जीर्ण, दीप्य, जीरण, अजाजिका, वह्निसख, मागध, दीपक)

गौरजीरकनामानि।

शुक्लाजाजी कणा ख्याता दीर्घकः कणजीरकः।

अर्थ-शुक्लाजाजी, कणा, दीर्घक, कणजीरक, (अजाजी, गौरजीरक, श्वेतजीरक, कणाह्वा, कणजीर, मितदीप्य, दीर्घकणा, मिताजाजी, गौराजाजी)

संस्कृतभाषामें	जीरक, सितजीरक।
हिन्दीभाषामें	जीरा, सफेदजीरा।
वंगभाषामें	जीरे, सादाजीरे।
मराठीभाषामें	जिरें, पांढरें जिरें।
गुजराती भाषामें	शाकनु जीरुं। सादुजीरुं।
कर्नाटकीभाषामें	जिरिगे, बिलियजीरिगे।
तैलिङ्गीभाषामें	जिलकारा, जीलकरर।
इंग्रेजीभाषामें	क्युम्मिन्, सीड। Cummin seed
लैटिन्भाषामें	क्युमिनम्से मिनम् Cumminum Cpminum
फारसीभाषामें	जीरा।
अरबीभाषामें	कमुन्।
यूनानीभाषामें	रवामुन्।

सामान्यजीरकगुणाः।

जीरकः कटुरुष्णश्च वातहृद्दीपनः परः।
गुल्माध्मानोतिसारघ्नोग्रहणीकृमिहृत्परः॥(रा० नि० र०)

अर्थ-साधारणजीरा-चरपरा, गरम, वातनाशक, दीपन तथा गुल्म, अफारा, अतिसार, संग्रहणी और कृमिको दूर करे है।

श्वेतजीरकगुणाः।

गौराजाजी हिमा रुच्या कटुर्मधुरदीपनी।
कृमिघ्नी विषहन्त्री च चक्षुष्या धातुनाशिनी॥(नि० र०)

अर्थ-सफेदजीरा-शीतल, रुचिकारक, चरपरा, मधुर, अग्निको दीपन करनेवाला, विषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और अफारेको दूर करे है।

अपिच।

शुभ्रजीरं कटु ग्राहि पाचनं दीपनं लघु।
किञ्चिदुष्णं च मधुरं चक्षुष्यं रुचिकृन्मतम्॥
गर्भाशयशुद्धिकरं रूक्षं बल्यं सुगन्धिकम्।

तिक्तं वमिक्षयाध्मानवातं कुष्ठं विषं ज्वरम् ॥
अरोचकं रक्तदोषमतीसारं कृमींस्तथा ।
पित्तञ्च गुल्मरोगञ्च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥(नि०र०)

अर्थ-सफेदजीरा-चरपरा, मलरोधक, पाचक, जठराग्निका दीपन करनेवाला, हलका, किञ्चित् उष्ण, मधुर, नेत्रोंको हितकारक, रुचिकारी, गर्भाशयको शुद्धि करनेवाला, रूखा, बलकारक, सुगन्ध, कडवा तथा छर्दि, क्षय, आध्मान, वात, कोढ, विषविकार, ज्वर, अरुचि, रक्तविकार, अतिसार, कृमि, पित्त और गुल्मरोगका नाश करे है।

कृष्णजीरकनामानि ।

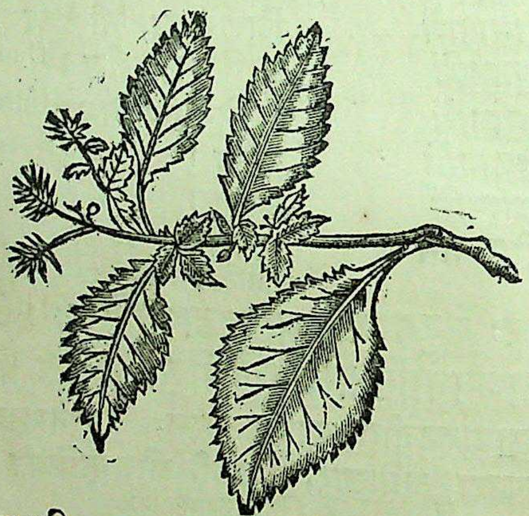

कृष्णाजाजी तु जरणा सुगन्धा कालजीरकः ।
वर्षाकाली च हृद्या च तथा चोद्गारशोधिनी॥(धन्वंतरि)

अर्थ-कृष्णाजाजी, जरणा, सुगन्धा, कालजीरक, वर्षाकाली, हृद्या, उद्गारशोधिनी, (कृष्णा, जरणा, बहुगन्धा, भेदिनी, पटु, भेदनिका, रुच्या, नीला, नीलकणा, काश्मीरजीरका, वान्तिशोधिनी, कालमेषी, सुगन्धा, सुगन्ध, कृष्णजीर कृष्णजीरक और उद्गारशोधक.)

संस्कृतभाषामें	कृष्णजीरक।
हिन्दीभाषामें	कालाजीरा
वंगभाषाम	कालजीरे ।

मराठीभाषामें	शहाजिरें ।	
गुजरातीभाषामें	शाजीरु ।	
कर्णाटकीभाषामें	करिजीरके ।	
तैलङ्गीभाषामें	नल्लजीर ।	
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाककारावे सीड्	Black Caravayseed
लैटिन्भाषामें	करम नाईग्रम ।	Carum Nigrum
फारसीभाषामें	जीरेश्याह ।	
अरबीभाषामें	कमुन् किरमानी ।	

अस्य गुणाः ।

जरणा कटुरुष्णा च कफशोफनिकृन्तनी ।
रुच्याजीर्णज्वरघ्नी च चक्षुष्या ग्रहणी परा॥ (रा०नि०)

अर्थ-कालाजीरा- चरपरा, गरम, कफ और शोफनाशक, रुचिकारक, जीर्णज्वरहारक, नेत्रोंको हितकारक और ग्राहक है।

अपिच

कृष्णजीरञ्च चक्षुष्यं रुच्यं सोष्णं सुगन्धिकम् ।
ग्राहकं कटुकं रूक्षं दीपकं जीर्णजूर्तिनुत् ॥
कफं शोथं शिरोरोगं कुष्ठं चैव विनाशयेत्। (नि० र०)

अर्थ-कालाजीरा-नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, गरम, सुगन्धि, ग्राही (भारी), चरपरा, रूखा, दीपन तथा जीर्णज्वर, कफ, सूजन, मस्तकरोग और कुष्ठको दूर करेहै।

पीतजीरकगुणाः ।

पीताजाजी दीपनी च कट्वी चोष्णातिसारहा ।
आध्मानवातगुल्मं च ग्रहणीं च कृमीञ्जयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-पीलाजीरा-जठराग्निको दीपन करै, चरपरा, गरम तथा अतिसार, आध्मान, वायु, गुल्म, संग्रहणी और कृमिका नाश करे है।

द्विविधजीरकगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णं कटुकं पाके रुच्यं पित्ताग्निवर्धनम् ।
कटु श्लेष्मानिलहरं गन्धाढ्यं जीरकद्वयम् ॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ-दोनों प्रकारके जीरे-तीक्ष्णोष्ण, पचनेमें चरपरे, रुचिको उत्पन्न करनेवाले, पित्त तथा जठराग्निको बढानेवाले, चरपरे, कफ, वातनाशक और अत्यन्त गन्धवाले हैं ।

स्थूलजीरकनामानि । यह काली जीरी है

कालाजाजी पृथिवी च पृथ्वी च पृथुका पृथुः
कुञ्जिका कुञ्चिका कुञ्चि कारवी स्थूलजीरकः ॥

अर्थ-कालाजाजी, पृथिवी, पृथ्वी, पृथुका, पृथु, कुञ्जिका. कुञ्चिका, कुञ्ची, कारवी, स्थूलजीरक, (दिव्या, उपकुञ्चिका, काला, स्थूलकणा, मनोज्ञा, जारिणी, जीर्णा, तरुणी, सुषवी, पृथ्वीका, पतिंवरा, सुषवा, उपकुञ्ची, सुषवी, भेषज, कृष्णा, जरणा शाली, बहुगन्धा, कालिका, उपकोलिका, उपकुञ्ची, बृहज्जीरक.)

संस्कृतभाषामें	स्थूलजीरक, कालाजाजी ।	
हिन्दीभाषामें	कलौंजी, मगरेला ।	
बंगभाषामें	मोटाकेलेजीरें ।	
मराठीभाषामें	कलौंजीजिरें ।	
गुजरातीभाषामें	कलौंजी जीरु ।	
कर्णाटकीभाषामें	करिदोड्डजीरिगे ।	
तैलङ्गीभाषामें	नल्लाजीरा कारा ।	
इंग्रेजीभाषामें	स्मॉल फेनल, फ्लॉवर ।	Small Fenel Flower
लैटिनभाषामें	नाईजेल्ला, सेटाइवा ।	Nigella Satva
फारसीभाषामें	शोनिझ, श्यादाने ।	
अरबीभाषामें	हवतुसूसोदा ।	

काली जीरी है
कटु-तिक्त होती है

अस्या गुणाः ।

उक्तोपकुञ्चिका तिक्ता कट्वी चोष्णा च दीपनी ।
वृष्या चाजीर्णशमनी गर्भाशयविशोधिनी ॥
आध्मानवातगुल्मश्च रक्तपित्तं कृमींस्तथा ।
कफं पित्तं चामदोषं वातं शूलञ्च नाशयेत् ॥

अर्थ-कलौंजी-कडवी, चरपरी, गरम, जठराग्निदीपक, वीर्यवर्धक,

अजीर्णनाशक, गर्भाशयको शुद्ध करनेवाली तथा आध्मान, वात गुल्म रक्तपित्त, कृमि, कफ, पित्त, आमदोष, बादी और शूलको नष्ट करेहै।

त्रिविधजीरकगुणाः।

जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपनं लघु ।
संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥
ज्वरघ्नं पाचनं बल्यं वृष्यं रुच्यं कफापहम् ।
चक्षुष्यं पवनाध्मानगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–तीनोंप्रकारके जीरे–(सफेद जीरा, काला जीरा, कलौंजी) रूखे, चरपरे, गरम, दीपन, हलके, मलरोधक, पित्तजनक, मेधाजनक, गर्भाशयशोधक, ज्वरनाशक, पाचक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, कफनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा वात, आध्मान, गुल्म, वमन और अतिसारका नाश करे है।

कलौंजी की कड़ी काली होती है
काली जीरी की नहीं।

अरण्यजीरकनामानि।

यह कलौंजी के ना. नहीं

बृहन्याली क्षुद्रपत्रोऽरण्यजीरकणौ तथा ।

अर्थ–बृहन्याली–क्षुद्रपत्र, अरण्यजीर, कण ।

कलौंजी केवल कटु होती है

संस्कृतभाषामें	वनजीरक ।
हिन्दीभाषामें	कालाजीरी ।
वंगभाषामें	वनजीरे ।
मराठीभाषामें	कडूजिरें ।
कर्णाटकीभाषामें	काजीरगे ।
गुजरातीभाषामें	कालीजिरी । कडवीजीरी ।
इंग्रेजीभाषामें	परपल फ्लीबिन । Purple Fleabane
लैटिन्भाषामें	वरनोनिया एंथेल मेंटिका । Vernonia Anthelmentica
अरबीभाषामें	कमून वहरी कमून रुमी ।

अस्य गुणाः ।

वनजीरः कटुः शीतो व्रणहा पञ्चनामकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–कालांजीरी–चरपरी, शीतल और व्रणनाशक है।

अपिच ।

आरण्यजीरकं चोष्णं तुवरं कटुकं मतम् ।

कालीजीरी ही गरम है
यह कालीजीरी के गुण
कलौंजी के नहीं।

स्तम्भं वातं कफं चैव व्रणं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कालाजीरी-गरम, कषेली, चरपरी तथा स्तम्भक, वात, कफ और घावको दूर करेहै ।

इसका क्षुप होताहै, इसके ऊपरके भागमें रुंआ और बीचमें कालाजीरी होतीहै, यह घोडीके मशालेमें पडतीहै.

धन्याकनामानि ।

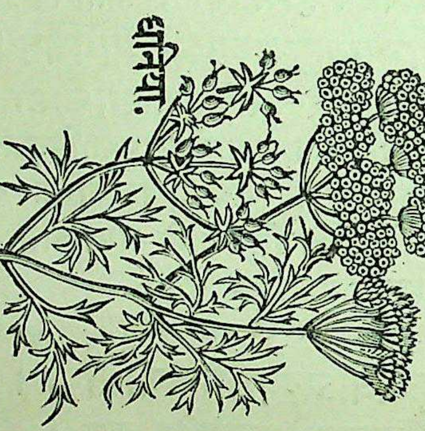

धन्याकं धनिकं धन्यं धान्यकञ्च धनीयकम् ।
कुस्तुम्बुरी छत्रा धन्या तुम्बुरुं च वितुन्नकम् ॥

अर्थ-धन्याक, धनिक, धन्य, धान्यक, धनीयक,कुस्तुम्बुरी,छत्रा, धन्या, तुम्बुरु, वितुन्नक, (कुस्तुम्बरु, धान्याक, धनेयक, धानक, धान्य, धानेय, धनिका, छत्रा, धान्य, सुगन्धि, शाकयोग्य, सूक्ष्मपत्र, जनप्रिय, धान्यबीज,बीजधान्य,अबबिका,वेधक,धाना,कुनटी, धेन्रिका, धना, अल्लका, हृद्यगन्धा, वेशण, धानी और निःसार) ।

संस्कृतभाषामें	धन्याक ।
हिन्दीभाषामें	धानिया ।
वंगभाषामें	धने ।
मराठीभाषामें	धने, कोथिंबीर ।
गुजरातीभाषामें	धाणा, कोथमीर ।
कर्णाटकीभाषामें	कोथुंबुरी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कोथमिल्लु, धाणीपापु ।
तामिलीभाषामें	कोतमल्लि ।

इंग्रेजीभाषामें	कोर्यांडिर् सीड् । Coriander seed
लैटिन्भाषामें	कोरीएंड्रम सेटाईवम् । Coriandrum Sativum
फारसीभाषामें	तुख्मे कश्नीज़ ।
अरबीभाषामें	कजबुरा ।

धन्याकगुणाः ।

धान्यकं मधुरं शीतं कषायं पित्तनाशनम् ।
ज्वरकासतृषाछर्दिकफहारि च दीपनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-धनिया-मधुर, शीतल, कषेला, पित्तनाशक तथा ज्वर, खांसी, तृषा, वमन और कफका नाश करेहै, तथा अग्निको दीपन करेहै।

अपिच ।

धान्यकं तुवरं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु ।
तिक्तं कटूष्णवीर्य्यं च दीपनं पाचकं स्मृतम् ॥
ज्वरघ्नं रोचकं ग्राहि स्वादु पाकत्रिदोषनुत् ।
आर्द्रं तु तद्गुणं स्वादु विशेषात्पित्तनाशि तत् ॥
तृष्णादाहवमिश्वासकासकार्श्यकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-धनिया-कषेला, स्निग्ध, अवृष्य, मूत्रजनक, हलका, कडवा, चरपरा, उष्णवीर्य्य, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पाचक, ज्वरनाशक, रोचक, पाकके समय स्वादिष्ठ है, तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, वमन, श्वास, खांसी, कृशता और कृमिरोगका नाश करे है।

कच्चे धनियेके भी धनियोंके समान गुण हैं, स्वादिष्ठ है और विशेष करके पित्तका नाश करेहै।

अन्यच्च ।

आर्द्रा कुस्तुम्बरी कुर्य्यात्स्वादुसौगन्ध्यहृद्यताम् ।
भक्ष्यव्यञ्जनभोज्येषु विविधेष्ववचारिता ॥ (शोडलनि०)

हिंगुनामानि ।

हिंगुशूलद्विड्रमठं बाह्लीकं जतुकं जतु ।
सहस्रवेधि जन्तुघ्नं सूपाङ्गं सूपधूपनम् ॥

अर्थ-हिंगु, शूलद्विट्, रमठ, बाह्लीक, जतुक, जतु, सहस्रवेधि,

जन्तुघ्न, सूपधूपन (हिंगुक, रामठ, बाह्लीक, पिण्याक, बाह्ली, गृहिणी, मधुरा, केसर, जातुक, रमठध्वनि, शूलहृत्, उग्रगन्ध, भूतारि, जन्तुनाशन, रक्षोघ्न, उग्रवीर्य, अगूढगन्ध, जरण, भेदन, दीप्त, शूलनाशक) ।

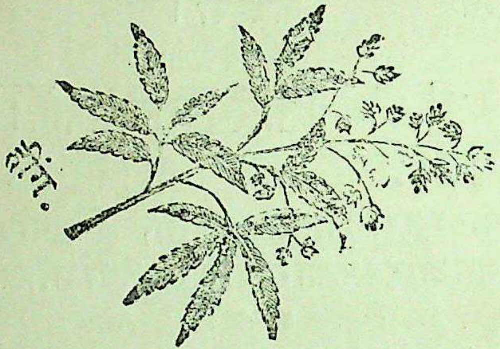

संस्कृतभाषामें	हिंगु ।
हिन्दीभाषामें	हींग ।
वंगभाषामें	हिंगु ।
मराठीभाषामें	हिंग ।
गुजरातीभाषामें	वघारणी ।
कर्णाटकीभाषामें	लेसु ।
तैलिङ्गीभाषामें	इंगुरा ।
लैटिन्भाषामें	फेरुलानर्थिक्स, नार्थेक्स, आस्सा, फिटिडा । Ferula Narthex, Narthex rssafoetida
फारसीभाषामें	अंगुझ दर्वते अगझ्रु खालीस ।
इंग्रेजीभाषामें	अस्साफेटीडा ।
अरबीभाषामें	हिलसीत ।

हिंगुगुणाः ।

लघूष्णं पाचनं हिंगु दीपनं कफवातजित् ।
कटु स्निग्धं सरं तीक्ष्णं शूलाजीर्णविबन्धनुत् (सु०सं०)

अर्थ-हींग-हलकी, गरम, पाचक, दीपन, कफवातनाशक, चरपरी, स्निग्ध, सारक, तीक्ष्ण तथा शूल, अजीर्ण और विबन्धको दूर करे है ।

अपिच ।

हृद्यं हिंगु कटूष्णं च क्रिमिवातकफापहम् ।
विबन्धाध्मानशूलघ्नं चक्षुष्यं गुल्मनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-हींग-हृदयको हितकारी, चरपरी, गरम तथा क्रिमि, वात, कफ, विबन्ध, आध्मान, शूल और गुल्मका नाश करेहै और नेत्रोंको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

हिंगूष्णं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णं वातबलासहृत् ।
शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नं पित्तवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हींग-गरम, रुचिकारी, तीक्ष्ण, वात कफनाशक तथा शूल, गुल्म, उदरदोग, आनाह (अफारा) और कृमिको दूर करे है तथा पित्तवर्धक है ।

अपिच ।

हिंगूष्णं वह्निमांद्यघ्नं पाचनं कफवातजित् ।
कटु स्निग्धं रसं तीक्ष्णं भूतघ्नं पित्तकोपनम् ॥

अर्थ-हींग-गरम, मंदाग्निनाशक, पाचक, कफवातविनाशक, चरपरी, स्निग्ध, तीक्ष्णरसवाली, भूतको दूर करे है और पित्तको कुपित करे है ।

अन्यच्च ।

बाह्लिकं पित्तलं चोष्णं हृद्यं तिक्तं परं कटु ।
लघु तीक्ष्णं रुचिकरं पाचकं चाग्निदीपकम् ॥
स्निग्धं मलस्तम्भकरं श्वासकासकफापहम् ।
आनाहाध्मानगुल्मघ्नं शूलहृद्रोगनाशनम् ॥
वातश्चाजीर्णकं जन्तूनुदरं चैव नाशयेत् ।(नि० र०)

अर्थ-हिंग-पित्तजनक, गरम, हृदयको हितकारी, कडवी, सारक, चरपरी, हलकी, तीक्ष्ण, रुचिकारक, पाचक, अग्निदीपन, स्निग्ध, मलस्तम्भक तथा श्वास, खांसी, कफ, आनाह, अर्थात् (अफारा) आध्मान, गुल्म, शूल, हृदयरोग, बादी, अजीर्ण, कृमि और उदररोगका नाश करे है ।

हींग इरान तथा पंजाबमें होतीहै ।

अस्यशोधनविधिः ।

अङ्गारस्थे लोहपात्रे सघृते रामठं क्षिपेत् ।
चालयेत्किञ्चिदारक्तवर्णं योगेषु योजयेत् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-घृतसहित हींगको लोहेके पात्रमें कर अंगारेके ऊपर रखदे; फिर चलावे, जब कुछेक लाल होजाय तब उतारकर औषधोंके काममें लावै

हिंगुपत्रीनामानि ।

त्वक्पत्री हिंगुपत्री च कर्बरी पृथुला पृथुः ।
बाष्पीका बाष्पिका बाष्पी दीर्घिका दारुपत्रिका ॥

अर्थ-त्वक्पत्री, हिंगुपत्री, कर्बरी, पृथुला, पृथु, बाष्पीका, बाष्पिका, बाष्पी, दीर्घिका, दारुपत्रिका, (कारवी, करवी, पृथ्वी, पृथ्वीका, बाष्पका, बाष्पा, पत्री, तन्वी, दारुपत्री, बिल्वा और पृथुका)

अस्या गुणाः ।

हिंगुपत्री भवेद्रुच्या तीक्ष्णोष्णा पाचनी कटुः ।
हृद्वस्तिरुग्विबन्धार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हिंगुपत्री-रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, पाचक, चरपरी, तथा हृदयरोग, वस्तिरोग, विबन्ध, बवासीर, कफ, गुल्म और वातका नाश करे है ।

अपिच ।

हिंगुपत्री कटुस्तीक्ष्णा तिक्तोष्णा पाचिका मता ।
रुच्या पथ्या दीपनी च हृद्या सौगन्धकारिणी ॥
तुवरा कफवातामवस्तिपीडां च नाशयेत् ।
बद्धविट्कार्शगुल्मादिप्लीहामेदोपचीविषान् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हिंगुपत्री-चरपरी, तीक्ष्ण, कड़वी, गरम, पाचक, रुचिकारक, पथ्य, दीपन, हृदयका हितकारी, सुगंधि, कषेली तथा कफ, वात, आमदोष, वस्तिकी पीडा, मलबद्धता, बवासीर, गुल्म, प्लीहा, मेद, अपची और विषका नाश करेहै ।

इसके पत्तोंके गुण और नाम हींगके पत्तोंसे मिलतेहैं । जैसे हिंगुके पत्तोंको संस्कृतमें कवरी और कर्वरी कहतेहैं, सो इसकोभी कर्बरी कबरी कहतेहैं और गुणभी हींगसे मिलतेहैं । निघण्टुरत्नाकरकी मराठी भाषामें "वाफली" लिखी है सो "वाफली" अक्कलकरके शाककूं कहते हैं ।

नाडीहिंगुनामानि ।

नाडीहिंगु पलाशाख्या जन्तुका रामठी च सा ।
वंशपत्री च पिण्डाह्वा सुवीर्या हिंगुनाडिका ॥

अर्थ-नाडीहिंगु, पलाशाख्य, जंतुका, रामठी, वंशपत्री, पिण्डाह्वा, सुवीर्य्या, हिंगुनाडिका (वेणुपत्री, पिण्डा, हिंगु, शिवादिका) ।

संस्कृतभाषामें	नाडीहिंगु ।
हिन्दीभाषामें	कलः पतिहीङ्ग, डिकामाली ।
वंगभाषामें	हिंगुविशेष ।
मराठिभाषामें	डिकेमाली ।
गुजरातीभाषामें	डिकामाली ।
कर्णाटकीभाषामें	कलहन्ती ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिम्महिंगवा कारु इंगवा ।
इंग्रेजीभाषामें	डिकेमालीगम्, गम्मीगार्डिनिया । Dika mallegum Gummy Gardinia
लैटिन्भाषामें	गार्डीनियासीडा गार्धिन्यागम्मिफेरा। Gardinia Ceeda Gardinua Gunimofera
अरबीभाषामें	कनखाभ ।

अस्या गुणाः ।

नाडीहिंगुः कटुष्णा च कफवातार्तिशान्तिकृत् ।
विष्टाविबन्धदोषघ्नी चानाहामापहारिणी । (रा० नि०)

अर्थ–नाडीहिंगु–चरपरी, गरम, कफ और वातकी वेदनाको शान्ति करनेवाली तथा विष्ठा, विबन्ध और आनाह रोगनाशक है।

अन्यच्च ।

नाडीहिंगुस्तु कटुकस्तीक्ष्णश्चोष्णश्च दीपकः ।
कफवातमलस्तम्भमनोमोहामनाशनः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–नाडीहिंगु–चरपरी, तीक्ष्ण, उष्ण, अग्निप्रदीपक तथा कफ, वात, मलबन्ध, मनका मोह और आमको दूर करेहै ।

विवरण । बडा वृक्ष होताहै, फूल सफेद होताहै, फल पोसतके डोरेकी समान होतेहैं, पत्ते बटमोगराके समानः होतेहैं इसको नाडीहिंगु कहतेहैं ।

वचानामानि ।

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ।
मङ्गल्या जटिला तीक्ष्णा गालिनी लोमशा तथा ॥

अर्थ–वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका, मङ्गल्या, जटिला, तीक्ष्णा, गालिनी, लोमशा (विजया, उग्रा, रक्षोघ्नी,

वच्या, काङ्गा, भद्रा, क्षुद्रपत्री, इक्षुपर्णी, स्मारणी, बोधनीया, भूतनाशिनी, श्लेष्मघ्नी, तीक्ष्णपत्रा, जलजा, इक्षुपात्रिका)

पारसीकवचानामानि ।

पारसीकवचा शुक्ला प्रोक्ता हैमवतीति सा ।

अर्थ-खुरासानी वच सफेद होतीहै, उसको संकृतमें हैमवती (शतपर्वा, मेध्या, शुक्ला, भोगवती, दीर्घपत्रा, कर्षिणी) कहतेहैं ।

संकृतभाषामें	वचा, पारसीकवचा, श्वेतवचा ।
हिन्दीभाषामें	वच, खुरासानीवच, सफेदवच ।
वंगभाषामें	वच, खोरासानी वच, श्वेतवच ।
मराठीभाषामें	वेखंड, पांढरें वेखण्ड ।
गुजरातीभाषामें	घोडावज, खुरसाणीवच, बालावज ।
कर्णाटकीभाषामें	वच, बिलीयबजे ।
तैलङ्गीभाषामें	वासा, बडज, नल्लवस ।
तामिलीभाषामें	वशम्बु ।
इंग्रेजीभाषामें	स्वीट्फ्लागरूट् । Sweet Flogroot
लैटिन्भाषामें	एकोररा, केलेमस् । Achoras Calamus
पारसीभाषामें	सोसन जर्द अगर तुरकी ।
अरबीभाषामें	उद्लबुज ।

वचागुणाः ।

वचोग्रगन्धा कटुका तिक्तोष्णा वान्तिवह्निकृत् ।
दीपनी वाक्प्रदा कण्ठया शकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
विबन्धाध्मानशूलघ्नी शोफवातज्वरापहा ।
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान्हरेत् ॥ (ग० नि०)

अर्थ-वच-उग्रगन्धयुक्त, चरपरी, कडवी, गरम, वमनकारक, अग्निजनक, दीपन, वाणीदायक, कण्ठको हितकारी, मलमूत्रशोधक तथा विबन्ध, आध्मान, शूल, शोफ, वातज्वर, अपस्मार, कफ, उन्माद, भूत, कृमि और वातका नाश करेहै ।

अपिच ।

वाता तीक्ष्णा कटूष्णा च कफामग्रन्थिशोफनुत् ।

वातज्वरातिसारघ्नी वान्तिकृन्मादभूतहृत् ॥

अर्थ-वच-तीक्ष्ण, चरपरी, गरम तथा कफ, आम, ग्रन्थि, सूजन, वातज्वर और अतिसारको हरे है। वमनकारक, उन्माद और भूतनाशक है।

अन्यच्च ।

वचायुष्या वातकफतृष्णाघ्नी स्मृतिवर्द्धिनी। (रा०व०)

अर्थ-वच-अवस्थास्थापक, वातकफनाशक, तृष्णानिवारक और स्मरणशक्तिवर्द्धक है।

शुक्लवचागुणाः ।

वचा श्वेता मतिर्मेधा चाग्निदीप्तिकरी मता ।
आयुष्यदा गुणाढ्या च वृष्या कफविनाशिनी ॥
वातभूतकृमिहरा त्वितरे पूर्ववद्गुणाः ।

अर्थ-सफेदवच-मति और मेधादायक है, जठराग्निप्रदीपक है, आयुर्वर्द्धक, अधिकगुणवाली, वीर्यजनक तथा कफ, वादी, भूतबाधा और कृमिको दूर करेहै। शेषगुण वचाकी समान जानने ।

महाभरीवचागुणाः ।

सुगन्धाप्युग्रगन्धा च विशेषात्कफकासनुत् ।
सुस्वरत्वकरी रुच्या हृत्कण्ठमुखशोधिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-महाभरीवच-सुगन्ध और उग्रगन्धयुक्त है। विशेषकरके कफ तथा खांसीको दूर करे है, स्वरको उत्तम करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली तथा हृदय, कण्ठ और मुखको शुद्ध करनेवाली है।

वचाद्भुतगुणाः ।

अद्भिर्वा पयसाज्येन मासमेकन्तु सेविता ।
वचा कुर्य्यान्नरं प्राज्ञं श्रुतिधारणसंयुतम् ॥
चन्द्रसूर्यग्रहे पीतं पलमेकं पयोन्वितम् ।
वचायास्तत्क्षणं कुर्य्यान्महाप्रज्ञान्वितं नरम् ॥

अर्थ-वचके चूर्णको जलके साथ अथवा दूधके साथ, एक मासपर्यन्त सेवन करनेसे मनुष्य बुद्धिमान् और ज्ञानी होताहै तथा

चन्द्रग्रहणके समय अथवा सूर्यग्रहणके समय एक पल वचके चूर्णको दूधके साथ भक्षण करनेसे उसी समय मनुष्यको अत्यन्त बुद्धियुक्त करतीहै । वच सजल स्थान और रेतली भूमिमें उत्पन्न होतीहै ।

कुलिञ्जननामानि ।

कुलञ्जो गन्धमूलश्च तीक्ष्णमूलः कुलञ्जनः ।

अर्थ-कुलञ्ज, गन्धमूल, तीक्ष्णमूल, कुलञ्जन ।

संस्कृतभाषामें	कुलञ्जन ।
हिन्दीभाषामें	कुलींजन ।
वंगभाषामें	कुलञ्जन ।
मराठीभाषामें	कोळिञ्जन । थोर कोळिञ्जन ।
गुजरातीभाषामें	कुलिञ्जन नानु । कुलिञ्जन मोटे ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्रेटर गैलं गाल । Greater Galangal
लैटिन्भाषामें	आलपिनिया,आफिसिनेरम् । Alpinia officinarum
फारसीभाषामें	खिरदारु ।
अरबीभाषामें	ईर्क खोलिञ्जान् ।

अस्य गुणाः ।

कुलञ्जः कटुतिक्तोष्णो दीपनो मुखदोषनुत् ।(रा०नि०)

अर्थ-कुलींजन-चरपरा, कडवा, गरम, दीपन और मुखदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कुलिञ्जनं कटुस्तिक्तमुष्णं चाग्निप्रदीपनम् ।
रुच्यं स्वर्य्यं च हृद्यं च मुखकण्ठविशुद्धिकृत् ॥
मुखदोषं कफं चैव कासं वातं कफं हरेत् ।(नि० र०)

अर्थ-कुलींजन-चरपरा, कडवा, गरम, अग्निदीपक, रुचिकारक, स्वरको सुधारनेवाला, हृदयको हितकारी, मुख और कण्ठको शुद्ध करनेवाला तथा मुखदोष, कफ, खांसी, वात और कफको नष्ट करेहै ।

बडे कुलींजनका बडा वृक्ष होताहै, देखनेमें दाखकी वेलके सदृश होताहै, इसकी जडको कुलींजन कहतेहैं ! कितनेही मनुष्य पानकी जडको कुलींजन कहतेहैं, सो पानकी जड नहीं है ।

चोपचीन्युत्पत्तिलक्षणम्।

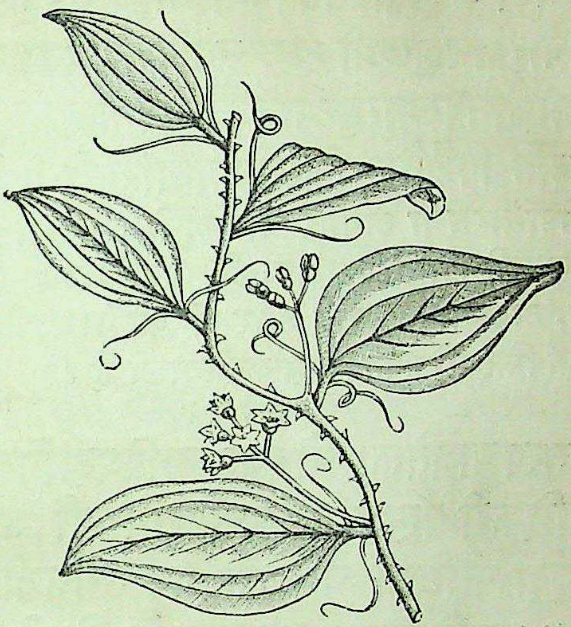

फिरंगदेशसम्भूता चीनदेशेथ विश्रुता।
नामतश्चोपचीनी स्यादश्वगन्धसमा भवेत्। (शि० प्र०)

अर्थ-फिरंग देशमें उत्पन्न होतीहै, चीनदेशसे आती है और इसका नाम चोपचीनी है और असगन्धकी समान होतीहै।

संस्कृतभाषामें	द्वीपान्तरवचा, अमृतोपहिता।
हिन्दीभाषामें	चोवचीनी।
वङ्गभाषामें	तोपचीनी।
मराठीभाषामें	चोपचीनी।
गुजरातीभाषामें	चोपचीनी।
इंग्रेजीभाषामें	चाईनारूट्। China root
लैटिन्भाषामें	स्माइलैक्स चाइना। Smilax China
फारसीभाषामें	एवन।
अरबीभाषामें	एवन।
फिरंगीभाषामें	चक्का।
यूनानीभाषामें	खासिलियर आग्रासिनी।

अस्या गुणाः ।

द्वीपान्तरवचा कट्वी तिक्तोष्णा वह्निदीप्तिकृत् ।
विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
वातव्याधीनपस्मारमुन्मादं तनुवेदनाम् ।
व्यपोहति विशेषेण फिरंगामयनाशिनी ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-द्वीपान्तरवचा अर्थात् चोबचीनी-चरपरी, (मधुर)कडवी, गरम, मलमूत्रकी शोधन करनेवाली तथा विबन्ध, आध्मान, शूल, वातव्याधि, अपस्मार,उन्माद और अंगकी वेदनाको दूर करेहै और विशेष करके फिरंगरोगका नाश करनेवाली है ।

अपि च ।

द्वीपान्तरवचा तिक्ता चोष्णा चाग्निप्रदीपिनी ।
धातुवृद्धिकरी बल्या मलमूत्रविशोधिनी ॥
तारुण्यदा पौष्टिकी च वृष्या चैव रसायनी ।
गर्भप्रदा बद्धविट्कमाध्मानोन्मादनाशिनी ॥
वातं शूलमपस्मारधातुक्षयविनाशिनी ॥
अङ्गग्रहं फिरंगोपदंशं मांद्यं कटिग्रहम् ॥
पक्षाघातमुरुस्तम्भं राजयक्ष्मव्रणौ तथा ।
गण्डमालां नेत्ररोगं शुक्रशोणितदोषकम् ॥
सर्वांगकम्पवातञ्च कुब्जवातञ्च नाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-चोपचीनी-कडवी,गरम,अग्निप्रदीपक,धातुवर्धक,बलकारक मल और मूत्रकी शोधन करनेवाली,तारुण्यदायक,पुष्टिकारक,वीर्यजनक, रसायन, गर्भदायक तथा बद्धविट्क, आध्मान, उन्माद, वात, शूल, अपस्मार, धातुक्षय, अंगग्रह, फिरंग, उपदंश, मांद्य, कटिग्रह, पक्षाघात, ऊरुस्तंम्भ, क्षय, व्रण, गण्डमाला, नेत्ररोग, शुक्रदोष, रक्तविकार, सर्वांगवात,कम्पवात और कुब्जवातका नाश करेहै ।

अपि च ।

फिरंगरोगान्कुष्टांश्च विसर्पांश्च विनाशयेत् ।

क्षीणानां पुष्टिकरिणी चाग्निमान्द्यं नियच्छति ॥ (द्र० नि०)

अर्थ-चोपचीनी-फिरंगरोग, कोढ और विसर्परोगका नाश करेहै क्षीण मनुष्योंको पुष्ट करनेवाली और मंदाग्निका नाश करनेवाली है।

निषेधः ।

मद्यं त्यजेत्तथा तैलं काञ्जिकं शाकमेव च ।
क्षारमम्लरसं चैव लवणं तिक्तभोजनम् ॥ (अनं. भा.)

अर्थ-चोबचीनीके सेवन करनेवाले मनुष्य मदिरा, तेल, कांजी शाक, क्षाररसवाले पदार्थ, अम्लरसवाले पदार्थ, लवण और तिक्त भोजन त्यागदें।

अस्या लक्षणम् ।

अश्वगन्धासमं पत्रमोषधी ग्रन्थिसंयुता ।
वर्णतः पाटलाभा च दृढा च मधुरा रसे ॥ (शिवनिघण्टु)

अर्थ-इसके पत्ते असगन्धकी समान होतेहैं, औषधी गांठे युक्त होती है, इसका रंग किञ्चित् पीला और सफेद होताहै, दृढ होतीहै और रस मीठा होताहै ।

प्राचीन वैद्यकके ग्रंथोंमें इसका प्रयोग नहीं देखनेमें आता, सबसे प्रथम महात्मा भावमिश्रने अपने ग्रन्थमें इसका वृत्तांत लिखा और इसका द्वीपान्तरीय नाम रक्खा । ऐसा अनुमान होताहै कि विदेशीय लताका मूलविशेष समझकर इसका चोपचीनी नाम रक्खा गया है। व्यवहार-मूल ।

आकारकरभनामानि ।

आकारकरभश्चैवाकल्लकोथ ह्यकल्लकः ।

अर्थ-आकारकरभ, आकल्लक, अकल्लक (आकरकरा)

संस्कृतभाषामें	आकारकरभ।
हिन्दीभाषामें	अकरकरा।
वंगभाषामें	अकोरकोरा।
मराठीभाषामें	अक्कलकरा।
गुजरातीभाषामें	अक्कलकरो।
कर्णाटकीभाषामें	अक्कलकरा।
इंग्रेजीभाषामें	पेलेटरी रूट् । Pallatory root
लैटिनभाषामें	एनेसाई क्लसपेरे थ्रम् । Anacy cluspere thrum
अरबीभाषामें	आकरकरहा।

अस्या गुणाः ।

अक्कलकरोष्णो वीर्येण बलकृत्कटुको मतः ।
प्रतिश्यायश्च शोथश्च वातश्चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-अकरकरा-उष्णवीर्य, बलकारक, चरपरा, प्रतिश्याय, सूजन और वातका विनाश करेहै ।

हपुषानामानि ।

हपुषा वपुषा विस्रा पराश्वत्थफला स्मृता ।
मत्स्यगन्धा प्लीहहन्त्री विषघ्नी ध्मांक्षनाशिनी ॥

अर्थ-हपुषा, वपुषा, विस्रा, (हबुषा, विस्रगंगा, विगन्धिका, यह नाम प्रथम प्रकारके हाउबेरके हैं) अश्वत्थफला, मत्स्यगन्धा, प्लीहहन्त्री, विषघ्नी, ध्मांक्षनाशिनी, (स्वल्पफला, कच्छुघ्ना, प्लीहशत्रु, कफघ्नी, अपराजिता)

संस्कृतभाषामें	हपुषा ।
हिन्दीभाषामें	हाऊवेर ।
वङ्गभाषामें	हवूषा ।
मराठीभाषामें	होश ।
कर्णाटकीभाषामें	परडुहव्वे ।
लैटिनभाषामें	थेवेटियानेरिफोलिया । Thevetia nerifolia

हाऊबेर दो प्रकारका है, तिसमें प्रथम फल मछलीके समान और आमकी सदृश गन्धवाला होताह ।

हपुषागुणाः ।

हपुषा कटुका तिक्ता गुरूष्णा दीपनी मता ।
तुवरा ग्रहणीशूलगुल्मार्शोवातनाशिनी ॥
गुल्मोदरकफामाग्निमांद्यकृमिकपीनसान् ।
मलावष्टम्भकं चैव प्रदरं चैव नाशयेत् ॥

अर्थ-हाऊबेर-चरपरा, कडवा, भारी, गरम, दीपन, कषेला तथा संग्रहणी, शूल, गुल्म, बवासीर, वात, उदररोग, कफ, आम, मन्दाग्नि, कृमि, पीनस, मलावष्टंभ और प्रदररोगका नाश करेहै ।

स्वल्पहपुषागुणाः ।

स्वल्पफला मूत्रकृच्छ्रप्लीहाविषकफाञ्जयेत् ।

गुणा ह्यस्याः पूर्ववच्च ज्ञेयाः सुज्ञैश्चिकित्सकैः ॥ (नि०र०)

अर्थ-दूसरेप्रकारका हाऊबेर मूत्रकृच्छ्र,प्लीहा, विष और कफको नष्ट करेहै । शेष गुण प्रथमकी समान जानने ।

विडंगनामानि ।

क्रिमिघ्नं भस्मकं मोघा विडगं कृमिकण्टकम् ।
कैरालं केवलं वेल्लं तण्डुलं चित्रतण्डुला ॥

अर्थ-क्रिमिघ्न, भस्मक, मोघा, बिडङ्ग, कृमिकण्टक, कैराल, केवल, वेल्ल, तण्डुल, चित्रतण्डुला (विडङ्गा, अमोघा, तंडुला, जन्तुनाशक, क्रिमिकंटक, रसायन, पावक, तंडुल, क्रिमिरिपु, जन्तुघ्न, चित्रतण्डुल, क्रिमिशत्रु, गर्दभ, कृमिहा, चित्रा, तण्डुला, तण्डुलीयका, वातारि, जन्तुघ्नी, मृगगामिनी, कैराली, गहरा, कापाली, वरा, सुचित्रबीजा, वृषणाशन, जन्तुहन्त्री, कृष्णतन्दुला, शूद्रतंदुला, चित्रबीजा और घोषा)

संस्कृत भाषामें	विडङ्ग ।
हिन्दीभाषामें	वायविडङ्ग ।
वंग भाषामें	विडङ्ग ।
मराठी भाषामें	वावाडंग ।
गुजराती भाषामें	वावढींग ।
कर्णाटकी भाषामें	वायुविडङ्ग
तैलङ्गी भाषामें	वायुवडयमु ।
तामिलीभाषामें	वायबिलं ।
इंग्रेजीभाषामें	बेब्रेंग् । Babreng
लैटिन् भाषामें	एँब्रेलिया रिबीस् Embrelia ribes
फारसीभाषामें	वरंगकावली ।
अरबी भाषामें	बरंज कावली ।

अस्या गुणाः ।

विडंगं कटु तिक्तोष्णं रूक्षं वह्निकरं लघु ।
गुल्माध्मानोदरश्लेमकृमिवातविबन्धनुत् ॥ (मद०नि०)

अर्थ-वायविडङ्ग-चरपरी, कडवी, गरम, रूखी, अग्निकारक, हलकी तथा गुल्म, आध्मान, उदररोग, कफ, कृमि, वात और विबन्धको दूर करे है ।

अपिच ।

विडंगं कटुकं पाके लघुवातकफापहम् ।
तिक्तमीषद्विषं हन्ति रूक्षोष्णं कृमिनाशनम् ।(शो०नि०)

अर्थ-वायविडंग-पाकमें चरपरी, हलकी, वात कफनाशक, किंचित् कडवी विषनाशक, रूखी, गरम और कृमिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

विडंगं कटुकं तिक्तमुष्णं रुच्यं लघु स्मृतम् ।
दीपनं वातकफहृदग्निमांद्यारुचीर्जयेत् ॥
भ्रान्तिं कृमिश्च शूलं च आध्मानमुदरं तथा ।
प्लीहाजीर्णे श्वासकासौ हृद्रोगं विषदोषकम् ॥
आमं मलावष्टम्भश्च मेदो मेहश्च नाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-वायविडंग-चरपरी, कडवी, गरम, रुचिकारी, हलकी, जठराग्निको दीपन करनेवाली तथा वात, कफ, मंदाग्नि, अरुचि, भ्रान्ति, कृमि, फल, अफारा, उदररोग, प्लीहा, अजीर्ण, श्वास, खाँसी, हृदयरोग, विषविकार, आम, मलस्तम्भ, मेदरोग और प्रमेह रोगको दूर करेहै । मात्रा २ मासेकी ।

तुम्बुरुनामानि ।

तुम्बुरुः सौरभः सौरवनजः सानुजो द्विजः ।
तीक्ष्णवल्कस्तीक्ष्णफलस्तीक्ष्णपत्रो महामुनिः ॥

अर्थ-तुम्बरु, सौरभ, सौरवनज, सानुज, द्विज, तीक्ष्णवल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णपत्र, महामुनि, (स्फुटल, सुगन्धि, शूलघ्न, सौरज, अन्धक, गन्धालु, स्फुटितफल)

अस्या गुणाः ।

तुम्बुरुर्मधुरस्तिक्तः कटूष्णः कफवातनुत् ।
शूलगुल्मोदराध्मानकृमिघ्नो वह्निदीपनः ॥ (राजनि०)

अर्थ-तुम्बुरु-मधुर, कडवा, चरपरा, गरम, कफ वात नाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, अफारा और कृमिका नाश करे है तथा अग्निको दीपन करे है ।

अपिच ।

तुम्बुरु ग्रथितं तिक्तं कटु पाकेपि तत्कटु ।

रूक्षोष्णं दीपनं तीक्ष्णं रुच्यं लघु विदाहि च ॥
वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताक्रिमीन् ।
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणि नाशयेत् ॥

अर्थ-तुम्बुरु-कडवा, पाकमें चरपरा, रूखा, गरम, दीपन, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हलका, विदाही तथा वात, कफ, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरोरोग, शरीरका भारीपन, कृमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

संस्कृतभाषामें	तुम्बुरु ।
हिन्दीभाषामें	तुम्बुरू ।
वंगभाषामें	नेपालिधने, तुम्बुरु ।
मराठीभाषाम	चिरफळ ।
कोंकणीभाषामें	तिरफळ ।

वंशलोचननामानि ।

तुगाक्षीरी शुभा वांशी त्वक्क्षीरी वंशलोचना ।

अर्थ-तुगाक्षीरी, शुभा, वांशी, त्वक्क्षीरी, वंशलोचना, (त्वक्क्षीरा, वंशज, क्षीरिका, तुगा, शुभ्रा, वंशक्षीरी, वैणवी, त्वक्सारा, कर्म्मरी, श्वेता, कर्पूररोचना, तुङ्गा, रोचानिका, पिङ्गा, वंशशर्करा, वंशरोचना, वंशकर्पूर)

संस्कृतभाषामें	वंशलोचना ।
हिन्दीभाषामें	वंशलोचन ।
वङ्गभाषामें	वंशलोचन, बाँशकावर ।
मराठीभाषामें	वंशलोचन ।
गुजरातीभाषामें	वंशलोचन, वंशकपूर ।
कर्णाटकीभाषामें	वंशलोचना ।
तैलिङ्गीभाषामें	वंशलोचना ।
इंग्रेजीभाषामें	थीसिलिसियस् कंक्रिशन् । Thesiliceous Conretion
लैटिन्भाषामें	बंबुणाए रंडिनेश्या । Bambunaarundinacea
फारसीभाषामें	तवाशीर ।
अरबभाषामें	तवाशिर ।

अस्या गुणाः ।

वंशजा बृंहणी वृष्या बल्या स्वाद्वी च शीतला ।
तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः ॥
हरेत्कुष्ठ व्रणं पाण्डुं कषाया वातकृच्छ्रजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-वंशलोचन-पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, स्वादिष्ट, शीतिल तथा तृषा, खाँसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्तपित्त, कामला, कुष्ठ और पाण्डुरोगको दूर करेहै, कषायरसयुक्त है, वात तथा मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

अपि च ।

वांशी स्वादुर्हिमा रूक्षा शोषकासक्षयापहा ।
भ्रमश्वासहरा चैव तवक्षीरञ्च तद्गुणम् ॥ (शोडलनिघण्टु)

अर्थ-वंशलोचन-स्वादिष्ठ, शीतल, रूखा तथा शोष, खाँसी, क्षय, भ्रम और श्वासको दूर करेहै । तवक्षीरके भी इसीके समान गुण, जानने ।

अन्यच्च ।

तुगा रूक्षा तु तुवरा मधुरा रक्तशुद्धिकृत् ।
शीता शुभावहा ग्राही वृष्या धातुविवर्धिनी ॥
बल्या क्षयश्वासकासरक्तदोषारुचिप्रणुत् ।
रक्तपित्तं ज्वरं कुष्ठं कामलां पाण्डुरोगकम् ॥
दाहं तृषां व्रणं मूत्रकृच्छ्रं दाहञ्च नाशयेत् ।
वातघ्नी चैव विज्ञेया वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-वंशलोचन-रूखा, कषेला, मधुर, रक्तको शुद्ध करनेवाला, शीतल, शुभावह, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, बलकारक, क्षय, श्वास, खाँसी, रुधिरविकार; अपची, रक्तपित्त, ज्वर, कुष्ठ, कामला, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, व्रण, मूत्रकृच्छ्र, दाह और वातका विनाश, करेहै ।

तवक्षीरनामानि ।

तवक्षीरं पयःक्षीरं यवजं गवयोद्भवम् ।
अन्यद्गोधूमजं चान्यत्पिष्टिकातण्डुलोद्भवम् ॥
अन्यच्च तालसम्भूतं तालक्षीरादिनामकम् ।

अर्थ-तवक्षीर, पयःक्षीर, यवज, गवयोद्भव, गोधूमज, पिष्टिका, तण्डुलोद्भव, तालसम्भूत, तालक्षीर ।

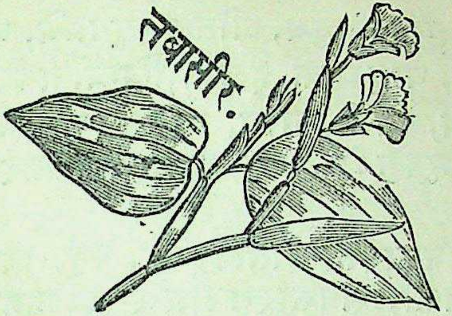

संस्कृतभाषामें	तवक्षीर ।
हिन्दीभाषामें	तवाखीर ।
वंगभाषामें	तवक्षीर ।
मराठीभाषामें	तवकील ।
गुजरातीभाषामें	तवखार ।
इंग्रेजीभाषामें	ऐरोरूट । Arrow roy
कर्णाटकीभाषामें	तवक्षीर ।
लैटिनभाषामें	कर्क्यूमा ऐंगास्टिफोलिया । Curcuma-angustifolia
फारसीभाषामें	तवाशीर ।

अस्य गुणाः ।

तवक्षीरन्तु मधुरं शिशिरं दाहपित्तनुत् ।
क्षयकासकफश्वासनाशनं चास्रदोषनुत्॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-तवाखीर-मधुर, शीतल तथा दाह, पित्त, क्षय, रुधिरविकार, खांसी, कफ और श्वासको दूर करैहै ।

अपिच ।

तवक्षीरन्तु मधुरं शुभं शीतं सुगन्धिकम् ।
बल्यं वृष्यं पौष्टिकञ्च धातुवृद्धिकरं लघु ॥
सुस्निग्धक्षयपित्तास्रपित्तदाहारुचीहरम् ।
कासश्वासज्वरतृष्णाकामलापाण्डुकुष्ठहम् ॥

मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रमेहव्रणकफापहम् ।
रक्तदोषहरं चान्यं जातं स्वल्पगुणं मतम्॥(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तवाखीर-मधुर, शुभ्र, शीतल, सुगन्धि, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, हलकी, स्निग्ध, तथा क्षय, पित्त, रक्तपित्त, दाह, अरुचि, खांसी, श्वास, ज्वर, तृषा, कामला, पाण्डु, कोढ, मूत्राश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, व्रण, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

तवाखीर पांच प्रकारकी होतीहै, जौ, गेहूं, चावल, तालवृक्ष और वनगायके दूधकी, इसप्रकार तवाखीर अनेक जातिकी होतीहै। सिंगाडेके चूनकी भी बनतीहै, इन सबमें वनगायके दूधकी और जौकी उत्तम होतीहै ।

समुद्रफेननामानि ।

समुद्रफेनः फेनश्च डिण्डिरोऽब्धिकफस्तथा ।

अर्थ-समुद्रफेन, फेन, डिण्डिर, अब्धिकफ, (अर्णवजमल, अर्णवज, सिन्धुकफ, डिण्डिर, डिण्डीर, समुद्रकफ, जलहास, फेनक, उदधिमल, श्वेतधामा, लवणोदधिसम्भव, वार्द्धिफेन, पयोधिजलफेन, अब्धिडिण्डीर, सामुद्र, शुष्काशुष्क, विंध्याह्व, दधिफेन, सारमल)

संस्कृतभाषामें	समुद्रफेन ।
हिन्दीभाषामें	समुद्रफेन ।
वंगभाषाम	समुद्रफेना ।
मराठीभाषामें	समुद्रफेण ।
गुजरातीभाषामें	समन्दरफीण ।
कर्णाटकीभाषामें	कडल नागले ।
तैलिंगीभाषामें	सामुद्रनालिके ।
इंग्रेजीभाषामें	कटल फीशबोन । Cattlefishbone
लैटिन् भाषामें	सेपिया ऑफीसिनेलिस Sepia officinalis
फारशीभाषामें	कफेदारिया
अरबीभाषामें	जुबदुल्लेहर ।

अस्य गुणाः ।

समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शीतलस्तथा ।
कषायो विषपित्तघ्नः कर्णरुक्कफहल्लघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-समुद्रफेन-नेत्रोंको हितकारी, लेखन, शीतल, कषेले तथा विष, पित्त, कर्णरोग और कफको दूर करेहै और हलका है ।

अपिच ।

समुद्रफेनं शिशिरं कषायं नेत्ररोगनुत् ।
कफकण्ठामयघ्नं च रुचिकृत् कर्णरोगहृत्॥ (राजनि०)

अर्थ-समुद्रफेन-शीतल, कषेला तथा नेत्ररोग, कफ, कण्ठरोग, और कर्णरोगका नाश करेहै और रुचिको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

अब्धिफेनो रुचिकरो लेखनस्तुवरो लघुः ।
चक्षुष्यः शीतलश्चैव पटलादिरुजाहरः ॥
सारश्च विषदोषघ्नः कर्णशूलहरः परः ।
कफं च कण्ठरोगं च पित्तं चैव विनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-समुद्रफेन-रुचिकारक, लेखन, कषेले, हलके, नेत्रोंका हितकारी, शीतल, पटलादिरोगनाशक, सारक, विषनाशक तथा कर्णशूल, कफ, कण्ठरोग और पित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

समुद्रफेनं शिशिरं तुवरं वान्तिकृत्परम् ।

अर्थ-समुद्रफेन- शीतल, कषेला और अत्यन्त वान्तिकारक है । मात्रा २ मासेकी ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे हरीतक्यादिवर्गः ॥ २ ॥

अथ अष्टवर्गः ।

जीवकनामानि ।

जीवकः क्ष्वेडह्रस्वांगो दीर्घायुः शृङ्गकः प्रियः ।

अर्थ-जीवक, क्ष्वेड, ह्रस्वाङ्ग, दीर्घायु, शृङ्गक, प्रिय, (शृङ्गकूर्चशीर्ष, मधुरक, मधुर, कूर्चशीर्षक चिरजीवक, जीवन, प्राणद, जीव्य, भृङ्गाह्व, चिरंजीव, मधुर, मङ्गल्य, वृद्धिद, आयुष्मान्, जीवद, बलद)

अस्य गुणाः ।

जीवको मधुरः शीतो रक्तपित्तानिलार्तिजित् ।

क्षयदाहज्वरान् हन्ति शुक्रश्लेष्मविवर्द्धनः ॥ (गणनिघण्टु)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह और ज्वरको दूर करे है । शुक्र (वीर्य) और कफको बढावेहै ।

अपिच ।

जीवको मधुरः शीतः शुक्रलः कफकृन्मतः ।
रक्तपित्तहरो बल्यो वातपित्तज्वरापहः ॥
कृशताक्षयदाहानां रक्तदोषस्य नाशकः । (नि०र०)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल, शुक्रजनक, कफकारक, रक्तपित्तनाशक, बलकारक तथा वात, पित्त, ज्वर, कृशता, क्षय, दाह और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अस्य स्वरूपं यथा ।

जीवन्तीसदृशैः पत्रैर्जीवको गुल्मकः स्मृतः ।
कण्टी क्षीरी तथानूपे भवतीत्यब्रवीन्मुनिः ॥ (इति कैयदेव)

अर्थ-जीवक औषधिका गुल्म अनूप देशमें उत्पन्न होताहै, पत्ते जीवन्तीके समान होते हैं, कांटे सूक्ष्म होते हैं और इसमें दूध होताहै ।

अपिच ।

जीवको ह्रस्वविटपः कूर्चशीर्षश्च दक्षिणे ।
देशे संजायते कन्दो निःसारः सूक्ष्मपत्रकः ॥ (शिवनिघण्टु)

अर्थ-विटप छोटा है, इसका आकार बुरारीके समान होता है, इस कन्दकी उत्पत्ति दक्षिण देशमें होती है । पत्ते सूक्ष्म सारहीन होते हैं । व्यवहार-कन्द ।

ऋषभकनामानि ।

ऋषभो दुर्द्धरो द्राक्षा मातृको वल्लुरो नृपः ॥

अर्थ-ऋषभ, दुर्द्धर, द्राक्षा, मातृक, वल्लुर, नृप, (ऋषभक, वृषभ, वृष, वीर, पृथिवीपति, गोपति, धीर, विषाणी, ककुद्मान्, पुङ्गव, बोढी, शृङ्गी, धुर्य्य, भूपति, कामी, रूक्षप्रिय, उक्षा, लाङ्गली, गौ, बन्धुर, बन्धूर, गोरक्ष, वनवासी, ऋषिप्रिय, मधुर, शीतल, कामद)

अस्य गुणाः ।

ऋषभको मधुः शीतो गर्भसन्धानकारकः ।

शुक्रधातुकफानां च कारको बलदायकः ॥
वृष्यः पुष्टिकरः प्रोक्तः पित्तरक्तातिसारजित् ।
रक्तरुक्कृशतावातज्वरदाहक्षयापहः ॥ (नि० र०)

अर्थ-ऋषभक-मधुर, शीतल, गर्भसन्धानकारक, शुक्रवर्द्धक कफकारक, बलदायक, वीर्यजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, रक्तातिसार, रक्तरोग, कृशता, वातज्वर, दाह और क्षयका नाश करे है ।

जीवकर्षभकगुणाः।

जीवकर्षभकौ बल्यौ शीतौ शुक्रकफप्रदौ ।
मधुरौ पित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जीवक और ऋषभक-बलकारक, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, मधुर, पित्त, दाह, रुधिरविकार, वायु और क्षयरोगको नाश करेहै ।

ऋषभो जीवकगुणो कामदः स विशेषतः ।(शोडलनिघण्टु)

अर्थ-ऋषभक औषधीके गुण जीवककेही समान हैं । विशेषतः यह कामको उत्पन्न करे है ।

जीवकर्षभकस्वरूपम् ।

जीवकर्षभकौ ज्ञेयौ हिमाद्रिशिखरोद्भवौ ।
रसोनकन्दवत्कन्दौ निःसारौ सूक्ष्मपत्रकौ ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जीवक और ऋषभक यह दोनों औषधि हिमालय पर्वतके शिखरपर उत्पन्न होतीहैं, इनका कंद लहसनके कंदकी समान होता है साररहित बारीक पत्ते होते हैं ।

जीवक कुहरीके आकार और ऋषभक वृषभ (बैल) के सिंगके आकार होताहै।

मेदानामानि ।

मेदा धीरा मणिच्छिद्रा मधुरा जीवनी रसा ।

अर्थ-मेदा, धीरा, मणिच्छिद्रा, मधुरा, जीवनी, रसा (मेदोद्भवा, श्रेष्ठा, विभावरी, वसा, शल्यपर्णिका, मेदसारा, स्नेहवती, मेदिनी, स्निग्धा, मेदा, द्रवा, साध्वी, शल्यदा, बहुरन्ध्रिका, मेदोवती, पुरुषदन्तिका, शल्यपर्णी छिद्रबहुला, भव्या, जीवनिका, अध्वरा, स्वल्पपर्णी)

मेदागुणाः ।

मेदा तु मधुरा शीता पित्तदाहार्त्तिकासनुत् ।

राजयक्ष्मज्वरहरा वातदोषकरी च सा॥ (निघण्टुचूडामणि)

अर्थ-मेदा-मधुर, शीतल तथा पित्त, दाह, खांसी, राजयक्ष्मा और ज्वरको नाश करेहै और वातको उत्पन्न करे है ।

अपि च ।

मेदा तु मधुरा शीता वृष्या स्वाद्वी गुरुः स्मृता ।
शुक्रवृद्धिकरी स्तन्या स्निग्धा च श्लेष्मला स्मृता ॥
वातं पित्तं रक्तदोषं क्षयं चैव विनाशयेत् ।
ज्वरं दाहं च कासं च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मेदा-मधुर,शीतल, वीर्यजनक, स्वादु, भारी, धातुवर्द्धक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध,कफकारक तथा वात, पित्त, रक्तविकार, क्षय, ज्वर, दाह और खांसीको दूर करे है ।

मेदालक्षणम् ।

शुभ्रकन्दो नखच्छेद्यो मेदधातुरिव स्रवेत् ।
यः स मेदेति विज्ञेयो जिज्ञासातत्परैर्जनैः ॥

अर्थ-जिसका सफेद कन्द हो और जिसमें नखसे छेदनेसे मेदा धातुकी समान एकप्रकारका रस टपके, उसको मेदा जानना ।

महामेदानामानि ।

महामेदा देवमणिर्वसुच्छिद्रा विपाण्डुरा ।

अर्थ-महामेदा, देवमणी, वसुच्छिद्रा, विपाण्डुरा(जीवनी,पांशुरोगिणी,महामेद,पुरोद्भवा, देवेष्ट,सुरमेदा,दिव्या,देवगन्धा,वृक्षार्हा, त्रिदन्ती, देवतामणि, सोमा,देवेष्टा, सुरामेदा और मेदोद्भवा) ।

महामेदागुणाः ।

महामेदा हिमा रुच्या कफशुक्रप्रवृद्धिकृत् ।
हन्ति दाहास्रपित्तानि क्षयं वातं ज्वरं च सा॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-महामेदा-शीतल, रुचिकारक, कफ और शुक्रको बढानेवाली तथा दाह, रक्तपित्त, क्षय, वात और ज्वरका नाश करनेवाली है ।

महामेदा-मेदागुणाः ।

मेदायुग्मं परं स्निग्धं शुक्रमेदःप्रवर्द्धनम् ।
मधुरं रसपाकाभ्यां जीवनं वातपित्तजित् ॥

अर्थ-मेदा और महामेदा-स्निग्ध, शुक्रजनक, मेदोवर्द्धक, रस और पाकमें मधुर, जीवन तथा वातपित्तको दूर करे है ।

महामेदालक्षणम् ।

महामेदाभिधः कन्दो मोरंगादौ प्रजायते ।
शुभार्द्रकनिभः कन्दो लताजातः सुपाण्डुरः ॥

अर्थ-महामेदा-नामवाला कन्द मोरंगादि देशोंमें उत्पन्न होताहै यह कन्द देखनेमें सफेद अदरखकी समान होताहै, इसकी बेल चलती है और पाण्डुरंगका होता है ।

ऋद्धिनामानि ।

ऋद्धिः प्राणप्रिया वृष्या प्राणदा सम्पदाह्वया ।

अर्थ-ऋद्धि, प्राणप्रिया, वृष्या, प्राणदा, सम्पदाह्वया, (योग्य सिद्धि, लक्ष्मी, प्राणप्रदा, जीवदात्री, सिद्धा, योग्या, चेतनीया, रथाङ्गी, मङ्गल्या, लोककान्ता, जीवश्रेष्ठा, यशस्या)

अस्या गुणाः ।

ऋद्धिर्बल्या त्रिदोषघ्नी शुक्रला मधुरा गुरुः ।
प्राणैश्वर्यकरी मूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ऋद्धि-बलकारक, त्रिदोषनाशक, शुक्रजनक, मधुर, भारी, प्राणप्रद, ऐश्वर्यजनक तथा मूर्च्छा और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

ऋद्धिस्तु मधुरा स्निग्धा मेधाकृच्छीतला स्मृता ।
कफं शुक्रं वधयन्ती प्राणैश्वर्यबलप्रदा ॥
रक्तशुद्धिकरी रुच्या गुर्वी कुष्ठापहा मता ।
कृमित्रिदोषमूर्च्छास्रपित्ततृट्क्षयपित्तहा ॥
वातं रक्तरुजं जूर्तिं नाशयेदिति कीर्तिता ॥ (नि० [illegible]

अर्थ-ऋद्धि, मधुर, स्निग्ध, मेधाजनक, शीतल, कफकारक, शुक्रवर्द्धक, प्राणदायक, ऐश्वर्यजनक, बलकारक, रक्तशोधक, रुचिकारक, भारी तथा कोढ, कृमिदोष, मूर्च्छा, रक्तपित्त, तृषा, क्षय, पित्त, वातरक्त और ज्वरका नाश करे है ।

वृद्धिनामानि ।

वृद्धिर्बोधनिका चैव प्रिया सिद्धिः सुरोत्तमा ।

अर्थ-वृद्धि, बोधनिका, प्रिया, सिद्धि, सुरोत्तमा, (योग्या, ऋद्धि, लक्ष्मी, पुष्टिदा, वृद्धिदात्री, मङ्गल्या, श्री, सम्पत्, आशी, जनेष्टा, भूति, मुत, सुख, जीवभद्रा)

वृद्धिगुणाः ।

वृद्धिर्गर्भप्रदा शीता बृंहणी मधुरा स्मृता ।
वृष्या पित्तास्रशमनी क्षतकासक्षयापहा ॥

अर्थ-वृद्धि-गर्भजनक, शीतल, पुष्टिकारक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तकी शान्ति करनेवाली तथा उरःक्षत, खांसी और क्षयरोगका नाश करेहै ।

ऋद्धिवृद्ध्युत्पत्तिलक्षणम् ।

ऋद्धिर्वृद्धिश्च कन्दौ च भवतः कोशलेऽचले ।
श्वेतलोमान्वितः कन्दो लताजातः सरन्ध्रकः ॥
स एव ऋद्धिर्वृद्धिश्च भेदमप्येतयोर्ब्रुवे ।
तूलग्रंथिसमा ऋद्धिर्वामावर्तफला च सा ॥
वृद्धिस्तु दक्षिणावर्त्तफला प्रोक्ता महर्षिभिः ।

अर्थ-ऋद्धि और वृद्धि दोनों कन्द कोशलपर्वतमें उत्पन्न होतेहैं, यह दोनोंही कन्द लताजातिके होतेहैं और इनके ऊपर सफेद रोम होतेहैं और छिद्रयुक्त होतेहैं ।

ऋद्धि और वृद्धिमें केवल इतनीही अंतर है कि, ऋद्धि कपासकी गांठके समान आकृतिवाली बाँए भागमें आवर्तशील फलयुक्त होती है, वृद्धि दक्षिणभागमें आवर्तमय फलसहित होतीहै ।

काकोलीनामानि ।

काकोली शीतपाकी च पयस्या वायसोलिका ।

अर्थ-काकोली, शीतपाकी, पयस्या, वायसोलिका, (वायसोली, क्षीरा, वीरा, धीरा, शुक्का मेदुरा, ध्मांक्षोली, ध्मांक्षिका, स्वादुमांसी, वयस्था, जीवंती, मधुरा, शुक्कक्षीरा, पयस्विनीकायस्थिका जीवनीया)

काकोलीगुणाः ।

काकोली मधुरा स्निग्धा क्षयपित्तानिलार्तिनुत् ।

रक्तदाहज्वरघ्नी च कफशुक्रविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-काकोली-मधुर, स्निग्ध तथा क्षय, पित्त, वातकी पीडा, रक्तदोष,दाह और ज्वरको नाशकरे है,कफ और शुक्रको बढावे है।

अन्यच्च ।

काकोली शीतला वृष्या मधुरा शुक्रकारिणी ।
तिक्ता कफकरी गुर्वी क्षयपित्ततृषाहरा ॥
रक्तदोषं रक्तपित्तं पित्तं दाहं ज्वरं विषम् ।
वातपित्तरुजं चैव नाशयेदिति कीर्तिता ॥

अर्थ-काकोली-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, धातुवर्द्धक, कडवी, कफकारक, भारी तथा क्षय, पित्त, तृषा, रुधिरविकार, रक्तपित्त, दाह, ज्वर, विषवायु और पित्तरोगको दूर करेहै ।

क्षीरकाकोलीनामानि ।

पयस्या क्षीरकाकोली महावीरा पयस्विनी ।

अर्थ-पयस्या, क्षीरकाकोली, महावीरा, पयस्विनी (क्षीरकाकोलिका, क्षीरशुक्ला, सुकोली, अष्टमी, क्षीरविषाणिका, जीववल्ली, जीवशुक्ला, क्षीरा, क्षीरवल्ली, वयस्था, क्षीरमधुरा, दुग्धा ढचा)

क्षीरकाकोलीगुणाः ।

क्षीरकाकोलिका वृष्या स्तन्यवृद्धिकरी लघुः ।
रसवीर्य्यविपाकेषु काकोली सदृशा च सा ॥ (ग०नि०)

अर्थ-क्षीरकाकोली-वीर्य्यजनक, स्तनोंमें दूधबढानेवाली,हलकी और रस, वीर्य्य और विपाकमें काकोलीकी समानहै ।

द्विविधकाकोलीगुणाः ।

काकोलीयुगलं शीतं शुक्रलं मधुरं गुरु ।
बृंहणं वातदाहास्रपित्तशोषज्वरापहम् ॥

अर्थ-काकोली और क्षीरकाकोली-शीतल, वीर्यजनक, मधुर, भारी,पुष्टिकारक तथा वात,दाह,रक्तपित्त,शोष औरज्वरको दूरकरेहै।

अन्यच्च ।

काकोलिकाद्वयं वृष्यमत्रस्थास्थापनं परम् ।
स्वादुपाकरसं बल्यं शीतवीर्य्यञ्च जीवनम् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-काकोली और क्षीरकाकोली-वृष्य, अवस्थास्थापक, पाक और रसमें स्वादिष्ठ, बलकारक, शीतवीर्य्य और जीवन है ।

काकोलीक्षीरकाकोल्योरुत्पत्तिलक्षणम् ।

जायते क्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले ।
यत्र स्यात्क्षीरकाकोली काकोली तत्र जायते ॥
पीवरीसदृशः कन्दः क्षीरं स्रवति गन्धवान् ।
स प्रोक्तः क्षीरकाकोली काकोलीलिङ्गमुच्यते ॥
यथा स्यात्क्षीरकाकोली काकोल्यपि तथा भवेत् ।
एषा काचिद्भवेत्कृष्णा भेदोऽयमुभयोरपि ॥

अर्थ-जिस स्थानमें महामेदा उत्पन्न होतीहै, उसीस्थानमें काकोली और क्षीरकाकोली उत्पन्न होतीहै । क्षीरकाकोलीका कन्द सतावरके समान होता है और इसमें एक प्रकारका सुगन्धियुक्त दूध निकलताहै । जैसी क्षीरकाकोली होतीहै, वैसेही काकोली होतीहै, इन दोनोंमें केवल इतनाही अंतर है कि क्षीरकाकोलीकी अपेक्षा काकोली किंचित् कृष्णवर्ण होतीहै ।

अष्टवर्गनामानि ।

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ वृद्धिऋद्धिके ।
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, वृद्धि, ऋद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली इन एकत्र मिलेहुए आठ द्रव्योंको अष्टवर्ग कहतेहैं ।

अष्टवर्गगुणाः ।

अष्टवर्गो हिमः स्वादुर्बृंहणः शुक्रलो गुरुः ।
भग्नसन्धानकृद्बल्यःशरीरकफवर्द्धनः ॥
वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ।

अर्थ-अष्टवर्ग-शीतल, स्वादिष्ठ, पुष्टिजनक, बलकारी, शरीर और कफवर्द्धक है । वीर्यजनक, भारी, भग्नसन्धानकारक तथा वात, पित्त, रक्त, तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षयरोगका नाश करे है ।

राज्ञामप्यष्टवर्गस्तु यतोऽयमतिदुर्लभः ।
तस्मादस्य प्रतिनिधिं गृह्णीयात्तद्गुणं भिषक् ॥

अर्थ-यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी अत्यन्त दुर्लभ है इसकारण अष्टवर्गके बदले इन्हींके सदृश गुणवाली औषधी लेनी ।

एतस्य प्रतिनिधीनाह ।

मेदा जीवककाकोली ऋद्धिद्वन्द्वेपि चासति ।
वरी विदार्यश्वगन्धा वाराहीश्च क्रमात्क्षिपेत ।

अर्थ-मेदा और महामेदाके अभावमें सतावर लेनी, जीवक और ऋषभकके अभावमें विदारीकन्द लेना, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगन्ध लेनी,ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें बाराहीकंद लेना चाहिये ।

जीवक १ ऋषभक २ काकोली ३ क्षीरकाकोली ४ मेदा ५ महामेदा ६ ऋद्धि ७ और वृद्धि ८ यह आठ कन्द हैं । इनके नाम, गुण, उत्पत्ति और लक्षण प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखेहैं, परन्तु उनका ठीक निश्चय नहीं होता कि, उनका कैसा रूप है वह कैसी हैं सो ' भावमिश्र ' के लिखे अनुसार हम प्रथमही लिख चुकेहैं कि "यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी दुर्लभ है,इनके नाम संस्कृतके अतिरिक्त और किसी भाषामें आजपर्यन्त नहीं सुने, किन्तु किसी किसी ग्रन्थकारने बंगला, कर्णाटकी, तैलङ्गी, तामिली और लैटिन्भाषामें इनके नाम लिखे हैं, सो उन देशोंमें प्रचलित न होनेके कारण अशुद्धसे जान पडते हैं" । परन्तु अष्टवर्गके विषयमें भावमिश्रका लेख संदिग्धसा प्रतीत होताहै, उनके लिखे आकारके हमारे पहाडोंपर अनेक कंद होते हैं जो अमृतके और विषके समान कोई श्रेष्ठ कोई हानि कारक होते हैं । आजकल कुछ वैद्य ऋद्धि वृद्धिके स्थानमें तराडियां, दोनों काकोलीके स्थानमें दोनों प्रकारकी सकाकल, जीवक ऋषभकके स्थानमें दोनों प्रकारकी सालव, मेदाके स्थानमें दियाकंद, डालतेहैं जो शिमला प्रान्तमें सब होते हैं ।

मधुयष्टिनामानि ।

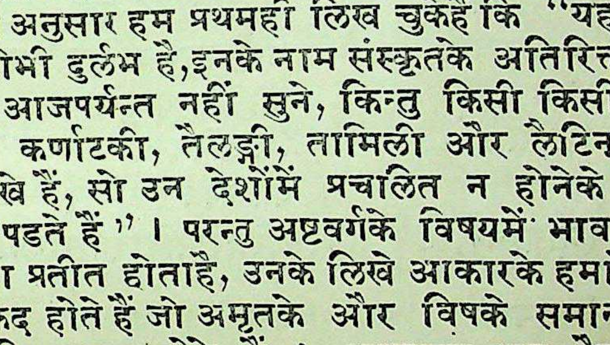

मधुयष्टी यष्टिमधुर्यष्ट्याह्वा क्लीतका स्मृता ।
मधुकं यष्टिमधुकं यष्टिका मधुयष्टिका ॥

अर्थ-मधुयष्टी, यष्टिमधू, यष्ट्याह्वा, क्लीतका, मधुक, यष्टिमधुक, यष्टिका, मधुयष्टिका, (यष्टिमधु, यष्टिमधुका, यष्टीक, यष्टिमधुका, यष्ट्याह्व, यष्ट्याह्वक, क्लीतक, यष्टि, मधुस्रवा, मधुयष्टिक)

(क्लीतन, क्लीतनीयक, मधुम, मधुवली, मधूली, मधुररसा, अतिरसा, मधुरनाम, शोषापहा, सौम्या)

संस्कृतभाषामें	यष्टीमधु, जलयष्टि, स्थलयष्टि, यष्टिरसक्रिया ।
हिन्दीभाषामें	मुलहटी, मीठीलकरी, मुलैठिका ।
वंगभाषामें	यष्टीमधु ।
मराठीभाषामें	ज्यष्ठमध ।
गुजरातीभाषामें	जेठीमधनो मूल, जेठीमधनो शीरो ।
कर्णाटकीभाषामें	यष्टिमधु, वाल्लियष्टिमधु ।
तैलिङ्गीभाषामें	यष्टीमधुकमु ।
इंग्रेजीभाषामें	लिकरिस्रूट् । Liquorice root कामन् लिकरिस् Liquorice Extract
लैटिन्भाषामें	ग्लिसिरिझारेदिक्सग्लिसिरिझाग्लेब्रा । Glycyrrhizaglabra
फारसीभाषामें	वखमहेकूमझु
अरबीभाषामें	असलुस्सूसमुकस्सररव्येसूस ।

अस्या गुणाः ।

मधुरं यष्टिमधुकं किञ्चित्तिक्तं च शीतलम् ।
चक्षुष्यं पित्तहृद्रुच्यं शोषतृष्णाव्रणापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मुलैठी-मधुर, किंचित् कड़वी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पित्तनाशक, रुचिकारी तथा शोष, तृषा और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

यष्टिर्हिमा गुरुः स्वाद्वी चक्षुष्या बलवर्णकृत् ।
सुस्निग्धा शुक्रला केश्या स्वर्या पित्तानिलास्रजित् ।
व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा ।
तस्या रसक्रिया स्वाद्वी यष्टेः सा तु गुणाधिका ॥

अर्थ-मुलैठी-शीतल, भारी, मधुर, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाली, स्निग्ध, वीर्यजनक, केशोंको सुशोभित करनेवाली, स्वरको सुधारनेवाली तथा पित्त, वात, रक्त, घाव, सूजन, विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षयरोगका नाश करे है। इसका सत्त (रुब्बसूस) मीठा है और मुलैठीकी अपेक्षा अधिक गुणवाला है ।

अन्यच्च ।

मधुवल्ली द्विप्रकारा जलजा च स्थलोद्भवा ।
सा वृष्या मधुरा रुच्या बल्या गुर्वी च शीतला ॥
चक्षुष्या वर्णदा स्वर्या स्निग्धा केशहितामता ।
शुक्रला रक्तपित्तघ्नी व्रणशुद्धिकरी मता ॥
शोथं विषं वातरक्तं व्रणं वान्ति तृषां तथा ।
ग्लानिं क्षयं रक्तदोषं रक्तपित्तं च पित्तकम् ॥
सद्योव्रणं वातपित्तं नाशयेदिति कीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी मुलैठी-[एक जलमें उत्पन्न होनेवाली, दूसरी स्थलमें उत्पन्न होनेवाली]वीर्यवर्द्धक, मधुर, रुचिकारी, बलकारक, भारी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, वर्णको सुंदर करनेवाली, स्वरको निर्मल करनेवाली, स्निग्ध, केशोंको हितकारी, शुक्रजनक, [पुष्टिकारक, गौल्य, मूत्रवर्द्धक]रक्तपित्तनाशक, व्रणको शुद्धि करनेवाली तथा सूजन, विष, वातरक्त, घाव, वमन, तृषा, ग्लानि, क्षई, रक्तविकार, रक्तपित्त, पित्त, सद्योव्रण और वातपित्तको दूर करेहै ।

जलयष्ट्यर्कगुणाः ।

वार्यष्ट्यर्को विषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः । (लंकेश)

अर्थ-जलमें उत्पन्न होनेवाली मुलैठीका अर्क-विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षई रोगको दूर करेहै ।

विवरण-मुलैठीका क्षुप होताहै, इसके पत्ते छोटे छोटे गोल होतेहैं इसमें छोटी और बारीक फली लगतीहैं, फूल लाल आताहै, इसकी जड़ प्रयोगमें लीजातीहै । दूसरी वेलवाली मुलैठी होतीहै ।

कम्पिल्लनामानि ।

कम्पिल्लः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनोऽपि च ।

अर्थ-कम्पिल्ल, कर्कश, चन्द्र, रक्ताङ्ग, रोचन, (काम्पिल्लक, कंपिल्ल, काम्पील, काम्पिल्य, कम्पिल्य, रेचनी, काम्पिल्लका, रेचना, पिंकाक्ष,

रोचनी, लघुपत्रक, कम्पील्लक,रेची, रेचन, रञ्जक, लोहिताङ्ग, रक्तचूर्णक, रक्तफल, नदीवास, बहुपुष्प और बहुफल)

संस्कृतभाषामें	काम्पिल्ल, काम्पिल्लक ।
हिन्दीभाषामें	कबी (म्बी) ला ।
बंगभाषामें	कमलागुंडि, गुण्डारोचनी ।
मराठीभाषामें	कपिला ।
गुजरातीभाषामें	कपीलो ।
कर्णाटकीभाषामें	कम्पिल्लकं ।
इंग्रेजीभाषामें	केमिला राटलीरा । Kamila Rottlera
लैटिन्भाषामें	मल्लोटम्फिलिपाइनासिस् (वृक्ष) रोटलीर टिंक्टोरिया Mellotusphilippinesis Rottleratinctoria
फारसीभाषामें	कम्बिलाय ।
अरबीभाषामें	किम्बीर ।

अस्य गुणाः ।

कम्पिल्लको विरेची स्यात् कटूष्णो व्रणनाशनः ।
कफकासार्तिहारी च जन्तुकृमिहरो लघुः ॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-कबीला-दस्तावर, चरपरा, गरम, व्रणनाशक तथा कफ, खांसी, जन्तु और कृमिको दूर करे है। और हलका है।

अपिच।

कम्पिल्लः कफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ।
हन्ति रेची कटूष्णं च मेहानाहविषाश्मनुत् ॥

अर्थ-कबीला-कफ, रक्तपित्त, कृमि, गुल्म,उदररोग और घावको दूर करे है,दस्त करानेवाला है,चरपरा है,गरम है और अनाह,विष तथा पथरीका नाशकरे है।

अन्यच्च।

कम्पिल्लकः सरश्चाग्निदीपकः कटुकः स्मृतः ।
व्रणस्य रोपणश्चोष्णो लघुर्भेदी कफापहः ॥
व्रणगुल्मोदराध्मानकासपित्तप्रमेहहा ।
आनाहं च विषं चैव मूत्राश्मरिरुजापहः ॥

कृमिं च रक्तदोषं च नाशयेदिति कीर्तितः ।
तच्छाकं शीतलं तिक्तं वातलं ग्राहि दीपनम् ॥

अर्थ–कबीला–सारक, अग्निदीपक, चरपरा, व्रणको भरनेवाला, गरम, हलका, दस्तावर, कफनाशक तथा व्रण, गुल्म, उदररोग, आध्मान, खांसी, पित्तप्रमेह, आनाह, विष, मूत्राश्मरी, कृमि और रक्तविकारको नाश करेहै ।

इसके पत्तोंका शाक शीतल, कडवा, वादी, मलरोधक और जठराग्निको दीपन करेहै ।

विवरण । इसके वृक्ष पर्वतोंपर अधिकतासे उत्पन्न होतेहैं पत्ते गूलरकी समानहैं, इसके फल छोटेबेरकी समान होतेहैं। उनके ऊपर लाल-लाल रजसी जमी होती है, पहाडी लोग उन फलोंको तोड टोकरियोंमें डाल पैरोंसे मलतेहैं, जो रज छूटकर नीचे झड जाती है उसीको कबीला कहतेहैं। मात्रा ६ रत्तीकी। पेटके कृमि दूर करनेको दही में डालकर छे मासे कमीला पीनेसे रेचन होकर कृमी निकल जाते हैं।

आरग्वधनामानि ।

अमलतास.

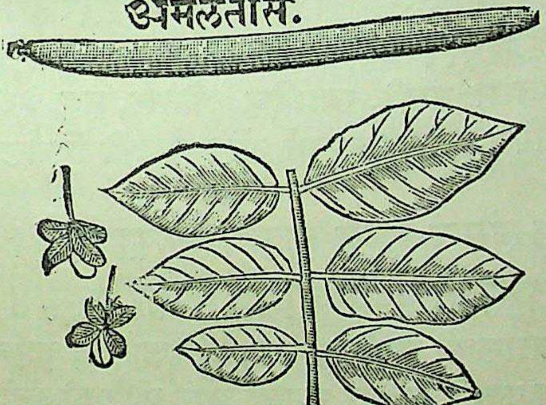

आरग्वधो राजवृक्षो व्याधिघातो जठरनुत् ।

अर्थ–आरग्वध, राजवृक्ष, व्याधिघात, जठरनुत् (चक्रपरिव्याध, सम्यक, चतुरंगुल, शम्पाक, आरेवत, कृतमाल, सुवर्णक, मन्थान, रोचन, दीर्घफल, नृपद्रुम, प्रमेह, हिमपुष्प, राजतरु, कण्डूघ्न, महाकार्णिकार, ज्वरान्तक, अरुज, स्वर्णपुष्प स्वर्णद्रु, कुष्ठसूदन, कर्णाभरणक, महाराजद्रुम, कर्णिकार, स्वर्णाङ्ग, दीर्घफल, स्वर्णभूषण,

आरोग्यशिम्बी, शम्याक, व्यथान्तक, आमहा, स्वर्णस्थाली, रेचन कुण्डली, हेमपुष्प, शेफालिका, नक्तमाल,स्वर्णवृक्ष, सारफल, कुष्ठघ्न, द्रुमोत्पल)

संस्कृतभाषामें	आरग्वध ।
हिन्दीभाषामें	अमलतास. घनबहेडा ।
वंगभाषामें	सोनालु,शोंदाल,एखालनडी,वानरनाडी
मराठीभाषामें	बाहवा, बाव्याच्याशेंगांतील गर ।
गुजरातीभाषामें	गरमालो । गरमालोनो गोल ।
कर्णाटकीभाषामें	हेगाके ।
तैलिङ्गीभाषामें	रेल्लकाया ।
अँग्रेजीभाषामें	पुडिंगपाईपट्री, पर्जिङ्गकाश्या, काश्यापल्प Pudding pipetree, Purgingcassia Cassia pulp
लैटिन्भाषामें	केश्याकिसचुला । Cassiafistula
अरबीभाषामें	ख्यारेशम्बर ।

आरग्वध गुणाः ।

आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलो मृदुरेचनः ।
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत् ॥

अर्थ–अमलतास–भारी, स्वादिष्ठ, शीतल, मृदु, रेची तथा ज्वर, हृदयरोग, रक्तपित्त, वात उदावर्त और शूलको निर्मल करे है ।

एतत्फलगुणाः ।

तत्फलं स्रंसनं रुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम् ।
ज्वरे तत्सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–अमलतासकी कली–स्रंसन,रुचिकारक, कुष्ठनाशक, पित्तनिवारक,कफघ्न,ज्वरमें सर्वदा पथ्यहै और कोठेको अतीव शोधे है ।

एतत्पत्रगुणाः।

पत्रमारग्वधस्यापि कफमेदोविशोषणम् ।
ज्वरे च सततं पथ्यं मलदोषसमन्विते ॥

अर्थ–अमलतासके पत्ते–कफ और मेदाशोषक हैं, ज्वरमें सदा पथ्य हैं और मलको ढीला करे हैं ।

एतत्पुष्पगुणाः ।

पुष्पाणि स्वादुशीतानि तिक्तानि ग्राहकाणि च ।

तुवराणि वातलानि कफपित्तहराणि च ॥

अर्थ-अमलतासके फूल-स्वादिष्ठ, शीतल, कडुवे, ग्राहक, कषेले, वातवर्द्धक, कफ और पित्तको दूर करे हैं।

एतन्मज्जागुणाः।

मज्जा तु मधुरा पाके स्निग्धा चाग्निविवर्द्धिनी।
रेचिका पित्तवातानां नाशिका समुदाहृता ॥

अर्थ-अमलतासकी मज्जा-पाकमें मधुर, स्निग्ध, जठराग्निको वर्द्धक, रेचक तथा पित्त और बादीका नाश करे है।

एतन्मूलगुणाः।

कृतमालस्य मूलं तु दुग्धेन सह पाचयेत्।
वातरक्तं निहंत्याशु दद्रुमण्डलकान्यपि ॥

अर्थ-अमलतासकी जड-दूधमें औटाई हुई-वातरक्तनाशक, दाह और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है।

कर्णिकारगुणाः।

कर्णिकारः सरस्तिक्तः कटूष्णः कफशूलहा।
उदरक्रिमिमेहघ्नो व्रणगुल्महरो नृप ॥ (नि० र०)

अर्थ-कर्णिकार-(दूसरे प्रकारका अमलतास) सारक, कडवा, चरपरा, गरम तथा कफ, शूल, उदररोग, क्रिमि, प्रमेह, व्रण और गुल्मका नाश करे है।

गजकर्ण, कुष्ठ, दद्रू, खुजली, विचर्चिकादि रोगोंपर अमलतासके पत्तोंको पीस उसमें कांजी मिलाकर लेप करते हैं।

गण्डमाला रोगमें अमलतासकी जडको चावलोंके पानीमें पीसकर नास (नाकके द्वारा पीना) देते हैं।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होता है, पत्ते लाल चंदनके पत्तोंकी समान होते हैं. फूल पीले, तरवट, आमलेकी सदृश होते हैं। फली गोल और १-१॥ हाथ लम्बी होती है, उसमेंसे गूदा निकलताहै, उस गूदेका जुलाब लगताहै। व्यवहार-गूदा, पत्ते, फूल, मूल। मात्रा गूदेकी ३ मासेसे लेकर १॥ तोलेतक है। इसकेपेड सर्वदेशोंमें, बागोंमें और कालका शिमलेकी सडकपर बहुत हैं. लोग गुल्वलकडी या अमलतास नामसे जानते हैं ॥

कटुकानामानि।

तिक्ता काण्डेरुहारिष्टा चक्राङ्गी शकुलादनी।

तिक्तरोहणिका चैव कटुका कटुरोहिणी ॥

अर्थ-तिक्ता, काण्डेरुहा, अरिष्टा, चक्राङ्गी, शकुलादनी, तिक्तरोहणिका, कटुका, कटुरोहिणी, (जननी, तिक्ता, तिक्तरोहिणी, मत्स्यपित्ता, नकुलासादनी, शतपर्वा, द्विजाङ्गी, मलभेदिनी, अशोकरोहिणी, कृष्णा, कृष्णभेदा, कृष्णभेदी, महौषधी, कट्वी, अंजनी, कटु, केदारकटुका, वामघ्नी, धन्वन्तरिग्रंथा, वान्तिदा, कटंभरा, कटुम्भरा, अशोका, काण्डरुहा, तिक्तिका, चित्राङ्गी, मत्स्यशकला)

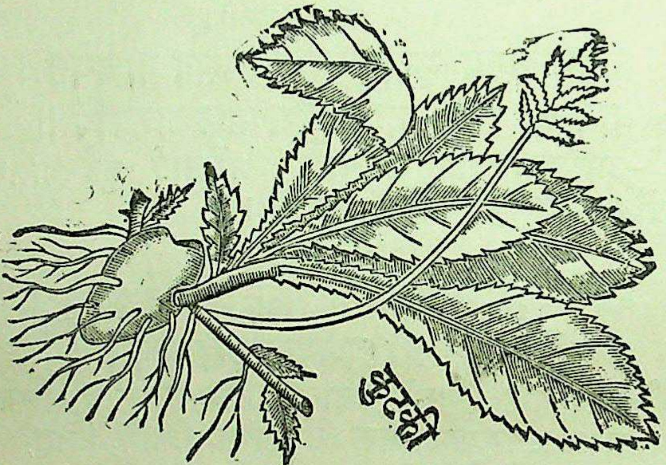

संस्कृतभाषामें	कटुका ।
हिन्दीभाषामें	कुटुकी ।
वङ्गभाषामें	कट्की ।
मराठीभाषामें	कुटकी, काळी कुटकी ।
गुजरातीभाषामें	कडु ।
कर्णाटकीभाषामें	केदार कट्की ।
तैलङ्गीभाषामें	काटकरोहिणी, नल्लकोलकर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाकहल्लीबोर । Black Hellebore
लैटिन्भाषामें	हेल्लोबारी नैग्रारै रिंकस पिक्रोहिंजा कुरोंआ। Picrorrihi Za Kurroa
फारसीभाषामें	खर्बके सियाह ।
अरबीभाषामें	खर्बके अस्वद खर्बके अबीयद ।

अस्या गुणाः।

कट्वी तु कटुका पाके तिक्ता रूक्षा हिमा लघुः।
भेदिनी दीपनी हृद्या कफपित्तज्वरापहा ॥
प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठक्रिमिप्रणुत्। (भावप्रकाश)

अर्थ-कुटकी-पाकमें कटु, तिक्त, रूक्ष, शीतल, हलकी, भेदन, दीपन, हृदयको हितकारी तथा कफ, पित्त, ज्वर, प्रमेह, श्वास, कास, रुधिरदोष, दाह, कोढ और क्रिमिका नाश करेहै।

अन्यच्च।

कटुकी शीतला तिक्ता कटी चाग्निप्रदीपनी।
भेदिका च सरा रूक्षा लघ्वी रक्तरुजापहा ॥
शीतपित्तश्वासकफदाहारुचिज्वराञ्जयेत्।
प्रमेहकुष्ठविषमज्वरकासक्षयापहा ॥
कामलाविषहृद्रोगनाशिनीति प्रकाशिता।

अर्थ-कुटकी-शीतल, तीखी, कडवी, अग्निदीपक,: भेदक, (दस्तावर) सारक, रूखी, हलकी तथा रक्तरोग, शीतपित्त, श्वास, कफ, दाह, अरुचि, ज्वर, प्रमेह, कोढ, विषमज्वर, खाँसी, क्षई, कामला, विष और हृदयरोगको दूर करे है।

अस्याः शोधनविधिः।

कटुकीमुष्णदुग्धेन प्रक्षाल्य ग्राहयेदपि।

अर्थ-कुटकीको गरम दूधसे धोकर औषधिके काममें लावे।

विवरण। बडी जडवाली गुल्म है, झाड़रा छोटा, पत्ते अण्डेके समान आकारवाले, जिनके नीचेका भाग बडा और बगल खण्डित होतेहैं, फूल नीला और गुच्छोंमें होताहै, हिमालयके निकट पर्वतोंके जंगलमें उत्पन्न होतीहै। कुटकी कृष्णा और पीत इन भेदोंसे दो प्रकारकी है, इनमें पीले रंगकी कुटकी नेत्ररोगोंको दूर करतीहै। व्यवहार-मूल। मात्रा ६ रत्तीसे लेकर ७ मासेतक है।

चिरतिक्तनामानि।

चिरतिक्तश्च भूनिम्बः किराततं रामसेनकः।

अर्थ-चिरतिक्त, भूनिम्ब, किरान्त, रामसेनक (अनार्यतिक्त, विरातक, चिरातिक्त, तिक्तक, सुतिक्तक, चिराटिका, कटुतिक्ता कैरात, काण्डीतिक्तक, हैम, काण्डतिक्त)

नेपालनिम्बनामानि।

नेपालनिम्बो नैपालस्तृणनिम्बो ज्वरान्तकः ।
नाडीतिक्तोऽर्धतिक्तश्च निद्रारिः सन्निपातहा ॥

अर्थ-नेपालनिम्ब, नैपाल, तृणनिम्ब, ज्वरान्तक, नाडीतिक्त, अर्धतिक्त, निद्रारी, सन्निपातहा।

संस्कृतभाषामें	चिरातिक्त।
हिन्दीभाषामें	चिरायता।
वंगभाषामें	चिरता, चिराता, नेपाले निम्ब।
मराठीभाषामें	किराईत, काडेकिराईत, फूलकिराईत,
गुजरातीभाषामें	करियातु।
कर्णाटकीभाषामें	नेलबेउचु।
तलङ्गीभाषामें	नेलानेमु।
लैटिन्भाषामें	स्विर्टियाचिरेटा एफीलिया चिरेटा। Sovirtia Chirata Aphelia Chirata
इंग्रेजीभाषामें	चिरेटा।
फारसीभाषामें	नैनिहाद
अरबीभाषामें	करबुझ, झारिरा।

भूनिम्बगुणाः।

भूनिम्बो वातलस्तिक्तो व्रणरोपणकारकः ॥
सरः शीतः पथ्यकरो लघू रूक्षस्तृषापहः ।
कफं पित्तं ज्वरं कुष्टं कण्डूं शोथं कृमींस्तथा ॥
सन्निपातज्वरं दाहं शूलं मेहं व्रणं तथा ।
श्वासं कासं च प्रदरं शोषं चार्शोरुचिं जयेत ॥ (नि०र०)

अर्थ-चिरायता- वातकारक, कडवा, व्रणरोपक, दस्तावर, शीतल, पथ्य, हलका, रूखा तथा तृषा, कफ, पित्त, ज्वर, कोढ, कण्डु, सूजन, कृमि, सन्निपातज्वर, दाह, शूल, प्रमेह, व्रण, श्वास, खाँसी, प्रदर, शोष, बवासीर और अरुचिको दूर करे है।

नैपालनिम्बगुणाः ।

नेपालतिक्तं किञ्चिच्च उष्णयोगवहं लघु ।
तिक्तं पित्तं कफं शोथं रक्तरुक्तृड्ज्वराञ्जयेत् ॥

अर्थ-नेपालीनीम-किंचित् गरम, योगवाही, हलका, कडवा, तथा पित्त, कफ, सूजन, रुधिररोग, पियास और ज्वरका नाश करे है । शेष गुण चिरायतेके समान जानने ।

अपिच ।

नैपालः सन्निपातारिर्ज्वरनिद्रापहस्तथा । (शो० नि०)

अर्थ-नेपालीनीम-सन्निपात, ज्वर और निद्राको दूर करे है । चिरायतेका क्षुप होताहै । मात्रा २ मासेकी ।

कुटजनामानि ।

कुटजः शक्रपर्य्यायो वत्सको गिरिमल्लिका ॥

अर्थ-कुटज, शक्रपर्य्याय, वत्सक, गिरिमल्लिका, (शक्र, वरातिक्त, पाण्डुर, कटुक, कुटक, शक्राशन, कौटज, तिक्तक, रक्तनाशक, वृक्षक, शक्राह्वय, कूटज, काही, कालिङ्ग, मल्लिकापुष्प, प्रावृष्य, शक्रपादप, यवफल, संग्राही, पांडुरद्रुम, प्रावृषेण्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, कौट, शक्रशाखी, इन्द्रयवफल)

संस्कृतभाषामें	कुटज, श्वेतकुटज ।
हिन्दीभाषामें	कुडा, कौरेया ।
वंगभाषामें	कुडाचिगाछ, कुटराज ।
मराठीभाषामें	काळा कुडा, सफेद कुडा ।
गुजरातीभाषामें	कडी-दुधला ।
कर्णाटकीभाषामें	कोडासिंगेयमरनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	अंकुटुचेट्टु अंगिशचेट्टु, तुम्भिकचेट्टु, अंकेलु, चराल कुष्ठ ।
औत्क०भाषामें	कुडियां ।
इंग्रेजीभाषामें	ओवल्लिवडरोझबे । Oval leaved Rose Bay
लैटिन्भाषामें	राइटियाएंडिसेनटेरिका । Wrightia antidysenterica
अरबी भाषामें	तिवाज ।

कुटजगुणाः ।

कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो हिमः ।
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुडा-कटु, रूक्ष, दीपन, कषाय, शीतल तथा बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त,कफ, तृषा, आम और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अपिच ।

कुटजः कटुकः प्लीहकफपित्तातिसारनुत् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कुडा-कटु,प्लीहा,कफ,पित्त और अतिसारका नाशकरे है ।

अन्यच्च ।

कुटजः कटुतिक्तोष्णः कषायश्चातिसारजित् ।
तत्रासितश्च पित्तघ्नस्त्वग्दोषार्शनिकृन्तनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुडा-कटु, तिक्त, गरम, कषाय और अतिसारनाशक है, और काला कुडा पित्त, त्वचाके दोष और बवासीरको दूर करे है ।

श्वेतकुटजगुणाः ।

श्वेतस्तु कुटजस्तिक्तः कटुश्चोष्णोऽग्निदीपकः ।
पाचकस्तुवरो रूक्षो ग्राहको रक्तदोषहा ॥
कुष्ठातिसारपित्तार्शःकफतृट्कृमिहा मतः ।
ज्वरं चामं च दाहं च नाशयेदिति कीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद कुडा-कडवा,तीखा,गरम,अग्निदीपक,पाचक,कषेला, रूखा, मलरोधक तथा रक्तविकार, कोढ,अतिसार,पित्त, बवासीर, कफ, तृषा, कृमि, ज्वर, आम और दाहको दूर करे है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

पुष्पं तु वत्सकस्योक्तं तुवरं चाग्निदीपकम् ।
तिक्तं शीतं वातलं च लघु पित्तातिसारनुत् ॥
रक्तदोषं कफं पित्तं कुष्ठं चैवातिसारकम् ।
कृमींश्चैव हरेदेतदुक्तं पूर्वैश्च सूरिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-कुडेके फूल-कषेले, जठराग्निको दीपन करनेवाले, कडवे, शीतल, वातकारक, हलके तथा पित्तातिसार, रुधिरविकार,कफ, पित्त, कुष्ठ, अतिसार और कृमिका नाश करे हैं ।

अस्य शिम्बीशाकगुणाः ।

तस्य शिम्बीभवं शाकं व्यंजनं चामवातजित् ।
रुच्यं कफघ्नं रक्तातीसारकुष्ठकृमीञ्जयेत् ॥

अर्थ-कुडेकी फलियोंका शाक-आमवातनाशक,रुचिकारक तथा रक्तातिसार, कोढ और कृमिको दूर करे है ।

त्वग्गुणाः ।

कुटजस्य त्वचा तिक्ता सर्वातीसारनाशिनी ।

अर्थ-कुडेकी छाल-कडवी और सर्वातिसारनाशक है ।

विवरण । इसका वृक्ष होताहै, पत्ते रामफलके पत्तोंकी समान बडे बडे होते हैं, फूल सफेद होताहै, इसमें फली होती हैं ।

सफेद कुडेके दूधमें विष होताहै,उस दूधको खानेसे मनुष्य मरजाते हैं ।

इन्द्रयवनामानि ।

उक्तं कटुजबीजं तु यवमिन्द्रयवं तथा ।
कलिंगं चापि कालिंगं तथा भद्रयवं स्मृतम् ॥

अर्थ-कुटजबीज,यव,इन्द्रयव,कलिंग,कालिंग,भद्रयव,(कलिंगक, शक्राह्व, शक्रबीज, वत्सक, वत्सकबीज,कलिंगबीज, कुटज,भद्रज)

संस्कृतभाषामें	इन्द्रयव ।
हिन्दीभाषामें	इन्द्रजौ ।
गुजरातीभाषामें	इंदरजव ।
वंगभाषामें	इन्द्रयव ।
मराठीभाषामें	कुडचाचें बीज, इन्द्रजव ।
कर्णाटकीभाषामें	कोडासिगय बीज ।
फारसीभाषामें	जवान कुञ्जिस्क ।
अरबीभाषामें	लेसानुत् असाकीर ।
लैटिन्भाषामें	होलरहेनाएंटिडिसेंटेरिका । Holarrhena antidysenterica

अस्य गुणाः ।

इन्द्रयवा कटुतिक्ता शीता कफवातरक्तपित्तहरा ।
दाहातिसारशमनी नानात्वग्दोषशूलमूलघ्नी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-इन्द्रजौ, कटु, तिक्त, शीतल तथा कफ, वात, रक्तपित्त, दाह, अतिसार, नाना प्रकारके त्वचाविकार और शूलको निर्मूल करैहै ।

अपिच ।

वत्सकस्य तु बीजं च कटु तिक्तं च शीतलम् ।
ग्राहकं पाचनं चोष्णं चाग्निदीप्तिकरं परम् ॥
वातरक्तं कफं दाहं पित्तं नानाज्वरांस्तथा ।
शूलमर्शश्चातिसारं त्रिदोषं गुदकीलकम् ॥
कुष्ठं कृमिविसर्पामरक्ताशोंस्नरुजभ्रमान् ।
श्रमं चैवनिहंत्याशु कथितं मुनिपुंगवैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-इन्द्रजौ-तीखे, कडवे, शीतल, मलरोधक, पाचक, गरम, अग्निप्रदीपक तथा वातरक्त, कफ, दाह, पित्तज अनेक प्रकारके ज्वर, शूल, बवासीर, अतिसार, त्रिदोष, गुदकील, कोढ, कृमि, विसर्प, आम, रक्तार्श, रक्तरोग, भ्रम और श्रमको दूर करैहैं ।

विवरण । कुडेके बीजोंको इन्द्रजौ कहतेहैं । इन्द्रजौ दोप्रकारके होतेहैं, एक मीठे दूसरे कडवे, इसमें सफेद कुडेके इन्द्रजौ मीठे होते हैं और काले कुडेके इन्द्रजौ कडवे होतेहैं । मात्रा ३ मासेकी ।

मदनफलनामानि ।

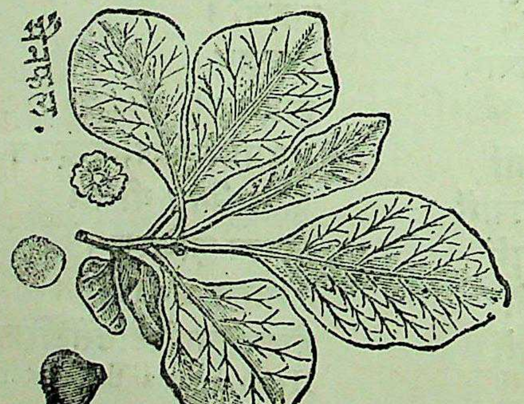

मदनश्छर्दनः पिण्डीनटः पिण्डीतकस्तथा ।
करहाटो मरुबकः शल्यको विषपुष्पकः ॥

अर्थ-मदन, छर्द्दन, पिण्डीनट, पिण्डीतक, करहाट, मरुबक, शल्यक, विषपुष्पक,(पिचुक, मुचुकुन्द, कण्टकी, करहाटक, शल्य, कण्ठ, रामच्छर्दनक, रामाच्छर्द्दनक, कैटर्य्य, धाराफल, तगर, राठ, गाल्ल, ग्रन्थिफल, घण्टाल, बस्तिशोधन)

संस्कृतभाषामें	मदन ।	
हिन्दीभाषामें	मैनफल, करहर ।	
वंगभाषामें	मयनाकांटा ।	
मराठीभाषामें	गेळ ।	
गुजरातीभाषामें	ढोल ।	
कर्णाटकीभाषामें	वोनगरे रणथ वोनगरे एरंड्ड ।	
तैलिङ्गीभाषामें	वसन्तकडिमिचेट्टु ।	
तामिलीभाषामें	मड्डुकक्करय ।	
औत्क०	पातर ।	
नेपालीभाषाम	मैदल ।	
प०	मिण्डकोल्ल ।	
दक्षिणीभाषामें	मणाहल ।	
इंग्रेजीभाषामें	बशीगार्डिनीया ।	Bushy gardenia
लैटिन्भाषामें	रेनाडियाडयुमेटोरम् ।	Randiadumetorum
अरबीभाषामें	जोज़ुल्कै ।	

अस्य गुणाः ।

मदनो मधुरस्तिक्तो वीर्योष्णो लेखनो लघुः ।
वान्तिकृद्विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणान्तकः ॥
रूक्षकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः । (भावप्रकाश)

अर्थ-मैनफल-मधुर, कडवा, उष्णवीर्य्य, लेखन, हलका, वमनकारक, विद्रधिहारक, प्रतिश्याय (जुकाम) और व्रणविनाशक है, रूखा तथा कफ, आनाह, सूजन, गुल्म और घावको दूर करे है।

अपिच ।

राठो वमनकृद्भेदी पक्वामाशयशुद्धिकृत् ।
त्वग्दोषमारुतश्लेष्मविषप्रशमनः स्मृतः ॥ (शो०नि०)

अर्थ-मैनफल-वमनकारक, भेदक, पक्वाशय और आमाशयशोधक तथा त्वचाके रोग, वात, कफ और विषविकारको दूर करेहै ।

अपिच ।

मदनः कटुकस्तिक्तो मधुश्चोष्णश्च लेखनः ।
लघू रूक्षो वान्तिकारी वस्तिकर्म्मणि चोत्तमः ॥
कफं वातं व्रणं शोथमानाहं विद्रधींस्तथा ।
गुल्मं कुष्ठं प्रतिश्यायं विषं चार्शोज्वरं जयेत् ॥

अर्थ-मैनफल-कटुरसयुक्त, तिक्तरसान्वित, मधुर, उष्ण, लेखन, रूक्ष, वमनकारक, वस्तिकर्ममें उत्तम तथा कफ, वात, घाव, सूजन, आनाह, विद्रधि, गुल्म, प्रतिश्याय (जुकाम), विष, ववासीर और ज्वरको हरे ह ।

कृष्णः श्वेतश्च मदनः शीतलो मधुरः स्मृतः ।
कटुस्तिक्तश्च तुवरो वान्तिकृत्कफनाशनः ॥
पक्वामाशयशुद्धेश्च कारकः पित्तनाशकः ।
हृद्रोगनाशकश्चैव पूर्वस्मादुत्तमो गुणः ॥ (नि० र०)

अर्थ-दूसरे प्रकारके दोनों मैनफल-(एक काले रंगका दूसरा सफेद रंगका) शीतल, मधुर, कटु, तिक्त, कषेळ, वान्तिकारक, कफनाशक, पक्वाशय, और आमाशयको शोधनेवाले तथा पित्त और हृदयरोगका नाश करनेवाले हैं। यह पहले मैनफलकी अपेक्षा अधिक गुणवाले हैं ।

विवरण । मैनफलका वृक्ष होताहै, पित्ते चिरचिटेकी समान होते हैं, फूल सफेद पांच पखडीके कुछेक पीलापन लिये होतेहैं, फल अखरोटके आकार होते हैं, यह वमन करानेमें एकही औषधी है ।

रास्नानामानि ।

नाकुली सुरसा रास्ना सर्पगन्धा पलङ्कषा ।

अर्थ-नाकुली, सुरसा, रास्ना, सर्पगन्धा, पलंकषा (द्रोणगन्धिका, सुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, छत्राकी, सुवहा, रस्या, श्रेयसी, रसना, एलापर्णी, रसा, सुगन्धिमूला, रसाढ्या, अतिरसा, मुक्तरसा, युक्तरसा)

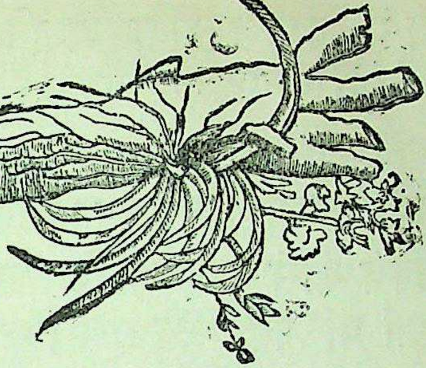

रास्ना.

संस्कृतभाषामें	रास्ना।
हिन्दीभाषामें	रासन, रायसन, रहसनी, रास्ना।
वङ्गभाषामें	रास्ना।
मराठीभाषामें	नावळीच्या मुळया।
गुजरातीभाषामें	रासना
कर्णाटकीभाषामें	रसनाकेदारे प्रसिद्धा।
तैलिङ्गीभाषामें	रासनापुडका, किरम्भिचक्क अन्तर दामर।
लैटिनभाषामें	वेंडा रोक्स बरगी आई। Vanda roxburghie
इंग्रेजीभाषामें	प्लुचियालेन्सिओलेटा। Pluchialanceolata
फारसीभाषामें	रासुन।
अरबीभाषामें	जंजबील शामी।

रास्नाभेदाः।

रास्ना तु त्रिविधा प्रोक्ता मूलं पत्रं तृणं तथा।
ज्ञेयौ मूलदलौ श्रेष्ठौ तृणरास्ना तु मध्यमा॥ (रा० नि०)

अर्थ-रास्ना-जड, पत्ते और तृण इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है। तिनमें जडरास्ना और पत्ररास्ना श्रेष्ठ होती है और तृणरास्ना अधम गिनी जाती है।

रास्नागुणाः।

रास्नाऽऽमपाचिनी तिक्ता गुरूष्णा कफवातजित्।
शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा॥
कासज्वरविषाशीतिवातिकामयहिध्मजित्। (भा०प्र०)

अर्थ-रास्ना-आमपाचक, कडवी, भारी, गरम, कफ-वातनाशक, तथा सूजन, रक्तवात, वातशूल, उदररोग, खांसी, ज्वर, विषविकार, ८० अस्सी प्रकारके वातरोग और हिध्मको दूर करे है।

अपिच ।

रास्नोष्णा वातशोथामवातवातामयाञ्जयेत् ॥ (शोडलनि०)

अर्थ-रास्ना-गरम है, वात, सूजन, आमवात और वातरोगोंको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

घघ्ना तिक्ता गुरुश्चोष्णा पाचन्यामविनाशिनी ।
वातरक्तं विषं श्वासं कासं च विषमज्वरम् ॥
शोथं हिक्कां चामवातं कफं शूलं विनाशयेत् ।
ज्वरं कम्पं चोदरं च सर्वान्वातांश्च नाशयेत् ॥

अर्थ-रास्ना-कडवी, भारी, गरम, पाचक, आमनाशक तथा वात, रक्त, विष, श्वास, खांसी, विषमज्वर, सूजन, हिचकी, आमवात, कफ, शूल, ज्वर, कम्प, उदररोग और सर्व प्रकारके वातका विनाश करे है।

विवरण। बंगदेशके प्राचीन आम्रादि वृक्षोंपर उत्पन्न होती है, इसकी जड वृक्षकी छालके ऊपर जमीरहती है, फूल पीला बेंगनी छींटेदार होता है, जड सहित रास्नाका क्षुप लायकर सुन्दरी काष्ठके ऊपर नारियलकी टट्टीकी छायामें रखकर पानी दे वृक्ष बढेगा और फूलेगा। व्यवहार-जड । मात्रा २ तोलेकी । परन्तु पञ्जाबमे रायसनके छोटे २पेड होतेहैं इसकी फलियोंमें मोठके समान बीज होतेहैं, उनकोही रास्नाके स्थानमें वर्तते हैं यह वातनाशक द्रव्य है, पञ्जाबी लोग इसीको रास्ना कहते ह । इसीके मूल पत्रादिभी प्रयोगमें आतेहैं ।

नाकुलीनामानि ।

नाकुली सुरसा नागसुगन्धा गन्धनाकुली ।
नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी सर्पाङ्गी विषनाशिनी ॥

अर्थ-नाकुली, सुरसा, नागसुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, सर्पांगी, विषनाशिनी, (सर्वगन्धा, सुगन्धा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नागगन्धा, अहिभुक्, सुरसा, सर्पादिनी, व्यालगन्धा)

गन्धनाकुलीनामानि ।

अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली ।
सर्पाक्षी फणिहंत्री च नकुलाढयाऽहिभुक्च सा ॥
विषमर्दनिका चाहिमर्दनी विषमर्दनी ।
महाहिगन्धाऽहिलता ज्ञेया स्याद्द्वादशाह्वया ॥

अर्थ-महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहंत्री' नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विमर्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता ।

संस्कृतभाषामें	नाकुली, गन्धनाकुकी ।
हिन्दीभाषामें	नाई, नाकुलीकन्द नकुलकन्द, हरकाईचन्दा ।
वंगभाषामें	नाकुली, सुगन्धनाकुली ।
मराठीभाषामें	मुंगुसवेल, नाई सापसंद ।
कर्णाटकीभाषामें	विषमुंगरीद्वय ।
तैलङ्गीभाषामें	पद्मपुचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	रोवोलफिया सर्पेन्टाइना Rauwolfia Serpentina
फारसीभाषामें	छोटा चांदा ।

नाकुलीगुणाः ।

नाकुली कटुका तिक्ता तथोष्णा कृमिरोगहृत् ।
वृश्चिकोन्दुरसर्पादिविषं नाशयति क्षणात् ॥
तुवरा च त्रिदोषघ्नी कन्देप्येते गुणाः स्मृताः ।(ग०नि०)

अर्थ-नाकुली- चरपरी, कडवी, गरम, कृमिरोगनाशक, विच्छु, मूषा और सर्पादिके विषको तत्क्षण दूर करनेवाली, कषेली और त्रिदोषनाशक है, इसके कन्दके गुणभी इसीके समान जानने ।

अन्यच्च ।

नाकुली तुवरा तिक्ता कटुकोष्णा विनाशयेत ॥
भोगिलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान् ।(भा० प्र०)

अर्थ-नाकुली-कषेली, कडवी, चरपरी, गरम तथा साँप, मकरी, विच्छु और मूषा इनका विष, ज्वर, कृमि और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च ।

नाकुलीयुगलं तिक्तं कटूष्णं च त्रिदोषनुत ।
अनेकविषविध्वंसि किञ्चिच्छ्रेष्ठं द्वितीयकम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी नाकुली-(नाकुली, सुगन्धनाकुली) कडवी, चरपरी, गरम, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषविनाशक और गन्धनाकुली नाकुलीकी अपेक्षा किंचित श्रेष्ठ है ।

नाकुलीकंद, सूरणकंदके समान होताहै वर्षात मे इस कंद पर सापके आकारका गंदल निकलता है, सिमला प्रान्तमें बहुत होता है. टकसालमें इसको 'गोहका आदा,' कहते हैं ।

माचिकानामानि ।

माचिका प्रस्थिकाम्बष्ठा तथा चाम्बालिकाऽम्बिका ।
मयूरविदला केशी सहस्रावातमूलिका॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-माचिका, प्रास्थिका, अम्बष्ठा, अम्बालिका, आम्बिका, मयूरविदला, केशी, सहस्रवातमूलिका, (बालिका, बाला, शठाम्बा, अम्बा, दृढवल्का, मयूरिका, गन्धपत्री, चित्रपुष्पी, श्रेयसी, मुखवाचिका , छिन्नपत्री, भूरिमल्ली)

अस्या गुणाः ।

अम्बष्ठा सा कषायाम्ला कफकृच्च रुजापहा ।
वातामयबलासघ्नी रुचिकृद्दीपनी परा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मोईया-कषेला, खट्टा तथा कफरोग, कर्णरोग, वातरोग और कफनाशक है, रुचिको उत्पन्न करेहै और जठराग्निप्रदीपक है।

अन्यच्च ।

माचिकाम्ला रसे पाके कषाया शीतला लघुः ।
पक्वातिसारपितास्रकफकण्ठामयापहा । (भा० प्र०)

अर्थ-मोईया-अम्लरसान्वित, पचनेमें कषेला, शीतल, हलका तथा पक्वातिसार, रक्त, पित्त, कफ और कण्ठ रोगका नाश करे है। झांइ वृक्षपर लगनेवाले द्रव्यको माचिका (मांइ) कहते हैं पंजाबमें झांइ वृक्ष बहुत होते हैं ।

तेजोवतीनामानि ।

तेजस्विनी तेजवती तेजन्या लघुवल्कला ।
महौजसी पारिजाता शीतातिक्ताऽतितेजनी ॥

अर्थ-तेजस्विनी, तेजवती, तेजन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारिजाता, शीता, तिक्ता, अतितेजनी (तेजोह्वा, तेजनी, अश्वघ्रा, वल्कली, सुवर्णनाकुली, बिडालघ्नी, सुतेजसी)

संस्कृतभाषामें	तेजोवती ।
हिन्दीभाषामें	तेजबल ।
बंगभाषामें	तेजबल ।
मराठीभाषामें	तजबल, तिर्फांनी ।
गुजरातीभाषामें	तजबळ ।
दक्षिणीभाषामें	जलधरी ।

इंग्रेजीभाषाम	टुथएकट्री । Toothachetree
लैटिन् भाषाम	झेथोकूझाइलोन हौसटिली । zanthoxylon Hostile

अस्या गुणाः ।

तेजनी कफहृद्रोगमुखदंतादिरोगजित् ।
हिक्काग्निमांद्यमर्शांसि कण्ठरोगस्य नाशिनी॥(शो०नि०)

अर्थ-तजबल-कफ, हृदयरोग, मुखरोग, दन्तादिरोग, हिचकी, मंदाग्नि, बवासीर और कण्ठरोगका नाशकरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

तेजस्विनी कफश्वासकासशूलामवातजित् ।
पाचन्युष्णाकटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपनी ॥ (म०नि०)

अर्थ-तेजबल-कफ, श्वास, खाँसी, शूल और आमवातविनाशक है । पाचक, गरम, चरपरा, कडवा, रुचि और जठराग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

तेजोवती कटूष्णा च तिक्ता चाग्निप्रदीपनी ।
पाचका रुचिदा कण्ठ्या कफवातविनाशिनी ॥
कण्ठशुद्धिकरी पित्तकासश्वासविषापहा ।
हिक्काग्निमांद्यमर्शांसि मुखरोगस्य नाशिनी॥ (नि०र०)

अर्थ-तेजबल-चरपरा, गरम, कडवा, अग्निप्रदीपक, पाचक, रुचिकारक, कण्ठको हितकारी, कफ वात नाशक, कंठशोधक, तथा पित्त, खाँसी, श्वास, विष, हिचकी, मंदाग्नि, बवासीर, और मुखरोगका नाशकरे है ।

विवरण । तेजबलके वृक्ष हरिद्वार बद्रीनाथके ओर वनोंमें उत्पन्न होते हैं, इस वृक्षकी छाल लालमिर्चकी समान चरपरीहै, इसमें गोल मिर्चके समान फल होते हैं । व्यवहार छाल, मूल । मात्रा २ मासेकी ।

ज्योतिष्मतीनामानि ।

ज्योतिष्मती पूतितला लगणा स्फुटबन्धनी ।
पारावतपदी पिण्या पीततैला च कंगुणी ॥

अर्थ-ज्योतिष्मती, पूतितला, लगणा, स्फुटबन्धनी, पारावतपदी, पिण्या, पीततैला कंगुणी(पारावतांघ्रि,कटभी, ज्योतिष्का,निष्फला

इगु[illegible]ा, स्वर्णलता, अनलप्रभा, ज्योतिर्लता सुपिङ्गला, दीप्ता, मेध्या, ग[illegible]दा, दुर्ज्जरा, सरस्वती, अमृता, कंगुनी, सुवर्णलतिका, अग्निमार्षा, दुर्म[illegible]ा, लवणा, किंशुका, आवेगा, काकाण्डी, त्रिपर्णी, पीडचा)

महाज्योतिष्मतीनामानि ।

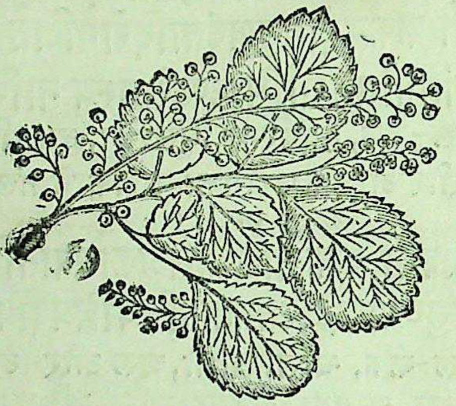

महाज्योतिष्मती तीक्ष्णा कङ्गुनी बृहत्कंगुनी ।

अर्थ-महाज्योतिष्मती, तीक्ष्णा, कंगुनी, बृहत्कंगुनी (तेजोवती बहुरसा, कनकप्रभा, सुवर्णनकुली, लवणा, अग्निदीप्ता, तेजस्विनी, सुरलता, अग्निफला, अग्निगर्भा, शैलसुता, सुतैला, सुवेगा, वायसी, तीव्रा, काकाण्डी, वायसादनी, गीर्लता, श्रीलता, सौम्या, ब्राह्मी, लवणकिंशुका, पारावतपदी, पीता, पीततैला, यशस्विनी, मेध्या, मेधावती, धीरा)

संस्कृतभाषामें	ज्योतिष्मती, महाज्योतिष्मती ।
हिन्दीभाषामें	मालकांगुनी, बडीमालकांगुनीउमिजिनी
वंगभाषामें	लताफट्की, वडलताफट्की ।
गुजरातीभाषामें	मालकांगणी ।
मराठीभाषामें	मालकांगोणी (को०) पिंगवी ।
कर्णाटकीभाषामें	कौंगुएरडु ।
तैलिङ्गीभाषामें	वावजी (वेक्कुडुतोगे)
इंग्रेजीभाषामें	स्टाफ्ट्री । Stafftree
लैटिनभाषामें	सिलेस्ट्रसूपेनिक्युलेटा । Celastrusp aniculata
फारसीभाषामें	काल ।

ज्योतिष्मतीगुणाः ।

ज्योतिष्मती तिक्तरसा च रूक्षा किञ्चित्कटुर्वातकफापहा च ।

दाहप्रदादीपनकृच्च मेध्या प्रज्ञां च पुष्णाति तथा द्वितीया (रा. नि.)

अर्थ-मालकांगुनी-चरपरी, कडवी, रूखी, किंचित् चरपरी, वातकफनाशक, दाहजनक, अग्निप्रदीपक और मेधा तथा प्रज्ञाकारक है, दूसरीके भी इसीके समान गुण जानने ।

अपिच ।

ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सरा कफसमीरजित् ।
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा (मा. नि.)

अर्थ-मालकांगुनी-चरपरी, कडवी, सारक, कफवातनाशक, अत्यन्त गरम, वमनजनक, तीक्ष्ण तथा जठराग्नि, बुद्धि और स्मरणशक्तिको देनेवाली है ।

अन्यच्च ।

ज्योतिष्मती तु कटुका तिक्ता चाग्निप्रदीपनी ।
अत्युष्णा दाहका मेध्या प्रज्ञापुष्टिकरी मता ॥
वृष्या वान्तिकरी तीक्ष्णा वर्ण्या च तुवरा मता ।
उदरस्य हरेत्पीडां व्रणपाण्डुविसर्पहा ॥ (गणनि०)

अर्थ-मालकांगुनी-चरपरी, कडवी, अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, दाहकारक, मेधाजनक, प्रज्ञाकारक, पुष्टिदायक, वीर्यवर्धक, वमनकारक, तीक्ष्ण, शरीरके रंगको उज्ज्वल करनेवाली, कषेली तथा उदरकी पीडाको हरतीहै, घाव, पाण्डुरोग और विसर्प रोगको दूर करेहै ।

विवरण । इसकी वेल होतीहै, पत्ते गोल कुछ अनीदार होतेहैं। फलोंका झुमका होताहै, कच्चे फल नीले होतेहैं और पकनेपर पीले पडजातेहैं उनमेंसे लाल बीज निलकताहै, उन बीजोंमेंसे पीला तेल निकलताहै, वह तेल अनेकप्रकारके वातरोगोंको और खुजलीको दूर करताह ।

पुष्करमूलनामानि ।

पौष्करं पुष्करमूलं पुष्करं पद्मवर्णकम् ॥

अर्थ-पौष्कर, पुष्करमूल, पुष्कर, पद्मवर्णक, (पद्मकर्ण, पद्मपत्रमूल, पद्मपर्णक, पुष्करिणी, वीरपुष्कराह्वया, काश्मीर, ब्रह्मतीर्थ, श्वासारि, मूलपुष्कर, पुष्करजटा, पुष्कराशिफा, वीर, पद्मपत्रक, पद्मपुण्य, सागर, शूर, वृक्षरुह, सुमूलक, शूलघ्न, कुष्ठभेद)

संस्कृतभाषामें पुष्करमूल ।

हिंदी भाषामें	पोहकरमूल ।
बंग भाषामें	कुष्ठविशेष, पुष्करमूल ।
गुजराती भाषामें	पोकरमूल ।
मराठी भाषामें	पुष्करमूल ।
कर्णाटकी भाषामें	पुष्करमूल ।

अस्या गुणाः ।

पुष्करं कटुतिक्तोष्णं कफवातज्वरापहम् ।
श्वासारोचककासघ्नं शोफघ्नं पाण्डुनाशनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पोहकरमूल-चरपरा, कडवा तथा कफ, वात, ज्वर, श्वास, अरोचक, खांसी, सूजन और पाण्डुरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

पुष्करं पार्श्वरुग्वातकासशोथज्वरापहम् ।
श्वासोर्ध्ववातपाण्डुघ्नं हिक्कादोषनिवारणम् ॥

अर्थ-पोहकरमूल-पार्श्ववेदना, वात, खांसी, सूजन, ज्वर, श्वास, ऊर्ध्व वात, पाण्डुरोग और हिक्कारोगनिवारक है ।

पोहकरमूल उत्तम कहीं नहीं मिलता, इसलिये इसके बदलेमें कूट लेना ।

स्वर्णक्षीरी नामानि ।

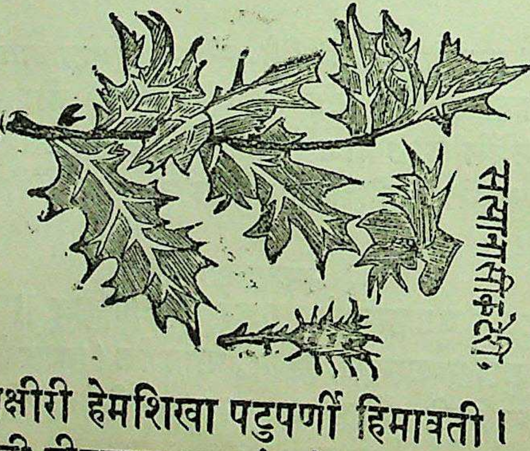

स्वर्णक्षीरी हेमशिखा पट्टपर्णी हिमावती ।
हैमवती पीतपुष्पा तन्मूलं चोक उच्यते ॥

अर्थ-स्वर्णक्षीरी, हेमशिखा, पट्टपर्णी, हिमावती, हेमवता, पीतपुष्पा,

(स्वर्णदुग्धा, स्वर्णाह्वा, रुक्मिणी, सुवर्णा, हेमदुग्धा, हेम[illegible]री, काञ्चनी, कटुपर्णी, हेमाह्वा, क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी, कर्चिगी, तिक्तदुग्धा, हिमाद्रिजा, यवचिंचा, हिमोद्भवा, हैमी, हिमजा) इसकी जडको चोक कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	कटुपर्णी, स्वर्णक्षीरी, क्षीरिणी
हिन्दीभाषामें	सत्यानासी, कटेरी (चोक) भरेबंद पिसोला।
वंगभाषामें	स्वर्णक्षीरी, शोणाखिरुई-(चोक)।
मराठीभाषामें	कांटेधोत्रा, फिरंगीधोत्रा।
गुजरातीभाषामें	दारुडी।
कर्णाटकीभाषामें	चिक्कणिकेयभेद।
तामिलभाषामें	ब्रह्मदण्डुविरइ।
इंग्रेजीभाषामें	गैंबोझ, थिसल। Gamboge Thistle मेकसिकन्, आर्गिमोन्। Maxican Argemon
लैटिन्भाषामें	आर्गिमनी मेक्सी केना।

अस्या गुणाः।

हेमाह्वा रेचनी तिक्ता भेदिन्युत्क्लेशकारणी।
कृमिकण्डूविषानाहकफपितास्रकुष्ठनुत्। (भा० प्र०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-रेचक, कडवी, भेदक, उत्क्लेशकारक तथा कृमि, कण्डू, विष, आनाह, कफ, रक्तपित्त और कुष्ठको नष्ट करे है।

अन्यच्च।

क्षीरिणी कटुका तिक्ता रेचनी शोफतापनुत्।
कृमिदोषकफघ्नी च पितज्वरहरा च सा॥

अर्थ-काञ्चनक्षीरी-चरपरी, कडवी, रेचक तथा सूजन, ताप, कृमि, कफ और पित्तज्वरविनाशक है।

अपि च।

स्वर्णक्षीरी हिमा तिक्ता कृमिपित्तकफापहा।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीशोफदाहज्वरहरापरा॥ (रा०नि०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-शीतल है और कृमि, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, सूजन तथा दाहज्वरको दूर करे है।

अन्यच्च।

स्वर्णक्षीरी हिमा तिक्ता सरा कण्डूविनाशिका।

वातं रक्तं कृमीन्पित्तं कफं कृच्छ्रञ्च नाशयेत् ॥
जूत्र्यश्मरीशोफदाहज्वरकुष्ठविनाशिनी ।
मूलं चास्य चोक इतिगुणाःपूर्वोक्तवत्स्मृताः॥(रा॰नि॰)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-शीतल, कडवी, दस्तावर तथा खुजली, वात, रक्त, कृमि, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अश्मरी (पथरी) सूजन, दाह, ज्वर और कोढ इनका नाश करेहै, इसकी जडको चोक कहते हैं, उसके गुणभी इसकी समान जानने ।

अपि च।

तस्याः क्षीरं बिन्दुमात्रं नेत्रे क्षिप्तं घृतप्लुतम् ।
शुक्रञ्च ह्यधिमांसं च नेत्रांध्यञ्चैव नाशयेत्॥ (ग॰ नि॰)

अर्थ-इसके दूधकी एक बूंद घीके साथ आंखमें लगानेसे शुक्रनेत्ररोग, अधिमांसनेत्ररोग और नेत्रांध्यरोग दूर होते हैं ।

अस्याः स्वरूपम् ।

कण्टकी कण्टपत्रा च पीतपुष्पा क्षुपा भवेत् ।
स्वर्णक्षीरी कण्टफला कृष्णबीजा च सुस्थिरा ॥
(शिवनि॰)

अर्थ-इसका क्षुप कांटोंवाला होताहै, पत्तोंके ऊपर कांटे होते हैं, फूल पीला होताहै, दूधका रंग सुवर्णके समान वर्णवाला होताहै, फलोंपर कांटे होतेहैं, उनमेंसे काले रंगके बीज निकलते हैं । उन बीजोंका तेल निकलताहै, वह तेल अनेक प्रकारके त्वचा रोगोंको हरताहै ।

कर्कटशृङ्गिनामानि ।

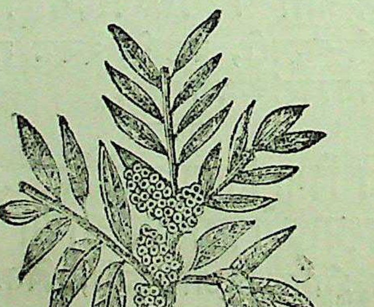

(काकडाशिंगी)

कर्कटशृङ्गिका शृङ्गी कुलिङ्गी कासनाशिनी ।
महाघोषा च चक्राङ्गी कर्कटी वनमूर्द्धजा ॥

अर्थ-कर्कटशृङ्गिका, शृङ्गी, कासविनाशिनी, कुलिङ्गी, महाघोषा, चक्रांगी, कर्कटी, वनमूर्द्धजा (कर्कटाख्या, कुलीरशृंगी, घोषा, चक्रा, शिखरी, कर्कटाख्या, कौलिरा, विषाणिका, चन्द्रास्पदा, वांगा, कुलीराविषाणिका, नतांगी, वक्रा, अजशृंगी, कर्कटशृंगी)

संस्कृतभाषामें	कर्कटशृङ्गी ।
हिन्दीभाषामें	काकडाशिंगी ।
वङ्गभाषामें	कांकडाशृङ्गी ।
मराठीभाषामें	कांकडाशिंगी ।
गुजरातीभाषामें	काडकाशिंगी ।
कर्णाटकीभाषामें	कर्कटिशृङ्गी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कर्कटाशृङ्गी ।
लैटिन्भाषामें	पिस्टेशिया इंटिग्रेरिवा । pistaciaintagrirriwa

अस्या गुणाः ।

कर्कटशृङ्गिका तिक्ता चोष्णा च तुवरा गुरुः ।
वातहिक्कातिसारघ्नी बालानां च हितावहा ।
कासं श्वासं रक्तदोषं पित्तं जूर्तिं कफं क्षयम् ।
वान्तिं हिध्मां चोर्ध्ववातं कृमितृष्णाक्षतक्षयान् ॥
अरुचिं नाशयत्येव ऋषिभिः परिकीर्त्तिता । (निघण्टु०)

अर्थ-काकडासिंगी-कडवी, गरम, कषेली, भारी तथा वात, हुचकी और अतिसारको हरे है, बालकको हितकारी और खांसी, श्वास, रुधिरविकार, पित्त, ज्वर, कफ, क्षय, वमन, हिध्म, ऊर्ध्ववात, कृमि, तृषा, क्षतक्षय तथा अरुचिको दूर करे है। शिमला प्रान्तमें ककडो नामक वृक्षपर वर्षातमें सींगकी समान टहनीमें ककडसिंगी लगतीहै।

कट्फलनामानि ।

कट्फलं त्वक्फलं कुम्भी कुमुदिका श्रीपर्णिका ॥

अर्थ-कट्फल, त्वक्फल, कुम्भी, कुमुदिका, श्रीपर्णिका, (कैटर्य, काफल, कुम्भिपाकी, पुरुष, कुमुदी, सोमवृक्ष, रोहिणी, नासाढु,

अरण्य, कृष्णगर्भ, प्रचेतसी, भद्रावती, महाकुम्भी, रामसेनक, कुमुदा, उग्रगन्धा, भद्राञ्जनक, लघुकाश्मर्य्य, श्रीपर्णी, भद्रा, कायफल)

संस्कृतभाषामें	कट्फल ।
हिन्दीभाषामें	कायफल ।
वंगभाषामें	कायफल, कायशाल ।
मराठीभाषामें	कुंभ्याची साल, वा फळ ।
गुजरातीभाषामें	कायफल ।
कर्णाटकीभाषामें	किरुसिवान्नि ।
तैलिङ्गीभाषामें	पापर वुडम ।
लैटिन्भाषामें	मिरिका सापिडा, (छाल) । केरिया आबोरिया Creya arboria मेरिस्टिका मेलबेरिका (फल) Myristica Myricasapida Malbarica
अरबीभाषामें	दार शीशवान ।
फारसीभाषामें	उदुलवर्क ।

अस्या गुणाः ।

कट्फलं तुवरं तिक्तं कटुवातकफज्वरान् ।
हन्ति श्वासं प्रमेहार्शःकासकण्ठामयारुचीः ॥
उग्रदाहहरं रुच्यं मुखरोगशमप्रदम् ।
तीक्ष्णं क्षुतकरं चोष्णं हन्ति गुल्मामयानपि ॥

अर्थ-कायफल-कषेला, कडवा, चरपरा तथा वात, कफ, ज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कण्ठरोग, अरुचि और उग्रदाहको दूर करे है, रुचिकारक, मुखरोगको शमन करे, तीक्ष्ण, छीक लानेवाला, गरम और गुल्मरोगविनाशक है ।

अन्यच्च ।

कट्फलं रुचिदं चोष्णं तुवरं कटु तिक्तकम् ।
कासंश्वासं चोग्रदाहं मुखरोगं ज्वरं तथा ॥
कफवातप्रमेहार्शोरुचिगुल्मगलामयान् ।
अग्निमांद्यं पाण्डुरोगं ग्रहणीं चैव नाशयेत् ॥

अर्थ-कायफल रुचिदायक, गरम, कषेला, चरपरा, कडवा तथा खांसी, श्वास, उग्रदाह, मुखरोग, ज्वर, कफ, वात, प्रमेह, बवासीर गुल्म, कण्ठरोग, अग्निमांद्य, पाण्डुरोग और संग्रहणी इनका नाश करे है । व्यवहार-छाल । मात्रा १ मासेकी. शिमला प्रान्तमें सोलन छावनीके समीपवर्ती पहाडोंपर कायफलके वृक्ष होतेहैं, जेठ महीनेमें इसके फल पकते हैं, जो कायफल नामसे प्रसिद्ध हैं; स्वादमें खट्टे मीठे होते हैं, इसका वृक्ष कायफल नामसे प्रसिद्ध है ।

भार्ङ्गीनामानि ।

भारङ्गी ब्राह्मणी पद्मा भृङ्गजाङ्गारवल्लरी ।
मुखधौता दूर्वाफञ्जी भार्ङ्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥

अर्थ-भारङ्गी, ब्राह्मणी, पद्मा, भृङ्गजा, अङ्गारवल्लरी, मुखधौता, दूर्वा, फञ्जी, भार्ङ्गी, ब्राह्मणयष्टिका, (गर्दभशाक, गर्दभशाका, फञ्जिका, बर्व्बर, वालेयशाक, वर्द्धक, ब्रह्मयष्टि, यष्टि, ब्रह्मयष्टिका, शाकवालेय, अङ्गारवल्लि, वालेय, ब्राह्मिका, गर्दभशाखी, ब्राह्मी, ब्राह्मणयष्टी, वान्तारि, वातारि, कासजित, स्वरूपा, भ्रमरेष्टा, शक्रमाता, भृगुभवा, खरशाका, हञ्जिका, कासघ्नी, भृगुजा, भार्गवी, कालिंगवल्ली)

संस्कृतभाषामें	भार्ङ्गी ।
हिन्दीभाषामें	भारङ्गी, ब्रह्मनेटी ।
वंगभाषामें	वामुनहाटी ।
मराठीभाषामें	भारंगी ।
गुजरातीभाषामें	भारंगी.
कर्णाटकीभाषामें	किर्हदगु ।
तैलिङ्गीभाषामें	भण्टभारङ्गी ।
नेपालभाषामें	चूया ।
लैटिन्भाषामें	क्लेरोडेण्ड्रान्सिर्रेटम् Clero-deudronserratum क्लेरोडेण्ड्रन् सिफोन्थाथस् । Clerodendronsiphonauthus

भार्ङ्गीगुणाः ।

भार्ङ्गी रूक्षा कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी लघुः ।
दीपनी तुवरा गुल्मरक्तमुन्नाशयेद्ध्रुवम् ।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारंगी-रूखी, चरपरी, कडवी, रुचिकारी, गरम, पाचक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, कषेली तथा रक्त, गुल्म, सूजन, खांसी, श्वास, पीनस, ज्वर और वातको नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

भार्ङ्गी तु कटुतिक्तोष्णा कासश्वासविनाशिनी ।
शोफव्रणक्रिमिघ्ना च दाहज्वरनिवारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-भारंगी-चरपरी, कडवी, गरम तथा खांसी, श्वास, सूजन घाव, क्रिमि दाह और ज्वरको दूर करेहै ।

अपिच ।

वातज्वरप्रहन्त्री च गुणे हिक्काविनाशिनी ।
गुल्मज्वरासृग्वातघ्नी क्षयपीनसनाशिनी ॥

अर्थ-भारंगी-वातज्वर, हिक्का, गुल्म, ज्वर, वातरक्त, क्षय और पीनसरोग नाशकरे है ।

अस्याः पत्रगुणाः ।

पर्णमस्य ज्वरं दाहं हिक्कां दोषत्रयं हरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसके पत्ते ज्वर, दाह, हुचकी और त्रिदोषनाशक हैं । इसका वृक्ष मनुष्यके समान ऊँचा होताहै, पत्ते महुवेके पत्तोंकी समान होतेहैं, फूल सफेद होताहै, इसके कोमलपत्तोंका शाक बनाते हैं । व्यवहार-मूल, पत्ते । मात्रा १॥ मासेकी । यह पंजाबमें वह्मणेठी नामसे प्रसिद्ध है ।

पाषाणभेदनामानि ।

पाषाणभेदकोऽश्मघ्नः शिलाभेदोऽश्मभेदकः ।
स चैवोपलभेदश्च नगभिच्छैलगर्भजः ॥

अर्थ-पाषाणभेद-अश्मघ्न शिलाभेद, अश्मभेदक, उपलभेद, नगभित, शैलगर्भज,(अश्मभिद्,अश्मभेदक, पाषाणभेदक, पाषाणभेदन, पाषाणभेदी (न) श्वेता, उपलभेदी, उपलभित, शिलागर्भज, गिरिभित, भिन्नयोजनी)

संस्कृतभाषामें	पाषाणभेद ।
हिन्दीभाषामें	पाखानभेद ।
वंगभाषामें	पाथरचुरी, हिमसागर, पाथरकुचा ।
मराठीभाषामें	पाषाणभेद ।
गुजरातीभाषामें	पाखाणभेद ।
कर्णाटकीभाषामें	आलेलगया, पाषणभेदी ।
तैलिङ्गीभाषामें	तेलनुरुपिण्डी ।
इंग्रेजीभाषामें	आइरिसूप । Irissp

लैटिन्भाष	कोसियस् एरोमेटिकम्	Cocius aromaticum
फारसीभाषामें	गोशाद् ।	
अरबीभाषामें	जिंतियाना ।	

पाषाणभेदगुणाः ।

अश्मभिद्वस्तिरुङ्मूत्रकृच्छ्रतोदाहवातनुत् ।
शीतवीर्यो गुरुः स्निग्धस्तथाऽतीसारनाशनः ॥
(शा० नि०

अर्थ-पाखानभेद-वस्तिरोग, मूत्रकृच्छ्र, दाह, वात और अतिसारको दूरकरे है, शीतवीर्य्य है, भारी और चिकनाहै ।

अन्यच्च ।

अश्मभेदो हिमस्तिक्तः कषायो वस्तिशोधनः ।
भेदं हन्ति त्रिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः ।
योनिरोगान् प्रमेहांश्च प्लीहशूलव्रणानिच ॥

अर्थ- पाखानभेद-शीतल, कडवा, कषेला, वास्तिशोधक, भेदक तथा त्रिदोष, बवासीर, गुल्म, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, हृदयरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूल और व्रणरोगका विनाश करे है ।

क्षुद्रपाषाणभेदगुणाः ।

क्षुद्रपाषाणभेदश्च व्रणकृच्छ्राश्मरीहरः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-क्षुद्रपाषाणभेद-व्रण, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूरकरे ह । पाखानभेदवाली लकडी परदेशसे आती है, वह क्या है यह कोई नहीं जानता । इसको सर्वप्रकारके प्रमेह मूत्रकृच्छ्रादि रोगी लेते हैं और देशी पाषाणभेदके गुण इस पाषाणभेदसे सब मिलतेहैं। मात्रा १ मासेकी ।

धातकीनामानि ।

धातकी ताम्रपुष्पी च धात्री च धातृपुष्पिका ॥

अर्थ-धातकी, ताम्रपुष्पी, धात्री, धातृपुष्पिका, (धातृपुष्पी, धातुपुष्पी, धातुपुष्पिका, वह्निपुष्पी, धावनी, अग्निज्वाला, सुभिक्षा, पार्वती, बहुपुष्पिका, कुमुदा, सीधुपुष्पी, कुञ्जरा, मघवासिनी, गुच्छपुष्पी, संघपुष्पी, रोध्रपुष्पिणी, तीव्रज्वाला, वह्निशिखा, मद्यपुष्पा)

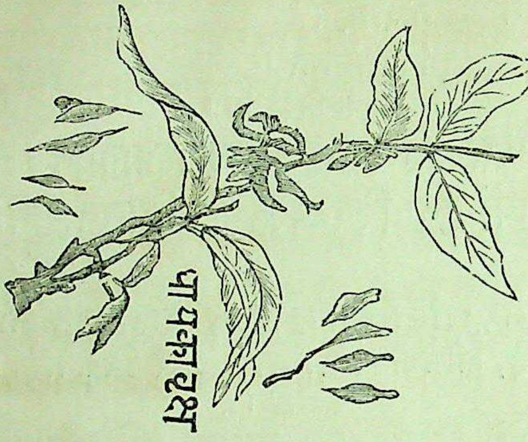

संस्कृतभाषामें	धातकी ।
हिन्दीभाषामें	धायके फूल, धवईके फूल ।
वंगभाषामें	धाइफूल ।
मराठीभांषामें	धायटी ।
गुजरातीभाषामें	धावणी ।
कर्णाटकीभाषामें	धायिफूल ।
तैलिंगीभाषामें	धातुकी पुड, और पु०वु, जार्गि ।
उ०	जातिको ।
लैटिन्भाषामें	वुडफोर्डिया, फ्लोरिबंडा । Woodfordia fioribunda
इंग्रेजीभाषामें	गीसलीआटोमेण्ठोजा ।

धातकीगुणाः ।

धातकी कटुका शीता मदकृत्तुवरा लघुः ।
तृष्णातिसारपित्तास्रविषक्रिमिविसर्पजित् ॥(भा० प्र०)

अर्थ-धातकी-चरपरी, शीतल, मदकारक, कषेली, हलकी, तथा तृषा, अतिसार, रक्तपित्त, विष, कृमि और विसर्परोगोंको जीते है

अन्यच्च ।

धातकी कटुका शीता तुवरा मदकारिणी ।
तिक्ता लघ्वी च संप्रोक्ता गर्भस्थापनकारिणी ॥

रक्तप्रवाहिकापित्ततृड्विसर्पव्रणापहा ।
कृम्यतीसारहननी रक्तदोषरुजापहा ॥
पुष्पमस्याः स्वादु रूक्षं रक्तपित्तातिसारजित् ।
विषनाशकरं चोक्तं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥ (नि० र०)

अर्थ–धातकी–चरपरी, शीतल, कषेली, मदकारक, कडवी, हलकी, गर्भस्थापक तथा रक्तप्रवाहिका, पित्त, तृषा, विसर्प, व्रण, कृमि, अतिसार और रुधिरदोषको दूर करेहै ।

धायके फूल–स्वादिष्ठ, रूखे, तथा रक्तपित्त, अतिसार और विषका विनाश करेहैं। धायके वृक्षकी अपेक्षा धायके फूलोंके अधिक गुण हैं।

विवरण। इसका वृक्ष होताहै, पत्ते अनारके समान होतेहैं, अनारके पत्ते अधिक नीले होतेह, धायके पत्ते कुछ पिलाई लिये खरखरे होतेहैं । फूल लाल होतेहैं, इस फूलमें कली नहीं होती । धायके फूलोंका काढा तीन दिन देनेसे प्रदररोग दूर होताहै । शिमला प्रान्तमें धांवी नामसे प्रसिद्ध ह.

दन्तरोगोंमें धायके फूल अत्यन्त हितकारी हैं । व्यवहार–फूल, छाल । मात्रा २ मासेकी ॥

मञ्जिष्ठानामानि ।

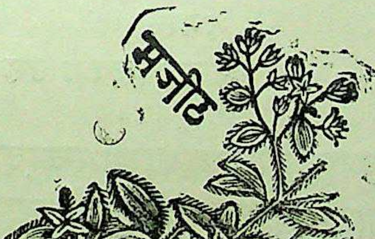

मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका ।
मण्डूकपर्णी भण्डीरी कालयोजनवल्लिका ॥
योजनवल्ली मण्डूकी काण्डीरा वस्त्ररञ्जनी ।
रक्तांगी रक्तयष्टिश्च रक्ता योजनपर्णिका ॥

अर्थ–मञ्जिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, कालमेषिका, मण्डूक-

पर्णी, भण्डीरी, काला, योजनवल्लिका, योजनवल्ली, मण्डूकी, कापर्णी, भण्डीरी, कालमेषिका, ..., (भण्डी, ण्डीरा, वस्त्ररञ्जनी, रक्ताङ्गी, रक्तयष्टि, रक्ता, योजनपर्णिका, (भण्डी,

संस्कृतभाषामें	मञ्जिष्ठा ।
हिन्दीभाषामें	मजीठ ।
वंगभाषामें	मञ्जिष्ठा ।
मराठीभाषामें	मञ्जिष्ठ ।
गुजरातीभाषामें	मजीठ ।
कर्णाटकीभाषामें	मंजिष्ठा ।
तैलङ्गीभाषामें	मंजिष्ठतीठी, ताम्रवल्ली ।
तामिलीभाषामें	मञ्जिट्टी ।
इंग्रेजीभाषामें	मेडररुट् । Maddertroot
लैटिन्भाषामें	रुबिआ कोर्डि फोलिया। Rubia–cordifolia
फारसीभाषामें	रुनास ।
अरबीभाषामें	फुवहतु सिवग उरु कुसतु बागीन ।

मञ्जिष्ठागुणाः ।

मञ्जिष्ठा मधुरा तिक्ता कषाया स्वरवर्णकृत् ।
गुर्वी चोष्णा विषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक् ॥
रक्तातिसारकुष्ठास्रविसर्पव्रणमेहनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ–मजीठ–मधुर, कडवा, कषेला, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, भारी, गरम तथा विष, कफ, सूजन, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, रक्तातिसार, कुष्ठ, रुधिरविकार, विसर्प, व्रण और प्रमेहरोगका नाश करनेवाली है।

अन्यच्च ।

मञ्जिष्ठा तुवरा चोष्णा वर्ण्या स्वर्या गुरुः स्मृता ॥
तिक्ता लघ्वी च मधुरा व्रणमेहकफापहा ।

विषं नेत्ररुजं शोफं योनिदोषं ज्वरं तथा ॥
शूलं कर्णरुजं चैव कुष्ठं चार्शः कृमीञ्जयेत् ।
रक्तातिसारवीसर्पनाशिनी च प्रकीर्तिता ॥

अर्थ-मजीठ-कषेला, गरम, वर्णको सुन्दर करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला, भारी, कडवा, हलका, मधुर तथा घाव, प्रमेह, कफ, विष, नेत्ररोग, सूजन, योनिदोष, ज्वर, (कामला पक्षाघात) शूल, कर्णरोग, कुष्ठ, बवासीर, कृमि, रक्तातिसार और विसर्परोगको नष्ट करे है। मजीठकी वेलें पहाडी जंगलोंमें होतीहैं इसकी जडें मंजीठ नामसे विकती हैं ॥

अस्याः शाकगुणाः ।

शाके स्यान्मधुरा लघ्वी स्निग्धा दीप्तिकरी मता ।
वातपित्तहरी चोक्ता ऋषिभिः सत्यवादिभिः॥ (नि०र०)

अर्थ-मजीठके पत्तोंका शाक-मधुर, हलका, स्निग्ध, जठराग्निको दीपन करनेवाला, तथा वात और पित्तको हरनेवाला है ।

फलंयकृद्दोषहरंमूलचर्म्मविवर्णताहरंतिलकालकघ्नंच(का०नि०)

अर्थ-मजीठका फल-प्लीहाको नाश करनेवाला है, मजीठकी जड चर्मरोग और तिलकालक (शरीरके तिल) को दूरकरे है ।

कुसुम्भानामानि ।

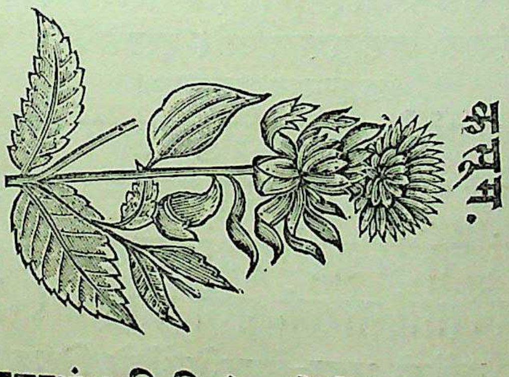

स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं लोहितं ग्राम्यकुंकुमम् ॥

अर्थ-कुसुम्भ, वह्निशिख, लोहित, ग्राम्यकुंकुम (कमलोत्तम, महारजन, कुक्कुटाशिख, पापक, पीत, पद्मोत्तर, रक्त, वस्त्ररञ्जन, अग्निशिख)

संस्कृतभाषामें	कुसुम्भ, कुसुम्भबीज ।
हिन्दीभाषामें	कसुम (करं)

बंगालामें	कुसुमफूल । कुसुमफल ।
मराठीभाषामें	कर्डीचें फळ, कडया ।
गुजरातीभाषामें	कुसुम्बो, करड, कुसुंबाना बी ।
कर्णाटकीभाषामें	कुसुम्भ ।
तैलिंगीभाषामें	लत्तुक, लक्क वंगारमु ।
इंग्रेजीभाषामें	ऑफिसिनल कार्थैमस । Officinal Carthamus
लैटिनभाषामें	कार्थैमस टिङ्क्टोरियस। Carthamustinctorious
फारसीभाषामें	गुलेमास्कर । (तुख्मकायशा)
अरबीभाषामें	अखरीज, हब्बुलअस्फर ।

कुसुम्भगुणाः ।

कुसुम्भं वातलं कृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कसूम-वातकारक, तथा मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त और कफनाशक है ।

कुसुम्भपुष्पगुणाः ।

कुसुम्भपुष्पं सुस्वादु त्रिदोषघ्नं च भेदकम् ।
रूक्षमुष्णं पित्तलं च केशरंजनकारकम् ॥
कफनाशकरं चैव लघु प्रोक्तं मनीषिभिः ।

अर्थ-कसूमके फूल-स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, भेदक, रूखे, गरम, पित्तजनक, केशरंजक, कफनाशक और हलके हैं ।

कुसुम्भपत्रशाकगुणाः ।

कुसुम्भपत्रं मधुरं नेत्र्यमुष्णं कटु स्मृतम् ।
अग्निदीप्तिकरं चातिरुच्यं रूक्षं गुरु स्मृतम् ॥
सरं पित्तकरं चाम्लं गुदरोगकरं मतम् ।
कफविण्मूत्रमेदानां नाशकं परमं मतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कसूमके पत्तोंका शाक-मधुर, नेत्रोंको हितकारी, गरम, चरपरा, अग्निदीपक, अत्यन्त रुचिकारक, रूखा, भारी, सारक, पित्तजनक, अम्ल, गुदाके रोगोंको उत्पन्न करनेवाला, तथा कफ, मल, मूत्र और मेदाको दूर करनेवाला है ।

इसके शाकके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो ।

कुसुम्भबीजगुणाः ।

कुसुम्भबीजं मधुरं स्निग्धं शीतं कषायकम् ।
अवृष्यं गुरु च प्रोक्तं कफवातास्रपित्तनुत् ॥

अर्थ-कसूमके बीज-(कर्रं) मधुर, स्निग्ध, शीतल, कषेले, भारी तथा कफ, वात और रक्तपित्त इनका नाश करेहै ।

इसके अधिकगुण धान्यवर्गमें देखो ।

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कुसुंभतैलमुष्णं तु विपाके कटुकं गुरु ।
विदाहकं विशेषेण सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-कसूमका तैल-गरम, पाकमें चरपरा, भारी, दाहजनक और विशेष करके त्रिदोषको कुपित करेहै ।

इसके अधिक गुण तैलवर्गमें देखो ।

विवरण । कसूमका क्षुप होताहै, इसके कांटे कटाईके कांटोंकी समान होतेहैं, पत्तेभी कटाईके समान होते हैं, इसके फूलोंकोही कसूम कहते हैं । व्यवहार-पत्ते फूल, बीज, तेल, झांदरा ।

लाक्षानामानि ।

लाक्षा तु कीटजा राक्षा क्षतघ्नी रक्तमातृका ।

अर्थ-लाक्षा कीटजा, राक्षा, क्षतघ्नी, रक्तमातृका (जतु, याव, अलक्त, द्रुमामय, गराषिका, खदिरका, रक्ता, रङ्गमाता, पलङ्कषा, क्रिमिहा, द्रुमव्याधि, अलक्तक, पलाशा, मुद्रिणी, दीप्ति, जन्तुका, गन्धमादिनी, नीला, द्रवरसा, पित्तारि, कृमिजा, क्रिमिजा, जतुका, कमिजा, गर्णधका, क्षतघ्नी)

संस्कृतभाषामें	लाक्षा ।
हिन्दीभाषामें	लाख, लाही ।
वंगभाषामें	लाहा ।
मरांठीभाषामें	लाखा ।
गुजरातीभाषामें	लाख ।
कर्णाटकीभाषामें	अरगु ।
तैलङ्गीभाषामें	लाका ।
इंग्रेजीभाषामें	शेललाक । Shell lac
लैटिन्भाषामें	कोकसलाका । Cocuslaeca

फारसीभाषामें	लाक ।
अरबीभाषामें	लुक् धोएल लाखलुकमसुल ।

लाक्षागुणाः ।

लाक्षा वर्ण्या हिमा बल्या स्निग्धा च तुवरा लघुः ।
अनुष्णा कफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत् ॥
व्रणोरःक्षतवीसर्पकृमिकुष्ठगदापहा ।
विषरक्तप्रशमनी विषमज्वरनाशिनी ॥ (निघण्टुसंग्रह)

अर्थ-लाख-शरीरके वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, बलकारक, स्निग्ध, कषेली, हलकी, अनुष्ण तथा कफ, रक्तपित्त, हिचकी, खांसी, ज्वर, व्रण, उरःक्षत, विसर्प, क्रिमि, कुष्ठ, विष, रक्तदोष और विषमज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

लाक्षा तु तिक्ता तुवरा भग्नसन्धानकारिका ।
स्निग्धा लघ्वी च बल्या च शीता वर्णप्रदा मता ॥
कफं पित्तं च शोषं च विषं रक्तविकारकम् ।
हिक्कां कासं ज्वरं चैव विषमं च विनाशयेत् ॥
उरःक्षतं च वीसर्पनासारोगकृमींस्तथा ।
कुष्ठव्रणं च त्वग्दोषं दाहं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-लाख-कडवी, कषेली, भग्नसन्धानकारक, स्निग्ध, हलकी, बलकारक, शीतल, वर्णकारक तथा कफ, पित्त, शोष, विष, रक्तविकार, हिचकी, खांसी, ज्वर, विषमज्वर, उरःक्षत, विसर्प, नासारोग, कृमि, कोढ, व्रण, त्वग्दोष और दाहको दूर करनेवाली है ।

अलक्तकगुणाः ।

अलक्तको रजोरोधी रक्तपित्तक्षयापहः ।
प्रदरं चाऽप्यतीसारं सरक्तं क्षपयेद्ध्रुवम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-महावर-रजोरोधक, रक्तपित्त क्षय, प्रदर और रक्तातिसारको दूर करनेवाली है, इसके अधिक गुण आगे लिखे हैं । पीपल, बेरी, सीसम इत्यादि अनेक वृक्षोंमें होतीहै, सबमें श्रेष्ठ पीपलकी लाख गिनीजाती है ।

हरिद्रानामानि ।

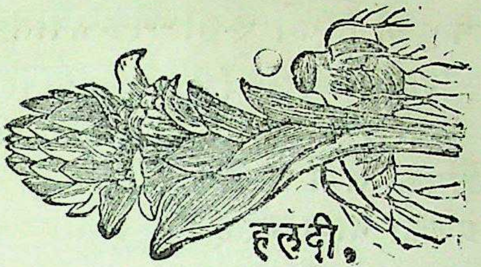

हरिद्रा निशाह्वा पीना युवती हेमरागिणी ।
काञ्चनी क्षणदा गौरी मेहघ्नी वरवर्णिनी ॥

अर्थ-हरिद्रा, निशाह्वा, पीना, युवती, हेमरागिणी, काञ्चनी, क्षणदा, गौरी, मेहघ्नी, वरवर्णिनी, (यामिनी, क्षपा, तमसिनी, गन्धपलाशिका, सुवर्णवर्णा, युवती, मङ्गलप्रदा, कावेरी, उमा, वर्णवती, पिञ्जा, पीतवालुका, हेमरागी, रभङ्गवासा, घर्षणी, पीतिका, रंजनी, निशा, बहुला, वर्णिनी, रात्रिनामिका, हरित, रञ्जनी, सुवर्णवर्णा, सुवर्णा, शिवा, दीर्घरागा, हलदी, वराङ्गी, अनेष्टा, वरा, वर्णदात्री, पवित्रा, हरिता, विषघ्नी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, लक्ष्मी, भद्रा, शिफा, शोभा, शोभना, सुभगाह्वया, श्यामा, ज्वरान्तिका, योषित्प्रिया, कृमिघ्नी, हट्टविलासिनी, निशाख्या, जयन्ती, दीर्घरागा, वर्णविलासिनी और हलदी)

संस्कृतभाषामें	हरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	हलदी ।
वंगभाषामें	हलुद ।
मराठीभाषामें	हळद ।
गुजरातीभाषामें	हलदर ।
कर्णाटकीभाषामें	अर्शिना ।
तैलिङ्गीभाषामें	पसुपु ।
द्रा०	हलद ।
अँग्रेजीभाषामें	टर्मैरिक । Turmeric
लैटिन्भाषामें	करक्युमालोंगा । Curcumalonga
फारसीभाषामें	जरदचोव ।
अरबीभाषामें	उरुकुस्सुफर ।

अस्या गुणाः ।

हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णकफवातनुत् ।
वर्ण्या त्वग्दोषमेहास्रशोथपाण्डुव्रणापहा॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हलदी-चरपरी, कडवी, रूखी, गरम, कफ, वातनाशक, वर्णको सुंदरतादायक, तथा त्वचाके रोग, प्रमेह, रक्तदोष, सूजन, पाण्डुरोग और व्रणको नाश करे है ।

अन्यच्च ।

हरिद्रा कटुका तिक्ता देहवर्णविधायिका ।
उष्णा रूक्षा शोधनी च स्त्रीणां वै भूषणं मता ॥
कफं वातं रक्तदोषं कुष्ठं कण्डूं प्रमेहकम् ।
त्वग्दोषं च व्रणं शोफं पाण्डुरोगं कृमीन्विषम् ॥
पीनसं चारुचिं पित्तमपचीं चैव नाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-हलदी-चरपरी, कडवी, देहके रंगको करनेवाली, उष्ण, रूखी, शोधक और स्त्रियोंका भूषण है, तथा कफ, वात, रुधिरदोष, कोढ, खुजली, प्रमेह, त्वचाके दोष, घाव, सूजन, पाण्डुरोग कृमि, विष, पीनस, अरुचि, पित्त और अपचीका नाश करनेवाली है ।

कर्पूरहरिद्रानामानि ।

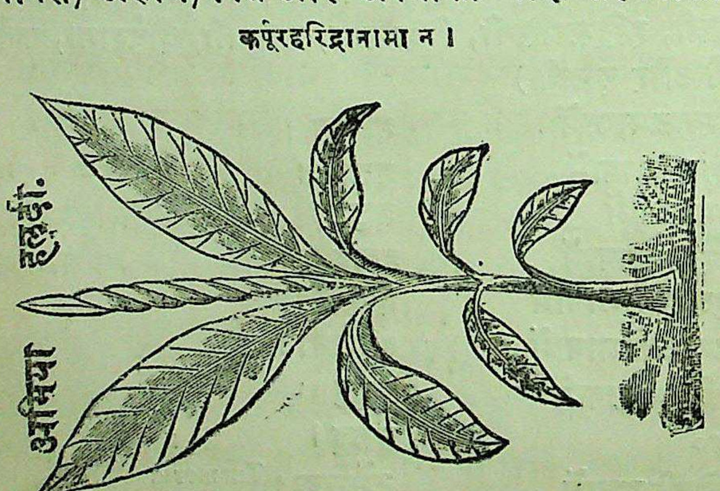

दार्वीमेदाम्रगन्धा च सुरभीदारु दारु च ।
कर्पूरा पद्मपत्रास्यात्सुरभिः सुरनायिका ॥

अर्थ-दार्वीभेद, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरभी, सुरनायिका ।

संस्कृतभाषामें	कर्पूरहरिद्रा, आम्रगन्धहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	कपूरहलदी, आम्बीयाहलदी ।
बंगलामें	आमआदा ।
मराठीभाषामें	आंबेहळद ।
गुजरातीभाषामें	आंबाहलदर ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलीअरिशिना ।
तैलिंगीभाषामें	कारुपसुपु ।
इंग्रेजीमें	मेंगोजिंजर । Mangojinger
लैटिन्में	कर्क्यूमाएरोमेटिका । Curcuma-aromatica

अस्या गुणाः ।

आम्रगन्धिहरिद्रा या सा शीता वातला मता ।
पित्तहृन्मधुरा तिक्ता सर्वकण्डुविनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-आम्बियाहलदी-(कपूरहलदी) शीतल, वातकारक, पित्तनाशक, मधुर, कडवी और सर्वप्रकारके कण्डुका नाशक है ।

अपि च ।

अम्ला रुचिप्रदा लघ्वी दीपनी च वग सरा ।
कफं चोग्रव्रणं कासं श्वासं हिक्कां ज्वरं जयेत् ।
अभिघातभवं शोथं लेपाच्छीघ्रं विनाशयेत् ॥ (क्वचित्)

अर्थ-कपूरहलदी-(अम्बिया हलदी)वात रक्त और, विषनाशक है, वीर्यवर्द्धक, सन्निपातनाशक, अम्ल, रुचिदायक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, सारक तथा कफ, उग्रव्रण, खाँसी, श्वास, हुचकी, ज्वर और अभिघातसे उत्पन्न हुई सूजनको दूर करेहै ।

वनहरिद्रानामानि ।

शोली वनहरिद्रा स्याद्वनारिष्टा च शोलिका ।

अर्थ-शोली, वनहरिद्रा, वनारिष्टा, शोलिका (अरण्यहरिद्रा, वनहलदी)

संस्कृतभाषामें	वनहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	वनहलदी, जंगलीहलदी ।

वंगभाषामें	बनहलुद ।
मराठीभाषामें	शोली, रानहळद ।
गुजरातीभाषामें	वनहलदर ।
तैलिङ्गीमें	अडविपसुपु ।
तामिलीमें	कस्तूरि मंजल ।
इंग्रेजी भाषामें	W
लैटिन्भाषामें	C

अस्या गुणाः ।

शोलिका कटुका गौल्या रुच्या तिक्ताग्निदीपिनी॥(रा.नि.)

अर्थ-वनहलदी-गौल्य,रुचिकारक,कडवी और जठराग्निदीपकहै।

अपिच ।

अरण्यहलदीकन्दः कुष्ठवातास्रनाशनः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-जंगली हलदी-कोढ और रक्तवातनाशक है ।

दारुहरिद्रानामानि ।

दार्वी दारुहरिद्रा च द्वितीयाभा कपीतकम् ।

अर्थ-दार्वी, दारुहरिद्रा, द्वितीयाभा,कपीतक,(पीतद्रु,कालियक, हरिद्रु, पचम्पचा, पर्जनी, हरिद्रा, काष्ठा, मर्म्मरी, पीतिका,पीतदारु, स्थिररागा, कामिनी, कटङ्कटेरी, पर्ज्जन्या, पीता,दारुनिशा,कालीयक, कामवती, दारुपीता,कर्कटिनी,हेमकान्ती,पीतत्वक्,पीतचंदन, निर्दिष्टा, काष्ठरजनी, हैमवती, हेमकान्ता)

संस्कृतभाषामें	दारुहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	दारुहलदी ।
वंगभाषामें	दारुहरिद्रा ।
मराठीभाषामें	दारुहळद ।
गुजरातीभाषामें	दारुहलदर ।
कर्णाटकीभाषामें	मरदार्शिना ।
तैलिङ्गीभाषामें	मानिपसुपु।
तामिलीभाषामें	मरमाञ्जिल ।
लैटिन्भाषामें	बरबेरीस एरीस्टेटा । Berberisaristata

फारसीभाषामें	दारचोव ।
अरबीभाषामें	दारहलद ।

अस्य गुणाः।

तिक्ता दारुहरिद्रा तु कटूष्णा व्रणमेहनुत् ।
कण्डूविसर्पत्वग्दोषविषकर्णाक्षदोषहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-दारुहलदी- कडवी, चरपरी, गरम तथा व्रण, प्रमेह, कण्डू, विसर्प, त्वचाके दोष, विष, कर्णरोग और नेत्ररोगको दूर करेहै ।

अपिच ।

दार्वी तद्वद्विशेषेण कफाभिष्यन्दनाशिनी ॥ (रा०व०)

अर्थ-दारुहलदीके गुण हलदीके समान हैं विशेषकरके कफ और अभिष्यन्दको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दार्वी निशागुणा किन्तु नेत्रकर्णास्यरोगनुत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दारुहलदीके गुण हलदीकेही समान हैं, तोभी विशेषकरके, नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोगनाशक है, शिमला प्रान्तमें कालका कसोलीके समीप इसके बहुत पेड होते हैं इसका झाड कांटेदार होता है. फल काले रंगके छोटे छोटे होते हैं. कश्मल नामसे प्रसिद्ध है ॥

दार्विकाथोद्भवरसाञ्जननामानि ।

रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं रसगर्भं च तार्क्ष्यजम् ।

अर्थ-रसाञ्जन, तार्क्ष्यशैल, रसगर्भ, तार्क्ष्यज (दार्विकाथोद्भव, बालभैषज्य, तार्क्ष्य, रसोद्भूत, रसाग्रज, कृतक, रसराज वीर्य्याञ्जन, रसनागर्भ, अग्निसार)

संस्कृतभाषामें	रसाञ्जन ।
हिन्दीभाषामें	रसोत ।
मराठीभाषामें	रसांजन ।
वंगभाषामें	रसवत ।
गुजरातीभाषाम	रसवती ।
कर्णाटकीभाषामें	रसांजन ।
तैलङ्गीभाषामें	रसाञ्जनमु ।
इंग्रेजीभाषामें	एक्स्ट्राक्ट आफ इंडियन बर्बेरि । Extract of Indian Perbery
लैटिनभाषामें	एक्सट्रेकमबर्बेरिस्। Axtracum Berberis
अरबीभाषामें	हुजुज ।

अस्याः कषायः ।

दार्वीक्काथसमं शीरं पादं पक्का यथाघनम् ।
तदा रसाञ्जनाख्यं तन्नेत्रयोः परमं हितम् ॥

अर्थ- दारुहलदीका काढा बनाकर उस काढेमें उसकी बराबर दूध मिलाकर औटावे, जब औटकर काढा होजावे तो उतारले, उसको रसोत कहते हैं । और वह रसोत नेत्रोंको अत्यन्त हितकारी है ।

अस्या गुणाः ।

रसाञ्जनं कटुश्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ।
उष्णं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषहृत् ॥ (भावप्र०)

अर्थ-रसोत-चरपरा, गरम, रसायन, कडवा, छेदक तथा कफ, विष, नेत्रविकार और व्रणको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

रसाञ्जनं हिमं तिक्तं हिक्काशोविषनाशनम् ।
कर्णनेत्रभवान्रोगान्योजितं साधु साधयेत् (रा० नि०)

अर्थ-रसोत-शीतल, कडवा तथा हुचकी, बवासीर, विष, कर्णरोग और नेत्ररोगोंको हरैहै ।

अपिच ।

दार्वीक्काथोद्भवं तीक्ष्णं कटुकं च रसायनम् ।
छेदनं च रसे चोष्णं चक्षुष्यं कफनाशनम् ॥
वृष्यं विषं रक्तपित्तच्छर्दिहिक्काविनाशनम् ।
श्वासघ्नं मुखरोगघ्नं पूर्वाचार्यैर्निरूपितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-रसोत-तीक्ष्ण, कटु, रसायन, छेदक, रसमें गरम, नेत्रोंको हितकारी, कफनाशक, वीर्य्यजनक तथा रक्तपित्त, वमन, हुचकी, श्वास और मुखरोगका नाश करैहै ।

अस्य शोधनविधिः ।

तोयेत्युष्णे परिक्षिप्य द्रवीकुर्याद्रसांजनम् ।
वाससा स्रावयित्वा च शोधनं भानुरश्मिना ॥
एवं विशोधितं सर्वकर्मसु परियोजयेत् ।

विशुद्धं नाशयेद्व्याधीन्नाविशुद्धं कदाचन ॥

अर्थ–रसोतको अत्यन्त उष्ण जलमें घोलदे, फिर वस्त्रमें छानकर धूपमें सुखादे, इस प्रकार शोधाहुआ रसोत सर्वकामोंमें ले। शोधन कियाहुआ रसोत व्याधिको नाश करताहै और अशुद्ध रसोत कदापि नहीं। मात्रा १॥ मासेकी।

बाकुचीनामानि।

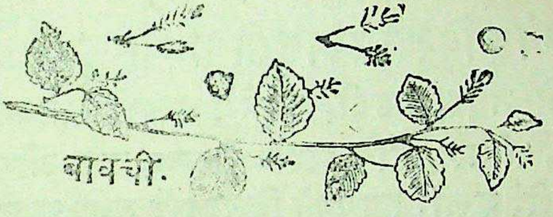

सोमराजी कृष्णफला बाकुची कुष्ठनाशिनी।
सोमवल्ली पूतिफली वेजानी कालमेषिका ॥

अर्थ–सोमराजी, कृष्णफला, बाकुची, कुष्ठनाशिनी, सोमवल्ली, पूतिफली, वेजानी, कालमेषिका (अवल्गुज, सुवल्ली, सोमवल्लिका, कालमेषी, चन्द्रलेखा, कृष्णा, पूतिफला, सुवल्ली, कालमेषी, वांगुजी बाकुजी, सोमराजिका, ऐन्दवी, शूलोत्खा, क्रिमिघ्नी, सुवल्लिका, सिता, सितावरी, चन्द्री, सुप्रभा, कुष्ठहन्त्री, काम्बोजी, पूतिगंधा, वल्गुजा, चन्द्रराजी, कालमेषी, त्वग्दोषापहा, कान्तिदा, अवल्गुजा चन्द्रप्रभा, पूतिगंधिका, सुपर्णिका, शशिलेखा, सोमा, कुष्ठघ्नी, कण्डूघ्नी और आसितत्वचा)।

संस्कृतभाषामें	बाकुची, सोमराजी।
हिन्दीभाषामें	वायची, वावची, बकुची, (बाकुचीके दाने)
वंगभाषामें	हाकुच, सोमराल (ज)।
मराठीभाषामें	बावची।
गुजरातीभाषामें	बावची, वावचीनावी।
कर्णाटकीभाषामें	वाउचिगे।
तैलिङ्गीभाषामें	तिप्पतोंगे, नेलवयलिये।
तामिलीभाषामें	वोगिविट्टलु।
इंग्रेजीभाषामें	एसक्यूलंटलफाकुर्शा। Escuient Flacourtia

लैटिनमें सोरेलिया-कॉरेलिफोलिया, सोरेलिया स्पाईकेटा। Psoralia Corylifolia P. Spicata

बाकुचीगुणाः ।

बाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी ।
विष्टम्भहृद्धिमा रुच्या सरा श्लेष्मास्रपित्तनुत् ॥
रूक्षा हृद्या श्वासकुष्ठमेहज्वरक्रिमिप्रणुत् ।
तत्फलं पित्तलं कुष्ठकफानिलहरं कटु ॥
केश्यं त्वच्यं कृमिश्वासकासशोथामपाण्डुहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बावची-मधुर, कडवी, पचनेमें चरपरी, रसायन, विष्टम्भको दूर करनेवाली, शीतल, रुचिकारक, सारक, कफ और रक्तपित्तका नाश करनेवाली, रूखी, हृदयको हितकारी तथा श्वास, कोढ, प्रमेह, ज्वर और क्रिमिका, विनाश करेहै ।

बावचीका फल-पित्तजनक, कुष्ठनाशक, कफघ्न, वातविनाशक, कटु, केशोंको, उत्तम करनेवाला, त्वचाको सुंदरतादायक तथा वमन, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, बवासीर, खांसी, सूजन, आम और पाण्डुरोगका नाश करेहै।

अन्यच्च ।

बाकुची कटुका पाके तिक्ता शीता रसायनी ।
मधुरा रुचिदा रूक्षा हृद्या ग्राह्यग्निदीपनी ॥
बल्या च तुवरा लघ्वी मेध्या वै रक्तपित्तजित् ।
कफकुष्ठकृमिश्वासकासमेहज्वरव्रणान् ॥
त्रिदोषवातत्वग्दोषविषकण्डूश्च नाशयेत् ॥

अर्थ-बावची-पाकमें चरपरी, कडवी, शीतल, रसायन, मधुर, रुचिदायक, रूखी, हृदयको हितकारी, ग्राही, अग्निप्रदीपक, बलकारक कषेली, हलकी, मेधाजनक तथा रक्त, पित्त, कफ, कोढ, कृमि, श्वास, खांसी, प्रमेह, ज्वर, व्रण, त्रिदोष, वात, त्वचाके विकार, विष, कण्डू और खर्ज्जू अर्थात् खुजलीका नाश करेहै ।

बाकुचीभेदबाकुचीगुणाः ।

श्वित्रारिर्बाकुचीभेदः कुष्ठदोषत्रयास्रजित् ।
वातरक्तहरो लेपात्सिध्मश्वित्रविनाशनः ॥ (आ० सं०)

अर्थ-श्वित्रारि यह बाकुचीका भेद है. यह कोढ,त्रिदोष,रक्तविकार वातरक्त सिध्मरोग और श्वित्र कोढको दूर करेहै ।

बाकुचीस्वरूपम् ।

क्षुपो बाकुचिकायाश्च गोवारीसदृशो भवेत् ।
कृष्णपुष्पो गुच्छफलो दुर्गंधः कृष्णबीजकः ॥(शो॰नि॰)

अर्थ-बाकुचीका क्षुप होताहै, पत्ते ग्वारकी समान होते हैं, फूल काला होताहै, फल गुच्छोंमें आतेहैं, उनमेंसे काले बीज निकलते हैं और इसमें दुर्गन्ध आतीहै।व्यवहार-बीज,लकडी।मात्रा १॥मासेकी.

चक्रमर्दनामानि ।

चक्रमर्दः प्रपुन्नाटो दद्रुघ्नो मेषलोचनः ।
पद्माटः स्यादेडगजश्चक्री पुन्नाट इत्यपि ॥

अर्थ-चक्रमर्द,प्रपुन्नाट,दद्रुघ्न,मेषलोचन,पद्माट,एडगज,चक्री पुन्नाट,(तार्किण,तर्किल, प्रपुन्नड, मेषाक्षि,कुसुम,प्रपुन्नाल, अडगज,गजाख्य मेषाह्वय, एडहस्ती,व्यावर्त्तक,चक्रगज,पुन्नाड,त्रिमर्दक,नर्वट,चक्राह्व, शुकनाशन,दृढबीज,प्रपुन्नाड,खर्ज्जूघ्न, चक्रमर्दक, उरणाख्यक,प्रपुन्नड, प्रपुन्नाड, उरणाक्ष, उरणाक्षक, चक्रपद्माड, दृढबीज)

संस्कृतभाषामें	चक्रमर्द ।
हिन्दीभाषामें	चकवड, पवाड, पमाड (र)।
बंगभाषामें	चाकुन्दा, एडांचि ।
मराठीभाषामें	टांकाला, तरोटा ।
गुजरातीभाषामें	कुवाधियो ।
कर्णाटकीभाषामें	चमच
तैलिंगीभाषामें	तांटचमु ।
इंग्रेजीभाषामें	ओवललीव्ड केशिया । Ovalleaved Cassie
लैटिन्भाषामें	केशिया टोरा । Cassia Tora
फारसीभाषामें	संजीस वोया ।

अस्य गुणाः ।

चक्रमर्दो लघुः स्वादू रूक्षः पित्तानिलापहः ।
हृद्यो हिमः कफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन्हरेत् ॥

हन्त्युष्णं तत्फलं कुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् ।
गुल्मकासकृमिश्वासनाशनं कटुकं स्मृतम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चकवड हलका,स्वादिष्ठ,रूखा,पित्तवातनाशक,हृदयको हितकारी,शीतलतथाकफ,श्वास,कुष्ठ,दद्रु और कृमिकोनाशकरनेवालाहै। चकवडका फल-गरम है और कुष्ठ,कण्डू, दाद, विष,वात,गुल्म, खांसी, कृमि तथा,श्वासको दूर करनेवालाहै और कटु-रसान्वित है।

अन्यच्च ।

प्रपुन्नाटः स्वादु रूक्षो लघुस्तिक्तः कटुः स्मृतः ।
हृद्यः शीतः पटुश्चैव वातपित्तकफापहः ॥
दद्रुकुष्ठकृमिश्वासशिरोरुग्व्रणनाशनः ।
मेदोरोगं च पामां च त्रिदोषं चारुचिं ज्वरम् ॥
मलमूत्रस्तम्भनञ्च मेहं कासञ्च नाशयेत् ।
प्रपुन्नाटस्य बीजं तु ग्राहि चोष्णं कटु स्मृतम् ॥
कफकुष्ठश्वासकासदद्रुकण्डुविषापहम् ।
शोथं गुल्मं वातरक्तं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥
चक्रमर्दकपर्णानां शाका लघ्वी च पित्तला ।
अम्लोष्णा कफवातघ्नी दद्रुकुष्ठापहा मता ॥
पामां कण्डूं च कासं च श्वासञ्चैव विनाशयेत्। (नि.र.)

अर्थ-पमार-(चकवड),स्वादिष्ठ,रूखा,हलका,कडवा,चरपरा,हृदयको हितकारी,शीतल,खारी तथा वात, पित्त,कफ,दाद,कोढ,कृमि, श्वास,शिरोरोग(बवासीर)घाव,मेदोरोग,पामा, त्रिदोष,अरुचि,ज्वर, मल और मूत्रका रुकजाना,प्रमेह और खांसीको दूर करेहै । पमाडके बीज-मलरोधक, गरम, चरपरे तथा कफ, कोढ, श्वास, खांसी,दाह, खुजली, विष,सूजन,गुल्म और वातरक्तका नाश करनेवाले हैं ।

पमाड(चकवड) के पत्तोंका शाक-हलका,पित्तजनक,अम्ल, गरम तथाकफ,वात,दाद,कोढ,पामा,कण्डू,खांसीऔरश्वासकोहरनेवालाहै। इस शाकके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो ।

पमाडकी फली टूटकर पृथ्वीमें गिर पडतीहै जो बीज उपज निकलतेहैं ।

विवरण। पमाडका क्षुप होता है, पत्ते गोल और एक २ डंडीमें पांच पांच होते हैं, फूल पीला होताहै, उसपे फली लगती हैं । व्यवहार–बीज, मूल, छाल, पत्ते ।

अतिविषानामानि ।

काश्मीरातिविषा श्वेता विषा प्रतिविषारुणा ॥

अर्थ–काश्मीरा, अतिविषा, श्वेता, विषा, प्रतिविषा, अरुणा, (प्रविषा, उपविषा, घुणवल्लभा, शृङ्गीका, विश्वा, शृङ्गी, महौषध, श्वेतकन्दा, भृङ्गी, विरूपा, श्यामकन्दा, विषरूपा, वीरा, माद्री, अमृता, श्वेतवचा, शुक्लकन्द, भंगुरा, मृद्वी, शिशुभैषज्य, शोकापहा, अतिसारघ्नी)

संस्कृतभाषामें	अतिविषा ।
हिन्दीभाषामें	अतीस ।
वंगभाषामें	आतइच ।
मराठीभाषामें	अतिविष ।
गुजरातीभाषामें	अतलसनी कली ।
कर्णाटकीभाषामें	अतिविषा ।
तैलिङ्गीभाषामें	अतिवासा ।
लैटिन्‌भाषामें	एकोनैटम् हिटेरोफाइलम् । Acoonitum Heterophyllum

अस्या गुणाः ।

विषा सोष्णा कटुस्तिक्ता पाचनी दीपनी हरेत् ।
कफपित्तातिसारामविषकासवमिकृमीन् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–अतीस–गरम, चरपरा, कडवा, पाचक, जठराग्निको दीपन करनेवाला तथा कफ, पित्त, अतिसार, आम, विष, खांसी, वमि और कृमिरोगको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

त्रिषात्रयं च दोषघ्नं पाचनं ग्राहि तिक्तकम् ।
बालानां सर्वदा पथ्यं वमिशोफविमर्द्दनम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ–तीनों प्रकारके अतीस–त्रिदोषनाशक, पाचक, मलरोधक, कडवे बालकोंको सर्वकालमें पथ्य हैं और वमन तथा सूजनको दूर करे हैं

अपिच ।

त्रिप्रकारं चातिविषं किञ्चिदुष्णं च तिक्तकम् ।
अग्निदीप्तिकरं ग्राहि त्रिदोषाणां च पाचकम् ॥
कफपित्तज्वरामातिसारकासविषापहम् ।
यकृद्वान्तितृषां चैव कृमीनर्शांश्च पीनसम् ॥
पित्तोदरं चातिसारं सर्वव्याधिहरं मतम्। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तीनों प्रकारके अतीस- कुछेक उष्ण, कडवे, अग्निप्रदीपक, ग्राही, त्रिदोषपाचक तथा कफ,पित,ज्वर,आमातिसार,कास,विष, यकृत, वमन, तृषा, कृमि, बवासीर, पीनस, पित्तोदर और सर्व प्रकारकी व्याधिविनाशक है ।

अतिविषाभेदाः ।

अतिविषा त्रिधा ज्ञेया शुक्ला कृष्णा तथारुणा ।
रसवीर्यविपाकेषु निर्विषेत्र गुणाधिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-अतीस-श्वेत, कृष्ण और रक्त इन भेदोंसे तीन प्रकारका है यह तीनों रस वीर्य और विपाकमें समान हैं, किन्तु सफेद गुणोंमें अधिक है । मात्रा ३ मासकी ।

लोध्रनामानि ।

लोध्रस्तिरीटकं चैव शाबरो गालवस्तथा ।
द्वितीयः पट्टिकालोध्रः क्रमुकः स्थूलवल्कलः ॥
जीर्णपत्रो बृहत्पत्रः पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।

अर्थ-लोध्र, तिरीटक, शाबर, गालव, (लोध्र, लोध्रक, लोध्रवृक्ष, मार्जन, तिन्दुक, लक्तकर्म्मा, शुक्र, शवरलोध्र, महालोध्र, मार्ज्जन, बलिप्रिय, वानराघात, बलभद्र, रोध्र, भिल्लतरु, तिल्लक, काण्डकीलक, शम्बर, हस्तिलोध्रक, तिलक, काण्डनील, हेमपुष्पक, भिल्ली, शावरक, तिरीट, यह नाम साधारण लोधके हैं। दूसरा पठानी लोध होताहै, उसकी पर्याय यह है-पट्टिकालोध्र, क्रमुक, स्थूलवल्कल, जीर्णपत्र, बृहत्पत्र, पट्टी, लाक्षाप्रसादन, पट्टिकाख्य, पट्टिका, पट्टिलोध्र पट्टिलोध्रक, वल्कलोध्र, बृहद्दल, जीर्णबुध्न, बृहद्वल्क, शीर्णपत्र, आक्षिभेषज, शाबर, श्वेतलोध्र, गालव, बहुलत्वच, लाक्षाप्रसाद, वल्क)

संस्कृतभाषामें	लोध्र, पट्टिकालोध्र ।
हिन्दीभाषामें	लोध, पठानीलोध ।
वंगभाषामें	लोधकाष्ठ, पाटियालोध ।
मराठीभाषामें	लोध ।
गुजरातीभाषामें	लोदर, पठाणीलोदर ।
कर्णाटकीभाषामें	लोध ।
तैलङ्गीभाषामें	तेल्ललोदुगचेट्टुग
लैटिन्भाषामें	सिंप्लोकोसरेसिमोसा (वृक्ष) सिंप्लोकोसूक्रेटिक गोइडिस् (छाल) Symplocosracemosa, S. Cratic goides
अरबीभाषामें	मुगास् ।

लोध्रगुणाः ।

लोध्रो ग्राही लघुः शीतश्चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ।
कषायो रक्तपित्तासृग्रक्तातीसारशोथहृत ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–लोध–मलरोधक, हलका, शीतल नेत्रोंको हितकारी, कफपित्तनाशक, कषेला तथा रक्तपित्त, रुधिरविकार, रक्तातिसार और शोथ (सूजन) को दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

रोध्रद्वयं कषायं स्याच्छीतं वातकफास्रनुत् ।
चक्षुष्यं विषहृत्तत्र विशिष्टो वल्करोध्रकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ–दोनोंप्रकारके लोध–कषेले, शीतल, वातकफनाशक, रुधिरके विकारको दूर करनेवाले, नेत्रोंको हितकारी, विषके विकारोंके हरनेवाले, इन दोनोंमें पठानी लोध श्रेष्ठ है ।

अन्यच्च ।

लोध्रद्वयं तु तुवरं चक्षुष्यं शीतलं लघु ।
ग्राहकं वातकफनुद्रक्तरुक्छोफपित्तनुत् ॥
अतिसारहृच्च विषप्रदराणि विनाशयत् ।
रक्तपित्तहरं प्रोक्तं पुष्पं पाके कटु स्मृतम् ॥
तुवरं मधुरं शीतं तिक्तञ्च ग्राहकं मतम् ।
कफपित्तहरं चैव ऋषिभिः परिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके लोध-कषेले, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, हलके, ग्राही तथा वात, कफ, रक्तदोष, शोफ, पित्त, अतिसार, अरुचि, विष, प्रदर और रक्तपित्तका नाश करनेवाले हैं।

लोधका फूल- पचनेमें चरपरा, कषेला, मधुर, शीतल, कडवा, ग्राही और कफपित्तनाशक है।

भल्लातकनामानि।

भल्लातकोऽरुष्करश्च भल्लातः शोथहृत्तथा।
वह्निनामा वीरतरुर्व्रणकृद्भूतनाशनः॥

अर्थ- भल्लातक, अरुष्कर, भल्लात, शोथहृत, वह्निनामा, वीरतरु, व्रणकृत, भूतनाशन, (भल्लातकी, अग्निमुखी, वीरवृक्ष, अह्वला, अन्तःसत्त्वा, भाल्लिका, अर्शोहिता, भल्ली, निर्दहन, तपन, अनल, कृमिघ्न, शैलबीज, वातारि, स्फोटबीजक, पृथग्बीज, धनुर्वृक्ष, बीजपादप, वह्नि, महातीक्ष्णा, आग्निक, स्फोटहेतु, शोफनुत, स्नेहबीज, रक्तहर)

संस्कृतभाषामें	भल्लातक।
हिन्दीभाषामें	भिलावा।
बंगभाषामें	भेला।
मराठीभाषामें	बिबवा, बिब्बा, बिब्बे।
गुजरातीभाषामें	भिलामां।
कर्णाटकीभाषामें	केरबीज।
तैलङ्गीभाषामें	नाल्लाजीडी, जीडीविट्टलु।
औत्कलीभाषामें	भाल्लिप।
तामिलीभाषामें	शनकोट्टइ।
द्रा०	भिलवना।
इंग्रेजीभाषामें	मार्किंगनट्। Markingnut मलाकाविन Mala ccabean
लैटिन्भाषामें	सेमिकार्पसएनेकार्डियम्। Semecarpus anacardium
फारसीभाषामें	बिलादुर।
अरबीभाषामें	हबुलूकल्ब।

भल्लातकगुणाः।

भल्लातकः कषायोष्णः शुक्रलो मधुरो लघुः।

वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीगदान् ॥
हन्ति गुल्मज्वरश्वित्रवह्निमांद्यकृमिव्रणान्।(भावप्रकाश)

अर्थ-भिलावा-कषेला, गरम, शुक्रजनक, मधुर, हलका तथा वात, कफ, उदररोग, आनाह, कुष्ठ, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, ज्वर, श्वित्रकुष्ठ, अग्निमांद्य (प्रमेह) कृमि और व्रणरोगका नाश करे है।

भल्लातकफलगुणाः ।

भल्लातकफलं स्निग्धं क्रिमिदुर्नामनाशनम् ।
दन्तस्थैर्यकरं ग्राहि कषायं मधुरञ्च तत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-भिलावेंका फल-स्निग्ध, क्रिमि तथा बवासीरका नाश करनेवाला, दांतोंको स्थिर करनेवाला, ग्राही, कषेला और मधुर है।

पक्वभल्लातकगुणाः ।

भल्लातकफलं पक्वं स्वादु पाकरसं लघु ।
कषायं पाचनं स्निग्धं तीक्ष्णोष्णं छेदि भेदनम् ॥
मेध्यं वह्निकरं हंति कफवातव्रणोदरम् ।
कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरक्रिमीन् (भावप्रकाश)

अर्थ-भिलावेंका पक्का फल-मधुर, पाकमें मधुर, हलका, कषेला, पाचक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम, छेदन, भेदक, मेधाजनक, अग्निदीपक, तथा कफ, वात, व्रण, उदररोग, कुष्ठ, अर्श, संग्रहणी, गुल्म, सूजन, आनाह, ज्वर और कृमिरोगोंको दूर करे है।

अपिच ।

भल्लातस्य फलं कषायमधुरं कोष्णं कफार्तिश्रम--
श्वासानाहविबन्धशूलजठराध्मानक्रिमिध्वंसनम्॥ (रा.नि.)

अर्थ-भिलावेंका फल-कषेला, मधुर, गरम तथा कफ, श्रम, श्वास, आनाह, विबंध, शूल, उदररोग, आध्मान और क्रिमिको नाश करनेवाला है।

अस्य फलत्वग्गुणाः ।

फलत्वचा सुमधुरा स्निग्धा लघु कषायका ।
रसे कट्वी पाचिका च लघु तीक्ष्णा च भेदिका ॥
उष्णा छेदनकर्त्री च दीपनी कफनाशिनी ।

मेध्या वातश्च कुष्ठश्च व्रणं चोदरमेव च ॥
अर्शःसंग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरक्रिमीन् ।
नाशयेदिति संप्रोक्ता मुनिभिःसत्यवादिभिः॥(नि.र.)

अर्थ-भिलावेंके फलकी छाल-मधुर, स्निग्ध, हलकी, कषेली, रसमें चरपरी, पाचक, तीक्ष्ण, भेदक, गरम, छेदक, दीपन, कफनाशक, मेधाजनक तथा वात, कुष्ठ, व्रण, उदररोग, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, सूजन, आनाह,ज्वर और कृमिरोगको नष्ट करैहै ।

अस्य मज्जागुणाः ।

तथास्य फलजा मज्जा मधुरा बृंहणी स्मृता ।
वृष्या दीपनकर्त्री च तर्पणी शोफनाशिनी ॥
अरोचकं च दाहं च पित्तं वातं च नाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-इसके फलकी मज्जा-मधुर, बृंहण, वीर्यजनक, जठराग्निदीपक, तर्पण,शोफनाशक तथा अरुचि,दाह, पित्त, और वातको दूर करनेवाली है ।

अस्य वृन्तगुणाः ।

भल्लातवृन्तं मधुरं कषायं वातकोपनम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-भिलावेंका डंठल-मधुर, कषेला और वातको कुपित करे है ।

अन्यच्च ।

वृन्तमारुष्करं स्वादु पित्तघ्नं केश्यमग्निकृत ॥(भा०प्र०)

अर्थ-भिलावेंका डंठल-स्वादिष्ठ, पित्तनाशक, बालोंको हितकारी और जठराग्निदीपक है ।

भल्लातकशोधनविधिः ।

भल्लातकानि पक्कानि समानि प्रक्षिपेज्जले ।
मज्जन्ति यानि तत्रैव शुद्धयर्थं तानि योजयेत् ॥
इष्टकाचूर्णनिचयैर्घर्षणान्निर्विषं भवेत् । (आ० सं०)

अर्थ-पके भिलावें लेकर जलमें छोडदे, जितने भिलावें जलमें डूबजायँ उनको शुद्ध करनेके लिये उतनेही जलमें भिगोदे, फिर इष्टका अर्थात् ईटके चूर्णसे उनको घिसे तो वो शुद्ध हों ।

नदीभल्लातकनामानि ।

वृषांकः स्याद्गोजनको नदीभल्लातकः स्मृतः ॥

अर्थ-वृषांक, गोजनक, नदीभल्लातक ।

अस्या गुणाः ।

वृषांकस्तु भवेत्तिक्तः कषायो मधुरो हिमः ।
संग्राही वातलश्चैव कफरक्तादिपित्तहा ॥
व्रणहेति भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्तः कैयनिघण्टके । (वि.र.)

अर्थ-नदीभिलावा-कडवा, कषेला, मधुर, शीतल, ग्राही, वातकारक तथा कफपित्त, रक्तपित्त, और व्रणविनाशक है ।

इसका वृक्ष बडा होता है, पत्ते गुमाकी समान होतेहैं, फल लाल होता है ।

विजयानामानि ।

शक्राशनं तु विजया त्रैलोक्यविजया जया ॥

अर्थ-शक्राशन, विजया, त्रैलोक्याविजया, जया (मत्कुणारि, भङ्गा, इन्द्राशन, वीरपत्रा, चपला, अजया, आनन्दा, हर्षिणो, मोहिनी, भृङ्गी, धूर्त्तवधू, मातुलानी, मातुली, नीली, मनोहरा, हरा, उन्मत्तिनी, योगिनी, धूर्तपत्नी, कामाग्नि, तन्द्रारुचिवर्द्धिनी, वीरपत्री, शिवा, माया, शिवप्रिया, मत्ता, ज्ञानवल्लिका)

संविदामञ्जरी गञ्जा मादिनी हर्षिणी तथा ॥

अर्थ-संविदामञ्जरी, गञ्जा, मादिनी, हर्षिणी ।

संस्कृतभाषामें	भङ्गा, विजया, गंजा, चरस ।
हिन्दीभाषामें	भाँग, भंग, गाँजा ।
वंगभाषामें	सिद्धि, भाङ्ग, गांजा ।
मराठीभाषामें	भांग, गांजा ।
ब्रह्मीभाषामें	बिन ।
गुजरातीभाषामें	भांग्य, गांजो, चरस ।
तैलिङ्गीभाषामें	जनपरितुलु गांजाई ।
इंग्रेजीभाषामें	इण्डियन्हेंप । Indiana Hemp
लैटिन्भाषामें	कनाविस् सेटाईवा Cannabis Sativa
फारसीभाषामें	किन्नाविष वरकुलख्याल शवनवंग।
अरबीभाषामें	किन्नवकेन वुवारिरु रुहुलूवंज ।

भङ्गागुणाः ।

भङ्गा कफहरी तिक्ता ग्राहिणी पाचनी लघुः ।

तीक्ष्णोष्णा पित्तला मोहमदवाग्वह्निवर्द्धिनी॥ (भा.प्र.)

अर्थ-भंग-कफनाशक, कडवी, ग्राहक, पाचक, हलकी, तीक्ष्ण, गरम, पित्तजनक तथा मोह, मद, वाणी और अग्निको बढानेवाली है।

अन्यच्च।

शक्राशनं तु तीक्ष्णोष्णं मोहकृत्कुष्ठनाशनम्।
बलमेध्याग्निकृच्छ्लेष्मदोषहारि रसायनम्॥

अर्थ भाँग-तीक्ष्ण, उष्ण, मोहकारक, कुष्ठनाशक, बलवर्द्धक, मेधाजनक, अग्निकारक, कफनाशक, और रसायन है।

अपिच।

भृंगी तु दीपनी रुच्या ग्राहिणी पाचनी लघुः।
निद्रापित्तमदोष्णा च कामदा कफवातजित्॥

अर्थ-भंग-अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, मलको रोकनेवाली, पाचक, हलकी, निद्राजनक, पित्तकारक, कामजनक और कफ तथा वातको जीतनेवाली है।

गञ्जागुणाः।

आग्नेयी तर्षिणी बल्या मन्मथोद्दीपनी चला।
निद्रासंजननी गर्भपातिनी च विकाशिनी॥
वेदनाक्षेपहरिणी ज्ञेया च मदकारिणी।(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-गांजा-पाचक, तृष्णाकारक, बलकारक, मन्मथोद्दीपक, चित्तको चलायमान करनेवाला, निद्राजनक, गर्भको गिरानेवाला, विकाशी, वेदनाको हरनेवाला, आक्षेपको दूर करनेवाला और मदकारक है।

भंगोत्पत्तिः।

जाता मन्दरमन्थनाज्जलनिधौ पीयूषरूपा पुरा
त्रैलोक्ये विजयप्रदेति विजया श्रीदेवराजप्रिया॥
लोकानां हितकाम्यया क्षितितले प्राप्ता नरैः कामदा
सर्वातङ्कविनाशहर्षजननी वै सेविता सर्वदा॥

अर्थ-पहिले समयमें जब मंदराचल पर्वतसे समुद्र मथागयाथा, तब उस समय अमृतरूपसे भंगकी उत्पत्ति हुई। त्रिलोककी विजय देनेवाली होनेसे इसका नाम विजया हुवा, यह देवराज इन्द्रको प्यारीहै। हितकी

अभिलाष करनेसे पृथ्वीपर मनुष्योंको प्राप्त होतीहै, इसको जलके साथ मिलाकर पीनेसे काम अत्यन्त प्रबल होताहै, सर्व प्रकारके रोग शोक दूर होतेहैं और अतुल आनन्द प्राप्त होता है ।

विवरण-यह एक प्रकारका क्षुप है, इसके फूल हरे गुच्छेदार होते हैं,इसके पत्ते नीमके पत्ते समान लम्बे और कंगूरदार होते हैं, परन्तु नीमके पत्तोंसे कुछ छोटे होते हैं, प्रति दंडीपर तीन पांच अथवा सात पत्ते होते हैं, पुरुष और स्त्रीके नामसे भंग दो प्रकारकी होती है, पुरुष जातिके क्षुपसे पत्ते लिये जाते हैं और स्त्री जातिके क्षुपसें गांजेकी उत्पत्ति होती है, वंगदेशके राजशाही जिलेमें गांजेकी खेती होती है । दोनों जातिके क्षुप एक जगह रहनेसे जटा नहीं बांधीजासकती, वह यही कारण है कि भंगकी खेती हरेक स्थानमें नहीं होती । वहांपर जो पुरुष जातिके वृक्ष उत्पन्न होते हैं, उन सबको बहुत छोटेपनसे उखाड डालते हैं मुंगेर पञ्जाब और रामपूरके जिलेकी भंग उत्तम होती है । क्षुप छैः फुटसे ऊंचा नहीं होता पत्ते एक इंच लम्बे होते हैं ।

हिन्दुओंको भंग अत्यन्त प्यारी है विनाविघ्नके कार्य सिद्ध करनेको सब उत्सवोंमें यह प्रथमही पीजाती है । पश्चिमोत्तर देशमें इसका अधिक व्यवहार है ।

हमारे देशके कोई कोई भंगेडी कहते हैं,कि भंगही इस संसारमें मनभावन और परमपावन है इसी कारण भगवान् भूतनाथने इसको ग्रहण किया कोई यह भी कहते हैं कि-

सवैया ।

भीजत ही सब रीझत हैं जब धोय धरी शिवके मनमानी ।
मिर्च मसालो मिलाय दियो तब घोटकरी बाकी रस धानी॥
साकी सुरपतिरायबनी यह ब्रह्म कमण्डलुके जल छानी ।
गंगते दूनी तरङ्ग उठैं जब अंगमें आवत भंग भवानी ॥ १ ॥

कोई बोला यह ठीक नहीं बरन यों है-

साधुनके अरु सिद्धनके अरु भट्ट सुभट्टनके मनमानी ।
कामिनिके अरु दूतनके रजपूतन घोटम घोटके छानी ॥
याहिके बीच अनेकन तीरथ याहिमें गंग तरंगके पानी।
कोटिन रंग दिखावति है जब अंगमें आवति भंग भवानी॥२॥

एकने कहा भाई यह भी नहीं ऐसे है।

खायेते ज्ञानाकि खान खुले बिन खाये गमन नहीं होतहै बानी।
चाहत हैं सब योगी यती अरु देवनमें महादेवहु मानी ॥
याके समान न और कछू हमें जान परी यह मुक्तिनिसानी।
कोटिन रंग दिखावतिहै जब अंगमें आवति भंग भवानी॥३॥

किसीने कहा भाई ऐसे कहो। कवित्त।

देखत हरी है गुण अमित भरी है सिद्ध साधन धरी है ज्ञान भरी सम शेषकी। ध्यानकी पुरी है कवितान ईश्वरी है मति देवत खरी है बुद्धि करन गणेशकी ॥ जिन्होंने गही है ताय प्रभुता करी है कविलाल वरणी है ये निकाई परदेशकी। सुरईश्वरी है नरनागधीश्वरी है जल थलमें भरी है यह लाडिली महेशकी ॥ ४ ॥

मिरच मसाला सौंफ कासनी मिलाये भंग खायेते अनेकरंग अंगको उबारती। जारती जलोदर कठोदर भगंदरको सान्निपात बवासीर बावन विदारती ॥ सुकवि शिवराम दाद खाजको खराब करै क्षयी छींक छंजन नसूरको निकारती। पीनस प्रमेह बलि बावन तरहकी पीर कमर दरदको गरद करडारती ॥ ५ ॥इत्यादि.

व्यवहार-वैद्यक शास्त्रोंमें भंग और भंगके बीजोंके अतिरिक्त इसके और किसी अंशका व्यवहार नहीं देखा जाता, परंतु गांजाभी किसी किसी प्रयोगमें किया जाता है।

समुद्र मथनेके समय अमृतके साथ यह उत्पन्न हुईथी, देवेंद्र चतुरताके साथ इसका सेवन करता है। संग्राममें जानेके समय संपूर्ण देवसेना इसको पी निडरहो दैत्योंके साथ युद्ध करती। बस इसी कारणसे इसका नाम विजया हुआहै। फिर देवराजने अत्यन्त प्रसन्न होकर मनुष्योंका शोक दुःख दूर करनेके लिये इसे मृत्युलोकमें भेजा।

आयुर्वेद शास्त्रमें दोप्रकारके रोगोंकी औषधियोंमें इसका व्यवहार किया जाताहै। उदरामय परिपाक और रतिशक्ति बढानेके लिये जो औषधी बनाई जाती है उनमें भंग अधिक डाली जाती है। आजकलभी परीक्षा करनेसे भंगका एक अद्भुत गुण प्रगट हुआहै, धनुस्तम्भ रोगमें इसका धुंआ पिलानेसे शनैः शनैः आक्षेप कम हो जाता है। और रागीको भी अधिक दुर्बलता नहीं होती, बार बार भंगका धुंआ पीनेसे रोग छूट जाता है।

जिसप्रकार डाक्तर कारतागिरने भंगका धुंआ पिलाकर धनुस्तम्भके

कई रोगियोंको आरोग्य कियाहै उसका वृत्तान्त नीचेलिखतेहैं, उन्होंने छै रोगियोंको धुंवा पिलाकर आराम किया। सात रत्ती भंग तमाखूके साधारण पत्तोंमें एक नई चिलम तमाखूके समान सजाकर हुक्केके द्वारा रोगीको पिलाया था आक्षेप होनेका पहला लक्षण देखतेही रोगीको धूमपान करायागया। धुंआ पीतेही रोगी आक्षेपसे छूट नेत्र बंदकर साधारण रीतिसे सोगया। आक्षेप होनेका ध्यान होतेही इसप्रकारसे बारबार धुंआ पिलाकर उन सब रोगोंको आराम किया गया।

बम्बई देशके डाक्टर जि. सि. (G. C) लूकसने परीक्षा करके देखा है कि धुंआ पीनेसे (१) आक्षेप थोडी देरतक ठहरता है (२) धीरे धीरे आक्षेप बहुत समयके पीछे हुआ करताहै (३) आक्षेपका तेजभी धीरे धीरे कम होजाता है (४) आक्षेपके किये रोगीको अत्यन्त कृश (दुबला) होना नहीं पडता (५) वारंवार व्यवहार करनेसे फिर आक्षेप एक साथ उडजाताहै।

डाक्टर ओसागनसीने अनेक प्रकारके रोगोंमें भंगका प्रयोग कर परीक्षा की थी। उनकी राय है। धनुःस्तम्भ, जलान्तक, वातरस, तडका और विषूचिका रोगकी यह औषधी है, उनके पीछे अंगरेज डाक्टर लोग भंगको धनुस्तम्भ और विषूचिकाकी श्रेष्ठ औषधी समझतेहैं।

डाक्टर डाईमक (Dymac) ने धनुःस्तम्भके बहुतरोगियोंको केवल भंगसे आराम किया और निश्चय करदियाहै कि धनुःस्तम्भके लिये उत्तम औषधी है यह विषूचिका रोगमें अफीमके समान काम करनेवाली है रोगकी सम्प्राप्तिके समय काममें लानेसे अत्यन्त लाभ होताहै। इन रोगोंके अतिरिक्त यूनानी मतसे प्रमेह और अंत्रवृद्धिके रोगमें भंगका प्रयोग होताहै। दूधमें भंग पीसकर लेप करनेसे बवासीरीको आराम होताहै। भुनीहुई भंगका चूर्ण सहतके साथ खानेसे अतिसार, संग्रहणी और मंदाग्नि दूर होतीहै। भंगका पूरा क्षुप पीसकर नवीन घावमें लगानेसे शीघ्र आराम होताहै। और चोटकी पीडा निवारण करनेको लेप देनेसे विशेष उपकार होताहै।

मात्रा २-४ रत्ती। व्यवहार-बीज, पत्ते, जड।

खाखसफलनामानि।

खसफलेखाखसफलमुल्लसत्फलमित्यपि।

खसखस (क)

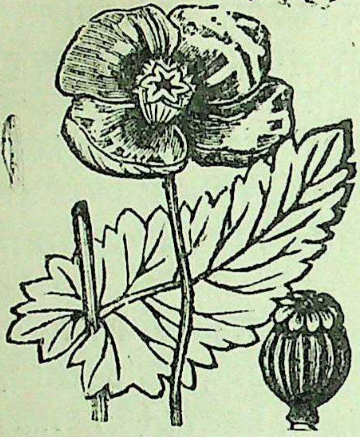

खसखस (ख)

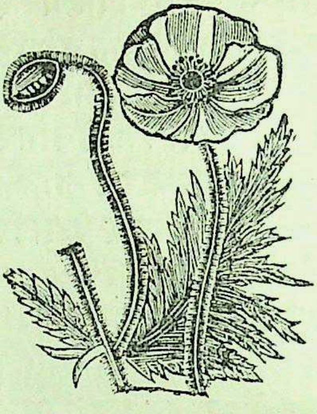

संस्कृतभाषामें	खसफल, खाखसफल, उल्लसत्फल।
हिन्दीभाषामें	पोस्त, खसखसका फल, पोस्तके डोरे।
वङ्गभाषामें	पोस्तदानारगाच्छ, पोस्तटेंडि, खाकसी।
मराठीभाषामें	पोस्त, अफूचीं बोंडें।
गुजरातीभाषामें	अफीणना डोडवा।
इंग्रेजीभाषामें	पोपिकाप्स्युलस्। Poppycapaules
लैटिनभाषामें	पापावरीस् कैपस्यूली। Papaveris. Capsulac
फारसीभाषामें	कोकनार।
अरबीभाषामें	अबुनास।

अस्य गुणाः।

स्याद्वा खसफलोद्भूतं वल्कलं शीतलं लघु।
ग्राहि तिक्तं कषायं च वातकृत्कफकासहृत्॥
धातूनां शोषकं रूक्षं मदकृद्वाग्विवर्द्धनम्।
मुहुर्मोहकरं रुच्यं सेवनात्पुंस्त्वनाशनम्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पोस्तका डोरा-शीतल, मलरोधक, कडवा, कषेला, वातकारक, कफनाशक, कासनिवारक, धातुशोषक, रूखा, मदको करनेवाला, वाणीको बढानेवाला, वारंवार मोहको उत्पन्न करनेवाला, रुचिको करनेवाला और इसको बहुत सेवन करनेसे पुरुषता नाश होतीहै।

अपिच ।

खसखसं ग्राहकं बल्यं गुरु वृष्यं कफप्रदम् ।
पाके च मधुरं वीर्य्यं कान्तिदं बलदं मतम् ॥
वातपित्तं नाशयति फलं रूक्षं च ग्राहकम् ।
रक्तशोषकरं प्रोक्तं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः (नि०र०)

अर्थ-पोस्तका वृक्ष-ग्राही, बलकारक, भारी, वृष्य, कफकारक, पाकमें मधुर, वीर्यदायक, कान्तिजनक, बलदायक, वातपित्तको शमन करनेवाला, इसका फल रूखा, ग्राही, रक्तशोषक है ।

अफेननामानि ।

अफेनं खसखसरसं निफेनं चाहिफेनकम् ॥

अर्थ-अफेन, खसखसरस, निफेन, अहिफेनक (खसफलक्षीर, आफूक, नागफेन, पोस्तोद्भव, पोस्तरस, भुजंगफेन)

संस्कृतभाषामें	अहिफेन ।
हिन्दीभाषामें	अफीम ।
वंगभाषामें	आफिंग ।
मराठीभाषामें	अफू, अपू, कडवी ।
गुजरातीभाषामें	अफेण ।
कर्णाटकीभाषामें	अफेन ।
तैलिङ्गीभाषामें	नाल्लामंदु ।
इंग्रेजीभाषामें	ओपियम् Opium
लैटिन्भाषामें	ओपियम् । Opium
फारसीभाषामें	अफयून तिर्य्याक ।
अरबीभाषामें	लवनुल खसखास ।

अस्य गुणाः ।

जारणो मारणश्चैव धारणः सारणस्तथा ।
अहिफेनश्चतुर्धोक्तो गुणांस्तस्य ब्रवीमि ते ।
वृष्यो बलकरो ग्राही सप्तधातुविशोषकः ॥
वातपित्तकृदानंदकारको नेत्रमादकः ।
वीर्य्यस्तम्भकरस्तिक्तोमधुरश्च प्रकीर्तितः ॥
सन्निपातकृमिकफपाण्डुक्षयविनाशकः ।

मेहादीञ्छ्वासकासौ च प्लीहां धातुक्षयं तथा ॥
नाशयेदिति च प्रोक्तो विशेषस्तस्य कथ्यते ।
श्वेतवर्णो जारणः स्याद्भुक्तमन्नं च जारयेत् ॥
मृतिप्रदः कृष्णवर्णो मारणस्तु प्रकीर्तितः ।
जरानाशकरः पीतो धारणः संप्रकीर्तितः ॥
चित्रवर्णः सारणः स्यान्मलसारणकार्यतः । (नि०र०)

अर्थ-अफीम-जारण, मारण, धारण और सारण, इन भेदोंसे चार प्रकारकी है ।

गुण-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, ग्राही, सप्तधातुशोषक, वातपित्तकारक, आनंदकारक, नशेको करनेवाली, वीर्यको स्तम्भन करनेवाली, कडवी, मधुर तथा सन्निपात, कृमि, कफ, पाण्डुरोग, क्षय, प्रमेह, श्वास, खांसी, प्लीहा और धातुक्षयको क्षय करेहै । सफेद्रंगकी अफीम अन्नको जारण (जीर्ण) करे है, इसकारण इसको जारण कहते हैं। काले रंगकी अफीम मृत्युकारक है इसकारण इसको मारण कहते हैं । पीले रंगकी जरानाशक है इसको धारण कहते हैं । चित्र वर्णकी अफीम मलको सारण करतीहै, इसको सारण कहते हैं ।

खसखसनामानि ।

उच्यन्ते खसबीजानि ते खाखसतिला अपि ॥

अर्थ-खसबीज, खाखसतिल, (सूक्ष्मतण्डुल, सूक्ष्मबीज, सुबीज, तिलभेद, खसतिल)

संस्कृतभाषामें	खसबीज, खसतिल ।
हिन्दीभाषामें	खसखस, खसखसके दाने ।
वंगभाषामें	पास्तदाना ।
तै० ता०	गसगस ।
मराठीभाषामें	खसखस ।
गुजरातीभाषामें	खसखस ।
इंग्रेजीभाषामें	पोपीसीड्स् Poppy seeds
लैटिन्भाषाम	पापावरसोम्निफरम् । Papavar somniferum
तु०	कसकसे ।

मला०	कशकश।
फारसीभाषामें	तुख्मेकोकनार ।
अरबीभाषामें	हबुलकोकनार ।

अस्य गुणाः ।

खसबीजानि बल्यानि वृष्याणि मधुराणि च ।
जनयन्ति कफं तानि शमयन्ति समीरणम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-खसखस-बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी, मधुर, ग्राहक, और वातविनाशक है ।

विवरण । पोस्तकी खेती पूर्व, दक्षिण और रुहेलखण्डमें अधिकतासे होतीहै । इसका क्षुप चार फूटका होताहै, फूल सफेद, लाल और काले रंगके अतीव सुन्दर गुल्लालेकी समान आते हैं, उसपै डोडे लगतेहैं उन डोडोंको छुरीकी नोकसे गोद देतेहैं, उनमेंसे जो दूध निकलताहै, उस दूधको इकट्ठा करलेते हैं उसको पकाकर अफीम बनातेहैं और डोडेके भीतर जो बीज होतेहैं उनको खसखस कहते हैं ।

यवक्षारनामा

पाक्यं क्षारो यावशूको यवक्षारो यवाग्रजः ।

अर्थ-पाक्य, क्षार, यावशूक, यवक्षार, यवाग्रज, (यवलास, यवशूक, सारक, रेचक, यवनालक, तिर्यं, तीक्ष्णरस, यवनालज, यवज, यवशूकज, यवाह्व, यवापत्य)

संस्कृतभाषामें	यवक्षार ।
हिन्दीभाषामें	जवाखार ।
वंगभाषामें	यवक्षार, सोरा ।
मराठीभाषामें	जवखार ।
गुजरातीभाषामें	जवखार ।
कर्णाटकीभाषामें	यवक्षार ।
तैलिङ्गीभाषामें	यवखारं ।
इंग्रेजीभाषामें	कार्बोनेट ऑफ् पोटाश । Carbonate of Potash
लैटिन्भाषामें	पोटाश्यं कार्बोनास् । Potassium Carbonass
अरबीभाषामें	नुतरुन् ।

अस्य गुणाः ।

यवक्षारो लघुः स्निग्धः स सूक्ष्मो वह्निदीपनः ।
निहन्ति शूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान् ॥
पाण्डुर्शोग्रहणीगुल्मानाहप्लीहहृदामयान् । (भा०प्र०)

अर्थ-जवाखार-हलका, स्निग्ध, सूक्ष्म, अग्निप्रदीपक तथा शूल, वात, आम, कफ, श्वास, गलरोग, पाण्डुरोग, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, आनाह, प्लीहा और हृदयरोगको हरे है ।

अन्यच्च ।

यवक्षारो हिमः श्रेष्ठः शर्कराश्मरिकृच्छ्रजित् ।
निहन्तिशूलवातामपुंस्त्वगुल्मादिजन्तुजित् ॥ (गणनि.)

अर्थ-जवाखार-शीतल, श्रेष्ठ तथा शर्करा, अश्मरीरोग, शूल, वात, आम, पुरुषता, गुल्मादिरोग और क्रिमिको दूर करेहै ।

अपिच ।

यवक्षारः सरश्चोष्णः कटुरग्निप्रदीपकः ।
सूक्ष्मो लघुर्वातकफशूलाश्मरिरुजापहः ॥
वातरोगं कण्ठरोगमामशूलाश्मरीहरः ।
यकृत्प्लीहामूत्रकृच्छ्रगुल्मश्वासार्शनाशनः ॥
आनाहवातं हृद्रोगमामं पाण्डुरुजं तथा ।
ग्रहणीं नाशयत्येवं पूर्वाचार्यनिरूपितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-जवाखार-सारक, उष्ण, चरपरा, अग्निदीपक, सूक्ष्म, लघु, तथा वात, कफ, शूल, अश्मरी, वातरोग, कण्ठरोग आमशूल, यकृत्, प्लीहा, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म, श्वास, अर्श, आनाह, वात, हृदयरोग आम, पाण्डुरोग और संग्रहणीका नाश करनेवाला है।

विवरण । कच्चे जौओंके पञ्चांगको अग्निमें जलाकर राख करलेवे फिर उस राखकी कशूमकी भांति रैनी टपकालेवे फिर उसको अग्निपर कढाईमें चढाकर उसका पानी जलादेवे जब वह जमजाय तो उसको कढाईमेंसे खुरचकर एक कांचके पात्रमें रखदेवे इसको जवाखार कहते हैं ।

स्वर्जिकाक्षारनामानि ।

कपोता स्वर्जिका स्वर्जिः शूलघ्नी सुखवर्चकः ॥

अर्थ-कपोत, स्वार्जिका, स्वार्जि, शूलघ्नी, सुखवर्चक (सौवर्चल, रुचक, सृज्जिकाक्षार, सार्जिका, क्षार, सुनर्चिक, स्रुघ्नी, योगवाही, स्वर्जका, सुरवर्चक, सुघ्निका, सर्जि, सर्जिक्षार, स्वार्जिक, सुखोर्जिक, सुवर्जिक, स्वार्जिक्षार, सुवार्चि, सुवर्चा, स्व।र्जिकाक्षार)

संस्कृत भाषामें	स्वार्जिक्षार ।
हिन्दीभाषामें	सज्जी ।
वंगभाषामें	साजिखार, साजिमाटि ।
मराठा भाषामें	सज्जीखार ।
गुजराथी भाषामें	साजीखार ।
कर्णाटकी भाषामें	साजिखारु ।
इंग्रेजी भाषामें	कार्बोनेट आफ् सोडा । Carbonate of soda
लैटिन्भाषामें	आर्थोक्नेमम्इंडिकम्, केरोक्सीलन्फिटिडं Arthrocnemem Indicum Caroxylon foetidum
फारसीभाषामें	संजारकलीया ।
अरबीभाषामें	कलीवशव्वुलअसफर ।

अस्य गुणाः ।

स्वर्जिक्षारः कटुश्चोष्णस्तीक्ष्णो गुल्मविनाशकः ।
शूलं वातं कफं चैव कृमीनाध्मानवातकम् ॥
उदरस्य च वातं च नाशयेदिति कीर्त्तितः ।(नि०र०)

अर्थ-सज्जी-चरपरी, गरम, तक्ष्ण, गुल्मनाशक तथा शूल, वात, कफ, कृमि, आध्मान, वायु और उदरकी वातको दूर करनेवाली है।

विवरण। वृक्षोंके पश्चाङ्गके तुकडेकरके मलवार प्रांतकी ओर बडी बडी खाई बनाकर उनमें भरदेतेहैं और उसमें आग लगातेहैं पछि वह अपने आप जलकर जमजाते हैं इसको खारी कहते हैं । यह खारी जमीनमें बनाई जातीहै ।

टङ्कणक्षारनामानि ।

लोहद्रावी टङ्कणश्च सुभगो धातुवल्लभः ॥

अर्थ-लोहद्रावी, टङ्कण, सुभग, धातुवल्लभ, (पाचनक, मालतीतीरज, लोहश्लेषण, रसशोधन, रसाधिक, लोहद्रावी, रसघ्न, वर्त्तुल, कनकक्षार, मालिन, टङ्कण, मालतीतीरसम्भव, द्रावक, लोहशुद्धिकारक, रङ्गद, स्वर्णपाचक, टङ्ग, धातुसान्धिकर, सौभाग्य, श्वेतटङ्कण)

संस्कृतभाषामें	टङ्कणक्षार ।
हिन्दीभाषामें	सुहागा ।
वंगभाषामें	सोहागा ।
मराठीभाषामें	स्वागीखार, टांकणखार ।
गुजरातीभाषामें	टंकणपाढियो, टंकणफूलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	टंकणखारु, विलीयटंकणु ।
तैलङ्गीभाषामें	एलिगारमु ।
इंग्रेजीभाषामें	बोराक्स, बायबोरेट ऑफ् सोडा । Borax Biborate of soda
लैटिन्भाषामें	सोडासूबाइंबोरास् । Sodas Bidoras
फारसीभाषाम	तीगार ।
अरबीभाषामें	बरग ।

अथ गुणाः ।

कथितष्टंकणक्षारः कटूष्णः कफनाशनः ।
स्थावरादिविषघ्नश्च कासश्वासापहारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सुहागा-कटु, उष्ण तथा कफ, स्थावरादि विष, खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अपिच ।

टंकणं वह्निकृद्रूक्षं कफहृद्वातपित्तकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सुहागा-अग्निजनक, रूखा, कफनाशक और वातपित्तको करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

टंकणो द्रावणो भेदी विषहारी ज्वरापहः ।
गुल्मामशूलशमनो वातश्लेष्महरः परः ॥ (ग० नि०)

अर्थ-सुहागा-द्रावण, धातुको पतला करनेवाला, भेदक तथा विष, ज्वर, गुल्म, आम, शूल,वात और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

मालतीतीरजः क्षारस्तीक्ष्णो वह्निप्रदीपकृत् ।
विरूक्षणोनिलकरः श्लेष्मघ्नः पित्तदूषकः ॥

अर्थ-सुहागा-तीक्ष्ण, जठराग्निको दीपन करनेवाला, विरूक्ष, वातकारक, कफनाशक और पित्तको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

टंकणोऽग्निकरो रूक्षःकफघ्नोरोचनोलघुः॥(रसचन्द्रिका)

अर्थ-सुहागा-अग्निकारक, कफनाशक, रोचक और हलका है ।

अपिच ।

टंकणो भेदको रूक्षः कटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पित्तलोष्णो वातकरस्तिक्तस्तीक्ष्णः पटुः स्मृतः ॥
धातुद्रावी ज्वरं वातं कफं जंगमजं विषम् ।
स्थावरं च विषं वांतिं वातरक्तं च नाशयेत् ॥
कासं श्वासं नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-सुहागा-भेदक, रूक्ष, कटु, अग्निदीपक, पित्तजनक, उष्ण, वातवर्द्धक, तिक्त, तीक्ष्ण, खारी, धातुको पतला करनेवाला तथा ज्वर, वात, कफ, जंगमविष, स्थावरविष, वमन, वातरक्त, खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लोहद्रावी तीक्ष्णोष्णश्च बलवह्निविवर्द्धनः ॥(शोडलनि०)

अर्थ-सुहागा-तीक्ष्ण, गरम और बल तथा जठराग्निको बढानेवाला है ।

श्वेतटंकणगुणाः ।

सुश्वेतं टंकणं स्निग्धं कटूष्णं कफवातनुत् ।
आमक्षयापहच्छ्वासविषकासमलापहम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सफेद सुहागा-स्निग्ध, कटू, उष्ण, कफवातनाशक तथा आम, क्षय, श्वास, विष, खांसी और मलको हरनेवाला है ।

टंकणशोधनविधिः ।

आदौ टंकणमादाय काञ्जिकाम्ले विनिक्षिपेत् ।
एकरात्रात्समुद्धृत्य रौद्रयन्त्रे विभावयेत् ॥
नरमूत्रगतं टंकं गवां मूत्रगतं तथा ।
दिनान्ते तत्समुद्धृत्य जम्बीराम्लगतं कुरु ॥
जम्बीराम्लात् समुद्धृत्य नारिकेलस्य पात्रके ।

मरीचचूर्णसंयुक्तं क्षालयेच्छीतलाम्बुना ॥
एवं टंकणमादाय सर्वरोगेषु योजयेत् ।

अन्यच्च ।

टंकणं वह्नियोगेन स्फुटितं शुद्धतां व्रजेत्॥ (रसेंद्रसारसं०)

अर्थ-प्रथम सुहागेको लेकर कांजीमें छोड दे,एक रात्रि पीछे निकालकर रौद्रयन्त्रमें पचावे, फिर मनुष्यके मूत्रमें डालकर गोमूत्रमें डाले फिर सायंकालको निकालकर जम्भीरीनींबूके रसमें डाले, उसमेंसे निकालकर नारियलके पात्रमें गेरकर कालीमिर्चके चूर्णयुक्त शीतल जलसे धोवे,इस प्रकार सुहागेको शोधकर सर्व रोगोंमें दे। सुहागा अग्निके संयोगसे खिलकर शुद्ध होताहै।

विवरण। सुहागेकी खान विशेष करके उत्तरखण्डमें पाई जाती है प्रायः भोटानदेशसे भोटिये लोग इसको खोद खोदकर बकरोंमें भरलातेहैं। इसको कहीं कहीं पकातेहैं।

सैन्धवनामानि।

सिन्धूद्भवं माणिमन्थं नादेयं लवणोत्तमम् ॥

अर्थ-सिन्धूद्भव,माणिमन्थ,नादेय,लवणोत्तम(सिताशिव,सितासिव शिताशिव, शीतासिव, सिन्धूज,सिन्धूपल,वशिर,सिन्धूदेशज,माणिबन्ध, सिन्धुमन्थज,सिंधुलवण, सिंधुभव, सिन्धुसम्भव,नादेय,शिव, सिद्ध, शिवात्मज, पथ्य, माणिमन्थ, शुद्ध, शीताशिव)

संस्कृतभाषामें	सैन्धव।
हिन्दीभाषामें	सैंधानोंन।
वङ्गभाषामें	सैन्धवलवण।
मराठीभाषामें	सेंधलोण।
गुजरातीभाषामें	सिंधालुण।
कर्णाटकीभाषामें	सैंधवं।
तैलिङ्गीभाषामें	सिंधुउपु।
इंग्र-	क्लोराइडऑफसोडियं Chloride of sodium
लैटि०	सोडियाइक्लोराईडम्। Sodii Chloridum
फारसीभाषामें	नमकेसंग, बिलोरी, नमकेसेंध।
अरबीभाषामें	मिलहेहिन्दी।

अस्य गुणाः।

सैन्धवं लवणं स्वादु दीपनं पाचनं लघु ।
स्निग्धं रुच्यं हिमं वृष्यं सूक्ष्मं नेत्र्यं त्रिदोषहृत्॥ भा०प्र०

अर्थ-सैंधानोंन-स्वादिष्ठ, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, सूक्ष्म, नेत्रोंको हितकारी और त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

सैन्धवं रुचिदं वृष्यं चक्षुष्यं चाग्निदीपनम् ।
शुद्धं स्वादु लघु स्निग्धं पाचनं शीतलं मतम् ॥
अविदाहि तु सूक्ष्मं च हृद्यं चैव त्रिदोषहम् ।
व्रणदोषं मलस्तम्भं हृद्रोगं चैव नाशयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-सैंधानोंन-रुचिदायक, वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, शुद्ध, स्वादिष्ठ, हलका, स्निग्ध,पाचक,शीतल,अविदाही, सूक्ष्म, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक तथा व्रणदोष, मलस्तम्भ और हृदयरोगका नाश करेहै ।

सैंधानोंन-सिंधकी ओरसे आताहै, सैंधानोंन आंखके लिये अत्यन्त हितकारी है, जिस मनुष्यका मल सूखगया हो और दस्त न आताहो,उसको घीके साथ सैंधानोंन देनेसे तुरन्त दस्त आवेगा, सैधानोंन तेलके साथ लगानेसे अनेकप्रकारके त्वचाके रोगोंको दूर करताहै हाथमें धारण करनेसे बंधीहुई नसोंको छुडादेताहै । सब प्रकारके नमकोंमें श्रेष्ठ है ।

शाकम्भरीलवणनामानि ।

शाकम्भरीयं वसुकं रौमलवणं रौमकम् ॥

अर्थ-शाकम्भरीय, वसुक, रौमलवण, रौमक, (रोमक, गडाख्य, गडलवण, शुभ्र, पृथ्वीज, गडदेशज, गडोत्थ, महारम्भ, साम्भर, सम्बरोद्भव)

संस्कृतभाषामें	शाकम्भरीय।
हिन्दीभाषामें	साँभरनोंन ।
वंगभाषाम	सामलुण ।
मराठीभाषामें	साम्बरलोण, साम्भरमीठ ।
गुजरातीभाषामें	वडागरुंमीठ ।
कर्णाटकीभाषामें	गाढलवण, सम्भरदेशज ।
फारसीभाषामें	मिलहेअवकीर ।

अस्य गुणाः ।

शाम्भरं दीपनं चोष्णं कोष्ठशुद्धिकरं लघु
किञ्चिदम्लमभिष्यंदि पाके च कटुकं मतम् ॥
तीक्ष्णं पित्तकरं भेदि व्यवायि कफनाशकम् ।
सूक्ष्मं चार्शःकफानाहमलवातांश्च नाशयेत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सामर-दीपन, गरम, कोष्ठशोधक, हलकी, किञ्चित् अम्ल, अभिष्यन्दि, पाकमें कटु,. तीक्ष्ण, पित्तकारक, भेदक, व्यवायि, कफनाशक, सूक्ष्म तथा बवासीर, कफ, आनाह, मल और वातको दूर करेहै । सामरनमक मारवाड देशके प्रसिद्ध सामर सरोवरमें उत्पन्न होताहै ।

समुद्रलवणनामानि ।

सामुद्रिकं त्रिकूटं च वशिरं लवणाब्धिजम् ।

अर्थ-सामुद्रिक त्रिकूट, वशिर, लवणाब्धिज (वासर, कडक, शिव, सागरज, अक्षीर, सामुद्रज, लवणोदधिसम्भव, सामुद्रिक)

संस्कृतभाषामें	समुद्रलवण ।
हिन्दीभाषामें	समुद्रनोंन, पांगा ।
वंगभाषामें	करकचनुन ।
मराठीभाषामें	मीठ ।
गुजरातीभाषामें	मीठूं ।
कर्णाटकीभाषामें	वडागर लवण ।
तैलिङ्गीभाषामें	उपुं ।
इंग्रेजीभाषामें	साल्ट् । Salt
लैटिन्भाषामें	सोडिआ इम्युरास् । Sodi iMuras
फारसीभाषामें	नमक ।
अरबीभाषामें	मिलह् शारा ।

अस्य गुणाः ।

सामुद्रं लवणं पाके नात्युष्णमविदा च ।
भेदनं मधुरं स्निग्धं शूलघ्नं नातिपित्तलम् ॥ (रा० वि०)

अर्थ-समुद्रनोंन-किंचित उष्ण, अविदाहि, भेदक, मधुर, स्निग्ध, शूलनाशक और अत्यन्त पित्तकारक नहीं है ।

अन्यच्च ।

सामुद्रं मधुरं पाके सतिक्तं मधुरं गुरु ।
नात्युष्णं दीपनं भेदि सक्षारमविदाहि च ॥
श्लेष्मलं वातनुत्तिक्तं सरूक्षं नातिशीतलम् । (भा. प्र.)

अर्थ-समुद्रनोंन-पचनेमें मधुर, तिक्त, मधुर, भारी, किंचित् उष्ण, दीपन, भेदक, क्षाररसयुक्त, अविदाही, कफकारक, वातनाशक, कडवा, रूखा और अत्यन्त शीतलभी नहीं है ।

अन्यच्च ।

सामुद्रं रुचिदं हृद्यमग्निदीप्तिकरं मतम् ।
केशशौक्ल्यकरं भेदि ह्यविदाहि बलासकृत् ॥
पाके तु मधुरं प्रोक्तं कटु तिक्तं गुरु स्मृतम् ।
किञ्चिदुष्णं पित्तलं च क्षारं स्निग्धं च शूलनुत् ॥
वातनाशकरं स्वादु ऋषिभिः परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-समुद्रनोंन-रुचिदायक, हृदयको हितकारी, बालोंको धवल करनेवाला, भेदक, अविदाहि, कफकारक, पचनेमें मधुर, कटु, तिक्त, भारी, किंचित् उष्ण, पित्तजनक, खारी, स्निग्ध, शूलनाशक वाताविनाशक और स्वादिष्ठ है ।

विवरण । समुद्रके जलको जमाकर समुद्रनोंन बनाते हैं ।

विड्लवणनामानि ।

विडं विड्लवणं धूर्तं विड्गन्धं कृतकं तथा ॥

अर्थ-विड्, विड्लवण, धूर्त, विड्गन्ध, कृतक, (कालालवण, द्राविडक, खण्ड, क्षार, आसुर, सुपाक्य, खण्डलवण, कृत्रिमक, द्राविडक, पाक्य, विट)।

संस्कृतभाषामें	विड्लवण ।
हिन्दीभाषामें	विरियासंचरनोंन, कटीलानोंन ।
वंगलाभाषामें	विट्नुन ।
मराठीभाषामें	विड्लोण ।
गुजरातीभाषामें	विड्लवण ।

अस्य गुणाः ।

विडं लवणमुत्क्लेदि वह्नेर्बलविवर्द्धनम् ।
मलवातमविष्टम्भशूलाटोपविबन्धनुत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-विरियासंचरनोंन-उत्क्लेदक, जठराग्निवर्द्धक, बलवर्द्धक तथा मल, वात, आम, विष्टम्भ, शूल, आटोप और विबन्धको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

विडं क्षारो लघुश्चोष्णो रुच्यस्तीक्ष्णोऽग्निदीपनः ।
वातानुलोमनो रूक्षो व्यवायी शूलनाशनः ॥
वातनाशकरो मेहगुल्माजीर्णविनाशनः ।
मलावष्टम्भकानाहवातहृद्रोगनाशनः ॥
जाड्यं कफं च दद्रूं च नाशयेदिति कीर्तितम्। (नि०र०)

अर्थ-विरियासंचर-हलका, गरम, रुचिकारक, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, वातानुलोमन, रूक्ष, व्यवायि तथा शूल, वात, प्रमेह, गुल्म, अजीर्ण, मलावष्टम्भ, आनाह, वात, हृदयरोग, जडता, कफ और दादको दूर करनेवालाहै ।

विवरण । विड्लवण प्रसारणीके क्षारका बनाया जाताहै ।

सौवर्चललवणनामानि ।

अक्षं सौवर्चलं रुच्यं दुर्गन्धं शूलनाशनम् ॥

अर्थ-अक्ष, सौवर्चल, रुच्य, दुर्गन्ध, शूलनाशन, (रुचक, कृष्णलवण, तिलक, हृद्यगन्ध, कोद्राविक, पाक्य, मेचक और मन्थपाक)

संस्कृतभाषामें	सौवर्चल ।
हिन्दीभाषामें	कालानोंन, चौहारकाडा, सोंचरनोंन ।
बंगलाभाषामें	सचल लवण ।
मराठीभाषामें	पादेलोण ।
गुजरातीभाषामें	संचल ।
कर्णाटकीभाषामें	साम्चल ।
तैलिंगीभाषामें	नालुउपु ।
इंग्रेजीभाषामें	अनाकासोडि अंक्लोराईड। Unaqua Sodium Chloride
लेटिनभाषामें	अनाका सोडिआई क्लोरेइडम् Unaqua sodii Chloridum
फारसीभाषामें	नमक शिया ।
अरबीभाषामें	मला अस्वद ।

अस्य गुणाः ।

कृष्णलवणं वीर्योष्णं रुचिदं निर्मलं कटु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नं किंचित्पित्तकरं लघु॥ (वि०ति०भा०)

अर्थ-कालानोंन-उष्णवीर्य्य,रुचिदायक,निर्मल,कटु तथा गुल्म, शूल और विबन्धका नाश करे है किञ्चित पित्तजनक और हलका है।

अन्यच्च ।

सौवर्चलं कटु क्षारं वीर्य्योष्णं विशदं लघु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नं हृद्यं सुरभि रेचनम् ॥
आनाहारोचकं जन्तूनूर्द्ध्ववातं च नाशयेत् । (ध०नि०)

अर्थ-कालानोंन-कटुरसयुक्त, क्षाररसान्वित, उष्णवीर्य, विशद, हलका, हृदयको हितकारी, सुगन्धित, दस्तावर तथा गुल्म, शूल, विबन्ध, अफारा, अरुचि, कृमि और ऊर्ध्ववातका नाश करे है

अन्यच्च ।

रुचिकं रोचनं भेदि दीपनं पाचनं परम् ।
सस्नेहं वातनुन्नातिपित्तलं विशदं लघु ॥
उद्गारशुद्धिदं सूक्ष्मं विबन्धानाहशूलहृत् । (भा० प्र०)

कालानोंन-रोचक, भेदक, दीपन, पाचक, स्नेहयुक्त, वातनाशक, अत्यन्त पित्तजनक, विशद, हलका, डकारको शुद्ध करनेवाला, सूक्ष्म तथा विबन्ध, आनाह और शूलको निर्मूल करे है ।

विवरण । यह सज्जी और मीठे नोंनसे बनाया जाताहै ।

काचलवणनामानि ।

काचं त्रिकूटं पाक्याह्वं लवणं काचसम्भवम् ॥

अर्थ-काच, त्रिकूट, पाक्याह्व, लवण, काचसंभव (काचलवण, नील, काचोद्भव, काचसौवर्चल, नीलक, कृष्णलवण, पाकजकाचोत्थ, हयगन्ध, काललवण, कुरुविन्दकाचमल, कृत्रिम, नीककाचोद्भव)

संस्कृतभाषामें	काचलवण ।
हिन्दीभाषामें	कचियानोंन ।
वंगभाषामें	कालाल़ोण ।
मराठीभाषामें	बांगडखार ।
गुजरातीभाषामें	बंगडोखार ।

अस्य गुणाः ।

काचं दीपनमत्युष्णं रक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-काचियानोंन-अग्निको दीपन करनेवाला, अत्यन्त उष्ण और रक्तपित्तवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

काचादिलवणं रुच्यं किञ्चित्क्षारं च पित्तलम् ।
दाहकं कफवातघ्नं दीपनं गुल्मशूलहृत् ॥ (राजनि०)

अर्थ-काचियानोंन-रुचिकारी, कुछेक खारी, पित्तजनक तथा दाह, कफ, वात, गुल्म और शूलका नाश करेहै और दीपनहै ।

विवरण । काचलवण काँचसे बनायाजाताहै ।

औद्भिदनामानि ।

औद्भिदं पांशुलवणं यज्जातं भूमितः स्वयम् ।

अर्थ-औद्भिद, पांशुलवण यह उसके नाम हैं, जो स्वयं (आपही) पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै ।

हिन्दीभाषामें	रेहगवानोंन ।

अस्य गुणाः ।

क्षारं गुरु कटु स्निग्धं शीतलं वातनाशनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-रेहगवानोंन-खारी, भारी, कटु, स्निग्ध, शीतल और वातनाशक है ।

अन्यच्च ।

औद्भिदं तीक्ष्णमुत्क्लेदि सक्षारं कटु तिक्तकम् ॥ (रा०व०)

अर्थ-रेहगवा-तीक्ष्ण, उत्क्लेदी, क्षारगुणयुक्त, चरपरा और कडवा है ।

विवरण । रेहगवां नमक प्रायः जंगलदेशकी खारी जमीनमें उत्पन्न होताहै इसको रेह भी कहते हैं ।

औषरलवणनामानि ।

औषरकं सार्वगुणं सार्वसंसर्गलवणमूषरजम् ।
साम्भारं बहुलगुणं च मिश्रकं नवधा (१) ॥

अर्थ-औषरक, सार्वगुण, सार्वसंसर्गलवण, ऊषरज, साम्भार, बहुलगुण, मिश्रक ।

संस्कृतभाषामें	औषरलवण ।
हिन्दीभाषामें	खारीनोंन ।

वंगभाषामें	खारीनुन ।	
मराठीभाषामें	खारादिमीठ, उषर भूमीवर पिकतें तें ।	
इंग्रेजीभाषामें	कार्बोनेट आफ् सोडा ।	Carbonate of soda
लैटिन्भाषामें	सोडीयंकार्बानास्	Sodium carbon
फारसीभाषामें	बोरे अर्मनी ।	
अरबीभाषामें	बोद्कवहलोज ।	

अस्य गुणाः ।

औषरं तु पटु क्षारं तिक्तं वातकफापहम् ।
विदाहि पित्तकृद्ग्राहि मूत्रसंशोषकारि च ॥ (रा० नि०)

अर्थ-खारीनोन-पटु, क्षार, कडवा, वातकफनाशक, दाहजनक, पित्तकारक, ग्राही और मूत्रको सुखावै है ।

विवरण । खारी नमक स्वयं खारी पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै ।

रोमकलवणगुणाः ।

रोमकं तीक्ष्णमत्युष्णं पटु तिक्तं च दीपनम् ।
दाहशोषकरं ग्राहि पित्तकोपकरं परम् ॥

अर्थ-रोमकलवण-तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, पटु, कडवा, दीपन, दाहजनक, शोषकारक, ग्राही और पित्तको कुपित करे है ।

द्रोणीलवणनामानि ।

द्रौणेयं वार्द्धेयं द्रोणीजं वारिजं च वार्द्धिभवम् ।
द्रौणीलवणं द्रौणं त्रिकटुलवणं च वसुसंज्ञम् ॥

अर्थ-द्रौणेय, वार्द्धेय, द्रोणीज, वारिज, वार्द्धिभव, द्रौणीलवण, द्रौण, त्रिकटु लवण ।

अस्य गुणाः ।

द्रौणेयं लवणं पाके नात्युष्णमविदाहि च ।
भेदनं स्निग्धमीषच्च शूलघ्नं चाल्पपित्तलम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-द्रोणीलवण-पचनेमें किञ्चित् उष्ण, अविदाही, भेदक, कुछेक स्निग्ध, शूलनाशक और अल्पपित्तजनक है ।

नरसारनामानि ।

क्षारश्रेष्ठोऽमृतक्षारश्चूलिकालवणाभिधः ।
सादरो नरसारश्च वज्रक्षारो विदारणः ॥

अर्थ-क्षारश्रेष्ठ, अमृतक्षार, चूलिकालवण, सादर, नरसार, वज्रक्षार, विदारण।

संस्कृतभाषामें	नरसार।
हिन्दीभाषामें	नवसादर।
वंगभाषामें	निशादल।
मराठीभाषामें	नवसागर।
गुजरातीभाषामें	नवसार।
इंग्रेजभाषामें	आमान्य, क्लोरिडम्। Ammonium Chloridum
लैटिन्भाषामें	आमोन्यम्मूरिआस। Ammonium Muriaus
अरबीभाषामें	नवसादर खुराशानी।

अस्य गुणाः।

पटुप्रवृत्तिशालीनां (?) स्रावणः शोथहृद्धिमः।
यकृद्दोषे ज्वरे प्लीहे शिरःशूलेऽर्बुदादिषु॥
स्तनरोगे रक्तपित्ते कासे भग्नामये तथा।
योनिव्यापत्सु च ज्ञेयो नरसारः सुखावहः॥

अर्थ-नवासादर-शोथनाशक, शीतल तथा यकृत् रोगमें, प्लीहारोगमें, ज्वरमें, शिरके शूलमें, अर्बुदादिकमें, स्तनरोगमें, रक्तपित्तमें, खांसीमें, भग्नरोगम और योनिव्यापद्रोगमें सुखदायक है।

अन्यच्च।

नरसागरकस्तीक्ष्णः सरो व्रणविदारणः।
रसजारणकारी स्यादतिचोष्णश्चगुल्मनुत्॥
मलस्तम्भंचोदरंचशूलंप्लीहाञ्च नाशयेत्।

अर्थ-नवसादर-तीक्ष्ण,सारक, व्रणविदारक, रसजारणकारक, अत्यन्त उष्ण, गुल्मनाशक तथा मलस्तम्भ, उदररोग, शूल और प्लीहाका नाश करनेवाला है।

अस्य प्रस्तुतकरणं यथा।

औष्ट्रं वा माहिषं गव्यं पुरीषं भस्मतां गतम्।
क्षारपाकविधानेन नृसारः सिद्ध उच्यते (भा० प्र०)

अर्थ-ऊंट, भैंस और गायके गोवरकी क्षार पाकविधिसे भस्म करने पर नरसार सिद्ध होताहै।

अस्य शोधनविधिर्यथा ।

नरसारो भवेच्छुष्कश्चूर्णतोये विपाचितः ।
दोलायन्त्रेण यत्नेन भिषग्भिर्योगसिद्धये॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-सूखे नौसादरका चूर्ण दोलायन्त्र करके जलमें पचावे इस प्रकार वैद्योंने इसकी शुद्धि कही है ।

विवरण-नवसादर कृत्रिम और अकृत्रिम इन भेदोंसे दोप्रकारका है जो मनुष्यके मूत्र,पुरीष अथवा पशुओंके पुरीषके क्षारका बनाया जाताहै उसको अकृत्रिम कहते हैं, दूसरा नकली खारोंसे बनाया जाताहै उसको कृत्रिम कहते हैं ।

सूर्यक्षारनामानि ।

सूर्यक्षारोऽर्कक्षारश्च तार्क्ष्यस्तीक्ष्णरसस्तथा ।
सुवर्चिचकासर्वसहो ह्यौरिणश्च शिलाजतुः ॥

अर्थ-सूर्यक्षार, अर्कक्षार, तार्क्ष्य, तीक्ष्णरस, सुवर्चिका, सर्वसह, औरिण, शिलाजतु ।

संस्कृतभाषामें	सूर्यक्षार ।
हिन्दीभाषामें	सोरा, सूर्याखार, वाजी ।
मराठीभाषामें	सोरा ।
गुजरातीभाषामें	सुरोखार ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिट्लुभस्ममु ।
इंग्रेजीभाषामें	नाइटर Nitre साल्ट पिटर Salrpeter
लैटिन्भाषामें	पोटेश्यंनैट्रास् Potassinm Nitras
फारसीभाषामें	शोरा ।
अरबीभाषामें	अवकेर ।

अस्या गुणाः ।

औद्भिदं लवणं तीक्ष्णमत्युष्णं रेचकं कटु ।
तिक्तमग्नेर्दीप्तिकरं सूक्ष्मं क्षारं लघु स्मृतम् ॥
दाहकृच्छोषकृद्ग्राहि वातनुत्पित्तकोपनम् ।
प्लीहमूर्च्छामूत्रकृच्छ्रनेत्ररुग्वातरक्तनुत् ॥

कुम्भकामलनुत्कासनासापाकं च पीटिकान् ।
शिरःपाकं च शूलं च आध्मानं चैव नाशयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-सूर्यक्षार-तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, रेचक, कटु, अग्निप्रदीपक, सूक्ष्म, क्षार, लघु, दाहजनक, शोषक, ग्राहक, वातनाशक, पित्तकारक तथा प्लीहा, मूर्च्छा, मूत्रकृच्छ्र, नेत्ररोग, वातरक्त, कुम्भकामला, श्वास, नासापाक, पिटिका, शिरःपाक, शूल और आध्मानको दूर करेहै।

विवरण । सोराक्षार सज्जीका बनाया जाताहै ।

सर्वक्षारगुणाः ।

सर्वक्षारो वस्तिशुद्धिकारको मलशोधनः ।
वस्त्रशुद्धिकरश्चैव चक्षुष्यः कृमिनाशकः ॥
उदावर्त्तहरश्चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-सर्वक्षार-(साबुन) वस्तिशोधक, मलशोधक, वस्त्रोंको निर्मल करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, कृमिनाशक और उदावर्त्तरोगका नाश करेहै । साबुन समस्त संसारमें प्रसिद्ध है ।

लवणक्षारगुणाः ।

लोणारक्षारमत्युष्णं तीक्ष्णं पित्तप्रवृद्धिदम् ।
क्षारलवणमीषच्चःवातगुल्मादिदोषनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लोणाक्षार-अत्यन्त गरम, तीक्ष्ण, पित्तवर्द्धक, क्षारसंयुक्त, किंचित् लवणरससंयुक्त तथा वात और गुल्मादि दोषविनाशक है।

चणकाम्लगुणाः ।

चणकाम्लकमत्यम्लं दीपनं दन्तहर्षणम् ।
लवणानुरसं रुच्यं शूलाजीर्णविबन्धनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चनाखार-अत्यन्त अम्लरसान्वित, दीपन, दन्तहर्षक, कुछ लवणरसयुक्त, रुचिकारी तथा शूल, अजीर्ण और विबन्धको दूर करेहै।

विवरण । चनेखारके बनानेकी विधि सब ग्रंथोंमें लिखी है ।

चुक्रगुणाः ।

चुक्रमत्यम्लमुष्णं च दीपनं पाचनं परम् ।
शूलगुल्मविबन्धामवातश्लेष्महरं परम् ॥
वमितृष्णास्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमांद्यहृत् ।

अर्थ–चूक–अत्यन्त खट्टा, गरम, दीपन, पाचक, तथा शूल, गुल्म, विबन्ध, आम, वात, कफ, वमन, तृषा, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा और मंदाग्निका दूर करेहै । चूक–खट्टे अनार, नींबु, इमली, आमले आदि कितनेक पदार्थोंके रसका बनाया जाताहै ।

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृतशालिग्रामनिघण्टुभूषणे भाषानुवादवि[illegible]ते अष्टवर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ गुडूच्यादिवर्गः ।

अथ गुडूच्या उत्पत्तिः ।

अथ लंकेश्वरो मानी रावणो राक्षसाधिपः ।
रामपत्नीं बलात्सीतां जहार मदनातुरः ॥
ततस्तं बलवान्रामो रिपुं जायापहारिणम् ।
युतो वानरसैन्येन जघान रणमूर्द्धनि ॥
हते तस्मिन् सुराराती रावणे बलगर्विते ।
देवराजः सहस्राक्षः परितुष्टस्तु राघवे ॥
तत्र ये वानराः केचिद्राक्षसैर्निहता रणे ।
तानिन्द्रो जीवयामास सिंचित्वाऽमृतवृष्टिभिः ॥
ततो येषु प्रदेशेषु कपिगात्रात् परिच्युताः ।
पीयूषबिन्दवः पेतुस्तेभ्यो जाता गुडूचिका ॥

अर्थ–एक समय राक्षसाधिप लंकेश्वर अभिमानी मदोन्मत्त रावण रामचन्द्रकी पत्नी सीताको बलात्कारसे हर लेगया तब बलवान् रामचन्द्रजी निज स्त्रीके हरने वाले अपने रिपु रावणको वानरोंके सेनाके द्वारा रणस्थलमें जीतते भये जब वह बलगर्वित देवताओंका वैरी रावण मारागया, तब देवराज इन्द्र अत्यन्त परितुष्ट हुए और उस रणस्थलमें जो बन्दर असुरोंके हाथसे मारेगयेथे उनको अमृत वर्षाकर, जिलाया, उस समय उन वानरोंके शरीरसे उछलकर अमृत जिसजिस स्थानमें गिरा, वहीं वहीं यह गिलोय उत्पन्न हुई । इस कारण इसका नाम अमृता हुआ ।

गुडूचीनामानि ।

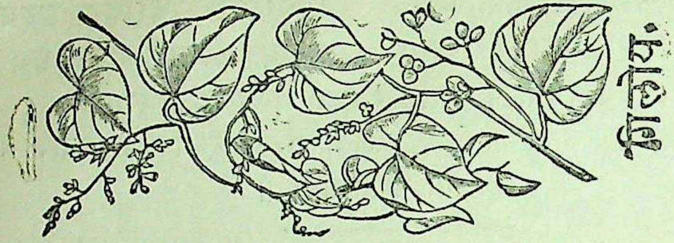

गुडूच्यमृतवल्ली च कुण्डली चक्रलक्षणा ।
मधुपर्णी सोमवल्ली विशल्या तंत्रिनिर्जरा ॥

अर्थ-गुडूची, अमृतवल्ली, कुण्डली, चक्रलक्षणा, मधुपर्णी, सोमवल्ली, विशल्या, तन्त्री, निर्जरा (वत्सादनी, छिन्नरुहा, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, गुडूची, वातरक्तारि, पामरोद्धारा, पित्तघ्नी, उद्धारा, गुडूची, वारा, ज्वरारि, श्यामा, सुरकृता, मधुपर्णिका, छिन्नोद्भवा, अमृतलता, रसायनी, छिन्ना, सोमलतिका, भिषक्प्रिया, कुण्डलिनी, वयस्था, नागकुमारिका, छन्निका, चन्द्रहासा, अमृतसम्भवा, अमृतवल्लरी, जीवन्ती, सोमा, चक्रलक्षणिका, धीरा, नागकन्या, देवनिर्मिता, चक्राङ्गी)

संस्कृतभाषामें	गुडूची ।
हिन्दीभाषामें	गिलोय ।
बंगलाभाषामें	गुलंच ।
मराठीभाषामें	गुळवेल ।
गुजरातीभाषामें	गलो ।
कर्णाटकीभाषामें	अमरद्वल्ली ।
तैलिङ्गीभाषामें	तिप्पतिगा, तियातिज, गोधूचि ।
तामिलीभाषामें	सिन्दी लकोदि ।
वो०	गिरुली ।
मा०	गिलवे ।
प०	गलाह्व ।
कान्यकुब्ज	गुरूंची ।
इंग्रेजभिाषामें	गुलांचा ।

लेटिन्भाषामें	कोकुलस कार्डिफोलियस Coculuscordifolious टिनोस्पोरा कार्डि फोलिया। Tisnospora Cardifolia
फारसीभाषामें	गिलाई ।
अरबीभाषामें	गिलोई ।

कन्दगुडूचीनामानि ।

अन्या कन्दोद्भवा कन्दामृता पिण्डगुडूचिका।
बहुच्छिन्ना बहुरुहा पिण्डालुः कन्दरोहिणी ॥

अर्थ-कन्दोद्भवा, कन्दामृता, पिण्डगुडूचिका, बहुच्छिन्ना, बहुरुहा और कन्दरोहिणी ।

गुडूचीगुणाः ।

ज्ञेया गुडूची गुरुरुष्णवीर्य्या तिक्ता कषाया ज्वरनाशिनी च।
दाहार्त्तितृष्णावमिरक्तवातप्रमेहपाण्डुभ्रमहारिणी च॥(रा.नि.)

अर्थ-गिलोय-भारी, उष्णवीर्य्य,कडवी, कषेली तथा ज्वर,दाह, तृषा, वमन, रक्त, वात, प्रमेह, पाण्डु, और भ्रमको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

गुडूची ग्राहिणी बल्या त्रिदोषघ्नी रसायनी ।
दीपनी ज्वरतृट्छर्दिकामलावातपित्तनुत् ॥

अर्थ-गिलोय-मलरोधक, बलकारक, त्रिदोषनाशक, रसायन, अग्निदीपक तथा ज्वर, तृष्णा, वमन, कामला और वातपित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च।

गुडूची तुवरा तिक्ता वीर्ये चोष्णा च ऊषणा ।
ग्राही रसायनी बल्या मधुरा चाग्निदीपनी ॥
लघ्वी हृद्यायुःप्रदा च ज्वरदाहतृषाहरी ।
रक्तदोषं वमिं वातं भ्रमं पाण्डुं प्रमेहकम् ॥
त्रिदोषं कामलां चामं कासं कुष्ठं तथा कृमीन् ।
रक्तार्शं वातरक्तं च कण्डूं मेदं विसर्पकम् ॥
पित्तं कफं नाशयति घृतेन सह वातहा ।
गुडेन बद्धविट्कत्वं सितया पित्तनाशिका ॥

मधुना कफहा प्रोक्ता वातवातारितैलके ।
शुंठ्यामवातशमनी मुनिभिः परिकीर्तिता ॥

अर्थ-गिलोय-कषेली, कडवी, उष्णवीर्य्य, उष्ण, मलरोधक, रसायन, बलकारक, मधुर, अग्निप्रदीपक, हलकी, हृदयको हितकारी आयुप्रद तथा ज्वर, दाह, तृषा, रक्तदोष, वमन, वात, भ्रम, पाण्डुरोग, प्रमेह, त्रिदोष, कामला, आम, खांसी, कोढ, कृमि, रक्तार्श (खूनीबवासीर), वातरक्त, कण्डू, मेद, विसर्प, पित्त, और कफको दूर करेहै । गिलोय घृतके साथ वातको, गुडके साथ मलबद्धताको, खांडके साथ पित्तको, मधुके साथ कफको, अण्डीके तेलके साथ वायुको और सोंठके साथ आमवातको दूर करेहै ।

अपिच ।

गुडूची मधुरा तिक्ता कृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥

अर्थ-गिलोय-मधुर, कडवी, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वातविनाशक है ।

अस्याः पत्रशाकगुणाः ।

गुडूची पर्णशाका तु तुवरोष्णा लघुः स्मृता ।
कटुस्तिक्ता पाककाले मधुरा च रसायनी ॥
अग्निदीप्तिकरी बल्या ग्राहिणी च त्रिदोषहा ।
वातरक्तं तृषां दाहं मेहं कुष्ठं च कामलाम् ।
पांडुरोगं नाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् ।(नि० र०)

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका शाक-कषेला, गरम, हलका, चरपरा, कडवा, पचनेके समय मीठा, रसायन, अग्निको दीपन करनेवाला, बलकारक, मलरोधक, त्रिदोषनाशक तथा वातरक्त, तृषा, दाह, प्रमेह, कुष्ठ, कामला और पाण्डुरोगका नाश करनेवाला है ऐसा आचार्योंने कहाहै, इसके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो ।

गुडूचीसत्त्वगुणाः ।

गुडूचिसत्त्वं सुस्वादु पथ्यं लघु च दीपनम् ।
चक्षुष्यं धातुकृन्मेध्यं वयःस्थापनकारकम् ॥
वातरक्तं त्रिदोषं च पाण्डुं तीव्रज्वरं तथा ।
वमिं जीर्णज्वरं पित्तं कामलां च प्रमेहकम् ॥

अरुचिं श्वासकासौ च हिक्कां चार्शं क्षयं तथा।
सदाहं मुत्रकृच्छ्रञ्च प्रदरं सामरोगकम् ॥
नाशयेदिति संप्रोक्तं पित्तं मेहं सशर्करम्। (रा० र०)

अर्थ-गिलोयका सत्त्व-स्वादिष्ठ, पथ्य, हलका, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, मेधाजनक, अवस्थास्थापक तथा वातरक्त, त्रिदोष, पाण्डुरोग, तीव्रज्वर, वमन, जीर्णज्वर, पित्त, कामला, प्रमेह, अरुचि, श्वास, खांसी, हिचकी, बवासीर, क्षय, दाह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, सोमरोग, पित्त, प्रमेह और शर्करारोगको दूर करेहै।

कन्दगुडूचीगुणाः।

कन्दोद्भवा गुडूची च कटूष्णा सन्निपातहा।
विषघ्नी ज्वरभूतघ्नी वलीपलितनाशिनी ॥

अर्थ-कन्दगिलोय-कटु, उष्ण, सन्निपातनाशक तथा विष, ज्वर, भूत और वलीपलितविनाशक है।

गिलोयके सत्त्व बनानेकी विधि।

गिलोयके छोटे छोटे टुकडे करके कूट डाले और पानीमें दोदिनतक भिजोये रक्खे फिर चलनीसे छानले। दूसरे दिन उसके ऊपरका पानी सावधानीके साथ नितारदे फिर नीचेका जो गाढा जल रहजाय, उसको धूपमें सुखाले। वह सत्त्व बनजायगा।

विवरण-गिलोयकी वेल होतीहै और वृक्षोंपर फैलजाती है। गाठोंसे दो दो भाग निकलतेहैं। धीरेधीरे उनकी झांदरी और उनकीही जडहोजातीहै। पत्ते कुछ कुछ पानकी समान और अधिक नीले होते हैं, फूल छोटा गुच्छोमें आता है, फल मटरकी समान होतेहैं और पकनेके समय लाल पड जातेहैं। व्यवहार वेल पत्ते, झांदरा। मात्रा २ तोले।

नागवल्लीनामानि।

ताम्बूली नागवल्ली च नागिनी नागवल्लिका।
दिवाभीष्टा पर्णलता ताम्बूलिर्नागवल्लरी ॥

अर्थ-ताम्बूली, नागवल्ली, नागिनी, नागवल्लिका, दिवाभीष्टा, पर्णलता, ताम्बूलि, नागवल्लरी, (नागवल्ली, ताम्बूलवल्ली, सप्तशिरा, सप्तलता, फणिवल्ली, भुजंगलता, भक्ष्यपत्रा, ताम्बूलवल्लिका, पर्णगृहाशया, मुखभूषण, ताम्बूल)

संस्कृतभाषामें	ताम्बूलवल्ली, ताम्बूल ।
हिन्दीभाषामें	नागरवेल, पान ।
वंगभाषाम	पान ।
मराठीभाषामें	नागवेल ।
कोंकणीभाषामें	पानवेल ।
गुजरातीभाषामें	नागरवेल्य, पान ।
कर्णाटकीभाषामें	नागरवल्ली, पर्ण ।
तैलिङ्गीभाषामें	तामलपाकु ।
तामिलीमें	वेट्टिली ।
इंग्रेजीभाषामें	बिटल्लीफ् । Betel leaf
लैटिन्भाषामें	पाईपराबिटल् । Piper Betel
फारसीभाषामें	वर्गतबोल ।
अरबीभाषामें	क़ान ।

ताम्बूलगुणाः ।

ताम्बूलं कटु तिक्तमुष्णमधुरं क्षारं कषायान्वितं
वातघ्नं कृमिनाशनं कफहरं दुःखस्य विच्छेदनम् ।
स्त्रीसंभाषणभूषणं धृतिकरं कामाग्निसंदीपनं
ताम्बूले निहितास्त्रयोदश गुणाः स्वर्गेपिते दुर्लभाः ॥

अर्थ-पान-चरपरा,कडवा,गरम,मधुर, क्षारगुणयुक्त, कषायरसान्वित तथा वात, कृमि,कफ और दुःखको हरनेवालाहै । स्त्रीसम्भाषणके विषयमें अलंकारकी समानहै तथा धारणाशक्ति और कामाग्निवर्द्धकहै।पानमें यह जो तेरह गुण विद्यमानहैं,सोस्वगमें भी दुर्लभहैं।

अन्यच्च ।

ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम् ।
वश्यं तिक्तं कटु क्षारं रक्तपित्तकरं लघु ॥
बल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् । (भा०प्र०)

अर्थ-पान-विशद, रुचिकारी,तीक्ष्ण,गरम,कषेला,सारक, वशीकरण, चरपरा, क्षार,रक्तपित्तकारक,हलका, बलकारक तथा कफ, मुखकी दुर्गन्ध, मल वात और श्रमको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

नागवल्ली कटुस्तीक्ष्णा तिक्ता पीनसवातजित् ।
कफकासहरा रुच्या दाहकृद्दीपनी परा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-पान-चरपरा, तीक्ष्ण, कडवा तथा पीनस, वात, कफ और खांसीको दूर करेहै, रुचिकारक दाहजनक और अग्निप्रदीपक है ।

श्रीवाटीपर्णगुणाः ।

श्रीवाटी मधुरा तीक्ष्णा वातपित्तकफापहा ।
रसाढ्या सुरसा रुच्या विपाके शिशिरा स्मृता ॥

अर्थ-श्रीवाटीपान-मधुर, तीक्ष्ण, वातपित्तकफनाशक, रसाढ्य, सुरसयुक्त, रुचिकारक और पचनेके समय शीतल है ।

अम्लवाटीपर्णगुणाः ।

स्यादम्लवाटीकटुकाम्लतिक्तातीक्ष्णातथोष्णामुखपाककर्त्री ।
विदाहपितास्रविकोपनी च विष्टम्भदा वातनिबर्हिणी च ॥

अर्थ-अम्लवाटीपान-चरपरा, खट्टा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, मुखको पकानेवाला, दाहको उत्पन्न करनेवाला, विष्टम्भदायक और वातनिवारकहै ।

सातसीपर्णगुणाः ।

सातसी मधुरा तीक्ष्णा कटूष्णा च पाचनी ।
गुल्मोदराध्मानहरा रुचिकृद्दीपनी परा ॥

अर्थ-सातसीपान-मधुर, तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, पाचक तथा गुल्म, उदररोग और आध्मानको दूर करनेवाला है, रुचिकारक और जठराग्निको दीपन करनेवाला है ।

जीर्णपर्णगुणाः ।

तत्पर्णजूर्णाऽतिरसाऽतिरुच्या सुगन्धितीक्ष्णा मधुराऽतिहृद्या।
संदीपना पुंस्त्वकरातिबल्या विरेचनी वक्त्रसुगन्धिकारिणी।

अर्थ-पुरानापान-अत्यन्त रसपूरित, रुचिकारक, सुगन्धित, तीक्ष्ण, मधुर, हृदयको हितकारी, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पुंस्त्वदायक, बलकारक, दस्तावर आर मुखको शुद्ध करनेवाला है,

मालवोद्भवांगरापर्णगुणाः ।

नाम्ना न्याम्लसरा सुतीक्ष्णमधुरा रुच्या हिमा दाहनुत् ।
पित्तोद्रेकहरा सुदीपनकरी बल्या मुखामोदिनी ।

स्त्रीसौभाग्यविवर्द्धनी मदकरी राज्ञां सदा वल्लभा
गुल्माध्मानविबन्धजिच्च कथिता सा मालवे तु स्थिता ॥

अर्थ-मालवेका अंगरापान-अम्ल, सारक, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिकारक, शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, अग्निको दीपन करनेवाला, बलको देनेवाला, मुखमें सुगन्ध करनेवाला, स्त्रियोंके सौभाग्यको बढानेवाला, नशा करनेवाला, राजाओंको सदा वल्लभ तथा गुल्म, आध्मान और विबन्धको दूर करनेवाला है ।

अन्ध्रदेशोद्भवपोटकुलीपर्णगुणाः ।

अन्ध्रे पट्टुलिकानाम कषायोष्णा कटुस्तथा ।
मलापकर्षा कण्ठस्य पित्तकृद्वातनाशिनी ॥

अर्थ-अन्ध्रदेशका पोटकुली पान-कषेला, गरम, चरपरा, कण्ठके मलको निकालनेवाला, पित्तकारक और वातनाशक है ।

ह्वेसणीयापर्णगुणाः ।

ह्वेसणीया कटुस्तीक्ष्णा हृद्या दीर्घदला च सा ।
कफवातहरा रुच्या कटुर्दीपनपाचनी ॥

समुद्रदेशका पान-चरपरा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, दीर्घपत्तोंवाला, कफवातनाशक, रुचिकारक, चरपरा, दीपन और पाचक है ।

नवीनप्राचीनपर्णगुणाः

सद्यस्त्रोटितभक्षितं मुखरुजाजाड्यापहं दोषकृ-
द्दाहारोचकरक्तदायि मलकृद्विष्टम्भि वान्तिप्रदम् ।
यद्भूयो जलपानपोषितरसं तच्चेच्चिरात्त्रोटितं
ताम्बूलीदलमुत्तमं च रुचिकृद्वर्ण्यं त्रिदोषार्तिनुत् ॥

अर्थ-तत्कालके तोडेहुए पानका भक्षण करना मुखरोग और जडताको दूर करे है, त्रिदोषकारक, दाहजनक, अरुचिकारक, रक्तरोगको उत्पन्न करनेवाला, मलकारक, विष्टम्भ और वमनदायक है, वही पान बहुत दिनोंतक जलसे सींचाहुआ श्रेष्ठ है, रुचिको उत्पन्न करनेवाला है, शरीरके वर्णको सुंदर करनेवाला है और त्रिदोषनाशक है ।

कृष्णशुभ्रपर्णगुणाः ।

कृष्णं पर्णं तिक्तमुष्णं कषायं धत्ते दाहं वक्त्रजाड्यं मलं च ।
शुभ्रं पर्णं श्लेष्मवातामयघ्नं पथ्यं रुच्यं दीपनं पाचनं च ॥

अर्थ-काला पान-कडवा, गरम, कषेला, दाह, मुखकी जडता और मलको दूरकरनेवाला है। सफेद पान-कफ, वात रोगनाशक, पथ्य, रुचिकारक, जठराग्निप्रदीपक और पाचक है।

पर्णशिरादिगुणाः।

शिरापर्णस्य शैथिल्यं कुर्य्यात्तस्यास्रहृद्रसः।
शीर्णं त्वग्दोषदंतास्यरोगकृत्तु सितासितम् ॥

अर्थ-पानकी शिरा-(नस) शिथिलताकारक और उन शिराओंका रस रुधिरको हरनेवालाहै। गले और सूखे पान-त्वचाके रोगोंको दन्तरोगोंको और मुखरोगोंको उत्पन्न करे है।

पर्णमूले भवेद्व्याधिः पर्णाग्रे पापसञ्चयः।
चूर्णपर्णं हरेदायुः शिरा बुद्धिविनाशिनी ॥
आयुरग्रे यशो मूले मध्ये लक्ष्मीर्व्यवस्थिता।
तस्मादग्रं च मूलं च मध्यं पर्णस्य वर्ज्जयेत ॥
चूर्णाधिकं हरति गन्धमथादिपूगं पूगं तथाधिकदलं च सुगन्धिकारि। ताम्बूलमुत्तममिदं रसनाग्रभिन्नपर्णं निशास्वधिकखण्डितपर्णमह्नि॥ (वि॰ति॰ भा॰)

भावार्थ-पानकी जडके भक्षण करनेसे अनेक प्रकारकी व्याधि उत्पन्न होतीहै, पानका अग्रभाग भक्षण करनेसे पाप सञ्चय होताहै, पानका चूर्ण आयुको हरताहै, और पानकी शिरा (नस) बुद्धिको भ्रष्ट करती है, अधिक चूना सुगंधिको हरताहै, अधिक सुपारी रागको उत्पन्न करती है और अधिक पान सुगन्धि करनेवाला है, चोंच टूटा हुआ पान रात्रिमें और अधिक टूटा पान दिनमें भक्षण करना उत्तम है।

अस्य फलगुणाः।

नागवल्लीफलं हृद्यं सुगन्धि कफवातजित् ॥ (आ॰ सं॰)

अर्थ-नागरवेलका फल हृदयको हितकारी, सुगन्धि, कफ और वातविनाशक है।

पर्णरहितपूगगुणाः।

अनिधाय मुखे पर्णं यः पूगं खादते नरः।

मतिभ्रंशो दरिद्री स्यादन्ते न स्मरते हरिम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य विनापान सुपारी खाते हैं, उनकी बुद्धि बिगड जातीहै और दरिद्री होजाते हैं तथा अन्तमें हरिका स्मरण नहीं करते

अन्यच्च ।

विना पर्णं मुखे दत्त्वा गुवाकं भक्षयेद्यदि ।
तावद्भवति चाण्डालो यावद्गंगां न गच्छति ॥

अर्थ-जो मनुष्य विना पानके सुपारी खातेहैं, वो मनुष्य जबतक गंगाजीमें स्नान नहीं करते, तबतक चाण्डाल गिने जाते हैं ।

पर्णभक्षणनिषेधः ।

न नेत्ररोगे न च रक्तपित्ते क्षते न वाते न विषे न शोषे ।
मदात्यये नापि च मोहमूर्च्छाश्वासेषुताम्बूलमुशन्ति वैद्याः
(सुषेणदेव)

अर्थ-नेत्ररोग, रक्तपित्त, उरःक्षतरोग, वातरोग, विषरोग, शोष, मद्यपानजनितरोग, मोह मूर्च्छारोग और श्वासरोगमें पानका भक्षण करना निषेध है ।

अन्यच्च ।

ताम्बूलमहितं प्रोक्तं शरीरे रूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषपित्तास्रमदमूर्च्छाक्षिरोगिषु ॥

अर्थ-ताम्बूल-रूखे दुर्बल शरीर, ज्वररोग, मुखशोष, रक्तपित्त रोग, मदरोग मूर्च्छा और नेत्ररोगवालेको अहितकारी कहाहै ।

अन्यच्च ।

ताम्बूलं विधवास्त्रीणां यतीनां ब्रह्मचारिणाम् ।
तपस्विनां च विप्रेन्द्र गोमांससदृशं ध्रुवम् ॥ (ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे)

अर्थ-पान-विधवा स्त्री, यती, ब्रह्मचारी और तपस्वीको गोमांसकी समान है ।

विवरण-पानकी वेल अत्यन्त शोभायमान और मनोहर होती है इसकी कईक जातीहैं जैसे बंगला, महोवा, महाराजपुर, विलौआ, कंपूरी, कुलवा इत्यादि । उपरोक्त महोवा आदि देशोंमें पान अधिकतासे होतेहैं । इसकी वेली कोटहीओंपर तथा अगस्तियाके वृक्षोंपर चढादेतेहैं ।

बिल्वनामानि ।

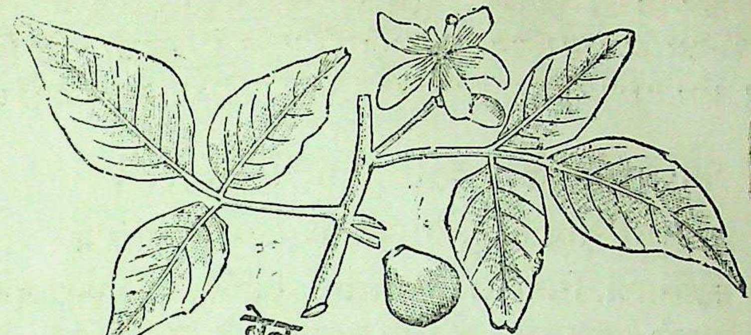

बेल.

बिल्वो महाकपित्थाख्यः श्रीफलो गोहरीतकी ।
पूतिवातोऽथ मङ्गल्यो मालूरत्रिशिखावपि ॥

अर्थ-बिल्व, महाकपित्थाख्य, श्रीफल, गोहरीतकी, पूतिवात, मंगल्य, मालूर, त्रिशिख, (शाण्डिल्य, शैलुष, मालुर, कपीतन, महाकपित्थ, अतिमंगल्य, महाफल, शल्य, हृद्यगन्ध, शलाटु, कर्कटाह्व, शैलपत्र, शिवेष्ट, पत्रश्रेष्ठ, त्रिपत्र, गन्धपत्र, लक्ष्मीफल, गन्धफल, दुरारुह, त्रिशाखपत्र, शिवद्रुम, सदाफल,सत्यफल, सुनीतिक, समीरसार, सत्यधर्म, अधरारुह, कण्टकाढ्य, सितानन, नीलमल्लिक, पीतफल, सोमहरीतकी)

संस्कृतभाषामें	बिल्व ।	
हिन्दीभाषामें	बेल ।	
बंगलामें	बेल, बिल्व ।	
मराठीभाषामें	बेल, बेलफळ ।	
गुजरातीभाषामें	बिलोबिलु ।	
कर्णाटकीभाषामें	बेललु ।	
तैलिङ्गीभाषामें	मारेडीपंडुबिल्व ।	
तामिलीभाषामें	बिल्वपाझाम ।	
इंग्रेजीभाषामें	वेगालकिन्स् ।	Bengal kins
लैटिन्भाषामें	इगलमारमेलाझ ।	Eagle Marmelos

अस्य गुणाः ।

श्रीफलस्तुवरस्तिक्तो ग्राही रूक्षोऽग्निपित्तकृत् ।

वातश्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः ॥(भा०प्र०)

अर्थ-बेल-कषेला, कडवा, मलरोधक, रूखा, अग्निवर्द्धक, पित्तजनक, वातकफनाशक, बलकारक, हलका, गरम और पाचक है।

अन्यच्च।

बिल्वस्तु मधुरो हृद्यः कषायोष्णो रुचिप्रदः ।
दीपनो ग्राहको रूक्षः पित्तलस्तिक्तकः कटुः ॥
गुरुः पाचनकर्त्ता च वातातीसारजूर्त्तिहा ।
बालं बिल्वफलं स्निग्धं गुरु रुच्यं च दीपनम् ॥
ग्राहकं पाचकं तिक्तं लघु चोष्णं च तूवरम् ।
शूलामवातग्रहणीकफातीसारनाशनम् ॥
तरुणं तु फलं बैल्वं ग्राहि तूवरमम्लकम् ॥
स्निग्धं च कटु तीक्ष्णं च उष्णं च लघु दीपनम् ।
पाचकं कफवाय्वोश्च नाशकं हृदयप्रियम् ॥
पक्वं बैल्वं दाहकरं मधुरं गुरु तूवरम् ।
विष्टम्भकारि तिक्तोष्णं ग्राहकं कटु दोषलम् ॥
दुर्जरं वातलं चाग्निमांद्यकृदृषिभिर्मतम् ।
बिल्वमूलं तु मधुरं त्रिदोषच्छर्दिशूलनुत ।
लघुकृच्छ्रहरं वातकफपित्तस्य नाशकम् ।
पर्णानि ग्राहकाणि स्युर्वातनाशकराणि च ॥(नि०र०

अर्थ-बेल-मधुर, हृदयको हितकारी, कषेला, गरम, रुचिकारक, दीपन, ग्राही, रूखा, पित्तकारक, कडवा, चरपरा, भारी, पाचक, तथा वातातिसार, और ज्वरनाशक है। बेलका कच्चाफल स्निग्ध, भारी, रुचिकारी, जठराग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, पाचक, कडवा, हलका, गरम, कषेला तथा शूल, आमवात, संग्रहणी, और कफातिसारका नाशक है । बेलका तरुणफल-ग्राही, कषेला, खट्टा, स्निग्ध, चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, हलका, दीपन, पाचक, हृदयको हितकारी, कफ और वातविनाशक है । बेलका पक्का फल-दाहजनक, मधुर, भारी, कषेला, विष्टम्भकारक, कडवा, गरम, ग्राही,

कटु, त्रिदोषकारक, दुर्जर, वातकारक और मंदाग्निको उत्पन्न करनेवाला है। बेलकी जड-मधुर तथा त्रिदोष, वमन, शूल इनको नाश करनेवाली, हलकी तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ और पित्तका नाश करनेवाली है। इसके पत्ते ग्राही और वातनाशक हैं।

अन्ये च पत्रगुणाः।

तत्पत्रं कफवातामशूलघ्नं ग्राहि रोचनम्॥

अर्थ-बेलके पत्ते-कफ, वात, आम और शूलनाशक हैं, ग्राही और रोचक हैं।

अस्य पुष्पगुणाः।

निहन्याद्बिल्वजं पुष्पमतिसारं तृषां वमिम्॥

अर्थ-बेलके फूल-अतिसार, तृषा और वमननिवारक हैं।

बिल्वमज्जाभवतैलगुणाः।

बिल्वमज्जाभवं तैलमुष्णं वातहरं परम्॥

अर्थ-बेलका तेल-गरम और वातविनाशक है इसके अधिक गुण तैलवर्गमें देखो।

बिल्वपेषिकागुणाः।

कफवातामशूलघ्नी ग्राहिणी बिल्वपेषिका॥

अर्थ-बिल्वपेशिका-(बेलका सूखा गूदा) कफ,वात, आम और शूलनाशक है तथा मलरोधक है। ॥ ६४॥

कांजिकस्थितबिल्वगुणाः।

काञ्जिके संस्थितं बिल्वमग्निसंदीपनं परम्।
हृद्यं रुचिकरं प्रोक्तमामवातविनाशनम्॥

अर्थ-काञ्जीमें रक्खा हुआ बेल-अग्निको दीपन करेहै, हृदयको हितकारी है, रुचिकारी है और आमवातनाशक है।

पक्वबिल्वस्य दोषोक्तिः।

फलेषु परिपक्वेषु ये गुणाः समुदाहृताः।
बिल्वादन्यत्र विज्ञेया बिल्वमामं गुणोत्तरम्॥(रा० व०)

अर्थ-सर्वप्रकारके पकेहुएही फल गुणवाले होते हैं,किन्तु बेल तो कच्चाही गुणवाला होता है और पका बेल अनेक प्रकारके दोषोंको उत्पन्न करनेवाला है।

विवरण-बेलका वृक्ष बडा होता है, शाखाओंमें कांटे होते हैं। पत्ते त्रिदल एक डंडीमें तीन (त्रिशूलाकार) होते हैं। फूल सफेद और सुगंधित होते हैं। फल गोल स्वादिष्ठ और कडे छिलकेसे ढका होताहै, फलमें बहुतसे बीज होतेहैं। बीजोंमें गोंद होता है। ग्रीष्म ऋतुके आरम्भमें इसके पुराने पत्ते गिरकर नवीन निकल आते हैं। और इसकी लकडी बहुत पवित्र होती है, चंदनकी समान मानीजातीहै और मूलकी छाल दशमूलके काढेमें एक प्रधान औषधी है, इसके पत्तोंको पीसकर आंखमें लगानेसे नेत्ररोग आराम होता है। जलमें पकाकर अरिष्ट पीनेसे ज्वरादिका नाश होता है। पत्तोंका अर्क बालकोंके लिये दस्तावर और कफका नाश करनेवाला है, बहुत औषधियोंके अनुपानमें इसका व्यवहार होता है। हिन्दोस्थानके प्रत्येक खण्डमें बेलका वृक्ष पायाजाताहै। और इसमें एक बडा भारी गुण है कि,जो कोई इन पत्तोंको शिवके ऊपर चढाता है,उससे शिव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं इसके अधिक गुण आगे फलवर्गमें देखो।

गम्भारीनामानि।

गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका।
श्रीपर्णी भद्रपर्णी च भद्रा च गोपभद्रिका॥

अर्थ-गम्भारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, भद्रा, गोपभद्रिका(काश्मर्य्य, काश्मरी,काश्वरी,कम्भारिका, कुमुदा,सदाभद्रा,कृष्णफला,कट्फला,कृष्णवृन्तिका,हीरा, सर्वतोभद्रिका,स्निग्धपर्णी,सुभद्रा,कम्भारी, गोपभद्रा, क्षीरिणी, विदारिणी, महाभद्रा,मधुभद्रा,स्वरुभद्रा,कृष्णा, अश्वेता,रोहिणी, गृष्टि, स्थूलत्वचा, मधुमती,सुफला,मोदिनी, महाकुमुदा, सुदृढत्वचा, काश्मीरी पीतरोहिणी, मधुरसा, महाकुमुदिका, पीतफला और वातहा)

संस्कृतभाषामें	कम्भारी, गंभारी।
हिन्दीभाषामें	कुम्भेर, खम्भारी।
बंगभाषामें	गाम्भारी, गाभार।
मराठीभाषामें	शिवणगम्भारी।
गुजरातीभाषामें	शवन्य।
लाटन् भाषामें	मीलाइनाआवाग्या। Gmelina arboria
	ट्रीबिया अन्डिलफोरा। Trebia undiflora

कर्णाटकीभाषामें	सीवनी ।
तैलिंगीभाषामें	साल्लागुंबुटीचेट्टु ।

अस्या गुणाः ।

काश्मरी तुवरा तिक्ता वीर्योष्णा मधुरा गुरुः ।
दीपनी पाचनी मेध्या भेदिनी भ्रमशोषजित् ॥
दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा ।

कुम्भेर-कषेली, कडवी, उष्णवीर्य, मधुर, भारी, अग्निको दीपन करनेवाली, पाचक, मेधाजनक, दस्त लानेवाली तथा भ्रम, शोष, त्रिदोष, तृषा, आमशूल, बवासीर, विष, दाह, और ज्वरको दूर करनेवाली है ।

अस्याः फलगुणाः ।

तत्फलं बृंहणं वृष्यं गुरु केश्यं रसायनम् ।
वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धहृत् ॥
स्वादु पाके हिमं स्निग्धं तुवराम्लं विशुद्धिकृत् ।
हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुम्भेरका फल-पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी, केशोंको हितकारी, रसायन तथा वात, पित्त, तृषा, रक्तक्षय, मूत्र और विबन्धनाशक है, पचनेमें स्वादिष्ठ, शीतल, स्निग्ध, कषेला, खट्टा, शुद्धिकारक और दाह, तृषा, वात, रक्तपित्त, क्षत और क्षयरोगको नष्ट करेहै ।

अन्यच्च ।

गाम्भारिकाफलं ग्राहि सतिक्तमधुरं गुरु ।
केश्यं रसायनं मेध्यं शीतलं दाहपित्तजित् ॥ (रा०व०)

कुम्भेरका फल-मलरोधक, कडवा, मधुर, भारी, केशोंको हितकारी, रसायन, मेधाजनक, शीतल, दाह और पित्तनाशक है ।

गम्भारीगुणाः ।

श्रीपर्णी मारुतश्लेष्मशोफमेहकृमीञ्जयेत् ।

अर्थ-कुम्भेर-वात, कफ, शोफ, प्रमेह और कृमिनाशक है ।

अस्या पुष्पगुणाः ।

तत्पुष्पं मधुरं शीतं तिक्तं संग्राहि वातलम् ॥

कषायं मधुरं पाके पित्तास्रासृग्गदापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कुम्भेरका फूल-मधुर, शीतल, कडवा, ग्राही, वातकारक, कषेला, पचनेमें भी मधुर तथा रक्तपित्त और रक्तरोगको दूर करे है।

अस्या मूलगुणाः ।

गाम्भारीमूलमत्युष्णमहितं मानुषेषु तत् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कुम्भेरकी जड-अत्यन्त गरम और मनुष्योंका अहित करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

काश्मरी कटुका तिक्ता स्वाद्व्युष्णा तुवरा गुरुः ।
मधुरा दीपनी मेध्या पाचनी भेदिका मता ॥
हृद्या तृषामशूलघ्नी कफशोफत्रिदोषहा ।
विषदाहज्वरारक्तदोषार्शोभ्रमनाशिनी ॥
शोषनाशकरी प्रोक्ता फलं वृष्यं गुरु स्मृतम् ।
धातुवृद्धिकरं केश्यं स्वादु शीतं रसायनम् ॥
स्निग्धं बुद्धिप्रदं चाम्लं तुवरं मूत्रलं गुरु ।
मूत्रकृच्छ्रं रक्तपित्तं रक्तदोषामवातकम् ॥
तृषां दाहं क्षयं वातं रक्तपित्तं क्षतक्षयम् ।
प्रदरं नाशयत्येव फलमज्जा तु शीतला ॥
मधुरा ग्राहिणी तिक्ता वातला तुवरा मता ।
बल्या वृष्या रक्तदोषकफपित्तहरा मता ॥
प्रदरं नाशयत्येवमृषिभिः परिकीर्तिता । (नि०र०)

अर्थ-कुम्भेर-चरपरी, कडवी, स्वादिष्ठ, गरम, कषेली, भारी, मधुर, दीपन, मेधाजनक, पाचक, भेदक, हृदयको हितकारी तथा तृषा, आमशूल, कफ, सूजन, त्रिदोष, विष, दाह, ज्वर, रक्तविकार, बवासीर, भ्रम और शोषको दूर करनेवाली है। इसका फल वीर्यजनक, भारी, धातुवर्धक, केशोंको हितकारी, स्वादिष्ठ, शीतल, रसायन, स्निग्ध, बुद्धिप्रद, अम्ल, कषेला, मूत्रजनक, गुरु तथा मूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त, रक्तदोष, आमवात, तृषा, दाह,

क्षय, वात, रक्तपित्त, क्षतक्षय और प्रदरोगका नाश करनेवालाहै । कुम्भेरके फलकी मज्जा शीतल, मधुर, ग्राही, कडवी, वातकारक, कषेली, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्तविकार, कफ, पित्त और प्रदररोगको दूर करनेवाली ह ।

विवरण–कुम्भेरका वृक्ष बडा होता है, पत्ते समुद्रशोष और [illegible]पलके पत्तोंसे कुछ, कवडे २ होतेहैं, फूल पीले रंगके और फलभी पीले होतेहैं । छाल सुफेद होती है कुह्मार वृक्ष नामसे प्रसिद्ध है, कालका-के समीप कौशिल्या नदीमें होता है ।

पाटलानामानि ।

पाटला कर्बुरामोघा फलेरुहाम्बुवासिनी ।
कृष्णवृन्ता कालवृन्ता कुम्भी तोयाधिवासिनी ॥

अर्थ–पाटला, कर्बुरा, अमोघा, फलेरुहा, अम्बुवासिनी, कृष्णवृन्ता, कालवृन्ता, कुम्भी, तोयाधिवासिनी (पाटली काचस्थाली, कुबेराक्षी, तोयपुष्पी, ताम्रपुष्पी, कुम्भीका, सुपुष्पिका, वसन्तदूती, स्थाली, स्थिरगन्धा, अम्बुवासी, कालवृन्ती, कामदूती, अभिप्रिया, मधुदूती, अलिवल्लभा, वसन्तदूती, कोकिला)

श्वेतपाटला–काष्ठपाटलानामानि ।

द्वितीया पाटला श्वेता निर्दिष्टा काष्ठपाटला ॥

अर्थ–श्वेतपाटला, काष्ठपाटला (श्वेतकुम्भी, श्वेतकुबेराक्षी, श्वेतफलेरुहा, काष्ठकुबेराक्षी, काष्ठफलेरुहा, काष्ठपाटलि, मुष्कक, मोक्षक, घण्टापाटलि)

संस्कृतभाषामें	पाटला, श्वतपाटला ।
हिन्दीभाषामें	पाडरि, पाढल, सफेदपाडर, कटपाडर ।
बंगलाभाषामें	पारुल, घण्टापारुल ।
मराठीभाषामें	रक्तपाडल ।
गुजरातीभाषामें	राताफूलना पाडल, श्वेतपाडर, कांकच ।
कर्णाटकीभाषामें	हादरी, विलियहादरी ।
तैलिंगीभाषामें	कलगोरु, कलिगोट्टुचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	पाड्रि ।
उत्०	पाट्टुडि ।
लैटिन्‌म	विगनोनिया सुवियोलेन्स् Vignonia suaviolens सीरियोस्पर्मम केलोनोइडीज Seriospermum Chelonoides

पाटलागुणाः ।

पाटला तु रसे तिक्ता कटूष्णा कफवातजित् ।
शोफाध्मानवमिश्वासशमनी सन्निपातनुत्॥ (रा.नि०)

अर्थ-पाढल-तिक्तरसान्वित, कटुरसयुक्त, उष्ण, कफवातनाशक तथा सूजन, अफरा, वमन श्वास और सन्निपातनिवारक है ।

अन्यच्च ।

पाटलाऽरुचिशोथास्रश्वासतृट्छर्दिनाशिनी ।
नात्युष्णं तुवरं स्वादु तत्पुष्पं कफवातनुत् ॥
पित्तातिसारदाहघ्नं फलं हिक्कास्रपित्तनुत् । (ध० नि०)

अर्थ-पाढल-अरुचि, सूजन, रुधिरविकार, श्वास, तृषा और वमननिवारक ह किंचित् उष्ण, कषाय, स्वादिष्ठ, इसका फूल कफ, वात, पित्तातिसार और दाहनाशक है, इसका फल हिचकी और रक्तपित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

पाटला कफपित्तास्रच्छर्दितृण्मारुतापहा ।
पुष्पं कषायमधुरं शीतं पित्तकफास्रजित् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-पाडर-कफ, रक्तपित्त, वमन, तृषा और वातको हरनेवाली है । इसका फूल-कषेला, मधुर, शीतल तथा पित्त, कफ और रुधिर-विकारको हरे है ।

अपिच ।

रक्तपाटलिका तिक्ता कट्वी चोष्णा कफापहा ।
सन्निपातश्वासवमिशोफाध्मानानि नाशयेत् ॥
पुष्पाणि पाटलायास्तु स्वादूनि तुवराणि च ।
हृद्यानि शीतवीर्य्याणि रक्तदोषहराणि च ॥
दाहं कफं पित्तरोगं पित्तातीसारहानि च ।
फलानि पाटलायास्तु शीतलानि गुरूणि च ॥
तुवराणि च तिक्तानि मधुराणि बुधा जगुः ।
मूत्रकृच्छ्रं रक्तपित्तं हिक्कावातहराणि च ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-पाडल-कडवी, चरपरी, गरम, कफनाशक तथा सन्निपात, श्वास

(त्रिदोष) वमन, सूजन और अफारेको दूर करे है, पाडलके फूल-स्वादिष्ठ, कषेले, हृदयको हितकारी, शीतवीर्य्य तथा रक्तदोष, दाह, कफ, पित्तरोग और पित्तातिसारको हरनेवाले हैं। पाडलके फल-शीतल, भारी, कषेले, कडवे, मधुर तथा मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, हिचकी और वातके नाश करनेवाले हैं।

श्वेतपाटलागुणाः।

सितपाटलिका तिक्ता गुर्व्युष्णा वातदोषजित्।
वमिहिक्काकफघ्नी च श्रमशोषापहारिका ॥ (ध०नि०)

अर्थ-सफेदपाडर-कडवी, भारी, वातनाशक तथा वमन, हिचकी, कफ, श्रम और शोषको दूर करे है।

अन्यच्च।

श्वेता तु पाटला चोष्णा तिक्ता गुर्वी सुगन्धिका।
रक्तदोषारुचिशोफश्वासतृड्वान्तिनाशिनी ॥
हिक्कां कफं च वातञ्च नाशयेदिति कीर्तितम्। (नि०र०)

अर्थ-सफेदपाडर-गरम, कडवी, भारी, सुगन्धि तथा रक्तविकार, अरुचि, सूजन, श्वास, तृषा, वमन, हिचकी, कफ और वातका नाश करे है।

भूमिपाटलागुणाः।

भूपाटला कटूष्णा च बल्या वीर्य्यविवर्द्धिनी।

अर्थ-भुईपाडर-चरपरी, गरम, बलजनक, और वीर्य्यवर्द्धक है।

क्षुद्रपाटलागुणाः।

क्षुद्रा तु पाटला श्वेता स्निग्धा च व्रणशोधिनी।
कफमेदःकुष्ठविषमण्डलानि विनाशयेत् ॥

अर्थ-क्षुद्रपाडर-सफेद, स्निग्ध, व्रणशोधक तथा कफ, मेद, कुष्ठ, विष और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है।

वल्लीपाटलागुणाः।

वल्ली पाटलिका चोष्णा वातारोचकपित्तहा।
रक्तदोषं च शोफं च नाशयेदिति कीर्तितम्।

अर्थ-वल्लीपाडर-गरम, वात, अरोचक, पित्त, रक्तविकार और सूजनको दूर करे है।

([illegible]०)-पाडरके पत्तोंका रस निकालकर उसमें छः मासे सोंठ और दो तोले खांड मिलाकर देनेसे अम्लपित्त दूर होताहै।

विवरण। पाडरका फूल लाल होताहै और दूसरी पाडरका फूल सफेद होताहै। पत्ते वेलकी समान होतेहैं। पादलके वृक्ष दोप्रकार के होतेहैं. तीसरी पाटला लता होतीहै, जो वटौवेकी वेल कही जातीहै।

अग्निमन्थनामानि।

अग्निमन्थो हविर्मन्थः कर्णिका गिरिकर्णिका।
जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका॥

अर्थ-अग्निमन्थ, हविर्मन्थ, कर्णिका, गिरिकर्णिका, जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी और वैजयन्तिका (श्रीपर्ण, तेजोमन्थ, ज्योतिष्क, पावक, अरणि, वह्निमन्थ, मथन, जय, पावकारणि, आग्निमथन, तर्कारी, अरणीकेतु, श्रीपर्णी, विजया, अनन्ता, नदीजा, तनुत्वक्, पित्तमाला, वह्निमूल, अग्निबीजक)

क्षुद्राग्निमन्थनामानि।

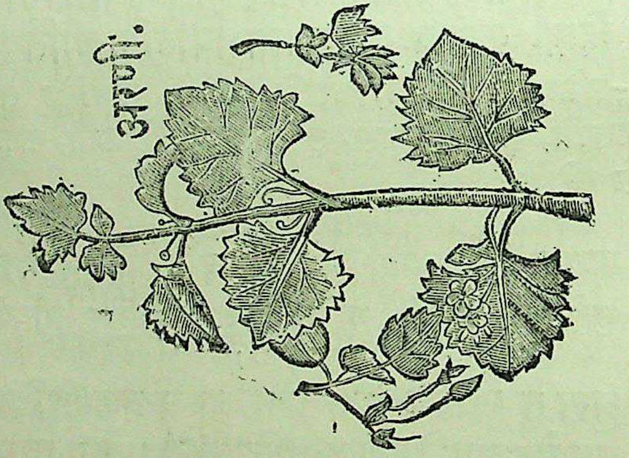

क्षुद्राग्निमन्थो विजया नादेयी चाग्निमंथिनी।
जया च गन्धपत्रा च गन्धपुष्पा कृशानुगा॥

अर्थ-क्षुद्राग्निमन्थ, विजया, नादेयी, अग्निमन्थिनी, जथा, गन्धपत्रा, गन्धपुष्पा, कृशानुगा (तपन, गणिकारिका, अरणि, लघुमन्थ, तेजोवृक्ष, तनुत्वचा)

संस्कृतभाषामें	अग्निमन्थ, अरणी, गणिकारिका, क्षुद्राग्निमन्थ।
हिन्दीभाषामें	अरणी, अगेथु, गणिवारी, छोटअरणी।
वंगभाषामें	गणिर, आगगन्त, छोटीगणिरी।

मराठीभाषामें	थोरऐरण, लघुऐरण, टहांकळी, नरबेल्य
गुजरातीभाषामें	अरणी, ऐरण ।
कर्णाटकीभाषामें	नरुवल ।
तैलङ्गीभाषामें	नेलिचेट्ट ।
उत्कलीभाषामें	अगिवथ ।
लैटिन्भाषामें	क्लोरोडेंड्रनफ्लोमोईडिस Clorodendron Phlomides

अग्निमन्थगुणाः ।

तर्कारी कटुका तिक्ता तथोष्णानिलपाण्डुजित् ।
शोथश्लेष्माग्निमांद्यार्शोविड्बन्धामविनाशिनी॥(ध०नि०)

अर्थ-अरणी-कटु, तिक्त, उष्ण तथा वात, पाण्डुरोग, शोथ, कफ, अग्निमांद्य, अर्श, मलबद्धता और आम इत्यादि अनेक प्रकारके रोगोंको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अग्निमन्थो गुरुस्तिक्तो वातशोफामजित्सरः॥(शो०नि०)

अर्थ-अरणी-भारी, कडवी तथा वायु, सूजन और आमको जीतेहै, तथा सारक है ।

अपिच ।

अग्निमन्थो बृहत्प्रोक्तः कटुश्चोष्णो मधुः स्मृतः ।
तिक्तस्तु तुवरश्चाग्निदीपको वातनाशनः॥
प्रतिश्यायं कफं शोथमर्शश्चैवामवातकम् ।
मलरोधं चाग्निमांद्यं पाण्डुरोगं विषं तथा ॥
आमं च मेदोरोगं च नाशयेदिति कीर्तितम्। (नि०र०)

अर्थ-अरणी-कटु, उष्ण, मधुर, तिक्त, कषाय, अग्निप्रदीपक, वातनाशक तथा प्रतिश्याय (जुकाम) कफ, सूजन, बवासीर, आमवात, मलरोध, मंदाग्नि, पाण्डुरोग, विष, आम और मेदोरोगको नाश करनेवाली है ।

क्षुद्राग्निमन्थगुणाः।

लघ्वग्निमन्थस्य गुणाः प्रोक्ता वृद्धाग्निमन्थवत् ।
विशेषाल्लेपने चोपनाहे शोफे च कीर्तिताः॥ (नि०र०)

अर्थ-छोटी अरणीके गुण अरणीके समान हैं, किन्तु विशेष करके इसका लेप उपनाहके विषय हितकारक है और यह सूजनको दूर करनेवाली है ।

तेजोमन्थगुणाः ।

तेजोमंथगुणाः प्रोक्ताश्चाग्निमंथसमा बुधैः ।
विशेषाद्वातशोफे च प्रोक्ताः पूर्वैश्चसूरिभिः॥ (नि०र०)

अर्थ-तेजोमन्थ-(अरणीका भेद) इसके गुण अरणीकी समान हैं, परन्तु विशेष करके यह वातशोफका नाश करैहै ।

विवरण-इसका वृक्ष होताहै, पत्ते गोल और सूक्ष्म करकरयुक्त होतेहैं. फूल सफेद होताहै, फल छोटे करौंदेकी समान होते हैं । यज्ञमें इसकी लकडीसे आग पैदा की जाती है ।

श्योनाकनामानि ।

श्योनाकः शुकनासश्च कट्वङ्गोऽथ कटम्भरः ।
मयूरजंघोऽरलुकः प्रियजीवी कुटन्नटः ॥

अर्थ-श्योनाक-शुकनास, कट्वङ्ग, कटम्भर, मयूरजंघ, अरलुक, प्रियजीवी, कुटन्नट (मण्डूकपर्ण, पत्रोर्ण, नट, कटाङ्ग, टुण्टक, ऋक्ष, दीर्घवृन्त, शोनक, अरल, स्योनाक, विषनुत, अध्वान्तशात्रव, पूतिवृक्ष, भण्टुक, भण्डूक, भूतपुष्प, शोण, अरट्ठ, दीर्घवृन्तक, वट्ठ, ध्वान्तशात्रव, स्वर्णवल्कल, पृथुशिम्ब, शल्लक, शोषण, प्रियजीव, कुर्कट, भल्लूक, कन्दर्प, पादवृक्ष, भूताटक, पारिपादप)

श्योनाकभेदनामानि ।

टुण्टुको दीर्घवृन्तश्च टिण्टुको कीरनाशनः ।
पूतिवृक्षो पूतिनागो भूतिपुष्पो मुनिद्रुमः ॥

अर्थ-टुण्टुक, दीर्घवृन्त, टिण्टुक, कीरनाशन, पूतिवृक्ष, पूतिनाग, भूतिपुष्प और मुनिद्रुम (श्योनाक, पृथुशिम्ब, भल्लूक, टेण्टुक, पीतवृक्ष, भूतसार, निःसार, फलवृन्ताक, पूतिपत्र, वसन्तक, मण्डूकपर्ण, पीताङ्ग, जम्बूक, पीतपादप, वातारि, पीतक, शोण, कुनट, विरोचन, भ्रमरेष्ट, जंघनेत्र)

संस्कृतभाषामें	श्योनाक, अरलु, टुण्टुक ।
हिन्दीभाषामें	सोनापाठा, अरलु, टेंटु ।
वंगभाषामें	सोना, सोनालु ।
मराठीभाषामें	टेटु ।
गुजरातीभाषामें	अरडूशो, मरमट्य ।

कर्णाटकीभाषामें	शोणा, शोडिलमर ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्दामानु ।
औत्कलीमें	फणफणा ।
पञ्जाबीमें	मुलिन ।
नेपालीमें	करुमकन्द ।
तामिलीमें	पन ।
लैटिन्भाषामें	ओरोकू सिलं ईंडिकम् । Orocylum indicum

श्योनाकगुणाः ।

श्योनाकस्तुवरस्तिक्तः कटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
ग्राहकः शीतलो वृष्यो बलदो वातपित्तहा ॥
सन्निपातज्वरकफत्रिदोषारुचिनाशनः ।
आमवातकृमिवमीकासातीसरनाशनः ॥
तृष्णां कुष्ठं नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-शोनापाठा-कषेला, कडवा, चरपरा, जठराग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, शीतल, वीर्यवर्द्धक, बलदायक, तथा वात पित्त, सन्निपातज्वर, कफ, त्रिदोष, अरुचि, आमवात, कृमि, वमन, खांसी, अतिसार, तृषा और कुष्ठको नष्ट करेहै ।

अन्यच्च ।

टिण्टुको वातजिद्रूक्षः शोफहाऽग्निबलप्रदः ।
तुवरः शीतलस्तिक्तो वस्तिरोगहरः परः ॥
पित्तश्लेष्मामवातारिः श्वासकासारुचीर्जयेत् ।

अर्थ-टेंटु-वातविनाशक, रूक्ष, शोफनिवारक, जठराग्निवर्द्धक, बलदायक, कषाय, शीतल, तिक्त, वस्तिरोगनाशक, पित्त, कफ, वातनाशक, श्वास, कास और अरुचिनिवारक है ।

अस्य कोमलफलगुणाः ।

कोमलं तु फलं चास्य तुवरं मधुरं लघु ।
हृद्यं रुच्यं पाचकं च कण्ठ्यं चाग्निप्रदीपकम् ॥

उष्णं च कटुकं क्षारं गुल्मवातकफार्शनुत् ।
अरुचिं च कृमींश्चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

र्थ-इसका कच्चा फल कषेला, मधुर, हलका, हृदयको हितकारी, कारी, पाचक, कण्ठको हितकारक, अग्निप्रदीपक, गरम, कटु, क्षार गुल्म, वात, कफ, बवासीर, अरुचि और कृमिरोगनाशक है ।

अस्य तरुणफलगुणाः ।

दीर्घवृन्तफलं चामं गुरुवातप्रकोपनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसका तरुण फल-भारी और वातको कुपित करनेवाला है ।

अन्यच्च

पुटपाकविधानेन रसो निष्कास्य भक्षितः ।
चिरंतनमतीसारं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-श्योनाकका रस पुटपाककी विधिसे निकालकर उस रसको पीनेसे बहुत दिनोंका पुराना अतिसार दूर होता है ।

द्विविधश्योनाकगुणाः ।

श्योनाकयुगलं तिक्तं शीतलं च त्रिदोषजित् ।
पित्तश्लेष्मातिसारघ्नं सन्निपातज्वरापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारके श्योनाक-कडवे, शीतल, त्रिदोषनाशक तथा पित्त, कफ, अतिसार, सन्निपात और ज्वरको हरने वाले ह ।

विवरण-श्योनाकका वृक्ष बहुत ऊंचा होताहै, फली लम्बी लम्बी तलवारकी समान दो दो फुटकी होतीहैं, फलीके भीतर रुई और दाने निकलतेहैं एक दूसरे प्रकारका श्योनाक होताहै। उसका फूल लाली लिये समुद्रशोषकी समान होताहै। शिमला प्रान्तमें इसको "टाटमडंगा" कहतेहैं ।

शालिपर्णीनामानि ।

शालिपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा ।
विदारिगन्धा दीर्घाङ्घ्रिर्दीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥

अर्थ-शालिपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीवरी, गुहा, विदारिगन्धा, दीर्घाङ्घ्रि, दीर्घपत्रा, अंशुमती (सुदला, सुपत्री, कुमुदा, ध्रुवा, सुपर्णिका, दीघमूला, दीर्घपत्रिका, वातघ्नी, पातिनी, तन्वी, सुधा, सर्वानुकारिणी, शोफघ्नी, सुभगा, देवी, शोथघ्नी, निश्चला,

व्रीहिपर्णिका, सुमूला, सुरूपा, शुभपत्रिका, सुपर्णी, शा करे शालिदला, विदारी, सालपर्णी, एकमूला, अस्तमती, शा शालिका, तन्वी और कीटविनाशिनी)

संस्कृतभाषामें	शालिपर्णी।
हिन्दीभाषामें	सरिवन।
वंगभाषामें	शालपान, शालपानी।
मराठीभाषामें	सालवण।
गुजरातीभाषामें	शालपर्णी।
कर्णाटकीभाषामें	सुरुलुवोने।
तैलिङ्गीभाषामें	शियाकुपना, सप्पाकुपोवा।
औत्कलीभाषामें	शारपाणि।
लैटिन्भाषामें	डेस्मोडियंगेंजेटिकम्। Desmodium Gangeticum डेस्मोडियम् ट्रायलफोरम।

अस्या गुणाः।

शालिपर्णी गरच्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित्।
शोषदोषत्रयहरी बृंहण्युक्ता रसायनी॥
तिक्ता विषहरी स्वाद्वी क्षतकासकृमिप्रणुत्।

अर्थ–सरिवन–विष, वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और त्रिदोषनाशक तथा पुष्टिजनक,रसायन,कडवी,विषनाशक,स्वादिष्ठ क्षत, कास और कृमिरोगको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

शालिपर्णी रसे तिक्ता गुर्व्युष्णा धातुवर्धिका।
रसायनी स्वादुवृष्या विषमज्वरवातहा॥
मेहार्शःशोथसन्तापज्वरश्वासविषकृमीन्।
त्रिदोषशोषच्छर्दिघ्नी क्षतकासातिसारहा॥ (नि० र०)

अर्थ–सरिवन–तिक्तरसान्वित, भारी, गरम, रसायन,धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ,वीर्यजनक तथा विषमज्वर, वात, प्रमेह,बवासीर, सूजन, सन्तापज्वर, श्वास, कृमि, त्रिदोष, शोष, वमन, क्षत, खांसी और अतिसारको दूर करेहै।

विवरण–शालिपर्णीका क्षुप होताहै, एक एक दंडीमें तीन २ पत्ते होतेहैं और उसमें बहुत छोटी २ फलियें होतीहैं। शालिपर्णी और

तीन २ और एक २ पत्रवाली दोनों प्रकारकी होती हैं
के समीप टकसालमें दोनों प्रकारकी बहुत हैं।

पृश्निपर्णीनामानि।

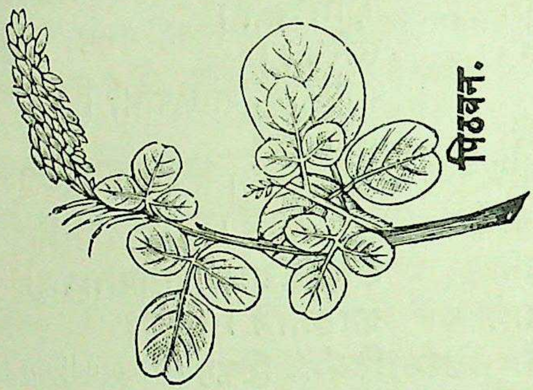

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी तन्वी क्रोष्टुकपुच्छिका।
त्रिपर्णी पूर्णपर्णी च कलसी सिंहलांगुली॥

अर्थ-पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, तन्वी, क्रोष्टुकपुच्छिका, त्रिपर्णी, पूर्णपर्णी, कलसी और सिंहलांगुली (चित्रपर्णी, अंघ्रिवल्लिका, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी, गुहा, पिष्टपर्णी, लाङ्गली, क्रोष्टुपुच्छिका, कलशी, क्रोष्टुकमेखला, दीर्घा, शृगालवृन्ता, सिंहपुच्छिका, हीर्घपत्रा, अतिगुहा, घष्टिला, चित्रपर्णिका, कलसि, क्रोष्टुपुच्छी, कदला, कंकशत्रु चक्रकुल्या, चक्रपर्णी, शीर्णमाला, महागुहा, शृगालविन्ना, धमनी, मेखला, लांगुलिका, ब्रह्मपर्णी, दीर्घपर्णी, सिंहपुष्पी, पृष्टिपर्णी, अंघ्रिपर्णी, धावनी, विष्णुपर्णी)

संस्कृतभाषामें	पृश्निपर्णी, पृष्टिपर्णी।
हिन्दीभाषामें	पिठवन, पिठौनी, डावडा, दौला, पृश्निपर्णी।
वंगभाषामें	चाकुले, चाकुलिया।
मराठीभाषामें	पीठवण।
गुजरातीभाषामें	पृष्टिपर्णी।
कर्णाटकीभाषामें	तोरेमोड, नरियलवोनें।
तैलिङ्गीभाषामें	कोलाकुपन्न।
ओत्कलीमें	क्रंष्टपर्णी।
लैटिनभाषामें	उरेरिया लेगोपोइंडिस्। उरेरियापिक्टा। Uraria lagopoides Uraria picta

पृश्निपर्णीगुणाः।

पृश्निपर्णी त्रिदोषघ्नी वृष्योष्णा मधुरा सरा ।
हन्ति दाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमीन् ॥ (भा०

अर्थ-पिठवन-त्रिदोषनाशक, वीर्यजनक, गरम, मधुर, तथा दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, तृषा और वमननिवार

अन्यच्च ।

पृष्टिपर्णी कटूष्णा च तिक्तातीसारकासनुत् ।
वातरक्तज्वरोन्मादव्रणदाहविनाशिनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ-पिठवन-कटु, उष्ण, तिक्त तथा अतिसार, खांसी, वातरक्त, ज्वर, उन्माद, व्रण और दाहनाशक है ।

शालपर्णीपृश्निपर्ण्योर्गुणाः ।

शालपर्णी पृश्निपर्णी ग्राहिणी कफवातजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ-शालपर्णी और पृश्निपर्णी, ग्राही और कफपित्तनाशक हैं।

विवरण । पिठवन पश्चिम और वंगदेशमें अधिकतासे उत्पन्न होती है, दक्षिणदेशमें दिखाई नहीं देती । पत्ते गोल वेलदार होते हैं, फूल गोल सपेद कुछ नीले जटायुक्त होते हैं। मात्रा तीन आनेभरि।

व्यवहार-जड । परन्तु अल्पमूल्य होनेसे सर्वदेशान्तरोंमें इसके वेलकाही व्यवहार होताहै ।

बृहतीनामानि ।

बृहती महती सिंही प्रसहा हिंगुली कुली ॥
अक्रान्ता क्षुद्रवार्ताकी रक्ता पाकी लता तथा ।

अर्थ-बृहती, महती, सिंही, प्रसहा, हिंगुली, कुली, अक्रान्ता, क्षुद्रवार्ताकी, रक्तपाकी, लता (बृहतिका, क्रान्ता, वार्त्ताकी, सिंहिका, राष्ट्रिका, स्थूलकण्ठा, क्षुद्रभण्टा, भण्टाकी, महोटिका, बहुपत्री, कण्ठतनु, कण्ठालु, कट्फला, डोवडी, वनवृन्ताकी, बृहतिका, पारावेदी)

संस्कृत भाषामें	बृहती, वार्त्ताकी ।
हिन्दीभाषामें	कटाई, वरहंटा ।
वंगभाषामें	व्याकुड, तितवेगुन ।
मराठीभाषामें	थोरडोरली ।
गुजराती भाषामें	उभीभोरिंगणी ।

टकी भाषामें	हेग्गुल्लु ।
गींभाषामें	पेद्दामुलंगा, कुकंमाची ।
लीभाषामें	चेरुचुण्ट ।
भाषामें	सोलेनमजेकीनीआई । Solanumjequinii
	सोलेनम् इंडिकम् । Solanum Indicum
फारसीभाषामें	उस्तरगार, वादंजानूजंगली ।
अरबीभाषामें	वालुंजानूजंगली ।

बृहतीगुणाः ।

बृहती ग्राहिणी हृद्या पाचनी कफवातहृत् ।
कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ॥
उष्णा कुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमांद्यजित् (भा० प्र०)

अर्थ-खटाई-मलरोधक, हृदयको हितकारी, पाचक, कफवातनाशक, कटु, तिक्त तथा मुखकी विरसता, मल और अरुचिनाशक है, गरम है और कोढ, ज्वर, श्वास, शूल, खांसी और मंदाग्निको दूर करे है।

अन्यच्च ।

बृहती कटुतिक्तोष्णा वातजिज्ज्वरहारिणी ।
अरोचकामकासघ्नी श्वासहृद्रोगनाशिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कटाई-कटु, तिक्त, गरम, तथा वात, ज्वर, अरुचि, आम, खांसी, श्वास और हृदयरोगका नाश करनेवाली है।

अपिच ।

बृहती कटुका चोष्णा तिक्ता हृद्या च पाचिका ।
ग्राहिण्यग्नेर्दीप्तिकरी कफवातज्वरापहा ॥
कुष्ठं चारोचकं छर्दिं श्वासं कासं कृमींस्तथा ।
मुखवैरस्यहृल्लासं कण्डूशूलामदोषहा ॥
हृद्रोगं चाग्निमांद्यं च नाशयेदिति कीर्तिता ।

अर्थ-कटाई-कटु, उष्ण, तिक्त, हृद्य, पाचक, मलरोधक, अग्निप्रदीपक तथा कफ, वात, ज्वर, कुष्ठ, अरोचक, वमन, श्वास, कास, कृमि,

मुखकी विरसता, हल्लास, कण्डू, शूल, आमदोष, हृदयर ाकरे अग्निमांद्यका नाश करे ।

अस्याः फलगुणाः ।

फलानि बृहतीनां च कटुतिक्तलघूनि च ।
कण्डूकुष्ठकृमिघ्नानि कफवातहराणि च ॥ १०

अर्थ–बृहतीके फल–कटु, तिक्त, लघु, कण्डू, कुष्ठ, कृमि, क और वातनाशक हैं ।

क्षुद्रबृहतिकागुणाः ।

लघ्वी बृहतिका वातश्वासशूलकफापहा ।
अग्निमांद्यं ज्वरं छर्दिं हृद्रुगामं च नाशयेत् ॥

अर्थ–क्षुद्रबृहती–वात, श्वास, शूल, कफ, मंदाग्नि, ज्वर, वमन, हृदयरोग और आमनाशक है ।

श्वेतबृहतिकागुणाः ।

श्वेता बृहतिका रुच्या कफवातविनाशिनी ।
अंजनान्नेत्ररोगघ्नी गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत् ॥

अर्थ–सफेदबृहती–रुचिकारक, कफवातविनाशक और अंजनके योगसे अनेक प्रकारके नेत्ररोगोंको नाश करतीहै । शेष गुण बृहतीकी समान जानने ।

बृहतीभेदगुणाः ।

अन्या बृहतिका तिक्ता कट्वी चोष्णा च पित्तला ।
रूक्षा रुच्या भेदिका च पाचिन्यग्निप्रदीपनी ॥
कफवातहरा प्रोक्ता पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः । (नि० र०)

अर्थ–दूसरे प्रकारकी खटाई–कडवी, चरपरी, गरम, पित्तजनक, रूखी, रुचिकारी, भेदक, पाचक, अग्निप्रदीपक, कफवातनाशक है ।

विवरण । बृहतीका क्षुप जङ्गलमें होता है इसमें कांटे बहुत कम होते हैं, इसके पत्ते वैगुनकेसे होते हैं, फल बडे बडे आमलेकी समान चितले और पीले होते हैं ।

कण्टकारीनामानि ।

कण्टकारी कुली क्षुद्रा कासघ्नी कण्टकारिका ।
स्पृही धावनिका व्याघ्री दुःस्पर्शा दुष्प्रधर्षिणी ॥

कटेरी.

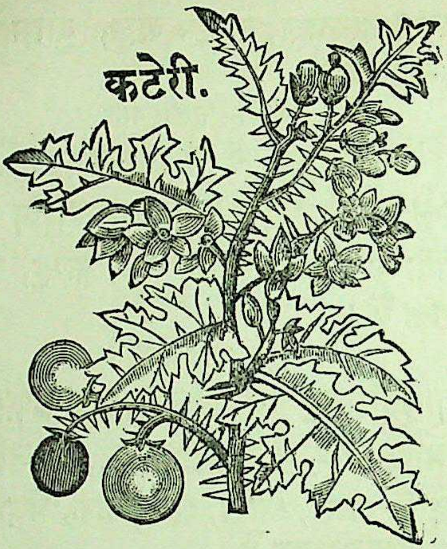

अर्थ-कण्टकारी, कुली, क्षुद्रा, कासघ्नी, कण्टकारिका, स्पृही, धावनिका, व्याघ्रीं, दुःस्पर्शा, दुष्प्रधर्षिणी (कण्टश्रेणी, निदिग्धिका, बृहती, प्रचोदिनी, राष्ट्रिका, अनाक्रान्ता, भण्टाकी, सिंही, कुाल, कण्टकिनी, निदिग्धा, धावनी, क्षुद्रकण्टिका, बहुकण्टा, क्षुद्रफला, कण्टालिका, चित्रफला)

संस्कृतभाषामें	कण्टकारी ।
हिन्दीभाषामें	कटेरी, लघुकटाई, भटकटैया, रेंगनी ।
बंगलाभाषामें	कण्टकारी ।
मराठीभाषामें	रिंगणी, भुईरिंगणी, लघुरिंगणी ।
गुजरातीभाषामें	बेठीभोरिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामें	नेल्लगुल्लु ।
तैलिङ्गीभाषाभें	रेवटीमुलंगा, व्राकुडिचेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	कण्टमारिष ।
लैटिन्भाषामें	सोलेनंझेंथोकार्प Solanum Xanthocarpum

कण्टकारीगुणाः ।

कण्टकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः ।
रूक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान् ॥
निहन्ति पीनसं रोगं पार्श्वपीडाहृदामयान् । (भा० प्र०)

अर्थ-कटेरी-सारक, कडवी, चरपरी, अग्निदीपक, हलकी, रुखी, गरम,

पाचक तथा खांसी, श्वास, ज्वर, कफ, वात,पीनस,पार्श्वपी ाकरे हृदयरोगका नाश करेहै।

अन्यच्च।

कण्टकारी कटूष्णा च दीपनी श्वासकासजित्।
प्रतिश्यायार्तिदोषघ्नी कफवातज्वरार्तिनुत्॥ (रा० व.

अर्थ-कटेरी- चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक तथा श्वास, खांसी, प्रतिश्याय, कफ, वात और ज्वर नाशक है।

अपिच।

कटेरी कटुका चोष्णा दीपन्यग्नेश्च भेदिका।
कट्वी रूक्षा पाचनी च लघ्वी तिक्ता च सारिका॥
श्वासं कासं कफं वातं पीनसं च ज्वरं जयेत्।
हृद्रोगारुचिकृच्छ्रघ्नी पार्श्वशूलस्य नाशिनी॥
आमं कृमींश्च शूलं च नाशयेदिति कीर्तितम्। (नि० र०)

अर्थ-कटेरी-चरपरी, गरम,अग्निप्रदीपक, भेदक, कडवी, रूखी, पाचक, हलकी, तिक्त, सारक, तथा श्वास,खांसी,कफ,वात,पीनस, ज्वर, हृदयरोग, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, पार्श्वशूल, आम, कृमि और शूलका नाश करनेवाली है।

फलं तस्याः कटुः पाके रसे च कटुकं भवेत्।
शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताग्निकृल्लघु॥

अर्थ-कटेरीके फल-पचनेमें चरपरे और रसमें भी चरपरे हैं,शुक्रको दूर करनेवाले,भेदक,कडवे, पित्तजनक, अग्निवर्द्धक और हलके हैं।

अन्यच्च।

कण्टकारीफलं तिक्तं कटुकं भेदि पित्तलम्।
हृद्यं चाग्नेर्दीप्तिकरं लघु वातकफापहम्॥
कण्डूश्वासज्वरकृमिमेहशुक्रविनाशनम्॥

अर्थ-कटेरीके फल-कडवे, चरपरे, भेदक, पित्तकारक, हृदयको हितकारी, अग्निदीपक, हलके, वातकफनाशक तथा कण्डू, श्वास, ज्वर, कृमि, प्रमेह और वीर्यविनाशक हैं।

श्वेतकण्टकारीगुणाः ।

मणा कटुका चोष्णा चक्षुष्या चाग्निदीपनी ।
भस्थापनकर्त्री च पारदस्य नियामिका ॥
चिकृत्कफवातानां नाशिनी परमा मता ।
ाश्चास्या गुणाः प्रोक्ताः फलस्यापि च पूर्ववत् ॥

अर्थ-सफेद कटेरी-चरपरी, गरम, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, गर्भस्थापक, पारेको बांधनेवाली, रुचिकारक तथा कफ और वातका विनाश करनेवालीहै इसके शेष गुण औरइसके फलके शेष गुण कटेरीके समान जानने। व्यवहार-मूल, फल। मात्रा १ मासेकी। श्वेत कटेली रविवार पुष्यनक्षत्रमें उखाडकर खाने या नस्य लेनेसे गर्भाधान होताहै और पुंसवनमें भी काम देता है.

विवरण। कटेरीके क्षुप छतेसे पृथ्वीपर सर्वत्र होतेहैं। फूल बैंजनी और केशर पीले रंगकी होती है। पत्ते चितले और अत्यन्त कांटेदार होते हैं। फल चितले कच्ची अवस्थामें हरे और पकने पर पीले पडजातेहैं। दूसरी सुफेद फूलकी कटेरीभी इसीमाफिक होती है ।

गोक्षुरनामानि

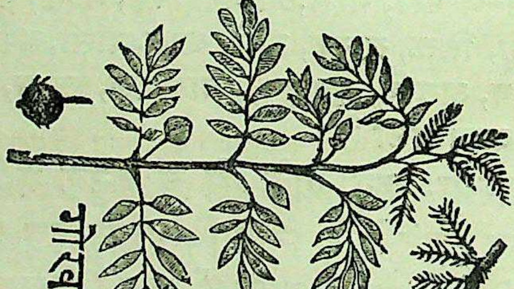

पलङ्कषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टका ।
गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ॥

अर्थ-पलंकषा, इक्षुगन्धा, श्वदंष्ट्रा, स्वादुकण्टका, गोकण्टक, गोक्षुरक वनशृङ्गाट, (त्रिकण्ट, स्थलशृङ्गाट, गोकण्ट, त्रिकण्टक, त्रिपुट, कण्टकफल, क्षुर, गोक्षुर, गोखुरि, विकण्टक, गोखुर, त्रिकट, त्रिक, इक्षुर, क्षुरक, भक्ष्यकण्ट, इक्षुगन्धिका, क्षुराङ्ग, श्वदंष्ट्रक, कण्टकी, भद्रकण्ट, व्यालदंष्ट्र, षडङ्ग, कण्ठी)

क्षुद्रगोक्षुरनामानि ।

क्षुद्रोपरोगो क्षुरकस्त्रिकण्टकः कण्टी षडंग्गो बहुकण्टक
गोकण्टकः कण्टफलः पलंकषाक्षुद्रक्षुरो भक्षटकश्चणद्रु
स्थलशृङ्गाटकश्चैव वनशृङ्गाटकस्तथा ।
इक्षुगन्धः स्वादुकण्टः पर्य्यायाः षोडश स्मृताः ॥

अर्थ-क्षुद्रगोक्षुर, त्रिकण्ट, कण्टी, षडङ्ग, बहुकण्टक, क्षुर, गोकण्टक, कण्टफल, पलंकषा, क्षुद्रक्षुर, भक्षटक, चणद्रुम, स्थलशृङ्गाटक, वनशृङ्गाटक, इक्षुगन्ध, स्वादुकण्ट, यह सोलह नाम क्षुद्रगोखुरूके हैं ।

संस्कृतभाषामें	गोक्षुर, क्षुद्रगोक्षुर ।
हिन्दीभाषामें	गोखुरु, छोटे गोखरु ।
वंगभाषामें	गोखरि ।
मराठीभाषामें	सराटे, लहान गोखरु ।
गुजरातीभाषाम	गोखरु, उभो बेठो बेजातनो छे ।
कर्णाटकी भाषामें	वेडितीसराटीदोड्डुनेग्गिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पालेरु ।
औत्कलीभाषामें	गोखरा ।
लैटिन्भाषामें	पेडेल्यंम्युरेक्स(बडा)ट्रिब्युलसटेरेसट्रीस (छोटा) Pedalum Murx Tribulus Terrestris टिब्युलसऐलटस (सिन्धुकागोखरू) Tribulas alatus
फारसीभाषामें	तुख्मेखार खस्क ।
अरबीभाषामें	वजरुल खस्क, वकलतलखार, खसक ।

द्विविधगोक्षुरगुणाः।

स्यातामुभौ गोक्षुरकौ सुशीतलौ बलप्रदौ तौमधुरौ चबृंहणौ।
कृच्छ्राश्मरीमेहविदाहनाशनौ रसायनौ तत्र बृहद्गुणोत्तरः ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-दानाप्रकारक गोखुरु-शीतल, बलकारक, मधुर, बृंहण तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमह और दाहनाशक हैं, रसायन हैं, इनमें बडा गोखुरु आधक गुणवाला है ।

अन्यच्च।

गोक्षुरः शीतलो बल्यो मधुरो बृंहणो मतः ।
बस्तिशुद्धिकरो वृष्यः पौष्टिकश्च रसायनः ॥
अग्निदीप्तिकरः स्वादुर्मूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः ।
दाहमेहश्वासकासहृद्रोगार्शविनाशनः ॥
वस्तिवातं त्रिदोषं च कुष्ठं शूलं च नाशयेत् ।

अर्थ-गोखरु-शीतल,बलकारक,मधुर,बृंहण,वस्तिशोधक,वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, रसायन, अग्निदीपक, स्वादिष्ठ, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, श्वास, खांसी, हृदयरोग, बवासीर, वास्तिवात, त्रिदोष, कुष्ठ और शूलको नष्ट करे है ।

अपिच ।

गोक्षुरो मूत्रकृच्छ्रघ्नो बल्यो वृष्योऽनिलापहः ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गोखुरु-मूत्रकृच्छरोगनाशक, बलकारक, वर्य्यिजनक और वातविनाशक है ।

अस्य शाकगुणाः ।

तिक्तं गोक्षुरकं वृष्यं शाकस्रोतोविशोधनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-गोखरुके पत्तोंका शाक-तिक्तरसान्वित, वीर्यजनक और स्रोतविशोधक है ।

अस्य बीजगुणाः ।

बीजं गोक्षुरकं शीतं मूत्रलं शोथवारणम् ।
वृष्यमायुष्करं शुक्रमेहनुत्कृच्छ्रनाशनम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

गोक्षुरके बीज-शीतल,मूत्रजनक,शोथनिवारक,वृष्य, आयुवर्द्धक तथा शुक्र, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रको दूर करनेवाले हैं ।

अस्य क्षारगुणाः ।

क्षारस्तु गोक्षुराणां तु मधुरः शीतलो मतः ।
स्रोतोविशोधनश्चैव वातघ्नो वृष्य एव च (नि० र०)

अर्थ-गोखुरुओंका खार-मधुर,शीतल, स्रोतोविशोधन,वातनाशक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

विवरण । गोक्षुर दो जातिके होतेहैं, एक पहाडी दूसरा दे
पहाडी गोखरुका क्षुप होताहै, फूल पीला और सफेद हो
पत्तेभी किंचित सफेद होते हैं, फलके चार कोनोंके ऊपर एक
होता है । देशी गोखरुका पृथ्वीके ऊपर छत्ता होता है, पत्ते
समान होते हैं, फूल पीला होताहै, इसके फलमें छः कांटे हो
मात्रा ६ मासेकी ।

पञ्चमूलगुणाः ।

पञ्चमूलमिदं ह्रस्वं बृंहणं बलवर्द्धनम् ।
कषायं तिक्तकं नातिशीतोष्णं सर्वदोषजित् ॥

अर्थ–ह्रस्वपञ्चमूल–पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कषायरसान्वित, तिक्तरससंयुक्त, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त गरम और त्रिदोषनाशक है।

बृहत्पंचमूलगुणाः ।

पंचमूलं महत्तिक्तं कषायं कफवातनुत् ।
मधुरं श्वासकासघ्नमुष्णं लघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ–बृहत्पंचमूल–तिक्त, कषाय, कफवातनाशक, मधुर, श्वासनिवारक, कासनाशक, उष्ण, लघु और अग्निदीपक है।

दशमूलगुणाः ।

दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः ।
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–दशमूल–त्रिदोष, श्वास, खांसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, आनाह, पार्श्वपीडा और अरुचिको हरनेवालाहै । अधिक दशमूलके गुण मिश्रवर्गमें देखो ।

जीवन्तीनामानि ।

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवदा च सुखंकरी ।
रक्ताङ्गी प्राणदा भद्रा मङ्गल्या मृगराटिका ॥

अर्थ–जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवदा, सुखङ्करी, रक्ताङ्गी, प्राणदा, भद्रा, मङ्गल्या, मृगराटिका (जीवनीया, स्रवा, मधुस्रवा, मङ्गल्यनामधेया, पयस्विनी, जीव्या, जीवदात्री, शाकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, क्षुद्रजीवा, यशस्या, शृङ्गाटी, जीवपृष्ठा, काञ्जिका, शशशिम्बिका, सुपिंगला, पुत्रभद्रा, मधुश्वासा, जीववृषा, जीवपत्री, जीवपुष्पी, जीववर्द्धिनी, यशस्करी)

स्कृतभाषामें	जीवन्ती ।
न्दीभाषामें	जीवन्ती (डोडी)
गभाषामें	जीवई, जीयाती, जीवन्ती ।
राठीभाषामें	जीवंती ।
जरातीभाषामें	राडारूडी, वाछंटी ।
र्णाटकीभाषामें	हिरियाहालि ।

अस्या गुणाः ।

जीवन्ती मधुरा शीता रक्तपित्तानिलापहा ।
क्षयदाहज्वरान्हन्ति कफवीर्य्यविवर्द्धिनी॥(रा०नि०)

अर्थ-जीवन्ती-मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह और ज्वरका नाश करनेवाली है तथा कफ और वीर्य्यको बढानेवाली है ।

अन्यच्च ।

चक्षुष्या सर्वदोषघ्नी जीवन्ती मधुरा हिमा॥(आ०सं०)

अर्थ-जीवन्ती-नेत्रोंको हितकारी, त्रिदोषनाशक, मधुर और शीतल है ।

अपिच ।

जीवन्ती श्वासकासघ्नी स्वर्य्या च क्षयनाशिनी॥(रा०नि०)

अर्थ-जीवन्ती-श्वास और खांसीको दूर करनेवाली है, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाली है और क्षयरोगका क्षयकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

जीवन्ती शीतला माध्वी स्निग्धा स्वाद्वी रसायनी ।
चक्षुष्या ग्राहका बल्या लघ्वी धातुविवर्द्धिनी ॥
वृष्या कफकरी सूतबंधिनी रक्तपित्तहा ।
वातं क्षयं ज्वरं दाहं नेत्ररोगं त्रिदोषकम् ॥
रक्तदोषं भूतबाधां पित्तं चैव विनाशयेत् ।
फलं चास्या धातुवृद्धिकारकं मधुरं गुरु ॥

अर्थ-जीवन्ती-शीतल, मधुर, स्निग्ध,स्वादिष्ट, रसायन,नेत्रोंको हितकारी, मलरोधक, बलकारक, हलकी, धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, पारेको बांधनेवाली तथा रक्तपित्त, वात, क्षय, ज्वर,

दाह, नेत्ररोग, त्रिदोष, रक्तविकार, भूतवाधा और पित्तका नाशकरे इसका फल-धातुवर्धक मधुर और भारी है ।

बृहज्जीवन्तीनामानि ।

जीवन्त्यन्या बृहत्पूर्वा पुत्रभद्रा प्रियंकरी ।
मधुरा जीवपुष्पा च बृहज्जीवा यशस्करी ॥

अर्थ-बृहज्जीवन्ती, पुत्रभद्रा, प्रियंकरी, मधुरा, जीवपुष्पा, बृहज्जीवा, यशस्करी ।

संस्कृतभाषामें	बृहज्जीवन्ती ।	
हिन्दीभाषामें	बडीजीवन्ती ।	
वंगभाषामें	भडजीवइ ।	
गुजरातीभाषामें	मोटीखरखोडी तृणधारनी ।	
कर्णाटकीभाषामें	किरियहाले।	
इंग्रेजीभाषामें	शार्शापेरला ।	Sasapraila

अस्या गुणाः ।

एवमेव बृहत्पूर्वा रसवीर्यबलान्विता ।
भूतविद्राविणी ज्ञेया वेगाद्रसनियामका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-बडी जीवन्ती-रसवीर्य और बलमें जीवन्तीके समान है भूतविद्रावक और पारेको बांधनेवाली है ।

स्वर्णजीवन्तीनामानि ।

हेमपूर्णा स्वर्णलता स्वर्णजीवन्तिका च सा ।
हेमवल्ली हेमलता हेमक्षीरी सुमङ्गला ॥

हेमपूर्णा, स्वर्णलता, स्वर्णजीवन्तिका, हेमवल्ली, हेमलता, हेमक्षीरी, सुमङ्गला (हेमाह्वा, स्वर्णजीवन्ती, स्वर्णजीवा, हेमजीवन्ती, तृणग्रन्थि, हिमाश्रया, स्वर्णपर्णा, सुजीवन्ती, सुपर्णिका, हेमपुष्पी, हेमा, हेमवती, सौम्या)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णजिवंती ।
हिन्दीभाषामें	पीलीजीवन्ती, सुनहरी जीवन्ती ।
वंगभाषामें	स्वर्णजीवन्ती ।
मराठी भाषामें	हरणवेल, हेमहरणवेल ।
गुजराती भाषामें	खरखोडी, मीठीखरखोडी ।

कर्णाटकीभाषामें	होणहाले ।
लैटिन्भाषामें	डेूजिआवोल्युविलिस् ।

अस्या गुणाः ।

स्वर्णजीवन्तिका वृष्या चक्षुष्या मधुरा तथा ।
शशिरा वातपित्तासृग्दाहजिद्बलवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-स्वर्णजीवन्ती-वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, मधुर, शीतल तथा वात, रक्त, पित्त और दाहको दूर करनेवालीहै और बलवर्द्धक है।

तिक्तजीवन्तीनामानि ।

तिक्तजीवन्तिका तिक्ता भद्रा तिक्तप्रियङ्करी ।

अर्थ-तिक्तजीवन्तिका, तिक्तभद्रा, तिक्तप्रियङ्करी (विषमुष्टि, केशमुष्टि, सुमुष्टि, रणमुष्टिक, डोडीक्षुप)

संस्कृतभाषामें	विषमुष्टि, तिक्तजीवन्ती ।
हिन्दीभाषमें	डोडी ।
मराठीभाषामें	विषदोडी ।
गुजरातीभाषामें	कडवोखरखोडो ।
कर्णाटकीभाषामें	दोडीकगसगे ।

अस्या गुणाः ।

तिक्तजीवन्तिका वातकफाजीर्णज्वरापहा ।
शोफघ्नी विषहन्त्री च लेपादाखुविषापहा ॥

अर्थ-तिक्तजीवन्ती-वात, कफ, अजीर्ण, ज्वर, सूजन और विषविनाशक है। इसका लेप करनेसे मूषेका विष दूर होता है ।

अन्यच्च ।

विषडोडी भवेत्तिक्ता कट्वी चाग्निप्रदीपनी ।
मलस्तम्भकरी ग्राही पित्तलोष्णास्रपित्तजित् ॥
लघ्वी वृष्या च रुच्या च दाहकारी कफापहा ।
कण्ठरुग्वातगुल्मार्शःकृमिकुष्ठविषापहा ॥
श्वासप्रमेहाखुविषनाशिनी परिकीर्तिता ।

अर्थ-डोडी-तिक्त, कटु, अग्निप्रदीपक, मलस्तम्भक, ग्राही, पित्तजनक, गरम, रक्तपित्तनाशक, हलकी, वीर्य्यजनक, रुचिकारक, दाहकारक,

नाशक तथा कण्ठरोग, वात, गुल्म, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, विष, श्वास, प्रमेह और मूषेक विषको दूर करनेवाली है ।

विषमुष्टिगुणाः ।

विषमुष्टिः कटुस्तिक्तो दीपनः कफवातनुत् ।
कण्ठामयहरो रुच्यो रक्तपितार्तिदाहनुत् ॥

अर्थ-विषमुष्टि-चरपरी, कडवी, दीपन, कफवातविनाशक, कण्ठरोगनाशक,रुचिकारी तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करे है । कहीं विषमुष्टि विषहिन्दुक (कुचले) कोभी कहते हैं परंतु यहां यह विषडोडीकाही वाचक है.

विवरण । जीवन्ती अनेक जातिकी होतीह, इसकी वल चलतीहै, फल डोडोंमें आते हैं इसमें आककी समान दूध निकलताहै।

मुद्गपर्णीनामानि ।

मुद्गपर्णी काकमुद्गा सहा च शिम्बिपर्णिका ।
शिम्बिपर्णी क्षुद्रसहा शिम्बी मार्जारगन्धिका ॥

अर्थ-मुद्गपर्णी, काकमुद्गा, सहा, शिम्बिपर्णिका, शिम्बिपर्णी, क्षुद्रसहा, शिम्बी,मार्जारगन्धिका (वनजा रिङ्गिणी, ह्रस्वा, शूर्पपर्णी, कुरङ्गिका, कोशिला, वनोद्भवा, वनमुद्गा, आरण्यमुद्गा, वन्या, करञ्जिका)

संस्कृतभाषामें	मुद्गपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	मुगवन ।
बंगलाभाषामें	मुगानि ।
मराठीभाषामें	रानमूग ।
गुजरातीभाषामें	अडवाड मगवल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	कोहसरु ।
तैलिङ्गीभाषाम	कारूपसारा ।
लैटिन्भाषामें	फेजियोलंस ट्रायला बेटस् ।Phasiolons Trilobetus

अस्या गुणाः ।

मुद्गपर्णी हिमा रूक्षा तिक्ता स्वाद्वी च शुक्रला ।
चक्षुष्या क्षयशोथघ्नी ग्राहिणी ज्वरदाहनुत् ॥
दोषत्रयहरी लघ्वी ग्रहण्यर्शोतिसारजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-मुगवन-शीतल,रूखी,कडवी, स्वादिष्ठ,शुक्रजनक, नेत्रोंको हितकारी क्षयघ्न, शोथनाशक, मलरोधक, तथा ज्वर, दाह और

त्रिदोषनाशक, हलकी और संग्रहणी, बवासीर और अतिसारको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मुद्गपर्णी हिमा कासवातरक्तक्षयापहा ।
पित्तदाहज्वरान् हन्ति चक्षुष्या शुक्रवृद्धिकृत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ- मुगवन-शीतल तथा खांसी, वातरक्त, क्षय, पित्त, दाह और ज्वरको दूर करनेवाली है, नेत्रोंको हितकारी और वीर्य्यवर्द्धक ह ।

अपिच ।

मुद्गपर्णी हिम कासवातरक्तज्वराञ्जयेत् ।
स्वाद्वी लघ्वी त्रिदोषघ्नी ग्रहणी कृमिनाशिनी ॥
अतिसारकफार्शोघ्नी पित्तनाशकरी मता ॥
रक्तस्तम्भकरा रूक्षा चोक्ता वैद्यैर्निघण्टुके ॥

अर्थ- मुगवन-शीतल तथा खांसी, वात, रक्त और ज्वरका नाश करे है । स्वादिष्ठ, हलकी, त्रिदोषनाशक तथा संग्रहणी, कृमि, अतिसार, कफ, बवासीर और पित्तको दूर करेहै । रक्तस्तम्भक और रूखा है ।

विवरण । मुद्गपर्णी मूंगकी समान वेल होतीह, । पत्ते मूंगकी समान हरे होतेहैं; फूल पीले रंगके होते हैं और फलीभी मूंगकी समान आती है ।

माषपर्णीनामानि ।

माषपर्णी कृष्णवृन्ता पर्णिनी पाण्डुलोमशा ।
ऋषिप्रोक्ता हयपुच्छी काम्बोजी सिंहपुच्छिका ॥

अर्थ-माषपर्णी, कृष्णवृन्ता, पर्णिनी, पाण्डुलोमशा, ऋषिप्रोक्ता, हयपुच्छी, काम्बोजी, सिंहपुच्छिका (महासहा, सिंहपुच्छी, पाण्डुलोमशपर्णिनी, पाण्डुलोमा, आर्द्रमाषा, मांसमाषा, मङ्गल्या, हयपुच्छिका, हंसमाषा, अश्वपुच्छी, माषपर्णिका, कल्याणी, वज्रमूली, शालिपर्णी, विसारणी, आत्मोद्भवा, बहुफला, स्वयम्भू, सुलभा, घना, सिंहविन्ना, विशाम्बिका, सूर्यपर्णी, पाण्डुरा)

संस्कृतभाषामें	माषपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	मषवन, बनउर्दी, जंगलीउडद ।
वंगभाषामें	माषाणी ।

मराठीभाषामें	रानउडीद।
गुजरातीभाषामें	अडवाड, अडद्वेल।
कर्णाटकीभाषामें	रानोडिंडुका उट्टु।
तैलिङ्गीभाषामें	कारुमीनुरु।
लैटिन्भाषामें	ग्रैंजिआमड्रासपटना। Grangemadrass Patane

अस्या गुणाः।

माषपर्णी हिमा तिक्ता रूक्षा शुक्रबलासकृत्।
मधुरा ग्राहिणी शोथवातपित्तज्वरास्रजित्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मषवन-शीतल कडवी, रूखी, शुक्रजनक, कफकारक, मधुर, ग्राही तथा सूजन, वात, पित्त, ज्वर और रुधिरविकारको दूर करे है।

अन्यच्च।

माषपर्णी रसे तिक्ता वृष्या दाहज्वरापहा।
शुक्रवृद्धिकरी बल्या शीतला पुष्टिवर्द्धिनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-मषवन-तिक्तरसान्वित, वृष्य, दाह, ज्वरनाशक, शुक्रवर्द्धक, बलकारक, शीतल और पुष्टिवर्द्धक है।

अपिच।

माषपर्णी महावृष्या बृंहणी बलवर्णकृत्।
स्तन्यकेशहिता स्निग्धा वातपित्तापहा हिमा॥ (शो० नि०)

अर्थ-मषवन-महावृष्य, पुष्टिकारक, बलकारक, बलवर्द्धक, वर्णको सुन्दरतादायक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, केशोंको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, वातपित्तनाशक और शीतल है।

अन्यच्च।

माषपर्णी शुक्रवृद्धिकरा वृष्या च तिक्तका।
बलदा पौष्टिका शीता रूक्षा कफकरी मता॥
रक्तरुङ्नाशिनी ग्राही त्रिदोषज्वरपित्तहा।
रक्तपित्तं क्षयं कासं वातं शोषं च दाहकम्॥
वातपित्तं रक्तदोषं नाशयेदिति कीर्त्तितम्।

अर्थ-मषवन-शुक्रवर्द्धक, वृष्य, कडवी, बलदायक, पुष्टिकारक, शीतल, रूखी, कफकारक, रक्तरोगनाशक, मलरोधक तथा त्रिदोषज्वर, पित्त, रक्तपित्त, क्षय, खांसी, वात, शोष, दाह, वातपित्त और रुधिरविकारको हरनेवाली है। माषपर्णीकी वेल उडदकी समान होतीहै। व्यवहार-सर्वांग। मात्रा २ मासेकी। माषपर्णी और मुद्गपर्णी जो समतल देशमें लीजाती है उसके नीचे साधारण जड होती है परन्तु बर्फानी

पहाडोंपर होनेवाली माषपर्णी और मुद्गपर्णीके नीचे सफेद मूली-सी होती है वह स्वादमें मीठी आकारमें छोटी मूलीके समान होती है पत्र आदि सब माष और मूंगके समानही होतेहैं ।

एरण्डनामानि ।

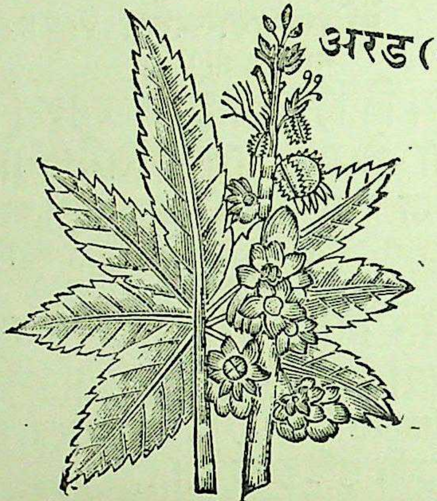

एरण्डो व्याघ्रपुच्छः स्याच्चित्रकस्त्रिपुटीफलः ।
पञ्चांगुलः शूलशत्रुर्वातारिर्दीर्घदन्तकः ॥

अर्थ-एरण्ड, व्याघ्रपुच्छ, चित्रक, त्रिपुटीफल, पञ्चांगुल, शूलशत्रु, वातारि, दीर्घदन्तक (रुवूक, गन्धर्वहस्तक, उरुवुक, रुवुक, चंचुक, मण्ड, वर्द्धमान, व्यडत्वक्, एरण्डक, इष्ट, अमङ्गल, तुच्छद्रु, व्रणहा, त्रिपुटी, व्याघ्रदल, उरुवूक, रुवूक, रुवुक, रूवक, वुक, अमण्ड, आमण्ड, व्यडम्बन, कान्त, तरुण, शुक्र, दीर्यपत्रक(दीर्घदण्डक) चित्रबीज और स्नेहप्रद)

रक्तैरण्डनामानि ।

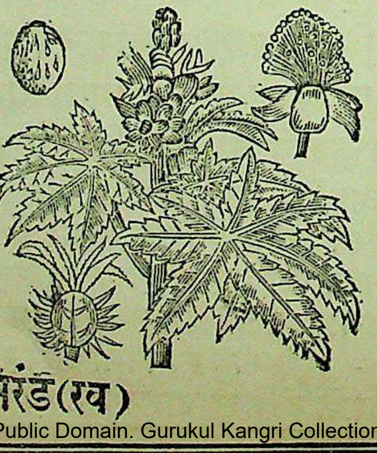

रक्तो परो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्रकरो रुवुः ।
त्रिबीजश्च रुवूकश्च चारुरुत्तानपत्रकः ॥

अर्थ-रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रकर, रुवु, त्रिबीज, रुवूक, उत्तानपत्रक, (उरुबुक, नागकर्ण, चंचु, करपर्ण, पाचन, स्निग्ध, व्याघ्रबल, रक्तक, चिरवीर्य्य, ह्रस्वैरण्ड और व्याघ्रपुच्छ)

स्थूलैरण्डनामानि ।

स्थूलैरण्डो महैरण्डो महापञ्चाङ्गुलादिकः ॥

अर्थ-स्थूलैरण्ड, महैरण्ड और महापञ्चांगुल ।

हिन्दीभाषामें	अण्ड, सफेद अण्ड, लाल अण्ड, बडा अण्ड ।
बंगलाभाषामें	भेराण्डा, शादारेडी, लालभेण्डा, बडभेराण्डा ।
मराठीभाषामें	एरंड, एरण्डोली ।
गुजरातीभाषामें	धोलोएरंडो, रातोएरंडो ।
कर्णाटकीभाषामें	एरंडुआंडलके ।
तैलिङ्गीभाषामें	आमुडामु, आमिदपुचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	कास्टर ओईल प्लाट Casteroil Plant Castor seed कास्टरसीड्
लैटिन्भाषामें	रिसिनसूकॉम्युनिस् Ricinus Communis
फारसीभाषामें	बेदंजीर, सुर्खमेवेदजीर ।
अरबीभाषामें	खिरवा, हबुलखिरुवा ।
तुरकीमें	करचक ।

द्विविधैरण्डगुणाः ।

ऐरण्डयुग्मं मधुरमुष्णं गुरु विनाशयेत् ।
शूलशोथकटीवस्तिशिरःपीडोदरज्वरान् ॥
वध्मश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ-दोनोंप्रकारके अण्ड-मधुर, उष्ण, भारी तथा शूल, सूजन, कमर, वास्ति (पेडू) और शिरोरोग, उदर, ज्वर, बद, श्वास, कफ, अफारा, कास, कुष्ठ और आमवातनाशक हैं ।

अस्य पत्रगुणाः ।

एरंडपत्रं वातघ्नं कफक्रिमिविनाशनम् ।
मूत्रकृच्छ्रहरं चापि पित्तरक्तप्रकोपनम् ॥

वातार्यग्रदलं गुल्मवस्तिशूलहरं परम् ।
कफवातकृमीन् हन्ति वृद्धिं सप्तविधामपि ।

अर्थ-अण्डके पत्ते-वातनाशक, कफघ्न, क्रिमिविनाशक, मूत्रकृच्छ्र रोगको हरनेवाले और पित्तरोगको कुपित करनेवाले हैं । अण्डके आगेके दल अर्थात् कोमल पत्ते-वात, गुल्म, वास्ति, शूल, कफ,वात,कृमि और सातप्रकारकी अण्डवृद्धिको दूर करे हैं ।

अस्य फलगुणाः ।

एरण्डफलमत्युष्णं गुल्मशूलानिलापहम् ।
यकृत्प्लीहोदरार्शोघ्नं कटुकं दीपनं परम् ॥

अर्थ-अण्डके फल-अत्यन्त उष्ण, चरपरे, अग्निको दीपन करनेवाले तथा गुल्म, शूल, वात, यकृत, प्लीहा, उदररोग और बवासीरको दूर करे हैं ।

अस्य मज्जागुणाः ।

एतन्मज्जा च विड्भेदी वातश्लेष्मोदरापहा॥(भा०प्र०)

अर्थ-इसकी मींग-मलभेदक तथा वात, कफ और उदररोगका नाश करे है ।

अस्य मूलगुणाः ।

एरण्डमूलं शूलघ्नं वृष्यं वातकफापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-इसकी जड-शूल, वात और कफको निर्मूल करे है, तथा वीर्य्यजनक है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

पुष्पं हन्त्यस्य वध्मानिलकफगुदजान् गुल्मशूलोर्ध्ववातान् ।

अर्थ-इसका फूल-वध्म (बद), वात, कफ, गुदजरोग, गुल्म, शूल और ऊर्ध्ववातको दूर करे है ।

श्वेतैरण्डगुणाः ।

श्वेतोरुवूकस्तु कटुस्तीक्ष्णश्चोष्णो गुरुः स्मृतः ।
मधुरस्तिक्तको वृष्यो गुरुः स्वादुः सरः स्मृतः ॥
वातोदावर्तकफहृज्ज्वरकासोदरापहः ।
शोथशूलकटीवस्तिशिरोरुङ्नाशनः स्मृतः ॥

श्वासानाहकुष्ठवर्ध्मगुल्मप्लीहामपित्तहा ।
प्रमेहोष्मावातरक्तमेदान्त्रावर्धनप्रणुत् ॥
अस्य भेदो बृहत्स्थूलो रसे पाके गुणाधिकः ।

अर्थ-सफेद अण्ड-कटु, तीक्ष्ण, गरम, भारी, मधुर, कडवा, वृष्य, भारी, स्वादिष्ठ और दस्तावर है। तथा वात, उदावर्त्त, कफ, ज्वर, कास, उदर, सूजन, शूल और कमर, वस्ति, मस्तकशूल, श्वास, अफारा, कोढ, वर्ध्मरोग (बद), गोला, प्लीहा, आमपित्त, प्रमह, उष्णता, वातरक्त, मेद और अंत्रवृद्धिरोगका नाश करेहै । इसका भेद-स्थूल एरण्ड है और वह इसकी अपेक्षा रसमें और पाकमें अधिक गुणवाला है ।

रक्तैरण्डगुणाः ।

रक्तोरुवूकस्तुवरो रसे कटुर्लघुः स्मृतः ।
तिक्तो वातकफश्वासकासकृम्यर्शवर्ध्महा ॥
रक्तदोषं पाण्डुरुजं भ्रांत्यरोचकनाशनः ।
प्रायस्त्वन्ये गुणाश्चास्य श्वेतवच्च समीरिताः ॥
पर्णद्वयोस्तु संप्रोक्तं वातपित्तस्य वर्धकम् ।
मूत्रकृच्छ्रं वातकफं कृमींश्चैव विनाशयेत् ॥
एतयोश्चांकुरो गुल्मवस्तिशूलकफक्रिमीन् ।
वातं सप्तप्रकारं तु वृद्धिरोगं विनाशयेत् ॥
पुष्पं तु वातकफहृत्पित्तमूत्ररुजापहम् ।
रक्तपित्तं वर्धयति फलमज्जाग्निदीपनी ॥
अत्युष्णा कटुका स्वादुः पटुः स्निग्धा सरा स्मृता ।
मलभेदकरा लघ्वी गुल्मशूलकफापहा ॥
यकृद्वातोदरप्लीहावातार्शानां विनाशिनी ।

अर्थ-लाल अण्ड-कषेला, रसमें चरपरा, हलका, कडवा, वात, कफ, श्वास, कास, कृमि, बवासीर, बद, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, भ्रान्ति और अरुचिको दूर करे है। शेष गुण सफेद अण्डकी समान जानने। इन दोनोंके पत्ते-वातपित्तकारक तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ,

और कृमिरोगका नाश करे हैं। इसके कोमल अंकुर-गुल्म, वस्ति, शूल, कफ, कृमि, वायु और सात प्रकारके वृद्धिरोगको दूर करेहैं। इसके फूल-वात, कफ, पित्त आर मूत्रकृच्छ्रादिरोगोंको दूर करे हैं तथा रक्तपित्तको बढावे हैं। इसकी मींग-अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, कटु, स्वादिष्ठ, खारी, स्निग्ध, सारक, मलभेदक, लघु तथा गुल्म, शूल, कफ, यकृत, वात, उदररोग, प्लीहा और वादीकी बवासीरको दूर करे है।

अस्य तैलगुणाः।

एरण्डतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्द्धनम्।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, भारी, कफवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म, हृद्रोग और जीर्णज्वरका नाश करे है।

अपिच।

एरण्डतैलं मधुरं सरं चोष्णं गुरु स्मृतम्।
अरुच्यं च स्मृतं स्निग्धं तिक्तं वर्ध्मोदरापहम् ॥
गुल्मवातकफांश्चैव शोथञ्च विषमज्वरम्।
कटिपृष्ठकोष्ठगुह्यशूलनाशकरं परम् ॥

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, दस्तावर, गरम, भारी, अरुचिकारक, स्निग्ध, तिक्त तथा बद, उदर, गुल्म, वात, कफ, सूजन, विषमज्वर और कमर, पीठ, कोष्ठ और गुदा आदिके शूलको निर्मूल करे है।

अन्यच्च।

एरण्डतैलं मधुरमुष्णं तीक्ष्णञ्च दीपनम्।
रसे कटु कषायञ्च सूक्ष्मं स्रोतोविशोधनम् ॥
योनिशूलविशोधनमारोग्यमेधाकान्तिकृत्।
स्मृतिस्थैर्य्यं बलकरं वृष्यं मधुरमेव च ॥
वयःस्थापनकं हृद्यं वातश्लेष्महरं परम्।

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, उष्ण, तीक्ष्ण और जठराग्निप्रदीपक है। कटुरसान्वित, कषेला, सूक्ष्म और स्रोतविशोधक है। योनि(वीर्य्य)

शूलको शोधनेवाला है।आरोग्यता,मेधा और कान्ति करनेवाला है। स्मरणशक्ति बढानेवाला, स्थिरताकारक, बलजनक, मधुर और बीर्यको उत्पन्न करेहै । अवस्थाको स्थापन करनेवाला है, हृदयको हितकारी तथा वात और कफको दूर करेहै ।

अपिच ।

एरण्डतैलं कृमिदोषनाशनं वातामयघ्नं सकलाङ्गशूलहृत् ।
कुष्ठापहं स्वादु रसायनोत्तमं पित्तप्रकोपं कुरुतेऽतिदीपनम् ।

अर्थ-अण्डीका तेल-कृमिरोगनाशक, वातरोगनिवारक, सर्व प्रकारके शूलको निर्मूल करनेवाला, कुष्ठघ्न,स्वादिष्ठ,रसायनमें श्रेष्ठ, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निको दीपन करनेवाला है।आगे इसके गुण तैलवर्गमें देखो ।

विवरण-इसके वृक्ष प्रायः खेतीकी बाडपर लगाये जाते हैं,इसकी लाल और सफेद दो जाती हैं,इसके फलपर कोमल कांटे होते हैं, फलमेंसे तीन बीज निकलतेहैं, यह फल ऊपर चित्रित होतेहैं और बीजके भीतर मींग सफेद निकलतीहै उस मींगके भीतर तेल होता है उस मींग अथवा तेलको खानेसे जुल्लाब होता है । इसके पत्तोंको मस्तकपर बांधनेसे माथेका शीत दूर होताहै । व्यवहार-मूल, पत्ते, छाल, मूलकीछाल,फल,फूल,मींग और तैल ।

अर्कनामानि ।

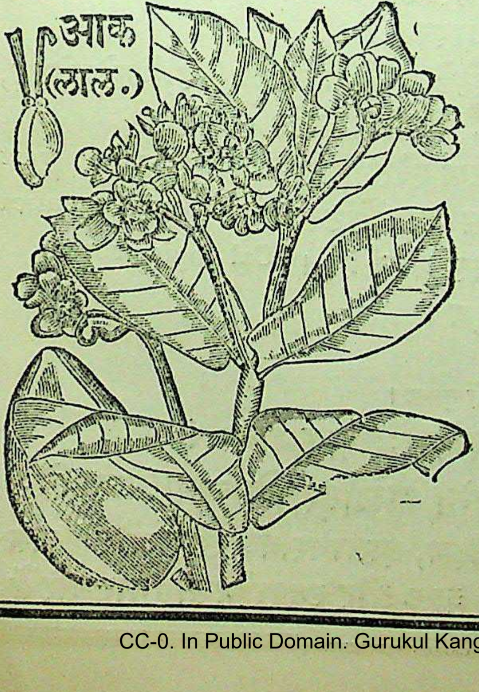

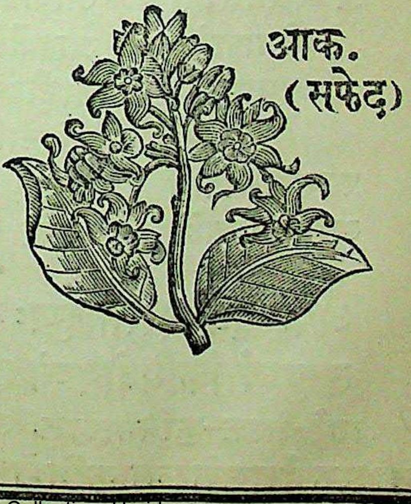

क्षीरदलं शुकफलं तूलार्कश्च सदासुमः ॥

अर्थ-क्षीरदल, शुकफल, तूलफल, अर्क, सदासुम, (प्रताप,क्षीरकाण्डक, विक्षीर,भास्कर,हरिदश्व,विवस्वान्,अहर्माणि,अहर्बान्धव, अर्यमा, अहर्पति, उष्णरश्मि,भानु,विकर्त्तन,गणरूप,मन्दार,प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, विभावसु, विवस्वान्, सप्ताश्व, सविता, सूनु, आस्फोत, वसुक, हिमाराति, पुच्छी, प्रताप, क्षीरी, खर्ज्जूघ्न, शीतपुष्पक, जम्भल, क्षीरपर्णी, विकोरण, सदापुष्प,सूर्य्याह्व,आस्फोतक, भास्कर, आस्फोटक, रवि, कीरतनुफल और क्षीराङ्ग)

श्वेतार्कनामानि ।

श्वेतार्कोऽलर्कराजाऽर्कौ मन्दारो गणरूपकः ॥

अर्थ-श्वेतार्क, अलर्क, राजार्क, मन्दार,गणरूपक, (तपन, श्वेत, दीर्घपुष्प, शिवाह्वय, प्रताप, शीतार्कक, शर्करापुष्प, काष्ठील,वसुक, सदापुष्प, वृत्तमल्लिका, वेधा, शम्भु, गणरूपी, रक्तार्क, बिम्बोर, सदापुष्पी, रूपिका, आदित्यपुष्पिका, दिव्यपुष्पिका, अर्क, रक्तपुष्प और शुक्लफल)

हिन्दीभाषामें	लाल आक, सफेद आक, मंदार ।
वंगभाषामें	आकन्द श्वेतआकंद ।
मराठीभाषामें	रुई, पांढरीरुई ।
कर्णाटकीमें	पक्के, मंदारपक्के ।
तैलङ्गीभाषामें	नीलजिल्लेडेघोली,तेलाजिल्लीडे,जिल्लेट्टचेट्टु,
गुजरातीभाषामें	आकडो, भोलोआकडो ।
इंग्रेजीभाषामें	जाइजैंटिक स्वैलोवर्ट। Gigantic Swallow wort
लैटिन्भाषामें	कैलोट्रौपिस जाइजैंटिका। Calotropis Gigantica
	कैलोटोपिस प्रोसीरा । Calotopis procera
फारसीभाषामें	खुर्क, दुध ।
अरबीभाषामें	उषर ।

अर्कगुणाः ।

अर्कः कृमिहरस्तीक्ष्णः सरोर्शःकफनाशनः ।
तत्पुष्पं क्रिमिदोषघ्नं हन्ति शूलोदराणि च ॥(धन्व०नि०)

अर्थ-आक-कृमिनाशक, तीक्ष्ण, दस्तावर,बवासीर और कफनाशक है।इसके फूल कृमिदोष, शूल और उदररोगका नाशकरे हैं

रक्तार्कपुष्पं मधुरं सतिक्तं कुष्ठक्रिमिघ्नं कफनाशनं च ।
आखोर्विषं हंति च रक्तपित्तं संग्राहि गुल्मे श्वयथौ हितं तत् ॥

अर्थ–लाल आकका फूल–मधुर, तिक्त, ग्राही तथा कुष्ठ, कृमि, कफ, मूषेका विष, रक्तपित्त, गुल्म और सूजनको दूर करे है ।

अर्कक्षीरगुणाः ।

क्षीरमर्कस्य तिक्तोष्णं स्निग्धं सलवणं लघु ।
कुष्ठगुल्मोदरहरं श्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–आकका दूध–तिक्त, उष्ण, स्निग्ध, लवणरससंयुक्त, हलका, कोढ, गुल्म तथा उदररोगको दूर करे, इसका विरेचन देना श्रेष्ठ है, अर्थात् इसके द्वारा दस्त उत्तम प्रकारसे होते हैं ।

अर्कमूलस्य त्वग्गुणाः ।

अर्कमूलत्वचा स्वेदकरी श्वासनिबर्हणी ।
उष्णा च वामिका चैव ह्युपदंशविनाशिनी ॥

अर्थ–आकके जडकी छाल–पसीनेको उत्पन्न करे, श्वासको दूर करे, गरम है और उपदंशरोगका नाश करे है ।

अर्कस्तु कटुरुष्णश्च वातजिद्वह्निदीपकः ।
शोफव्रणहरः कण्डूकुष्ठक्रिमिविनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ–आक–कटु, उष्ण, वातनाशक, अग्निप्रदीपक तथा शोफ, व्रण, कण्डू, कुष्ठ और कृमिरोगका नाश करे है ।

द्विविधार्कगुणाः ।

अर्कद्वयं सरं वातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।
निहंति प्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरयकृत्क्रमीन् ॥
अलर्ककुसुमं वृष्यं लघुदीपनपाचनम् ।
अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवारणम् ॥

अर्थ–दोनों प्रकारके आक–रेचक तथा वात, कोढ, कण्डू, विष, व्रण, प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग, यकृत् और कृमि रोगको दूर करे हैं । सफेद आकका फूल–बलकारक, हलका, अग्निको दीपन करे, पाचक, अरुचि, प्रसेक (मुखसे लारका गिरना), बवासीर कास और श्वासको दूर करे है ।

श्वेतमन्दारकोऽत्युष्णस्तिक्तो मलविशोधनः ।
मूत्रकृच्छ्रव्रणान् हन्ति कृमीनत्यन्तदारुणान् ॥
राजार्कः कटुतिक्तोष्णः कफमेदोविषापहः ।
वातकुष्ठव्रणान् हंति शोफकण्डूविसर्पनुत् ॥

अर्थ-सफेद मन्दार-अत्यन्त उष्ण, तिक्त, मलशोधक तथा मूत्रकृच्छ्र, व्रण और अत्यन्त दारुण क्रिमिरोगको दूर करेहै।राजार्क कटु, तिक्त,उष्ण तथा कफ, मेद,विष, वातकुष्ठ, व्रण,शोफ,कण्डू और विसर्परोगका नाश करे है ।

विवरण । आकके वृक्ष जंगल और भूडोंमें अधिकतासे होतेहैं । लकडी निःसार होतीहै, पत्ते वडके समान होतेहैं, फल तोतेकी समान । उसके भीतर तीन रुई निकलती हैं, आकके पंच अङ्गका क्षार करतेहैं, वो क्षार कफको दूर करेहै । इसके पत्तोंको गरम कर पेटपर बांधनेसे पेटका दर्द दूर होताहै ।

स्नुहीनामानि ।

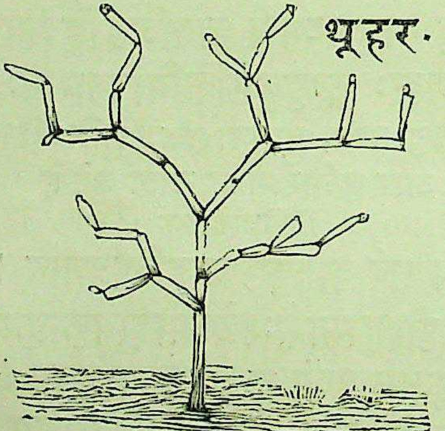

स्नुही समन्तदुग्धा च नागद्रुबहुदुग्धिका ॥
महावृक्षः सुधा वज्रा शीहुण्डो दण्डवृक्षकः ॥(शो०नि०)

अर्थ-स्नुही,समन्तदुग्धा,नागद्रु,बहुदुग्धिका,महावृक्ष,सुधा,वज्रा शीहुण्डा,दण्डवृक्षक,(सोहुण्ड,सिहुण्ड, स्नुक्,स्नुषा, स्नुहा, स्नुही,

वज्र, वज्रद्रु, वज्रद्रुम, वज्रकण्टक, गुड, गुडा, गुडि, गुला, बहुशाल, कृष्णखार, निस्त्रिंशपत्रिका, नेत्रारि, शाखाकण्ट, सेहुण्ड, सिंहतुण्ड वज्री, काण्डशाख, कुलिशद्रुम, काण्डरोहक)

हिन्दीभाषामें	थूहर सेहुंड ।
बंगलाभाषामें	मनसागाछ, सिजवृक्ष ।
मराठीभाषामें	निवडुंग, कांटेनिवडुंग, फणीचें निवडुंग, विकांडी, वईनिवडुंग ।
गुजरातीभाषामें	थोर दांडालियो, कटाली, कंटालोथोर । हाथलो तरधारी, नानो परदेशी ।
कर्णाटकीभाषामें	निवडिंगु, कालि, मुंडुकालि ।
तैलिंगीभाषामें	चेंमुडु ।
देशान्तरीभाषामें	सावर ।
इंग्रेजीभाषामें	मिल्कहेज्ज । प्रिक्लीपीयर । Milk hedge Prickly pear
लैटि०	यूफोर्विया टरक्युलाई Euphorbia Tircall युफोर्वियानिरिफोलीया । Euphorbia Nirifolia युफोर्विया रायलाआना Euphorbia Royleava
फारसीभाषामें	लादनाम्
अरबीभाषामें	जकुम, फय्युंन ।
लैटिन्भाषामें	युफोर्विया टिरुकालाइ । युफोर्विया पेण्टागोता ।
तु०	कोडकालि। ता०कालि।मला० तिरुकल्लि।

स्नुहिगुणाः ।

स्नुहिरुष्णः पित्तदाहकुष्ठवातप्रमेहनुत् ।
क्षीरं वातविषाध्मानगुल्मोदरहरं परम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ–थूहर–गरम, पित्त, दाह, कुष्ठ, वात, और प्रमेहनाशक है । थूहरका दूध–वायु, विष, आध्मान, गुल्म और उदररोगनिवारक है ।

अपिच ।

सेहुण्डो रेचनस्तीक्ष्णो दीपनः कटुको गुरुः ।
शूलमष्ठीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान् ॥

उन्मादमोहकुष्ठार्शशोथमेदोश्मपाण्डुहा ।
व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषं हरेत् ॥

अर्थ-सेहुण्ड-रेचक, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाला, कटु, भारी तथा शूल, अष्ठीलिका, आध्मान, कफ,गुल्म,उदररोग, वायु, उन्माद, मूर्च्छा, कोढ, बवासीर, सूजन, मेदोरोग, पथरी, पाण्डुरोग, व्रण, शोथ, ज्वर, प्लीहा, दूषीविष और विषको दूर करे है।

अस्य दुग्धगुणाः।

उष्णवीर्य्यं स्नुहिक्षीरं स्निग्धं च कटुक लघु ।
गुल्मिनां कुष्ठिनां चापि तथैवोदररोगिणाम् ॥
हितमेतद्विरेकार्थे ये चान्ये दीर्घरोगिणः ॥

अर्थ-सेहुण्डका दूध उष्णवीर्य, स्निग्ध, चरपरा और हलकाहै तथा गुल्म, कुष्ठ, (उपदशरोग) उदर इन रोगवालोंको और बहुत कालके रोगियोंकोभी इसका जुल्लाब हितकारी है।

अस्य पत्रगुणाः।

सेहुण्डस्य दलं तीक्ष्णं दीपनं रोचनं भवेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणि च ॥

अर्थ-सेहुण्डक पत्त तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाले, अत्यन्त रुचिकारक तथा आध्मान, अष्ठीलिका, गुल्म, शूल, शोथ और उदररोगको दूर करे हैं।

अपिच।

सेहुण्डः कटुकस्तिक्तश्चोष्णस्तीक्ष्णः प्रदीपनः ।
सरो गुरुर्वांतिकरः कुष्ठोदरविनाशकः ॥
प्लीहवातप्रमेहघ्नः शूलामकफशोथनुत् ।
गुल्माष्ठीलाध्मानपाण्डुकफोदरव्रणज्वरान् ॥
उन्मादवातं मेदं च वृश्चिकस्य विषं हरेत् ।
दूषीविषार्शाश्मरीघ्नो मुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-थूहर वा सेहुण्ड-कटु, तिक्त, उष्ण, तीक्ष्ण, जठराग्निदीपक, दस्तावर, भारी, वान्तिकारक तथा कुष्ठ, उदर, प्लीहा, वात, प्रमेह, शूल, आम, कफ, सूजन, गोला, अष्ठीला, आध्मान, पाण्डुरोग, कफ, उदरव्रण, ज्वर, उन्माद, वायु, मेद, विच्छूका विष, दूषीविष, बवासीर, और पथरीको दूरकरे है।

विवरण। थूहर और सेहुंड दोनों एकही जातिके वृक्ष हैं, सेहुंडकी डंडी कांटेदार और मोटी होतीहै, पत्ते कोमल पत्थरचटेकी समान होते हैं, परन्तु दूध इसकी प्रत्येकशाखा और प्रत्येक पत्तेमें होताहै थूहरकी शाखा पतली और पत्तेभी छोटे छोटे हरीमिर्चकी समान लम्बे होते हैं, इसके सब अंगोंमें दूध निकलताहै। थूहरकी अनेक जातिहैं। जैसे कांटेवाला थूहर, तिधारा थूहर, चौधारा थूहर, नागफनी थूहर, खुरासानी थूहर, विलायती थूहर इत्यादि। खुरासानी थूहरका दूध विषैला होताहै। इसके दूधको बादीके रोगमें तथा सन्धियोंकी पीडामें चुपडनेसे तुरंत पीडा दूर होती है। थूहरके दूधकी बाजरेके चूनके साथ गोली बनाकर खानेसे जुल्लाब होकर उदरका रोग दूरहोता है और थूहरके दूधमें चनेकी दालको भिगोकर उसको पीसकर झडबेरकी समान गोली बनाकर खानेसे जुल्लाब होकर उपदंश तथा फिरंगरोग दूरहोता है। थूहरकी राखकर उसका खार निकाल अनेक औषधियोंमें डालतेहैं। कांटेवाले थूहरके पत्तोंका शाक बनाकर खाते हैं। उससे उदरके रोग दूर होतेहैं। इसके डंडोंकी भस्मारक नामवाली औषधि बनती है। नागफनी थूहरके लाल पके हुए फल खानेसे श्वास और खांसी दूर होती है।

सातलानामानि।

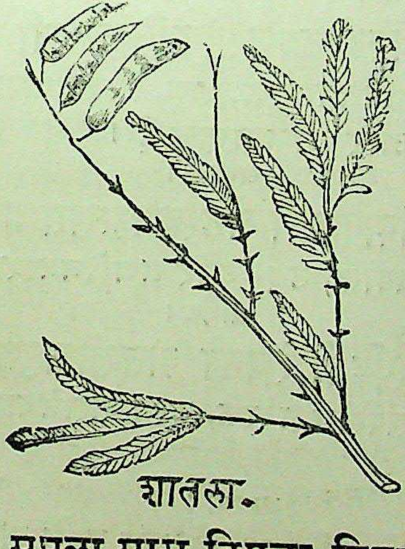

शातला.

सातला सप्तला सारा विमला विदुला च सा।
तथा निगदिता भूरिफेना चर्म्मकषेत्यपि॥

अर्थ-सातला, सप्तला, सारा, विमला, विदुला, भूरिफेना, चर्मकषा,(अमला,बहुफेना,फेना,दीप्ता, विषाणिका,स्वर्णपुष्पी,पुत्रघना)

हिन्दीभाषामें	सातला ।
वंगभाषामें	सिजविशेष ।
मराठीभाषामें	निवडुंगाचा भेद ।
गुजरातीभाषामें	साथेर ।
लैटिन्भाषामें	ओरिगेनं वल्गेरीस् Origanum Vulgaris
कर्णाटकीभाषामें	वडीलसोतुली, हिरीयचट, कनख ।
फारसीभाषामें	एशन् ।
अरबीभाषामें	सातर ।

सातलागुणाः ।

सातला कटुका पाके वातला शीतला लघुः ।
तिक्ता शोफकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तनुत ॥(भा० प्र०)

अर्थ-सातला-पचनेमें कटु, वातजनक, शीतल, हलका, तिक्त तथा शोफ, कफ, आनाह, पित्त,उदावर्त और रक्तदोषको दूर करेहै।

अपिच ।

सातला कफपित्तघ्नी लघ्वी तिक्ता कषायिका ।
विसर्पकुष्ठविस्फोटव्रणशोफनिकृन्तनी ॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-सातला-कफपित्तनाशक, लघु, तिक्त, कषाय तथा विसर्प, कुष्ठ, विस्फोट, व्रण और शोफनाशक है ।

अन्यच्च ।

सातला मुखपाकघ्नी जठरव्रणहृत्सरा ॥ (शो० नि०)

अर्थ-सातला-मुखपाक, उदर और व्रणरोगनाशक है ।

अपिच ।

सातला तु विसर्पघ्नी रेचनी वातशोफनुत् ॥(ग.नि.)

अर्थ-सातला-विसर्परोगनाशक, दस्त करानेवाला, वात तथा सूजनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सातला शीतला तिक्ता तीक्ष्णा पाके कटुर्लघुः ।
हृद्यानिलं प्रकुरुते हरते हृद्रुजं कफम् ॥

पित्तोदावर्तकुष्ठार्शोगुल्मोदरगतं विषम् ।
आनाहकृमिशोफामं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सातला-शीतल, तिक्त, तीक्ष्ण, पचनेमें कटु,लघु, हृदयको हितकारी,अग्निजनक तथा हृदयरोग,कफ,पित्त,उदावर्त, कुष्ठ,बवासीर, गुल्म,उदरविष,आनाह,कृमि,शोफ और आमको दूर करेहैं ।

विवरण। सातनेकी वेल जंगल और वनोंमें होतीहै, पत्ते [illegible]रके पत्तोंकी समान छोटे छोटे होते हैं । फूल पीला होता है । उसमें पतली तथा चपटी फली लगतीहैं । उसमें काले बीज निकलते ह । इसमें पीले रंगका दूध निकलताहै ।

अस्थिसंहारिनामानि ।

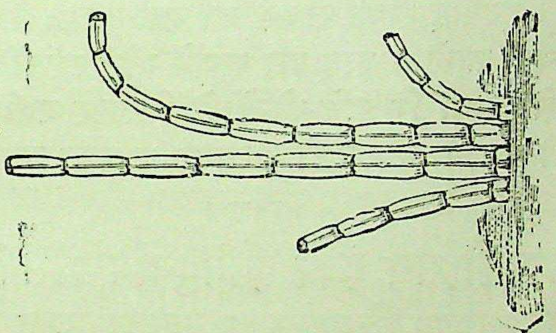

त्रिधारी कांडवेल

वज्रवल्ल्यस्थिसंहारी कुलिशं च शिरालकः ॥

अर्थ-वज्रवल्ली, अस्थिसंहारी, कुलिश, शिरालक (ग्रन्थिमान्, अमर, वज्राङ्गी, अस्थिशृंखला, अस्थिसंहारक, क्रोष्टुघाण्टिका)

हिन्दीभाषामें	हडसंहारी, हडजोड, हडसंकरी ।
वंगभाषामें	हाडभाङ्गा ।
गुजरातीभाषामें	हाडसांकला, वेधारी,तरधारी,चोधारी ।
मराठीभाषामें	कांडवेल, त्रिधारी, चौधारी ।
तैलिङ्गीभाषामें	नाल्लेद् ।
लैटिन् भाषामें	विटिस्क्रोड्रेंग्युलारिस् । Vitisquodron gularis साइसस् काड्रेंग्युलोरिस् ।

अस्थिसंहारिगुणाः ।

अस्थिसंहारकः प्रोक्तो वातश्लेष्महरोऽस्थियुक् ।

उष्णः सरः कृमिघ्नश्च दुर्नामघ्नोऽक्षिरोगजित् ॥
रूक्षः स्वादुर्लघुर्वृष्यः पाचनः पित्तलः स्मृतः ।

कांडत्वग्विरहितमस्ति शृंखलाया
माषार्द्धद्विदलमकंचुकं तदर्द्धम् ।
संपिष्टं सुतनु ततस्तिलस्य तैले
संपक्वं वटकमतीव वातहारि ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हडसंहारी-वातकफनाशक,टूटी हड्डीको जोडनेवाली,उष्ण, सारक, कृमिघ्न, बवासीरको दूर करनेवाली, आंखके रोगका नाश करनेवाली,रूखी, स्वादिष्ठ, हलकी,वीर्य्यजनक, पाचक और पित्तकारक है। हडसंहारीकी लकडीका एक टुकडा लेकर उसकी छाल छीलकर चूर्ण करले, पश्चात् उस चूर्णमें गीले उडदोंकी छिलकारहित दाल चूर्णसे आधी मिलावे दोनोंको सिलपर महीन पीस तिलके तैलमें बडी बनावे, यह बडी अत्यन्त वातका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

वज्रवल्ली सरा रूक्षा कृमिदुर्नामनाशिनी ।
दीपन्युष्णा विपाकेम्ला स्वाद्वी वृष्या बलप्रदा ॥
अर्शसां तु विशेषेण हिता चैवाग्निदीपनी ।
चतुर्धारा काण्डवल्ली भूतोपद्रवशूलहा ॥
अत्युष्णाध्मानवातांश्च तिमिरं वातरक्तकम् ।
अपस्मारं वातरोगं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥
त्रिधारा काण्डवल्ली तु सरा लघ्व्यग्निदीपनी ।
रूक्षोष्णा मधुरा वातकृम्यर्शःकफनाशिनी ॥
काण्डवल्ली तु कटुका तिक्ता चोष्णा सरा मता ।
पित्तला च कफं गुल्मं लूतां दुष्टव्रणं तथा ॥
प्लीहोदराग्निमांद्यानि शूलं वातं च नाशयेत् ।
मलस्तम्भहरा चैव कीर्त्तिता मुनिभिः पुरा ॥(नि०र०)

अर्थ–वज्रवल्ली-दस्तावर, रूखी, कृमि, बवासीरनाशक पचनेमें अम्ल, स्वादिष्ठ, वीर्य्यजनक, बलदायक, विशेषकरके बवासीरके लिये अधिक हितकारी है और अग्निदीपक है। चौधारा काण्डवेल–भूतोपद्रवको दूर करनेवाली, शूलनाशक, अत्यन्त उष्ण तथा आध्मान, वात, तिमिर, वातरक्त, अपस्मार और वातरोगविनाशक है । त्रिधारी काण्डवेल–दस्तावर, हलकी, अग्निदीपक, रूखी, उष्ण, मधुर तथा वात, कृमि, बवासीर और कफनाशक है। काण्डवल्ली–कटु, तिक्त, उष्ण, दस्तावर, पित्तजनक तथा कफ, गुल्म, लूता, दुष्टव्रण, प्लीहा, उदर, मंदाग्नि, शूल, वात और मलस्तम्भको दूर करे है ।

विवरण । इसकी वेल थूहरकी जाति होती है, इस वेलमें चार छै अंगुलपै गांठ होतीहै, यह द्विधार, तिधार, चारधार इनमेंसे एक हडसंधारीकी जाति होती है। काण्डवेलके भिन्नभिन्न भागमें काण्ड होतीहै इसकारण संस्कृतमें इसको काण्डवल्ली कहतेहैं, यह शंकलके समान होतीहै, इसलिये इसको हडशंकरी कहते हैं ।

कलिकारीनामानि ।

कलिकारी लाङ्गलिकी दीप्ता च गर्भघातिनी ।
अग्निजिह्वा वह्निशिखा वह्निवक्त्रा च लांगुली ॥

कलिकारी, लाङ्गलिकी, दीप्ता, गर्भघातिनी, अग्निजिह्वा, वह्निशिखा, वह्निवक्त्रा, लांगुली, (हलिनी, गर्भपातिनी, विशल्या, अग्निमुखी, हली, नक्ता, इन्द्रपुष्पिका, विद्युज्ज्वाला, व्रणहृत, पुष्पसौरभा, स्वर्णपुष्पा, इन्द्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी, अनन्ता, कलिकारिका लांगलिका, गर्भनुत्)

संस्कृतभाषामें	कलिकारी ।
हिन्दीभाषामें	कलिहारी, कलियारी ।
वंगभाषामें	विषलाङ्गला, ईशलाङ्गला ।
मराठीभाषामें	खडयानाग, चगमोडचा, कळलावी ।
गुजरातीभाषामें	डुधियो, बछनाग, कलगारी ।
को०	कलई ।
कर्णाटकीभाषामें	राडागारी ।
मला०	मेहोन्त्रि, कांडल ।
इंग्रेजीभाषामें	वुल्फसबेन Wolfs bane
लैटिन्भाषामें	ग्लोरीओझासुपर्बा। Gloriosa superba एकोनाइटम्नेपिलम्। Aconitum napellum

अस्या गुणाः ।

कलिकारी सरा तीक्ष्णा कुष्ठदुष्टव्रणापहा ॥ (वि०ति०भा०)

अर्थ-कलिहारी, सारक, तीक्ष्ण और कुष्ठ तथा दुष्ट व्रणको नष्ट करनेवाली है ।

अपिच ।

कलिकारी सरा कुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित ।
सक्षारा श्लेष्मजित्तिक्ता कटुका तुवराऽपि च ॥
तीक्ष्णोष्णा कृमिहृल्लघ्वी पित्तला गर्भपातिनी। (भा०प्र०)

अर्थ-कलिहारी-सारक, कुष्ठ, शोफ, बवासीर, व्रण, और शूलका नाश करे है। क्षाररसयुक्त, कफनाशक, कडवी, चरपरी, कषेली, तीक्ष्ण, गरम, कृमिहारक, हलकी, पित्तजनक और गर्भको गिराने वाली है ।

अन्यच्च ।

कलिकारी सरा तीक्ष्णा गर्भशल्यव्रणापहा ।
शुष्कगर्भं च गर्भं च पातयेल्लेपमात्रतः ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कलिहारी-सारक, तीक्ष्ण तथा गर्भशल्य और व्रणनाशक है । शुष्कगर्भ और गर्भको केवल लेपसेही गिरानेवाली है ।

अपिच ।

कालिकारी सरा तिक्ता कट्वी पट्वी च पित्तला ।
तीक्ष्णोष्णा तुवरा लघ्वी कफवातकृमिप्रणुत् ॥
वस्तिशूलं विषं चार्शः कुष्ठं कण्डूं व्रणं तथा ।
शोथं शोषं च शूलं च नाशयेदिति कीर्तिता ॥
शुष्कगर्भं च गर्भं च पातयेदिति कीर्तिता । (नि०र०

अर्थ-कलिहारी-सारक, कडवी, चरपरी, खारी, पित्तकारी, तीक्ष्ण, गरम, कषेली, हलकी तथा कफ, वात, कृमि, वस्तिशूल, विष और कोढ, बवासीर, कण्डू, व्रण, सूजन, शोष, शूल, शुष्कगर्भ और गर्भको दूर करनेवाली है ।

कलिहारी लांगली कंदको कहते हैं, इसके नीचे हलदीके समान मोटीरगांठें निकलती हैं, ऊपर लंगूरकी पूंछके समान एकही लगरसी निकलतीहै उसमें कचूरकेसे पत्र होतेहैं ऊपर लाल और पीला अग्निकी लाटके समान फूल होता है इसको लांगलीकंद या कालिहारी कहते हैं सुखपूर्वक प्रसव होनेके लिये इसका कंद

स्त्रीके हाथोंमें बांध देते हैं । शिमला प्रान्तमें कालकाके समीप टकसालमें यह बहुत होता है ॥

करवीरनामानि ।

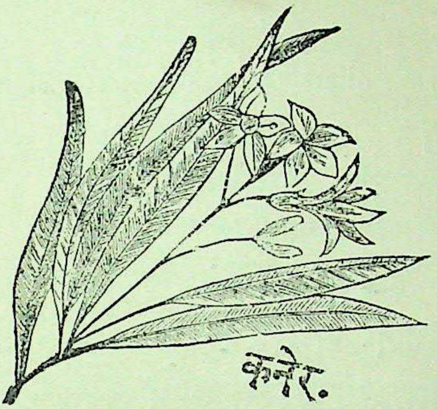
कनेर.

रवीरः श्वेतपुष्पः शतकुम्भोऽश्वमारकः ।
द्वितीयो रक्तपुष्पश्च चण्डालो लगुडस्तथा ॥

मू करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुम्भ, अश्वमारक, (प्रतिहास, और फूलो[illegible]डात, हयमारक, अश्वमार, अश्वघ्न, हयारि, शीतकुम्भ, तु[illegible], रङ्गारि, शातकुम्भ, प्रचण्ड, अश्वहा, वीर, हयमार, हयघ्न, शतकुन्द, अश्वरोधक, वीरक, कुन्द, शंकुद्र, तुङ्गारी, श्वेतपुष्पक, अश्वान्तक, नखराह्व, अश्वनाशक, स्थलकुमुद, दिव्यपुष्प, हरिप्रिय, गौरिपुष्प और सिद्धपुष्प,) यह नाम श्वेतकरवीरके हैं । रक्तपुष्प, चण्डात, लगुड, (रक्तप्रसव, गणेशकुसुम; चण्डीकुसुम, क्रूर, भूतद्रावी, रविप्रिय)

संस्कृतभाषामें	करवीर, श्वेतकरवीर, रक्तकरवीर ।
हिन्दीभाषामें	सफेदकनेर, लालकनेर, पीलीकनेर । काले फूलकी कनेर ।
बंगलाभाषामें	करवी, लालकरवी ।
मराठीभाषामें	कण्हेर, पांढरी, तांबडी, पिंवळी ।
गुजरातीभाषामें	कणेर, धोळांफूलनी, रातांफूलनी, गुलाबीफूलनी, पीला फूलनी ।
कर्णाटकीभाषामें	वाकणलिंगे, केगणलिंगे ।

तैलिङ्गीभाषामें कानेरचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें स्वीट्सेन्टेड् ओलियंडर Sweet Scented oleander
लैटिन्भाषामें नीरीयं ओडोरम् Nirium odorum नीरीयम् ओलियंडर Nerirum oliander सर्वेराथिविटिया Cerbera Thevetia
फारसीभाषामें खरजेहरा ।
अरबीभाषामें सुमुल, हिमारदखली ।

श्वेतादिकरवीरगुणाः ।

हयारिः पञ्चधा प्रोक्तः श्वेतो रक्तश्च पाटलः ।
पीतः कृष्णः समुद्दिष्टः श्वेतस्यैतान्गुणाञ्छृणु ॥
कटुस्तिक्तश्च तुवरस्तीक्ष्णो वीर्येण चोष्णदः ।
ग्राही मेहकृमीन्कुष्टव्रणार्शोवातनुत्परः ॥
भक्षितो विषवज्ज्ञेयो नेत्र्यो लघुविषापहः नि
विस्फोटकुष्ठकृमिनुत्कण्डूव्रणकफापहः ॥ श
ज्वरं नेत्ररुजं चैव हयप्राणांश्च नाशयेत् ।

अर्थ-कनेर-सफेद, लाल, गुलाबी, पीली और व । इसप्रकार फूलोंके भेदसे पांच प्रकारकी है । इनमें सफेद क र कटु, तिक्त, कषेली, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, ग्राही तथा प्रमेह, कृमि, कोढ, घाव, बवासीर और वातनाशक है । यह भक्षण करनेमें विषके समान है, और नैत्रोंको हितकारी, हलकी तथा विस्फोट, कुष्ठ, कृमि, कण्डू व्रण, कफ, ज्वर, नेत्ररोग और घोडेके प्राणोंको हरनेवाली है ।

रक्तकरवीरगुणाः ।

रक्तवर्णः शोधकः स्यात्कटुः पाके च तिक्तकः ।
कुष्ठादिनाशको लेपादथ पाटलवर्णकः ॥
शीर्षपीडां कफं वातं नाशयेदिति कीर्तितः ।
रक्तादिचतुरो भेदा गुणाः श्वेतहयारिवत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लाल स नेर-शोधक, चरपरी, पचनेके समय कडवी और इसका लेप करनेसे व हैढ दूर होताहै । गुलाबी कनेर-मस्तकशूल, कफ, वात,

इनका नाश करैहै, इसके और गुण तथा पीली, काली कनेरोंके गुण सफेद कनेरकी समान जानने।

विवरण। कनेरके वृक्ष वन उपवन और पुष्पवाटिकामें लगाये जातेहैं। इसपर लाल, गुलाबी, सफेद, पीले और काले फूल आते हैं. लाल, पीले और सुफेद फूलकी कनेर सर्वत्र होतीहै।

कनेरमें विष होता है। इसको विना विचारे खानेसे मनुष्य मृत्युको प्राप्त होते हैं इसकारण इसको विना विचारे कभी भक्षण करना नहीं चाहिये। इसका घी बनाते हैं, वह घी अत्यन्त नशीला होताहै। मात्रा दो रत्तीसे लेकर चार रत्तीतककी।

धुस्तूरनामानि।

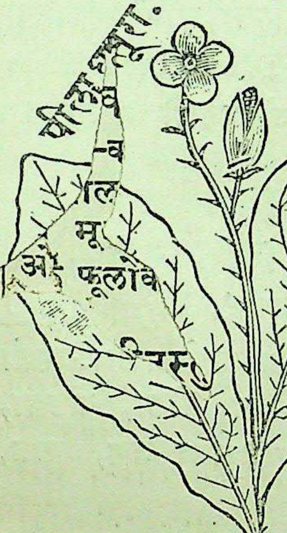

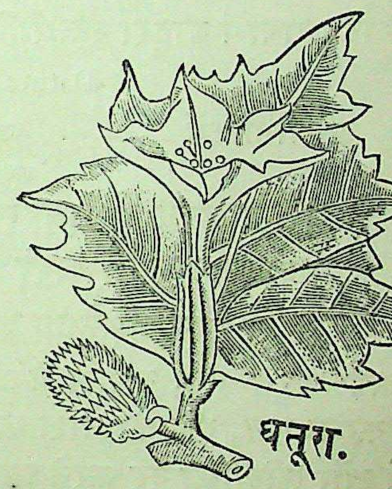

धुस्तूरो मदनोन्मत्तः कितवः कनकाह्वयः।
शिवप्रियो महामोही देविका खरदूषणः॥

अर्थ-धुस्तूर, मदन, उन्मत्त, कितव, कनकाह्वय, शिवप्रिय, महामोही, देविका, खरदूषण, (धूर्त, मातुल, पुरीमोह, धूर्तकृत, धत्तूर, घाण्टिक, शठ, मातुलक, श्याम, शिवशेखर, खर्ज्जूघ्न, काहलापुष्प, खल, कण्टफल, मोहन, कलम, मत्त, शैव, तूरी, धुतुर, धुस्तुर, उन्मत्तक, मदनक, हरवल्लभ, कण्टफल, कनक, स[illegible]ष, मोहन, मद-

कर, घण्टापुष्प, महाशठ और जितने सुवर्णके नाम हैं वो सब इसके भी जानने)

हिन्दीभाषामें	धतूरा ।
बंगलाभाषामें	धुतुरा ।
मराठीभाषामें	धोत्रा, धोतरा ।
गुजरातीभाषामें	धंतुरो ।
कर्णाटकीभाषामें	मदकुणिके ।
तैलिङ्गीभाषामें	नाल्लाउम्मीते, उम्मेत्तचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	उमतताई, कारुउमते ।
पाह्लवीभाषामें	सतुल्या, तातरईसफेदा ।
इंग्रेजीभाषामें	थोर्नएप्पल स्ट्रामोनियं Thorn apple Stramonium
लैटिन्भाषामें	डाटुरा स्ट्रामोनियं डाटुराआल्वा, डा० फेस्टुओसा Datura Stramonium D. alba D.F[illegible]stunosa
अरबीभाषामें	जोजमासील जोजनसी त[illegible]तूरा ।

अस्य गुणाः ।

धत्तूरो मदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।
कषायो मधुरस्तिक्तो यूकालिक्षाविनाशनः ॥
उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः । [illegible]प्र०)

अर्थ–धतूरा–मद, वर्ण, अग्नि और वात इनको कर[illegible]ला, ज्वरको दूर करनेवाला, कोढका नाश करनेवाला, कषेला, मीठा, कडवा, जुयें और लीखोंको दूर करनेवाला, गरम, भारी तथा व्रण, कफ, कण्डू, कृमि और विषनाशक है ।

अपिच ।

धत्तूरः कटुरुष्णश्च कांतिकारी व्रणार्तिनुत् ।
त्वग्दोषखर्जूकण्डूतिज्वरहारी भ्रमप्रदः । (रा० नि०)

अर्थ–धतूरा–कटु, उष्ण, कान्तिकारी तथा व्रण, त्वचाके रोग, खर्जू, कण्डू और ज्वरको दूर करे तथा भ्रमदायक है ।

अन्यच्च ।

धत्तूरो दुष्टरक्तघ्नो व्रणहा विषपित्तकृत् ॥ (शोडलनिघण्टु)

अर्थ–धतूरा–[illegible]ष्टरक्तनाशक, व्रणको दूर करनेवाला, विष और पित्तको दूर करे हैं ।

अपिच ।

धत्तूरकौ च सविषौ तिक्तोग्रौ मोहकारकौ ।
कुष्ठदुष्टव्रणहरौ कामलार्शोविषापहौ ॥ (ग० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके धत्तूरे (काला और सफेद) विषयुक्त, कडवे, उग्र, मोहकारक तथा कुष्ठ, दुष्टव्रण, कामला, बवासीर और विषको नष्टकरेहैं ।

अपिच ।

धत्तूरः कांतिकृच्चोष्णः कटुकश्चाग्निदीपकः ।
तुवरो मधुरस्तिक्तो मदकृद्वांतिकृद्गुरुः ॥
वर्ण्यः कुष्ठव्रणश्लेष्मज्वरकण्डूकृमीञ्जयेत् ।
यूकालिक्षाश्रमविषपामात्वग्दोषनाशनः ॥
एष कृष्णो गुणैः श्रेष्ठो मुनिभिः परिकीर्त्तितः (नि० र०)

अर्थ-धत्तूरा-कान्तिकारक, गरम, चरपरा, अग्निदीपक, कषेला, मधुर, [illegible]डवा, मदकारक, वान्ति करनेवाला, भारी, वर्णकर्त्ता तथा कुष्ठ, [illegible]ा, कफज्वर, कण्डू, कृमि, जुंआ, लीख, आम, विष, पामा और [illegible]के रोगोंका नाश करेहै इन सबप्रकारके धतूरोंमें काला गुणो[illegible]है ।

अपिच ।

धत्तूरो मूर्च्छाजनको वह्निपित्तं च नाशयेत् (रा० व०)

अर्थ-धतूरा-मूर्च्छाकारक अग्नि और पित्तका नाश करेहै ।

कृष्णधत्तूरकनामानि ।

कृष्णधत्तूरकः सिद्धः कनकः सचिवः शिवः ।
कृष्णपुष्पो विषारातिः क्रूरधूर्त्तश्च कीर्त्तितः ॥ (रा० व०)

अर्थ-कृष्णधत्तूरक-सिद्ध, कनक, सचिव, शिव, कृष्णपुष्प, विषाराति, क्रूरधूर्त्त ।

हिन्दीभाषामें	कालाधतूरा ।
बंगलाभाषामें	धुत्तुरा, कनकधुत्तुरा ।
कर्णाटकीभाषामें	करीयमदगणिके ।

राजधत्तूरनामानि ।

राजधत्तूरकश्चान्यो राजधूर्त्तो महाशठः ।

निस्त्रैणिपुष्पको भ्रान्तो राजस्वर्णः षडाह्वयः ॥

अर्थ-राजधत्तूरक, राजधूर्त्त, महाशठ, निस्त्रैणिपुष्पक, भ्रान्त, राजस्वर्ण और षडाह्वय।

सितनीलकृष्णलोहितपीतप्रसवाश्च संति धत्तूराः ।
सामान्यगुणोपेतास्तेषु गुणाढ्यस्तु कृष्णकुसुमः स्यात् ॥

वार्थ-धत्तूरे-सफेद, नीले, काले, लाल और पीले फूलके होतेहैं, इन सबोंमें सामान्यही गुण हैं, किन्तु काले फूलका धतूरा अधिक गुणवाला है।

प्रयोग।

श्वासके रोगमें बढ़ेहुए श्वासको रोकनेके लिये इसके सूखे डंठल और पत्तोंका धुआं पिलावै । वातादिरोग और चोटलगीहुई दर्दकी जगहमें धतूरेका रस गायका घी और सैंधानोंन मिलाकर दर्दके स्थानमें लगावै । धतूरोंके बीजसे वातजनित शिरोरोग आराम होताहै।

विवरण। धतूरा फूलोंके भेदसे काला, नीला, सफेद, पीला ४-५ प्रकारका होताहै।प्रायः जंगलमें उत्पन्न होताहै।काले औ[illegible]नहरी फूलका धतूरा बागादिमें होताहै,पत्ते मध्यमाकार होतेहैं,प[illegible]के आकार होताहै।फूलका रंग बीचमें सफेद और ऊपर [illegible] काला,पीला होताहै,जिसके पांच भाग होतेहैं,फूलकी [illegible]री पांच पखडियाँ नीलेरंगकी होती हैं।फल-गोल,कांटेदार और भीतर बहुत बीजवाला होताहै । जिस धतूरेका रंग अत्यन्त काला और दण्डी, पत्ते, फल, फूल तथा सर्वांग काला हो उस धतूरेमें विष अधिक होताहै और उसके गुणभी अधिकहैं,फल सूखनेपर कठोर होजाते हैं इसके बीजोंमें विष अधिक होताहै, उन बीजोंको मात्रासे अधिक खानेसे मृत्यु होतीहै,वंधजादिक धातुपुष्टिकी औषधिमें इसके बीजोंका व्यवहार ग्रन्थोंमें लिखा है,इसके बीज प्रमेहको दूर करनेवालेहैं, काले धतूरेके पंचांगकी धूपसे खांसी दूर होतीहै । धतूरेके मदको दूर करनेके लिये धतूरेकी मींगका नास लेना चाहिये,धतूरेका नास धतूरेके विषको दूर करनेवाला है । अथवा धतूरेके विषमें उसको पीसकर पिलावै, तथा तत्कालका दुहा हुआ दूध और घी मिलाकर पीजाय ।

व्यवहार-मूल, पत्ते, बीज । मात्रा आधी रत्तीसे एक रत्तीतक ।

वासकनामानि।

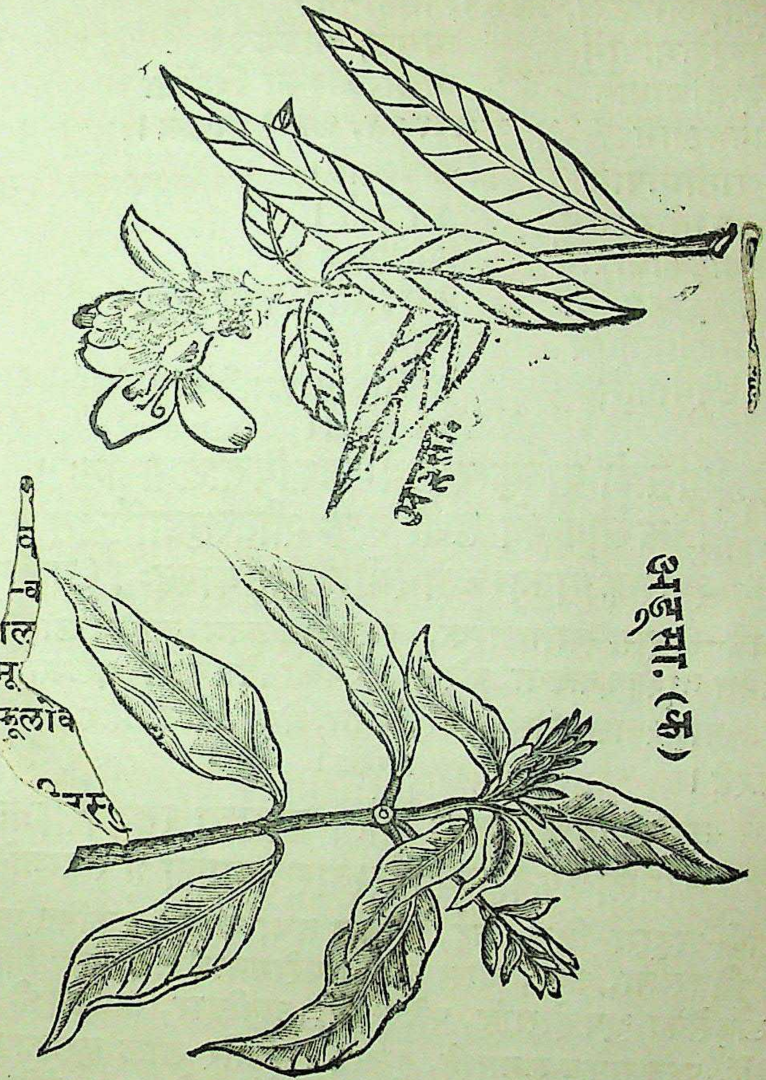

वासको वासिका वासा सिंहिका राम[illegible]कः।
मातृसिंही वैद्यमाता कसनोत्पाटनो वृषः ॥

अर्थ–वासक, वासिका, वासा, सिंहिका, रामस[illegible]पक, मातृसिंही वैद्यमाता, कसनोत्पाटन, वृष, (अटरुष, सिंही वृष, सिंहास्य, वाजिदन्तक, आमलक, वाशा, बाशिका, अटरुष, वासक, वास, वाजी, वैद्यसिंही, सिंहपर्णी, भिषङ् माता, रस[illegible]नी, सिंहमुखी,

कण्ठीरवी, सितकर्णी, वाजिदन्ती, नासा, पञ्चमुखी, सिंहपत्री, मृगन्द्राणी, आटरूख, अटरूष, सिंहानन)

संस्कृतभाषामें	वासक, आटरूष ।
हिन्दीभाषामें	वासा, अडूसा विसौंटा ।
बंगभाषामें	वाकस, छोटा वाकस ।
मराठीभाषामें	अडुळसा ।
गुजरातीभाषामें	अरडुशो ।
कर्णाटकीभाषामें	आडसाग ।
तैलिङ्गीभाषामें	आडासारं, आडापाकु ।
तामिलीभाषामें	अधडोडे ।
लैटिन्भाषामें	आधाटोढा:वासीका । Ahdateda vasioa

अस्य गुणाः ।

वासको वातकृत्स्वर्य्यः कफपित्तास्रनाशनः ।
तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुः शीतस्तृडार्तिहृत् ।
श्वासकासज्वरच्छार्द्दिमोहकुष्ठक्षयापहः । (भा प्र.)

अर्थ-अडूसा-वातकारक, स्वरको उत्तम करनेवाला, कफघ्न, रक्तपित्त नाशक, कडवा, कषेला, हृदयको हितकारी, हलका, तल तथा तृषा, श्वास, खांसी, ज्वर, वमन, मोह कोढ और दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

वासा तिक्ता कटुः शीता कासघ्नी रक्त ताजित् ।
कामलाकफवैक्लव्यज्वरश्वासक्षयापहा ॥ (राजनि.)

अर्थ-अडूसा-तिक्त, कटु, शीतल तथा खांसी, रक्तपित्त, कामला, कफ विकलता, ज्वर, श्वास और क्षयरोगनाशक है ।

अडूसेका क्षुप होताहै, पत्ते लम्बे, अनीदार, अमरूदकी समान होतेहैं, फूल सफेद लगताहै, दूसरा एक और लाल फूलका अडूसा होता है, अडूसा सर्वत्र प्रसिद्ध है चैत्रमें इसके फूल होते हैं उन सफेद फूलोंकी जडमें मधुकी एक बूँद रहती है उसको लडके और बंदर चूसते हैं कालिकाके समीप बहुत होता है, वासा, वसूटा अडूसा इन नामोंसे प्रसिद्ध है औषध प्रयोगमें प्रायः सफेद फूलकाही लेते हैं ।

पर्पटनामानि ।

पर्पटो वरतिक्तश्च स्मृतः पर्पटकश्च सः ।
कथित पांशुपर्य्यायस्तथा कवचनामकः ॥

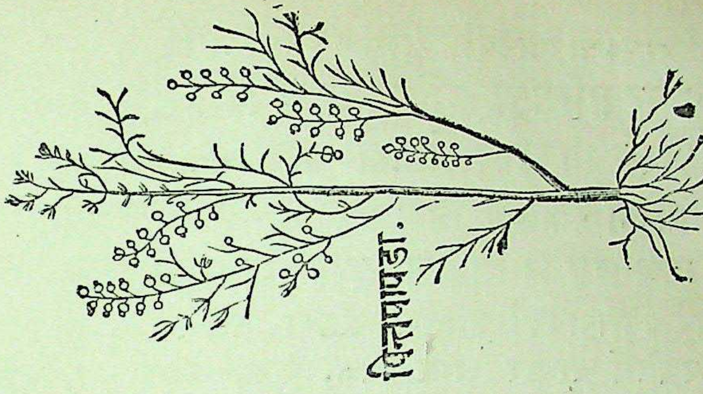

अर्थ-पर्पट, वरातिक्त, पर्पटक, पांशुपर्य्याय, कवचनामक, (क्रियष्टि, तिक्त, चरक, वरक, अरक, रेणु तृष्णारि, शीत, शीतप्रिय, पांशु, कल्पाङ्ग, वर्म्मकण्टक, कृष्णशाख, प्रगन्ध, सुतिक्त, रक्तपुष्पक, पित्तारि, कटुपत्र, नक्र, शीतवल्लभ)

संस्कृतभाषामें	पर्पट ।
हिन्दीभाषामें	पित्तपापडा, दवनपापरा ।
वंगभाषामें	क्षेत् पापडा ।
[illegible]भाषामें	सिरपठी, पित्तपापडा, को०-थरमरें ।
वम्[illegible]	पित्तपापडा ।
गुजरातीभाषामें	पित्तपापडो, खडसलीयो ।
	क्षेत्रपर्पट, धातो ।
कर्णाटकीभाषामें	पर्पाटक ।
तैलिङ्गीभाषामें	पापार्टकमु ।
औत्कलीभाषामें	जडपाँपुडा ।
इंग्रेजीभाषामें	जस्टिसप्रोकंबेन्स । Justicia Procumbans
लैटिन्भाषामें	फुमेरियापार्वीफ्लोरा । Fumeria Parvifiora
	फुमेरियाओफिसिनेलीस। Fumeria officinalis
फारसीभाषामें	शातरा ।
अरबीभाषामें	बकलतल मलीक ।

अस्य गुणाः ।

पर्पटः शीतलस्तिक्तः संग्राही वातकोपनः ।
लघुः पाके च कटुको हरेत्पित्तकफज्वरान् ॥

रक्तदोषारुचिर्दाहग्लानिभ्रममदाञ्जयेत् ।
प्रमेहवान्तितृड्रक्तपित्तानां च विनाशकः ।
अस्य शाका तु संग्राही शीता वातकरा लघुः ।
तिक्ता रक्तरुजं पित्त ज्वरं तृष्णां च नाशयेत् ।
कफं भ्रमं च दाहं च नाशयेदिति कीर्तितम् ।(नि०र०)

अर्थ-पित्तपापडा-शीतल, कडवा, मलरोधक, वातप्रकोपक, हलका, पचनेमें चरपरा तथा पित्त, कफ, ज्वर, रुधिरविकार,-अरुचि, दाह, ग्लानि, श्रम, मद, प्रमेह, वान्ति, तृषा और रक्तपित्तका नाश करनेवाला है । इसका शाक-मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, कडवा, रक्तरोग, पित्तज्वर, तृषा, कफ, भ्रम और दाहको दूर करे है ।

विवरण । इसका क्षुप होताहै, इसकी दो जाति हैं एकमें नीला और दूसरेमें लाल फूल आताहै, इन दोनोंमें लालफूलका अधिक गुणवाला है ।

निम्बनामानि ।

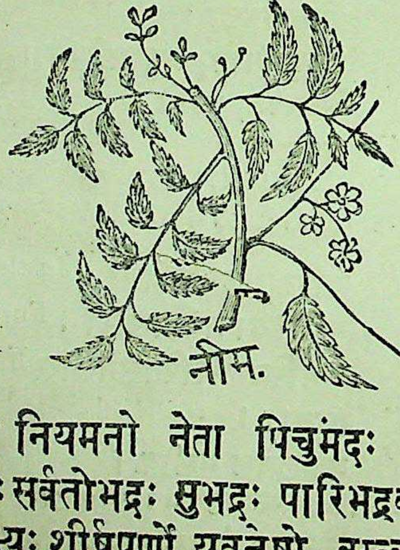

निम्बो नियमनो नेता पिचुमंदः सतिक्तकः ।
अरिष्टः सर्वतोभद्रः सुभद्रः पारिभद्रकः ॥
शुकप्रियः शीर्षपर्णो यवनेष्टो वरत्वचः ।
छर्दनो हिंगुनिर्यासः पीतसारो रविप्रियः ॥

अर्थ-निम्ब, नियमन, नेता, पिचुमंद, सातिक्तक, अरिष्ट, सर्वतोभद्र, सुभद्र, पारिभद्रक, शुकप्रिय, शीर्षपर्ण, यवनेष्ट, वरत्वच, छर्दन, हिंगु, निर्यास, पीतसार, रविप्रिय, (मालक, पिचुमंद, पक्ककृत, पूयारि, अर्कपादप, पूकमालक, कीटक, विबन्ध, निम्बक, कैटर्य्य, छर्दिघ्न, प्रभद्र, काकफल, कीरेष्ट, सुमना, विशीर्णपर्ण, पीतसारक, शीत, राजभद्रक)

संस्कृतभाषामें	निम्ब ।	
हिन्दीभाषामें	नीम ।	
बंगलाभाषामें	निमगाछ ।	
मराठीभाषामें	कडुनिंब ।	
गुजरातीभाषामें	लिंबडो ।	
कर्णाटकीभाषामें	बड वेवु ।	
तौलि[illegible]भाषामें	वेया, टोयचेट्टु ।	
ताम्लीभाषामें	वेपुमूमरम ।	
इंग्र[illegible]भाषामें	निंबटी ।	Niub ree
लैटिन्भाषामें	एकाडिरेकटा इंडिका ।	Acadiracta Indica
मू	मेलियाएकाडिरेकटा ।	MeliAcadiracta
और फूलो[illegible]भाषामें	नेनवूनीम दरख्तहक ।	

अस्य गुणाः ।

प्रभद्रकःप्रमे[illegible]ति शीततिक्तकःकफव्रणक्रिमि[illegible]शुभिः॥[illegible]ांतये । बलासभिद्बहुविधपित्तदोषजिद्विशेषतो हृदयवि[illegible]शांतिकृत्।

अर्थ-प्रभद्रक-(नीम) शीतल, कडवा तथा कफ[illegible]ण, कृमि, वमन, सूजन, बलास, बहुविध पित्तदोष और [illegible]विकार के हृदयकी दाहको शान्त करे है ।

अन्यच्च ।

निम्बवृक्षो लघुः शीतस्तिक्तो ग्राही कटुः स्मृतः ।
अग्निमांद्यकरश्चैव व्रणशोधनकारकः ॥
शोथपाककरो बाले हितो रुच्यो मतो [illegible]धैः ।
कृमिवान्तिव्रणकफशोफपित्तविषापहः ॥
वातं कुष्ठञ्च हृद्दाहं श्रमं कासं ज्वरं तृ[illegible]म्।
अरुचिं रक्तदोषञ्च मेहञ्चैव विनाशये[illegible] ॥

अर्थ-नीम-हलका, शीतल, कडवा, ग्राही, कटु, मन्दाग्निकारक, व्रणशोधक, शोफको पकानेवाला, बालकोंको हितकारक तथा कृमि, वमन, व्रण, कफ, शोथ, पित्त, विष, वात, कुष्ठ, हृदयकी दाह, श्रम, खांसी, ज्वर, तृषा, अरुचि, रुधिरविकार और प्रमेहका नाश करेहै ।

अस्य कोमलपल्लवगुणाः ।

कोमलः पल्लवश्चास्य ग्राहको वातकारकः ।
रक्तपित्तं नेत्ररोगं कुष्ठं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसके कोमल पत्ते-ग्राही, वातकारक तथा रक्तपित्त, नेत्ररोग और कुष्ठनाशक हैं ।

अस्य सामान्यपत्रगुणाः ।

निम्बपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत् ।
वातलं कटुपाकं च सर्वारोचककुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नीमके पत्ते-नेत्रोंको हितकारी, कृमि, पित्त और विषविनाशक हैं । बादी, पचनेमें कटु, तथा सर्वप्रकारकी अरु[illegible] और कुष्ठनाशक हैं ।

अस्य जीर्णपत्रगुणाः ।

[illegible] विशेषेण व्रणनाशकरं मतम् ॥ ([illegible] र०)

अर्थ-[illegible] पत्ते-विशेष करके व्रणको दूर क[illegible]वाले हैं ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

नि[illegible]क्षस्य पुष्पाणि पित्तघ्नानि विशेषतः ।
ति[illegible] च कृमिघ्नानि तथा कफहराणि च ॥

अर्थ-नीम[illegible] फूल-पित्तना[illegible] कडवे तथा कृमि और कफको हरनेवाले हैं

अस्य सूक्ष्मशाखादिगुणाः ।

निम्ब[illegible]य सूक्ष्मशाखा तु कासश्वासार्शगुल्महा ।
कृमि[illegible]हरा प्रोक्ता फलं चाम लघु स्मृतम् ॥
स्निग्ध[illegible] च भेदकं चोष्णं मेहकुष्ठविनाशकम् ।

अर्थ-इसकी [illegible]क्ष्मशाखें-खांसी, श्वास, बवासीर, गुल्म, कृमि और प्रमेहको दू[illegible]करनेवाली हैं, इसके अपक्क फल (कच्चीनिंबोली) लघु, स्निग्ध, भे[illegible]क, गरम, प्रमेह और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

आमं फलं रसे तिक्तं पाके तु कटुकं मतम् ।
स्निग्धं लघूष्णं कुष्ठघ्नं गुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥

अर्थ-कच्ची निंबोली-रसमें कडवी, पचनेमें चरपरी, स्निग्ध, हलकी, गरम तथा कोढ, गुल्म और बवासीर, कृमि और प्रमेहको हरनेवाली है ।

अस्य पक्वफलगुणाः ।

निम्बस्य पक्वं मधुरं सुतिक्तं स्निग्धं फलं शोणितपित्तरोगे।
कफे प्रशस्तं नयनामयघ्नं क्षतक्षयघ्नं गुरु पिच्छलं च ॥

अर्थ-पक्की निंबोली-मधुर, कडवी, स्निग्ध तथा रक्तपित्त, कफ, नेत्ररोग, क्षत और क्षयरोगनाशक है तथा भारी और पिच्छल है ।

अस्य बीजस्य मज्जागुणाः ।

निम्बबीजस्य मज्जा तु कुष्ठघ्नी कृमिनाशिनी ।

अर्थ-निंबोलीकी मींग-कुष्ठ और कृमिनाशक [illegible]

अस्य तैलगुणाः ।

[illegible] तु कुष्ठघ्नं तिक्तं कृमिहरं परम् ॥

अर्थ-[illegible] बीजोंका तेल-कडवा, कुष्ठ और कृ[illegible] है ।

अस्य पञ्चाङ्गगुणाः ।

निम्बवृक्षस्य पञ्चांगं रक्तदोषहरं मतम् ।
पित्तं कण्डूं व्रणं दाहं कुष्ठं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-नीमका पंचांग-(छाल, पत्ते, फू[illegible] [illegible]धिरविकार, पित्त, कण्डू, व्रण, दाह और कुष्ठको दूर करे है ।

विवरण । नीमका वृक्ष बडा होताहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें। अधिकतासे पाया जाताहै। वसंतऋतुके आरम्भमें नये पत्ते और अन्तमें फूल आतेहैं । वमिरोगमें पत्तोंको पानीमें पकाके रोगीको पिलावे तो वमन और कुष्ठरोग बंदहोजायगा । मसूरिका रोगके लेपादिमें इसका व्यवहार होता है। मसूरकी दालको इसके पत्तोंमें मिलाकर चैत्रमहीनेमें देनेसे अत्यन्त विषैले सांपकाभी विष नहीं चढताहै । व्यवहार-छाल, पत्ते, फूल, तेल, जड । मात्रा १ प[illegible] ।

महानिम्बनामानि ।

महानिम्बः स्मृतो द्रेका कार्मुको विषमुष्टिकः ।
केशमुष्टिर्निम्बकश्च रम्यकः क्षीर इत्यपि ॥

अर्थ-महानिम्ब, द्रेका, कार्मुक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निम्बक, रम्यक, क्षीर,(काकण्ड, बृहन्निम्ब, महातिक्त, महाद्रोष्क, हिमद्रुम, पार्व, गौरिक,शुक्रसारक, सकालेयक,गिरिपत्र, पवनेष्ट, कैटर्य्य)

संस्कृतभाषामें	महानिम्ब ।
हिन्दीभाषामें	बकायन ।
बंगभाषामें	बोडानिम, महानिम ।
मराठीभाषामें	बकाणीनिंब, कडुनिंब ।
गुजरातीभाषामें	बकान्य ।
कर्नाटकीभाषामें	महावेड ।
तैलङ्गीभाषाम	पेदवेया,गंगराबिचेट्टु,तुरकवयक,क ड्डवेय ।
तामीलके भाषामें	मालाइवेतुवाविप्पम ।
लैटि भाषा-पच	मेलिया एझेडेरक । Melia Azeda
फारसीभाषामें	आजाददरख्त ।
अरबी	बान (वृक्ष) हबुल, (बीज)

अस्य गुणाः ।

मह ते हिमो रूक्षस्तिक्तो ग्राही कषायकः ।
कफपि कृमिच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् (ध०नि०)

अर्थ-ब वृक्ष च-शीतल,रूक्ष, कडवी, मलरोधक, कषेली, तथा कफ, पित्त च शमन, कोढ, हृल्लास (उबकाई) और रुधिर-विकारको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

महानिम्बः कटुस्तिक्तः शीतश्च तुवरो मतः ।
रूक्षो ग्राही कफं दाहं व्रणं रक्तरुजं तथा ।
पित्तं कृमींश्च विषमज्वरं च हृदयव्यथाम् ।
सर्वकुष्ठानि छर्दिं च प्रमेहं च विषूचिकाम् ॥
मूषिकाया विषं गुल्मं शीतपित्तं च नाशयेत् ।
कोष्ठरोगं शिरोरोगं श्वासं च विनिवारयेत् ॥

अर्थ-बकायन-कटु, तिक्त, शीतल, कषाय, रूक्ष, ग्राही तथा कफ, दाह, व्रण, रक्तरोग, पित्त, कृमि, विषमज्वर, हृदयव्यथा, सर्वप्रकारके कुष्ठ, वमन, प्रमेह, विषूचिका, मूषका विष, गुल्म, शीतपित्त, कोढरोग, अर्शरोग, और श्वासरोगको निवारण करनेवाली है ।

विवरण-बकायनके वृक्ष नीमकी समान अधिक लम्बे होतेहैं, पत्ते किंचित् बडे होतेहैं, बकायनके फूल भी नीमकी समान होतेहैं परन्तु कुछ नील रंगके होते हैं, फल गोल गोल होतेहैं ।

कैडर्य्यनामानि ।

कैडर्य्योऽन्यो महानिम्बो रामणो रमणस्तथा ।
गिरिनिम्बो महारिष्टः शुक्लसारोऽलकाह्वयः ॥

अर्थ-कैडर्य्य, महानिम्ब, रामण, रमण, गिरिनिम्ब, महारिष्ट, शुक्लसार, अलकाह्वय (छर्दिघ्न, प्रियसाल, शुक्लसार, वरातिक्त)

संस्कृतभाषामें	कैडर्य्य ।
हिन्दीभाषामें	मीठानीम, कृष्णनिम्ब, व[illegible]
बंगालभाषामें	घोडानिम्बविशेष ।
म[illegible]भाषामें	कढयानिंब, घाणेरा निंब ।
[illegible]भाषामें	मोठोलीबडो ।
कर्णा[illegible]भाषामें	कयाहैवेड ।
तैलिङ्गीभाषामें	कारीवेया ।
लैटिन्भाषामें	मारेयाकोर्निजिआई ।
इंग्रेजीभाषामें	सजंद्करवी कुनाह ।

अस्य गुणाः ।

कडर्यः कटुकस्तिक्तः कषायः शीतलो लघुः ।
सन्तापशोषकुष्ठास्रकृमिभूतविषापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मीठा नीम-कटु, तिक्त, कषाय, शीतल, लघु तथा सन्ताप, शोष, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, भूत और विषविनाशक है ।

अन्यच्च ।

कैडर्यः शीतलस्तिक्तः कटुश्च तुवरो लघुः ।
दाहार्शःकृमिशूलघ्नः सन्तापविषनाशनः ॥
शोफकण्डूभूतबाधा नाशयेदिति कीर्त्तितः । (नि० र०)

अर्थ-मीठानीम-शीतल, कडवा, चरपरा, कषेला, हलका तथा दाह, बवासीर, कृमि, शूल, संताप, विषनाशक, सूजन, कण्डू, और भूतबाधाको हरनेवाला है ।

विवरण । मीठनीमका वृक्ष होताहै, नीमकी समान किन्तु कोरें रहित होतेहैं, निंबोली झुमखेमें आतीहै और पकनेके समय निंबोलीका रंग लाल पड जाता है कालकाके समीप यह बहुत होताहै गंधीला नामसे प्रसिद्ध है लोग प्रायःइसकी दातन भी करते हैं ।

पारिभद्रनामानि ।

पारिभद्रश्च पालाशो रक्तपुष्पः प्रभद्रकः ।
कण्टकी पारिजातः स्यान्मन्दारःकण्टकिंशुकः ॥

अर्थ-पारिभद्र, पालश, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कण्टकी, पारिजात, मन्दार, कण्टकिंशुक (पारिजात, निम्बतरु, रक्तपुष्पक, कृमिशत्रु, रक्तकुसुम, कृमिघ्न, बहुपुष्प, रक्तकेशर)

संस्कृतभाषामें	पारिभद्र ।
हिन्दीभाषामें	फरहद ।
वंगभाषामें	पालतेमान्दार ।
मरा[illegible]में	पानरो (को०) पारिंगा ।
गुज[illegible]में	पांडरवा ।
कर्णाटकभाषामें	हारिवाल । (भरुक्कमरम)
तैलिङ्गीभाषामें	मुळ्ळमोतिचेट्टु मोदुगु, वारिंदेचेट्टु ।
द्राविड[illegible]में	पंजीर ।
तामिल[illegible]	[illegible]गाक ।
लैटिनभाषामें	एरीथ्रिना इंडिका Erythrina indica
	एरीथ्रिना सुवरोझा ।Erythrina Subrosa

अस्य गुणाः ।

पारिभद्रः कृमिश्लेष्ममेदःकफानिलापहः ॥(म० नि०)

अर्थ-फरहद-कृमि, कफ, मेद और कफवातविनाशक है ।

अपिच ।

पारिभद्रः कटूष्णः स्यात्कफवातनिकृन्तनः ।
अरोचकहरः पथ्यो दीपनश्चापि कीर्त्तितः ॥(रा० नि०)

अर्थ-फरहद-कटु, उष्ण, कफवातनाशक, अरुचिहारक, पथ्य और दीपन है ।

अन्यच्च ।

पारिभद्रः कटूष्णश्च पथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ।
अरोचकः कफकृमिमेहशोफहरः स्मृतः ॥
पुष्पं पित्तरुजं हन्ति कर्णव्याधिं विनाशयेत् ।

अर्थ-फरहद-कटु, उष्ण, पथ्य, अग्निप्रदीपक तथा अरुचि, कफ, कृमि, प्रमेह और सूजनको दूर करे है, इसके फूल पित्तरोग और कर्णरोगनाशक हैं ।

विवरण । इसके वृक्ष जंगल और सडकोंपर होतेहैं, पत्ते ढाककी समान एक डालीमें तीन तीन होते हैं, सफेदीयुक्त फूल लाल और सुन्दर होताहै, इसपर फली आतीहैं, इसकी शाखाओंमें सूक्ष्म कांटे होते हैं । व्यवहार छाल, पत्ते, फूल । मात्रा २ मासे ।

काञ्चनारनामानि ।

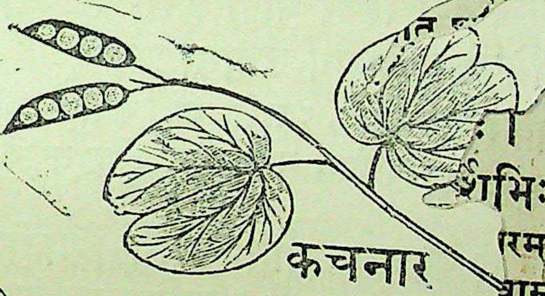

काञ्चनो रक्तपुष्पश्च कान्तारः कनक[illegible]
सुवर्णारोऽथ गिरिजः करकः काञ्चनारकः ॥

अर्थ-काञ्चन, रक्तपुष्प, कान्तार, कनकप्रभ, सुवर्णार, गिरिज, करक, काञ्चनारक, (युग्मपत्र, महापुष्प, गण्डा[illegible], यमलच्छद, काञ्चनार, काञ्चनक, शोणपुष्पक, चमरिक, कु[illegible]ल, युगपत्रक, युगपत्र, काञ्चनाल, ताम्रपुष्प, कुदार, रक्तका[illegible], चम्पविदल, यमलच्छद)

कोविदारनामानि ।

कोविदारोऽथ कुद्दालः कुदारः कुण्डली कुली ।
आस्फोतोद्दालकः स्वल्पकेसरश्चमरी मतः ॥

अर्थ-कोविदार, कुद्दाल, कुद्दार, कुण्डली, कुली, आस्फोत उद्दालक, स्वल्पकेसर, चमरी, (काञ्चनाल, कर्बूदार, पाकारी, आश्मन्तक)

संस्कृतभाषामें	काञ्चनार (ल), कोविदार ।
हिन्दीभाषामें	कचनार, सफेदकचनार ।
[illegible]गभाषाम	काञ्चन, सफेदकाञ्चन ।
मराठीभाषामें	कोरल, काञ्चनवृक्ष ।
गुजरातीभाषा	चम्पाकाटी,चम्पोकांचनार जेना पाद्डाने चम्पाभाजी कहे छे ।
कर्णाटकीभाषामें	कोचाले कचनार ।
तैलिङ्गीभाषामें	देवकाञ्चन ।
[illegible]टिन्भाषामें	बोहिनिया, वेरिएगेटा। Bohenia Variagata
ति[illegible]	बोहिनिया परपुरिआ B. Purpur

काञ्चनारगुणाः ।

मिश्रो[illegible]

काञ्च[illegible]रो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तनुत्
[illegible]कृमिकुष्ठगुद[illegible]भ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ॥ (भा० [illegible]

अर्थ-[illegible]र-शीतल, मलरोधक, कषेला, पित्त [illegible] नाशक तथा [illegible], गुदभ्रंश, गण्डमाला और व्रणका[illegible] करें हैं ।

अन्यच्च ।

र[illegible]षात्तु काञ्चनः शीतः सरो ह्यग्निप्रदीपनः ।
रूक्ष[illegible]स्तुवरो ग्राही कफपित्तव्रणक्रिमीन् ॥
ग[illegible]पित्तकुष्ठवातांश्च नाशयेत् ।
गुद[illegible]भ्रंशं रक्तपित्तं नाशये[illegible]पुष्पमस्य च ॥
शी[illegible]लं तुवरं रूक्षं संग्राहि मधुरं लघु ।
पि[illegible]क्षयं च प्रदरं कासं रक्तरुजं हरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-लालकचनार-शीतल, सारक, अग्निप्रदीपक, कषेला, ग्राही तथा कफ, पित्त, व्रण, कृमि, गण्डमाला, रक्तपित्त, कुष्ठ, वात, गुदभ्रंश और रक्तपित्तको दूर करे है । इसके फूल-शीतल, कषेले, रूखे, ग्राही, मधुर, हलके तथा पित्त, क्षय, प्रदर, खांसी और रक्तरोगको दूर करे हैं ।

श्वेतकाञ्चनगुणाः।

श्वेतस्तु काञ्चनो ग्राही तुवरो मधुरः स्मृतः।
रुच्यो रूक्षः श्वासकासपित्तरक्तविकारहा॥
क्षतप्रदरनुत्प्रोक्तो गुणाश्चान्ये तु रक्तवत्।

अर्थ-सफेदकचनार-ग्राही, कषेला, मधुर, रुचिकारक, रूक्ष, श्वास, खांसी, पित्त, रक्तविकार, क्षत और प्रदररोगनाशक है। शेष गुण लाल कचनारकी समान जानने।

कोविदारगुणाः।

कोविदारो दीपनः स्यात्कषायो व्रणरोपणः।
संग्राही सारकः स्वादुः पर्णशाकेषु चोत्तमः॥
मूत्रकृच्छ्रं त्रिदोषं च शोषं दाहं कफं तथा।
वातं हरेत्पुष्पगुणा रक्ता काञ्चनपुष्पवत्॥

अर्थ-कोविदार-(सफेद कचनार) अग्निप्रदीपक, को[illegible]णको भरनेवाला, मलरोधक, सारक, स्वादिष्ट यह [illegible] म है। तथा मूत्रकृच्छ्र, त्रिदोष, शोष, दाह, कफ और वातनाशक है। और फूलोंके गुण लालकचनारके समान जानने।

पीतकाञ्चनारगुणाः।

पीतस्तु काञ्चनो ग्राही दीपनो व्रणरो[illegible]
तुवरो मूत्रकृच्छ्रस्य कफवाय्वोश्च नाशन[illegible]

अर्थ-पीला कचनार-ग्राही, दीपन, व्रणरोपण, कषेला, मूत्रकृच्छ्र, कफ और वातनाशक है।

काञ्चनीगुणाः।

काञ्चन्युक्ता शीर्षरुजं त्रिदोषं च विनाशयेत्
स्तन्यस्य वर्द्धनकरी ऋषिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः॥ (नि०र०)

अर्थ-काञ्चनी-(छोटा कचनार) शिरोरोग और त्रिदोषनाशक है। तथा स्तनोंमें दूध बढानेवालीहै।

विवरण! कचनार लाल और सुफेद इन भेदोंसे दो प्रकारका होता है। यह वृक्ष जंगल और पहाडोंमें अधिक होतेहैं। पत्ते एक एक शाखामें बराबर दोदो होते हैं, सुफेद फूल आतेहैं, और फलियें लगतीहैं, दूसरी प्रकारका कचनारभी ऐसाही होताहै परन्तु फूल लाल रंगके होतेहैं।

शोभाञ्जनः शिग्रुतीक्ष्णान्धकाक्षीबसुभाञ्जनाः ॥

अर्थ-शोभाञ्जन, शिग्रु, तीक्ष्णगन्धक, अक्षीब, सुभाञ्जन,(तीक्ष्णान्धक, अक्षीब, सोभाञ्जन, सौभाञ्जन, विद्राधिनाशन, मधुगुञ्जन, हरीतशाक, शाकपत्र, शिग्रुक, सुपत्रक, उपदंश, क्षमादंश, कोमलपत्रक, बहुमूल, दंशमूल, तीक्ष्णमूल, उग्र, कामिनिश, शोभतक, शौभाञ्जन, मोचक, तीक्ष्णगन्ध, सुतीक्ष्ण, वनपल्लव, श्वेतमरिच, कटुकन्द, गन्ध, गन्धक, कालीबक, मेचक, आक्षीब, शुभाञ्जन, स्त्रीचित्तहारी, द्रविणनाशन, कृष्णगन्धा, मूलकपर्णी, मोच, तिलशिग्रु, जलप्रिय, मुखमोद, कृष्णशिग्रु, चलुषा, रुचिराञ्जन)

श्वेतशिग्रुनामानि ।

श्वेतशिग्रुः सुतीक्ष्णश्च मुखभङ्गः सिताह्वयः ॥

अर्थ-श्वेतशिग्रु, सुतीक्ष्ण, मुखभङ्ग, सिताह्वय, (श्वेतमरिच, रोचन, ती[illegible]मूल, मधुशिग्रुक)

रक्तशिग्रुनामानि ।

रक्तोऽ[illegible] मधुशिग्रुः स्यात्सुरंगी च शुभाञ्जना ॥

अर्थ-रक्ताशिग्रु, मधुशिग्रु, सुरंगी, शुभाञ्जना, (कृष्णबीज, [illegible] पातक, [illegible] मधुर, बहुलद, सुगन्ध, केसरी, सिंह, मृगारी)

संस्कृतमें	शोभाञ्जन, श्वेताशिग्रु । रक्तशिग्रु ।
हिन्दीभाषामें	सौंजिना, सफेदसैंजिना, लालसैंजिना ।
बंगभाषामें	साजिने, सादासजिने, लालसजडो ।
मराठीभाषामें	शेगट, शेवगा ।
गुजरातीभाषामें	शरववो ।
कर्णाटकीभाषामें	[illegible]प्पतुग्गि, कंपनेयनुग्गि ।
तैलिङ्गीभाषामें	मुलंगा ।
तामिलीभाषामें	मोरंग ।
दक्षिणीभाषामें	सेगत ।
इंग्रेजीभाषामें	होर्सरेडीशट्रि HorseRadishTres
लैटिन्भाषामें	मोरिंगा टेरिगोस्परमा Moringapterygosperma

शोभाञ्जनगुणाः ।

शिग्रुः कटुः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो मधुरो लघुः ।

दीपनो रोचनो रूक्षः क्षारतिक्तो विदाहकृत् ॥
संग्राही शुक्रलो हृद्यः पित्तरक्तप्रकोपनः ।
चक्षुष्यः कफवातघ्नो विद्रधिश्वयथुक्रिमीन् ॥
मेदोऽपचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणान्हरेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–सैंजिना–चरपरा, पचनेमेंभी चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, मधुर, हलका, अग्निको दीपनकरनेवाला, रुचिकारक, रूखा, क्षारयुक्त, कडवा, दाहजनक, मलरोधक, शुक्रवर्द्धक हृदयको हितकारी, पित्तको कुपित करनेवाला, रुधिरको दूषित करनेवाला नेत्रोंको हितकारी, तथा कफ, वात, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेदोरोग, अपची, विष, प्लीहा, गुल्म, गण्डमाला और व्रणको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

शोभाञ्जनस्तीक्ष्णकटुः स्वादूष्णः पिच्छिलस्तथा ।
जन्तुवातार्त्तिशूलघ्नश्चक्षुष्यो रोचनः परः ॥ (रा० नि०)

अर्थ–सैंजिना–तीक्ष्ण, चरपरा, स्वादिष्ठ, गरम, [illegible]ल तथा कृमि, वातकी वेदना और शूलको निर्मूल क[illegible] [illegible]त्रोंको [illegible]तकारी और परम रोचनहै ।

श्वेतशिग्रुगुणाः ।

श्वेतः प्रोक्तगुणो ज्ञेयो विशेषाद्दाहकृद्वे[illegible]भिः ॥ (
प्लीहानं विद्रधिं हन्ति व्रणघ्नः पित्तरक्तकृत् [illegible]० प्र०)

अर्थ–सफेदसौंजिनेके गुणभी साजिनेकी समान हैं, [illegible]षकरके दाह उत्पन्न करे है । तथा प्लीहा, विद्रधि और व्रणको द[illegible] तथा पित्तरक्तकारक है ।

[illegible]न्यच्च ।

श्वेतशि[illegible]ः कटुस्तीक्ष्णः शोफ निलनिकृन्तनः ।
अङ्गव्यथाहरो रुच्यो दीपनो मुखजाड्यनुत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ–सफेदसैंजिना–चरपरा, तीक्ष्ण, शोफनाश[illegible], वातविनाशक, अंगव्यथानिवारक, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाला और मुखकी जडताको दूरकरनेवाला है ।

रक्तशिग्रुगुणाः ।

रक्तशिग्रुर्महावीर्यो मधुरश्च रसायनः ।

शोथं वातं च पित्तं च आध्मानं च कफं जयेत् ॥

अर्थ-लालसैंजिना-महावीर्य्यवाला, मधुर,रसायन तथा, सूजन, वात, पित्त, आध्मान और कफको हरनेवालाहै ।

अन्यच्च ।

मधुशिग्रुः प्रोक्तगुणो विशेषाद्दीपनः सरः ॥

अर्थ-मधुशिग्रु-(लालसैंजिना)विशेष करके दीपन और सारकहै ।

शिग्रुवल्कलपत्राणां स्वरसः परमार्तिहृत् ॥

अर्थ-सैंजिनेकी छाल और पत्तोंका स्वरस अत्यन्त पीडाको दूर करेहै ।

शिग्रुबीजगुणाः ।

चक्षुष्यं शिग्रुबीजं च तीक्ष्णोष्णं विषनाशनम् ।
अवृष्यं कफवातघ्नं तन्नस्येन शिरोर्त्तिनुत् ॥

अर्थ-सैंजिनेके बीज-नेत्रोंको हितकारी, तीक्ष्ण, गरम, विषविनाशक[illegible]कफघ्न,वातनाशक और इसके नास लेनेसे शिरकी पीडा दूर होतीहै ।

शिग्रुशाकगुणाः ।

शि[illegible]शाकं हि[illegible] स्वादु चक्षुष्यं वातपित्तहृत् ।
[illegible]क्रकृत्स्निग्धं रुच्यं मदकृमिप्रणुत् ॥

अर्थ-[illegible]शाक-शीतल,स्वादिष्ट,नेत्रोंको हितकारी,वातपित्तनाशक,[illegible]ण, तेजवर्द्धक, शुक्रजनक,स्निग्ध, रुचिकारक तथा मद और कृ[illegible]नाशक है ।

शिग्रुपुष्पगुणाः ।

शि[illegible]पुष्पं तु [illegible]कं तीक्ष्णोष्णं स्नायुशोथनुत् ।
कृमि[illegible]कृत्कफवातघ्नं विद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥

अर्थ-सैंजिनेके फूल-चरपरे,तीक्ष्ण, गरम, स्नायुरोग और शोथनाशक हैं, कृ[illegible]जनक, कफवातनाशक तथा विद्रधि, प्लीहा और गुल्मका नाशकर हैं ।

शिग्रुफलगुणाः ।

शोभाञ्जनफलं स्वादु कषायं कफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपन परम् ॥

अर्थ-सैंजिनेकी फली-स्वादिष्ट,कषेली,कफपित्तनाशक तथा शूल

कोढ, क्षय, श्वास और गुल्म (गोला) का नाश करेहै तथा दीपनहै ।

विवरण। सैंजिनके वृक्ष बाग, वन और जंगलमें होतेहैं । इसकी फूलोंके लौटफेरसे तीन जातीहैं, फूल सफेद, नीले और लाल आते हैं, इनमेंसे सफेद फूलका सैंजिना अधिकतासे होता है, इसकी फलियोंको दालमें डालकर खाते हैं सैंजिनेका तेल अनेक प्रकारकी खुजलीको दूर करता है ।

अपराजितानामानि ।

आस्फोता गिरिकर्णी स्याद्भूमिलग्नपराजिता ।
नगपर्य्यायकर्णी च गवाक्षी गिरिशालिनी ॥

अर्थ-आस्फोता, गिरिकर्णी, भूमिलग्ना, अपराजिता, नागपर्य्यायकर्णी, गवाक्षी, गिरिशालिनी (अश्वक्षुरादिकर्णी, कटभी, दधिपुष्पिका, गर्दभी, सितपुष्पा, श्वेतस्यंदा, किणिही, श्वेता, भद्रा, हपुष्पी विषहंत्री, सुपुत्री, सिंहपुष्पी, श्वेतवराटा, गवादिनी)

नीलापराजितानामानि ।

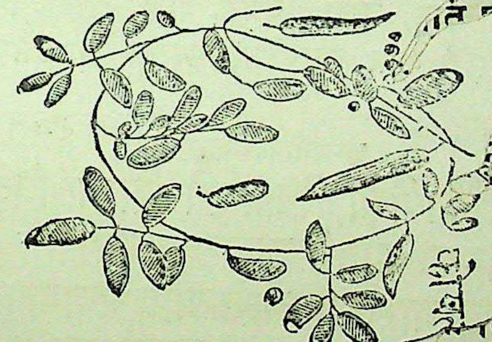

नीलपुष्पी महानीला स्यान्नीला गिरिकर्णिका ।
गवादिनी व्यक्तगन्धा विष्णुक्रान्ता विभाण्डिका ॥

अर्थ-नीलपुष्पी, महानीला, नीला, गिरिकर्णिका गवादिनी, व्यक्तगन्धा, विष्णुक्रान्ता, विभाण्डिका ।

संस्कृत भाषामें	अपराजिता, नीलापराजिता ।
हिन्दीभाषामें	सफेदकोयल, नीलीकोयल ।
बगलाभाषामें	अपराजिता, नीलापराजिता ।
मराठीभाषामें	गोकर्णी काळी, पांढरी ।

गुजराती भाषामें	गरणी ।
कर्णाटकीभाषामें	विलीयगिरिकार्णिके, नीलगिरिकर्णिवे
तैलिङ्गीभाषामें	नीलगंटुना ।
लैटिन्भाषामें	क्लीटोरिआ टरनेटिया Cletorea Ternatea
लै०	मेजोरिअन् Megorian
अं०	मजीरयुतर्ण्हिंदी ।

अपराजितागुणाः।

श्वेता गोकर्णिका कट्वी शीता तिक्ता च बुद्धिदा ।
चक्षुष्या तुवरा चैव सरा विषविनाशिनी ॥
त्रिदोषं शीर्षशूलं च दाहं कुष्ठं च शूलकम् ।
आमं पित्तरुजं चैव शोथं जन्तून् व्रणं कफम् ॥
ग्रहपीडांशीर्षरोगं विषं सर्पस्य नाशयेत् ।

अ[illegible]-सफेद कोयल-चरपरी, शीतल, कडवी, बुद्धिदायक, नेत्रोंको [illegible] कषेली, सरा (दस्तावर), विषविनाशक तथा त्रिदोष, मस्तक[illegible], दाह, कोढ, शूल, आम, पित्तरोग, सूजन, कृमि, [illegible], (घाव) [illegible]फ, ग्रहपीडा, मस्तकरोग और सर्पके विषको दूर करै[illegible]

कृष्णगोकर्णिकागुणाः ।

[illegible]गोकार्णिका तिक्ता रसे स्निग्धा त्रिदोषहा ।
शी[illegible]वीर्य्या वातपित्तज्वरदाहभ्रमापहा ॥
[illegible]चबाधारक्तातिसारोन्माद मदापहा ।
अ[illegible]कासश्वा[illegible]कुष्ठजंतुक्षयापहा ॥
अ[illegible]ये गुणास्तु सुश्वेतगो[illegible]र्णीसदृशा मताः ॥

अर्थ-नी[illegible]कोयल-कडवी, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, शीतवीर्य्य तथा वात, [illegible]पित्त, ज्वर, दाह, भ्रम, पिशाचबाधा, रक्तातिसार, उन्माद, मद, अत्यन्त खांसी, श्वास, कफ, कोढ, जन्तु, और क्षयरोगको दूर करेहै । शेष गुण सफेद अपराजिताके समान जानने ।

विवरण-कोयल सफेद और नीले फूलोंके भेदसे दो प्रकारकी है यह खेत बाग और उपवनोंमें होतीहै पत्ते छोटे गुलाबकी समान होतेहैंइस पर फली लम्बी आती हैं ।

सिन्दुवारनामानि ।

इन्द्राणिकेन्द्रसुरसो निर्गुण्डी सिन्धुवारकः ॥

अर्थ–इन्द्राणिका, इन्द्रसुरस, निर्गुण्डी, सिन्धुवारक, (सिन्धुवार, सिन्धुवारक, सिन्धुक, इन्द्रसुरिष, सिन्दुवारित, इन्द्राणी, शुक्राणी, काशनाशिनी, सुरसा, सिन्धु, शुक्रपृष्ठक, विसुगन्धक, सुरस, श्वेतपुष्प, स्थिरसाधनक, अनन्त, सिद्धक, अर्थसिद्धक, सिन्दुवारिका)

नीलसिन्धुवारनामानि ।

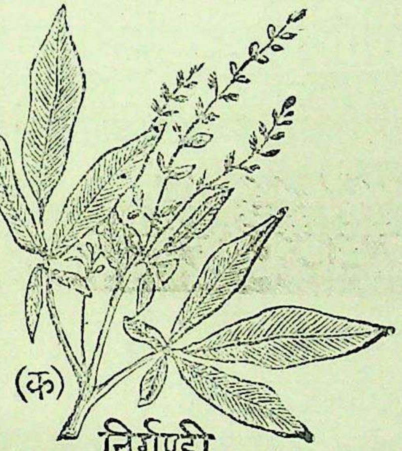

निर्गुण्डी

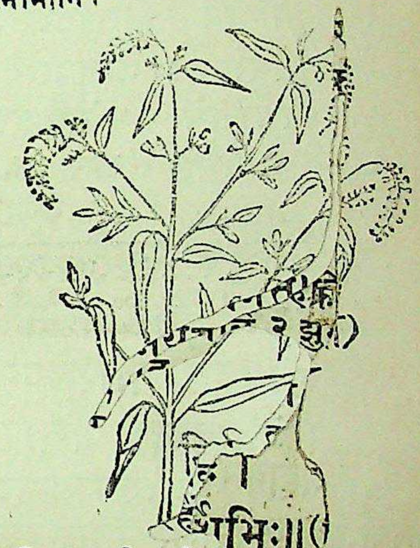

नीलिका नीलनिर्गुण्डी सिन्दुको नील[illegible]दुकः ॥

अर्थ–नीलिका, नीलनिर्गुण्डी, सिन्दुक, नील[illegible]दुक, (नीलसिन्दुवार, पीतसहा, निर्गुण्डी, भूतकेशी, [illegible]वंकार, नीलिका, कापिका, शोफालिका, शीतभीरु, [illegible]लिका, नीलभ[illegible]री, कर्तरीपत्रा, भूतकेशी, वनजा, मरुत्पत्री, वनेंद्राणी)

संस्कृतभाषामें	सिन्दुवार, नीलासिन्दुवार, निर्गुण्डी, निर्गुण्डीभेद ।
हिन्दीभाषामें	सम्हालु, निर्गुण्डी, मेउडी, नीलसम्हालु, सिहरु, सम्हालुके बीज ।
वंगभाषामें	निशिन्दा, नीलनिशिन्दा ।
मराठीभाषामें	निर्गुण्डी–पांढऱ्याफुलांची, काळ्याफुलांची, लिंगुर, निर्गुण्डीचें बीज ।
गुजरातीभाषामें	नागडच, नागडचनावी ।

कर्णाटकाभाषाम	करियल्लाक्किमेउडी विलीयलोके ।
तामिलीभाषाम	नोकूचि, निर्नोंचि, मनजाप ।
वम्०	निर्गुण्डी, कट्टि, कल अडलुसा ।
द्रा०	सान्वालि, कालिसुम्बालि ।
पञ्जाबीभाषामें	वणा, लहरी ।
कोंकणीभाषामें	नगूड, सेन्दुवार ।
इंग्रजीभाषामें	काइवलिव्ड चेष्ट्री । Fiveleaved Chastetee
लैटिन्भाषामें	वाईटक्सानगण्डु । Vitex Negunda
तैलिङ्गीभाषामें	तेलावाविली,नाविलिंचेट्टु, तेल्लव,नल्लवविलेवबिल्ली
फारसीभाषामें	पंग़ुष्ट,तुख्मेपञ्जंगुष्ट-मिसवान ।
अरबीभाषामें	असलुक, हडुलफुक्का, बजरुल, असलुक़ ।

सिन्दुवारगुणाः ।

[illegible]सिन्दुकः स्मृतिदस्तिक्तः कषायः कटुको लघुः ।
[illegible]मङ्के[illegible] नेत्रहितो हंति शूलशोथाममारुतान् ॥
[illegible]मिकुष्ठा[illegible]श्लेष्मज्वरान्नीला सिता द्विधा ।
[illegible]द्वारदलं जन्तुवातश्लेष्महरं लघु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-[illegible] और नीलम्हालु दोनों स्मरणशक्तिदायक, कषेले, चरपरे,ह[illegible]को सुन्दरतादायक, नेत्रोंको हितकारी तथा शूल,सूजन,[illegible]मवात,कृमि,कोढ,अरुचि,कफ और ज्वरको दूरकरेहैं। सम्हालुके प[illegible]कृमि वात और कफनाशक हैं तथा हलकेहैं ।

कटु[illegible]निर्गुण्डी तिक्ता रूक्षा च कासजित् ।
श्लेष्म[illegible]शोफसमीरार्तिप्रद[illegible]आनहारिणी ॥(रा. नि.)

अर्थ-नीलनिर्गुण्डी-कटु(चर्परी)उष्ण (गरम) तिक्त (कडवी), रूक्ष(रूखी) तथा कास (.खांसी)कफ,शोफ(सूजन),वातकी वेदना, प्रदररोग और आध्मान(अफारा)को दूर करे है ।

अन्यच्च ।

निर्गुण्डी कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा च कषायका ।
स्मृतिप्रदा नेत्रहिता केश्या लघ्वग्निदीपनी ॥
मेध्या वर्ण्या च संप्रोक्ता गुदवातक्षयापहा ।

सन्धिवातं च वातं च शोफं वामं कृमींस्तथा ॥
कुष्टं कफं व्रणं प्लीहां गुल्मं कण्ठरुजं तथा ।
विषशूलं चारुचिं च ज्वरमेदोरुजं तथा ॥
गृध्रसीं च प्रतिश्यायं कासं श्वासं च नाशयेत् ।
पित्तनाशकरी प्रोक्ता पर्णमस्या लघुस्मृतम् ॥
कृमिनाशकरं प्रोक्तं पूर्ववैद्यैः कृपालुभिः ।

अर्थ-निर्गुण्डी-चरपरी, कडवी, रूखी, गरम, कषेली, स्मरणशक्तिदायक, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुन्दरतादायक,हलकी अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक,वर्णकारक तथा गुदवात,क्षय, सन्धिवात, सूजन, आम, कृमि, कोढ, कफ, घाव, प्लीहा, ोला, कण्ठरोग, विष, शूल, अरुचि, ज्वर, मेदोरोग, गृध्रसीवात, प्रतिश्याय, (नाकसे पानीगिरना) खांसी,श्वास और पित्तको द करेहै। इसके पत्ते-हलके और कृमिरोगनाशक हैं ।

कर्त्तरीनिर्गुण्डीगुणाः ।

निर्गुण्डी कर्त्तरी युक्ता कटी ति कफापह ।
वातं क्षयञ्च शूलञ्च कण्डूं कुष्ठं च नाश ।

अर्थ-कर्तरी निर्गुण्डी-चरपरी, कडवी, कफ वात, क्षय, शूल, कण्डू और कुष्ठको नष्ट करेहै ।

अरण्यनिर्गुण्डीगुणाः ।

प्रोक्ता चारण्यनिर्गुण्डी पथ्या पित्तज्व ।
विषं च गृध्रसीवातं नाशयेद्वर्णकारणी
पर्णं चास्यास्तु कटुकं चाग्निदीप्तिकरं ल ।
कृमीन् कफं च वातं च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥
कटु चोष्णं पुष्पमस्यास्तिक्तं कृमिकफापहम् ।
प्लीहां गुल्मं च वातं च कुष्टं शोथं च नाशयेत् ॥
अरुचेर्नाशकं प्रोक्तं कण्डूं चैव विनाशयेत् ।(नि०र०)

अर्थ-वननिर्गुण्डी-पथ्य तथा पित्तज्वर,विष और गृध्रसीवातनाशक है और वर्णकारक है। इसके पत्ते-चरपरे, अग्निको दीपन कर-

नेवाले, हलके तथा कृमि, कफ और वातनाशक हैं। इसके फूल-चरपरे, गरम, कडवे, तथा कृमि, कफ, प्लीहा, गोला, वात, कोढ, सूजन, अरुचि और कण्डू तथा खुजलीका नाश करेहैं।

विवरण। निर्गुण्डीके वृक्ष बाग और वनोंमें होते हैं। पत्ते अरहर की समान होते हैं। एक दंडीपै पांच पांच होते हैं। पत्ते नीले और नीचे सपेद होतेहैं। निर्गुण्डी अनेक जातिकी होतीहै किसीपै काले और किसीपै सपेद फूल आते हैं। फल आमके मौरकी समान गुलछेदार और केशरी रंगके होते हैं। व्यवहार-मूल। मात्रा ३ म सेकी

कुटजनामानि।

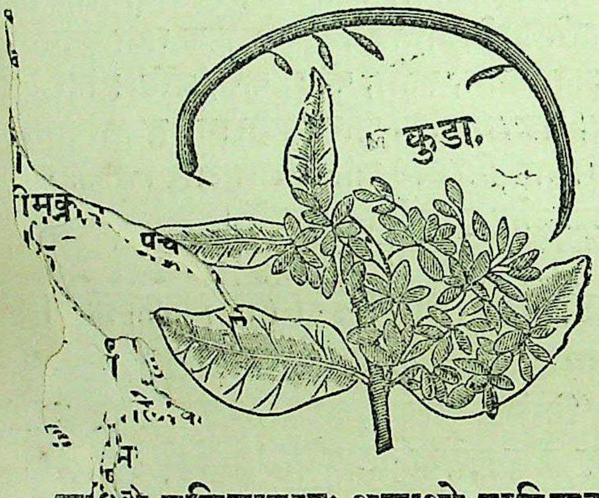

कुटजो मल्लिकापुष्पः शक्राशो वरतिक्तकः॥

अर्थ-कु[illegible] मल्लिकापुष्प, शक्राश, वरतिक्त, (शक्र, वत्सक, गिरिमल्लिका, पाण्डुर, कटुक, कुटक, कौटज, तिक्तक, रक्तनाशक वृक्षक, शक्रह्वय, शक्रपर्याय, कूटज, काही, कालिङ्ग, मल्लिका, पुष्प, प्रावृष्य, शक्रपादप, यवफल, संग्राही, पाण्डुद्रुम, प्रावृषेण्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, शक्रशाखी)

संस्कृतभाषामें	कुटज।
हिन्दीभाषामें	कुडा, कौरैया
वंगभाषामें	कुडाचि, कुराचि।
मराठीभाषामें	कुडा।
गुजरातीभाषामें	कडो।

कर्णाटकीभाषामें	कोडसिगेयमहनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	अंकलु चंगलकुष्ठ ।
तामिलीभाषामें	वेप्पाले
तु०	कोडंजि ।
इंग्रेजीभाषामें	आवललिव्ड रोझबे। Ovalleaved RoseBay
लैटिन्भाषामें	राइटियाएंटिडिसेन्टरिका । Wrightia antidicen tarica
अरबाभाषामें	तिवाज ।

अस्य गुणाः ।

कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो लघुः ।
अर्शोतिसारपित्तास्रकफतृष्णामपित्तनुत् ॥
तत्पुष्पं शीतलं तिक्तं कषायं लघु दीपनम् ।
वातलं कफपित्तास्रकुष्ठातीसारजन्तुजित् ॥
तस्य शिम्बीभवं शाकं व्यंजनं चामवातजित्
रुच्यं कफघ्नं रक्तातीसारकुष्ठक्रिमीञ्जये ॥ २ शु० वि०)

अर्थ-कुडा-चरपरा, रूखा, दीपन, कषेला, हलका तथा बवासीर अतिसार, रक्तपित्त, कफ, तृषा, आम और पित्तको दूर करे है। कुडेके फूल शीतल, कडवे, कषैले, दीपन, हलके, वातल तथा कफ, रक्तपित्त, कुष्ठ, अतिसार और कृमिको दूर करेहैं भिः॥(फलियोंका शाक-व्यञ्जन, आमवातनाशक, रुचिकारक नाशक तथा रक्तातिसार, कुष्ठ और कृमिको दूर करेहै, रम की विशेष पर्याय और गुण एवं विवरणादिक सब हरीतक्यादिवर्गमें देखो।

करंजनामानि।

विकार,

गर

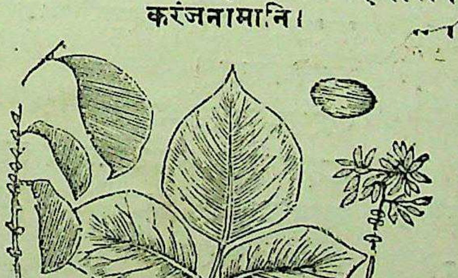

करंज.

करञ्जो नक्तमालश्च पूतिकः पूतिपत्रकः ।
पूतीकरञ्जः कैडर्यः कलिमार उदाहृतः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, पूतिपत्रक, पूतिकरञ्ज, कैडर्य्य कालिमार, (पूतिपर्ण, बद्धफल, रोचन, करज, करञ्जक, उदकीर्य)

अपिच ।

चिरबिल्वः करञ्जोन्यः प्रकीर्यो गौर एव च ।
उदकीर्योऽथ षड्ग्रन्थो वृत्तपर्णः प्रकीर्तितः ॥

अर्थ-चिरबिल्व, प्रकीर्य, गौर, उदकीर्य, षड्ग्रन्थ, और वृत्तपर्ण ।

अन्यच्च ।

करञ्जो नक्तमालश्च पूतिकश्चिरबिल्वकः ।
पूतिपर्णो वृत्तफलो रोचनो गुच्छपुष्पकः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, चिरबिल्वक, पूतिपर्ण, वृत्तफल, रोचन [illegible] च्छपुष्पक (स्निग्धपत्र, तपस्वी, विषारि, घृतपर्णक)

तथाच ।

उदकीर्य [illegible] नीयोऽन्यः षड्ग्रन्था हस्तिवारुणी ।
[illegible] गारवल्ली शार्ंगष्ठा काकघ्नी करभण्डिका ॥

अर्थ [illegible], षड्ग्रन्था, हस्तिवारुणी, अंगारवल्ली, शार्ङ्गष्टा, काकघ्नी [illegible] डका ।

मह [illegible] रञ्जिका चैव मदहस्तिनिका च सा ॥

अर्थ- [illegible] करञ्जिका, मदहस्तिनिका (काकघ्नी, मदहस्तिनी)

संस्कृत [illegible]	करञ्ज, पूतिकरञ्ज, घृतकरञ्ज, षड्ग्रन्थ, महाकरञ्ज ।
हिन्दीभाषमें	करञ्ज, करञ्जभेद ।
वंगभाषामें	डहरकरञ्ज, नाटाकरञ्ज इत्यादि ।
मराठीभाषामें	चापडाकरञ्ज, घाणेराकरञ्ज, वावला ।
गुजरातीभाषामें	करञ्ज, चरेलकणसे ।
कर्णाटकीभाषामें	नापसीयमरतु, वारुबहुलिगिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कानुगचेट्टु, कंज ।
मला०	पोन्नं ।
तामिलीभाषामें	पुंगामारं ।

इंग्रेजीभाषामें स्मूथ्लिव्ड पोनगोमिया। Smooth leaved Pongamia लैटिन्भाषामें पोनगोमियाग्लेब्रा । Pongamia Glabra अलमस इन्टेग्रेफोलिया । Almus Integrefolie

करञ्जा गुणाः।

करञ्जः कटुकः पाके नेत्र्योष्णस्तिक्तको रसे ।
कषायोदावर्त्तवातानां योनिदोषापहः स्मृतः ॥
वातगुल्मार्शव्रणहृत् कण्डूकफविषापहः ।
विचर्चिकापित्तकृमित्वग्दोषोदरमेहहा ॥
प्लीहाहरश्च संप्रोक्तः फलमुष्णं लघु स्मृतम् ।
शिरोरुग्वातकफहृत्कृमिकुष्ठार्शमेहनुत् ॥
पर्णं पाके कटूष्णं स्याद्भेदकं पित्तलं लघु ॥
कफवातार्शकृमिनुद्व्रणं शोथं च नाशयेत् ॥
पुष्पमुक्तं चोष्णवीर्य्यं पित्तवातकफा[illegible] ।
अस्यांकुरा रसे पाके कटुकाश्चाग्निदीपकाः ॥
पाचकाः कफवातार्शःकुष्ठकृमिविषापहाः ।
शोथनाशकराःप्रोक्ता ऋषिभिःसूक्ष्मदर्शिभिः॥(नि.र.)

अर्थ–करंज–पचनेमें चरपरी, नेत्रोंको हितकारी, गरम, कडवी, कषैली तथा उदावर्त, वात, योनिदोष, वातगुल्म, बवासीर, घाव, कण्डू, कफ, विष, विचर्चिका, पित्त,कृमि, त्वचाके विकार,उदररोग, प्रमेह और प्लीहाको दूर करनेवाली है । करंजके फल–गरम, हलके तथा शिरोरोग, वात, कफ, कृमि, कोढ, बवासीर और प्रमेहको दूर करै हैं।

इसके पत्ते–पचनेमें चरपरे, गरम, भेदक, (दस्तावर) पित्तजनक, हलके तथा कफ, वात, बवासीर, कृमि, घाव और सूजनको दूर करै हैं। इसके फूल–उष्णवीर्य्य तथा पित्त, वात और कफका नाश करै हैं। इसके अंकुर–रसमें और पचनेमें चरपरे, अग्निदीपन करनेवाले पाचक, तथा कफ, वात, बवासीर, कुष्ठ, कृमि, विष और सूजनको दूर करनेवाले हैं।

अपिच।

करञ्जो ज्वरत्वद्दोषनाशनो दंतदार्ढ्यकृत्।
कटुको भेदनस्तस्य फलं नयनपुष्पहृत्॥
पित्तश्लेष्मण्युदासीनं विष्टम्भनविबन्धकृत्।(शो०नि०)

अर्थ-करंज-ज्वर और त्वचाके दोषको दूर करैहै, दाँतोंको दृढ करै है, चरपरी और दस्तावर है। इसके फल-आंखके फूलेको दूर करै हैं तथा पित्त और कफको हरै हैं, विष्टम्भ और विबन्धकारक हैं।

करञ्जतैलगुणाः।

करञ्जतैलं तीक्ष्णोष्णं कृमिहृद्रक्तपित्तकृत्।
नयनामयवातार्त्तिकुष्ठकण्डूव्रणप्रणुत्॥
वातनुत्पित्तकृत्किञ्चिल्लेपनाच्चर्म्मदोषनुत्। (आ० सं०)

अर्थ-करञ्जका तेल-तीक्ष्ण, गरम, कृमिनाशक, रक्तपित्तकारक तथा [illegible] वातकी वेदना, कोढ, कण्डू (खुजली) घाव और वातका नाश करै किञ्चित् पित्तकारक और इसका लेप करनेसे त्वचाके विकार दूर होते हैं।

महाकरञ्जगुणाः।

महाकरंजकस्तीक्ष्णः कटुश्चोषणश्च तिक्तकः।
कण्डूविचर्चिकाकुष्ठत्वग्रुग्विषव्रणापहा॥

अर्थ-महाकरंज-तीक्ष्ण, चरपरी, गरम, कडवी तथा कण्डू, विचर्चिका, कुष्ठ, त्वचाके रोग विष और व्रणनाशक है।

घृतकरञ्जगुणाः।

प्रोक्तो घृतकरंजस्तु कटुकोष्णो व्रणापहः।
वातं च सर्वत्वग्दोषं विषं चार्शो विनाशयेत्।
करञ्ज इव संप्रोक्ता गुणास्त्वन्ये भिषग्वरैः।

अर्थ-घृतकरञ्ज-चरपरी, गरम, तथा व्रण(घाव) वात, सर्वप्रकारके त्वचाके रोग, विषरोग और अर्श (बवासीर) को दूर करैहै। शेष गुण करंजकी समान जानने।

गुच्छकरञ्जगुणाः।

गुच्छनामा करंजः स्यादुष्णस्तिक्तः कटुः स्मृतः।
विचर्चिकावातविषकण्डूकुष्ठार्शनाशनः॥

त्वग्दोषनाशकश्चैव ऋषिभिः परिकीर्तितः ।

अर्थ—गुच्छकरंज-गरम, कडवी, चरपरी तथा विचर्चिका, वात, विष, कण्डू, कुष्ठ, बवासीर और त्वचाके रोगोंका नाश करै है ।

पूतिकरंजगुणाः ।

पूतिकरञ्जकः प्रोक्तो गुच्छपूर्वकरंजवत् ॥ (नि० र०)

अर्थ--पूतिकरञ्जके गुण गुच्छकरंजकी समान हैं ।

पूतिकरंजपत्रगुणाः ।

पूतिकरंजजं पत्रं लघु वातकफापहम् ।
भेदनं कटुकं पाके वीर्य्योष्णं शोफनाशनम् ॥

अर्थ-पूतिकरंजके पत्ते-हलके, वातकफनाशक, भेदक (दस्तावर), पचनेमें चरपरे, उष्णवीर्य्य और शोफ (सूजन) नाशक हैं ।

विवरण । करंजके बहुत बडे २ वृक्ष वनमें होते हैं, पत्ते-पाखरके पत्तोंकी समान गोल और ऊपरके भागमें चमकदार होते हैं । इसमें फूल आसमानी रंगके आतेहैं और फलभी नलि २ झुमकेदार लगते हैं, पत्तोंमें दुर्गन्ध आतीहै । करंज छै सात प्रकारकी होती है।

कण्टकरंजनामानि ।

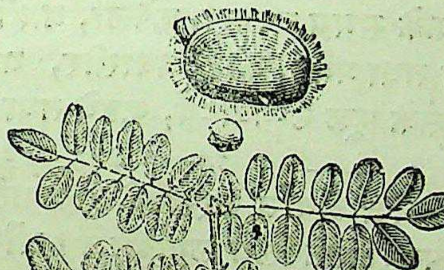

लताकरंजः

कुबेराक्षी क्रकचिका करञ्जा तिणगच्छिका ।
वारिणी तीरिणी वल्ली ज्ञेया कण्टकिनीति च ॥

अर्थ-कुबेराक्षी, क्रकचिका, करंजा, तिणगच्छिका, वारिणी, तीरिणी, वल्ली, कण्टकिनी ।

संस्कृतभाषामें	कण्टकरंज ।
हिन्दीभाषामें	करंजा, करंजुवा ।
बंगलाभाषामें	काँटाकरंज ।
मराठीभाषामें	सागरगोटा ।
गुजरातीभाषामें	कांकच, तेनांफल-कांकचिया ।
कर्णाटकीभाषामें	करञ्जमेदु ।
तैलेङ्गीभाषामें	कचकाई, गुच्चेपिक्का ।
इंग्रेजीभाषामें	बोण्डकनट् Banducnut
लैटिन्भाषामें	सिसालपिनिया बाण्डुसेला Caesalpinia Bondacella
फारसीभाषामें	खाय, इबलीस ।
अरबीभाषामें .	अक्तमक्त ।

:कण्टकरंजगुणाः ।

कण्टयुक्तः करञ्जस्तु पाके च तुवरः कटुः ।
ग्राहकश्चोष्णवीर्य्यः स्यात्तिक्तः प्रोक्तश्च मेहहा ॥
कुष्ठाशोंव्रणवातानां कृमीणां नाशनः परः ।
पुष्पं तु चोष्णवीर्यं स्यात्तिक्तं वातकफापहम् ॥

अर्थ-करञ्जा-पाकके समय चरपरा, कषैला, ग्राही (मलरोधक) उष्णवीर्य्य, कडवा तथा प्रमेह, कोढ, बवासीर, घाव, वात और कृमिनाशक है । इसके फूल उष्णवीर्य्य, कडवे तथा वात और कफ-नाशक हैं ।

विवरण । कंटककरंज अर्थात् करञ्जवेके वृक्ष मालीलोग पुष्पवाटिकाओंकी वाडोंपर रक्षाके लिये लगादेते हैं । और जंगलोंमें भी हो जाते हैं । परन्तु वह पेड लताकी सदृश होतेहैं और परस्पर गठ जाते हैं । उन झाड झांकडोंमें कांटे अधिक होतेहैं पत्ते-सिरसकी समान डालीमें आमने सामने लगे होतेहैं । फल-कचौरीके समान लगतेहैं परन्तु कांटोंसे ऐसे परिपूर्ण होतेहैं ।कि, तिल रखनेको ठौर नहीं होता उसमेंसे चार पांच बडी कौडीकी बराबर दाने निकलते हैं । उनको करंजवा कहतेहैं ऊपरसे उनकी छाल राखके रंगके समान होतीहै भीतरसे सपेद गिरी निकलती है ।

गुञ्जानामानि ।

रक्तिका गुञ्जिका गुञ्जा काकजंघा शिखण्डिनी ।

कृष्णला काकिनी कक्षा कनीचिः काकणन्तिका ॥

अर्थ-रक्तिका, गुञ्जिका, गुञ्जा, काकजंघा, शिखंडिनी, कृष्णला, काकिनी, कक्षा, कनीची, काकणान्तिका(काकाचिंची, शांगुष्ठा, काकादनी, काकातिक्ता, काकतुण्डिका, काका, काकिणी, काश्वी, चूडामणी, सौम्या, शिखण्डी, अरुणा, ताम्रिका, शीतपाकी, उच्चटा, कृष्णचूडिका, रक्ता, काम्बोजी, भीलभूषणा, वन्या, श्यामलचूडा, काकचिञ्चिका, काकपीलु, काकणन्ती, काकवल्लरी, काकशिम्बी, रक्तला, वक्त्रशल्या, ध्वांक्षनखा, दुर्मोंघा, वायसादनी, चटकी, तुलाबीजा, अंगारवल्लरी)

श्वेतगुञ्जानामानि ।

द्वितीया श्वेतकाम्बोजी श्वेतगुञ्जा मिरिण्टिका ।
श्वेतोच्चटा श्वेतबीजा श्वेतपूर्वा च सा स्मृता ॥

अर्थ-श्वेतकाम्बोजी, श्वेतगुञ्जा, मिरिण्टिका, श्वेतोच्चटा, श्वेतबीजा, श्वेतरक्तिका और श्वेतगुञ्जिका इत्यादि (चक्रशल्या, चूडाला)

संस्कृतभाषामें	गुञ्जा, श्वेतगुञ्जा ।	
हिन्दीभाषामें	घूँघुची, चोंटली, चिरमिटी, सपेद घुँघची ।	
बंग[illegible]ामें	कुँच, सादाकुँच ।	
[illegible]ाषामें	गुंजा, को०-माडलवेल ।	
गु[illegible]भाषामें	चणोठी राती, चणोठीधोली ।	
कर्णाटकीभाषामें	गुलगुंजे, एरडु ।	
तैलङ्गीभाषामें	गुलुविंदे ।	
तामिलीभाषामें	करिन ।	
तु०	गोजी ।	
म०	कुन्त्रि गुंजा ।	
उत्	रुंज ।	
इंग्रेजीभाषामें	बीडट्री ।	Bead tree
लैटिन्भाषामें	एब्रस प्रिकेटोरियस् ।	Abrus Precatorius
फारसीभाषामें	चश्मेखरूस् ।	
अरबीभाषामें	हब सुर्ख, हब सुफेद ।	

गुञ्जागुणाः ।

गुञ्जाऽनुष्णा रसे तिक्ता कषाया कफपित्तहा ।

चक्षुष्या शुक्रला केश्या त्वच्या रुच्या बलप्रदा ॥
इन्द्रलुप्तहरी तीव्रा सविषा मदमोहकृत् ।
यक्षग्रहविषं हन्ति कण्डूकुष्ठव्रणान्क्रिमीन् ॥

अर्थ-घूँघची-अनुष्णा (गरम नहीं) कडवी, कषैली, कफघ्न, पित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, केशोंको सुंदरतादायक, त्वचाको हितकारक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, इन्द्रलुप्त (गंज) रोगनाशक, तीव्रविषयुक्त, मदकारक, मोहजनक तथा यक्ष, ग्रह, विष, कण्डू (खुजली) कोढ, घाव और कृमिरोगको नष्ट करेहै ।

द्विविधगुञ्जागुणाः ।

गुञ्जाद्वयं स्वादु तिक्तं बल्यं चोष्णं कषायकम् ।
त्वच्य केश्यं च रुच्यं च शीतं वृष्यं मतं बुधैः ॥
नेत्ररोगं विषं पित्तमिंद्रलुप्तं व्रणं कृमीन् ।
राक्षसग्रहपीडां च कण्डूं कुष्ठं कफं ज्वरम् ॥
मुखशीर्षरुजं वातं भ्रमं श्वासं तृषं तथा ।
मोहं मदं नाशयति बीजं वान्तिकरं मतम् ॥
शूलनाशकरं मूलं पर्णं च विषनाशकम् ।
श्वेतगुञ्जा विशेषेण वशीकरणकृन्मता ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारकी (लाल और सफेद) घूँघची, स्वादिष्ठ, कडवी, बलकारक, गरम, कषैली, त्वचाको उत्तम करनेवाली, केशोंको हितकारी, रुचिकारी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा नेत्ररोग, विष, पित्त, इन्द्रलुप्त, व्रण, कृमि, राक्षस, ग्रहपीडा, कण्डू, कुष्ठ, कफ, ज्वर, मुखरोग, शीर्षरोग, वात, भ्रम, श्वास, तृषा, मोह और मदका नाशकरे है । इसके बीज वान्तिकारक और शूलहारक हैं । इसकी जड और पत्ते विषनाशक हैं । सफेद घूँघची-विशेषकरके वशीकरण है ।

विवरण । घूँघचीकी वेल जंगलमें अधिकतासे होतीहै । पत्ते इमलीके समान होते हैं । और खानेमें मीठे लगतेहैं । फूल सेमकी समान होते हैं । और फली भी सेमकी सदृश गुच्छेवाली होतीहै । उन फलियोंमें घूँघची (चोंटली) होतीहैं इनमें लाल रंगकी चोंटलीके

मुखपै कुछ कालापन होताहै और सफेद रंगकी चोंटली सम्पूर्ण सफेद होतीहै । सफेद रंगकी चोंटलीके छुलके उतारकर उसका चून पीसले उस चूनको दूधमें मिलाकर रबडी करले वह रबडी धातुको बढाने वाली है । चोंटलीका तेल, त्वचाके रोगोंको हरनेवाला, केशोंको बढानेवाला और अनेकप्रकारके रोगोंको हरनेवाला है । व्यवहार-मूल और बीज । मात्रा १ रत्तीसे २॥ रत्तीपर्य्यन्त है ।

कपिकच्छूनामानि ।

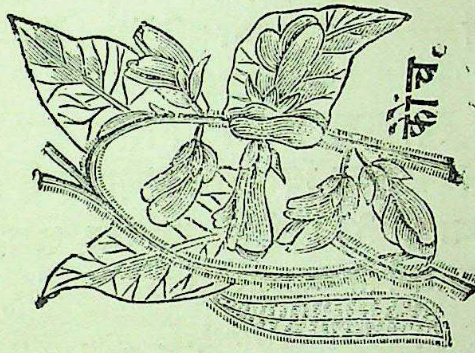

कपिकच्छूरात्मगुप्ता शुकशिम्बा कपिप्रभा ।
शुकपिण्डी स्वयंगुप्ता कण्डूरा शूकशिम्बिका ॥

अ[illegible]च्छू, आत्मगुप्ता, शुकशिम्बा, कपिप्रभा, शुकपिण्डी, स्व[illegible]डूरा, शूकशिम्बिका (जडा, अध्यण्डा, प्रावृषायणी, शुकाशिम्बि, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, मर्कटी, सद्यःशोथा, शूका, शूकवती, गात्रभंगा, कच्छूमती कच्छुरा, ऋषभी, कपिकच्छुरा, ऋषभजटा स्वगुप्ता, अजाह्वा, कण्डुरा, प्रावृषा, शूकशिम्बा, अजहा, वानरी, कपिकच्छू, कपीकच्छू, शूकपिण्डी, शूकपिण्डि, शूकशिम्बी, व्याघ्रा, सुगुप्ता, महर्षभी लाङ्गली, कुण्डली, चण्डा, दुरभिग्रहा, कपिरोमफला, गुप्ता दुःस्पर्शा, अजडा, प्रावृषेण्या, बदरी, गुरु, आर्षभी, शिम्बी, वराहिका, तीक्ष्णा, रोमालु, वनशूकरी, काशीरोमा, रोमवल्ली, व्यङ्गा, वृष्या)

संस्कृतभाषामें	कपिकच्छु ।
हिन्दीभाषामें	कौंछ, किवाँच ।
वंगभाषामें	आलकुशि, धुनारगुंड; दया, शुयाशिम्बी, ।
मराठी भाषामें	कुहिलीचें बीज ।
गुजरातीभाषामें	कउचों, भेरवनी शीगनां बी ।

कर्णाटकीभाषामें	नसुगुन्नी ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिल्लअडुगु ।
तामिलीभाषामें	पुनाइक, कालि ।
मद्रासीभाषामें	नायिकरुणा, चोरिवाल्लि ।
गोमंतकी	खवल्यावालि ।
वम्०	कुहिला ।
इंग्रेजीभाषामें	कौहेज् Cowdaqe
लैटिन्भाषामें	म्युक्युना प्रुरियेंस । Muctda Pruriens

कपिकच्छुगुणाः

कपिकच्छुः स्वादुरसा वृष्या वातक्षयापहा ।
शीतपित्तास्रहन्त्री च विकृता गुणनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कौंछ-स्वादु, वीर्य्यवर्द्धक तथा वात, क्षय, शीतपित्त, रुधिरविकार, और दुष्टव्रणको नष्ट करैहै ।

अन्यच्च ।

कपिकच्छुर्भृशं वृष्या मधुरा बृंहणी गुरुः ।
तिक्ता वातहरी बल्या कफपित्तास्रनाशिनी॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कौंछ-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा मधुर, बृहण ([illegible]जनक) भारी, कडवी, वातनाशक, बलकारक तथा कफ [illegible] त्त-नाशक है ।

कपिकच्छुबीजगुणाः ।

तद्बीजं वातशमनं स्मृतं वाजीकरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कौंछके बीज-वातनिवारक और वाजीकरण करनेवालेहैं ।

लघुकपिकच्छुगुणाः ।

कपिकच्छुर्लघुः शीता वृष्या पित्तानिलापहा ।
सिध्मातिसारहन्त्री च वंध्यानां चाप्यपत्यदा॥ (शो०नि०)

अर्थ-छोटीकौंछ-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त, वात, सिध्म और अतिसारको दूर करै है । तथा वंध्या स्त्रियोंको संतान उत्पन्न करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कच्छुरा तुवरा तिक्ता योनिदोषापहा मता ।
कुष्ठं व्रणं रक्तकोपं नाशयेदिति कीर्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ-छोटीकौंछ-कषैली, कडवी तथा योनिदोष, कोढ,व्रण और रक्तके रोगको दूर करेहै ।

विवरण कौंछकी बेल होतीहै, फूल सेमकी समान होतेहैं और फलियें भी सेमकी समान होतीहैं, और फलियोंके ऊपर सूक्ष्म रुँआ अधिक होताहै, इसका रुँआ शरीरमें लगनेसे अत्यन्त खुजली होनेलगतीहै । फलियोंके भीतरसे सेमके बीजोंकी समान बीज निकलतेहैं छोटी कौंछका क्षुप होताहै ।

मांसरोहिणीनामानि ।

मांसरोहिण्यतिरुहा वृत्ता चर्मकषा वसा ।
प्रहारवल्ली विकशा वीरवत्यपि कथ्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकषा, वसा,प्रहारवल्ली, विकशा, वीरवती, (अग्निरुहा, मांसरोही कशामांसी,महामांसी, मांसरोहा, रसायनी, सुलोमा, लोमकरणी, रोहिणी, चन्द्रवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	रोहिणी, मांसरोहिणी ।
हिन्दीभाषामें	मांसरोहिणी, रोहिणी ।
मराठीभाषामें	रोहिणी, मांसरोहिणी ।
गुजरातीभाषामें	रोण्य ।
कर्णाटकीभाषामें	रोहिणी, मांसरोहिणी ।
इंग्रेजीभाषामें	रेड्वुडट्री । Redwood
लैटिन्भाषामें	सोयमीडा फेब्रीफ्यू । Febribiga

मांसरोहिणीगुणाः

षमस्तुवरो

विषापहः ॥

विषाप

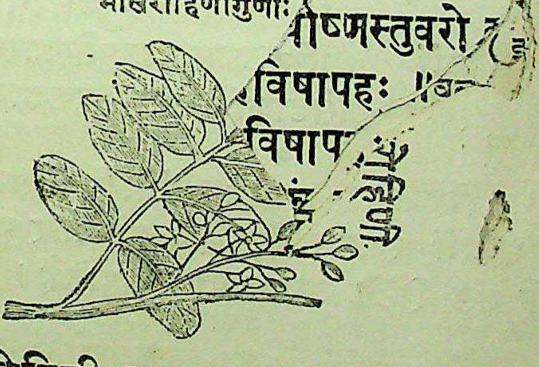

स्यान्मांसरोहिणी वृष्या सरा दोषत्रयापहा॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मांसरोहिणी-वीर्य्यवर्द्धक सारक (दस्तावर)और त्रिदोषनाशक है ।

अपिच ।

मांसरोहिणिका व्रण्या चोष्णा च रक्तपित्तजित् ।
सर्वां संग्रहणीं हंति नात्र कार्या विचारणा ॥ (नि०र०)

अर्थ-मांसरोहिणी-व्रणको हितकारी, उष्ण, तथा रक्तपित्त और सर्व प्रकारकी संग्रहणी दूर करैह ।

रोहिणीगुणाः ।

रोहिणी वातहृत्कासश्वासशोणितनाशिनी॥(अ.भा०नि०)

अर्थ-रोहिणी-वातनाशक, कासनिवारक, श्वासहारक और रुधिरविकारविनाशक है ।

द्विविधरोहिणी गुणाः ।

रोहिणीयुगलं शीतं कषायं कृमिनाशनम् ।
कण्ठशुद्धिकरं रुच्यं वातदोषनिषूदनम् ॥(रा०नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी रोहिणी-शीतल,कषैली, कृमिनाशक, कण्ठशोधक, रुचिकारक आर वातनिवारक हैं ।

विवरण। रोहिणीक वृक्ष जंगलमें अधिक होते हैं पत्ते खिरनीके समान होते हैं और एक २ डालीमें सात २ आते हैं, फल अत्यन्त बारीक होते हैं ।

धाँ,

चिल्लकगुणाः ।

ि तनिर्हारः श्लेष्मघ्नो धातुपुष्टिकृत् ।
उ वातशमनं स्मृतस्य फलं मत्स्यनिषूदनम् ॥

अर्थ-ंछके बीज-वातनि कफघ्न,धातुपुष्टिकारक,आग्नेय,(अत्यन्त गरम) और इ लघुका ी समान गुणकारक है तथा मछली-को नष्ट करैहै । शीता वृ

विवरण। चिह्लकके वृक्ष छोटे २ होतेहैं, विशेषकरके पर्वत अथवा पथरीली भूमिमें उत्पन्न होतेहैं। पत्ते-हरे और फूल नीले रंगके होते हैं। इसके फल-रीठेके समान गोल २ होतेहैं।

टंकारीगुणाः ।

टंकारी वातजित्तिक्ता श्लेष्मघ्नी दीपनी लघुः ।
शोथोदरव्यथाहंत्री हिता पीठविसर्पिणोः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-टंकारी-वातनाशक, कडवी, कफनाशक, अग्निको दीपन

हलकी तथा सूजन और उदररोगको हरनेवाली है । और पीठ तथा विसर्प रोगवालोंको हितकारी है ।

विवरण । टंकारीके क्षुप वन और जंगलमें अधिक होतेहैं । पत्ते लम्बे और गोल आतेहैं, फूल-लाल, गुलाबी, कईप्रकारके आतेहैं । फल-छोटे २ झुमकेदार लगते हैं ।

वेतसनामानि ।

वेतसो निचुलः प्रोक्तो वंजुलो दीर्घपत्रकः ।
कलनो मंजरीनम्रो वानीरो विदुलस्तथा ॥

अर्थ-वेतस, निचुल, वंजुल, दीर्घपत्रक, कलन, मञ्जरीनम्र, वानीर ,विदुल, (रथ, अभ्रपुष्प, शीत, वञ्जुलप्रिय,गन्धपुष्प,रथाभ्र, वेतसी, मञ्जरीनम्र, सुषेण, गन्धपुष्पक)

जलवेतसनामानि ।

निकुञ्चकः परिव्याधो नादेयो जलवेतसः ॥

अर्थ-निकुञ्चक, परिव्याध, नादेय, जलवेतस, (शाखालु, मेघपुष्प, तोयकाम, अभ्रपुष्पक, नदीकूलप्रिय, नीरप्रिय, सुशीतल, परिव्याध, व्याधिघात)

संस्कृतभाषामें	वेतस, जलवेतस ।
हिन्दीभाषामें	बेंत, जलबेंत ।
बंगलाभाषामें	वेत, वयसा, जलवेत ।
मराठीभाषामें	थोरवेत, वेत ।
गुजरातीभाषामें	नेतर ।
कर्णाटकीभाषामें	[illegible]
तैलिंगीभाषामें	फ तथा [illegible]
इंग्रेजीभाषामें	की स[illegible]
लाटन्भाषाम	बृहद् [illegible] us rotan
फारसीभाषामें	[illegible]
अरबीभाषामें	खलाफ

स्निग्धोष्णस्तुवरो
फग्रहविषापहः
काहिविषाप
शीादु श्लेष्म

वेतसगुणाः

वेतसः शीतलो दाहशोफार्शोयोनिरुग्व्रणान् ।
हन्ति वीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वेत-शीतल तथा शोफ (सूजन) अर्श(बवा[illegible]र) योनिरोग, व्रण (घाव) विसर्प, मूत्रकृच्छ्र,रक्तपित्त, अश्मरी ([illegible]थरी)कफ, और वातका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

वेतसः कटुकः स्वादुः शीतो भूतविनाशनः ।
वातप्रकोपनो रुच्यो विज्ञेयो दीपनः परः ॥
रक्तपित्तोद्भवं रोगं कुष्टं दोषं च नाशयेत् । (राजनिघण्टु)

अर्थ-वेत—चरपरा, स्वादिष्ठ, शीतल, भूतनाशक, वातको कुपित, करनेवाला, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाला तथा रक्तपित्त और कोढको दूर करे है ॥

अपिच ।

वेत्रस्तु तुवरः शीतस्तिक्तः कटु कफापहः ।
वातं पित्तं च दाहं च शोफार्शोश्मरिकृच्छ्रकान् ॥
विसर्पातिसतं रक्तं योनिरोगं तृषां जयेत् ।
रक्तदोषं व्रणं मेहं रक्तपित्तं च कुष्ठकम् ॥
विषं वै नाशयत्येवांकुरः क्षारो लघुः स्मृतः ।
कटूष्णः कफवातघ्नः पर्णं भेदकरं मतम् ॥
तुवरं लघु शीतं च तिक्तं कटु च वातलम् ।
क्तदोषं कफं पित्तं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥
त्रबीज तु तुवरं स्वाद्वम्लं रूक्षपित्तलम् ।
ं कफं चैव नाशयेदिति कीर्तितम् (नि० र०)

अर्थ- ात, शीतल, कड़वा, चरपरा, कफ, वात, पित्त, दाह, मूत्रातशमनं स्मृतस्य फलं मत्स्यविसर्प, अतिसार, रुधिर-विकार, इसके बीज—वातनि कफघ्न, धातुपुष्टिवाह, रक्तपित्त, कुष्ठ और विषका न श लघुकी समान गुणवारी, हलके, चरपरे, गरम तथा कफवातनाशक शीता वृ (दस्तावर), कषेले, हलके, शीतल, कड़वे, चरपरे, च छोटे २ होतेहैं, धिरविकार, कफ और पित्तको हरे । इसके बीज हैं । पत्ते-ह , रूखे, पित्तजनक तथा रक्तविकार और कफका ना वेतसका बडा वृक्ष होताहै, जो पहाडी नदियोंके किनारे या सजल भूमिमें उत्पन्न होता है । व्यूंस नामसे शिमलाप्रांतमें प्रसिद्ध है, इसी वृक्षकी दो छोटी जातियां मजनु और गुलमजनु नामसे प्रसिद्ध हैं जो पेड बडे २ बागोंमें होते हैं, वेत्र-वेत नामसे प्रसिद्ध है, जिसकी छडियें आदि होती हैं, और जिससे कुर्सी आदि बुने जाते हैं. यह दोनों अलगूर जातिकी चीजें हैं वेतस बडा वृक्ष होता है उसकी दो २ जातियें हैं। वेत्र और

अर्थ-खिरैंटी-कडवी, मधुर, पित्तातिसारनाशक, बलवीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और कफरोधाविशोधक है ।

अपिच ।

बला मूलत्वचश्चूर्णं पीतं सक्षीरशर्करम् ।
मूत्रातिसारं हरति दृष्टमेतन्न संशयः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-खिरैंटीकी जडकी छालका चूर्ण मिश्री मिले हुए
मिलाकर पीनेसे मूत्रातिसार रोग दूर होता है ।

बलाबीजगुणाः ।

विष,

बलाफलं स्वादु पाके कषायमधुरं रसे ।
हिमवीर्यं गुरुगुणं स्तम्भनं लेखनं भृशम् ॥
विबन्धाध्मानपवनकारिपित्तकफास्रनुत् । (वै० नि

वि०)

अर्थ-खिरैंटीका फल-पचनेमें स्वादिष्ट, कषेला, मधुर, शी
भारी, स्तम्भन, लेखन, विबन्धकारक, आध्मानजनक, वा त्रिदो-
तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करेहै । ाली है ।

महाबलानामानि ।

महाबला पीतपुष्पी सहदेवी च सा स्मृता ॥ प्र०)

अर्थ-महाबला, पीतपुष्पी, सहदेवी, (ज्येष्ठब से प्रमेह
केशरुहा, केसरिका, मृगादनी, पुष्पा, केशर ।
देवबला, सारिणी, पीतपुष्पा
वर्षपुष्पी, वाटचा, वा कटुस्तीक्ष्णः स्निग्धोष्णस्तुवरो, (
महागन्ध रेचनः कृमिशूलामशोफग्रहविषापहः ॥
विसर्पकफपित्तास्रमूषकाहिविषापहः । , शीतल,
तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेश्मघ्नं बृंहणं गुरु पित्तनाशक,
करेहै । मात्रा
बल्यं बिरेचनं वातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥

अर्थ-ढेरा-चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, कषेला, ह
तथा कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रहपीडा, विष, विसर्प, क
विकार, मूषेके विष और सांपके विषको दूर करे है (खरगन्धिनी,
शीतल, स्वादिष्ठ, कफनाशक, बृंहण (वाजीकरण) दया, महापत्रा,
दस्तावर तथा वात, पित्त, दाह, क्षय और रक्तविक ण्डा, महागन्धा,

महाबलागुणाः ।

हरेन्महाबला कृच्छ्रं भवेद्वातानुलोमनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सहदेई-मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है और वातानुलोमक है ।

अन्यच्च ।

महाबला तु मधुरा धातुवृद्धिकरी मता ।
बल्या वृष्यादिदोषघ्नी ज्वरहृद्रोगदाहनुत् ॥
वातार्शःशोफविषमज्वरान्मेहगणं तथा ।
बहुमूत्रं नाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् ॥

र्थ-सहदेई-मधुर, धातुवर्द्धक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, त्रिदोष-क तथा ज्वर, हृदयरोग, दाह, वादीकी बवासीर, सूजन, विषम सर्वप्रकारके प्रमेह और मूत्रातिसारनिवारक है ।

अतिबलानामानि ।

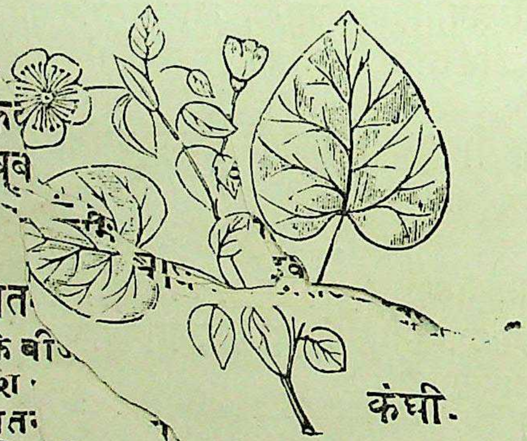

कंघी-

तिबला ल्या विकंकता वाट्यपुष्पिका घण्टा ।
शीतपुष्पा रिबला वृष्यगन्धिका दशधा ॥

ा, अतिबला, बल्या, विकंकता, वाट्यपुष्पिका, घंटा, ा, भूरिबला, वृष्यगन्धिका (कंकती, ऋषिप्रोक्ता,

अतिबला ।

कंगही, कंघी, ककहिया ।

विकंकती, आककई, कांसुली ।

कुर्वि
रक्तपि

अर्थ-
दाह, मूत्रात
विकार, इके बी
विषका न श
तथा कफवात
शीतल, कड़वे,
पित्तको हरे । इस
रक्तविकार और
पहाडी नदियोंके
नामसे शिमलाप्रांत
और गुलमजनु नाम
वेत नामसे प्रसिद्ध है,
कुर्सी आदि बु जा
हैं वेतस बडा वृक्ष

गुजरातीभाषामें	खपाट्य ।
कर्णाटकीभाषामें	मुल्लुदुर्रुवे ।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियनमेलो । Indian Malow
लैटिन्भाषामें	एब्युटिलनइंडिकम् । Abatilon indicum

अतिबलागुणाः ।

तिक्ता कटुश्चातिबला वातघ्नी कृमिनाशिनी ।
दाहतृष्णाविषच्छर्दिक्लेदोपशमनी परा ॥

अर्थ-कंघई-कडवी, चरपरी तथा वात, कृमि, दाह, तृषा, विष, वमन और क्लेदको शान्त करे है ।

अन्यच्च ।

बलिका मधुरा चाम्ला हिता दोषत्रयप्रणुत् ।
युक्त्या बुद्ध्या प्रयोक्तव्या ज्वरदाहविनाशिनी ॥ (ग० वि०)

अर्थ-कंघी (ककहिया) मधुर, अम्ल (खट्टी), हितकारक, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ युक्तिपूर्वक देनेसे ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

हन्याद्तिबला मेहं पयसा सितया सह ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कंघीको दूध और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे प्रमेह रोगका नाश होता है ।

त्रिविधबलागुणाः ।

बलात्रयं स्वादु शीतं स्निग्धं वृष्यं बलप्रदम् ।
आयुष्यं वातपित्तघ्नं ग्राहि मूत्रग्रहापहम् ॥ ([illegible]

अर्थ-खिरैंटी, सहदेई और कंघी यह तीनों बला स्वादिष्ट, शीतल, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, अवस्थास्थापक, वातपित्तनाशक, मलरोधक, मूत्ररोगनिवारक और ग्रहकी पीडाको दूर करैहै । मात्रा २ मासेकी ।

नागबलानामानि ।

गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका ॥

अर्थ-गांगेरुकी, नागबला, झषा, ह्रस्वगवेधुका (खरगन्धिनी, गोरक्षतण्डुला, भद्रौदनी, खरगन्धा, चतुःपला, महोदया, महापत्रा, महाशाखा, महाफला, विश्वदेवा, आनिष्टा, देवदण्डा, महागन्धा, घण्टा, खरवल्लरिका, विश्वदेवी)

संस्कृतभाषामें	नागबला ।
हिन्दीभाषामें	गंगेरन, गुलसकरी ।
बंगलाभाषामें	गोरख, चाकुले, ,पानसांडा ।
मराठीभाषामें	गांगेटी, गांडे धामण ।
कोंकणीभाषामें	तुपकडी ।
कर्णाटकीभाषामें	बट्टगरुके ।
लैटि०	सिडास्फमोझा । Siaa spamosa

अस्या गुणाः ।

मधुराम्ला नागबला कषायोष्णा गुरुस्तथा ।
कटूष्णा कफवातघ्नी व्रणपित्तविनाशिनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ-गंगेरन-मधुर, अम्ल, कषेली, गरम, भारी, चरपरी, कफवातनाशक, व्रणनिवारक और पित्तहारक है ।

अन्यच्च ।

तद्वन्नागबलाऽत्यर्थं कृच्छ्रे क्षीणक्षते हिता ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गंगेरनके गुणभी खिरैंटीकी समान हैं, विशेषकरके मूत्रकृच्छ्र, क्षत और क्षीणरोगमें हितकारी है ।

अन्यच्च ।

ज्ञेया नागबला चाम्ला मधुरा तुवरा गुरुः ।
कट्वत्युष्णा व्रणं वातं पित्तं कुष्ठं च नाशयेत् ॥
कण्डूं चा नाशयत्येवं मुनिभिः परिकीर्तिताः । (निघण्टुर०)

अर्थ-गंगेरन-अम्ल, मधुर, कषेली, भारी, चरपरी, गरम तथा व्रण, वात, पित्त, कुष्ठ और कण्डूको हरनेवाली है ।

अस्याः फलगुणाः ।

गांगेरुकफलं रूक्षं कषायं स्वादु वातलम् ।
लेखनं स्तम्भनं शीतं विबन्धाध्मानकृद्गुरु ॥ (शो० नि०)

अर्थ-गुलशकरीके फल-रूखे, कषेले, स्वादु, बादी, लेखन, स्तम्भन, शीतल, विबन्ध और आध्मानकारक तथा भारी हैं ।

बृहन्नागबलागुणाः ।

बृहन्नागबला चाम्ला मधुरा च त्रिदोषहा ।

दाहज्वरहरा प्रोक्ता पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः (नि० र०)

अर्थ-बडीगंगेरन-अम्ल, मधुर, त्रिदोषनाशक, तथा दाह और ज्वर निवारक है।

चतुर्विधबलागुणाः।

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत्।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥

अर्थ-चारोंप्रकारकी खिरैंटी (खिरैंटी, सहदेई, कंघी, गंगेरन) शीतल, मधुर. बलवर्द्धक, कान्तिकारक, स्निग्ध, मलरोधक, तथा वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है। चारोंप्रकारकी बला कालकाके समीप टकसालमें भी होतीहै.प्रायःबागोमेंभी होती है आश्विनमासमें यह सब स्थानोंमें विशेष मिलती है.

विवरण। बला अनेक प्रकारकी होती है जैसे खिरैंटी, कंघी, गंगेरन, गंगेटी, सहदेई, दण्डोत्पल इत्यादि। इनमें खिरैंटीके भी कई भेद हैं। एक प्रकारकी खिरैंटी वह होतीहै कि, जिसके वृक्ष डेढहाथ ऊंचे होते हैं। इसके पत्ते-तुलसीके पत्तोंकी समान होतेहैं। फूल पीला आता है। फल छोटे २ आते हैं और इसमें बहुतसे बीज निकलतेहैं। इसके पत्तोंका शाक बनाते हैं।

२ दूसरे प्रकारकी खिरैंटीका वृक्ष पुरुषकी बराबर ऊंचा होता है। इसके पत्ते-अनीदार होते हैं। फूल-सफेद रंगके आते हैं, फल बारीक और गोल आते हैं। उनमेंसे [illegible] निकलता है उनका बलाबीज अथवा बीजवंद कहते हैं।

३ कंघीके वृक्षभी दोढाई हाथ ऊंचे होतेहैं। फूल-[illegible], फल-चक्रकी समान और गोल होते हैं। उनको प्रायः बालक छापाकरते हैं। इसके बीजभी खिरैंटीकी समान होते हैं।

४ गंगेरनका वृक्ष सहदेईके वृक्षकी सदृश होता है किन्तु, इसक पत्ते-कुछ अधिक मोटे और दो अनिवाले होते हैं। फूल-गुलाबी रंगका होताहै, फलभी सहदेईसे बडे होते हैं, और फलके सूखनेपर उसके अपने आप पांच भाग होजाते हैं।

५ सहदेईके वृक्ष छोटे और बडे दो प्रकारके होते हैं, इसके पत्ते पतले और खरखरे होते हैं। इसका फल, फूल पीले रंगका आताहै, फल छोटे २ गोल आते हैं और इसमें कांटे होते हैं।

लक्ष्मणानामानि।

लक्ष्मणा पुत्रजननी नागपत्री च पुत्रदा।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रजननी, नागपुत्री, पुत्रदा (पुत्रकन्दा, पुच्छदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपुत्री, तूलिनी, मञ्जिका, अस्रबिन्दुच्छदा)

लक्ष्मणा गुणाः ।

लक्ष्मणाकन्दकः शीतो मधुरश्च रसायनः ।
गर्भप्रदश्चवृष्यश्च त्रिदोषव्रणजातहा॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-शीतल, मधुर, रसायन, गर्भप्रद, वीर्य्यवर्द्धक त्रिदोषनाशक और व्रणविनाशक है ।

विवरण । लक्ष्मणा औषधि बहुत कम मिलती है । यह कहीं २ पर्वत इत्यादिमें उत्पन्न होतीहैं । इसके पत्ते-चौंडे होते हैं उनपर लाल २ चन्दनकी समान बूँदेसी होती हैं । इसके नीचे सफेद रंगका कंद निकलता है ।

स्वर्णवल्लीनामानि ।

स्वर्णवल्ली रक्तफला काकायुः काकवल्लरी ।

अर्थ-स्वर्णवल्ली, रक्तफला, काकायु, काकवल्लरी (हरणीपीतिका) हर

अस्य गुणाः ।

स्वर्णवल्ली शिरःपीडां त्रिदोषान्हन्ति दुग्धदा ॥

अर्थ-स्वर्णवल्ली शिरपीडा और त्रिदोषनाशक है, तथा स्तनोंमें दूध बढानेवाली है ।

विवरण । स्वर्णवल्ली अर्थात् सोनवेल प्रायः पर्वत, बाग, और वनोंमें आ बा होतीहै । पत्ते-गोल अनीदार होते हैं, फल-लाल लगते हैं इस लताका सम्पूर्ण पीला होताहै इसी कारण इसका नाम स्वर्णलताहै ।

हिन्दीभाषामें	स्वर्णवल्ली ।
मराठीभाशामें	सोनवेल ।
गुजरातीभाषामें	स्वर्णवल्ली ।

कर्पासीनामानि ।

कार्पासी तुण्डिकेरी च समुद्रान्ता च कथ्यते ॥

अर्थ-कार्पासी, तुण्डिकेरी, समुद्रान्ता, (बदरा, पटद, वादरा, सूत्रपुष्पा, बदरी, कार्पासिका, कर्पासी, कर्पाससारिणी, चव्या, तुला, गुड, तुण्डकेरिका मरूद्भवा, पिचु, वादर, कार्पास, पटलन, छादन)

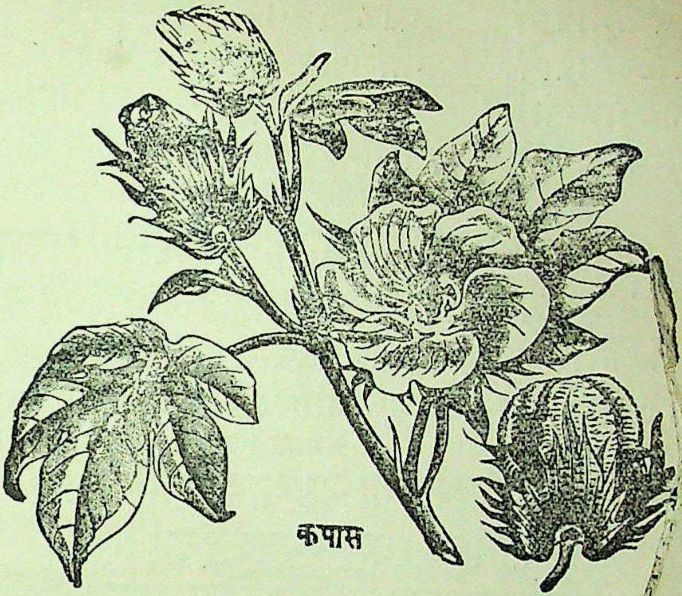

कपास

वनकार्पासनामानि ।

त्रिपर्णा वनकार्पासी भारद्वाजी यशस्विनी ॥

अर्थ-त्रिपर्णा, वनकार्पासी भारद्वाजी, यशस्विनी (व रोजिनी, बहुमूर्ति, वनकार्पासिका, वनजा, वनोद्भवा, वनोद्भवकार्पासि, अरण्यकार्पासिका, अरण्यकार्पासी)

कालाञ्जनीनामानि ।

कालाञ्जनी च कृष्णाभा कृष्णाञ्जनी शिलाञ्जनी ॥

अर्थ-कालाञ्जनी, कृष्णाभा, कृष्णाञ्जनी, शिलाञ्जनी (अञ्जनी, रचनी, नीलाञ्जनी, काली)

संस्कृतभाषामें	कार्पासी, वनकार्पासी, कालाञ्जनी ।
हिन्दीभाषामें	कपास, वनकपास, नरमावाडी, कापच्छी, [विनोले] कालीकपास, [रुई]
वंगभाषामें	कार्पास, वनकार्पास, कालिकर्पासकिनी [तुला]
मराठीभाषामें	कापशी, कापूस, सरकी, काळी कापशी :।
गुजरातीभाषामें	वणरु कपास, हिरवणी कपाशिया ।
कर्णाटकीभाषामें	हत्ति काडहत्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	पत्तिचेट्टु ।

इंग्रेजीभाषामें	काटन्प्लांट ।	Cottenn plant
लैटिन्भाषामें	गोसिपीयं अरपेश्यं ।	Gossypium heurpcem
फारसीभाषामें	कुतुन, पुंबेदना ।	
अरबीभाषामें	कुतन, हबुल कुतन ।	

कार्पासीगुणाः ।

कार्पासी मधुरा शीता स्तन्या पित्तकफापहा ।
तृष्णादाहभ्रमभ्रान्तिमूर्च्छाहृद्बलकारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कपास-मधुर, शीतल, स्तनोंमें दूध बढानेवाली, बलकारक तथा पित्त, कफ, तृषा, दाह, भ्रम, भ्रांति और मूर्च्छाको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

कार्पासकी लघुश्चोष्णा मधुरा वातनाशिनी ।
तत्पलाशं समीरघ्नं रक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम् ॥
तत्कर्णपिडिकानादपूयास्रावविनाशनम् ।
तद्बीजं स्तन्यदं वृष्यं स्निग्धं कफहरं गुरु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कपास-हलकी, गरम, मधुर, और वातविनाशक है। कपासके पत्ते-वातविनाशक, रक्तवर्द्धक, मूत्रको बढानेवाले, तथा कानकी पीडा, कर्णनाद और कानसे राधके बहनेको दूर करनेवाले हैं । कपासके बीज-स्तनोंमें दूध बढानेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, कफकारी और भारी हैं ।

वनकार्पासीगुणाः ।

भारद्वाजी हिमा रुच्या व्रणशस्त्रक्षतापहा ॥

अर्थ-वनकपास-शीतल, रुचिकारक, तथा घाव और शस्त्रके घावको दूर करे है ।

कालांजनीगुणाः ।

कालाञ्जनी कटूष्णा स्यादम्लामकृमिशोधिनी ।
अपानावर्त्तशमनी जठरामयहारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कालीकपास-चर्परी, गरम, खट्टी, आमनाशक, कृमिशोधक, अपानावर्त्तशामनी, और उदररोगको हरनेवाली है ।

विवरण । कपासके पेड सब हिन्दोस्तानमें बहुत होते हैं । इसकी बडी खेती होतीहै, इसका बहुत बडा व्यापार होताहै, उत्तम २

वस्त्रादिक कपासहीके बनते हैं। कपासके फूल पीले और बीचमें लाल होतेहैं । उसमें गूलरकी समान तिकोन फूल आते हैं । उसके भीतर कपास निकलतीहै, वह कपास चरखीमें ओटी जातीहै उसमें-से जो बीज निकलतेहैं उनको विनौल कहते हैं । इसके पत्तेमें पांच अनी होतीहैं जैसे एरण्डक पत्तोंमें । परन्तु उनसे बहुत छोटे होतेहैं। एक काली कपास होतीहै जिसके फूल काले और बिनौले भी काले होतेहैं । एक नरयावाडी होतीहै जिसके पेड बडे २ होते हैं फल फूल बारह महीने आते हैं, रुई नरम होतीहै, बिनौले हरे हो[illegible] हैं, यह सब कपासहीके भेद हैं ।

वंशनामानि ।

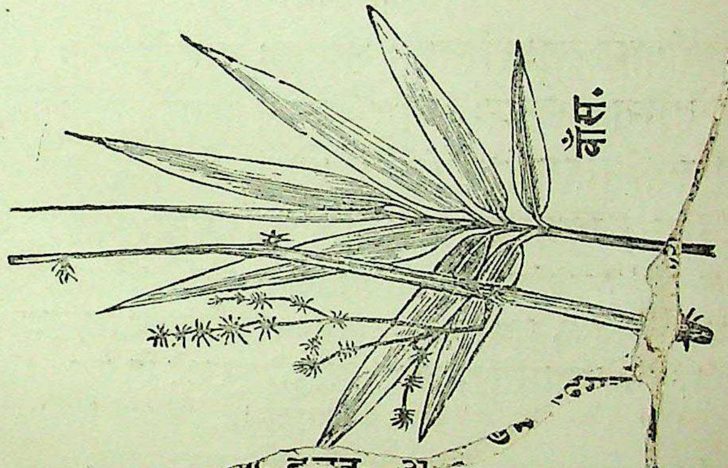

वंशत्वक्सारकर्म्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ।
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥

अर्थ–वंश, त्वक्सार, कर्म्मार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन, (किलाटी, पुष्पघातक, बृहत्तृण, किष्कुपर्वा, वन्य, सुपर्वा, तृणकेतुक, कण्टालु, कण्टकी, महाबल, दृढग्रन्थि, दृढपत्र, धनुर्द्रुम, धातुष्य, दृढकाण्ड, कीचक, कुक्षिरन्ध्र, षट्पदालय, कमठ, मृत्युबीज, वादनीय, फलान्तक तृणकेतु, पर्वयोनि, सुपर्वन्, तृणराजक, बहुपर्वन्, दुरारुह)

संस्कृतभाषामें	वंश ।
हिन्दीभाषामें	बाँस ।
बंगभाषामें	बाँस ।

मराठीभाषामें	वेळू, पोकळवेळु, भरींव वेळू ।
गुजरातीभाषामें	बांश ।
कर्णाटकीभाषामें	यरडुबिदीरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कचिकई यदुरु, वेन्नेमुक, वेन्नुर्शाणि,वेत्तु।
तामिलीभाषामें	मनगिल ।
वर्म०	माण्डगय ।
इंग्लिशभाषामें	बेंबूकेन । Bamboo cane
लैटिन् भाषामें	वेंबुसाबलगेरिस् Bambusa Vulgares
फारसीभाषामें	कसब ।

वंशगुणाः ।

वंशोम्लस्तुवरस्तिक्तः शीतलः सारको मतः ।
वस्तिशुद्धिकरः स्वादुश्छेदनो भेदको मतः ॥
कफं रक्तरुजं पित्तं कुष्ठं शोथं व्रणं तथा ॥
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शान् दाहं चैव विनाशयेत् ॥ (नि०र०)

बाँस-खट्टा, कषेला, कडवा,शीतल,सारक, वस्तिशोधक, स्वादिष्ठ, छेदक भेदक, तथा कफ,रक्तविकार, पित्त, कोढ,सूजन, घाव, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, बवासीर, और दाहको दूरकरे है ।

अस्य करीरगुणाः ।

ततः करीरः कटुः पाके रसे रूक्षो गुरुः सरः ।
कषायः कफकृत्स्वादुर्विदाही वातपित्तलः ॥(भा०प्र०)

अर्थ-बाँसके अङ्कुर-पचनेमें चरपरे,रुखे,भारी सारक (दस्तावर), कषेले, कफकारक, स्वादु, दाहजनक और वातपित्तकारक हैं ।

अपिच ।

करीरं कटु तिक्ताम्लं कषायं लघु शीतलम् ।
पित्तास्रदाहकृच्छ्रघ्नं रुचिकृत्पर्वनिर्गुणम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बांसके अंकुर-चरपरे,कडवे, खट्टे कषेले, हलके,शीतल तथा रक्तपित्त,दाह और मूत्रकृच्छ्र रोगको हरेहैं। इसके पर्व (गांठें निर्गुण)हैं।

वंशयवगुणाः ।

वेणोर्यवस्तु तुवरो रूक्षश्च मधुरो मतः ।

पुष्टिकृद्वीर्यकृद्बल्यः कफपित्तहरो मतः ।
विषप्रमेहशमनो मुनिभिः परिकीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-बाँसके चावल-कषेले, मधुर, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, तथा कफ, पित्त, विष और प्रमेहको दूर करेहैं ।

अपि च ।

तद्यवास्तु सरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
वातपित्तकरा उष्णा बद्धमूत्राः कफापहाः ॥ (भा० ०)

अर्थ-बाँसके चावल-सारक,(दस्तावर), रूखे, कषेले, प नेमें कटु, वातपित्तकारक, गरम, तथा मूत्ररोध और कफनाशक हैं ।

द्विविधवंशगुणाः ।

वंशौ त्वम्लौ कषायौ च किञ्चित्तिक्तौ सुशीतलौ ।
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शःपित्तदाहास्रनाशनौ ॥
विशेषाद्रन्ध्रवंशस्तु दीपनोऽजीर्णनाशनः ।
रुचिकृत्पाचनो हृद्यः शूलघ्नो गुल्मनाशनः॥(राज निघण्टु)

अर्थ-दोनोंप्रकारके बाँस-(बाँस और रन्ध्रबांस) रू , कषेले, किञ्चित् कडवे, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र,प्रमेह, बवासीर पित्त,दाह और रक्तविकारोंको हरे हैं । रन्ध्रवंश-विशेषकरके आं को दीपन करनेवाला, अजीर्णनाशक, रुचिकारक,पाचक, हृदयको हितकारी, तथा शूल और गुल्मनाशक है।

विवरण । बाँस वन [illegible] और पर्वताकी तलेटियोंमें उत्पन्न होते हैं, फूल सफेद आता है, बाँसमें वंशलोचन (निकलता है कभी २ बाँसपै जौ आते हैं उन जौओंमेंसे चावल निकलते हैं उनका भात करते हैं ।

नलनामानि ।

नलः पोटगलः शून्यमध्यश्च धमनस्तथा ॥

अर्थ-नल, पोटगल, शून्यमध्य, धमन (नाल, ड, कुक्षिरन्ध्र, कीचक, दार्घवंश, बिभीषण, छिद्रान्त, मृदुपत्र रापत्र, मृदूच्छद, लालवंश, नट, नटी, नड, नर्त्तक, मृत्युपुष्प) त

देवनलनामानि । स्फुलि

अन्यो महानलो वन्यो देवनालो ः ।
स्थूलनालः स्थूलदण्डः सुरनालः तथा । ॥

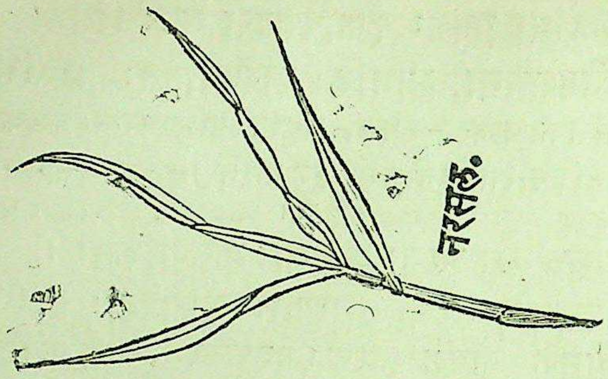

अर्थ-महानल, वन्य, देवनाल, नलोत्तम, स्थूलनाल, स्थूलदण्ड सुरनाल, सुरद्रुम ।

संस्कृतभाषामें	नल, महानल ।
हिन्दीभाषामें	नरसल, नल, बडा नरसल ।
वंगभाषामें	नल, बडनल ।
मराठीभाषामें	नळ, देवनळ, थोरदेवनळ ।
गुजरातीभाषामें	नाली ।
कर्णाटकीभाषामें	देवनाल, कर्हरियदेवनाल ।
तैलिङ्गभाषामें	भुंगुण्डुरु, किक्केशगाड्डि ।
इंग्रेजीभाषामें	इण्डियन रोबेका । Indian robaca
लैटिन्भाषामें	[illegible], निकोटिया, निफोलिया । Lobelia Nicotia na olia
कच्छीभाषामें	आंची ।

नलगुणाः ।

नलस्तु मधुरस्तिक्तः कषायः कफरक्तजित् ।
उष्णो हृद्बस्तियोन्यार्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नल-मधुर, कडवा, कषेला, कफनाशक, रक्तविकारविनाशक, गरम, तदाहहृदयरोग, वास्तिकी पीडा, योनिरोग, दाह, पित्त और विसर्पका अंकुर: करे है ।

मूत्रकृ अन्यच्च ।

ज्ञेयो विभी ीतो रुच्यश्च तुवरो मधुः ।
वीर्य्यवृद्धिकृतु तुवरो दीपनो मूत्रशोधनः ॥

विसर्पकृच्छ्रदाहास्रदोषपित्तकफान् हरेत् ।
हृद्रोगवस्तिशूलौ च योनिरुग्रक्तपित्तहा ॥ (नि० र०)

अर्थ-नल (नरसल)-शीतल, रुचिकारक,कषेला, मधुर,वीर्य्यवर्द्धक, कडवा, अग्निको दीपन करनेवाला, मूत्रशोधक,तथा विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, दाह, रुधिराविन्या, पित्त, कफ, हृदयरोग, वस्तिशूल, योनिरोग, और रक्तपित्त[illegible] करे है)

वनलगुणाः ।

देवनलोऽतिमधुरो वृष्य ईषत्कषायकः ।
नलाधिकश्च वीर्य्ये तु शस्यते रसकर्मणि ॥

अर्थ-बडा नरसल-अत्यन्त मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किञ्चित्कषेला, और नलकी अपेक्षा वीर्य्यमें अधिक है तथा रसकर्ममें उत्तम है ।

विवरण-नरसल अर्थात् नल बांसके समान जलाशयके निकट जंगलोंमें उत्पन्न होतेहैं । पत्ते-ईखके पत्तोंके समान होतेहैं इसकी आकृतिभी ईखकेही सदृश होतीहै । जिसप्रकार गन्नेके ऊपर अगोला होताहै उसीप्रकार उसके ऊपरभी होताहै परन्तु ऊंचावमें ईखसे तिगुना ऊंचा होताहै यह भीतरसे पोला होताहै ।

भद्रमुञ्जनामानि ।

भद्रमुञ्जः शरो बाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टनः ।
मुञ्जो मुंजातको बाणः स्थूलदर्भः सुमेखलः ॥

अर्थ-भद्रमुञ्ज,, शर, बाण, तेजन, और चक्षुवेष्टन यह नाम रामशरके हैं । मुञ्ज, मुञ्जात, बाण, स्थूलदर्भ, सुमेखल (इक्षुकाण्ड, मौञ्जी, तृणाख्य, ब्रह्मण्य, तेजनाह्वय, वानीरक, मुञ्जनक, शीरी, दर्भाह्वय, दुर्मूल, दृढतृण, दृढमूल, बहुप्रज, रञ्जन, शक्रभंग) यह नाम मूँज अर्थात् सेंटेके हैं ।

संस्कृतभाषामें	भद्रमुञ्ज, मुञ्ज ।
हिन्दीभाषामें	रामसर, मूंज ।
मराठीभाषामें	मोळ ।
बंगभाषामें	मुंच, रामशर, सरपत ।
तैलिङ्गीभाषामें	मुंजगड्डि अनिस्फुलिङ्ग ।

द्विविधमुञ्जगुणाः ।

मुञ्जद्वयन्तु मधुरं तुवरं शिशिरं तथा ।

दाहतृष्णाविसर्पास्रमूत्रवस्त्यक्षिरोगजित् ॥
दोषत्रयहरं वृष्यं मखलासूपयुज्यत ।(भा० प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी मूँज (मुञ्ज और रामशर) मधुर, कषेली, शीतल तथा दाह, तृषा, विसर्प, रुधिरविकार, मूत्ररोग, नेत्ररोग और त्रिदोषनाशक हैं । तथा वीर्यव हैं ।

अन्यच्च मु

मुञ्जस्तु मधुरः शीतः कप दोषजित् ।
ग्रहरक्षासु दीक्षासु पावनो भूतनाशनः ॥

अर्थ-मूंज-मधुर, शीतल, कफपित्तजदोषनाशक, ग्रहरक्षा और दीक्षामें पवित्र तथा भूतनाशक है ।

विवरण-मुंज और भद्रमुंजके झुण्डभी नलके समान जलाशयके समीप या रेतेमें बहुत होतेहैं इसको वीणभी कहतेहैं,यह वास्तवमें वीरणशब्द था अब बिगडकर वीण होगया इसके वकलको मूंज कहतेहैं । फूल फल लम्बे २ सफेद रंगके होतेहैं ।

काशनामानि ।

काशः सुकाण्डः कासेक्षुर्नादेयो नीरजस्तथा ।
काकेक्षुर्वायसक्षुश्च सस्यादिक्षुरसः शिरिः ॥

अर्थ-काश, सुकाण्ड, कासेक्षु, नादेय, नीरज, काकेक्षु, वायसेक्षु, इक्षुरस, शिरि, (इक्षुगन्धा, पोटगल, काश, कर्म्ममूल, इक्षुराम्लिका, इषीका, अक्षवाल, चामरपुष्प, चामरपुष्पक, काशो, कांशा, काण्डेक्षु, अमरपुष्पक , काशक, वनहासक, इक्षारि, इक्षुर, इक्षुकाण्ड, शारद, सितपुष्पक, दर्भपत्रक, लेखन, काण्ड, काण्डक, कच्छलकारक, दर्भपत्र)

संस्कृतभाषामें	काश ।
हिन्दीभाषामें	कांस ।
वंगभाषामें	केशेयास ।
मराठीभाषामें	कसई, लघुकसई, थोर कसई ।
कोकणीभाषामें	कसाड ।
गुजरातीभाषामें	कांसडो ।
कर्णाटकीभाषामें	किरीयकागलु, काडलु, काजलु ।

तैलिङ्गीभाषामें	रेलु ।
लैटिन्भाषामें	कौक्स वारबेटा ।Covbarbata

काशगुणाः ।

काशस्तु तर्पणः शीतो गौल्यो रुचिकरो मतः ।
बलकृन्मधुरो वृष्यस्तिक्तः पाके मधुः स्मृतः ॥
सरः स्निग्धः पित्तदाहमूत्रकृच्छ्रक्षयापहः ।
मूत्राश्मरीं रक्तदोषं रक्तपित्तं क्षतक्षयम् ॥
पित्तरोगं नाशयतीत्येवं पूर्वैर्निवेदितम् ।

अर्थ-कास-तृप्तिकारक, शीतल, गौल्य, रुचिकारी, बलकारक, मधुर, वीर्यवर्द्धक, कडवा, पचनेमेंभी मधुर, सर (दस्तावर), स्निग्ध तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र, क्षय,मूत्राश्मरी, रुधिरविकार,रक्तपित्त, क्षतक्षय और पित्तरोगको दूर करे है ।

विवरण । कास-नदियोंके किनारे कीचडमें उत्पन्न होतीहै, पत्ते वाभरके समान,बरन् एकप्रकारकी देशी वाभरभी होतीहै,फूल सफेद अधिक शोभायमान मञ्जरीके समान आतेहैं ।

गुन्द्रनामानि।

गुन्द्रः पटेरको रच्छः शृङ्गवेराभमूलकः ॥

अर्थ-गुन्द्र, पटेरक, रच्छ, शृङ्गवेराभमूलक, ।

संस्कृतभाषामें	गुन्द्र ।
हिन्दीभाषामें	गोंदपटेर ।
मराठीभाषाम	पाणगवत,लह्वा ।
गुजरातीभाषामें	पान्यघाडाडी ।
इंग्रेजीभाषामें	एलिफंटग्रास । Elaphant grass
लैटिन् भाषामें	टाइफा एलिफण्टाइना ।Typha Elephantina

अस्य गुणाः ।

गुन्द्रः कषायो मधुरः शिशिरः पित्तरक्तजित् ।
स्तन्यशुक्ररजोमूत्रशोधनो मूत्रकृच्छ्रहृत् ॥

अर्थ-पटेर-कषेली,मधुर,शीतल,रक्तपित्तनाशक, स्तनोंके दूधको तथा शुक्र,रज, मूत्रको शुद्ध करेहै। एवं मूत्रकृच्छ्ररोगविनाशक है ।

विवरण। गुंद्रपटेर-अर्थात् गोंदपटेर पानीमें होतीहै, पत्ते-बहुत लम्बे चार पांच फुटके और एक इंच चौंडे होतेहैं, पत्तेमें पत्ते निकलतेहैं पत्ते मोटे बहुत होतेहैं, वरन् बीचसे चिरजातेहैं, उनके ऊपर एक बाल बाजरेके समान होतीहै, बाल ऊपर एक पतलीसी लकडी होती है, । इनकी चटाई इत्यादि अनेक पदार्थ बनते हैं।

एरकानामानि ।

एरका गुन्द्रमूला च शिम्बिगुन्द्रा शरीति च ॥

अर्थ-एरका, गुन्द्रमूला, शिम्बि, गुन्द्रा, शरी यह नाम हैं।

हिन्दीभाषामें	मोथीतृण ।
बंगलाभाषामें	होगला ।
मराठीभाषामें	एरका, पाणलह्वाळा ।
गुजरातीभाषामें	एरका ।

अस्य गुणाः ।

एरका शिशिरा वृष्या चक्षुष्या वातकोपनी ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ॥

अर्थ-एरका-(मोथीतृण) शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, वातको कुपित करनेवाली, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह और रक्तपित्त-नाशक है।

विवरण। मोथीतृण-जलमें उत्पन्न होताहै, पत्ते-बडे२लम्बे होते हैं

कुशनामानि ।

कुशो दर्भस्तथा बर्हिः सूच्यग्रो यज्ञभूषणः ।
ततोऽन्यो दीर्घपत्रः स्यात्क्षुरपत्रस्तथैव च ॥

अर्थ-कुश, दर्भ, बर्हि, सूच्यग्र, यज्ञभूषण (कुरव, पवित्र, याज्ञिक, ह्रस्व गर्भ, कुतुप) यह नाम कुशाके हैं। दीर्घपत्र और क्षुरपत्र यह दूसरे प्रकारके कुशाके हैं।

संस्कृतभाषामें	कुश, दर्भ ।
हिन्दीभाषामें	कुशा, दाभ, डाभ ।
वंगभाषामें	कुश ।
मराठीभाषामें	लघुदर्भ, थोरदर्भ
कोंकणीभाषामें	दाभ
गुजरातीभाषामें	दरभ, डाभ ।

कर्णाटकीभाषामें	विलीप बुदकुाशि उह्नाकुाशि ।
तैलिङ्गीभाषामें	कुशदूर्वालु दुभ ।
लैटिन्भाषामें	एंड्रोपोगन नारडे इडिस् । Audropogou noadaides

द्विविधदर्भगुणाः ।

दर्भद्वयं त्रिदोषघ्नं मधुरं तुवरं हिमम् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक्प्रदरास्रजित्॥(भा० प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी दाभ त्रिदोषनाशक, मधुर, कषेली, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, वस्तिरोग, प्रदररोग और रक्तविकारको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दर्भस्तु मधुरः शीतो गर्भस्थापनकारकः ।
पित्तदाहश्रमरजोदोषं चैव विनाशयेत् ॥ (ध० नि०)

अर्थ-डाभ-मधुर, शीतल, गर्भस्थापक, तथा पित्त, दाह, श्रम, और रजोदोषनाशक है ।

अपिच ।

दर्भः शीतो रुचिकरो मधुरस्तुवरो मतः ।
स्निग्धः कफकरः शुक्ररक्तशुद्धिकरो मतः ॥
कफं रक्तं रक्तपित्तं पित्तं श्वासं तृषां तथा ।
मूत्रकृच्छ्रं वस्तिशूलं कामलां प्रदरं तथा ॥
रक्तदोषं विसर्पं च छर्दिं मूर्च्छां तथाश्मरीम् ।
नाशयेदिति च प्रोक्तो मूलं तस्य तु शीतलम् ॥
रुच्यं च मधुरं रक्तज्वरतृट्श्वासकामलाम् ।
पित्तं च नाशयत्येवं मुनिभिः परिकीर्त्तितम्॥(नि० रा०)

अर्थ-कुशा तथा दाभ-शीतल, रुचिकारक, मधुर, कषेली, स्निग्ध, कफकारक, शुक्र और रक्तशोधक तथा कफ, रक्त, रक्तपित्त, पित्त, श्वास, तृषा, मूत्रकृच्छ्र, वस्तिशूल, कामला, प्रदर, रक्तविकार, विसर्प, वमन, मूर्च्छा और अश्मरी (पथरी) रोगको नष्ट करे है । इसकी जड शीतल, रुचिकारक, मधुर, रक्त, ज्वर, तृषा, श्वास, कामला और पित्तको दूर करे है ।

दर्भौ द्वौ च गुणैस्तुल्यौ तथापि च सितोऽधिकः ।
यदि श्वेतकुशाभावस्त्वपरं योजयेद्भिषक् ॥

अर्थ-यद्यपि कुशा और दाभमें गुण समानही है तथापि कुशा अधिक गुणवाली है। जो कुशा न मिले तो उसके अभावमें दाभ लेनी।

विवरण। कुशा और दर्भ-दोनों एकही जातिके तृण हैं यह रेतली भूमि। भूडों और जंगलोंमें उत्पन्न होतीहै। पत्ते-इसके कासहीके सम होते हैं।

कत्तृणनामानि।

कत्तृणं रौहिषं देवजग्धं सौगन्धिकं तथा।
भूतिकं ध्यामपौरञ्च श्यामकं धूपगन्धिकम् ॥

अर्थ-कत्तृण, रोहिष, देवजग्ध (क) सौगन्धिक, भूतिक, ध्याम, पौर, श्यामक, धूपगन्धिक, (सुगन्ध तृणशीत, सुशीतल, रोहिषतृण, कातृण, भूति, ध्यामक, पूतिमुद्गल)

संस्कृतभाषामें	कत्तृण, रौहिषतृण।
हिन्दीभाषामें	रोहिष सोंधिया, गंधेजघास, मिरचियागन्ध, रसघास।
बंगभाषामें	रामकर्पूर।
मराठीभाषामें	रोहिष, सुगन्धरोहिषतृण।
कर्णाटकीभाषामें	किरुगंजणी।
तैलिङ्गीभाषामें	कामंचिगड्डि, तुरिकूर।
औत्कलीभाषामें	पालखरि।
फारसीभाषामें	खवालममून।
अरबीभाषामें	अजस्वर।

कत्तृणगुणाः।

रौहिषं तुवरं तिक्तं कटु पाके व्यपोहति।
हृत्कण्ठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कत्तृण-कषैले, कडवे, पचनेमें चरपरे तथा हृदयरोग, कण्ठरोग, रक्तपित्त, शूल, खांसी, कफ और ज्वरको हरे हैं।

अन्यच्च।

कत्तृणं दशनामाढ्यं कटुतिक्तकफापहम्।
शस्त्रशल्यादिदोषघ्नं बालग्रहविनाशनम् ॥

अर्थ-कत्तृण-(रोहिषतृण) चरपरे, कडवे,कफनाशक तथा शस्त्रशल्यादि दोष और बालग्रहनिवारक हैं ।

दीर्घरोहिषनामानि ।

अन्यद्रोहिषकं दीर्घं दृढकाण्डो दृढच्छदम् ।
यज्ञेष्टं दीर्घनालश्च तिक्तसारश्च कुत्सितम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिषक, दृढकाण्ड, दृढच्छद, यज्ञेष्ट, दीर्घनाल, तिक्तसार, कुत्सित ।

अस्य गुणाः ।

दीर्घरोहिषकं तिक्तं कटूष्णं कफवातजित् ।
भूतग्रहविषघ्नंच व्रणक्षतविरोपणम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिषतृण-कडवे, चरपरे, गरम तथा कफवात, भूत, ग्रह आर विषनाशक हैं । तथा व्रण और क्षतको भरनेवाले हैं ।

विवरण । रोहिष तृण-लम्बे और सुगन्धित मालवे और राजपूतानक जंगलमें बहुत होते हैं । पत्ते-छोटे २ और हरे हरे अत्यन्त शोभायमान होतेहैं, इसके सर्वांगमें बहुत सुगन्धि आतीहै । दूसरे रोहिषतृणके कुछ बडे क्षुप होते हैं । इसका तेल निकलता है,उसमें बहुत सुगन्धि होतीहै ।

भूतृणनामानि ।

गुह्यबीजन्तु भूतीकं सुगन्धं जम्बुकप्रियम् ।
भूतृणन्तु भवेच्छत्रा मालातृणकमित्यपि ॥

अर्थ-गुह्यबीज, भूतीक, सुगन्ध,जम्बुकप्रिय, भूतृण, छत्रा,मालातृणक (रोहिष, भूति, भूतिक, कुटुम्बक, मालातृण, समालम्बी, छत्र, अहिच्छत्रक, गुच्छाल, पुंस्त्वविग्रह, बधिर, अतिगन्ध, शृङ्गरोह, गुण्डरोह, करेन्दुक, गोच्छालक, पूतिगन्ध, बधिरध्वनिबोधन)

संस्कृतभाषामें	भूतृण ।
हिन्दीभाषामें	भूतृण ।
गुजरातीभाषामें	भूत्रण ।
कर्णाटकीभाषामें	परिमलदगंजीणं ।
लैटिन्भाषामें	एँड्रोपोगन, साईट्रेटस । Andropogan Citratus

अस्य गुणाः ।

भूतृणं कटुकं तिक्तं तीक्ष्णोष्णं रेचनं लघु ।

विदाहि दीपनं रूक्षमनेत्र्यं मुखशोधनम् ॥
अवृष्यं बहुविट्कं च पित्तरक्तप्रदूषणम् । (भा० प्र०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, तीक्ष्ण, गरम, दस्तावर, हलके, दाहजनक, अग्निको दीपन करनेवाले, रूखे, नेत्रोंको अहितकारी, मुखशोधक, अवृष्य, बहुमलवर्धक और रक्तपित्तको दूषित करे हैं ।

अन्यच्च ।

भूतृणं कटुतिक्तं च वातसन्तापनाशनम् ।
हन्ति भूतग्रहावेशान्विषदोषांश्च दारुणान्॥ (राजनि०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, वातसन्तापनाशक, भूत, ग्रह आवेशानिवारक और विषके दारुण विकारोंको हरे है ।

अपिच ।

भूतृणः कटुतिक्तोष्णः पुंस्त्वघ्नोव वक्त्रशोधनः ।
कृमिकासानिलश्वासश्लेष्मदद्रुविनाशनः ॥ (शो०नि०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, गरम, पुरुषत्वनाशक, मुखशोधक, तथा कृमि, खांसी, वात, श्वास, कफ,और दादोंको दूरकरे हैं ।

सुगन्धभूतृणनामानि ।

रौहिषं सुगन्धभूतृणं भूतृणं गोमयप्रियम् ॥

अर्थ-रौहिष, सुगन्धभूतृण, भूतृण, गोमयप्रिय, (गन्धवीरण, सुरस, सुरभि, सुगन्धि, मुखवास ।

हिन्दीभाषामें	सुगन्धभूतृण ।
मराठीभाषामें	पुदनी गवत, सुगन्ध गवत ।
कर्णाटकीभाषामें	सुगन्ध तृण ।
गुजरातीभाषामें	सुगन्धतृण ।

अस्य गुणाः ।

गन्धतृणं सुगन्धिः स्यादीषत्तिक्तं रसायनम् ।
स्निग्धं मधुरशीतं च कफपित्तभ्रमापहम् ॥

अर्थ-सुगन्धभूतृण-सुगन्धित, किंचित् कडवे, रसायन, स्निग्ध, मधुर, शीतल तथा कफ, पित्त और भ्रमनाशक है ।

विवरण-भूतृण-जङ्गल और बागादि स्थानोंमें अधिक उत्पन्न होते हैं, इसमें गुच्छेसे लगतेहैं और बीज बहुत छोटे २ होते हैं ।

बल्वजातृणनामानि ।

बल्वजा दृढपत्री च तृणेक्षुस्तृणबल्वजा ।
मौञ्जीपत्रा दृढतृणा पानीयाश्रा दृढक्षुरा ॥

अर्थ-बल्वजा, दृढपत्री, तृणेक्षु, तृणबल्वजा, मौञ्जीपत्रा, दृढतृणा, पानीयाश्रा, दृढक्षुरा ।

अस्याः गुणाः ।

बल्वजा मधुरा शीता पित्तदाहतृषापहा ।
वातप्रकोपनी रुच्या कंठशुद्धिकरी परा ॥

अर्थ-बल्वजातृण--मधुर, शीतल, पित्तनिवारक, दाहकारक, तृषानाशक, वातको कुपित करनेवाले, रुचिकारक, और कण्ठकी शुद्धि करे है ।

ऊषलतृणनामानि ।

ऊषलो भूरिपत्रश्च सुतृणश्च तृणोत्तमः ॥

अर्थ-ऊषल, भूरिपत्र, सुतृण और तृणोत्तम ।

अस्य: गुणाः ।

ऊषलो बलदो रुच्यः पशूनां सर्वदा हितः ॥

अर्थ-ऊषलतृण-बलकारक, रुचिकारी और पशुओंको सर्वदा हितकारी है ।

इक्षुदर्भानामानि ।

इक्षुदर्भा सुदर्भा च पत्रालुस्तृणपत्रिका ॥

अर्थ-इक्षुदर्भा, सुदर्भा, पत्रालु, तृणपत्रिका ।

अस्याः गुणाः ।

इक्षुदर्भा सुमधुरा स्निग्धा ईषत्कषायिका ।
कफपित्तहरा रुच्या लघुः सन्तर्पणी स्मृता ॥

अर्थ-इक्षुदर्भ-मधुर, स्निग्ध, किञ्चित्कषेला, कफपित्तनाशक, रुचिकारक, हलका और सन्तर्पण है ।

गोमूत्रिकातृणनामानि ।

गोमूत्रिका रक्ततृणा क्षेत्रजा कृष्णभूमिजा ।

अर्थ-गोमूत्रिका, रक्ततृणा, क्षेत्रजा, कृष्णभूमिजा ।

अस्या गुणाः ।

गोमूत्रिका तु मधुरा वृष्या गोदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-गोमूत्रतृण-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और गौओंके दूध बढानेवाला है।

शिलिपकातृणनामानि।

शिलिपका शिलिपनी शीता क्षेत्रजा च मृदुच्छदा ॥

अर्थ-शिलिपका, शिलिपनी, शीता, क्षेत्रजा, मृदुच्छदा।

अस्याः गुणाः।

शिलिपका मधुरा शीता तद्बीजं बलवृष्यदम् ॥

अर्थ-शिलिपकातृण-मधुर और शीतल है। इसके बीज, बल और वीर्य्यवर्द्धक हैं।

निःश्रेणिकानामानि।

निःश्रेणिका श्रेणिबला नीरसा वनवल्लरी ॥

अर्थ-निःश्रेणिका, श्रेणिबला, नीरसा, वनवल्लरी।

अस्याः गुणाः।

निःश्रेणिका नीरसोष्णा पशूनामबलप्रदा ॥

अर्थ-निःश्रेणिकातृण-नीरस अर्थात् रसहीन, गरम, और पशुओंको निर्बलतादायक है।

जडीतृणनामानि।

गरमोटिका सुनीला च जरडी च जलाश्रया।

अर्थ-गरमोटिका, सुनीला, जरडी, जलाश्रया।

अस्या गुणाः।

जरडी मधुरा शीता सारिणी दाहहारिणी।
रक्तदोषहरा रुच्या पशूनां दुग्धदायिनी ॥

अर्थ-जरडीतृण-मधुर शीतल, सारक, दाहहारक, रक्तविकारविनाशक, रुचिकारक तथा पशुओंके दूध बढानेवाले हैं।

मज्जरतृणनामानि।

मज्जरः पवनः प्रोक्तः सुतृणः स्निग्धपत्रकः ॥

अर्थ-मज्जर, पवन, सुतृण, स्निग्धपत्रक, (मृदुग्रन्थि)।

अस्य गुणाः।

मृदुग्रन्थिश्च मधुरो धेनुदुग्धकरश्च सः ॥

अर्थ-मज्जरतृण-मधुर, और गौओंके दूध बढानेवाले हैं।

तृणाख्यनामानि।

तृणाख्यं च पर्वतृणं पत्राढ्यं च मृगप्रियम् ॥

अर्थ–तृणाख्य, पर्वतृण, पत्राढ्य, मृगप्रिय।

अस्य गुणाः।

बलपुष्टिकरं रुच्यं पशूनां सर्वदा हितम् ॥

अर्थ–पर्वतृण–बल, पुष्टि और रुचिको उत्पन्न करनेवाला है तथा पशुओंको सर्वदा हितकारी है।

वंशपत्रीतृणनामानि।

वंशपत्री वंशदला जीरिका जीर्णपत्रिका ॥

अर्थ–वंशपत्री, वंशदला, जीरिका, जीर्णपत्रिका।

अस्या गुणाः।

वंशपत्री सुमधुरा शिशिरा पित्तनाशिनी।
रक्तदोषहरी रुच्या पशूनां दुग्धदायिनी ॥

अर्थ–वंशपत्रीतृण–मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रक्तदोषनिवारक, रुचिकारक और पशुओंके स्तनोंमें दूध बढानेवाले हैं।

मन्थानकतृणनामानि।

मन्थानकस्तु हरितो दृढमूलस्तृणाधिपः ॥

अर्थ–मन्थानक, हरित, दृढमूल, तृणाधिप।

मन्थानकतृणगुणाः।

स्निग्धो धेनुप्रियो दोग्धा मधुरो बहुवीर्य्यकः ॥

अर्थ–मन्थानकतृण–स्निग्ध, गायोंको प्रिय, दुग्धदायक, मधुर और बहुवीर्य्यदायक है।

पल्लिवाहतृणनामगुणाश्च।

पल्लिवाहो दीर्घतृणः सुपत्रस्ताम्रवर्णकः।
अदृढः शाकपत्रादिपशूनामबलप्रदः ॥

अर्थ–पल्लिवाह–दीर्घतृण, सुपत्र, ताम्रवर्ण, अदृढ, शाकपत्रादि पल्लिवाह तृण–पशुओंको निर्बल करनेवाले हैं।

लवणतृणनामानि।

लवणतृणं लोणतृणं तृणाम्लं पटुतृणं च अम्लकाण्डं च ॥

अर्थ–लवणतृण, लोणतृण, तृणाम्ल, पटुतृण, अम्लकाण्ड।

अस्य गुणाः ।

पटुतृणकं क्षाराम्लं कषायस्तन्यवृद्धिकम् ॥

अर्थ-लवणतृण-खारी, अम्ल, कषेला, और दूधनाशक है ।

पण्यन्धातृणनामानि ।

पण्यन्धा कंगुणीपत्रा पण्यध्वा पणधा च सा ॥

अर्थ-पण्यन्धा, कंगुणीपत्रा, पण्यध्वा, पणधा ।

अस्या गुणाः ।

पण्यन्धा समवीर्य्या स्यात्तिक्ता क्षारा च सारिणी
तत्कालशस्त्रघातस्य व्रणसंरोपणी परा ॥
दीर्घा मध्या तथा ह्रस्वा पण्यन्धा त्रिविधा स्मृता ।
रसवीर्य्यविपाकेषु मध्यमा गुणदायिका ॥

अर्थ-पण्यन्धातृण-समवीर्य्य, तिक्त, क्षार और सारक है तथा तत्काल शस्त्रके घातसे उत्पन्न हुए घावको भरे है पण्यन्धा तृण दीर्घ मध्य और ह्रस्व इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं । इन तीनोंमें रस वीर्य्य और विपाकमें मध्यम गुणदायक है ।

गुण्डतृणनामानि ।

गुडः सुकांडो गुण्डः स्यादीर्घकाण्डस्त्रिकोणकः ।
छत्रगुच्छोऽसिपत्रश्च नीलपत्रस्त्रिधारकः ॥

अर्थ-गुड, सुकाण्ड, गुण्ड, दीर्घकाण्ड, त्रिकोणक, छत्रगुच्छ, असिपत्र-नीलपत्र, त्रिधारक ।

वृत्तगुण्डनामानि ।

वृत्तगुण्डो परो वृत्तो दीर्घनालो जलाश्रयः ।
तत्र स्थूलो लघुश्चान्यस्त्रिधाऽयं द्वादशाभिधः ॥

अर्थ-वृत्तगुण्ड, दीर्घनाल, जलाशय । यह लघु और स्थूल इनभेदोंसे दो प्रकारके हैं ।

अस्य गुणाः ।

गुण्डस्तु मधुरः शीतः कफपित्तातिसारहा ।
दाहरक्तहरस्तस्य मन्ये स्थूलांतराधिका ॥

अर्थ-गुण्डतृण-मधुर,शीतल, तथा कफ, पित्त, अतिसार, दाह और रुधिरविकारको दूर करेहै । इन दोनोंमें स्थूल गुण्डतृण अधिक गुणवाला है ।

चणिकातृणनामानि ।

चणिका दुग्धदा गौल्या सुनाला क्षेत्रजा हिमा ॥

अर्थ-चणिका, दुग्धा, गौल्या, सुनाला, क्षेत्रजा, हिमा ।

अस्या गुणाः ।

वृष्या बल्यातिमधुरा बीजैः पशुहिता तृणैः ॥

अर्थ-इसके बीज-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अत्यन्त मधुर औ तृण, पशुओंको हितकारी हैं ।

गुण्डासिनीतृणनामानि ।

गुण्डासिनी तु गुण्डाला गुडाला गुच्छमूलिका चिपिटा ।
तृणपत्री जलवासा पृथुला सुविष्टरा च नवाह्वा ॥

अर्थ-गुण्डासिनी, गुण्डाला, गुडाला, गुच्छमूलिका, चिपिटा, तृणपत्री, जलवासा, पृथुला, सुविष्टरा ।

अस्या गुणाः ।

गुण्डासिनी कटुः स्वादुः पित्तदाहश्रमापहा ।
तिक्तोष्णा च पशुघ्नी च व्रणदोषनिबर्हणी ॥

अर्थ-गुण्डासिनीतृण-चरपरे,स्वादु,पित्तनाशक दाहको दूर करने वाले श्रमको हरनेवाले, कडवे, गरम, पशुनाशक और व्रणदोषनिवारक है ।

शूलीतृणनामानि ।

शूली तु शूलपत्री स्यादशाखा धूम्रमूलिका ।
जलाश्रया मृदुलता पिच्छिला महिषीप्रिया ॥

अर्थ-शूली,शूलपत्री, अशाखा, धूम्रमूलिका,जलाश्रया, मृदुलता पिच्छिला, महिषीप्रिया ।

अस्या गुणाः ।

शूली तु पिच्छिला कोष्णा गुरुर्गौल्या बलप्रदा ।
पित्तदाहहरा रुच्या दुग्धवृद्धिप्रदायिका ॥(नि० रा०)

अर्थ-शूलीतृण-पिच्छिल, गरम, भारी, गौल्य, बलकारक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, रुचिकारक और दुग्धवर्द्धक है ।

नीलदूर्वानामानि ।

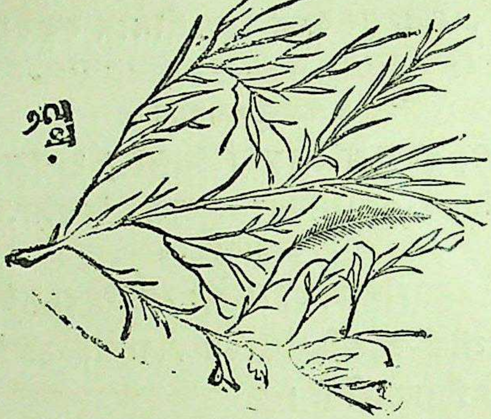

नीलदूर्वा स्मृता शष्पं शाद्वलं हारितं तथा ।
शतपर्वा शीतकुम्भी शीतला वामिनी तथा ॥

अर्थ-नीलदूर्वा, शष्प, शाद्वल, हरित, शतपर्वा, शीतकुम्भी, शीतला, वामिनी (हरिता, शाम्भवी, श्यामा, शीता, शतपर्विका, अमृता, धूर्ता, शतग्रन्थि, अनुवल्लिका, शिवा, शिवेष्टा, मङ्गला, जया, भूतहन्त्री, शतमूला, महौषधी, विजया, गौरी, शान्ता, रुहा, अनन्ता, भार्गवी, सहस्रवीर्य्या, शतवल्ली, गुणा, नन्दा, महावरी, हरसालिका, तिक्तपर्वा, दुर्मरा, बहुवीर्य्या, हरिता, हरिताली, कच्छरुहा, अमरी, सौम्या, शीतली, अमरा, आसितालता)

श्वेतदूर्वानामानि ।

श्वेतदूर्वा शतवीर्य्या गण्डाली शकुलाक्षकः ।
गोलोमी सितदूर्वा च शतपर्वा सितालता ॥

अर्थ-श्वेतदूर्वा, शतवीर्य्या, गण्डाली, शकुलाक्षक, गोलोमी, सितदूर्वा, शतपर्वा, सितालता, (सिता, श्वेता, सिताख्या, चण्डा, भद्रा, भार्गवी, दुर्मरा, गौरी, विघ्नेशानकान्ता, अनन्ता, विद्या, श्वेतकाण्डा, प्रचण्डा, सहस्रवीर्य्या, सहस्रकाण्डा, सहस्रपर्वा, सुरवल्लभा, शुभा, सुपर्वा, सितच्छदा, स्वच्छा, कच्छान्तरुहा)

गण्डदूर्वानामानि ।

गण्डदूर्वा तु गण्डाली तीव्रा मत्स्याक्षिकापि च ।
जलस्था ग्रन्थिपर्णी च बाल्ही च शकुलादनी ॥

अर्थ–गण्डदूर्वा, गण्डाली, तीव्रा, मत्स्याक्षिका, जलस्था, ग्रन्थिपर्णी, बाह्ली, शकुलादनी, (अतितीव्रा, मत्स्याली, ग्रन्थिला, ग्रन्थिपर्णी, वारुणी, मतिनेत्रा, श्यामग्रन्थि, सूचिपत्रा, श्यामकाण्डा, कलाया, शकुलाक्षी, चित्रा, और शकुलाक्षक)

संस्कृतभाषामें	दूर्वा, नीलदूर्वा, श्वेतदूर्वा, गण्डदूर्वा ।
हिन्दीभाषामें	दूब, हरीदूब, सफेददूब, गांडरदूब ।
वंगभाषामें	दूर्वा, नीलदूर्वा, सादादूर्वा, गेंटेदूर्वा ।
मराठीभाषामें	दूर्वा, नील श्वेत हरळी, गण्डूरदूर्वा, गाठीहरळ।
गुजरातीभाषामें	ध्रो, लीलीध्रो, धोलीध्रो, गण्डूरध्रो ।
कर्णाटकीभाषामें	हसुगरुके, बिलिपकरुके, मीनगत्ते, होन्नगुंदे ।
तैलिङ्गीभाषामें	दूर्वालु, गरिकेगड्डि, गरिककसुवु, पोन्नगंडी
तामिलीभाषामें	अरुगम् पुल्लु ।
औत्कलीभाषामें	दुबू ।
इंग्रेजीभाषामें	क्रीपिंग् साई नोडन् । Creeping Cynodon
लैटिन्भाषामें	साई नोडन् डेक् टिलन् । Cynodon Dactylon

सदारीनामानि ।

दूर्वा कषाया मधुरा हारी स्यादिक्षुगन्तृषारोचकवान्तिहन्त्री ।
सदाहमूर्च्छाग्रहभूतारवल्ली क्षीरशुक्ला पश्रसनतृप्तिदा च।(रा.नि.)

दूब-कषेली, मधुर, इक्षुसंज्ञा, इक्षुवल्ली, तृषा, अरुचि, वान्ति, दाह, मूर्च्छा, ग्रहकी पीडा, भूतबाधा, कफ और श्रमनाशक है तथा तृप्तिदायक है ।

नीलदूर्वागुणाः ।

दूर्वा तु रक्तपित्तघ्नी कण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥ (रा० व०)

अर्थ–हरीदूब-रक्तपित्त, खुजली और त्वचाके रोगोंको हरे है ।

अन्यच्च ।

नीलदूर्वा तु मधुरा तिक्ता शीता रुचिप्रदा ।
संजीवनी च तुवरा रक्तशुद्धिकरी मता ॥
रक्तपित्तातिसारघ्नी ज्वरपित्तवमीहरा ।
कफं रक्तरुजं तृष्णां विसर्पं च विनाशयेत् ॥
दाहं च चर्मदोषं च नाशयेदिति कीर्त्तिता ।

अर्थ-हरीदूब-मधुर, कडवी, शीतल, रुचिकारक, संजीवन, कषेली, रक्तशोधक तथा रक्तपित्त, अतिसार, ज्वर, पित्त, वमन, कफ, रक्तरोग, तृषा, विसर्प, दाद और त्वचाके विकारोंको दूर करे है।

श्वेतदूर्वागुणाः।

श्वेता तु दूर्वा मधुरा रुच्या च तुवरा मता।
तिक्तातिशीतला वान्तिविसर्पतृट्कफापहा ॥
पित्तदाहामातिसृतिरक्तपित्तहरी मता।
कासं च नाशयत्येवं पूर्ववैद्यैर्निरूपिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेद दूब-मधुर, रुचिकारक, कषेली, कडवी, शीतल तथा वमन, विसर्प, तृषा, कफ, पित्त, दाह, आमातिसार, रक्तपित्त और खाँसीको दूर करे है।

गण्डदूर्वागुणाः।

गण्डदूर्वा तु मधुरा वातपित्तज्वरापहा।
शिशिरा द्वंद्वदोषघ्नी भ्रमतृष्णाश्रमापहा ॥ (राजनि०)

अर्थ-गाडरदूब-मधुर, [illegible] पित्त, ज्वर, द्वन्द्वदोष भ्रम, तृषा और श्रमको ह[illegible]

गण्डदूर्वा हिमा लो[illegible] लघुः।
तिक्ता कषाया मधुरा वातकृत्कटुपाकिनी ॥
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा (भावप्रकाश)

अर्थ-गाडरदूब शीतल, लोहको पिघलानेवाली, मलको रोकनेवाली, हलकी, कडवी, कषेली, मधुर, वातकारक, पचनेमें चरपरी तथा-दाह, तृषा, कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ, पित्त और ज्वरको दूर करनेवाली है।

विवरण। नीलीदूब जङ्गलमें बहुत होती है भूमिहोमें दूबकी बेलसी चलती है और गांठपर जडभी पकडती जातीहै, उसको दूबके नाल कहतेहैं, ऊपरको नहीं उठती और पृथ्वीपरही छत्तेसी फैल जाती है। पत्ते नालोंपर छोटे २ और लम्बे २ लगे होते हैं और इसके नाल लम्बे २ फैलते चले जाते हैं विशेषकरके दूब पशुओंके भक्षणके लिये है, इसकारण यह सम्पूर्ण भारतवर्षमें प्रसिद्ध है।

२ सपेद दूबभी नीलीदूब अर्थात हरीदूबहीकी जगह कहीं कहीं कोई छत्ता होजाता है वह बहुत सफेद होती है, परन्तु सब आकृति हरीही दूबकेसी होतीहै ।

३ गांडर एकप्रकारकी घास होती है इसके क्षुप दो दो तीन २ फुट ऊँचे होजातेहैं जलाशयके स्थानमें कोसोंतक लगातार इसके खेत होते हैं इसके तृण कांसके समान लम्बे होतेहैं, घरोंके छप्प आदि उसीके तृणोंसे छाये जातेहैं, इसीकी जड खस होतीहै ।

विदारीनामानि ।

विदारी वृष्यकन्दा च क्षीरशुक्ला सिता स्मृता ।
इक्षुगन्धा त्रिपर्णा च शुक्ला गजवाजिप्रिया ॥

अर्थ-विदारी, वृष्यकन्दा, क्षीरशुक्ला, सिता, इक्षुगन्धा, त्रिपर्णा, शुक्ला, गजवाजिप्रिया, (क्रोष्ट्री, विदारिका, स्वादुकन्दा, शृगालिका, वृष्यवर्द्धिनी, विडाली, वृष्यवल्लिका, भूकूष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वाजिवल्लभा, गन्धफला, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, वृक्षवल्ली और भूमिकूष्माण्ड)

क्षीरविदारीनामानि ।

अन्या क्षीरविदारी स्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्ल्यपि ।
क्षीरकन्दा क्षीरवल्ली क्षीरशुक्ला पयस्विनी ॥

अर्थ-क्षीरविदारी, इक्षुगंधा, इक्षुवल्ली, क्षीरकंदा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, (महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका, ऋष्यगन्धिका, ऋष्यगन्धा, इक्षुवल्लरी, क्षीरकन्द, क्षीरलता, पयःकन्दा, पयोलता, पयोविदारिका और दुग्धविदारी ।

संस्कृतभाषामें	विदारी, क्षीरविदारी ।
हिन्दीभाषामें	बिलैयाकन्द,बिलाई कन्द, विदारीकन्द, बिलारी कन्द, दूधबिदारी ।
वंगभाषामें	भूंईकुमडा (ड), श्वेतभूंईकुमड,कालभूंईकुमड।
मराठीभाषामें	भूईकोहळा, बेन्द्रीचा वेल ।
गुजरातीभाषामें	फगवेलानो कन्द, भोंकोलु ।
कर्णाटकीभाषामें	नेलकुंबल ।
तैलिङ्गीभाषामें	नेलगुंबुड, मट्टमलतिग ।
औत्कलिभाषामें	भूइंकरवारु ।

लैटिन्‌भाषामें आईपोमिया डिजिटेटा । Fprmoeadijitata
प्युरेरियाट्यूबरोझा Purania tuberosa
बटाटास पेनिक्युलेटा Batataspeniculata

विदारीकन्दगुणाः ।

विदारी मधुरा शीता गुरुः स्निग्धास्रपित्तजित् ।
ज्ञेया च कफकृत्पुष्टिबल्या वीर्यविवर्धिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्यवर्धक है ।

अन्यच्च ।

विदारी मधुरा स्निग्धा बृंहणी स्तन्यशुक्रदा ।
शीता स्वर्य्या मूत्रला च जीवनी बलवर्णदा ॥
गुरुः पित्तास्रपवनदाहान् हन्ति रसायनी ।(भावप्रकाश)

अर्थ-विदारीकन्द, मधुर, स्निग्ध, बृंहण, स्तनोंमें दूध बढानेवाला, वीर्यजनक, शीतल, स्वरको शुद्ध करनेवाला, मूत्रवर्धक, संजीवन, बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, रसायन, भारी तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाला है ।

अपि च ।

विदारी वातपित्तघ्नी वृष्या बल्या रसायनी ॥ (रा०व०)

अर्थ-विदारीकन्द-वातपित्तनाशक, वीर्यवर्द्धक, बलकारक और रसायन है ।

अन्यच्च ।

विदारी मधुरा शीता वृष्या स्निग्धा च पौष्टिका ।
धातुवृद्धिकरी बल्या कफदुग्धप्रदा गुरुः ॥
रसायनी मूत्रला च स्वर्य्या रूक्षा च गर्भदा ।
पित्तवातहरा स्वादू रक्तरुग्दाहवान्तिहा ॥
ज्ञेया ह्येते गुणाः कन्दे पुष्पं वृष्यञ्च शीतलम् ।
रसे पाके च मधुरं कफकृद्वातलं गुरु ॥
पित्तनाशकरं ह्येतदुक्तं मुनिवरैः पुरा ।

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, पुष्टिकारक,

वर्धक, बलकारक, कफजनक, दुग्धवर्धक, भारी, रसायन, मूत्रजनक, स्वरको सुन्दर करनेवाला, रूखा, गर्भदायक, स्वादिष्ठ तथा पित्त, वात, रुधिरविकार, दाह और वमनको दूर करे है। इसके फूल-वीर्यवर्धक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक, वातवर्धक, भारी और पित्तनाशक हैं।

क्षीरविदारीगुणाः।

प्रोक्ता क्षीरविदारी तु मधुराम्ला कषायका।
वृष्या च शुक्रजननी पुष्टिदुग्धप्रदा कटुः॥
रसायनी च बल्या च शीता मूत्रकफप्रदा।
स्निग्धा वर्ण्या गुरुः स्वर्य्या पित्तरुग्रक्तदोषहा॥
पित्तशूलहरा वातदाहजिन्मूत्रमेहजित्।
ज्ञेया कंदगुणा ह्यस्याः सदृशा वल्लिवद्गुणैः॥

अर्थ-दूधविदारी-मधुर, अम्ल, कषेला, वीर्य्यवर्द्धक, शुक्रजनक, पुष्टिकारक, दूधवर्धक, चरपरा, रसायन, बलकारक, शीतल, मूत्रजनक, कफकारक, स्निग्ध, वर्णको सुंदर करनेवाला, भारी, स्वरको उत्तम करनेवाला तथा पित्तरोग, रुधिरविकार, पित्तशूल, वात, दाह और मूत्रमेहको दूर करनेवाला है, इसके कंदके गुण बेलकी समान जानने।

अन्यच्च।

कन्दः क्षीरविदार्यास्तु स्वादुर्वृष्यो रसायनः।
मधुरो बृंहणो हृद्यः शीतवीर्यो हि मूत्रलः॥

अर्थ-क्षीरविदारीकन्द-स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, मधुर, बृंहण, हृदयको हितकारी, शीतल और मूत्रवर्द्धक है।

अपिच।

क्षीरकन्दो द्विधा प्रोक्तो विनालस्तु सनालकः।
विनालो रोगहर्त्ता स्याद्वयःस्तम्भी सनालकः॥

अर्थ-क्षीरकन्द-नालरहित और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहां विनानालका रोगोंको हरनेवाला है और नालवाला अवस्थाको स्थापन करनेवाला है।

विवरण-विदारीकंदकी बेल-अनूप देशके जंगलोंमें होतीहै कोई२ उसको चर्मकारालुकभी कहतेहैं, यह कन्द वराहके समान रोमयुक्त उत्पन्न होताहै, पत्ते-बडे बडे घुइयांके समान होतेहैं, इसके नीचे जडमें बहुत बडा कन्द निकलताहै, उसका रंग लालीलिये होताहै दूसरे क्षीरविदारी कन्दकी भी बेलही चलती है इसका कन्द भी मूत[illegible]के समान होताहै, पत्ते-एक एक शाखामें सात २ आठ २ होते हैं, कन्दका रंग लाल और सफेद होता है।

मुसलीनामानि।

मुसली तालमूली च खलनी तालमूलिका ॥

अर्थ-मुसली, तालमूली, खलनी, तालमूलिका, (तालिका, अर्शोघ्नी, ताली, सुवहा, तालपत्रिका, गोधापदी, हेमपुष्पी, भूताली, दीर्घकन्दिका, मुशली, तालपत्री, काञ्चनपुष्पिका, महावृष्या, वृष्यकन्दा, खर्जूरी)

संस्कृतभाषामें	मुसली, तालमूली।
हिन्दीभाषामें	कालीमुसली, सफेदमुसली।(श्याममुसली)
वंगभाषामें	तालमूली।
मराठीभाषामें	काळी मुसळी, पांढरी मुसळी।
गुजरातीभाषामें	काली मुसली, धोली मुसली।
कर्णाटकीभाषामें	नेलताडी।
तैलिङ्गीभाषामें	निलयतलि गड्डु, नेलतारु।

लैटिनभाषामें हाइपोक्सिस् आर्चिओइडिस् Hypuxis Orchioides

एस्पेरेगस् सारमेंटोसस Asparagus Sarmentosus

अस्या गुणाः।

मुसली मधुरा वृष्या वीर्योष्णा बृंहणी गुरुः।
तिक्ता रसायनी हन्ति गुदजन्यानिलांस्तथा ॥

अर्थ-मुसली-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, उष्णवीर्य्य, बृंहण, भारी, कडवी, रसायन तथा बवासीर और वातनिवारक है।

अपिच।

मुसली रसपाकाभ्यां स्वादुः शीताग्निवर्द्धिनी।
वातपित्तहरा वृष्या स्थैर्यमार्दवदायिनी ॥ (शा० नि०)

अर्थ-मुसली-रस और पाकमें मधुर, शीतल, अग्निवर्द्धक, वातनाशक पित्तनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा स्थिरता, और मृदुतादायक है।

अन्यच्च ।

मुसली मधुरा वृष्या धातुवृद्धिकरी गुरुः ।
तिक्ता पुष्टा बलकरी पिच्छिला श्लेष्मला मता ॥
रसायना शीतला च पित्तदाहहरी मता ।
रक्तदोषं श्रमञ्चैव नाशयेदिति कीर्तितम् ॥
कृष्णाधिकगुणा प्रोक्ता श्वेता चाल्पगुणा मता ॥

अर्थ-मुसली-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, धातुवृद्धिकारक, भारी, क ी, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, पिच्छिल, कफजनक, रसायन, शीतल, त ा पित्त, दाह, रुधिरविकार और श्रमको हरनेवाली है ।

विवरण । काली मुसली और सफेदमुसली इन भेदोंसे मुसली द प्रकारकी है, इनमें सफेद मुसलीकी अपेक्षा काली मुसलीके अधिक गुणहैं, काली मुसलीके क्षुपका ऐसा स्वरूप होताहै जैसा ४-५ पत्तों वाला खजूरका नवीन वृक्ष होताहै, इसमें बहुत छोटे २ पीले फूल आतेहैं, क्षुपके नीचे उँगलीके समान मूल होताहै उसके ऊपरकी छाल भूरे रंगकी होतीहै भीतरका गर्भ सफेद रंगका होताहै ।

शतावरीमहाशतावरीनामानि ।

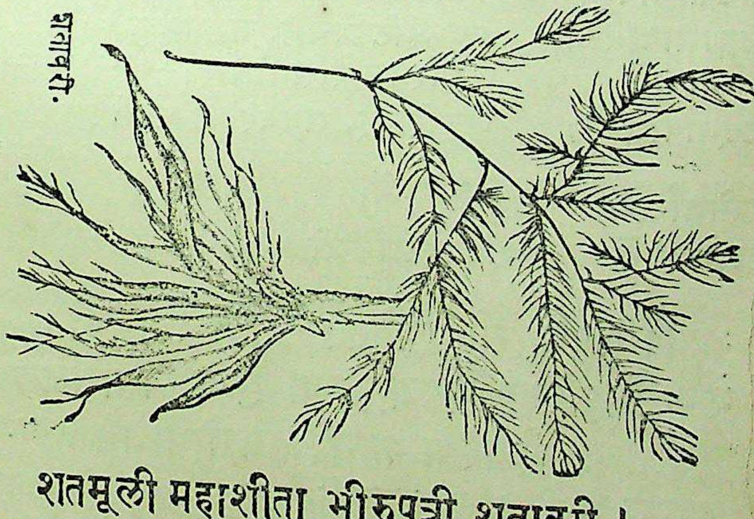

शतमूली महाशीता भीरुपत्री शतावरी ।
महाशतावरी त्वन्या शतवीर्य्या महोदरी ॥

अर्थ-शतमूली, महाशीता, भीरुपत्री, शतावरी, (बहुसुता, भीरु, इन्दीवरी, वरी, ऋष्यप्रोक्ता, नारायणी, अहेरु, अभीरु, अभी-

रुपत्री, महापुरुषदन्ता, राङ्गिणी, द्वीपिशत्रु, ऋषगता, काञ्चनकारिणी मदभञ्जिनी, शतपदी, पीवरी पीवरा, वृष्या, दिव्या, द्वीपिका, दूरकण्टिका, सूक्ष्मपत्रा, सूक्ष्मपत्रिका, सुपत्रा, बहुमूला, शताह्वया, द्वीपशत्रु, स्वादुरसा, शताह्वा, लघुपर्णिका, आत्मगुप्ता, जटा मूला, शतवीर्य्या, महौषधी, मधुरा, केशिका, शतपत्रिका, विश्वहया, वैष्णवी, कार्ष्णी, वासुदेवप्रियंकरी, दुर्मना, तैलवल्ली, अर्धकण्टका सुपत्रिका और शतवीर्य्या) महाशतावरी, शतवीर्य्यामहोदरी, (सहस्रवीर्य्या, सुर[illegible], महापुरुषदन्तिका, वीरा, तुराङ्गिणी, बहुपत्रिका, ऊर्ध्वकण्ठा, महावीर्य्या, फणिजिह्वा, महाशना, सुवीर्य्या, महती, अर्द्ध कण्टिका, शतमूली, अभीरु, बहुपुत्रिका, स्वादुरस्या) ।

संस्कृतभाषामें	शतावरी, महाशतावरी ।
हिन्दीभाषामें	सतावर, बडीसतावर ।
बंगलाभाषामें	शतमूली ।
मराठीभाषामें	लघुशतावरी, शतमूली आसवली, बडीशतावरी, सहस्रमूली ।
गुजरातीभाषामें	शतावरी, एकलकण्टो, शापनाशुवा ।
कर्णाटकीभाषामें	किरिपआसडी, परडुआसडी ।
तैलिङ्गीभाषामें	एदुमट्टिटेङाचल्ल, चल्लगड्डुलु ।
इंग्रेजीभाषामें	एस्पॅरेगस् रेसिमोसस् । A. racemosus
लैटिन्भाषामें	एस्पॅरेगस्, सतवर वा एडसेंडेंस् Asparagus satavar or A. Adscendens
फारसीभाषामें	गुर्जदस्ति ।
अरबीभाषामें	शकाकुलमिश्री ।

शतावरीगुणाः ।

शतावरी गुरुः सीता तिक्ता स्वाद्वी रसायनी ।
मेधाऽग्निपुष्टिदा स्निग्धा नेत्र्या गुल्मातिसारजित् ॥
शुक्रस्तन्यकरी बल्या वातपित्तास्रशोथजित् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-सतावर-भारी, शीतल, कडवी, मधुर, रसायन, मेधाकारक, जठराग्निवर्द्धक, पुष्टिदायक, स्निग्ध, नेत्रोंको हितकारी, गुल्मनाशक, अतिसारनिवारक, शुक्रजनक, स्तनोंमें दूधवर्धक, बलकारी तथा वात, रक्तपित्त और सूजनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शतावर्यौ हिमे तिक्ते मधुरे पित्तजित्परे ।
कफवातहरे वृष्ये महाश्रेष्ठे रसायने ॥ (राजानिघण्टु)

अर्थ-सतावर-शीतल,कडवी, मधुर, पित्तनाशक, कफवातनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और रसायनकर्ममें श्रेष्ठ हैं ।

अन्यच्च ।

शतावरी तु मधुरा शीता वृष्या च तिक्तका ।
रसायनी गुरुः स्वादुः स्निग्धा दुग्धप्रदा मता ॥
अग्निदीप्तिकरी बल्या मेध्या शुक्रकरी मता ।
चक्षुष्या पुष्टिकृत्पित्तकफवातक्षयापहा ॥
रक्तदोषगुल्महंत्री शोथातीसारनाशिनी ।
तैले घृते प्रयोगार्थं प्रशस्ता मुनिभिर्मता ॥ (नि० र०

अर्थ-शतावर-मधुर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कडवी, रसायन, भारी, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, दुग्धप्रद, अग्निप्रदीपक, बलकारक, मेधाजनक, शुक्रजनक, नेत्रोंको हितकारी, पुष्टिकारक तथा पित्त, कफवात,क्षय,रुधिरविकार,गुल्म,सूजन और अतिसारको हरनेवाली है।

महाशतावरीगुणाः ।

महाशतावरी हृद्या मेध्या चाग्निप्रदीपनी ।
शुक्रला शीतवीर्य्या च बल्या वृष्या रसायनी ॥
अर्शस्संग्रहणीरोगनेत्ररोगविनाशिनी ।
गुणा ह्यस्यास्तु विज्ञेयाः पूर्वायाः सदृशा गुणैः॥(नि०र०)

अर्थ-बडीशतावर-हृदयको हितकारी, मेधाजनक,अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, शीतवीर्य्यबल,कारक, वीर्य्यवर्धक,रसायन तथा बवासीर, संग्रहणी और नेत्ररोगको हरेहै । शेष गुण उसके शतावरकी समान जानने ।

अन्यच्च ।

महती कफवातघ्नी:तिक्ता श्रेष्ठा रसायने ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बडीशतावर-कफ वातनाशक,कडवी और रसायनकार्य्यमें श्रेष्ठ है ।

द्विविधशतावरीगुणाः ।

शतावरीद्वयं वृष्यं मधुरं पित्तजिद्धिमम् ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारकी शतावर-वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, पित्तनाशक और शीतल है ।

शतावर्यङ्कुरगुणाः ।

शतावर्या ह्यंकुरस्तु तिक्तो वृष्यो लघुः स्मृतः ।
हृद्यास्त्रिदोषपित्तघ्नो वातरक्तार्शसां हरः ॥
क्षयसंग्रहणीरोगनाशनस्तिक्तको लघुः ॥ (नि० र०)

अर्थ-शतावरके अंकुर-कडवे, वीर्य्यवर्द्धक, हलके, हृदयको हितकारी तथा त्रिदोष, पित्त, वातरक्त, बवासीर, क्षय और संग्रहणीरोगका नाश करे हैं ।

विवरण । शतावरकी बेल जङ्गलोंमें होती है,बेलका रङ्ग सफेदी लिये होता है; पत्ते अत्यन्त छोटे २ सोयेके पत्तोंके समान होते हैं; इसकी बेलको कोई २ वैद्यलोग एकलकण्ठी कहते हैं; इसमें कांटे बहुत होते हैं; फूल सफेद छोटे होते हैं; बडी शतावरीभी इसी प्रकारकी होती है; इससे कुछ अधिक बडी होती है, और इसकी अनन्त मूल होती हैं और शतावर और इसमें कुछ भेद नहीं होता । शतावरी वर्षाके आरम्भमें हरी होती है और फूल आतेहैं; एक वृक्षके नीचे सैकडों जड होतीहैं उसेही शतावरी कहते हैं ।

अश्वगन्धानामानि ।

अश्वगन्धा वाजिगन्धा कटुकाश्वावरोहकः ।
वाराहकर्णी तुरगीबल्या वाजिकरी हया ॥

अर्थ-अश्वगन्धा, वाजिगन्धा, कटुका, अश्वावरोहक,वाराहकर्णी, तुरगी, बल्या, वाजिकरी, हया,(अश्वकन्दिका, काम्बुका, अश्वारोहा, अश्वगन्धिका, तुरगगन्धा, कम्बुका, अश्वावरोहिका, बलजा, वाजिनी, अवरोहिका, वराहकर्णी, पुष्टिदा, बलदा, पुष्टिपीवरा, पलाशपर्णी, वातघ्नी, श्यामला, कामरूपिणी, काला, प्रियकरी, गन्धपत्री, हयप्रिया, वाराहपत्री, बलदा, वरदा, कुष्ठगन्धिनी, वरगात्रकरी, पुण्या, कुष्ठगन्धा) ।

संस्कृतभाषामें	अश्वगन्धा ।
हिन्दीभाषामें	असगन्ध ।

वंगभाषामें	अश्वगन्धा ।	
मराठीभाषामें	आसकंद, असगन्ध ।	
गुजरातीभाषामें	आखसंध ।	
कर्णाटकीभाषामें	आसाडु, अङ्गुर ।	
तैलिङ्गीभाषामें	पिल्लिआंगा ।	
इंग्रेजीभाषामें	विंटरचेरी ।	Winter cherry
लैटिन् भाषामें	फाइसेलिस् सोम्निफेरा ।	Physalis Somnifera
	विथानीआ सोम्निफेरा ।	Withania Somnifea
फ़ारसीभाषामें	मेहेमन् बररी ।	

अस्याः गुणाः।

अश्वगन्धानिलश्लेष्मशोफश्वित्रक्षयापहा ।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णाऽतिशुक्रला ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-असगन्ध-वात, कफ, सूजन, श्वित्रकुष्ठ और कफरोगनाशक है, तथा बलकारक, रसायन, कडवी, कषेली, गरम और अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

अश्वगन्धा कटूष्णा स्यात्तिक्ता च मदगन्धिका ।
बल्या वातहरा हन्ति कासश्वासक्षयव्रणान् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-असगन्ध-चरपरी, गरम, कडवी, मदगन्धियुक्त, बलकारक, वातनाशक तथा खाँसी, श्वास, क्षय और व्रण (घाव) दूर करे है।

अन्यच्च ।

अश्वगन्धो जराव्याधिनाशकस्तुवरः स्मृतः ।
धातुवृद्धिकरः किञ्चित्कटुको बलदः स्मृतः ॥
कान्तिप्रदश्च संप्रोक्तस्तथा च मधुगन्धिकः ॥
शरीरपुष्टिकारी च वृष्यश्चोष्णो लघुः स्मृतः ॥
वातं क्षयं श्वासकासौ व्रणं श्वतञ्च कुष्ठकम् ।
कफं विषकृमीञ्छोथं तथा चैव क्षतक्षयम् ॥
कण्डूं नाशयतीत्येवं पूर्वाचार्यैर्निरूपितम् । (नि० र०)

अर्थ-असगन्ध-रसायन अर्थात् जराव्याधिनाशक, कषैली, धातु-

वर्द्धक, किञ्चित् चरपरी, बलवर्द्धक, कान्तिजनक, मधुगन्धियुक्त, शरीरको पुष्टिकरनेवाली, वीर्यवर्द्धक, गरम, हलकी तथा श्वास, खांसी, घाव श्वेतकुष्ठ, कफ, विष, कृमि, सूजन, क्षतक्षय और कण्डू (खुजली है [illegible] करे है ।

अपिच ।

अ[illegible]न्धापत्रलेपो ग्रन्थिगण्डापचीन् हरेत् ॥ (शा०नि०)

अर्थ-असगन्धके पत्तोंका लेप-ग्रन्थि, गण्डमाला और अपचीको दूर करनेवाला है ।

विवरण-असगन्धका क्षुप होता है । फल-पनसोखाकी समान गोल होते हैं । इस क्षुपके नीचे छोटी मूलीकी समान कंद होताहै, उसके कंदको निकाल और सुखा लेते हैं, उसको असगन्ध कहते हैं ।

पाठानामानि ।

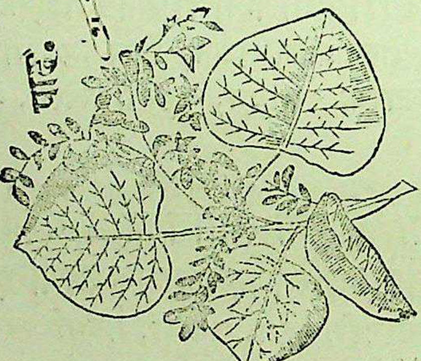

पाठाम्बष्ठा पापचेली कुचेला छिन्नवेशिका ॥

अर्थ-पाठा, अम्बष्ठा, पापचेली, कुचेला, छिन्नवेशिका (अम्बष्ठिका, प्राचीना, पापचेलिका, यूथिका, स्थापनी, श्रेयसी, विद्धकर्णिका, एकाष्ठीला, कुचेली, दीपनी वनतिक्तिका, तिक्तपुष्पा, बृहत्तिक्ता, शिशिरा, वृकी, मालती, वरा, देवी, वृत्तपर्णी, तिक्ता, विद्धकर्णी, र[illegible]ा, अविद्धकर्णी, पाटिका, अविद्धकर्णा, पाठिका, सुस्थिरा, प्रतानिनी, वत्सादनी, मालवी, त्रिशिरा, त्रिवृत, वृत्तपर्णी, रक्तघ्नी विषहन्त्री, महौजसी, रुचिष्या, दीपनी, वीरा, वाल्लिका)

संस्कृतभाषामें	पाठा ।
हिन्दीभाषामें	पाढ ।
वंगभाषामें	आकनादी, निमुक, आंखाँदि ।

मराठीभाषामें	पहाडमूळ ।
गुजरातीभाषामें	कालीपाट, करेटीमूल ।
कर्णाटकीभाषामें	पाठा ।
तैलङ्गीभाषामें	पाढचेट्टु ।
औत्कलिभाषामें	पाकन् बिन्धि ।
इंग्रेजीभाषामें	पेरारूट् ।
लैटिन्भाषामें	सिसांपिलोस्, परिरा । Ciss npelos pa ira

अस्या गुणाः ।

पाठोष्णा कटुका तिक्ता वातश्लेष्महरा लघुः ।
हन्ति शूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ॥
दाहकण्डूविषश्वासक्रिमिगुल्मोदरव्रणान् । (भा० प्र०

अर्थ-पाढ-गरम, चरपरा, कडवा, वातघ्न, कफनाशक, हलका तथा शूल, ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार, हृदयरोग, दाह, कण्डू, विष, श्वास, कृमि, गुल्म, उदररोग, और व्रणको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पाठा तिक्ता कटूष्णा च भग्नसन्धानकारका ।
तीक्ष्णा लघ्वी पित्तदाहशूलातीसारनाशिनी ॥
वातपित्तज्वरच्छर्दिविषाजीर्णत्रिदोषकान् ।
हृद्रोगरक्तकुष्ठातिकण्डूश्वासकृमीञ्जयेत् ॥
गुल्मोदरव्रणकफवातनाशकरी मता । (नि० रा०)

अर्थ-पाढ-कडवा, चरपरा, गरम, भग्नसन्धानकारक, (टूटेहुये स्थानको जोडनेवाला), तीक्ष्ण, हलका तथा पित्त, दाह, शूल, अतिसार, वातपित्त, ज्वर, वमन, विष, अजीर्ण, त्रिदोष, हृदयरोग, रक्तकुष्ठ, कण्डू, श्वास, कृमी, गुल्म, उदररोग, व्रण और कफवातको हरनेवाला है ।

लघुपाठागुणाः ।

लघुपाठा तिक्तरसा विषघ्नी कुष्ठकण्डुनुत् ।
छर्दिहृद्रोगगरजित्त्रिदोषशमनी मता ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-लघुपाढ-कडवा तथा विष, कोढ, खुजली, वमन, हृदयरोग और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण। पाढकी बेल होतीहै, पत्ते कुछ गोल होते हैं, उसके कोनोंमेंसे बेल और सूक्ष्म मौरकी समान फूल निकलता है। फलम-कोयकी समान लालरंगके होते हैं और बांगकी जडको लघुपाठा कहते हैं तथा बांगुकी भी बेल होतीहै, पत्ते-फंजीकी समान होते हैं फंजी[illegible]र नीले और नीचे सफेद होते हैं, किन्तु बांगके ऐसे नहीं [illegible] आकार गोफलश्रीकी समान और कुछेक पिलाई लिये होते हैं, [illegible]-सूक्ष्म और सफेद होते हैं, फल-पीलुकी सदृश होते हैं का[illegible]ठकाके समीप टकसालमें इसको वटौवेकी वेल या पिण्डीकी द[illegible] कहते हैं।

त्रिवृन्नामानि।

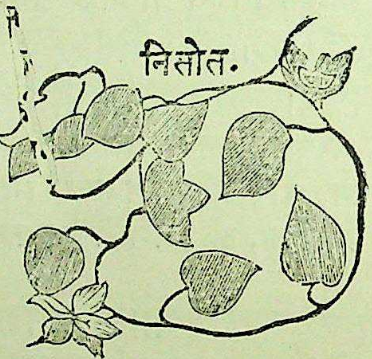

त्रिवृत्सुवहा त्रिपुटा त्रिभण्डी रेचनी सरा ॥

अर्थ-त्रिवृत सुवहा, त्रिपुटा, त्रिभण्डी, रेचनी, सरा(सर्वानुभूति, त्रिवृता, सरसा, सरणा, सहा, रोचनी, मालविका, श्यामा, मसूरी, अर्धचन्द्रा, विदला, सुषेणी, कालिङ्गिका, कालमेषी, काली, त्रिवेला, त्रिवृत्तिका, सारा)

संस्कृतभाषामें	त्रिवृत्।
हिन्दीभाषामें	निसोत, पनिलर।
वंगभाषामें	तेड्डी।
मराठीभाषामें	निशोत्तर, तेंड।
गुजरातीभाषामें	नसोतर।
कर्णाटकीभाषामें	तिगडे।
तैलिङ्गीभाषामें	आलतेगडा।
तामिलीभाषामें	शिवदइ।
इंग्रेजीभाषामें	टरबीथरूट Turbithro ot

लैटिन्भाषामें	आईपोमियां टरपीथम् । Ipomoea turpethum
फारसीभाषामें	निसोथ ।
अरबीभाषामें	तुरबुद ।

कृष्णत्रिवृन्नामानि ।

श्यामा त्रिवृन्मालविका मसूरविदला च सा
कालार्द्धचन्द्रपालंदी सुषेणी कालमेषिका ॥

अर्थ-श्यामा-त्रिवृत, मालविका, मसूरविदला, काल, अर्द्धचन, पालंदी, सुषेणी, कालमेषिका (पालिन्धी, कालम शका)

हिन्दीभाषामें	काला निसोथ, श्याम निर ।
वंगभाषाम	कालतेउडी ।
कर्णाटकीभाषामें	केप्यनेयतिगडे ।

श्वेतत्रिवृन्नामानि ।

शुक्लमण्डी त्रिभण्डी स्यात्काकाक्षी सरला त्रिवृत् ।
सर्वानुभूतिस्त्रिपुटा त्र्यस्रा कोटरवाहिनी ॥

अर्थ-शुक्लभण्डी, त्रिभण्डी, काकाक्षी, सरला, त्रिवृत, सर्वानुभूति, त्रिपुटा, त्र्यस्रा, कोटरवाहिनी, (व्याघ्रपादी, त्रिसूत्रा, वृकाक्षी, चोरनासिका, सुवहा, निशोत्रा, रेचनी, सर्वानुभूति और त्रिवृता)

हिन्दीभाषामें	सफेद निसोत ।
वंगभाषामें	श्वेत तउडी ।
मराठीभाषाम	पांढऱ्या फुलांचा निशोत्तर ।
गुजरातीभाषामें	धालाफुलनुं नसातर ।

रक्तत्रिवृन्नामानि ।

रक्तपुष्पा रक्तमूला कलिङ्गा परिपाकिनी ।
त्रिवृता निःसृतारुणा सूत्रमध्या च सा स्मृता ॥

अर्थ-रक्तपुष्पा, रक्तमूला, कलिंगा, परिपाकिनी, त्रिवृता निःसृता, अरुणा सूत्रमध्या, (व्याघ्रादनी, कुटरुणा कालिन्दी, त्रिपुरा, ताम्रपुष्पिका, कुलवर्णा, मसूरी, अमृता, कफनासिका और रक्तत्रिवृत)

सामान्यत्रिवृद्गुणाः ।

त्रिवृत्तिक्ता कटूष्णा च कृमिश्लेष्मोदरार्त्तिजित् ।

कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्ति प्रशस्ता च विरेचनी॥ (रा०नि०)

अर्थ-मनेसोत-कडवा, चरपरा, गरम, तथा क्रिमि, कफ, उदररोग,कुष्ठकण्ड और व्रणको दूर करेहै,इसका जुल्लाब प्रशंसायोग्य है।

अन्यच्च ।

त्रिवृत्तु मधुरं रूक्षं तीक्ष्णं वातकरं मतम् ।
तुवरं च रसे तिक्तं कटुपाकञ्च रेचकम् ॥
हितकृ मलस्तम्भञ्च ग्रहणीञ्च कफोदरम् ।
शोथं पाण्डुं कृमीन् प्लीहां ज्वरं पित्तं कफं तथा ॥
वातरक्तमुदावर्त्तं हृद्रोगञ्च विनाशयेत् । (रा० नि०)

अर्थ-निसोत-मधुर, रूखा, तीक्ष्ण, वातजनक, कषेला, तिक्तरसान्वित, कटुपाकी, इसका रेचक (जुलाब) हितकारी तथा मलस्तम्भ, संग्रहणी, कफोदर, सूजन, पाण्डुरोग,क्रामि, प्लीहा,ज्वर, पित्त, कफ, वातरक्त, उदावर्त और हृदयरोगको हरनेवाला है ।

श्यामत्रिवृद्गुणाः ।

श्यामा त्रिवृत्ततो हीनगुणा तीव्रविरेचनी ।
मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ॥

अर्थ-श्यामपानिलर (काला निसाथ)-सफेद निसोथकी अपेक्षा हीनगुणवला है, किन्तु विरेचन गुण इसमें तीव्र है, तथा मूर्च्छा,दाह, मद, भ्रान्ति और कण्ठको उत्कर्षण करनेवाला है ।

श्वेतत्रिवृद्गुणाः ।

श्वेता त्रिवृद्रेचनी स्यात्स्वादुरुष्णा समीरहृत ।
रूक्षा पित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा (भा० प्र०)

अर्थ-सफेद निसोथ-रेचक, स्वादिष्ठ, गरम, वातनाशक, रूखा, तथा पित्तज्वर, कफ, पित्त, सूजन और उदररोगको दूर करे है ।

रक्तत्रिवृद्गुणाः ।

अरुणा त्रिवृता स्वादुः कषाया मृदुरेचनी ।
रूक्षा च कटुका चैव पाके तिक्ता कफापहा ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-लाल निसोथ-मधुर, कषेला, मृदुरेची, रूखा, चरपरा, पचनेमें कडवा और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

रक्ता त्रिवृत्कटुस्तिक्ता कटूष्णा रेचनी च सा ।
ग्रहणीमलविष्टम्भहारिणी हितकारिणी ॥ (रा० नि)

अर्थ-लालनिसोथ-कडवा, चरपरा, गरम, रेचक तथा [illegible], एवं मलविष्टम्भहारक और हितकारक है ।

विवरण । सफेद निशोथकी बेल जंगलमें होतीहै, सफेद फूल आतेहैं, गोल २ फल आतेहैं, उनमें चार २ बीज होतेहैं, पत्ते-नोकदार गोल होतेहैं, इसकी बेलकी लकडीमें तीन धार होतीहैं, निसोथ तीन प्रकारका होताहै, परन्तु सफेद सबसे उत्तम है ।

२ काले निसोथकीभी लता होती है, फूल कालापनलिये बैंजनीसे होतेहैं, पत्ते-गोल २ नोंकदार उसीप्रकार होतेहैं, परन्तु सफेदसे कुछ छोटे और फलभी कुछ छोटे होतेहैं और सब आकार इकसार होताहै; परन्तु वैद्योंने सफेदकी अधिक प्रशंसा करी है ।

मात्रा सफेद निसोथकी २ मासेसे लेकर ४॥ मासे पर्य्यन्त है । मात्रा काले निसोथकी १ मासेसे लेकर ३ मासे पर्य्यन्त है । मात्रा लाल निसोथकी ३ मासेसे ६ मासेतककी है ।

दन्तीनामानि ।

उदुम्बरपर्णी दन्ती प्रत्यक्पर्णी च दन्तिका ।
श्वेतघण्टा निकुम्भी च निःशल्या निष्कुम्भस्तथा ॥

अर्थ-उदुम्बरपर्णी, दन्ती, प्रत्यक्पर्णी, दन्तिका, श्वेतघण्टा, निकुम्भी, निःशल्या, निष्कुम्भ (निकुम्ब, शीघ्रा, नागस्फोता, दन्तिनी, उपाचित्रा, भद्रा, रूक्षा, रेचनी, अनुकूला, रक्तदन्ती, विशल्या, मधुपुष्पा, एरण्डफला, तरुणी, एरण्डपत्रिका, एरण्डपत्री, अणुखर्त्ती, विशोधनी, कुम्भी, उदुम्बरदला, विशल्या, उदुम्बरपर्णी, शीघ्र, श्येनघण्टा, गुणप्रिया, वराहाङ्गी, निकुम्भ और मकूनक यह नाम छोटी दन्तीके हैं) (द्रवन्ती, सावरी, चित्रा, प्रत्यक्पर्णी, अर्कपर्णी, चित्रोपचित्रा, न्यग्रोधी, प्रत्यक्श्रेणी, आखुकर्णी)

संस्कृतभाषामें	दन्ती ।
हिन्दीभाषामें	दन्ती, तिरिफल ।
वंगभाषामें	दन्तीगाछ ।
मराठीभाषामें	लघुदन्ती ।

गुजरातीभाषामें	दांतएटले नेपालनां मूल ।
कर्णाटकीभाषामें	दन्ती ।
तैलङ्गीभाषामें	दन्तीचेट्टु, कोण्ड अमुदुम् ।
[illegible]भाषामें	क्रोटन् सीडस् । Crotenseeds
लैटिनभाषामें	क्रोटनटिग्लियम् । Crotentiglium
फारसीभाषामें	दंद ।
अरबीभाषामें	हबुल मुलुक ।

दन्तीगुणाः ।

दन्ती वह्निसमा पाके शोफदद्रुविनाशिनी ।
कण्डूपामाहरा कुष्ठध्वंसिनी कृमिहृत्सरा ॥ (गं० नि०)

अर्थ-दन्ती-पाकमें अग्निकी समान है, दस्तावर है तथा शोफ, बवासीर, कण्डू, पामा, कोढ और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

दन्ती कटूष्णा शूलामत्वग्दोषशमनी च सा ।
अर्शोव्रणाश्मरीशल्यशोधनी दीपनी परा ॥ (रा० नि०)

अर्थ दन्ती-चरपरी, गरम, शोधक, दीपन, तथा शूल, आम, त्वचाके दोष, बवासीर, घाव,पथरी और शल्यनिवारक है ।

अपिच ।

दन्तीद्वयं सरं पाके रसे च कटु दीपनम् ।
गुदांकुराश्मशूलार्शःकण्डूकुष्ठविदाहनुत ॥
तीक्ष्णोष्णं हन्ति पित्तास्रकफशोफोदरकृमीन् ।
क्षुद्रदन्तीफलं तु स्यान्मधुरं रसपाकयोः ॥
शीतलं सृष्टविण्मूत्रं गरशोथकफापहम् । (भा० प्र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी दन्ती-दस्तावर, रस और पाकमें चरपरी, जठराग्निको दीपन करनेवाली,तीक्ष्ण, गरम, तथा गुदांकुर, पथरी, शूल,बवासीर, कण्डू, कोढ, दाह, पित्तकारक,कफ, सूजन, उदररोग और कृमि रोगका नाश करे है, छोटी दन्तीका फल रस और पाकमें मधुर, शीतल, मल तथा मूत्रको निकालनेवाला, विष, शोथ और कफनाशक है ।

बृहद्दन्तीनामानि।

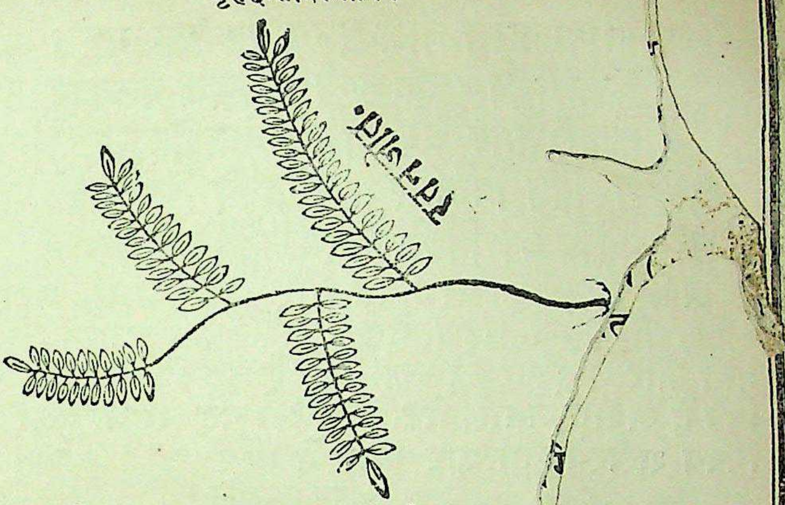

बृहद्दन्ती गुच्छफला दुग्धगर्भा विरेचनी।
विषभद्रा भद्रदन्ती ज्योतिष्का च जयावहा ॥

अर्थ-बृहद्दन्ती, गुच्छफला, दुग्धगर्भा, विरेचनी, विषभद्रा, भद्रदन्ती, ज्योतिष्का, जयावहा।

संस्कृतभाषामें	बृहद्दन्ती।	
हिन्दीभाषामें	मुगलाई अण्ड।	
मराठी भाषामें	थोरदन्ती।	
गुजरातीभाषामें	रतनजोत।	
कर्णाटकीभाषामें	एरण्डनेदन्ती।	
इंग्रेजीभाषामें	दिफिझिकनट् ।	The physicnut
लैटिन्भाषामें	करकस मल्टीफीडस्।	CurcasMultifid
	जेट्रोफापरगन्स्,	Jatrophapurgan
फारसीभाषामें	शकारदुजुवा।	
अरबीभाषामें	अबुखलसा।	

बृहद्दन्तीगुणाः।

बृहद्दन्ती कटूष्णा च जठरामयशोधिनी।
अर्शोव्रणाश्मरीशूलत्वग्दोषशमनी च सा ॥

अर्थ-बृहद्दन्ती-चरपरी, गरम, जठरामयशोधक तथा बवासीर, घाव, पथरी, शूल और त्वचाके दोषोंको दूर करे है।

बृहद्दन्तीबीजगुणाः ।

तिक्तैरण्डस्य बीजं तु रसपाके गुरु मधु ।
स्निग्धं च रेचकं वृष्यं बृंहणञ्च बलप्रदम् ॥
कफपित्तप्रदं चैव वामकं वातदाहकृत् ।
न विषं विषमित्याहुर्जैपालो विषमुच्यते ॥
शोधितश्च विरेकेषु चमत्कृतिकरः परः ॥

अर्थ- हद्दन्तीका बीज-रस और पाकमें भारी, मधुर, स्निग्ध, रेचक, वी र्द्धक, बृंहण, बलदायक, कफपित्तकारक, वमनजनक, वात और हकारकहै । जो विष है वह विष नहीं है, परन्तु यह विष है अर्थात् जमालगोटा विष है । यह शोधा हुआ विरेचनके विषय शरीरमें चमत्कार करता है ।

भद्रदन्तीनामानि ।

भद्रदन्ती केशरुहा भिषग्भद्रा जयावहा ॥

अर्थ-भद्रदन्ती केशरुहा, भिषग्भद्रा, जयावहा (आवर्त्तकी, ज्वराङ्गी, जयाह्वा, भद्रदन्तिका)

अस्या गुणाः ।

भद्रदन्ती कटूष्णा च रेचनी कृमिहा परा ।
शूलकुष्ठामदोषघ्नी तुंदामयविनाशिनी ॥

अर्थ-भद्रदन्ती-चरपरी, गरम, दस्तावर, कृमिनाशक तथा शूल, कोढ, आमदोष और उदररोगनाशक है ।

जयपालनामानि ।

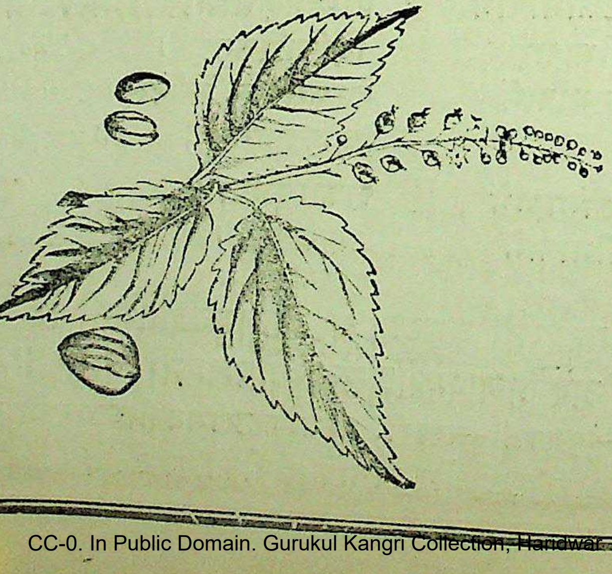

जयपालश्च जैपालः सारकस्तिन्तिडीफलम् ॥

अर्थ-जयपाल,जैपाल,सारक,तिन्तिडीफल,(दन्तीबीज,जलद्रावि, निकुम्भाख्यबीज; रेचक, बीजरेचन,कुम्भीबीज,कुंभिनीबीज,घण्टाबीज, घण्टिनीबीज, शोधनीबीज, चक्रदन्तीबीज)

संस्कृतभाषामें	जयपाल ।
हिंदीभाषामें	जमालगोटा ।
वंगभाषामें	जैपाल ।
मराठीभाषामें	जेपाळ ।
गुजरातीभाषामें	नेपालो ।
कर्णाटकीभाषामें	जेपाल ।
इंग्रेजीभाषामें	पार्जिगक्रोटन । Parging Croton
लैटिन्भाषामें	ओलयम, कोटोनिस ।
अरबीभाषामें	हबुससलातीन ।
फारसीभाषामें	तुखमेवेंदं जीरखताई ।

अस्य गुणाः ।

जयपालः कटुरुष्णः कृमिहारी विरेचकः ।
दीपनः कफवातघ्नो जठरामयशोधनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जमालगोटा-चरपरा, गरम, कृमिनाशक, रेचक, दीपन, कफवातनाशक और उदरामयशोधक है ।

अन्यच्च ।

जयपालो गुरुः स्निग्धो रेची पित्तकफापहः ॥(भा०प्र०)

अर्थ-जमालगोटा-भारी, स्निग्ध, दस्तावर और पित्त, कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

सारकं कफनुत्क्लेदि तीक्ष्णमुष्णं विरेचनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जमालगोटा-कफनाशक, क्लेदकारक, तीक्ष्ण, गरम और दस्त लानेवाला है ।

अस्य बीजशोधनविधिः ।

निस्तुषं जयपालञ्च द्विधा कृत्वा विचक्षणः ।
एतद्बीजस्य मध्ये तु पत्रवत्परिवर्ज्जयेत् ॥

अष्टांशेन चूर्णेन टङ्कणस्य तु मेलयेत् ।
केशयन्त्रेण तद्भाव्यं पाच्यं दुग्धेन संप्लुतम् ॥
त्रिवारं शुद्धिमायाति जयपालोऽमृतोपमम् । (इतिरसच०)

अ[illegible] वैद्य बक्कलरहित जमालगोटेके दो भाग करके इस[illegible]जके मध्यमें पत्तेकी समान जो वस्तु है उसको निकाल डाले और [illegible]ालगोटेकी दालमें अष्टमांश सुहागेका चूर्ण करके मिलावे। [illegible]शयन्त्रके द्वारा भावना दे, फिर दूधमें भिजोकर मिलावे; इसप्रकार तीन वार करनेसे जमालगोटा अमृतकी सदृश होजाता है ।

अन्यच्च ।

स्विन्नं गोमयतोये वा दुग्धे वा जयपालकम् ।
खर्परीमृदुभृष्टं तन्निःस्नेहं शुद्धिमृच्छति ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-जमालगोटेको गोबरके जलमें तथा दूधमें भिजोकर फिर कोमल खीपडेमें भूनलेवे जब उसमें चिकनाई न रहे तब शुद्ध होजाता है ।

अस्य बीजतैलगुणाः ।

तैलं निकुम्भबीजोत्थमत्युग्र रेचनं परम् ।
आनाहमुदरं हन्ति संन्यासं च शिरोगदम् ॥
धनुस्तम्भ ज्वरोन्मादं गदमेकाङ्गसंज्ञकम् ।
आमवातं च शोथं च मर्दनात्कासनाशनम् (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-जमालगोटेका तेल-अत्युग्र रेचक, तथा आनाह (अफारा) उदररोग, संन्यास, शिरोरोग, धनुःस्तम्भ, ज्वर, उन्माद, एकाङ्गसंज्ञक रोग, आमवात और शोथको मर्दन करनेसे तथा खाँसीको दूर करे है।

विवरण-दन्तीका क्षुप होताहै, पत्ते-गूलरकी समान होते हैं, फूल महुवेकी समान होता है इसका फल जमालगोटा है। बडी दन्तीका बडा वृक्ष होता है, फल-अण्डकी समान होते हैं, उसमेंसे अंडीकी समान बीज निकलते हैं, उन बीजोंका जुल्लाव होता है, तथा इसके दूधकाभी थूहरके दूधकी समान जुल्लाब दियाजाता है । इसका पेड कालकाके समीप टकसालमें बुल्हवुला नामसे प्रसिद्ध है

इन्द्रवारुणीनामानि ।

इन्द्रवारुणिका चित्रा विशाला गजचिर्भिटा ।
मृगेर्वारुः क्षुद्रसहा चित्रफलेन्द्रवारुणी ॥

अर्थ–इन्द्रावारुणिका, चित्रा, विशाला, गजचिर्भिटा, मृगेर्वारु, क्षुद्रसहा, चित्रफला, इन्द्रवारुणी, (ऐन्द्री, गवाक्षी, भरा, टङ्गाकी, मृगादनी, इन्द्रा, अरुणा, गवादनी, इन्द्रचिर्भिटी, सूर्य्या, विषघ्नी, गणकर्णिका, माता, सुकर्णिका, तारका, वृषभाक्षी, पीतपु ,इन्द्रवल्लरी, हेमपुष्पा, क्षुद्रफला, वारुणी, बालकप्रिया, रक्त. विषलता, शक्रवल्ली, विषापहा, अमृता, विषवल्ली, चित्रवल्ली. कपिलाक्षी, मृगेक्षणा मृगेक्षणा)

महेन्द्रवारुणीनामानि ।

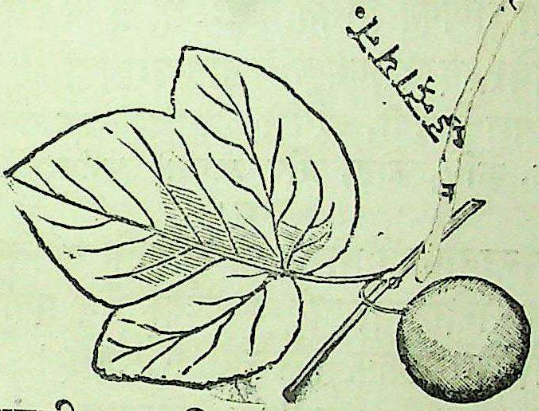

महेन्द्रवारुणी काया विशाला च महाफला ।
आत्मरक्षा चित्रफला तुंवसी त्रपुसी च सा ॥

अर्थ–महेन्द्रवारुणी, काया, विशाला, महाफला, आत्मरक्षा, चित्रफला, तुंवसी, त्रपुसी (रम्या, महेन्द्री त्रपुसा, चित्रवल्ली, दीर्घवल्ली, बृहत्फला, बृहद्वारुणी, सौम्या, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगेर्वारु, मृगादिनी, हस्तिदन्ती, कटुरसा, कपिलाक्षी, कुम्भसी, उरुप्रिया, चित्रला, देवी और गजचिर्भिरा)

संस्कृतभाषामें	इन्द्रवारुणी, महेंद्रवारुणी ।
हिन्दीभाषामें	इन्द्रायण, फरफेंदु, बडीइन्द्रायण, बडीइन्द्रफला ।
वंगभाषामें	राखालशशा, राखालताडु, कुंदरुकी, बडमाकाल ।
मराठीभाषामें	लघुइंद्रवण, कांवडळ, थोरकावँडळ ।
गुजरातीभाषामें	इंदरवाणीयुं, गाबसुकणु ।
रा०	तसुतुम्बो, गडतुम्बो ।
दे०	घोडइन्द्रावण, चुलेइन्द्रावण ।
कर्णाटकीभाषामें	हामेके, हिरियाहामेके ।

तैलिङ्गीभाषामें	एतिपुच्छा ।
इंग्रेजीभाषामें	कोलोसिंथ । Colocynth
लैटिन्भाषामें	सिट्रलस् कोलोसिंथिस् । Citrullus Colocythis
क्युकु[illegible] [illegible]कोलो सिंथिस् । Cucumispsuds colocynthis	
फा[illegible]भाषामें	खुर्यजातलख ।
[illegible]भाषामें	हंजल ।

इन्द्रवारुणीगुणाः ।

इन्द्रवारुणिका तिक्ता कटुः शीता च रेचनी ।
गुल्मपित्तोदरश्लेष्मकृमिकुष्ठज्वरापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ–इन्द्रायण–कडवी, चरपरी, शीतल, रेचक तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, कृमि, कोढ, और ज्वरको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

लघ्वीन्द्रवारुणी प्रोक्ता पाके कट्वी च तिक्तका ।
शीता सरोष्णवीर्य्या च लघ्वी चैव प्रकीर्तिता ॥
गुल्मपित्तोदरकफकृमिकुष्ठज्वरव्रणान् ।
श्वासकासग्रन्थिमेहमूढगर्भककामलाः ॥
प्लीहानं शुष्कगर्भं च गलगण्डं विषं तथा ॥
आनाहं वातमपि च चामं दुष्टोदरं तथा ॥
सर्वोदराणि पाण्डुं च नाशयेदिति कीर्त्तिता । (नि० र०)

अर्थ–इंद्रायण–पचनेमें चरपरी, कडवी, शीतल, सारक, उष्णवीर्य, हलकी तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, कृमि, कुष्ठ, ज्वर, व्रण, श्वास, खाँसी, ग्रन्थि, प्रमेह, मूढगर्भ, कामला, प्लीहा, शुष्कगर्भ, गलगण्ड, विष, आनाह, वात, अपचो, आम, दुष्टोदर, सर्वप्रकारके उदररोग और पाण्डुरोगका नाश करनेवाली है ।

महेन्द्रवारुणीगुणाः ।

अन्येन्द्रवारुणी कण्ठरुजं च श्लीपदं तथा ।
नाशयेदिति संप्रोक्ता गुणाश्चान्ये तु पूर्ववत् ॥
रसे वीर्ये च पाके चाधिका चोक्ता गुणैरियम् । (नि०र०)

अर्थ–बडी इन्द्रायण–कण्ठरोग और श्लीपद रोगको दूर करनेवालीहै;

रस, वीर्य्य और विपाकमें इन्द्रायणकी अपेक्षा यह अधिक गुणवालीहै, शेष गुण इन्द्रायणकी समान जानने ।

विवरण । इसकी बेल अधिकतर खारी भूमिमें उत्प[illegible] होतीहै, फल-सुक्ष्म कांटेयुक्त लालरंगका होताहै, फूल-पी[illegible]का [illegible]ताहै । पत्ते लम्बे बीचबीचमें कटेहुवे होतेहैं, दूसरी रेतीली भू[illegible]ोती है, उसका फल पीलेरंगका होताहै । इन दोनों जातिकी [illegible]ण के फल तथा मूलके द्वारा जुल्लाब दियाजाताहै । पं[illegible]बमें व[illegible] तूम्बा या वसलूंबा नामसे प्रसिद्ध है ।

स्वर्णपत्रीनामानि ।

कल्याणी हेमपत्री च रेचनी स्वर्णपत्रिका ।

अर्थ-कल्याणी, हेमपत्री, रेचनी, स्वर्णपत्रिका, (स्वर्णपत्री, स्वर्णमुखी, हेमपत्रिका, रेचिका, स्वर्णिनी, और मलहारिणी)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णपत्री ।
हिन्दीभाषामें	सनाय ।
मराठीभाषामें	सोनामुखी ।
वंगभाषामें	सोनामुखी,सोनापाता ।
इंग्रेजीभाषामें	टिनेवैलीसिना ।
लैटिन्भाषामें	सिनाइंडिका ।

अस्या गुणाः ।

विट्बन्धं वह्निमान्द्यञ्च यकृदाद्युदरं तथा ।
प्लीहोदरं बद्धगुदमजीर्णं विषमज्वरम् ॥
कामलां पाण्डुरोगं च कल्याणीं क्षपयेद्ध्रुवम् । (आ० सं०)

अर्थ-सनाय-मलबद्ध, मंदाग्नि, यकृत्, उदररोग, प्लीहोदर, बद्धगुद, अजीर्ण, विषमज्वर, कामला और पाण्डुरोगका नाश करैहै ।

कृष्णबीजनामानि ।

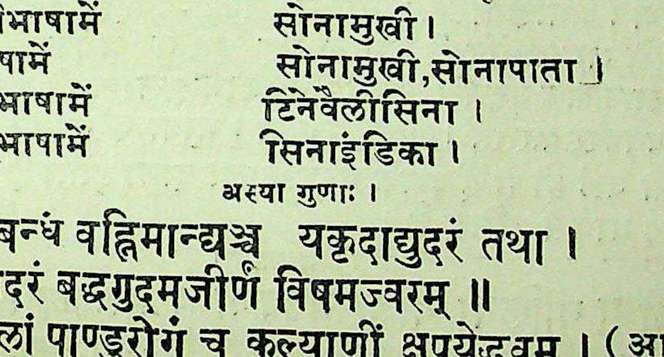

कृष्णबीजं श्यामबीजं स्मृतं श्यामलबीजकम् ॥

अर्थ-कृष्णबीज, श्यामबीज, श्यामलबीजक ।

संस्कृतभाषामें	कृष्णबीज ।
हिन्दीभाषामें	कालादाना ।
बंगभाषामें	नीलकलमी ।
अंग्रेजीभाषामें	पेलब्लुइपोमिया ।
लैटिन्भाषामें	फारबटिसनील ।

अस्या गुणाः ।

कृष्णबीजं सरं स्निग्धं शोथोदरहरं परम् ।
ज्वरविष्टम्भहारी च मस्तकामयनाशनम् ॥
उदावर्त्ते कफानाहे प्रयोज्यं बुद्धिमत्तरैः ।

अर्थ-कालादाना-दस्तावर, चिकना तथा सूजन, उदररोग, ज्वर, विष्टम्भ, मस्तकरोग, उदावर्त, कफ, और आनाह रोगको दूरकरेहै।

विवरण । जमालगोटेके अभावमें इसका व्यवहार किया जाता है, क्योंकि जमालगोटेकी समान यह इतना भयंकर दस्तावर नहींहै । आजकल बहुतसे आलोपैथिकडाक्तर सरकारी सफाखानेमें इसका व्यवहार करतेहैं । व्यवहारबीज । मात्रा ६ मासेकी । पञ्जाबमें इसकी वेलें होती हैं इसके बीज काला दाना होता है काहलियांकी वेल नामसे प्रसिद्ध है ।

नीलिकानामानि ।

नीली तु नीलिनी नीला मेघवर्णा च कुत्सला ।
दूली क्लीतकिका काला नीलिका नीलपुष्पिका ॥

अर्थ-नीली, नीलिनी, नीला, मेघवर्णा, कुत्सला, दूली, क्लीतकिका, काला, नीलिका, नीलपुष्पिका, (ग्रामीणा, मधुपर्णिका, रञ्जनी, श्रीफली, तुत्था, तूणी, दोला, दूलिका, द्रोणिका, आक्लिका, ग्रामणी, ग्रामिणी, तूली, द्रोणी, मेला, तुच्छा, नीलपत्री, राज्ञी, नीलपुष्पी, काली, श्यामा, शोधिनी, श्रीफला, ग्राम्या, भद्रा, भारवाही, मोचा, कृष्णा, व्यञ्जनकेशी, महाफला, असिता, क्लीतनी, केशी, चारटिका, गन्धपुष्पा, श्यामलिका, रङ्गपत्री, महाबला, स्थिररंगा, रंगपुष्पी, वृन्तिका, अञ्जनकेशिका, चारटी, विजया, गन्धपुष्पी, और स्थिररागा)

संस्कृतभाषामें	नीली ।
हिन्दीभाषामें	नील, लील ।

वंगभाषामें	नीलगच्छी नीलगाछ ।	
मराठीभाषामें	गुळी, लघुनीळी ।	
गुजरातीभाषामें	गळी ।	
कर्णाटकीभाषामें	हिरीपनीली ।	
तैलिङ्गीभाषामें	निलीजेट्टु ।	
इंग्रेजीभाषामें	इंडिगो ।	Indigocera
लैटिन् भाषामें	इंडिगोफेरा कोर्डिफोलिआ ।	tinct[illegible]ria Indig[illegible]ra

अस्य गुणाः ।

नीली तु कटुका तिक्ता केश्या चोष्णा सरा मता ।
व्यंगं श्लेष्मोदरं मोहं हृद्रोगं च भ्रमं तथा ॥
वातरक्तमुदावर्त्तमामवातं कफञ्जयेत् ।
मदं कासं विषं चामं वातं गुल्मं ज्वरं तथा ॥
कुष्ठं कृमीश्चोदरञ्च प्लीहाञ्चैव विनाशयेत्। (नि० र०)

अर्थ–नील–चरपरा, कडवा, केशोंको हितकारी, गरम, सारक तथा व्यंग, श्लेष्म, उदररोग, मोह, हृदयरोग, भ्रम, वातरक्त, उदावर्त्त, आमवात, कफ, मद, खाँसी, विष, आम, वात, गुल्म, ज्वर, कोढ, कृमि, उदर और प्लीहाका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

नीली केश्या शिरोरोगव्रणकुष्ठापहा सरा ॥ (शो० नि०)

अर्थ–नील–केशोंको सुंदर करनेवाला तथा मस्तकरोग, घाव और कोढको दूर करेहै, तथा दस्तावर है ।

विवरण । नीलके क्षुप छोटे २ किसानलोग खेतीमें बोतेहैं, पत्ते-सरफोंकके समान नीले और कुछेक कालापन लिये होतेहैं । इसकी फली–टेढी और गोल होतीहै, इसकी डाली और पत्तोंकी कुट्टी कर कुण्डोंमें पानीभर उसमें गलातेहैं, तब इसका नील बनाते हैं वह नीले रंगके काममें आताहै, दूसरा इसीका भेद बडा नील है ।

महानीलीनामानि ।

अन्या चैव महानीली अमरा राजनीलिका ।
तुत्था श्रीफलिका मेला केशार्हा भर्त्सपत्रिका ॥

अर्थ-महानीली, अमरा, राजनीलिका, तुत्था, श्रीफलिका, मेला, केशार्हा, भर्त्सपत्रिका ।

हिन्दीभाषामें	बडानील ।
वंगभाषामें	वडनील ।
मराठीभाषामें	थोरनीली ।
गुजरातीभाषामें	मोटीगली ।
कर्नाटकीभाषामें	हिरिपनील ।
लैटिन्‌भाषामें	इंडिगोफेरा टिंकटोरिया । cordif olia

अस्या गुणाः ।

महानीली गुणाढ्या स्याद्रंगश्रेष्ठा सुवीर्य्यदा ।
पूर्वोक्तनीलिकादेषा सगुणा सर्वकर्मसु ॥

अर्थ-वडानील-गुणाढ्य, उत्तमरंगवाला, वीर्य्यजनक, नीलकी अपेक्षा यह सर्व गुणोंमें उत्तम है । इसीका भेद एक जंगली नीलभी होती है जो वर्षातमें पहाडकी तलेटीमें पैदा होतीहै ।

शरपुंखानामानि ।

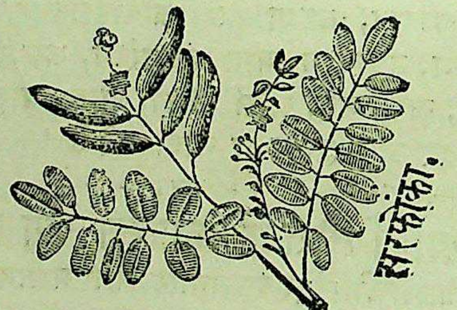

शरपुंखा कालशाकं प्लीहारिः कालिका मता ॥

अर्थ-शरपुंखा, कालशाक, प्लीहारि, कालिका (प्लीहशत्रु, नीलवृक्षाकृति, काण्डपुंखा, बाणपुंखा, इषुपुंखिका, सायकपुंखा, इषुपुंख, शरपुंखा)

श्वेतशरपुंखानामानि ।

शराभिधा च पुंखा स्याच्छ्वेताद्या सितसायका ।
सितपुंखा श्वेतपुंखा शुभ्रपुंखा च पञ्चधा ॥

अर्थ-श्वेतशरपुंखा, सितसायका, सितपुंखा, श्वेनपुंखा, शुभ्रपुंखा ।

कंठपुंखानामानि ।

अन्या तु कंठपुंखा स्यात्कंठालुः कंठपुंखिका ॥

अर्थ-कण्ठपुंखा, कंठालु, कण्ठपुंखिका ।

संस्कृतभाषामें	शरपुंखा, श्वेतशरपुंखा, कण्ठपुंखा ।	
हिन्दीभाषामें	सरफोंका, सफेद सरफोंका, कण्ठपुंखा ।	
वंगभाषामें	बननील, सादवननील ।	
मराठीभाषामें	उन्हाळी ।	
कर्णाटकीभाषामें	येरडुकोग्गि, मल्लुकोग्गि ।	
तैलिङ्गीभाषामें	प्रांपोराचेट्टु, तेल्लवेंपल्लिचेट्टु ।	
तामिलीभाषामें	कोल्लुक्कवकेल्लापि ।	
दा०	जंलिकुलाथि ।	
इंग्रेजीभाषामें	परपल्टेफ्रोझिया ।	Purpletephrosia
लैटिन्भाषामें	टेफ्रोझियापरपूरिया ।	Tephrosia Purpurea

शरपुंखागुणाः ।

शरपुंखा यकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहा ।
तिक्तः कषायः कासास्रश्वासज्वरहरो लघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरफोंका-यकृत, प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषविनाशक है। तथा कडवा, कषेला, हलका, और खांसी, रुधिरविकार, श्वास तथा ज्वरको दूर करनेवाला है ।

अपि च ।

शरपुंखा कटूष्णा च कृमिवातरुजापहा ।
श्वेता त्वेषा गुणाढ्या स्यात्प्रशस्ता च रसायने॥ (रा. नि.)

अर्थ-सरफोंका-चरपरा, गरम, कृमि और वातनाशक है; सफेद सरफोंका सरफोंकेकी अपेक्षा अधिक गुणवाला और रसायनकार्य्यमें उत्तम है ।

अन्यच्च ।

शरपुंखा तु कटुका तिक्तोष्णा तुवरा लघुः ।
यकृत्कृमिप्लीहगुल्मव्रणकासविषापहा ॥
श्वासार्शरक्तदोषघ्नी हृद्रोगकफजूर्त्तिहा ।
वातं कफोदरं व्यंगं गलत्कुष्ठं च नाशयेत् ॥
श्वेतायाःशरपुंखाया रक्तातो ह्यधिका गुणाः । (नि० र०)

अर्थ-सरफोंका-चरपरा,कडवा,गरम, कषेला, हलका तथा यकृत, कृमि,प्लीहा, गुल्म,व्रण,खांसी,विष, श्वास, बवासीर, रुधिरविकार, हृदयरोग, कफ, ज्वर,बात,कफोदर,व्यङ्ग (झाँई) और गलत्कुष्ठको नष्ट करताहै। रक्त शरफोंकेसे सफेद अधिक गुणवाला है।

कंठपुंखागुणाः।

[illegible]

कंठपुंखा कटूष्णा च कृमिशूलविनाशिनी ॥(रा० नि०)

अर्थ-कंठपुंखा-चरपरा, गरम, तथा कृमि और शूलविनाशकहै।

विवरण। सरफोंकेका क्षुप होता है, पत्ते-नीलके समान होतेहैं, फूल-लाल और बारीक होते हैं, फलियोंके ऊपर रुँआ होता है, दूसरे प्रकारकी फलियोंपै रुँआ नहीं होता। सफेद सरफोंकेका क्षुप, पृथ्वीपर फैलाहुआ होता है, पत्ते-लाल सरफोंकेसे कुछेक छोटे होते हैं, फूल-सफेद होते है। शरफोंकेकी जड-चिलममें रखकर पीनेसे खांसी और श्वास दूर होता है। सरफोंकेकी मात्रा ४ मासे । कंठपुंखेकी मात्रा ५ मासे। यह पटियालामें बहुत होता है

दुरालभानामानि।

दुरालभा दुरालम्भा समुद्रान्ता च रोदिनी।
गान्धारी कच्छुराऽनन्ता:कषाया दुरभिग्रहा ॥

अर्थ-दुरालभा, दुरालंभा, समुद्रान्ता, रोदिनी,गांधारी,कच्छुरा, अनन्ता,कषाया, दुरभिग्रहा(दुःस्पर्शा, कुनाशक,रोदनी,धनुर्यास, युवस कच्छुरा,धन्वयवास,विकण्टक,आत्ममूली,पद्ममुखी,इदंकार्य्या, धन्वयास,ताम्रमूला, कच्छुरा,धन्वी, धन्वयवासक,प्रबोधिनी,सूक्ष्मदला, विरूपा, दुर्लभा, दुष्प्रधर्षा,ताम्रमूली, मरुज्जन्मा, उष्ट्रभक्ष्या, मृदुपर्णा,कषायका,प्राह्लादनी,विरूपा,फणिहारी,विशारदा,रविग्रहा, अजाभक्ष्या, ग्राहिणी, सूक्ष्मदला)

संस्कृतभाषामें	दुरालभा।
हिन्दीभाषामें	धमासा,हिंगुणा।
वंगभाषामें	दुरालभा।
मराठीभाषामें	धमासा।
गुजरातीभाषामें	धमासो।
कर्णाटकीभाषामें	वल्लिदुरुवे।
तैलिङ्गीभाषामें	पिलरेगटि, दुलगोंडि।

लैटिन्भाषामें	फगोनियाएरेबिका । Fogonia-arabica
फारसीभाषामें	बादावर्द ।
अरबीभाषामें	शुकाई ।

अस्या गुणाः ।

उष्ट्रभक्ष्यामरुच्छ्वासविषघ्नी बोधकृत्परा ।
कषाया ज्वरहृच्छीता तथाऽतीसारनाशिनी ॥ (ध०नि

अर्थ-धमासा-बोधकारक, कषेला, शीतल, तथा वात, श्वास, वि
ज्वर और अतिसारनाशक है ।

अन्यच्च ।

दुरालम्भा कटुस्तिक्ता सोष्णा क्षाराम्लिका तथा ।
मधुरा वातपित्तघ्नी ज्वरगुल्मप्रमेहजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-धमासा-चरपरा, कडवा, गरम, खारी, खट्टा, मीठा तथा वात, पित्त, ज्वर, गुल्म और प्रमेहको हरैहै ।

अपिच ।

दुरालभा कटुस्तिक्ता मधुरा रक्तशुद्धिकृत् ।
शीता चोष्णा विसर्पघ्नी विषमज्वरनाशिनी ॥
तृट्छर्दिमेहगुल्मघ्नी मोहरक्तरुजापहा ।
वातं पित्तं कफं कुष्ठं ज्वरं चैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-धमासा-चरपरा, कडवा, मीठा, रक्तशोधक, शीतल, गरम तथा विसर्प, विषमज्वर, तृषा, वमन, प्रमेह, गुल्म, मोह, रुधिरविकार, वातपित्त, कफ, कोढ और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । धमासेका रेतली भूमिमें छत्ता होता है, कांटे बारीक होते हैं, पत्ते-सूक्ष्म और फलभी बहुत छोटे २ होते हैं । मात्रा ६ मासेकी ।

यवासनामानि ।

यासो यवासकोऽनन्ता बालपत्रोऽधिकंटकः ।
दूरमूलः समुद्रान्तो दीर्घमूलो मरूद्भवः ॥

अर्थ-यास, यवासक, अनन्ता, बालपत्र, अधिकण्टक, दूरमूल, समुद्रान्त, दीर्घमूल, मरूद्भव (यवास, कण्टकी, बहुकण्टक, क्षुद्रेंगुदी,

रोदनिका, विषघ्न, कण्टकालुक, त्रिपर्णिका, गन्धारी, वासन्त, वनदर्भ, विवर्णक, तीक्ष्णकण्टक सूक्ष्मपत्र)

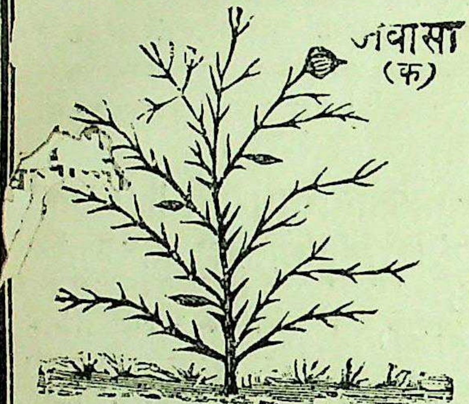

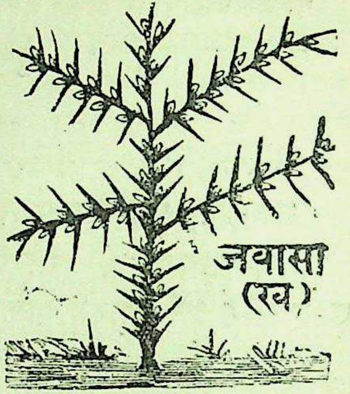

संस्कृतभाषामें	यवास।
हिन्दीभाषामें	जवासा दुलाह।
वंगभाषामें	यवासा।
मराठीभाषामें	कांटेचुबुक, तांबडा धमासा।
गुजरातीभाषामें	जवासो।
कर्णाटकीभाषामें	तोरे इंगलु।
लैटिन्भाषामें	अल्हेजाई मरोरम। Alhagimaurorum
फारसीभाषामें	फराक्तुन।
अरबीभाषामें	अलग़ुल हाज।

अस्य गुणाः ।

यासः स्वादू रसस्तिक्तस्तुवरः शीतलो लघुः ।
कफमेदोमदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकासजित् ॥
तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरः स्मृतः ।(धन्वन्तरिनि०)

अर्थ-जवासा-स्वादिष्ठ, कडवा, कषेला, शीतल हलका, तथा कफ, मेद, मद, भ्रांन्ति, रक्तपित्त, कोढ, खाँसी, तृषा, विसर्प, वात रक्त, वमि और ज्वरको दूर करेहै।

अन्यच्च ।

यासस्तु मधुरस्तिक्तो बल्यश्चाग्निप्रदीपकः ।
सरः शीतो लघुश्चैव तुवरः कफपित्तजित् ॥

रक्तरुक्कुष्ठवीसर्पमेदभ्रममदापहः ।
वातरक्तं तृषां छर्दिं कासं दाहं ज्वरं हरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ- जवासा-मधुर, कडवा, बलकारक, अग्निको दीपन करनेवाला, सारक, शीतल, हलका, कषेला तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, कोढ, विसर्प, मेद, भ्रम, मद, वातरक्त, पियास, वमन, खाँसी, दाह और ज्वरका नाश करे है ।

विवरण । जवासा-धमासेकी समान होता है, और यह जलाशयके समीपकी भूमिमें अधिक उत्पन्न होतेहैं । इसके काँ धमासेसे कुछेक बडे होते हैं, और पत्ते भी किञ्चित् बडे होते हैं । प्रायः जवासेके गुण धमासेसे मिलते हैं । वर्षाऋतुके आदि अन्तमें यह फलता फूलता है, और वर्षाऋतुमें तो आपसे आपही जलजाता है । अंबाले पटियालेमें बहुत होताहै । इसीमें लगनेवाली शर्कराको जवासशर्करा या तरंजबीन कहते हैं ।

मुण्डीनामानि ।

श्रावणी श्रवणा मुण्डी भूतघ्नी च पलङ्कषा ॥

अर्थ-श्रावणी, श्रवणा, मुण्डी, भूतघ्नी, पलङ्कषा, (कदम्बपुष्पा, अरुणा, मुण्डीरिका, कुम्भला, भिक्षु, श्रवणशीर्षिका, प्रव्रजिता, परिव्राजि, तपोधना)

महामुण्डीनामानि ।

महाश्रावणिकाऽन्या तु सा स्मृता भूकदम्बिका ।
कदम्बपुष्पिका च स्यादव्यथाऽतितपस्विनी ॥

अर्थ-महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, कदम्बपुष्पिका, अव्यथा, तपस्विनी, (महामुण्डी, लोचनी, कदम्बपुष्पी, विकचा, क्रोडचूडा, पलङ्कषा, नदीकदम्बा मुण्डाख्या, महामुण्डनिका, माता, स्थविरा, लोतनी, भूकन्द, अलम्बुषा, वृद्धा, छिन्नग्रन्थिका, नीलकदम्बिका बोडा)

संस्कृतभाषामें	मुण्डी, महामुण्डी, महाश्रावणिका ।
हिन्दीभाषामें	मुण्डी, छोटीमुण्डी, गोरखमुण्डी, बडीमुण्डी
वंगभाषामें	मुंडिरी, मुण्डी, थुलकुडी, बडथुलकुडी ।
मराठीभाषामें	बरसवोडी, बोडथरा ।
गुजरातीभाषामें	मुंडी, गोरखमुंडी, बोडियोकलार ।
कर्णाटकीभाषामें	कीपोवोडतर, हिरीपवोडतर ।
तैलिङ्गीभाषामें	वोडसरपुचेट्टु ।

ता० वमू०	कोट्टक।
लैटिन्भाषामें	स्फिरेंथस इंडिकस (Sphoeranthus indicus)
अरबीभाषामें	कमादर युस।

मुण्डीगुणाः।

मुण्डी तिक्ता कटुः पाके वीर्य्योष्णा मधुरा लघुः।
मेध्या गंडापचीकृच्छ्रकृमिपित्तार्तिपाण्डुनुत् ॥
श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्त्तिनुत्। (ग० नि०)

अर्थ-मुण्डी-कडवी, पचनेमें चरपरी, उष्णवीर्या, मधुर, हलकी, मेधाजनक तथा गलगंड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, पित्तकी पीडा, पाण्डुरोग, श्लीपद, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा, मेद और गुदाकी वेदनाको दूर करे है।

अन्यच्च।

श्रावणी तु कषायोष्णा पाके तिक्ता च तीक्ष्णका। मधुरा भेदका लघ्वी मेध्या बल्या रसायना ॥ गलगंडं गंडमालामपचीं कफवातकम्॥ प्लीहामेदमथोन्मादं श्लीपदं पाण्डुरोगकम् ॥ अरुचिं योनिशूलं च कासमर्शं च कृच्छ्रकम्। पित्तं चाममपस्मारं कृमिं श्वासं च कुष्ठकम् ॥ विषदोषं चातिसारं छर्दिं चैव विनाशयेत्।

अर्थ-गोरखमुण्डी-(मुण्डी) कषेली, गरम, पचनेमें चरपरी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, मेधाजनक, बलकारक, रसायन, तथा गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, कफ, वात, प्लीहा, मेदोरोग, उन्मादरोग, श्लीपद, पाण्डुरोग, अरुचि, योनिशूल, खाँसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, पित्त, आमदोष, मृगी, कृमि, श्वास, कोढ, विषविकार, अतिसार और वमनको दूर करनेवाली है।

महाश्रावणिकागुणाः।

महामुण्डी तु मधुरा तिक्ता चोष्णा रसायनी।
रुच्या स्वर्या प्रमेहघ्नी वातनाशकरी मता ॥
अन्ये गुणास्तु मुण्डीवज्ज्ञेया वैद्यैश्च सूरिभिः। (नि० र०)

अर्थ-महामुण्डी-मधुर, कडवी, गरम, रसायन, रुचिकारक, स्वरको

शुद्ध करनेवाली, प्रमेहनाशक और वातविनाशक है। शेष गुण मुण्डीकी समान जानने।

विवरण। मुण्डी और महामुण्डी तृणके समान प्रसर जातिकी वनस्पति है, फल गोल घुण्डीसदृश होतेहैं। अम्बाला जिलाके रानीके रायपुर ग्राममें यह बहुत होती है गोरखमुण्डी घण्डी, मुडली, नामसे प्रसिद्ध है, जिला मुंगेरमें अमावा राज्यमें बहुत होती [illegible]

अपामार्गनामानि।

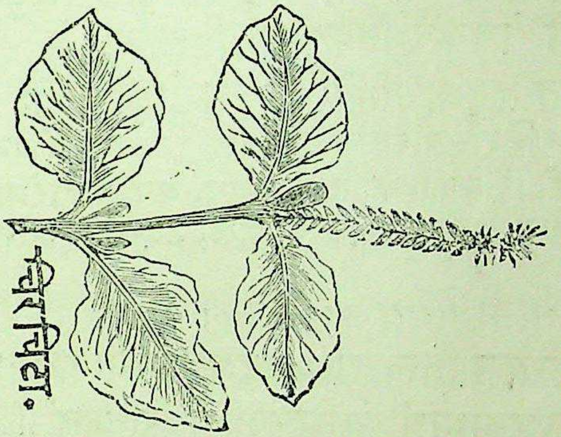

अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ।
प्रत्यक्पर्णी कीशपर्णी किणिही खरमञ्जरी॥

अर्थ-अपामार्ग, शैखरिक, धामार्गव, मयूरक, प्रत्यक्पर्णी, कीशपर्णी, खरमञ्जरी, (अपाङ्गक, किणी, कीशपर्णी, चमत्कार, शैखरेय, अघामार्गव, केशपर्णी, स्थलमञ्जरी, प्रत्यक्पुष्पी, क्षारमध्य अधोघण्टा, शिखरी, दुर्ग्रह, अध्वशल्य, कान्तरिक, मर्कटी, दुरभिग्रह, वासिर, पराक्पुष्पी, कण्टी, कर्कटपिप्पली, कटुमञ्जरिका, अघाट, क्षुरक, पाण्डुकण्टक, तालाकंट, कुब्ज, मालाकण्ट, अघाट)

संस्कृतभाषामें	अपामार्ग।
हिन्दीभाषामें	चिरचिटा, लटजीरा, ओंगा।
वंगभाषामें	आपाङ्ग।
मराठीभाषामें	अघाडा।
गुजरातीभाषामें	अघेडो।
कर्णाटकीभाषामें	उत्तरणे, चिचिरा।
तैलिङ्गीभाषामें	दुच्चीणिके।

इंग्रेजीभाषामें	रफ्चेफट्री ।	Bough Caffi tree
लैटिन् भाषामें	एचिरैंथिस् एस्पिरा ।	Achyranthisaspera
	ऑकिरैंथस् आल्टर निफोलिया ।	A. Alternifolia
फारसीभाषामें	खारवासगोता ।	
अरबीभाषामें	अत्कम ।	

अपामार्गगुणाः ।

अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनस्तिक्तकः कटुः ।
पाचनो रोचनश्छर्दिकफमेदोनिलापहः ॥
निहन्ति हृद्रुजाध्मार्शः कण्डूशूलोदरापचीः । (भा०प्र०)

अर्थ-चिरचिरा-सारक (दस्तावर) तीक्ष्ण, दीपन, कडवा, चरपरा, पाचक, रुचिकारक, तथा वमन, कफ, मेदोरोग, वात, हृदयरोग, आध्मान, बवासीर, कण्डू, शूल, उदररोग और अपचीको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अपामार्गस्तु तिक्तोष्णः कटुश्च कफनाशनः ।
अर्शःकण्डूदरामघ्नो रक्तहृद्ग्राहिवान्तिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चिराचिरा-कडवा, गरम, चरपरा, कफनाशक तथा कण्डू, उदररोग, आम और रुधिरविकारको दूर करे है, तथा मलरोधक और वमनकारक है ।

अपिच ।

अपामार्गोऽग्निवत्तीक्ष्णः क्लेदनः स्रंसनः सरः ॥ (रा. व.)

अर्थ-चिरचिरा-अग्निकी समान तीक्ष्ण, क्लेदक, स्रंसन और सारक है ।

अन्यच्च ।

अपामार्गोऽग्निकृत्तीक्ष्णो नस्याच्छीर्षकृमीञ्जयेत् ।
वामको रक्तसंग्राही रक्तातीसारनाशनः॥
नस्ये वान्तौ प्रशस्तः स्याद्दद्रुकण्डूकफापहः । (शो० नि०)

अर्थ-चिराचिरा-अग्निकारक, तीक्ष्ण और इसका नास-शिरके कीडोंको दूर करे है । वमनकारक, रक्तविकारनाशक और रक्तातिसारनिवारक है, चिरचिरा-नास और वमनकर्म्ममें प्रशंसायोग्य है तथा दाद, खुजली और कफनाशक है ।

विवरण- । चिरचिटेका क्षुप होताहै, पत्ते-गोल होते हैं, पत्तोंके बीचमेंसे एक बाल निकलती है, उस बालमें सूक्ष्म और मृदु काँटेयुक्त बीज होते हैं उन बीजोंको पीसकर पीनेसे बवासीर दूर होती है। चिरचिटेके क्षारके गुण क्षारवर्गमें देखो ।

रक्तापामार्गनामानि ।

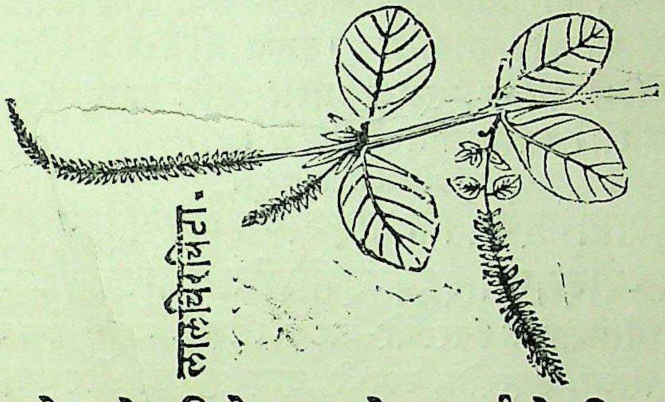

रक्तोऽन्यो वशिरो वृत्तफलो धामार्गवोऽपि च ।
प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी कथिता कपिपिप्पली ॥

अर्थ-रक्तापामार्ग, वशिर, वृत्तफल, धामार्गव, प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी, कपिपिप्पली, (क्षुद्रापामार्ग, आघट्टक, दुग्धनिका, रक्तविट, कल्पपत्रिका, क्षव, अधामार्गव, प्रत्यक्श्रेणी, खरच्छद, कूट, मर्कटपिप्पली, कुब्ज और दुरभिग्रह)

संस्कृतभाषामें	रक्तापामार्ग ।
हिन्दीभाषामें	लालचिरचिरा ।
वंगभाषामें	रांगाआपांगः।
मराठीभाषामें	लालअघाडा ।
गुजरातीभाषामें	झिपटो ।
कच्छीभाषामें	केंपिगुत्तरणे ।
तैलिङ्गीभाषामें	उतरायणी-केंपिगुत्तरणे ।
लै०	एकिरेंथिसलेपेरिया ।

अस्य गुणाः ।

रक्तापामार्गकः किञ्चित्कटुकः शीतलः स्मृतः । मलावष्टम्भवमिकृद्वातविष्टम्भकारकः ॥ रूक्षो व्रणं विषं वातं कफं कण्डूं

च नाशयेत् । बीजमस्य रसे पाके दुर्जरं स्वादु शीतलम् ॥
मलावष्टम्भकं रूक्षं वान्तिकृद्रक्तपित्तजित् । कासनाशकरं
प्रोक्तं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-लाल चिरचिरा-किंचित् चरपरा, शीतल,मलावष्टंभक,वमनजनक, वात, और विष्टम्भकारक,रूखा तथा व्रण, विष,वात,कफ और खुजलीको दूर करनेवाला है। इसके बीज-रस और पाकमें दुर्जर, स्वादिष्ठ, शीतल, मलावष्टम्भक, रूखे, वमनकारक, रक्त-पित्तनाशक और खांसीको हरनेवाले हैं ।

द्विविधापामार्गगुणाः।

अपामार्गद्वयं तिक्तं तीक्ष्णोष्णं कफवातनुत् ।
सिध्मोदरापचीदद्रुकण्डूर्शोहन्ति वान्तिकृत्॥ (म० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके चिराचिरे-कडवे, तीक्ष्ण, गरम, कफ,वातनाशक तथा सिध्म, उदररोग, अपची, दाद, खुजली और बवासीरको दूर करे हैं और वमनजनक हैं ।

अपि च ।

अपामार्गद्वयं तिक्तं कृमिशीर्षविशोधनम् ।
वातकं रक्तसंग्राहि रक्तातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारके चिराचिरे-कडवे, कृमि आर शीर्षशोधक, वमनकारक, रक्तरोध और रक्तातिसारनाशक हैं ।

विवरण। लाल चिरचिटाभी उसीप्रकार होता है,इसके पत्ते-कुछ २ गोल और लाल होतेहैं, फूल-पीले और फल-लाल २ बालपर लगे होतेहैं परन्तु उनके ऊपर कांटेभी होतेहैं, इसप्रकार लाल और सफेद दो जातिका चिराचिटा होताहै । अपामार्ग पुठकंडा आधाझारा आदिनामसे सबदेशोंमें मिलताहै पंजाबमें,प्रायः सर्वत्र होताहै।

कोकिलाक्षनामानि।

कोकिलाक्षस्तु काकेक्षुरिक्षुरः क्षुरकः क्षुरः ।
भिक्षुकाण्डेक्षुरप्युक्त इक्षुगन्धेक्षुवालिका ॥

अर्थ-कोकिलाक्ष,काकेक्षु,इक्षुर,क्षुरक, क्षुर, भिक्षु, काण्डेक्षु, इक्षुगन्धा, इक्षुवालिका, (कोकिलाक्षक, कोकिलनयन, शृगाली,

शृंखलि, शूरक, शृगालघण्टी, वज्रास्थि, शृंखला, वज्रकण्टक वज्र, शृंखलिका, पिकेक्षणा, पिच्छिला) (वीरतरु, त्रिक्षुर, क्षुरक, शुक्रपुष्प और कुलाहक यह नाम सफेद कोकिलाक्षके हैं) (छत्रक और अतिच्छत्र यह दो नाम लाल कोकिलाक्षके हैं)

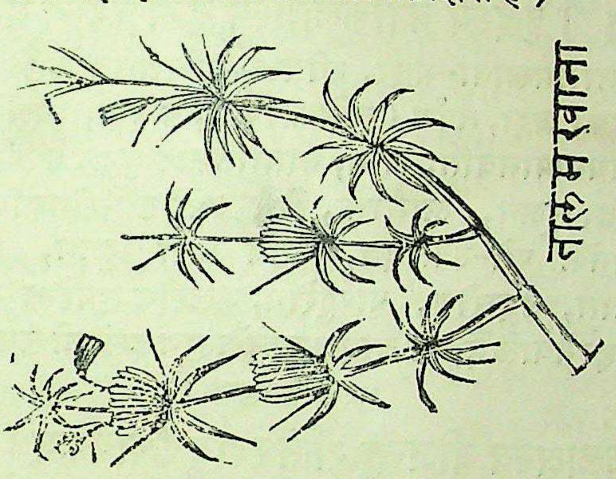

संस्कृतभाषामें	कोकिलाक्ष ।
हिन्दीभाषामें	तालमखाना-कैलया ।
वंगभाषामें	कुलियाखाडा, कुलेकाँटा, कुलक, शूलमर्दनइत्यादि
मराठीभाषामें	विखरा ।
कोंकणीभाषामें	कोलस्ता ।
गुजरातीभाषाम	एखरो ।
कर्णाटकीभाषामें	कुलुगोलिके ।
तैलिङ्गीभाषामें	गोबी । गोलिमिडिचेट्टु ।
औत्कलिभाषामें	कुइलिरखा, माखुरेण ।
इंग्रेजीभाषामें	लांगलिव्ड बार्लेरिया । Longleaved Barlaria
लैटिन्भाषामें	एष्टकैंथा लोंजिफोलिया ।AStercantha Longifolia

अस्य गुणाः ।

कोकिलाक्षो मधुः शीतो रुच्यो बल्यो गुरुः स्मृतः ।वृष्योऽम्लस्तर्पणस्तिक्तः स्वादुः स्निग्धश्च चिक्कणः ॥ आमवातामवातातिसारतृष्णाश्मरीरुजः । वातास्रमेहशोथामरक्तरुङ्नाशनो मतः ॥ पित्तं च दृष्टिरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तितः ।

अस्य पत्रगुणाः ।

पर्णञ्च स्वादु तिक्तं स्याच्छोथशूलविषापहम् । आनाहवातमुदरं पाण्डुरोगञ्च नाशयेत् ॥ बन्धञ्च मलमूत्राणां वातमेवं च नाशयेत् । वृद्धस्य कोकिलाक्षस्य गुणास्त्वस्य समा मताः ॥

अर्थ-तालमखाना-मधुर, शीतल, रुचिकारक, बलकारक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, खट्टा, तर्पण (तृप्तिकारक), कडवा, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, चिक्कण तथा आमवात, आम, वातातिसार तृषा, पथरीरोग, वातरक्त, प्रमेह, सूजन, आमरक्त, पित्त और दृष्टिरोगको दूर करे है । तालमखानेके पत्ते-स्वादिष्ठ, कडवे तथा सूजन, शूल, विष, आनाहवात, उदररोग, पाण्डुरोग, मलरोध मूत्ररोध और वाताष्टंभको हरनेवाले हैं, बडे तालमखानेके गुण इसीकी समान जानने ।

अस्या बीजगुणाः ।

कोकिलाक्षस्य बीजन्तु शीतं स्वादु कषायकम् । तिक्तं वृष्यं गुरुर्बल्यं ग्राहकं गर्भस्थापनम् ॥ कफवातकरञ्चैव मलस्तम्भकरं तथा । रक्तदोषं च दाहं च पित्तं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-तालमखानेक बीज-शीतल, स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, बलकारी, गर्भस्थापक, कफवातकारक, मलस्तंभक तथा रुधिरविकार दाह और पित्तको हरनेवाले हैं ।

विवरण । कोकिलाक्ष अर्थात् कैलयाके क्षुप प्रायः जलके निकट तथा चौमासेकी ताल, और तलैयोंमें उत्पन्न होजाते हैं, पत्ते-लम्बे होते हैं क्षुपपै कांटे होते हैं गूमकी समान गांठें होती हैं, उन गांठोंमेंसे बीज निकलता है उसको तालमखाना कहते हैं ।

घृतकुमारीनामानि ।

सहा घृतकुमारी च कुमारी दीर्घपत्रिका ।
अफला सुरसा कन्या मृदुर्घृतकुमारिका ॥

अर्थ-सहा, घृतकुमारी, दीर्घपत्रिका, अफला, सुरसा, कन्या, मृदुघृतकुमारिका, (तरणि, सुवहा, बहुपत्री, कन्या, स्थलेरुहा, बहुपत्री, अमरा, अजरा, कण्टकप्रावृता, विपुलस्रवा, ब्रह्मघ्नी, वीरा, भृङ्गेष्टा,

तरुणी, रामा, कपिला, अम्बुधिस्रवा, सुकण्टका, स्थूलदला, गृहकन्या, अदला, मण्डला, माता, अतिपिच्छिला, रसायनी, कण्टकिनी)

संस्कृतभाषामें	घृतकुमारी ।	
हिन्दीभाषामें	घिगुवार, ग्वारंपाठा, कुवारपाठा ।	
वंगभाषामें	घृतकुमारी ।	
मराठीभाषामें	कोरफड, कोरफांटा ।	
गुजरातीभाषामें	कुवार ।	
कर्णाटकीभाषामें	लोयिसर ।	
तैलिङ्गीभाषामें	पिन्नगोरिण्टकलवन्द, विरजाजितोगे ।	
इंग्रेजीभाषामें	बार्बेडोझ्आलोझ् ।	Barbadoesaloes
लैटिन्भाषामें	आलाइबार्बडेन्स ।	Aloebarbadense
फारसीभाषामें	दरखतेसिन्न ।	
अरबीभाषामें	मुसबर ।	

अस्या गुणाः ।

कुमारी भेदिनी शीता तिक्ता नेत्र्या रसायनी । मधुरा बृंहणी बल्या वृष्या वातविषप्रणुत् ॥ गुल्मप्लीहयकृच्छर्दिकफज्वरहरीभवेत् । ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटरक्तपित्तत्वगामयान् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ–घीकुवार–भेदक (दस्तावर) शीतल, कडवा, नेत्रोंको हितकारी, रसायन, मधुर, बृंहण, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, तथा वात, विष, गुल्म, प्लीहा, यकृत्, वमन, कफज्वर, ग्रन्थि, अग्निदग्ध, विस्फोट, रक्तपित्त और त्वचाके रोगोंको दूर करे है।

अन्यच्च ।

गृहकन्या हिमा तिक्ता मदगन्धिः कफापहा ।
पित्तकासविषश्वासकुष्ठघ्नी च रसायनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ–घीकुवार–शीतल, कडवा, मदगन्धियुक्त, कफनाशक तथा पित्त, खांसी, विष, श्वास और कुष्ठको नष्ट करे है और रसायन है।

अस्य दण्डादिगुणाः ।

तन्मध्यदण्डो मधुरः कुमारीसदृशो गुणैः ।
विशेषात्कृमिपित्तघ्नः पुष्पमस्य गुरु स्मृतम् ॥
वातं पित्तं कृमींश्चैव नाशयेदिति कीर्तितम् ।

अर्थ-इसके बीचका डंडा-घीकुवारकी समान गुणवाला है विशेषकरके मधुर तथा कृमि और पित्तनाशक है । इसके फूल भारी तथा वात, पित्त और कृमिको दूर करनेवाले हैं ।

विवरण। घीकुवारका क्षुप-खारी पृथ्वी, रेतली भूमि तथा नदीके तटके निकट अधिकतासे उत्पन्न होते हैं; पत्ते-लम्बे और मोटे होते हैं । पत्तोंकी दोनों ओर कांटे होते हैं, इनके भीतर घीके समान गूदा निकलता है; पत्तोंके छोर अनीदार होते हैं, घीकुवारके बीचसे डंडा निकलता है, उसमें लाल फूल आता है । घीकुवारके रससे एलुआ बनाया जाता है ।

एलीयकनामानि ।

एलीयकः कृष्णबोलः कुमारी सारतोद्भवः ॥

अर्थ-एलीयक, कृष्णबोल, कुमारी, सारतोद्भव ।

संस्कृतभाषामें	एलीयक ।
हिन्दीभाषामें	एलवा ।
मराठीभाषामें	कालाबोळ, एल्याबोळ ।
गुजरातिभाषामें	एलियो, शिकातरी एलियो ।
तैलङ्गीभाषामें	भोलं ।
इंग्रेजीभाषामें	सौकोट्राइन आलोझ । Socotrine aloes
लैटिन्भाषामें	आलोसोकोट्रीना । Aloe socotrina
फारसीभाषामें	मुसब्बीर ।
यु०	फेकरा ।
अरबीभाषामें	सीबरसुकुतरे ।

अस्य गुणाः ।

कृष्णबोलः कटुः शीतो भेदको रसशोधनः ।
शूलाध्मानकफान्वातं कृमिगुल्मौ च नाशयेत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-एलुवा-चरपरा, शीतल, दस्तावर, पारेको शोधनेवाला तथा शूल, अफारा, कफ, वात, कृमि और गुल्मको दूर करनेवाला है।

क्षुद्रकेतकीनामानि ।

काककेतकिका क्षुद्रकेतकी तृणकेतकी ।
रज्जुदात्री मध्यदण्डा पृथक्पुष्पा च सा स्मृता ॥

अर्थ-काककेतकी, क्षुद्रकेतकी, तृणकेतकी, रज्जुदात्री, मध्यतुण्डा, पृथक्पुष्पा ।

हिन्दीभाषामें	रामबाँस (न)
गुजरातीभाषामें	केतकी ।
लैटिन्भाषामें	एलोअमेरिकाना । Aloe Americana

विवरण-रामबाँसके-वृक्ष प्रायः बाग और खेतोंकी बाडोंपर अधिकतासे होतेहैं; यह घीकुवारकी समान होते हैं, परन्तु घीकुआरसे कुछ कालापन लिये और बडे तथा पतले होते हैं, इसपर लाल और सफेद रंगके गुच्छेदार फूल आते हैं । पंजाबमें रामवाण नामसे प्रसिद्ध है केतकी (केवडे) पत्रोंकेसे लम्बे पत्र होते हैं ।

अस्या गुणाः ।

श्वेता तु केतकी कट्वी स्वाद्वी तिक्ता लघुः स्मृता । विषं कफं नाशयति पुष्पमस्या लघु स्मृतम् ॥ कटु तिक्तं कान्तिकरमुष्णं वातकफापहम् । केशदुर्गन्धितापघ्नं केसरः सिध्मकण्डुहा ॥ किञ्चिदुष्णं फलं स्वादु वातमेहकफापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-रामबाँस-चरपरा, स्वादु, कडवा, हलका तथा विष और कफनाशक है । इसका फूल-हलका, चरपरा, कडवा, कान्तिजनक, गरम, वातकफनाशक, केशोंकी दुर्गन्धताको दूर करनेवाला और तापनाशक है । इसके फूलका जीरा-सिध्म और कण्डूनाशक है । इसका फल किञ्चित् उष्ण, स्वादिष्ठ तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है ।

पाण्डुफलीनामानि ।

पाटली स्यात्पाण्डुफलीधूसरा वृत्तबीजका ।
पाण्डुफला भूरिफला तथा सप्ताह्वयाभिधा ॥

अर्थ-पाटली, पाण्डुफली, धूसरा, वृत्तबीजका, पाण्डुफला, भूरिफला ।

हिन्दीभाषामें	पाटली ।
मराठीभाषामें	पांढरफली ।
गुजरातीभाषामें	शौणवी ।
कर्णाटकीभाषामें	पाटरफल मणमंडं ।
लै०	फ्लाजिया ल्युकोपाईरस Flujia leucopyrus

अस्या गुणाः ।

पाण्डुफली तु मधुरा बल्या वृष्या च शीतला ।
मूत्राघातं पित्तरोगं मूत्रकृच्छ्रास्ररुग्जयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पाण्डुफला-मधुर, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल तथा मूत्राघात, पित्तरोग, मूत्रकृच्छ्र, और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

शिशिरा पाण्डुरफली गौल्याकृच्छ्र त्रिदोषहा
बल्या पित्तहरा वृष्या मूत्राघातनिवारणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-पाण्डुकली-शीतल,गौल्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, पित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, और मूत्राघातनिवारक है ।

पनसीनामानि ।

पनस्यां रोपणी चोक्ता तथा च कपिकच्छुकः ॥

अर्थ-पनसी, रोपणी, कपिकच्छुक ।

अस्या गुणाः ।

पनसीकाभवं मूलं व्रणरोपणभेदनम् ॥

अर्थ-पनसीकी जड-व्रणको भरनेवाली और दस्तावर है ।

गङ्गाटीनामानि ।

गंगाटचा गंगटी चैव पित्तव्रणप्रसादनी ॥

अर्थ-गंगाटी, गंगटी, पित्तव्रणप्रसादनी ।

अस्या गुणाः ।

गंगेटी बहुविण्मूत्रा कषाया शीतला गुरुः ॥ (शो० नि०)

अर्थ-गांगेटी-मलमूत्रवर्द्धक, कषैली, शीतल और भारी है। तथा व्रण और पित्तनाशक है ।

श्वेतपुनर्नवानामानि ।

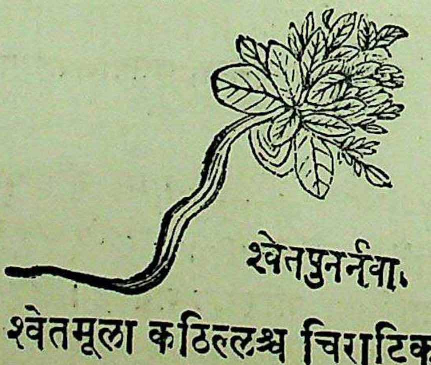

पुनर्नवा श्वेतमूला कठिल्लश्च चिराटिका ।

अर्थ-पुनर्नवा, श्वेतमूला, कठिल्ल, चिराटिका, (वृश्चीरा, श्वेतपुनर्नवा, सितवर्षाभू, वर्षाङ्गी, वर्षाही, विशाख, शशिवाटिका, पृथ्वी, घनपत्र, कठिल्लक, शोथघ्नी, दीर्घपत्रिका ।

रक्तपुनर्नवानामानि ।

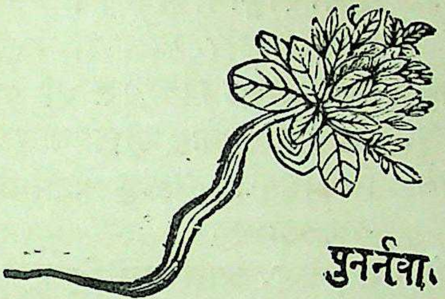

रक्तपुनर्नवाप्युक्ता शोथघ्नी रक्तपत्रिका ।
रक्तकाण्डा वर्षकेतुर्वर्षाभूः प्रावृषायणी ॥

अर्थ-रक्तपुनर्नवा, शोथघ्नी, रक्तपत्रिका, रक्तकाण्डा, वर्षकेतु, वर्षाभू, प्रावृषायणी (कठिल्लक, रक्तपुष्पा, शिलाटिका, वर्षकेतु, क्रूरा, मण्डलपत्रिका, लोहिता, वैशाखी, रक्तवर्षाभू शोफघ्नी, रक्तपुष्पिका, विकस्वरा, विषघ्नी, प्रावृषेण्या, सारिणी, वर्षाभव, शोणपत्र, भौम, पुनर्भव, नव, नव्य)

नीलपुनर्नवानामानि ।

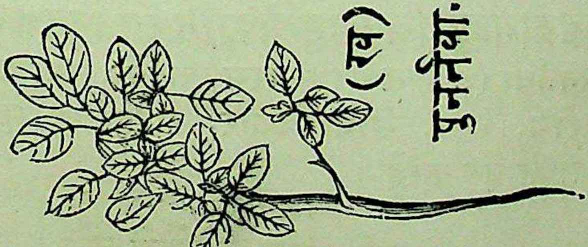

नीला पुनर्नवा नीला श्यामा नीलपुनर्नवा ।
कृष्णाख्या नीलवर्षाभूर्नीलिनी स्वाभिधान्विता ॥

अर्थ-नीलापुनर्नवा, नीला, श्यामा, नीलपुनर्नवा, कृष्णाख्या, नलिवर्षाभू, नीलिनी ।

संस्कृतभाषामें	पुनर्नवा, श्वेतपुनर्नवा, रक्तपुनर्नवा, नीलपुनर्नवा ।
हिन्दीभाषामें	विषखपरा, साँठ, गदहपूर्णा, नीलीसांठ, गदहपुरेना इत्यादि ।
वंगभाषामें	श्वेतगांदावन्ने, श्वेतपुंण्या, गादापुण्या, नीलगाँदावन्ते, राङ्गागाँदावन्ते ।
राठीभाषामें	घेंटुली पांढरी, खरपऱ्या, रक्तवसु ।
गुजरातीभाषामें	साटोडी४छे खतरी लांबां पाननी राता फूलने निचे धोलाकंद डोला पानने चोमासानी ।
कर्णाटकीभाषामें	बिलीयदुबेल्लडूकिलु केंपिनवेल्लड किलु करीयवेल्लडकिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	गाल्जेरु, आतिकममेदि ।
तामिलीभाषामें	मुकरत्तेकिर ।
वम्०	पुनर्नरा ।
इंग्रेजीभाषामें	स्प्रेंडिंग् होग्नीडू । Spreading Hogneed
लैटिनभाषामें	बौरहाविया डिफ्युझा । Boerhavia Diffusa बोरहेबियाप्रोंकेवन्स । B. procumbens ट्रिरोंथेमा ओब्कार्डाटा । Trironthema Obcardata
अरबीभाषामें	हंदकूकी ।

श्वतपुनर्नवागुणाः ।

श्वेता पुनर्नवा सोष्णा तिक्ता कफविषापहा ।
कासहृद्रोगशूलास्रपाण्डुशोफानिलार्तिनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा (विषखपरा)–गरम, कडवा, तथा कफ, विष, खाँसी, हृदयरोग, शूल, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, सूजन और वातकी वेदनाको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

कटुः कषायारुच्यर्शःपाण्डुहृद्दीपनी परा ।
शोफानिलगरश्लेष्महरी ब्रध्नोदरप्रणुत् (भा० प्र०)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा–चरपरा, कषेला, रुचिकारी, अग्निप्रदीपक तथा पाण्डुरोग, बवासीर, सूजन, वात, विष, कफ, ब्रध्न और उदररोगको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पुनर्नवा तु वीर्य्योष्णा भेदिनी च रसायनी ।
कफानिलामदुर्नामब्रध्नशोथोदरापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा–उष्णवीर्य्य, दस्तावर, रसायन तथा कफ,वात, बवासीर, ब्रध्न, सूजन और उदररोगको दूरकरे है ।

अन्यच्च ।

वर्षाभूर्मधुरा तिक्ता कषाया कटुका सरा ।
क्षारोष्णा दीपनी रूक्षा शोफानिलकफापहा ॥
हृद्या रुच्या जयेदर्शोव्रणपाण्डुगरोदरम् । (ग० नि०)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा–मधुर, कडवा, कषेला, चरपरा, सारक, क्षारयुक्त, गरम, दीपन, रूखा, शोफघ्न, वातविनाशक, कफनाशक, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा बवासीर, घाव, पाण्डु, विष और उदररोगको दूर करेहैं ।

अपिच ।

श्वेता पुनर्नवा तिक्ता चोष्णा कट्वी च तूवरा । रुच्याग्निदीपनी रूक्षा मधुरा पटुसारका ॥ हृद्या शोफं कफं वातं कासमर्शोव्रणं जयेत् । पाण्डून्विषोदरं शूलं हृद्रोगोरःक्षतापहा ॥ घृतेन मूलकं चास्या ह्यंजितं हन्ति पुष्पकम् । मधुना सह मूलं तु ह्यंजितं स्रावनाशकम् ॥ अंजितं मार्कवरसैर्नेत्रकण्डूनिवारणम् । केवलेन जलेनैव ह्यंजितं तिमिरापहम् । जलेन गोशकृता च पिप्पल्या चांजितं यदा ॥ रात्र्यांध्यं नश्यते तेन चोष्णः पर्णरसः स्मृतः ॥ (नि०र०)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा–कडवा, गरम, चरपरा, कषेला, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, रूखा, मधुर, खारी, दस्तावर, हृदयको हितकारी तथा सूजन, कफ, वात, खाँसी, बवासीर, घाव, पाण्डुरोग, विष, उदर, शूल, हृदयरोग और उरःक्षत रोगको दूर करे है । इसकी जडको पीसकर घीमें मिलाकर अंजन करे, वह अंजन आँखोंके फूलेको दूर करता है । इसकी जडमें मधु मिलाकर अंजन करे वह अंजन रक्तस्रावनाशक है । इसकी जडको भांगरेके रसके साथ नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोंकी खुजली दूर होती है । इसकी जडको केवल जलके

साथ आंखोंमें लगानेसे तिमिररोग दूर होता है। गायके गोबरके रसमें इसकी जड और पीपल उबालकर अंजन करलेवे वह अंजन रतोंधिको दूर करनेवाला है, इसके पत्तोंका रस गरम है।

रक्तपुनर्नवागुणाः ।

पुनर्नवारुणा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः ।
वातला ग्राहिणी श्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी (भा० प्र०)

अर्थ-रक्तपुनर्नवा (गदहपूर्ना) कडवा, पचनेमें चरपरा, शीतल, हलका, वातकरक, मलरोधक, तथा कफ, पित्त और रक्तविकारोंको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

रक्तपुनर्नवा तिक्ता सारिणी शोफनाशिनी ।
रक्तप्रदरदोषघ्नी पाण्डुपित्तप्रमर्दिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रक्तपुनर्नवा (गदहपूर्ना साँठ) कडवा, सारक, शोथनाशक तथा रक्त, प्रदररोग, पाण्डुरोग और पित्तको दूर करनेवाला है ।

नीलपुनर्नवागुणाः ।

नीला पुनर्नवा तिक्ता कटूष्णा च रसायनी ।
हृद्रोगपाण्डुश्वयथुश्वासवातकफापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलपुनर्नवा-कडवा, चरपरा,गरम,रसायन तथा हृदयरोग, पाण्डुरोग, सूजन,श्वास, वात और कफनाशक है ।

अस्य पत्रशाकगुणाः ।

पौनर्नवी पर्णशाका चातिरूक्षा कफापहा ।
वाताग्निमांद्यगुल्मघ्नी प्लीहा शूलविनाशिका । (नि० र०

अर्थ-पुनर्नवेके पत्तोंका शाक-अत्यन्त रूक्ष, तथा वात, मंदाग्नि गुल्म, प्लीहा और शूलको दूर करेहै ।

विवरण । साँठ-तीन चार जातिकी होतीहै, फूल-लाल सफेद जुदे २ रंगके होते हैं। इनमें सपेद रंगके फूलका विषखपरा है और लाल रंगकी साँठ अर्थात् गदपुरेना जानना। १-विषखपरेका क्षुप पृथ्वीपर फैलाहुआ होता है । पत्ते-गोल और लाल किनारेदार होतेहैं, फूल सपेद होताहै । २-साँठ-ककरीली पृथ्वीमें अधिकतासे होतीहैं,पत्ते-चौलाईकी समान होते हैं,फूल-लाल होता है पंजाबमें सट्ठी,विषखपरा नामसे प्रसिद्ध है, कालकामें प्रायः बहुत होती है ।

प्रसारणीनामानि।

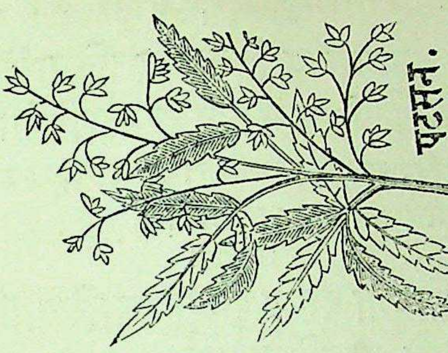

प्रसारणी राजबला गन्धाली च कटम्भरा।
गन्धाढ्या गन्धभद्रा च सारणी सरणी तथा॥

अर्थ-प्रसारणी, राजबला, गन्धाली, कटम्भरा, गन्धाढ्या, गन्धभद्रा, सारणी, सरणी, (भद्रपर्णी, शरणा, शरणी, गन्धोली, सारणी, भद्रबला, भद्रपर्णी, प्रतानिनी, सरणी, सुप्रसरा, सारिणी, प्रसरा, सरा, चारुपर्णी, प्रतानिका, प्रबला, राजपर्णी, चन्द्रपर्णी, चन्द्रवल्ली, प्रभद्रा, प्रसारिणी, बल्या)

संस्कृतभाषामें	प्रसारणी।
हिन्दीभाषामें	गन्धप्रसारणी, पसरन, प्रसारनी।
बङ्गभाषामें	गन्धभादला, गाँधाली, गन्धभादुलिया।
मराठीभाषामें	प्रसारणी, चांदवेल।
गुजरातीभाषामें	प्रसारणवेल्य (नारी)
कर्णाटकीभाषामें	हेसरणे।
तैलिङ्गीभाषामें	गोन्तेमगोरुचेट्टु, सविरेलचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	पिडेरिया फिटीडा Paederia foetida मेकारेंगा टोमेंटोसा ।Macara nga-tomentosa

अस्या गुणाः।

प्रसारिणी गुरुर्वृष्या बलसन्धानकृत्सरा।
वीर्य्योष्णा वातहृत्तिक्ता वातरक्तकफापहा॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, सन्धानकारक, उष्णवीर्य्य, वातनाशक, कडवी तथा वातरक्त और कफको हरनेवाली है।

अन्यच्च ।

प्रसारिणी गुरूष्णा च तिक्ता वातविनाशिनी ।
अर्शःश्वयथुहन्त्री च मलविष्टम्भहारिणी॥ (रा० नि०)

अर्थ-पसरन-भारी, गरम, कडवी तथा वात, सूजन, बवासरि, और मलकी विष्टम्भताको हरनेवाली है ।

अन्यच्च।

वातपित्तहरा सोष्णा बल्या वृष्या प्रसारिणी॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गन्धप्रसारिणी वातपित्तनाशक, गरम, बलकारक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

अपिच ।

सारणी वातरक्तघ्नी सोष्णा वृष्या बलप्रदा ।
कटी च लघु चक्षुष्या स्वर्य्या ज्वरनिशान्ध्यहृत्॥ (शो.नि.

अर्थ-गन्धप्रसारणी-वातरक्तनाशक, गरम, वीर्यवर्द्धक, बलवर्द्धक, चरपरी, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, स्वरको उत्तम करनेवाली तथा ज्वर और रतोंधेको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

प्रसारिणी गुरुश्चोष्णा तिक्ता बल्या सरा मता। भग्नास्थिसन्धानकरी कान्तिकृद्धातुवर्द्धका॥ वातार्शःशोफकफहा मलस्तम्भकरी मता । वातरक्तं त्रिदोषञ्च नाशयेदिति कीर्तिता॥ (नि.र.)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-भारी, गरम, कडवी, बलकारक, सारक, टूटे हुये हाडको जोडनेवाली, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक तथा वातकी बवासीर, सूजन और कफको दूर करनेवाली है, मलस्तम्भकारक और वातरक्त तथा त्रिदोषनाशक है ।

प्रसारणीको संस्कृतमें राजबला कहते हैं, परन्तु अभीतक यह किसीने निश्चय नहीं किया कि, प्रसारणी क्याहै, इसको कोई कोई ग्रन्थकार मराठीमें चांदवेल और गुजरातीमें नारी कहतेहैं, लैटिन्में चांदवलके और प्रसारणीके नाम, लक्षण और गुण अलगरहैं, सो वह नाम, लक्षण और गुण इससे कुछभी मिलते नहीं, क्योंकि चांदवेल मलरोधक है, और प्रसारणी मलको निकालनेवाली अर्थात् दस्तावर है इसमें बडा अन्तर है । पंजाबमें खीव नामसे प्रसिद्ध है ।

शारिवानामानि ।

सारिवा शारिवानन्ता गोपी चोत्पलशारिवा ।
भद्रवल्ली नागजिह्वा कराला भद्रवल्लिका ॥

अर्थ–सारिवा, शारिवा, अनन्ता, गोपी, उत्पलशारिवा, भद्रवल्ली, नागजिह्वा, कराला, भद्रवल्लिका, (गोपवल्ली, सुगन्धा, भद्रा, श्यामा. शारदा, गोपकन्या, गोपा, प्रतानिका, लता, आस्फोता, काष्ठशारिवा, गोपवधू, धवलशारिवा, कृशोदरी)

कृष्णशारिवानामानि ।

श्यामलता च पालिन्दी गोपिनी कृष्णशारिवा ॥

अर्थ–श्यामलता, पालिन्दी, गोपिनी कृष्णशारिवा, (चिन्हधारिणी, दृढबन्धिनी, गोपी, गोपल्ली, गोपा, सारिवा, उत्पलसारिवा, अनन्ता, शारिवा, श्यामा, कालपेषी, महाश्यामा, सुभद्रा, दीर्घमूला, मसूरविदला, कलघण्टिका, गोपवधू, कृष्णमूली, कृष्णा, चन्दनसारिवा, भद्रा, चन्दनगोपा, चन्दना, कृष्णवल्ली)

संस्कृतभाषामें	सारिवा, कृष्णसारिवा ।
हिन्दीभाषामें	गोरीसर, कालीसर, करियासाउ, गौरियासाउ, सालसा, सारिवन इत्यादि ।
वंगभाषामें	अनन्तमूल, श्यामालता, कलघण्टि इत्यादि ।
मराठीभाषामें	श्वेतउपलसरी, कृष्णउपलसरी, सुगन्धउपलसरी।
गुजरातीभाषामें	कपरी, कालीवेलय ।
कर्णाटकीभाषामें	सारिवा ।
तैलङ्गभाषामें	नीलतिग ।
औत्कालिभाषामें	गुपापानमूल ।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियन् सारसापरिला। Indian sarsaparilla.
लैटिन् भाषामें	हेमिडेस्मनेस् इंडिकस्। Hesmid-eisnus indicus.

श्वेतसारिवागुणाः ।

श्वेता तु सारिवा शीता मधुरा शुक्रला गुरुः । स्निग्धा तिक्ता सुगन्धिश्च कुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥ देहदौर्गन्ध्याग्निमांद्यश्वास-

कासारुचीहरा। आमत्रिदोषविषहृद्रक्तरुक्प्रदरापहा॥ कफातिसारतृड्दाहरक्तपित्तहरापरा। वातनाशकरी प्रोक्ता ऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥ (नि० र०)

अर्थ-गोरियासाउ-शीतल,मधुर,शुक्रजनक,भारी,स्निग्ध,कडवी, सुगन्धि तथा कोढ,कण्डू,ज्वर,देहकी दुर्गन्धता,मंदाग्नि,श्वास,खांसी, अरुचि,आम,त्रिदोष,विष,रुधिरविकार, प्रदररोग,कफ, अतिसार, तृषा, दाह, रक्तपित्त और वातको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

अनन्ता ग्राहिणी रक्तपित्तप्रशमनी हिमा॥

अर्थ-गौरीसर-मलरोधक, रक्तपित्तनाशक और शीतल है।

कृष्णशारिवागुणाः।

शारिवा वातपित्तासृक्तृट्छर्दिज्वरनाशिनी॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-कालीसर (करियावासाउ)-वात, पित्त, रुधिरविकार, तृषा, वमन और ज्वरको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

कृष्णातु सारिवा शीता वृष्या च मधुरा मता।
कफघ्नी चैव संप्रोक्ता गुणाश्चान्ये तु पूर्ववत्॥(नि०र०)

अर्थ-कालीसर-शीतल,वीर्य्यवर्द्धक, मधुर और कफनाशक है, शेष गुण श्वेतसारिवाकी समान जानने।

द्विविधशारिवागुणाः।

सारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरु।
अग्निमांद्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम्॥
दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम्। (भा० प्र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी सारिवा-स्वादिष्ट, स्निग्ध, शुक्रजनक,भारी तथा मन्दाग्नि, अरुचि, श्वास, खांसी,आम, विष, त्रिदोष,रक्तप्रदर और ज्वरातिसारको हरनेवाली है।

विवरण । कालीसारिवा और सफेदसारिवाकी काली बेल होती है, पत्ते-अनारकी समान होते हैं, उन पत्तोंमें सफेद छींटे होते हैं, बेलकी जडमें कपूरकचरीकी समान सुगन्धि आती है, और इसमें दो २ फली आती हैं, कितनेक मनुष्य इसकी जडको सालसापरेला कहते हैं । दोनों प्रकारका शारिवा कालकाके समीप बहुत होताहै हम उशबेके स्थानमें यही वर्तते हैं ।

भृङ्गराजनामानि।

मार्कवो भृङ्गराजश्च भृङ्गाह्वः केशरञ्जनः ।
पितृप्रियो रंगकश्च केश्यः कुन्तलवर्द्धनः ॥

अर्थ-मार्कव, भृङ्गराज, भृङ्गाह्व, केशरञ्जन, पितृप्रिय, रङ्गक, केश्य, कुन्तलवर्द्धन (भृङ्ग, पतङ्ग, मार्कर, मार्क, नागमार, पररु, भृङ्गसोदर, अङ्गारक. एकरज, करञ्जक, भृङ्गरज, भृङ्गार, अजागर, केशराज, मर्कर, भृङ्गारक, भेकराज, पंकजात)

पीतभृङ्गराजनामानि ।

पीतोन्यः स्वर्णभृङ्गारो हरिवासो हरिप्रियः ।
देवप्रियो वन्दनीयः पावनश्च षडाह्वयः ॥

अर्थ-पीतभृङ्गराज, स्वर्णभृङ्गार, हरिबास, हरिप्रिय, देवप्रिय, वन्दनीय, पावन ।

नीलभृङ्गराजनामानि।

नीलस्तु भृङ्गराजोन्यो महानीलः सुनीलकः ।
महाभृङ्गो नीलपुष्पः श्यामलश्च षडाह्वयः ॥

अर्थ-नीलभृङ्गराज, महानील, सुनीलक, महाभृङ्ग, नीलपुष्प, श्यामल यह छे नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	भृंगराज, केशराज ।
हिन्दीभाषामें	भांगरा, भंगरा, भगरिया, भगरैया, कुकुरभांगरा ।
बंगलाभाषामें	भमिराज, केशुरे ।
मराठीभाषामें	माका ।
गुजरातीभाषामें	भांगरो ।
कर्णाटकीभाषामें	गरुगमुरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	गुण्टकलगरचेट्टु, भृंगराजपुचेट्टु ।

औत्कलीभाषामें	कलाकेशदुरा।
इंग्रेजीभाषामें	ट्रालिंगइक्लालिप्टा। Traling Eclipta
लैटिन्भाषामें	इक्लिप्टाप्रोस्ट्रेटा। Eclipta Prostrata इकलिप्टा आल्बा E. alba
फारसीभाषामें	जमर्द्दर।
अरबीभाषामें	हजीज़।

भृङ्गराजगुणाः।

भृङ्गराजस्तु चक्षुष्यस्तिक्तोष्णः केशरञ्जनः।
कफशोफविषघ्नश्च तत्र नीलो रसायनः॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-भांगरा-नेत्रोंको हितकारी, कडवा, गरम, केशरञ्जक (केशोंको काला करनेवाला) तथा कफ, सूजन और विषविनाशक है, इनमें नीला भांगरा रसायन है।

अन्यच्च।

भृङ्गराजः कटुस्तिक्तो रूक्षोष्णः कफवातहृत्।
रसायननो ज्वरान्हन्ति कुष्ठनेत्रशिरोर्त्तिनुत्॥ (म० नि०)

अर्थ-भांगरा-चरपरा, कडवा, रूखा, गरम, कफवातनाशक, रसायन तथा ज्वर, कोढ, नेत्ररोग, और शिरकी पीडाको दूर करनेवाला है।

अपिच।

मार्कवस्तिक्तकश्चोष्णश्चक्षुष्यः केशरञ्जनः। त्वच्यो रूक्षश्च तीक्ष्णश्च दन्त्यो मेध्यो रसायनः॥ शोफं कामं चांत्रवृद्धिं शिरोनेत्ररुजं तथा। कफं वातं च कासञ्च श्वासकुष्ठकृमीञ्जयेत्॥ आमं च पांडुरोगञ्च हृद्रोगं त्वग्रुजं तथा। विषञ्च नाशयत्येव कण्डूनाशकरो मतः॥ (नि० र०)

अर्थ-भांगरा-कडवा, गरम, नेत्रोंको हितकारी, केशरञ्जक, त्वचाको हितकारी, रूखा, तीक्ष्ण, दाँतोंको हितकारक, मेधाकारक, रसायन, तथा सूजन, कामदेव, अंत्रवृद्धि, शिरोरोग, नेत्ररोग, कफ, वात,

खाँसी,श्वास, कोढ, कृमि, आम,पाण्डुरोग, हृदयरोग, त्वचाके रोग, विष, और कण्डूको दूर करनेवाला है ।

विवरण-भांगरेका क्षुप-प्रायः गीली पृथ्वीमें होता है,पत्ते खरखरे होते हैं, पत्तोंका रस काला होताहै, सेपद, पीले और काले इन फूलोंके भेदसे तीन प्रकारका है ।

शणपुष्पीनामानि ।

शणपुष्पी स्मृता घण्टा शणपुष्पसमाकृतिः ॥

अर्थ-शणपुष्पी, घण्टा, शणपुष्पसमाकृति (बृहत्पुष्पी, शणिका, शणघण्टिका, शणपुष्पिका, पीतपुष्पी, स्थूलफला, लोमशा, माल्यपुष्पिका और घण्टारवा)

द्वितीयान्या सूक्ष्मपुष्पा स्यात्क्षुद्रशणपुष्पिका ।
विघ्निका सूक्ष्मपर्णी च बाणाह्वा सूक्ष्मघंटिका ॥

अर्थ-दूसरी-सूक्ष्मपुष्पा, क्षुद्रशणपुष्पिका, विष्टिका, सूक्ष्मपर्णी, बाणाह्वा और सूक्ष्मघण्टिका ।

तृतीयाऽन्या वृत्तपर्णी श्वेतपुष्पा महासिता ।
सा महाश्वेतघण्टी च सा महाशणपुष्पिका ॥

अर्थ-तीसरी-वृत्तपर्णी, श्वेतपुष्पा, महासिता, महाश्वेतघण्टी, महाशणपुष्पिका ।

शणनामानि ।

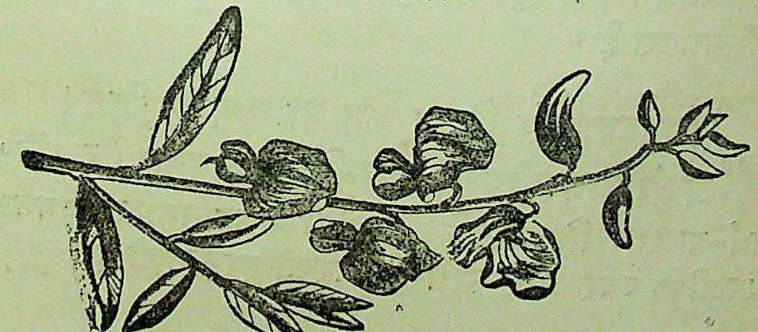

शणस्तु माल्यपुष्पः स्याद्वामकः कटुतिक्तकः ।
निशादनो दीर्घशाखस्त्वक्सारो दीर्घपल्लवः ॥

अर्थ-शण, माल्यपुष्प, वामक, कटुतिक्त, निशादन, दीर्घशाख, त्वक्सार, दीर्घपल्लव।

संस्कृतभाषामें	शणपुष्पी, द्वि० शणपुष्पी, तृ० शणपुष्पी। शण।
हिन्दीभाषामें	झुनझुनिया, पटशण, वनशण, शणहुली, शर्णइ, घागही इत्यादि। सन।
वंगभाषामें	वनशणइ, झनझने, शोणोरगाछ।
मराठीभाषामें	ताग।
कोकणीभाषामें	खुलखुला।
गुजरातीभाषामें	शण।
द्राविडभाषामें	जनवकनर।
कर्णाटकीभाषामें	गिलुगिच्चि, चिक्कगिलु, मतेकाडाविट्टि।
तैलिङ्गीभाषामें	शणमतुवेल्ल, जेनपनर, रेल्लचेट्टु।
तामिलीभाषामें	जेनष्पनर।
ब्रह्मीभाषामें	पन।
इंग्रेजीभाषामें	फलाक्सहेंप्। Flax Hemp
लैटिन् भाषामें	क्राटेलेरिया जुनशिया। Crotalaria-juncia
फारसीभाषामें	लादनां।

शणपुष्पीगुणाः।

शणपुष्पी कटुस्तिक्ता वामिनी कफपित्तजित्। (भा० प्र०)

अर्थ-वनशन (झुनझुनिया) चरपरी, कडवी, वमनकारक और कफपित्तनाशक है।

अन्यच्च।

शणपुष्पी रसे तिक्ता कषाया कफवातजित्।
अजीर्णज्वरदोषघ्नी वामनी रक्तदोषनुत् (रा० नि०)

अर्थ-वनशण-तिक्तरसान्वित, कषेली, कफवातनाशक, वमनजनक तथा अजीर्ण, ज्वर और रुधिरविकारको हरनेवाली है।

अपिच।

शणघण्टा रसे तिक्ता तुवरा वामनी स्मृता।
अजीर्णकफवातघ्नी रक्तदोषज्वरं जयेत्।
कण्ठास्यरोगहृद्रोगपित्तरुक्सन्निपातहृत्॥

अर्थ-वनशन-तिक्तरसान्वित, कषेली, वमनजनक तथा अजीर्ण, कफ, वात,रुधिरविकार, ज्वर, कण्ठरोग, मुखरोग, हृदयरोग,पित्तरोग और सन्निपातको दूर करे है ।

क्षुद्रशणपुष्पीगुणाः ।

शणपुष्पी क्षुद्रतिक्ता वम्या रसनियामिका॥(रा०नि०)

अर्थ-दूसरी शणपुष्पी-कडवी, वमनकारक और पारेको बांधनेवाली है ।

महाश्वेतागुणाः ।

महाश्वेता तु तुवरा चोष्णा सूतनियामिका ।
मोहने स्तम्भने चैव प्रशस्ता ऋषिभिः स्मृतम्(नि०र०)

अर्थ-तीसरी शणपुष्पी-कषेली, गरम, पारेको बांधनेवाली तथा मोहन और स्तम्भनके विषय लीजाती है ।

शणगुणाः ।

शणस्त्वम्लः कषायश्च मलपातकरो मतः । गर्भपातं रक्तपातं वान्तिकृच्चामपातकृत् ॥ उष्णो वातकफघ्नश्च अंगमर्दरुजापहः । अस्य प्रसूनं प्रदरं रक्तदोषहरं स्मृतम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-सन-अम्ल (खट्टी), कषेली, मलको पतित करनेवाली; गर्भ और रुधिरको गिरानेवाली, वमनजनक, आमको गिरानेवाली, गरम तथा वात, कफ और अंगके टूटनेको दूर करे है । इसका फूल-प्रदर और रुधिरविकारको हरे है ।

शणबीजगुणाः ।

शीतलं शणबीजं स्याद्ग्राहकं च गुरु स्मृतम् ।
इतरे तु गुणाः सर्वे शणवत्परिकीर्तिताः ॥ (नि०र०)

अर्थ-सनके बीज-शीतल, ग्राही और भारी हैं, गुण सनकी समान जानने।

विवरण । सनकी खेती हिन्दोस्थानमें सर्वत्र अधिकतासे होती है,झांदरा अंडकी समान पत्ता-फलाकर । फूल-पीले होते हैं । फल लम्बा और खुक्कल होताहै । व्यवहार-बीज और पत्ते ।

त्रायमाणानामानि ।

त्रायमाणा सुभद्राणी त्रायन्ती बलभद्रिका ॥

अर्थ-त्रायमाणा, सुभद्राणी, त्रायन्ती, बलभद्रिका(वार्षिक, बल-

देवा, भद्रनाभिका, कुलत्रा, त्रायमाणिका, बलभद्रा, सुकामा, वार्षिका, गिरिजा, अनुजा, मंगल्यार्हा, देवबला, पालिनी, भयनाशिनी, अवनी, रक्षणी, त्राणा)

संस्कृतभाषामें	त्रायमाणा ।
हिन्दीभाषामें	त्रायमान ।
वंगभाषामें	बडाडुसुर, बला, बहुला, वनभादुलिया इत्यादि।
मराठीभाषामें	त्रायमाण ।
गुजरातीभाषामें	त्राहिमान् ।
कर्णाटकीभाषामें	त्रायमाणा हिमवति प्रसिद्धा ।
लेटिन्भाषामें	थेलिक्ट्रम् फोलियो लोझम् ।ThalictumFaliolosum
फारसीभाषामें	अस्प्रक ।

अस्या गुणाः ।

त्रायमाणा तु तुवरा शीतला मधुरा सरा। तिक्ता पित्तरुजं छर्दिं ज्वरं गुल्मं कफं विषम् ॥ शूलं भ्रमं रक्तरुजं क्षयं ग्लानिं तृषां तथा। हृद्रोगं रक्तपित्तं च दुर्नामानं विनाशयेत् ॥ त्रिदोषनाशिनी प्रोक्ता पूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः । (नि० र०)

अर्थ-त्रायमान-कषेली, शीतल, मधुर, दस्तावर, कडवी तथा पित्तरोग, वमन, ज्वर, गुल्म, कफ, विष, शूल, भ्रम, रक्तरोग, क्षय, ग्लानि, तृषा, हृदयरोग, रक्तपित्त, बवासीर और त्रिदोषका नाश करनेवाली है ।

विवरण । त्रायमानके पत्ते गोजियाकी समान पृथ्वीपर फैलेहुए होते हैं, और बीचमें दोदण्डीसी निकलतीहैं, उसके बीजोंको त्रायमान कहते हैं । किन्तु कितनेक मनुष्य भ्रमसे त्रायमानको गुलवनपसा कहते हैं ।

यवतिक्तानामानि ।

यवतिक्ता महातिक्ता दृढपादा विसर्पिणी । नाकुली नेत्रमीला च शंखिनी पत्रतण्डुली ॥ तंदुली चाक्षपीडा च सूक्ष्मपुष्पी यशस्विनी । माहेश्वरी तिक्तयवा यावी तिक्तेति षोडश ॥

अर्थ-यवतिक्ता, महातिक्ता, दृढपादा, विसर्पिणी, नाकुली, नेत्रमीला, शंखिनी, पत्रतण्डुली, तन्दुली, अक्षपीडा, सूक्ष्मपुष्पी, यशस्विनी, माहेश्वरी, तिक्तयवा, यावी, तिक्ता ।

संस्कृतभाषामें	यवतिक्ता ।

हिन्दीभाषामें	शंखिनी ।
वंगभाषामें	यवेची, श्वेतबोना (कालमेघ)
मराठीभाषामें	यवोची, टीटवी ।
को०	शांखवेल्य ।
गुजरातीभाषामें	शंखहेल्य आख्युफुंटांमाणा, भगालिंगी ।
कर्णाटकीभाषामें	शंखिनी ।

लैटिनभाषामें एंड्रोग्राफिस् पेनिक्युलेटा । Andrograph-is-paniculata
ब्रायोनियास्का ब्रेला Bryoniascabrella

अस्या गुणाः ।

यवतिक्ता सतिक्ता स्यादीपनी रुचिकृत्परा ।
आमकुष्ठक्रिमिविषदोषघ्नी रेचनी च सा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शंखिनी-कडवी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, दस्तोंको लानेवाली, तथा आम, कोढ, कृमि और विषदोषको दूरकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

यवतिक्ता महातिक्ता साऽग्निकृद्बलवर्धिनी ।
तिक्ता ज्वरातिसारघ्नी बालानां शुभदा सदा ॥ (आ० सं०)

अर्थ-शंखिनी-जठराग्निको दीपन करनेवाली, बलवर्द्धक, कडवी ज्वरातिसारनाशक और सदैव बालकोंके कल्याण करनेवाली है ।

अपिच ।

शंखिनी कटुतिक्तोष्णा गुरुः स्निग्धा विशोधिनी ।
त्रिदोषशमनी कुष्ठक्षयोदरविनाशिनी ॥ (का० नि०)

अर्थ-शंखिनी-चरपरी,कडवी, गरम, भारी, स्निग्ध, विशोधक, तथा त्रिदोष, कोढ, क्षय और उदररोगको दूरकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

यवतिक्ता तु कटुका रुचिरा चाग्निदीपनी ।
सराम्ला कटुका तीक्ष्णा स्निग्धोष्णा च त्रिदोषहा ॥
कुष्ठामविषदोषघ्नी रक्तदोषं कृमींस्तथा ।
शोफं जयेच्चोदरं च नाशयदिति कीर्तितम ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शंखिनी-कडवी, चरपरी, रुचिकारक, अग्निदीपक,सारक, (दस्तावर) अम्ल (खट्टी), कटु,तीक्ष्ण,स्निग्ध,गरम,त्रिदोषनाशक तथा कुष्ठ, आम, विषविकार, रक्तदोष, कृमि, सूजन और उदररोगको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । शंखिनीकी वेल-शिवलिंगीकी समान होती है, फल भी शिवलिंगीकी समान होतेहैं, शंखिनीके बीज-शंखकी सदृश होतेहैं, शिवलिंगीके फलके ऊपर सफेद छींटे होतेहैं, किन्तु शंखिनीके फलके ऊपर छींटे नहीं होते ।

लिङ्गिनीनामानि ।

लिङ्गिनी बहुपत्रा स्यादीश्वरी शैवमल्लिका ।स्वयंभूर्लिंगसम्भूता लिंगी चित्रफलाऽमृता॥पंडोली लिंगजा देवी चण्डापस्तम्भिनी तथा।शिवजा शिववल्ली च विज्ञेया षोडशाह्वया॥

अर्थ-लिंगिनी, बहुपत्रा, ईश्वरी, शैवमल्लिका, स्वयम्भू, लिंगसम्भूता, लिंगी, चित्रफला, पंडोली, लिंगजा, देवी, चण्डा, आपस्तम्भिनी, शिवजा,शिववल्ली (शिवमल्लिका,बकपुष्पा,और तुत्थिनी)

संस्कृतभाषामें	लिंगिनी ।
हिन्दीभाषामें	शिवलिंगी, ईश्वरलिंगी ।
वंगभाषामें	शिवलिंगिनी ।
मराठी भाषामें	शिवलिंगी, वाडुबल्ली ।
गुजरातीभाषामें	शिवलिंगी ।
कर्णाटकीभाषामें	पचगुरिया ईश्वरलिंगी ।
लैटिन्भाषामें	ब्रायोनिया लेसिनियोसा । Bryonia Iaciniosa.

अस्या गुणाः ।

लिंगिनी कटुरुष्णा च दुर्गन्धा च रसायनी ।
सर्वसिद्धिकरी दिव्या वश्या रसनियामिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शिवलिंगी-चरपरी,गरम,दुर्गन्ध,रसायन,सर्वसिद्धिकारक, दिव्य, वशीकरण और पारेको बांधनेवाली है ।

अपिच ।

लिंगिनी कटुका चोष्णा दुर्गन्धा च रसायनी ।
सर्वसिद्धिप्रदा लोहस्तम्भिनी सूतबन्धिनी ॥

सिध्मनाशकरी वश्यकारिणी च प्रकीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ-शिवलिङ्गी-चरपरी, गरम, दुर्गन्धित, रसायन, सर्वसिद्धिदायक, लोहस्तम्भक, पारदको बांधनेवाली, सिध्मनाशक और वशीकरण है ।

विवरण। शिवलिंगीकी बेल होतीहै, फल-नीले और गोल होते हैं, पकनेपर लाल पडजातेहैं, फलके ऊपर सपेद चित्र होते हैं, फलमेंसे बीज निकलतेहैं, उन बीजोंमें शिवके लिंगका आकार होताहै । कालकाके समीप टकसालमें बहुत होते हैं ।

मूर्वानामानि ।

मूर्वा मधुरसा देवी गोकर्णी दृढसूत्रिका ।
तेजनी पीलुपर्णी च धनुर्माला धनुर्गुणा ॥

अर्थ-मूर्वा, मधुरसा, देवी, गोकर्णी, दृढसूत्रिका, तेजनी, पीलुपर्णी, धनुर्माला, धनुर्गुणा (मोरटा, स्रवा, मधुलिका, धनुःश्रेणी, कर्म्मकरी, धनुःशाखा, श्रवा, मूर्वी, मधुश्रेणी, धनु, श्रेणी, सुरङ्गिका, देवश्रेणी, पृथक्त्वचा, मधुस्रवा, अतिरसा, पीलुपर्णिका, दिव्यलता, ज्वलिनी, गोपवल्ली)

संस्कृतभाषामें	मूर्वा ।
हिन्दीभाषामें	चूर्णहार, मुरहरी चुरनहार ।
बंगभाषामें	मुर्वा, मुर्गा, मुरहर, शोचमुखी, घोडाचक्र इत्यादि ।
मराठीभाषामें	मोरवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	मुहुरासि ।
तैलिङ्गीभाषामें	षागचेट्टु, सग, चग, सांगा ।
तामिलीभाषामें	मरूल ।
का०	मोरहरी ।
लैटिन्भाषामें	क्लिमेटिस् ट्राईलोबा । Clematis triloba

अस्या गुणाः ।

मूर्वा सरा गुरुः स्वादुस्तिक्ता पित्तास्रमेहनुत् ।
त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डुकुष्ठज्वरापहा ॥ (धन्वन्तरि

अर्थ-चूर्णहार-सारक (दस्तावर), स्वादिष्ठ, कडवी तथा रक्तपित्त, प्रमेह, त्रिदोष, तृषा, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वरको हरनेवाली है।

अन्यच्च ।

मूर्वा तिक्ता कषायोष्णा हृद्रोगकफवातहृत् ।

वमिप्रमेहकुष्ठघ्नी विषमज्वरहारिणी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-चूर्णहार-कडवी, कषेली, गरम तथा हृदयरोग, कफ, वात, वमन, प्रमेह. कोढ और विषमज्वरको दूर करनेवाली है ।

अपिच ।

मोरटा तुवरा तिक्ता स्वाद्वी चोष्णा गुरुः स्मृता। पाककाले तु कटुका सारका च त्रिदोषहा ॥ रक्तदोषं मेदरोगं कुष्ठं मेहं ज्वरं तथा । वान्तिं च मुखशोषं च भ्रमं कण्डूं तृषां तथा ॥हृद्रोगं च कफं पित्तं वातं च विषमज्वरम् । नाशयेदिति तैरुक्तं कन्दोस्याः कृमिनाशकः॥कृमिकीलकरोगं च विषदोषं च नाशयेत्।

अर्थ-चूर्णहार-कषेली, कडवी, स्वादिष्ठ, गरम, भारी, पचनेमें चरपरी,दस्तावर,त्रिदोषनाशक तथा रुधिरविकार, मेदोरोग,कोढ, प्रमेह, ज्वर,वमन, मुखशोष, भ्रम, कण्डू, तृषा, हृदयरोग, कफ,पित्त, वात और विषमज्वरको दूर करनेवाली है । इसका कन्द-कृमि, कृमिकीलकरोग और विषविकारको दूर करेहै ।

विवरण । मूर्वाकी बेल वनमें होतीहै,इसमें छोटे २ और मधुर२ फल लगते हैं, पत्ते-घीकुआरकी समान चिकने और कुछ मोटे २ होते हैं । शिमला प्रान्तमें मूर्वाके स्थानमें मरोडफलीका प्रयोग करतेहैं

काकमाचीनामानि।

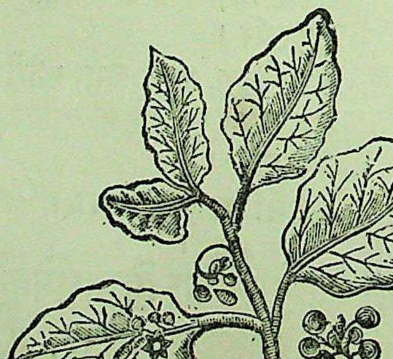

मकोय.

२ काकमाची ध्वांक्षमाची वायसी च घनाघना ॥

अर्थ–काकमाची, ध्वांक्षमाची, वायसी, घनाघना, (काकमाचिका, काका, वायसाह्वा, सर्वतिक्ता, बहुफला, कटुफला, रसायनी, गुच्छफला, काकमाता, स्वादुपाका, सुन्दरी, तिक्तिका, बहुतिक्ता, जघनेफला, काकिनी और कुष्ठघ्नी ।

संस्कृतभाषामें	काकमाची ।
हिन्दीभाषामें	मकोय, कवैया ।
वंगभाषामें	मदन, मधुनि, गुडकामाइ ।
मराठीभाषामें	लघुकावळी, कामोनि ।
गुजरातीभाषामें	पीलुडी ।
कर्णाटकीभाषामें	कावईकाके ।
इंग्रेजीभाषामें	नाइट्सेड ।
लैटिन्भाषामें	सोलैनम् नाइग्रम् । Solanum nigrum.
फारसीभाषामें	रोवातरीख ।
अरवीभाषामें	एनवुस्सालव ।

अस्य गुणाः ।

काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा ।
तिक्ता रसायनी शोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ॥
कटुर्नेत्रहिता हिक्काछर्दिहृद्रोगनाशिनी । (भा॰ प्र॰)

अर्थ–मकोय–त्रिदोजनाशक, स्निग्ध, गरम, स्वरजनक, शुक्रकारक, कडवी, रसायन, चरपरी, नेत्रोंको हितकारी तथा सूजन, कोढ, बवासीर, ज्वर, प्रमेह, हिचकी, वमन हृदयरोगको हरनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

काकमाची कटुस्तिक्तरसोष्णा कफनाशिनी ।
शूलार्शःशोफदोषघ्नी कुष्ठकण्डूतिहारिणी ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ–मकोय–चरपरी, तिक्तरसान्वित, गरम, कफनाशक तथ शूल, बवासीर, सूजन, कोढ और कण्डूका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

काकमाची सरा स्वर्य्या वृष्या दोषत्रयापहा ।
नात्युष्णा शीतला नातिकुष्ठहन्त्री रसायनी ॥ (शो॰नि॰)

अर्थ-मकोय-सारक (दस्तावर), स्वरको उत्तम करनेवाली, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक, न अत्यन्त उष्ण है, और न अत्यन्त शीतल है कुष्ठनाशक और रसायन है ।

अपिच ।

काकमाची रसे तिक्ता चोष्णा कट्वी रसायनी । वृष्या स्निग्धा च स्वर्य्या च हृद्या धातुविवर्द्धिनी ॥ नेत्र्या रुच्या सरा लघ्वी कफशूलार्शशोफहा । त्रिदोषकुष्ठकण्डूतिकर्णकीटातिसारहा ॥ हिक्काछर्दिश्वासकासज्वरहृद्रोगमेहहा । (नि०र०)

अर्थ-मकोय-तिक्तरसान्वित, गरम, चरपरी, रसायन, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, स्वरको उत्तम करनेवाली, हृदयको हितकारी, धातुवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, दस्तावर, हलकी तथा कफ, शूल, बवासीर, सूजन, त्रिदोष, कोढ, कण्डू, कर्णकीट, अतिसार, हिचकी, वमन, श्वास, खाँसी, ज्वर और हृदयरोगको हरनेवाली है ।

विवरण । मकोयका क्षुप होताहै; पत्ते-गोल और लम्बे । फूल-सफेद रंगका छोटा । फल-चोटलीकी समान गोल और गुच्छोंमें आते हैं । फल पकनेपर लाल रंगके और किसी २ के काले रंगके भी होजाते हैं ।

काकजंघानामानि ।

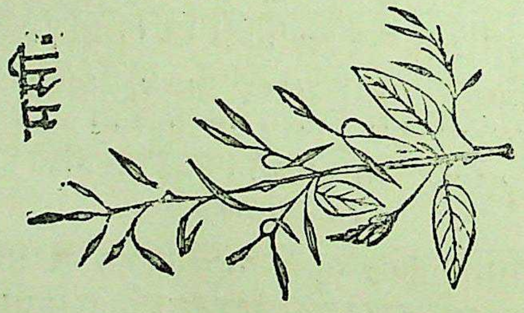

काकजंघा च काकाक्षी काकांगी काकनासिका ॥

अर्थ-काकजंघा, काकाक्षी, काकांगी काकनासिका (काका, काकनासा, काककला, कृषीबल, काकाङ्गा, ध्वांक्षजंघा, काकाह्वा, सुलोमशा, पारावतपदी, दासी, नदीकान्ता, काकी, सुरंगी)

संस्कृतभाषामें	काकजंघा ।
हिन्दीभाषामें	काकजंघा, मसी ।

वंगभाषामें	केउयाठडां कांटागुडकाउली ।
मराठीभाषामें	कांगाचें झाड ।
गुजरातीभाषामें	अघेडी ।
कर्णाटकीभाषामें	जीरीचिलेच ।
तैलिङ्गीभाषामें	नालाद्धुच्चीर्णाके ।
लैटिन्भाषामें	लीयाहिटी । Leea Hirta

अस्या गुणाः ।

काकजंघा तु तिक्तोष्णा कृमिव्रणकफापहा ।
बाधिर्य्याऽजीर्णजित्कट्वी विषमज्वरहारिणी (रा० नि०)

अर्थ-काकजंघा (मसी)-कडवी, गरम, चरपरी तथा कृमि, घाव,,कफ,बधिरता, [illegible] मंद और विषम ज्वरको दूर करनेवाली है।

विवरण। काग[illegible] मडुप-जङ्गलमें और वनोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते-लम्बे २ हरे उमें [illegible] डरि रंगके होते हैं, फूल-छोटे २ और काले रंगके होते हैं । पत्तो[illegible] खरखरापन और बारीक २ रुआंसा होता है, शाखा गांठेदार होती है और उनमें थोडी २ दूरपर ऐंडावैंडापन होता है ।

अन्यच्च ।

काकजंघा हिमा तिक्ता कषायां कफपित्तनुत ।
निहन्ति ज्वरपित्तास्रव्रणकण्डूविषकृमीन् ॥ (भा०प्र०)
"क्षतोपयोगिका चैव बाधिर्य्यं च विनाशयेत्"

अर्थ-काकजंघा (मसी)-शीतल, कडवी, कषेली तथा कफ, पित्त, ज्वर, रक्तपित्त, कण्डू, विष, और कृमिका नाश करेहै । तथा क्षतरोगमें हितकारी, और बधिरताको दूर करे है ।

काकनासानामानि ।

काकनासा तु काकांगी काकतुण्डफला च सा ।

अर्थ-काकनासा, काकांगी, काकतुण्डफला (ध्वांक्षनासा,काकतुण्डी, वायसी, सुरंगा, तस्करस्नायु, ध्वांक्षतुण्डा, सुनासिका,वायसाह्वा, ध्वांक्षनखी काकाक्षी, ध्वांक्षनासिका, काकप्राणा, काकश्मश्रु, चोरस्नायु, शिरोबला)

संस्कृतभाषामें	काकनासा ।
हिन्दीभाषामें	कौआठोडी ।
वंगभाषामें	केउयाठुंटी ।

मराठीभाषामें	श्वेतकावळी ।
कर्णाटकीभाषामें	हिरीयकागे डोले वडिलि कद्दूरली ।
तैलिङ्गीभाषामें	बेलुमसन्दिचेट्टु, पुसगुलिबिन्दचेट्टु, काकिदोंडचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	जिम्ब्रिमासिल्वेस्ट्रि । Gymbrima Sylvestre

अस्या गुणाः ।

काकनासा कषायोष्णा कटुका रसपाकयोः ।
कफघ्नी वामनी तिक्ता शोफार्शःश्वित्रकुष्ठनुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कौआठोडी-कषेली, गरम, रसमें चरपरी और पचनेमेंभी चरपरी, कफनाशक, वमनकारक, कड[illegible] तथा सूजन, बवासीर और श्वित्रकुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

काकनासा तु मधुरा शिशिरा पि[illegible] ।
रसायनी दार्ढ्यकरी विशेषात्पलितापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कौआठोडी-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रसायन, दृढताकारक और विशेषकरके पलित (बालोंका धवल होजाना) को दूर करे है । कौआठोडी-विशेषकरके जङ्गल और कठेरकी भूमिमें होतीहै, पत्ते-गुलाबके पत्तोंसे छोटे, फूल-नीले और सुफेद रंगके कौवेकी नासिकाकी समान होतेहैं, इसपर फली आतीहै बीज लोबियेकी समान निकलते हैं ।

नागपुष्पीनामानि ।

नागपुष्पी श्वेतपुष्पा नागिनी रामदूतिका

अर्थ-नागपुष्पी, श्वेतपुष्पा, नागिनी, रामदूतिका ।

अस्या गुणाः ।

नागिनी रेचनी तिक्ता तीक्ष्णोष्णा कफपित्तनुत् ।
विनिहन्ति विषं शूलं योनिदोषवमिक्रिमीन् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-नागपुष्पी-दस्तावर, कडवी, तीक्ष्ण, गरम तथा कफ, पित्त, विष, शूल, योनिदोष, वमन और कृमिरोगको दूर करे है ।

विवरण । नागपुष्पीकी बेल चलती है, वनके वृक्षोंपर फैलजाती है फूल-सफेद और काले होतेहैं, एक एक शाखामें एक एक पत्ता होता है, इसके नीचे कंद होता है ।

मेषशृङ्गीनामानि ।

मेषशृङ्गी मेषवल्ली चक्षुर्मेषविषाणिका ॥

अर्थ-मेषशृंगी, मेषवल्ली, चक्षु, मेषविषाणिका (नन्दीवृक्ष, चक्षुर्बहल, मेढ्रशृंगी, गृहद्रुमा, बहलचक्षु, विषाणी, अजशृंगिका, विषाणिका, अजशृङ्गी, चक्रश्रेणी, अजगन्धिनी, मौर्वी, नेत्रौषधी, आवर्तिनी, वर्तिका, सर्पदंष्ट्रिका, चक्षुष्या, तिक्तदुग्धा, पुत्रशृंगी, कर्णिका, अक्षिभेषज)

संस्कृतभाषामें	मेषशृङ्गी, अजशृङ्गी ।	
हिन्दीभाषामें	मेढाशींगी ।	
बंगभाषामें	मेडाशिंगे,, गाडलशिंगी, छागलबेंटे ।	
मराठीभाषामें	मेंढफळी, केवणीच्या शेंगा ।	
गुजरातीभाषामें	मढाशींगी आटर्डीनी शींग ।	
कर्णाटकीभाषामें	उरियमर ।	
इंग्रेजीभाषामें	स्क्रूट्री ।	Screwtree
लैटिनभाषामें	हेलिक्टेरीस् इसोरा	Helicteris isora
	जिमनेगा सिलवेसट्री ।	Gymnega Selvestre
फारसीभाषामें	किस्त ।	
अरबीभाषामें	बर्किस्त ।	

अस्या गुणाः ।

अजशृंगी रसे तिक्ता रूक्षा पाके कटुः स्मृता । चक्षुष्या शीतला स्वाद्वी बल्या भेदकरी मता ॥ रसायना तु तुवरा दाहपित्तकफापहा । रक्तरुक्कासतिमिरश्वासव्रणविषापहा ॥ कृम्यशःशूलहृद्रोगनाशिनी शोथहा स्मृता । कुष्ठं वातं नाशयति फलमस्यास्तु तिक्तकम् ॥ कटूष्णं दीपनं हृद्यं रुच्यं चाम्लं पटु स्मृतम् । स्रंसनं कुष्ठमेहघ्नं कासकृमिकफ प्रणुत् ॥ विषदोषं व्रणं वातं नाशयेदिति कीर्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-मेढाशिंगी-रसमें कडवी, रूखी, पचनेमें चरपरी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, स्वादिष्ठ, बलकारक, भेदक, रसायन, कषैली तथा दाह, पित्त, कफ, रक्तविकार, खांसी, तिमिररोग, श्वास, व्रण, विष, कृमि, बवासीर, हृदयरोग, सूजन, कोढ और वातको विनाश

करनेवाली है । इसका फल-कडवा, चरपरा, गरम, दीपन, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, खट्टा, खारा, स्रंसन तथा कोढ, प्रमेह, खाँसी, कृमि, कफ, विषविकार, व्रण और वातको दूर करनेवाला है।

विवरण । मेढाशिंगीका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते-फालसेके समान और फूल-लाल होते हैं, इसकी फली गोल और लम्बी होतीहै, इसके वृक्ष प्रायः पर्वतोंपर बहुत होतेहैं ।

हंसपादीनामानि ।

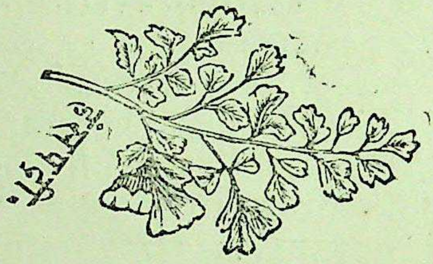

हंसपादी कीरमाता त्रिपादी च मधुस्रवा ।

अर्थ-हंसपादी, कीरमाता, त्रिपादी, मधुस्रवा (सुवहा, हंसपदी, गोधांघ्रि, त्रिफला, गोधापदिका, त्रिदला, हंसवती, चित्रपदा, हंसपादिका, हंसाघ्रि, रक्तपादी, त्रिपदा, घृतमण्डलिका, विश्वग्रन्थि, त्रिपादिका, त्रिपदी, कीटमारी, कर्णाटी, ताम्रपादी, विक्रान्ता, ब्रह्मादनी, पद्माङ्गी, शीताङ्गी, सूतपादिका, सञ्चारिणी, पादिका, प्रह्लादी, कीरपादिका, धार्त्तराष्ट्रपदी, गोधापदी, त्रिपादिका, रक्तपादी)

संस्कृतभाषामें	हंसपादी, गोधापदी ।	
हिन्दीभाषामें	हंसपादी, हंसपगी ।	
वंगभाषामें	गोयालेलता ।	
मराठीभाषामें	लाल लाजाळु ।	
गुजरातीभाषामें	हंसराज कालीडांडलीनो ।	
कर्णाटकीभाषामें	नावलाड ।	
तैलिंगीभाषामें	हंसपादमु ।	
इंग्रजीभाषामें	मैडनहेर ।	Maiden hair
लैटिन्भाषामें	एडिएन्टम् ल्युन्युलेटम् ।	Adiantum Lunulatum
फारसीभाषामें	परस्या उशान ।	
अरबीभाषामें	शारूलजीन् शारुलअर्द ।	

अस्या गुणाः ।

हंसपादी गुरुः शीता हन्ति रक्तविषव्रणान् ।
विसर्पदाहातीसारलूताभूताग्निरोहिणीः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हंसपादी-भारी, शीतल तथा रुधिरविकार, विष, व्रण, विसर्प, दाह, अतिसार, लूता, भूतबाधा और अग्निरोहिणीरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

हंसपादी तु कटुका चोष्णा प्रोक्ता रसायनी ।
भूतबाधां विषं चैवापस्मारभ्रमनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ-हंसपादी-चरपरी, गरम, रसायन तथा, भूतबाधा, विष, अपस्मार और भ्रमको हरनेवाली है ।

विवरण । हंसपादीके क्षुप-जलाशयके समीप अत्यन्त शीतल स्थानोंमें होते हैं, विशेष करके कुँएँ बावडी इत्यादि स्थानोंमें बहुत होते हैं, इसको इस देशमें हंसराज कहते हैं, इसकी जड लाल और कोमल होतीहै, पत्ते-हरे २ बहुत छोटे २ होते हैं ।

सोमलतानामानि ।

सोमलता सोमवल्ली सोमक्षीरी द्विजप्रिया ॥

अर्थ-सोमलता, सोमवल्ली, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया (चन्द्रवल्लरी, इन्दुलेखा, सोमवल्लिका, महागुल्मा, यज्ञश्रेष्ठा, धनुर्लता, सोमार्हा, गुल्मवल्ली, यज्ञवल्ली, सोमक्षीरा, सोमा, यज्ञाङ्गा)

संस्कृतभाषामें	सोमवल्ली ।
हिन्दीभाषामें	सोमवल्ली, सोमलता ।
वंगभाषामें	सोमलता ।
मराठीभाषामें	सोमवल्ली ।
कर्णाटकीभाषामें	सोमवल्ली ।
तैलङ्गीभाषामें	पल्लटीजी, टिगटसुम्मुड्डु, पुल्लतीगे ।

लैटिन्भाषामें सार्कोस्टैम्मा ब्रेवीस्टिग्मा Sarcostemma Brevistigm

अस्या गुणाः ।

सोमवल्ली त्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्ता रसायनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सोमलता-त्रिदोषनाशक, चरपरी, कडवी और रसायन है ।

अन्यच्च ।

सोमवल्ली कटुः शीता मधुरा पित्तदाहनुत् ।
तृष्णा विशोषशमनी पावनी यज्ञसाधनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सोमलता-चरपरी, शीतल, मधुर तथा पित्त, दाह, तृषा और विशोषको शान्त करनेवाली है, पवित्र और यज्ञसाधक है

विवरण । थूहरकी जो कोई प्रकारकी जातिहैं उनमेंसे सोमलता भी एकभाँतिकी बेल है, इसमें शुक्ल पक्षके दिनोंमें क्रमवार प्रतिपदासे लेकर पूर्णमासीतक एक एक पत्ता प्रतिवार निकलताहै, पन्द्रह तिथियोंमें पन्द्रह पत्ते होजातेहैं, फिर कृष्णपक्षकी परीवासे लेकर अमावास्यातक एक एक पत्ता प्रतिदिन गिरता जाताहै, पन्द्रह दिनमें एक पत्ताभी नहीं रहता, इस लताका चंद्रमासे अधिक स्नेह है, इस कारण इस अद्भुतलताका नाम सोमलता है ।

आकाशवल्लीनामानि ।

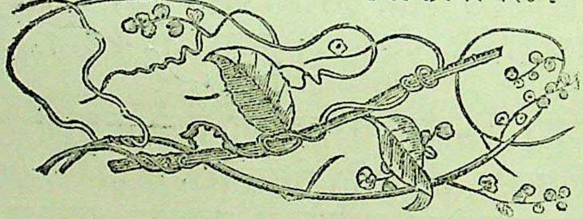

आकाशवल्ली तु बुधैः कथिताऽमरवल्लरी ॥

अर्थ-आकाशवल्ली, अमरवल्लरी, (खवल्ली, दुःस्पर्शा, व्योमवल्लिका)

संस्कृतभाषामें	आकाशवल्ली ।
हिन्दीभाषामें	आकाशबेल अमरबेल ।
वंगभाषामें	आलोकलता, आकाशवेल ।
मराठीभाषामें	आकाशवेल, अमरवेल ।
गुजरातीभाषामें	अमरबेल ।
कर्णाटकीभाषामें	नेदमुदवल्ली ।
तैलिङ्गीभाषामें	इन्द्रजाल ।
लैटिन्भाषामें	कसकुटारी फ्लेक्सा । Cuscutareflcx
	केसिथाफिलिफोर्मिस् ।Cassythafilliformis
अरबीभाषामें	अफतिमून ।

अस्या गुणाः।

खवल्ली ग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाऽक्ष्यामयापहा।
तुवराऽग्निकरी हृद्या पित्तश्लेष्मामनाशिनी॥(भा०प्र०)

अर्थ-आकाशबेल-ग्राही, कडवी, पिच्छल, अक्षिरोगनाशक, कषेली, अग्निजनक, हृदयको हितकारी तथा पित्त कफ और आमवातनाशक है।

अन्यच्च।

आकाशवल्ली कटुका मधुरा पित्तनाशिनी।
वृष्या रसायनी बल्या दिव्यौषधिपरा स्मृता॥(रा०नि०)

अर्थ-आकाशबेल-चरपरी, मधुर, पित्तनाशक, वीर्यवर्द्धक, रसायन, बलकारक और दिव्यौषधि है।

विवरण। आकाशबेल-डोरेकी समान वृक्षोंपै फैली हुई होती है, रंग पीला होता है, फूल-सफेद आताहै, और इसकी जड नहीं होती। व्यवहार सर्वांश। मात्रा २ तोले।

पातालगरुडीनामानि।

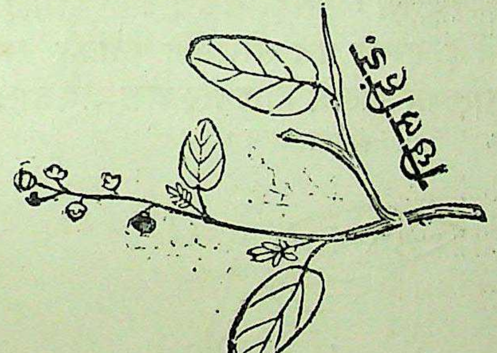

छिलिहिण्डो महामूलः पातालगरुडाह्वयः॥

अर्थ-छिलिहिण्ड, महामूल, पातालगरुड (वत्सादनी, सोमवल्ली, तिक्तांगा, मोचकाभिधा, तार्क्ष्यी, सौपर्णी, गारुडी, दीर्घकाण्डा, दृढकाण्डा, महाबला, दीर्घवल्ली, दृढलता)

संस्कृतभाषामें	पातालगरुडी।
हिन्दीभाषामें	छिरेटा।
बंगभाषामें	शिलिन्दा।

मराठीभाषामें	तानीचा बेल, भुयपाड ।
गुजरातीभाषामें	वेवडीओलप ।
तैलङ्गीभाषामें	दूसरतोगे ।
लेटिन्भाषामें	कोक्युलस् विलोसस् । Cocculus villosus

अस्या गुणाः ।

छिलिहिण्डः परं वृष्यः कफघ्नः पवनाह्वयः॥(भावप्रकाश)

अर्थ-छिरेटा-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, कफ और वातनाशक है ।

अन्यच्च ।

वत्सादनी तु मधुरा पित्तदाहास्रदोषनुत् ।
वृष्या सन्तर्पणी रुच्या विषदोषविनाशिनी॥(रा०नि०)

अर्थ-छिरेटा-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, सन्तर्पण, रुचिकारक, तथा दाह, पित्त, रुधिरविकार और विषदोषविनाशक है ।

विवरण। पातालगरुडकी अर्थात् छिरेटीकी बेल होतीहै, यह बहुत मोटी और दृढ होती है,इसके तंतुभी बहुत पक्के होतेहैं,इसके फल छोटे२ और गुच्छोंमें लगतेहैं, तरुण अवस्थामें हरे और पकनेपर काले होजाते हैं, इसके पत्ते सीसमके पत्तोंकी समान होते हैं, उसका रस निकालकर जलमें डालनेसे जल जमजाता है ।

वंदानामानि ।

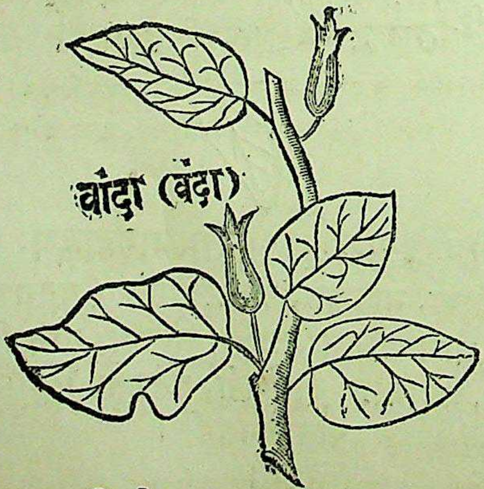

वंदा वृक्षादनी सेव्या परपुष्टा पराश्रया ॥

अर्थ-वंदा, वृक्षादनी, सेव्या, परपुष्टा, पराश्रया (वृक्षरुहा, जीवन्तिका, काकुरुहा, वन्दाका, शेखरा, वन्दका, वल्दक, नीलवल्ली, वन्दाकी, परवासिका, वशिनी, पुत्रिणी, वन्द्या, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी, वृक्षादनी, कामवृक्ष, शेखरी, केशरूपा, तरुरुहा, तरुस्था, गन्धमादिनी, कामिनी, तरुभुक्, श्यामा, उपदी, वृक्षभक्षा, नीलवर्णा, वन्दाकी, गन्धमादनी और रोहिणी)

संस्कृतभाषामें	वन्दा।
हिन्दीभाषामें	वन्दा, बन्दाल, वदाक, वांदा।
वंगभाषामें	वाँदु, परगाछा, मान्दडा।
मराठीभाषामें	बादांगुल, कामरुख।
गुजरातीभाषामें	वांदो।
कर्णाटकीभाषामें	वन्दणिके।
तैलिङ्गीभाषामें	वाजिनीके।

लैटिन्भाषामें लेरेन्थस लौंगिफोलियस् Loranthus Longifolious.

अस्य गुणाः।

वन्दाकः कफवातास्रस्नायुव्रणविषापहः ॥ (म० नि०)

अर्थ-वांदा-कफ, वात, रुधिरविकार, स्नायु, व्रण और विषविनाशक है।

अन्यच्च।

वंदाकः स्याद्धिमस्तिक्तः कषायो मधुरो रसे।
मांगल्यः कफवातास्ररक्षोव्रणविषापहः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वन्दा-शीतल, कडवा, कषेला, मधुररसान्वित, मङ्गलजनक तथा कफ, वात, रुधिराविकार, राक्षसबाधा, व्रण और विषविनाशक है।

अपि च।

वन्दाकस्तिक्तशिशिरः कफपित्तश्रमापहः।
वश्यादिसिद्धिदो वृष्यः कषायश्च रसायनः (रा०नि०)

अर्थ-वन्दा-कडवा, शीतल, कफनाशक, पित्तघ्न, श्रमहर्ता, वशीकरणादि सिद्धिकर्ता, वीर्यवर्द्धक, कषेला और रसायन है। वन्दा, वृक्षोंकी शाखोंपै होताहै।

विवरण। वन्दा, विविधप्रकारका वृक्षोंपर वृक्षसरीखा होजाता है, उसकी जड अलग नहीं होती, वृक्षमें उत्पन्न होजाता है कोई २ ऐसा कहते हैं कि, काकादिक कोई पक्षी किसी वृक्षकी शाखा

लाकर वृक्षपर रखदेतेहैं, उसीमें पत्ते निकल आते हैं और वही फल फूलकर वन्दा होजाता है, किसीमें लाल, किसीमें पीला, किसीमें सफेद, और किसीमें नीला फूल होता है, और पत्तेभी भिन्न २ जातिकेसे होते हैं।

वटपत्रीनामानि ।

वटपत्री तु कथिता मोहन्यैरावती बुधैः ।

अर्थ-वटपत्री-मोहनी, ऐरावती (इरावती, इनानी, गोधावती, श्यामा, खट्वाङ्गनासिका)

संस्कृतभाषामें	वटपत्री ।
हिन्दीभाषामें	वडपत्री ।
मराठीभाषामें	वडवती ।
वंगभाषामें	वडपाथरकुचि ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिण्डि वण्डचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	लैकौपेडियम् ।

अस्याः गुणाः ।

वटपत्री कषायोष्णा योनिमूत्रगदापहा ॥(भावप्रकाश)

अर्थ-वडपत्री-कषेली,गरम तथा योनिरोग और मूत्ररोगको दूर करे है।

अपि च।

वटपत्र्यश्मभिच्छीता मधुरा तु बलप्रदा ।
किञ्चिदग्नेर्दीप्तिकरी व्रणकृच्छ्रप्रमेहजित् ॥
अश्मरीं मूत्रघातञ्च भगन्दरं विनाशयेत्।(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-वडपत्री-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, किञ्चित् अग्निको दीपन करनेवाली तथा घाव, मूत्रकृच्छ्र,प्रमेह,पथरी,मूत्रघात और भगन्दररोगको दूर करनेवाली है।

विवरण। वटपत्री पाषाणभेदहीका भेद है,इसके पत्ते-वडके समान होतेहैं, इसीसे इसका नाम वटपत्री है।

मत्स्याक्षीनामानि ।

मत्स्याक्षी बालिका मत्स्यगन्धा मत्स्यादनीति च ॥

अर्थ-मत्स्याक्षी, बालिका, मत्स्यगन्धा, मत्स्यादनी ।

अस्या गुणाः।

मत्स्याक्षी ग्राहिणी शीता कुष्ठपित्तकफास्रजित् ।

लघुस्तिक्ता कषाया च स्वाद्वी कटुविपाकिनी ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-मछेछी-ग्राही, शीतल, हलकी, कडवी, कषेली, स्वादिष्ठ, पचनेमें चरपरी तथा कोढ, पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करेहै ।

विवरण । मत्स्याक्षी-अर्थात् मछेछीके क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्ते उडदके पत्तोंके समान होते हैं, फूल-सफेद और पीले रंगके होते हैं, इसमें मछलीके समान गंध आती है ।

सर्पाक्षीनामानि ।

सर्पाक्षी स्यात्तु गण्डाली तथा नाडीकलापकः ॥

अर्थ-सर्पाक्षी, गण्डाली, नाडीकलापक ।

अस्या गुणाः ।

सर्पाक्षी कटुका तिक्ता सोष्णा कृमिनिकृन्तनी ।
वृश्चिकोन्दुरुसर्पाणां विषघ्नी व्रणरोपणी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सर्पाक्षी (सरहटी, गंडनी)-चरपरी, कडवी, गरम, कृमिनाशक तथा बिच्छू, मूसा और साँपके विषको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सर्पाक्षी-सरफोंकका भेद है, सरफोंकमें और इसमें किसी प्रकारका भेद नहीं पाया जाता है ।

शंखपुष्पीनामानि ।

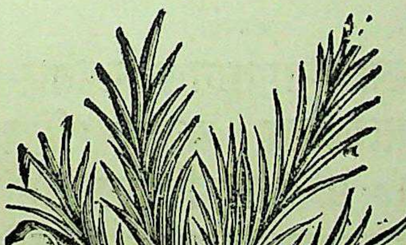

शंखपुष्पी (शंखाहूली)

मेध्या चण्डा शंखपुष्पी सुपुष्पी कम्बुमालिनी ।

अर्थ-शंखपुष्पी-मेध्या, चण्डा, सुपुष्पी, कम्बुमालिनी, (शंखाहा,

पीत पुष्पी, कम्बुपुष्पा, मलविनाशिनी, किरीटी, शंखकुसुमा, भूलग्ना, शंखगालिनी, माङ्गल्यकुसुमा, कम्बुपुष्पी, वनमालिनी, इतरा, सूक्ष्मपत्रा, सर्पाक्षी, रक्तपुष्पी, रक्तपुष्पिका, नीलपुष्पी, विष्णुक्रान्ता, सितपुष्पी, श्वेतकुसुमा, वनविलासिनी ।

संस्कृतभाषामें	शंखपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	शंखाहुली, कौडियाली ।
बंगलाभाषामें	शंखाहुली, डानकुनी ।
मराठीभाषामें	शंखावळी, शंखोनी ।
गुजरातीभाषामें	शंखावली ।
कर्णाटकीभाषामें	शंखपुष्पी ।
लैटिन्भाषामें	इवोल्व्युलस् इरेक्टा (सफेद्)EvolvulusErecta इवोल्व्युलस् आलसिनोइडिस् (लाल) E, Aesinofes इवोल्व्युलस् हर्सटस् (काली) E .hirsutus

अस्या गुणाः ।

शंखपुष्पी तु तीक्ष्णोष्णा मेध्या कृमिविषापहा ॥ (रा० व०)

अर्थ-शंखाहुली-तीक्ष्ण, गरम, मेधाजनक, तथा कृमि और विषविनाशक है ।

अन्यच्च ।

शंखपुष्पी सरा मेध्यायुष्या मानसरोगहृत। रसायनी कषायोष्णा स्मृतिकान्तिबलाग्निदा ॥ कटुका शीतला स्वर्य्या कुष्ठकृमिविषप्रणुत् । पाचकायुःस्थिरकरी मांगल्या पित्तनाशिनी ॥ लूतापस्मारदोषघ्नी ग्रहदोषस्य नाशिनी । सर्वोपद्रवहा प्रोक्ता पुष्पैर्भेदा गुणैः समाः ॥

अर्थ-शंखाहुली-सारक, मेधाजनक, आयुर्वर्द्धक, मनके रोगोंको हरनेवाली, रसायन, कषेली, गरम, स्मरणशक्तिवर्द्धक, कान्तिजनक, बलवर्द्धक, अग्निदायक, चरपरी, शीतल, स्वरको उत्तम करनेवाली, मंगलकारक, अवस्थास्थापक, पाचक तथा कोढ, कृमि, विष, पित्त, लूता, अपस्मार, ग्रहदोष और सर्वप्रकारके उपद्रवोंको दूर करनेवाली है, सर्वप्रकारकी शंखपुष्पी गुणोंमें समान है ।

अन्यच्च।

शंखपुष्पी कषायोष्णा कफकुष्ठविनाशिनी।
रसायनी सरा दिव्या लालाहृल्लासजूर्तिहा॥
लक्ष्मीमेधाबलाग्नीनां वर्द्धिनी कथिता बुधैः।

अर्थ-शंखपुष्पी-कषैली, गरम, कफ और कुष्ठको नष्ट करनेवाली, रसायन, सारक, दिव्य, मुखसे लारका गिरना, उबकाई और ज्वरको दूर करनेवाली है तथा लक्ष्मी, मेधा, बल और अग्निको बढानेवाली है।

श्वेतशंखपुष्पीगुणाः।

शुभ्रा च शंखिनी मेध्या शीतला वश्यसिद्धिदा। रसायनी सरा स्वर्य्या किञ्चिदुष्णा च तूवरा॥स्मृतिकान्तिबलाग्नीनां वर्द्धिनी कटुका मता॥ पाचकायुःस्थिरकरी माङ्गल्या पित्तनाशिनी॥ विषदोषमपस्मारं कफं कृमिविषं हरेत्। कुष्ठलूतात्रिदोषघ्नी ग्रहदोषस्य नाशिनी॥ सर्वोपद्रवहा प्रोक्ता रक्ता नीला गुणैः समा। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-सफेद शंखाहुली-मेधाजनक, शीतल, वशीकरण, सिद्धिदायक, रसायन, सारक, स्वरको सुन्दर करनेवाली, किञ्चित् उष्ण, कषैली तथा स्मरणशक्ति, कांति और अग्निको बढानेवाली है। चरपरी, पाचक, अवस्थास्थापक, मंगलकारक, तथा पित्त और विषदोष, अपस्मार (मृगी), कफ, कृमि, विष, कोढ, लूता, त्रिदोष, ग्रहदोष और सर्व उपद्रवोंको दूर करे है। लाल शंखपुष्पीके और नीली शंखपुष्पीके गुणभी इसकी समान जानने।

विवरण। शंखपुष्पीका छत्ता प्रायः ऊषर भूमिमें होता है, पत्ते छोटे और धूसर रंगके सूक्ष्म होते हैं, फूल-दुपहरियासे मिलता हुआ होता है, सफेद फूलवालीको सफेद शंखाहुली कहते हैं, लाल रंगके फूलवालीको लाल शंखाहुली कहते हैं, नीले रंगके फूलवालीको विष्णुक्रान्ता कहते हैं।

अर्कपुष्पीनामानि।

पयस्या ह्यर्कपुष्पी च सूर्य्यवल्ली कुटुम्बिनी॥

अर्थ-पयस्या, अर्कपुष्पी, सूर्यवल्ली, कुटुम्बिनी (जलकामुका, क्षीरिणी, वक्रशल्या, दुराधर्षा, क्रूरकर्मा, सिरिण्टिका, शीता, प्रहरकुटवी, शीतला, जलेरुहा, सितपर्णी, शीतपर्णी और अर्कपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	अर्कपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	अंधाहुली, अर्कहुली, दधियार, क्षीरवृक्ष, अर्कपुष्पी ।
मराठीभाषामें	शिरडोरि ।
गुजरातीभाषामें	खरणेर ।
लैटिन्भाषामें	होलोस्टेमा हिडिआई Holostema rheedii

अस्या गुणाः ।

कुटुम्बिनी तु मधुरा ग्राहका च रसायनी ।
शीतला च व्रणं पित्तं कफं रक्तरुजं तथा ॥
कृमिं च कण्डुदोषं च कुष्ठं चैव विनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-अर्कपुष्पी-मधुर, ग्राही, रसायन, शीतल तथा व्रण, पित्त, कफ, रुधिरविकार, कृमि, कण्डू और कुष्ठको नष्ट करे है ।

विवरण । अर्कपुष्पी जीवन्तिकाका भेद है, इसकी बेल नागरबेलकी समान होती है, पत्ते-गिलोयके समान छोटे २ होते हैं, फूल सूर्यमुखीके समान गोल आता है, और इसमें दूध निकलता है ।

लज्जालुनामानि ।

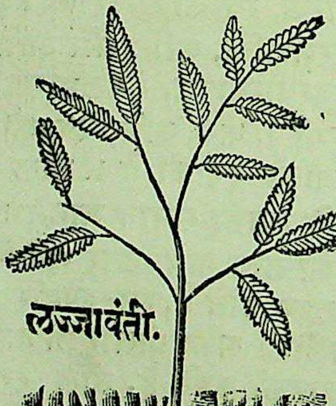

लज्जालुः स्याच्छमीपत्रा समंगाऽञ्जलिकारिका ।
रक्तपादी नमस्कारी ताम्रा खदिरकेत्यपि ॥

अर्थ-लज्जालु, शमीपत्रा, समंगा, अञ्जलिकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी, ताम्रा, खदिरका, (कान्दरी, स्पक्का, खदिरपत्रिका, संकोचिनी

समङ्गा, प्रसारिणी, सप्तपर्णी, खदिरी, गण्डमालिका, लज्जा, लज्जिका स्पर्शलज्जा, अस्त्ररोधनी, रक्तमूला, ताम्रमूला, स्वगुप्ता, महाभीता, वशिनी, महौषधी)

संस्कृतभाषामें लज्जालु ।
हिन्दीभाषामें लज्जावन्ती, छुईमुई, शर्मानी, लाजवती इत्यादि।
वंगभाषामें · लाजुक, लज्जावती ।
मराठीभाषामें लाजाळु लाजरी, संकोरणी ।
गुजरातीभाषामें रिशामणी ।
कर्णाटकीभाषामें मुदीदरेमुरूटव ।
लैटिन्भाषामें माईमोंसासेनसिटाईवा । Mimosasensitiva
मा० पुडिका । Pudica

अस्या गुणाः ।

लज्जालुः शीतला तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान्विनाशयेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-लज्जावती (छुईमुई) शीतल, कडवी, कषेली तथा कफ, पित्त, रक्तपित्त, अतिसार और योनिरोगोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

रक्तापादी कटुः शीता पित्तातीसारनाशिनी ।
शोफदाहश्रमश्वासव्रणकुष्ठकफास्रनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लज्जावती (छुईमुई) चरपरी, शीतल, पित्तातिसारनाशक तथा सूजन, दाह, श्रम, श्वास, घाव, कोढ, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

विपरीतलज्जालुनामानि ।

लज्जालुर्विपरीतान्या अल्पक्षुपबृहद्दला ॥

अर्थ-विपरीतलज्जालु, अल्पक्षुप, बृहद्दल ।

अस्या गुणाः ।

वैपरीत्या च लज्जालुर्ह्यभिधाने प्रयोजयेत् ।
लज्जालुर्वैपरीत्याह्वः कटुरुष्णः कफप्रणुत् ॥
रसे नियामकश्चैव नानाविज्ञानकारकः । (राजनिघण्टु)

अर्थ-विपरीतलज्जालु-चरपरा, गरम, कफनाशक, पारेको बांधनेवाला और अनेक प्रकारके चमत्कार दिखलानेवाला है ।

विवरण । लज्जावन्ती अर्थात् छुईमुईके क्षुप बेलके समान होते हैं, पत्ते छोंकर अथवा खैरके समान होतेहैं, फूल-गुलाबी नीले मिश्रित रंगके होते हैं, इसकी जड लाल होती है, इसको स्पर्श करे तो ये लज्जाके मारे सर्माकर सुकड जाती है, पश्चात् विस्तृत होजाती है, यह दो प्रकारकी होती है, एक कांटेवाली, एक विना कांटेकी, हाथके लगतेही सुकड सुकडाकर नीचेको झुक जाती है । इसीलिये इसका नाम लज्जावन्ती (छुईमुई) रक्खा है ।

अलम्बुषानामानि ।

अलम्बुषा खरत्वक्च तथा मेदोगला स्मृता ॥

अर्थ-अलम्बुषा, खरत्वक, मेदोगला ।

अस्या गुणाः ।

अलम्बुषा लघुः स्वादुः कृमिपित्तकफापहा ॥

अर्थ-अलम्बुषा (लज्जालुका भेद) हलका, स्वादिष्ठ तथा कृमि, पित और कफनाशक है ।

दुग्धिकानामानि ।

दुग्धी क्षीरात्मिका क्षीरी क्षीरावी च मरुद्भवा ॥

अर्थ-दुग्धी, क्षीरात्मिका, क्षीरी, क्षीरावी, मरुद्भवा, (स्वादुपर्णी, क्षीरिणी, क्षीराविका, ग्राहिणी, कच्छरा, ताम्रमूला और दुग्धिका)

दुग्धफेनीनामानि ।

दुग्धफेनी पयःफेनी फेनी दुग्धा पयस्विनी ।
लूतारिर्व्रणकेतुश्च गोजापर्णी च सप्तधा ॥

अर्थ-दुग्धफेनी, पयःफेनी, फेनी, दुग्धा, पयस्विनी, लूतारि, व्रणकेतु, गोजापर्णी ।

नागार्जुनीनामानि ।

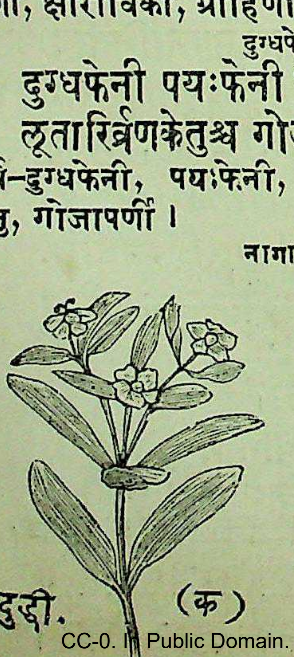

दुद्धी. (क)

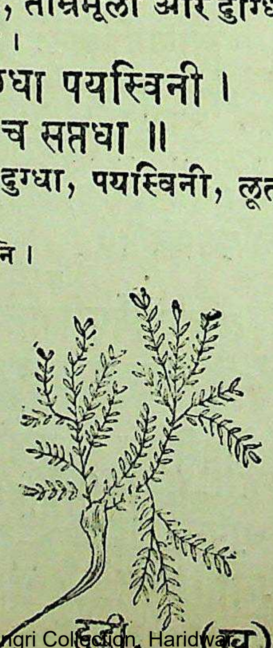

दुद्धी. (ख)

नागार्जुनी पयोवर्षा योगिनी लघुदुग्धिका ।

अर्थ-नागार्जुनी, पयोवर्षा, योगिनी, लघुदुग्धिका ।

संस्कृतभाषामें	दुग्धिका, दुग्धफेनी, नागार्जुनी ।
हिन्दीभाषामें	दुद्धी, दुधिया, दूधीकलव ।
वंगभाषामें	दुधि, दुध्या, दुदूले, क्षीरइ, खिरुइ इत्यादि ।
मराठीभाषामें	लघुदुधी, थोरदुधी ।
गुजरातीभाषामें	दुधेलीमोटी, थोरदुधी ।
कर्णाटकीभाषामें	मारिजबणीगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पिलपा लचेट्टु ।
लैटिन भाषामें	युफोर्बियाहिर्टा Eupharbia hirta यू.पार्विफ्लोरा Eu. parviflora यू. टाईमिफोलिया Eu. thymefolia यू. पाईल्यूलिका Euphorbia pilulifera
फारसीभाषामें	निशाशत ।

दुग्धिकागुणाः ।

दुग्धिकोष्णा गुरू रूक्षा वातला गर्भकारिणी ।
स्वादुक्षीरा कटुस्तिक्ता सृष्टमूत्रमलापहा ॥
स्वादुर्विष्टम्भिनी वृष्या कफकुष्ठकृमिप्रणुत् ।(भा०प्र०)

अर्थ-दुद्धी-गरम, भारी, रूखी, बादी, गर्भकारक, स्वादिष्ट, क्षीरयुक्त, मलमूत्रको निकालनेवाली, चरपरी, कडवी, मधुर, विष्टम्भजनक, वीर्य्यवर्द्धक तथा कफ, कोढ, और कृमिनाशक है ।

दुग्धफेनीगुणाः।

दुग्धफेनी कटुस्तिक्ता शिशिरा विषनाशिनी ।
व्रणापसारणी रुच्या युक्त्या चैव रसायनी॥(रा० नि०)

अर्थ-दुग्धफेनी-चरपरी, कडवी, शिशिर, विषनाशक,व्रणनिवारक, रुचिकारक और किसीके साथ होनेसे रसायन है ।

नागार्जुनी गुणाः ।

नागार्जुनी तु मधुरा वृष्या रूक्षा च ग्राहिणी।तिक्ता च वातला गर्भस्थापनी कटुका पटुः॥ धातुवृद्धिकरी हृद्या चोष्णा पारदबन्धिनी। मलस्तम्भकरी मेहकफकुष्ठकृमीन्हरेत् ॥

अर्थ-नागार्जुनी (एकप्रकारकी दुद्धी)-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रूखी,

ग्राही, कडवी, वातकारक, गर्भस्थापक, चरपरी खारी, धातुवर्द्धक, हृदयको हितकारी, गरम, पारेको बांधनेवाली, मलको स्तम्भन करनेवाली तथा प्रमेह, कफ, कोढ और कृमिको दूर करैहै ।

विवरण । दुद्धीका क्षुप छत्तासा होता है, ऊपरको कम उठताहै, क्षितिमें फैलताहै, दुद्धी तीनप्रकारकी होती है, एक नोकदार लाल पत्तोंकी, एक गोलपत्तोंकी और एक मूंगोंके दानोंके समान छोटे २ पत्तोंकी होतीहै, तीनोंप्रकारकी दुद्धीमें दूध निकलता है ।

भूम्यामलकीनामानि ।

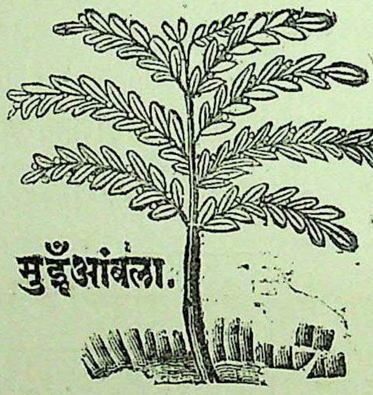

मुइँआंवला.

भूम्यामली शिवा ताली क्षेत्रामली च झारिका ॥

अर्थ-भूम्यामली, शिवा, ताली, क्षेत्रामली, झारिका (बहुपुष्पी, जडा, अध्यण्डा, तालि, तामलकी, अजटा, सूक्ष्मफला, क्षेत्रामलकी, भूम्यामलकी, वितुन्नक, झटा, अफला, अमला, अज्जुटा, झाटा, माला, झाटामला, अमलज्जुटा, तमाली, तमालिका, तामलकी, उच्चटा, दृढपादी, वितुन्ना, वितुन्तिका, भूधात्री, चारटी, वृष्या विषघ्नी, बहुपात्रिका, बहुवीर्य्या, अहिमपदा, वीरा, विश्वपर्णी, हिमालया, अरुहा, भूम्यामलकिका, बहुपत्रा, बहुफला, भूपर्वा, दलस्पर्शिनी, बहुपुत्रा, सूक्ष्मदला, दृढपादा, विश्वपर्णी, अमली, तमालिनी, पुत्रश्रेणिका, आमलकी, हिलोलिका, चोरटा)

संस्कृतभाषामें भूम्यामलकी ।
हिन्दीभाषामें भुँईआमला, भद्रआँवला, पातलआंबरा, भोमिआँवरा
वंगभाषामें भुँईआमला ।
मराठीभाषामें भुईआंवळी ।
गुजरातीभाषामें भोंआंवली ।

कर्णाटकीभाषामें	आरुनेल्लि ।
तैलिङ्गीभाषामें	नेलाउसीरीके ।
लैटिन्भाषामें	फाईलेन्थस् निरुरी Phyllanthusniruri
	फाईलेन्थस् युरिनेरिया P. urinaria.

अस्या गुणाः ।

भूधात्री च कषायाम्ला पित्तमेहविनाशिनी ।
शिशिरा मूत्ररोधार्तिशमनी दाहनाशिनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-भुँईआमला-कषेला, खट्टा, शीतल तथा पित्त और प्रमेहनाशक, मूत्ररोधनिवारक और दाहको शान्त करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

भूधात्री वातकृत्तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ।
पिपासा कासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा ॥ (भा . प्र.)

अर्थ-भुँईआमला-वातकारक, कडवा, कषेला, मधुर, शीतल तथा पियास, खाँसी, रक्तपित्त. कफ, पांडुरोग और क्षतनाशक है ।

अन्यच्च ।

भूधात्री तु विशेषेण विषघ्नी पुत्रदायिनी ॥ (शां० नि०)

अर्थ-भुँईआमला-विशेषकरके विषनाशक और पुत्रदायक है ।

अपिच ।

भूधात्री तु हिमा तिक्ता कषाया मधुरा लघुः ।
रोचनी पाण्डुपित्तास्रकफकुष्ठविषापहा ॥
जयेच्छ्वासं तृषां दाहं हिक्काकासक्षतक्षयान् । (ग ० नि ०)

अर्थ-भुईआमला-शीतल, कडवा, कषेला, मधुर, हलका, रुचिकारक तथा पाण्डुरोग, रक्तपित्त, कफ, कोढ, विष, श्वास, तृषा, दाह, हिचकी, खाँसी, क्षत और क्षयका नाश करेहै ।

विवरण । भुईआमलेके क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्तोंके नीचे राईके दानेके समान फलोंकी शाखा होती है ।

ब्राह्मीनामानि ।

ब्राह्मी वयस्था मत्स्याक्षी सुरसा ब्रह्मचारिणी ॥

अर्थ-ब्राह्मी, वयस्था, मत्स्याक्षी, सुरसा, ब्रह्मचारिणी, (सोम वल्लरी, मत्स्याक्षी, सरस्वती, सोम्या, सुरश्रेष्ठा, सुवर्चला, कपोतवेगा, वैधात्री, दिव्यतेजा, महौषधि, स्वायम्भुवी, सौम्यलता, सुरेष्टा, ब्रह्मकन्यका, मण्डूकमाता, मण्डूकी, मेध्या, वीरा, भारती, वरा, परमेष्ठिनी, दिव्या, शारदा, कपोतवङ्का, सोमवल्ली)

मण्डूकपर्णीनामानि।

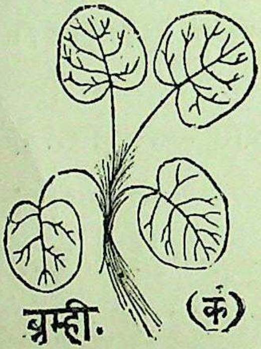

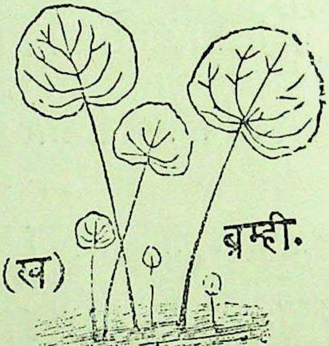

मण्डूकपर्णी मण्डूकी भेकी मण्डूकपर्णिका ॥

अर्थ-मण्डूकपर्णी, मण्डूकी, भेकी, मण्डूकपर्णिका, (माण्डूकी, त्वाष्ट्री, दिव्या, महौषधी, ब्रह्ममण्डूकी, सुप्रिया, दर्दुच्छदा)

संस्कृतभाषामें	ब्राह्मी, माण्डूकी, ब्रह्ममाण्डूकी ।
हिन्दीभाषामें	ब्रह्मी, ब्रह्ममाण्डूकी, वरंभी, चरेली ।
वंगभाषामें	ब्रह्मीशाक, अधाविर्णी, थुलकुडि, थालकुनि।
मराठीभाषामें	ब्राह्मी।
गुजरातभाषामें	ब्राह्मी, विद्यब्राह्मी, खडभरामी ।
कर्णाटकीभाषामें	ओदेलग ।
तैलङ्गीभाषामें	शम्ब्रनीचेट्टु, मण्डूकब्रम्मी ।
तामिलीभाषामें	वीमी, वल्लरकिरी ।
वम्०	वाम, ब्रह्मी ।
इंग्रेजीभाषामें	इण्डियन् पेनीवर्ट । Indian penny wort
लैटिन्भाषामें	हाइडोकोटाईल एश्याटीका Hydrocot yle Assiatica
फारसीभाषामें	जरनव ।

ब्राह्मीगुणाः ।

ब्राह्मी हिमा सरा तिक्ता लघ्वी मेध्या च शीतला। कषाया मधु-

रा स्वादुपाकाऽऽयुष्या रसायनी ॥ स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित् । विषशोथज्वरहरी तद्वन्मण्डूकपर्णिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ब्रह्मी-हिम, सारक (दस्तावर), हलकी, मेधाकारक, शीतल, कषेली, मधुर, स्वादुपाकी, आयुर्वर्द्धक, रसायन, स्वरको उत्तम करनेवाली, स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा कोढ, पाण्डु, प्रमेह, रुधिरविकार, खांसी, विष, सूजन और ज्वरको हरनेवाली है, इसकेही समान मण्डूकपर्णीके गुण जानने ।

अन्यच्च ।

ब्राह्मी तु भेदिनी गुर्वी मेध्या पित्तकफापहा ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-ब्रह्मी-भेदक, भारी, मेधाजनक तथा पित्त और कफनाशक है।

अपिच ।

ब्राह्मी शीता कषाया च तिक्ता बुद्धिप्रदा मता । मेध्यायुरग्निजननी सारका स्वादुला लघुः ॥ कण्ठशुद्धिकरी हृद्या स्मृतिदा च रसायना । हृद्या मेहं विषं कुष्ठं पांडुं कासं ज्वरं जयेत् । शोफकण्डूप्लीहवातरक्तपित्तारुचीर्जयेत् । श्वासं शोषं सर्वदोषं कफवातामयाञ्जयेत् । सर्वेऽप्येते गुणा ब्रह्ममण्डूक्यामपि संस्थिताः । (नि० र०)

अर्थ-ब्रह्मी-शीतल, कषेली, कडवी, बुद्धिदायक, मेधाजनक, आयुर्वर्धक, अग्निजनक, सारक, स्वादिष्ठ, हलकी, कण्ठशोधक, हृदयको हितकारी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, रसायन तथा प्रमेह, विष, कोढ, पाण्डुरोग, खांसी, ज्वर, सूजन, कण्डू, प्लीहा, वातरक्त, पित्त, अरुचि, श्वास, शोष, सकलदोष, कफ और वातको दूर करनेवाली है । ब्रह्ममाण्डूकीके भी इसीके समान गुण जानने ।

अन्यच्च ।

ब्राह्मी तु पिच्छिलायुष्या सरोन्मादविमर्दिनी ।
वयसः स्थापनी मेध्या वाक्स्वरस्मृतिदा परा ॥
तिक्ता हृद्या कटुः पाके श्वासश्लेष्मनिकृन्तनी। (ग.नि.)

अर्थ-ब्रह्मी-पिच्छिल, आयुर्वर्द्धक, सारक (दस्तावर), उन्मादनाशक, अवस्थास्थापक, मेधाकारक तथा वाणी, स्वर और स्मरणशक्तिवर्द्धक है । कडवी, हृदयको हितकारी, पचनेमें चरपरी और श्वास तथा कफनाशक है ।

मण्डूकपर्णीगुणाः।

मण्डूकपर्णिकालघ्वी स्वादुपाका सरा हिमा॥ (रा० व०)

अर्थ-ब्रह्ममाण्डूकी--हलकी,पचनेमें स्वादिष्ठ,दस्तावरऔरशीतलहै।

अस्यार्कगुणाः।

ब्रह्ममण्डूकिका पाण्डुविषशोथज्वरान्हरेत् (इतिदशा)

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकीका अर्क-पाण्डुरोग विषदोष,सूजन और ज्वरको दूर करनेवाला है।

विवरण। ब्राह्मीके क्षुपका छत्तासा प्रायः सजल क्षिति अथवा जलाशयके समीप भूमिमें होताहै, पत्ते-छोटे २ गोल एक ओरसे खिले हुए होतेहैं दूसरी ब्रह्ममण्डूकी होतीहै, उसके पत्ते छोटे होतेहैं।

द्रोणपुष्पीनामानि।

द्रोणा च द्रोणपुष्पी च फलेपुष्पा च कीर्तिता ॥

अर्थ- द्रोणा, द्रोणपुष्पी, फलेपुष्पा, (क्षवपत्री, कुम्भयोनि, कुरुम्बिका, चित्राक्षुप, कुरुम्बा, सुपुष्पी, चित्रपत्रिका, श्वसनक, पालिन्दी, कुम्भयोनिका, छत्राणी, छत्रका, कौण्डिन्य, वृक्षसारक)

संस्कृतभाषामें	द्रोणपुष्पी।
हिन्दीभाषामें	गूमा, गोमा।
बंगालीभाषामें	द्रोणपुष्पी (घलघसे)
मराठीभाषामें	कुम्भा, तुम्बा।
गुजरातीभाषामें	कुबो।
कर्णाटकीभाषामें	तुम्ब।
तैलंगीभाषामें	लतुगतुम्मि।
लैटिनभाषामें	ल्युकासूसिफेलोटस् Leucas cephalotus

अस्या गुणाः।

द्रोणपुष्पी गुरुः स्वाद्वी रूक्षोष्णा वातपित्तकृत्।
सतीक्ष्णा लवणा स्वादुपाका कट्वी च भेदिनी ॥
कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित्। (भा० प्र०)

अर्थ-द्रोणपुष्पी (गूमा)-भारी,स्वादिष्ठ,रूखी, गरम, वातपित्तकारक,तीक्ष्ण और लवणरसयुक्त,पचनेमेंभी स्वादिष्ठ, चरपरी,दस्तावर तथा कफ,आम,कामला,सूजन,तमकश्वास और कृमिको दूर करेहै।

अन्यच्च ।

द्रोणपुष्पी कफार्शोघ्नी कामलकृमिशोथजित् ॥ (रा. वा.)

अर्थ-द्रोणपुष्पी (गूमा)-कफ, बवासीर, कामला, कृमि और सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

द्रोणपुष्पी कटुः सोष्णा रुच्या वातकफापहा ।
अग्निमांद्यहरा चैव पक्षाघातस्य नाशिनी ॥ (शो० नि०)

अर्थ-गूमा-चरपरा, गरम, रुचिकारक तथा वात, कफ, मंदाग्नि और पक्षाघात रोगनाशक है ।

अथवाः पत्रगुणाः ।

द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रूक्षं गुरु च पित्तकृत् ।
भेदनं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-गूमाके पत्ते-स्वादिष्ठ, रूखे, भारी, पित्तकारक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरको हरनेवाले हैं ।

विवरण । गूमाका क्षुप होता है, गुच्छे गांठ २ में होते हैं, उन गुच्छोंमें सफेद फूल होता है । और फूलके ऊपर दो पत्ते होते हैं । इसके भीतर बीज होते हैं । मात्रा १ मासेकी ।

आदित्यभक्तानामानि ।

आदित्यभक्ता वरदार्कभक्ता सुवर्चला सूर्यलतार्ककान्ता ।
मण्डूकपर्णी सुरसंभवा च सौरिस्सुतेजार्कहिता रवीष्टा ॥
मण्डूकी सत्यनाम्नी स्यादेषा मार्तण्डवल्लभा ।
विक्रान्ता भास्करेष्टा च भवेदष्टादशाह्वया ॥

अर्थ-आदित्यभक्ता-वरदा, अर्कभक्ता, सुवर्चला, सूर्यलता, अर्ककान्ता, मण्डूकपर्णी, सुरसम्भवा, सौरि, सुतेजा, अर्कहिता, रवीष्टा, मण्डूकी सत्यनाम्नी, मार्तण्डवल्लभा, विक्रान्ता, भास्करेष्टा (सूर्य्यावर्त्ता, रविप्रीता) और दूसरी ब्रह्मसुवर्चला इसीकाही भेद है ।

संस्कृतभाषामें	आदित्यभक्ता, सुवर्चला, ब्रह्मसुवर्चला ।
हिन्दीभाषामें	हुरहुज, ब्रह्मसोंचली, सोंचली ।
वंगभाषामें	हुडहुडे, वनझलते ।

मराठीभाषामें	सूर्यफूल ।
गुजरातीभाषामें	सूरजमुखी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुरहुर, आदित्यभक्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	सूर्यकान्तिमु ।
इंग्रेजीभाषामें	संफ्लावर । Sunflower
लैटिन्भाषामें	हेलिएंथस् एन्युअस् । Helianthus annus
फारसीभाषामें	गुलेआफतावपरस्त ।
अरबीभाषामें	अरदमून ।

आदित्यभक्तागुणाः ।

आदित्यभक्ता शिशिरा स तिक्ता पटुस्तथोग्रा कफहारिणी च।
त्वग्दोषकण्डूव्रणकुष्ठभूतग्रहोग्रशीतज्वरनाशिनी च॥(रा०र०)

अर्थ-आदित्यभक्ता(हुरहुज)-शीतल,कडवी,खारी,उग्र,कफनाशक तथा त्वचाके विकार,कण्डू,व्रण,कुष्ठ,भूत,और उग्रशीतज्वरनाशक है।

अन्यच्च ।

आदित्यभक्ता कटुका शीता तिक्ताऽतिपित्तला । रूक्षा स्वाद्वी च कट्वी च कफवातव्रणापहा । शीतज्वरं भूतबाधां ग्रहपीडां विनाशयेत् ॥ मेहं कृमींश्च कुष्ठं च त्वग्दोषं च विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-आदित्यभक्ता (हुरहुज)-चरपरी, शीतल,कडवी,अत्यन्त पित्तकारक, रूखी,स्वादिष्ठ, खारी, तथा कफ,वात,व्रण,शीतज्वर, भूतबाधा, ग्रहपीडा, प्रमेह, कृमि, कोढ और त्वचाके दोषोंको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

सुवर्चला हिमा रूक्षा स्वादुपाका सरा गुरुः ।
अपित्तला कटुः क्षारा विष्टम्भकफवातजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हुरहुज-शीतल, रूखी, पचनेमें स्वादिष्ठ, दस्तावर, भारी, पित्तकारक नहीं, चरपरा, खारी तथा विष्टम्भ, कफ, और वातको दूर करनेवाला है।

अपिच ।

सुवर्चला गुरुः शीता मूत्रला कर्णशूलनुत् ॥

अर्थ-हुरहुज-भारी, शीतल, मूत्रजनक और कर्णशूलनाशक है।

ब्रह्मसुवर्चलागुणाः ।

अन्या तिक्ता कषायोष्णा सरा रूक्षा लघुः कटुः ।

निहन्ति कफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥
विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपाण्डुताः ॥

अर्थ-ब्रह्मसुवर्चला (ब्रह्मसोंचली)-कषेली, गरम, सारक (दस्ताबर), हलकी, चरपरी तथा कफ, रक्तपित्त, श्वास, खांसी, अरुचि ज्वर, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, रुधिरबिकार, योनिरोग, कृमि और पाण्डुरोगको दूर करनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

अन्योष्णा कुष्ठमेहाश्मकृच्छ्रज्वरहरा लघुः ॥ (म०नि०)

अर्थ-ब्रह्मसोंचली-गरम, हलकी, तथा कोढ, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और ज्वरको हरनेवाली है ।

आदित्यपत्रागुणाः ।

अदित्यपत्रा वीर्योष्णा कट्वी संदीपनीमता। स्वर्या रसायानी तिक्ता तुवरा च सरामता ॥ रूक्षा लघ्वी च संप्रोक्ता-कफवातविनाशिनी । रक्तदोषं ज्वरं श्वासं कासं विस्फोटकं तथा ॥ कुष्ठं मेहं चारुचिं च योनिशूलं तथाश्मरीम् । मूत्रकृच्छ्रं पाण्डुरोगं गुल्मं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ- आदित्यपत्रा-उष्णवीर्य, चरपरा, अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, रसायन, कडवा, कषेला, दस्तावर, रूखा हलका तथा कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, श्वास, खांसी, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, अरुचि, योनिशूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग और गुल्मका नाश करेहै ।

विवरण । ब्रह्मसुवर्चला-अर्थात् हुरहुरकी बेल तथा क्षुप होतेहैं, यह विशेषकरके बागोंमें बोये जाते हैं, प्रायः इसपर सूर्योदयके होनेपर फूल प्रफुल्लित होजाते हैं, बेलवाले हुरहुरमें जो फूल आते हैं वे नीले रंगके होतें हैं, और क्षुपवाले हुरहुरके फूल सफेद होते हैं, बहुत सुन्दर और सूर्य्याकार होते हैं परन्तु बहुत छोटे २ होतेहैं ।

वन्ध्याकर्कोटकीनामानि ।

वन्ध्याःकर्कोटकी देवी कान्ता योगेश्वरीति च ।
नागारिर्भक्तदमनी विषकण्टकिनी तथा ॥

अर्थ-वध्याककौंटकी, देवी, कान्ता, योगेश्वरी, नागारि, भक्तदमनी, विषकण्टकिनी (नागाराति, वन्ध्या, नागघ्नी, मनोज्ञा,

पथ्या, दिवा, पुत्रदा, सकन्दा, कन्दवल्ली, ईश्वरी, श्रीकन्दा, सुगन्धा, सर्पदमनी, विषकन्दकिनी, वरा, नक्रदमनी, कन्दशालिनी, भूतापहा, सर्वौंषधी, विषमोहप्रशमनी, महायोगेश्वरी)

संस्कृतभाषामें	वन्ध्याकर्कोटकी ।
हिन्दीभाषामें	बांझखखसा, बनककोडा, बांझककोडा ।
वंगभाषामें	तित्काँकराले, तित्कांकडी ।
मराठीभाषामें	बांझकटोली ।
गुजरातीभाषामें	बांझकण्टोलो ।
कर्णाटकीभाषामें	बंजेमडुवागलु ।
लैटिनभाषामें	मोमोंडिका डायोइकामेल । Momordica dioicamal

अस्या गुणाः ।

वंध्याकर्कोटकी तिक्ता कटूष्णा च कफापहा ।
स्थावरादिविषघ्नी च शस्यते सा रसायने ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-बांझककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, कफनाशक, स्थावरादि विषविनाशक और पारेको बांधनेवाला है ।

अन्यच्च ।

वन्ध्या कर्कोटकी लघ्वी कफनुद्व्रणशोधिनी ।
सर्पदर्पहरी तीक्ष्णा विसर्पविषहारिणी ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वनककोडा-हलका, कफनाशक, व्रणशोधक, सर्पके विषको हरनेवाला, तीक्ष्ण तथा विसर्प और विषको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

वन्ध्याकर्कोटकी तिक्ता कट्वी चोष्णा लघुः स्मृता । रसायनी
शोधिनी च स्थावरादिविषापहा ॥ कफनेत्रशिरोरोगव्रणवीस-
र्पकासहा । रक्तदोषं सर्पविषं नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥ (नि.र॰)

अर्थ-वनककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, हलका, रसायन, शोधक, स्थावरादिविषनाशक तथा कफ नेत्ररोग, मस्तकरोग, व्रण, विसर्प, खांसी, रुधिरविकार और सांपके विषको दूर करने वाला है।

विवरण-वन्ध्याकर्कोटकी अर्थात् बांझककोडेकी बेल कर्कोडेके समान जंगलके वृक्षोंपर फैलजातीहै, परन्तु इसमें फल नहीं आते, इसलिये इसको बांझककोडा कहते हैं, फलके स्थानमें खाली एक कोष होताहै और इसकी जडके नीचे खोदमेसे एककन्द निकलताहै।

अस्याः कन्दगुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकीकन्दो हन्ति श्लेष्मविषद्वयम्॥ (शो॰नि॰)

अर्थ-वनककोडेका कन्द-कफ और दोनों प्रकारके विष, (स्थावर आर जंगम) को दूर करनेवाला है ।

मार्कण्डिकानामानि ।

मार्कण्डिका भूमिचरी मार्कण्डी मृदुरेचनी ॥

अर्थ-मार्कण्डिका, भूमिचरी, मार्कण्डी, मृदुरेचनी, (भूमिवल्ली, पीतपुष्पी, पीतपुष्पा, महौषधी, जालतीका)

संस्कृतभाषामें	मार्कण्डिका ।	
हिन्दीभाषामें	भुईखखसा । (सनाय)	
वंगभाषामें	कांकरोलभेद ।	
मराठीभाषामें	सोनामुखी ।	
द॰	सोनामुखी ।	
दे॰	आहुली ।	
गुजरातीभाषामें	मीठीआवल्य ।	
कर्णाटकीभाषामें	तलाडवल्ली ।	
तैलङ्गीभाषामें	नेलतंगडी ।	
इंग्रेजीभाषामें	एलग्जैंड्रियन-सेना ।	Alexandrian-sena
लैटिन्भाषामें	सेन्नफोलिआ ।	Seunafolia
	केसियाएगस्टिफोलिआ ।	Cassia augustifolia
फारसीभाषामें	सना ।	
अरबीभाषामें	सना ।	

अस्या गुणाः ।

मार्कण्डिका कुष्ठहरी ऊर्द्ध्वाधःकायशोधिनी ।
विषदुर्गन्धकासघ्नी गुल्मोदरविनाशिनी॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-भुईखखसा-कुष्ठनाशक, ऊपर और नीचेसे शरीरका शोधन करनेवाला तथा विष, दुर्गन्ध, खांसी, गुल्म और उदररोगोंको हरनेवाला है।

विवरण । भुईखखसाकी एक लता होतीहै, पत्ते-परवलकी समान होतेहैं और फूल पीले रंगके होतेहैं ।

देवदालीनामानि ।

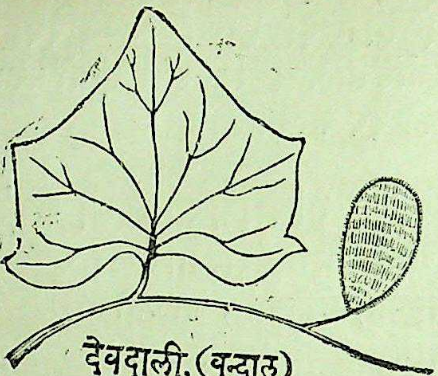

देवदाली. (वन्दाल)

जीमूतकः कण्टफला गरागरीवेणी सहा कोषफला च कट्फला।
घोरा कदम्बाविषदाचकर्कटीस्याद्देवदाली खलु सारमूषिका॥
वृत्तकोषा विषघ्नी च दाली लोमशपत्रिका ।
तुरंगिका च तर्कारी नाम्नामेकोनविंशतिः ॥

अर्थ-जीमूतक, कण्टफला, गरागरी, वेणी, सहा, कोषफला, कट्फला, घोरा, कदम्बा, विषहा, कर्कटी, देवदाली, सारमूषिका, वृत्तकोषा, विषघ्नी, दाली, लोमशपत्रिका, तुरंगिका, तर्कारी (देवताड, गरनाशिनी, घोषा, आखुविषहा, चतुरंगका, देवदालिका, पीता, खरस्पर्शा)

संस्कृतभाषामें	देवदाली ।	
हिन्दीभाषामें	सौनैया, घघरबेल, बिदाली घुघरान वंदाल ।	
वंगभाषामें	घोषकलताविशेष, देयाताडा ।	
मराठीभाषामें	देवदाली, देवडंगरीफल ।	
गुजरातीभाषामें	कुकडवेल्य ।	
तैलिङ्गीभाषामें	डातरगाण्डि, लताविशेषमु ।	
कर्णाटकीभाषामें	देवडंगर ।	
इंग्रेजीभाषामें	ब्रिस्टलि-ल्युफा ।	Bristly-Luffe
लैटिन्भाषामें	ल्युफाएकिनेटा ।	Luffa Echinata
या०	बंदाल ।	

अस्या गुणाः ।

देवदाली रसे पाके तिक्ता तीक्ष्णा विषापहा ।

वामनी हन्ति गुदजकफशोफामकामलाः॥
ज्वरकासारुचिश्वासहिध्मापाण्डुक्षयकृमीन् । (रा. नि.)

अपि च ।

अर्थ-देवदाली(घघरबेल)-रस और पाकमें कडवी, तीक्ष्ण, विषनाशक,वमनकारक,तथा गुदजरोग,कफ,शोफ,आम, कामला,ज्वर, खांसी,अरुचि, श्वास हिध्म, पाण्डु और क्षयरोगका नाश करे है।

अन्यच्च ।

देवदाली वमिकरा तिक्ता चोष्णा च ऊष्मणा । तीक्ष्णा पाण्डुकफश्वासकासार्शःक्षयनाशिनी॥ कामलाकृमिहिक्काघ्नी ज्वरशोथविषापहा । भूतबाधारुचिहरा चोंदुरोर्विषनाशिनी ॥ फलमस्याः सरं तिक्तं गुल्मकृमिकफापहम् । शूलार्शःकामलावातनाशकं परिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-देवदाली (घघरबेल)-वमनकारक, कडवी, गरम, चरपरी, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, कफ, श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय,कामला, कृमि, हिचकी, ज्वर, सूजन, विष, भूतबाधा, अरुचि और मूषेके विषको दूर करनेवाली है। इसका मूल-सारक, कडवा तथा गुल्म, कृमि, कफ, शूल, बवासीर और कामला वातको हरनेवाली है।

अन्यच्च ।

दवदालीत्रयं श्वासज्वरकासकफापहम् ।
आखोर्विषं निहन्त्याशु वामकञ्च विरेचकम् ॥
श्वता रक्ता च पीता च देवदाली गुणैः समा।(शो०नि०)

अर्थ-तीनों प्रकारकी देवदाली-श्वास, ज्वर, खांसी, कफ और मूषेके विषको दूर करेहै तथा वमनकारक और विरेचक है। सफेद, लाल और पीली इन तीनों देवदालीके गुण समान हैं।

विवरण। देवदाली,वन्दाल, घघरबेल, सुनैया और खखसाके फलवाली बडीबेल होतीहै, खेतकी वाडोंपर किसान लोग बहुत लगादेतेहैं, फूल-सफेद पीले और लाल तीन रंगके होते हैं, फलोंके ऊपर बहुत छोटे २ कांटे होतेहैं,इसका फल छोटी तुराईकेसा होताहै।

जलपिप्पलीनामानि।

जलपिप्पल्यभिहिता शारदी शकुलादनी ।

मत्स्यादनी मत्स्यगन्धा लाङ्गलीत्यपि कीर्तिता॥

अर्थ-जलपिप्पली, शारदी, शकुलादनी, मत्स्यगन्धा, लाङ्गली (महाराष्ट्री, तोयवल्लरी, अग्निज्वाला, चित्रपत्री, प्राणदा, तृणशीता, बहुशिखा)

संस्कृतभाषामें	जलपिप्पली।	
हिन्दीभाषामें	पनिसिगा, गंगतिरिया जलपीपर।	
वंगभाषामें	काँचडाघास, पनिसिगा।	
मराठीभाषामें	जलपिंपळी।	
गुजरातीभाषामें	रतवेलियो।	
कर्णाटकीभाषामें	होमुगुलु।	
इंग्रेजीभाषामें	परपल् लिपिया	Purple Lippia
लैटिन्भाषामें	लिपियानोडिफ्लोरा।	Lippia Nodiflora
फारसीभाषामें	पीपलआबी।	
अरबीभाषामें	फिलफिलमाय।	

अस्या गुणाः।

जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शुक्रला लघुः।
संग्राहिणी हिमा रूक्षा रक्तदाहव्रणापहा॥
कटुपाकरसा रुच्या कषाया वह्निवर्द्धिनी। (भा० प्र०)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, हलकी, मलरोधक, शीतल, रूखी, पचनमें और रसमें चरपरी, रुचिकारक, कषेली, अग्निवर्द्धक तथा रुधिरविकार, दाह और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शीतला मता। रसकाले च कटुका ग्राहिणी शुक्रला लघुः॥ रूक्षा तीक्ष्णा च तुवरा मुखशुद्धिकरी मता। रुच्याग्निदीपनी वातकारिणी रक्तदोषहा॥ रसदोषं कृमीन्दाहं व्रणं श्वासं कफं तथा। वातं विषं भ्रमं मूर्च्छां तृषां पित्तज्वरं हरेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, कटुरसान्वित, ग्राही, शुक्रजनक, हलकी, रूखी, तीक्ष्ण, कषेली, मुखको शुद्ध करनेवाली, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, वातकारक तथा

रुधिर विकार रसदोष, कृमि, दाह, व्रण, श्वास, कफ, वात, विष, भ्रम, मूर्च्छा, तृषा और पित्तज्वरको दूर करे है ।

विवरण । जलपीपलके क्षुप-प्रायः सजल भूमिमें उत्पन्न होते हैं, पत्ते-बडी नोनियाके समान और नोंकदार होते हैं, इसमें पीपलके समान एक बाल निकलती है ।

गोजिह्वानामानि ।

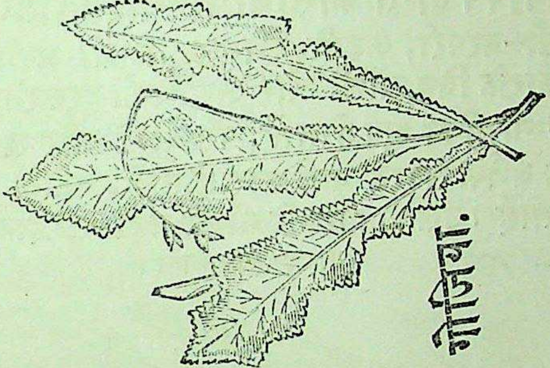

गोजिह्वा दार्विका गोभी कुरसा दार्विपत्रिका ॥

अर्थ-गोजिह्वा, दार्विका, गोभी, कुरसा, दार्विपत्रिका (अनडुज्जिह्वा, दार्विका, दर्वी, दार्वी, गोजिह्विका, खरपत्री, वातोना, अधोमुखा, अधःपुष्पी) । [illegible] करनेवाली, [illegible]

संस्कृतभाषा[illegible]	[illegible]जह्वा ।
हिन्दीभाष[illegible]	गोजिया, गोभी ।
बङ्गभाषामें	दाडिशाक ।
मराठीभाषामें	पाथरी ।
गुजरातीभाषामें	भोपाथरी ।
तैलिङ्गीभाषामें	येदुनालुकचेट्टु, भरीलिकचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	एलिफेण्टोपस् स्केबर । Elephantopus Scabar
फारसीभाषामें	कलमरूमी ।

अस्या गुणाः ।

गोजिह्वा वातला शीता ग्राहिणी कफपित्तनुत् ।
हृद्या प्रमेहका सास्रव्रणज्वरहरी लघुः ॥
कोमला तुवरा तिक्ता स्वादुपाका रसा स्मृता । (भा० प्र०)

अर्थ-गोभी-वातकारक, शीतल, ग्राही, कफपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, हलकी, तथा प्रमेह, खाँसी, रुधिरविकार, व्रण और ज्वरको हरनेवाली है, तथा कोमल, कषेली, कडवी, पचनेमें और रसमें स्वादिष्ठ है ।

अन्यच्च ।

गोजिह्वा कटुका तिक्ता शीतला व्रणरोपिणी ।
पित्तं सर्वविषं हन्ति कासारुचिविनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ-गोभी-चरपरी, कडवी, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा पित्त, सर्वप्रकारके विष, खाँसी और अरुचिको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । गोभीका क्षुप होताहै, पत्ते-लम्बे और खरखरे होते हैं, फूल-सुवर्णके वर्णके समान चक्राकार होताहै, पत्तोंके बीचमें एक बाल निकलतीहै । उसको शाकरी गोभी नहीं, समझना चाहिये

नागदमनीनामानि ।

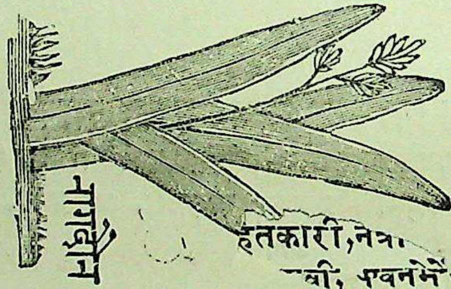

विज्ञेया नागदमनी बला मोटा [illegible] ।
नागपुष्पी नागपत्रा महायोगेश्वरीति च ॥

अर्थ-नागदमनी, बला, मोटा, विषापहा, नागपुष्पी, नागपत्रा, महायोगेश्वरी, (जम्बु, जाम्बती, वृक्का, रक्तपुष्पी, जाम्बवी, मलघ्नी, दुर्धर्षा, दुःसहा, वृत्ता, वृत्तपुष्पा, मदघ्नी, विषमार्दिनी, विफला, वनकुमारी विषारी, श्रीकन्दा, कंदशालिनी, विषविनाशिनी)

संस्कृतभाषामें	नागदमनी ।
हिन्दीभाषामें	नागदमन, नागदौन ।
बंगभाषामें	नागदमना ।
मराठीभाषामें	नागदवणी ।
गुजरातीभाषामें	नागडमण ।
कर्णाटकीभाषामें	नागदमनी ।

तैलङ्गीभाषामें	ईश्वरिचेट्टु दरणमु ।
तामिलीभाषामें	माचिपत्री ।
नेपालीभाषामें	तितापात ।
लैटिन्भाषामें	आराटिमसियाबुलगेरिस् साइन. ए. इण्डियन ।

Artimsia vulgaris Syn A. Indian

अस्या गुणाः ।

बला मोटा कटुस्तिक्ता लघुः पित्तकफापहा । मूत्रकृच्छ्रव्रणान्रक्षो नाशयेज्जालगर्दभम् ॥ सर्वग्रहप्रशमनी विशेषविषनाशिनी । जयं सर्वत्र कुरुते धनदा सुमतिप्रदा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–नागदौन–चरपरी, कडवी, हलकी, तथा पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, घाव, राक्षसबाधा, और जालगर्दभरोगको दूरकरनेवाली है। सर्वग्रहोंको शान्तिकरनेवाली और विशेषकरके विषनाशक है, सर्वत्र जयकारक, धन और सुमतिदायक है।

अन्यच्च ।

ज्ञेया जम्बूस्त्रिदोषघ्नी तीक्ष्णोष्णा कटुतिक्तका ।
उदराध्मानदोषघ्नी कोष्ठशोधनकारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ–नागदौन–त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, कडवी, उदरके अफारेको दूर करनेवाली, और कोठेको शुद्ध करनेवाली है।

अपिच ।

प्रोक्ता नागदमन्युष्णा तिक्ता लघ्वी रुचिप्रदा ।
कोष्ठशुद्धिकरी तीक्ष्णा कटुका योनिदोषजित् ॥
लूतां सर्पविषं वातं कफं वान्ति कृमीन्व्रणम् ।
मूत्रकृच्छ्रं चोदरं च जालगर्दभकं तथा । त्रिदोषं च प्रमेहं च कासं कण्ठरुजं तथा । शूलं गुल्मं रक्तदोषं ज्वरं सर्वविषाणि च । अध्मानं ग्रहपीडां च नाशयेदिति कीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ–नागदौन–गरम, कडवी, हलकी, रुचिदायक, कोठेको शुद्धकरनेवाली, तीक्ष्ण, चरपरी तथा योनिदोष, मकडी और साँपका

विष, कफ, वमन, कृमि, घाव, मूत्रकृच्छ्र, उदररोग, जालगर्दभ, त्रिदोष, प्रमेह, खांसी, कण्ठरोग, शूल, गुल्म, रुधिरविकार, ज्वर, सर्वविष, आध्मान और ग्रहपीडाको दूर करनेवाली है।

विवरण। नागदमनको कितनेक वैद्य तो दौना कहते हैं और कितनेक भिषग्वर सुदर्शन कहते हैं; सो हमको ठीक २ निश्चय नहीं होता कि, नागदमन क्या वस्तु है।

छिक्कनीनामानि

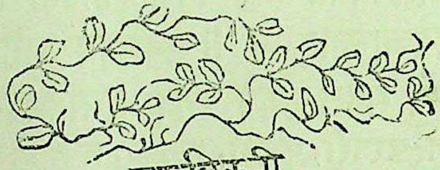

नकछिकनी.

छिक्कनी क्षवकृत्तीक्ष्णा छिक्किका घ्राणदुःखदा।

अर्थ-छिक्कनी, क्षवकृत, तीक्ष्णा, छिक्किका, घ्राणदुःखदा, (उग्रा, उग्रगन्धा, क्षवक, क्रूरनासा, संवेदनापटु)

संस्कृतभाषामें	छिक्कनी।
हिन्दीभाषामें	नाकछिकनी।
बंगभाषामें	हाँचुटी, छिक्नी, हंचेतागाछ।
मराठीभाषामें	नाकशिकणी।
गुजरातीभाषामें	नाकछीकणी।
लैटिन्भाषामें	सेंटिपीडा अर्बिक्युलरीस्। Sentipeda Orbiculeris
फारसीभाषामें	बेरगाउजवां।
अरबीभाषामें	उफरककुदुश।

अस्या गुणाः

छिक्कनी कटुका रूक्षा तीक्ष्णोष्णा वह्निपित्तकृत्।
वातरक्तहरी कुष्ठकृमिवातकफापहा ॥(भा० प्र०)

अर्थ-नाकछिकनी-चरपरी, रूखी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निजनक, पित्तकारक, तथा वातरक्त, कोढ, कृमि, वात,और कफनाशक है।

अपिच।

छिक्कनी कटुका रुच्या पित्तला चाग्निदीपनी।
लघ्व्युष्णा तुवरा तीव्रगन्धा त्वग्दोषनाशिनी ॥

कफवातश्वेतकुष्ठकृमिरक्तरुजस्तथा ।
ग्रहपीडां भूतबाधां दृष्टिं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-नाकछिकनी-चरपरी, रुचिकारक, पित्तकारक, अग्निदीपक, हलकी, गरम, कषेली, तीव्रगन्धयुक्त, तथा त्वचाके दोष, कफ, वात, श्वेतकुष्ठ, कृमिरोग, रक्तविकार, ग्रहकी पीडा, भूतबाधा और दृष्टिके दोषोंको दूर करनेवाली है ।

विवरण । नाकछिकनीका क्षुप छोटा होताहै, पत्त छोटे होतेहैं । इसके नीचे कंद होताहै, इसके पत्तोंको वा डंडीका सूँघनेसे छींकें आतीहैं ।

अन्यच्च ।

छिक्कनी श्वासकासासृग्विषघ्नी वामनी मता । (शो॰ नि॰)

अर्थ-नाकछिकनी-श्वास, खांसी, रुधिरविकार, और विषविनाशक है । तथा वमनकारक है ।

कुकन्दरनामानि ।

कुकुन्दरस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः ।

अर्थ-कुकुन्दर, ताम्रचूड, सूक्ष्मपत्र, मृदुच्छद, (कुक्कुरद्रु)

संस्कृतभाषामें	कुकुन्दर, कुक्कुरद्रु ।
हिन्दीभाषामें	कुकरौंदा ।
वंगभाषामें	कुरशोंका, कुकुरमुता ।
मराठीभाषामें	कुरबंदा ।
गुजरातीभाषामें	ोकरुंदा
लैटिन्भाषामें	ब्ल्युमियाओडोरेटा । Blumea Odorat
फारसीभाषामें	कमाकिसुस ।
अरबीभाषामें	सनौबरुल् अर्द ।

अस्य गुणाः ।

कुकुन्दरः कटुस्तिक्तो ज्वरघ्नश्चोष्णकृन्मतः ।
रक्तरुक्कफदाहानां तृषायाश्चैव नाशनः ॥
अस्यार्द्रमूलं च मुखे धारितं मुखदोषनुत् । (नि॰र॰)

अर्थ-कुकरौंदा-चरपरा, कडवा, ज्वरनाशक, गरम, तथा रुधिरविकार, कफ, दाह और तृषाको दूर करनेवाला है । इसकी कच्ची जडको मुखमें रखनेसे मुखके रोम दूर होतेहैं ।

विवरण। कुकरौंदेके क्षुप, लम्बे लम्बे होते हैं। विशेष करके शरदीके स्थानोंमें उत्पन्न हो जातेहैं, पत्ते तम्बाकूकी समान बडे बडे होतेहैं, इनके ऊपर लाल शिखा होतीहै।

सुदर्शननामानि।

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राङ्गी मधुपर्णिका।

अर्थ-सुदर्शना-सोमवल्ली, चक्राङ्गी, मधुपर्णिका (चक्राह्वा, दध्यानी, वृषकर्णी, चक्राह्वा)।

हिन्दीभाषामें	सुदर्शन।
वंगभाषामें	सुदर्शनगुलञ्च, पद्मगु०।

अस्या गुणाः।

सुदर्शना स्वादुरुष्णा कफशोफास्रवातजित्।

अर्थ-सुदर्शन-स्वादिष्ठ, गरम तथा कफ, सूजन, और वातरक्तको हरनेवाला है।

विवरण। सुदर्शनका क्षुप चक्रकी समान होताहै, पत्ते लम्बे लम्बे ईखकी समान होतेहैं कभी कभी किसीपर सुफेद रंगका फूलभी आताहै।

आखुकर्णीनामानि।

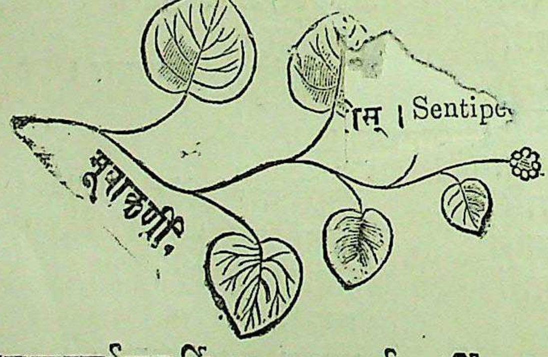

मूषाकर्ण्याखुपर्णी च वृषपर्ण्याखुपर्णिका।
भूमिचरी द्रवन्ती च शम्बरी भूधराश्रया॥

अर्थ-मूषाकर्णी, आखुपर्णी, वृषपर्णी, आखुकर्णिका, भूमिचरी, द्रवन्ती, शम्बरी, भूधराश्रया (कृशिका, उन्दुरकर्णी, न्यग्रोधी, मूषिकपर्णी, वृश्चिककर्णी, बहुकर्णिका, माता, भूमिचरी, चण्डा, बहुपादिका, प्रत्यश्रेणी, वृषा, पुत्रश्रेणी, आदिभू, चित्रा, सुवर्णी-

शतमूलिका, आखुपर्णिका, मूषिकपर्णी, प्रतिपर्णशिफा, सहस्रमूषी, विक्रान्ता, पत्रश्रेणी, आखुपर्णी, पर्णिका, भूदरीभवा, उपचित्रा, मूषिकाह्वया, रण्डा, आखुपर्णिका, मूषिका, फञ्जिपत्रिका, मूषिपर्णिका, सचित्रा मूषीकर्णी, सुकर्णिका, न्यग्रोधी) ।

: संस्कृतभाषामें	आखुकर्णी, मूषाकर्णी, द्रवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	मूसाकानी ।
वंगभाषामें	उन्दुरकानीपाना ।
मराठीभाषामें	उंदिरकानीभोपनी ।
गुजरातीभाषामें	उंदरकनी ।
कर्णाटकीभाषामें	वल्लिहर्हे ।
तैलिंगीभाषामें	एलुकचेवचट्टु ।
लैटिन्भाषामें	आईपोमिया रेनिफोर्मिस्, Ipomoea Renniformis. लेक्टट्कारिमोटीलफोरा । Lectearemotiflora
फारसीभाषामें	गोरोमुष, सतर ।
अरबीभाषामें	अजानुल्फार ।
यु०	शरदम् ।

अस्या गुणाः ।

आखुकर्णी कटुस्तिक्ता कषाया शीतला लघुः ।
विपाके कटुका मूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–मूसाकानी–चरपरी, कडवी, कषेली, शीतल, हलकी, पचनेमें चरपरी तथा मूत्ररोग, कफरोग और कृमिरोगको दूर करनेवालीहै।

अन्यच्च ।

द्रवन्ती कृमिहृत्तीक्ष्णा योनिदोषहरा सरा। (शो०नि०)

अर्थ–मूसाकानी–कृमिनाशक, तीक्ष्ण, सारक और योनिदोषहारक है ।

अपिच ।

तथ्याखुकर्णी कटुका तिक्ता चोष्णा च शीतला । रसायनी
रसा लघ्वी कषाया कफपित्तनुत् ॥ शूलज्वरकृमिग्रन्थि
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहहृत् ॥ अनाहोदरहृद्रोगविषपाण्डुभगन्दरान् ।
कुष्ठानि नाशयेदेवं पूर्ववैद्यैर्निरूपितम् ॥

अर्थ–मूसाकानी–चरपरी, कडवी, गरम, शीतल, रसायन, सारक, हलकी, कषेली तथा कफ, पित्त, शूल, ज्वर, कृमि, ग्रन्थि, मूत्रकृच्छ्र,

प्रमेह, आनाह, उदररोग, हृदयरोग, विष, पाण्डुरोग, भगन्दर और कुष्ठको दूर करनेवाली है ।

बृहदाखुकर्णीगुणाः ।

आखुकर्णी बृहत्युक्ता शीतला मधुरा स्मृता ।
रसबन्धकरी नेत्र्या रसायन्यथ शूलनुत् ॥
ज्वरं कृमीन् व्रणं चाखुविषं चैव विनाशयेत्।(नि०र०)

अर्थ-बडी मूसाकानी-शीतल, मधुर, पारेको बांधनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, रसायन तथा शूल, ज्वर, कृमि, व्रण और मूषेके विष हरनेवाली है ।

विवरण । मूषाकर्णीका छत्ता पृथ्वीपर फैला हुआ होता है, पत्ते मूषेके कानकी समान होते हैं, हरेपत्तेके नीचे जड होती है, डाली सूक्ष्म और लालीलिये होती हैं और फल बहुत लगते हैं ।

मयूरशिखानामानि ।

बर्हिचूडा तु शिखिनी शिखालुः सुशिखा शिखा ।
शिखिबला केकिशिखा मयूराद्याभिधाशिखा ॥

अर्थ-बर्हिचूडा,शिखिनी,शिखालु,सुशिखा,शिखा, शिखिबला, केकिशिखा, मयूरशिखा, (नीलकण्ठशिखा, सहस्राहि, मधुच्छदा, मयूरचूडा)

संस्कृतभाषामें	मयूरशिखा ।
हिन्दीभाषामें	मोरशिखा (लालमुर्गा)
वंगभाषामें	मयूरशिखा ।
मराठीभाषामें	मयूरशिखा ।
गुजरातीभाषामें	मोरशिखा ।
कर्णाटकीभाषामें	होरेयसूसुव ।
तैलिङ्गीभाषामें	मयूरशिखियने क्षुपविशेषमु ।
लैटिन्भाषामें	सिलोसिया क्रिस्टाटा । Celosia Cristata
फारसीभाषामें	असनाने, असलान ।

अस्या गुणाः ।

नीलकण्ठशिखा लघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित्। (भा०प्र०)

अर्थ-मोरशिखा-हलकी तथा पित्त, कफ और अतिसारको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

बार्हिचूडा रसे स्वादुर्मूत्रकृच्छ्रविनाशिनी ।
बालग्रहादिदोषघ्नी वश्यकर्मणि शस्यते ॥

अर्थ-मोरशिखा-स्वादुरसान्वित, मूत्रकृच्छ्रनाशक, बालग्रहादिदोषविनाशक और वशीकरण कर्ममें प्रशंसायोग्य है ।

अपिच ।

मयूराह्वा शिखा शीता कषायाऽम्लाऽम्लपाकिनी ।
लघ्वी पित्तकफं पित्तमतीसारं विनाशयेत् ॥ (के०चि०)

अर्थ-मोरशिखा-शीतल, कषेली, खट्टी, पचनेमेंभी खट्टी, हलकी तथा पित्त, कफपित्त और अतिसारनिवारक है ।

विवरण । मोरशिखाके छोटे छोटे क्षुप होते हैं, यह प्रायः खुस्क भूमिमें उत्पन्न होतीहै, पत्ते-कटीले होते हैं, इसके ऊपर मोरकी समान चोटी होती है, इसी कारण इसको मोरशिखा कहते हैं, कितनेक वैद्य मोरशिखाको लज्जावंतीका भेद कहते हैं ॥

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे गुडूच्यादिवर्गः ॥ ३ ॥

अथ पुष्पवर्गः ।

पुष्पनामानि ।

स्त्रियः सुमनसः पुष्पी प्रसूनं कुसुमं सुमम् ॥

अर्थ-सुमनस, पुष्प, प्रसून, कुसुम, सुम, (सून, प्रसव, सुमन)

पुष्परसनामानि ।

पुष्पद्रवः पुष्पसारः पुष्पस्वेदश्च पुष्पजः ।
पुष्पनिर्य्यासकश्चैव पुष्पाम्बुजषडाह्वयः ॥

अर्थ-पुष्पद्रव, पुष्पसार, पुष्पस्वेद, पुष्पज, पुष्पनिर्यासक, पुष्पांबुज ।

संस्कृतभाषामें	पुष्प, पुष्पद्रव ।
हिन्दीभाषामें	फूल, पुष्पका अर्क, गुलाबादि अथवा पुष्पका मधु ।
बंगलाभाषामें	फुल, फुलेरस, गोलापजलप्रभृति वा मधु ।
मराठीभाषामें	फूल ।
गुजरातीभाषामें	फुल ।

कर्णाटकीभाषामें	हुविनयसरु ।
तैलङ्गीभाषामें	पुब्बु ।
इंग्रेजीभाषामें	फ्लावर । Flower
लैटिन्भाषामें	फ्लोस् Flos फ्लोरिस् Flores
फारसीभाषामें	गुल ।
अरबीभाषामें	बर्द ।

पुष्पधारणगुणाः ।

पुष्पस्य धारणं कान्तिवर्द्धनं कामकारकम् ।
ओजः श्रीवर्द्धकं चैव पापग्रहविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पुष्पको धारण करनेसे-कान्ति, काम, ओज और लक्ष्मीकी वृद्धि होती है तथा पापग्रहका नाश होता है ।

पुष्पद्रवगुणाः ।

पुष्पद्रवः सुरभिशीतकषायगौल्यो दाहभ्रमार्तिवमिमोहमुखामयघ्नः । तृष्णार्तिपित्तकफदोषहरः सरश्च सन्तर्पणश्चिरमरोचकहारकश्च ॥

अर्थ-पुष्पद्रव-(पुष्पका अर्क तथा मधु)-सुगन्धित, शीतल, कषेला, गौल्य तथा दाह, भ्रम, वमन, मोह, मुखरोग, तृषा, पित्त, कफ और बहुत कालकी अरुचिको दूर करनेवाला है । तथा सारक और सन्तर्पण है ।

अन्यच्च ।

पुष्पद्रवः सरः शीतस्तुवरः श्रमदाहहा ।
वान्तितृट्पित्तरोगघ्नो मुखरोगविनाशनः ॥(ग्रन्थान्तर)

अर्थ-पुष्पद्रव-सारक (दस्तावर), शीतल, कषेला तथा श्रम, वमन, तृषा, पित्तरोग और मुखरोग नाशक है ।

जातीनामानि ।

सुमना मालती जाती चेतकी च सुरप्रिया ॥

अर्थ-सुमना-मालती-जाती, चेतकी, सुरप्रिया (सुरभिगन्धा, सुकुमारी, सन्ध्यापुष्पी, मनोहरा, राजपुत्री, मनोज्ञा, तैलमालिनी, जनेष्टा, हृद्यगन्धा, जाति, राजपुत्रिका, जातिका, प्रियंवदा, मालिनी, वासन्ती, प्रहसन्ती, सुवसन्ता, वसन्तजा, वार्षिका,)(२स्वर्णजातिका,

स्वर्णजाती, प्रियंवदा, मनोज्ञा, नृपात्मजा, जाति और वसन्तजाता) यह नाम पीली जातिके हैं ।

संस्कृतभाषामें	जाती, स्वर्णजाती ।
हिन्दीभाषामें	जाती (चमेली) जाई, पीलीजाई ।
वंगभाषामें	जाती (चामिली) स्वर्णजाती ।
मराठीभाषामें	पांढरी जाई, पिंवळीजाई ।
कर्णाटकीभाषामें	जाजि ।
तैलङ्गीभाषामें	जाईपुष्पालु ।
तुर्कीभापामें	जाजिपु ।
अंग्रेजी भाषामें	जैसमिन । Jasmine
लैटिन्भाषामें	जेस्मिनं फ्लेक्सुसाईलिस् । Jasmine Fslexylis

अस्या गुणाः ।

जाती तु तुवरा तिक्ता लघ्वी चोष्णा कटुः स्मृता । मुखपाकं कफं वातं मुखदन्तशिरोरुजम् ॥ अक्षिरोगं विषं कुष्ठं रक्तदोषं व्रणं तथा । पित्तं कृमीन्नाशयति कलिकाऽस्या व्रणापहा ॥ विस्फोटनेत्ररुक्कुष्ठनाशिनीति बुधा जगुः । पुष्पं सुगन्धि संप्रोक्तं मनोज्ञं कफपित्तनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-जाती-कषेली, कडवी, हलकी, गरम, चरपरी, वमनकारक तथा मुखपाक, कफ, वात, मुखरोग, दन्तरोग, मस्तकरोग, नेत्ररोग, विष, कुष्ठ, रुधिरदोष, घाव, पित्त और कृमिरोगको दूर करनेवाली है । इसकी कली-व्रण, विस्फोट, नेत्ररोग और कुष्ठको नष्ट करे है । इसका फूल-सुगन्धित, मनोज्ञ, कफ और पित्तनाशक है ।

स्वर्णजातीगुणाः ।

स्वर्णजाती च संप्रोक्ता दन्तशूलरुजापहा ।
रक्तदोषं च पूयं च कर्णशूलं च नाशयेत् ॥
गुणास्त्वन्ये तु जातीवप्रोक्ताः पूर्वमनीषिभिः ।

अर्थ-पीलीजाती-दन्तशूल, रुधिरविकार, पूय (राध, पीप) और कर्णशूलको दूर करनेवाली है। इसके शेष गुण जातीकी समान जानने।

विवरण । जातीकी-बेल-प्रायः, चौमासेमें अधिकतासे होतीहै, फूल-सफेद और बारीक पँखडीका होता है ।

उपजातिनामानि ।

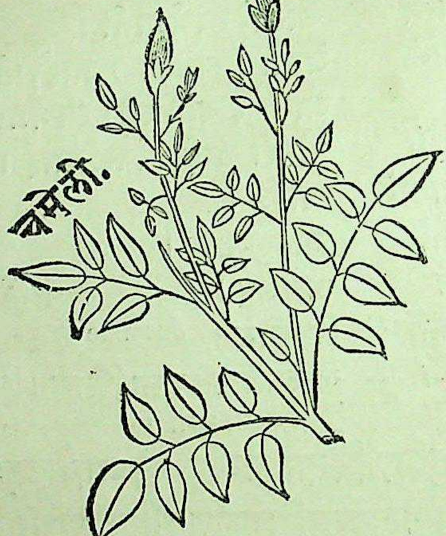

उपजातिः सुवर्षा च सुरूपा श्रीमती तथा ।
वर्षापुष्पा च चम्बेली बलिह्वासा च वेशिका ॥

अर्थ–उपजाति, सुवर्षा, सुरूपा, श्रीमती, वर्षापुष्पा, चम्बेली, बलिह्वासा, वेशिका ।

संस्कृतभाषामें	उपजाति ।
हिन्दीभाषामें	चमेली ।
वंगभाषामें	चामिली ।
मराठीभाषामें	चमेली ।
गुजरातीभाषामें	चंबेली ।
कर्णाटकीभाषामें	मोगराचाभेदु ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पॅनिश् जास्मीन । Spanish Jamine
लैटिनभाषामें	जेस्मिनं ग्रान्डिफ्लोरं । Jasminumgrandi florum
फारसीभाषामें	यासमीन ।
अरबीभाषामें	यासमन् ।

अस्या गुणाः ।

चम्बेली तुवरा तिक्ता व्रणकुष्ठविषास्रजित् ।
शिरोक्षिमुखदन्तार्त्तिहरा त्वग्दोषनाशिनी ॥

अर्थ–चमेली–कषेली, कडवी तथा घाव, कोढ, विष, रुधिरविकार,

शिरोरोग, नेत्ररोग, मुखरोग, दन्तरोग, और त्वचाके विकारोकों दूर करनेवाली है ।

विवरण । चमेलीकी वेल-वन, उपवन, बाग और पुष्पवाटिकामें लगाई जातीहै, इसकी कली लम्बी डंडीकी होतीहै, फूलका रंग सफेद और ऊपर कुछ लाली लिये होता है, फूलकी सुगन्धि अत्यन्त प्रिय होती है चमेलीके फूलोंमें तिलोंको बसाकर अर्थात् रखकर कुछ दिन पीछे कोल्हूमें पिरवाते हैं, तब उस तेलको फुलेल और चमेलीका तेल कहते हैं; वह उत्तम सुगन्धिवाला और शीतल होता है।

वार्षिकी-मल्लिकामुद्गरनामानि

वार्षिकी शीतभीरुश्च मदयन्ती प्रमोदिनी
भद्रवल्ली प्रिया सौम्या मल्लीका वनचन्द्रिका ॥
मुद्गरको गन्धराजः सप्तपत्रश्च विट्प्रियः ।

अर्थ-वार्षिकी, शीतभीरु, मदयन्ती, प्रमोदिनी (अतिगन्धा, गवाक्षी, भूपदी, वार्षिकी, अष्टपदी, दन्तपत्रा, देवलता, श्रीपदी, षट्पदानन्दा, मुक्तबन्धना, दलकोषका) भद्रवल्ली, प्रिया, सौम्या, मल्लिका, वनचन्द्रिका, (भूपदी, शीतभीरु, तृणशून्य, तृणशून्या, गौरी, वनचन्द्रिका, नारीष्टा, गिगिजा, सिता, मल्ली) मुद्गरक, गन्धराज, सप्तपत्र विट्प्रिय, (मुद्गरा, राजपुत्री, वर्तुल, षट्पद, प्रिया, गन्धसार, अतिगन्ध, प्रिय, जनेष्ट, मृगेष्ट)

संस्कृतभाषामें	१ वार्षिकी, २ मल्लिका, ३ मुद्गर ।
हिन्दीभाषामें	बेला, मोतिया, घुघुरुमोतिया वनमोगरा, मोगरा ।
वंगभाषामें	बेलफुलगाछ, मल्लिकाफुलरगाछ, मल्लिकाभेद।
गुजरातीभाषामें	बेल्य, डोलर, जंगलाचिखलयो; रानमोगरो
मराठीभाषामें	मोगरी, रानमोगरी, सोटईमोगरा ।
कर्णाटकीभाषामें	वल्लिमाल्लिगे
तैलिङ्गीभाषामें	मल्लिपुष्पालु, मल्लेचेट्टु, कुलकान्ताचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	जैसामिनम् प्युबिसेन्स Jasminum Pubesens जैसमिनम सॅबिॅबक

वार्षिकीगुणाः ।

वार्षिकी शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नी तत्तैलं तद्गुणं स्मृतम् ॥

अर्थ-बेला-शीतल, हलका, कडवा, त्रिदोषनाशक तथा कर्ण नेत्र और मुखरोगको दूर करनेवाला है । इसके तेलके गुणभी इसीकी समान जानने ।

मल्लिकागुणाः।

मल्लिकोष्णा लघुर्वृष्या तिक्ता च कटुका हरेत् ।
वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान् ॥

अर्थ-मल्लिका (एकप्रकारका मोतिया)-गरम, हलका, वीर्यजनक, कडवा, चरपरा तथा वात, पित्त, नेत्ररोग, कोढ, अरुचि, विष और व्रणको नष्ट करे है । मुद्गरगुणाः।

मुद्गरो मधुरः शीतः सुरभिः सौख्यदायकः ।
मनोजमधुपानन्दकारीपित्तप्रकोपहृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मोतिया-मधुर, शीतल, सुगन्धि, सुखदायक, कामको उत्पन्न करनेवाला, भौंरोंको आनन्दजनक, और पित्तके कोपको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

वार्षिकी शिशिरा हृद्या सुगन्धिः पित्तनाशिनी ।
कफवातविषस्फोटकृमिदोषामनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बेला-शीतल, हृदयको हितकारी, सुगन्धित, पित्तनाशक तथा कफ, वात, विष, स्फोट, कृमि और कामको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

मल्लिका कटुतिक्ता स्याच्चक्षुष्या मुखपाकहृत् ।
कुष्ठविस्फोटकण्डूतिविषव्रणहरा परा ॥

अर्थ-मल्लिका(मोतियाभेद)चरपरा, कडवा, नेत्रोंकोहितकारी, मुखपाकनाशक तथा कुष्ठ, विस्फोट, कण्डू, विष और व्रणको हरनेवाली है।

मल्लिकासम्भवं पुष्पं तिक्तं जयति मारुतम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-मल्लिकाके फूल-कडवे और वातको जीते हैं ।

विवरण । मोतिया, बेला, घुघुरमोतिया और मोगरा, यह सब एकसेही होते हैं । पत्ते-बेरीके पत्तोंसे कुछेक छोटे और विशेष रेखावाले होते हैं, फूल-अत्यंत सुगन्धित सुपेद रंगके आते हैं । मोतियाके फल अधिक गोल होते है, मोगराके फूल कुछ कम गोल होते हैं

नेपालीवनमल्लिकानामानि ।

वासन्ती प्रहसन्ती च सुवसन्ता वसन्तजा ।
सुकुमारा शिखरिणी नेपाली वनमल्लिका ॥

अर्थ-वासन्ती-प्रहसन्ती, सुवसन्ता, वसन्तजा, सुकुमारा, शिखरिणी, नेपाली, वनमल्लिका, (नेपाली, मधुगन्धा, गुच्छपुष्पा, ग्रीष्मिका, राजादनदला, वनजा, सूक्ष्मपुष्पिका, सप्तला, नवमालिका, भद्रवर्म्मा, देवलता, गन्धनिलया, मालिका, ग्रीष्मभवा, अतिमोदा, ग्रैष्मी, ग्रीष्मोद्भवा, सुकुमारी, सुरभि, शुचिमल्लिका, सुगन्धा, नेवाली, ग्रीष्मी, वनवासिनी, कान्ता, अतिसुरभि, नैपाली, नेमाली)

संस्कृतभाषामें	नेपाली, वासन्ती ।
हिन्दीभाषामें	नेवारी, वासन्ती ।
वंगभाषामें	नेपाली, नेओआर, वासन्ती, ।
गुजरातीभाषामें	नेवरी ।
मराठीभाषामें	नेवाळी, रायनेवाळी, वीरवन्ति ।
कर्णाटकीभाषामें	विरंवन्तिगे, विरवन्तिभेद ।
लैटिन्भाषामें	इक्सोरा पार्विफ्लोरा । Ixora parviflora

अस्यागुणाः ।

नेपाली कटुका तिक्ता शीता च सुरभिर्लघुः ।
त्रिदोषनेत्ररोगघ्नी कर्णाननरुजापहा ॥
सर्वरोगहरा प्रोक्ता गुणज्ञैः पूर्वकोविदैः ।

अर्थ-नेवारी-चरपरी, कडवी, शीतल, सुगन्धि, हलकी तथा त्रिदोष, नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोग, सर्वरोगनाशक है ।

विवरण । नेवारीके वनमें बडे बडे वृक्ष होते हैं, पत्ते-लम्बे कुछ गोल होतेहैं, फूल-आमके बेरकी समान गुच्छोंमें आते हैं ।

यूथिकानामानि ।

यूथिका यूथि वासन्ती बालपुष्पी शिखण्डिनी ।
सा पीता स्वर्णयूथी च हेमपुष्पी मनोहरा ॥

अर्थ-यूथिका, यूथि, वासन्ती, बालपुष्पी, शिखण्डिनी (गणिका, अम्बष्ठा, मागधी, प्रहसन्ती, बालपुष्पिका, भृङ्गानन्दा, पुण्यगन्धा,

गुणज्वला, चारुमोदा, शिखण्डी, हरिणी, शंखयूथिका, सुगन्धिका यूथितरुणी, सुगन्धा, मोदनी, बहुगन्धा, गजाह्वया) यह जुहीके नाम हैं। स्वर्णयूथी, हेमपुष्पी मनोहरा, (सुवर्णयूथी, हेमपुष्पा, सुगन्धा, हेमयूथिका, युवतीष्टा, रक्तगन्धा, शिखण्डी, नागपुष्पिका, पीतयूथी, पीतिका, कनकप्रभा, हेमा, गन्धाढ्या, हेमपुष्पिका, सुवर्णाह्वा, व्यक्तगन्धा, पीतयूथी) यह पीली जुहीके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	यूथिका, यूथी ।
हिन्दीभाषामें	जुही, पीलीजुही ।
बंगभाषामें	जुइ स्वर्णजुई ।
मराठीभाषामें	पांढरी लहान जुई, पिंवळी जुई ।
गुजरातीभाषामें	जुइजिंगरी, पीली जुई ।
कर्णाटकीभाषामें	यरडुमोल्ले ।
तैलिङ्गीभाषामें	जुईपुष्पालु ।
लेटिन्भाषामें	जस्मिनं ओरिक्युलेटम् । Jasminum Auriculatum

द्विविधयूथिकागुणाः ।

यूथिकायुगलं स्वादु शिशिरं शर्करार्त्तिनुत् ॥ पित्तदाहतृषाहारि नाना त्वगदोषनाशनम् ॥ सर्वासां यूथिकानां तु रसवीर्य्यादिसाम्यता । सुरूपञ्च सुगन्धाढ्यं स्वर्णयूथ्यां विशेषतः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी जुही-स्वादिष्ठ, शीतल तथा शर्करारोग, पित्त, दाह, तृषा और नानाप्रकारके त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है, सर्वप्रकारकी जुही रस, वीर्य्य और विपाकमें समानही है, परन्तु पीली जुही सुरूपमें और सुगन्धिमें अधिक है ।

अन्यच्च ।

यूथियुग्मं हिमं तिक्तं कटुपाकरसं लघु ।
मधुरं तुवरं हृद्यं पित्तघ्नं कफवातलम् ॥
व्रणास्रमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम् ।

अर्थ-दोनोंप्रकारकी जुही-शीतल, कडवी, पचनेमें चरपरी, हलकी, मधुर, कषेली, हृदयको हितकारी, पित्तनाशक, कफ और वातकारक

तथा व्रण, रुधिरविकार, मुखरोग, दन्तरोग, नेत्ररोग, मस्तकरोग, और विषको नाश करनेवाली है ।

विवरण । जुहीकी बेल-वन, उपवन और पुष्पवाटिकामें होतीहै, फूलकी पँखडी सपेद रंगकी और सुगन्धिवाली होती है, दूसरी पीलेरंगकी जुही होतीहै, उसके फूल पीलेरंगके होतेहैं, पीली जुही अत्यन्त शोभायुक्त और सुगन्धिदायक है ।

माधवीनामानि ।

अतिमुक्ता माधवी च सुवसन्ता पराश्रया ।
अतिमुक्तः कामुकश्च मण्डपो भ्रमरोत्सवः ॥

अर्थ-अतिमुक्ता, माधवी, सुवसन्ता, पराश्रया, अतिमुक्त, कामुक, मण्डप, भ्रमरोत्सव (चन्द्रवल्ली, सुगन्धा, भृङ्गप्रिया, भद्रलता, भूमिमण्डप, भूषणा, वासन्ती, पुण्ड्रकलता, अतिमुक्तक, माधविका, विमुक्तक, माधवीलता, वसतन्दूती, और लतामाधवी)

संस्कृतभाषामें	माधवी ।
हिन्दीभाषामें	माधवी ।
वंगभाषामें	माधवीलता ।
गुजरातीभाषामें	माधवीलता, रक्तपित्ति ।
मराठीभाषामें	पीतबेल ।
कर्णाटकीभाषामें	इन्दगोच्चे, विरवन्तिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	माधवतोगे, पुष्पुलगुरिविंद ।
इंग्रेजीभाषामें	क्लस्टर्ड हिप्टेज । Clustered Hiptage
लैटिन्भाषामें	हिप्टेजमेडेब्लोटा Hiptage Madablota

अस्या गुणाः ।

माधवी कटुका तिक्ता कषाया मदगन्धिका ।
पित्तकासव्रणान् हन्ति दाहशोषविनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ-माधवीलता-चरपरी, कडवी, कषेली, मदगन्धवाली तथा पित्त, खाँसी, व्रण, दाह और शोषको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

माधवी मधुरा शीता लघ्वी दोषत्रयापहा । (भा० प्र०)

अर्थ-माधवलिता-मधुर, शीतल, हलकी, और त्रिदोषनाशकहै ।

विवरण। माधवी लताकी बडी बेल होती है, पत्ते-चम्पाकी समान होते हैं, फल-तिलकी समान होते हैं, और गुच्छोंमें आते हैं।

मालतीनामानि।

मालती सुमना जातिर्वासन्ती युवती तथा ॥

अर्थ-मालती, सुमना, जाति, वासन्ती, युवती।

संस्कृतभाषामें	मालती।
हिन्दीभाषामें	”
वंगभाषामें	”
मराठीभाषामें	”
गुजरातीभाषामें	”
लैटिन्भाषामें	एकाईटिस् कैरियोफिल्लेटा। Echites Caryophyllata

अस्या गुणाः।

मालती कफपित्तास्यरुग्व्रणकृमिकुष्ठजित्।
चक्षुष्यं कुसुमं तस्याः पत्रं तत्कफपित्तजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-मालतीलता कफ, पित्त, मुखरोग, व्रण, कृमि, और कुष्ठनाशक है। मालतीके फूल-नेत्रोंको हितकारी हैं। मालतीके पत्ते-कफ और पित्तको हरनेवाले हैं।

अन्यच्च।

मालती कफपित्तास्रत्वग्दोषकृमिकुष्ठनुत्।
वामनी व्रणशोथघ्नी पूतिकर्णास्यपाकहृत् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-मालती-कफ, रक्तपित्त, त्वचाके दोष, कृमि, और कुष्ठनाशक है, वमनकारक तथा व्रण, सूजन और कानसे राधके बहनेको दूर करे है।

विवरण। मालती लताकीभी बेल होती है, फल झुमखोंमें आते हैं, पत्ते-जीवन्तीकी समान होते हैं।

तरुणी-शतपत्री-कुब्जकनामानि।

सेवंती रामतरुणी कर्णिका चारुकेसरा।
शतपत्री सौम्यगन्धा सवृत्ता शतपत्रिका ॥
कुब्जको भद्रतरुणी वृत्तपुष्पोऽतिकेसरः।

अर्थ-सेवंती, रामतरुणी, कर्णिका, चारुकेसरा (कुमारी, सहा, शत-

पत्री, गन्धाढ्या, शिववल्लभा, भृङ्गेष्टा, तरुणी, सुदला, बहुपत्रिका, भृङ्गवल्लभा) शतपत्री, सौम्यगन्धा, सुवृत्ता, शतपत्रिका, (महाकुमारी, लाक्षापुष्पा, अतिमञ्जुला, सुमना, सुशीता, शतदला, सुवृत्ता,) कुब्जक, भद्रतरुणी, वृत्तपुष्प, अतिकेसर, (महासह, कण्टकाढ्य, खर्व, अलिकुलसंकुल, बृहत्पुष्प, महासहा, कण्टकाढ्या, देवतरुणी, वारिकण्टक)

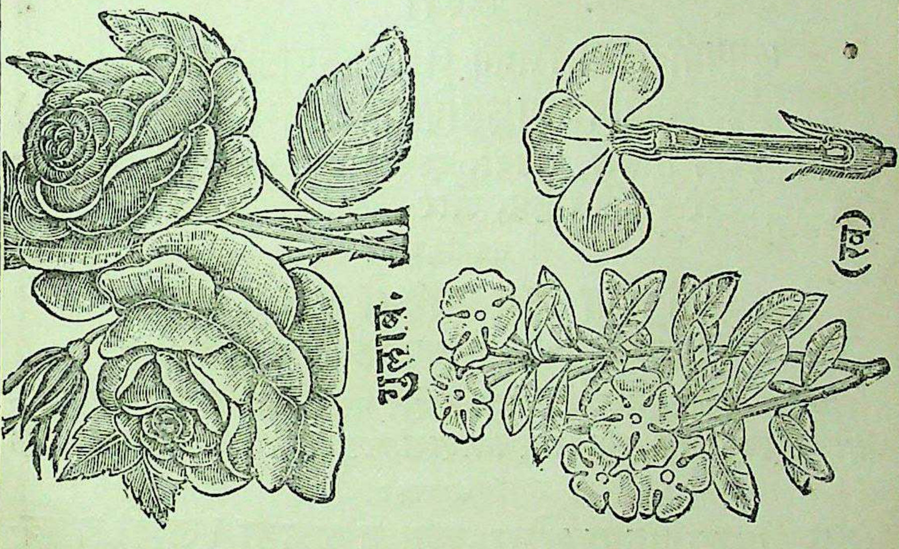

संस्कृतभाषामें	तरुणी, शतपत्री, कुब्जक ।
हिन्दीभाषामें	सेवती, गुलाब, कूजा, सदागुलाब, ।
वंगभाषामें	सेउती, गोलाप, कूजा श्वेतगुलाप ।
मराठी भाषामें	गुलाबाचेंफूल, शेवंती, कांटेशेवन्ती ।
गुजरातीभाषामें	शेवती, गुलाब, मोशमीगुलाब ।
कर्णाटकीभाषामें	सेवतिगे, चेवडे ।
तैलिङ्गीभाषामें	गुलाबीपुबु, चेमण्डिचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	केबेज रोज Cabbage rose गुलकंद Confection of rose (कंफेक्शन आफ रोज)
लैटिन्भाषामें	रोसा सेण्टिफोलिया Rosa Centifolia. रोसाडेमेसेना । Rosadamascena
फारसीभाषामें	गुले, गुलमुर्ख, गुलेसुशकी ।
अरबीभाषामें	वर्दअहमरनसरीन, जरंजवीन, गुलकंद, माउलवर्द, अर्क

शतपत्रीगुणाः ।

शतपत्री हिमा तिक्ता कषाया कुष्ठनाशिनी ।
मुखस्फोटहरा रुच्या सुरभिः पित्तदाहनुत् ॥(रा०नि०)

अर्थ-गुलाब-शीतल, कडवा, कषेला, कुष्ठनाशक, मुखके मुहासोंको दूर करनेवाला, रुचिको करनेवाला, सुगन्धित तथा पित्त और दाहको शान्त, करनेवाला है

अन्यच्च ।

शतपत्री हिमा त्तिक्ता सरा रुच्याऽनिलप्रणुत् ।
दाहज्वरास्रपित्तघ्नीकुष्ठविस्फोटनाशिनी ॥ (आ० सं०)

अर्थ-गुलाब शीतल, कडवा, दस्तावर, रुचिकारक, वातनाशक तथा दाह, ज्वर रक्तपित्त कुष्ठ, और विस्फोटविनाशक है ।

तरुणीगुणाः ।

शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी शुक्रला लघुः ।
दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्या तिक्ता कट्वी च पाचनी ॥

सेवती-शीतल,हृदयको हितकारी, मलरोधक. शुक्रजनक, हलकी, त्रिदोषनाशक, रक्तदोषविनाशक,कडवी,चरपरी और पाचक है।

अन्यच्च ।

शतपत्री सरा वृष्या शीता हृद्या च शुक्रला । लघ्वी च तुवरा स्वाद्वी सुरभिर्ग्राहिणी मता ॥ वर्ण्या कट्वी च तिक्ता च रुच्या चाग्निप्रदीपनी । त्रिदोषं मुखपाकं च रक्तपित्तं कफं तथा ॥ पित्तं रक्तविकारं च दाहं चैव विनाशयेत् । पुष्पं तु शीतलं वर्ण्यं वातपित्तविदाहनुत् ॥

अर्थ-सेवती-सारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, हृदको हितकारी, शुक्रजनक, हलकी, कषेली, स्वादिष्ठ, सुगंधित, मलरोधक, वर्णको सुंदर करनेवाली, चरपरी, कडवी, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक तथा त्रिदोष, मुखपाक, रक्तपित्त, कफ, पित, रुधिरविकार और दाहको दूर करनेवाली है । इसका फूलशीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा वात पित्त और दाहनाशक है ।

रक्तकुब्जकगुणाः ।

रक्तस्तु कुब्जको रक्तविकृतेर्नाशको मतः ।

वृश्चिकाणां विषं चैव त्रिदोषं चैव नाशयेत् ॥
अन्ये गुणाः समुद्दिष्टाः श्वेतकुब्जकवद्बुधैः। (नि०र०)

अर्थ-रक्तकुब्जक (गुलाब)-रक्तविकार, विच्छूका विष और त्रिदोषनाशक हैं। और इसके गुण सदागुलाबकी समान जानने।

कुब्जकगुणाः।

कुब्जकः सुरभिः स्वादुः कषायानुरसः सरः।
त्रिदोषशमनो वृष्यः पित्तघ्नश्चेतरस्तथा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कूजा (सदागुलाब)-सुगन्धित, स्वादिष्ठ, किञ्चित् कषेला, सारक (कुछ दस्तावर) त्रिदोषकी शान्ति करनेवाला, वीर्यवर्द्धक और पित्तनाशक है।

अपि च।

कुब्जकः सुरभिः शीतो रक्तपित्तकफापहः।
पुष्पं तु शीतलं वर्ण्यं दाहघ्नं वातपित्तजित्।(राजनिघण्टु)

अर्थ-कूजा (सदागुलाब)-सुगन्धि, शीतल तथा रक्तपित्त और कफ नाशक है। इसका फूल-शीतल, वर्णको सुन्दरतादायक तथा दाह और वातपित्तनाशक है।

विवरण। सेवती, गुलाब और कूजा यह तीनों क्षुपजातिके वृक्ष वन उपवन और पुष्पवाटिकामें होते हैं, तहां सेवती सपेद फूलवाली और प्राचीन है गुलाब,लाल फूलका,पीलेफूलका सपेद फूलका और अनेक जातिका नवीन है, अर्थात् पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होता था, कूजेपै भी सपेद फूल आता है, इसके फूलमें गुलाब और सेवती की अपेक्षा अल्प सुगन्धि होती है। एक मोशमी गुलाब, दूसरा बारहमासी होता है, मोशमी गुलाब चैत्र वैशाखमें खिलताहै और इसमें सुगन्धि अत्यन्त होतीहै, बारहमासी गुलाबपै सदैव फूल आते हैं। गुलाब और सेवतीके फूलोंका गुलकन्द तथा पाक बनता है, वह पाक पुष्टिकारी, बलदायक और दस्तावर है। मारवाडकी ओर गुलाबके वन होते हैं। गुलाबका अर्क अत्यन्त गुणकारी है। औषधिके प्रयोगमें सेवती और मोशमी गुलाब लेना चाहिये।

चम्पकनामानि।

चम्पकः सुकुमारश्च सुरभिः शीतलश्च सः।
चाम्पेयो हेमपुष्पश्च काञ्चनः षट्पदातिथिः ॥

अर्थ-चम्पक, सुकुमार, सुरभि, शीतल, चाम्पेय, हेमपुष्प, काञ्चन
षट्पदातिथि, (कुसुमाधिराट्, हेमाह्व, सुभग, शीतलच्छद, कुसुमा-
धिप, वरलब्ध, उग्रगन्ध, कटु, हेमपुष्पक, पुण्यगन्ध, नागपुष्प, स्व-
र्णपुष्प, भृङ्गमोहि, भ्रमरातिथि, दीपपुष्प, वनदीप, स्थिरगन्ध,
अतिगन्धक, पीतपुष्प, सुकुमार, स्थिरपुष्प)

अस्य कलिकानामानि ।

एतस्य कलिका गन्धफलीति कथिता बुधैः ॥

अर्थ-चम्पाकी कलीको गन्धफली, (बहुगन्धा, गन्धमोदिनी, चंपककोरक कहते हैं)

संस्कृतभाषामें	चम्पक ।
हिन्दीभाषामें	चम्पा । आकीन, दे० ।
वंगभाषामें	चांपा ।
मराठीभाषामें	सोनचांफा, पिंवळाचांफा ।
गुजरातीभाषामें	रायचम्पो, पीलोचम्पो ।
कर्णाटकीभाषामें	संपगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चंपागी पुवुलु ।
ता०	चवंकं । तु० संपेडो ।
लैटिन्भाषामें	मिचेलिया चम्पका । Michelia Champaca

अस्यागुणाः ।

चम्पकः कटुकस्तिक्तः कषायो मधुरो हिमः ।
विषक्रिमिहरः कृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चम्पा-चरपरी, कडवी, कषेली, मधुर, शीतल तथा विष, क्रिमि, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात और रक्तपित्तको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

चम्पकः कटुकस्तिक्तः शिशिरो दाहनाशनः ।
कुष्ठकण्डूव्रणहरो गुणाढयो राजचम्पकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चम्पा-चरपरी, कडवी, शीतल तथा दाह, कुष्ठ और व्रणको हरनेवाली है । इससे राजचम्पा अधिक गुणवाली है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

चम्पकं रक्तपित्तघ्नं शीतोष्णं कफनाशनम् ॥ (सु० सं०)

अर्थ-चम्पाके फूल-रक्तपित्तनाशक, शीतल, उष्ण और कफनाशक हैं।

अन्यच्च।

चाम्पेयं कुसुमं शीतं कषायं स्वादुपाकि च।
कफपित्तहरं तद्वत्पुन्नागस्य च सम्भवम्॥ (शो० नि०)

अर्थ-चम्पाके फूल-शीतल, कषेले, पचनेमें स्वादिष्ठ, तथा कफ और पित्तनाशक हैं।

अपिच।

सुवर्णचम्पकश्चोक्तः शीतलस्तिक्तकः कटुः। तुवरो मधुरो वृष्यो हृद्यश्चैव सुगन्धिदः॥ भ्रमराणां घातकरो दाहपित्तकफापहः। रक्तदोषं मूत्रकृच्छ्रं वातं कुष्ठं विषं तथा॥ कृमिकण्डूव्रणांश्चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥ (नि० रा०)

अर्थ-चम्पा-कडवी, चरपरी, शीतल, कषेली, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, सुगन्धि, भौरोंका नाश करनेवाली तथा दाह, पित्त, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, वात, कुष्ठ, विष, कृमि, कण्डु और व्रणको दूर करनेवाली है।

विवरण। चम्पाका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते-रामफलकी समान होते हैं, फूल-पीले अत्यंत सुगंधियुक्त होते हैं।

चम्पकभेदाः।

श्वेतस्तु चम्पकः प्रोक्तो नागादिश्चम्पकस्तथा।
सुलतानचम्पकश्चान्यो नीलश्च भूमिचम्पकः॥

संस्कृतभाषामें	श्वेतचम्पक (क्षुद्रचम्पक, क्षीरवृक्ष) २ नागचम्पक, (नागपुष्प, नागकेशरक) ३ सुलतानचम्पक, ४ नीलचम्पक (मधुगन्धि, मनोहर) ५ भूमिचम्पक।
हिन्दीभाषामें	१ सपेदचंपा, २ नागचम्पा, ३ सुलतानचम्पा, ४ नीलचंपा, भुँईचम्पा।
मराठीभाषामें	१ खुरचांफा, २ नागचांफा, ३ सुलतानचांफा, ४ निळाचांफा, ५ भुईचांफा।
गुजरातीभाषामें	१ धोलोचम्पो, २ नागचम्पो, ३ सुलतानचम्पो, ४ लीलोचम्पो ५ भूचम्पो।

कर्णाटकीभाषामें	१ नागचम्पगे ।
तैलङ्गीभाषामें	१ गणेरचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	१ प्लयुमेरिया एक्युटिफोलिया । Plumieria acutifolia मेस्सुआफेलिया MeSuaferrea केलोफैलं इनोफैलं Ca!ophyllum Inobhllum स्वाटसेन्टेडकेलोफिलं, (इं) Sweet scentedcalophyllum आर्टे बोट्रिस् ओडोरेटिसिमा । Artabotys Odoratissima केम्फेरिया रोटंडा । Kaempheria rotunda

श्वेतादिचंपकगुणाः ।

श्वेतस्तु चम्पकः प्रोक्तः सरस्तिक्तः कटुः स्मृतः । तुवरोष्णः कुष्ठकण्डूव्रणशूलकफापहः ॥ वातं चोदररोगञ्च आध्मानं चैव नाशयेत् । नागनामा चम्पकस्तुवर्ण्यश्चोष्णः कटुः स्मृतः ॥ व्रणरोपणकारी च चक्षुष्यः कफवातहा । वस्त्वंतरस्य संयोगादग्निस्तम्भकरो मतः ॥ भूमिजश्चम्पकश्चोष्णः कटुः शोथरुजापहः । गलगण्डं व्रणञ्चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद चम्पा-सारक (कुछेक दस्तावर) कडवी, चरपरी, कषेली, गरम, तथा कुष्ठ, कण्डू, व्रण, शूल, काफवात, उदररोग और आध्मान रोगको दूर करनेवाली है । नागचम्पा-वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गरम, चरपरी, व्रणको भरनेवाली, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ और वातनाशक है । और वस्तुओंके संयोगसे अग्निस्तम्भक है । भुईंचम्पा-गरम, चरपरी, तथा शोथरोग, गलगण्ड और व्रणको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सफेद चम्पाका वृक्ष बडा होता है, पत्ते-लम्बे और तोडनेसे दूध निकलता है, फूल-सफेद और थोडे भागमें पीला होता है । नीलीचम्पाका वृक्ष मध्यमाकारका होता है, पत्ते-रामफलीकी समान होतेहैं, फूल-नीले रंगका होता है, उस फूलहीको नागकेशर कहतेहैं नागकेसरके गुण सुगन्धितवर्गमें लिखचुकेहैं । सुलतानचम्पाके फूलकोभी नागकेसर कहते हैं, नागकेसरकी दो जातीहैं इसको आगे लिखेंगे । भूमिचम्पाका फूल जैसे पृथ्वीमेंसे निकलेहैं ऐसा होता है, पत्ते गुलबाँसकी समान होते हैं । फूल-सफेद आता है और सुगंधिभी गुलबाँसकेसी आती है ।

बकुलनामानि ।

बकुलः केशरः कण्ठस्तैलाङ्गो मधुपञ्जरः ॥

अर्थ- बकुल, केशर, कण्ठ, तैलांग, मधुपञ्जर (सिंहकेशर, केशर, मुकुल, बकुल, मकुल, वरलब्ध, सीधुगन्ध, स्त्रीमुखमधु, दोहल, मधुपुष्प, सुरभि, भ्रमरानन्द, स्थिरकुसुम, शारदिक, करक, सिन्धुगन्ध, विशारद, गूढपुष्पक, धन्वी, मदन, पद्ममोद, चिरपुष्प,)

संस्कृतभाषामें	बकुल ।
हिन्दीभाषामें	मौलसिरी, बकुल ।
बंगभाषामें	बकुलगाछ ।
मराठीभाषामें	बकुळ ।
गुजरातीभाषामें	बोलसरी, वरशोली ।
कर्णाटकीभाषामें	करक ।
तैलिङ्गीभाषामें	पाघडा, पोगडत्तेट्टु ।
औत्कलीभाषामें	वउडकुडि ।
तामिलीभाषामें	मोगदम् ।
दा०	धोलसरी ।
इंग्रेजीभाषामें	सुरीनामभेडलकर । Surinam medlar
लैटिनभाषामें	माईमुसोप्सइलंजीआई । Mimusops Eleng

बकुलगुणाः ।

बकुलः शीतलो हृद्यो विषदोषविनाशनः ।
मधुरश्च कषायश्च मदाढ्यो हर्षदायकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ- मौलसिरी-शीतल, हृदयको हितकारी, विषदोषनाशक, मधुर, कषेली, मदाढ्य और हर्षदायक है ।

अन्यच्च ।

बकुलस्तुवरोऽनुष्णः कटुपाकरसो गुरुः ।
कफपित्तविषश्वित्रकृमिदन्तगदापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मौलसिरी-कषेली, अनुष्ण, पाक और रसमें चरपरी, भारी तथा कफ, पित्त, विष, श्वित्रकुष्ठ, कृमि और दन्तरोगोंको दूर करनेवाली है ।

बकुलपुष्पगुणाः ।

बकुलजकुसुमं रुच्यं क्षीराढ्यं सुरभि शीतलं मधुरम् ।

स्निग्धं कषायं कथितं मलसंग्रहकारकं चैव ॥ (रा०नि)

अर्थ-मौलसिरीके फूल-रुचिकारक, क्षीराढ्य, सुगन्धि, शीतल, मधुर, स्निग्ध, कषेला और मलको संग्रह करनेवाले हैं।

अन्यच्च।

पुष्पं कषायमधुरं शीतं पित्तकफास्रजित्। (राजवल्लभ)

अर्थ-मौलसिरीके फूल-कषेले, मधुर, शीतल, कफ और रुधिर विकारोंको दूर करनेवाला ह।

बकुलफलगुणाः।

मधुरं च कषायं च स्निग्धं संग्राहि बाकुलम्।
स्थिरीकरं च दन्तानां विशदं फलमुच्यते ॥ (सु० सं)

अर्थ-मौलसिरीके फल मधुर, कषेले, स्निग्ध, मलको सञ्चित करनेवाले, दाँतोंको स्थिर करनेवाले और विशद हैं।

अन्यच्च।

तत्फलं मधुरं स्निग्धं कषायं विशदं हिमम्।
कफपित्तहरं दन्त्यं विबन्धाध्मानवातकृत् ॥ (ध०नि०)

अर्थ-मौलसिरीके फल मधुर, स्निग्ध, कषेले, विशद, शीतल, कफपित्त नाशक, दांतोंको स्थिर करनेवाले, तथा विबन्ध, आध्मान और वातकारक हैं।

अपि च।

बकुलस्य फलं रूक्षं विशदं स्तम्भनं गुरु। कषायं मधुरं शीतं लेखनं कफपित्तहृत् ॥ दन्तदार्ढ्यकरं ग्राहि विबन्धाध्मानवातकृत्। तद्बीजं दन्तचालघ्नं न स्याच्छीर्षरुजापहम्॥
(शो० नि०)

अर्थ-मौलसिरीके फल-रूखे, विशद, स्तम्भन, भारी, कषेले, मधुर, शीतल, लेखन, कफपित्तनाशक, दांतोंको दृढकरनेवाले, मलरोधक तथा विबन्ध, आध्मान और वातकारक हैं। मौलसिरीके बीज दांतोंके हिलनेको दूर करें अर्थात् दांतोंको स्थिरतादायक हैं। और मौलसिरीके बीजोंका नास लेनेसे शिरोरोग नाशको प्राप्त होता है।

वृद्धबकुलनामानि।

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक, वसु (शैव, शिवपिण्ड, सुव्रत, वसुक, शिवांग, शिवेष्ठ, क्रमपूरक, शिवाह्लाद, शाम्भव)

संस्कृतभाषामें	शिवमल्ली, बृहद्बकुल ।
हिन्दीभाषामें	वनहुला, बृहन्मौलसिरी ।
मराठीभाषामें	थोरबकुल ।
गुजरातीभाषामें	वरशोली, मोटीवालसिरी ।
कर्णाटकीभाषामें	वगेटाहु ।

अस्य गुणाः ।

बुकोऽनुष्णः कटुस्तिक्तः कफपित्तविषापहः ।
योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥

अर्थ-बडी मौलसिरी-अनुष्ण, चरपरी, कडवी तथा कफ, पित्त, विष, योनिशूल, तृषा, दाह, कुष्ठ, सूजन और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बुकः शीतो विषश्लेष्मपित्तकृच्छ्राश्मदाहनुत् ।

अर्थ-बृहन्मौलसिरी (वनहुला,)-शीतल तथा विष, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और दाहका नाश करनेवाली है ।

अपि च ।

स्थूलपुष्पश्च बकुलो दीपनो मधुरः कटुः ।
पित्तदाहकफश्वासमूत्रकृच्छ्रविषश्रमान् ॥
अश्मरीं नाशयत्येव मदगन्धिश्च विद्यते । (नि० र०)

अर्थ-बडीमौलसिरी-अग्निप्रदीपक, मधुर, चरपरी तथा पित्त, दाह, कफ, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, विष, श्रम और पथरी रोगका नाश करे है, तथा मदगन्धियुक्त है ।

विवरण-मौलसिरीके वृक्ष-वन और उपवनोंमें होते हैं, पत्ते-राजजामुनके समान होते हैं, फूल-सूक्ष्म और सपेद तथा चक्रके आकारके होते हैं, फूलमें अत्यन्त सुगन्ध होती है इसकी सुगन्ध सुखानेपरभी न्यून नहीं होती; मौलसिरीकी नर नारी दो जाती हैं । एकमें फल आते हैं, और दूसरेमें नहीं आतेहैं जिसपर फल नहीं आते उस मौलसिरीका फूल कुछ बडा और सपेद होता है और जिसपर सिन्दूरी रङ्गका फूल आता है उसका फल कुछ लाली

लिये और छोटा होताहै। जिस मौलसिरीपै फल नहीं आता उसको मौलसिरा कहते हैं और जिसपर फल आता है उसको मौलसिरी कहते हैं। मौलसिरीका अर्क तथा अत्तरभी निकलता है।

मुचुकुन्दनामानि।

मुचुकुन्दः क्षत्रवृक्षश्चित्रकः प्रतिविष्णुकः ॥

अर्थ-मुचुकुन्द, क्षत्रवृक्ष, चित्रक, प्रतिविष्णुक, (दीर्घपुष्प, बहुपत्र सुदल, मुण्डीवृक्षानुकारक, हरिवल्लभ, सुपुष्प, अर्घ्यार्हलक्षणक, रक्तप्रसव)

संस्कृतभाषामें	मुचुकुन्द।
हिन्दीभाषामें	मुचकुन्द।
बंगभाषामें	मुचकुन्द।
मराठीभाषामें	मुचकुन्द।
गुजरातीभाषामें	मुचकुन्द।
कर्णाटकीभाषामें	मुचकुन्द।
तैलिङ्गीभाषामें	लोलगु।
तामिलीभाषामें	टड्डो।
औत्कलीभाषामें	वइलो।
लैटिन्भाषामें	टेरोस्परमम् सुबेरीफोलियम्। Pterosperumum Suberifolium

अस्य गुणाः।

मुचुकुन्दः कटुतिक्तः कफकासहरश्च कण्ठदोषघ्नः।
त्वग्दोषशोफशमनो व्रणपामाविनाशनश्चैव ॥

अर्थ-मुचकुन्द-चरपरा, कडवा तथा कफ, खाँसी, कण्ठरोग, त्वचारोग, सूजन, व्रण और पामारोग-विनाशक है।

अन्यच्च।

मुचुकुन्दः शिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः। (म. पा. नि.)

अर्थ-मुंचकुन्द-शिरकी पीडा और रक्तपित्त विनाशक है।

अपि च।

मुचुकुन्दः कटुश्चोष्णस्तिक्तः स्वर्यः कफापहः।
कासत्वग्दोषशोफघ्नः शीर्षपीडानिवारकः ॥
त्रिदोषरक्तपित्तघ्नः पित्तरक्तविकारनुत्। (नि० र०)

अर्थ-मुचकुन्द-चरपरा, गरम, कडवा, स्वरको सुन्दर करनेवाला कफनाशक तथा खाँसी, त्वचाके विकार, सूजन, शिरकी पीडा, त्रिदोष, रक्तपित्त, पित्त और रुधिरविकारको दूर करे हैं ।

विवरण । मुचकुन्दका वृक्ष बडा होता है, पत्ते-बडे और अखरोटकी समान होते हैं, फूल-बडा आताहै और उसमें अत्यन्त सुगन्ध होती है, फल-लम्बे और गोल काष्ठकी समान होते हैं । औषधिमें केवल फूल लियेजाते हैं ।

कुन्दनामानि ।

कुन्दं तु कथितं माध्यं सदापुष्पं च तत्स्मृतम् ॥

अर्थ-कुन्द, माध्य, सदापुष्प, (शुक्लपुष्प, दलकोष, वारट, मकरन्द, महामोद, मनोहर, मुक्तापुष्प, तारपुष्प, अट्टपुष्पक, दमन, वनहास, मनोज्ञ, भृङ्गबन्धु, मनोरम, अट्टहास, भृङ्गसुहृत,)

संस्कृतभाषामें	कुन्द ।
हिन्दीभाषामें	कुंदेकावृक्ष, कुंदेका फूल ।
बंगभाषामें	कुन्द ।
मराठीभाषामें	कुन्द ।
कर्णाटकीभाषामें	सुरागि ।
तैलिंगभाषामें	मोल्ल ।

अस्य गुणाः ।

कुन्दं शीतं लघु श्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तजित् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-कुन्द-शीतल, हलका, तथा कफ, शिरोरोग, विष और पित्तका नाश करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

कुन्दोऽतिमधुरः शीतः कषायः केशभावनः ।
कफपित्तहरश्चैव सरो दीपनपाचनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुन्द-अत्यन्त मधुर, शीतल, कषेला, केशभावन, सारक (कुछेक दस्तावर) अग्निदीप, पाचक और कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

कुन्दः शीतोऽतिमधुरस्तुवरः सारको लघुः । पाचको दीपको हृद्यः कटुकस्तिक्तकः स्मृतः ॥ पित्तरोगशिरो-

रोगविषशोथामनाशनः। रक्तदोषं च वातं च नाशयेदिति कीर्त्तितम्। (नि० र०)

अर्थ-कुन्द-शीतल, अत्यन्तमधुर, कषेला, सारक, हलका पाचक, दीपन, हृदयको हितकारी, चरपरा, कडवा तथा पित्तरोग, मस्तकरोग, विष, सूजन, आम, रुधिरविकार और वातको हरनेवालाहै।

विवरण। कुन्दके वृक्ष-छोटे छोटे होते हैं, फूल-अतीव सुन्दर सफेद रंगके आते हैं।

तिलकनामानि।

तिलकः क्षुरकः श्रीमान् पुरुषश्छिन्नपुष्पकः।

अर्थ-तिलक, क्षुरक, श्रीमान, पुरुष, छिन्नपुष्पक (मुखमण्डनक, विशेषक, पुण्ड्र, पुण्ड्रक, स्थिरपुष्पी, छिन्नरुह, दग्धरुह, मृतजीव, तरुणीकटाक्षकाम, वासन्तसुन्दर, दुग्धरुह, भालविभूषणसंज्ञ, पुन्नाग, रेचक, शतपत्रक)

संस्कृतभाषामें	तिलकपुष्पवृक्ष।
हिन्दीभाषामें	तिलकपुष्प।
गुजरातीभाषामें	तिफकवृक्ष।
मराठीभाषामें	तिलपुष्पक।
कर्णाटकीभाषामें	तिलकपुष्पविशेष।

अस्य गुणाः।

तिलकः कटुकः पाके रसे चोष्णो रसायनः।
कफकुष्ठकृमीन् वस्तिमुखदन्तगदान् हरेत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तिलकपुष्पवृक्ष-पचनेमें चरपरा, रसमें भी चरपरा, गरम, रसायन तथा कफ, कुष्ठ, कृमि, वस्तिरोग, मुखरोग और दन्तादिरोगोंको दूर करे है।

अन्यच्च।

तिलको मधुरः स्निग्धो वातपित्तकफापहः।
बलपुष्टिकरो हृद्यो लघुर्मेदोविवर्द्धनः॥

अर्थ-तिलक-मधुर, स्निग्ध, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, हृदयको हितकारी, हलका, मेदजनक तथा वात, पित्त और कफनाशक है।

अपिच।

तिलको मधुरः स्निग्धः पौष्टिको बलमेदकृत्। हृद्यो लघू

रसेत्युष्णः पाके चोष्णकरः स्मृतः ॥ रसायनस्तीक्ष्णरूक्षो दन्तरुक्कृमिकुष्ठहा ॥ वातपित्तकफघ्नश्च विषकण्डूव्रणापहः॥ रक्तरुग्दुग्धरुग्वस्तिरुजां नाशकरः स्मृतः।तिलकः क्षारयोगेन गुल्मशूलोदरापहः । त्वगस्य तुवरा चोष्णा पुंस्त्वघ्नी दन्तदोषहा ॥ रक्तदोषकृमिव्रणशोफानां च विनाशिनी॥(नि०र०)

अर्थ-तिलक-मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, मेदजनक, हृदयको हितकारी, हलका, रसमें अत्यन्त उष्ण, पचनेमें चरपरा, रसायन, तीक्ष्ण, रूखा तथा दन्तरोग, कृमि, कुष्ठ, वात,पित्त, कफ, विष,कण्डू,व्रण,रुधिरविकार,दुग्धरोग, और वस्तिरोगका नाश करे है । यह किसी क्षारके योगसे गुल्म, शूल और उदररोगको दूर करे है। इसकी छाल-कषेली,गरम,तथा पुरुषता,दन्तरोग,रुधिरविकार, कृमि,व्रण और सूजनको दूर करनेवाली है ।

विवरण । तिलक वृक्षका फूल-तिलके फूलकी समान होताहै और उस फूलमें सुगन्धि आतीहै, फल-पीपलकी समान तथा मधुर होता है ।

कदम्बनामानि ।

कदम्बः सुरभिर्नीपः प्रावृषेण्यो हरिप्रियः ।

अर्थ-कदम्ब,सुरभि,नीप,प्रावृषेण्य, हरिप्रिय, (हलिप्रिय, ललनाप्रिय,प्रियक,हारिद्र,अशोकारी, नीप, कादम्ब, षट्पदेष्ट,जाल, वृत्तपुष्प, कादम्बर्य्य, सीधुपुष्प, जीर्णपर्ण, महाढ्य, कर्णपूरक)

धाराकदम्बनामानि

नीपो महाकदम्बः स्याद्धाराकदम्ब इत्यपि ।

अर्थ-नीप, महाकदम्ब,धाराकदम्ब (धूलिकदम्ब,धाराकदम्बक, भ्रमरप्रिय, षट्पदप्रिय, प्रावृष्य, पुलकी, भृङ्गवल्लभ, मेघाभ,प्रियक, केशराढ्य, बहुफल, कदम्बक)

भूमिकदम्बनामानि ।

भूमिकदम्बो भूनीपो भूमिजो भृङ्गवल्लभः ।
लघुपुष्पो वृत्तपुष्पो विषघ्नो व्रणहारकः ॥

अर्थ-भूमिकदम्ब, भूनीप, भूमिज, भृङ्गवल्लभ, लघुपुष्प, वृत्तपुष्प, विषघ्न, व्रणहारक ।

संस्कृतभाषामें	कदम्बक,धाराकदम्ब,भूमिकदम्ब ।
हिन्दीभाषामें	कदमका पेड, धाराकदम्ब ।
बंगभाषामें	कदमगाछ, केलिकदम ।
मराठीभाषामें	राजकदम्ब,धूलिकदम्ब,कळंब, भूमिकदम्ब ।
गुजरातीभाषामें	कदम्ब कलम ।
कर्णाटकीभाषामें	कडउ,धूलिकडउ,धारेयकडउ,भूमिकडउ ।
तैलिङ्गीभाषामें	कडिमिचेट्टु, कदम्बचेट्टु मोगुलुकाडिमि ।
लैटिन् भाषामें	एंथोसिफलस्केडंबा Anthocephalus cadumba नोक्लियापार्विफ्लोरा । Nauclea parviflora
अरबीभाषामें	कदम्ब ।

कदम्बगुणाः ।

कदम्बः कटुकस्तिक्तो मधुरस्तुवरः पटुः । शुक्रवृद्धिकरः शीतो गुरुर्विष्टम्भकारकः ॥ रूक्षः स्तन्यप्रदो ग्राही वर्णकृद्योनिदोषहा ॥ रक्तरुङ्मूत्रकृच्छ्रं च वातपित्तं कफं व्रणम् ॥ दाहं विषं नाशयति ह्यंकुराश्चास्य तूवराः ॥ शीतवीर्य्या दीपकाश्च लघवोऽरोचकापहाः ॥ रक्तपित्तातिसारघ्नाः फलं रुच्यं गुरु स्मृतम् । उष्णवीर्य्यं कफकरं तत्पक्वं कफपित्तजित् ॥ व्रातनाशकरं प्रोक्तमृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ।

अर्थ-कदम-चरपरी,कडवी,मधुर,कषेली,खारी,शुक्रवर्द्धक,शीतल, भारी, विष्टम्भकारक, रूखी,स्तनोंमें दूध बढानेवाली, मलरोधक, वर्णकारक तथा योनिरोग, रक्तरोग, मूत्रकृच्छ्र, वात, पित्त, कफ, घाव, दाह और विषको दूर करनेवाली है । इसके अंकुर-कषेले शीतवीर्य्य, अग्निदीपक, हलके तथा अरुचि, रक्तपित्त और अतिसारको दूर करनेवाले हैं । इसके फल-रुचिकारक,भारी,उष्णवीर्य्य और कफकारक हैं । इसके पक्के फल-कफ, पित्तकारक और वातविनाशक हैं ।

राजकदम्बगुणाः ।

नीपस्तु चाम्लस्तुवरो मधुरः शीतलः स्मृतः । विषं रक्तरुजं पित्तं कफं चैव विनाशयेत् ॥ फलं तु मधुरं चास्य शीतलं गुरु पित्तहृत् । रक्तदोषहरं प्रोक्तमृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥

अर्थ-राजकदंब-अम्ल, कषेली, मधुर, शीतल तथा विष, रुधिरविकार, पित्त और कफको दूर करनेवालीहै । इसका फल-मधुर, शीतल, भारी तथा पित्त और रुधिरके दोषोंको दूरकरेहै ।

धाराकदम्बगुणाः ।

धाराकदम्बकस्तिक्तो वर्ण्यः शीतः कषायकः ।
कटुको वीर्य्यकृच्छोथविषपित्तकफव्रणान् ॥
वातं नाशयतीत्येवमुक्तश्च ऋषिभिः किल ।

अर्थ-धाराकदम्ब-कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, कषेली, चरपरी, वीर्य्यकारक तथा सूजन, विष, पित्त, कफ, व्रण और वातका विनाश करनेवाली है ।

धूलीकदम्बगुणाः ।

धूलीकदम्बकस्तिक्तस्तुवरः कटुको हिमः ।
वीर्य्यवृद्धिकरो वर्ण्यो विषशोथविनाशकः ॥
वातं पित्तं कफं रक्तदोषं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-धूलीकदम्ब-कडवी, कषेली, चरपरी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, वर्णको सुन्दर करनेवाली तथा विष, सूजन, वात, पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको हरनेवाली है ।

कदम्बिकागुणाः ।

कदम्बिका तु मधुरा शीतला तुवरा गुरुः । मलस्तम्भकरी
क्षारा रूक्षास्तन्यकफप्रदा ॥ वातला मुनिभिः प्रोक्ता फलं
त्वस्यास्तु शीतलम् । तुवरं मधुरं पित्तरक्तदोषहरं मतम् ॥

अर्थ-कदम्बिका (कदम्बी)-मधुर, शीतल, कषेली, भारी, मलस्तम्भकारी, खारी, रूखी, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, कफकारक और वातवर्द्धक है । इसके फल-शीतल, कषेले, मधुर तथा पित्त और रक्तविकारनाशक हैं ।

भूमिकदम्बगुणाः ।

भूमेः कदम्बकस्तिक्तो वर्ण्यः शीतः कटुः स्मृतः ।

वीर्य्यवृद्धिकरश्चैव तुवरो विषशोथहा ॥
पित्तं कृमींश्च सर्वांश्च मेहान्नाशयतीरितः । (नि० र०)

अर्थ-भूमिकदम्ब-कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, चरपरी, वीर्य्यवर्द्धक, कषेली तथा विष, सूजन, पित्त कृमि और सर्वप्रकारके प्रमेहरोगोंको दूरकरनेवाली है ।

द्विविधकदम्बगुणाः ।

कदम्बयुगलं वर्ण्यं विषशोथहरं हिमम् ।

अर्थ-दोनोंप्रकारकी कदम्ब (कदम्ब, बडीकदम्ब)-वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल तथा विष और सूजनको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । कदम्बके वृक्ष-नगरके निकट होते हैं, पत्ते लम्बे और गोल तथा महुवेकी समान होते हैं, फल-गोल नीम्बूकी समान, फूल फलके ऊपर तथा सुगन्धयुक्त और छोटे होते हैं, राजकदम्ब तथा नीपको स्त्रीकदम्ब कहते हैं । कदमकी अनेक जाति हैं ।

कर्णिकारनामानि ।

कार्णिकारः परिव्याधः पादपोत्पल इत्यपि ॥

अर्थ-कर्णिकार, परिव्याध, पादपोत्पल ऐसे तीन नाम हैं ।

कार्णिकारगुणाः ।

कर्णिकारः कटुस्तिक्तस्तुवरः शोधनो लघुः ।
रञ्जनः सुखदः शोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कर्णिकार-चरपरा, कडवा, कषेला, शोधक, हलका, रञ्जन, सुखदायक तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, व्रण और कुष्ठको नष्ट करेहै

विवरण । कर्णिकारके वृक्ष-प्रायः पर्वत और वनोंमें अधिक होते हैं । पत्ते-ढाकके पत्तोंकी समान होते हैं, फूल-लाल और अत्यन्त मनोहर लगते हैं ।

किंकिरातनामानि ।

किङ्किरातः किङ्किराठः पीठकः पीनभद्रकः ।
हेमगौरो विप्रलम्बी षट्पदानन्दवर्द्धनः ॥

अर्थ-किंकरात, किंकिराठ, पीतक, पीतभद्र, हेमगौर, विप्रलम्बी, षट्पदानन्दवर्द्धन (विप्रलोभी, पीताम्लान)

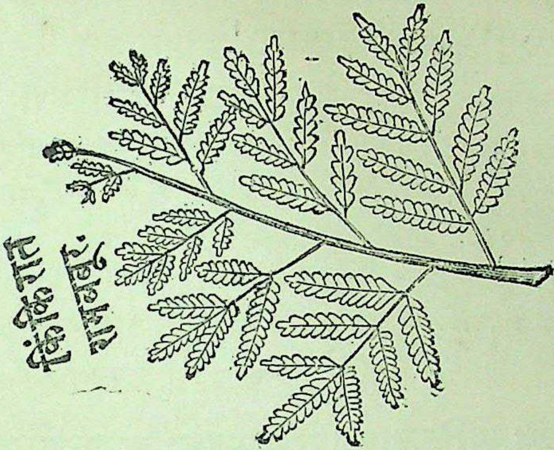

संस्कृतभाषामें	किंकिरात ।
हिन्दीभाषामें	किंकिरात ।
मराठीभाषामें	देवबाभूळ ।
गुजरातीभाषामें	रामबावल ।
फारसीभाषामें	मधिलान ।

अस्य गुणाः ।

किङ्किरातो हिमस्तिक्तस्तुवरः शोधनो लघुः ।
विषकृमिहरः शोथश्लेष्मश्रवणकुष्ठजित्॥ (ध० नि०)

अर्थ–किंकिरात–शीतल, कडवा, कषेला, शोधक, हलका तथा विष, कृमि, सूजन, कफ, बधिरता और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

किङ्किरातो हिमस्तिक्तः कषायश्च हरेदसौ ।
कफपित्तपिपासास्रदाहशोथवमिकृमीन् ॥

अर्थ–किंकिरात–शीतल, कडवा, कषेला तथा कफ, पित्त, पियास, रुधिरविकार, दाह, सूजन, वमन और कृमिरोगको दूर करे है ।

अपिच ।

किङ्किरातं तु तुवरं तिक्तं शीतोष्णदं मतम् । कफपित्ततृषारक्तदोषदाहज्वरान्वमिम्॥ मोहं विषं नाशयतीत्येवमुक्तं भिषग्वरैः।

अर्थ–किंकिरात–कषेला, कडवा, शीतल, गरम, तथा कफ, पित्त, तृषा, रुधिरदोष, दाह, ज्वर, वमन, मोह और विषका नाश करेहै ।

केतकीनामानि ।

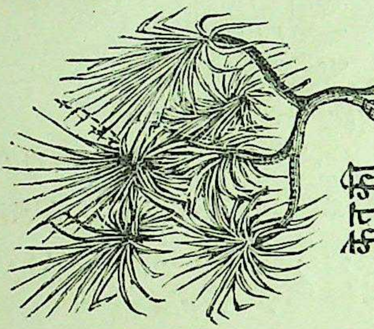

केतकः सूचिकापुष्पो जम्बुकः क्रकचच्छदः ।

अर्थ-केतक, सूचिकापुष्प, जम्बुक, क्रकचच्छद (सूचिपुष्प, हलीन, जम्बु, चामरपुष्पा, केतकी, तीक्ष्णपुष्पा, विफला, धूलिपुष्पिका, मेध्या, कण्टदला, शिवाद्विष्टा, नृपप्रिया, क्रकचा, दीर्घपत्रा, स्थिरगन्धा, गन्धपुष्पा, इंदुकालिका, दलपुष्पा, पांशुला ।

सुवर्णकेतकीनामानि ।

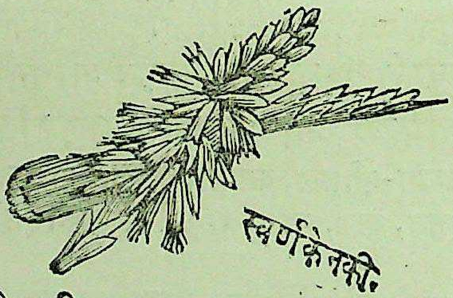

सुवर्णकेतकी त्वन्या लघुपुष्पा सुगन्धिनी ॥

अर्थ-सुवर्णकेतकी, लघुपुष्पा, सुगंधिनी (स्वर्णकेतकी, हेमकेतकी, कनकप्रसवा, पुष्पी, हैमी, छिन्नरुहा, विष्ठारुहा, स्वर्णपुष्पी, कामखड्गदला)

संस्कृतभाषामें	केतकी, स्वर्णकेतकी ।
हिन्दीभाषामें	केवडा, केतकी, पीलीकेतकी ।
बंगभाषामें	केयागाछ, सोणाकेया ।
मराठीभाषामें	श्वेतकेवडा, केतकी ।
गुजरातीभाषामें	कवडा ।
कर्णाटकीभाषामें	केदगे ।

तैलिङ्गीभाषामें	मुगलीपुबु, मोगिलिचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	पेन्डनस्‌ओड्झेरिटिसिमस् । Pandanus Odoratissimus
फारसीभाषामें	करज ।
अरबीभाषामें	कादी

केतकी-सुवर्णकेतकी गुणाः ।

केतकी कटुका स्वाद्वी लघ्वी तिक्ता कफापहा ।
उष्णा तिक्तरसा ज्ञेया चक्षुष्या हेमकेतकी ॥

अर्थ-केवडा-चरपरा, स्वादिष्ठ, हलका, कडवा और कफनाशक है । सुवर्णकेतकी-गरम, कडवी और नेत्रोंको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

श्वेता तु केतकी कट्वी स्वाद्वी तिक्ता लघुः स्मृता । विषं कफं नाशयति पुष्पमस्या लघु स्मृतम् ॥ कटु तिक्तं कान्तिकरमुष्णवातकफापहम् । केशदुर्गन्धतापघ्नं केसरः सिध्मकण्डुहा ॥ किञ्चिदुष्णं फलं स्वादु वातमेहकफापहम् । सुवर्णकेतकी तिक्ता नेत्र्या चोष्णा लघुः स्मृता॥कटुका मधुरा चैव विषरुक्कफनाशिनी । अस्याः पुष्पं सुखकरं कामोद्दीपनकारकम् ॥ किञ्चिदुष्णं च कटुकं तिक्तं नेत्र्यं सुगंधिकम् । स्तनश्चास्यातिशिशिरो देहदार्ढ्यकरः पटुः॥बल्यो रसायनः पित्तकफस्य च विनाशकः । फलकेशरयोश्चैव गुणाः पूर्वोक्तवन्मताः ॥ (नि० र०)

अर्थ-श्वेतकेतकी (केवडा) चरपरा, स्वादिष्ठ, कडवा, हलका तथा विष और कफको दूर करनेवाला है, इसका फूल-हलका, चरपरा, कडवा, कान्तिकारक, गरम तथा वात, कफ और बालोंकी दुर्गंधको दूर करे है । इसकी केसर-सिध्म और कण्डूनाशक है, तथा कुछ गरम है । इसका फल-स्वादिष्ठ तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है । सुवर्णकेतकी (केतकी)-कडवी,नेत्रोंको हितकारी हलकी चरपरी, मधुर, विषविकार और कफनाशक है । इसका फूल-सुखकारी, कामको दीपन करनेवाला, किञ्चित् गरम चरपरा, कडवा, नेत्रोंको हितकारी और सुगन्धित है । इसके स्तन-अत्यन्त शीतल, देहको दृढकरनेवाले निमकीन, बलकारक, रसायन तथा

पित्त और कफनाशक हैं। और इसके फलके तथा केसरके गुण सपेद केतकीके फलकी और केसरकी समान जानने।

अन्यच्च।

केतकी वातला वृष्या तन्द्रानिद्राकरी मता ॥ (आ० सं०)

अर्थ-केतकी-वातकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करनेवाली है।

विवरण। केवडेके वृक्ष बाग और जलके निकट अधिकतासे होते हैं, वृक्षके भीतर बारीक कांटे और पत्ते लम्बे होते हैं, पत्तेके कोनेपर कांटे होते हैं। दूसरी सुवर्णकेतकी होती है, उसका क्षुप पीला और विशेष सुगंधवाला होता है।

अशोकनामानि।

अशोकः शोकनाशश्च विचित्रः कर्णपूरकः।
कंकेलिर्हेमपुष्पश्च पिण्डपुष्पस्तथैव च ॥

अर्थ-अशोक, शोकनाश, विचित्र, कर्णपूरक, कंकेली, हेमपुष्प, पिण्डपुष्प, (अङ्गनाप्रिय, वीतशोक, विशोक, वञ्जुलद्रुम, वञ्जुल, मधुपुष्प, अपशोक, कंकेल्लि, केलिक, रक्तपल्लव, चित्र, कर्णपूर, सुभग, दोहली, ताम्रपल्लव, रोगितरु, वामांकयातन, पिण्डीपुष्प, नट, रामा, पल्लद्रु, कान्ताङ्घ्रिदोहद, कान्ताचरणदोहद, चक्रगुच्छ, गन्धपुष्प, स्त्रीनिरीक्षणदोहद, शोकहर्त्ता, स्मराधिवास, दोषहारी प्रपल्लव, वामांघ्रिघातक)

संस्कृतभाषामें	अशोक।
हिंदीभाषामें	अशोक (अशोगि)
वंगभाषामें	अस्पाल।
मराठीभाषामें	अशोक।
गुजरातीभाषामें	आशुपालो देशी पीलाफुलनो, आशुपालो रातांफुलनो।
लैटिन्‌भाषामें	ग्वेटेरिया लोंजिफोलिया। Guattera Longifolia जोनेशिया अशोका। Jonesia asoka

अशोकगुणाः।

अशोकः शीतलस्तिक्तो ग्राही वर्ण्यः कषायकः।
दोषापचीतृषादाहकृमिशोषविषास्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अशोक-शीतल, कडवा, मलरोधक, वर्णको उज्ज्वल करने-

वाला कषेला तथा अपचीदोष, तृषा, दाह, कृमि, शोष, बिष और रक्तदोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

अशोको मधुरः शीतश्चास्थिसन्धानकृन्मतः । प्रियः सुगन्धिः कृमिकृत्तुवरोष्णश्च तिक्तकः ॥ शरीरकान्तिकृच्चैव स्त्रीणामुच्छोकनाशनः । ग्राही पित्तहरो दाहश्रमगुल्मोदरापहः ॥ शूलाध्माने विषं चार्शो व्रणं सर्वां तृषं तथा । शोथापचीतृषश्चैव नाशयेद्रक्तजां रुजम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-अशोक-मधुर, शीतल, हड्डीको जोडनेवाला, प्रिय, सुगन्धि, कृमिहारक, कषेला, गरम, कडवा, देहकी कान्ति बढानेवाला, स्त्रियोंके शोकको दूर करनेवाला, मलरोधक तथा, पित्त, दाह, श्रम, गुल्म, उदररोग, शूल, आध्मान, विष, बवासीर, व्रण, सर्व प्रकारकी तृषा, सूजन, अपची, तृषा और रुधिररोगको दूर करनेवाला है ।

अपि च ।

अशोकस्य त्वचा रक्तप्रदरस्य विनाशिनी ॥ (शो० नि०)

अर्थ-अशोककी छाल-रक्तप्रदररोगको हरनेवाली है ।

विवरण । अशोक वृक्षकी दोजाती हैं, एकके पत्ते रामफलकी समान और फूल नारंगीके रंगकी सदृश होता है, माह फाल्गुनमें खिलतेहैं और दूसरे अशोकके पत्ते आमकी समान होते हैं, फूल-सफेद कुछेक साधारण पीले रंगका होताहै, इसपै फल चौमासेके आरम्भमें आतेहैं । इसके कच्चे फलका रंग नीला और पकनेपर लाल होजाता है, इसके फल खानेके योग्य नहीं हैं और इन फलोंमेंसे जो बीज निकलतेहैं वह बीजभी किसी औषधिके प्रयोगमें नहीं लिये जाते, फूल जिसका नारंगकी समान है ऐसे अशोकको "जोनेशिआ" अशोक कहते हैं और दूसरेको "ग्वेटेरीआ लोंजिफोलिआ" कहते हैं ।

पुन्नागनामानि ।

पुरुषाख्यो रक्तवृक्षः पुन्नागो देववल्लभः ॥

अर्थ-पुरुषाख्य, रक्तवृक्ष, पुन्नाग, देववल्लभ, (पूरुष, तुङ्ग, केशर, केशव, केसरी, काम्बोज, नागपुष्प, कुम्भीक, रक्तकेशर, पाण्डुनाग, पाटलाद्रुम, रक्तपुष्प, रक्तरेणु, अरुमा ।

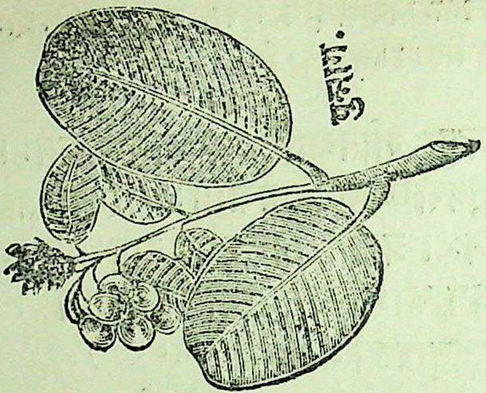

संस्कृतभाषामें	पुन्नाग ।
हिन्दीभाषामें	पुन्नाग, पुलाक, (के) सुलतानचम्पक ।
बंगभाषामें	पुन्नांगाछ, राजचम्पक ।
गुजरातिभाषामें	पुन्नाग, सुरपुन्नाग।
मराठीभाषामें	गोडी उंडीण, कडवी उंडणि, उंडली ।
कर्णाटकीभाषामें	सुरहोन्तेयभेद ।
तैलङ्गीभाषामें	सुरपोन्नचेट्टु ।
औत्क०	पुंणां ।
तामिलिःभाषामें	पिन्नप ।
लैटिन्भाषामें	ओक्रोकार्यसलोजिफोलियम् । Ochrocarpus Songifolium

अस्य गुणाः ।

पुन्नागो मधुरः शीतः सुगन्धिः पित्तनाशकृत् । देवप्रसादजनको रक्तरुग्रक्तपित्तजित् ॥ कफं पित्तं भूतबाधां नाशयेदिति कीर्तितम् । पुष्पं वृष्यं वातशूलकफदोषाञ्जयत्यलम् ॥ नमेरुस्तिक्तपुन्नागादधिकश्च गुणैः स्मृतः । (नि० र०)

अर्थ-पुन्नाग-मधुर, शीतल, सुगन्धि, पित्तनाशक, देवताओंको प्रसन्नकरनेवाला तथा रक्तदोष, रक्तपित्त,कफ,पित्त और भूतबाधाको दूर करेहै । इसकेफूल-वीर्यवर्द्धक, वातशूल और कफनाशक हैं,सुहपुन्नाग-कडवा और पुन्नागकी अपेक्षा अधिक गुणवाला है ।

विवरण । पुन्नागका वृक्ष बडा-होताहै; पुन्नागके फूलकी कलीको सुखालेते हैं । उसको नागकेशर कहते हैं. नागकेशरके गुण प्रथम

सुगंधिवर्गमें लिख आये हैं । इसके फल बृहद्दन्तीकी समान होते हैं उन फलोंका तेल निकलता है ।

सैरेयकनामानि ।

सैरेयकः श्वेतपुष्पः सैरेयं कटसारिका ।
सहाचरः सहचरः स च भिंद्यपि कथ्यते ॥

अर्थ-सैरेयक, श्वेतपुष्प, सैरेय, कटसारिका, सहाचर, सहचर, भिन्दी, (मृदुकण्ट, महासह, बाण, उद्यानपाकी, सौरीयक, कण्टकुरण्ड, झिण्टिका, झिण्टी)

कुरण्टकनामानि ।

किंकिरातो कुरण्टश्च कनकः पीतपुष्पकः ।
पीताम्लानः सहचरः पीतसैरेयकश्च सः ॥

अर्थ-किंकिरात, कुरण्ट, कनक, पीतपुष्पक, पीताम्लान, सहचर, पीतसैरेयक (कुरण्टक, सहचरी, सहाचर, वीर, पीतपुष्प, दासी, कुरण्टक, पुर)

नीलझिण्टी (आर्त्तगल) नामानि ।

नीलपुष्पी नीलझिण्टी दासी चार्तगलश्च सः ।

अर्थ-नीलपुष्पी, नीलझिण्टी, दासी, आर्त्तगल (बाणा, अर्त्तगल, बाण, सहचर, नीलकुरुण्टक, शैरीयक, शैरेयक, सैरीय, सैरेय, नीलकुसुमा, बाला, कण्टार्तगला)

कुरबकनामानि ।

रक्ताम्लानो रक्तपुष्पो रामालिङ्गनकामुकः ।
रागप्रसवकश्चैव सुभगः शोणझिण्टिकः ॥

अर्थ-रक्ताम्लान, रक्तपुष्प, रामालिङ्गनकामुक, रागप्रसव, सुभग, शोणझिण्टिक, (कुरवक, रक्तझिण्टी रक्तझिण्टिका, शोणाझिण्टी)

रक्तपुष्पः कुरबकः पीतपुष्पः कुरण्टकः ।
नीलपुष्पश्चार्त्तगलः सैरेयः श्वेतपुष्पकः ॥

अर्थ-लालफूलकी कटसरैयाको “ कुरबक ” पीलेफूलवालीको “ कुरण्टक ” नीलेफूलवालीको “ आर्त्तगल ” और सफेदफूलकी कटसरैयाको “ सैरेय (क) ” कहतेहैं ।

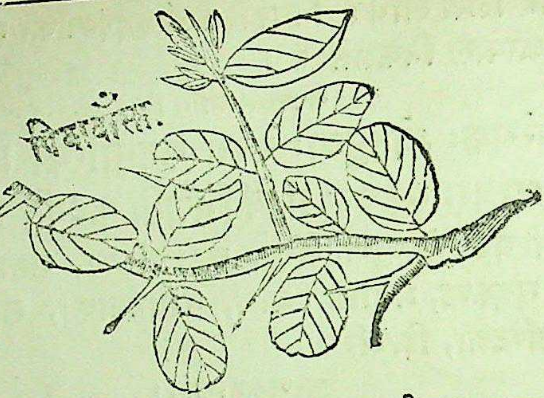

संस्कृतभाषामें	सैरेयक, कुरण्टक, आर्त्तगल, कुरबक।
हिन्दीभाषामें	कटसरैया, पियावाँसा।
वंगभाषामें	झाँटि,कुलझाँटि, पीतझाँटि, नीलझाँटि, लालझाँटि।
मराठीभाषामें	पिंवळाकोरंटा,तांबडाकोरंटा, नीळाकोरंटा पांढराकोरंटा।
गुजरातीभाषामें	कांटा अशेलीयो,पीलांफुल, रातांफुलनो, कालां फुलनो, धोलाफुलनो।
कर्णाटकीभाषामें	होवणदगारटे, वणदगिड, करियगोरटे, सरसुल्ल गोरटे गल्लु।
तैलङ्गिभाषामें	गोरेंडु।

लैटिन्भाषामें बार्लेरिया प्रायोनिटस्। Barleria Prionitis

सैरेयकगुणाः।

सैरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः।
तिक्तोष्णो मधुरोऽनम्लःसुस्निग्धः केशरञ्जनः॥(भा.प्र.)

अर्थ-सफेद फूलकी कटसरैया-कडवी, गरम, मधुर, दांतोंको हितकारी, सुस्निग्ध, केशरञ्जक तथा कोढ, वात, रुधिरविकार,कफ, कण्डू और विषनाशक है।

अन्यच्च।

श्वेतः कुरण्टकस्तिक्तः केश्यः स्निग्धो मधुः स्मृतः।
कटुश्चोष्णो दन्तहितो वलीपलितनाशनः॥ कुष्ठं वातं
रक्तदोषं कफं कण्डूं विषं तथा। नाशयेद्दारुणं चैव ऋषि-
भिः परिकीर्तितः॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद फूलकी कटसरैया-कडवी, केशोंको हितकारी, स्निग्ध, मधुर, चरपरी, गरम, दांतोंको हितजनक तथा वलीपलित, कुष्ठ, वात, रक्तविकार, कफ, कण्डू, विष और घोर वेदनाको हरनेवाली है।

कुरण्टकगुणाः।

पीतः कुरण्टकश्चोष्णस्तिक्तश्च तुवरः स्मृतः।
अग्निदीप्तिकरो वातकफकण्डूहरः स्मृतः।
शोथं रक्तविकारं च त्वग्दोषं चैव नाशयेत्॥

अर्थ-पीलेफूलकी कटसरैया-गरम, कडवी, कषेली, अग्निदीपक तथा वात, कफ, कण्डू, सूजन, रक्तविकार और त्वचाके दोषोंको दूर करे है।

आर्तगलगुणाः।

नीलः कुरण्टकस्तिक्तः कटुर्वातकफापहः।
शोथकण्डूशूलकुष्ठव्रणत्वग्दोषनाशनः॥

अर्थ-नीलेफूलकी कटसरैया-कडवी, चरपरी तथा वात, कफ, सूजन, कण्डू, शूल, कोढ, व्रण और त्वचाके विकरोंको दूर करे है।

नीलझिण्टीगुणाः।

नीलझिण्टी तु कटुका तिक्ता त्वग्दोषनाशिनी।
दन्तरोगं कफं शूलं वातं शोथं च नाशयेत्॥

अर्थ-कालेफूलकी कटसरैया-चरपरी, कडवी तथा त्वग्दोष, दन्तरोग, कफ, शूल, वात और सूजनको दूर करनेवाली है।

कुरबकगुणाः।

रक्तः कुरण्टकस्तिक्तो वर्ण्यश्चोष्णः कटुः स्मृतः।
शोथं ज्वरं वातरोगं कफं रक्तरुजं तथा॥
पित्तमाध्मानकं शूलं श्वासं कासं च नाशयेत्(नि०र०)

अर्थ-लालफूलकी कटसरैया-कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गरम, चरपरी तथा सूजन, ज्वर, वातरोग, कफ, रक्तविकार, पित्त, आध्मान, शूल, श्वास:और खाँसीको हरनेवाली है।

विवरण। पियावांसा अर्थात् कटसैरयाके क्षुप वन और बागोंमें बहुत होते हैं, इसकी चार प्रकारकी जाति हैं इसके फूलोंका रंग

भी चार प्रकारका होता है-सफेद, पीले, लाल और नीले इन चारों प्रकारके पियांवासेमें कांटे होते हैं, पत्तेभी सबके छोटे २ एकसेही होते हैं, किसीमें विशेष अन्तर नहीं होता ।

बन्धूकनामानि।

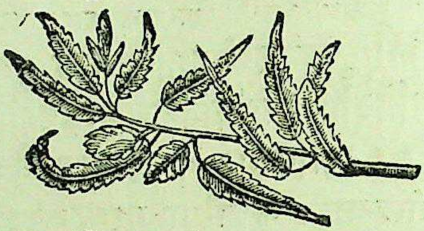

दुपहरियाकाफूल.

बन्धूको बन्धुजीवश्च रक्तो माध्याह्निकोऽपि च ।

अर्थ-बन्धूक, बन्धुजीव, रक्त, माध्याह्निक, (रक्तक, बन्धुजीवक, बन्धुक, बन्धु, बन्धुल, बन्धूजीव, बन्धूलि, बन्धुर, सूर्यभक्त, सूर्यभक्तक, ओष्ठपुष्प, अर्कवल्लभ, मध्यादिन, रक्तपुष्प, हरिप्रिय, शरत्पुष्प, ज्वरघ्न, सुपुष्प)

संस्कृतभाषाम	बन्धूक।
हिन्दीभाषामें	दुपहरिया, गेजुनिया।
बंगभाषामें	बान्धुलिफुलेरगाछ।
मराठीभाषामें	दुपारीचें फूल।
गुजरातीभाषामें	बपोरियो।
कर्णाटकीभाषामें	बंदुरे।
तैलिङ्गीभाषामें	नितिमल्ली, मकिनचेट्टु, बेगसिनचेट्टु।
वम्०	दुपारि
पञ्जा०	गुलदुफारिया।
लैटिन्भाषामें	पेरोटपिस् फिनिश्या। Pentapets Phorincea

अस्य गुणाः।

स्याद्बन्धुजीवको ग्राही किञ्चिदुष्णो गुरुर्मतः ।
कफकृज्ज्वरहृद्वातपित्ते चैव विनाशयेत् ॥
पिशाचग्रहबाधां च नाशयेदिति कीर्त्तितः ।

अर्थ-दुपहरिया-मलरोधक, किञ्चित् गरम, भारी, कफनाशक, ज्वरनाशक, तथा वात, पित्त, पिशाचबाधा और ग्रहबाधाको दूर करे है ।

विवरण । दुपहरियाके वृक्ष घर और बागोंमें बोदेते हैं, फूल सफेद, सिन्दूरी, लाल तीन चार जातिका होता है, यह दुपहरके समय खिलती है, इसीसे इसको दोपहरिया कहते हैं ।

सिद्धेश्वरनामानि ।

सिद्धेश्वरश्च सिद्धाख्यः सिद्धनाथः प्रकीर्तितः ।

अर्थ-सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ ।

संस्कृतभाषाम	सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ,
दे०	गुलतुर्रा !
वंगलाभाषामें	कृष्णचूड ।
गुजरातीभाषामें	संधेशरो ।
कर्णाटकीभाषामें	कोमरी ।
लैटिन्भाषामें	सिसालपिनियालकेरिमा । Caesalpina pulcherrima

अस्य गुणाः ।

सिद्धेश्वरो हिमः स्निग्धः ग्रन्थिनाडीव्रणापहः ।
वातव्याधिहरश्चैव त्रिदोषामयनाशनः ॥

अर्थ-सिद्धेश्वर-शीतल, स्निग्ध तथा ग्रन्थि, नाडीव्रण, वातरोग और त्रिदोषनाशक है ।

शंखोदरीनामानि ।

शंखोदरी बर्हपुष्पा चिश्वापत्राऽल्पकण्टकी ।
श्लाखापत्री सुपुष्पा च वनवासी सुशिम्बिका ॥

अर्थ-शंखोदरी,बर्हपुष्पा, चिश्वापत्रा, अलपकण्टकी, श्लाखापत्री, सुपुष्पा, वनवासी, सुशिम्बिका ।

संस्कृतभाषामें	शंखोदरी ।
दे०	गुलतोरा, गुलपरी ।
गुजरातीभाषामें	राशंगडी, नहानी, गुलमोर ।
मराठीभाषामें	शंखासुर, धाकटीगुल, कुंकमकेशर ।
तैलिङ्गीभाषामें	सामिडीतांघेड्ड ।
लैटिन्भाषामें	पोईनसियाना रिजांइना Poinoeana rigina पोईनसियाना पलकेरिमा P. Pulcherrima

शंखोदरीगुणाः ।

शंखोदरी मता चोष्णा कफवातविनाशिनी ।
शूलामवातशमनी नेत्ररोगनिवारिणी ॥

अर्थ-शंखोदरी-गरम तथा कफ, वात, शूल, आमवात और नेत्र रोगनिवारक है ।

झण्डूकनामानि ।

झण्डुः स्यात्स्थूलपुष्पा तु झण्डूको झण्डुकस्तथा ।

अर्थ-झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक ।

संस्कृतभाषामें	झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक ।
हिन्दीभाषामें	मखमली, गुलतोरा, कलगा, लालमुरगा
मराठीभाषामें	झेंडू, मखमाल ।
गुजरातीभाषामें	मुखमल ।
इंग्रेजीभाषामें	फ्रेंचमेरीगोल्ड French mary golp
लैटिन्भाषामें	टेजिटिस् इरेक्टा Tagetes erecta
	मिलेस्याक्रेस्टोटा Celasiacrestota
फारसीभाषामें	काजेखरूस ।
अरबीभाषामें	हमाहम ।

अस्या गुणाः ।

झण्डुः कटुः कषायः स्याज्ज्वरभूतग्रहापहा । (रा०नि०)

अर्थ-लालमुरगा-चरपरा, कषैला तथा ज्वर, भूत और ग्रहकी पीडाको दूर करनेवाला है ।

सिन्दूरपुष्पीनामानि ।

सिन्दूरपुष्पी सिन्दूरी तृणपुष्पी सुकोमला ।

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी, सिन्दूरी, तृणपुष्पी, सुकोमला(रक्तबीजा, रक्तपुष्पी, वीरपुष्पा, करच्छदा, शोणपुष्पी) ।

संस्कृतभाषामें	सिन्दूरपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	सिन्दूरिया, जाफर, लटकण ।
मराठीभाषामें	शेंद्री ।
गुजरातीभाषामें	सिन्दूरी ।
कर्णाटकीभाषामें	सिन्दूरी ।

इंग्रेजीभाषामें	आरनाटो Arnatto
लैटिन्भाषामें	बिक्साओरमाना Bixa Oimana

अस्या गुणाः ।

सिन्दूरी विषपित्तास्रतृष्णावान्तिहरी हिमा (भा० प्र०)

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-विष, रक्तपित्त, तृषा और कान्तिनाशक तथा शीतल है ।

अन्यच्च ।

सिन्दूरी कटुका तिक्ता कषाया श्लेष्मवातजित् ।
शिरोर्तिशमनी भूतनाशी चंडीप्रिया भवेत् ॥

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-चरपरी, कडवी, कषेली, तथा कफ, वात, मस्तकरोग और भूतनाशक है तथा चण्डीको प्यारी है ।

अपिच ।

सिन्दूरी पुष्पिका तिक्ता कटुः शीतलघुः स्मृता। तुवरा रक्तदोषघ्नी वातरक्तं तृषं जयेत् ॥ विषदोषं च पित्तं च वातपित्तं वमिं तथा । कफं मस्तकशूलं च भूतदोषं च नाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-सिंदूरपुष्पी-कडवी, चरपरी, शीतल, हलकी, कषेली तथा रक्तविकार, वातरक्त, तृषा, विषदोष, पित्त, वातपित्त, वमन, कफ, मस्तकशूल और भूतबाधाको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सिन्दूरियाके क्षुप उपवनोंमें होते हैं, पत्ते बेलके समान होतेहैं, फूल लाल २ सिन्दूरकी समान होते हैं उसके बीजभी लाल रंगके होते हैं, इनको जलमें डालनेसे जल लाल होजाताहै ।

प्राजक्तनामानि ।

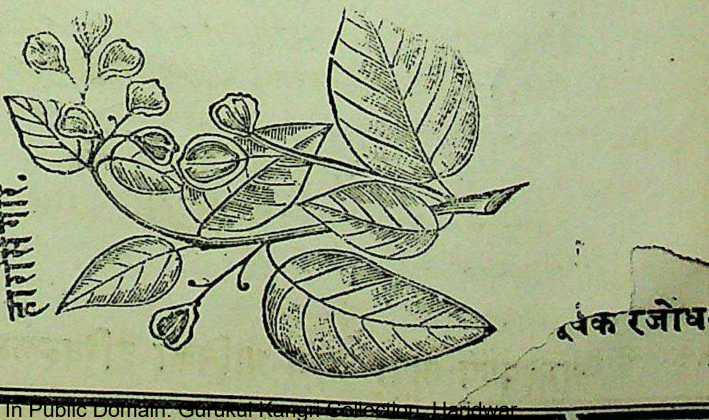

हारसिंगार.

प्राजक्तः पारिजातश्च हारशृङ्गारपुष्पकः ।
नलकुंकुमको रागपुष्पी च खरपत्रकः ॥

संस्कृतभाषामें प्राजक्त, पारिजात, हारशृङ्गारपुष्पक, नालकुंकुम, रागपुष्पी, खरपत्रक ।

हिन्दीभाषामें हारसिंगार, प्राजक्त ।

मराठीभाषामें प्राजक्त, पारिजात ।

गुजरातीभाषामें शीयाली, हारशणगार ।

इंग्रेजीभाषामें स्क्वेरस्टोकूड निक्टेंथिस। Square Stalked Nytnacthes

लेटिन्भाषामें निकटेन्थिस् अर्बौट्रिसटिस्। Nycranthes Arbotristis

हारशृङ्गारगुणाः ।

रसः प्राजक्तपत्रस्य ज्वरघ्नस्तिक्तकः स्मृतः ।
पर्णखण्डसमायुक्तस्त्वचा कासविनाशनः ॥

अर्थ-हारशृंगारके पत्तोंका रस-ज्वरनाशक और कडवा है । इसकी छाल पानमें रखकर खानेसे खांसी दूर होतीहै ।

विवरण । इसके वृक्ष वन और उपवनोंमें होते हैं इसके फूल अत्यन्त सुंदर होते हैं, फूलकी डंडी केशरीरंगकी होती है, उन डंडिओंको पीसकर वस्त्र रंगते हैं, इसके फल चपटे और छोटे होते हैं और पत्ते ओडहुलकी समान तथा खरखरे होते हैं ।

॥ जपापुष्पनामानि ॥

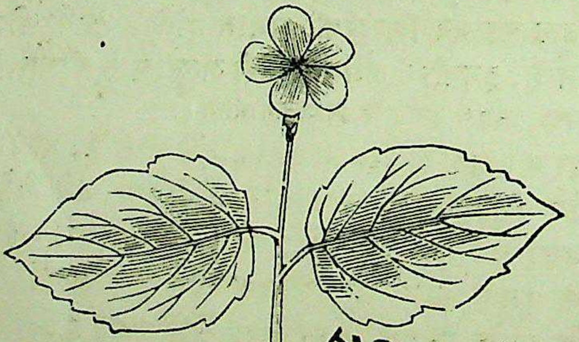

ग

गुजर.

कर्णाटकी ष्पं जपा चाथ प्रातिका हरिवल्लभा ।

संस्कृतभाषामें	ओंड्रपुष्प, जपा, प्रातिका, हरिवल्लभा (जवा, ओंड्राख्या, रक्तपुष्पी, अर्कप्रिया, रागपुष्पी, ओंड्रपुष्पी, त्रिसन्ध्या, अरुणा.)
हिंदीभाषामें	ओडहुल, जवा, गुडहर।
वंगभाषामें	जवाफूलेरगाछ।
मराठीभाषामें	जासवंद।
गुजरातीभाषामें	जांसुम।
कर्णाटकीभाषामें	दासनल।
तैलिङ्गीभाषामें	मंदारपु।
इंग्रेजीभाषामें	शुफ्लावर। Shoeflower
लैटिन्भाषामें	हिविस्स्कस् रोझासाई नेनसिस् HibiscusRosasinensis

अस्य गुणाः।

जपा शीता च मधुरा स्निग्धा पुष्टिप्रदा मता। गर्भवृद्धिकरी ग्राही केश्या जन्तुप्रदा मता॥ वान्तिजन्तुकरा दाहप्रमेहार्शविनाशिनी। धातुरुक्प्रदरं चेंद्रलुप्तं चैव विनाशयेत्॥ जपापुष्पं लघु ग्राहि तिक्तं केशविवर्द्धनम्। (नि० र०)

अर्थ-जपा (ओडहुल, गुडहर)-शीतल, मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, गर्भवृद्धिकारक, ग्राही, बालोंको हितकारी तथा वमन और कृमिको उत्पन्न करनेवाली तथा दाह, प्रमेह, बवासीर, धातुरोग, प्रदर और इन्द्रलुप्त रोगको हरनेवाली है। इसके फूल-हलके, मलरोधक, कडवे और केशवर्द्धक हैं।

विवरण। जवाके वृक्ष मध्यमाकारके होते हैं, प्रायः बाग और उपवनोंमें बोयेजाते हैं, पत्ते अडूसेकी समान बडे बडे और फूल बहुत बडा अत्यन्त लालरंगका आताहै। प्रयोगमें फूल लिये जाते हैं इसके फूलमें अनेक गुण हैं विशेषकरके रुधिरके विकार और स्त्रियोंके रजके विकारोंमें व्यवहार किये जाते हैं।

घृतभर्जितजपापुष्पगुणाः।

घृतेन भर्जितजपारुयार्त्तवं कुरुते सुखम्।

अर्थ-घीमें भुनाहुवा गुडहरका फूल-स्त्रियोंके सुखपूर्वक रजोधर्म करानेवाला है।

अगस्त्यनामानि ।

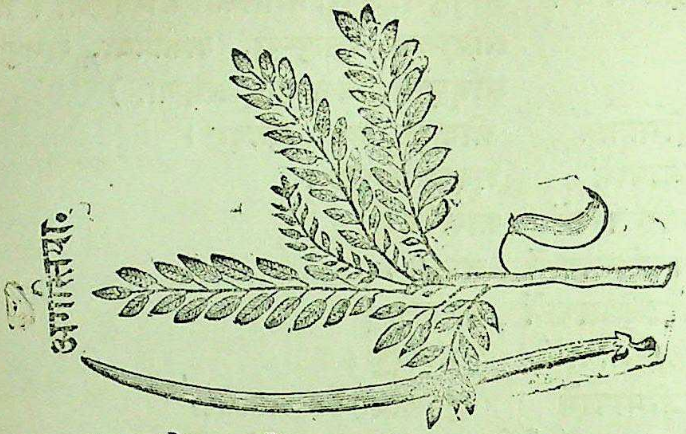

अगस्त्यो वङ्गसेनश्च मुनिपुष्पो मुनिद्रुमः ।

अर्थ-अगस्त्य, वङ्गसेन, मुनिपुष्प मुनिद्रुम (अगस्ति, शीघ्रपुष्प, व्रणारि, दीर्घफलक, रक्तपुष्प, सुरप्रिय, शुक्लपुष्प, व्रणापह, खरध्वंसी, पवित्र, मुनिप्रिय मुनितरु, वङ्गसेनक, कनली, शीघ्रपुष्प, वक्रपुष्प, सुराप्रिय)

संस्कृतभाषामें	अगस्त्य ।
हिन्दीभाषामें	अगस्तिया, हथिया, हदगा ।
वंगभाषामें	वक ।
मराठीभाषामें	अगस्ता, हदगा ।
गुजरातीभाषामें	अगथियो ।
कर्णाटकीभाषामें	अगसेधमरनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	अनसि, अविसि ।
तामिलीभाषामें	अगंति ।
इंग्रेजीभाषामें	लार्जफ्लावर्ड एगेटी ।
लैटिन्भाषामें	एगाटी ग्लांडी फ्लोरा ।

अस्य गुणाः ।

अगस्तिः पित्तकफजिच्चातुर्थिकहरो हिमः ।
रूक्षो वातकरस्तिक्तः प्रतिश्यायनिवारणः ।(भा० प्र०)

अर्थ-अगस्तिया-शीतल, रूखा, वातकारक, कडवा तथा पित्त, कफ, चातुर्थिकज्वर और प्रतिश्यायनिवारक है ।

अन्यच्च।

अगस्तिशिशिरं गौल्यं त्रिदोषघ्नं भ्रमापहम्।
बलासकासवैवर्ण्यभूतघ्नं च बलावहम्॥

अर्थ-हथिया-शीतल, गौल्य तथा त्रिदोष, भ्रम, बलास, कास, विवर्णता, भूतबाधा और बलनाशक है।

अस्य पुष्पगुणाः।

अगस्तिकुसुम शीतं चातुर्थिकनिवारकम्।
नक्तान्ध्यनाशनं तिक्तं कषायं कटुपाकि च॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नं वातघ्नं मुनिभिर्मतम्।

अर्थ-अगस्तियाके फूल-शीतल, चातुर्थिकज्वरनिवारक, रतौंधको दूर करनेवाले, कडवे, कषेले, पचनेमें चरपरे तथा पीनसरोग, कफ, पित्त और वातनाशक हैं।

अस्य पत्रगुणाः।

पर्णं तु मुनिवृक्षस्य कटु तिक्तं गुरु स्मृतम्।
मधुरं किञ्चिदुष्णं च स्वच्छं कृमिकफापहम्॥
कण्डूं विषं रक्तपित्तं नाशयेदिति कीर्तितम्।

अर्थ-अगस्तियाके पत्ते-चरपरे, कडवे, भारी, मधुर, किञ्चित् गरम, स्वच्छ तथा कृमि, कफ, कण्डू, विष और रक्तपित्तको हरनेवाले हैं।

अस्यशिम्बीगुणाः।

मुनिशिम्बी सरा प्रोक्ता बुद्धिदा रुचिदा लघुः। पाककाले तु मधुरा तिक्ता चैव स्मृतिप्रदा॥ त्रिदोषशूलकफहृत पांडुरोगविषापनुत॥ शोषगुल्महरा प्रोक्ता सा पक्वा रूक्षपित्तला। (नि० र०)

अर्थ-अगस्तियाकी फली-सारक (कुछेक दस्तावर) बुद्धिदायक, रुचिकारक, हलकी, पचनेमें मधुर, कडवी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष और गुल्मनाशक है। इसका शाक रूखा-और पित्तकारक है।

विवरण-अगस्तियाके वृक्ष पुष्पोद्यानोंमें अधिक होतेहैं, पत्ते सैंजिनेकेसे होते है। विशेषकरकेइसपर नागरबेल अर्थात् पानोंकी बेल चढा

करतीहै,इसलिये इसके पत्ते उत्तम होतेहैं इसके फूल लाल और सफेद होतेहैं इसकी फली, अत्यन्त कोमल होतीहै यह इसकी ठीक पहिचानहै कि,जब अगस्त्यमुनिका उदय होताहै तबही अगस्तियाके फूल खिलतेहैं ।

तुलसीनामानि ।

तुलसी वैष्णवी वृंदा सुगन्धा गन्धहारिणी ।
अमृता पत्रपुष्पा च पवित्रा सुरवल्लरी ॥

अर्थ-तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगन्धा,गन्धहारिणी, अमृता,पत्रपुष्पा, पवित्रा, सुरवल्लरी (सुभगा, तीव्रा, पावनी, विष्णुवल्लभा, सुरेज्या, सुरसा, कायस्था, सुरदुन्दुभि, सुरभि, बहुपत्री, मञ्जरी, हरिप्रिया, अपेतराक्षसी, श्यामा, गौरी, त्रिदशमञ्जरी,भूतघ्नी,भूतपत्री, पर्णास, कठिञ्जर, कुठेरक,पुण्या,माधवी,सुरवल्ली, प्रेतराक्षसी, सुवहा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमञ्जरी, देवदुन्दुभि, विष्णुपत्नी,मालाश्रेष्ठा, पापघ्नी, लक्ष्मी, श्रीकृष्णवल्लभा)

कृष्णतुलसीनामानि ।

कृष्णा तु कृष्णतुलसी कृष्णपर्णी करालकः ।

अर्थ-कृष्णा, कृष्णतुलसी, कृष्णपर्णी, करालक ।

संस्कृतभाषामें	तुलसी ।
हिन्दीभाषामें	तुलसी ।
वंगभाषामें	तुलसी ।
मराठीभाषामें	तुळस, तुलसी ।
गुजरातीभाषामें	तुलसी ।
कर्णाटकीभाषामें	एरेडतुलसी ।
तैलङ्गीभाषामें	तुलसी ।
इंग्रेजीभाषामें	ह्वाईटबेझिल White Basil परपल् स्टाक्ड बोझिल् Purple stalked Basil
लैटिन्भाषामें	ओसिमं आल्बं Cimum Album ओसिम सैंक्टं Ocimum sanctum
फारसीभाषामें	रेहान् ।
अरबीभाषामें	उलसीबदरुत ।

तुलसीगुणाः ।

तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत् ।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥

शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणैस्तुल्या प्रकीर्तिता ।

अर्थ-तुलसी-चरपरी, कडवी, हृदयको हितकारी, गरम, दाहकारक, पित्तजनक, दीपन तथा कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्तविकार, पसवाडेकी पीडा, कफ और वातका नाश करनेवाली है । सफेद और काली तुलसीके गुण समान हैं ।

अन्यच्च ।

श्वेता कृष्णा च तुलसी कटूष्णा चोषणा जगुः। दाहपित्तकरी हृद्या तुवरा ह्यग्निदीपिका । लघ्वी वातकफश्वासकासहिध्मा-कृमीञ्जयेत् । वान्तिदौर्गन्ध्यकुष्ठानि पार्श्वशूलविषापहा ॥ मूत्रकृच्छ्रं रक्तदोषं भूतबाधां च नाशयेत्। शूलं ज्वरं च हिक्कां च नाशयेदिति कीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद और काली तुलसी-चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, दाहजनक, पित्तकारक, हृदयको हितकारी, कषेली, अग्निदीपक, हलकी तथा वात, कफ, श्वास, खाँसी, हिध्म, कृमि, वमन, दुर्गन्ध, कुष्ठ, पार्श्वशूल, विष, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, भूतबाधा, शूल, ज्वर और हुचकीको दूर करनेवाली है ।

विवरण । तुलसीके क्षुप जंगलमें और बागोंम बहुत होते हैं और बहुतेरे गृहस्थी लोग पूजाके लिये अपने २ घरोंमें लगा लेते हैं इसके पत्ते गोल २ कुछ लम्बाई लिये अत्यन्त कोमल होते हैं और उनमें सुगन्धिभी आती है, इसकी डाली २ में वाल निककती है उसको मंजरी कहते हैं । दूसरी श्याम पत्तोंकी श्यामा तुलसी कहलाती है परन्तु आकृति दोनोंकी एकसीही है ।

मरुवकनामानि ।

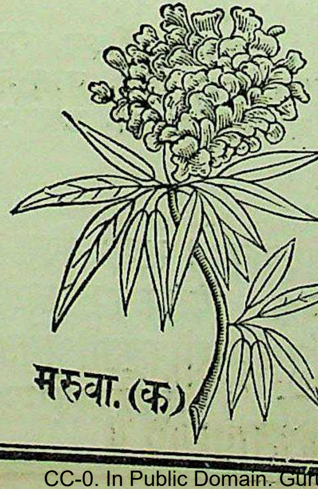

मरुवा.(क)

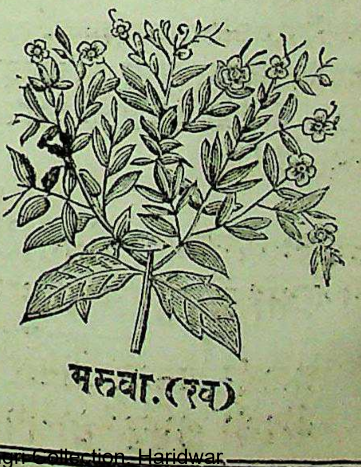

मरुवा.(ख)

मरुत्तको मरुबको मरुन्मरुरपि स्मृतः ।
फणी फणिज्जकश्चापि प्रस्थपुष्पः समीरणः ॥

अर्थ-मरुत्तक, मरुबक, मरुत्, मरु, फणी, फणिज्जक, प्रस्थपुष्प, समीरण (खरपत्र, गन्धपत्र, बहुवीर्य्य, शीतलक, सुराह्व, जम्बीर, प्रस्थकुसुम, मरिच, आजन्मसुरभिपत्र, कुलसौरभ)।

संस्कृतभाषामें	मरुबक।
हिन्दीभाषामें	मरुवा, मरुआ, गेदरेत।
बंगभाषामें	मरुया।
मराठीभाषामें	सबजा, मर्वा।
गुजरातीभाषामें	मरवो।
कर्णाटकीभाषामें	मरुवा।
तैलङ्गीभाषामें	रुद्रजाड।
इंग्रेजीभाषामें	स्वीट्मार्जोरन् । Sweet marjoran
लैटिन्भाषामें	ओरिध्येनं मार्जोराना । Origanum marjorana
फिरंगीभाषामें	शाहस्रू।
फारसीभाषामें	मर्जंगुस्।
अरबीभाषामें	मर्जंजुस्।

अस्य गुणाः

मरुदग्निप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः ।
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥
कटुपाकरसो रुच्यस्तिक्तो रूक्षः सुगन्धिकः ।

अर्थ-मरुवा-अग्निप्रदीपक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, गरम, पित्तजनक, हलका तथा बिच्छू इत्यादिका विष, कफ, वात ,कुष्ठ और कृमिनाशक है। पाक और रसमें चरपरा, कडवा, रूखा और सुगन्धित है।

अन्यच्च ।

मरुबकः कटूष्णश्च दीपनस्तिक्ततीक्ष्णकः । हृद्यः पित्तकरो रुच्यो रूक्षो लघुसुगन्धिकः ॥ पाचकः पित्तकफहृद्रक्तदोषविषज्वरान् । कुष्ठकण्डरुचीवातश्वासशोफकृमीञ्जयेत् ॥ हृद्रोगवृश्चिकविषविड्बंधाध्मानशूलहा । मांद्यत्वग्दोषशम-

नः श्वेतकृष्णविभेदतः॥ श्वेतस्त्वौषधकृत्येषु योग्यः
प्रोक्तः पुरातनैः । (नि० र०)

अर्थ-मरुवा-चरपरा, गरम, दीपन, कडवा, तीक्ष्ण, हृदय[illegible] हितकारी, पित्तकारक, रुचिकारी, रूखा, हलका, सुगन्धि, पाचक तथा पित्त, कफ, रक्तविकार, विषज्वर, कोढ, कण्डू, अरुचि, वात, श्वास, सूजन, कृमि, हृदयरोग, बिच्छूका विष, मलबद्धता, [illegible] फूलना, शूल, मन्दाग्नि और त्वचाके विकारोंको दूर करे है [illegible] श्वेत और कृष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है इनमें सफेद मरुवा औषधीके प्रयोगमें लिया जाता है ।

विवरण-मरुवेके क्षुप बागाम अधिक होते हैं, पत्ते लम्बे २ अंगुलीकी समान अत्यन्त सुगन्धित होते हैं इसमें तुलसीके समान बहुतसी बालें निकलती हैं, मरुवेके सब अंगोंमें सुगन्धि आती है ।

दमणकनामानि ।

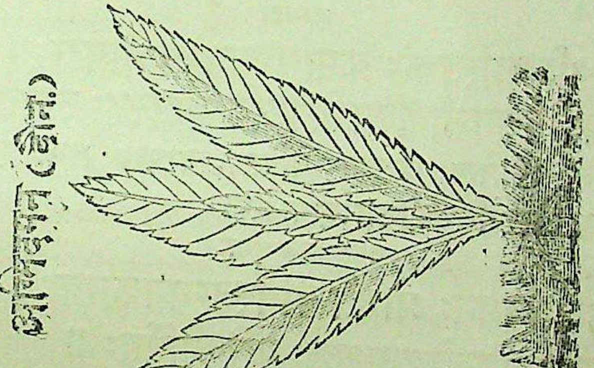

उक्तो दमनको दान्तो मुनिपुत्रस्तपोधनः ।
गन्धोत्कटो ब्रह्मजटो विनीतः कुलपत्रकः ॥

अर्थ-दमनक, दान्त, मुनिपुत्र, तपोधन, गन्धोत्कट, ब्रह्मजट, विनीत, कुलपत्रक, (पुष्पचामर, मदनक, दमन, मुनि, जटिला, दण्डी, पाण्डुराग, ब्रह्मजटा, पुण्डरीक, तापसपत्री, पत्री, पवित्रक, देवशेखर, कुलपत्र, तपस्विपत्र)

संस्कृतभाषामें	दमनक ।
हिन्दीभाषामें	दौना, दवना ।

वं भाषामें	दोन, दना।
राठीभाषामें	दवणा, रानदवणा।
जरातीभाषामें	डमरो।
र्णाटकीभाषामें	दवना।
ग्रेजीभाषामें	वर्मुवुड। Worm wood
टिन्भाषामें	आर्टिमिस्या इन्डिका। Artemefia Indica
	आर्टिमिस्या सिवार्सियाना। A. Sieversian
[illegible]ाषामें	

दमनकगुणाः।

दमनस्तुवरस्तिक्तो हृद्यो वृष्यः सुगन्धिकः।
ग्रहणाद्विषकुष्ठास्रक्लेदकण्डूत्रिदोषजित् ॥ (नि० र०)

अर्थ-दौना-कषेला, कडवा, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, सुगन्धित, इसका सेवन करनेसे विष, कोढ, रुधिरविकार, क्लेद, कण्डू, और त्रिदोषका नाश होता है।

अन्यच्च।

दमनः शीतलस्तिक्तः कषायकटुकश्च दोषहरः।
द्वन्द्वत्रिदोषशमनो विषस्फोटविकारहरणः स्यात्। (रा०)

अर्थ-दौना-शीतल, कडवा, कषेला, चरपरा तथा द्वन्द्वज दोष, त्रिदोष, विष और विस्फोटनाशक है।

वनदमनकगुणाः।

वनजो दमनः प्रोक्तो वीर्यस्तम्भनकारकः।
बलप्रदश्चामदोषनाशकः परिकीर्तितः ॥

अर्थ-वनदौना-वीर्यस्तम्भक, बलदायक व आमदोषनाशक है।

अग्निदमनकगुणाः।

अग्नेर्दमनकश्चोष्णः कटू रूक्षोऽग्निदीपनः।
रुच्यो हृद्यो वातकफगुल्मप्लीहविनाशकः ॥

अर्थ-अग्निदवना-गरम, चरपरा, रूखा, अग्निदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा वात, कफ, गुल्म और प्लीहाको दूर करनेवाला है।

विवरण-दौनेके क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्ते अत्यन्त सुगन्ध युक्त होते हैं, पत्तोंके ऊपर बहुत रुआँसा होता है, फूलोंके छत्तेसे होते हैं।

अर्जकनामानि ।

अर्जकः क्षुद्रतुलसी क्षुद्रपर्णो मुखार्जकः ।
उग्रगन्धस्तु जम्बीरः कुठेरस्तु कठिञ्जरः ॥

अर्थ–अर्जक, क्षुद्रतुलसी, क्षुद्रपर्ण, मुखार्जक, उग्रगन्ध, जम्बीर, कुठेर, कठिञ्जर ।

सितार्जकनामानि ।

सितार्जकस्तु वैकुंठो वटपत्रः कुठेरकः ।
जम्बीरो गन्धबहुलः सुमुखः कटुपत्रकः ॥

अर्थ–सितार्जक, वैकुण्ठ, वटपत्र, कुठेरक, जम्बीर, गन्धबहुल, सुमुख, कटुपत्रक (श्वेतच्छद, पाता, अर्जक, श्वेतपर्णास, अम्रार्जक, तीक्ष्ण,तीक्ष्णगन्धा)

कृष्णार्जकनामानि ।

कृष्णार्जकः काममालो मालुकः कृष्णमालुकः ।
स्यात्कृष्णमल्लिका प्रोक्ता गरघ्नो वनबर्बरः ॥

अर्थ–कृष्णार्जक, कालमाल, मालुक, कृष्णमालुक, कृष्णमल्लिका गरघ्न, वनबर्बर (कृष्णवर्णी, कालपर्णी, करालक, कृष्णपर्णी, सुरभिमालक, कालमालक) ।

बर्बरीनामानि ।

बर्बरी कबरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका ।

अर्थ–बर्बरी, कबरी, तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका, (अ सुरसा, बर्बा, अजगन्धा, कबरा, खरपुष्पिका, सुरभी, तुलसीद्वेषा, सुरसा, अपेतराक्षसी)।

वनबर्बरीनामानि ।

वनबर्बरिकाऽन्या तु सुगन्धिः सुप्रसन्नकः ।
दोषाक्केशी विषघ्नश्च सुमुखः सूक्ष्मपत्रकः ॥
निद्रालुः शोफहारी च सुवक्रश्च दशाह्वयः ।

अर्थ–वनबर्बरिका, सुगन्धि, सुप्रसन्नक, दोषाक्केशी, विषघ्न, सुमुख, सूक्ष्मपत्रक, निद्रालु, शोफहारी, सुवक्र ।

संस्कृतभाषामें	अर्जक, बर्बरी, वनबर्बरी ।
हिन्दीभाषामें	बर्बरी, वनतुलसी ।

वंगभाषामें	वावुइतुलसी, वनवावुइतुलसी।
मराठीभाषामें	रानतुलस।
गुजरातीभाषामें	रानतुलसीभेद।
कर्णाटकीभाषामें	कगोरले-करीयकगोरले।
तैलिङ्गीभाषामें	कारुतुलसी।
सं०	तोकूवलाम्बा।
लेटिन्भाषामें	ओसिमम् ग्रेटिसिमं। Ocimum gratissimum
फारसीभाषामें	पलंगमुश्क।
अरबीभाषामें	फरंजमुश्क।

अर्जक सितार्जक-कृष्णार्जकगुणाः।

अर्जकस्त्रिकटूष्णाः स्युः कफवातामयापहाः।
नेत्रामयहरा रुच्याः सुखप्रसवकारकाः॥ (रा० नि०)

अर्थ-तीनोंप्रकारकी अर्जक-चरपरी, रुचिकारक, गरम तथा कफ, वातरोग और नेत्ररोगनाशक है तथा सुखपूर्वक प्रसव करानेवाली हैं।

अन्यच्च।

बर्बरीत्रितयं रूक्षं शीतं कटु विदाहि च।
तीक्ष्णं रुचिकरं हृद्यं दीपनं लघुपाकि च॥
पित्तलं कफवातास्रदद्रुक्रिमिविषापहम्।

अर्थ-तीनोंप्रकारकी वर्बरी-रूखी, शीतल, चरपरी, दाहजनक, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, दीपन, पचनेमें हलकी, पित्तकारक तथा कफ, वात, रुधिरदोष, दाद, कृमि और विषको दूरकरनेवाली है।

आरण्यतुलसी क्षुद्रा कटी चोष्णा च तिक्तका। रुच्याग्निदीपनी हृद्या विदाही लघुपित्तला॥ रूक्षा कण्डूविषच्छर्दिकुष्ठज्वरविनाशिनी। वातं कृमीन्कफं दद्रुं रक्तदोषं च नाशयेत्। बीजं चास्या दाहशोषनाशकंपरिकीर्त्तितम्।

अर्थ-सर्वप्रकारकी बर्बरी-चरपरी, गरम, कडवी, रुचिकारक, अग्निदीपक, हृदयको हितकारी, दाहकारक, हलकी, पित्तजनक, रूखी तथा कण्डू, विष, वमन, कुष्ठ, ज्वर, वात कृमि, कफ, दाद और रुधिरके दोषोंको दूरकरने वाली है। इसके बीज-दाह और शोषनाशक हैं।

वनबर्बरिकागुणाः ।

वनबर्बरिका चोष्णा सुगन्धा कटुका च सा ।
पिशाचवान्तिभूतघ्नी घ्राणसन्तर्पणी परा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वनबर्बरी-गरम, सुगन्धित, चरपरी, नासिकाइन्द्रि को तृप्ति करने वाली तथा पिशाचबाधा, वमन और भूतबाधाको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

आरण्यतुलसी चोष्णा कटुका च सुगन्धिक
वातत्वग्दोषवीसर्पं विषं चैव विनाशयेत् ॥(नि० र०)

अर्थ-वनतुलसी-गरम, चरपरी, सुगन्धित तथा वात, त्वचाके विकार, विसर्प और विषके विकारोंको हरनेवाली है ।

अपिच ।

निद्राहरः शोफहरी दाहकारी च स स्मृतः ।
समुखं चातिकृच्छ्रघ्नं वातश्लेष्महरं परम् ॥

अर्थ-वनबर्बरी-निद्राका नाशकरनेवाली, शोफनाशक,दाहकाकर तथा मूत्रकृच्छ्र, वात और कफनाशक है ।

विवरण-बर्बरी अर्थात् वनतुलसी अनेक प्रकारकी होती है यह प्रायः जंगल और वनोंमें अधिक होतीहै, पत्ते पियाबाँसेके समान छोटे होतेहैं उनमें नीमके पत्तोंकेसे कंगूर होतेहैं, फूल पीलावनलिये होताहै सुगन्धिभी बहुत आती है ।

अथ पङ्कजनामानि ।

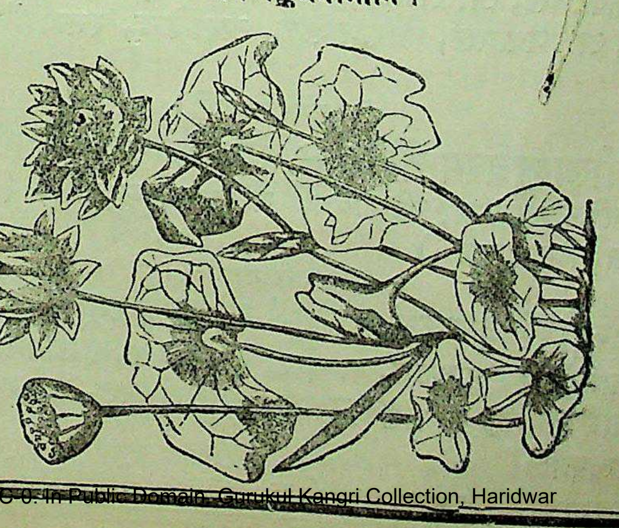

पङ्कजं कमलं पद्ममब्जं नलिनमम्बुजम् ।
कुशेशयं च राजीवमरविन्दं सरोरुहम् ।

अर्थ-पंकज, कमल, पद्म, अब्ज, नलिन, अम्बुज, कुशेशय, राजीव, अरविन्द, सरोरुह (पाथोज, नल, अम्भोज, अम्बुजन्म श्री [illegible] :) अम्बुरोह, अम्बुपद्म, सुजल, अम्भोरुह, पाथोरुह, पुष्कर, वा[illegible] तामरस, कुञ्ज, कज, शतपत्र, बिसकुसुम, सहस्रपत्र, महोत्पल, [illegible]रोह, सरसिज, सलिलज, पंकेरुह बिसप्रसून, वारिज, कव[illegible]स्यपत्र, वनशोभन, जलजन्म, जलरुट्, जल रुह, सरोज, सरोजन्म, सरोरुट्, पंकेज, श्रीवास, श्रीपर्ण, इन्दिरालय, जलजात, कंज, नालीक, नालिक, वनज, अम्लान, पुटक, अब्ज, सारज, सरसीरुह, कुटप)

श्वेतकमलनामानि ।

पुण्डरीकं महापद्मं श्वेतपद्मं सिताम्बुजम् ।
हशोपमं हरिनेत्रं शारदं शम्भुवल्लभम् ॥

अर्थ-पुण्डरीक, महापद्म, श्वेतपद्म, सिताम्बुज, हशोपम, हरिनेत्र, शारद, शम्भुवल्लभ (सिताम्भोज, शतपत्र, शुक्लपद्म, सिताब्ज, श्वेतवारिज, शरत्पद्म) ।

रक्तकमलनामानि ।

रक्तोत्पलं कोकनदं रक्तवर्णं रविप्रियम् ।

अर्थ-रक्तोत्पल, कोकनद, रक्तवर्ण, रविप्रिय, (अल्पपत्र, रक्तकमल, रक्तकम्बल, आलोहित, अलिप्रिय, कृष्णकन्द, रक्ताम्भोज, शोणपद्म, अरुणकमल, चारुनालक, अरविन्द, रक्तवारिज, रक्तसरोरुह ।

नीलकमलनामानि ।

नीलाम्बुजन्म नीलाब्जं नीलपद्मं मृदूत्पलम् ।

अर्थ-नीलाम्बुजन्म, नीलाब्ज, नीलपद्म, मृदूत्पल, (इन्दीवर, नीलपङ्कज, नीलकमल)

नीलोत्पलनामानि ।

इन्दीवरं कुवलयं कन्दोटं नीलपत्रकम् ।

अर्थ-इन्दीवर, कुवलय, कन्दोट, नीलपत्रक, (उत्पलक, कन्दोत्थ, सौगन्धिक, सुगन्ध, कुड्मलक, असितोत्पल, इंदिरावर, इन्दीवार, नीलपत्र)

संस्कृतभाषामें-कमल, पुण्डरीक, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलोत्पल ।

हिन्दीभाषामे	कमल, सफेदकमल, लालकमल, नीलकमल, नीलकमोदनी ।
बंगभाषामें	पद्म, श्वेतपद्म, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलकन्दि,
मराठीभाषामें	कमळ, पांढरेंकमळ, तांबडेंकमळ, नीळेंक ळ ।
गुजरातीभाषामें	कमल, धोलाकमल, रातनाऊघेडेते रातां मल जेना नालमां कांटा होय, नीलकमल. सुगन्धीनेताना ।
कर्णाटकीभाषामें	विलीयतावरे, केदावरे, करियताव[illegible]हुलु।
तैलङ्गीभाषामें	कालावा, नालावाकालावा, ए[illegible]लावा, तम्मि, ताम्मियुव्वु, नेल्लनामर, नल्लवुलवु ।
तामिलीभाषामें	अम्बल ।
इंग्रेजीभाषामें	लोटस् Lotus
लैटिन्भाषामें	लीलंवियम् स्पेसीयोझम्। Nelumbium S eciosum
	नलिंबीयं केरुलियम्। Nelumbinm C ruleum
	नीलवीयं प्युवेसिन्स । N.-pubesein
फारसीभाषामें	नीलुफर, गुलनीलोफर ।
अरबीभाषामें	करंबुलमा, बर्द नीलोफर ।

कमलगुणाः ।

कमलं शीतलं वर्ण्यं मधुरं कफपित्तजित् ।
तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-साधारणकमल-शीतल, देहको सुन्दर करनेवाला, मधुर तथा कफ, पित्त, तृषा, दाह, रुधिरदोष, विस्फोट विष और विसर्परोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

पद्मं कषायं मधुरं शीतं पित्तकफास्रजित् ।(रा० व०)

अर्थ-कमल-कषेला, मधुर, शीतल तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अपिच ।

कमलं शीतलं स्वादु सुगन्धि भ्रान्तितापहम् । वर्ण्यं तृप्तिकरं चैव रक्तपित्तश्रमापहम ॥ कफंपित्तंतृषां दाहं विस्फोटं रक्तदोषकम् । विसर्पं च विषं चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-कमल-शीतल, स्वादिष्ठ, सुगन्धि, भ्रांतिहारक, तापनिवा-

रक, वर्णकारक, तृप्तिजनक तथा रक्तपित्त, श्रम, कफ, पित्त, तृषा, दाह, विस्फोट, रक्तविकार, विसर्प और विषको दूर करनेवाला है।

श्वेतकमलगुणाः ।

धवलं कमलं शीतं मधुरं कफपित्तजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-सफेदकमल-शीतल, मधुर तथा कफ और पित्तनाशक है।

अन्यच्च ।

श्वेतं तु कमलं शीतं स्वादु तिक्तं कषायकम् । मधुरं वर्णकृन्नेत्र्यं [illegible]दोषतृषाहरम् ॥ कफं पित्तं श्रमं दाहं तृष्णां शोथं व्रणं ज्वरम् । सर्वविस्फोटकं चैव नाशयेदिति कीर्तितम् ॥

(रा० नि०)

अर्थ-सफेदकमल-शीतल, स्वादिष्ठ, कडवा, कषेला, मधुर, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी तथा रुधिरविकार, तृषा, कफ, पित्त, श्रम, दाह, तृष्णा, शोष, व्रण, ज्वर और सर्वप्रकारके विस्फोटकोंको हरनेवाला है।

रक्तकमलगुणाः ।

कोकनदं कटु तिक्तं मधुरं शिशिरं च रक्तदोषहरम् ।
पित्तकफवातशमनं सन्तर्पणकारणं वृष्यम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-लालकमल-चरपरा, कडवा, मधुर, शीतल, रक्तदोषनाशक, पित्त, कफ और वातको शान्ति करनेवाला, संतर्पण तथा शुक्रवर्द्धक है।

नीलकमलगुणाः।

नीलाब्जं शीतलं स्वादु सुगन्धि पित्तनाशकृत् ।
रुच्यं रसायने श्रेष्ठं केश्यं च देहदार्ढ्यकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलकमल-शीतल, स्वादिष्ठ, सुगन्धि, पित्तनाशक, रुचिकारक, रसायनकर्म्ममें उत्तम, देहको दृढ करनेवाला और बालोंको बढानेवाला है।

नीलोत्पलगुणाः ।

नीलोत्पलमतिस्वादु शीतं सुरभि सौख्यकृत् ।
पाके तु तिक्तमत्यन्तं रक्तपित्तापहारकम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलोत्पल (फा० नीलोफर)-अत्यन्त स्वादिष्ठ, शीतल, सुगन्धि, सुखकारक, पचनेमें अत्यन्त कडवा और रक्तपित्तनाशक है।

पद्मिनीनामानि ।

मूलनालदलोत्फुल्ला फलैः समुदिता पुनः ।

पद्मिनी प्रोच्यते प्राज्ञैर्विसिन्यादिश्च सा स्मृता ।

अर्थ-मूल, नाल, पत्र और बीजादिसंयुक्त, खिलेहुए कमलको पद्मिनी कहते हैं, (विसिनी, नालिनी, कुन्दिनी, मृणालिनी, कमलिनी, पुटकिनी, पंकजिनी, सरोजिनी, अरविन्दिनी, आब्जिनी, नालिकिनी, अम्भोजिनी, पुष्करिणी और जम्बालिनी यह सब पद्मिनीके पर्य्याय हैं) ।

पद्मीनीगुणाः ।

पद्मिनी मधुरा तिक्ता कषाया शिशिरापरा ।
पित्तक्रिमिशोषवान्तिभ्रांतिसन्तापशान्तिकृत् ॥ (रा.नि.)

अर्थ-कमलिनी-मधुर, कडवी, कषेली, शीतल तथा पित्त, कृमि, शोष, वांति, भ्रांति और संतापकी शांति करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पद्मिनी शीतला गुर्वी मधुरा लवणा च सा ।
पित्तासृक्कफनुद्रूक्षा वातविष्टम्भकारिणी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कमलिनी-शीतल, भारी, मधुर, लवणरसयुक्त रक्तपित्तनिवारक, कफनाशक, रूखी और वातविष्टम्भकारक है ।

अपिच ।

पद्मिनी मधुरा शीता तिक्ता च तुवरा गुरुः ।वातस्तम्भकरी रूक्षा स्तनदार्ढ्यकरी मता ॥ कफं पित्तं रक्तरुजं विषं शोषं वमिं कृमीन्।सन्तापं मूत्रकृच्छ्रं च नाशयेदिति कीर्तिता। (नि०र०)

अर्थ-कमलिनी-मधुर; शीतल, कडवी, कषेली, भारी, वातस्तम्भकारक, रूखी, स्तनोंको दृढ करनेवाली तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, विष, शोष, वमन, कृमि, संताप और मूत्रकृच्छ्ररोगको हरनेवाली है ।

पद्मसंवर्त्तिकादिनामानि ।

संवात्तका नवदलं बीजकोशस्तु कर्णिका ।
किञ्जल्कः केसरः प्रोक्तो मकरन्दो रसः स्मृतः ॥
पद्मनालं मृणालं स्यात्तथा बिसमिति स्मृतम् ।

अर्थ-कमलके नये पत्तोंको संवर्त्तिका, बीजकोश (कमलगट्टेका घर)को कर्णिका, केसर (जीरा)को किञ्जल्क रसको मकरन्द और नालको मृणालकंद तथा बिस (कमलकंद) कंद कहते हैं ।

संवर्त्तिकागुणाः ।

संवर्त्तिका हिमा तिक्ता कषाया दाहतृट्प्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्रगुदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ-कमलके कोमलपत्ते-शीतल, कडवे, कषेले तथा दाह, तृषा, मूत्रकृच्छ्र गुदरोग और रक्तपित्तको दूर करनेवाले हैं ।

कर्णिकागुणाः ।

पद्मस्य कर्णिका तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ।
आस्यवैशद्यकृल्लघ्वी तृष्णास्रकफपित्तनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कर्णिका (बीजकोष)-कडवा, कषेला, मधुर, शीतल, हलका तथा मुखकी विरसता, तृषा, रक्तविकार, कफ और पित्तका नाश करे है ।

पद्मकेसरनामानि ।

किञ्जल्कं मकरन्दं च केसरं पद्मकेसरम् ।

अर्थ-किञ्जल्क, मकरंद, केसर, पद्मकेसर (किञ्ज, पीतपराग, तुङ्ग, चाम्पेयक, नागकेशर, चाम्पेय, आपीत, काञ्चन)

पद्मकेशर गुणाः ।

किञ्जल्कः शीतलो वृष्यः कषायो ग्राहिकोऽपि सः ।
कफपित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित् ॥

अर्थ-कमलकेसर-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कषेली, मलरोधक तथा कफ, पित्त, तृषा, दाह, रक्तार्श (रुधिरकी बवासिर), विष और सूजनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

किञ्जल्को मधुरो रूक्षः कटुरास्यव्रणापहः ।
शिशिरो रुच्यपित्तघ्नस्तृष्णादाहविषापहः॥ (रा०नि०)

अर्थ-कमलकेसर-मधुर, रूखी, चरपरी, मुखरोग तथा व्रणरोगनाशक है और शीतल, रुचिकारक, पित्तनाशक, तृषा, दाह और विषको दूर करनेवाली है ।

अपिच ।

किञ्जल्कःशीतलो ग्राही कान्तिदस्तुवरो मधुः । कटू रूक्षो रुचिकरो गर्भस्थैर्य्यकरो मतः॥ व्रणं पित्तं तृषां दाहं मुखरोगक्ष-

यं कफम्।विषं रक्तार्शसं शोषं ज्वरं वातं च नाशयेत्॥(.र.)

अर्थ-कमलकेसर-शीतल, मलरोधक,कान्तिजनक,कषेली, मधुर, चरपरी, रुचिकारी गर्भको स्थिर करनेवाली तथा व्रण, पित्त, तृषा, दाह, मुखरोग, क्षय, कफ, विष, रक्तार्श, शोष, ज्वर और वा का नाश करनेवाली है ।

पद्मबीजनामानि ।

पद्मबीज तु पद्माक्षं गालोड्यं पद्मकर्कटी ।

अर्थ-पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य, पद्मकर्कटी (कन्द डा, क्रौञ्चादनी, क्रौञ्चा, श्यामा) ।

संस्कृतभाषामें	पद्मबीज ।
हिन्दीभाषामें	कमलगट्टा ।
वंगभाषामें	पद्मवीचि ।
मराठीभाषामें	कमलाक्ष ।
तैलिङ्गीभाषामें	तामरकाडा ।
गुजरातीभाषामें	कमलकाकडी ।
कर्णाटकीभाषामें	पद्माक्ष ।
अरबीभाषामें	वालकेकुबति ।

अस्य गुणाः ।

पद्मबीजं हिमं स्वादु कषायं तिक्तकं गुरु ।
विष्टम्भि वृष्यं रूक्षं च गर्भस्य स्थापकं पर ॥
कफवातहरं बल्यं ग्राहि पित्तास्रदाहनुत् । (०प्र०)

अर्थ-कमलगट्टा-शीतल,स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, रूखा, गर्भस्थापक, कफवातनाशक,बलकारक, मलरोधक तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करनेवाला ह ।

अपिच ।

कमलाक्षः स्वादु रुच्यः पाचनः कटुकः स्मृतः।शीतलस्तुवरस्तिक्तो गुरुर्विष्टम्भकारकः ॥ गर्भस्थितिकरो रूक्षो वृष्यो वातकरो मतः । कफक्लेखनो ग्राही बल्यः पित्तविनाशकः॥ रक्तरुग्वमिदाहास्रपित्तनाशकरो मतः । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-कमलगट्टा-स्वादिष्ठ, रुचिकारक, पाचक, चरपरा, शीतल, कषेला, कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, गर्भस्थापक, रूखा, वीर्य्यवर्द्धक, वातवर्द्धक कफकारक, लेखन, मलरोधक, बलकारक तथा पित्त, रक्तविकार, वमन, दाह और रक्तपित्तका नाश करनेवाला है। पूर्वदेशमें कमलगट्टेकी गिरी (मींग) को भूनकर मखाना बनाते हैं। मखानेके गुण आगे परिशिष्टवर्गमें लिखे हैं।

मकरन्द-पद्ममधुगुणाः।

[illegible]पामेन्दहृतः शीतो मकरन्दोतिबृंहणः।
त्रिदोषशमनः सर्वनेत्रामयनिषूदनः॥ (आ० सं०)

अर्थ-कमलका मधु-शीतल अत्यन्तपुष्टिकारक, त्रिदोषनाशक और सब प्रकारके नेत्ररोगोंको दूर करनेवाला है।

यवक्षारनामानि।

कमलिन्याश्छदः शीतस्तुवरो मधुरो मतः।
तिक्तः पाकेऽतिकटुको लघुर्वै ग्राहको मतः॥
वातकृत्कफपित्तानां नाशको मुनिभि स्मृतः॥ (नि. र.)

अर्थ-कमलिनीके पत्ते-शातल, कषेले, मधुर, कडवे, पचनेमें चरपरे, हलके, मलरोधक, वातकारक तथा कफपित्तनाशक हैं।

पद्मनालनामानि।

मृणालं पद्मनालं च कोमलं बिसिनी बिसम्।

अर्थ-मृणाल, पद्मनाल, कोमल, बिसिनी, बिस (बिस, कोरक, कोमलक, तन्तुल, मृणाली, मृणालिनी, पद्मतन्तु, नलिनीरुह तन्तुल)

संस्कृतभाषामें	मृणाल, पद्मनाल।
हिन्दीभाषामें	कमलकी नाल, कमलकी दंडी।
वंगभाषामें	पद्मेरडांटा।
मराठीभाषामें	कमळाचा देंठ।
कर्णाटकीभाषामें	कमलदनूलु।
तैलिङ्गीभाषामें	तामरतुंड, तामरतोंगे।

मृणालगुणाः।

मृणालं शिशिरं तिक्तं कषायं पित्तदाहजित्।
मूत्रकृच्छ्रविकारघ्नं रक्तवान्तिहरं परम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-कमलकी नाल-शीतल, कडवी, कषेली तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरविकार और वमनको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

मृणालं शीतलं वृष्यं पित्तदाहास्रजिद्गुरु।
दुर्जरं स्वादुपाकं च स्तन्यानिलकफप्रदम्॥
संग्राहि मधुरं रूक्षं शालूकमपि तद्गुणम्।(भावप्र०

अर्थ-कमलकी नाल-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, [illegible]हहारक, रक्तरोगनाशक, भारी, दुर्जर, पचनेमें स्वादिष्ठ, स[illegible] दूध उत्पन्न करनेवाली, वातवर्द्धक, कफकारक, मलरोधक, [illegible]ु और रूखी है इसीकी समान भसींडेके गुण जानने।

पद्मकन्दनामानि।

पद्मादिकन्दः शालूकं करहाटश्च कथ्यते।
मृणालमूलं भिस्साण्डं जालालूकं च कथ्यते।

अर्थ-कमलादिकके कन्दको शालूक, करहाट (पद्ममूल, कटाह्वय, शालूक और जालालूक) कहते ह। मृणालकी मूलको भिस्साण्ड, जलालूक, (पंकशूरण, शालूक, शालु और गोपभद्र) कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	पद्मकन्द, भिस्साण्ड।
हिन्दीभाषामें	कमलकन्द, भसींडा।
वङ्गभाषामें	पद्मेर गेंडों, शालुक।
तैलिंगीभाषामें	जाजिकाय।

शालूकगुणाः।

शालूकं कटु विष्टम्भि रूक्षं रुच्यं कफापहम्।
कषायकासपित्तघ्नं तृष्णादाहनिवारणम्।(रा० नि०)

अर्थ-शालूक (कमलकंद, भसींडा)-कटु, विष्टम्भकारक, रूक्ष, रुचिकारक, कफनाशक, कषेला तथा खाँसी, पित्त, तृषा और दाहनिवारक है।

अपिच।

शालूकः कटुकश्चोक्तस्तुवरो मधुरो गुरुः। मलस्तम्भकरो रूक्षो नेत्र्यो वृष्यश्च शीतलः॥ दुर्ज्जरो ग्राहको रक्तपित्तं दाहं तृषां कफम्।पित्तवातं च गुल्मं च पित्तं कासं कृमींस्तथा॥ मुखरोगं रक्तदोषं नाशयेदिति च स्मृतः। (नि० र०)

अर्थ-शालूक (कमलकन्द, भसीडा)-कटु, कषेला, मधुर, भारी, मलस्तम्भक, रूखा, नेत्राको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, दुर्जर, मलरोधक तथा रक्तपित्त, दाह, तृषा, कफ, पित्तवात, गुल्म, पित्त, खाँसी, कृमि, मुखरोग और रुधिरविकारको दूर करनेवाला है।

विवरण। कमल-लाल, नील और सफेद इन भेदोंसे तीन प्रकारके होते हैं, कमल विशेषकरके गम्भीर और निर्मल नीरवाले स्वच्छ सरोवरों और तालोंमें उत्पन्न होतेहैं पत्ते बडे २ गोल और चिकने जिनपर जलका बिन्दु न ठहरे इसप्रकारके अद्भुत और शोभायमान होते हैं उन पत्तोंको पुरैनके पातभी कहते हैं, उनके नीचे जो डण्डी होती है उसको मृणाल अर्थात् कमलकी नाल कहते हैं, कमलके फूलोंमें जो पीला २ जीरा होता है उसको कमल केशर कहते हैं, कमलके फूलोंमें जो स्वरस रस लगा होता है उसको कमलकी रज और मकरन्द कहते हैं, कमलमें जो फल लगते हैं उसको पद्मकोष कहते हैं उनमें जो बीज निकलते हैं, उनका नाम कमलगट्टे हैं कमलकी जडको भसीडि कहते हैं।

कुमुदनामानि।

कैरवं चन्द्रकान्तं च गर्दभं कुमुदं कुमुद्

अर्थ-कैरव, चन्द्रकान्त, गर्दभ, कुमुद, कुमुद् (सौगन्धिक, कन्दोत, कच्छ, कुवेल, गन्धसोम, सितोत्पल, धवलोत्पल, श्वेतोत्पल, कह्लार, शीतलक, शशिकान्त, चन्द्रिकाम्बुज, इन्दुकमल, कुवलय)

संस्कृतभाषामें	कुमुद।
हिन्दीभाषामें	कोई, कमोदनी, वघोला, बबूलों।
वंगलाभाषामें	हेलाफुल, नालिफुल, श्वेतशुद्धि।
मराठीभाषामें	पांढरें उत्पल।
गुजरातीभाषामें	पोयणा।
कर्णाटकीभाषामें	ावलियेते इटिलु।

कुमुदगुणाः।

कुमुदं शीतलं स्वादु पाके तिक्तं कफापहम्।
रक्तदोषहरं दाहश्रमपित्तप्रशान्तिकृत् ॥(रा० नि०)

अर्थ-कुमुद (कमोदनी) शीतल-स्वादिष्ठ, पचनेमें कडवी, कफनाशक तथा रुधिरविकार, दाह, श्रम और पित्तको शान्ति करे है।

अन्यच्च।

कुमुदं पिच्छिलं स्निग्धं मधुरं ह्लादि शीतलम् ।

अर्थ-कुमुद-पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, शीतल और आनन्दजनक है।

कुमुदबीजगुणाः ।

भवेत्कुमुद्वतीबीजं स्वादु रूक्षं हिमं गुरु।

अर्थ-कुमुदके बीज अर्थात् घंघोलके दाने-स्वादिष्ठ, रूखे, शीतल और भारी हैं।

उत्पलनामानि ।

अनुष्णं चोत्पलं चैव रात्रिपुष्पं जलाह्वयम् ।
हिमाब्जं शीतजलजं निशाफुल्लं च सप्तधा ॥

अर्थ-अनुष्ण, उत्पल, रात्रिपुष्प, जलाह्वय, हिमाब्ज, शीतजलज, निशाफुल्ल (पुष्प) (कुवल, कुवलय कुवेल)।

उत्पलगुणाः।

उत्पलं शिशिरं स्वादु पित्तरक्तार्त्तिदोषनुत् ।
दाहश्रमवमिभ्रान्तिकृमिज्वरहरं परम् ॥

अर्थ-उत्पल-शीतल, स्वादिष्ठ तथा पित्त, रक्तविकार, दाह, श्रम, वान्ति, भ्रान्ति, कृमि और ज्वरको शान्ति करे हैं।

रक्तकुमुदनामानि।

हल्लकं रक्तकुमुदं सोमाख्यं रक्तकैरवम् ।

अर्थ-हल्लक, रक्तकुमुद, सोमाख्य, रक्तकैरव (रक्तगन्धक, रक्तकल्हार, रक्तसौगन्धिक, रोचना, अलगन्ध)

उत्पलिनीनामानि।

उत्पलिनी कैरविणी कुमुद्वती कुमुदिनी च चन्द्रेष्टा ।
कुवलयिनीन्दीवरिणी नीलोत्पलिनी च विज्ञेया ॥

अर्थ-उत्पलिनी, कैरविणी कुमुद्वती, कुमुदिनी, चन्द्रेष्टा, कुवलयिनी, इन्दीवरिणी, नीलोत्पलिनी।

उत्पलिनीगुणाः।

उत्पलिनी हिमा तिक्ता रक्तामयहारिणी च पित्तघ्नी।
तापकफकासतृष्णाश्रमवमिशमनी च विज्ञेया ॥ (रा. नि.)

अर्थ-कुमुदिनी-उत्पालिनी-शीतल, कडवी तथा रक्तरोग, पित्त, ताप, कफ, खांसी, तृषा, श्रम और वमनको दूर करनेवाली है।

विवरण। कुमुदिनी कमलके तुल्य तीन प्रकारके होते हैं लाल, नीले और सफेद फूलोंके भेदसे हो जाते हैं, कुमुदके फूल कमलके फूलोंसे छोटे होते हैं और रात्रिको चन्द्रमाके उदय होनेपर खिलते हैं और सूर्यका प्रकाश होतेही बन्द हो जाते हैं, इसके पत्ते फूलके ऊपरही लगे होते हैं, उसमें जावित्रीके समान कोष होता है, उस को[illegible]ल होजाता है, कच्ची अवस्थामें तो उसके भीतर लाल दाने [illegible]ते हैं और पक जानेपर वह दाने काले पड जातेहैं उस फलको घंघोल कहते हैं, उसकी जडको चाच अथवा सालक कहते हैं।

स्थलपद्मिनीनामानि।

पद्मचारिण्यतिचराऽव्यथा पद्मा च सारदा।

अर्थ-पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा, सारदा, (चारिटी, पद्माह्वा, सुगन्धमूला, अम्बुरुहा, लक्ष्मी, श्रेष्ठा, सुपुष्करा, रम्या, पद्मावती, स्थलरुहा, पुष्करिणी, पुष्करपर्णिका, पुष्करनाडी)।

संस्कृतभाषामें	स्थलपद्मिनी।
हिन्दीभाषामें	स्थलकमलिनी।
वंगभाषामें	स्थलपद्म।
मराठीभाषामें	स्थलकमलिनी।
कर्णाटकभाषामें	कलुदावरे।
लैटिन्भाषामें	आयोनीडयं फ्रुटिकोसं। Ionidiuam Sufflruticosum

अस्य गुणाः।

शीता तिक्ता च तुवरा स्तनदाढर्यकरी मता। लघ्वी कटी च विज्ञेया कफपित्तस्य नाशिनी॥ मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रवातशूलातिसारहा। वान्तिदाहं मोहमेहौ रक्तरुग्श्वासहा मता॥ अपस्मारं विषं कासं नाशयेत्पद्मचारिणी। (नि० र०)

अर्थ-पद्मचारिणी-स्थलकमलिनी- शीतल, कडवी, कषेली, स्तनोंको दृढ करनेवाली, हलकी, चरपरी तथा कफ, पित्त, मूत्राश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, वात, शूल, अतिसार, वमन, दाह, मोह, प्रमेह, रक्तविकार, श्वास, अपस्मार, विष और खांसीको दूर करनेवालीहै।

विवरण । स्थलकमलभी कमलकेही समान होताहै, परन्तु इसमें विशेषता यह है कि,पृथ्वीमें उत्पन्न होताहै,आकृति तो सब कमलकीसीही होतीहै किन्तु पत्ते और फूल,फल सब कमलसे छोटे होते हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे पुष्पवर्गः ॥ ४ ॥

अथ फलवर्गः ।

आम्रनामानि ।

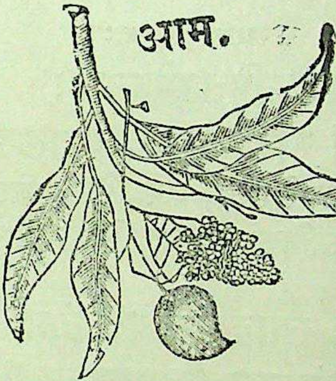

आम्रः प्रोक्तो रसालश्च सहकारोऽतिसौरभः ।
कामाङ्गो मधुदूतश्च माकन्दः पिकवल्लभः ॥

अर्थ–आम्र,रसाल,सहकार,अतिसौरभ,कामाङ्ग,मधुदूत, माकन्द, पिकवल्लभ, (चूतक, अम्र,फलश्रेष्ठ,फलोत्पत्ति,मृषालक,चूत,षट्पदातिथि,वसन्तद्रु,पिकप्रिय,स्त्रीप्रिय,गन्धबन्धु,अलिप्रिय, शरेष्ट, मदिरासख,पिकबन्धु,केशवायुध,कोषी,परपुष्टमहोत्सव,कामशर,कामवल्लभ,कामांग,कीरेष्ट,माधवद्रुम,भृङ्गाभीष्ट, सीधुरस,माधूली, कोकिलोत्सव,वसन्तदूत,मोदाख्य,मन्मथालय,मध्वावास,सुमदन,पिकराग नृपप्रिय,प्रियम्बु, कोकिलावास,वसन्तपादप,भ्रमरप्रिय,मनोज्ञ,मन्मथावास, शुकप्रिय, वनोत्सव, मदाढ्य,मञ्जरी) ।

संस्कृतभाषामें	आम्र ।
हिन्दीभाषामें	आम ।

वंगभाषामें	आम ।
मराठीभाषामें	आंबा ।
गुजरातीभाषामें	आंबो ।
कर्णाटकीभाषामें	माविनफल ।
तैलिङ्गीभाषामें	माविडि ।
इ[illegible]लाभाषामें	मङ्गोट्री । Mangotree
लैटिनभाषामें	मँगीफराइडिका । Mangifera Indica
फारसीभाषामें	आंबा ।
अरबीभाषामें	अम्बज ।

आम्रपुष्पगुणाः ।

आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत् ।
असृग्दुष्टिहरं शीतं रुचिकृद्ग्राहि वातलम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-आमका मौर-अतिसार, कफ, पित्त, प्रमेह और दुष्टरक्तनाशक है । तथा शितल, रुचिकारक, मलरोधक और वातकारक है ।

अन्यच्च ।

आम्रपुष्पं शीतलं स्याद्वातलं ग्राहकं मतम् ।
अग्निदीप्तिकरं रुच्यं कफपित्तप्रमेहनुत् ॥
प्रदरं चातिसारं च नाशयेदिति मे मतम् ।(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-आमका मौर-शीतल, वातकारक, मलरोधक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारी तथा कफ, पित्त, प्रमेह प्रदर और अतिसारानिवारक है ।

बालतरुणाम्रगुणाः ।

बालाम्रकं कषायाम्लं रुच्यं मारुतपित्तकृत् ।
तरुणं तु तदत्यम्लं रूक्षं दोषत्रयास्रकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बालाम्र अर्थात कच्ची अँबिया-कषेली, खट्टीरुचिकारक तथा वात और पित्तकरक है, विनापकाहुआ बडा आम-अत्यन्त खट्टा, रूखा तथा त्रिदोष और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

बालाम्रकं रक्तपित्तकरं मध्यं तु पित्तलम् ।(रा. व.)

अर्थ-कच्ची अँबिया-रक्तपित्तकारक और तरुण आम पित्तजनकहै।

अपिच ।

बालाम्रस्तुवरश्चोष्णः सुगन्धिश्चाम्लकः स्मृतः । क्षारस्य योगाद्रुचिदो ग्राही रूक्षश्च कान्तिदः॥ पित्तवातकफास्रदोषांश्चैव करोति सः । कण्ठरुग्वातमेहं च योनिदोषव्रणं तथा ॥ अतिसारं प्रमेहं च नाशयेदिति कीर्तितः । (नि० र०)

अर्थ-कच्ची अँबिया-कषेली, गरम, सुगन्धि, खट्टी, किसी क्षारके साथ होनेसे रुचिकारी, मलरोधक, रूखी तथा कान्ति, पित्त, वात, कफ और रुधिरके दोषोंको उत्पन्न करनेवाली और कण्ठरोग, वात, प्रमेह, योनिदोष, व्रण, अतिसार तथा प्रमेहको हरनेवाली है ।

आम्रपेशी गुणाः ।

आम्रमामं त्वचाहीनमातपेतिविशोषितम् ।
अम्लं स्वादु कषायं स्याद्भेदनं कफवातजित्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चे आमके ऊपरका छिलका छील फिर उसके टुकडे करके धूपमें सुखा देवे उसको अमचूर कहतेहैं;वह अमचूर-खट्टा, स्वादिष्ठ, कषेला, भेदक और कफवातको हरनेवाला है ।

पक्वाम्रगुणाः ।

पक्वं तु मधुरं वृष्यं स्निग्धं बलसुखप्रदम् ।
गुरु वातहरं हृद्यं वर्ण्यं शीतमपित्तलम् ॥
कषायानुरसं वह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् । (भा० प्र०)

अर्थ-पकाहुआ आम-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, बलवर्द्धक, सुखदायक, भारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, वर्णको सुंदर करनेवाला, शीतल, अपित्तल अर्थात् पित्तको नहीं करनेवाला, किञ्चित् कषेला तथा अग्नि, कफ और शुक्रवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

पक्कं त्वाम्रफलं सुगन्धि मधुरं स्निग्धं परं बृंहणं रुच्यं वातहरं च हृद्यमलघु ग्राहि प्रमेहप्रणुत्। शीतं वर्ण्यमपित्तलं व्रणहरं श्लेष्मास्रारोगापहं यद्दृष्ट्वा मन उल्लसत्यपि मुनेः । किं वर्णनं भूतले ॥

अर्थ-पकाहुआ आम-सुगन्धि,मधुर, स्निग्ध, अत्यन्त पुष्टिकारक,

रुचिकारी, वातविनाशक, हृद्यको हितकारी, भारी, मलरोधक, प्रमेहनाशक, शीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, अपित्तल तथा व्रण, श्लेष्म और रुधिरके रोगोंको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

पक्वाम्रो मधुरः शुक्रवर्द्धकः पौष्टिकः स्मृतः ।
गुरुः कान्तितृप्तिकरः किञ्चिदम्लो रुचिप्रदः ॥
द्यो मांसबलानां च वर्द्धकः कफकारकः ।
तुवरश्च तृषावातश्रमाणां नाशकः स्मृतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-पका आ आम-मधुर, शुक्रवर्द्धक, पुष्टिकारक, भारी, कान्तिजनक, तिकारक, किञ्चित् खट्टा, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा मांस, ब और कफवर्द्धक है, कषेला और तृषा, वात तथा श्रमनाशक है ।

वृक्षपक्वाम्रगुणाः ।

देव वृक्षसंपक्वं गुरु वातहरं परम् ।
धुराम्लरसं किंचिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ही वृक्षपै पकाहुवा आम-भारी, वातनाशक, मधुर, किञ्चित् खट्टा और पित्तको कुपित करनेवाला है ।

कृत्रिमपक्वाम्रगुणाः ।

आम्रं कृत्रिमपक्वं च तद्भवेत्पित्तनाशनम् । रसस्याम्लस्य हीनं तु माधुर्य्याच्च विशेषतः ॥ उषितं तत्परं रुच्यं बलवीर्य्यकरं लघु। शीतलं शीघ्रपाकि स्याद्वातपित्तहरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालमें पकायाहुआ आम-पित्तनाशक, अम्लरसहीन और मधुररसपूरित है । वही वासित-परम रुचिकारक, बलवर्द्धक, वीर्य्यजनक, हलका, शीतल, शीघ्रपाकी, वातपित्तनाशक और कुछेक दस्तावर है ।

आम्ररसगुणाः ।

तद्रसो गालितो बल्यो गुरुर्वातहरः सरः ।
अहृद्यस्तर्पणोऽतीव बृंहणः कफवर्द्धनः ॥

अर्थ-आमका निचोडाहुआ रस-बलकारक, भारी, वातविनाशक, कुछेक दस्तावर, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, अतीवबृंहण और कफवर्द्धक है ।

सैव दुग्धेन संयुक्तः कान्तिदः स्वाददः स्मृतः ।
वृष्यश्चान्ये गुणाश्चोक्ता रसेन सदृशाः स्मृताः ॥ (नि०र०)

अर्थ-वही रस दूधके साथ कान्तिजनक, स्वाददायक और वीर्य्यवर्द्धक है और गुण रसकी समान जानने ।

चोषिताम्रगुणाः ।

चोषिताम्रो बलरुचिर्वीर्य्यवृद्धिकरः परः ।
लघुता शीतता शीघ्रपाकता वातपित्तनुत् ॥
मलबन्धकरश्चैव पूर्वैर्वैद्यैरुदीरितः ।

अर्थ-चूसकर खायाहुवा आम-बल, रुचि और वीर्यवर्द्धक है तथा लघुता, शीतता, शीघ्रपाकता और वातपित्तनाशक है तथा मलबन्धक है ।

शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणाः ।

पक्वः स्याच्छस्त्रछिन्नाम्रो जाड्यमाधुर्यशीतकृत् ।
रुचिकृच्चिरपाकश्च धातुवृद्धिं करोति सः ॥
बलकर्त्ता वातपित्तनाशनः परिकीर्तितः । (नि०र०)

अर्थ-शस्त्र अर्थात् चक्कूसे काटके खाया हुआ आम-जडता, मधुरता, शीतता, रुचि, चिरपाक, धातुवृद्धि और बलकारक है तथा वातपित्तनाशक है ।

आम्रावर्त्त ।

पक्वस्य सहकारस्य पटे विस्तारितो रसः ।
घर्मशुष्को मुहुर्दत्त आम्रावर्त्त इति स्मृतः ॥

अर्थ-पकेहुये आमके रसको वस्त्रपर बिछाकर धूपमें सुखालेवे उसको आम्रावर्त्त (आँबट) कहतेहैं ।

आम्रावर्त्तगुणाः ।

आम्रावर्त्तस्तृषाच्छर्दिवातपित्तहरः सरः ।
रुच्यः सूर्य्यांशुभिः पाकाल्लघुश्च स हि कीर्तितः ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-आम्रावर्त्त (आँबट)-तृषा, वमन और वातपित्तनिवारक है, कुछेक दस्तावर, रुचिकारक यह सूर्यकी किरणोंसे पाक होनेसे हलका है ।

आम्रखण्डगुणाः ।

तस्य खण्डं गुरुपरं रोचनं चिरपाकि च ।

मधुरं बृंहणं बल्यं शीतलं वातनाशनम् ॥

अर्थ-आमका टुकडा-भारी, रुचिकारी, देरसे पचनेवाला, मधुर, बृंहण, बलकारक, शीतल और वातविनाशक है।

अतिशयाम्रभक्षणगुणाः।

मन्दानलत्वं विषमज्वरं च रक्तामयं बद्धगुदोदरं च। आम्रातियोगे नयनामयं वा करोति तस्मादति तानि नाद्यात् ॥एतदम्लाम्रविषयं मधुराम्लपरं न तु। मधुरस्य परं नेत्रहितत्वाद्या गुणाधिकाः ॥ शुण्ठ्यम्भसोऽनुपानं स्यादाम्राणामतिभक्षणे। जारकं वा प्रयोक्तव्यं सह सौवर्च्चलेन च ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अधिक आमका खाना मंदाग्नि, विषमज्वर, रुधिरविकार, बद्धगुदोदर और नेत्ररोगको उत्पन्न करे है, इसकारण अधिक आमका खाना वर्जित है, यह जितने दोष आमके कहे हैं सो सब खट्टे आमके जानने; परन्तु मीठे आमके भक्षण करनेसे यह दोष नहीं होते हैं, मधुर आम तो अधिकतर नेत्रोंको हितकारी और अधिक गुणवाला है। अधिक आम खानेके पीछे सोंठका जल पीवे तथा जीरा कालानोन खाना उचित है।

मधुयुक्ताम्रगुणाः।

मधुना तत्क्षयप्लीहवातश्लेष्महरं परम्।

अर्थ-मधुयुक्त आम-क्षय (राजयक्ष्मा), प्लीहा, वात और श्लेष्मनाशक है।

घृतयुक्ताम्रगुणाः।

सघृतं वातपित्तघ्नं दीपनं बलवर्णकृत्। (राजवल्लभ०)

अर्थ-घृतयुक्त आम-वातपित्तनाशक, दीपन, बलवर्द्धक और वर्णकारक है।

दुग्धयुक्ताम्रगुणाः।

वातपित्तहरं रुच्यं बृंहणं बलवर्द्धनम्।
वृष्यं वर्णकरं स्वादु दुग्धाम्रं गुरु शीतलम्॥(भा०प्र०)

अर्थ-दुग्धयुक्त आम्र-वातपित्तहारक, रुचिकारक, बृंहण, बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादिष्ठ, भारी और शीतल है।

आम्रास्थिगुणाः।

आम्रबीजं तु मधुरं किञ्चिदम्लं कषायकम्।
वान्त्यतीसारहृद्दाहनाशनं च बुधैर्मतम् ॥

अर्थ-आमकी गुठली-मधुर, किञ्चित् अम्ल, कषेली तथा वमन, अतिसार और हृदयकी दाहको दूर करनेवाली है।

आम्रास्थितैलगुणाः।

आम्रतैलं तु तुवरं स्वादु रूक्षं च तिक्तकम्।
सुगन्धि मुखरोगस्य नाशनं कफवातनुत्। (नि० र०)

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ, रूखा, कडवा, सुगन्धि तथा मुखरोग, कफ और वातनाशक है।

आम्रत्वचादिगुणाः।

आम्रत्वचा कषाया च मूलं सौगन्धि तादृशम्।
रुच्यं संग्राहि शिशिरं पुष्पं तु रुचिदीपनम्॥

अर्थ-आमकी छाल-कषेली, आमकी जड-कषेली, सुगन्धित, रुचिकारक, मलरोधक और शीतल है। आमका फूल-रुचिको दीपन करे है।

आम्रान्तस्त्वग्गुणाः।

आम्रान्तस्त्वग्ग्राहिणी तु तुवरा दाहकारिणी।
पित्तमेहकफानां च नाशिनी योनिशुद्धिकृत्॥

अर्थ-आमकी अन्तरकी-छाल-मलरोधक, कषेली, दाहकारक तथा पित्त, प्रमेह और कफनाशक है। तथा योनिको शुद्ध करेहै।

आम्रमूलगुणाः।

आम्रमूलं तु तुवरं ग्राहि शीतं रुचिप्रदम्।
सुगन्धि कफवातानां नाशनं परिकीर्त्तितम्॥

अर्थ-आमकी जड-कषेली, मलरोधक, शीतल, रुचिदायक, सुगन्धि तथा कफ और वातविनाशक है।

आम्रपल्लवगुणाः।

आम्रच्छदस्तु तुवरो ग्राहको रुचिकारकः।
वातपित्तकफान्हन्तीत्येवं च परिकीर्त्तितम्॥(नि०र०)

अर्थ-आमके कोमल पत्ते-कषेले, मलरोधक, रुचिकारक तथा वात पित्त और कफको हरनेवाले हैं।

राजाम्रनामानि।

राजाम्रोन्यो राजफलः स्मराम्रः कोकिलोत्सवः।

मधुरः कोकिलानन्दः कामेष्टो नृपवल्लभः ॥

अर्थ-राजाम्र, राजफल, स्मराम्र, कोकिलोत्सव, मधुर, कोकिलानन्द, कामेष्ट, नृपवल्लभ, (टंक, आम्रात, कामाह्व, राजपुत्रक)

बालं राजफलं कफास्रपवनं श्वासातिपित्तप्रदं मध्यं तादृशमेव दोषबहुलं भूयः कषायाम्लकम् । पक्वं चेन्मधुरं त्रिदोषशमनं तृष्णाविदाहश्रमश्वासारोचकमोचकं गुरु हिमं वृष्यातिभूपाह्वयम् ॥

अर्थ-कच्चा कलमी आम-कफ, वातरक्त, श्वास और अत्यन्त पित्तजनक है। तरुण कलमी आमके गुण कच्चे कलमी आमकी समान हैं। अनेक दोषकारक, कषेला और खट्टा है। पक्का कलमी आम मधुर, त्रिदोषनिवारक तथा तृष्णा, दाह, श्रम, श्वास और अरुचिनाशक है, भारी, शीतल और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक है।

विवरण। आमके वृक्ष प्रायः भारतवर्षके समस्त प्रदेशोंमें अधिकतासे होते हैं, अर्थात् प्रत्येक नगरके निकट आमके बाग होते हैं। आमकी अनेक जाति हैं, किन्तु आकृति सबकी एकसी होती है। पत्ते जामुनकी समान कुछ विशेष लम्बे होते हैं। फूल छोटा छोटा मौर आताहै, वसन्तऋतुके प्रारम्भमें फूल आने लगता है। और वसन्तऋतुके अन्तमें चनेकी बराबर फल आते हैं, पश्चात् बढकर १०-१० तोले तकके होजाते हैं। अपक्व अवस्थामें हरा रंग होता है और पकनेपर पीला पडजाता है और कोई हरेही रहते हैं। फलके भीतर गुठली निकलती है उसके भीतर मींग निकलती है उसको बिजली कहते हैं।

दूसरे कलमी, मालदये, विलायती, अनेकप्रकारके दूसरे द्वीपोंसे आये हुये आम हैं। वह इनकी अपेक्षा अधिक बडे और विशेष मधुर होते हैं। परन्तु अनेकप्रकारके कार्य्योंमें यह देशीही आम श्रेष्ठ गिनेजाते हैं।

आम्रातकनामानि।

आम्रातकः पीतनकः कपिचूतोम्लवाटकः ।
वर्षपाकी कपिचूडा तनुक्षीरी कपिप्रियः ॥

अर्थ-आम्रातक, पीतनक, कपिचूत, अम्लवाटक, वर्षपाकी, कपिचूड, तनुक्षीरी, कपिप्रिय (पीतन, कपीतन, मधुराम्लक, आम्रवाटिक, भृङ्गी-

फल रसाढ्य, तनुक्षीर, अम्बरातक,अम्बरीष,आम्रात,अम्रात,अम्रातक, अध्वगभोग्य, मर्कटाम्र और तुङ्गी)

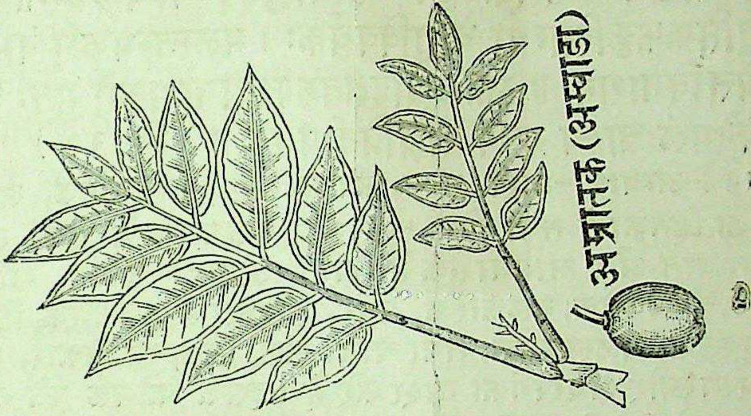

संस्कृतभाषामें	आम्रातक ।
हिन्दीभाषामें	अंबाडा ।
वंगभाषामें	आमडा ।
मराठीभाषामें	अंबाडा ।
कर्णाटकीभाषामें	आंबोडेयकायि ।
तैलिङ्गीभाषामें	आमाटम् ।
गुजरातिभाषामें	अंभेडा ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पोन्डिआस् मिनट् । Spondias minute
लैटिन्भाषामें	स्पोन्डिआस मैंगिफरा । Spondias mangifera

अस्य फलगुणाः ।

आम्रातमम्लं वातघ्नं गुरूष्णं रुचिकृत्सरम्॥पक्वं तु तुवरं स्वादु रसे पाके हिमं स्मृतम् ॥ तर्पणं श्लेष्मलं स्निग्धं वृष्यं विष्टम्भि बृंहणम्। गुरु बल्यं मरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कच्चा अम्बाडा-खट्टा, वातनाशक,भारी,गरम,रुचिकारक और सारक है। पक्का अम्बाडा,-कषेला, स्वादु, पाकमेंभी स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, कफकारक, स्निग्ध,वीर्य्यवर्द्धक,विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, भारी, बलकारी तथा वात, पित्त, क्षत,दाह, क्षय और रुधिरविकारको दूर करे है।

अन्यच्च ।

आम्रातको गुरुश्चोष्णस्तुवरोम्लो रुचिप्रदः । सरः कंठ्यः पि-

त्तकफरक्तकारी च संस्मृतः ॥ आमवातस्य वातस्य चामस्य च विनाशनः । स पक्वस्तुवरः शीतो गुरुर्वृष्यो बलंकरः॥ मधुरस्तृप्तिकफकृत्स्निग्धो धातुविवर्धकः । मलस्तम्भकरो वातकफपित्तविनाशनः ॥ रक्तरुग्दाहक्षतरुक्क्षयनाशकरो मतः । पर्णं तु कोमलं चास्य रुच्यं ग्राह्यग्निदीपनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-अम्बाडा-भारी, गरम, कषेला, खट्टा, रुचिकारक, सारक, कंठको हितकारी तथा पित्त, कफ और रक्तकारक है तथा आमवात, वात और आमनाशक है। पका अंबाडा-कषेला, शीतल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, मधुर, तृप्तिकारक, कफकारक, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, मलस्तम्भक, तथा वात, कफ, पित्त, रक्तविकार, दाह, क्षतरोग और क्षयरोगका नाश करे है। इसके कोमल पत्ते-रुचिकारक, ग्राही और अग्निप्रदीपक हैं।

विवरण। आम्रातक अर्थात् अम्बाडेके वृक्षः प्रायः पर्वत और वनोंमें बहुत होते हैं, पत्ते जिंगनीके पत्तोंके समान एक शाखामें बराबर दोनों ओर होते हैं,इसपर आमके तुल्य मौर आता है,फल कन्दूरीकी समान छोटे २ होते हैं, उनको अम्बाडा कहते हैं, इनका अचार डालते हैं, यह स्वादमें खट्टे होते हैं।

कोशाम्रनामानि।

कोशाम्रश्च घनस्कन्धो वनाम्रो जन्तुपादपः ।
क्षुद्राम्रश्चेति रक्ताम्रो लाक्षावृक्षः सुरक्तकः ॥

अर्थ-कोशाम्र, घनस्कन्ध, वनाम्र, जन्तुपादप, क्षुद्राम्र, रक्ताम्र, लाक्षावृक्ष, सुरक्तक (कोषाम्र, कृमिवृक्ष, सुकोशक)।

हिन्दीभाषामें	कोशंभ ।
वंगभाषामें	केओडा, जलपाई ।
मराठीभाषामें	कोशाम्र ।
गुजरातीभाषामें	कोशम ।
कर्णाटकीभाषामें	जूरिमाचु ।
लैटिन्भाषामें	स्लीचराट्रिजगा ।

अस्य गुणाः।

कोशाम्रः कुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ।

अर्थ-काशाम्रवृक्ष-कुष्ठ, सूजन, रक्तपित्त, व्रण और कफका नाश करे है।

अस्य-अपक्वफलगुणाः।

तत्फलं ग्राहि वातघ्नमम्लोष्णं गुरुपित्तलम् ।

अर्थ- इसका कच्चा फल-मलरोधक, वातनाशक, खट्टा, गरम, भारी और पित्तकारी है

अस्य पक्वफलगुणाः ।

पक्वं तु दीपनं रुच्यं लघूष्णं कफवातनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-इसका पक्का फल-अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हलका, गरम तथा कफ और वातका नाशक है ।

अन्यच्च ।

कोशाम्रमम्लमनिलापहरं कफार्त्तिपित्तप्रदं गुरु विदाहविशोफकारि। पक्वं भवेन्मधुरमीषदपारमम्लं पट्वादियुक्तरुचिदीपनपुष्टिदायि ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कोशंभ-खट्टा, वातविनाशक, कफकारक, पित्तजनक, भारी तथा दाह और शोफकारी है। पक्का कोशंभ-मधुर और कुछेक खट्टा है। लवणयुक्त कोशंभ-दीपन, रुचि और पुष्टिकारक है।

अन्यच्च ।

कोषाम्रं कफवातघ्नं दीपनं ग्राहि तत्परम् ॥ (रा०व०द्र० चं०)

अर्थ-कोशंभ-कफ और वातनाशक, अग्निप्रदीपक और मलरोधक है ।

कोशाम्रमज्जागुणाः ।

स्वादुपाकोऽग्निबलकृत्स्निग्धः पित्तानिलापहः (सु० सं०)

अर्थ-कोशंभकी मींग-पाकमें स्वादिष्ट, अग्निकारक, बलवर्द्धक, स्निग्ध, पित्त और वातनाशक है ।

अस्य तैलगुणाः ।

सरं कोशाम्रजं तैलं कृमिकुष्ठव्रणापहम् ॥
तिक्ताम्लमधुरं बल्यं पथ्यं रोचनपाचनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कोशंभका तेल-सर (कुछेक दस्तावर), कृमिनाशक, कुष्ठघ्न, व्रणविनाशक, कडवा, खट्टा, मधुर, बलकारक, पथ्य, रोचन और पाचक है

विवरण । कोशाम्र-जंगली आमको कहतेहैं उसके वृक्षभी आमके समान होतेहैं और पत्ते, फल छोटे छोटे देखनेमें आतेहैं ।

दाडिमनामानि ।

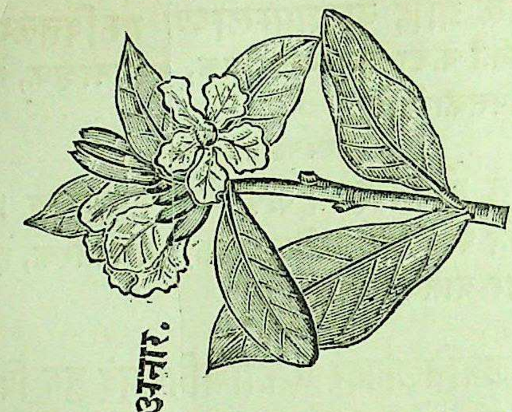

दाडिमो दाडिमीसारः कुट्टिमः फलषाडवः । करको रक्तबीजश्च सुफलो दन्तबीजकः॥ मधुबीजः कुचफलो रोचनः शुकवल्लभः । मणिबीजस्तथा वल्कफलो वृत्तफलस्तथा ॥

अर्थ-दाडिम, दाडिमीसार, कुट्टिम, फलषाडव, करक, रक्तबीज, सुफल, दन्तबीजक, मधुबीज, कुचफल, शुकवल्लभ, मणिबीज, वल्कफल, वृत्तफल, (पिण्डपुष्प, दाडिम्ब, पर्वरुट्, स्वाद्वम्ल, पिण्डीर, फलशाडव, मुखवल्लभ, रक्तपुष्प, डालिम, शुकादन, फलसाडव, सुनील, मीलपत्र, नीलपत्रक, दन्तबीज और लोहितपुष्पक) ।

संस्कृतभाषामें	दाडिम ।
हिन्दीभाषामें	अनार ।
बंगलाभाषामें	दाडिम, डालिम् ।
मराठीभाषामें	डाळिंब ।
गुजरातीभाषामें	दाडयम !
कर्णाटकीभाषामें	दालिंब ।
तैलङ्गीभाषामें	डानिम्बचेट्टु, दालिंबकाया ।
तामिलभाषामें	मादलइ चेहोड्डि ।
औत्क०	दालिंब ।
इग्रजीभाषामें	पमग्रानेट । Pulmgranitc
लटिनभाषामें	प्युनिकाग्रानेटम् । Punica granatum
फारसीभाषामें	अनार तुरस, अनारसीरी ।
अरबीभाषामें	रुमानहामीज, रुमानहुलु ।

अस्य गुणाः ।

दाडिमं त्रिविधं स्वादु स्वाद्वम्लं केवलाम्लकम्। तत्तु स्वादु त्रिदोषघ्नं तृड्दाहज्वरनाशनम् ॥ हृत्कण्ठमुखरोगघ्नं तर्पणं शुक्रलं लघु । कषायानुरसं ग्राहि स्निग्धमेधाबलावहम् ॥ स्वाद्वम्लं दीपनं रुच्यं किंचित्पित्तकरं लघु। अम्लं तु पित्तजनकमम्लं वातकफापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–अनार–तीन प्रकारका होता है, एक मीठा दूसरा मीठा और खट्टा, तीसरा केवल खट्टा । तह मीठा अनार–त्रिदोषनाशक, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, कण्ठरोग और मुखरोगको दूर करे है। तृप्तिकारक, शुक्रजनक, हलका, किञ्चित् कषेला, मलरोधक, स्निग्ध, मेधाजनक और बलवर्द्धक है। मीठा और खट्टा अनार–दीपन, रुचिकारक, किंचित् पित्तकारक और हलका है । खट्टा अनार–पित्तकारक, खट्टा तथा वात और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

दाडिमं हृद्यमम्लोष्णं वातघ्नं ग्राहि दीपनम् ।
कषायानुरसं प्रोक्तं कफपित्ताविरोधि च ।

अर्थ–अनार–हृदयको हितकारी, खट्टा, गरम, वातनाशक, मलरोधक, अग्निदीपक, कषेला तथा कफ और पित्तको दूर करे है ।

द्विविधं तत्तु विज्ञेयं मधुरं चाम्लमेव च ।
मधुरं तु त्रिदोषघ्नमम्लं वातकफापहम् ॥
ज्वरघ्नं रोचनं पथ्यं पाके लघ्वग्निदीपनम्। (रा. व. द्र. च.)

अर्थ–अनार–मधुर और अम्ल इन भेदोंसे दोप्रकारका है, तहां मधुर अनार–त्रिदोषनाशक है और खट्टा अनार–वातकफनाशक, ज्वरनिवारक, रोचक, पथ्य, हलका और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

स्वाद्वम्लं मधुरं चाम्लं त्रिविधं दाडिमीफलम् ।
मधुरं तु त्रिदोषघ्नं स्वाद्वम्लं वातपित्तजित् ।
असृक्पित्तकरं चाम्लं संग्राहि सर्वमुच्यते । (नि० भै०)

अर्थ-अनार-तीनप्रकारका होता है, एक खट्टा और मीठा, दूसरा मीठा और तीसरा खट्टा, तहां मधुर अनार त्रिदोषनाशक है। आर मीठा और खट्टा अनार वातपित्तनाशक है। खट्टा अनार-रक्तपित्त-कारक और सर्व प्रकारके अनार मलरोधक ह ।

अन्यच्च ।

बल्यं पित्तानिलघ्नं लघु शिशिरमसृग्दाहमूर्च्छापिपासा-
भ्रान्तिश्रान्तिज्वरच्छर्द्यरुचिमदगदाजीर्णनैर्बल्यनाशी ।
मिष्टं विष्टम्भि शुक्रप्रदमकफकरं दाडिमं चातिपक्कं
हीनं तस्मादपक्कं तुवरमथ मरुन्माथि रुच्यं यदम्लम् ॥

अर्थ-अत्यन्त पक्का अनार बलकारक, पित्तनाशक, वातविनाशक, हलका, शीतल तथा रुधिरविकार, दाह, मूर्च्छा, पियास, भ्रान्ति, श्रम, ज्वर, वमन, अरुचि, मोह, अजीर्ण और निर्बलताका नाश करे है। मिष्ट, विष्टम्भजनक, शुक्रवर्द्धक और कफकारक है। तरुण अनार-कषेला, वातनाशक, रुचिकारक और खट्टा है।

अपि च।

दाडिमं तुवरं चाम्लं मधुरं तृप्तिकारकम्। स्निग्धं च दीपनं ग्राहि हृद्यं चोष्णं रुचिप्रदम् ॥ लघ्वग्निदीपकं प्रोक्तं कफकासश्रमापहम्। मुखकंठरुजं पित्तं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ मधुरं तत्तृप्तिकरं धातुवृद्धिकरं लघु। तुवरं ग्राहकं स्निग्धं मेध्यं बल्यं च माधुरम् ॥ पथ्यं त्रिदोषतृड्दाहज्वरहृद्रोगनाशनम्। मुखरोगं कंठरोगं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ मधुराम्लं तत्तु रुच्यं दीपनं च मतं लघु। वातपित्तप्रशमनं तदम्लं पित्तलं मतम्॥ रक्तपित्तकरं चैव कफवातविनाशकम्। शुष्कं बालं च तत्प्रोक्तं रुच्यं च हृदयप्रियम ॥ वातानुलोमनकरं मुनिभिः परिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-अनार-कषेला, खट्टा, मधुर, तृप्तिकारक, स्निग्ध, दीपन, मलरोधक, हृदयको हितकारी, गरम, रुचिकारक, हलका, अग्निप्रदीपक तथा कफ, खांसी, श्रम, मुखरोग, कंठरोग और पित्तको दूर करनेवाला है।

मधुर अनार-तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक हलका, कषैला, ग्राही, स्निग्ध, मेधाजनक, बलवर्द्धक, मधुर, पथ्य तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, मुखरोग और कंठरोगको दूर करैहै। मधुराम्ल अर्थात् खट्टा और मीठा अनार-रुचिकारक, दीपन, हलका, वज्रऔर पित्तनाशक है। खट्टा अनार-पित्तकारक रक्तपित्तजनक, कफ और वातविनाशक है। कच्चा सुखायाहुआ अनार-अनारदाना-रुचिका हृदयको प्रिय और वातको अनुलोमन करनेवाला है।

दाडिमपुष्पादिगुणाः ।

तत्पुष्पञ्च पुनर्ज्ञेयं नासासृगतिनावनात् ।
दाडिमत्वक्क्रिमिघ्ना च ग्राही रक्तातिसारहा (शो०नि०)

अर्थ-अनारके फूल-नाकसे रुधिर गिरनेको दूर करैहैं। अनारके वल्कल कृमिनाशक, मलरोधक और रक्तातिसारको हरैहैं।

विवरण। अनार-मध्यमाकारका वृक्ष है, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमें मिलताहै, पंजाबी और काबुली वृक्षोंके फल कुछ अधिक मधुर होतेहैं। जो नाकसे रुधिर गिरता हो तो अनारको सूंघनेसे और इसका अर्क नाकमें डालनेसे आराम होजाताहै। बीज और छिलका खाँसीको खातेहैं। इसकी जड कीडोंको नाश करतीहै।

कदलीनामानि ।

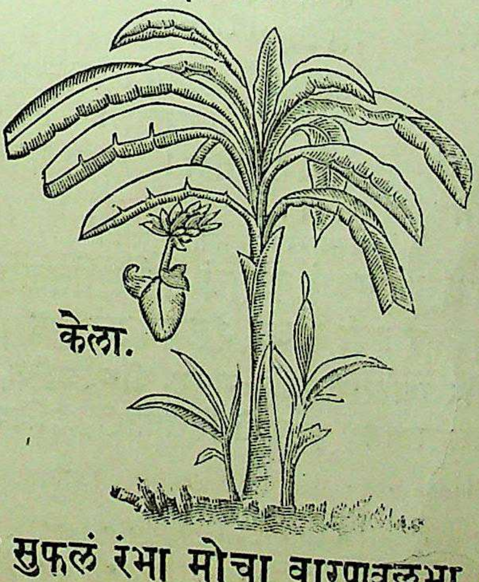

केला.

कदली सुफलं रंभा मोचा वारणवल्लभा ।

सुकुमारा चर्म्मण्वती तत्पत्री नगरौषधिः ॥

अर्थ-कदली, सुफला, रंभा, मोचा, वारणवल्लभा, सुकुमारा, चर्म्मण्वती, त्पत्री, नगरौषधि (वारणबुसा, अंशुमत्फला, काष्ठीला, कदल, वारबुषा, वारणबुषा, सकृत्फला, गुच्छफला, हस्तिविषाणी, गुच्छदन्तिका, निःसारा, राजेष्टा, बालकप्रिया, ऊरुस्तम्भा, भानुफला, ालक्ष्मी, कदलक, मोचक, रोचक, लोचक, वारवृषा, आयतच्छदा, तन्तुविग्रहा, अम्बुसारा)।

संस्कृतभाषामें	कदली।
हिन्दीभाषामें	केला।
वंगभाषामें	कला
मराठीभाषामें	केळ, सोनकेळ, मुठेली, लोखंडी, चवई।
गुजरातीभाषामें	केलय।
कर्णाटकीभाषामें	कदली, मरवालेकाष्ठ, कावालेतब।
तैलिङ्गीभाषामें	चक्राकेली, आरटीकाया, अरटिचेट्टु, बुरुगचेट्टु, दोंडतोंडे।
तामिलीभाषामें	वाळे।
पाह्लवीभाषामें	तल, तलमपज।
लुसाई०	वाहा।
बरमी०	हगापी।
इंग्रेजीभाषामें	प्लेंटेन्। Plantain
लैटिन्भाषामें	मुसासेंपियेन्टम्। Musasapientum मुसोपरेडिस्याका। M. paridisia
फारसीभाषामें	मावज्, मोझ।
अरबीभाषामें	तनां।

अस्य साधारणफलगुणाः।

कदलं मधुरं वृष्यं कषायं नातिशीतलम्।
रक्तपित्तहरं हृद्यं रुच्यं श्लेष्मकरं गुरु ॥ (रा० व०)

अर्थ-केलेकी साधारण फली-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किञ्चित् कषेली, शीतल, रक्तपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, कफकारक और भारी है।

अन्यच्च।

कदली शीतला गुर्व्वी वृष्या स्निग्धा मधुः स्मृता ॥

पित्तरक्तविकारं च योनिदोषं तथाऽश्मरीम् ॥
रक्तपित्तं नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम्।

अर्थ-कदली-शीतल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर तथा पित्त, रुधिरविकार, योनिदोष, पथरी और रक्तपित्तको दूर करे है।

कोमलकदलीफलगुणाः।

कोमलं कदलं शीतं मधुरं च कषायकम्।
रुच्यमम्लं समुद्दिष्टं पित्तनाशकरं च तत् ॥

अर्थ-केलेकी कोमल फली-शीतल, मधुर, कषेली, रुचिकारक, अम्ल और पित्तनाशक हैं।

मध्यमकदलीफलगुणाः।

तृड्रक्तपित्तादिगदप्रमेहान् फलं कदल्यास्तरुणं निहन्ति।
संग्राहिकं तिक्तकषायरूक्षं रक्तातिसारं शमयेज्ज्वरं च ॥

अर्थ-केलेकी तरुणफली-तृषा, रक्तपित्त, नेत्ररोग, प्रमेह, रक्तातिसार और ज्वरका दूर करनेवालीहै, ग्राही, कडवी, कषेली और रूखीहै।

अन्यच्च।

मध्यम कदलं किञ्चित्तुवरं मधुरं गुरु।
अग्निमांद्यकरं चैव ऋषिभिः परिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-केलेकी तरुण (कुछ कच्ची और कुछ पक्की) फली-किञ्चित कषेली, मधुर, भारी और मन्दाग्निकारक है।

अपक्वकदलीफलगुणाः।

संग्राह्यपक्वं च सुशीतलं च कषायकं वातकफं करोति।
विष्टम्भि बल्यं गुरु दुर्जरं च आरण्यरम्भाफलमेव चैतत् ॥

अर्थ-कच्ची केलेकी फली-मलरोधक, शीतल, कषेली, वातकफकारक, विष्टम्भकारक, बलवर्द्धक, भारी, दुर्जर और जंगली केलेके गुण इसीके समान जानने।

पक्वकदलीफलगुणाः।

रम्भापक्वफलं कषायमधुरं बल्यं च शीतं तथा पित्तं चा-स्रविमर्दनं गुरुतरं पथ्यं न मंदानले। सद्यः शुक्रविवर्द्धनं क्लमहरं तृष्णापहं कान्तिदं दीप्ताग्नौ सुखदं कफामयकरं सन्तर्पणं दुर्जरम् ॥

अर्थ-केलेकी पक्की फली-कषेली, मधुर, बलकारक, शीतल, रक्तपित्तनाशक, भारी, मंदाग्निवाले मनुष्यको अहितकारी, तत्काल शुक्रवर्द्धक, क्लमहारक, तृष्णानिवारक, कान्तिजनक, अग्निदीपनवाले मनुष्यको हितकारी, कफरोगनाशक, तृप्तिकारक और कठिनतासे पचनेवाली है।

अपि च।

कदलीवरपक्कफलं मधुरं रुचिरं मृदु वातहरं शिशिरम् ॥
क्षतजक्षयदाहनिवार्य्यस्रजायुतपित्तविकारनिवृत्तिकरम् ।
प्रदराश्मगदं निहरेल्लघु च प्रतिबंधकरं बलदं न सरम् ।
अशनात्प्रथमं यदि भुक्तमिदं न शुभं शुभदं त्वशनाविरतौ॥

अर्थ-केलेकी पक्की फली-मधुर, रुचिकारक, कोमल, वातनाशक, शीतल तथा क्षतज, क्षय, दाह, रक्तपित्त, प्रदर और पथरीरोगको दूर करै है, हलकी, विबन्धकारक, बलवर्द्धक, सारक नहीं, और भोजनसे प्रथम खाई हुई केलेकी फली शुभ नहीं है और भोजन करते समय हित है।

अन्यच्च।

पक्कं तु कदलं बल्यं तुवरं मधुरं गुरु। शीतं वृष्यं शुक्रवृद्धिकरं सन्तर्पणं मतम्॥मांसकांत्यरुचीनां च वर्द्धनं दुर्जरं मतम्। कफकृच्च तृषाग्लानिपित्तरक्तरुजस्तथा। मेहक्षुधानेत्ररोगनाशकं परमं मतम्। मन्दाग्नीनां विकृतिदमृषिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि० रा०)

अर्थ-केलेकी पक्की फली-बलकारक, कषेली, मधुर, भारी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य, सन्तर्पण तथा मांस, कान्ति और रुचिको बढानेवाली है, दुर्जर, कफकारक तथा ग्लानि, पित्त, रक्त, प्रमेह, क्षुधा और नेत्ररोगका नाश करे है और मन्दाग्नियुक्त मनुष्योंके विकार उत्पन्न करनेवाली है।

अपि च।

सामान्यकदलीफलगुणाः।

हृद्यं मनोज्ञं कफवृद्धिकारि क्षान्तं च सन्तर्पणमेव बल्यम्। रक्तं सपित्तं श्वसनं च दाहं रम्भाफल हन्ति सदा नराणाम् ॥ (आ. सं.)

अर्थ-केलेकी फली-हृदयको हितकारी, मनोज्ञ, कफकारी, शान्तिकारक, तृप्तिदायक, बलवर्द्धक तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

सामान्यं कदलं प्रोक्तं कफकृन्मधुरं गुरु। स्निग्धं विष्टम्भि वृष्यं
च रुच्यं किंचिच्च शीतलम् ॥ रक्तपित्तं च पित्तं च तृषां दाहं
क्षतक्षयम्। वातं च नाशयत्येव वल्कं तिक्तं लघुः कटुः॥ (नि०र०)

अर्थ-केलेकी फली-कफकारक, मधुर, भारी, स्निग्ध, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, किञ्चित् शीतल तथा रक्तपित्त, पित्त, तृषा, दाह, क्षतक्षय और वातनाशक है। इसकी छाल-कडवी, हलकी और कटुरसान्वित है।

कदलीपुष्पगुणाः ।

कदल्याः कुसुमं स्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु ।
वातपित्तहरं शीतं रक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-केलेका फूल-स्निग्ध, मधुर, कषेला, भारी, वातपित्तनाशक, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको नाशकरे है।

अन्यच्च ।

पुष्पं कदल्याः सुस्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु। ग्राहि तिक्तं चाग्निदीप्ति-
करं वातविनाशनम्। किञ्चिदुष्णं च वीर्यें स्याद्रक्तपित्तं क्षयं
कृमीन्। पित्तं कफं नाशयतीत्येवं च ऋषिभिर्मतम् (नि०र०)

अर्थ-केलेका फूल-स्निग्ध मधुर, कषेला, भारी, मलरोधक, कडवा अग्निप्रदीपक, वातनाशक, किंचित् उष्णवीर्य्य तथा रक्तपित्त, क्षय, कृमि, पित्त और कफका नाश करनेवाला है।

कदलीमोचकगुणाः ।

कदलीमोचकं हृद्यं कफघ्नं क्रिमिनाशनम् ।
तृष्णाप्लीहज्वरं हन्ति दीपनं वस्ति शोधनम् ॥ (रा.व)

अर्थ-केलेका मोचा हृदयको हितकारी, कफनाशक, क्रिमिनाशक, तृष्णानिवारक, प्लीहानाशक, ज्वरहारक, दीपन और वस्तिशोधक है।

कदलीजलगुणाः ।

रम्भातोयं शीतलं ग्राहि तृणाकृच्छ्रान्मेहान्कर्णरोगातिसारान्
अस्रस्रावं स्फोटकान्रक्तपित्तं दाहं हन्यादस्रयोनिं च शोषान्॥

अर्थ-केलेका जल-शीतल, मलरोधक, तथा तृषा, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, कर्णरोग, अतिसार, रुधिरका गिरना, स्फोटक, रक्तपित्त, दाह, रुधिरविकार, योनिरोग और शोषको दूर करे है।

कदलीकन्दगुणाः।

बल्यः कदल्याः कन्दः स्यात्कफपित्तहरो गुरुः।
वातलो रक्तशमनः कषायो रूक्षशीतलः॥
कर्णशूलरजोदोषं सोमरोगं नियच्छति।

अर्थ-केलेका कन्द-बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वातकारक, रक्तविकारको दूर करनेवाला, कषेला, रूखा, शीतल तथा कर्णशूल, रजोदोष और सोमरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

कन्दः कदल्या रूक्षः स्याद्वातलस्तुवरो गुरुः। शीतो बल्यो मधुः केश्यो रुच्योऽग्निमांद्यकारकः॥ कर्णशूलं चाम्लपित्तं दाहं रक्तरुजं तथा। सोमदोषं रजोदोषं कृमीन्कुष्ठं च नाशयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-केलेका कन्द-रुखा, कषेला, भारी, शीतल, बलवर्द्धक, मधुर, केशोंको हितकारी, रुचिकारी, मन्दाग्निकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमरोग, रजोदोष, कृमि, और कुष्ठको नष्ट करे है।

कदलीसारगुणाः।

सारं कदल्याः संग्राहि चाप्रियं गुरु शीतलम्॥
तृड्दाहमूत्रकृच्छ्रातिसारमेहांश्च सोमकम्।
अस्थिस्रावं रक्तपित्तं विस्फोटांश्चैव नाशयेत्॥

अर्थ-कदलीसार-मलरोधक, अप्रिय, भारी, शीतल तथा तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, अतिसार, प्रमेह, सोमरोग, अस्थिस्राव, रक्तपित्त, और विस्फोट नाशक है।

आरण्यकदलीगुणाः।

आरण्यकदली शीता मधुरा बलवर्धिनी। वीर्य्यवृद्धिकरी रुच्या दुर्जरा च गुरुः स्मृता। तृड्दाहशोषपित्तानां नाशिनी च प्रकीर्तिता। फलं तु तुवरं चास्या मधुरं च गुरु स्मृतम्।

अर्थ-वनकदली अर्थात् जंगलीकेली-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक वीर्य

वर्द्धक, रुचिकारक, दुर्जर, भारी तथा तृषा, दाह, शोष और पित्तका नाश करे है । इसका फल कषेला, मधुर और भारी है ।

काष्ठकदलीगुणाः ।

काष्ठस्य कदलीग्राहीहृद्या रुच्या च शीतला । अग्निमांद्यकरी
गुर्व्वी दुर्जरा चातिमाधुरी ॥ तृड्दाहमूत्रकृच्छ्राणां रक्तपित्तस्य
नाशिनी । विस्फोटं चास्थिरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥

अर्थ-काष्ठकदली (काठकेला)-ग्राही, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, शीतल, मन्दाग्निकारक, भारी, कठिनतासे पचनेवाला, अत्यन्त मधुर तथा तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, विस्फोट और अस्थिरोगका नाश करे है ।

सुवर्णकदलीगुणाः ।

सुवर्णकदली शीता मधुरा चाग्निदीपनी ।
बल्या वृष्या च गुर्वी च तृड्दाहकफनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ-सोनकेला-शीतल, मधुर, अग्निदीपक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी तथा तृषा, दाह और कफका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

तदेव चम्पकाख्यं तु वातपित्तहरं गुरु ।
वृष्यं चेत्रातिशीतं च मधुरं रसपाकयोः ॥ (रा० व०)

अर्थ-चम्पककेला-वातपित्तनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक, अत्यन्त शीतल, मधुर और पचनेमेंभी मधुर है ।

अन्यच्च ।

सुवर्णमोचाकफवातहारिणी विष्टम्भिनी दीपनकारिणी च ।
सुदुर्जरा दाहविघातिनी च रक्तं च पित्तं शमयेत निश्चितम् ।

अर्थ-चम्पेकेला-पीलाकेला-कफवातनाशक, विष्टम्भकारक, अग्निप्रदीपक, दुर्जर, दाहनाशक और रक्तपित्तको शान्तिकरे है ।

महेन्द्रकदलीगुणाः

महेन्द्रकदली चोष्णा वातस्य च विनाशिनी ।
प्रदरं पित्तरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥

अर्थ-महेन्द्रकदली-गरम तथा वात, प्रदर और पित्तरोगका नाश करे है ।

कृष्णकदलीफलगुणाः ।

कृष्णा तु कदली रुच्या तुवरा मधुरा लघुः ।
वायोर्धातोर्वृद्धिकरी मेहपित्ततृषाहरा ॥ (नि० र०)

अर्थ-कालाकेला-रुचिकारक, कषेला, मधुर, हलका, वातकारक, धातुवर्द्धक तथा प्रमेह, पित्त और तृषाको दूर करे है।

माणिक्यमुक्तामृतचम्पकाद्या भेदाः कदल्या बहवोऽपि सन्ति । उक्ता गुणास्तेषु चिराद्भवन्ति निर्दोषता स्याल्लघुता च तेषाम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-केलेकी माणिक्य, मुक्ता, अमृत और चम्पकादि अनेक जाति हैं, उन सबोंमें उपरोक्तही गुण हैं किन्तु निर्दोष और हलकापन अधिक होता है।

विवरण । केला सम्पूर्ण भारतवर्षमें और उत्तर खण्डके वन और पहाडोंमें अधिकतासे होता है, केलेकी अनेक जाति हैं, जैसे पहाडी केला, चम्पककेला, जंगली केला, बडा केला, काठ केला, इत्यादि, परन्तु गुणमें सब समान हैं केलेका वृक्ष बहुत ऊंचा होता है, पत्ते दो चार गजतक लम्बे और आध आध गज चौडे होते हैं, यह वृक्ष खम्भके समान होता है और पत्तेमें पत्ते निकलते चले आते हैं, सिवाय पत्तोंके और कोई शाखा इसमें नहींहोती, केवल पत्तोंहीसे वेष्टित होता है, उसमें बक्कलके भीतर बक्कलही निकलता है कुछ सार नहीं होता उसके बीचमें एक दण्डा निकलाता है उस डण्डेपर एक हजार फली आती हैं बीचमें सबसे ऊपर कमलकलीसेभी बडा लालरंगका एक फूल नोकदार बुरजीके तुल्य आताहै फली कच्ची अवस्थामें लाल होती हैं उनको तोडकर रखनेसे पीले रंगकी होजाती हैं पहाडमें मुनियोंके भोजनके लिये यह उत्तम पदार्थ है।

नारिकेलनामानि ।

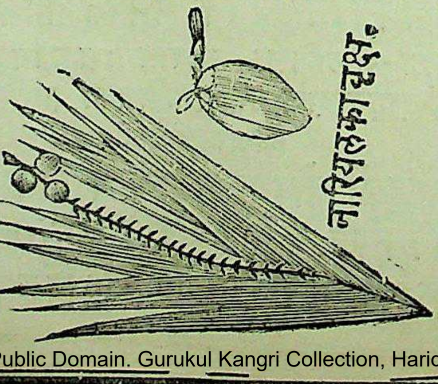

नारिकेलो दृढफलो लांगली कूर्च्चशीर्षकः ।
जुङ्गः स्कन्धफलश्चैव तृणराजः सदाफलः ॥

अर्थ-नारिकेल, दृढफल, लाङ्गली, कूर्चशीर्षक, जुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल, (नारिकेर, नाडिकोलि,नारीकेली, नारीकारी, नारिकेरि, नारिकेलि, सदापुष्प, शिरःफल,मृदुफल,पुटोदक,गारिकेर, रसफल, सुतङ्ग, कूर्च्चशेखर, दृढनीर, नीलतरु,मङ्गल्य,उच्चतरु, स्कन्धतरु, दाक्षिणात्य, दुरारुह, त्र्यम्बकफल,शिराफल,करकाम्भा, पयोधर, मुत्कुण, कौशिकफल, फलमुण्ड, जटाफल, मुण्डफल, विश्वामित्रप्रिय, नाडीकेल, नारकेर, सुभङ्ग, फलकेशर, वरफल, महाफल, सदाफल, तोयगर्भ, त्र्यक्षफल) ।

संस्कृतभाषामें	नारिकेल ।
हिंदीभाषामें	नारियल, नरियल, खोपरा ।
वंगभाषामें	नारिकेल, नारकोल ।
मराठीभाषामें	श्रीफल, नारळ ।
गुजरातीभाषामें	नालीयर ।
कर्णाटकीभाषामें	तेंगिनकायि ।
तैलिङ्गीभाषामें	टेंकाया, नारिकदम ।
तामिलीभाषामें	टेन्ना, तेङ्गायि ।
औत्कलीभाषामें	नडिया ।
अंग्रेजी भाषामें	कोकोनट् पाम । Coconut palm
लैटिन्भाषामें	कोकोस्न्युसिफेरा । Coecsnusifera
फारसीभाषामें	जोजहिन्दी नारीगल।
अरबीभाषामें	नारजिल् ।

नारिकेलसाधारणगुणाः ।

नारीकेलं सुमधुरं गुरु स्निग्धं च शीतलम् ।
हृद्यं संबृंहणं वस्तिशोधनं रक्तपित्तनुत् ॥ (आ० सं०)

अर्थ-साधारण नारियल-मधुर, भारी, स्निग्ध, शीतल, हृदयको हितकारी, पुष्टिकारक, वस्तिशोधक और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च

नारिकेलं गुरु स्निग्धं शीतं वृष्यं च दुर्जरम् । वस्तिशुद्धिकरं बल्यं बृंहणं कफकारकम्॥स्वादुविष्टम्भकृत्प्रोक्तं शोष-

तृट्पित्तनाशनम् । वातपित्तं रक्तदोषं दाहं चैव विनाशयेत्॥ क्षतक्षयं नाशयतीत्येवमुक्तं कृपालुभिः । (नि० र०)

अर्थ-नारियल-साधारण, भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कठिनतासे पचनेवाला, वस्तिशोधक, बलकारक, पुष्टिकारक, कफकारक, स्वादिष्ठ, विष्टम्भकारक तथा शोष, तृषा, पित्त, वातपित्त, रुधिरदोष, दाह और क्षतक्षयका नाश करे है ।

अपिच ।

स्निग्धं स्वादुरसं विपाकमधुरं हृद्यं जडं दुर्ज्जरं पित्तघ्नं कृमिवर्द्धनं मदकरं वातामयध्वंसनम् । आमश्लेष्मविपाककोपशमनं वह्नेः श्रमध्वंसनं कन्दर्पस्य बलं ददाति नितरां तन्नारिकेलं फलम् ।

अर्थ-नारियल-साधारण, स्वादु रसयुक्त, पाकमें मधुर, हृदयको हितकारी, भारी, दुर्जर, पित्तनाशक, कृमिवर्द्धक, मदकारक, वात रोगनाशक, सारक, आम और कफके कोपको शान्ति करनेवाला, अग्निनाशक, आमनाशक और कामदेवके बलको बढानेवाला है ।

कोमलनारिकेलगुणाः ।

विशेषतः कोमलनारिकेलं निहन्ति पित्तज्वरमस्रदोषान् ।
तृट्छर्द्दिदाहामयमाशु हन्यात् सरक्तपित्तप्रभवांश्च रोगान् ॥

अर्थ-कोमल नारियल विशेषकरके पित्तज्वर, रक्तविकार, तृषा, वमन, दाह और रक्तपित्तसे उत्पन्न हुए रोगोंका शीघ्रही नाश करे है ।

पक्वनारिकेलगुणाः ।

पक्वं च नारिकेलं तु दाहकं पित्तलं गुरु ॥
वृष्यं मलस्तम्भकरं रुचिदं मधुरं मतम् ।
दीपनं बलकृत्प्रोक्तं वीर्य्यस्य च विवर्द्धकम् (नि०र०)

अर्थ-पक्वनारियल-दाहकारक, पित्तजनक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, मलस्तम्भक, रुचिदायक, मधुर, दीपन, बलवर्द्धक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

शुष्कनारिकेलगुणाः ।

नारिकेलफलं शुष्कं दुर्ज्जरं दाहकं गुरु ।

स्निग्धं मलस्तम्भकरं बलवीर्य्यरुचिप्रदम् ॥

अर्थ-शुष्कनारियल अर्थात् सूखागोला-कठिनतासे पचनेवाला, दाहकारक; भारी, स्निग्ध, मलस्तम्भक, तथा बल, वीर्य्य और रुचिको उत्पन्नकरनेवाला है ।

नारिकेलजलगुणाः ।

स्निग्धं स्वादु हिमं हृद्यं दीपनं वस्तिशोधनम् ।
वृष्यं पित्तपिपासाघ्नं नारिकेलोदकं गुरु ॥ (सु०मु०)

अर्थ-नारियलका जल वा दूध-स्निग्ध, स्वादिष्ठ, शीतल, हृदयको हितकारी, दीपन, वस्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, प्यासनाशक और भारी है ।

अन्यच्च ।

दुग्धं तु नारिकेलस्य बल्यं रुच्यं गुरु स्मृतम् ।
पाके स्वादु समुद्दिष्टं स्निग्धं वृष्यं च दाहकम् ॥
किञ्चिदुष्णं वातकफगुल्मकासविनाशकम् । (नि०र०)

अर्थ-नारियलका दूध-बलकारक, रुचिदायक, भारी, पचनेमें स्वादिष्ठ, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, दाहकारक, किञ्चित् गरम तथा वात, कफ, गुल्म और खाँसीको दूर करे है ।

अपिच ।

नारिकेलाम्बु तरुणं तृष्णाघ्नं पित्तनाशनम् । बालस्य नारिकेलस्य जलं प्रायो विरेचनम् ॥ शीतं वमथुमूर्च्छाघ्नं पित्तज्वरविनाशनम् । नारिकेलोदकं जीर्णं विष्टम्भि गुरु शीतलम् ॥ रा०व०

अर्थ-तरुण-नारियलका जल-तृष्णा और पित्तनाशक है । बालनारिकेल अर्थात्-कच्चे नारियलका जल-विरेचक, शीतल तथा वमन, मूर्च्छा और पित्तज्वरको दूर करे है । पक्कनारियलका जल विष्टम्भकारक, भारी और शीतल है ।

नारिकेलपुष्पगुणाः ।

नारिकेलस्य पुष्पं तु शीतं रक्तातिसारहृत् ॥
रक्तपित्तं प्रमेहं च सोमरोगं च नाशयेत् ।
मलस्तम्भकरं चापि प्रोक्तं पूर्वमनीषिभिः (नि० र०)

अर्थ-नारियलका फूल-शीतल तथा रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और सोमको दूर करेहै और मलस्तम्भक है ।

नारिकेलपुष्पजलगुणाः ।

नारिकेलपुष्पजलं गुरु वृष्यं प्रकीर्तितम् ॥
तत्कालमदकृत्प्रोक्तं चातिस्निग्धमुदीरितम् ।
तच्चेदम्लं कफकरं पित्तलं कृमिवातनुत् (नि० र०)

अर्थ-नारियलके फूलका जल-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, तत्काल मदकारक, अत्यन्त स्निग्ध, अम्ल, कफकारक, पित्तजनक, कृमि और वातनाशक है ।

नारिकेलताडीगुणाः ।

नारिकेलतरुतोयमतीव स्निग्धमाशुमदकृद्गुरु वृष्यम् ।
साम्लभावमुपयात्यपराह्णे श्लेष्मपित्तजनकं च कृमिघ्नम् ॥

अर्थ-नारियलके पेडका जल-अत्यन्त स्निग्ध, तत्काल मदकारक, भारी और वीर्य्यवर्द्धक है । और वही जल दोपहरके पीछे अम्लभावयुक्त होकर कफकारक, पित्तजनक और कृमिनाशक होजाता है ।

नारिकेलफलतैलगुणाः ।

नारिकेलफलोद्भूतं तैलं वाजीकरं गुरु। पोषणं क्षीणधातूनां वातपित्तप्रणाशनम्॥मूत्राघाते प्रमेहे च श्वासे कासे च यक्ष्मणि।
मेधालोपे च हितदं क्षतानां भरणं तथा ॥

अर्थ-नारियलका तेल-वाजीकर, भारी, क्षीणधातुवाले मनुष्यों को पुष्टिकारक, वातपित्तनाशक तथा मूत्राघात, प्रमेह, श्वास, खाँसी, राजयक्ष्मा और मेधाके लोपमें हितकारी है तथा क्षतरोगको हरनेवाला है ।

मधुनारिकेलगुणाः।

मोहजातीयकं नाम नारिकेलं च शीतलम् ।
मधुरं पुष्टिकृद्बल्यं रुच्यं चाग्निप्रदीपकम् ॥
कान्तिजंतुकरं स्निग्धं कफस्यामस्य कोपनम् ।
कामवृद्धिकरं देहस्थैर्य्यकृद्दाहनाशनम् ।
तृषां पित्तं श्रमं वातमतिसारं च नाशयेत् ।

अर्थ-मधुनारियल-शीतल,मधुर,पुष्टिकारक,बलवर्द्धक, रुचिकारक

अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक,कृमिकारक, स्निग्ध, कफको कुपित करनेवाला, आमकारक,कामवर्द्धक,देहको स्थिर करनेवाला,दाहनाशक,तृषा,पित्त,श्रम,वात और अतिसारको दूर करनेवाला है ।

विवरण । नारियलका बहुत बडा वृक्ष होता है, आकार खजूर और ताडके समान होता है, यह वृक्ष पूर्वकी ओर कलकत्ता, जगन्नाथ तथा बम्बईमें बहुत हैं, विशेष करके नदी अथवा समुद्रके निकट अधिक उत्पन्न होते हैं, इनमें शाखा नहीं होती, इनके ऊपरके भागमें खजूरकेसे पत्ते होते हैं,उनहीं पत्तोंके बीचमें नारियल लगते हैं उन नारियलोंको फोडकर जो रस निकलता है उसको नारियलका दूध कहते हैं ।जब वे नारियल सूख जाते हैं, तब उनकी भीतरकी मींगको गोला अथवा खोपडा कहते हैं, यह फल मंगलादि कार्योंमें बहुत लिये जाते हैं ।

ग्राम्यखर्जूरीनामानि ।

भूमिखर्जूरिका स्वाद्वी दुरारोहा मृदुच्छदा ।
तथा स्कन्धफला काककर्कटी स्वादुमस्तका ॥

अर्थ-भूमिखर्ज्जूरिका, स्वाद्वी, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कन्धफला, काककर्कटी, स्वादुमस्तका (खर्ज्जु, खर्ज्जू, खर्ज्जूरी, खरस्कन्धा, दुष्प्रधर्षा, दुरारुहा, कषायी, निःश्रेणी, यवनेष्टा, हरिप्रिया)

पिण्डखर्ज्जूरिकानामानि ।

पिण्डखर्जूरिका त्वन्या सा देशे पश्चिमे भवेत् ।

अर्थ-पिण्डखर्जूरिका(पिण्डखर्जूरी, राजजम्बु, पिण्डीफल, मुद्रिका, दीप्या, सपिण्डा, मधुरस्रवा, फलपुष्पा, स्वादुपिण्डा, हयभक्षा) यह पश्चिमदेशमें प्रसिद्ध है ।

छोहारानामानि ।

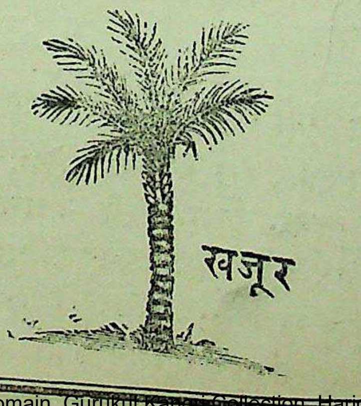

खर्ज्जूरी गोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता ।
जायते पश्चिमे देशे सा छोहारेति कीर्त्यते ॥

अर्थ-छुहारा गोस्तनाकाराखर्ज्जूरी यह दो नाम छुहारेके हैं, छुहारा गौके थनोंकी समान आकारवाला होता है और दूसरे द्वीपसे आया है

संस्कृतभाषामें	खर्ज्जूरी, पिण्डखर्जूरी, छोहारा ।
हिन्दीभाषामें	खजूर, पिंडखजूर, छुहारा ।
बंगभाषामें	खेजूर, पिण्डखेजूर, छोहारा ।
मराठीभाषामें	शिंदी, खजूरी ।
गुजरातीभाषामें	खजूरी, खजूर, खारक ।
कर्णाटकीभाषामें	इंचिलु, सिंहइंचिलु, कराइंचिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	इंटाचेट्टु, खजुरपुपंडु ।
इंग्रेजीभाषामें	डेट पाम ।Date plam
लैटिनभाषामें	फिनिक्स मोंटेना ।Phoenix montena
	फिनिक्स डेकटिलिफेरा ।P. Dactylifera
	फिनिक्स० सिल्वेस्ट्रिस् ।P. Sylvestris
फारसीभाषामें	तमररुतब ।
अरबीभाषामें	खुर्मातर, खुर्माखुश्क ।

त्रिविधखर्जूरीगुणाः।

खर्जूरीत्रितयं शीतं मधुरं रसपाकयोः। स्निग्धं रुचिकरं हृद्यं क्षतक्षयहरं गुरु ॥ तर्पणं रक्तपित्तघ्नं पुष्टिविष्टम्भशुक्रकम् । कोष्ठमारुतकृद्बल्यं वान्तिवातकफापहम् ॥ ज्वराभिघातक्षुत्तृष्णाकासश्वासनिवारकम् । मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूतगदान्तकृत ॥ महतीभ्यां गुणैरल्पा स्वल्पखर्जूरिका मता । तस्मादल्पगुणं ज्ञेयमन्यत्खर्ज्जूरिकाफलम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तीनोंप्रकारकी खजूर-शीतल, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, हृदयको भारी, तृप्तिकारी, पुष्टिकारक, विष्टंभकारक, शुक्रवर्द्धक, बलवर्द्धक, तथा क्षतक्षय, रक्तपित्त, कोठरोग, वातज्वर, अभिघात वमन, वात, कफ, क्षुधा, तृषा, खांसी, श्वास, मद, मूर्च्छा, वातपित्त और मद्यपानजनितरोगोंको दूर करनेवाली है ।दोनों बडी खजूरोंसे छोटी खजूरके गुण अल्प हैं और खजूरें छोटी खजूरकी अपेक्षा हीनगुणवाली हैं ।

अन्यच्च ।

अपक्कखर्ज्जूरफलं त्रिदोषाणां प्रकोपनम् ।
पक्वमेव हितं श्रेष्ठं त्रिदोषशमनं परम् ॥ (आ० सं०)

अर्थ-कच्चीखजूर-त्रिदोषको प्रकुपित करनेवाली । पक्की खजूर-हितकारी, उत्तम और त्रिदोषको शान्ति करनेवाली है ।

खर्ज्जूरीताडीगुणाः ।

खर्ज्जूरीतरुजं तोयं मदपित्तकरं भवेत् ।
वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनं बलशुक्रकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-खजूरकी ताडी-मदकारक, पित्तकारक, वातनाशक, कफनाशक, रुचिकारक, दीपन, बलकारक, और शुक्रवर्द्धक है ।

खर्ज्जूरादिमस्तकगुणाः ।

खर्ज्जूरिकादितालानां नारिकेलस्य मस्तकम् ।
स्वादुपाकरसं प्रोक्तं रक्तपित्तहरं तथा ॥

अर्थ-खजूर, ताड और नारियलवृक्षका मस्तक-स्वादिष्ठ, पचनेमें भी स्वादु और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

गुवाकतालखर्ज्जूरनारिकेलशिरांसि च ।
स्वादुतिक्तकषायाणि मूत्रातङ्कहराणि च ॥
बलप्राणकराण्याहुः शुक्रवृद्धिकराणि च । (रा० ज०)

अर्थ-सुपारी, ताड, खजूर और नारियलवृक्षका मस्तक-स्वादु, कडवा, कषेला, मूत्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, प्राणवर्द्धक और शुक्रवर्द्धक है ।

पिण्डखर्ज्जूरीगुणाः ।

दाहघ्नी मधुरास्रपित्तशमनी तृष्णार्त्तिदोषापहा शीतश्वासकफश्रमोदयहरा सन्तर्पणी पुष्टिदा ॥ वह्नेर्मांद्यकः गुरुर्विषहरा हृद्या च धत्ते बलं स्निग्धा वीर्य्यविवर्द्धिनी च कथिता पिण्डाख्यखर्ज्जूरिका ॥

अर्थ-पिण्डखजूर-दाहनाशक, मधुर, रक्तपित्तनिवारक, तृषानाशक, शीतल, श्वासनाशक, कफघ्न, श्रमहारक, तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, मंदाग्निकारक, भारी, विषहारी, बलवर्द्धक, स्निग्ध और वीर्य्यवर्द्धक है ।

सुलेमानीखजूरीनामानि ।

सुलेमानी तु मृदुला दलहीनफला च सा ।

अर्थ-सुलेमानी, मृदुला, दलहीनफला यह नाम सुलेमानी खजूरके हैं ।

अस्या गुणाः ।

सुलेमानी श्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छाम्लपित्तहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सुलेमानीखजूर-श्रम, भ्रान्ति, दाह, मूर्च्छा और अम्लपित्त-नाशक है ।

विवरण । खजूर-पिण्डखजूर और छुहारेके वृक्ष सीधे लम्बे २ चले जाते हैं, उनमें पत्ते लम्बे और शाखाभी लम्बी होती है, वृक्षपर खपटरेसे दो सरीफेके समान बक्कल जमा रहता है,ऊपर शाखाओंमें फल लगते हैं वह खानेमें उत्तम नहीं होते हैं, बखसे २ होते हैं इस-लिये उनको धनाढ्य लोग नहीं खाते, दीनलोग खाते हैं. दूसरी पिण्डखजूर होती है उसके फूल तोडकर बोरियोंमें भर देते हैं,तीसरा छुहारा होता है यह दोनों खजूरके समान आकारवाला होता है ।

बादामनामानि ।

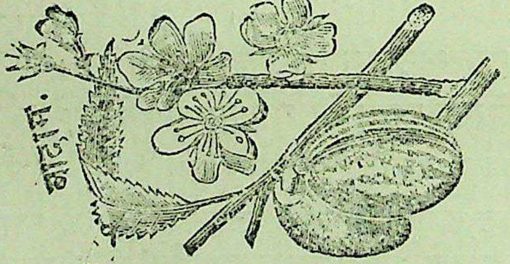

वातादो वातवैरी स्यान्नेत्रोपमफलस्तथा ।

अर्थ-वाताद, वातवैरी, नेत्रोपमफल, (सुफल,बादाम, वाताम, वातवैरी)

संस्कृतभाषामें	वाताद ।
हिन्दीभाषामें	बदाम मीठे, बदाम कडवे ।
बंगभाषामें	बादाम ।
मराठीभाषामें	गोडे बदाम, कडु बदाम ।
गुजरातीभाषामें	बदाम मीठी,बदाम कडवी ।
तैलङ्गीभाषामें	वेदम ।
तामिलीभाषामें	नटवडुम ।

इंग्रेजीभाषामें	स्वीट् अलमंड ।	Sweet almond
	बीटर अलमंड ।	Bitter almond
लैटिन्‌भाषामें	एमिग्डेलस्ककम्युनी ।	Amigdalus Communis
	एमिग्डेलस् ऐमर ।	Amigdalus araPr
अरबीभाषामें	लोजलहलु, लोजलमुर ।	
फारसीभाषामें	बदामशीरी, बदामतल्ख ।	

बदामगुणाः ।

वाताद उष्णः सुस्निग्धो वातघ्नः शुक्रकृद्गुरुः ।
वातादमज्जा मधुरा वृष्या पित्तानिलापहा ।
स्निग्धोष्णा कफकृन्नेष्टा रक्तपित्तविकारिणाम् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-बदाम-गरम, स्निग्ध, वातनाशक, शुक्रवर्द्धक, और भारी है । बदामकी मींग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, वातपित्तनाशक, स्निग्ध, गरम, कफकारक और रक्तपित्तरोगवालेको हितकारी नहीं है ।

अपिच ।

बादामः सारकश्चोष्णो गुरुरम्लः कफप्रदः । स्निग्धः स्वादुश्च तुवरः शुक्रलो वातनाशनः ॥ उष्णवीर्यं चामफलं सारक गुरु पित्तलम् । कफपित्तकरं चैव वातनाशकमुत्तमम्॥ तत्पक्वं मधुरं वृष्यं सुस्निग्धं पौष्टिकं मतम् शुक्रलं कफकारी च रक्तपित्तं व्यपोहति ॥ शामकं वातपित्तस्य पूर्वैर्वैद्यैरुदीरितम् । शुष्कं च तत्फलं प्रोक्तं मधुरं धातुवर्द्धकम् ॥ स्निग्धं वृष्यं च बल्यं च पौष्टिकं कफकारि च । वातपित्तस्य शमनं प्रोक्तं गुणविशारदैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-बदाम-सारक, गरम, भारी, अम्ल, कफकारी, स्निग्ध, स्वादु, कषेला, शुक्रजनक, वातनाशक, उष्णवीर्य है । कच्चा बदाम-सारक, भारी, पित्तजनक तथा कफ, पित्तविकार और वातका नाश करे है । पक्का बदाम-मधुर, वृष्य, स्निग्ध, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, कफकारक तथा रक्तपित्त और वातपित्तका नाश करे है । सूखा बदाम-मधुर, धातुवर्द्धक, स्निग्ध, वृष्य, बलकारक, पुष्टिकारी, कफकारक और वातपित्तको दूर करे है ।

बदामतैल ।

वातादतैलं मृदु रेचनं स्याद्वाजीकरं मूर्द्धगदं प्रहन्यात् ।

पित्तानिलघ्नं लघु दाहनाशि लावण्यदं मेहकरं सुशीतम् ॥
(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-बदामका तेल-मृदुरेची, वाजीकर, मस्तकरोगनाशक, पित्तनाशक, वातघ्न, हलका, दाहनाशक, लावण्यतादायक, प्रमेहकारक और शीतल है।

विवरण। बदामके बडे २ वृक्ष, काबुल और मलवारमें होते हैं पत्ते लम्बे और गोल होते हैं, फूल मौरसे छोटा आता है। फलके बीज बदाम कहलाते हैं।

सेवफलानि ।

मुष्टिप्रमाणं बदरं सेवं सिञ्चितिकाफलम् ।

अर्थ-मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव, सिञ्चितिकाफल, (सेवित, सेवि)

संस्कृतभाषामें	महाबदर ।
हिन्दीभाषामें	सेव ।
बंगभाषामें	सेउ ।
मराठीभाषामें	मोठें बोर ।
गुजरातीभाषामें	शेव ।
इंग्रेजीभाषामें	ऍपल् । Apple
लैटिनभाषामें	पाइरस् मेलस् । Pyrus marus
फारसीभाषामें	सेव ।
अरबीभाषामें	तुफाह ।

अस्य गुणाः ।

सेवं समीर[illegible]त्तघ्नं बृंहणं कफकृद्गुरु ।
रसे पाके[illegible] मधुरं शिशिरं रुचिशुक्रकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सेव । वा[illegible]पित्तनाशक, पुष्टिकारक, कफकारी, भारी, रस और पाकमें मधुर, शी[illegible]ल, रुचि और शुक्रकारक है, सेव प्राचीन नहीं है, क्योंकि सिवा[illegible]भावप्रकाशके और किसी ग्रन्थमें नहीं देखाजाता।

अमृतफलगुणाः ।

अमृतस्य फलं धातुवर्द्धकं मधुरं गुरु ।
रुच्यं चाम्लं वातहरं त्रिदोषस्य च शामकम् ॥

अर्थ-नासपाती-धातुवर्द्धक, मधुर, भारी, रुचिकारक, अम्ल, वातनाशक और त्रिदोषको शांति करनेवाली है।

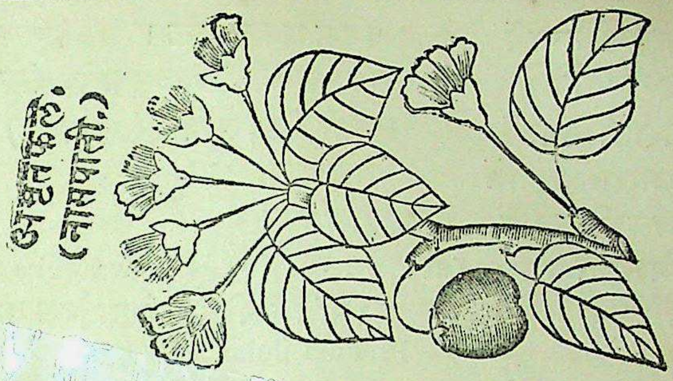

विवरण । सेव, वीह और नासपाती इन तीनोंकी एकही जाति है, इनमें अन्तर थोडाही है, जैसे छुहारे, पिण्डखजूर, खजूरकी एकही जातिहै । सेवके वृक्ष काश्मीर और काबुलमें बहुत होतेहैं, परन्तु नासपाती हिन्दोस्थानमें भी बहुत होतीहैं, इनके वृक्ष अमरूदके वृक्षकी बराबर होतेहैं, पत्तेभी अमरूदके बराबर कुछ चौडे होतेहैं, काश्मीरका सेव बहुत मधुर होताहै, और काबुलका तुरश होताहै, काश्मीरकी नाशपातीभी बहुतही मधुर होतीहै, जिसे नाक कहतेहैं, वीहका मुरब्बा दस्तोंकी व्याधिमें काम आताहै और बलदायक होता है ।

पेरुकफलनामानि ।

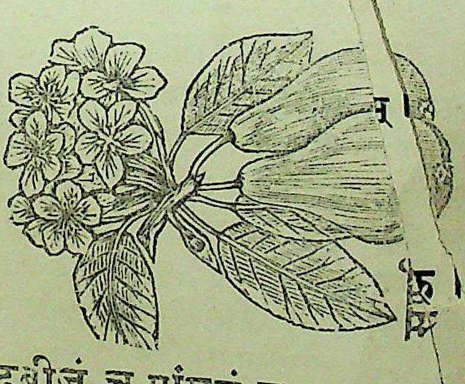

पेरुकं दृढबीजं च मांसलं चापृथक्त्वचम् ।
मृदु पीतं वर्तुलं च तुवरं मधुराम्लकम् ॥

अर्थ-पेरुक, दृढबीज, मांसल, अपृथक्त्वच, मृदु, पीत, वर्तुल, तुवर, मधुराम्ल ।

संस्कृतभाषामें	पेरुक, अमृतफल ।
हिन्दीभाषामें	सपेद सफरी, लालसफरी, वीह, अमरूद-
मराठीभाषामें	पांढरे पेरू, तांबडे (गुलाबी) पेरू ।
गुजरातीभाषामें	जामफल, पेर ।
तैलिङ्गीभाषामें	झामिपंडु ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्वावावैट ग्वावारेड् । Guava white Guava red
लैटिन्भाषामें	सिडियं पोमिफरं पाईरस कोम्नीस् । Psidium Pomiferum Pyrus Commnnis
फारसीभाषामें	अमरुत ।
अरबीभाषामें	कमश्शरी ।

अस्य गुणाः ।

पेरुकं तुवरं प्रोक्तं स्वाद्वम्लं कफकारकम् ।
शुक्रलं वातपित्तघ्नं शीतलं च रसं मतम् ॥

अर्थ-सफरी-कषेली, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक और शीतल हैं ।

अन्यच्च ।

ततोऽमृतफलं स्वादु तुवरं चातिशीतलम् ।
तीक्ष्णं गुरुक करं वातदं मादनाशकम् ॥
वृष्यं रुचिः क्रकरं त्रिदोषघ्नं प्रकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफरी-स्वा , कषेली, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, कफकारी, वातवर्द्ध , उन्मादनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । सफरीके वृक्ष बागोंमें अधिकतासे होते हैं, पत्ते आमके पत्तोंसे कुछक छोटे होते हैं, फल वर्षा और शिशिर ऋतुमें आते हैं, फल भीतरसे सफेद और कोई लालभी होता है ।

नागरंगनामानि ।

नारंगो नागरंगः स्यात्त्वक्सुगन्धो मुखप्रियः ॥

अर्थ-नारंग, नागरंग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय (नार्य्यङ्ग, नागर, ऐरावत, नागरुक, चक्राधिवासी, किर्मिर, किर्मीरत्वक् मुखप्रिय, सुरंग, त्वग्गंध, इरावत, वक्रवास, योगरंग, गंधाढ्य, गंधपत्र, वरिष्ठ)

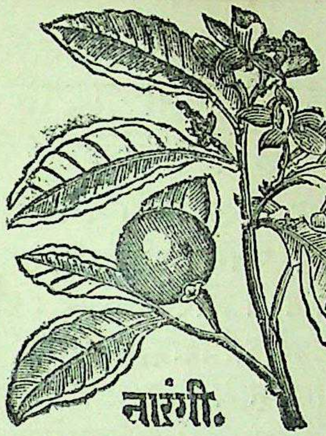

नारंगी.

संस्कृतभाषामें	नागरंग, नारंग ।
हिन्दीभाषामें	नारंगी ।
बंगभाषाम	नारंगालेबु ।
मराठीभाषामें	नारिंग ।
गुजरातीभाषामें	नारंगीलिंबु ।
कर्णाटकीभाषामें	माधवला ।
तैलिङ्गीभाषामें	दयाकाया, गजनिम्म, नारंजिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	किचिलि ।
औत्कलीभाषामें	नारिंगी ।
इंग्रेजभाषामें	ऑरेंज । Orange
लैटिन्भाषामें	साईट्रस् औरेंटियम् । Cltrus aurantium
फारसीभाषाम	नारंज ।
अरबीभाषामें	नारंज ।

अस्य फलगुणाः ।

नागरङ्गं तु सुरभि विपाके दुर्ज्जरं गुरु ।
नात्यम्लमीषन्मधुरं वृष्यं वातविनाशनम् ॥

अर्थ-नारंगी-सुगन्धि, अतिकठिनतासे पचनेवाली, भारी, किञ्चित् अम्ल, किञ्चित् मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

नारंगं कफपित्तामकारकं दुर्ज्जरं सरम् । अत्यम्लं वातहरकं

चात्युष्णं च मतं बुधैः ॥ मधुरं तच्चामधुरं हृद्यमम्लं बलप्रदम् । विशदं गुरु रुच्यं च सरं चोष्णसुगन्धिकम् ॥ स्वादु चामं कृमीन्वातं श्रमं शूलं च नाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-नारंगी (मधुर और अम्ल)दोनों प्रकारकी-कफ,पित्त और आमकारक है । कठिनतासे पचनेवाली, कुछेक दस्तावर, अत्यन्त अम्ल, वातनाशक,अत्यन्त उष्ण और मधुर है । खट्टी नारंगी-हृदयको हितकारी,अम्ल,बलवर्द्धक,विशद,भारी, रुचिकारक, सारक, उष्ण,सुगंधि,स्वादु तथा आम,कृमि,वात,श्रम और शूलका नाशकरेहै

विवरण-नारंगीके वृक्ष मध्यमजातिके बागोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते नींबूके समान होतेहैं फूल अत्यन्त सुगंधित,और सफेद रंगके आते हैं,फल गोल २ होतेहैं,कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर लाल सिंदूरिया रंगके होजातेहैं,बागेश्वरकी नारंगी सर्वत्र स्थानोंमें प्रसिद्ध है।

बीजपूरनामानि।

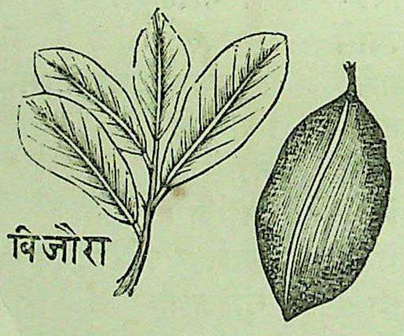

बीजपूरो मातुलुंगो रुचकः फलपूरकः ॥

अर्थ-बीजपूर, मातुलुंग, रुचक, फलपूरक (अम्लकेशर,बीजपूर्ण, पूर्णबीज, सुकेशर, बीजक, मातुलुङ्ग, सुपूर, बीजफलक, जन्तुघ्न, दन्तुरच्छद, पूरक, रोचनफल)

संस्कृतभाषामें	बीजपूर ।
हिन्दीभाषामें	बिजोरा नींबु ।
वंगभाषामें	टावालेबु ।
मराठीभाषामें	महाळुंग ।

गुजरातीभाषामें	बीजोरुलिंबु ।
इंग्रेजीभाषामें	साईट्रस् । Citrus
लैटिन्भाषामें	साईट्रस् एसीडा । Citrus acida
	साईट्रस् मेडिका । Citrus Madica
फारसीभाषामें	तुरंज ।
अरबीभाषामें	उतरंज ।

अस्य फलगुणाः ।

बीजपूरफलं स्वादु रसेऽम्लं दीपनं लघु ।
रक्तपित्तहरं कण्ठजिह्वाहृदयशोधकम् ॥
श्वासकासारुचिहरं हृद्यं तृष्णाहरं स्मृतम्। (भा० प्र०)

अर्थ-बिजोरानींबू-स्वादिष्ठ, खट्टा, दीपन, हलका, रक्तपित्तनाशक, कंठशोधक, जिह्वाशोधक, हृदयशुद्धिकारक तथा श्वास, खाँसी, अरुचि, तृषानाशक है और हृदयको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

मातुलुंगफलं चाम्लमुष्णं कंठविशोधकम् । तीक्ष्णं लघु प्रियं चाग्निदीपकं रुचिकारकम् । स्वादुश्च जिह्वाहृदयशोधकं पित्तवातनुत् । कफश्वासतृषाकासान्हिक्कां चैव विनाशयेत् ॥ अरुचिं रक्तपित्तं च नाशयेदिति कीर्तितम् । तच्च बालं मातुलुङ्गं पित्तवातकफप्रदम् ॥ रक्तरुक्कारकं चैते मध्यमस्यापि ते गुणाः । पक्वं महावर्णकरं हृद्यं बल्यं च पौष्टिकम् । शूलाजीर्णविबन्धघ्नं वातं श्वासं कफं जयेत् ॥ अग्निमांद्यं च शोफं च कासारोचकनाशकम् । फलत्वग्दुर्जरा तिक्ता तीक्ष्णोष्णा स्निग्धका गुरुः । कृमिवातकफान्हन्ति त्वग्द्रवः साधुशीतलः ॥ गुरुर्धातोर्वृद्धिकरः स्निग्धः कफकरः स्मृतः । वातपित्तहरः प्रोक्तः प्रोक्तोऽन्तर्भागको मधुः ॥ वातं शूलं कफं छर्दिमरोचस्य च नाशकः । केसरं दीपनं मेध्यं लघु ग्राहि रुचिप्रदम् ॥ गुल्मोदरश्वासकासहिक्कावातमदात्ययान् । मदशोषविबन्धार्शोवांतीश्च नाशयत्यलम् । केसरस्य रसः पार्श्ववस्तिशूलकफा-

रुचीः। वातं च श्वासकासं च छर्दिं चैव विनाशयेत्॥ बीजं तु मातुलुंगस्य गर्भदं दुर्जरं गुरु। उष्णं तिक्तं दीपनं च बल्यमर्शोरुजापहम् ॥ वातपित्तशोफकफान्नाशयेदिति कीर्तितम्। फलमज्जा गुरुः शीता स्वाद्वी स्निग्धा बलप्रदा॥ वातपित्ते नाशयेच्च मूलमर्शकृमीहरम्। विषूचीमलबन्धं च शूलं चैव विनाशयेत्॥ पुष्पं तु मातुलुंगस्य दीपनं ग्राहि शीतलम्। लघु वातं रक्तपित्तं नाशयेदिति कीर्तितम्॥

अर्थ-विजोरा नींबू-खट्टा, गरम, कंठशोधक, तीक्ष्ण, हलका, प्रिय, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, स्वादिष्ठ, तथा जिह्वा और हृदयको शुद्ध करनेवाला तथा पित्त, वात, कफ, श्वास, तृषा, खाँसी, हिचकी, अरुचि और रक्तपित्तको दूर करे है। कोमल विजोरा-पित्त, वात, कफ और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करै है। मध्यम अवस्थाके विजोरेकेभी कोमल अर्थात कच्चे विजोरेकी समान गुण हैं। पक्का विजोरा-देहको सुन्दर करनेवाला, हृदयको हितकारी, बलकारक,पुष्टिजनक तथा शूल, अजीर्ण, विबन्ध, वात, श्वास, कफ, मन्दाग्नि, सूजन, खाँसी और अरुचिको हरनेवाला है। विजोरेका बक्कल-दुर्जर,कडवा, तीक्ष्ण,गरम,स्निग्ध, भारी तथा वात और कफको दूर करे है। विजोरेके बक्कलका रस-स्वादु, शीतल,भारी,धातुवर्द्धक,स्निग्ध,कफकारक और वातपित्तनाशक है। विजोरेके बक्कलके अन्तरका भाग-मधुर तथा वात, शूल, कफ, वमन और अरुचिको दूर करे है। विजोरेकी केशर-दीपन, मेधाकारक, हलकी, मलरोधक, रुचिकारक तथा गुल्म, उदररोग, श्वास, खाँसी, हुचकी, वात, मदात्यय, उन्माद, शोष, विबन्ध, अर्श और वमनको दूर करनेवाली है। विजोरेकी केसरका रस-पार्श्व, वस्तिशूल, कफ, अरुचि, वात, श्वास, खाँसी और वमनका नाश करे है। विजोरेके बीज-गर्भदायक,अतिकठिनतासे पचनेवाले, भारी,गरम,दीपन, बलवर्द्धक तथा बवासीर,वात, पित्त, सूजन और कफका नाशकरे है। विजोरेके बीजकी मींग भारी,शीतल, स्वादु, स्निग्ध, बलवर्द्धक तथा वात और पित्तका नाश करे है। विजोरेके वृक्षकी जड-अर्शरोग, कृमि, विषूची, मलबन्ध और शूलका

नाश करे है। बिजौरेके फूल-दीपन,मलरोधक, शीतल, हलके तथा वात और रक्तपित्तका नाश करे हैं।

ऋतुपरत्वेनानुपानगुणाः।

सिन्धूत्थेनघनागमेच सितया काले शरत्संज्ञकेहेमन्तेलवणार्द्र-
हिंगुमरिचैः सिद्धार्थतैलान्वितैः॥एतैस्तैः शिशिरे मधाव पियुतै-
र्ग्रीष्मे गुडेनान्वितं वैद्यैर्भूमिपमातुलुंगमुदितं सर्वत्र साधारणम्

अर्थ-बिजौरेको-वर्षाऋतुमें सैन्धवलवणके साथ, शरद्ऋतुमें मिश्रीके साथ, हेमन्तऋतुमें लवण, अदरख, हींग और मिर्चके साथ, शिशिरऋतुमें और वसंतऋतुमें सरसोंके तेलके साथ और ग्रीष्मऋतुमें गुडके साथ सेवन करना चाहिये।

वनबीजपूरगुणाः।

अम्लः कटूष्णो वनबीजपूरो रुचिप्रदो वातविनाशनश्च।
स्यादामदोषक्रिमिनाशकारीकफापहः श्वासनिषूदनश्च (रा.नि.)

अर्थ-वनबिजोरानींबू-खट्टा, चरपरा, गरम, रुचिदायक,वातविनाशक तथा आमदोष, कृमि, कफ और श्वासको दूर करे है।

मधुरमातुलुङ्गगुणाः।

मधुरं मातुलुंगं तु शीतं रुचिकरं मधु।गुरु वृष्यं दुर्जरं च स्वादिष्ठं
च त्रिदोषनुत्।पित्तं दाहं रक्तदोषान्विबन्धश्वासकासकान्॥
क्षयं हिक्कां नाशयेच्च पूर्वैरेवमुदाहृतम्।

अर्थ-मधुरमातुलुंग-शीतल, रुचिकारक, मधुर, भारी, वीर्यवर्द्धक, दुर्जर, स्वादिष्ठ तथा त्रिदोष, पित्त, दाह, रुधिरविकार, मलबंध, श्वास, खांसी, क्षय और हुचकीको दूर करे है।

विवरण। बिजोरेके वृक्ष बागोंमें होते हैं, इसके पत्ते नींबूके पत्तोंसेही मिलते हैं, परन्तु लम्बाई चौडाईमें इससे आठ दशगुने होते हैं, फूल सपेद आता है,फल लम्बा और गोल होता है, किसी किसी देशमें जंगली बिजोरा होता है, दूसरा मीठा बिजोरा होता है।

निम्बूकनामानि।

निम्बूकंस्यादम्लजम्बीरकाख्यंवह्निदीप्यो वह्निबीजोम्लसारः
दन्ताघातःशोधनो जन्तुमारी निम्बूकः स्याद्रोचनो रुद्रसंज्ञः

अर्थ-निम्बूक, अम्लजम्बीर, वह्निदीप्य, वह्निबीज, अम्लसार, दन्ताघात, शोधन, जन्तुमारी, निम्बूक, रोचन ।

जम्बीरनामानि ।

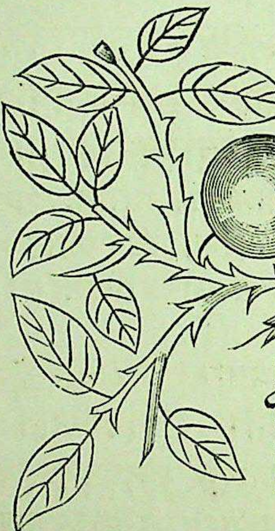

नींबू (क)

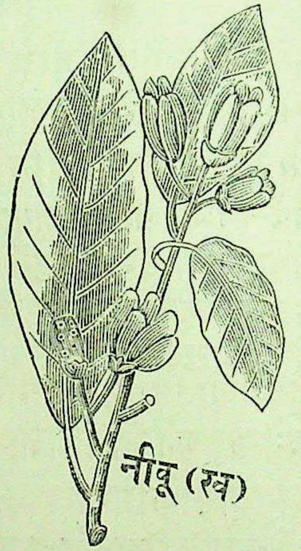

नींबू (ख)

जम्बीरो दन्तशठो जम्भजम्भीरजम्भलश्चैव ।
रोचनको मुखशोधी जाड्यारिर्जंतुजिन्नवधा ॥

अर्थ-जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर, जम्भल, रोचनक, मुखशोधी, जाड्यारि, जन्तुजित् (जम्भल, जम्भक, जम्भर, दन्तहर्षण, दन्तकर्षण, गम्भीर, जम्भिर, रेवत वक्त्रशोधी, दन्तहर्षक, जम्भी)

संस्कृतभाषामें	निम्बूक, जम्बीर ।
हिन्दीभाषामें	नींबू, कागजीनींबू, जम्भीरीनींबू विहारीनींबू, कन्नानींबू, मीठानींबू ।
वंगभाषामें	कागजालिबु, जामीरलेबु, पातीलेबु, कमलालेबु ।
मराठीभाषामें	कागदीलिंबु, ईडालिंबु, मोठेईडलिंबु, साखरालिंबु।
गुजरातीभाषामें	कागदीलिंबु, दोडिंगलिंबु, मीठालिंबु ।
कर्णाटकीभाषामें	काचिले, कानिले ।
तैलङ्गीभाषामें	निम्मपंडु, जंभिरमु ।
इंग्रेजीभाषामें	लेमन्स । Lemons
लैटिन्भाषामें	लेमोनं एसिडं । Lemonum acidum

लेमोनिस्कोर्टिक्स ।

फारसीभाषामें लिमुनेतुर्श, लिमुनेशिरि ।
अरबीभाषामें लिमुनेहामिज ।

निम्बूकगुणाः।

निम्बूकमम्लं वातघ्नं दीपनं पाचनं लघु ।
निम्बुकं कृमिसमूहनाशनं तीक्ष्णमम्लमुदरश्रमापहम् ।
वातपित्तकफशूलिने हितं कष्टनष्टरुचिरोचनं परम्॥ (भा.प्र.)

अर्थ-नीम्बू-खट्टा, वातनाशक, दीपन, पाचक, हलका, कृमिसमूहनाशक, तीक्ष्ण, उदररोगनाशक, श्रमहारक, वात, पित्त, कफ और शूलमें हितकारी, अरुचिनिवारक और रोचन है ।

अन्यच्च ।

त्रिदोषसद्योज्वरपीडितानां दोषाश्रितानां च स्रवज्जलानाम् ।
मलग्रहे बद्धगुदे हितं च विषूचिकायांमुनयो वदन्ति॥(आ.सं.)

अर्थ-नींबू-त्रिदोषजन्य रोग, तत्कालके ज्वर अनेक प्रकारके मंदाग्निके रोग, मुखादिकसे पानीका गिरना, मलग्रह, गुदबद्धता और विबूचिकारोगमें अत्यंत हितकारी है ।

अपिच ।

निम्बूफलं रोचनमग्निवृद्धिं करोति पित्तं च सवातरक्तम् ।
अचाक्षुषंश्लेष्मकरंविशेषाद्भुक्तस्यपाकंकुरुतेचसद्यः ॥(सुषेण)

अर्थ-नींबू-रोचन, अग्निदीपक,पित्तजनक,वातरक्तकारक,नेत्रोंको अहितकारी, कफकारक और विशेषकरके खायेहुए भोजनको पचानेवाला है।

अन्यच्च ।

त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीडितानां विषविह्वलानाम् ।
मंदानले बद्धगुदे च देयं विषूचिकायां मुनयो वदन्ति ॥

अर्थ-नींबू-त्रिदोष, वह्निक्षय और वातरोगसे पीडित किये हुए मनुष्योंको तथा विषसे विह्वल कियेहुए मनुष्योंको और मंदाग्नि, कोष्ठरोध तथा विषूचिका रोगमें देना चाहिये।

अन्यच्च ।

निम्बूष्णं पाचकं चाम्लं दीपनं नेत्रयोर्हितम् । अतिरुच्यं च

कटुकं तुवरं च मतं लघु ॥ कफवातं वमिं कासं कण्ठरोगं क्षयं तथा। पित्तं शूलं त्रिदोषं च मलस्तम्भं विषूचिकाम् । बद्धोदरं चामवातं गुल्मं चैव कृमीञ्जयेत् । तत्पक्वं च गुणैः श्रेष्ठं प्रोक्तं वैद्यविशारदैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-नींबू-गरम, पाचक, खट्टा, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, अतिशय रुचिकारक, कटु, कषला, हलका तथा कफ, वात, वमन, खाँसी, कण्ठरोग, क्षय, पित्तशूल, त्रिदोष, मलस्तम्भ, विषूचिका, बद्धगुदोदर, आमवात, गुल्म और कृमिको दूर करे है । पक्का नीम्बू गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

जम्भीरगुणाः ।

जम्बीरं मधुरं किञ्चिदत्यम्लं पित्तकृद्गुरु ।
सुगन्धि दुर्ज्जरं वह्निकफवातविबन्धनुत् ॥ (रा० व०)

अर्थ-जम्भीरीनींबू-किञ्चित् मधुर, अत्यन्त खट्टा, पित्तकारी, भारी, सुगन्धित, दुर्ज्जर तथा अग्नि, वायु और कफकी विबन्धताको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

जम्बीरस्य फलं रसेऽम्लमधुरं वातापहं पित्तकृत्
पथ्यं पाचनरोचनं बलकरं वह्नेर्विवृद्धिप्रदम् ।
पक्वं चेन्मधुरं कफार्तिशमनं पित्तास्रदोषापनु-
द्वर्ण्यं वीर्य्यविवर्द्धनं रुचिकरं पुष्टिप्रदं तर्पणम् (रा० नि०)

अर्थ-जम्भीरीनींबू-अम्ल, मधुर, वातनाशक, पित्तजनक, पथ्य, पाचक, रोचन, बलकारक आर अग्निवर्द्धक है । पक्काजम्भीरीनींबू-मधुर, कफनाशक, रक्तपित्तनिवारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, पुष्टिकारक और तृप्तिदायक ह ।

अपिच ।

जम्बीरमुष्णं गुर्वम्लं वातश्लेष्मविबन्धनुत् । शूलं कासकफोत्क्लेशच्छर्दितृष्णामदोषजित् ॥ आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमान्द्यं कृमीन् हरेत् । स्वल्पजम्बीरिका तद्वत्तृष्णाछर्दिनिवारिणी ॥ (रा०)

अर्थ-जम्भीरीनींबू-गरम, भारी, अम्ल, वातकफनाशक, विबन्धानिवा-

रक तथा शूल, खाँसी, कफ, उत्क्लेश, वमन, तृषा, आमदोष, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा, मंदाग्नि और कृमिको दूर करे है। छोटी जम्भीरीके गुणभी बडीकी समान जानने विशेषकरके यह तृषा और वमनको दूर करे है।

लिम्पाकगुणाः।

लिम्पाकं सुरभि स्वादु नात्यम्लं भक्तरोचनम्।
वातश्लेष्महरं हृद्यं छर्दिघ्नं नातिपित्तकृत्॥(राजवल्लभ)

अर्थ-लिम्पाक (जम्बीरभेद) सुगन्धि, अत्यन्त अम्ल नहीं, अन्नरोचक, वातश्लेष्मनाशक, हृदयको हितकारी, वमननिवारक और कुछेक पित्तकारक ह।

करुणगुणाः।

करुणं कफवातास्रमेदोघ्नं पित्तकोपनम्॥ (रा० व०)

अर्थ-कन्नानींबू-कफ, वातरक्त और मेदरोगनाशक है तथा पित्तवर्द्धक है।

निम्बूकसाधारणगुणाः।

अशीतमम्लमग्निकृत्समस्तशूलगुल्महृत्।
अरोचकं विषूचिकां कृमींश्च निंबु नाशयेत्॥

अर्थ-साधारणनींबू पित्तकारक, खट्टा, अग्निवर्द्धक, सर्व प्रकारके शूल और गुल्मको नाश करनेवाला तथा अरुचि, विषूचिका और कृमिरोगको हरनेवाला है।

बृहज्जम्बीरगुणाः।

बृहज्जम्बीरकं चाम्लं तुवरं तिक्तकं सरम्।
उष्णं पित्तकफघ्नं च पाचनं परिकीर्त्तितम्॥
ये गुणा लघुजंबीरे ते वृद्धे सन्ति चाखिलाः।

अर्थ- बडाजम्भीरीनींबू-खट्टा, कषला, कडवा, सारक, गरम, पित्तकफनाशक, पाचक। जो गुण बडे जम्भीरीनींबूमें हैं वही गुण छोटे जम्भीरीनींबूमें जानने।

मधुकुक्कुटिगुणाः।

मधुकुक्कुटिका शीता श्लेष्मलास्यप्रसादनी।
रुच्या स्वादुर्गुरुः स्निग्धा वातपित्तविनाशिनी॥(रा०व०)

अर्थ-मीठाजम्भीरीनींबू-शीतल, कफकारक, मुखको निर्मल करनेवाला, रुचिकारक, स्वादिष्ट, भारी, स्निग्ध तथा वात और पित्तनाशक है।

मिष्टनिम्बुगुणाः ।

मिष्टनिम्बूफलं स्वादु गुरु मारुतपित्तनुत् ।
गररोगविषध्वंसि कफोत्क्लेशघ्नरक्तहृत् ॥
शोषारुचितृषाछर्दिहरं बल्यं च बृंहणम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मीठानींबू-स्वादिष्ठ, भारी, वातपित्तनाशक, गररोगनाशक, विषविनाशक तथा कफ, उत्क्लेश, रुधिरविकार, शोष, अरुचि, तृषा और वमनको दूर करे है, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक है ।

मधुकर्कटीगुणाः ।

मधुकर्कटिका स्वाद्वी रोचनी शीतला गुरुः ।
रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चकोतरा-स्वादिष्ठ, रोचक, शीतल, भारी तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, खाँसी, हिचकी और भ्रमको दूर करनेवाला है ।

जम्बीरपत्रगुणाः ।

पत्रं जम्बीरजं तीक्ष्णं कृमिवातकफापहम् ।
सुरभि दीपनं रुच्यं मुखवैशद्यकारकम् ॥

अर्थ-जम्भीरीनींबूके पत्ते-तीक्ष्ण, कृमिहारक, वातनिवारक, कफनाशक, सुगन्धित, दीपन, रुचिकारक और मुखको निर्मल करनेवाले हैं ।

विवरण । नींबूके वृक्ष, बागोंमें होते हैं, किन्तु किसी २ देशमें वनमें भी देखपडते हैं, पत्ते सर्वप्रकारके नींबुओंके गोल होते हैं नींबुओंके पत्तोंमें केवल छोटे बडेकाही अन्तर अर्थात् किसीके पत्ते छोटे और किसीके बडे होते हैं, सर्वप्रकारके नींबूओंके फूल सफेद और सुगन्धियुक्त होते हैं, फल कच्ची अवस्थामें नीले और पकनेपर पीले पडजाते हैं, नींबू जम्भीर, कागजी, विहारी, कन्ना, मीठानींबू, चकोतरा, नारंगी, संतरा, विजोरा इत्यादि अनेक जातिके होतेहैं ।

तिन्तिडीनामानि ।

अम्लिका चुक्रिकाम्ली च चुक्रा दंतशठापि च ।
अम्ला च चिंचिका चिंचा तिन्तिडीका च तित्तिडी ॥

अर्थ-अम्लिका, चुक्रिका, आम्ली, चुक्रा, दंतशठा, अम्ला, चिंचिका, चिंचा, तिन्तिडीका, तित्तिडी । (तिन्तिडीक, तिन्तिडिका वृक्षाम्ल,

अम्लीका, आम्लिका, आम्लीका, तिन्तिड, तिन्तिली, तिन्तिका, आम्लिका, चुक्र, अत्यम्ला, भुक्ता, भुक्तिका, चारित्रा, गुरुपत्रा, पिच्छिला, यमदूतिका, चरित्रा, शाकचुक्रिका, सुचुक्रिका, सुतिन्तिडी, पंक्तिपत्रा, सर्वाम्ला)

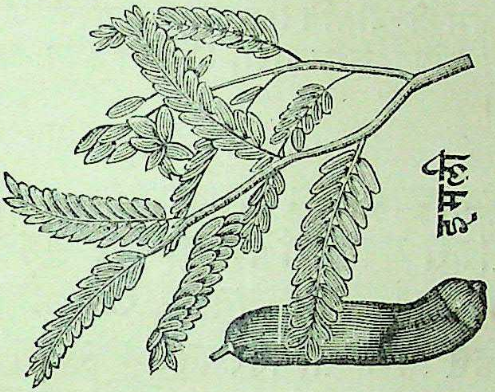

संस्कृतभाषामें	तिन्तिडी ।
हिन्दीभाषामें	इमली ।
वंगभाषामें	तेंतुल ।
मराठीभाषामें	चिंच ।
गुजरातीभाषामें	आंबली ।
कर्णाटकीभाषामें	हुणिसे, हुणिसेहण्णु, हुणिसिनयले ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिंताचेट्टु, चिण्ट ।
औत्कलीभाषामें	कंआं ।
तामिलीभाषामें	पुळि ।
वम्०	टिन्टज ।
इंग्रेजीभाषामें	टेमेरिंडट्री । Tamarind Tree
लेटिन्भाषामें	टेमेरिंडस् इंडिकस् । Tamarindus indicus
अरबीभाषामें	तमरहिंदी ।

अस्य फलगुणाः ।

अम्लिकाम्ला गुरुर्वातहरी पित्तकफास्रकृत् ।
पक्वा तु दीपनी रूक्षा सरोष्णा कफवातनुत्॥(भा०प्र०)

अर्थ-कच्ची इमली-भारी, वातनाशक, पित्तजनक, कफकारक और रक्तको दूषित करैहै । पक्की इमली-दीपन, रूखी, कुछेक दस्तावर, गरम, कफ तथा वातनाश करैहै ।

अन्यच्च ।

अम्लिकायाः फलं बालं वातघ्नं कफपित्तकृत् ।
तत्पक्वं दीपनं रुच्यमत्युष्णं कफवातजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-कच्ची इमली-वातविनाशक, कफकारक और पित्तजनक है। पक्की इमली-दीपन, रुचिकारी, अत्यन्त उष्ण तथा कफ और वातको जीतेहै ।

अपिच ।

चिंचावृक्षो गुरुश्चोष्णश्चाम्लः पित्तकफप्रदः । रक्तकोपनकारी च वातनाशकरो मतः ॥ चिंचापुष्पं तु तुवरं स्वाद्वम्लं च रुचिप्रदम् । विशदं चाग्निजनकं लघु वातकफापहम् ॥ प्रमेहघ्नं समुद्दिष्टं पर्णं शोथहरं मतम् । रक्तदोषहरं चैव फलं चास्य तु कोमलम् ॥ अत्यम्लं ग्राहकं चोष्णं रुच्यं चाग्निप्रदीपकम् । रक्तपित्तस्य पित्तस्य कफरक्तस्य कोपनम् ॥ वातनाशकरं प्रोक्तं तत्पक्वं वातलं मतम् । कफपित्तकरं चैव तत्पक्वं मधुरं सरम् ॥ अम्लं हृद्यं भेदकं च मलस्तम्भकरं मतम् । दीपनं रुचिदं चोष्णं रूक्षं वस्तिविशोधनम् ॥ व्रणदोषं कफं वातं जन्तूंश्चैव विनाशयेत् । शुष्कं चिंचाफलं हृद्यं लघु भ्रान्तिश्रमापहम् ॥ तृषाहरं क्लमहरं कृमिनाशकरं मतम् ॥

अर्थ-इमलीका वृक्ष-भारी, गरम, खट्टा, पित्तजनक, कफकारक, रक्तप्रकोपक और वातविनाशक है। इमलीके फूल-कषेले, स्वादु, अम्ल, रुचिकारक, विशद, अग्निदीपक, हलके तथा वात, कफ और प्रमेहको दूर करे हैं । इमलीके पत्ते-सूजन और रुधिरविकारको हरनेवाले हैं। कच्ची इमली-अत्यन्त खट्टी, मलरोधक, गरम, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक तथा रक्तपित्त, कफ और रक्तको कुपित करनेवाली है तथा वातनाशक है। तरुण इमली-बादी, और पित्तको उत्पन्न करनेवाली है। पकीहुई इमली-मधुर, सारक, खट्टी, हृदयको हितकारी, दस्तावर, मलस्तम्भक, दीपन, रुचिकारक, गरम, रूखी, वस्तिशोधक तथा व्रणदोष, कफ, वात और कृमिनाश करनेवाली है, सूखी इमली-हृदयको हितकारी, हलकी तथा श्रम, भ्रान्ति, तृषा, क्लम और कृमिका नाश करे है।

चिंचा तु नूतना वातकफस्य कारिणी मता ।
सा वार्षिकी वातपित्तनाशिनी परिकीर्त्तिता ॥

अर्थ-नवीन इमली-वात और कफको उत्पन्न करे है । एक वर्षकी इमली-वात-पित्तनाशक है ।

चिंचाक्षारश्चाग्निमांद्यशूलनाशकरो मतः ॥

अर्थ-इमलीका क्षार-मंदाग्नि और शूलको निर्मूल करे है ।

पक्वचिंचारसश्चाम्लो मधुरो रुचिकृन्मतः ।
व्रणनाशकरश्चैव लेपनाच्छोथपंक्तिहृत ॥

अर्थ-पक्वीइमलीका रस-अम्ल, मधुर, रुचिकारक, व्रणविनाशक तथा इसका लेप करनेसे-सूजन और पंक्तिशूल नष्ट होता है ।

चिंचासारं दाहकफकारकं चातिअम्लकम् ।
वातनाशकरं प्रोक्तं समानशर्करायुतम् ॥
दाहं पित्तं कफं चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-इमलीका सार-दाह और कफकारक, अत्यन्त खट्टा और वातविनाशक है । उसी सारमें बराबरकी खाँड मिला लीजाय तो दाह, पित्त और कफको हरनेवाला होजाता है ।

विवरण । इमलीके वृक्ष बहुत बडे२ उँचे और सघन जंगल तथा नगरके निकट घर बाहर सर्वत्र स्थानोंमें होते हैं, पत्ते चौंटलीके समान डालियोंमें दोनों ओर बराबर लगे होते हैं, और खट्टे होते हैं, फूल गुच्छोंमें लगे होते हैं, रंग पीला २ उनमें कुछ लाल लाल बिन्दुसे पडे होते हैं; फलियें कटारके समान तिरछी और लम्बी होती हैं, उसको भी कटारा कहते हैं, उन कटारोंपर सूखे हुए छिलके होते ह, छिलकोंको छीलनेसे गूदा निकलता है, परन्तु उस गूदेके भीतरभी बीज निकलते हैं उनको चोइये कहते हैं, यह इमली दो प्रकारकी होती है, एक लाल गूदेकी दूसरी सपेद गूदेकी ।

आलुकनामानि ।

आरुकं वीरसेनं च वीरं वीरारुकं तथा ।
तच्च विद्याच्चतुर्जातिपत्रपुष्पादिभेदतः ॥

अर्थ-आरुक, वीरसेन, वीर, वीरारुक (आलूक, मल्ल, भल्लूक भल्ल, रक्तफल) इसकी पत्र और पुष्पादिके भेदसे चार जाति हैं ।

आलूबुखारा.

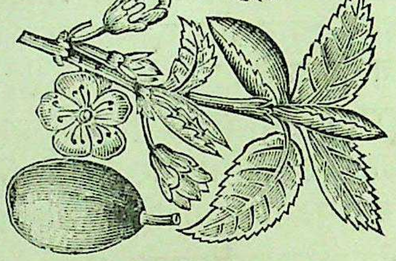

संस्कृतभाषामें	अरुक ।
हिन्दीभाषामें	आलुबुखारा ।
मराठीभाषामें	वीरारुक ।
गुजरातीभाषामें	आलु ।
कर्णाटकीभाषामें	आरुक ।
इंग्रेजीभाषामें	चेरिप्लम् । Cherry Plum प्रुन Piune
लैटिन्भाषामें	प्रुनस् बूखेंयेनासिस् । Prunus bookhariensis प्रुनस् कोम्युनीस् । Prunus Communis
फारसीभाषामें	आलुस्या ।
अरबीभाषामें	इज्जास् ।

आलुकगुणाः ।

आरुको ग्राही तुवरो हृद्यः शीतो गुरुः स्मृतः । मलावष्टम्भको ग्राही भेदी चोष्णः कफापहः ॥ पित्तहृत्पाचकश्चाम्लो मधुरश्च सुखप्रियः ॥ मुखस्वच्छकरश्चैव मेहगुल्मार्शनुत्परः ॥ रक्तवातरुजां हन्ता स पक्को मधुरो गुरुः । कफपित्तकरश्चोष्णो रुच्यो धातुविवर्द्धकः ॥ प्रियश्चैव तथा प्रोक्तो मेहार्शज्वरवातहा ।

(नि० र०)

अर्थ-आलुबुखारा-मलरोधक, कषेला, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, मलस्तम्भक, ग्राही, दस्तावर, गरम तथा कफपित्तनाशक, पाचक, अम्ल, मधुर, मुखप्रिय, मुखको स्वच्छ करनेवाला तथा प्रमेह, गुल्म, बवासीर और रक्तवातका नाश करनेवाला है। पकाहुवा आलुबुखारा-मधुर, भारी, कफकारक, पित्तजनक, गरम, रुचिकारक, धातुवर्द्धक, प्रिय तथा प्रमेह, बवासीर, ज्वर और वातको हरनेवाला है ।

विवरण। आलुबुखारेके वृक्ष प्रायः बलख बुखारे और सिंहलद्वीपमें विशेष होतेहैं। एक देशी आलुबुखारा इस देशमें होने लगाहै।

भव्यनामानि।

भवं भव्यं भविष्यं च भावनं वक्रशोधनम्।
तथा पिच्छलबीजं च तच्च लोमफलं स्मृतम्॥

अर्थ-भव, भव्य, भविष्य, भावन, वक्रशोधन, पिच्छलबीज, लामफल (आविक, संपुटांग, कुसुमोदर)

संस्कृतभाषामें	भव्य।
हिन्दीभाषामें	ओट।
वङ्गभाषामें	चालते।
मराठीभाषामें	ओंटीच झाड, ओंटीचें फळ।
गुजरातीभाषामें	ओंटफल, करमल।
फारसीभाषामें	चकी।

लाटन्भाषामें गारसीनिया झेंथोचाईमस् Garcinia Znathochymus

अस्य गुणाः।

भव्यमम्लकटूष्णं च बालं वातकफापहम्।
पक्वं तु मधुराम्लं च रुचिकृच्छ्रमशूलहृत्॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-कच्चा भव्यफल-अम्ल, चरपरा, गरम तथा वात और कफनाशक है। पक्का भव्यफल-मधुर, अम्ल, रुचिकारक तथा श्रम और शूलनाशक है।

अन्यच्च।

भव्यं स्वादु कषायाम्लं हृद्यमास्यविशोधनम्।
तदेव पक्वं दोषघ्नं गुरु ग्राहि विषापहम्॥ (रा॰ व॰)

अर्थ-भव्यफल-स्वादिष्ठ, कषेला, खट्टा, हृदयको हितकारी और मुखको शुद्ध करनेवाला है। पकाहुआ भव्यफल-त्रिदोषनाशक, भारी, मलरोधक और विषनाशक है।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होताहै, फूल सपेद और पीले रंगके वर्षाऋतुमें आतेहैं, उनमें सुगन्धि आतीहै, कलकत्ते और जगन्नाथकी ओर अधिक होताहै, फल ताडके फलके आकारका होताहै, फलके भीतरका गूदा चिकना होताहै। इसको खटाई इत्यादिकी जगह दालमें डालतेहैं।

वृक्षाम्लनामानि।

वृक्षाम्लं तिन्तिडीकं च चुक्र स्यादम्लवृक्षकम्।

अर्थ-वृक्षाम्ल, तिन्तिडीक, चुक्र, अम्लवृक्षक, (अम्लशाक, चुक्राम्ल, तिन्तिडीफल, शाकाम्ल अम्लपूर, पूराम्ल, रक्तपूरक, चूडाम्ल, बीजाम्ल, फलाम्लक, अम्लवृक्ष, अम्मफल, रसाम्ल, श्रेष्ठाम्ल, अत्यम्ल, अम्लबीज, चुक्रफल)

संस्कृतभाषामें	वृक्षाम्ल।
हिन्दीभाषामें	विषाम्बिल। तत्तडीक।
वंगभाषामें	महाद्,(भ)अम्लकुटा,(सार०हु-चुका-(भा०दी०) तेंतुल, (मु)।
मराठीभाषामें	आमसोल (को०) कोकंबसोल।
गुजरातीभाषामें	कोकम।
कर्णाटकीभाषामें	तित्तीडिक।
इंग्रेजीभाषामें	कोकंबटरट्री। Kokum Butts tree
लैटिन्भाषामें	ग्यारसीनिआ परप्यूरिआ। Oarcinia Purpurea
गोवा०	ब्रिडोओ।

अस्य गुणाः।

वृक्षाम्लमाममम्लोष्णं वातघ्नं कफपित्तलम्। पक्वं तु गुरु संग्राहि कटुकं तुवरं लघु॥ अम्लोष्णं रोचनं रूक्षं दीपनं कफवातकृत्। तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजन्तुजित्।

अर्थ-कच्चा विषांबिल-खट्टा, गरम, वातनाशक, कफकारक और पित्तजनक है। पक्का-विषांबिल भारी, मलरोधक, चरपरा, कषेला, हलका, खट्टा, गरम, रोचन, रूखा, दीपन, कफकारक, वातवर्द्धक तथा तृषा, ववासीर, संग्रहणी, गुल्म, शूल, हृदयरोग और कृमिको दूर करे है।

विवरण। विषांबिलके वृक्ष गोवाकी ओर होतेहैं देखनेमें अत्यन्त सुन्दर ओर झाडेदार होतेहैं, पत्ते लम्बे और चिकने, शीत ऋतुमें आतेहैं और वसन्तऋतुमें फल लगते हैं, फल नारंगीके समान होतेहैं इसके सब अंग खट्टे होतेहै।

अम्लवेतसनामानि।

स्यादम्लवेतसश्चुक्रः शतवेधी सहस्रजित्।

अर्थ-अम्लवेतस, चुक्र, शतवेधी, सहस्रजित (अम्ल, बोधि, रसाम्ल, आम्लवेतस, वेतसाम्ल, अम्लसार, वेधक, भीम, भेदन, भेदी, राजाम्ल, अम्लभेदक, अम्लांकुश, रक्तसार, फलाम्ल, अम्लनायक, सहस्रवेधी, वीराम्ल, गुल्मकेतु, वराभिध, शंखद्रावी, मांसद्रावा, वराङ्गी, गुल्महा, महाक्षार)

संस्कृतभाषामें	अम्लवेतस।
हिन्दीभाषामें	अमलवेंत।
बंगलाभाषामें	थैकड़, अम्लवेतस।
मराठीभाषामें	चुका।
गुजरातीभाषामें	अमलवेत।
इंग्रेजीभाषामें	कामन् सोरेल। Common Soral
लैटिन्भाषामें	आसीडो झेफोलिया। Acido Zeyfolia
फारसीभाषामें	तुर्षक।

अस्य फलगुणाः।

अम्लवेतसमत्यम्लं भेदनं लघुदीपनम्। हृद्रोगशूलगुलमघ्नं पित्तलं लोमहर्षणम्॥ रूक्षं विण्मद्यदोषघ्नं प्लीहोदावर्त्तनाशनम्। हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत्॥ कफवातामयध्वंसि च्छागमांसद्रवत्वकृत्। चणकाम्लगुणं ज्ञेयं लोहसूचिद्रवत्वकृत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अमलवेंत-अत्यन्त खट्टा, भेदक, हलका, दीपन, पित्तकारक, लोमहर्षक, रूखा तथा हृदयरोग, शूल, गुल्म, मलदोष, मद्यदोष, प्लीहा, उदावर्त्त, हिचकी, आनाह, अरुचि, श्वास, खाँसी, अजीर्ण, वमन, कफ, और वातरोगको हरनेवाला है। बकरेके मांसको गलानेवाला। जसे चनेके खारसे लोहेकी सुई गलजाती है उसी प्रकार इसके रसमें सुई गेरनेसे गलजातीहै।

अन्यच्च।

अम्लवेतसमत्यम्लं कषायोष्णं च वातजित्।
कफार्शःश्रमगुल्मघ्नमरोचकहरं परम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-अमलवेंत-अत्यन्त खट्टा, कषेला, गरम, वातनाशक तथा कफ, बवासीर, श्रम, गुल्म और अरुचिको दूर करनेवाला है।

अपिच।

अम्लवेतसमत्यम्लमानाहकफवातजित्।
तदेव सिद्धं दोषघ्नं श्रमघ्नं ग्राहि गुर्व्वपि॥ (रा० व०)

अर्थ-अमलवेंत-अत्यन्त खट्टा, आनाहनाशक, कफ तथा वातविनाशक है। पक्का अमलवेंत-त्रिदोषनाशक, श्रमहारी, ग्राही और भारी है।

विवरण। अम्लवेंतके वृक्ष मध्यम आकार और दो प्रकारके होतेहैं, एक अम्लवेंत, दूसरी वेंती, यह छोटे होतेहैं यह पेड मालियोंके बागोंमें बहुत होतेहैं, फूल सफेद रंगके, फल गोल खर्बूजके समान, कच्चा हरा, पकनेपर पीला पडजाताहै और चिकना होताहै।

पनसनामानि।

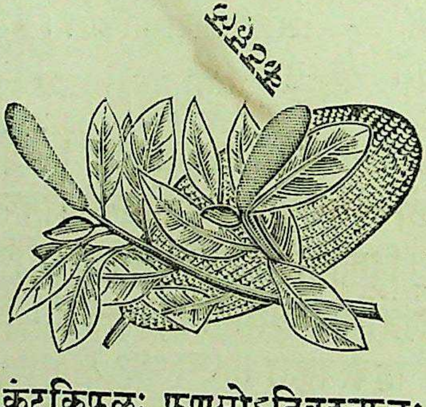

पनसः कंटकिफलः फणसोऽतिबृहत्फलः।
अपुष्पः फलदश्चैव स्थूलकण्टफलस्तथा॥

अर्थ-पनस, कंटकिफल, फणस, अतिबृहत्फल, अपुष्प, फलद, स्थूलकण्टफल, (कण्टाफल, आशय, मुरजफल, पलस, फलस, चम्पकालु, चम्पा, कोष, चम्पालु, मृदङ्गफल, पानस, महासर्ज्ज, फलिन, फलवृक्षक, स्थूल, कण्टीफल, मूलफलद, अपुष्पफलद, पूतफल)

संस्कृतभाषामें	पनस।
हिन्दीभाषामें	कटहर, कटहल, कटैल।
वंगभाषामें	कांटाल।

मराठीभाषामें	फणस ।
गुजरातीभाषामें	पणस ।
कर्णाटकीभाषामें	हलसिनहण्णु ।
तैलिङ्गीभाषामें	पनसकायि ।
औ०	फणस ।
तामिलीभाषामें	वला ।

लैटिन्भाषामें आर्टोकार्पस् इन्टेग्रिफोलिया। Artocorpus Lutergrifolia

अस्य फलगुणाः ।

पनसं शीतलं पक्कं स्निग्धं पित्तानिलापहम् । तर्पणं बृंहणं स्वादु मांसलं श्लेष्मलं भृशम् ॥ बल्यं शुक्रप्रदं हन्ति रक्तपित्तक्षतक्षयान् । आमं तदेव विष्टम्भि वातलं तुवरं गुरु ॥ दाहकृन्मधुरं बल्यं कफमेदोविमर्द्दनम् । पनसोद्भूतबीजानि वृष्याणि मधुराणि च ॥ गुरूणि बद्धवर्चांसि सृष्टमूत्राणि संवदेत् । मज्जा पनसजो वृष्यो वातपित्तकफापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–पक्का कटहर–शीतल, स्निग्ध, पित्तवातविनाशक, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, स्वादिष्ठ, मांसवर्द्धक, कफकारक, बलवर्द्धक, शुक्रजनक तथा रक्तपित्त और क्षतक्षयको क्षय करे है । कच्चा कटहल–विष्टम्भकारक, बादी, कषेला, भारी, दाहकारक, मधुर, बलकारक, कफनाशक और मेदनाशक है । कठेलके बीज–वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, भारी, मलको बाँधनेवाले और मूत्रको निकालनेवाले हैं । कठेलकी मींग–वीर्य्यवर्द्धक और वात पित्त कफका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कण्टाफलं सुमधुरं बृंहणं गुरु शीतलम् । दुर्ज्जरं वातपित्तघ्नं श्लेष्मशुक्रबलप्रदम् ॥ कण्टाफलमपक्कं तु कषायं स्वादु शीतलम् । कफपित्तहरं चैव तत्फलास्थ्यपि तद्गुणम् ॥ तद्बीजं सर्पिषा युक्तं स्निग्धं हृद्यं बलप्रदम् । (रा० व०)

अर्थ–पक्का कटहल–मधुर, पुष्टिकारक, भारी, शीतल, दुर्ज्जर, वात और पित्तनाशक तथा कफ, शुक्र और बलवर्द्धक है । कच्चा कठैल और उसके बीज–कषैले, स्वादिष्ठ, शीतल तथा कफ और

पित्तनाशक हैं । इसके बीज घृतके साथ-स्निग्ध, हृदयको हितकारी और बलवर्द्धक हैं ।

अपिच ।

पनसस्य फलं चामं मलावष्टम्भकृन्मतम् । मधुरं दोषलं बल्यं तुवरं गुरु वातलम् ॥ कोमलं तच्च मधुरं गुरु बल्यं कफप्रदम् । मेदोवृद्धिकरं चैव दाहवातप्रपित्तनुत् ॥ तत्पक्वं शीतलं दाहि स्निग्धं वै तृप्तिकारकम् । धातुवृद्धिकरं स्वादु मांसलं च कफप्रदम् ॥ बल्यं पुष्टिकरं जन्तुकारकं दुर्जरं वृषम् । वातं क्षतक्षयं रक्तपित्तं चाशु व्यपोहति ॥ तस्य बीजं तु मधुरं वृष्यं विष्टम्भकं गुरु । तस्य पुष्पं गुरुस्तिक्तं मुखशुद्धिकरं मतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कटहरका कच्चा फल-मलस्तम्भक, मधुर, त्रिदोषकारक, बलवर्द्धक, कषेला, भारी और बादी है । कोमल कठैल-मधुर, भारी, बलवर्द्धक, कफकारक, मेदोवर्द्धक तथा दाह और वातपित्तनाशक है । पक्का कठैल-शीतल, विदाही, स्निग्ध, तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मांसवर्द्धक, कफकारक, बलवर्द्धक, पुष्टिजनक, जन्तुजनक, दुर्जर, वीर्य्यवर्द्धक तथा वात, क्षतक्षय और रक्तपित्तका नाश करे है । इसके बीज-मधुर, वृष्य, विष्टम्भक और भारी हैं । इसके फूल भारी, कडवे और मुखको शुद्ध करनेवाले हैं ।

विवरण । कटहरके वृक्ष बहुत बडे २ होते हैं, प्रायः बागोंमें माली लोग बहुत लगा देते हैं, पत्ते गोल और लम्बे होते हैं, फूल आतेही नहीं, कटहल बहुत बडा फल होता है और वह गूलरके समान लकडीको फोडकर निकलता है, फल हरे रंगका निकलता है, ऊपर कडे २ कांटे होते हैं, कटहरपर हेमन्तऋतुके पश्चात् फल लगते हैं वह फल गजभर लम्बा और बहुत मोटा होता है, तोल २० सेर तकका होता है ।

लकुचनामानि ।

लकुचः क्षुद्रपनसो लिकुचो डहुरित्यपि ।

अर्थ-लकुच, क्षुद्रपनस, लिकुच, डहु (लकच, ऐरावत, अम्लक, निकुच, कषायी, दृढवल्कल, कार्श्य, शालशूर, स्थूलस्कन्ध, ग्रन्थिमत्फल)

संस्कृतभाषामें	लकुच ।
हिन्दीभाषामें	बडहर ।

वंगभाषामें	डेओ, मादार ।
मराठीभाषामें	वटार, फल, क्षुद्रफणस ।
गुजरातीभाषामें	लकुच ।
लैटिन्भाषामें	आर्टोकार्पसूलकुचा । Artocarpus Lacoocha

अस्य गुणाः ।

आमं लकुचमुष्णं च गुरु विष्टम्भकृत्तथा । मधुरं च तथाऽम्लं च दोषत्रितयरक्तकृत् ॥ शुक्राग्निनाशनं चापि नेत्रयोरहितं स्मृतम् । सुपक्वं तत्तु मधुरमम्लं चानिलपित्तहृत् ॥ कफवह्निकरं रुच्यं वृष्यं विष्टम्भकं च तत् । (भा. प्र.)

अर्थ-कच्चा बडहर-गरम, भारी, विष्टम्भकारी, मधुर, खट्टा, त्रिदोषकारक, रुधिरविकारकारक, नेत्रोंकोअहितकारी तथा शुक्र और अग्निनाशक है । पक्का बडहर-मधुर, खट्टा, वातपित्तनाशक, कफकारक, वह्निवर्द्धक, रुचिकारी, वीर्य्यवर्द्धक और विष्टम्भकारक है ।

अन्यच्च ।

लकुचं गुरु विष्टम्भि स्वाद्वम्लं रक्तपित्तकृत् ।
श्लेष्मकारि समीरघ्नमुष्णशुक्राग्निनाशनम् ।

अर्थ-बडहर-भारी, विष्टम्भकारी, स्वादिष्ठ, खट्टा, रक्तपित्तकारक, कफकारक, वातनाशक, गरम तथा शुक्र और अग्निनाशक है ।

अपिच ।

लिकुचं गुरु विष्टम्भि त्रिदोषं शुक्रदूषणम् ।

अर्थ-बडहर-गुरु, विष्टम्भकारक, त्रिदोषवर्द्धक और शुक्रको दूषित करे है ।

विवरण । बडहरके वृक्ष-बहुत ऊंचे २ और झांदेदार होते हैं प्रायः बागोंमें बहुत देखनेमें आते हैं, पत्ते-पाखरके समान और फल-गांठदार गोल २ कैथके बराबर होते हैं, कच्ची अवस्थामें हरे २ होते हैं । इनको पेडपरसे तोडकर पालमें रखकर पका लेते हैं, इसके भीतर दश वीस सफेद रंगके बीज निकलते हैं, यहभी कटहरका भेद है, इसके फूलको लकुच कहते हैं, यह पीले रंगके होते हैं ।

तिन्दुकनामानि ।

तिन्दुकोऽनिलसारश्च कालस्कन्धोऽतिमुक्तकः ।

स्फूर्जकः स्फूर्जनः सृष्टः स्यंदनो रावणो रवः ॥
कृष्णत्वक्कृष्णसारश्च सुसारश्च विरूपकः ।

अर्थ-तिन्दुक, अनिलसार, कालस्कन्ध, अतिमुक्तक, स्फूर्जक, स्फूर्जन, सृष्ट, स्यन्दन, रावण, रव, कृष्णत्वक्, कृष्णसार, सुसार, विरूपक (शितिसारक, स्फूर्जक, केन्दु, तिन्दु, तिन्दुल, तिन्दुकि, तिन्दुकी, नीलसार, स्वर्ग्यक, रावण, स्यन्दनाह्वय)

संस्कृतभाषामें	तिन्दुक ।
हिन्दीभाषामें	तेंदू ।
वंगभाषामें	गाव, तेंद ।
मराठीभाषामें	टेंभुर्णी, आपन ।
गुजरातीभाषामें	टिंबरवो ।
कर्णाटकीभाषामें	रुंबुरु ।
तैलङ्गीभाषामें	तामिक ।
तामिलीभाषामें	तुम्बिक ।
इंग्रेजीभाषामें	ऐबनी । Ed ony
लैटिन्भाषामें	डायोस्पायीईरोस् एंब्रिओप्टेरिस् । Dtospyros [Embryoperis
फारसीभाषामें	अबनुसुझाड ।

अस्य गुणाः ।

तिन्दुकस्तुवरस्तिक्तः स्निग्धोष्णो व्रणवातहा । संग्राही दुर्जरो जिह्वाजाड्यकारी जडो गुरुः ॥ आमं चास्य फलं स्निग्धं कषायं लेखनं लघु । संग्राहि शीतलं रूक्षं विबन्धारुचिवातकृत् ॥ पक्वं पित्तप्रमेहास्रह्यश्मघ्नं मधुरं गुरु । स्वादु पाकरसं स्निग्धं दुर्जरं वातनाशकम् ॥

अर्थ-तेंदू-कषेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, व्रणनाशक, वातहारक, मलरोधक, अतिकाठिनतासे पचनेवाला, जिह्वाको जडताकारक, जड और भारी है । इसका कच्चाफल-स्निग्ध, कषेला, लेखन, हलका, मलरोधक, शीतल, रूखा तथा विबन्ध, अरुचि और वातको करनेवाला है । इसका पक्का फल-पित्त, प्रमेह, रुधिरविकार और अश्मरीनाशक है । स्वादुपाकी, स्वादु, स्निग्ध, दुर्जर और वातनाशक है ।

अन्यच्च ।

अम्लोष्णं लघु संग्राहि स्निग्धं पित्ताग्निवर्द्धनम् ।
आमं कषायं संग्राहि तिन्दुकं वातकोपनम् ॥ (सु० सं०)

अर्थ–तेंदू–खट्टा, गरम, हलका, स्निग्ध, पित्त और अग्निवर्द्धक है। कच्चा तेंदू–कषेला, मलरोधक और वातको कुपित करनेवाला है ।

अपिच ।

तिंदुकस्तुवरस्तिक्तः स्निग्धश्चोष्णो मधुः स्मृतः । वायुं व्रणं हरत्यस्य फलं चामं कषायकम् ॥ लेखनं ग्राहकं शीतं स्वादु रूक्षं लघु स्मृतम् । मलस्तम्भारुचिकरं वातकृत्तिक्तकं मतम्॥ तत्पक्कं च गुरु स्वादु मधु स्निग्धं च दुर्जरम् । कफकृन्मेदपित्तघ्नं रक्तरुग्वातनाशकम् ॥ तिन्दुकाष्ठस्य सारस्तु पित्तरोगहरो मतः । (नि० र०)

अर्थ–तेंदु–कषेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, मधुर, वात और व्रणनाशक है। इसका कच्चा फल–कषेला, लेखन, ग्राही, शीतल, स्वादु, रूखा, हलका, मलस्तम्भक, अरुचिकारक, वातवर्द्धक और कडवा है। इसका पक्का फल–भारी, मधुर, स्वादु, दुर्जर, कफकारी, प्रमेहहारी तथा पित्त, रक्तरोग और वातनाशक है। तेंदूकी लकडीका सार पित्तरोगनाशक है।

विवरण। तेंदूके वृक्ष–अत्यन्त ऊंचे २ होते हैं, पत्ते–गोल २ नोकदार सीसमकेसे होते हैं, छाल–काली २ होती है, उसमें खार होता है, इसकी लकडी–स्थानादिकोंके बनानेके काममें आती है, इसके भीतरका सार–काला और वजनदार होता है, हिन्दुस्तानी लोग इसको आवनूस कहते हैं, तेंदूके फल–गोल और शोभायमान नींबूके समान हरे हरे होते हैं, पकनेपर पीले पड जाते हैं।

काकतिन्दुकनामानि ।

तिन्दुकोऽन्यो द्वितीयस्तु जलजो दीर्घपत्रकः ।
काकेंदुकेति विख्यातः कुपीलुः काकपीलुकः ॥

अर्थ–काकेन्दु, जलज, दीर्घपत्रक, काकेन्दुका, कुपीलु, काकपीलुक, (काकड, काकतिन्दु, काकस्फूर्ज्ज, काकाह्व, काकबीजक, कुलक)

सस्कृतभाषाम	काकतिन्दुक ।
हिन्दीभाषामें	मकरतेंदुआ, काकतेंदु ।
वंगभाषामें	कद, माकडागाव, माकडातेंदु ।
मराठीभाषामें	काकटेंभुर्णी ।
गुजरातीभाषामें	काकटिंबरवो ।
तैलङ्गीभाषामें	तुमि, तुमूकि ।
तामिलीभाषामें	तुम्बि ।

अस्य गुणाः ।

स्यात्काकतिन्दुकं तिक्तं शीतलं वातलं लघु ।
विपाके कटुकं ग्राहि कफपित्तास्रनाशनम् ॥

अर्थ-मकरतेंदुवा-कडवा, शीतल, बादी, हलका, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा कफ और रक्तपित्तकफनाशक है ।

अन्यच्च ।

काकतिन्दुः कषायाम्लो गुरुर्वातविकारनुत् ।
पक्वस्तु मधुरः किञ्चित् कफकृत्पित्तवातहृत् ॥

अर्थ-काकतेंदू (मकरतेंदुआ)-कषेला, खट्टा, भारी, वातविकारनाशक। पक्का तेंदू-किञ्चित् मधुर, कफकारक और पित्तवातहारक है।

विवरण। तेंदूके वृक्ष-जंगलमें होते हैं, इसकी छाल काली आर छालमें खार होता है, वृक्षके भीतरका सार वजनदार और काले सीसमकी समान होता है, उसको देशीभाषामें आवनूस कहते हैं, फल-गोल नींबूकी समान होते हैं। दूसरा काकतेन्दू कांटेयुक्त होता है, फल-तेंदूके फलसे छोटे होते हैं ।

कारस्करनामानि ।

कारस्करस्तु किंपाको विषतिन्दुर्विषद्रुमः ।
गरद्रुमो रम्यफलः कुपाकः कालकूटकः ॥

अर्थ-कारस्कर, किम्पाक, विषतिन्दु, विषद्रुम, गरद्रुम, रम्यफल, कुपाक, कालकूटक(कुपीलु, मर्कटतिन्दु, कच्चीर, वर्तुल, चिपिट)

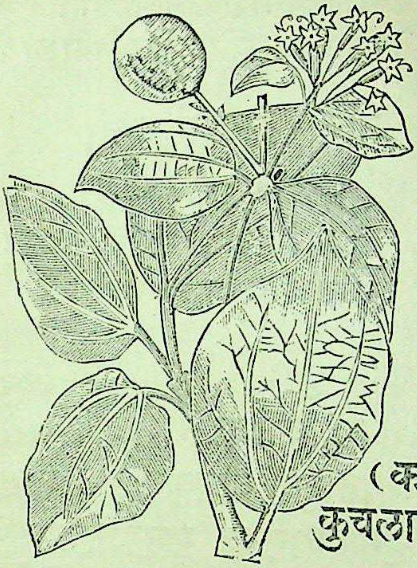

(क.)
कुचला.

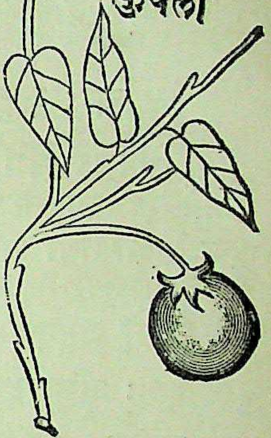

कुचला

संस्कृतभाषामें	कारस्कार ।
हिन्दीभाषामें	कुचला ।
वंगभाषामें	कुंचिले ।
मराठीभाषामें	काजरा, कारस्कार, कुचला ।
गुजरातिभाषामें	झेरकोंचलां ।
कर्णाटकीभाषाम	कांजिबार ।
तैलिङ्गीभाषामें	मुष्ठिगिंजा ।
इंग्रेजीभाषामें	पाईझननट Poison nut
लेटिन्भाषामें	स्ट्रिकनास् नक्सवामिका Strychnos Nuxvomica
फारसीभाषामें	इफराकी ।
अरबीभाषामें	कातिलुलकल्क फलूजमाही ।

अस्य गुणाः ।

विषतिन्दुर्महातिक्तः कफवातविषापहः ॥

अर्थ-कुचला-अत्यन्त कडवा तथा कफ,वात और विषविनाशकहै।

अपिच ।

कारस्करः कटूष्णश्च तिक्तःकुष्ठविनाशनः ।
वातामयास्रकण्डूतिकफकार्श्यव्रणापहः ॥

अर्थ-कुचला-चरपरा, गरम, कडवा, कुष्ठनाशक तथा वातरोग, रुधिरदोष,कण्डू,कफ,कार्श्य,बवासीर और व्रणको दूर करनेवालाहै.

अन्यच्च।

कचिरः कटुकस्तिक्तो रूक्षोष्णो दीपनो लघुः ।
भेदनस्तूदनो हन्ति पाण्डुरोगं च कामलाम् ॥

अर्थ-कुचिला-चरपरा, कडवा, रूखा, गरम, दीपन, हलका, भेदक, तूदन तथा पाण्डुरोग और कामलारोगको हरनेवाला है ।

अपिच ।

कारस्करो मदकरस्तुवरो ग्राहकः स्मृतः । कटुस्तिक्तो लघुश्चोष्णः कुष्ठरक्तविकारहा ॥ कण्डूं कफं वातरोगं व्रणं चार्शो ज्वरं जयेत् । अस्य चामफलं ग्राहि तुवरं वातकृल्लघु ॥ शीतलं च समुद्दिष्टं तत्पक्कं विषदं गुरु । पाके च मधुरं प्रोक्तं कफं वातं प्रमेहकम् ॥ पित्तं रक्तविकारं च नाशयेदिति कीर्तितम् । (नि० रा०)

अर्थ-कुचिला-मदकारक, कषेला, मलरोधक, चरपरा, कडवा, हलका, गरम तथा कोढ, रक्तविकार, कण्डू, कफ, वातरोग, घाव, बवासीर और ज्वरको दूर करेहै इसका कच्चा फल-मलरोधक, कषेला, वातकारक, हलका और शीतल है । इसका पक्का फल-विषद, भारी,पाकमें मधुर तथा कफ,वायु,प्रमेह पित्त और रक्तदोषनाशक है ।

विवरण । कुचलेके वृक्ष-मध्यम आकारके होतेहैं, प्रायः वनोंमें बहुत देखनेमें आतेहैं, पत्ते-पानके समान और फल नारंगीके समान सुन्दर सुन्दर होतेहैं, इसके बीजोंको कुचला कहते हैं ।

मधूकनामानि ।

मधूको मधुवृक्षश्च मधुष्ठीलो मधुस्रवः । गुडपुष्पो रोध्रपुष्पो वानप्रस्थोऽथ माधवः ॥ मध्वगस्तीक्ष्णसारश्च डोलाफलो महाद्रुमः । मधूकोन्यो द्वितीयस्तु जलजो दीर्घपत्रकः ॥ ह्रस्वपुष्पफलः स्वादुर्गौलिका स्यान्मधूलिकाः ।

अर्थ-मधूक,मधुवृक्ष,मधुष्ठील,मधुस्रव,गुडपुष्प,रोध्रपुष्प,वानप्रस्थ, माधव,मध्वग,तीक्ष्णसार,डोलाफल, महाद्रुम (मधुक, मधु, मधुवार,

मध्वल,) दूसरा जलमधूक होता है, उसके यह नाम हैं. जलज, (दीर्घपत्रक, ह्रस्वपुष्पफल, स्वादु, गौलिका, मधूलिका, क्षौद्रप्रिय, पतंग, कीरेष्ट, गैरिकाक्ष, मंगल्य, मधुपुष्प, गैरिकाख्य)

संस्कृतभाषामें	मधूक, जलमधूक ।
हिन्दीभाषामें	महुआ, जलमहुआ ।
वंगभाषामें	मौल, मउल, मौया, जलमउल ।
मराठीभाषामें	मोहाचा वृक्ष, मोहवृक्ष, जलमोहा ।
गुजरातीभाषामें	महुडो, जलमहुडो ।
कर्णाटकीभाषामें	महूइप्पे, जलमह्वे, तोरेइप्पे, यरडुइप्पे ।
तैलिङ्गीभाषामें	इपा, पिन्ना ।
तामिलीभाषामें	कटइल्लुपि ।
इंग्रेजीभाषामें	इलूपाट्री । Elloopatree
लैटिन्भाषामें	बेसिया लाटिफोलिया । Bassia latifolia
फारसीभाषामें	चकां ।

अस्य गुणाः ।

मधूको मधुरः शीतः श्लेष्मलो वीर्य्यदः स्मृतः । पुष्टिकृत्तुवरस्तिक्तः पित्तदाहव्रणश्रमान्॥ कृमिदोषं च वातं च नाशयेदिति कीर्तितम्। पुष्पं च मधुरं शीतं धातुवृद्धिकरं गुरु ॥ स्निग्धं विकाशि हृद्यं च दाहपित्तमरुत्प्रणुत् । फलमस्य गुरु शीतमहृद्यं शुक्रलं मतम्॥ स्निग्धं रसे च पाके च मधुरं धातुवर्द्धकम्। मलावष्टम्भकं बल्यं रक्तरुग्वातपित्तकम् ॥ तृषां दाहं श्वासकासं क्षतयक्ष्मापहं स्मृतम्। तदेव पक्कं बलदं पित्तवातविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-महुवेका वृक्ष-मधुर, शीतल, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, कषेला, कडवा तथा पित्त, दाह, व्रण, श्रम, कृमिदोष और वातका नाश करनेवाला है । इसका फूल-मधुर, शीतल, धातुवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, विकाशी, हृदयको हितकारी तथा दाह, पित्त और वातका नाश करनेवाला है। इसका फल-भारी, शीतल, हृदयको अहितकारी, शुक्रजनक, स्निग्ध, रस और पाकमें मधुर, धातुवर्द्धक, मलस्तम्भक, बलवर्द्धक, रुधिरदोष, वात, पित्त, तृषा,

दाह, श्वास, खाँसी, क्षतक्षय और राजयक्ष्माको दूर करे है। इसका पक्का फल-बलवर्द्धक तथा वात और पित्तनाश करे है।

अस्य त्वग्गुणाः।

मधूकं रक्तपित्तघ्नं व्रणशोधनरोपणम्।

अर्थ-महुवेकी छाल-रक्तपित्तनाशक,व्रणशोधक और व्रणरोपणहै।

अस्य तैलगुणाः।

मधूकतैलं मधुरं पिच्छलं तुवरं मतम्।
कफपित्तज्वरं चैव दाहपित्तं च नाशयेत्।

अर्थ-महुवेका तेल-मधुर, पिच्छल, कषेला तथा कफ, पित्तज्वर, दाह और पित्तका नाश करेहै।

अस्य क्षारगुणाः।

मधूकक्षारो नस्येन भूतादिकफवातजित्॥

अर्थ-महुएके क्षारकी नास लेनेसे-भूतादि बाधा, कफ और वात दूर होताहै।

जलमधूकगुणाः।

ज्ञेयो जलमधूकस्तु मधुरो व्रणनाशनः।
वृष्यो वान्तिहरः शीतो बलकारी रसायनः॥

अर्थ-जलमहुवा-मधुर, व्रणनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, वमननाशक, शीतल, बलवर्द्धक और रसायन है।

विवरण। महुएके वृक्ष-वनमें और पर्वतोंमें बडे २ ऊंचे होतेहै। पत्ते-बदाम अथवा बडके पत्तोंकी समान होतेहैं। फूलमें शहदके समान गन्ध आतीहै और इसमेंसे शरीफेके समान बीज निकलते हैं, इसके फलोंमें तेल निकलता है।

पीलुनामानि।

पीलुः शीतसहः स्रंसी धानी गुडफलस्तथा।
विरेचनफलः शाखी श्यामः करभवल्लभः॥

अर्थ-पीलु, शीतसह, स्रंसी, धानी,गुडफल,विरेचनफल,शाखी, श्याम, करभवल्लभ, (पीलुक, कलभवल्लभ)

महापीलुनामानि।

अन्यश्चैव बृहत्पीलुर्महापीलुर्महाफलः।

राजपीलुर्महावृक्षो मधुपीलुः षडाह्वयः ।

अर्थ-बृहत्पीलु, महापीलु, महाफल, राजपीलु, महावृक्ष, मधुपीलु ।

संस्कृतभाषामें	पीलु, बृहत्पीलु।
हिन्दीभाषामें	पीलु, बडापीलु ।
वंगभाषामें	पीलुगाछ ।
मराठीभाषामें	लघुपीलु, थोरपीलु, किकलेचा वृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	खारीजाल्य, मोटीजाल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	मिरीयेऊगनि, दोडुपीलु ।
तैलङ्गभाषामें	गोलुगुचेट्टु, पिन्नवरगोण्ड ।
तामिलीभाषामें	कोकु ।
देशीभाषामें	झल।
इंग्रेजीभाषामें	मस्टर्डट्री ऑफ स्क्रीप्चर Mustard tree of scripure
लटिन्भाषामें	सालवेडोरेरापार्सिका Salvadora Persica सालवेडोराऑलिओइडिस Salvadora Oleoides
फारसीभाषामें	दरख्तेमिस्वाक् ।
अरबीभाषामें	ईराक ।

पीलुगुणाः ।

लघुपीलुस्तु कटुकः कषायो मधुरोम्लकः । सरः स्वादुर्दीपनश्च तिक्तस्तीक्ष्णश्च भेदकः ॥ रक्तपित्तकरश्चोष्णो विदाही चार्शगुल्मनुत् । स्निग्धः कफं वातरक्तं प्लीहानाहरुजं तथा ॥ उदरं विषबाधां च नाशयेदिति कीर्तितम् ।

अर्थ-लघुपीलु-चरपरा, कषेला, मधुर, खट्टा, सर, स्वादिष्ठ, दीपन, कडवा, तीक्ष्ण, दस्तावर, रक्तपित्तकारक, गरम, दाहजनक, स्निग्ध तथा बवासीर, गुल्म, कफ, वातरक्त, प्लीहा, आनाह, उदर, और विषके दोषोंको दूर करैहै ।

बृहत्पीलुगुणाः ।

बृहत्पीलुस्तु मधुरो वृष्यः पित्तविषापहः।
आमहा दीपनो रुच्यस्तैलं चास्य लघु स्मृतम् ॥
कफवातरुजं हन्ति चेति पूर्वबुधैः स्मृतम्।(नि० र०)

अर्थ-बृहत्पीलु-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनाशक, विषघ्न, आमनाशक, दीपन, रुचिकारी है। इसका तेल-हलका तथा कफ और वातका नाश करनेवाला है।

विवरण। पीलुके वृक्ष दो जातिके होतेहैं, एक छोटा और एक बडा, छोटे पीलूपर बहुत छोटे २ फल आते हैं और पकनेपर लाल पडजाते हैं, दूसरा बडा पीलू होता है, उसके फूल पीले और फल लाल और काले होते हैं।

अखरोटनामानि।

अखरोटः पार्वतीयः फलस्नेहो गुडाशयः।
कीरेष्टःकर्पराल‍श्च स्वादुमज्जः पृथक्छदः॥

अर्थ-अखरोट, पार्वतीय, फलस्नेह, गुडाशय, कीरेष्ट, कर्पराल, स्वादुमज्ज, पृथक्छद, (रेखाफल, वृत्तफल, मदनाभफल, अक्षोट, अक्षोटक, अखोट, आखोट, आक्षोट, आक्षोड, कन्दराल और आस्फोटक)

संस्कृतभाषामें	अक्षोट।
हिन्दीभाषामें	अखरोट।
वंगभाषामें	आक्रोट।
मराठीभाषामें	अक्रोड।
गुजरातीभाषामें	अखोड।
कर्णाटकीभाषामें	आखोट।
दा०	उव्वकाई।
इंग्रेजीभाषामें	वाल्नट्। Walnut बेलगाम वाल्नट्। Belgaum welnut
लैटिन्भाषामें	एल्युराइटीस् ट्रायलोबा। Aleurites triloba एल्युराइटीस् मोलक्काना। A. moluccana
फारसीभाषामें	चार्तगज।
अरबीभाषामें	जोझअक्रुपम् मगज, जोझगीर्द गांग्वचार।

अस्य गुणाः।

अख्रोटो मधुरः किञ्चिदम्लः स्निग्धश्च शीतलः। वीर्य्यवृद्धिकरश्चोष्णो रुचिदः कफपित्तकृत्॥ गुरुः प्रियो बलकरः कफकृन्मलबद्धकृत्। वातपित्तं क्षयं वातं हृद्रोगं रक्तदोषकम्॥ रक्तवातं च दाहं च नाशयेदिति कीर्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-अखरोट-मधुर, किञ्चित् खट्टा, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्द्धक, गरम, रुचिदायक, कफपित्तकारक, भारी, प्रिय, बलवर्द्धक, कफकारक, मलवर्द्धक तथा वातपित्त, क्षय, वात, हृदयरोग, रुधिरदोष, रक्तवात और दाहको दूर करनेवाला है।

विवरण। इसके वृक्ष-काबुलकी ओर अधिकतासे होते हैं, फूल-सफेद रंगके छोटे और झुमखोंमें लगते हैं, पत्ते-गोल लम्बे और कुछ २ मोटे होते हैं, फल-गोल और मैनफलकी समान होता है, फलके भीतर मींग निकलती है। वह मींग बदामकी मींगकी समान मधुर होती है।

गुवाकनामानि।

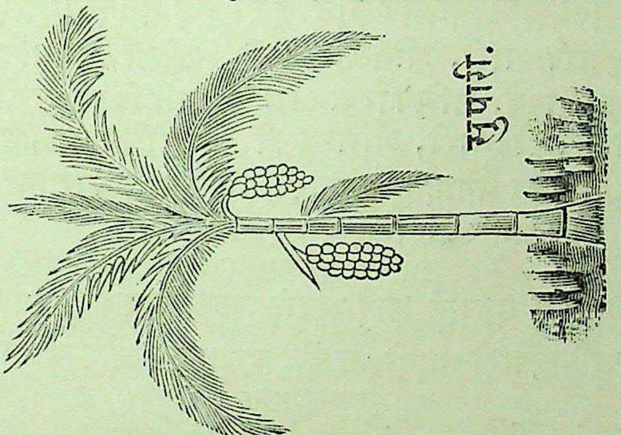

गुवाकः खपुरः पूगीपूगश्च क्रमुकोऽस्य तु।
फलं पूगीफलं प्रोक्तं मुद्वेगं च तदीरितम्॥

अर्थ-गुवाक, खपुर, पूगी, पूग, क्रमुक, (घोण्टा, गूवाक, कपीतन, क्रमु, क्रमुकी, पूगवृक्ष, दीर्घपादप, दृढवल्कल, वल्कतरु, चिक्कण, अकोट, तन्तुसार, सुरंजन, गोपदल, राजताल, छटाफल, करमट्ट) इसके फलको पूगीफल, मुद्वेग और घोण्टाफल कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	पूगीफल।
हिन्दीभाषामें	सुपारी।
वंगभाषामें	शुपारी।
मराठीभाषामें	सुपारी।
गुजरातीभाषामें	शोपारी।
कर्णाटकीभाषामें	अडकेमर।

तैलिङ्गीभाषामें	पाकक्काया ।	
औत्क०	गुया ।	
इंग्रेजीभाषामें	बिटलनट् पाम् ।	Betclnut Palm
लैटिन्भाषामें	एरिका केटेचु ।	Areca cate chu
फारसीभाषामें	पापिल ।	
अरबीभाषामें	फोफिल ।	

अस्य गुणाः ।

पूगं गुरु हिमं रूक्षं कषायं कफपित्तजित् । मोहनं दीपनं रुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ॥ आर्द्रं तद्गुर्वभिष्यन्दि वह्निदृष्टिहरं स्मृतम् । स्विन्नं दोषत्रयच्छेदि दृढमध्यं तदुत्तमम् ॥ (भा० प्र०)

अथ-सुपारी-भारी, शीतल, रूखी, कषेली, कफपित्तनाशक, मोहकारक, दीपन, रुचिकारक और मुखकी विरसताको दूर करे है । कच्ची सुपारी-भारी, अभिष्यन्दी, मन्दाग्निकारक, दृष्टिशक्तिनाशक, औटाकर बनाई हुई सुपारी, जिसका मध्यभाग दृढ होवै ऐसी री उत्तम और त्रिदोषनाशक है ।

पक्कपूगफलगुणाः।

पक्कं तु वातलं रूक्षं भेदनं कफनाशनम् ॥

अर्थ-पक्की सुपारी-बादी, रूखी, दस्तावर और कफनाशक है ।

शुष्कफलगुणाः ।

शुष्कमग्निकरं पूगं कषायं मधुरं परम् ।

अर्थ-सूखीसुपारी-अग्निवर्धक, कषेली और मधुर है ।

अपक्कपूगफलगुणाः ।

गुर्वभिष्यन्दि मधुरं तोयधृग्वह्निनाशनम् ॥

अर्थ-कच्ची सुपारी-भारी, क्लेदजनक, मधुर और अग्निनाशक है।

पूगमादौ विषं घोरं द्वितीये भेदि दुर्ज्जरम् ।
तृतीयादिषु पातव्यं सुधातुल्यं रसायनम् ॥

अर्थ-सुपारी-प्रथम अर्थात् कच्ची अवस्थामें विषकी समान अपकारी है । मध्यम अवस्थामें भेदक और दुर्ज्जर है । और शुष्क अवस्थामें अमृतकी समान उपकारी और रसायन है । इस कारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाको छोडकर तृतीय अर्थात् सूखी सुपारी खानी चाहिये ।

अपिच ।

पूगीफलं मोहकरं स्वादु रुच्यं कषायकम् । रूक्षं सरं च मधुरं गुरु पथ्यं च दीपनम् ॥ किञ्चित्कटु च संप्रोक्तं मुखवैरस्यनाशकम् । वमिं क्लेदं त्रिदोषघ्नं मलं वातं कफं तथा ॥ पित्तं दुर्गंधतां चैव नाशयेदिति कीर्तितम् । आर्द्रं पूगीफलं प्रोक्तं तुवरं कंठशुद्धिकृत् ॥ अभिष्यन्दि सरं चैव गुरुदृष्ट्याग्निमांद्यकृत् । रक्तदोषं मुखमलं पित्तं चामं कफं तथा ॥ आध्मानमुदरं चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् । शुष्कं पूगीफलं रुच्यं पाचकं रेचकं तथा ॥ स्निग्धं च वातलं चैव कण्ठरुग्घ्नं त्रिदोषनुत् । पर्णं विना केवलं तु भक्षितं शोफपाण्डुकृत् ॥ पक्कं चार्द्रं पूगफलं छेदकं च त्रिदोषहृत् । शुष्कं पक्कीकृतं तत्तु स्निग्धं वातकरं मतम् ॥ त्रिदोषनाशकं चैव तद्बालं सर्वदोषहृत् ।

अर्थ-सुपारी साधारण-मोहकारक, स्वादिष्ठ,रुचिजनक, कषेली, रूखी, सारक, मधुर, भारी, पथ्य, दीपन, किञ्चित् चरपरी, मुखकी विरसताको दूर करनेवाली तथा वमन, क्लेद, त्रिदोष, मल, वात, कफ, पित्त और दुर्गंधको दूर करनेवाली है । कच्ची सुपारी-कषेली, कंठशोधक, अभिष्यन्दि, सारक, भारी, दृष्टिशक्तिनाशक, मंदाग्निकारक तथा रक्तविकार, मुखमल, पित्त,आम, कफ, आध्मान और उदररोगका नाश करेहै । सूखी सुपारी-रुचिकारी, पाचक, रेचक, स्निग्ध, बादी, तथा कंठरोग, और त्रिदोषका नाश करनेवाली है । विना पानके सुपारी खानेसे सूजन और पाण्डुरोग उत्पन्न होताहै । पकाईहुई कच्ची सुपारी-छेदक और त्रिदोषनाशक है । पकाई हुई सूखीसुपारी-स्निग्ध, वातकारक और त्रिदोषनाशक है । कोमल सुपारी-सर्वदोषनाशक है ।

आंध्रोद्भवं पूगफलं पाके तु मधुरं मतम् । किञ्चिदम्लं च तुवरं कफवातविनाशकम् । मुखजाड्यकरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-आन्ध्रदेशमें उत्पन्न होनेवाली सुपारी-पचनेमें मधुर, किञ्चित अम्ल,कषेली तथा कफवातनाशक और मुखको जडतादायक है ।

चम्पावतीभवं पूगं पाचनं चाग्निदीपनम्।
बलप्रदं रसाढ्यं च कफनाशकरं मतम् ॥

अर्थ-चम्पापुरकी सुपारी-पाचक, अग्निप्रदीपक, (बलवर्द्धक) रसाढ्य और कफनाशक है।

रौंठसंज्ञं पूगफलं रुच्यं चाग्निप्रदीपनम्।
कटुकं तुवरं चोष्णं पित्तलं मलरोधकृत् ॥

अर्थ-रौंठनामवाली सुपारी-रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, चरपरी, कषेली, गरम, पित्तजनक, और मलरोधक है।

वल्गुलग्रामजं पूगं रुच्यं चाग्निप्रदीपनम्।
पाचनं च त्रिदोषघ्नं मलस्तम्भाममेदहृत् ॥

अर्थ-वल्गुलग्राममें उत्पन्न होनेवाली सुपारी-रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, पाचक, त्रिदोषनाशक तथा मलस्तम्भ, आम और मेदनाशकहै।

चन्दापुरभवं पूगं रसे च मधुरं मतम्।
कटुकं तुवरं रुच्यं स्वादु चाग्निप्रदीपनम् ॥
पाचनं मुनिभिः प्रोक्तं कफनाशकरं मतम्।

अर्थ-चंदापुरीसुपारी-रसम मधुर, चरपरी, कषेली, रुचिकारी, स्वादु, अग्निप्रदीपक, पाचक और कफनाशक है।

गुहागरोद्भवं पूगं मधुरं तुवरं लघु।
कटुकं द्रावकं चैव पाचकं विशदं मतम् ॥
मलस्तम्भं तथाऽऽध्मानवातं चैव विनाशयेत्।

अर्थ-गुहागरीसुपारी-मधुर,कषेली,हलकी,चरपरी,द्रावक,पाचक, विशद तथा मलस्तम्भ, तथा आध्मान और वातनाशक है।

नैलवद्ग्रामसंभूतं क्रमुकं कंठशुद्धिकृत्।
पाचनं मधुरं रुच्यं सरं कान्तिकरं लघु ॥
त्रिदोषनाशकं चैव रसाम्लं च निगद्यते।

अर्थ-नैलवतग्राममें उत्पन्न होनेवाली सुपारी-कंठशोधक,पाचक, मधुर, रुचिकारक, सारक,कान्तिकारक,हलकी, त्रिदोषनाशक और रसाम्ल है।

पूगवृक्षस्य निर्य्यासो मोहनः शीतलो गुरुः ।
पाके चोष्णः पित्तलश्च पटुश्चाम्लः प्रकीर्तितः ॥
वातनाशकरश्चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितः ।

अर्थ-सुपारीके पेडका गोंद-मोहजनक, शीतल, भारी, पाकके समय उष्ण, पित्तकारक, चरपरा, खट्टा और वातनाशक है ।

विवरण । सुपारीके वृक्ष-ताड़ और नारियलकी जातिके लम्बे २ बागोंमें वहुत होतेहैं, इसका वृक्ष खम्भके समान सीधा चलाजाताहै, इसके पत्ते-बडे २ नारियलकेसे होतेहैं, इसके ऊपर, बडे २ बेरके शिरके सदृश फल कुछ लम्बाईलिये गोल २ आतेहैं, उसको छीलनेमें भीतरसे सुपारी निकलतीहै सुपारीकी अनेक जातिहैं, जिहाजी, श्रीवर्द्धनी, मानगचन्दी, और अनेक प्रकारकी होतीहैं ।

तालनामानि ।

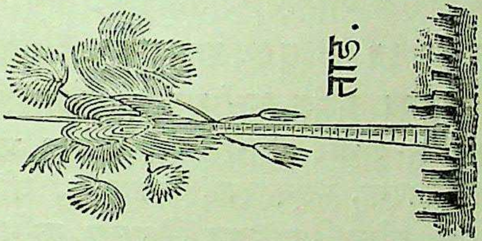

तालस्तु लेख्यपत्रः स्यात्तृणराजो महोन्नतः ।

अर्थ-ताल, लेख्यपत्र, तृणराज, महोन्नत, (तल, भूमिपिशाच, दीर्घतरु, द्रुमश्रेष्ठ, द्रुमेश्वर, तालद्रुम, पत्री, दीर्घस्कन्ध, ध्वजद्रुम, तृणराज, मधुरस, मदाढ्य, दीर्घपादप, चिरायु, तरुराज, दीर्घपत्र, गुच्छपत्र, आसवद्रु, करपत्रवान्, दीर्घद्रु, तन्तुनिर्य्यास, तन्तुगर्भ, शतपर्वा)

श्रीतालनामानि।

श्रीतालो मधुतालश्च लक्ष्मीतालो मृदुच्छदः ॥

अर्थ-श्रीताल, मधुताल, लक्ष्मीताल, मृदुच्छद (विशालपत्र, लेखाई, समीलेख्यदल, शिरालपत्रक, याम्योद्भूत)

हिन्तालनामानि ।

हिन्तालः स्थूलतालश्च वल्कपत्रो बृहद्दलः ॥

अर्थ-हिन्ताल, स्थूलताल, वल्कपत्र, बृहद्दल (पूगरोट, स्थिरांघ्रिक,

हिमहासक, हिन्ताल, स्थिरपत्र, शिरापत्र, अस्थिरांघ्रिक, गर्भस्रावी, मीनताल, भीषण, बहुकण्टक, अम्लसार, बृहत्ताल)

संस्कृतभाषामें	ताल, श्रीताल, हिन्ताल ।
हिन्दीभाषामें	ताड, श्रीताड, हिन्ताल ।
वंगभाषामें	ताल, श्रीताल, हेंताल ।
मराठीभाषामें	ताड, कांटेताड, काळाताड ।
गुजरातीभाषामें	ताड, श्रीताल, हिन्ताल ।
तामिलीभाषामें	पनम ।
इंग्रेजी भाषामें	पालमाईपाम Palmyra palm
लैटिन्भाषामें	बोरेसस फ्लेबेलिफोर्मिस Baralsuse Flabelle foromis
फारसीभाषामें	ताल ।
अरबीभाषामें	तारं ।

तालगुणाः ।

तालवृक्षस्तु मधुरः शीतलो मदकृद्गुरुः । पुष्टिकृच्छुक्रकफकृन्मेदकृद्बलकारकः ॥ वृष्यश्च सारकः पित्तदाहशोषविषश्रमान् । विषकुष्ठकृमीरक्तदोषवातांश्च नाशयेत् (नि० र०)

अर्थ– तालवृक्ष–मधुर, शीतल, मदकारक, भारी, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, कफकारक, मेदकारक, बलवर्द्धक, वीर्य्यजनक, सारक तथा पित्त, दाह, शोष, विष, श्रम, विषकुष्ठ, कृमि, रुधिरदोष, और वातका नाश करनेवाला है ।

अस्य फलगुणाः ।

वातघ्नो बृंहणो बल्यः क्रिमिहा कुष्ठनाशनः ।
रक्तपित्तहरः स्वादुस्तालः सप्तगुणान्वितः ॥ (रा० नि०)

अर्थ–ताडका फल–पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, क्रिमिनाशक, कुष्ठनाशक, रक्तपित्तहारक और स्वादुरसवाला है ।

अस्यामफलगुणाः ।

आममस्य फलं प्रोक्तं स्निग्धं स्वादु गुरु स्मृतम् । मलावरोधकं बल्यं शीतलं धातुवर्द्धकम् ॥ वृष्यं तृप्तिकरं मांसकफोत्पत्तिकरं स्मृतम् । वातं श्वासं रक्तपित्तं व्रणं दाहं क्षतं तथा ॥ पित्तक्षयं रक्तदोषं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-ताडका कच्चाफल-स्निग्ध, स्वादिष्ट, भारी, मलरोधक, बलकारक, शीतल, धातुवर्द्धक, वीर्य्यजनक, तृप्तिकारक, मांसवर्द्धक, कफकारक तथा वात, श्वास, रक्तपित्त, व्रण, दाह, क्षत, पित्त, क्षय और रुधिरके दोषोंको दूर करनेवाला है ।

अस्य पक्वफलगुणाः ।

पक्वं तालफलं पित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ।
दुर्ज्जरं बहुमूत्रं च तन्द्राभिष्यन्दशुक्रदम् ॥

अर्थ-ताडका पक्का फल-रक्तपित्तकारक, कफकारक, कठिनतासे पचनेवाला, बहुमूत्रजनक, तन्द्राको उत्पन्न करनेवाला, अभिष्यन्दि और शुक्रदायक हैं ।

अस्यार्द्रफलबीजगुणाः ।

आर्द्रं तु फलबीजं च मूत्रलं शीतलं स्मृतम् ।
रसे पाके च मधुरं कफकृद्वातपित्तहृत् ॥

अर्थ-ताडके कच्चे फलके बीज-मूत्रजनक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक और वातपित्तहारक है ।

अस्य फलमज्जागुणाः ।

तालमज्जा तु तरुणा किंचिन्मदकरी लघुः ।
श्लेष्मला वातपित्तघ्ना सस्नेहा मधुरा सरा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तरुण ताडकी मींग-किञ्चित् मदकारक, हलकी, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्नेहयुक्त, मधुर और सारक है ।

तालफलोद्भवजलगुणाः ।

तालाम्बु पित्तजिच्छुक्रस्तन्यवृद्धिकरं गुरु (रा. व.)

अर्थ-ताडके फलका जल-पित्तनाशक, शुक्रवर्द्धक, भारी और स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करनेवाला है ।

तालमण्डिकागुणाः ।

श्लेष्मदोषकरी वृष्या वातला श्लेष्मवर्द्धिनी ।
कासहृल्लासविध्वंसकरणी तालमण्डिका ॥ (आ० सं०)

अर्थ-ताडी-कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बादी, श्लेष्मवर्द्धक, कास नाशक और उबकाईको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

तालजं तरुणं तोयमतीव मदकृन्मतम् ।
अम्लीभूतं तदा तु स्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ॥

अर्थ-नवीन ताडी-अत्यन्त मदकारक है और खट्टी होनेपर पित्तकारक और वातहारक है ।

तालप्रलम्बगुणाः ।

तथा तालप्रलम्बं च रूक्षं क्षतरुजापहम् ।

अर्थ-तालप्रलम्ब-रूक्ष और क्षतरोगनाशक है ।

तालपञ्जरगुणाः ।

तालवृक्षस्य शीर्षस्थः पंजरो धातुवर्द्धनः ।
वातपित्तहरश्चैव वस्तिशुद्धिकरः परः ॥

अर्थ-ताडके मस्तकका पंजर-धातुवर्द्धक, वातपित्तनाशक और बस्तिशोधक है ।

तालवृन्तवायुगुणाः ।

तालवृन्तभवो वातस्त्रिदोषशमनो लघुः । (राजवल्लभ)

अर्थ-ताडके पंखेकी पवन-त्रिदोषनाशक और हलकी है ।

तालमूलगुणाः ।

तन्मूलं तु भवेत्स्वादु पाके च रक्तपित्तहम् ।

अर्थ-ताडकी जड-स्वादिष्ठ, पचनेमें स्वादिष्ठ और रक्तपित्तनाशक है ।

श्रीतालगुणाः ।

श्रीतालो मधुरोऽत्यंतमीषच्चैव कषायकः ।
पित्तजित्कफकारी च वातमीषत्प्रकोपयेत् ॥

अर्थ-श्रीताल-अत्यन्त मधुर, किञ्चित्कषेला, पित्तनाशक, कफकारक और कुछ २ वातको कुपित करनेवाला है ।

विवरण-ताडके बडे २ वृक्ष होते हैं, पत्ते बडे बडे लम्बे खजूरकी अनीकी समान कटीले लम्बे चौडे चार चार फूटके होते हैं, इनके पंखे आदि कितनेक पदार्थ बनाये जाते हैं । पहिले यहां ताडके पत्तोंपर समस्त ग्रन्थ लिखे जाते थे, ताडकी नर और नारी यह दो जाति हैं नर जातिके वृक्षमें फल नहीं आते और नारीके वृक्षमें फल लगते हैं । नरमें शाखा नहीं होती । वृक्षके रसको ताडी कहते हैं ।

हिन्तालगुणाः ।

हिन्तालो मधुराम्लश्च कफकृत्पित्तदाहनुत् ।
श्रमतृष्णापहारी च शिशिरो वातदोषनुत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-हिन्ताल-मधुर, अम्ल, कफकारी, पित्तनाशक, दाहनाशक, शीतल, वातविकारविनाशक, तथा श्रम और तृषाको दूर करे है ।

कपित्थनामानि ।

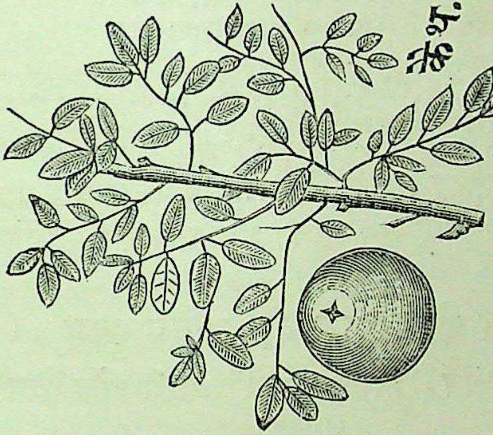

कपित्थस्तु दधित्थः स्यात्तथा पुष्पफलः स्मृतः ।
कपिप्रियो दधिफलस्तथा दन्तशठोऽपि च ॥

अर्थ-कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल, दन्तशठ (ग्राही, मन्मथ, पुष्पफल, कागित्थ, कवित्थ, देवपादाढच, मालूर, मङ्गल्य, नीलमल्लिका, ग्राहिफल, चिरपाकी, ग्रन्थिफल, कुचफल, कपीष्ट, गन्धफल, दन्तफल, करभवल्लभ, काठिन्यफल, करञ्जफलक, अक्षसस्य)

संस्कृतभाषामें	कपित्थ ।
हिंदीभाषामें	कैथ ।
वङ्गभाषामें	कयेद्वाछ, कतवेल ।
मराठीभाषाम	कँवठ, कविठ ।
गुजरातीभाषामें	कोंट, काठ, कोठवडी ।
कर्णाटकीभाषामें	वेललु ।
तैलिङ्गीभाषामें	एलांगाकाय ।

इंग्रजीभाषामें वुडएपल एलिफंटएपल। Wood apple Elephant apple
लैटिन्‌भाषामें फेरोनिया एलिफेंटिनम्। Feronia Elephantnum

कपित्थफलसाधारणगुणाः।

कपित्थमम्लं मधुरं कषायं विशदं गुरु।
कासातिसारहृद्रोगच्छर्दिकफरुजापहम् ॥ (आ० सं०)

अर्थ-कैथ-खट्टा, मधुर, कषेला, विशद, भारी तथा खाँसी, अतिसार, हृदयरोग, वमन और कफरोगको दूर करे है।

अपक्कफपित्थफलगुणाः।

कपित्थमामं कण्डूघ्नं विषघ्नं ग्राहि वातलम्।
मधुराम्लकषायत्वा त्सौगन्ध्याच्च रुचिप्रदम् (रा.)

अर्थ-कच्चाकैथ-कण्डूनाशक, विषनाशक, मलरोधक, वातवर्द्धक। यह मधुर, अम्ल, कषाय और सुगंधयुक्त होनेके कारण रुचिकारक है।

पक्कफपित्थफलगुणाः।

तदेव पक्कं दोषघ्नं गुरु ग्राहि विषापहम्। (राज०)

अर्थ-पक्का कैथ-त्रिदोषनाशक, भारी, ग्राही और विषविनाशकहै।

अन्यच्च।

कपित्थं मधुरं चाम्लं तुवरं ग्राहि शीतलम्। वृष्यं तिक्तं पित्तवातव्रणनाशकरं मतम् ॥ फलमामं कपित्थस्य ग्राहि चोष्णं च रूक्षकम्। लघ्वम्लं तुवरं चैव लेखनं वातपित्तकृत् ॥ जिह्वाजाड्यकरं रुच्यं विषस्वरकफप्रणुत्। तत्पक्कं रुचिदं चाम्लं कषायं ग्राहि माधुरम् ॥ कंठशुद्धिकरं शीतं गुरु वृष्यं च दुर्जरम्। श्वासं क्षयं रक्तरुजं वान्तिं वातं श्रमं तथा ॥ हिध्मानं च विषं ग्लानिं तृषां दोषत्रयं तथा। हिक्कां कासं नाशयति बीजं च हृद्व्यथापहम्॥ शीर्षव्यथां विषं चैव विसर्पं चैव नाशयेत्। बीजतैलं च तुवरं ग्राहकं स्वादु पित्तनुत्॥ आखोर्विषं कफं चैव हिक्कां वान्तिं च नाशयेत्। विषनाशकरं पुष्पं पर्णं वान्त्यतिसारनुत्॥ हिक्कां नाशयतीत्येवं प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः। (नि० र०)

अर्थ-कपित्थ-मधुर, खट्टा, कषेला, ग्राही, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कडवा तथा पित्त और वातका नाश करे है। इसका कच्चा फल-ग्राही, गरम, रूखा, हलका, खट्टा, कषेला, लेखन तथा वात, पित्त और जिह्वाको जडताकारक है, रुचिजनक तथा विष, स्वर और कफका नाश करे है, इसका पक्का फल-रुचिकारक, खट्टा, कषेला, ग्राही,मधुर, कंठशोधक, शीतल, भारी, वीर्यवर्द्धक, और दुर्जर है, तथा श्वास, क्षय, रक्तदोष, वमन, वायु, श्रम, विष, ग्लानि, तृषा, त्रिदोष, हुचकी, और खाँसीको दूर करे है, इसके बीज हृदयरोग, मस्तकशूल, विष, विसर्प इनको दूर करेहैं, इसके बीजोंका तेल कषेला, ग्राही, स्वादु, पित्तनाशक तथा मूँसेका विष, कफ, हुचकी और वमनको दूर करे है, इसके फूल-विषनाशक हैं। इसके पत्ते-वमन, अतिसार और हुचकीको दूर करे हैं।

विवरण। इसके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानमें पाये जाते हैं, फल बेलसे छोटे और सफेद रंगके लगते हैं, पत्ते छोटे और चिकने होतेहैं, फूल छोटे और सफेद रंगके आते हैं, वर्षाऋतुमें इसकी कली खिलती है, फिर क्रमसे फलके आकार परणवती है, शीतऋतुमें फल पकजाते हैं, कैथमें एक आश्चर्यकारक गुण है कि, कोई हाथी कैथको खालेवे उस हाथीके पेटमें कैथका सार भाग अर्थात् गूदा रह जायगा और गूदेरहित अखण्डित कैथ मलके साथ निकल आवेगा।

कर्मरंगनामानि।

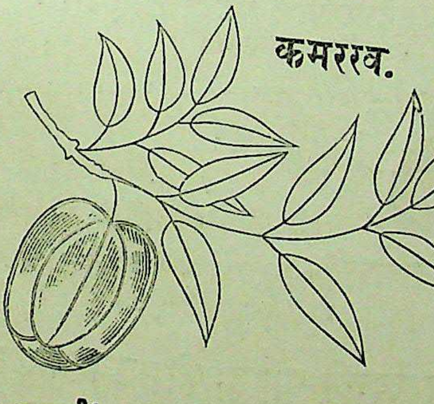

कारुकः कर्म्मरंगः स्याच्छिरालस्तु शुकप्रियः।

अर्थ-कारुक, कर्म्मरंग, शिराल, शुकप्रिय (बृहद्दल, रुजाकर, कर्मार, कर्म्मरक, पीतफल, कर्म्मर, मद्दर, धाराफल, कार्म्मारक)

संस्कृतभाषामें	कर्म्मरङ्ग ।
हिन्दीभाषामें	कमरख ।
बंगभाषामें	कामराङ्गा ।
मराठीभाषामें	कर्मरें ।
गुजरातीभाषामें	कमरकखाटां मीठांवेछे ।
इंग्रेजीभाषामें	करंबोला । Carambola
लैटिन्भाषामें	एवरहोया करंबोला । Averrhoa Carambola

अस्य गुणाः ।

कर्मरङ्गं तु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकेऽम्लपित्तकृत् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कमरख-तीक्ष्ण, गरम, पचनेमें चरपरी, खट्टी और पित्तकारक है।

अन्यच्च ।

कर्म्मारस्य फलं चामं ग्राह्यम्लं वातनाशकम् ।
उष्णं पित्तकरं चैव तत्पक्वं मधुरं मतम् ॥
अम्लं च बलपुष्टीनां रुचेश्चैव तु वर्द्धकम् । (नि० र०)

अर्थ-कच्ची कमरख-मलरोधक, खट्टी, वातनाशक, गरम और पित्तकारक है पक्की कमरख मधुर, खट्टी तथा बल, पुष्टि और रुचिवर्द्धक है।

विवरण। कमरखका वृक्ष अत्यन्त सुन्दर होताहै, पत्ते हरफारेवडीकी समान होते हैं, फल चार पांच धारवाले होते हैं, फल कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले पड जाते हैं।

लवलीफलनामानि ।

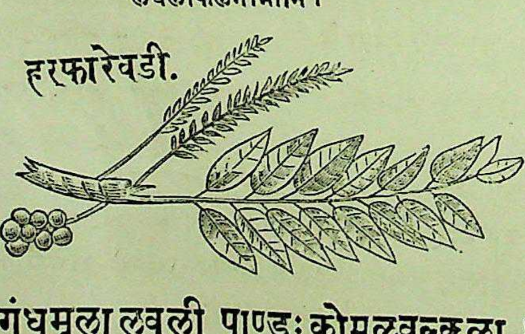

सुगंधमूला लवली पाण्डुः कोमलवल्कला ।

अर्थ-सुगंधमूला, लवली, पाण्डु, कोमलवल्कला (घना, स्निग्धा: स्कन्धफला)

संस्कृतभाषामें	लवली ।

हिन्दीभाषामें	हरफारेवडी ।
वंगभाषामें	नोयाड, नोयाल, लोंओयाड ।
मराठीभाषामें	काथआंवळे, रायआंवळे, रानआंवळे ।
गुजरातीभाषामें	खाटीआंवली ।
लैटिन्‌भाषामें	साईकाडिस्टिका । Ciceodisticha

अस्य गुणाः ।

लवलीफलमस्रार्शःकफपित्तहरं गुरु ।
विशदं रोचनं रूक्षं स्वाद्वम्लं तुवरं रसे ॥ (भा० प्र०

अर्थ-हरफारेवडी-रुधिरविकार, बवासीर और कफपित्तनाशक है । भारी, विशद, रोचन, रूखी, स्वादिष्ठ, खट्टी और कषेली है।

अन्यच्च ।

कषायं कफपित्तघ्नं किञ्चित्तिक्तं रुचिप्रदम् ।
हृद्यं सुगन्धि विशदं लवलीफलमुच्यते ॥ (सु० सं०)

अर्थ-हरफारेवडी-कफपित्तनाशक, किंचित्कडवी, रुचिदायक, हृदयको हितकारी, सुगंधि और विशद है ।

अपिच ।

रायामलं तु तुवरं रुचिप्रदं प्रियं चाम्लम्। तिक्तं रूक्षं विशदंस्वादु सुगंधिवातलं चोक्तम्॥ स्वादिष्ठं लघु चोक्तं कफपित्तहरं च वातपित्तघ्नम्। मूत्राश्मर्य्यर्शघ्नमृषिभिश्चोक्तं च पूर्वजैर्ग्रन्थे॥ (नि.र.)

अर्थ-हरफारेवडी-कषेली, रुचिकारक, प्रिय, खट्टी, कडवी, रूखी, विशद, स्वादु, सुगंधित, वातवर्द्धक, स्वादिष्ठ, हलकी तथा कफ, पित्त, वातपित्त, मूत्राश्मरी और अर्शरोगनाशक है ।

विवरण । हरफारेवडीका वृक्ष अत्यन्त सुंदर होता है, पत्ते कसोंदीकी समान होतेहैं । फल गूलरके सदृश शाखाओंमेंसे निकलतेहैं।

प्राचीनामलकनामानि ।

प्राचीनामलकं लोके पानीयामलकं स्मृतम् ।

अर्थ-प्राचीन आमलकको-लोकमें पानीयामलक कहतेहैं (वारिबदर)

संस्कृतभाषामें	प्राचीनामलक ।

हिन्दीभाषामें	पानीआमला ।
वंगभाषामें	पानीआमला ।
मराठीभाषामें	पाणआंवले ।
गुजरातीभाषामें	पाणिआंवला ।
इंग्रेजीभाषामें	फ्लाकुर्श्या काटाफ्राक्टा । Flacourtia Cataphracta फ्लारोमोंचिआई । F. Romontchii

अस्य गुणाः ।

प्राचीनामलकं दोषत्रयजिज्ज्वरघाति च ॥(भा०प्र०)

अर्थ-पानीआमला-त्रिदोषनाशक और ज्वरको दूर करे है ।

अपिच ।

पानीयामलक ग्राहि स्वाद्वम्लं मुखशोधनम् । (रा०नि०)

अर्थ-पानीआमला-मलरोधक, स्वादु, अम्ल और मुखशोधक है।

अन्यच्च ।

"प्राचीनामलकं रुच्यं स्निग्धं गुरु गरापहम् ।
वातघ्नं पित्तकफहृदुष्णं गुरु समीरजित्" ॥(म०पा०)

अर्थ-पानीआमला-रुचिकारी, स्निग्ध, भारी, विषनाशक, वात, पित्त और कफको दूर करनेवाला, भारी और वातहारीहै ।

अपिच ।

पर्णामलकं मधुरं रुचिप्रदं गुरु चोष्णम् ।
विषत्रिदोषमशनं कफतृष्णावातह प्रोक्तम् ॥
सुतरां तदेव पक्कं कफपित्तकरं विशेषतश्चोक्तम्॥ नि०र०)

अर्थ-पानीआमला-मधुर, रुचिदायक, भारी, गरम, त्रिदोषनाशक, तथा कफ, तृषा और वातका नाश करनेवाला है। वही पकाहुवा विशेषकरके कफ और पित्तकारक है ।

विवरण-पानीआमलेके वृक्ष जलाशयके समीप होते हैं, इसमें कांटे भी होते हैं पत्ते लम्बे और फल लाल लाल बेरके समान कठिया होतेहैं।

करमर्दकनामानि ।

करमर्दो वने क्षुद्राकराम्लः करमर्दकः ।
तस्माल्लघुफला या तु सा ज्ञेया करमर्दिका ॥

अर्थ–करमर्द, वनेक्षुद्रा, कराम्ल, करमर्दक, (कृष्णपाकफल, अविघ्न, सुषेण, करामर्द, कृष्णपाक, पाकफल, कृष्णफल, पाककृष्ण, फल, कृष्णफलपाक, पाककृष्ण, फलकृष्ण, वनालय, वनालक, कराम्बुक, कणचूक, बोल, वश, करमर्दी, कराम्लक, पाणिमर्द, कण्टकी, अविघ्न, सुपुष्प, दृढकण्टक, जातिपुष्प, क्षीरफल, डिम्डिम, गुच्छी, क्षीरी, बहुदल) इससे छोटीको करमर्दिका कहतेहैं ।

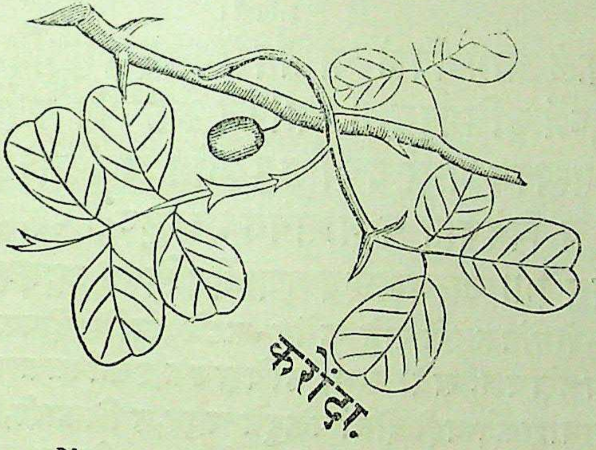

संस्कृतभाषामें	करमर्दक ।
हिन्दीभाषामें	करौंदा, करौंदी ।
वंगभाषामें	करमूचा ।
मराठीभाषामें	गोडाकरवंदा, कडूकरवंदा ।
गुजरातीभाषामें	करमदी करमदां ।
कर्णाटकीभाषामें	काराजग ।
तैलिङ्गीभाषामें	वाका, पारिकचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	जास्मिन्फ्लावर्डकेरिसा । Jasmine floweredcarisa
लैटिन्भाषामें	केरिसा कोरंदास । Carissa Corandas

अस्या गुणाः ।

करमर्दद्वयं त्वाममम्लं गुरु तृषाहरम् ।
उष्णं रुचिकरं प्रोक्तं रक्तपित्तकफप्रदम् ॥
तत्पक्वं मधुरं रुच्यं लघुपित्तसमीरजित् ।(भा० प्र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके करोंदे कच्चे-खट्टे, भारी, तृषानाशक, गरम, रुचिकारक तथा रक्तपित्त और कफकारक हैं। वही पक्के-मधुर, रुचिकारी, हलके तथा पित्त और वातको जीते हैं।

अन्यच्च।

करमर्द पिपासाघ्नमम्लं रुच्यं च पित्तकृत्। (रा०व०)

अर्थ-करोंदा-पिपासानाशक,खट्टा, रुचिकारी और पित्तहारीहै।

अपिच।

करमर्दफलं चामं तिक्तं चाग्निप्रदीपकम्। गुरुपित्तकरं ग्राहि चाम्लमुष्णं रुचिप्रदम्॥ रक्तपित्तं कफं चैव वर्द्धयेत्तृड्विनाशकम्॥ तत्पक्वं मधुरं रुच्यं लघु शीतं च पित्तहम्। रक्तपित्तं त्रिदोषं च विषवातं च नाशयेत्। तच्छुष्कं पक्कसदृशं गुणज्ञेयं विचक्षणैः॥ अत्यम्लस्य गुणाश्चैव ज्ञेया आमकराम्लवत्॥

अर्थ-दोनोंप्रकारके कच्चे करोंदे-कडवे, अग्निप्रदीपक, भारी, पित्तकारी, मलरोधक, खट्टे, गरम, रुचिदायक, रक्तपित्तकारक, कफजनक और तृषानाशकहैं।वही दोनों पकेहुये-मधुर, रुचिकारी, हलके, शीतल तथा पित्त, रक्तपित्त, त्रिदोष, विष और वात विनाशक हैं। सूखे करोंदेके गुण पक्के करोंदेकी समान जानने और अम्लकरोंदेके गुण कच्चेकी समान जानने।

अन्यच्च।

करमर्दफलं चार्द्रमम्लं पित्तकफप्रदम्।
भेदनं चोष्णवीर्य्यं च वातप्रशमनं गुरु॥
पक्कं बुक्केऽल्पपित्ते च तन्मूलं कृमिनुत्सरम्।(शो०नि०)

अर्थ-कच्चाकरोंदा-खट्टा,पित्तजनक,कफकारक, भेदक,उष्णवीर्य्य, वातनिवारक और भारी है। पक्का करोंदा-पित्तनाशकहै। इसकी जड कृमिको हरनेवाली और सारक है।

विवरण-करोंदेके वृक्ष बागोंमें बहुतहैं, फूल सफेद और सुगन्धित जुहीके समान आतेहैं, फलोंके गुच्छे बेरोंके समान लगतेहैं, परन्तु वे दो जातिके होतेहैं, एक सफेद नोकोंपर लालीलिये अत्यन्त मनोहर होते हैं, दूसरे कच्चे हरे आधे लाल और पकनेपर काले पडजाते हैं।

बदरीनामानि

बदरी दृढबीजा च कण्टकी सुफलापि च ।
नखी व्याघ्रनखी घोण्टा कोली गुडफलापि च ।

अर्थ-बदरी, दृढबीजा, कण्टकी, सुफला, नखी, व्याघ्रनखी, घोण्टा, (कोली, गुडफला, कोला, कोली, कोलि, कुवली)

बदरीफलनामानि ।

फलं तु बदरं कोलं सौवीरं फेनिलं कुहम् ।
कर्कन्धुः कोलिकुवलं पिच्छला बदरीच्छदा ।

अर्थ-बदर, कोल, सौवीर, फेनिल, कुह, कर्कन्धु, कोलि, कुवल, पिच्छला, बदरीच्छदा, (सौवीरक, बालेष्ट, फलशैशिर, वृत्तफल, घोण्टा गोपघोण्टा, हस्तिकोलि, गोपघोण्टी, शृगालकोलि, वादिर, गूढफल, दृढबीज, वृत्तफल, कण्टकी, वक्रकण्टक, सुरस, सुफल, स्वच्छ, कर्कन्धू, बदर, कोली, कोला, कुवली, स्वादुफला, गृध्रनखी, कुवल (:), पिच्छिल, स्वादुफल, कुलक, कोकिल, अजामिया, उभयकण्टक)

संस्कृतभाषामें	बदरी, बदर, कर्कन्धू, कोल, सौवीर, हस्तिकोलि,
हिन्दीभाषामें	बेरीका पेड, बेर, छोटेबेर, पैमदी बडे बेर ।
वंगभाषामें	कुलगाछ, कुलफल, वडकुलगाछ, वरुई, शियाकुल ।
मराठीभाषामें	बोरीच झाड, बोर, रायबोर, लघुबोर ।
गुजरातीभाषामें	मोटीबोरडी, नानीबोरडी ।
कर्णाटकीभाषामें	येरनु ।
तैलिङ्गीभाषामें	रेगुचेट्टु, रंघ ।
औत्क०	कुडि ।
तामिलीभाषामें	रेथन्ति ।
इंग्रेजीभाषामें	जुजब ।Jujob
लैटिन्भाषामें	झिझिफस् जुजुबा । Zizyphusfujujba
फारसीभाषामें	कुनार ।
अरबीभाषामें	सीदरनवंक ।

बदरलक्षणानि गुणाश्च ।

पच्यमानं सुमधुरं सौवीरं बदरं महत् । सौवीरं बदरं शीतं भेदनं गुरु शुक्रलम् ॥ बृंहणं पित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवार-

णम् । सौवीराल्लघु संपक्वं मधुरं कोलमुच्यते ॥ कोलं तु बदरं दाहि रुच्यमुष्णं च वातहृत् । कफपित्तकरं चापि गुरुसारकमीरितम् ॥ कर्कन्धूःक्षुद्रबदरं कथितं पूर्वसूरिभिः । अम्लं स्यात्क्षुद्रबदरं कषायं मधुरं मनाक् ॥ स्निग्धं गुरु च तिक्तं च वातपित्तापहं स्मृतम् । शुष्कं भेद्यग्निकृत्सर्वं लघु तृष्णाक्लमास्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बडा और पककर मीठा पडगयाहो ऐसे बेरको सौवीर कहतेहैं, सौवीरबेर-शीतल, भेदक, भारी, शुक्रजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, क्षय और तृषानिवारक है। सौवीरसे छोटे अर्थात सामान्य बेर और पककर मीठे होगये हों ऐसे बेरोंको कोल कहते हैं। कोलबेर-दाहजनक, रुचिकारक, गरम, वातनाशक, कफपित्तकारक, भारी और सारक है। छोटे बेरोंको कर्कन्धू कहते हैं। कर्कन्धू-खट्टे, कषेले, मधुर, स्निग्ध, भारी, कडवे और वातपित्तनाशक हैं। सर्व प्रकारके सूखेहुए बेर-भेदक, अग्निजनक, हलके तथा तृषा, क्लम और रुधिरदोषोंको दूर करते हैं।

अन्यच्च।

कर्कन्धूः कोलबदरमामं पित्तकफावहम् । पक्कं पित्तानिलहरं स्निग्धं समधुरं सरम्॥ तच्छुष्कं कफवातघ्नं न च पित्ते विरुध्यते । पुराणं तृट्प्रशमनं श्रमघ्नं दीपनं लघु ॥(राजवल्लभ)

अर्थ-छोटे, बडे और सामान्य कच्चे बेर-पित्त और कफवर्द्धक हैं वही पक्के-पित्तवातनाशक, स्निग्ध, मधुर और सारक हैं, वही सूखे-कफ और वातनाशक हैं और पित्तवर्द्धक नहीं हैं और वही पुराने-तृषा और श्रमनाशक हैं, अग्निप्रदीपक और लघुपाकी हैं।

अन्यच्च।

अपक्वं श्लेष्माणं विरचयति वातं वितनुते ततो मध्यावस्थं किमपि मधुराम्लं पवनहृत् । सुपक्वं पित्तघ्नं श्रममदवमिच्छेदि बलदं सरं तृष्णाजित्तद्गृहबदरमश्नन्ति धनिनः ॥

अर्थ-अपक्क अर्थात कच्चे बेर-कफकारक और वातनिवारक हैं। मध्यम अवस्थाके बेर-किञ्चित् मधुर, अम्ल और वातनाशक हैं। पक्के बेर-पित्तनाशक, श्रमहारक, वमननिवारक, बलवर्द्धक, सारक और तृषानाशक हैं।

अपिच ।

बदरी शीतला रूक्षा तिक्ता पित्तकफापहा । फलमस्यास्तु मधुरं तुवरं चाम्लमीरितम् ॥ तच्च पक्वं तु मधुरमम्लमुष्णकफप्रदम् । ग्राहकं लघु रुच्यं च वाय्वतीसारशोषहृत् ॥ रक्तश्रमहरं प्रोक्तं पंडितैश्चरकादिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-बेरीका वृक्ष-शीतल, रूक्ष, कडवा तथा पित्त और कफनाशक है । इसका कच्चा फल-मधुर, कषेला और खट्टा है । इसका पक्का फल-मधुर, खट्टा, गरम, कफकारक, मलरोधक, हलका, रुचिकारी तथा वात, अतिसार, शोष, रुधिरदोष और श्रमको हरनेवाला है ।

हस्तिकोलिगुणाः ।

गजकोलं दुर्जरं स्याच्छीतं स्वादु गुरु स्मृतम् ।
ग्राहकं लेखनं स्निग्धं पौष्टिकं मलबद्धकृत् ॥
आध्मानकारकं चैव पित्तवातविनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-हास्तिकोलिबेर-दुर्ज्जर, शीतल, स्वादु, भारी, ग्राही, लेखन, स्निग्ध, पुष्टिकारक, मलवर्द्धक, आध्मानकारक तथा पित्त और वातनाशक है ।

राजबदरगुणाः ।

राजबदरः सुमधुरः शिशिरो दाहार्तिपित्तवातहरः ।
वृष्यश्च वीर्यवृद्धिं कुरुते शोषश्रमं हरते ॥

अर्थ-राजबेर- मधुर, शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, वातनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य तथा शोष और श्रमनाशक है ।

भूबदरीगुणाः ।

भूबदरी मधुराम्ला कफ वातविकारहारिणी पथ्या ।
दीपनपाचनकर्त्री किञ्चित्पित्तास्रकारिणी रुच्या ॥ (नि०र०)

अर्थ-झडबेर-मधुर, अम्ल, कफनाशक, वातविकारनिवारक, पथ्य, दीपन, पाचक, रुचिकारक और किंचित् रक्तपित्तको कुपित करै है ।

बदरीफलमज्जागुणाः ।

बदरीफलमज्जा तु तुवरा मधुरा मता ।

शुक्रदा बलदा वृष्या कासश्वासतृषापहा ।
वातघ्नी छर्द्दिदाहघ्नी पित्तहा मुनिभिर्मता ॥ (नि० र०)

अर्थ-बेरकी मींग-कषेली, मधुर, शुक्रजनक,बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक तथा खाँसी,श्वास,तृषा,वात,वमन, दाह और पित्तकोदूर करेहै।

बदरस्य पत्रगुणाः ।

बदरस्य पत्रलेपो ज्वरदाहविनाशनः ।
त्वचा विस्फोटशमनी बीजं नेत्रामयापहम् । (रा० नि०)

अर्थ-बेरोंके पत्तोंका लेप-ज्वर और दाहका नाश करे है । बेरी, की छाल फोडेको दूर करनेवाली है। बेरीके बीज अर्थात् गुठलीका मींग नेत्ररोगनिवारक है । बेरीके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानके स्थानोंमें प्रसिद्ध हैं !

विवरण-बेरके वृक्ष अनेक जातिके होतेहं और यह सब स्थानोंमें होतेहैं, इसके वृक्ष कांटेदार मध्यम भागके होतेहैं, पत्ते छोटे और गोल कुछेक लम्बाई लिये होतेहैं, फूल मौरहीमें छोटे २ सफेद रंगके होतेहैं, फल अपनी२ जातिके आतेहैं, छोटे,बडे,लम्बे,गोल, पैवन्दी,कठा, पौडा और रामपुरी इत्यादि।एक झरबेर कहलातेहैं उनके क्षुप छोटे २पृथ्वीपर फैले हुए होतेहं उनका एक वनही है जिसका नाम बदरिकाश्रमहै,और दिल्लीसे आगे बढकर जो देखा दो कोसोंतक बेरकेही वृक्ष देखनेमें आये, उनहीं क्षुपोंको काटकाटकर और उनके पत्ते झाड झाडकर बडे बडे ऊँचे ढेर लगादेतेहैं, उनको पाला कहतेहैं, उसीसे गाय भैंसोंकी उदरपूर्णता होतीहै उन क्षुपोंपर छोटे२ बेरभी लगतेहैं प्रथम हरे होतेहैं, मध्यम अवस्थामें पीले और अंतसमय लाल पडकर सुकड जातेहैं ।

विकङ्कतनामानि।

विकङ्कतः स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलः स्वादुकण्टकः ।
स एव यज्ञवृक्षश्च कण्टकी व्याघ्रपादपि ॥

अर्थ-विकङ्कत,स्रुवावृक्ष, ग्रन्थिल, स्वादुकण्टक,यज्ञवृक्ष, कण्टकी, व्याघ्रपाद(वैकङ्कत,वृतिकर, कण्टकारी,स्रुवावृक्ष, किंकिरी,स्रग्दारु, कण्टपत्र, स्रुग्दारु, मधुपर्णी,कण्टपाद, बहुफल, गोपघोण्टा, स्रुवद्रुम, मृदुफल, दन्तकाष्ठ, यज्ञिय, ब्रह्मपादप, पिण्डार, हिमक, पूतकिंकिणी, पृथुबीज, सुधावृक्ष, पादरोहिण, रावण)

संस्कृतभाषामें	विकंकत ।
हिन्दीभाषामें	कंटाई, किंकिणी, वंज ।
वंगभाषामें	वईचिगाछ ।
मराठीभाषामें	बेहडयाचें फळ ।
गुजरातीभाषामें	विकलो ।
कर्णाटकीभाषामें	हलुमाणिका मालेगु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कानवेगुचेट्टु ।
औत्क०	वइचकुडि ।
पं०	कुकोंधा ।
लैटिन्भाषामें	सिलस्ट्रस् मोंटैना । Selstrus Montana

अस्य गुणाः ।

विकंकतोऽम्लमधुरः पाकेऽतिमधुरो लघुः ।
दीपनः कामलास्रघ्नः पाचनः पित्तनाशनः (रा०नि०)

अर्थ-कंटाई-अम्ल, मधुर, पाकमेंभी मधुर, लघु, दीपन, कामलानाशक, रुधिरदोषनिवारक, पाचक और पित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

विकंकतो मधुश्चाम्लः कषायः शीतलो जयेत् । बलासपित्तशोफास्रविकारान् कामलां तथा ॥ पाककालेऽतिमधुरो दाहं शोषं च नाशयेत् । दीपनः पाचनश्चैव व्रणलूतार्शनाशनः॥

अर्थ-विकंकत-मधुर, अम्ल, कषेला, शीतल तथा कफ, पित्त, शोफ, रुधिरविकार और कामलारोगको दूर करे है । पचनेमेंभी मधुर, दीपन, पाचक और दाह, शोष, व्रण, लूता और बवासीरको दूर करे है ।

अपि च ।

विकंकतफलं पक्वं मधुरं सर्वदोषजित् । (भावप्रकाश)

अर्थ-विकंकतका पक्का फल-मधुर और सर्वदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

विकंकतं च नात्युष्णं दोषहृन्नेत्रपुष्पजित् ।

अर्थ-विकंकत-अत्यन्तगरम नहीं है, त्रिदोषनाशक और आंखके फूलेको दूर करे है । विकंकतके वृक्ष-जंगल और वनोंमें होते हैं, वृक्षपै कांटे होते हैं ।

विवरण । कटाईके वृक्ष जंगल और वनोंमें बहुत बडे २ होते हैं उनके पत्ते छोटे २ और डालियोंमें कांटे होते हैं, इसमें बहुत अच्छे २ बेरके समान गोल २ फल लगते हैं।

प्रियालनामानि ।

प्रियालस्तु खरस्कन्धश्चारो बहुलवल्कलः ॥
राजादनस्तापसेष्टः सन्नकद्रुर्धनुष्पटः ॥

अर्थ-प्रियाल, खरस्कन्ध, चार, बहुलवल्कल, राजादन, तापसेष्ट, सन्नकद्रु, धनुष्पट (अखट्ट, ललन, चारक, बहुवल्कल, सन्नद्रु, तापसप्रिय, स्नेहबीज, उपवट, मोक्षवीर्य्य, द्रुसल्लक, राजातन, पियल, धनु, पट, हसन्नक, धनुःपट, पियालक)

संस्कृतभाषामें	प्रियाल, पिआल ।
हिन्दीभाषामें	चिरौंजी ।
वंगभाषामें	चिरौंजी पियाल ।
मराठीभाषामें	चारोली (को०) चारवृक्षबीज ।
गुजरातिभाषामें	चारोली ।
कर्णाटकीभाषामें	चारबीज ।
तैलिङ्गीभाषामें	सारुपपु ।
तामिलिभाषामें	काटमरा ।
औ०	चरु ।
पं०	चिरोली ।
लैटिन्भाषामें	बुकेननिया लेट्रिफोलिआ । Buchanania Latiforlia
फारसीभाषामें	बुकलेखाजा ।
अरबीभाषामें	हबुस्समाना ।

अस्य गुणाः ।

चारोली मधुरा वृष्या चाम्ला गुर्वी सरा मता । मलस्तम्भकरी स्निग्धा शीतला धातुवर्धिनी ॥ कफकृद्दुर्जरा बल्या प्रियावातविनाशिनी । पित्तदाहज्वरतृषाक्षतरुग्रक्तदोषनुत् ॥ क्षतक्षयं नाशयति तन्मज्जा मधुरा मता ॥ वृष्या च दाहपित्तघ्नी तत्तैलं मधुरं गुरु ॥ किञ्चिदुष्णं कफकरं पित्तवातविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-चिरौंजी-मधुर, वृष्य, भारी, अम्ल, सारक, मलस्तम्भक, स्निग्ध, शीतल, धातुवर्द्धक, कफकारक,दुर्जर, बलवर्द्धक,प्रिय,वातविनाशक तथा पित्त, दाह, ज्वर, तृषा, क्षतरोग, रक्तविकार और क्षतक्षयका नाश करेहै । चिरोंजीकी मींग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक,दाह और पित्तनाशक है । चिरोंजीका तेल-मधुर, भारी, किञ्चित् गरम, कफकारक, और पित्तवातको दूर करेहै ।

अपिच ।

प्रियालं मधुरं स्निग्धं बृंहणं वातपित्तजित् । (रा०नि०)

अर्थ-चिरोंजी-मधुर,स्निग्ध,पुष्टिकारक और वातपित्तनाशक है।

प्रियालमूलादिगुणाः ।

चारमूलं तु तुवरं रक्तरुक्कफपित्तहम् । चारमज्जा तु मधुरा वृष्या स्निग्धा च शीतला ॥ मलस्तम्भकरी चामवर्द्धका दुर्जरा मता । हृद्या च शुक्रला वातपित्तनाशकरी मता ॥ (नि० र०)

अर्थ-चिरोंजीके वृक्षकी जड-कषेली तथा रुधिरविकार, कफ और पित्तनाशक है । चिरोंजीवृक्षकी मींग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, शीतल, मलस्तम्भक, आमवर्द्धक, दुर्जर,हृदयको हितकारी, शुक्रजनक और वातपित्तनाशक है ।

विवरण-चिरोंजीके वृक्ष कोंकण आदि देशमें अधिक होते हैं,पत्ते छोटे२नोकदार खरखरे होते हैं, पत्ते छोटे २ बेरके समान नीलरंगके होते हैं उसमेंसे जो मींग निकलती है, उसको चिरौंजी कहते हैं।

राजादननामानि ।

राजादनः फलाध्यक्षो राजन्या क्षीरिकापि च ।

अर्थ-राजादन, फलाध्यक्ष, राजन्या,क्षीरिका (राजफल, कपीष्ट, क्षीरवृक्ष, नृपद्रुम, निम्बबीज, मधुफल,माधवोद्भव,क्षीरी,गुच्छफल, धूपेष्ट, राजवल्लभ, श्रीफल, दृढस्कन्ध, क्षीरशुक्ल)

संस्कृतभाषामें	राजादन ।
हिन्दीभाषामें	खिन्नी, खिरनी ।
वंगभाषामें	क्षीरिणी, राजणी ।
मराठीभाषामें	खिरणी ।
गुजरातीभाषामें	रायण ।

कर्णाटकीभाषामें	खेणे मारिले ।
तामिलीभाषामें	पल्ल ।
इंग्रेजीभाषामें	ओबट्यूसुलीव्ड माईमुसोप्स । Obtuse leaved Mimusops
लैटिन्भाषामें	माईमुसोप्स हेग्ज़ान्ड्रा । Mimusops hegzrandra

अस्य गुणाः ।

क्षीरी रुक्षाफलं शीतं स्निग्धं गुरु बलप्रदम् ।
तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् ॥ (म०नि०)

अर्थ-खिरनी-शीतल, स्निग्ध, भारी, बलवर्द्धक तथा तृषा, मूर्च्छा, मद, भ्रांति, क्षय और त्रिदोषको दूर करे है ।

अपिच ।

राजादनी तु मधुरा पित्तहृद्गुरु तर्पणी ।
वृष्या स्थौल्यकरी हृद्या सुस्निग्धा मेहनाशकृत् ॥ (रा.व.)

अर्थ-खिरनी-मधुर, पित्तनाशक, भारी, तृप्तिकारक, वीर्य्यजनक, देहको स्थूल करनेवाली, हृदयको हितकारी, स्निग्ध और प्रमेहको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

राजादनं हिमं स्निग्धं कषायं मधुरं गुरु।स्वाद्वम्लपाकं संग्राहि वृष्यं विष्टम्भि बृंहणम् ॥ रोचनं मांसलं हन्ति दोषत्रयमदभ्रमान् । मूर्च्छामोहतृषादाहं रक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥

अर्थ-खिरनी-शीतल, स्निग्ध, कषेली, मधुर, भारी, स्वादु, अम्लपाकी, मलरोधक, वीर्य्यवर्द्धक, विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, रोचन, मांसवर्द्धक तथा त्रिदोष, मद, भ्रम, मूर्च्छा, मोह, तृषा, दाह, रक्तपित्त और क्षतक्षयको दूर करे है ।

विवरण । खिरनीके वृक्ष बडे २ ऊंचे होतेहैं, पत्ते नेवाडीके समान होतेहैं, इसमें शीतऋतुमें मौर आताहै आर वसन्त ऋतुमें फल आतेहैं, फल निंबौलीके समान गुच्छे लगतेहैं, वे कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले पडजातेहैं और कोई २ पकनेपरभी हरे ही रहतेहैं, उनको हरियल कहतेहैं, उन फलोंमेंसे दूधभी निकलता है ।

आतृप्यनामानि ।

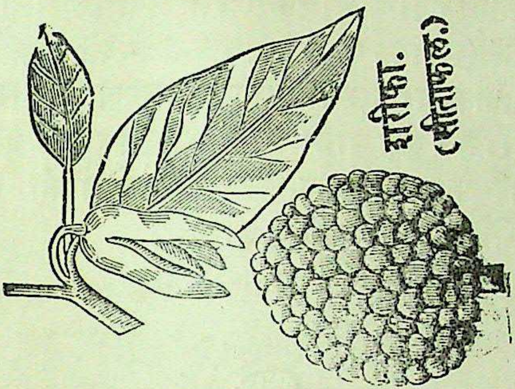

सीताफलं गंडगात्रं वैदेहीवल्लभं तथा ।
कृष्णबीजं चाग्रिमाख्यमातृप्यं बहुबीजकम् ॥

अर्थ-सीताफल, गंडगात्र, वैदेहीवल्लभ, कृष्णबीज, अग्रिमाख्य, आतृप्य, बहुबीजक ।

संस्कृतभाषामें	आतृप्य ।
हिन्दीभाषामें	सरीफा, सीताफल ।
वङ्गभाषामें	आता ।
मराठीभाषामें	सीताफळ ।
तैलिङ्गीभाषामें	सीताफल ।
इंग्रेजीभाषामें	कस्टर्डएपल Custerd ypple
ल०	एनोना स्केमोसा Annona Sqamosa
फारसीभाषामें	काज ।
अरबीभाषामें	सरीफा ।

अस्य गुणाः ।

तर्पणं रक्तकृत्स्वादु शीतलं हृद्यमेव च ।
बलदं मांसकृद्दाहरक्तपित्तमरुत्प्रणुत् ॥

अर्थ-सीताफल-तृप्तिजनक, रक्तवर्द्धक, स्वादिष्ठ, शीतल, हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक, मांसवर्द्धक तथा दाह, रक्तपित्त और वात-विनाशक है ।

अन्यच्च ।

सीताफलं तु मधुरं शीतं हृद्यं बलप्रदम् ।

वातलं कफकृत्स्वादु पुष्टिकृत्पित्तनाशनम् ॥ (नि० र०

अर्थ-सीताफल(सरीफा)मधुर,शीतल,हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक,वातकारक,कफकारक,स्वादिष्ठ,पुष्टिकारक और पित्तनाशक है।

विवरण। सरीफेके वृक्ष प्रायः सर्व भारतवर्षके प्रदेशोंमें पाये जातेहैं। व्यवहार-फल, पत्र,छाल,मूल।इसके बीजोंको पीसकर शिर धोनेसे शिरके कीडे अर्थात् जूएँ दूर होतेहैं।

लवनीफलनामानि।

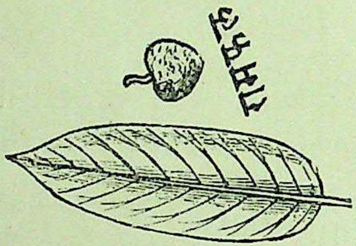

रामस्य च फलं रामफलं रामाह्वयं तथा।
रक्तत्वचं च वासन्तं कृष्णबीजं मृदूफलम् ॥

अर्थ-रामफल, रामाह्वय, रक्तत्वच, वासन्त, कृष्णबीज, मृदूफल (लवनी, ग्रीष्मजा, अग्रिमा,)

संस्कृतभाषामें	लवनी।
हिन्दीभाषामें	लवनी, एनोना।
वंगभाषामें	नोना, लोना।
मराठीभाषामें	रामफळ।
गुजरातीभाषामें	रामफल।
तैलिङ्गीभाषामें	रामफल।
इंग्रेजीभाषामें	नेटेड्कस्टर्डएपल। Nettedcustard apple
लैटिन्भाषामें	एनोनारेटिक्युलेटा। Anonareteculata
गोवा०	अनोना।

अस्य गुणाः।

रामफलं कषायं च स्वाद्वम्लं कफकारकम्।
वातलं चास्रतृड्दाहपित्तश्रमक्षुधापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-रामफल-कषला, स्वादिष्ठ, खट्टा, कफकारक, बादी तथा रुधिरविकार, तृषा, दाह, पित्त, श्रम और क्षुधाको हरनेवाला है ।

अनंनासनामानि ।

अनन्नास.

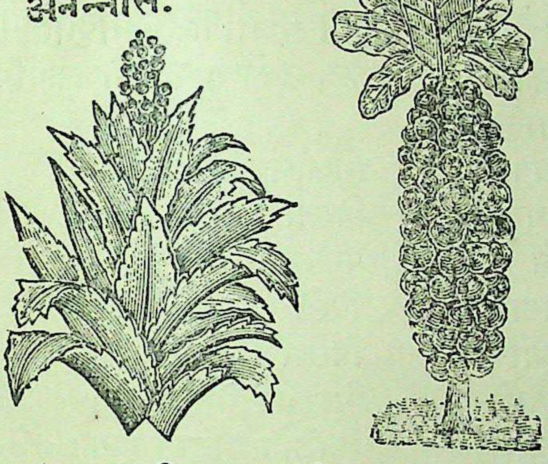

अनंनासं पारवती चामं कौतुकसंज्ञकम् ।

अर्थ-अनंनास, पारवती, आम, कौतुकसंज्ञक ।

संस्कृतभाषामें	अनंनास, कौतुलसंज्ञक ।
हिन्दीभाषामें	अनंनास ।
मराठीभाषामें	अननस ।
गुजरातीभाषामें	अनंनास ।
इंग्रेजीभाषामें	पाईनएंपल । Pine apple
लैटिन्भाषामें	अननासा सेटिवा । Annassa sative

अस्य गुणाः ।

अनंनासमपक्कं तु रुच्यं हृद्यं गुरुर्मतम् । कफपितकरं चैव प्रोक्तं चान्नमरोचकम् ॥ श्रमं क्लमं नाशयति तत्पक्कं स्वादु पित्तहृत् । रसातपविकारं च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कच्चा अनंनास-रुचिकारक,हृदयको हितकारी, भारी, कफपित्तकारक,अन्नरोचक तथा श्रम और क्लमनाशक है पक्का अनंनास-स्वादिष्ठ, पित्तकारक तथा रसविकार और आतपविकारको दूर करेहै ।

विवरण । अनंनास पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होताथा क्योंकि

सिवाय निघण्टुरत्नाकर (जोकि, थोडे दिनोंसेही बना है) के और किसी प्राचीन निघण्टुमें नहीं देखजाता।

निकोचकनामानि।

निकोचकं चारुफलं सकोचं जलगोजकम्।
पिस्तं मुकूलकं ज्ञेयं दन्तीफलसमाकृति॥

अर्थ-निकोचक, चारुफल, सकोच, जलगोजक, पिस्त, मुकूलक, दन्तीफलसमाकृति।

संस्कृतभाषामें	निकोचक।
हिन्दीभाषामें	पिस्ता।
बंगभाषामें	पेस्तागाछ।
मराठीभाषामें	पिस्ते।
गुजरातीभाषामें	पिस्ता।
इंग्रेजभाषामें	पिस्टेशिओनट्। Pistachio nut
लैटिन्भाषामें	पिस्टेशियाह्वेरा। Pistasiavera
फारसीभाषामें	पिस्तां।
अरबीभाषामें	फिस्तक।

अस्य गुणाः।

निकोचकं गुरु स्निग्धं वृष्योष्णं धातुवर्द्धकम्।
रक्तप्रसादनं स्वादु बल्यं पित्तकरं मतम्॥
तिक्तं सरं च कफहृद्वातगुल्मत्रिदोषजित्। (नि०र०)

अर्थ-पिस्ते-भारी, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, गरम, धातुवर्द्धक, रक्तको शुद्ध करनेवाले, स्वादु, बलवर्द्धक, पित्तकारक, कडवे, सारक, कफनाशक तथा वात, गुल्म, और त्रिदोषको दूर करे हैं।

अंजीरनामानि।

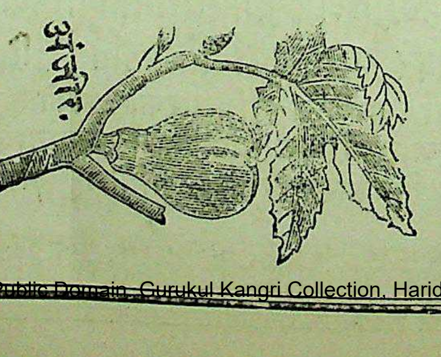

अंजीरं मञ्जुलं ज्ञेयं काकोदुम्बरिकाफलम् ।

अर्थ–अंजीर, मंजुल, काकोदुम्बरिकाफल ।

संस्कृतभाषामें	अंजीर ।
हिन्दीभाषामें	अंजीर ।
वंगभाषामें	आँजीर, पेयारा ।
मराठीभाषामें	अंजीर ।
गुजरातीभाषामें	अंजरि ।
कर्णाटकीभाषामें	मेडियंड्ड ।
इंग्रेजीभाषामें	फिग्ट्री । Fig tree
लॅटिन्भाषामें	फाईकस्केरिका । Ficuscariea
फारसीभाषामें	तीन ।

अस्य गुणाः ।

अंजीरकं फलमतीव सुशीतलं च सद्यो निवारयति शोणितपित्तमुग्रम् । पथ्यं विशेषमपि पित्तशिरोविकारे नासाप्रवृत्तरुधिरे च विशेषतस्तु ॥

अर्थ–अंजीर–अत्यन्तशीतल, तत्काल रक्तपित्तनाशक, पित्त और शिरोरोगमें विशेषकरके पथ्य है तथा नाकसे रुधिरके गिरनेको बंद करे है ।

अन्यच्च ।

अंजीरकं गुरु हिमं मधुरं च वातपित्तास्ररोगहरणं करणं रुचीनाम् । सुस्वादु पाकरसयोर्गुरु शीतलं च श्लेष्मामवातकरमस्रविकारहारि ॥

अर्थ–अंजीर–भारी, शीतल, मधुर, वातनाशक, रक्तपित्तहारी, रुचिकारी, स्वादु, पचनेमेंभी स्वादु तथा श्लेष्म और आमवातकारक है और रुधिरविकारको दूर करेहै ।

परूषकनामानि ।

परूषकं गिरिपीलु रोषणं नागदलोपमम् ।

अर्थ–परूषक, गिरिपीलु, रोषण, नागदलोपम (परावत, नीलचर्म्म, नीलमण्डल, परापर, अल्पास्थि, धन्वनच्छद, मृदुफल)

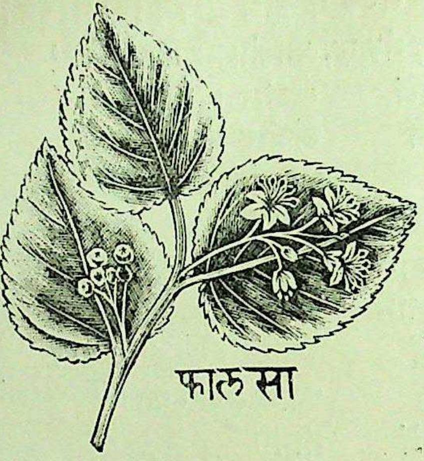

फालसा

संस्कृतभाषामें	परूषक ।
हिन्दीभाषामें	फालसा, परुषा ।
वंगभाषामें	फलसा ।
मराठीभाषामें	फाळसा ।
कर्णाटकीभाषामें	बेट्टहा, दागलि ।
तैलिङ्गीभाषामें	पुटिकी ।
गुजरातीभाषामें	ध्रामण ।
इंग्रेजीभाषामें	एश्याटिक् ग्रेविया । Asiatic Grewia
लेटिन्भाषामें	ग्रेविया एश्याटिका । Grewia asi
फारसीभाषामें	पालसा ।
अरबीभाषामें	फालसा ।

अस्य फलगुणाः ।

परूषमम्लं कटुकं कफार्तिजिद्वातापहं तत्फलमामपित्तकृत्व् ।
सोष्णं च पक्वं मधुरं रुचिप्रदं पित्तापहं शोफहरं च तर्पणम् ॥

अर्थ-कच्चा फालसा-कटु, कफनाशक, खट्टा, वातनाशक और पित्तको उत्पन्न करे है । पक्का फालसा-मधुर, रुचिदायक, पित्तनाशक, शोफनाशक और तृप्तिकारक है ।

अन्यच्च ।

परूषकं कषायाम्लमामपित्तकरं लघु ।

तत्पक्कं मधुरं पाके शीतं विष्टम्भि बृंहणम् ॥
हृद्यं तृट्पित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् । (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चा फालसा-कषेला, खट्टा, पित्तकारक, हलका । पक्का फालसा-मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पुष्टिजनक, हृदयको हितकारी तथा तृषा, पित्त, दाह, रुधिरविकार, ज्वर, क्षय और वातको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

परूषकं कषायाम्लं लघूष्णं स्वादु पित्तलम् । रूक्षं मारुतजित् पक्कं स्वाद्वम्लं शुक्रलं हिमम् ॥ रोचनं मधुरं पाके हृद्यं विष्टम्भि बृंहणम् । हन्ति मारुतपित्तास्रतृष्णादाहक्षतक्षयान् ॥

अर्थ-कच्चा फालसा-कषेला, खट्टा, हलका, गरम, स्वादिष्ठ, पित्तकारक, रूखा व वातको दूर करनेवाला है। पक्का फालसा-स्वादिष्ठ, खट्टा, शुक्रजनक, शीतल, रोचन, पचनेमें मधुर, हृदयको हितकारी, विष्टम्भकारक, पुष्टिकारक तथा वात, रक्तपित्त, तृषा, दाह और क्षतक्षयको क्षय करेहै ।

अस्यत्वग्गुणाः ।

परूषत्वक्प्रमेहघ्नी योनिमेढ्रप्रदाहनुत ॥
मूत्रदोषप्रशमनी शीतपित्तानिलापहा ॥ (आ० सं०)

अर्थ-फालसेकी छाल-प्रमेहनाशक, योनिकी दाह और लिङ्गकी दाहको दूर करनेवाली, मूत्ररोगनिवारक तथा शीत पित्त और वातविनाशक है ।

विवरण-फालसेके वृक्ष मध्यम आकारके होतेहैं, मालीलोग अपने बागोंमें बहुत लगादेतेहैं पत्ते बेलके समान तीन २ मिलेहुए होतेहैं, फल दो तीन एकत्र होतेहैं, फल कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर ऊदे रंगके होजाते हैं ।

तूतनामानि ।

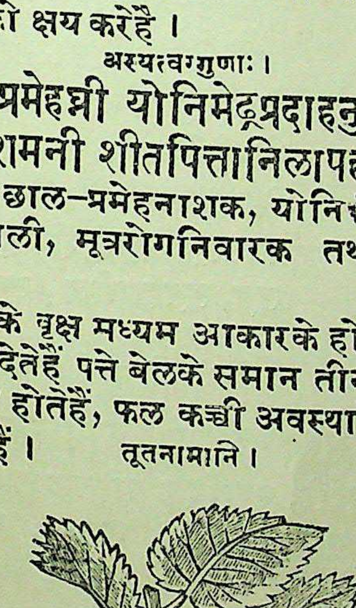

सहतूत

तूतं तूदं ब्रह्मकाष्ठं ब्रह्मण्यं ब्रह्मदारु च।
मृदु सारं सुपुष्पं च सुरूपं नीलरंगकम् ॥

अर्थ-तूत, तूद, ब्रह्मकाष्ठ, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, मृदुसार, सुपुष्प, सुरूप, नीलरंगक (तूल, ब्राह्मणेष्ट, नीलवृन्तक, क्रमुक, विप्रकाष्ठ, मदसार, पूण, ब्रह्मनेष्ट, नूढ, पूप, ब्रह्मण्य, पलाशिक, यूप)।

संस्कृतभाषामें	तूत।
हिन्दीभाषामें	सहतूत, तूत।
वंगभाषामें	तूँत (द्रु), पलाशपिपुल।
मराठीभाषामें	तूतें।
कों०	तूतीची फळें।
गुजरातीभाषामें	शेतूत, तूत।
तैलङ्गीभाषामें	कम्बलिचेट्टु।
तामिलीभाषामें	मषुकट्टइचेडि।
इंग्रेजीभाषामें	मलबेरिझ। Mulberies
लैटिन्भाषामें	मोरस इण्डिका। Morus Indica
	मोरसनिग्रा। Morus nigra
	मोरसआल्वा। Morus alba
फारसीभाषामें	शाहतूत, तूततुर्श, तूतशीरि।
अरबीभाषामें	तूत, तूतहामीज, तूतहुलु।

अस्य गुणाः।

तूतं पक्वं गुरु स्वादु हिमं पित्तानिलापहम्।
तदेवामं गुरु सरमम्लोष्णं रक्तपित्तकृत्॥(भावप्रकाश)

अर्थ-पक्के सहतूत-भारी, स्वादिष्ठ, शीतल तथा पित्त और वातविनाशक हैं। कच्चे सहतूत-भारी, सारक, खट्टे, गरम और रक्तपित्तकारक हैं।

अपिच।

तौतानि पक्वानि गुरुशीतानि मधुराणि च। ग्राहकाणि रक्तदोषवातपित्तहराणि च॥ कोमलानि च तानि स्युर्गुरुरेचकराणि च। अम्लानि चोष्णवीर्य्याणि रक्तपित्तहराणि च॥

अर्थ-पके सहतूत-भारी, शीतल, मधुर, मलरोधक तथा रक्तविकार,

वात और पित्तका नाश करेहैं । कोमल सहतूत-भारी, दस्तावर खट्टे, गरम और रक्तपित्तका नाश करेहैं । सहतूतके वृक्ष बागोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते अंजीरके समान तीन २ कंगूरेवाले और नीमके पत्तोंके सदृश चारों ओर आरेकेसे चिह्न होतेहैं, यह वृक्ष दोप्रकारके होतेहैं, एकपर काले सहतूत और दूसरेपर सफेद सहतूत आतेहैं, इसके फल फलीके समान होतेहैं, और उनमें बाजरेकेसे दाने सर्वत्र लगे होतेहैं वह फली अत्यन्त कोमल और रसीली होतीहै ।

पारेवतनामानि ।

पारेवतं श्वेतपुष्पं तिन्दुकाभफलं मतम् ।

अर्थ-पारेवत, श्वेतपुष्प तिन्दुकाभफल (आरेवत, पालेवत)

संस्कृतभाषामें	पारेवत ।
हिन्दीभाषामें	पारेवत ।
वंगभाषामें	पेयारा ।
औ०	प्याडा ।
तैलिङ्गीभाषामें	उत्तरिगे, दोडउत्तरिगे ।

अस्य गुणाः ।

पारेवतं हिमं स्वादु गुरूष्णं वातपित्तजित् ।
तद्वन्माणवकं ज्ञेयं तृष्णाघ्नं मिष्टमम्लकम् ॥(ध०नि०)

अर्थ-पारेवत-शीतल, स्वादिष्ठ, भारी, गरम, वातपित्तनाशक और महापारेवतकेभी गुण इसीके समानहैं तृषानाशक, मिष्ट और अम्ल है।

अन्यच्च ।

पारेवतं तु तुवरं कृमिवातहारि वृष्यं तृषाज्वरविदाहहर च हृद्यम् ॥ मूर्च्छाभ्रमश्रमविशोषविनाशकारि स्निग्धं च रुच्यमुदितं बहु वीर्य्यदं च ॥

अर्थ-पारेवत-कषेला, कृमिनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, रुचिकारक, वृष्य, हृदयको हितकारी तथा तृषा, ज्वर, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, श्रम और शोषनाशक है ।

महापारेवतगुणाः ।

महापारेवते गौल्यं बलकृत्पुष्टिवर्द्धनम् ।

वृष्यं मूर्च्छां ज्वरघ्नं च पूर्वोक्तादधिकं गुणैः ॥

अर्थ-महापारेवत-गौल्य, बलकारक, पुष्टिवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, मूर्च्छानिवारक, ज्वरनाशक है, यह पारेवतसे अधिक गुणवाला है।

श्लेष्मातकनामानि ।

श्लेष्मातकः कर्बुदारः पिच्छिलो लेखशाटकः ।
शेलुःशैलुर्गंधपुष्पः शापितो बहुवारकः ॥

अर्थ-श्लेष्मातक-कर्बुदार, पिच्छिल, लेखशाटक, शेलु, शैलु, गन्धपुष्प, शापित, बहुवारक, (उद्दाल, भूतवृक्ष, बहुवार, द्विजकुत्सित, शीतफल, शाटक, कर्बुदारक, भूतद्रुम, श्लेष्मात, श्लेष्मातक, शीतल, उद्दालक, सेलु)

भूकर्बुदारनामानि ।

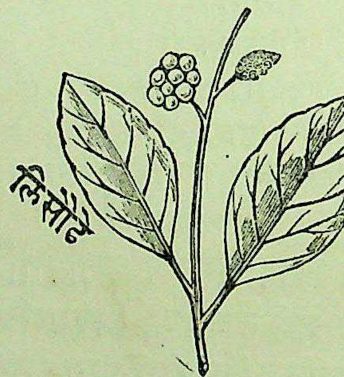

भूकर्बुदारकश्चान्यो लघुश्लेष्मातकस्तथा ॥

अर्थ-भूकर्बुदार, लघुश्लेष्मातक (क्षुद्रश्लेष्मान्तक, भूशेलु, लघुपिच्छिल, लघुशीत, लघुशेलु, सूक्ष्मफल, मधुभूतद्रुम, भूकर्बुदार)

संस्कृतभाषामें	श्लेष्मातक । भूकर्बुदार ।
हिन्दीभाषामें	निसोडा, निसोरे, लभेरा ।
वंगभाषामें	बहुयार, चालतागाछ, बोहरी ।
मराठीभाषामें	भोंकर, शेळवंट, भोंकरी, गोंधणी ।
गुजरातीभाषामें	गुंदोमोटो, गुंदीनानी ।
कर्णाटकीभाषामें	चलु गोंदिणी ।
तैलिंगीभाषामें	नाकेरु, तुककेरु ।
तामिलीभाषामें	विडि ।
औत्कलीभाषामें	अड ।

इंग्रेजीभाषामें	नेरोलिव्ड सेपिस्टन । Narrow leaved Sepistun
लैटिन्भाषामें	कोर्डिया एंगस्टिफोलिया । Cordia angustifolia
फारसीभाषामें	सिपिस्तान् ।
अरबीभाषामें	सेफितान् दवक ।

अस्य गुणाः ।

श्लेष्मातं कटु शीतलं च तुवरं स्यात्पाचकं माधुरं स्निग्धं केश्यबलासदं त्वथ कृमीञ्छूलामरक्तापहम् ॥ विस्फोटव्रणपित्तनाशनकरं वीसर्पसर्वं विषं हन्ति ह्यस्य फलं तु शीतमधुरं तिक्तंलघुस्तूवरम्॥वायोर्वृद्धिकरं च पित्तशमनं विष्टम्भि रुच्यं तथासृग्दृष्टिं कफनाशनं च गदितं पक्वं तथा माधुरम्॥ स्निग्धं शीतलबृंहणं निगदितं विष्टम्भि रूक्षं गुरु वायोर्नाशकरं च पित्तशमनं स्याद्रक्तदोषापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-श्लेष्मान्तक-कटु, शीतल,कषेला,पाचक, मधुर, स्निग्ध, केशोंको हितकारी, तथा कृमि, शूल,आमरक्त, कफकारी, विस्फोटक, व्रण, पित्त, विसर्प, और सर्व प्रकारक विषोंको हरनेवाला है। इसके फल-शीतल, मधुर, कडवे, हलके,कषेले, वातवर्द्धक, पित्तको शान्ति करनेवाले, विष्टम्भकारक, रुचिजनक तथा रुधिरविकार, दृष्टिविकार और कफनाशक हैं। इसके पक्के फल-मधुर, स्निग्ध, शीतल, पुष्टिकारक, विष्टम्भकारक, रूखे, भारी, वातविनाशक, पित्तनिवारक और रुधिरविकारको हरनेवाले हैं ।

भूकर्बुदारगुणाः ।

क्षुद्रश्लेष्मातकं वातकोपनं मधुरं मतम् ।
किंचिच्च शीतलं ज्ञेयं कृमिघ्नं स्वर्णमारकम् ॥

अर्थ-लभेरा-वातको कुपित करनेवाला, मधुर,किंचित् शीतल, कृमिनाशक और सुवर्णको मारे है ।

विवरण । लिसांडेके वृक्ष जंगल और वनमें अधिक होते हैं, पत्ते गोल कुछ लम्बाई लिये होते हैं, फल अलूचेके समान गोल रसीले गुच्छोंमें लगतेहैं, भीतरसे चिपकतेहैं इसीप्रकारके लभेडेके वृक्षभी होतेहैं, पत्तेभी इसी भाँतिके होतेहैं परन्तु फल-इससे छोटे होतेहैं,कच्चे रंगमें हरे और पकनेपर कुछ गुलाबीसे होजातेहैं,फलके भीतर बीज और कुछ गोंदसा निकलताहै ।

कतकनामानि ।

कतकं छेदनीयं च श्लक्ष्णं तोयप्रसादनम् ।
कात्थं कतकरेणुश्च चक्षुष्यं शोधनात्मककम् ॥

अर्थ-कतक, छेदनीय, श्लक्ष्ण, तोयप्रसादन, कात्थ, कतकरेणु, चक्षुष्य, शोधनात्मक (अम्बुप्रसादनफल, रुचिष्य, लेखनात्मक, अम्बुप्रसाद, कत, तिक्तफल, रुच्य, गुच्छफल, तिक्तमरिच, तोयप्रसादफल, पयःप्रसादि)

संस्कृतभाषामें	कतक ।	
हिन्दीभाषामें	निर्म्मलीफल, पायपसारी ।	
वंगभाषामें	निर्म्मलफल ।	
मराठीभाषामें	निवळीच्या बिया, चिह्लार, गजरा ।	
गुजरातीभाषामें	निर्मली ।	
कर्णाटकीभाषामें	चिल्लिकापि ।	
इंग्रेजीभाषामें	नट् वुइच् क्लिअर्सवाटर ।	Nut which clears water
लैटिन्भाषामें	स्ट्रिकनोस् पोटेटेरम् ।	Strychinos Potaterum

अस्य गुणाः ।

कतकः कटुकस्तिक्तो लेखनो रुचिकृल्लघुः । चक्षुष्यस्तुवरः शीतो विशदश्च विकासकः ॥ छेदनो मधुरश्चैव तृषादाहविषापहः । गुल्मशूलकृमीन्मेहं नेत्ररुग्जलजं मलम् ॥ नाशयेदिति च प्रोक्तः फलं तस्य च कोमलम् । चक्षुष्यं वातकृच्छीतं रक्तपित्तं तृषां विषम् ॥ मोहं च नाशयत्येव तरुणं तत्तु दुर्जरम् । रुचिदं कफपित्तघ्नं तत्पक्वं पित्तलं मतम् ॥ छर्दैः स्वेदस्य जनकं शोफं पाण्डुं विषं जयेत् । प्रतिश्यायं कामलां च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ कतकस्य च बीजं तु चक्षुष्यं तुवरं गुरु । जलप्रसादनं शीतं मधुरं चाश्मरीहरम् ॥ वातं कफं मूत्रकृच्छ्रं तृषां नेत्ररुजं विषम् । प्रमेहं शीर्षरोगं च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ कतकस्य च मूलं तु सर्वकुष्ठहरं परम् ।

अर्थ-निर्म्मलीवृक्ष-चरपरा, कडवा, लेखन, रुचिकारक, हलका, नेत्रोंको हितकारी, कषेला, शीतल, विशद, विकासी, छेदन, मधुर तथा

तृषा, दाह, विष, गुल्म, शूल, कृमि, प्रमेह, नेत्ररोग और जलके मैलको दूर करैहै। इसका कोमलफल-नेत्रोंको हितकारी, वातवर्द्धक, शीतल तथा रक्तपित्त, तृषा, विष और मोहको दूर करे है। इसका तरुण फल-दुर्जर, रुचिजनक, कफ और पित्तनाशक है। इसका पक्का फल-पित्त जनक, वमनकारक, पसीनेको लानेवाला तथा सूजन, पाण्डुरोग, बिष, प्रतिश्याय और कामला रोगको दूरकरे है। इसके बीज-नेत्रों को हितकारी, कषेले, भारी, जलको निर्मल करनेवाले, मधुर तथा पथरी, वात, कफ मूत्रकृच्छ्र, तृषा, नेत्ररोग, विष, प्रमेह और मस्तकरोगको दूर करे हैं। निर्म्मलीकी जड-सर्वप्रकारके कुष्ठोंको नष्टकरनेवाली है।

विवरण। कतक अर्थात् निर्मलीफल गोल होतेहैं, और उसके ऊपरकी छाल कुचलेकी छालकी समान होतीहै, विशेष करके इसकी सब आकृति कुचलेसेही मिलती है।

द्राक्षानामानि।

द्राक्षा मधुरसा स्वाद्वी कृष्णा चारुफला रसा।
मृद्वीका गोस्तनी चैव यक्ष्मघ्नी तापसप्रिया॥

अर्थ-द्राक्षा, मधुरसा, स्वाद्वी, कृष्णा, चारुफला, रसा, मृद्वीका, गोस्तनी, यक्ष्मघ्नी, तापसप्रिया, (प्रियाला, गुच्छफला, रसाला, अमृतफला, स्वादुफला हारहूरा, फलोत्तमा, सुफला)।

कपिलद्राक्षानामानि।

अन्या कपिलद्राक्षा मृद्वीका गोस्तनी च कपिलफला।
अमृतरसा दीर्घफला मधुवल्ली मधुफला मधूलिश्च॥
हरिता च हारहूरा सुफला मृद्वी हिमोत्तरा पथिका।
हैमवती शतवीर्य्या काश्मीरी गजराजमहिगणिता॥

अर्थ-कपिलद्राक्षा, मृद्वीका, गोस्तनी, कपिलफला, अमृतरसा, दीर्घफला, मधुवल्ली, मधुफला, मधूलि, हरिता, हारहूरा, सुफला, मृद्वी, हिमोत्तरा, पथिका, हैमवती, शतवीर्य्या, काश्मीरी।

काकलीद्राक्षानामानि।

अन्या सा काकली द्राक्षा जाम्बुका च फलोत्तमा।
लघुद्राक्षा च निर्बीजा सुवृत्ता रुचिकारिणी॥

अर्थ-काकलीद्राक्षा, जाम्बुका, फलोत्तमा, लघुद्राक्षा, निर्बीजा, सुवृत्ता, रुचिकारिणी, (रसाधिका) ।

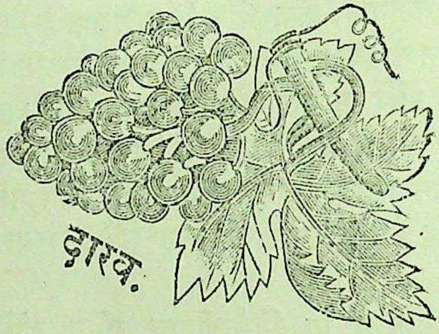

संस्कृतभाषामें	द्राक्षा ।
हिन्दीभाषामें	दाख,कालीदाख,किसमिस,अंगूर,भूरीदाख ।
वंगभाषामें	किसमिस,मनेक्का, आंगुर, बेदाना,किसूमिस् ।
मराठीभाषामें	काळें द्राक्ष, बेदाणा, किसमिस ।
गुजरातीभाषामें	धराख, कालिधराख, किसमिस ।
कर्णाटकीभाषामें	वेडगणद्राक्षे, चिकुद्राक्षे ।
तैलङ्गीभाषामें	द्राक्षा, किसमिसि, पोंड्, द्राक्षचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	कोडिमाण्डि रिप्पझाम्
इंग्रेजिभाषामें	ग्रेप Grape राझिन्स । Raisins
लैटिन्भाषामें	वाइटिन्स, वेनिफेरा Witins Venifera
फारसीभाषामें	अंगूर, मुनक्का, दानेमवीज ।
अरबीभाषामें	कीसमील, एनब्जबवि, हबुमूजबीब ।

द्राक्षा पक्का सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः। स्वादुपाकरसा स्वर्य्या तुवरा सृष्टमूत्रविट् ॥ कोष्ठमारुतकृद्वृष्या कफपुष्टिरुचिप्रदा । हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवातवातास्रकामलाः ॥ कृच्छ्रास्रपित्तसंमोहदाहशोषमदात्ययान् । आमा स्वल्पगुणा गुर्वी सैवाम्ला रक्तपित्तकृत् ॥ वृष्या स्याद्गोस्तनी द्राक्षा गुर्वी च कफपित्तनुत् । अबीजान्या स्वल्पतरा गोस्तनी सदृशी गुणैः ॥

द्राक्षा पर्वतजा लघ्वी साम्ला श्लेष्माम्लपित्तकृत् । द्राक्षा पर्वतजा यादृक् तादृशी करमर्दिका (भा० प्र०)

अर्थ-पक्कीदाख-सारक (कुछ २ दस्तावर),शीतल,नेत्रोंको हितकारी, बृंहण, भारी, स्वादुपाकी, स्वादु, स्वरशोधक, कषेली, मूत्र और मलको निकालनेवाली,कोठेमें वातको करनेवाली,वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक तथा तृषा, ज्वर, श्वास, वात, वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष और मदात्ययरोगको हरनेवाली है । कच्चीदाख-स्वल्पगुणवाली, भारी, खट्टी और रक्तपित्तकारक है । गोस्तनी अर्थात् कालीदाख-वीर्य्यवर्द्धक, भारी और कफपित्तहारी है । किसमिस-कालीदाखके समान गुणवाली है । पर्वतीदाख-हलकी, खट्टी, कफ और अम्लपित्तको करनेवाली है । करमर्दिकानामवाली दाख-पर्वतीदाखकी समान गुणवाली है ।

अन्यच्च ।

द्राक्षा तु मधुरा स्निग्धा वृष्या शीतानुलोमनी ।
बल्या वृष्या क्षतक्षीणतृषावातास्रपित्तजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ-दाख-मधुर,स्निग्ध,वीर्य्यवर्द्धक,शीतल, मलभेदक,बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा क्षत, क्षीण, वात और रक्तपित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

द्राक्षातिमधुराम्ला च शीता पित्तार्तिदाहजित् ।
मूत्रदोषहरा रुच्या वृष्या संतर्पणी परा ॥

अर्थ-दाख-मधुर, खट्टी, शीतल, पित्तनिवारक,दाहनाशक, मूत्रदोषहारक, रुचिकारक,वृष्य और तृप्तिकारक है ।

द्राक्षाबालफलं कटूष्णविशदं पित्तास्रदोषप्रदं
मध्यं चाम्लरसं रसान्तरगतं रुच्याऽतिवह्निप्रदम् ।
पक्कं चेन्मधुरं तथाऽम्लसहितं तृष्णास्रपित्तापहं
पक्कं शुष्कसमं श्रमार्त्तिशमनं सन्तर्पणं पुष्टिदम् ॥

अर्थ-कच्चीदाख-कटु,उष्ण, विशद, रक्तपित्तकारक, मध्यम अवस्थाकी दाख-खट्टी, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक है । पक्की दाख-

मधुर, खट्टी, तृषा और रक्तपित्तनाशक है। पककर सूखगई हो ऐसी दाख-श्रमनाशक, तृप्तिकारक और पुष्टिजनक है।

द्राक्षा सैव सुधा तु वृद्धिजननी संसर्पशोषापहा
तृष्णार्त्तिव्यथनी समीरशमनी छर्द्यामयध्वंसिनी।
पाकेम्ला सुरसा रसेन मधुरा शीता च वीर्य्येण सा
संपक्वा विहिता ज्वरे च कफजे विण्मूत्रसंशोधनी॥

अर्थ-दाख-धातुवर्द्धक, शोषनाशक, प्यासको हरनेवाली, वातको दूर करनेवाली, वमनरोगनाशक, पचनेमें अम्ल, सुरस, मधुर, शीतवीर्य, ज्वर और कफको हरनेवाली मूत्र और मलको शोधनेवाली है।

द्राक्षाफलं मधुरमम्लकषाययुक्तं क्षारेण पित्तमरुतां कफहारिशीघ्रम्॥ श्रेष्ठं निहन्ति रुधिरामयदाहशोषमूर्च्छाज्वरश्वसनकासविनाशकारि॥

अर्थ-दाख-मधुर, खट्टी, कषेली और किसी क्षारके साथ पित्त वात और कफका नाश करेहै। उत्तम-तथा रुधिररोग, दाह, शोष, मूर्च्छा, ज्वर, श्वास और खाँसीको दूर करेहै।

गोस्तनीगुणाः।

द्राक्षा तु गोस्तनी शीता हृद्या वृष्या गुरुर्मता। वातानुलोमनी स्निग्धा हर्षदा श्रमनाशिनी॥ दाहमूर्च्छाश्वासकासकफपित्तज्वरापहा। रक्तदोषं तृषां वातं हृद्व्यथां चैव नाशयेत्॥

अर्थ-कालीदाख-शीतल, हृदयको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, वातानुलोमन, स्निग्ध, हर्षजनक तथा श्रम, दाह, मूर्च्छा, श्वास, खाँसी, कफ, पित्तज्वर, रुधिरविकार, तृषा, वात और हृदयकी व्यथाको हरनेवाली है।

लघुद्राक्षागुणाः।

लघ्वी द्राक्षा तु मधुरा शीता वृष्या रुचिप्रदा। अम्ला रसाला संप्रोक्ता श्वासकासज्वरापहा॥ हृद्व्यथारक्तपित्तघ्नी क्षतक्षयविनाशिनी। स्वरभेदं तृषां वातं पित्तं चैव विनाशयेत्॥ तिक्ततां च मुखस्यापि नाशयेदिति कीर्त्तिता।

अर्थ-किसमिस-मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक रुचिप्रद, खट्टी, रसाल तथा श्वास, खाँसी, ज्वर, हृदयकी पीडा, रक्तपित्त, क्षतक्षय, स्वरभेद, तृषा, वात, पित्त और मुखके कडवेपनको दूर करे है ।

विवरण । दाख-काली, लाल और किसमिस इत्यादि अनेक जातिकी है, इसकी उत्पत्ति काबुल तथा देशांतरोंमें होतीहै, दूसरे प्रकारकी दाख इस देशमेंभी होती है, इसके पत्ते हाथके आकारके होते हैं, फल गुच्छोंमें लगते हैं ।

मण्डपीनामानि ।

भूशिम्बिका रक्तबीजा त्रिबीजा स्नेहबीजका ।
मण्डपी भूमिजा भूस्था तथा भूचणका स्मृता ॥

अर्थ-भूशिम्बिका, रक्तबीजा, त्रिबीजा, स्नेहबीजका, मण्डपी, भूमिजा, भूस्था, भूचणका ।

संस्कृतभाषामें	मण्डपी ।
हिन्दीभाषामें	मूँगफली ।
मराठीभाषामें	भुईमुगाच्या शेंगा ।
गुजरातीभाषामें	मांडवी ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्राउंडनट्ट पिनट्ट । Groundnut peanut
लेंटिनभाषामें	आरेकीस हायपोजिया । Arachis hypoicea
फारसीभाषामें	मुलीयन् बेल ।
अरबीभाषामें	शेषवान ।

अस्य गुणाः ।

मण्डपी मधुरा स्निग्धा वातला कफकारिका ।
ग्राहिका बद्धवर्चाश्च तत्तैलं तद्गुणं स्मृतम् ॥

अर्थ-मूँगफली, मधुर, स्निग्ध, बादी, कफकारक, मलरोधक, मलको बांधनेवाली उसके तेलके गुण इसीके समान जानने ।

काजूतकनामानि ।

काजूतको वृत्तपत्रो गुच्छपुष्पश्च पार्वती ।
स्निग्धपित्तफलश्चैव पृथग्बीजो ह्यरुष्करः ॥

अर्थ-काजूतक, वृत्तपत्र, गुच्छपुष्प, पार्वती, स्निग्धपीतफल, पृथग्बीज, अरुष्कर (अग्निकृत, उपपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	काजूतक ।
मराठीभाषामें	काजूचें झाड ।
गुजरातीभाषामें	काजुकालिया ।
तैलङ्गीभाषामें	गतमामोड, जिडिमामेडी ।
इंग्रेजीभाषामें	केश्युनट् । Casheunut
लैटिनभाषामें	एनाकार्डियं ओक्सिडेन्टेली । Anacordium Occedentaly
फारसीभाषामें	बादामफिरंगी ।

अस्य गुणाः ।

काजूतकस्तु तुवरो मधुरोष्णो लघुः स्मृतः । धातुवृद्धिकरो वातकफगुल्मोदरज्वरान् ॥ कृमिव्रणाग्निमांद्यानि कुष्ठं च श्वेतकुष्ठकम् ।संग्रहण्यर्शआनाहान्नाशयेदिति कीर्तितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-काजुतक- कषेला, मधुर, गरम, हलका, धातुवर्द्धक, तथा वात, कफ,गुल्म, उदररोग, ज्वर, कृमि, व्रण मंदाग्नि, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, संग्रहणी, बवासीर और अफारेको दूर करनेवाला है ।

विवरण । काजूतकके वृक्ष-दक्षिण और गुजरातमें अधिकतासे होते हैं । पत्ते-लम्बे और गोल, फूल-सफेद और लाली लिये झुमखोंमें आते हैं, फल-सफरीकी समान होते हैं ।

जम्बूनामानि ।

जम्बूस्तु सुरभिपत्रा नीलफला श्यामला महास्कन्धा ।
राजार्हा राजफला शुकप्रिया मेघमोदिनी च नवाह्वा ॥

अर्थ-जम्बू, सुरभिपत्रा, नीलफला, श्यामला, महास्कन्धा, राजार्हा, राजफला, शुकप्रिया, मेघमोदिनी, (जम्बु, जम्बुल)

महाजम्बूनामानि ।

महाजम्बूराजजम्बूः स्वर्णमाता महाफला ।
शुकप्रिया कोकिलेष्टा महानीला बृहत्फला ॥

अर्थ-महाजम्बू, राजजम्बू, स्वर्णमाता, महाफला, शुकप्रिया, कोकिलेष्टा, महानीला, बृहत्फला, (महापत्रा, फलेंद्र, नन्द, सुरभिपत्रा)

क्षुद्रजम्बूनामानि।

क्षुद्रजम्बूर्दीर्घपत्रा सूक्ष्मकृष्णफला तथा ॥

अर्थ-क्षुद्रजम्बू, दीर्घपत्रा, सूक्ष्मकृष्णफला (मध्यमा)

काकजम्बूनामानि।

काकजंबूःकाकफला नादेयी काकवल्लभा ।
भृंगेष्टा काकनीला च ध्वांक्षजंबूर्घनप्रिया ॥

अर्थ-काकजम्बू, काकफला, नादेयी, काकवल्लभा, भृंगेष्टा, काकनीला, ध्वांक्षजम्बू, घनप्रिया ।

भूमिजम्बूनामानि।

अन्या च भूमिजम्बूर्ह्रस्वफला भृंगवल्लभा ह्रस्वा ।
भूजम्बूर्भ्रमरेष्टा पिकभक्षा काष्ठजम्बूश्च ॥

अर्थ-भूमिजंबू, ह्रस्वफला, भृंगवल्लभा, ह्रस्वा, भ्रमरेष्टा, पिकभक्षा, काष्ठजम्बू (सूक्ष्मपत्रा, जलजाम्बुका)

संस्कृतभाषामें	जम्बू, महाजम्बू, क्षुद्रजम्बू ।
हिन्दीभाषामें	जामुन, बडीजामुन, फरेंद्र, छोटीजामुन ।
बंगलाभाषामें	जामगाछ, बडजाम, क्षुद्रजाम, त्रनजाम ।
मराठीभाषामें	मोठे जांभूळ, नदीजांभूळ ।
कोंकणीभाषामें	राजिले ।
गुजरातीभाषामें	राजजाम्बु, रावणां वेळरोपाजाम्बु, डुंगरिजाम्बु।
कर्णाटकीभाषामें	निरलु, दोडुनिरलु ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दानेरडि, नीरनेरडि ।
इंग्रेजीभाषामें	जांबीरट्री Jambir tree
लैटिन्भाषामें	युजिनिया जाम्बोलेना Eugenia Jambolana सिझिझियम् जांबोलेनम् Syzyzyum Jambolanum

जम्बूगुणाः।

जम्बूवृक्षस्तु तुवरो ग्राही मधुरपाचकः । मलस्तम्भकरो रूक्षो रुचिकृत्पित्तदाहहा ॥ अम्लः कण्ठ्यः कृमिश्वासशोषातीसारकासहा । रक्तदोषं कफं चैवव्रणं चैव विनाशयेत् ॥ फलं च तुवरं चाम्लं मधुरं शीतलं मतम् । हृद्यं हृद्यं ग्राहकं च ले-

खनं कंठदूषकम् ॥ मलस्तम्भकरं वातकारकं कफपित्तनुत् । आध्मानकारकं प्रोक्तं पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥

अर्थ-जामुनकी छाल-कषेली, मलरोधक, मधुर, पाचक, मलस्तम्भक, रूक्ष, रुचिकारक तथा पित्त और दाहको दूर करे है, खट्टी, कंठको हितकारी तथा कृमि, श्वास, शोष, अतिसार, खाँसी, रक्तदोष, कफ और व्रण इसका नाश करे है। इसके फल-कषेले, मधुर, शीतल, रुचिकारक, रूखे, मलरोधक, कंठदूषक, मलस्तम्भक, वातवर्द्धक, कफपित्तनाशक और अफारेको करनेवालेहैं।

अन्यच्च ।

जांबवं गुरु विष्टम्भि कषायं स्वादु शीतलम् ।
अग्निसंदूषणं रूक्षं वातलं कफपित्तजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जामुनका फल-भारी, विष्टंभकारक, कषेला, स्वादिष्ठ, शीतल, अग्निदूषक, रूखा, बादी तथा कफ और पित्तनाशक है।

राजजम्बूगुणाः ।

राजजम्बू तु मधुरा चोष्णा च तुवरा मता। स्वर्या मलस्तम्भकरी श्वासशोषश्रमापहा ॥ मुखजाड्यातिसारघ्नी कफकासविनाशिनी । फलं चास्यास्तु रुचिदं मधुरं स्तम्भकं गुरु ॥ दोषनाशकरं स्वादु ऋषिभिः परिकीर्तितम् ।

अर्थ-राजजामुन-मधुर, गरम, कषेली, स्वरशोधक, मलस्तम्भक तथा श्वास, शोष, श्रम, मुखकी जडता, अतिसार, कफ और खाँसीको हरनेवाली है। इसके फल-रुचिकारक, मधुर, स्तम्भक, भारी, दोषनाशक और स्वादिष्ठ हैं।

जलजम्बूगुणाः ।

जलजम्बू तु तुवरा शीता तिक्ता गुरुः स्मृता। पाके च मधुरा चाम्ला पुष्टिकृद्ग्राहिणी मता॥ वीर्यवृद्धिकरी बल्या श्रमदाहातिसारहा । रक्तदोषं कफं पित्तं व्रणं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-जलजामुन-कषेली, शीतल, कडवी, भारी, पाकमें मधुर, अम्ल, पुष्टिकारक, मलरोधक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक तथा दाह, अतिसार, रुधिरविकार, कफ, पित्त, और व्रणको दूर करनेवाली है।

क्षुद्रजम्बूगुणाः ।

क्षुद्रजम्बू तु तुवरा हृद्या च मधुरा मता । वीर्य्यप्रदा ग्राहिणी च पुष्टिकृत्कफपित्तहा ॥ हृद्रोगं कंठरोगं च दाहं चैव विनाशयेत् ॥ अस्याः फलगुणाः प्रोक्ता राजजम्बूफलैः समाः ॥ (नि० र०)

अर्थ-छोटी जामुन-कषेली, हृदयको हितकारी, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, पुष्टिकारक, कफपित्तनाशक तथा हृदयरोग, कण्ठरोग और दाहको दूर करे है । इसके फलोंके गुण राजजामुनकी फलकी समान जानने ।

जम्बूफलगुणाः ।

तन्मज्जा मधुरा ग्राही विशेषान्मधुमेहहा ।
तदंकुरा हिमा रूक्षा ग्राहकाध्मानकारकाः ॥

अर्थ-जामुनकी मींग-मधुर, मलरोधक और विशेषकरके मधुमेहको हरे है । इसके अंकुर-शीतल, रूखे, ग्राही और आध्मानकारक हैं ।

विवरण । जामुनके वृक्ष-तीन चार प्रकारके होते हैं, एक नदीके निकट होते हैं, जिनके पत्ते कनेरके समान होते हैं उनको नदी जामुन कहते हैं, दूसरी बडी जामुन होती है, उसके पत्ते पीपलकेसे होते हैं, उसको जमुना कहते हैं, तीसरी साधारण जामुन होती है, उसके पत्ते आमकेसे होते हैं, फल मध्यम जातिका होता है, कची अवस्थामें हरी २ होती है और पकनेपर उसका रंग बैजनी हो जाता है, फूलके स्थानमें जामुनपर मौरही आता है ।

इति फलवर्गः समाप्तः ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे फलवर्गः ॥ ९ ॥

वटादिवर्गः ।

वटनामानि ।

वटो रक्तफलः शृङ्गी न्यग्रोधः स्कन्धजो ध्रुवः ।
क्षीरी वैश्रवणावासो बहुपादो वनस्पतिः ॥

अर्थ-वट, रक्तफल, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कन्धज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, बहुपाद, वनस्पति (नन्दी, शुङ्ग, बृहत्पाद, वैश्रवणालय, वैश्रवणोदय, वृक्षनाथ, यमप्रिय, [illegible], भाण्डीर, जटाल, रोहिण,

अवरोहा, विटपी, स्कन्धरुह, मण्डली, महच्छाय, भृङ्गी, यक्षावास, यक्षतरु, पादरोहण, नील, शिफारुह, बहुपात, जटिल, जटी)

संस्कृतभाषामें	वट ।
हिन्दीभाषामें	वड ।
वंगभाषामें	वट ।
मराठीभाषामें	वड ।
गुजरातीभाषामें	बड ।
कर्णाटकीभाषामें	आल ।
तैलिङ्गीभाषामें	मर्रिचेट्टु, मारि, पेडिमरि ।
तामिलीभाषामें	आल ।
औत्कलीभाषामें	वोरु ।
इंग्रजीभाषामें	बनीयन्ट्री । Banyantree
लैटिन्भाषामें	फाईकस् इन्डिकस् । Ficus indicus.
फारसीभाषामें	दरखितरेशा, वडवाई, ऐसाएबगर्द ।
अरबीभाषामें	जातुद्याइवथआब ।

अस्य गुणाः ।

वटः शीतो गुरुर्ग्राही कफपित्तव्रणापहः ।
वर्ण्यो विसर्पदाहघ्नः कषायो योनिदोषहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वड-शीतल, भारी, मलरोधक कफ और पित्तनाशक, व्रणविनाशक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, विसर्परोगनाशक, दाहविनाशक और योनिदोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वटः कषाये मधुरः शिशिरः कफपित्तजित् ।
ज्वरदाहतृषामोहव्रणशोफापहारकः ॥ (रा० ज०)

अर्थ-वड-कषेला, मधुर, शीतल, कफपित्तनाशक तथा ज्वर, दाह, तृषा, मोह, व्रण, और सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

वटो रूक्षो हिमो ग्राही छर्दिघ्नो योनिदोषजित् ।
वर्ण्या मूर्च्छाविसर्पघ्नः कफपित्तहरो गुरुः ॥ (ध० नि०)

अर्थ-वड-रूखा, शीतल, मलरोधक, वमननिवारक, योनिदोषहारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, भारी तथा मूर्च्छा, विसर्प और कफपित्तको दूर करेहै ।

विवरण । वडका वृक्ष महाविशाल होताहै, इसके पत्तेभी लम्बे चौडे होतेहैं, फल छोटे २ झडबेरके बराबर आतेहैं । इसकी शाखाओंमेंसे लाल लाल अंकुर निकलतेहैं, जब वह बढजातेहैं उसको वटकी डाढी कहतेहैं, वह इतनी बढजातीहै कि, लटकती २ पृथ्वीमें आकर जमजातीहै । जहाँ जहाँ यह डाढी जमजातीहै वहां २ वडके वृक्ष होजातेहैं, इसप्रकार एक वडकी अनेक जडें होतीहैं परन्तु यह सब वास्तवमें एकहीहैं और परस्पर मिलीहुई होतीहैं ऐसेही यह बढते २ उस वडका बीघोंमें विस्तार होजाताहै ।

अश्वत्थनामानि ।

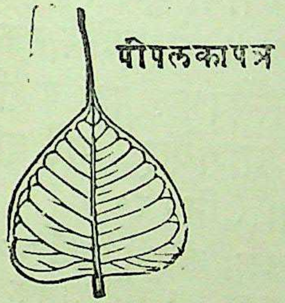

पीपलकापत्र

बोधिद्रुः पिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रो गजाशनः ॥

अर्थ-बोधिद्रु, पिप्पल, अश्वत्थ, चलपत्र, गजाशन, (केशवालय, चैत्यद्रु, बोधितरु, कृष्णावास, चैत्यवृक्ष, नागबन्धु, देवात्मा, महाद्रुम, कपीतन, बोधिद्रुम, चलदल, कुञ्जराशन, अच्युतावास, पवित्रक, शुभद, बोधिवृक्ष, याज्ञिक, गजभक्षक, श्रीमान्, क्षीरद्रुम, विप्र, मङ्गल्य, श्यामल, गुह्यपुष्प, सेव्य, सत्य, शुचिद्रुम, धनुर्वृक्ष)

संस्कृतभाषामें	अश्वत्थ ।
हिन्दीभाषामें	पीपलवृक्ष ।
वंगभाषामें	अश्वत्थ, आशोतगाछ ।
मराठीभाषामें	पिंपळ ।
गुजरातीभाषामें	पीपळो ।
कर्णाटकीभाषामें	अरली ।

तेलिङ्गीभाषामें	राईचेट्टु, कुलुजुव्विचेट्टु ।	
इंग्रेजीभाभामें	पोव्लरलीव्ड फिग्ट्री ।	Poplar leaved figtree
लेटिनभाषामें	फाईकस् रिलिजियोझा ।	Ficus Religiosa
फारसीभाषामें	दरखतलरजां ।	

अस्य गुणाः ।

पिप्पलो दुर्जरः शीतः पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ।
गुरुस्तुवरको रूक्षो वर्ण्यो योनिविशोधनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पीपल-दुर्जर, शीतल, पित्त, श्लेष्म, व्रण, और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै । भारी, कषेला, रूखा, वर्णको सुंदरतादायक और योनिशोधक है ।

अपिच ।

अश्वत्थो मधुरः शीतः कषायो दुर्जरो गुरुः। रूक्षो वर्ण्यस्तिक्तकश्च योनिशोधनकारकः ॥ योनिदोषं रक्तदोषं दाहपित्तकफाञ्जयेत्। व्रणं च नाशयत्येव फलं पक्कं च शीतलम्॥ हृद्यं रक्तरुजं पित्तं विषं दोषं च नाशयेत् । दाहं वान्तिं च शोषं च ह्यरुचिं चैव नाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पीपल-मधुर, शीतल, कषेला, दुर्जर, भारी, रूखा, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, कडवा, योनिशोधक तथा योनिदोष, रुधिरदोष, दाह, पित्त, कफ और व्रणको दूर करनेवाला है । इसके पक्के फल-शीतल, हृदयको हितकारी तथा रक्तरोग, पित्त, विष, दाह, वमन, शोष और अरुचिको दूर करनेवाले हैं ।

विवरण । पीपलका वृक्ष-बहुत बडा होताहै, यह वृक्ष ग्राम और नगरोंमें बहुत होतेहैं, वनोंमें बहुत कम होतेहैं, इसके पत्ते-गोल और अनीदार डालियोंपर लगतेहैं, यह पत्ते सदैव हिलते रहतेहैं इसपरभी छोटे अंकुर होतेहैं, फल भी पत्तोंकी जडमें छोटे झडबेरकी तुल्य लगते हैं, उनको पिपलौंति कहतेहैं, इसकी शाखाओंपर लाखभी आतीहै, परन्तु सदैव नहीं कोई समय पाकर, यह वृक्ष बहुत श्रेष्ठ और पवित्र है: ऋषि मुनियोंने इसको पूजनके योग्य समझ रक्खाहै ।

पारीशपिप्पलनामानि ।

पारीशोन्यो फलीशश्च कपिचूतः कमण्डलुः ।

गर्द्दभांडः कन्दरालः कपीतनः सुपार्श्वकः ॥

अर्थ-पारीश, फलीश, कपिचूत, कमण्डलु, गर्द्दभाण्ड, कंदराल, कपीतन, सुपार्श्वक ।

संस्कृतभाषामें	पारीश ।
हिन्दीभाषामें	पारिसपीपल, गजदंड ।
वंगभाषामें	गजशुंडी ।
मराठीभाषाम	पारसपिंपळ भेद । को० मणेरवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	पारसापिपलो ।
कर्णाटकीभाषाम	वंगरली ।
तैलिङ्गीभाषामें	धेनगाखी, गंगरेय ।
तामिलीभाषामें	पोरिश, पूवरश, सरम् ।
इंग्रेजीभाषामें	हिबिक्सस् Hibixus
लैटिन्भाषामें	थेसपीसीया पोपलनिया । Thaspesia populnea
फारसीभाषामें	यलास बेल्य ।

अस्य गुणाः ।

फलीशो दुर्ज्जरः स्निग्धः कृमिशुक्रकफप्रदः ।
फलोम्लो मधुरो मूले कषायः स्वादुमज्जकः॥(भा०प्र०)

अर्थ-पारिसपीपल-अत्यन्त कठिनतासे पचनेवाला, स्निग्ध, कृमिजनक, शुक्रकारक और कफवर्द्धक है। इसके फल-अम्ल। इसकी जडमें मधुरता । इसकी मज्जामें कषेला और मीठापन है।

अन्यच्च ।

ब्रह्मवृक्षस्तु मधुरो वृष्योऽम्लस्तुवरो मतः।दुर्जरःकफकृत्स्निग्धः शुक्रलो जंतुकारकः॥ वातं पित्तं च हृद्रोगं दाहं कंठं रुजं तथा। नाशयेदिति संप्रोक्तः फलमम्लं मधु स्मृतम् ॥मूलं तु तुवरं ज्ञेयं मज्जा स्वाद्वी स्मृता बुधैः । (नि० र०)

अर्थ-पारिसपीपल-मधुर,वीर्य्यवर्द्धक,खट्टा, कषेला, अतिकठिनतासे पचनेवाला,कफकारक,स्निग्ध,शुक्रजनक,कृमिकारक तथा वात पित्त,हृदयरोग, दाह और कंठरोगको दूर करे है। इसके फल-अम्ल और मधुर हैं । इसकी जड-कषेली है । इसकी मज्जा स्वादिष्ठ है ।

विवरण। पारिसपीपलका वृक्ष-पीपलके समान होताहै, परन्तु पीपलपर फूल नहीं होतेहैं और पारिसपीपलमें भिंडीकी समान पीपलफूलभी आतेहैं और इसके डोरे भिंडीके आकार होतेहैं।

नन्दीवृक्षनामानि।

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः।
स्थालीवृक्षः क्षयतरुः क्षीरी च स्याद्वनस्पतिः॥

अर्थ-नन्दीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी, वनस्पति।

संस्कृतभाषामें	नन्दीवृक्ष।
हिन्दीभाषामें	वेलियापीपल।
तैलिङ्गीभाषामें	वट्टिचेट्टु।

अस्य गुणाः।

नन्दीवृक्षो लघुः स्वादुस्तिक्तस्तुवर उष्णकः।
पाके कटू रसे ग्राही विषपित्तकफास्रनुत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वेलियापीपल-हलका, स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, गरम, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा विष, पित्त, कफ और रुधिरके दोषको दूर करेहै

विवरण। वेलिया पीपलभी पीपलका भेदहै, इसके पत्ते-बडे२होतेहैं इसकी शाखाओंमेंभी अंकुर होतेहैं, इसकी जड बहुत मोटी होतीहै।

प्लक्षनामानि।

प्लक्षो जटी पर्कटी च कर्परी चारुदर्शिनी।
शृङ्गी वरोहशाखी च ह्यश्वत्थी पिंपरी वटी॥

अर्थ-प्लक्ष, जटी, पर्कटी, कर्परी, चारुदर्शिनी, शृङ्गी, वरोहशाखी, अश्वत्थी, पिंपरी, वटी (कमण्डलुतरु, कपीतन, क्षीरी, सुपार्श्व, कमण्डलु, गर्दभाण्ड, पीतन, दृढप्ररोह, प्लवक, प्लवङ्ग, महाबल, कन्दरालु, पर्काटी, प्लक्षा, जटि, प्लीक्षा)

संस्कृतभाषामें	प्लक्ष, पर्कटी।
हिन्दीभाषामें	पाखर, पाकर, पिलखान।
वंगभाषामें	पाकुडगाछ।
मराठीभाषामें	पिंपरी।

गुजरातीभाषामें	पीपर्य ।
कर्णाटकीभाषामें	बसुरि ।
लैटिन्भाषामें	फाईलसविरेन्स । Fielus verance

अस्य गुणाः ।

प्लक्षः कषायः शिशिरो व्रणयोनिगदापहः ।
दाहपित्तकफास्रघ्नः शोफहा रक्तपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पाखर-कषेला, शीतल तथा व्रण, योनिरोग, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, सूजन और रक्तपित्तको दूर करै है ।

अन्यच्च ।

प्लक्षः कटुः कषायश्च शिशिरो रक्तदोषजित् ।
मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नो ह्रस्वपत्रो विशेषतः ॥

अर्थ-पाखर-कटु, कषाय, शिशिर, रक्तदोषनाशक तथा मूर्च्छा, भ्रम और प्रलापको दूर करनेवाला है । ह्रस्वपत्रवाला पाखर अधिक गुणवाला है ।

विवरण । पाखरके वृक्ष-बड पीपलकी भाँति जंगल और ग्रामोंमें बहुत होतेहैं, पत्ते-लम्बे २ आमकेसे होतेहैं, जब नया वृक्ष लगाना होताहै तब इसके गुद्देको काटकर लगादेतेहैं, उसीमेंसे हरे २ पत्ते निकलने लगतेहैं, पांच,छै, वर्षमें वैसाही वृक्ष छायादार होजाताहै, इसके सघन वनकी प्रशंसा है, कि, ऐसी उत्तम छाया किसी वृक्षकी नहीं होतीहै ।

उदुम्बरनामानि ।

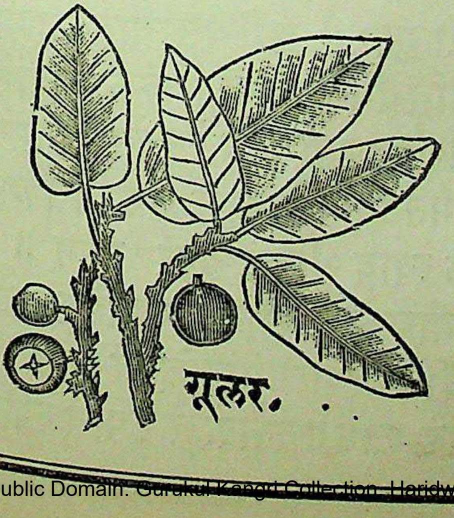

गूलर.

उदुम्बरः क्षीरवृक्षो हेमदुग्धः सदाफलः ।
अपुष्पफलसम्बंधो यज्ञाङ्गः शीतवल्कलः ॥

अर्थ-उदुम्बुर, क्षीरवृक्ष, हेमदुग्ध, सदाफल, अपुष्पफलसंबंध, यज्ञाङ्ग,शीतवल्कल(कृमिकण्ट,कृमिकण्टक,क्रिमिकण्टक,पाणिमुख, पुष्पहीन,जन्तुफल, यज्ञफल, यज्ञोडुम्बर, उडुंबर, हेमदुग्धक,ब्रह्मवृक्ष, हेमदुग्धी,सुचक्षु,श्वेतवल्कल,कालस्कन्ध,यज्ञयोग्य,यज्ञीय,सुप्रतिष्ठित शीतवल्क,यज्ञसार,पुष्पशून्य,पवित्रक, सौम्य,शीतफल, जघनेफल)

संस्कृतभाषामें	उदुम्बर ।
हिन्दीभाषामें	गूलर ।
वंगभाषामें	यज्ञडुमुर ।
मराठीभाषामें	उम्बर ।
गुजरातीभाषामें	उंबरो ।
कर्णाटकीभाषामें	अत्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	वाडुचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	किग्ट्री । Keg tree
लैटिन्भाषामें	फाइकसग्लोमिरेटा । Ficus glomirata
फारसीभाषामें	अंजीरे आदम ।
अरबीभाषामें	जमीझ ।

अस्य गुणाः ।

उदुम्बरः शीतलः स्याद्गर्भसन्धानकारकः । व्रणरोपणकृद्रूक्षो मधुरस्तुवरो गुरुः ॥ अस्थिसन्धानकृद्वर्ण्यः कफपित्तातिसारकान् । योनिरोगं नाशयति वल्कं चैवास्य शीतलम् ॥ दुग्धं तुवरं गर्भ्यं व्रणनाशकरं स्मृतम् । कोमलं चास्य च फलं स्तम्भकृत्तुवरं मतम् ॥ हितकारि तृषापित्तकफरक्तरुजापहम् । मध्यमं कोमलं स्वादु शीतलं तुवरं मतम् ॥ पित्तं तृषामोदकरं रक्तस्रुतिवमीहरम् । प्रहारघ्नं समुद्दिष्टमपक्कं तुवरं मतम् ॥ रुच्यं चाम्लं दीपनं स्यान्मांसवृद्धिकरं मतम् । रक्तरुक्कारकं चैव दोषलं च जडं मतम् ॥ तत्पक्कं च कषायं स्यान्मधुरं कृमिका-

रकम् । जडं रुचिप्रदं चातिशीतलं कफकारकम् ॥
रक्तरुक्पित्तदाहक्षुत्तृषाश्रमप्रमेहहम् । शोषमूर्च्छाहरं
प्रोक्तं पूर्वैः स्वेस्वे निघण्टके ॥ (नि० र०)

अर्थ-गूलर-शीतल, गर्भसन्धानकारक, व्रणको भरनेवाला, रूखा, मधुर, कषेला, भारी, अस्थिसन्धानकारक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा कफ, पित्त, अतिसार और योनिरोगको नाश करे है। उसकी छाल अत्यन्त शीतल, दुग्धवर्द्धक, कषेली, गर्भको हितकारी और वर्णविनाशक है। इसके कोमल फल-स्तम्भक, कषेले, हितकारी तथा तृषा, पित्त, कफ और रुधिरके रोगोंका नाश करे हैं। मध्यम कोमल फल-स्वादु, शीतल, कषेले, पित्त, तृषा और मोह कारक तथा रक्तस्राव, वमन और प्रदररोग नाशक हैं। इसके तरुण फल-कषेले, रुचिकारक, अम्ल, दीपन, मांसवर्द्धक, रुधिरको बिगाडनेवाले, दोषजनक और जड हैं। इसके पक्के फल-कषेले, मधुर, कृमिकारक, जड, रुचिकारक, अत्यन्त शीतल, कफकारक तथा रुधिरविकार, पित्त, दाह, क्षुधा, तृषा, श्रम, प्रमेह, शोष और मूर्च्छाको हरनेवाले हैं।

नद्युदुम्बरनामानि ।

नद्युदुम्बरिका चान्या लघुपत्रफला तथा ।
लघुहेमदुग्धा प्रोक्ता लघुपूर्वसदाफला ॥

अर्थ-नद्युदुम्बरिका, लघुपत्रफला, लघुहेमदुग्धा, लघुपूर्वसदाफला।

अस्य गुणाः ।

नद्युम्बरीगुणैः सर्वैः सदृशा तु मता बुधैः ।
रसवीर्य्यविपाकेषु किञ्चिन्न्यूना च पूर्वतः ॥

अर्थ-नदीके निकटका गूलर गूलरकेही समान गुणवाला है तथा रस वीर्य्य और विपाकमें किंचित् हीन है।

काकोदुम्बरिका नामानि ।

उदुम्बरफला चैव कर्कशच्छदनाऽसुमा ।
काकोदुम्बरिका ज्ञेया क्षीरी च खरपत्रिका ॥

अर्थ-उदुम्बरफला, कर्कशच्छदना, असुमा, काकोदुम्बरिका, क्षीरी, खरपत्रिका (कृष्णोदुम्बरिका, खरपत्रि, राजिका, क्षुद्रोदुम्ब-

रिका, कुष्ठघ्नी, फल्गुवाटिका, अजाजी, फल्गुनी, मलयू, चित्ररिका, कुष्ठघ्नी, फल्गुवाटिका, अजाजी, फल्गुनी, मलयू, चित्र-

संस्कृतभाषामें	काकोदुम्बरिका ।
हिन्दीभाषामें	कठूमर ।
बंगालीभाषामें	काकडुमुर ।
मराठीभाषामें	कालाउम्बर, बोखाडा ।
गुजरातीभाषामें	टेडउम्बरी ।
कर्णाटकीभाषामें	काआत्ति ।
तैलङ्गीभाषामें	ब्रह्ममेडिचेट्टु, काफी बाड्डुचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	किग्ट्री । Keg tree
लैटिन्भाषामें	फाइकस् ओपोझिटि फोलिया। Ficus opposetifolia फाइकस् हिस्पिडा । F. Hispida
फारसीभाषामें	अंजिरेदस्ती ।
अरबीभाषामें	तनबर्रि ।

अस्या गुणाः ।

मलपूस्तम्भकृत्तिक्ता शीतला तुवरा जयेत् ।
कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्ड्वर्शकामलाः ।(भा० प्र०)

अर्थ-कठूमर-स्तम्भक, शीतल, कषेला तथा कफ, पित्त, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, पाण्डुरोग, बवासीर और कामलारोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

काकोदुम्बरिका शीता कषाया दद्रुघातिनी ।
रक्तातिसारहन्त्री च मुखनासास्रघातिनी ॥ (शो० प्र०)

अर्थ-कठूमर,-शीतल, कषेला तथा दाह, रक्तातिसार, मुख और नाकिकासे रुधिरके गिरनेको दूर करे है ।

अपिच ।

काकोदुम्बरिका शीता तिक्ताम्लास्तम्भका कटुः।तुवरा ग्राहिणी प्रोक्ता चेन्द्रियाणां प्रसादका॥ त्वग्दोषकामला पित्तरक्तपित्तकफाञ्जयेत् । श्वेतकुष्ठं व्रणं पाण्डु रक्तरोगं च शोथकम्॥

दुर्नामानं चोर्द्धदोषं नाशयेदिति कीर्तितम् । फलमस्याः स्वादु शीतं तुवरं तृप्तिकारकम् ॥ गुरु धातुवृद्धिकरं पाके च मधुरं स्मृतम्। स्निग्धं मलस्तम्भकरं पौष्टिकं ग्राहि वातलम् (नि०र०)

अर्थ-कठूमर-शीतल, कडवा, अम्ल, मलस्तम्भक, कट्टु, कषेला, ग्राही, इन्द्रियप्रसादक तथा त्वग्दोष, कामला, पित्त, रक्तपित्त,कफ, श्वेतकुष्ठ, व्रण, पाण्डुरोग, रुधिरविकार, सूजन,बवासीर ओर ऊर्ध्वगत दोषको दूर करे है । इसके फल-स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, भारी, धातुवर्द्धक, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, मलस्तम्भकारक पुष्टिजनक मलरोध और वातजनक है ।

विवरण । गूलर अर्थात् उदुम्बर और कठूमरका बडा वृक्ष होता है, इसपर फूल नहीं आते, इसकी शाखाओंमेंसे फल उत्पन्न होते हैं, फल गोल२अंजीरकी समान होतेहैं और इसमेंसे दूध निकलता है, इसके पत्ते-लभेडेकेसे होते हैं, नदी उदुम्बरके पत्ते गूलरके पत्तोंसे छोटे और फलभी छोटे होते हैं, कठूमरके पत्ते गूलरके पत्तोंसे बडे हैं बरन गंगेरनके पत्तोंके समान होते हैं। इसके पत्तोंको छूनेसे हाथोंमें खुजली होने लगतीहै और पत्तोंमें दूध निकलता है ।

शिरीषनामानि ।

शिरीषो भण्डिलो भण्डी भण्डीरश्च कपीतनः ।
शुकपुष्पः शुकतरुर्मृदुपुष्पः शुकप्रियः ॥

अर्थ-शिरीष, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन,शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प, शुकप्रिय (कर्णपूर, शुकद्रुम, भण्डील, भाण्डिर, मूर्द्धपुष्प, विषघाती, विषनाशन, शीतपुष्प, भण्डिक, स्वर्णपुष्पक, शुकेष्ट बर्हपुष्प, विषहन्ता, सुपुष्पक, उद्दानक, शुकतरु, लोमशपुष्पक, कपीतक, कलिंग, श्यामल, शंखिनीफल, मधुपुष्प, वृत्तपुष्प, शिखिनीफल, प्लवग, श्यामवर्ण)

संस्कृतभाषामें	शिरीष।
हिन्दीभाषामें	सिरस।
वंगभाषामें	शिरीषगाछ, चटूका।
मराठीभाषामें	शिरसी।
गुजरातीभाषामें	शिरीष, शरषडो।
कर्णाटकीभाषामें	शिरल।

तैलिङ्गीभाषामें	दिरसन, शिरीषंब्रानु ।
लैटिन्भाषामें	आल्बीझियालेबेक् Albizzia lebbek
	अल्वीयमरा । Alamara
फारसीभाषामें	दरखते जकारिया, तुख्मेदरखतेजकारिया ।
अरबीभाषामें	सुलतानुल् असजार, हबेसुलतानुल् असजार ।

अस्य गुणाः ।

शिरीषः कटुकः शीतो विषवातहरः परः ।
पामास्रकुष्ठकण्डूतित्वग्दोषस्य विनाशनः ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-सिरस-कटु, शीतल तथा विष, वात, पामा, रुधिरविकार, कुष्ठ, कण्डू और त्वचाके दोषोंको दूर करे है।

अन्यच्च।

शिरीषोऽर्शोविषस्वेदत्वग्रुक्छोफविसर्पनुत् ।(शा॰ नि॰)

अर्थ-सिरस-बवासीर, विष, पसीना, त्वचाके दोष, सूजन और विसर्पको दूर करे है।

अपिच।

शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरो लघुः ।
दोषशोथविसर्पघ्नः कासव्रणविषापहः ॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-सिरस-मधुर, अनुष्ण, कडवा, कषेला, हलका तथा दोष, सूजन, विसर्प, खांसी, व्रण और विषको हरनेवाला है।

विवरण। सिरसके वृक्ष-बडे २ ऊंचे और सघन जङ्गलोंमें होते हैं, पत्ते-आमलेके समान छोटे २ और डालियोंमें बराबर लगते हैं, फूल-छोटे २ तन्तुओंसे सुसज्जित अत्यन्त कोमल हरे २ कुछ पीले २ सुगन्धयुक्त बहुत सुन्दर होते हैं, फली पतली चपटी तीन चार आठ अंगुलतक लम्बी पौन अंगुलसे ज्यादे चौंडी, भीतर उसके भूरे रंगके बीज होते हैं एक फलीमें दश बीजका प्रमाण है।

शिंशपानामानि ।

शिंशपा कृष्णसारा च पिपला युगपत्रिका ।
पिच्छला धूम्रिका वीरा कपिला गुरुशिंशपा ॥

अर्थ-शिंशपा, कृष्णसारा, पिपला, युगपत्रिका, पिच्छला, धूम्रिका, वीरा, कपिला, अगुरुशिंशपा (अगुरु, पिच्छिला, युग्मपत्रिका, कालानुसार्य्य, श्यामा, धीरा, मंडलपत्री, तीव्रधूमका)

श्वेतशिंशपानामानि।

शिंशपान्या श्वेतपत्रा सिताह्वादिश्च शिंशपा ॥

अर्थ-श्वेताशिंशपा, श्वेतपत्रा, सिताशिंशपा ।

कपिलशिंशपानामानि ।

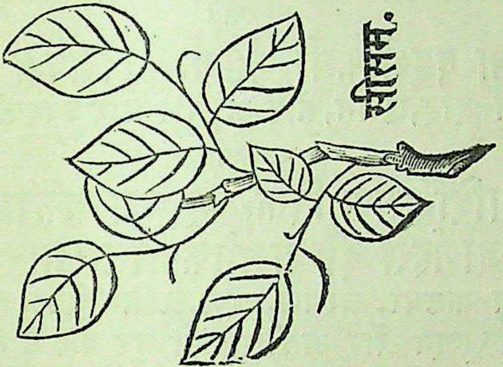

कपिला शिंशपा चान्या पीता कपिलशिंशपा ।
सारिणी कपिलाक्षी च भस्मगर्भा कुशिंशपा ॥

अर्थ-कपिलशिंशपा पीता, कपिला, सारिणी, कीपलाक्षी, भस्मगर्भा, कुशिंशपा ।

संस्कृतभाषामें	शिंशपा, श्वेतशिंशपा ।
हिन्दीभाषामें	सीसम, सफेद्सीसो, कपिलवर्णसीसम ।
वंगभाषामें	शिशुगाछ, शादाशिशुगाछ, कपिलपत्रशिशुगाछ ।
मराठीभाषामें	काळाशिसवा ।
गुजरातीभाषामें	शिशम ।
कर्णाटकीभाषामें	करीषइबिडु, विलीबइबिडु, होंवदाबिडु ।
तै०	जिट्टेगुचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	जानुक्कुकट्टइ, पंशकेदर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लॉकूवुड् सीस्ट्री । Black wood Sisoo tree
लै०	डालबराजिया लेटिफोलिया । Dalbergia latifolia
अरबीभाषामें	सासम ।

शिंशपागुणाः।

शिंशपा कटुका तिक्ता कषाया शोषहारिणी ।
उष्णवीर्य्या हरेन्मेदःकुष्ठश्वित्रवमिकृमीन् ॥

वस्तिरुग्व्रणदाहास्त्रबलासान्गर्भपातिनी । (भा ० प्र०)

अर्थ-सीसम-कटु, तिक्त, कषाय, शोषनाशक, उष्णवीर्य्य तथा मेद, श्वित्रकुष्ठ,वमन,कृमि,वस्तिरोग,व्रण, दाह, रुधिरविकार और कफको हरनेवाला तथा गर्भको गिरानेवाला है ।

अन्यच्च ।

शिंशपा दद्रुशोफघ्नी कुष्ठजीर्णज्वरापहा ।

अर्थ-सीसम-दाह,सूजन,कोढ,अजीर्ण और ज्वरको हरनेवालाहै।

अन्यच्च ।

श्यामादिशिंशपा तिक्ता कटूष्णा कफवातजित् ।
कुष्ठा जीर्णहरा दीप्या शोफातीसारहारिणी ॥

अर्थ-सीसम-कडवा, चरपरा,गरम,अग्निप्रदीपक तथा कफ,वात, कुष्ठ, अजीर्ण, सूजन और अतिसारको दूर करे है ।

श्वेतशिंशपागुणाः ।

श्वेतादिशिंशपा तिक्ता शिशिरा पित्तदाहनुत् ।

अर्थ-सफेद सीसम-कडवा,शीतल तथा पित्त और दाहको दूर करे है ।

कपिलशिंशपागुणाः ।

कपिला शिंशपा तिक्ता शीतवीर्य्या श्रमापहा ।
वातपित्तज्वरघ्नी च च्छर्दिहिक्काविनाशिनी ॥

अर्थ-भूरेरंगका सीसम-कडवा,शीतवीर्य,श्रमनाशक तथा वात, पित्त, ज्वर, वमन और हिचकीको दूर करे ह ।

त्रिविधशिंशपागुणाः ।

शिंशपात्रितयं वर्ण्यं हिमं शोफविसर्पजित् ।
पित्तदाहप्रशमनं बल्यं रुचिकरं परम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तीनों प्रकारके सीसम-वर्णको सुंदर करनेवाले,शीतल,बलवर्द्धक,रुचिजनक तथा सूजन,विसर्प,पित्त और दाहको शान्तकरेंहैं।

विवरण । सीसमके वृक्ष बहुत बडे२जंगलमें होते हैं, पत्ते गोल नोकदार बेरीकी बराबर होते हैं,फूल बहुत छोटे २ गुच्छोंमें लगतेहैं, फली बहुत पतली और चपटी होतीहै,उसमें छोटे २ चपटे बीज निकलतेहैं,सीसमकी लकडी कुछ श्यामता और ललाई लिये भूरेरंगकी होतीहै, दूसरा काले रंगका सीसमभी इसीप्रकारका होता है ।

सालनामानि ।

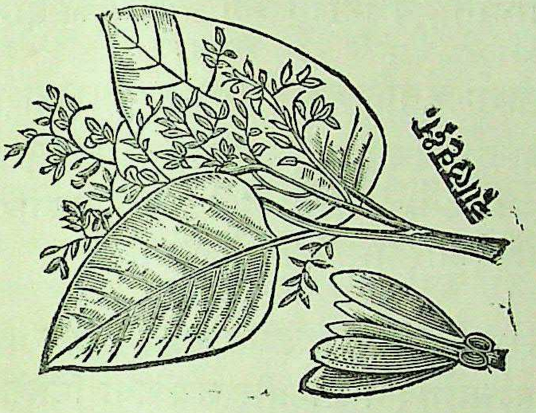

सालस्तु सर्ज्जकार्याऽश्वकर्णिकासस्यसम्बरः ।

अर्थ-साल, सर्ज्जकार्श्य, अश्वकर्णिका सस्यसम्बर, (अश्वकर्णक, सस्यशम्बर, उपमेत, दीर्घशाख, जलदाशन, लतातरु, लताशंख, शंकुतरु, शंकुवृक्ष, सर्ज, सर्जरस, कल, कललजोद्भव, वल्लीवृक्ष, चीरपर्ण, रालकार्श्य, अजकर्णक, वस्तकर्ण, कषायी, ललन, गन्धवृक्षक, वंश, राल-निर्यास, दिव्यसार सुरेष्टक, शूर, अग्निवल्लभ, यक्षधूप, सिद्धक, जरणद्रुम, तार्क्ष्यप्रसव, धन्य, दीर्घपर्ण, कुशिक, कौशिक)

संस्कृतभाषामें	साल, अश्वकर्ण ।
हिन्दीभाषामें	साल, सखुया, सांखु ।
वंगभाषामें	शालगाछ, लताशाल ।
मराठीभाषामें	राळेचा वृक्ष, साजरा ।
कर्णाटकीभाषामें	सज्जरदामर ।
त०	एपचेट्ट ।
तामिलीभाषामें	कुंगिलियम् ।
इंग्रेजीभाषामें	सालट्री । Sal tree
लैटिन्भाषामें	शोरिया रोबष्टा । Shoria Robusta

अस्य गुणाः ।

अश्वकर्णः कषायः स्याद्व्रणस्वेदकफक्रुमीन् ।
ब्रध्नविद्रधिबाधिर्य्ययोनिकर्णगदान्हरेत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अश्वकर्ण साल-कषेला तथा व्रण, पसीना, कफ, कृमि, ब्रध्न, विद्रधि, बधिरता, योनिरोग और कर्णरोगको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

अश्वकर्णः कटुस्तिक्तः स्निग्धः पित्तास्रनाशनः।
उरोविस्फोटकण्डूघ्नः शिरोदोषार्त्तिकृंतनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अश्वकर्ण-कटु, तिक्त, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक तथा उरोविस्फोट, कण्डु और मस्तकरोगको दूर करे है।

अन्यच्च

उर्जो व्रणहरश्चैव श्लेष्मरक्तप्रकोपहृत्।

अर्थ-साल-व्रणविनाशक और कफ तथा पित्तके कोपको शांति करे है।

अपिच।

अश्वकर्णः कटुस्तिक्तो रूक्षः कान्तिकरो मतः। स्निग्धोष्णः कफपाण्ड्वार्त्तिपित्तकर्णरुजाहरः ॥ रक्तरुङ्मेहकुष्ठघ्नो व्रणोरःक्षतकण्डुहा। विषदोषं वातरोगं शिरोरोगञ्च नाशयेत् ॥ फलं च मधुरं रूक्षं शीतं स्तम्भनकृद्गुरु। मलावष्टम्भनकरं तुवरं लेखनं मतम् ॥ आध्मानशूलवातानां कारकं पित्तनाशकम्। रक्तदोषतृषादाहक्षतक्षयविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-अश्वकर्ण-शाल-चरपरा, कडवा, रूखा, कान्तिकारक, स्निग्ध, गरम तथा कफ, पाण्डुरोग, पित्त, कर्णरोग, रक्तरोग, प्रमेह, कोढ, व्रण, उरःक्षत, कण्डू, विषविकार, वातरोग और शिरोरोगका नाश करेहै। इसका फल-मधुर, रूखा, शीतल, स्तम्भक, भारी, मलावष्टम्भक, कषेला, लेखन तथा आध्मान शूल और वातकारक है। पित्तनाशक और रुधिरविकार, तृषा, दाह और क्षतक्षयको दूर करे है।

अथ शालभेदः।

सर्ज्जकोऽन्योऽजकर्णः स्याच्छालो मरिचपत्रकः।

अर्थ-सर्ज्जक, अजकर्ण, शाल, मरिचपत्रक।

लैटिन्भाषामें वेटेरियाइण्डिका।

अस्य गुणाः।

अजकर्णः कटुस्तिक्तः कषायोष्णो ह्यपोहति।

कफपाण्डुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रतान् ।(भा० प्र०)

अर्थ-अजकर्ण (सालभेद)-चरपरा, कडवा, कषेला, गरम तथा कफ,पाण्डुरोग, कर्णरोग, प्रमेह,कोढ, विष और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सर्जस्तु कटुतिक्तोष्णो हिमः स्निग्धोऽतिसारजित् ।
पित्तास्रदोषकुष्ठघ्नः कण्डूविस्फोटवातजित् ॥(रा०नि०)

अर्थ-अजकर्ण(सालभेदक)चरपरा,कडवा,गरम, शीतल, स्निग्ध तथा आतिसार,रक्तपित्त,कोढ,कण्डू और विस्फोटका नाश करे है ।

विवरण-शालके बडे बडे वृक्ष होतेहैं पत्तेभी बहुत बडे बडे लगतेहैं, फूल झुमखोंमें आतेहैं । दूसरा अश्वकर्ण, अजकर्ण, इत्यादि शालके कई एक भेदहैं । शालके गोंदको राल कहते हैं ।

शल्लकीनामानि ।

शल्लकी गजभक्षा च गजप्रिया च ह्लादिनी ।
महारुहा वसा मोचा सुरभी सुरभीरसा ॥

अर्थ-शल्लकी, गजभक्षा, गजाप्रिया, ह्लादिनी, महारुहा, वसा, मोचा, सुरभी, सुरभीरसा(गजभक्ष्या, शिल्लकी, सिल्लकी, सल्लकी, सिह्लकी, सिह्लभूमिका, सुवहा, सुरभि, महेरुणा, कुन्दुरुकी, गजाशना, महेरणा, महारणा, ह्रादिनी, अश्वमूत्री (अश्वपुत्री) कुम्भी, अस्रफला, करका, सुखमोदा, सुगन्धा, सुरभिस्रवा, गजवल्लभा, ह्स्वदा, बहुस्रवा,गन्धवीरा,सुस्रवा,वनकर्णिका, नागवधू,सुश्रीका, गन्धमूला, रसाला, जलतिक्तिका)

संस्कृतभाषामें	शल्लकी ।
हिन्दीभाषामें	सालई, सलई ।
वंगभाषामें	शलई, शालविशेष ।
मराठीभाषामें	शालईवृक्ष, धूपशलाई ।
गुजरातीभाषामें	शालेड्डं, धूपेडो ।
कर्णाटकीभाषामें	तदीकु ।
तामिलिभाषामें	कुंलि ।
लैटिन्‌भाषामें	वोझवेलिया, थेरीफेरा । Boswelia Therifera

अस्य गुणाः ।

शल्लकी तुवरा शीता श्लेष्मपित्तातिसारजित् । रक्तपित्तव्रणह-

री पुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ तत्फलं कफवातार्शःकुष्ठारोचकनाशनम्।पुष्पं चास्य कफं वातमर्शःकुष्ठारुचीर्जयेत्॥(रा०नि०)

अर्थ-शालई-कषेली, शीतल तथा कफ, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त और व्रणको दूर करेहै तथा पुष्टिकारक है । इसका फल-कफ, वात, बवासीर कोढ और अरुचिको दूर करे है । इसका फूल-कफ, वात, बवासीर, कोढ और अरुचिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वृक्षस्तु शल्लकीसंज्ञः पुष्टिकारी कषायकः । शीतवीर्य्यश्च मधुरस्तिक्तो ग्राह्यस्त्रिदोषनुत् ॥ व्रणदोषं कफं वातं पित्तं चार्शं च नाशयेत् । पक्वातिसारकुष्ठञ्च रक्तपित्तं विनाशयेत्॥ निर्य्यासोस्य मतो नाम्ना कुन्दुरुः सुज्ञभाषितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-शालई-पुष्टिकारक, कषेली, शीतवीर्य्य, मधुर, कडवी, मलरोधक तथा रुधिरविकार, व्रण, कफ, वात, पित्त, बवासीर, पक्वातिसार, कोढ और रक्तपित्तका नाश करेहै । इसके गोंदको विद्वान् कुन्दुरु कहतेहैं ।

विवरण-सल्लकी अर्थात् सालईका बहुत बडा वृक्ष होताहै, पत्ते नीमके समान होतेहैं, फलमें तीन रेखा होतीहैं, इसीवृक्षका गोंद, कुन्दरु होताहै ।

अर्जुननामानि ।

अर्ज्जुनः फाल्गुनः पार्थश्चित्रयोधी धनंजयः ।
वैरांतकः किरीटी च नदीसर्जोथ पांडवः ॥

अर्थ-अर्जुन, फाल्गुन, पार्थ, चित्रयोधी, धनंजय, वैरान्तक, किरीटी, नदीसर्ज, पांडव(वीरतरु, इंद्रद्रु ककुभ, इन्द्रद्रुम, शम्बर, गाण्डीवी, कर्णारि, करवीरक, कौन्तेय, इन्द्रसूनु, गण्डीरी, शिवमल्लक, सव्यसाची, वीरद्रु, कृष्णसारथि, पृथाज, धन्वी, वीर, वीरवृक्ष, धवल) ।

संस्कृतभाषामें	अर्जुन ।
हिन्दीभाषामें	कोह, कौह ।
बंगलाभाषामें	अर्जुनगाछ
मराठीभाषामें	सारढोल ।
गुजरातीभाषामें	कडायो ।
तैलङ्गीभाषामें	मद्दिचेट्टु ।

कर्णाटकीभाषामें तारेमात्ति।
लैटिनभाषामें स्टर्क्युलियायुरेन्स ; Stereulia urcus

अस्य गुणाः ।

ककुभः शीतलो भग्नक्षतक्षयविषास्रजित् ।
मेदोमेहव्रणान्हन्ति तुवरः कफपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अर्जुन-शीतल, कषेला, तथा भग्न, क्षत, क्षय, विष, रुधिरविकार, मेद, प्रमेह, व्रण और कफपित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अर्जुनस्तु कषायोष्णः कफघ्नो व्रणशोधनः ।
पित्तश्रमतृषार्त्तिघ्नो मारुतामयकोपनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अर्जुन-कषेला, गरम, कफनाशक, व्रणशोधक, तथा पित्त, श्रम और तृषानिवारक है एवं वातरोगको कुपित करेहै ।

अन्यच्च ।

पार्थः पथ्येक्षते भग्ने रक्तस्तम्भनकृच्छ्रयोः (रा. नि.)

अर्थ-अर्जुन-क्षत, भग्न, रक्तस्तम्भ और मूत्रकृच्छ्ररोगमें हितकारी है।

अपिच ।

अर्जुनस्तुवरश्चोष्णो मधुरः शीतलः स्मृतः। कान्तिदो बलकृच्चैव लघुर्व्रणविशोधकः ॥ अस्थिभंगास्थिसंहारे हितः कफविनाशकः । पित्तश्रमतृषादाहमेहवातविनाशकः ॥ हृद्रोगं पाण्डुरोगं च विषबाधां क्षतक्षयम् । मेदोवृद्धिं रक्तदोषं घर्म्मं श्वासं क्षतं तथा ॥ भस्मरोगं नाशयति पूर्वैरिति निरूपितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-अर्जुन-कषेला, उष्ण, मधुर, शीतल, कान्तिजनक, बलकारक, हलका, व्रणशोधक, तथा, अस्थिभंग, अस्थिसंहार, कफ, पित्त, श्रम, तृषा दाह, प्रमेह, हृदयरोग, पाण्डुरोग, विषबाधा, क्षतक्षय, मेदवृद्धि, रुधिरविकार, पसीना, श्वास, क्षत और भस्मरोगको नाश करे है।

विवरण-अर्जुनके वृक्ष बडे २ लम्बे और ऊँचे २ वनोंमें होतेहैं, इसके पत्ते लम्बे और गोल अनीदार होतेहैं, इसकी छाल सफेद रंगकी होतीहै और उसमें दूध निकलता है ।

असननामानि ।

बीजकः पीतसारश्च पीतसालक इत्यपि ।
बन्धूकपुष्पः प्रियकः सर्ज्जकश्चासनः स्मृतः ॥

अर्थ-बीजक, पीतसार, पीतसालक, बन्धूकपुष्प, प्रियक, असन, (पीतशाल, पीतशालक, पीतसाल, परमायुध, महासर्ज, सौरि, बंधूकपुष्प, बीजवृक्ष, नीलक, प्रियसालक, असन)

संस्कृतभाषामें	असन, बीजक, पीतसाल ।	
हिन्दीभाषामें	आसन, विजयसार, विजयसारका गोंद ।	
वंगभाषामें	पियाशाल ।	
मराठीभाषामें	बिवळा, बिवळचाचा गोंद ।	
गुजरातीभाषामें	वीयां, हीरादखण, वीयानो गुंद ।	
कर्णाटकीभाषामें	केपिन्नहोने ।	
तैलिङ्गीभाषामें	मद्दि ।	
व०	अइन ।	
इंग्रेजीभाषामें	इन्डियन् किनोट्री ।	Indian Kinotree
लैटिन्भाषामें	टेरोकार्पस मार्सुपियं ।	Pterocarpus Mrrsupium
फांरसीभाषामें	कमरकस् ।	

असनगुणाः ।

असनः कटुरुष्णश्च तिक्तो वातार्तिदोषनुत् ।
सारको गलदोषघ्नो रक्तमंडलनाशनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-असन (विजयसार)-चरपरी, गरम, कडवी, वातार्तिदोषनाशक, सारक, गलरोगनिवारक और रक्तमंडलनाशक है ।

अन्यच्च ।

बीजकः कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदकृमीन् ।
हन्ति श्लेष्मास्रपित्तं च त्वच्यः केश्यो रसायनः ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-विजयसार-कोढ, विसर्प, चित्रकुष्ठ, प्रमेह, गुदाके रोग, कृमी, कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, त्वचा और केशोंको हितकारी तथा रसायन है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

असनस्य तु पुष्पाणि विपाके मधुराणि च ।

तिक्तानि पाचनीयानि वातलानि भवन्ति हि ॥

अर्थ-विजयसारके फूल-पचनेमें मधुर, कडवे, पाचक और बादीहैं।

विवरण-असन अर्थात् विजयसारके वृक्ष वनोंमें बहुत बडे २ होते हैं । पत्ते पीपलके पत्तोंसे कुछ २ छोटे होते हैं, फल पहिले आमलेके समान होते हैं इसकी लकडी कालापन लिये होती है ।

खदिरनामानि ।

खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दन्तधावनः ।
कण्टकी बालपत्रश्च बहुशल्यश्च याज्ञिकः ॥

अर्थ-खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, कण्टकी, बालपत्र, बहुशल्य, यांज्ञिक, (बालतनय, पथिद्रुम, तिक्तसार, कण्टकीद्रुम, प्रसख, युपद्रु, बालपुत्र, कर्कटी, जिह्मशल्य, कुष्ठहृत्, बालपत्रक, युपद्रुम, खद्यपत्री, क्षितिक्षम, सुशल्य, वक्रकण्टक, यज्ञांग, जिह्वाशल्य, सारद्रुम, कुष्ठारि, बहुसार, मेध्य)

श्वेतखदिरनामानि ।

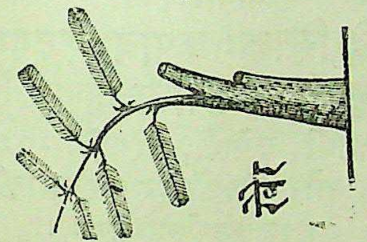

खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कदरः सोमवल्कलः ।

अर्थ-खदिर, श्वेतसार, कदर, सोमवल्कल, (सोवमल्क, ब्रह्मशल्य, खदिरोपम, कार्म्मुक, कुजकण्टक, सोमसार, सोमवृक्ष, पथिद्रुम, श्यामसार, नेमिवृक्ष, कण्टाढ्य, महावृक्ष, द्विजप्रिय)

संस्कृतभाषामें	खदिर, श्वेतखदिर ।
हिन्दीभाषामें	खैर, सफेदखैर पपडियाखैर (कत्था) ।
वंगभाषामें	खयेरगाछ, पापरीखयेरगाछ ।
मराठीभाषामें	खैर, पांढराखैर ।
गुजरातीभाषामें	खैरियो, गोरड ।
कर्णाटकीभाषामें	कैंपिनखैर विलियतार्त्रि ।
तैलिङ्गीभाषामें	चंडचेट्टु, खाह्य तेल्लचंड ।
लैटिन्भाषामें	एकेश्याकेटेच्यु । Acacia eatecbn

खदिरगुणाः ।

खदिरः शीतलो दन्त्यः कण्डूकासारुचिप्रणुत् ।
तिक्तः कषायो मेदोघ्नः कृमिमेहज्वरव्रणान् ॥
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्हरेत् । (भा० प्र०)

अर्थ-खैर-शीतल, दांतोंको दृढ करनेवाली, कडवी, कषेली तथा कण्डू, खाँसी, अरुचि, मेद, कृमि, प्रमेह, ज्वर, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, शोथ आम, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, कुष्ठ, और कफको दूर करनेवाली है ।

श्वेतखदिरगुणाः ।

कदरो विशदो व्रण्यो मुखरोगकफास्रजित् ।
"हन्ति कण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठव्रणग्रहान्" ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सफेद खैर-विशद, व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ, रुधिरदोष, कण्डू, विष, श्लेष्म, कृमि, कोढ, व्रण और ग्रहबाधाको हरे है ।

अन्यच्च ।

श्वेतस्तु खदिरस्तिक्तः कषायः कटुरुष्णकः ।
कण्डूतिकुष्ठभूतघ्नः कफवातव्रणापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेद खैर-कडवी, कषेली, चरपरी, गरम, तथा कण्डू, कुष्ठ, भूतबाधा, कफ, वात, और व्रणको दूर करनेवाली है ।

अस्य निर्य्यासादिगुणाः ।

निर्य्यासस्तस्य मधुरो बल्यः शुक्रविवर्द्धनः ।
सारस्तु विशदो व्रण्यो मुखरोगकफास्रजित् (म०वि०)

अर्थ-इसका गोंद-मधुर, बलकारक, शुक्रवर्द्धक, इसका सार विशद व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ और रुधिरके दोषोंको दूर करे है।

खदिरसारनामानि।

खादिरः खदिरोद्भूतस्तत्सारो रंगदः स्मृतः ।

अर्थ-खादिर, खदिरोद्भूत, रंगद (अद्भुतसार, रंग, सत्सार, खदिरशर्करा)

संस्कृतभाषामें	खदिरसार ।
हिन्दीभाषामें	खैरसार, कत्था ।
वंगभाषामें	खयेर ।

मराठीभाषामें	खैराचा साड, नार, कात ।
गुजरातीभाषामें	खैरसार, काथो ।
कर्णाटकीभाषामें	काथ ।
इंग्रेजीभाषामें	केटेच्यु । Catechu
लैटिनभाषामें	केटेच्युएक्स्त्राकुटं । Gareebneytraeninm
फारसीभाषामें	कात ।
अरबीभाषामें	कात ।

अस्य गुणाः।

खादिरस्तुवरोष्णश्च तिक्तो रुचिकरो मतः। अग्निदीप्तिकरो ग्राही दंतदार्ढ्यकरो मतः ॥ कटुकः कफवातानां व्रणस्य च विनाशकः। कण्ठरोगं सर्वमेहं कृमीन्मुखरुजं तथा ॥ अष्टादशैव कुष्ठानि स्थौल्यं चार्शं च नाशयेत् ।

अर्थ-खादिरसार तथा कत्था-कषेला, गरम, कडवा, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, मलरोधक, दांतोंको दृढ करनेवाला, चरपरा तथा कफ, वात, व्रण, कण्ठरोग, सर्वप्रकारके प्रमेह, कृमि, मुखरोग, अठारह १८ प्रकारके कोढ, शरीरकी स्थूलता और बवासीरको दूर करेहै।

विट्खदिरनामानि ।

इरिमेदो विट्खदिरः कालस्कन्धोऽरिमेदकः ।

अर्थ-इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कन्ध, अरिमेदक (विट, इरिमेद, असिमेद, क्रिमिशात्रव, गिरिमेद, मरुद्रुम, रिमेद, गोधास्कन्ध, अहिमार, पूतिभेद, अहिमेदक)

संस्कृतभाषामें	अरिमेद ।
हिन्दीभाषामें	दुर्गंधिखैर ।
वंगभाषामें	गुयेबाब्ला, विट्खयेर ।
मराठीभाषामें	शेण्याखैर, गंधियाहिबर, घाणेरा खैर ।
गुजरातीभाषामें	इरिमेद, गन्धिलोखेर ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पजट्री Sponge tree
लैटिनभाषामें	एकेशिया फारनेशीयाना । Acacia Farneisiana

अस्य गुणाः।

इरिमेदः कषायोष्णो मुखदन्तगदास्रजित् ।

हन्ति कण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दुर्गंधखैर-कषेली, गरम तथा मुखरोग, दन्तरोग, रुधिरविकार, कण्डू, विष, कफ, कृमि, कोढ, विष और व्रणको दूर करेहै।

अन्यच्च।

अरिमेदः कषायोष्णस्तिक्तको भूतनाशनः ।
शोफातिसारकासघ्नो विषवीसर्पनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दुर्गंधखैर-कषेला, गरम, कडवा, भूतनाशक तथा सूजन, अतिसार, खाँसी, विषविकार और विसर्पको हरनेवाला है ।

अस्य निर्य्यासगुणाः ।

अरिमेदस्य निर्य्यासो मधुरस्तु बलप्रदः ।
धातुवृद्धिकरश्चैव मुनिभिः संप्रभाषितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-अरिमेदका गोंद-मधुर, बलवर्द्धक और धातुवर्द्धक है ।

लघुखदिरगुणाः ।

लघुस्तु खदिरः प्रोक्तस्तिक्तोष्णश्च कषायकः । कटुस्तीक्ष्णश्च अम्लश्च रूक्षः कृमिकफापहः ॥ मुखरोगं दंतरोगं रक्तदोषं प्रमेहकम् । मदं कण्डूं विसर्पं च वस्तिरोगं विषज्वरम् ॥ पिशाचबाधामुन्मादं कुष्ठं दाहं व्रणं तथा । आध्मानं नाशयत्येव फलं चास्य मधु स्मृतम् । स्निग्धं कटूष्णं मतं च कफवातविनाशकम् ।

अर्थ-लघुखैर-कडवा, गरम, कषेला, चरपरा, तीक्ष्ण, अम्ल, रूखा तथा कृमि, कफ, मुखरोग, दंतरोग, रुधिरविकार, प्रमेह, मद, कण्डू, विसर्प, वस्तिरोग, विषमज्वर, पिशाचबाधा, उन्माद, कोढ, दाह, व्रण और आध्मानको दूर करे है । इसके फल-मधुर, स्निग्ध, चरपरे, गरम तथा कफ और वातविनाशक हैं ।

वल्लीखदिरगुणाः ।

वल्लीखदिरकस्तिक्तः कटुश्चोष्णः कषायकः ।
रसेऽम्लः श्वासकासघ्नः पित्तरक्तत्रिदोषजित् ॥ (नि० र०)

अर्थ-वल्लीखैर-कडवा, चरपरा, गरम, कषेला, खट्टा तथा श्वास, खाँसी पित्त, रक्तविकार और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । खैरके वृक्ष बनमें बडे २ होते हैं, इसकी छाल खुरदरी और चटकी हुई होतीहै, इसके पत्ते आमलेकेसे छोटे २ होतेहैं, इस पर महीन २ और टेढे २ कांटे होतेहैं, खैरसार और कत्था यह भी खैरहीकी लकडीका बनाया जाताहै, दूसरे सफेद खैर और दुर्गंधित खैरके वृक्ष बनमें बहुत होते हैं ।

रोहीतकनामानि ।

रोहीतको रोहितकश्च रोहितः कुशाल्मली दाडिमपुष्पसंज्ञकः॥
सदाप्रसूनः सच कूटशाल्मलिर्विरोचनःशाल्मलिको नवाह्वयः।

अर्थ-रोहीतक, रोहितक, रोहित, कुशाल्मली, दाडिमपुष्पसंज्ञक, सदाप्रसून, कूटशाल्मलि, विरोचन, शाल्मलिक, (रक्तपुष्प, सदापुष्प, रक्तघ्न, प्लीहनाशन, प्लीहघाती, रुच्य, रक्तप्रसादन, रोही, प्लीहशत्रु, दाडिमपुष्पक, प्लीहघ्न, मांसदलन, यकृद्वैरी, चलच्छद, प्लीहारि, रोहितेय, रोहिण)

श्वेतरोहीतकनामानि ।

सप्ताह्वः श्वेतरोहीतः सितपुष्पः सिताह्वयः ।
सितांगः शुक्लरोहीतो लक्ष्मीवाञ्जनवल्लभः ॥

अर्थ-सप्ताह्व, श्वेतरोहीत, सितपुष्प, सिताह्वय, सितांग शुक्लरोहीत, लक्ष्मीवान्, जनवल्लभ (क्षारयोग्य, लक्ष्मी, सर्वजनप्रिय)

संस्कृतभाषामें	रोहितक, कूटशाल्मली, श्वेतरोहितक ।
हिन्दीभाषामें	रोहेडा ।
वंगभाषामें	रोढा, रयना, नयना, कडार ।
मराठीभाषामें	रक्तरोहिडा ।
गुजरातीभाषामें	रगतरोहिडो, श्वेतरोहिडो ।
कर्णाटकीभाषामें	यरट्टमल, मुत्तलू ।
तैलिङ्गीभाषामें	मुलुमोदुगचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	टेकोमा अण्डयुलेटा । Tecoma undulata

रोहीतको यकृत्प्लीहगुल्मोदरहरः परः (रा० व०)

अस्य गुणाः ।

अर्थ-रोहेडा-यकृत, प्लीहा गुल्म और उदररोग नाशक है ।

अन्यच्च ।

रोहीतकौ कटुस्निग्धौ कषायौ च सुशीतलौ ।

कृमिदोषव्रणप्लीहारक्तनेत्रामयापहौ ॥

अर्थ-दोनों प्रकारके रोहेडे-चरपरे, स्निग्ध, शीतल, कषैले तथा कृमिरोग, व्रण, प्लीहा, रक्तविकार और नेत्ररोगोंको दूर करे हैं ।

अपिच ।

रोहीतकद्वयं स्निग्धं तुवरं कटुकं मतम् । रक्तप्रसादनं तिक्तं शीतलं च सरं मतम् ॥ कृमिप्लीहारक्तदोषव्रणकर्णरुजापहम् । विषं नेत्ररुजं गुल्मयकृत्कफविनाशनम् ॥ वातं विबन्धं मांसं च मेदं शूलं च नाशयेत् । आनाहं भूतबाधां च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-दोनों प्रकारके रोहेडे-स्निग्ध, कसैले, चरपरे, रक्तप्रसादक, कडवे, शीतल, सारक तथा कृमि, प्लीहा, रुधिरविकार, व्रण, कर्णरोग, विष, नेत्ररोग, गुल्म, यकृत, कफ, वात, विबन्ध, मांस, मेद, शूल, आनाह और भूतबाधाको दूर करे हैं ।

विवरण। रोहिडेके वृक्ष बनोंमें अधिक होते हैं, फूल अनारकी समान होता है, लाल और सपेद इन फूलोंके भेदसे रोहेडकी दो जाती हैं, राजनिघण्टुमें लाल रोहिडे और कूटशाल्मलीके एकत्र नाम तथा गुण लिखे हैं और शोढलनिघंटुमेंभी कूटशाल्मली और लाल रोहिडा एकही लिखा है, किन्तु भावप्रकाशमें लाल रोहिडा और कूटशाल्मली भिन्न २ लिखे हैं और गुण भी अलग २ लिखे हैं सो भावप्रकाशसे कूटशाल्मलीके नाम और गुण आगे लिखे हैं ।

बब्बूरनामानि ।

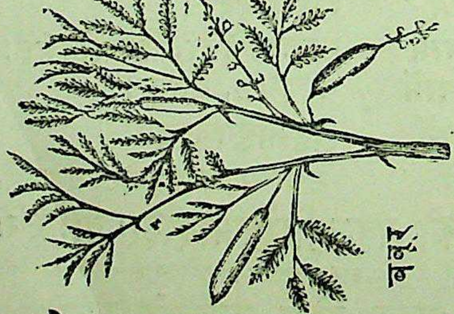

मालाफलोथ बब्बूलो युग्मकण्टो दृढारुहः ।
कण्टकी सूक्ष्मपत्रश्च पीतपुष्पः कषायकः ॥

अर्थ-मालाफल, बबूल, युग्मकण्ट, दृढारुह, कण्टकी, सूक्ष्मपत्र, पीतपुष्प, कषाय, (किंकिरात, किंकिराट, युगलाक्ष, कण्टलु, तीक्ष्णकण्टक, गोशृंग, पंक्तिबीज, दीर्घकंटक, कफान्तक, दृढबीज, अजभक्ष, कण्टल, बब्बूल, वब्बोल, वावल, स्वर्णपुष्प, पीतक)

संस्कृतभाषामें	वर्वूर, बब्बूल ।
हिन्दीभाषामें	ववूर, कीकर, २ ववूरका गोंद ।
वंगभाषामें	वावगालाछ ।
मराठीभाषामें	बाभूळ, बाबूळ, कीकर, २ बाभळीचा गोंद.
गुजरातीभाषामें	बाबल ।
कर्णाटकीभाषामें	पुलई ।
तैलिङ्गीभाषामें	बलवंतड्डु, नल्लतुम्म ।
औत्क०	गुड्डा ।
वम्०	रोमकाडि ।
तामिलीभाषामें	कलिकिकर ।
इंग्रेजीभाषामें	एकश्याट्री । Acacia tree
	गम् आरेबीक Gum Arabic
लैटिनभाषामें	एकेश्या आरेबीका Acacia Arabica
	एकेश्या गम्मि । A.Gummi
फारसीभाषामें	मुगिलां २ गौन् ।
अरबीभाषामें	अम्मुगिलां ३ सिमग ।

अस्य गुणाः ।

बर्बुरस्तु कषायोष्णः कफकासामयापहः ।
आमरक्तातिसारघ्नः पित्तदाहार्शनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बबूर-कषेला, गरम तथा कफ, खाँसी, आम, रक्तातिसार, पित्त, दाह और बवासीरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बब्बूलः कफनुद्ग्राही कुष्ठक्रिमिविषापहः । (भा० प्र०)

अर्थ- बब्बूल-कफनाशक, मलरोधक तथा कोढ, कृमि और विषविनाशक है ।

अपिच ।

बब्बूलस्तिक्तमधुरः स्निग्धः शीतोष्णतूवरः । आमरक्ताति-

साराणां नाशनो ग्राहको मतः ॥ कफं कासं च पित्तं च दाहं रक्तातिसारकम् । वातं प्रमेहं शमयेत्पर्णन्तु ग्राहकं मतम् ॥ रुच्यं कटूष्णकासघ्नं वातपुंस्त्वकफार्शनुत्॥ (नि०र०)

अर्थ-बबूर-कडवा, मधुर, स्निग्ध, शीतल, गरंम, कषैला, मलरोधक तथाआम,रक्तातिसार, कफ, खाँसी, पित्त, दाह, वात, और प्रमेहको दूर करे है इसके पत्ते-मलरोधक, रुचिकारक, चरपरे, गरम तथा खांसी, वात, पुरुषता, कफ और बवासीरको हरे हैं ।

अस्य फलगुणाः ।

"बब्बूलस्य फलं रूक्षं विशदं स्तम्भनं गुरु ।
कषायं मधुरं शीतं लेखनं कफपित्तहृत् ॥"(भावप्रकाश)

अर्थ- बबूरकी फली-रूखी, विशद, मलस्तम्भक, भारी, कषैली, मधुर, शीतल, लेखन तथा कफ और पित्तनाशक है ।

अस्य निर्य्यासगुणाः ।

बब्बूलस्य तु निर्य्यासो ग्राही पित्तानिलापहः ।
रक्तातिसारपित्तास्रमेहप्रदरनाशनः ।
भग्नसन्धानकः शीतः शोणितस्रुतिवारणः ॥ (आ०सं०)

अर्थ-बबूरका गोंद-मलरोधक, पित्त और वातनाशक तथा रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और प्रदरको दूर करे है । भग्नसन्धानकारक, शीतल और रुधिरके गिरनेको बंद करे है ।

विवरण-बबूरके बहुतसे वृक्ष जलाशयके समीप जंगलादिमें एकत्र उपज खडे होतेहैं, इसमें सुईके समान महातीक्ष्ण काँटे होतेहैं और वे काँटे दो दो एकत्र खडे होतेहैं । पत्ते बहुत छोटे २ आमलेकेसे होतेहैं, फूल पीले रंगके गोल २ लगतेहैं, उसमें मिर्चके सदृश टेढी २ फली होती हैं ।

अरिष्टकनामानि ।

अरिष्टकस्तु माङ्गल्यः कृष्णवर्णोर्थसाधनः ।
रक्तबीजः पीतफेनः फेनिलो गर्भपातनः ॥

अर्थ-अरिष्टक, माङ्गल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफेन, फेनिल, गर्भपातन, (रीठा, गुच्छफल, अरिष्ट, मंगल्य कुम्भबीजक, प्रकीर्य्य, सोमवल्कल)

संस्कृतभाषामें	अरिष्टक ।	
हिन्दीभाषामें	रीठा ।	
वंगभाषामें	रिटेगाछ ।	
मराठीभाषामें	रिठा ।	
गुजरातीभाषामें	अरिठा ।	
तैलिंगीभाषामें	कुकुड ।	
इंग्रेजीभाषामें	सोपबेरी सोपनट् ।	Soap berri Soap nut
लैटिन्भाषामें	सेपिंस्त इमार्जिनटस् ।	Sapintus emarginatus
	सेपिंडस् ट्रिफोलियेटस् ।	S. Trifoliatus
फारसीभाषामें	फिंदकाहिंदी ।	
अरबीभाषामें	बुंदक ।	

अस्य गुणाः ।

अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नो ग्रहजिद्गर्भपातनः । भा० प्र०)

अर्थ-रीठा-त्रिदोषनाशक,ग्रहविनाशक और गर्भको गिरानेवालाहै।

अन्यच्च ।

अरिष्टकः कटुःपाके तीक्ष्णोष्णो लेखनो गुरुः । दोषत्रयहरो
गर्भपातनो गर्भशान्तिकृत्॥तज्जलं वामकं पानान्नस्याच्छीर्ष-
रुजापहम् । अर्धशीर्षव्यथां हन्ति वमनाद्विषनाशनम् ॥

अर्थ-रीठा-पचनेमें चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, लेखन, भारी, त्रिदोषनाशक, गर्भको गिरानेवाला तथा गर्भको शान्ति करनेवाला है। इसके जलको पीनेसे वमन होताहै और वमनसे विष दूर होताहै। इसके जलका नास लेनेसे मस्तकरोग और आधासीसी दूर होतीहै।

विवरण। रीठेके वृक्ष-वन और उपवनोंमें होतेहैं, पत्ते रीठेके एक डंडीमें ६।७ लगे होतेहैं,फल झुमखोंमें आतेहैं। रीठेके झागोंसे वस्त्र धोतेहैं।

पुत्रजीवनामानि ।

पुत्रजीवः पवित्रश्च गर्भदः सुतजीवकः ।
पुत्रजीवोपत्यजीवः सिद्धिदोपत्यजीवकः ॥

अर्थ-पुत्रजीव, पवित्र, गर्भद, सुतजीवक, पुत्रजीव, अपत्यजीव, सिद्धिद, अपत्यजीवक, (गर्भकर, जीवपुत्रक, श्लीपदापह, कुमारजीव, यष्टीपुष्प, अर्धसाधक)

संस्कृतभाषामें	पुत्रजीव ।
हिन्दीभाषामें	जियापोता, पानिजिया, जियापति, पितौंजिया
वंगभाषामें	जियापुँता, पुतजिया ।
मराठीभाषामें	पुत्रजीवकवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	पुत्रजीवक ।
कर्णाटकीभाषामें	पुत्रजीव ।
तैलिङ्गीभाषामें	शीश, कुँवरजुवि ।
लैटिन्भाषामें	पुत्रजीवा राक्सबुर्घिआई । Putrjiva Rozburghii

अस्य गुणाः ।

पुत्रजीवो गुरुर्वृष्यो गर्भदः श्लेष्मवातकृत् ।
सृष्टमूत्रमलो रूक्षो हिमः स्वादुः कटुः पटुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जीयापोता-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, गर्भदायक, कफवातकारक, मलमूत्रको करनेवाला, रूखा, शीतल, स्वादिष्ठ, चरपरा और खारा है।

अन्यच्च ।

पुत्रजीवो हिमो वृष्यः श्लेष्मदो गर्भजीवदः ।
चक्षुष्यः पित्तशमनो दाहतृष्णानिवारणः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-जीयापोता-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक, गर्भ और जीवदायक, नेत्रोंको हितकारी, पित्तको शान्त करनेवाला तथा दाह और तृषाको हरनेवाला है।

विवरण। पुत्रजीवक अर्थात् पतिजियाके वृक्ष सम्पूर्ण इंगुदीके वृक्षके समान होते हैं, पत्तेभी उसी आकारके, फलभी उसी आकारके होतेहैं, और इसके बीजोंकी माला रुद्राक्षकी तुल्य बनती है, प्रायः साधु लोग बहुत बनालेतेहैं।

इंगुदीनामानि ।

इंगुदोऽङ्गारवृक्षश्च तिक्तकस्तापसद्रुमः ॥

अर्थ-इंगुद, अङ्गारवृक्ष, तिक्तक, तापसद्रुम (भल्लकवृक्ष, इंगुदी, कण्टक, पुत्रिपत्रा, तापसतरु, इंगुल, हिंगुपत्र, विषकंटक, अनिलान्तक, गौरत्वक, तनुपत्र, शूलारि, विषकण्टक, तीक्ष्णकण्ट, तैलफल, पूतिगन्ध, विगन्धक, क्रोष्टुफल, तिक्तमज्ज, कृशरक, जलजन्तुविनाशक, दीर्घकण्टा, तैलबीजा, दारूपमफला और अंगुलिदला)

संस्कृतभाषामें	इंगुदी ।
हिन्दीभाषामें	हिंगोट, गोंदी ।
वंगभाषामें	जियापुता, इङ्गोट ।
मराठीभाषामें	हिंगणबेट ।
गुजरातीभाषामें	इंगोरियो ।
तैलिङ्गीभाषामें	गरा ।
इंग्रेजीभाषामें	डेलील । Delil
लैटिनभाषामें	बेलेनाइटीस राक्सबुर्धिआई Balanites Roxburdhi
अरबीभाषामें	हिलेलजे ।

अस्य गुणाः ।

इंगुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन् ।
हन्त्युष्णश्वित्रशूलघ्नस्तिक्तकः कटुपाकवान् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-हिंगोट-कोढ,भूतादिबाधा,ग्रहबाधा,व्रण,विष,कृमि,श्वित्र-। कुष्ठ और शूलको निर्मूल करे है। गरम, कडवा और पचनेमें चरपरा है

अन्यच्च ।

इंगुदी कफरक्तामग्रन्थिघ्नी स्याद्व्रणे हिता ।
एगुदं स्वादु तिक्तं च स्निग्धोष्णं श्लेष्मवातजित्॥(शो.नि.)

अर्थ-हिंगोट-कफ,रक्ताम,ग्रन्थि और व्रणविनाशक है। इसका फल स्वादिष्ठ,कडवा,स्निग्ध,गरम तथा कफ और वातविनाशक है ।

अपिच।

इंगुदीनामको वृक्षो मदगंधिः कटुर्लघुः। तिक्तश्चोष्णः फेनिलश्च प्रोक्तश्चैव रसायनः ॥ कृमीन्वातं विषं शूलं श्वित्रं कुष्ठं व्रणं कफम् । ग्रहपीडां भूतबाधां नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ अस्य पुष्पन्तु मधुरं स्निग्धं चोष्णं च तिक्तकम् । वातं कफं नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हिंगोट-मदगन्धियुक्त,चरपरा,हलका, कडवा,गरम,फेनिल,(झागोंकोकरनेवाला) रसायन तथा कृमि, वात, विष,शूल, श्वित्र-कुष्ठ, व्रण, कफ,ग्रहपीडा और भूतबाधाको दूर करेहै । इसके फूल मधुर, स्निग्ध,गरम,कडवे तथा वात और कफका नाश करैं हैं ।

अस्य फलमज्जागुणाः।

इंगुद्याः फलमज्जको जलयुतो लेपो मुखे कान्तिदः।(वै.जी.)

अर्थ-इंगुदीके फलकी मींगको, जलके साथ मुखपै लेप करनेसे मुखकी कान्ति बढती है।

विवरण। इंगुदीके बडे २ वृक्ष जंगल और वनोंमें उत्पन्न होतेहैं, उस वृक्षमें कांटेभी होतेहैं, फूल नींबूके समान कुछेक लम्बे और गोल होते ह, फलके ऊपर गुठलीके सदृश रस लगा रहताहै मानों फल रसम तर रहता है।

जिङ्गिनीनामानि।

जिङ्गिनी झिंगिनी झिंगी सुनिर्यासा प्रमोदिनी॥

अर्थ-जिङ्गिनी, झिंगिनी, झिङ्गी, सुनिर्य्यासा, प्रमोदिनी,(कुल मंजरी, पार्वती)

संस्कृतभाषामें	जिंगिनी।
हिन्दीभाषामें	जिंगिणी।
मराठीभाषामें	मोई, मोक।
गुजरातीभाषामें	मवेडी, मोलेडु।
कर्णाटकीभाषामें	ओरथि, मरम।
लैटिन्भाषामें	ओडिनावोडियर। Odina wodier

अस्य गुणाः।

जिङ्गिनी मधुरा सोष्णा कषाया योनिशोधिनी।
कटुका व्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-जिङ्गिनी-मधुर, गरम, कषेली, योनिशोधक, चरपरी तथा व्रण, हृदयरोग, वात और अतिसारको दूर करे है और नमकीन है।

अन्यच्च।

जिंगिनी मुखदौर्गंध्यतृष्णावातकफापहा।
कटुपाका जयेद्वातव्रणातीसारहृद्रुजः॥ (सो॰ नि॰)

अर्थ-जिङ्गिनी-मुखकी दुर्गन्धता, तृषा, वात, कफ, वातव्रण, अतिसार और हृदयरोगको दूर करे है, तथा पचनेमें चरपरी है।

विवरण-जिंगनीके बडे २ ऊंचे वृक्ष जंगल और पहाडोंमें होतेहैं पत्ते मरुवेके समान शाखाओंमें बराबर दोनों ओर लगे होते हैं, फूल सफेद और फल बेरके समान आतेहैं।

तमालनामानि।

तमाल उक्तस्तापित्थः कालस्कन्धो मितद्रुमः।
लोकस्कन्धो नीलध्वजो नीलतालश्च स स्मृतः ॥

अर्थ-तमाल, तापित्थ, कालस्कन्ध, अमितद्रुम, लोकस्कन्ध, नलिध्वज, नीलताल, (तापिञ्ज तापिच्छ, कृष्णस्कन्ध, तम, तमा, कालताल, महाबल)

संस्कृतभाषामें	तमाल।
हिन्दीभाषामें	श्यामतमाल।
वंगभाषामें	तामालगाछ।
मराठीभाषामें	तमालवृक्ष।
गुजरातीभाषामें	तमाल।
तैलिङ्गभाषामें	तमालु।

अस्य गुणाः।

तमालस्तुवरः शोथदाहविस्फोटहृत्पुनः ॥ (म॰ नि॰)

अर्थ-श्यामतमाल-कषेला, सूजन, दाह और विस्फोटनाशक है।

अन्यच्च।

कालस्कन्धश्च मधुरो बल्यो वृष्यो गुरुः स्मृतः।
धातुवृद्धिकरः शीतः श्रमदाहकफापहः।
पित्तशोथं च विस्फोटं पित्तं चैव विनाशयेत् ॥ (नि॰र॰)

अर्थ-श्यामतमाल-मधुर, बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, धातुवर्द्धक, शीतल तथा श्रम, दाह, कफ पित्तसे उत्पन्न हुआ शोथरोग विस्फोट और पित्तको दूर करे है।

विवरण-तमालके वृक्ष प्रायः यमुना और तापी नदीके निकट बहुत होतेहैं, वृक्षकी मूल और शाखा श्यामरंगकी होतीहैं, पत्ते गोल और शीशमकी सदृश और फूल लाल २ होतेहैं और फल छोटे २ करौंदेके समान होते हैं।

तूणीनामानि।

तूणी तुन्नक आपीनस्तुणिकः कच्छकस्तथा।
कुठरकः कान्तलको नन्दीवृक्षश्च नन्दकः ॥

अर्थ-तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक, कच्छक, कुठेरक, कान्तलक, नन्दीवृक्ष, नन्दक (तूणीक, पीतक, कच्छप, कान्त, नन्दी)

अस्य गुणाः।

तूणीयकः कटुः पाके कषायो मधुरो लघुः ।
तिक्तो ग्राही हिमो वृष्यो व्रणकुष्ठास्रपित्तजित् (रा० नि०)

अर्थ-तूणी-पचनेमें चरपरी, कषेली, मधुर, हलकी, कडवी, मलरोधक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा व्रण, कुष्ठ और रक्तपित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

नन्दीवृक्षः कटुस्तिक्तः पीतस्तिक्तास्रदाहजित् ।
शिरोर्तिश्वेतकुष्ठघ्नः सुगंधिः पुष्टिवीर्य्यदः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पीली, सुगंधि, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्तपित्त, दाह, शिरकी पीडा और श्वेतकुष्ठको दूर करे है ।

अपिच ।

तूणीवृक्षः कटुस्तिक्तःपुष्टिकृच्छीतलो लघुः । वीर्य्यप्रदश्च मधुरस्तुवरो ग्राहको मतः॥वृष्यस्त्रिदोषहृत्प्रोक्तो व्रणं कुष्ठं च नाशयेत् ॥ रक्तपित्तं श्वेतकुष्ठं शीर्षपीडां च नाशयेत् ॥ कण्डूं पित्तं रक्तदोषं दाहं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पुष्टिकारक, शीतल, हलकी, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, कषेली, मलरोधक, वृष्य, त्रिदोषनाशक तथा व्रण, कुष्ठ रक्तपित्त, श्वेतकुष्ठ, शिरकी पीडा, कण्डू, पित्त, रुधिरविकार और दाहको दूर करे है ।

विवरण-तूनके बडे सघन वृक्ष जंगल और बनोंमें होतेहैं, पत्ते नीमके पत्तोंसे कुछेक बडे होतेहैं, फूल बहुत छोटे २ सफेद रंगके आतेहैं, लकडी इसकी बहुत उत्तम होती है ।

भूर्जपत्रनामानि।

भूर्जपत्रः स्मृतो भूर्जश्चर्म्मी बहुलवल्कलः ॥

अर्थ-भूर्जपत्र, भूर्ज, चर्म्मी, बहुलवल्कल (सुचर्म्मा, छदपत्र, वल्कद्रुम, भूर्ज्जपत्रक, चित्रत्वक्, बिन्दुपत्र, रक्षापत्र, विचित्रक, भूतघ्न, मृदुपत्र, मृदुचर्म्मी, शैलेन्द्रस्थ, चर्म्मद्रुम, छत्रपत्र, शिवि, स्थिरच्छद, मृदुत्वक्, दलनिर्म्मोक, पत्रकी, विद्यादल, पत्रपुष्पक, भुज, बहुपट, बहुत्वक्, मृदुच्छद)

संस्कृतभाषामें	भूर्ज्जपत्र ।
हिन्दीभाषामें	भोजपत्र ।
वंगभाषामें	भूर्ज्जिपत्र ।
मराठीभाषामें	भूर्जपत्र ।
गुजरातीभाषामें	भोजपत्र ।
कर्णाटकीभाषामें	भूर्जपत्र ।
इंग्रेजीभाषामें	जेक्वेमोंटी । Jacque montii
लैटिन्भाषामें	बिट्युला भोजपत्रा । Betula bojaputra

अस्य गुणाः।

भूर्जो भूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ।
कषायो राक्षसघ्नश्च मेदोविषहरः परः ॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-भोजपत्र-भूत, ग्रह, कफ, कर्णरोग, रक्तपित्त, राक्षस, मेद और विषविनाशक है तथा कषेला है ।

अन्यच्च ।

भूर्जः कटुकषायोष्णो भूतरक्षाकरः परः ।
त्रिदोषशमनः पथ्यो दुष्टकौटिल्यनाशनः ॥
"पित्तरक्तरुजां हंता मंत्रकार्येषु सिद्धिदः" ।

अर्थ-भोजपत्र-चरपरा, कषेला, गरम, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोषको शान्त करनेवाला, पथ्य तथा दुष्ट,कुटिलता और रक्तपित्तको हरनेवाला है तथा मंत्रादि कार्य्योंमें सिद्धिदेनेवाला है ।

अन्यच्च

भूर्जो बल्यः कफस्रघ्नः । (राजवल्लभ)

अर्थ-भोजपत्र-बलकारक, कफनाशक और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

विवरण । भोजपत्रके वृक्ष विशेषकरके हिमालयादि पर्वतोंमें उत्पन्न होते हैं, इस वृक्षकी छालकोही भोजपत्र कहते हैं, छाल कागज तथा सूखे केलेके पत्तेकी समान होती है, पहिले भोजपत्रका वस्त्रके स्थानमें व्यवहार किया जाता था भोजपत्रमें अनेक प्रकारके जंत्र मंत्र लिखे जाते हैं ।

पलाशनामानि ।

पलाशः किंशुकः पर्णो याज्ञिको रक्तपुष्पकः ।

क्षारश्रेष्ठो वातपोथो ब्रह्मवृक्षः समिद्वरः ॥

अर्थ-पलाश, किंशुक, पर्ण, याज्ञिक, रक्तपुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, वातपोथ, ब्रह्मवृक्ष, समिद्वर, (करक, त्रिपत्रक, ब्रह्मपादप, पलाशक, त्रिपर्ण, रक्तपुष्प, पूतद्रु, ब्रह्मवृक्षक, ब्रह्मोपनेता, काष्ठद्रु, बीजस्नेह, त्रिपर्ण, कृमिघ्न, वक्रपुष्पक, सुपर्णी)

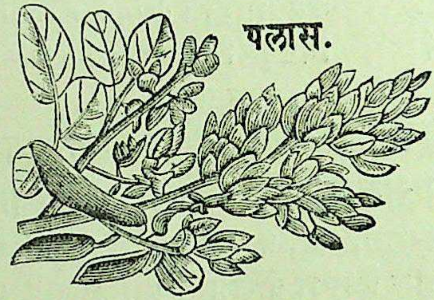
पलास.

संस्कृतभाषामें	पलाश ।
हिन्दीभाषामें	ढाक, टेसू, केसू, धारा, कांकरिया, पलाश ।
वंगभाषामें	पलाशगाछ ।
मराठीभाषामें	पळस ।
गुजरातीभाषामें	खाखरा ।
कर्णाटकीभाषामें	मुत्तलु ।
तैलङ्गीभाषामें	मातुकाचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	परशन् ।
औत्कलीभाषामें	पराशु ।
इंग्रेजीभाषामें	डाउनी ब्रांच ब्युटिया । Downy branch butaa
लैटिन्भाषामें	ब्युटिया फ्रंडाझा (लाल) Butəvfrondoza ब्युटिया पार्विफ्लोरा (धवल) B. parvifflora

अस्य गुणाः।

पलाशो दीपनो वृष्यः सरोष्णो व्रणगुल्मजित्। भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शःकृमीन्हरेत् ॥ कषांयः कटुकस्तिक्तः स्निग्धो गुदरोगजित्। तत्पुष्पं स्वादु पाके तु कटुतिक्तं कषायकम् ॥ वातलं कफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहि शीतलम्। तड्दाहशमनं

वातरक्तकुष्ठहरं परम् ॥ फलं लघूष्णं मेहार्शःकृमिवातकफापहम्।विपाके कटुकं रूक्षं कुष्ठगुल्मोदरप्रणुत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ढाक-अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, सारक, गरम, कषेला, चरपरा,कडवा, स्निग्ध,टूटे हाडको जोडनेवाला तथा गुदजरोग, संग्रहणी,बवासीर, कृमि, व्रण और गुल्मको हरनेवाला है। इसके फूल-स्वादुपाकी, कटु, तिक्त, कषेले,वातवर्द्धक तथा कफ,रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, वातरक्त और कुष्ठको नष्टकरेहैं. तथा शीतल, मलरोधक, तृषा और दाहको दूर करनेवाले हैं। इसके फल-हलके, गरम, पचनेमें चरपरे,रूखे तथा प्रमेह,बवासीर, कृमि, वात, कफ, कुष्ठ, गुल्म और उदररोगको दूरकरे हैं।

अन्यच्च ।

पलाशस्तु कषायोष्णः कृमिदोषविनाशनः । तद्बीजं पामकण्डूतिदद्रुत्वग्दोषनाशकृत्॥तस्य पुष्पं च सोष्णं च कण्डूकुष्ठार्त्तिनाशनम्।रक्तः पीतः सितो नीलः कुसुमैस्तु विभज्यते॥ किंशुकैर्गुणसाम्येपि सितो विज्ञानदः स्मृतः ।

अर्थ-ढाक-कषेला, गरम और कृमिदोषनाशक है। इसके बीज पामा, कण्डू,दाद और त्वचाके दोषोंको दूर करेहैं।इसके फूल-गरम तथा कण्डू और कुष्टको नष्टकरे हैं।टेसू-लाल,पीले,सफेद और नीले इन फूलोंके भेदसे चार प्रकारका है, गुण तो चारोंके समानही हैं, किन्तु सफेद फूलका अनेक प्रकारके विज्ञानदायक है।

अन्यच्च

पालाशमूलस्वरसो नेत्रच्छायांध्यपुष्पजित् ।
तद्बीजं कृमिविध्वंसि कांडो रसायने हितः ॥(शो०नि०)

अर्थ-पलाशकी जडका स्वरस-नेत्रच्छाया, रतोंधी और नेत्रके फूलोंको दूर करे है।इसके बीज-कृमिनाशक हैं।इसकी कांड रसायनकर्म्ममें उत्तम है

अपिच ।

उष्णः पलाशस्तुवरो वृष्यो दीप्तिकरः सरः। तिक्तः स्निग्धो ग्राहकश्च भग्नसन्धानकारकः ॥ व्रणगुल्मकृमिप्लीहासंग्रहण्य-

र्शवातहा।कफं योनिरुजं पित्तं नाशयेदिति कीर्त्तितम्। पुष्पभेदादयं रक्तपीतशुभ्रकनीलकः ॥ पुष्पाणि स्वादुतिक्तानि उष्णानि तुवराणि च॥वातलानि ग्राहकाणि शीतलान्यूषणानि च। तृषादाहपित्तकफास्रक्तदोषं च कुष्ठकम्॥ मूत्रकृच्छ्रं घातयन्ति फलं रूक्षं लघु स्मृतम्।उष्णं च कटुकं पाके कफवातोदरकृमीन् ॥ कुष्ठगुल्मप्रमेहार्शशूलानां चैव नाशकम्। फलबीजं च स्निग्धोष्णं कटुकृमिकफाञ्जयेत्॥नूतनाः पल्लवाश्चास्य कृमिवातविनाशकाः। (नि॰र॰)

अर्थ-ढाक-कषेला, गरम, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, सारक, कडवा, स्निग्ध, मलरोधक, भग्नसन्धानकारक तथा व्रण, गुल्म, कृमि, प्लीहा, संग्रहणी, बवासीर, वात, कफ, योनिरोग और पित्तको दूर करे है। यह लाल, पीत, श्वेत और नील इन फूलोंके भेदसे चारप्रकारका है। इसके फूल-स्वादिष्ठ, कडवे, गरम, कषेले, वातवर्द्धक, मलरोधक, शीतल, चरपरे तथा तृषा, दाह, पित्त,कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ और मूत्रकृच्छ्रको दूरकरे हैं। इसके फल-रूखे, हलके, गरम, पचनेमें चरपरे तथा कफ, वात, उदररोग, कृमि, कुष्ठ, गुल्म,प्रमेह, बवासीर और शूलको निर्मूल करेहैं।इसके फलके बीज-स्निग्ध,गरम, चरपरे तथा कफ और कृमिका नाश. करेहैं। इसके कोमल पत्ते-कृमि और वातका नाशकरे हैं।

अस्य निर्यासगुणाः।

पलाशभवनिर्य्यासो ग्राही च क्षपयेद्ध्रुवम्।
ग्रहणीं मुखजान्कासाञ्जयेत्स्वेदातिनिर्गमम् (आ॰सं॰)

अर्थ-ढाकका गोंद-मलरोधक तथा संग्रहणी, मुखरोग, खासी और पसीनेको दूरकरे है।

विवरण। पलाश अर्थात् ढाकके बडे२ वृक्ष प्रायःनदीकी तलेटी और जांगल प्रदेशमें होते हैं,पत्ते-गोल २ एक एक डंडीमें तीन तीन आते हैं,प्रथम लाल निकलते हैं।फिर हरे रंगके होजाते हैं। फूलकी डंडी काली और रंग अत्यन्त सुन्दर, लाल रंगके होते हैं। फली लम्बी २ लगती हैं, बीज गोल और चपटे निकलते ह,उसके बीजोंको ढकपना कहते हैं।

हस्तिकर्णपलाशनामानि।

तद्भेदे स्यात्किंशुलुकः किञ्चुलो हस्तिकर्णकः ॥

अर्थ-इसका भेद हस्तिकर्ण है उसके नाम यह हैं किंशुलुक, किंचुल और हस्तिकर्णक।

अस्य गुणाः।

हस्तिकर्णः परं वृष्यो मेधायुर्बलवर्द्धनः ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-हस्तिकर्णपलाश-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा मेधा, आयु और बलवर्द्धक है।

शाल्मलीनामानि।

शल्मलिः स्याच्छाल्मलिश्च शल्मली शाल्मली तथा ॥

अर्थ-शल्मलि, शाल्मलि, शाल्मली, शल्मली (पिच्छला, पूरणी, मोचा, स्थिरायु, तूलिफला, दुरारोहा, शाल्मलिनी, शाल्मल, अपूरणी, निर्गन्धपुष्पी, तुलिनी, कुक्कुटी, रक्तपुष्पा, कण्टकारी, मोचनी, शीमूलु, कदला, चिरजीवी, पिच्छिल, रक्तपुष्पक तूलवृक्ष, मोचाख्य, कण्टकद्रुम, कुकुटी, रक्तोत्पल, रम्यपुष्प, बहुवीर्य्य, यमद्रुम, दीर्घद्रुम, स्थूलफल, दीर्घायु, कण्टकाष्ठ, निस्सारा, दीर्घपादपा)

मोचरसनामानि।

निर्य्यासः शाल्मलेः पिच्छो शाल्मलीवेष्टकोपि च।
मोचस्रावो मोचरसो मोचनिर्य्यास इत्यपि ॥

अर्थ-शाल्मलीनिर्य्यास, पिच्छ, शाल्मलीवेष्टक, मोचस्राव, मोचरस, मोचनिर्य्यास, (मोचसार, मोचश्रुत, मोचस्रुत, पिच्छिलसार, सुरस, मोचाक, शाल्मलि, मोचाह्व, वेश्मरस, शाल्मल)

संस्कृतभाषामें	शाल्मली, २ शाल्मलीनिर्य्यास, मोचरस।
हिन्दीभाषामें	सेमल [र] २ सेमरका गोंद, मोचरस।
वंगभाषामें	शिमुल, २ शिमुलेरआठा।
मराठीभाषामें	सांवरी, शेंवरी २ सांवरीचा डीक।
गुजरातीभाषामें	शेमलो २ शेमलानो गुंद, मोचरस।
कर्णाटकीभाषामें	यवलवद्मर।
तैलङ्गीभाषामें	रुगचेट्टु।
औत्कलीभाषामें	वोनूरो।

तामिलीभाषामें	पुला ।	
इंग्रेजीभाषामें	सिल्ककाटनट्री	Silkcottyn tree
लैटिनभाषामें	बोंबेक्समेलेबेरिकम्	Bombaxmalabaricnm
	सालमेलिया मेलबेरिका	Salmaliya malabarica

शाल्मल्यागुणाः ।

शालमली शीतला स्वाद्वी रसे पाके रसायनी ।
श्लेष्मला स्निग्धवृष्या च बृंहणी रक्तपित्तजित् (भा०प्र०)

अर्थ-सेमल-शीतल, स्वादिष्ठ, पचनेमेंभी स्वादिष्ठ, रसायन, कफकारक, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक,पुष्टिकारक और रक्तपित्तनाशक है।

अन्यच्च ।

शालमली पिच्छला वृष्या बल्या मधुरशीतला ।
कषाया च लघुः स्निग्धा शुक्रश्लेष्मविवर्धिनी ॥(रा०नि०)

अर्थ-सेमल-पिच्छिल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर,शीतल, कषेला,हलका, स्निग्ध तथा शुक्र और कफवर्द्धक है ।

अपिच ।

शालमली मधुरा वृष्या बल्या च तुवरा मता ।शीतला पिच्छिला लघ्वी स्निग्धा स्वाद्वी रसायना ॥ शुक्रला श्लेष्मला चैव धातुवृद्धिकरी मता । रक्तपित्तं च पित्तं च रक्तदोषं च नाशयेत् ॥ त्वग्रसोस्या ग्राहकः स्यात्तुवरः कफनाशनः । पुष्पन्तु शीतलं पित्तं गुरु स्वादु कषायकम् ॥ वातलं ग्राहकं रूक्षं कफपित्तविनाशकम् । रक्तदोषहरं चैव गुणा ह्येते फलस्य च ॥ कन्दोस्या मधुरः शीतो मलस्तम्भकरो मतः । शोफं दाहं च पित्तं च सन्तापं चैव नाशयेत (नि० र०)

अर्थ-सेमल-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, कषेला, शीतल, पिच्छिल, हलका, स्निग्ध, स्वादिष्ठ, रसायन, शुक्रजनक, कफकारक,धातुवर्द्धक, तथा रक्तपित्त, पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करैहै । इसकी छाल-कषेली और कफनाशक है, इसके फूल-शीतल, कडवे, भारी, स्वादिष्ठ, कषेले, वादी, मलरोधक, रूखे तथा कफ, पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर

करे हैं। इसके फलके गुणभी इसीकी समान जानने। इसका कंद-मधुर, शीतल, मलस्तम्भक तथा सूजन, दाह, पित्त और सन्तापको हरनेवाला है।

अस्य पुष्पशाकगुणाः ।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तु घृतसैन्धवसाधितम् ।
प्रदरं नाशयत्येव दुःसाध्यञ्च न संशयः ॥
कफपित्तास्रजिद्रूक्षा हि वातलं च प्रकीर्त्तितः ।

अर्थ-घृत और सैंधवनोंनसे बनायाहुआ सेमलके फूलोंका शाक-असाध्य प्रदररोगको हरे है, कफ और रक्तपित्तको दूर करे है, मलरोधक और बादी है।

मोचरसगुणाः ।

मोचारसस्तु तुवरो ग्राही बलकरः स्मृतः । पुष्टिकृद्धातुकृद्वर्ण्यो बुद्धिदः शीतलः स्मृतः ॥ वयसस्थापनो वृष्यो गुरुः स्वादू रसायनः । स्निग्धः कफकरो गर्भस्थापको वातनाशनः ॥ अतिसारप्रवाहघ्नो रक्तरुक्पित्तदाहहा । आमातीसारशमनो रक्तातीसारनाशनः ॥ "पारदस्य विकारघ्नो सेवनान्मासमात्रतः। केचिन्मोचरसस्थाने पूगपुष्पं च निक्षिपेत्"॥ (नि.र.)

अर्थ-मोचरस-कषेला, मलरोधक, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, बुद्धिदायक, शीतल, अवस्थास्थापक, वीर्यवर्धक, भारी, स्वादिष्ठ, रसायन, स्निग्ध, कफकारक, गर्भस्थापक, वात नाशक तथा अतिसार, प्रवाहिका, रक्तरोग, पितदाह, आमातिसार और रक्तातिसारको दूर करनेवालाहै। इसको एक मासपर्यंत सेवन करनेसे पारेके विकार दूर होतेहैं, कोई २ वैद्य मोचरसके स्थानमें सुपारीका फूल गेरतेहैं।

विवरण। सेमलके वृक्ष प्रायः जंगलोंमें अधिक होतेहैं एक डंडीमें आठ दश पत्ते लगतेहैं इसमें काटे होतेहैं। फूल कमलकी समान लाल रंगके होतेहैं। फल आकके समान लगतेहैं। भीतरसे रुई निकलतीहै इसके गोंदको मोचरस कहते हैं।

कूटशाल्मलीनामानि ।

कुत्सितः शाल्मलिः प्रोक्तो रोचनः कूटशाल्मलिः ॥

अर्थ-कुत्सितशाल्मलि, रोचन, कूटशाल्मलि।

कूटशाल्मलीगुणाः।

कूटशाल्मलिकस्तिक्तः कटुकः कफवातनुत्।
मेद्युष्णः प्लीहजठरयकृद्गुल्मविषापहः॥
भूतानाहविबंधास्रमेदःशूलकफापहः। (भावप्रकाश)

अर्थ-कूटशाल्मली-कडवा, चरपरा, कफवातनाशक, भेदक, गरम तथा प्लीहा, उदररोग, गुल्म, विष, भूत, आनाह, विबंध, रुधिरविकार, मेद, शूल और कफनाशक है। कूटशाल्मलिके वृक्ष जंगलमें विशेष करके होते हैं, पत्ते जिंगिनीकी समान, फूल अत्यंत लालरंगके आतेहैं। एक सफेद रंगका होताहै।

धवनामानि।

धवः पिशाचवृक्षश्च शकटाख्यो धुरन्धरः॥

अर्थ-धव, पिशाचवृक्ष, शकटाख्य, धुरन्धर, (शाकटाख्य, दृढतरु, गौर, कषाय, मधुरत्वक्, शुष्कवृक्ष, शुष्काङ्ग, पाण्डुतरु, धवल, पाण्डुर, घट, नन्दितरु, स्थिर, पीतफल, मधुरत्वच्)

संस्कृतभाषामें	धव।
हिन्दीभाषामें	धौं, धावा।
वंगभाषामें	धाऊयागाछ।
मराठीभाषामें	धावडा।
गुजरातीभाषामें	धावडो।
कर्णाटकीभाषामें	सिरिवरु।
तैलिङ्गीभाषामें	नारिंजचेट्टु।
लैटिन्भाषामें	एनोजिसस् लाटिफोलिया। Anogisus Latifola कोनोकार्पस लाटिफोलिया। Conocorpus Latifolia

अस्य गुणाः।

धवः कटुः कषायः स्यात्कफवातविनाशनः।
पित्तप्रकोपनो रुच्यः दीपनः पाण्डुरोगजित्॥

अर्थ-धव-चरपरा, कषेला, कफवातनाशक, पित्तको कुपित करनेवाला, रुचिकारक, दीपन और पाण्डुरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

धवस्तु तुवरः शीतो मधुरः कटुको मतः।

दीपनो रुचिकृच्चैव पाण्डुरोगप्रमेहजित् ॥

कफपित्तार्शवातानां नाशकः परिकीर्तितः । फलं चास्य हिमं स्वादु रूक्षं च तुवरं मतम् ॥ मलस्तम्भकरं चैव वातलं कफपित्तजित् । "मूलं कटु कषायं च पित्तकृद्दीपनं परम् "॥ (नि.र.)

अर्थ-धों-कषेला, शीतल, मधुर, चरपरा, दीपन, रुचिकारक तथा पाण्डुरोग, प्रमेह, कफ, पित्त, बवासीर और बातको दूर करेहै । इसका फल-शीतल, स्वादिष्ठ, रूखा, कषेला, मलस्तम्भक, वातवर्द्धक तथा कफपित्तनाशक है । इसकी जड-चरपरी, कषेली, पित्तकारक और परम दीपन है ।

विवरण । धवके वृक्ष जंगलमें अधिक होतेहैं, इसके पत्ते अमरूदकी समान और छाल सफेद रंगकी होतीहै, फल बहुत छोटे होतेहैं इसकी लकडीके हल और मूसल बनतेहैं ।

धन्वंगनामानि ।

धन्वंगस्तु धनुर्वृक्षो गोत्रवृक्षः सुतेजनः ॥

अर्थ-धन्वंग, धनुर्वृक्ष, गोत्रवृक्ष, सुतेजन ।

अस्य गुणाः ।

धन्वङ्गः कफपित्तास्रकासहृत्तुवरो लघुः ।
बृंहणो बलकृद्रूक्षः सन्धिकृद्व्रणरोपणः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-धन्वंगवृक्ष-कफ, रक्तपित्त और खाँसीको दूर करेहै, कषेला, हलका, बृंहण, बलकारक, रूखा, संधिकारक और व्रणको भरनेवाला है ।

धन्वननामानि ।

धन्वनः पिच्छिलत्वक्च धनुर्वृक्षो महाबलः ।

अर्थ-धन्वन, पिच्छिलत्वक्, धनुर्वृक्ष, महाबल, (रक्तकुसुम, रुजासह, पिच्छिलक, रूक्ष, स्वादुफल)

अस्य गुणाः ।

धन्वनस्तुवरो वृष्यो मधुरः कटुको मतः । बल्यो रूक्षो लघुश्चैव धातुवृद्धिकरो मतः ॥ किंचिदुष्णश्च संप्रोक्तो व्रणरोपणकारकः । कफवातहरो दाहशोषकण्ठरुजापहः ॥ रक्तरुक्पित्तकासघ्नः पीनसस्य विनाशकः । फलं चास्य स्वादु शीतं तुवरं कफवातहम् ॥

अर्थ-धामिनवृक्ष-कषेला, वीर्य्यवर्द्धक,मधुर,चरपरा, बलकारक, रूखा, हलका, धातुवर्द्धक,किंचित् गरम, व्रणरोपण तथा कफ,वात, दाह, शोष,कण्ठरोग,रुधिरविकार,पित्त,खाँसी,और पीनस रोगको दूर करे है । इसका फल-स्वादिष्ठ,शीतल, कषेला, कफ और वातविनाशक है ।

विवरण। धामिनके वृक्ष-बहुत बडे और लम्बे होतेहैं,पत्तेबेरके पत्तोंसे कुछ बडे होतेहैं, इसकी लकडी प्रायः इमारतके काममें आतीहै ।

करीरनामानि ।

करीरं गूढपत्रं च शाकपुष्पं कटूफलम् ।
ग्रन्थिलं तीक्ष्णसारं च कण्टकीमरुभूरुहम् ॥

अर्थ-करीर, गूढपत्र, शाकपुष्प, कटूफल, ग्रन्थिल, तीक्ष्णसार, कण्टकी, मरुभूरुह (क्रकर, क्रकच, निष्पत्रिका, करिर, करक, तीक्ष्णकण्टक, मृदुफल, निष्पत्र, शोणपुष्प, विदाहिक, स्थलकुन्त, सुफल, उष्णसुंदर, विष्वक्पत्र, कृशशाख)

संस्कृतभाषामें	करीर ।
हिन्दीभाषामें	करील।
वंगभाषामें	करील (मथुरादिमें) कचडा ।
मराठीभाषामें	नेवती ।
गुजरातीभाषामें	केर।
कर्णाटकीभाषामें	तिप्पतिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	कवरकुराक एतुगदंत मुमोदतु।
इंग्रेजीभाषामें	केपर Caper.
लैटिन्भाषामें	केपरिस् स्पाइनोझा Cappuris spinosa.
फारसीभाषामें	कबार।

अस्य गुणाः ।

करीरमाध्मानकरं कषायं कटूष्णमेतत्कफहारि भूरि ।
श्वासानिलारोचकसर्वशूलविच्छर्दिखर्ज्जूव्रणदोषहारि ।

अर्थ-करील-आध्मानकारक, कषेला, चरपरा, गरम,कफनाशक तथा श्वास, वात, अरुचि, सर्वप्रकारके शूल, वमन, खर्ज्जू और व्रणविनाशक है ।

अन्यच्च ।

करीरः कटुकस्तिक्तः स्वेद्युष्णो भेदनः स्मृतः ।
दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-करील-चरपरा, कडवा, पसीनेको लानेवाला, उष्ण, भेदक तथा बवासीर, कफ, वात, आम तथा विष, सूजन और व्रणको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

करीरस्तुवरश्चोष्णः कटुश्चाध्मानकारकः । रुच्यो भेदकरः स्वादुः कफवातामशोथजित् ॥ विषार्शोव्रणशोथघ्नः कृमिपामाहरो मतः । अरोचकं सर्वशूलं श्वासं चैव विनाशयेत् ॥ फलं चास्य कटुस्तिक्तमुष्णं च तुवरं मतम् । विकासि मधुरं ग्राहि मुखवैशद्यकारकम् । हृद्यं रूक्षं कफं मेहं दुर्नामानं च नाशयेत् पुष्पं वातकरं प्रोक्तं तुवरं कफपित्तनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-करील-कषेला, गरम, चरपरा, आध्मानकारक, रुचिकारक, भेदक, स्वादु तथा कफ, वात, आम, सूजन, विष, बवासीर, व्रण, शोथ, कृमि, खुजली, अरुचि, सर्व प्रकारके शूल और श्वासको दूर करेहै। इसका फल-चरपरा, कडवा, गरम, कषेला, विकासि, मधुर मलरोधक, मुखको स्वच्छ करनेवाला, हृदयको हितकारी, रूखा तथा कफ, प्रमेह और पित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

करीरो व्रणशोफार्शोरक्तहृत्कफवातजित् । पटुपाकरसोऽत्युष्णो यकृत्प्लीहापहोऽग्निकृत् ॥ तत्पुष्पं कफवातघ्नं कटुपाकरसं लघु । सृष्टमूत्रपुरीषं च सदा पथ्यं रुचिप्रदम् ॥ बालं चास्य फलं पाके कटुकं श्लेष्मशोथजित् । कषायं वातलं तिक्तं तत्पक्वं कफपित्तजित ॥ (शो० नि०)

अर्थ-करील-व्रण, सूजन, बवासीर और रक्तविकारको दूर करनेवाला तथा कफ, वात, यकृत और प्लीहाको दूर करे है, पचनेमें चरपरा और अग्निवर्द्धक है । इसके फूल-कफवातविनाशक, चरपरे, पचनेमें भी चरपरे, हलके, मूत्र और मलको करनेवाले, सदैव पथ्य और

रुचिकारक हैं। इसके कच्चे फल-पचनेमें चरपरे, कफनाशक, शोथनिवारक, कषेले, बादी, कडवे और पक्के फल-कफ तथा पित्तनाशक हैं।

विवरण-करीलके वृक्ष मूडके उपर तथा मारवाडकी भूमिमें अधिकतासे होते हैं, इसकी डंडी नीले रंगकी और फूल गुलाबी रंगका होता है, फाल्गुन और चैत्रमासमें इसके ऊपर फल फूल आते हैं, पत्ते न होनेके कारण वृक्षमें फूलही फूल दीखते हैं।

शाखोटनामानि।

शाखोटः पीतफलको भूतावासः खरच्छदः।

अर्थ-शाखोट, पीतफलक, भूतावास, खरच्छद (पिशाचद्रु, पीतफल, कर्कशच्छद, शंखिनीवास, भूतवृक्ष, सकट, अक्षधर, करच्छद, गवाक्षी, धूकावास, रूक्षपत्र, पीत, कौशिकयोज, क्षीरनाश)

सं०	शाखोट।	गु०	सहोडा।
हिं०	सहोडा (रा)।	क०	आखोडमरणु।
बं०	शेओडा, शांडा।	तै०	भारिणिकेचेट्टु वरन्की।
म०	सहोड।	लै०	स्ट्रेप्ल्यूसास्पर। Streplusasper

अस्य गुणाः।

शाखोटो रक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित्।

अर्थ-सहोडा-रक्तपित्त, बवासीर, वात, कफ और अतिसारको दूर करे है।

विवरण सिहोडेके वृक्ष अत्यंत गँठीले झाड झंकाडसे मध्यम कदके होतेहैं, पत्ते छोटे २ और चिकने २ होतेहैं, फूल सफेद रंगके और लकडीमें कांटेसे प्रतीत होतेहैं।

शाकनामानि।

शाकः क्रकचपत्रः स्यात्खरपत्रोतिपत्रकः।
महीरुहः श्रेष्ठकाष्ठः स्थिरसारो गृहद्रुमः॥

अर्थ-शाक, क्रकचपत्र, खरपत्र, अतिपत्रक, महीरुह, श्रेष्ठकाष्ठ, स्थिरसार, गृहद्रुम, (अनिल, अर्ण, महापत्र, शाकतरु, शाकवृक्ष, शाकाख्य, अर्जुनोपम, शरपत्र, अतिपत्र, भूमिरुह, द्वारदारु, खरच्छद, दीर्घच्छद, कोलफल, योगी, हलीमक, गन्धसार, स्थिरसार, स्थिरक, ध्रुवसाधन)

संस्कृतभाषामें	शाक ।	
हिन्दीभाषामें	सागोन, सागवन ।	
बंगलाभाषामें	शेगुनगाछ ।	
मराठीभाषामें	साग, सांगवान ।	
गुजरातीभाषामें	शाग ।	
कर्णाटकीभाषामें	नगु ।	
तैलङ्गीभाषामें	टेकुचेट्टु ।	
तामिलीभाषामें	टेक ।	
औत्क०	सिंगुरु ।	
इंग्रेजीभाषामें	इंडियनटीक्ट्री ।	Indian terk tree
लैटिन्भाषामें	टेकटोना ग्रांडीस् ।	Tectona Grandis.
फारसीभाषामें	फिलगोस् ।	
अरबीभाषामें	फिलजाश उजनुलपिल ।	

अस्य गुणाः ।

शाकस्तु सारकः प्रोक्तः पित्तदाहश्रमापहः ।
कफघ्नं मधुरं रूक्षं कषायं शाकवल्कलम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शाक(सागोन)-सारक तथा पित्त,दाह और श्रमनाशक है। सागोनकी छाल-कफनाशक, मधुर, रूखी और कषेली है ।

अन्यच्च ।

भूमिसहस्तु शिशिरो रक्तपित्तप्रसादनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सागवन-शीतल और रक्तपित्तको शुद्धकरनेवाला है ।

अपिच ।

शाकः श्लेष्मानिलामघ्नो गर्भसन्धानदो हिमः ।(म०नि०पा०)

अर्थ-सागोन-कफ और वातनाशक, गर्भसन्धानकारक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

शाकवृक्षस्तु तुवरः शीतलो रक्तपित्तहा । गर्भस्थैर्य्यकरश्चैव गर्भसन्धानकारकः ॥ वातपित्तं तथार्शांसि कुष्ठं चातिसृतिं जयेत्। अस्य पुष्पं तु तुवरं तिक्तं च विशदं लघु॥वातप्रकोपनं रूक्षं कफपित्तप्रमेहनुत्।वल्कलं चास्य मधुरं रूक्षं च मधुरं मतम्॥कफनाशकरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम् । (नि.र.)

अर्थ-शाकवृक्ष-कषेला, शीतल, रक्तपित्तनाशक, गर्भको स्थिर करनेवाला, गर्भसन्धानकारक तथा वात, पित्त, बवासीर, कोढ और अतिसारको दूर करेहै । इसके फूल-कषेले, कडवे, विशद, रूखे, हलके, वातको कुपित करनेवाले तथा कफ, पित्त और प्रमेहको दूर करेहैं । इसकी छाल-मधुर, रूखी, कषेली और कफनाशक है ।

विवरण । शाकके बडे वृक्ष जंगलमें होतेहैं, पत्ते बडे और खरखरे होतेहैं इसके पत्तोंको हाथसे मलनेसे हाथ लाल होजाते हैं सागके फूल छोटे और सफेद होतहैं ।

वरुणनामानि ।

वरुणो बर्हपुष्पश्च तिक्तशाकः कुमारकः ।
उरुमाणः सेतुवृक्षः श्वेतद्रुर्मारुतापहः ॥

अर्थ-वरुण, बर्हपुष्प, तिक्तशाक, कुमारक, उरुमाण, सेतुवृक्ष, श्वेतद्रु, मारुतापह, (वरण, कुमार, अश्मरीघ्न, सेतुक, सेतु, वराण, शिखिमण्डल, श्वेतवृक्ष, श्वेतद्रुम, साधुवृक्ष, तमाल)

संस्कृतभाषामें	वरुण ।
हिन्दीभाषामें	वरना (विलि)
वंगभाषामें	वरुणगाछ ।
मराठीभाषामें	वायवरणा, (कों०) भाटवरणा ।
गुजरातीभाषामें	वरणो ।
कर्णाटकीभाषामें	मदवसले ।
तैलङ्गीभाषामें	उरुमाट्टि, जाजिचेट्टु, उलिमिरिचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	मरालिंगम् ।
लेटिनभाषामें	क्रेटिवा, रोक्सबुर्घिआई । Crateava. Roxburghii क्रेटिया, रिलिजिओसा । Crataeva. C. Religiosa.

अस्य गुणाः ।

वरुणः पित्तलो भेदी श्लेष्मकृच्छ्राश्ममारुतान् ।
निहन्ति गुल्मवातास्रकृमींश्चोष्णाग्निदीपनः ॥
कषायो मधुरस्तिक्तः कटुको रूक्षको लघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वरना-पित्तकारक, भेदक, कफ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, गुल्म, वातरक्त

और कृमिका नाश करेहै। गरम, अग्निप्रदीपक, कषेला, मधुर, कडवा, चरपरा, रूखा और हलका है।

अन्यच्च।

वरुणः कटुरुष्णश्च रक्तदोषहरः परः।
शीतवातहरः स्निग्धो दीप्यो विद्रधिवातजित्॥ (रा० नि०)

अर्थ-वरना-चरपरा, गरम, रुधिरविकारनाशक, शीतवातनिवारक, स्निग्ध, दीपन तथा विद्रधि और वातविनाशक है।

अन्यच्च।

वरुणोऽनिलशूलघ्नो भेदी चोष्णोऽश्मरीहरः।
पुष्पं वरुणजं ग्राहि पित्तघ्नमामवातजित्॥ (रा० नि०)

अर्थ-वरना-वात और शूलनाशक, दस्तावर, गरम और पथरीको दूर करेहै। वरनाके फूल-मलरोधक, पित्तनाशक और आमवातको दूर करेहैं।

अपिच।

वरुणोष्णः कटुः स्निग्धो दीपनो मधुरः स्मृतः। लघुस्तिक्तस्तु तुवरः पित्तलो भेदकः स्मृतः॥ वातं कफं विद्रधि च मूत्रकृच्छ्रं च नाशयेत्। अश्मरीं वातरक्तं च गुल्मं रक्तरुजं कृमीन्॥ रक्तदोषं शीर्षवातं मूत्राघातं च हृद्रुजम्॥ हृद्रोग नाशयत्येव पुष्पं चास्य च ग्राहकम्॥ रक्तदोषहरं चैव फलं चास्य सरं गुरु। पाके तु मधुरं स्वादु स्निग्धोष्णं वातनाशकम्॥ पित्तं कफं नाशयतीत्येवं च मुनिभिर्मतम्॥ (नि० र०)

अर्थ-वरना-गरम, चरपरा, स्निग्ध, दीपन, मधुर, हलका, कडवा, कषेला, पित्तजनक, दस्तावर तथा वायु, कफ, विद्रधि, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वातरक्त, गुल्म, रक्तविकार, कृमि, रक्तदोष, शीर्षवात, मूत्राघात, हृदयरोग और उरःशूलको नष्टकरे है। इसका फूल-मलरोधक, रक्तविनाशक। इसके फल-सारक, भारी, पचनेमें मधुर, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, गरम तथा वातपित्त और कफको हरे हैं।

विवरण। वरनेका बडा वृक्ष होता है, पत्ते बेलकी समान तीन२

लगते हैं, फल बेलकी समान गोल और सुपारीकी आकृतिवाले होते हैं, फूल गुलतुर्रकी सदृश होता है ।

कटभीनामानि ।

कटभी नामिका शौण्डी पाटली किणिही तथा ।
मधुरेणुः क्षुद्रश्यामा कैडर्य्यश्यामला नवा ॥

अर्थ-कटभी, नाभिका, शौण्डी, पाटली, किणिही, मधुरेणु, क्षुद्रश्यामा, कैडर्य्य, श्यामला, (स्वादुपुष्प, कटम्भर, किणिही, भद्रेन्द्राणी)

श्वेतकटभीनामानि ।

सितादिकटभी श्वेतकिणिही गिरिकर्णिका ।
शिरीषपत्री कालिन्दी शतपादा विषघ्निका ॥
महाश्वेता महाशौण्डी महादिकटभी दश ॥

अर्थ-सितकटभी, श्वेतकिणिही, गिरिकर्णिका, शिरीषपत्री, कालिन्दी, शतपादा, विषघ्निका, महाश्वेता, महाशौंडी और महाकटभी ।

संस्कृतभाषामें	कटभी, श्वेतकटभी ।
हिन्दीभाषामें	करही, कटभी, हरिमल ।
मराठीभाषामें	वाकुंभा ।
गुजरातीभाषामें	वापुंगा ।
कर्णाटकीभाषामें	वेल्लाल ।
इंग्रेजीभाषामें	करीसट्री । Careys tree
लैटिन्‌भाषामें	केरिया आर्बोरिया । Careyaarborea

कटभीगुणाः ।

कटभी चेत्कटुरूष्णा गुल्मविषाध्मानशूलदोषघ्नी ।
वातकफाजीर्णरुजां शमनी श्वेता च तत्र गुणयुक्ता ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-कटभी-चरपरी, गरम तथा गुल्म, विष, आध्मान, शूल, वात, कफ और अजीर्णरोगको दूर करेहै और श्वेतकटभी गुणयुक्त है ।

अन्यच्च ।

कटभी तु प्रमेहार्शोनाडीव्रणविषकृमीन् ।
हन्त्युष्णा कफकुष्ठघ्नी कटू रूक्षा च कीर्त्तिता ।
तत्फलं तुवरं ज्ञेयं विशेषात्कफशुक्रजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-कटभी-प्रमेह, बवासीर, नाडीव्रण, विष, कृमि, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है, गरम, चरपरी और रूखी है । इसका फल-कषेला और विशेषकरके कफ तथा शुक्रनाशक है।

विवरण। कटभीके मध्यम आकारके वृक्ष होतेहैं पत्ते लम्बे और कुछ कुछ गाल होतेहैं,फल अंड खर्बूजेकी समान छोटे छोटे लगतेहैं।

मुष्ककनामानि।

मुष्कको मोक्षको मुष्टिर्मूर्खको मोचकस्तथा ।
क्षारश्रेष्ठः क्षारवृक्षो द्विविधः श्वेतकृष्णकः ॥

अर्थ-मुष्कक, मोक्षक, मुष्टि, मूर्खक, मोचक, क्षारश्रेष्ठ, क्षारवृक्ष, (गौलिक, मेहन, पाटली,विषापह, जटाल, वनवासी, सुतीक्ष्णक, गोलीढ, गोलिह, क्षारोष्ण,शिखरी,वनवासी, घण्टापाटलि, क्षुद्रपाटलि, मुंचक, जटालु, झाटल, मोक्ष, घण्टा, पाटलि, क्षारद्रु,कालमुष्कक, पाटली,घण्टाक,तीक्ष्ण, घण्टक,कालस्थाली) यह सफेद और कृष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है ।

संस्कृतभाषामें	मुष्कक, मोक्षक ।
हिन्दीभाषामें	मोषा, मोखा, फरवाह ।
वंगभाषामें	घण्टापारुल ।
मराठीभाषामें	मोकडी, मोखावृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	मरखो ।
कर्णाटकीभाषामें	मोखदलाई ।
तैलिङ्गभाषामें	मोक्कपुचेट्टु, मुष्कतुण्डुचेट्टु ।
लेटिन्भाषामें	स्कीवीरास्वीटे निओइडिस् । Schre bera swiete nioides

अस्य गुणाः ।

मुष्ककः कटुकोम्लश्च रोचनः पाचनः परः ।
प्लीहगुल्मोदरार्तिघ्नो द्विधातुल्यगुणान्वितः(रा०नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके मोखावृक्ष-चरपरे, खट्टे, रोचन, पाचक तथा प्लीहा गुल्म और उदररोगको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

मोक्षकः कटुकस्तिक्तो ग्राह्युष्णः कफवातहृत् ।
विषमेदोगुल्मकण्डूवस्तिरुक्कृमिशुक्रनुत ॥

अर्थ-मोखा-चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम तथा कफ, वात, विष, मेद, गुल्म, कण्डू, वस्तिरोग, कृमि और शुक्रको नष्ट करैहै।

अन्यच्च।

मोक्षकः कफवातघ्नो ग्राही गुल्मविषकृमीन्।
हन्त्युष्णो वस्तिरुक्कण्डू तत्पुष्पं कफपित्तजित्॥
निर्य्यासोस्य परं वृष्यः शोषपित्तानिलापहः। (म.नि.)

अर्थ-मोखा-कफवातनाशक, मलरोधक, गुल्म, विष और कृमिनाशक है गरम वस्तिरोग और कण्डूको दूर करै है। इसका फूल कफपित्तनाशक है इसका गोंद अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा शोष, पित्त और वातविनाशक है।

अन्यच्च।

मुष्ककः कटुकश्चाम्लो रुचिकृत्पाचनः स्मृतः। ग्राहकोष्णः पटुस्तिक्तःप्लीहगुल्मोदरापहः॥ विषदोषं कफं वातं मेदरुग्बस्तिशूलहा। शुक्रदोषं कर्णरुजं पित्तं कण्डूं कृमीञ्जयेत्॥ पुष्पं कुष्ठहरं ज्ञेयं वातपित्तकफप्रणुत्। फलमग्नेर्दीप्तिकरं भेदकं रोचकं मतम्॥गुल्ममेहार्शःपाण्डुघ्नं शुक्रदोषोदरञ्जयेत्। (नि.र.)

अर्थ-मोखावृक्ष-चरपरा, खट्टा, रुचिकारक, पाचक, मलरोधक, गरम, निमकीन, कडवा तथा प्लीहा, गुल्म, उदररोग, विषविकार, कफ, वात, मेदरोग, वस्तिशूल, शुक्रदोष, कर्णरोग, पित्त, कण्डू और कृमिको दूर करैहै। इसका फूल-कुष्ठ, वात, पित्त, कफको दूर करैहै। इसका फल-अग्निप्रदीपक, दस्तावर,रोचक तथा गुल्म,प्रमेह, बवासीर, पाण्डुरोग, शुक्रदोष और उदररोगको दूर करै है।

विवरण। मोखके वृक्ष सफेद और काले इनभेदोंसे दोप्रकारके होतेहैं, पत्ते बडे २ होतेहैं। उनमें आककी समान दूध निकलता है। फल घंटाकारके लगतेहैं।

अम्बुशिरीषिकानामानि।

शिरीषिका ढिंढिणिका दुर्बलाम्बुशिरीषिका।

अर्थ-शिरीषिका, ढिंढिणिका, दुर्बला, अम्बुशिरीषिका।

संस्कृतभाषामें	अम्बुशिरीषिका ।
हिन्दीभाषामें	जलसिरस, ढाढोन ।
मराठीभाषामें	जलशिरसी ।

अस्य गुणाः ।

त्रिदोषकफकुष्ठार्शोहरी वारि शिरीषिका ।

अर्थ-जलसिरस(ढाँढोन)-त्रिदोष, कफ, कोढ और बवासीरको दूर करे ह ।

अन्यच्च ।

ढिंढिणी कफकुष्ठार्शःसन्निपातविषापहा ॥ (म०नि०)

अर्थ-जलसिरस-कफ, कुष्ठ, बवासीर, सन्निपात और विषको दूर करै है ।

विवरण । जलसिरसके वृक्ष, सिरसकेही समान कुछ छोटे जलमें होतेहैं ।

शमीनामानि ।

शमी शक्तुफली शान्ता केशहन्त्री शिवाफला ।
मङ्गल्या शुभदा लक्ष्मीः पवित्रा पापनाशिनी ॥

अर्थ-शमी,शकुफली,शान्ता,केशहन्त्री,शिवाफला,मङ्गल्या,शुभदा,लक्ष्मी,पवित्रा,पापनाशिनी(सक्तुफली,शक्तुफला,सक्तुफला,शिवा, काननारि, तुंगा, कचारिफला,केशमथनी,ईशानी,तपनतनया,इष्टा, शुभकरी, हविर्गन्धा, मेध्या, दुरितदमनी, शक्तुफलिका, समुद्रा, वह्निगर्भा, समीर,ईशान, सुरभी, पापशमनी,भद्रा, शंकरी, सुपत्रा, सुखदा, ईशाना, शंकरा, शंकुफलिका, सुभद्रा)

संस्कृतभाषामें	शमी ।
हिन्दीभाषामें	छोंकर (रा) समी, सफेदकीकर, छिकुर ।
वंगभाषामें	शाँइ, छुँइबाव्ला ।
मराठीभाषामें	थोरशमी, लघुशमी ।
गुजरातीभाषामें	खिजडी, नानी खिजडी ।
कर्णाटकीभाषामें	बनि, कावान्नि ।
तैलिङ्गीभाषामें	शमीचेट्टु ।
औत्क०	शुमि ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पंजट्री । Spungetree
लैटिन्भाषामें	प्रोसोपिस स्पाइसिजेरा। Prosopis spieigera

अस्य गुणाः ।

शमी रूक्षा कषाया च रक्तपित्तातिसारजित् ।
तत्फलं तु गुरु स्वादु रूक्षोष्णं नखकेशनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शमी (छोंकर)-रूखा, कषेला, तथा रक्तपित्त और अतिसारनाशक है । इसका फल भारी, स्वादिष्ठ, रूखा, गरम तथा नख और केशोंका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

शमी तिक्ता कटुः शीता कषाया रोचनी लघुः ।
कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःकृमिजित्स्मृता ॥
"तत्फलं पित्तलं रूक्षं मेध्यं केशविनाशनम्" ।(भा० प्र०)

अर्थ-छोंकर-कडवा,चरपरा,शीतल, कषेला, रोचन, हलका तथा कफ,खाँसी,भ्रम,श्वास,कोढ,बवासीर और कृमिको दूर करे है। इसका फल-पित्तजनक,रूखा,मेधाकारक और केशोंका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

शमी तु तुवरा रूक्षा शीता लघ्वी च तिक्तका । कटुका रेचनी चैव रक्तपित्तातिसारनुत् ॥ कुष्ठार्शःश्वासकासघ्नी कफभ्रमकृमीन् हरेत् । कम्पश्रमानां शमनी फलं तीक्ष्णञ्च पित्तलम् ॥ मेध्यं गुरु स्वादु रूक्षमुष्णं केशहरं परम् ।

अर्थ-शमी (छोकर)-कषेला,रूखा,शीतल, हलका, कडवा,चरपरा, दस्तावर तथा रक्तपित्त,अतिसार,कुष्ठ,बवासीर,श्वास,खाँसी, कफ, भ्रम, कृमि, कम्प और श्रमनाशक है । इसका फल-तीक्ष्ण, पित्तजनक, मेधाजनक, भारी,स्वादिष्ठ, रूखा, गरम और केशोंको दूर करेहै ।

विवरण । बडा वृक्ष होताहै,पत्ते छोटे, खैरकी समान और फली सेंगरीकी समान होतीहै । यहभी एक बबूरकी जातिमेंसे है ।

सप्तपर्णनामानि ।

सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।

अर्थ-सप्तपर्ण,विशालत्वक्,शारद,विषमच्छद(विद्ध,विनद,विन्याक, सारद, देववृक्ष,दलेगन्धि, शिरोरुजा, ग्रहनाश,सूतिपत्र,ग्रहाशी,

ग्रहनाशन, गुच्छपुष्प, शुक्तिपर्ण, सुपर्णक, अयुक्च्छद, अयुग्मच्छद, युग्मपर्ण, मुनिच्छद, बृहत्त्वक्, बहुपर्ण, शाल्मलिपत्रक, मदगन्ध, गन्धिपर्ण, सप्तच्छद, छत्रपर्ण, शारदिपुष्प)

संस्कृतभाषामें	सप्तपर्ण ।
हिन्दीभाषामें	छतिवन, सतवन, सतोना, छातियान् ।
बंगालीभाषामें	छातिमगाछ, छेतेन ।
मराठीभाषामें	सात्विण ।
गुजरातीभाषामें	सप्तपर्ण ।
व०	छातविण ।
कर्णाटकीभाषामें	एलेलेग ।
तैलङ्गीभाषामें	ऐडाकुल, अरिटाकु ।
लैटिन्भाषामें	आल्स्टोनिया स्कोलेरिस । Alstonia schlaris

अस्य गुणाः ।

सप्तपर्णो व्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजन्तुजित्
दीपनः श्वासगुल्मघ्नः स्निग्धोष्णस्तुवरः सरः (भा०प्र०)

अर्थ-सतवन-व्रण, कफ, वात, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, श्वास और गुल्मका नाश करेहै। दीपन, स्निग्ध, उष्ण और कुछ २ दस्तावरहै।

अन्यच्च ।

सप्तपर्णः कषायोष्णस्तिक्तो दीप्तिकरः सरः ।
स्निग्धो हृद्यः कृमिश्वासकुष्ठगुल्मव्रणास्रजित् ॥
मदगन्धिस्त्रिदोषघ्नः शूलरक्तरुजापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सतवन-कषेला, गरम, कडवा, अग्निदीपक, सारक, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, मदगन्धिवाला तथा कृमि, श्वास, कोढ, गुल्म, व्रण, रुधिरविकार, त्रिदोष, शूल और रक्तरोगका नाश करेहै ।

विवरण-बडा वृक्ष है, पत्ते शेमलकी समान और एक २ डालीमें सात २ लगते हैं ।

तिनिशनामानि ।

तिनिशः स्पंदनो नेमी सर्वसारोऽश्मगर्भकः ।

अर्थ-तिनिश, स्पंदन, नेमी, सर्वसार, अश्मगर्भक (तिनाशक,

स्पंदनद्रुम, अक्षक, चित्रकर्म्मा, रथद्रु, अतिमुक्तक, वञ्जुल, चित्रकृत, चक्री, शतांग, शकट, रथ, रथिक, भस्मगर्भ, मेषी, जलधर, स्पंदनि)

संस्कृतभाषामें	तिनिश ।
हिन्दीभाषामें	तिरिच्छ, (-) तिनछुना ।
बंगभाषामें	तिनाश, सादन, जारुलगाछ ।
मराठीभाषामें	तिवस ।
गुजरातीभाषामें	हम्मों, भिणोहम्मों
लेटिन्भाषामें	युजिनियाडा बर्जिया ओईडिस lbergja oides Ougenia da

अस्य गुणाः ।

तिनिशः श्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित् ।
तुवरः श्वित्रदाहघ्नो व्रणपाण्डुकृमिप्रणुत् (भा० प्र०)

अर्थ-तिरिच्छ-कफ, पित्त, रुधिरविकार, मेद, कोढ, प्रमेह, श्वित्रकुष्ठ, दाह, व्रण, पाण्डु और कृमिका नाश करे है तथा कषेला है ।

अन्यच्च ।

तिनिशस्तुवरश्चोष्णो ग्राहकः कफवातहा । रक्तातिसारं कुष्ठं च मेहं मेदं व्रणं तथा । रक्तदोषं च पित्तं च श्वित्रकुष्ठं कृमींस्तथा । दाहं च पाण्डुरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तितः (नि० र०)

अर्थ-तिरिच्छ, कषेला, गरम, ग्राही, कफवातनाशक तथा रक्तातिसार, कोढ, प्रमेह, मेद, व्रण, रुधिरविकार, पित्त, श्वित्रकुष्ठ, कृमि, दाह और पाण्डुरोगका नाश करे है ।

विवरण-तिनिसके बडे बडे वृक्ष होते हैं पत्ते छोटे २ छोंकरके समान होतेहैं, इसकी आकृति खैर अथवा लकिरकी समान होतीहै ।

हरिद्रुनामानि ।

हारिद्रकः पीतवर्णः श्रीमान् गौरद्रुमो वरः ।

अर्थ-हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान्, गौरद्रुम (हरिद्र, पीतदारु, पीतकाष्ठ, पीतक, कदम्बक, सुपुष्प, सुराह्व, पीतकद्रुम)

संस्कृतभाषामें	हरिद्रु ।
हिन्दीभाषामें	लदिवा, हलुदवा, हलदु ।
बंगभाषामें	वृक्षविशेष ।
मराठीभाषामें	हळदिवावृक्ष ।

गुजरातीभाषामें	हलदरवो ।	
कर्णाटकीभाषामें	बिलिलु ।	
लैटिन्भाषामें	नोक्लिया कोर्डिफोलिया ।	Nauclea cordifolia
	एडिना कोर्डिफोलिया ।	Adina cordifolia

अस्य गुणाः ।

हरिद्रुः कटुकः पाके वीर्योष्णस्तुवरः कटुः ।
लघुः कफहरो वर्ण्यो व्रणशोधनरोपणः ॥
तिक्तो बल्यः कान्तिदश्च त्वग्दोषांश्च विनाशयेत् ।

अर्थ–हलदुवा–पचनेमें चरपरा, उष्णवीर्य्य, कषेला, चरपरा, हलका, कफनाशक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, व्रणशोधक, व्रणरोपण, कडवा, बलवर्द्धक, कान्तिजनक और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अपिच ।

हरिद्रुः शीतलस्तिक्तो मंगल्यः पित्तवान्तिजित् ।
अंगकान्तिकरो बल्यो नानात्वग्दोषनाशनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ–हलदुवा–शीतल, कडवा, मंगलकारक, पित्तनाशक, वमननिवारक, बलवर्द्धक और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

विवरण। हलदुके बडे२ वृक्ष पर्वत और वनोंमें होतेहैं, इसकी छाल पीले रंगकी होतीहै । पत्ते दोनों ओर शाखामें बराबर लगे होतेहैं ।

रुद्राक्षनामानि ।

रुद्राक्षं च शिवाक्षं च शर्वाक्षं भूतनाशनम् ।
पावनं नीलकंठाक्षं हराक्षं च शिवप्रियम् ॥

अर्थ–रुद्राक्ष, शिवाक्ष, शर्वाक्ष, भूतनाशन, पावन, नीलकंठाक्ष, हराक्ष, शिवप्रिय, (तृणमेरु, अमर, पुष्पचामर)

हिन्दी, वंग, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तैलिंगी–रुद्राक्ष ।
लैटिन्भाषामें इलयोकार्पस गेनीट्रस ।

अस्य गुणाः ।

रुद्राक्षमम्लमुष्णं च वातघ्नं कफनाशनम् ।
शिरोर्तिशमनं रुच्यं भूतग्रहविनाशनम् ॥

अर्थ-रुद्राक्ष-अम्ल, उष्ण, वातनाशक, कफनिवारक, शिरकी पीडाको दूर करनेवाला तथा भूतबाधा और ग्रहबाधाको हरैहै। रुद्राक्षके वृक्ष विशेषकरके वनमें होतेहैं, पत्ते लघु और कुछ गोल होतेहैं। इसके बीजोंको रुद्राक्ष कहतेहैं।

माडनामानि।

माडो माडद्रुमो दीर्घो ध्वजवृक्षो वितानकः।
मद्यद्रुमो मोहकारी मद्यद्रुरज्जुरष्टधा॥

अर्थ-माड, माडद्रुम, दीर्घ, ध्वजवृक्ष, वितानक, मद्यद्रुम, मोहकारी, मद्यद्रु, रज्जु।

संस्कृतभाषामें	माड।
हिन्दीभाषामें	माड।
मराठीभाषामें	माड।
गुजरातीभाषामें	माड, भेंलिमाड।
कर्णाटकीभाषामें	वैनो।
इंग्रेजीभाषामें	टोर्नलिव्ड। Tornleaved
लैटिन्भाषामें	केर्युटायुरेन्स कार्गोट। Caryota UrensCargota

अस्य गुणाः।

माडस्तु शिशिरो रुच्यः कषायः पित्तदाहकृत्।
तृष्णापहो मरुत्कारी श्रमहृच्छ्लेष्मकारकः॥(रा०नि०)

अर्थ-माड-शीतल, रुचिकारक, कषेला, पित्तदाहकारक, तृष्णानिवारक, वादी, श्रमनाशक और कफकारक है।

विवरण। माडके वृक्ष वन जंगल सर्वत्र होतेहैं, पत्ते बडे बडे लम्बे और गोल होतेहैं, फूल सफेद और लाल रंगके आतेहैं।

साजडनामानि।

साजडो वनजो वृक्षः कृष्णत्वक् श्यामसारकः।
धाराफलोऽथ निस्सारफलको वीरवृक्षकः॥

अर्थ-साजड, वनजवृक्ष, कृष्णत्वक्, श्यामसारक, धाराफल, निस्सारफलक, वीरवृक्षक।

हिन्दीभाषामें	कौहा (ह)।

मराठीभाषामें	आयन, ऐन ।
गुजरातीभाषामें	साजड ।
तैलिङ्गीभाषामें	नल्लमद्दि ।
लैटिन्भाषामें	टरामिनालया ग्लेब्रा ।

अस्य गुणाः ।

"पार्थः क्षतेऽनिले भग्ने रक्तस्तम्भे कफे हितः" ॥

अर्थ-साजड-क्षत, वात, भग्न, रक्तस्तम्भ और कफरोगमें हितकारी है ।

विवरण-साजडभी अर्जुनका भेद है, इसकी आकृति प्रायः अर्जुन वृक्षके समान होती है । इसीका भेद ढोल समुद्रिका जानना ।

ढोलसमुद्रिकागुणाः ।

ढोलसमुद्रिका प्रोक्ता कीटादीनां विषप्रणुत् ॥

अर्थ-ढोलसमुद्र-कीटादिकोंके विषको हरनेवाला है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे वटादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ धातूपधातुवर्गः ।

सुवर्णनामानि ।

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।
चामीकरं शातकौम्भं द्राविणं भूरिपिञ्जरम् ॥

अर्थ-स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, चामीकर, शातकौम्भ, द्राविण, भूरिपिञ्जर, (गांगेय, भर्म्म, कर्ब्बूर, जातरूप, महारजत, काञ्चन, रुक्म, कार्त्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद, करहाटक, ऋक्थ, सानसि, अकुप्य, लोहोत्तम, भूत्तम, पुरट, रेकन, शातकुम्भ, कर्बुर, कर्चूर, रुक्म, भद्र, गैरिक, चाम्पेय, भरु, चन्द्र, कलधौत, अभ्रक, अग्निबीज, लोहवर, ऊर्ध्व, सारुक, स्पर्शमणिप्रभव, मुख्यधातु, शतखण्ड, उज्ज्वल, कल्याण, मनोहर, अग्निवीर्य्य, अग्नि, भास्कर, पिञ्जान, आपिञ्जर, तेज, दीप्त, अग्निभ, दीप्तक, मङ्गल्य, सौमेरुक, भृङ्गार, जाम्बव, आग्नेय, निष्क, तपनीयक, अग्निशिख, चंड, अय, पेश, कृशान, लोह, अमृत, मरुत, दत्र, चारुरत्न, पीतक, श्रीनिकेत, भूषणार्ह, सुवर्णनामक)

संस्कृतभाषामें सुवर्ण,स्वर्ण।
हिन्दीभाषामें सोना।
वंगभाषामें सोना।
मराठीभाषामें सोनें।
गुजरातीभाषामें सोनु।
कर्णाटकीभाषामें चिन्ना,स्वर्ण।
तैलिङ्गीभाषामें भङ्गारं।
इंग्रेजीभाषामें गोल्ड्। Gold
लैटि० ओरं। Aurum
फारसीभाषामें तिला।
अरबीभाषामें जहब।

स्वर्णगुणाः।

स्वर्णं स्निग्धं कषायं च तिक्तं मधुरमेव च।
स्वादु शीतं त्रिदोषघ्नं रसायनं सुरोचकम्॥
चक्षुष्यमायुष्यप्रज्ञावीर्य्यबलस्मृतिप्रदम्॥

अर्थ-सोना-स्निग्ध, कषेला,कडवा, मधुर, स्वादु, शीतल,त्रिदोषनाशक, रसायन, रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, आयुवर्द्धक, प्रज्ञाजनक, वीर्य्यदायक, बलकारक और स्मरणशक्तिवर्द्धक है।

सुवर्णपरीक्षा।

दाहे रक्तं सितं छेदे निकषे कुंकुमप्रभम्। तारशुल्वोज्झितं स्निग्धं कोमलं गुरुहेम तत्॥ तच्छ्वेतं कठिनं रूक्षं विवर्णं समलं दलम्॥ दाहे छेदे सितं श्वेतं कषे त्याज्यं लघु स्फुटम्।

अर्थ-तपानेमें लालहो,तोडनेमें सफेदहो,कसौटीके ऊपर रखनेसे केशरी रंगका होजाय, चांदी और तांबे करके रहित हो,स्निग्ध, नरम और भारी ऐसा सोना उत्तम होता है। सफेदरंगका कठोर, रूखा, बुरेरंगका, मैलयुक्त, पत्तरयुक्त, तपाने और तोडनेमें सफेद हो, कसौटीके ऊपर रखनेसे सफेद होजाय,हलका और चोट मारनेसे टूट जावे ऐसा सोना त्याज्य है।

अन्ये च गुणाः।

सुवर्णं शीतलं वृष्यं बल्यं गुरु रसायनम्। स्वादुतिक्तं च तुवरं पाके च स्वादु पिच्छिलम्॥ पवित्रं बृंहणं नेत्र्यं मेधास्मृतिमतिप्रदम्। हृद्यमायुष्करं कान्तिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत्॥ विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषहृत्।

अर्थ-सोना(सोनेकी,भस्म)-शीतल वीर्य्यवर्द्धक,बलवर्द्धक,भारी'

रसायन स्वादिष्ठ, कडवा, कषेला, पचनेमें, स्वादु, पिच्छिल, पवित्र, पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी तथा मेधा, स्मरणशक्ति और बुद्धिजनक है, हृदयको हितकारी, आयुवर्द्धक, कान्तिजनक, वाणीको शुद्ध और स्थिर करनेवाला, तथा स्थावरविष, जंगमविष, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर और शोषको दूर करे है ।

असम्यङ्मारितस्वणगुणाः ।

असम्यङ्मारितं स्वर्णं बलं वीर्य्यं च नाशयेत् ।
करोति रोगान् मृत्युं च तद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥

अर्थ–अविधिसे मारा सुवर्ण–बल, और वीर्य्यनाशक है, रोगजनक और मृत्युकारक है । इसकारण उसको भले प्रकारसे मारे ।

अशुद्धस्वर्णस्य दोषाः ।

बलं सवीर्य्यं हरते नराणां रोगव्रजं पोषयतीह काये ।
असौख्यकार्य्येव सदासुवर्णमशुद्धमेतन्मरणं च कुर्य्यात् ॥
(भा०प्र०)

अर्थ–अशोधितसुवर्ण-बल और वीर्य्यनाशक, शरीरमें अनेकप्रकारक रोगोंको उत्पन्न करनेवाला, निरन्तर, असुखकारक और मरणको करनेवाला है ।

दह्यंते धातवो वह्नौ मणिरत्नाभ्रकादयः। न क्षीयते न म्रियते सुवर्णमजरामरम् ॥ अपक्वहेमसंघृष्टं शिलायां जलयोगतः । द्रवरूपं तु तत्पेयं मधुना गुणदायकम् ॥ मध्वामलकचूर्णं च वरकश्चेति तत्त्रयम् । प्राश्या रिष्टग्राहितोऽपि मुच्यते प्राणसंकटात् ॥ तस्मान्मृतोत्थित चापि भक्ष यंस्तद्विचारयेत् । मृतंहाटकंदिव्यकांतिं तनोति क्षतंश्वासकासौक्षयंपित्तवातौ । प्रमेहंग्रहण्यातिसारौचकुष्ठंज्वरंहन्तिवाषंढकंदर्पदंच ॥

अर्थ–धातु, मणि, रत्न और अभ्रकादि सम्पूर्ण रस अग्निमें डालनेसे जलजातेहैं। किन्तु सोना न तो मरताहै और न कम होताहै; इसकारण यह अजर और अमर है। कच्चे सोनेको लेकर जलके योगसे पत्थरपर घिसे, फिर उसम सहत डालकर पिये तो अत्यन्त गुण होताहै ।

सहत-आमलेको चूर्ण और सोनेके वर्क इनको एकत्र मिलाकर चाटनेसे अरिष्टको प्राप्त हुवा और प्राणसंकट होनेपरभी आरोग्य होजाता है ।

सोनेकी भस्म-दिव्य,कांतिजनक तथा क्षत,श्वास,खासी,क्षय पित्त वात,प्रमेह संग्रहणी,अतिसार,कुष्ठ और ज्वरको दूर करेहै तथा नपुंसकोंके कामदेवकी वृद्धि करे है ।

स्वर्णस्योत्पत्तिः ।

पुरा निजाश्रमस्थानां सप्तर्षीणां जितात्मनाम् । मरीचिरंगिरा
अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ॥ वसिष्ठश्चेति सप्तैते कीर्तिता
परमर्षयः । पत्नीं विलोक्य लावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाम् ॥
कंदर्पदर्पविध्वस्तचेतसो जातवेदसः । पतितं यद्धरापृष्ठे रेतस्तु
हेमतामगात् ॥ कृत्रिमं चापि भवति तद्रसेन्द्रस्य वेधनः ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-पूर्वकालमें मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ यह जितात्मा, सप्तऋषि अपने आश्रममें बैठे हुयेथे । इनकी पत्नीकी लावण्यता और यौवनावस्थारूप लक्ष्मीको देख कामके बाणोंसे पीडित अग्निका शुक्र जो पृथ्वीमें गिरा उससे सोनेकी उत्पत्ति हुई और एक कृत्रिमभी होताहै,जिसको पारेके वेधसे बनाताहै।

विवरण-लंका, चीन,अमेरिका, आफ्रिका आदिदेशोंमें सोनेकी अनेक खानें हैं । प्रायः उपर्युक्तस्थानोंकी भूमिको खोदनेसे जो सोनेकी धूलसा मिलाहुवा रेता निकलताहै उसको अनेकप्रकारसे साफ करके सोना बनाया जाता है ।

रूप्यकनामानि

रूप्यं दुर्वर्णकं श्वेतं खर्जूरं लोहराजकम् ।
अकुप्यं रजतं सौधं विमलं चन्द्रलोहकम् ॥

अर्थ-रूप्य, दुर्वर्णक, श्वेत, खर्जूर, लोहराजक, अकुप्य, रजत, सौध, विमल, चन्द्रलोहक, (शुभ्र, वसुश्रेष्ठ,रुधिर,श्वेतक,महाशुभ्र, तप्तरूपक, चन्द्रभूति, सित, तार, कलधूत, इन्द्रलोहक, रौप्य,धौत, चन्द्रहास, राजरंग, दुर्वर्ण, रंगबीज, कलधौत, कुप्य, रुचिर, चन्द्रवपु, महावसु, बाष्कल, महाधन, चन्द्रकान्ति, शुभ)

सं०	रूप्यक, रौप्य, रजत।	त०	वेंडी ।
हिं०	चांदी, रूपा ।	इं०	सिल्वर । Silver
बं०	रूप ।	ल०	आर्गेन्टम् । Argentum
म०	रुप, चांदी ।	फा०	नुकरा ।
गु०	रुपुं ।	अ०	फिद्दा ।
क०	बोळ्ळि ।		

रौप्यपरीक्षा ।

गुरु स्निग्धं मृदु श्वेतं दाहे च्छेदे घनक्षमम् । वर्णाढ्यं चन्द्रवत्स्वच्छं रूप्यं नवगुणं शुभम् ॥ कठिनं कृत्रिमं रूक्षं रक्तपीतदलं लघु ॥ दाहे छेदे घनैर्नष्टं रूप्यं दुष्टं प्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-तोलमें भारी, स्निग्ध, नरम, तपाने और तोडनेमें सफेद, घनकी चोटको सहलेवे, सुंदरवर्ण और चन्द्रमाके समान निर्मल यह नवगुणयुक्त रूपा उत्तम होताहै । कठोर, बनावटी, रूखा, लाल, पीलपत्तरवाला, हलका, तपाने तोडने और घनकी चोटसे टूटजाय ऐसा रूपा दुष्ट होताहै ।

रौप्यगुणाः ।

रौप्यं स्निग्धं कषायाम्लं विपाके मधुरं
वयसः स्थापनं शीतं लेखनं वातपित्तजित् ॥

अर्थ-रूपा-स्निग्ध, कषेला, अम्ल, पचनेमें मधुर, सारक, आयुर्वर्द्धक, शीतल, लेखन और वातपित्तको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

तारं च तारयति रोगसमुद्रपारं देहस्य पौष्टिककरं हरते मलं च।
वर्ण्यं विषघ्नममलं हरति प्रमेहं वृष्यं पुनर्नवकरं कुरुते चिरायुः॥

अर्थ-तार (रूपा)-प्राणियोंको रोगरूपी समुद्रसे तारनेवाला है, शरीरको पुष्ट करनेवाला, देहके मैलको हरनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, विषनाशक, प्रमेहनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, वृद्धमनुष्यको यौवनवान् करनेवाला और आयुको बढानेवाला है ।

अपिच ।

सितया हन्ति दाहाद्यं वातपित्तं फलत्रिकात् ।
त्रिसुगन्ध्याप्रमेहादीन्व्रजतं हंत्यसंशयम् ॥

अर्थ-रूपा-चीनीके साथ-दाहादिरोगोंको,त्रिफलेके साथ-वातपित्तादिकोंको और त्रिसुगन्धि (इलायची, दालचीनी और तेजपात) के साथ-प्रमेहादिक रोगोंको हरनेवाला है ।

अशोधितरौप्यगुणाः ।

तारं शरीरस्य करोति तापं विध्वंसनं यच्छति शुक्रनाशम् ।
वीर्य्यं बलं हन्ति तनोश्च पुष्टिं महागदान् पोषयति ह्यशुद्धम् ।

अर्थ-अशोधित रूपा-शरीरमें तापको करनेवाला, शरीरको शिथिल करनेवाला,शुक्रनाशक,वीर्यविनाशक पुष्टिनाशक,बलहारक और महारोगोंको उत्पन्न करनेवाला है ।

रौप्यस्योत्पत्तिः ।

त्रिपुरस्य वधार्थाय निर्निमेषैर्विलोचनैः । निरीक्षयामास शिवः क्रोधेन परिपूरितः ॥ अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात् । ततो रुद्रः समभवद्वैश्वानर इव ज्वलन् ॥ द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिन्दुस्तु वामकात् । तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्म्मसु योजयेत् ॥ कृत्रिमं च भवेत्तद्धि वंगादिरसयोगतः ।

(भा प्र०)

अर्थ-त्रिपुरासुरके वध करनेके लिये श्रीमहादेवजी अत्यंत क्रोधित हुये तब उस त्रिपुरासुरको पलकरहित देखते हुये उसीसमय महादेवके एकनेत्रसे अग्नि निकली; जिससे महादेव अग्निके समान प्रज्वलित होते हुये और बाँयें नेत्रोंसे जो आंसूकी बूँद गिरी उससे चांदीकी उत्पत्ति हुई । एक कृत्रिम चांदी वंग और पारेके योगसे बनती है ।

विवरण।चांदीकी खानें अमेरिका,सिलोन आदि देशोंमें अधिकहैं।

ताम्रनामानि ।

ताम्रं म्लेच्छमुखं द्विष्टं वरिष्ठं च कनीयसम् ।

अर्थ-ताम्र,म्लेच्छमुख, द्विष्ट, वरिष्ठ, कनीयस (ताम्रक, शुल्ब, द्व्यष्ट, उडुम्बर,शुल्ल,उदम्बर,औदुम्बर,औडुम्बर उदुम्बर, रविसंज्ञक, मुनिपित्तल, अर्क,सूर्य्याह्व,लोहितायस, लोहिताप, तपनेष्ट,अम्बक, अरविन्द, रविप्रिय, रक्त, नैपालिक, रक्तधातु, सर्वलोह, पवित्र, ब्रह्मवर्चस, भास्तुर)

सं०	ताम्र ।	तै०	रागी ।
हिं०	ताँबा ।	ता०	तांत्रम्,शेप्पु
बं०	तामा ।	इं०	कापर । Copper
म०	तांब ।	ल०	क्युप्रम् । Cuprum
गु०	त्रांबो ।	फा०	मिस ।
क०	ताम्र ।	अ०	नुहास ।

उत्कृष्टताम्रस्य लक्षणम् ।

जपाकुसुमसंकाशं स्निग्धं मृदु घनं क्षमम् ।
लोहनागोज्झितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ॥

अर्थ-जो जपाके फूलकी समान रंगवाला, स्निग्ध, नरम, घनकी चोटको सहलेवे और जिसमें लोहे तथा शीशेका मेल न हो ऐसा तांबा मारणकर्म्ममें उत्तम होता है ।

दूषितताम्रस्य लक्षणम् ।

कृष्णं रूक्षमतिस्तब्धं श्वेतं चापि घनासहम् ।
लोहनागयुतं चेति शुल्बं दुष्टं प्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-जो काला, रूखा, अत्यन्त कठोर, सफेद, घनकी चोट न सहसके और लोहे तथा शीशेयुक्त हो ऐसा तांबा दुष्ट होता है । यह मारणकर्म्ममें त्याज्य ह ।

ताम्रगुणाः ।

ताम्रं सुपक्वं मधुरं कषायं तिक्तं विपाके कटु शीतलं च ।
कफापहं पित्तहरं विबन्धशूलघ्नपाण्डूदरगुल्मनाशि ॥ (रा. नि.)

अर्थ-तांबा-मधुर, कषेला, कडवा, पाकमें कटु, शीतल, कफनाशक, पित्तनिवारक तथा विबंध, शूल, पाण्डुरोग, उदररोग और गुल्मरोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

गुल्मं च कुष्ठं च गुदामयं च शूलानि शोफोदरपांडुरोगम् ।
उत्क्लेशमेदभ्रमदाहहीनं निहन्ति सम्यङ् मृतमेव शुल्वम् ॥

अर्थ-औरभी ताँबा-गुल्म, कोढ, गुदारोग, शूल, सूजन, उदररोग, पांडुरोग, उत्क्लेश, मेद, भ्रम और दाहको हरनेवाला है ।

अपिच ।

ताम्रं कषायं मधुरं सतिक्तमम्लं च पाके कटु सारकं च ।

पित्तापहं श्लेष्महरं च शीतं तद्रोपणं स्याल्लघु लेखनं च॥
पाण्डूदरार्शोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान् पीनसमम्लपित्तम्।
शोफकृमीञ्छूलमपाकरोति प्राहुर्बुधा बृंहणमल्पमेतत् ॥

अर्थ-तांबा-कषेला, मधुर, कडवा, अम्ल, पाकमें कटु, सारक, पित्तनाशक, कफनाशक, शीतल, रोपण, हलका, लेखन तथा पाण्डुरोग, उदररोग, बवासीर, ज्वर, कोढ, खाँसी, श्वास, क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि और शूलको दूर करे है और अल्पबृंहण है।

असम्यङ्मारितताम्रस्य दोषाः ।

एको दोषो विषे ताम्रे त्वसम्यङ्मारितेऽष्ट ते ।
दाहः स्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छाक्लेदो रेको वमिर्भ्रमः ॥

अर्थ-विषमें तो केवल एकही दोष है, परन्तु कुविधिसे मारे हुये तांबेमें दाह, पसीना, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद भेद (दस्तोंका होना) वमन और भ्रम यह आठ दोष रहते हैं।

ताम्रोत्पत्तिः ।

शुक्रं यत्कार्तिकेयस्य पतितं धरणीतले ।
तस्मात्ताम्रं समुत्पन्नमिदमाहुः पुराविदः ॥

अर्थ-कार्त्तिकेयका वीर्य्य पृथ्वीमें पतित हुवा उससे तांबेकी उत्पत्ति हुई ऐसा प्राचीन विद्वान् कहते हैं।

विवरण-वङ्गदेशमें तांबेकी अनेक खानें हैं।

रंगनामानि ।

रंगं वंगं चक्रसंज्ञं स्वर्णजं नागजीवनम् ।

अर्थ-रंग, वंग, चक्रसंज्ञ, स्वर्णज, नागजीवन, (मृद्वङ्ग, गुरुपत्र, तमर, नागज, कस्तीर, आलीमक, सिंहल, स्ववेत, नाग, त्रपु, त्रपुष, आप, मधुर, हिम, कुरूप्य, पिच्चट, पूतिगन्ध, चिप्पट)

सं० रंग, वंग।
हिं० रांग, रांगा, कलई, वंग।
बं० राङ्ग, वंग।
म० कथील।
गु० कलई, कथीर, खरिपारी
क० तवर।

तै० तगरमु।
इं० टीन। Tin
ल० स्टेन्नम् Stannum
फा० अरजीज।
अ० रुसास।

रङ्गगुणः ।

त्रपुसं कटु तिक्तहिमं कषायलवणं सरं च मेहघ्नम् ।
कृमिदाहपाण्डुशमनं कान्तिकरं तद्रसायनं च (रा. नि.)

अर्थ-रांग (वंग)-कटु, तिक्त, शीतल, कषायरसान्वित, लवणरसयुक्त, सारक, प्रमेहनाशक, कृमिनाशक, दाहनिवारक, पाण्डुरोगहारक, कान्तिकारक और रसायन है ।

अन्यच्च ।

रंगं लघु सरं रूक्षमुष्णमेहकफकृमीन्।निहन्ति पाण्डुं सश्वासं
चक्षुष्यं पित्तलं मनाक् ॥ सिंहो यथा हस्तिगणं निहन्ति
तथैव रंगं खिलमेहवर्गम् ॥ देहस्य सौख्यं प्रबलेन्द्रियत्वं
नरस्य पुष्टिं विदधाति नूनम् ।

अर्थ-रांग (वंग)-हलका, सारक, रूखा, गरम तथा प्रमेह, कफ, कृमि, पाण्डु और श्वासरोगको दूर करेहै, नेत्रोंको हितकारी और किंचित् पित्तकारी है । जैसे सिंह हाथियोंके समूहोंका नाश करता है, उसीप्रकार वंग सर्वप्रकारके प्रमेहादिकोंका नाश करती है । देहको सुख देनेवाली, इन्द्रियोंको प्रबल करनेवाली और देहको पुष्टि करनेवाली है ।

अपिच ।

कासे श्वासे च मन्दाग्नौ पीनसे विषमज्वरे ।
प्रमेहे पाण्डुरोगे च मृतं वंगं प्रयोजयेत् ॥

अर्थ-खाँसी, श्वास, मन्दाग्नि, पीनस, विषमज्वर, प्रमेह और पाण्डुरोगमें वंग देनी हितकारी है ।

अशोधितवङ्गदोषः ।

वंगं विधत्ते खलु शुद्धिहीनं तथा ह्यपक्वं च किलासगुल्मौ ।
कुष्ठानि शूलं किल वातशोथं पाण्डुं प्रमेहं च भगंदरं च ॥
विषोपमं रक्तविकारवृन्दं क्षयं च कृच्छ्राणि कफं ज्वरं च।मेहाश्मरीविद्रधिक्षुख्यरोगान्नागोऽपि कुर्य्यात्कथितान्विकारान् ॥

अर्थ-अशोधित और अपक्व वंग-किलासकुष्ठ, गुल्म, कुष्ठ, शूल, वातव्याधि, सूजन, पाण्डु, प्रमेह, भगन्दर, रक्तविकार, क्षय, मूत्रकृच्छ्र,

कफ,ज्वर, मेह, पथरी और विद्रधि आदि, मुख्यरोगोंको उत्पन्न करे है तथा विषकी समान है । और अशोधित शीसाभी उपरोक्त रोगोंको उत्पन्न करता है ।

वंगस्य प्रकारभेदाः ।

क्षुरकं मिश्रकं चापि द्विविधं वंगमुच्यते ।
उत्तमं क्षुरकं तत्र मिश्रकं त्वहितं मतम् ॥

अर्थ-क्षुरक और मिश्रक इन भेदोंसे वंग दो प्रकार की है, तहां क्षुरक वंग अत्यन्त उत्तम और मिश्रक वंग अहितकारी है ।

धवलं मृदुलं स्निग्धं द्रुतद्रावं सगौरवम् ।
निःशब्दं खुरवंगं स्यात् मिश्रकं श्यामशुभ्रकम् ॥

अर्थ-जो श्वेत, नरम, चिकनी शीघ्र गलजाय, तोलमें भारी और अग्निमें डालनेसे शब्द न करे उसको खुरक कहते हैं और मिश्रक शुभ्र और श्याम मिलेहुये रंगकी होती है ।

श्रेष्ठवंगस्य लक्षणम् ।

श्वेतं मृदु लघु स्वच्छस्निग्धमुष्णसहं हिमम् ।
सूत्रपत्रकरं कान्तं त्रपुश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥

अर्थ-सफेद, नरम, तोलमें हलका, स्वच्छ, स्निग्ध, उष्णसह, शीतल, जिसके सूत और पत्तर होजाय और चमकदार, ऐसा, राँग उत्तम होताहै ।

विवरण । राँग अन्यद्वीपोंसे आताहै, बर्तनोंकी कलई और रंग प्रभृतिके काममें आताहै । तांबेके योगसे इसका काँसा बनताहै । राँगकी भस्मको वंग कहतेहैं ।

सीसकनामानि ।

सीसं सुवर्णकं चीनं पिष्टं सिन्दूरकारणम् ।

अर्थ-सीस, सुवर्णक, चीन, पिष्ट, सिन्दूरकारण (सीसक, सीसपत्रक, नाग, वप्र, योगेष्ट, गण्डूपद्भव, वर्द्ध, स्वर्णारि, यवनेष्ट, चीर, वध्र, पिच्चट, सुवर्णारि, त्रपु [:], वध्रक, महाबल, यामुनेष्टक, बहुमल, श्वेतरंजन, जड, भुजङ्गम, उरग, कुरंग, परिपिष्टक, मृदुकृष्णायस, पद्म, तारशुद्धिकर, शिरावृत्त, वयोरंग, चीनपिष्ट, चीनरंग, लेख्य, धातुमल, पार्वत) ।

सं०	नाग, सीसक ।	तै०	शीश, शिषमु ।
हिं०	सीसा ।	दा०	शिशू ।
बं०	सीसे, सीसा ।	इं०	लेड । Lead
म०	शिसें ।	ल०	प्लंबम् । Plumbum
गु०	शीशुं ।	फा०	सुर्ब ।
क०	सीसा ।	अ०	रुसासुल, अस्वद ।

सीसकगुणाः ।

सीसं रंगगुणं ज्ञेयं विशेषान्मेहनाशनम् । नागस्तु नागशततुल्यबलं ददाति व्याधिं विनाशयति जीवनमातनोति ॥ वह्निं प्रदीपयति कामबलं करोति मृत्युं च नाशयति संततसेवितोऽसौ ॥

अर्थ-शीशेमें राँगके तुल्य गुण हैं; विशेषकरके प्रमेहको दूर करेहै सीसा-सौ हाथियोंकी समान बलको देवेहै । व्याधिविनाशक, जीवनवर्द्धक, जठराग्निको दीपन करे, कामजनक, बलवर्द्धक और निरंतर सेवन करनेसे मृत्युकाभी नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

क्षयपवनविकारे गुल्मपाण्ड्वामयेषु भ्रमकृमिकफशूलं मेहकासामयेषु । ग्रहणिगुदगदे वै नष्टवह्नौ प्रशस्तः शुभविधिकृतनागः कामपुष्टिं ददाति ॥

अर्थ-सीसा-क्षयरोग,वातविकार, गुल्म, पाण्डुरोग,भ्रम, कृमि, कफ,शूल,प्रमेह,खाँसी,संग्रहणी और गुदाके रोगोंमें देना चाहिये ।

नागस्य प्रकारभेदाः ।

नागं तु द्विविधं प्रोक्तं कुमारं समलं तथा । कुमारं सर्वकार्य्येषु योजनीयं गुणाधिकम् ॥ द्रुतद्रावं महाभारं छेदे कृष्णं समुज्ज्वलम् । पूतिगंधं बहिः कृष्णं शुद्धसीसमतोऽन्यथा ॥

अर्थ-कुमार और समल इन भेदोंसे नाग दो प्रकारका है । तहां अधिक गुणवाला होनेके कारण कुमार जातिके सीसेको सर्व कार्य्योंमें प्रयोग करना चाहिये । जो अग्निमें डालनेसे शीघ्र गलजाय, तोलमें भारी हो, तोडनेमें काला और भीतर उज्ज्वल हो, जिसमें दुर्गंध आवे और बाहरसे काला हो ऐसा सीसा उत्तम होता है ।

अशोधितवंगनागदोषाः।

पाकेन हीनौ किल वंगनागौ कुष्ठानि गुल्मांश्च तथा विकारान्।
कण्डूप्रमेहानिलसादशोथभगन्दरादीन् कुरुतः प्रसक्तौ ॥

अर्थ-पाकहीन वंग और शीशेके खानेसे-कुष्ठ, गुल्म, कण्डू, प्रमेह, मंदाग्नि, सूझन और भगंदरादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

नागोत्पत्तिः ।

दृष्ट्वा भोगिसुतां रम्यां वासुकिस्तु मुमोच ह ।
वीर्य्यं जातस्ततो नागः सर्वरोगापहं नृणाम् ॥

अर्थ-भोगिसर्पकी सुंदर पुत्रीको देख वासुकी साँपने वीर्य्य छोडा, उस वीर्य्यसे मनुष्योंके सर्वरोग हरनेवाला सीसा उत्पन्न हुवा ।

जसदनामानि ।

जसदं वंगसदृशं रीतिहेतुश्च तन्मतम् ।

अर्थ-जसद, वंगसदृश, रीतिहेतु (श्वेतपटल, कंसास्थि)

संस्कृतभाषामें	जसद ।	तैलिंगीभाषामें	खर्पर ।
हिन्दीभाषामें	जस्त, जस्ता ।	इंग्रेजीभाषामें	झिंक् । Zinc
वंगभाषामें	दस्ता ।	लैटिन्भाषामें	झिंकं । Zincum
मराठीभाषामें	जस्त ।	फारसीभाषामें	रूएतुतिया ।
गुजरातीभाषामें	जसत ।	अरबीभाषामें	शबहा ।

जसदगुणाः ।

जसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् ।
चक्षुष्यं परमं मेहान् पाण्डुं श्वासं च नाशयेत् ॥

अर्थ-जस्त-कषेला, कडवा, शीतल, कफपित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा प्रमेह, पाण्डु और श्वासको दूर करे है ।

कान्तलोहनामानि ।

तीव्रं लोहमयस्कान्तं कृष्णायो लोहकान्तकम् ॥

अर्थ-तीव्र, लोह, अयस्कान्त, कृष्णायस, लोहकान्तक (कान्तलोह, तीक्ष्ण, शास्त्रालय, शस्त्र, शस्त्रक, शम्बक, पित्त, पित्तायस, आयस, शच, मुण्डज, निशित, खड्ग, अयः, कान्त, चित्रायस, और चालज)

कृष्णलोहनामानि ।

वर्त्तलौहं तीक्ष्णलौहं नीलिकापुटलोहकम् ।

अर्थ-वर्त्तलौह, तीक्ष्णलौह, नीलिका, पुटलोहक (रुक्मलोह, मृत्तकाल, कृष्णायस, मुण्डलौह, मुण्डायस, दृषत्सार, शिलात्मज, अश्मज, कृषिलोह और आर)

संस्कृतभाषामें	लोह ।
हिन्दीभाषामें	लोहा, इस्पात, फोलाद ।
वंगभाषामें	लौह, तिखा, इष्पात, काललोह ।
मराठीभाषामें	लोखंड, पोलाद, तिखें ।
गुजरातीभाषामें	लोढुं, मोलुं, गजवेल ।
कर्णाटकीभाषामें	अयस्कान्त, कब्बिण ।
तैलिङ्गीभाषामें	इनुमु ।
इंग्रेजीभाषामें	आयर्न । Iron स्टील Steel
लैटिन्भाषामें	फेर्रम । Ferrum
फारसीभाषामें	आहन्, फोलाद, संगेआहन ।
अरबीभाषामें	हदीद, हजरुल ।

कान्तलोहगुणाः ।

गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातं भगन्दरम् । कामलाशोथकुष्ठानि क्षयं कान्तमयो हरेत् ॥ प्लीहानमम्लपित्तं च यकृच्चापि शिरोरुजम् । सर्वान्रोगान्विजयते कान्तलौहं न संशयः ॥ बलं वीर्य्यं वपुःपुष्टिं कुरुतेऽग्निं विवर्द्धयेत् ।

अर्थ-कान्तलोह, गुल्म, उदर, अर्श, शूल, आम, आमवात, भगन्दर, कामला, शोष, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, अम्लपित्त, यकृत् और मस्तकादि अनेक रोगोंको दूर करै है, बलकारक, वीर्य्यजनक, शरीरको पुष्टि देनेवाला और अग्निवर्द्धक है ।

कान्तलोहस्य लक्षणम् ।

यत्पात्रे न प्रसरति जले तैलबिन्दुः प्रतप्ते हिंगुगध त्यजति च निजं तिक्ततां निम्बकल्कः ॥ तप्तं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमिं कृष्णांगः स्यात्सजलचणकः कान्तिलोहं तदुक्तम्॥

अर्थ-जिसके वर्त्तनद्वारा जलमें तेलकी बूंद डालनेसे नहीं फैले, जिसमें तपानेसे हींग अपनी गन्धको छोड देवे और नीमका कल्क रखनेसे मीठा होजाय तथा जिसमें दूध औटानेसे दूध शिखरके आकार ऊपरको खडा होजावे, परन्तु फैले नहीं और जिसमें जल-सहित चने भिगोनेसे काले हो जावें उसको कान्तलोह कहते हैं।

सर्वविधशुद्धलोहस्य गुणाः।

लोहं तिक्तं सरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु। रूक्षं वयस्यं चक्षुष्यं
लेखनं वातलं जयेत् ॥ कफं पित्तं गरं शूलं शोथार्शःप्लीह-
पाण्डुताः। मेदोमेहकृमीन् कुष्ठं तत्किट्टं तद्वदेव हि ॥

अर्थ-शुद्ध लोहा-कडवा, सारक, शीतल, मधुर, कषेला, भारी, रूखा, अवस्थास्थापक, नेत्रोंको हितकारी, बादी तथा कफ, पित्त, विष, शूल, सूजन, बवासीर, प्लीहा, पाण्डुरोग, मेद, प्रमेह, कृमि और कुष्ठका नाश करे है। लोहके समान लोहके कीटके गुण जानने।

अशोधितलोहस्य दोषाः।

क्लीबत्वकुष्ठामयमृत्युदं भवेद्धृद्रोगशूलौ कुरुतेऽश्मरीं च।
नानारुजां चापि तथा प्रकोपं करोति हृल्लासमशुद्धलोहम्।
जीवहारि मदकारि चायसं चेदशुद्धिमदसंस्कृतं ध्रुवम्।
पाटवं न तनुते शरीरके दारुणं हृदि रुजां च यच्छति ॥

अर्थ-शुद्धलोहा-नपुंसकता, कुष्ठ, मृत्यु, हृदयरोग, शूल, पथरी, नानाप्रकारके रोगोंका कोप और हृल्लासको करनेवाला है। प्राणनाशक, मदकारक, शरीरकी चातुर्यतानाशक और दारुण हृदयव्यथाको उत्पन्न करता है।

लोहस्य स्वाभाविकदोषाः।

गुरुता दृढता क्लेदो कफो देहस्य कारिता।
अश्मदोषः सुदुर्गन्धो दोषाः सप्तायसस्य तु ॥

अर्थ-गुरुता, दृढता, क्लेद, कफ, देहकारिता, पत्थरदोष और दुर्गंध यह सात दोष लोहमें स्वाभाविक रहते हैं।

मुण्डलोहगुणाः।

मुण्डं रूक्षोष्णतिक्तं च वातपित्तकफप्रणुत्।

तीक्ष्णं पाण्डुहरं तच्च शूलमेहनिवारणम् ॥

अर्थ-मुण्डलोह-रूखा, गरम, कडवा, त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, शूल और प्रमेहको हरनेवाला है।

लोहस्योत्पत्तिः।

पुरा लोमिनदैत्यानां निहतानां सुरैर्युधि।
उत्पन्नानि शरीरेभ्यो लोहानि विविधानि च ॥

अर्थ-पूर्वकालमें देवताओंके द्वारा युद्धमें विनाश किये हुए जो लोमिन दैत्य उनके शरीरसे अनेक प्रकारके लोहे उत्पन्न हुए, ऐसी लोहकी उत्पत्ति हुई है।

लोहसेविनः कार्य्याणि।

गुञ्जामेकां समारभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिकाः। तावल्लौहं समश्नीयाद्यथादोषबलं नरः ॥ कूष्माण्डं तिलतैलं च माषान्नं राजिकां तथा। मद्यमम्लरसं चैव वर्ज्जयेल्लौहसेवकः ॥

अर्थ-एकगुंजासे लेकर नवरत्तीतक लोहकी मात्रा है। लोहको सेवन करनेवाले मनुष्य-पेठा, तिलका तेल, उडद, राई, मदिरा और अम्ल रस खटाई आदि) वाले पदार्थोंको छोड देवे।

मण्डूरनामानि।

सिंहानं किट्टि मण्डूरं लौहकिट्टमयोर्मलम् ॥

अर्थ-सिंहान, किट्टि, मण्डूर, लोहकिट्ट, अयोमल (लोहासिंहानिका, लोहज, लोहपुरीष, लोहमल, सितवन, सिंहास, सितघाण, शूलघातन, लोहमल, किट्ट, लोहचूर्ण, कृष्णचूर्ण, लोष्ट और सिंहल)

मण्डूरलक्षणगुणाः।

ध्मातस्य लोहस्य मलं मण्डूरमिति चोच्यते।
यल्लोहं यद्गुणं प्रोक्तं तत्किट्टमपि तद्गुणम् ॥

अर्थ-दग्धलोहेके मलकोही मण्डूर कहते हैं। जिस २ लोहेके जैसे २ गुण हैं, वैसे २ ही उसकी कीटके जानने।

सर्वविधा मण्डूरप्रकारभेदाः।

शतोर्द्ध्वमुत्तमं किट्टं मध्यं चाशीतिवार्षिकम्।
अधमं षष्टिवर्षीयं ततो हीनं विषोपमम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-१०० सौवर्षसे अधिक कालका मण्डूर सर्वोत्कृष्ट है, ८० अस्सी वर्षका मण्डूर मध्यम है, ६० साठ वर्षका मण्डूर अधम और इससे अल्पकालका मण्डूर विषके समान है ।

विवरण । लोहेकी अनेक जातिहैं,उन सबको यहां ग्रन्थ बढनेके भयसे नहीं लिखा । लोहेके अलग २ भेद और गुणदोष विशेष देखनेकी इच्छा होय तो "रसराजशंकर" ग्रंथमें देखो ।

कांस्यनामानि ।

कांस्यं विद्युत्प्रियं कंसं ताम्रार्धं वंगशुल्वजम् ॥

अर्थ-कांस्य-विद्युत्प्रिय,कंस,ताम्रार्द्ध,वंगशुल्वज,(कंसास्थि,प्रकाश, घण्टाशब्द,असुराह्वय,सौराष्ट्रक,घोष,कांसीय, घोरपुष्प, वह्निलोहक, दीप्तिलोहक,घोषपुष्प, दीप्तलोह, कांसक, कांस,ताम्रत्रपुज, दीप्ति)

संस्कृतभाषामें	कांस्य ।
हिन्दीभाषामें	काँसा काँसी ।
वंगभाषामें	कांसा ।
मराठीभाषामें	कांसे ।
गुजरातीभाषामें	कांसु ।
कर्णाटकीभाषामें	कंचु ।
तैलिंगीभाषामें	कंचु ।
इंग्रेजीभाषामें	बेलमेटल । Bell Metal ब्रोंझ Bronze
फारसीभाषामें	रोईन ।
अरबीभाषामें	तालिकून:।

कांस्यकगुणाः ।

कांस्यस्य तु गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसदृशा जनैः ।
सयोगजप्रभावेण तस्यान्येऽपि गुणाः स्मृताः ॥
कांस्यं कषायं तिक्तोष्णं लेखनं विशदं सरम् ।
गुरु नेत्रहितं रूक्षं कफपित्तहरं परम् ॥ (भा॰ प्र.)

अर्थ-कांसेके गुण तांबे और रांगके समान जानने । संयोगके कारण इसके अलगभी और गुण कहते हैं। कांसा-कषेला, कडवा, गरम, लेखन, विशद, कुछेक दस्तावर, भारी, नेत्रोंको हितकारी, रूखा और कफपित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कांस्यं तु तिक्तमुष्णं चक्षुष्यं वातकफविकारघ्नम् ।
रूक्षं कषायं रुच्यं लघु दीपनपाचनं पथ्यम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ–शुद्ध काँसा–कडवा, गरम, नेत्रोंको हितकारी, वातकफदोषनाशक, रूखा, कषेला, रुचिकारक, दीपन और पाचक है ।

घृतमेकं विना चान्यत्सर्वं कांस्यगतं नृणाम् ।
भुक्तमारोग्यसुखदं हितं सात्म्यकरं तथा ॥

अर्थ–एक केवल घृतको छोडकर शेष सर्व प्रकारके पदार्थ कांसेके पात्रमें रक्खे हुए–आरोग्यता और सुखको देनेवाले तथा सात्म्य होजाते हैं ।

विवरण । कांसा–आठभाग तांबा और दोभाग रांगके योगसे बनाया जाता है । कांसेके पात्र आदि अनेक सामान बनते हैं । कांसा उपधातु है ।

पित्तलनामानि ।

पित्तलं चाथारकूटः कपिलोहं सुवर्णकम् ॥
रिरीरीरी च रीतिश्च पीतलोहं सुलोहकम् ॥
ब्राह्मी तु राज्ञी कपिला ब्रह्मरीतिर्महेश्वरी ।

अर्थ–पित्तल, आरकूट, कपिलोह, सुवर्णक, रिरी, रीरी, रीति, पीतलोह, सुलोहक, ब्राह्मी, राज्ञी, कपिला, ब्रह्मरीति, महेश्वरी, (पतिकावेर, द्रव्यदारु, रीती, मिश्र, आर, राजरीति, क्षुद्रसुवर्ण, सिंहल, पिंगल, पीतनक, लोहितक, पिंगललोह, पीतक, पाकतुण्डी, राजपुत्री, ब्रह्माणी, हरिलोह, पिंग)

सं० भा० पित्तल ।
हिं० भा० पीतल, कांची पीतल ।
बं० भा० पित्तल, काँचा पितल ।
म० भा० पितळ, सोनापितळ ।
गु० भा० पीतल ।
क० भा० पित्तालेयरडु ।
तै० भा० इत्तडी ।
इं० भा० ब्रास । Brase
फा० भा० बिरंज ।

पित्तलगुणाः ।

पित्तलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसदृशा जनैः । संयोगजप्रभा-

वेण तस्यान्येपि गुणाः स्मृता ॥ रीतिका युगलं रूक्षं तिक्तं च लवणं रसे। शोधनं पाण्डुरोगघ्नं कृमिघ्नं नातिलेखनम् ॥

अर्थ-पीतलके गुण तांबे और जस्तकी समान हैं, संयोगजनक-प्रभावसे औरभी गुण कहतेहैं। दोनों प्रकारके पीतल-रूखे, कडवे, लवणरसान्वित, शोधक, पाण्डुरोगनाशक, कृमिनाशक और अतिलेखन नहीं हैं।

अन्यच्च।

सकलमेहमरुद्गुदजां रुजं ग्रहणिकाकफपाण्डुभवं रुजम्।
श्वसनकामलशूलभवं रुजं हरति भस्म तदारकसम्भवम् ॥

अर्थ-पीतल-सर्वप्रकारके प्रमेह, वात, गुदजरोग, संग्रहणी, कफ, पांडु, श्वास, कामला और शूलका नाश करे हैं।

अपिच।

रीतेर्द्वयं पांडुसमीरनाशनं रूक्षं सरं कृमिहरं लवणं विषघ्नम्। वृष्यं वलीपलितनाशनमुग्रमायुर्वृद्धिं करोति सहसा च रसायनं च।

अर्थ-दोनोंप्रकारके पीतल-पाण्डुरोगनाशक, वातविनाशक, रूखे, सारक, कृमिहारक, लवणरसान्वित, विषनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, वलीपलितनाशक और आयुवर्द्धक हैं।

विवरण। पीतल-उपधातु है यह ताँबे और जस्तके योगसे बनाया जाता है। इसमें तांबा १ भाग और जस्त ३ भाग डालकर बनाया जाता है। यह दोप्रकारका होताहै।

पारदनामानि।

पारदो रसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारसः।
चपलः शिववीर्य्यं च रसः सूतः शिवाह्वयः।

अर्थ-पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, चपल, शिववीर्य्य, रस, सूत, शिवाह्वय (रसराज, रसनाथ, महातेज, रसलेह, रसोत्तम, सूतराट्, जैत्र, शिवबीज, शिव, अमृत, लोकेश, दुर्द्धर, प्रभु, रुद्रज, हरतेज, अचिन्तज, अवित्तज, खेचर, अमर, देहद, मृत्युनाशक, स्कन्द, स्कन्दांशक, देव, दिव्यरस, रसायनश्रेष्ठ, यशोद, सूतक, सिद्धधातु, पारद, हरबीज, रजस्वल, मूर्ति, पार, लोहेश, दुर्धर, मृत्युनाशन, हेमानिधि, त्रिनेत्र, रोपण, स्वामी)

संस्कृतभाषामें पारद।
हिन्दीभाषामें पारा।
वंगभाषामें पारा।
मराठीभाषामें पारा।
गुजरातीभाषामें पारो।
कर्णाटकीभाषामें पारदरस।
तैलिङ्गीभाषामें पारदरसम्।
इंग्रेजीभाषामें मर्क्युरी Mercury
लैटिन्भाषामें हैड्रार्जिरं। Aydrargyrum
फारसीभाषामें सिमाब।
अरबीभाषामें जीवक।

पारदगुणाः

पारदः षड्रसः स्निग्धस्त्रिदोषघ्नो रसायनः। योगवाही महावृष्यः सदादृष्टिबलप्रदः॥ सर्वामयहरः प्रोक्तो विशेषात्सर्वकुष्ठनुत्।असाध्यो यो भवेद्रोगो यस्यनास्ति चिकित्सितम्॥रसेन्द्रो हन्ति तद्रोगं नरकुञ्जरवाजिनाम्।(भा० प्र०)

अर्थ-पारा-मधुर, अम्ल, कटु, तिक्त, कषाय और लवणरसान्वित, स्निग्ध,त्रिदोषनाशक, रसायन, योगवाही, महावृष्य, सदैव दृष्टि और बलको बढाता है।सर्वरोगनाशक और।विषेष करके कुष्ठनाशक है। जो रोग असाध्य है और जिनकी चिकित्सा नहीं है उन मनुष्य,हाथी और घोडेके रोगोंको पारा अवश्य हरता है।

अन्यच्च।

देहस्य शुद्धिं कुरुते च पारदो नानागदानां हरणे समर्थः।
करोति पुष्टिं हरते च मृत्युं कल्पायुषं चैव करोति नूनम्॥
पारदः सकलरोगपारदो राजयक्ष्मसरभेकवारिदः।
सर्वरोगमपहंति तत्क्षणान्नागवल्लिरसराजभक्षणात्॥

अर्थ-पारा-देहशुद्धकारक, नानाप्रकारके रोगविनाशक,पुष्टिकारक और मृत्युहारक है,तथा चिरंजीव करनेवाला है।पारा, सर्वरोगोंको दूर करनेवाला, राजयक्ष्मारोगको हरनेवाला और पानके रसके साथ भक्षण करनेसे सर्वप्रकारके रोगोंको तत्काल दूर करनेवाला है।

अपिच।

मूर्च्छार्तो गदहृत्तथैव खगतिं धत्ते विबद्धोर्थदः स्याद्रसमामयवार्धकादिहरणं दृक्पुष्टिकांतिप्रदम्।वृष्यं मृत्युविनाशनं

बलकरं कांताजनानंदनं शार्दूलातुलसत्त्वकृच्च भुविजात्रोगानुसारी स्फुटम् ॥ मूर्च्छितो हरते भुजबंधनं भूयोपि मुक्तिदो भवति । अमरीकरोति मृतः कोऽन्यः करुणाकरोऽस्ति सुतात् ॥

अर्थ-मूर्च्छितपारा-रोगनाशक और आकाशमार्गमें गमन करनेकी शक्ति देनेवाला है। बद्धपारा अर्थदायक है। और पारेकी भस्म तरुणता, हृष्टि, पुष्टि तथा कान्तिजनक है। वीर्य्यवर्द्धक, मृत्युनाशक, स्त्रियोंको आनन्दजनक और योगवाही है। मूर्च्छित पारा-अंगग्रहनाशक और मुक्तिदायक है। और मराहुआ पारा अमरपदको देवेहै। फिर इससे अधिक और कौन दूसरा कृपा करनेवाला है।

पारदे पथ्यानि ।

हितं मुद्गान्नदुग्धाजशाल्यन्नानि सदा ततः। शाके पुनर्नवा देवि मेघनादं सवास्तुकम्॥ सैंधवं नागरं मुस्ता मूलकानि च भक्षयेत्। आत्मज्ञानं कथा पूजा शिवस्य च विशेषतः। एतांस्तु समयान्भद्रे न लंघेद्रसभक्षकः ॥ (नि०

अर्थ-पारेको भक्षण करनेवाले मनुष्योंको मूँग, दूध, शालिधानके चावल, बकरीका दूध, पुनर्नवेका शाक, चौलाईका शाक, बथुयेका शाक, सैंधानोंन, नागरमोथा और मूली भक्षण करनी चाहिये। तथा आत्मज्ञान, कथा, पूजा और विशेष करके शिवकी भक्ति करनी चाहिये और कदापि लंघन नहीं करे।

पारददोषाः ।

मल विषं वह्निगिरित्वचापलं नैसर्गिकं दोषमुशन्ति पारदे। उपाधिजौ द्वौत्रपुनागयोगजौ दोषौ रसेन्द्रे कथितौ मुनीश्वरैः॥ मलेन मूर्च्छा मरणं विषेण दाहोऽग्निना कष्टतरः शरीरे। देहस्य जाड्यं गिरिणा सदा स्याच्चांचल्यतावीर्य्यहृतिश्च पुंसाम् ॥ वंगेन कुष्ठं भुजगेन षंढो भवेत्ततोसौ परिशोधनीयः। वह्निर्विषं मलं चेति मुख्या दोषास्त्रयो रसे॥ एते कुर्वन्ति सन्तापं मृतिं

मूर्च्छां नृणां क्रमात्।अन्येऽपि कथिता दोषा भिषग्भिः पारदे यदि॥तथाप्येते त्रयो दोषा हरणीया विशेषतः ।

अर्थ-मल,विष, अग्नि, गिरिदोष, चपलता यह पांच दोष पारेमें स्वभावसेही हैं और रांग तथा शीशेके दो दोष इसमें उपाधिज हैं, ऐसे सात दोष मुनीश्वरोंने कहे हैं। मलके दोषसे मूर्च्छा, विषके दोषसे मृत्यु, अग्निदोषसे दाह और अत्यन्त शरीरमें पीडा,पर्वतके दोषसे देहमें जडता और चंचलताके दोषसे वीर्य्यको हरेहै । वंगदोषसे कुष्ठ और शीशेके दोषसे नपुंसकताको करता है। इसकारण इसको विधिपूर्वक शोधना चाहिये । अग्नि,विष और मल यह तीन दोष पारेमें मुख्य हैं। सो संताप, मृत्यु और मूर्च्छा इनको क्रमसे करते हैं यद्यपि औरभी पारेमें वैद्योंने अनेक दोष कहे हैं; किन्तु मुख्य यह तीनही दोष हैं, इससे इनको विशेषकरके हरना चाहिय ।

अशोधितपारददोषाः।

संस्कारहीनं खलु सूतराजं यः सेवते तस्य करोति बाधाम् ।
देहस्य नाशं विदधाति नूनं कष्टांश्च रोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य अशोधितपारेका सेवन करता है उसको यह बाधा करताहै । निश्चय देहका नाश करनेवाला कष्ट और अनक प्रकारके रोगोंको उत्पन्न करे है ।

पारदस्योत्पत्तिजातिलक्षणानि।

रसायनादिभिर्लोकैःपारदो रस्यते यतः। ततो रस इति प्रोक्तः स च धातुरपि स्मृतः॥शिवाङ्गात्प्रच्युतं रेतः पतितं धरणीतले। तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्च तत् ॥ क्षेत्रभेदेन विज्ञेयं शिववीर्य्यं चतुर्विधम्।श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तु भवेत्क्रमात् ॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च खलु जातितः । श्वेतं शस्तं रुजां नाशे रक्तं कीलं रसायनम् ॥ धातुवादे तु तत्पीतं खे गतौ कृष्णमेव च ।

अर्थ-रसायनकी इच्छावाले प्राणी इसकी कांक्षा करते हैं । इसकारण इसका नाम रसहै और इसको धातुभी कहते हैं । पृथ्वीमें महादेवका वीर्य्य पतित होनेपर पारेकी उत्पत्ति हुई इस कारण

यह देहका सारभाग, शुक्र उत्पन्न होनेके हेतु शुक्लवर्ण और स्वच्छ हुवा। यह क्षेत्रभेदसे श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण चार प्रकारका है। तहाँ सफेद रंगके पारेको ब्राह्मण कहते हैं, यह रोगनाश करनेमें उत्तम है। और लाल रंगके पारेको क्षत्रिय कहते हैं, यह रसायनकार्य्यमें उत्तम है। पीलेरंगके पारेको वैश्य कहते हैं, यह धातुवादमें श्रेष्ठ है। और काले रंगके पारेको शूद्र कहते हैं यह आकाशमार्गमें चलनेको सहायक है।

पारदप्रशंसा।

मृदः कोटिगुणं स्वर्णं स्वर्णात् कोटिगुणं मणिः।
मणेः कोटिगुणं बाणो बाणात्कोटिगुणं रसः॥
रसात्परतरं लिंगं न भूतं न भविष्यति। (नि० र०)

अर्थ-मट्टीके गुणोंसे अधिक करोड गुण सुवर्णके दर्शन करनेमें हैं। सुवर्णके गुणोंसे अधिक करोडगुण मणिके दर्शन करनेमें हैं। मणिके गुणोंसे अधिक करोडगुण बाणके दर्शन करनेमें हैं और बाणके गुणोंसे करोड गुण अधिक पारेके दर्शन करनेमें हैं, पारेसे अधिक गुणवाला पदार्थ न हुवा और न होगा। पारेका विशेषवर्णन हमारे बनाये "रसराजशंकर" ग्रंथमें देखो।

हिंगुलनामानि।

हंसपादं रसस्थानं हिंगुलं रक्तपारदम्॥

अर्थ-हंसपाद, रसस्थान, हिंगुल, रक्तपारद, (हिंगुल, हिंगुलि, हिंगुलु, रक्त, मर्कटशीर्ष, दरद, रस, दरु, उन्द, कपिशीर्षक, बर्बर, सुरंग, सुनर, रंजन, म्लेच्छ, चित्राङ्ग, चर्म्मारक, रसोद्भव, रंजक रसगर्भ, चूर्णपारद, मनोहर, चर्म्मार, नानाशृंगारवर्द्धन)

संस्कृतभाषामें	हिंगुल।
हिन्दीभाषामें	हिंगुलू, सिंगरफ, इंगुर, हींगलू।
वंगभाषामें	हिंगुल।
मराठीभाषामें	हिंगूळ।
गुजरातीभाषामें	हिंगलो।
कर्णाटकीभाषामें	इंगुलियक।
तैलिङ्गभाषामें	हिंगिलाकामु।

इंग्रेजीभाषामें सल्फेट ऑफ् मर्क्युरि । Sulphate of Mercury
सिनेबारानेटिव । cinnabar Native
लैटिन् भाषामें सल्फुएटं हैड्रार्जिरं । Sulphuatum Hydrargyrium
फारसीभाषामें सिंग्रफ् ।
अरबीभाषामें जंजफर ।

हिंगुलगुणाः ।

तिक्तः कषायः कटु हिंगुलुः स्यान्नेत्रामयघ्नःकफपित्तहारी ।
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्च प्लीहामवातौ च गरं निहन्ति ॥

अर्थ–हिंगुल (सिंगरफ)–कडवा, कषेला, चरपरा तथा नेत्ररोग, कफ,पित्त, हल्लास,कुष्ठ,ज्वर,कामला, प्लीहा, आमवात और विषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

हिंगुलं मधुरं तिक्तमुष्णं वातकफापहम् ॥
त्रिदोषद्वंद्वदोषोत्थं ज्वरं हरति सेवनात् ॥

अर्थ–हिंगुल(सिंगरफ)–मधुर, कडवा, गरम, वातकफ, त्रिदोष, द्वन्द्वजदोष और ज्वरका नाश करेहै ।

अपिच ।

हिंगुलः सर्वदोषघ्नो दीपनोऽतिरसायनः ।
सर्वरोगहरो वृष्यो जारणे लोहमारणे ॥

अर्थ–हिंगुल (सिंगरफ)–सर्वदोषनाशक,दीपन,अतिरसायन,सर्वरोगनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, जरण और लोहेके मारनेमें उत्तम है ।

हिंगुलभेदकलक्षणम् ।

हिंगुलःस्त्रिविधः प्रोक्तश्चर्म्मारः शुकतुण्डकः । हंसपादस्तृतीयः स्याच्चर्म्मारः शुभ्रवर्णकः ॥ शुकतुण्डकहिंगुलः पीतवर्णो भवेत्स हि । जपाकुसुमसङ्काशो हंसपादो महोत्तमः ॥(भा.प्र.)

अर्थ–सिंगरफ–चर्म्मार,शुकतुण्डक:और हंसपाद इनभेदोंसे तीन प्रकारका है । तहां चर्म्मारहिंगुल सफेद रंगका, शुकतुण्डकहिंगुल पीले रंगका और हंसपादहिंगुल जपाके फूलोंकी समान लाल रंगका अत्यन्त उत्तम होता है ।

हिंगुलोत्पत्तिः ।

अशुद्धपारदं भागं चतुर्भागं तु गन्धकम् । उभौ क्षिप्त्वा लोहपात्रे क्षणं मृद्वग्निना पचेत् ॥ कृत्वाऽथ खंडशस्तत्र काचकुप्यां निरुध्य च । वस्त्रमृत्तिकया सम्यक्काचकूपिं प्रलेपयेत् । सर्वतोंगुलमानेन च्छायाशुष्कं तु कारयेत् । वालुकायंत्रगर्भे तु दिनं मृद्वग्निना पचेत् ॥ क्रमवृद्ध्याऽग्निना पश्चात्पचेद्दिवसपंचकम् । सप्ताहं तु समुद्धृत्य हिंगुलः स्यान्मनोहरः ॥

अर्थ-अशुद्धपारा-एकभाग,गन्धक चारभाग इन दोनोंको लोहेके पात्रमें डालकर, एक क्षण मंदाग्निसे पकावे,फिर टुकडे करके कांचकी शीशीमें रख उस शीशीपै कपडा और मिट्टी लपेटे, चारोंओर एक अंगुल ऊँचा लेप करे;छायामें सुखावे फिर वालुकायंत्रमें रखकर एक दिन मृदु अग्निसे पकावे क्रमसे फिर पांचदिन पर्यंत वृद्धिकरता हुवा अग्नि लगावे सातवें दिन निकालले, अच्छा सिंग्रफ बनजायगा ।

स्रोतोंजननामानि ।

स्रोतोऽञ्जनं नदीजं च वाल्मीकं च जयामलम् ॥

अर्थ-स्रोतोंजन,नदीज,वाल्मीक,जयामल,(स्रोतज,स्रोतोनदीभव, स्रोतोभव,सौवीर,सौवीरसार, कपोताञ्जन, यामुन,पीतसारी, वारिभव, कपोतसार, कापोतसार, और वाल्मीकशीर्ष)

सौवीराञ्जननामानि ।

सौवीरकं पार्वतेयं मेचकं नीलमंजनम् ।

अर्थ-सौवीरक,पार्वतेय,मेचक,नील,अंजन,(यामुन,कृष्ण,नादेव, स्रोतोज,दृष्प्रद,सुवीरज,नीलांजन,चक्षुष्य,वारिसम्भव और कपोतक)

संस्कृतभाषामें	स्रोतोंजन, सौवीराञ्जन ।
हिन्दीभाषामें	सुरमा,अंजन, श्वेतशुर्म्मा, कालाशुर्म्मा ।
वंगभाषामें	श्वेतशुर्म्मा,नीलशुर्म्मा,नीलाञ्जन,कालशुर्म्मा ।
मराठीभाषामें	काळासुरमा, लालसुरमा, पांढरासुरमा ।
गुजरातीभाषामें	सुरमो, कालोसुरमो, लालसुरमो ।
कर्णाटकीभाषामें	स्रोतोंजन ।
तैलिङ्गीभाषामें	सौवीराञ्जन ।

इंग्रेजीभाषामें सल्फुरेट ऑफ आंटीमनी। Sulphuret of antimony
लैटिन्भाषामें आंटिमोनाई सलफ्फुरेटम्। Antimonai Sulphuretum
फारसीभाषामें सूर्मअरुफहानि ।
अरबीभाषामें कुहल इसमुद ।

स्रोतोञ्जनगुणाः ।

स्रोतोऽञ्जनं स्मृतं स्वादु चक्षुष्यं कफपित्तनुत् ।
कषायं लेखनं स्निग्धं ग्राहि च्छर्दिविषापहम् ॥
हिक्काक्षयास्रजिच्छीतं सेवनीयं सदा बुधैः। (भा० प्र०)

अर्थ-स्रोतोञ्जन (कालासुर्म्मा)-स्वादिष्ठ, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्तनाशक, कषेला, लेखन, स्निग्ध, मलरोधक, वमननिवारक, विषनाशक, हिचकीको दूर करनेवाला, क्षयरोगको हरनेवाला है, रक्तदोषनिवारक और शीतल है ।

श्रेष्ठस्रोतोऽञ्जनस्य लक्षणम् ।

वल्मीकशिखराकारं भिन्नं नीलाञ्जनप्रभम् ।
घृष्टे च गैरिकावर्णं श्रेष्ठं स्रोतोऽजनं च तत् ॥

अर्थ-बाँबीकी शिखरके आकार भिन्न नील अंजनकी समान प्रभायुक्त और जो घिसनेमें गेरूकी रंगकाहो वह उत्तम स्रोतोऽञ्जनहै

सौवीराञ्जनगुणाः ।

सौवीरं मधुरं शीतं कषायं स्निग्धलेखनम् ॥
रक्तपित्तविषच्छर्दिहिक्काघ्नं दृक्प्रसादनम् ॥

अर्थ-सौवीराञ्जन-मधुर, शीतल, कषेला, स्निग्ध, लेखन, तथा रक्तपित्त, विष, वमन और हुचकीको दूर करेहै तथा नेत्रप्रसादक है ।

पुष्पाञ्जननामानि ।

पुष्पाञ्जनं तु कौसुम्भं रीतिकं कुसुमाञ्जनम् ॥

अर्थ-पुष्पाञ्जन, कौसुम्भ, रीतिक, कुसुमाञ्जन (रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पौष्पक, सदञ्जन, रीतिकुसुम, मार्क्षिक, चाक्षुष्य, कृमिरसाञ्जन, और धातुमाक्षिक)

सं० पुष्पाञ्जन ।
हिं० पुष्पांजन ।
बं० पुष्पाञ्जन ।
म० पितळेचें कीट,पुष्पाञ्जन।
गु० कसांजण ।

क० पुष्पांजन ।
तै० पुष्पांजनमु । [Oxide
इं० झिंक ओक्सैड । Zinc
लै० झिनसाई ओक्सैडं ।
Zinci Oxidum

पुष्पाञ्जन गुणाः ।

पुष्पाञ्जनं हिमं प्रोक्तं पित्तहिक्काप्रदाहनुत् ।
नाशयेद्विषकासार्तिसर्वनेत्रामयापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पुष्पांजन-शीतल, पित्तनिवारक, हिक्कानाशक, दाहकारक, विषविनाशक, खाँसीकी पीडाको हरनेवाला और सर्व प्रकारके नेत्ररोगोंको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

रीतिपुष्पं च चक्षुष्यं शीतपित्तकफापहम् ॥
हिक्कादाहं विषं कासं नेत्ररोगं च नाशयेत् ॥(नि०र०)

अर्थ-पुष्पांजन-नेत्रोंको हितकारी तथा शीतपित्त, कफ, हिचकी, दाह, विष, खाँसी और नेत्ररोगनाशक है ।

अपिच ।

पुष्पाञ्जन हिमं स्निग्धं शीतं सर्वाक्षिरोगहृत् ।
अतिदुर्धरहिक्काघ्नं विषज्वरगदापहम् ॥

अर्थ-पुष्पांजन-हिम, स्निग्ध, शीतल, सर्वप्रकारके नेत्ररोगहारक, अत्यंतदुर्धर, हिचकीको दूर करनेवाला तथा विष और ज्वरनाशकहै ।

तुत्थकनामानि ।

मूषातुत्थं कांस्यनीलं तुत्थकं शिखिकण्ठकम् ॥

अर्थ-मूषातुत्थ, कांस्यनील, तुत्थक, शिखिकण्ठक (तुत्थ, हरिताश्म, नीलांगज, मयूरग्रीवक, ताम्रगर्भ, अमृतोद्भव, मयूरतुत्थ, भूतक, शिखिकण्ठ, नील, तुत्थांजन, शिखिग्रीव, वितुन्नक, मयूरक, हेमसार, मृतामिद और ताम्रोपधातु)

संस्कृतभाषामें	तुत्थ मयूरतुत्थ ।
हिन्दीभाषामें	(तूतिया) नीलाथोथा, नीलातूतिया ।
वंगलाभाषामें	तुँतिया ।

मराठीभाषामें	मोरचूत (द)।
गुजरातीभाषामें	मोरथुथु।
कर्णाटकीभाषामें	मयूरतुत्थ।
तैलिङ्गीभाषामें	मेलतुतु।
इंग्रेजभाषामें	सल्फेट ऑफ कॉपर। Sulphate ot Copper
लैटिन्भाषामें	क्युप्रिआसल्फस Cuprea Sulphas
फारसीभाषामें	दूदिया।
अरबीभाषामें	तुतिया अकजर।

तुत्थगुणाः।

तुत्थकं कटुकं क्षारं कषायं वामकं लघु।
लेखनं भेदनं शीतं चक्षुष्यं कफपित्तहृत्॥
विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नं खर्परं चापि तद्गुणम्।

अर्थ-नीलाथोथा-चरपरा,नमकीन, कषेला, वमनकारक,हलका, लेखन, भेदक, शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, पित्त, विष, पथरी, और कण्डूनाशक है। खपरियाके भी इसीकी समान गुण जानने।

अन्यच्च।

तुत्थं कटु कषायोष्णं श्वित्रनेत्रामयापहम्।
विषदोषेषु सर्वेषु प्रशस्तं वान्तिकारकम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलाथोथा-चरपरा,कषेला, गरम,श्वित्रकुष्ठनाशक,नेत्ररोगनाशक,सर्वप्रकारके विषके विकारोंमें प्रशस्त और वमनकारक है।

अपिच।

तुत्थकं नेत्ररोगघ्नं शीतं चित्रविनाशनम्।
कृमिघ्नं लेखनं भेदि कण्डूक्लेदविषापहम्॥

अर्थ-नीलाथोथा-नेत्ररोगनाशक, शीतल,चित्रकुष्ठनाशक,कृमिनाशक, लेखन, भेदक तथा कण्डू, क्लेद और विषके विकारोंको हरनेवाला है।

अपिच।

निःशेषदोषविषहृद्गदशूलमूलं कुष्ठाम्लपित्तकविबंधहरं परं च।
रसायनं वमनरेचकरंगदघ्नं चित्रापहं गदितमत्र मयूरतुत्थम्॥

अर्थ- नीलाथोथा-सर्वदोष, विष, हृद्यरोग, शूल, कुष्ठ, अम्लपित्त और विबन्धको दूर करनेवाला है, रसायन, वमनकारक, दस्तलानेवाला और चित्रकोढको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

वमने मंडले दद्रौ विषे चैव प्रशस्यते॥

अर्थ-नीलाथोथा-वमन, मंडलकुष्ठ दाद और विषके विकारोंमें हितकारी ह।

खर्परनामानि।

चक्षुष्यममृतोत्पन्नं खर्परीदार्विका तथा॥

अर्थ-चक्षुष्य, अमृतोत्पन्न, खर्परी, दार्विका (खर्पर, रसक, खर्परिका, तुत्थ, खर्परीतुत्थ, खर्परीतुत्थक, यशदोपधातु)

संस्कृतभाषामें	खर्पर।
हिन्दीभाषामें	खपरिया, खापरिया।
वंगभाषामें	खापर।
मराठीभाषामें	कलखापरी।
गुजरातीभाषामें	खापरियुंकालु।
कर्णाटकीभाषामें	खर्परी।
तैलिङ्गीभाषामें	खर्परं।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाक् जाक्। Black jack
लैटिन्भाषामें	झिंकिसलफाईडं। Zinci Sulhdidum
फारसीभाषामें	सङ्गवसरी।
अरबीभाषामें	तुतिया, किरमानी, मकसुल।

खर्परगुणाः।

रसकः सर्वमेहघ्नः कफपित्तविनाशनः।
नेत्ररोगक्षयघ्नश्च ज्वरकुष्ठविषापहः॥ (वै० वि० नि०)

अर्थ-खपरिया-सर्व प्रकारके प्रमेह, कफ, पित्त, नेत्ररोग, क्षय, ज्वर, कुष्ठ और विषके विकारोंको दूर करेहै।

अन्यच्च।

जायते शोभनं भस्म सर्वव्याधिहरं परम्।
नेत्ररोगहरं क्लेदिक्षयहा खर्परो गुरुः॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ-खपरिया-सर्वप्रकारकी व्याधिविनाशक, नेत्ररोगनिवारक क्लेदकारक, क्षयरोगको हरनेवाली और भारी है ।

अशोधितखर्परदोषाः ।

अशुद्धः खर्परः कुर्य्याद्वान्ति भ्रान्ति विशेषतः ।
तस्माच्छोध्यः प्रयत्नेन यावद्वांतिविवर्जितः ॥

अर्थ-अशोधित खपरिया-वान्ति और भ्रान्तिको करती है इस कारण जबतक वान्ति करके रहित न हो तबतक प्रयत्नसे शोधे।

स्वर्णमाक्षिकनामानि ।

माक्षिकं धातुमाक्षिकं ताप्यं स्वर्णाह्वयं मतम् ।

अर्थ-माक्षिक, धातुमाक्षिक, ताप्य, स्वर्णाह्वय (सुवर्णमाक्षिक, स्वर्णमाक्षिक, तापिच्छ, आपीत, ताप्यक, पीतमाक्षिक, आवर्त्त, क्षौद्रधातु, माक्षिकधातु, कदम्ब, चक्रनामा, तापिञ्ज, स्वर्णवर्ण, हेमद्युति, मधुधातु, अजनामक)

तारमाक्षिकनामानि ।

विमलं माक्षिकश्रेष्ठं श्वेताक्षं तारमाक्षिकम् ।

अर्थ-विमल, माक्षिकश्रेष्ठ, श्वेताक्ष, तारमाक्षिक (रूप्यमाक्षिक रौप्यमाक्षिक)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक ।
हिन्दीभाषामें	सोनामाखी, रूपामाखी, तारामुखी ।
वंगभाषामें	स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक ।
मराठीभाषामें	दगडीसोनामुखी, रौप्यमाक्षी ।
गुजरातीभाषामें	सोनामाखी, रूपामाखी ।
कर्णाटकीभाषामें	धातुमाक्षिक, यरडुमाक्षिक ।
तैलिङ्गीभाषामें	स्वर्णमाखी, रूपामाखी ।
इंग्रेजीभाषामें	आयर्नपाईराईटीस् । Iron Pyrites
लैटिन्भाषामें	फेरीसल्फ्फुरेटम् । FeeriSulphuretum
अरबीभाषामें	मुर्कशीशाजहबी, मुर्कशीशाफिद्दा ।

स्वर्णमाक्षिकगुणाः ।

सुवर्णमाक्षिकं स्वादु तिक्तं वृष्यं रसायनम् ।

चक्षुष्यं वस्तिहृत्कण्ठपाण्डुमेहविषोदरम् ॥
अर्शःशोफविषं कण्डुत्रिदोषानपि नाशयेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सोनामाखी-स्वादु, कडवी, वृष्य, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, वस्तिरोगनाशक तथा कण्ठरोग, पाण्डुरोग, प्रमेह, विष, उदररोग, बवासीर, सूजन, विष, कण्डू और त्रिदोषका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

माक्षिकं मधुरं तिक्तमम्लं कटु कफापहम् ।
भ्रमहृल्लासमूर्च्छार्त्तिश्वासकासविषापहम् ॥

अर्थ-माक्षिकधातु-मधुर, कडवी, अम्ल, चरपरी, कफनाशक तथा भ्रम, हल्लास, मूर्च्छा, श्वास, खांसी और विषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

माक्षिकं तुवरं वृष्यं स्वर्यं लघु रसायनम् ।
चक्षुष्यं कुष्ठशोफार्शोमेहवस्त्यर्तिपाण्डुताः ।
व्यवायि कटुकं हन्ति कुष्ठोदरविषक्षयान् ॥ (म०नि०)

अर्थ-माक्षिकधातु-कषेली, वीर्य्यवर्द्धक, स्वरको स्वच्छ करनेवाली, हलकी, रसायन, नेत्रोंको हितकारी तथा कुष्ठ, सूजन बवासीर, प्रमेह, वस्तीकी पीडा, पाण्डुरोग, कुष्ठ, उदररोग, विष और क्षयरोगका नाश करे है । व्यवायी और चरपरी है ।

अशुद्धमाक्षिकदोषाः ।

मन्दानलत्वं बलहानिमुग्रां विष्टम्भितां नेत्रगदान्सकुष्ठान् ।
मालां तथैव व्रणपूर्विकां च कुर्य्यादशुद्धं खलु माक्षिकञ्च (भा.प्र.)

अर्थ-अशुद्ध माक्षिकधातु-मन्दाग्नि, बलहानि, विष्टम्भता, नेत्ररोग, कुष्ठ, गण्डमाला और व्रणको उत्पन्न करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अशुद्धं माक्षिकं कुर्यादांध्यं कुष्ठं क्षयं कृमीन् ।
शोधनीयं प्रयत्नेन तस्मात्कनकमाक्षिकम् ॥ (नि०र०)

अर्थ- अशुद्ध सोनामुखी-आंध्य, कुष्ठ, क्षय और कृमिको उत्पन्न करे है । इसकारण प्रयत्न करके शोधनी चाहिये ।

अपिच ।

किञ्चित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम् ।
उपधातुः सुवर्णस्य किञ्चित्स्वर्णगुणान्वितम् ॥

अर्थ-किंचित् सुवर्णमिश्रित होनेसे यह स्वर्णमाक्षिक कहीजाती है, सुवर्णकी उपधातु है और किञ्चित् सुवर्णके गुणयुक्त है ।

तारमाक्षिकगुणाः ।

माक्षिको रजतहाटकप्रभः शोधितोऽतिगुणदः सुसेवितः ।
मेहकुष्ठकृमिशोफपाण्डुतापस्मृतिं हरति सोश्मरीं जयेत् ॥
स्वर्णमाक्षिकवद्दोषा विज्ञेयास्तारमाक्षिके ।

अर्थ-रूपामाखी चांदीकी और सोनेकी समान प्रभायुक्त होती है, यह भलेप्रकारसे शोधी हुई अनेक गुणदायक है तथा प्रमेह, कोढ, कृमि, सूजन, पाण्डुरोग, अपस्मार और पथरीको हरनेवाली है । अशोधित रूपामाखीके दोष स्वर्णमाखीकी समान जानने ।

तारमाक्षिकमन्यत्तु तद्भवेद्रजतोपमम् ।
किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥

अर्थ-जो माखी रूपेकी समान श्वेतवर्ण तथा किंचित् रौप्यमिश्रित हो वह रूपामाखी कही जाती है ।

वोदारनामानि ।

वोदारो नागसत्वश्च व्रणघ्नः स्वर्णवर्णकः ।

संस्कृतभाषामें	वोदार, नागसत्व, व्रणघ्न, स्वर्णवर्णक ।
हिन्दीभाषामें	मुरदाशिंग ।
मराठीभाषामें	मुरदाडशिंग ।
गुजरातीभाषामें	वोदारकांकरो ।
इंग्रेजीभाषामें	लिथार्ज । Litharge
लैटिन्भाषामें	प्लंबी आक्सैड । Llumbi
फारसीभाषामें	मुरदासिंग ।
अरबीभाषामें	मुर्दासिंज ।

वोदारगुणाः ।

वोदारःसारको भेदी व्रणरोपणकारकः । वान्तिकृन्मूत्रकृच्छ्रा-

णां प्रमेहस्य च कारकः॥ कफं वातं व्रणं शूलमुदरं कृमिशोथकम्॥ आध्मानं वातगुल्मञ्च आनाहं शोफजज्वरम् ॥ उदावर्त्तं नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-मुरदासिंग-सारक, भेदक, व्रणरोपक, वमनकारक, मूत्रकृच्छ्रकारक, प्रमेहकारक तथा कफ, वात, व्रण, शूल, उदररोग, कृमि, सूजन, आध्मान, वात, गुल्म, आनाह, शोफज्वर और उदावर्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सीससत्त्वं मरुष्छ्लेमशमनं कायदाहकम् ।
केश्यं पुंसांगरोगघ्नं रंजनं रसबंधनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मुरदासिंग-वात, कफ, गरमीके रोग और शरीरकी दाहको दूर करे है, केशोंको हितकारी, पुरुषोंके अंगरोगोंको दूर करनेवाला और पारेको बांधनेवाला है ।

वोदारोत्पत्तिलक्षणम् ।

अर्बुदस्य गिरेः पार्श्वे जातं वेंदारशृंगकम् ।
सदलं पीतवर्णं च भवेद्गुर्जरमंडले ॥

अर्थ-अर्बुदपर्वतके निकट पार्श्वभागमें बेंदार नामवाला शृंग है उस शृंगपै मुरदासिंग उत्पन्न होता है यह सदल और पीले रंगका तथा गुर्जरदेशमें होता है ।

अभ्रकनामानि ।

अभ्रकं गिरजाबीजं निर्मलं गिरिजामलम् ।
अब्दं व्योमघनं शुभ्रं बहुपत्रं घनाह्वकम् ॥

अर्थ-अभ्रक, गिरिजाबीज, निर्मल, गिरिजामल, अब्द, व्योम, घन, शुभ्र, बहुपत्र, घनाह्वक, (गिरिज, अमल, गौर्य्यामल, गरजध्वज, अभ्र, भृङ्ग, अम्बर, अन्तरिक्ष, आकाश, ख, अनन्त, गौरीज, गौरीजेय, गगन)

संस्कृतभाषामें	अभ्रक ।
हिन्दीभाषामें	अभ्रक, अबरख, आभ ।
वंगभाषामें	अभ्र ।
मराठीभाषामें	अभ्रक ।
गुजरातीभाषामें	अभरख ।

कर्णाटकीभाषामें	अभ्रक ।
तैलङ्गीभाषामें	अभ्रक ।
इंग्रेजीभाषामें	टाल्क, ग्लिमर । TalC Glimmer
लैटिन्भाषामें	माईका । Mica
फारसीभाषामें	सिताराजमीन ।
अरबीभाषामें	तलुक्क ।

मारिताभ्रकगुणाः ।

अभ्रं कषायं मधुरं सुशीतमायुष्करं धातुविवर्द्धनञ्च। हन्यात्रिदोषं व्रणमेहकुष्ठ प्लीहोदरग्रन्थिविषकृमींश्च ॥ रोगान्हन्ति द्रढयति वपुर्वीर्य्यवृद्धिं विधत्ते तारुण्याढ्यं रमयति शतं योषितां नित्यमेव । दीर्घायुष्काञ्जनयति सुतान्विक्रमैः सिंहतुल्यान्मृत्योर्भीतिं हरति सततं सेव्यमानं मृताभ्रम् ।

अर्थ-अभ्रक-कषेला, मधुर, शीतल,आयुकर, धातुवर्द्धक,त्रिदोषनाशक तथा व्रण, प्रमेह, कोढ, प्लीहा, उदररोग,ग्रन्थि, विष और कृमिका नाश करेहै । रोगनाशक,देहको दृढकरनेवाला,वीर्य्यवर्द्धक, तरुणअवस्थायुक्त सौ स्त्रियोंसे नित्यप्रति रमनेका सामर्थ्य करानेवाला, दीर्घ आयुवाले और सिंहकी समान पराक्रमी ऐसे पुत्रोंको उत्पन्न करानेवाला और मृत्युके भयकोभी हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

मृताभ्रकं कामबलप्रदं च विषं मरुच्छ्वासभगन्दरांध्यम्।
मेह भ्रमं पित्तकफं च कासं क्षयं निहन्त्येव यथानुपानात्॥

अर्थ-अभ्रकको यथानुपानक साथ सेवन करनेसे कामप्रद, बलकारक तथा विष, वात, श्वास, भगन्दर, आंध्य, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, खाँसी और क्षयरोगको हरनेवाला है ।

अभ्रस्य जातिवर्णभेदाः ।

विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्स्यात्तच्चतुर्विधम् ।
क्रमेण च सितं रक्तं पीतं कृष्णञ्च वर्णतः॥

अर्थ-अभ्रक-जातिके भेदस चार प्रकारकाहै,जैसे ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, तहां ब्राह्मणअभ्रक-श्वेतरंगका,क्षत्रिय अभ्रक-लाल-

रंगका, वैश्यअभ्रक-पीले रंगका और शूद्रअभ्रक काले रंगका होता है।

प्रशस्यते सितं तारे रक्तं तत्तु रसायने
पीतं हेमनि कृष्णं तु गदेषु भूतयेऽपिच ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-चांदीके बनानेमें सफेद अभ्रक, रसायन कर्म्ममें लाल, सुवर्णके बनानेमें पीला और रागोमें तथा ऐश्वर्यके लिये कृष्ण अभ्रक लेना चाहिये।

चतुर्विधाभ्रस्य नामलक्षणगुणाः।

पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रञ्चेति चतुर्विधम् ।पिनाकं वर्ज्जयेद्धीमान्दर्दुरञ्च विशेषतः। तृतीयं नागसंज्ञञ्च दूरतः परिवर्ज्जयेत्। मुञ्चत्यग्नौ विनिःक्षिप्तं पिनाकं दलसञ्चयम्॥ अज्ञानाद्भक्षणात्तस्य महाकुष्ठप्रदायकम्। दर्दुरं त्वग्निनिःक्षिप्तं कुरुते दर्दुरध्वनिम् ॥ गोलकान्बहुशः कृत्वा तत्स्यान्मृत्युप्रदायकम् । नागन्तु नागवद्वह्नौ फूत्कारं परिमुञ्चति ॥ तद्भक्षितमवश्यन्तु विदधाति भगन्दरम् ॥ वज्रन्तु वज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौ विकृतिं व्रजेत्॥वज्रसंज्ञं हितं योग्यमभ्रं सर्वत्र नेतरत् । सर्वाभ्रेषु वरं वज्रं व्याधिवार्द्धक्यमृत्युहृत् ॥ अभ्रमुत्तरशैलोत्थं बहुसत्त्वं गुणाधिकम् । दक्षिणाद्रिभवं चाभ्रं स्वल्पसत्त्वगुणप्रदम् ॥

अर्थ-पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र इन भेदोंसे अभ्रक चार प्रकारका है। इनमें पिनाक, दर्दुर और नागनामवाला अभ्रक त्यागने योग्य है। पिनाकअभ्रक अग्निमें डालनेसे परत २ होजाताहै। यदि इसको कोई अज्ञानक वशसे खा ले तो उसके महाकुष्ठरोग उत्पन्न होताहै। दर्दुर नामवाला अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेडककी समान शब्द करता है। तथा गोलाकर होजाताहै। इसको भक्षण करनेसे मृत्यु होतीहै। नागनामवाला अभ्रक अग्निमें डालनेसे फुंकार करता है, इसको भक्षण करनेसे अवश्य भगन्दररोग उत्पन्न होताहै। और वज्रसंज्ञक अभ्रक अग्निमें गेरनेसे वज्रके समान जैसेका तैसा बना रहता है और विकारको प्राप्त नहीं होताहै यह वज्राभ्रक सर्व प्रकारके अभ्रकोंमें उत्तम होनेके कारण सब प्रकारके रोग,

वृद्धावस्था और मृत्युको हरनेवाला है। उत्तरके पर्वतोंमें होनेवाला अभ्रक बहुत सत्त्वसम्पन्न और अधिक गुणवाला है तथा दक्षिणके पर्वतोंमें उत्पन्न होनेवाला अभ्रक अल्पसत्त्व और अल्पगुणवाला है।

अशोधिताभ्रदोषाः ।

पीडां विधत्ते विविधां नराणां कुष्ठं क्षयं पाण्डुगदं च शोथम् ।
हृत्पार्श्वपीडाञ्च करोत्यशुद्धमभ्रं ह्यसिद्धं गुरुतापदं स्यात् ॥

अर्थ-अशुद्ध अभ्रक-अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, सूजन, हृदयकी पीडा, पसवाडेकी पीडा, भारीपन और तापको उत्पन्न करे है।

अभ्रकोत्पत्तिः ।

पुरा वधाय वृत्रस्य वज्रिणा वज्रमुद्धृतम् ॥ विस्फुलिङ्गास्ततस्तस्य गगने परिसर्पिताः ॥ ते निपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषु महीभृताम् । तेभ्य एव समुत्पन्नं तत्तद्गिरिषु चाभ्रकम् ॥ तद्वज्रंवज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् । गगनाद्गलितं यस्माद्गगनञ्च ततो मतम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पूर्वकालमें इन्द्रदेवने वृत्रासुरके मारनेको वज्र उठाया उस समय उस वज्रमेंसे चिनगारियें निकलकर आकाशमंडलमें फैलगई, फिर वेही चिनगारियें गर्जते बादलोंसे निकलकर जिन २ पर्वतोंके शृंगोंमें गिरीं उन्हीं २ पर्वतोंमें अभ्रक उत्पन्न हुआ। यह वज्रसे जो उत्पन्न हुआ इसीसे इसको वज्र कहते हैं, बादलोंके शब्दसे जो प्रगट हुआ इसीसे इसको अभ्रक कहते हैं, और आकाशसे जो गिरा इसी कारण इसको गगन कहते हैं।

अभ्रेपथ्यम् ।

क्षाराम्लं द्विदलं चैव कर्कटी कारवेल्लकम् ।
वृन्ताकं च करीरं च तैलं चाभ्रे विवर्ज्जयेत् ॥

अर्थ-अभ्रकको सेवन करनेवाले मनुष्य क्षार, अम्ल, द्विदल (उडद मूँगादि) ककडी, करेला, बैंगन, करील और तेलको छोडदेवे।

गन्धकनामानि ।

गौरीबीजं बलिर्गन्धपाषाणो गन्धकः स्मृतः ।

अर्थ-गौरीबीज, बलि, गन्धपाषाण, गन्धक, (गन्धिक, गन्धाश्म, पामाघ्न, सौगन्धिक, सुगन्धिक, पामारि, शुल्वारि, गन्धी, गन्धमोदन,

वर, पूतिगन्ध, गन्ध, दिव्यगन्ध, सगन्ध,रसगन्धक,कुष्ठारि, कीटघ्न, क्रूरगन्ध, शरभूमिज, बलरस)

संस्कृतभाषामें	गन्धक।	तैलिङ्गीभाषामें	गंधकमु।
हिन्दीभाषामें	गन्धक।	अं०	सलफर ब्रिस्टोन।
वंगभाषामें	गन्धक।	फारसीभाषामें	गोगिर्द।
मराठीभाषामें	गन्धक।	लैटिन्भाषामें	सक्कर।
गुजरातीभाषामें	गन्धक।	अरबीभाषामें	किब्रित।

गन्धकगुणाः।

गन्धकः कटुकस्तिक्तो वीर्य्योष्णस्तुवरः सरः।
पित्तलः कटुकः पाके कण्डूवीसर्पजन्तुजित्।
हन्ति कुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ गन्धक-चरपरा,कडवा,उष्णवीर्य्य,कषेला,सारक,पित्तजनक, पचनेमें कटु, रसायन तथा कण्डू, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, कफ और वातको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

शोधितो यस्तु गन्धः स्याज्जरामृत्युरुजापहः।
अग्निसंदीपनः श्रेष्ठो वीर्य्यवृद्धिकरोऽस्थिकृत्॥(प्र०भू०)

अपिच।

अर्थ-शोधितगंधक-जरा और मृत्युनाशक है तथा सर्वरोगनिवारक है,अग्निप्रदीपक,श्रेष्ठ,अत्यन्तवीर्य्यवर्द्धक और अस्थिजनक है।

पवनपित्तकफान्विषकामलान् सकलकुष्ठगदाञ्छुचिगन्धकः। हरति निष्कमितः पयसान्वितो मदनवृद्धिकरो नयनार्त्तिहृत्॥ (नि० र०)

अर्थ-शोधितगंधक-चार मासे दूधके साथ सेवनकरनेसे वातविकार, पित्तविकार, कफविकार, विष,कामला, सर्व प्रकारके कुष्ठ और नेत्ररोगोंको दूर करेहै तथा कामदेवको बढावेहै।

अशुद्ध गन्धकदोषाः।

अशोधितो गन्धक एष कुष्ठं करोति तापं विषमं शरीरे।
सौख्यञ्च रूपञ्च बलं तथौजः शुक्रं निहन्त्येव करोति चास्रम्॥

अर्थ–अशुद्धगन्धक–कोढ और विषमताप देहमें उत्पन्न करता है तथा सुख, रूप, बल, ओज और शुक्रका नाश करता है और रुधिरको दूषित करे है।

अन्यच्च।

अशुद्धं कुरुते कुष्ठं पित्तं दाहं भ्रमं रुजम्।
हन्ति वीर्य्य बलं रूपं गन्धकं शोधयेत्ततः॥

अर्थ–अशुद्धगन्धक–कुष्ठ, पित्त, दाह, भ्रम और पीडाको उत्पन्न करे है। वीर्य्य, बल और रूपका नाश करे है इस कारण प्रथम शोधकर काम लेवे।

गन्धकस्य प्रकारभेदाः।

श्वेतो रक्तश्च पीतश्च नीलश्चेति चतुर्विधः। गंधको वर्णतो ज्ञेयो भिन्नभिन्नगुणाश्रयः। श्वेतः कुष्ठापहारी स्याद्रक्तो लोहप्रयोगकृत्। पीतो रसे प्रयोगार्हो नीलो वर्णान्तरोचितः॥

अर्थ–गन्धक–सफेद, लाल, पीला और नीला इन भेदोंसे चार प्रकारका है, तहां सफेद गन्धक–कुष्ठनाशक है। लाल गन्धक लोहके मारनेमें लेना। पीला गन्धक–पारेके विषयमें उत्तम है और नीला गन्धक वर्णान्तर तथा रसायन कर्म्ममें श्रेष्ठ है।

अन्यच्च।

रक्तो हेमक्रियासूक्तः पीतश्चैव रसायने।
व्रणविलेपने श्वेतः कृष्णः श्रेष्ठः सुदुर्लभः॥

अर्थ–लाल गंधक सुवर्णके बनानेमें लेना, पीलागन्धक रसायन कर्म्ममें लेना, व्रणके लेपादिकमें सफेद गन्धक लेना और कृष्णगन्धक श्रेष्ठ और दुर्लभ है।

श्वेतगन्धकलक्षणम्।

शुक्लपद्मसमच्छायो नवनीतसमप्रभः।
मसृणः कठिनः स्निग्धः श्रेष्ठगन्धक उच्यते॥

अर्थ–जो सफेद कमलकी समान वर्णवाला, नवनीतकी समान प्रभायुक्त हो, मसृण, कठिन और स्निग्ध ऐसा गंधक उत्तम कहा जाता है।

गंधकस्य उत्पत्तिः।

श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडन्त्या रजसाप्लुतम्।
दूकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ॥
प्रसृतं तद्रजस्तस्माद्गन्धकः समजायत।

अर्थ-पूर्वकालमें श्वेतद्वीपमेंक्रीडा करती हुईभगवती देवी रजस्वला हुई तब उस रजके सने हुए कपडेसे भगवती देवी क्षीरसमुद्रमें न्हाई वह रज क्षीर समुद्रमें गिरा उससे गन्धककी उत्पत्ति हुई।

सिन्दूरनामानि।

सिन्दूरं नागजं वीरं रक्तं सन्ध्यारुणं शिवम्॥

अर्थ-सिन्दूर, नागज, वीर, रक्त, सन्ध्यारुण, शिव (रक्तवालुका रंगंज, वंगज, शृङ्गारभूषण, नागरक्त, नागसम्भव, रक्तचूर्ण, रक्तवालुक, रक्तशासन, भालदर्शन, नागरेणु, सीमन्तक, नागगर्भ, शोण, वीररज, गणेशभूषण, सन्ध्याराग, शृङ्गारक, सौभाग्य, अरुण, मङ्गल्य, सीसज, सीसोपधातु)

सं॰	सिन्दूर।	लै॰	प्लवं ओक्सैडम्।
हिं॰	सिन्दूर।	ता॰	चेन्दूरम्।
वं॰	सिन्दुर।	इं॰	मिनियम् रेडलेड।
म॰	शेंदुर।	फा॰	सिरिनज।
तै॰	चेन्दुरमु।	अ॰	उसरंज।

सिन्दूरगुणाः।

सिन्दूरमुष्णं वीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम्।
भग्नसन्धानजननं व्रणशोधनरोपणम्॥

अर्थ-सिन्दूर-गरम, विसर्पनाशक, कुष्ठविनाशक, कण्डूनिवारक, विषहारक, भग्नसन्धानकारक, व्रणको शोधनेवाला और भरनेवाला है।

सिन्दूरस्य स्वरूपम्।

सीसोपधातुः सिन्दूरं गुणैस्तत्सीसवन्मतम्।
संयोगजप्रभावेण तस्याप्यन्ये गुणाः स्मृताः॥ (भा. प्र.)

अर्थ-सिन्दूर सीसेसे बनाया जाता है इस कारण सिन्दूरको सीसेकी उपधातु कहते हैं, सिन्दूरके गुण सीसेकी समान हैं परन्तु संयोगज प्रभावसे और २ भी गुण कहे हैं।

मनःशिलानामानि।

मनःशिला च गोला च मनोज्ञा नागजिह्विका।
मनोगुप्ता रोगशिला नैपाली कुनटी शिला॥

अर्थ- मनःशिला, गोला, मनोज्ञा, नागजिह्विका, मनोगुप्ता, रोगशिला, नैपाली, कुनटी, शिला, (मनःसिल, कुलटी, मनोह्वा, नेपालिका, कल्याणिका, नागमाता, रसनेत्रिका, दिव्यौषधि)

सं० मनःशिला।
हिं० मनशिल, मैनशिल।
बं० मनछाल।
म० मनशील।
गु० मणशल।

त० मानुशिला।
फा० जरनिख,अहेमर।
इं० रीलेगार।
लै० आर्सैनिक,सल्फैडम्।

मनःशिलागुणाः।

मनःशिला गुरुर्बल्या सरोष्णा लेखनी कटुः।
तिक्ता स्निग्धा विषश्वासकासभूतकफास्रनुत॥

अर्थ-मनशिल-भारी, बलकारी, सारक, गरम, लेखन, चरपरी, कडवी, स्निग्ध तथा विष, श्वास, खांसी, भूत, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करे है।

अशोधितमनःशिलादोषाः।

मनःशिला मन्दबलं करोति जन्तून्ध्रुवं शोधनमन्तरेण।
मलानुबन्धं किल मूत्ररोधमशर्करं कृच्छ्रगदं च कुर्य्यात॥

अर्थ-अशुद्धमनाशिल-बलको कम करनेवाली, मलरोधक, मूत्ररोधक, शर्करारोगजनक और मूत्रकृच्छ्र रोगको करे है।

हरितालमनःशिलयोर्भेदः।

तालकस्यैव भेदोऽस्ति मनागेव तदन्तरम्।
तालकमतिपीतं स्याद्भवेद्रक्ता मनःशिला॥

अर्थ-हरिताल और मनशिल इन दोनोंमें केवल इतनाही अंतर है कि, हरिताल अत्यन्त पीली और मनशिल लाल होती है।

हरितालनामानि।

पिञ्जरं पित्तलं तालं मनोज्ञं हरितालकम्।

छत्रांगं काञ्चनरसं गोदन्तं नटमण्डनम् ॥

अर्थ-पिञ्जर, पित्तल, ताल, मनोज्ञ, हरितालक, छत्राङ्ग, काञ्चनरस, गोदन्त, नटमंडन (विस्रगान्धि, पीतक, हरिताल, कर्बूर, पीतन, हरिबीज, सिद्धधातु, पिञ्जल, लोमहृत, वंशपत्रक, वर्णक, अल, पीत, गोरोच, चित्राङ्ग, पिञ्जरक, वैदल, तालक, कनकरस, काञ्चनक, बिडालक, चित्रगन्ध, पिङ्ग, पिङ्गसार, गौरीललित)

सं॰	हरिताल।	क॰	हरिदाल।
हिं॰	हरिताल।	इं॰	ओर्पिंमेंट।
बं॰	हरिताल, हत्तेल।	लैं॰	यलोआर्सै निकंसलफाईडम्
म॰	हरताळ।	अ॰	जरनिख अस्फर।

हरितालगुणाः।

हरितालं कटु स्निग्धं कषायोष्णं हरेद्विषम्।
कण्डूकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् ॥

अर्थ-हरिताल-चरपरी, स्निग्ध, कषेली, गरम, विषनाशक तथा कण्डू, कुष्ठ, मुखरोग, रुधिरविकार, कफ, पित्त, बाल और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

शोधितं हरितालन्तु कान्तिवीर्य्यविवर्द्धनम्।
कुष्ठादिकफरोगघ्नं जरामृत्युहरं परम् ॥

अर्थ-शोधित हरिताल-कान्तिजनक, वीर्य्यवर्द्धक, कुष्ठादिरोगहारक, कफरोगनिवारक, जरा और मृत्युको नाश करनेवाली है।

अपिच।

अशीतिवातान्कफपित्तरोगान्कुष्ठानि मेहांश्च गुदामयांश्च।
निहन्ति गुञ्जार्धमितं तु तालं षड्वल्लखंडेन समं च युक्तम् ॥

अर्थ-आधी चोटलीभर हरितालकी भस्म और छः भाग चीनी मिलाकर खानेसे अस्सी प्रकारके वात, कफ, पित्त कुष्ठ प्रमेह और बवासीर दूर होतीहै।

अशुद्धहरितालदोषाः।

अशुद्धं तालमायुर्हृत्कफमारुतमेहकृत्।
तापस्फोटादिसंकोचान्कुरुते तेन शोधयेत् ॥

अर्थ-अशोधित हरिताल-आयुनाशक, कफकारक, वातवर्द्धक, प्रमेहजनक, तापजनक, विस्फोटकारक और अंगसंकोचक है ।

अपिच ।

अशुद्धतालं खलु पीतवर्णं सधूमकं वातचयं च पित्तम् ।
पंगुत्वकुष्ठे तनुते च तेन देहस्य नाशं च करोति सद्यः ॥

अशुद्धहरताल-पीली और अग्निमें डालनेसे धुआं देने लगतीहै ऐसी हरिताल-वातपित्तको बढानेवाली है, देहमें पंगुता और कुष्ठको उत्पन्न करनेवाली है और तत्काल देहनाशक है ।

अन्यच्च ।

हरति च हरितालं चारुतां देहजातां सृजति च बहुतापमंगसङ्कोचपीडाम् ॥ वितरति कफवातौ कुष्ठरोगं विदध्यादिदमशितमशुद्धं मारितं चाप्यसम्यक् ॥

अर्थ-अशुद्ध और कुविधिसे मारी हुई हरिताल-देहकी सुंदरताको हरनेवाली घोर ताप तथा अंगोंका संकोच और पीडाको करनेवाली, कफवातको बढानेवाली और कोढको करनेवाली है ।

हरितालस्य प्रकारभेदाः ।

हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राख्यं पिण्डसंज्ञकम् ।तयोराद्यं गुणैः श्रेष्ठं ततो हीनगुणं परम्॥स्वर्णवर्णं गुरु स्निग्धं सपत्रं चाभ्रपत्रवत् । पत्राख्यं तालकं विद्याद्गुणाढ्यं तद्रसायनम् ॥ निष्पत्रं पिण्डसदृशं स्वल्पसत्त्वं तथा गुरु । स्त्रीपुष्पहारकं स्वल्पगुणं तत्पिण्डतालकम् ॥

अर्थ-पत्रहरिताल और पिंडहरिताल इन भेदोंसे हरिताल दो प्रकारकी है तहां पत्रहरिताल (तबकिया) गुणोंमें श्रेष्ठ और पिण्डहरिताल हीनगुणवाली है ।जो हरिताल स्वर्णके समान वर्णवाली हो, भारी हो, स्निग्ध हो और अभ्रककी समान पत्रयुक्त हो वह पत्रहरिताल जाननी यह हरिताल अधिक गुणवाली और रसायन है और जो पत्ररहित हो, पिण्डकी समान गोल हो वह अल्पसत्वयुक्त, हलकी, स्त्रीके पुष्पका नाश करनेवाली और अल्पगुणवाली ऐसी पिंडहरिताल जाननी ।

अन्यच्च ।

हरितालोऽष्टधा प्रोक्तो गोदन्तः सर्वतोऽधिकः ।
तदभावे तु पत्राख्यो वयसः स्थापनः परः ॥

अर्थ-हरिताल आठ प्रकारकी कही है, उन सर्वमें गोदन्तहरिताल उत्तम है, गोदन्त हरितालके अभावमें पत्राख्य हरिताल लेनी यह अवस्थास्थापक है ।

हरितालभस्मानुपानम् ।

सर्वरक्तविकारेषु देयमाम्रहरिद्रया । सुहालाहलजीराभ्यामपस्मारहरं परम् ॥ समुद्रफलयोगेन जलोदरविनाशनम् । देवदालिरसैर्युक्तं भगन्दरहरं परम्। फिरंगदोषजं रोगं जातं हन्ति सुदुस्तरम् ॥ विसर्पमण्डलं कण्डूपामाविस्फोटकं तथा । वातरक्तकृतान्रोगानन्यानपि विनाशयेत् ॥

अर्थ-हरितालकी भस्म सर्वप्रकारके रक्तविकारोंमें आम्बियाहलदीके साथ देनी चाहिये, बच्छनाग विष और जीरेकेसाथ अपस्माररोगमें देनी चाहिये, समुद्रफलके साथ जलोदररोगमें देनी चाहिये और देवदालीके रसके साथ भगन्दर, फिरंगोपदंश, विसर्प, मंडल, कण्डू, पामा, विस्फोट और वातरक्तजनित रोग तथा अन्यान्य रोगोंकोभी दूर करेहै ।

हरितालभक्षणप्रमाणम् ।

भक्षयेद्रत्तिमात्रं हि यथायोगेन तालकम् ।
क्षाराम्लौ च कटु त्यक्त्वा मिष्टभोजनमाचरेत् ॥

अर्थ-हरिताल प्रथम एक गुंजा प्रमाण भक्षण करनी चाहिये तथा क्षार, अम्ल और कटुपदार्थ नहीं खावे और मिष्ट भोजन करे ।

हरितालप्रयोज्यम् ।

श्वासे कासे क्षये दुष्टे पित्ते वै वातशोणिते ।
दद्रुपामाव्रणे कुष्टे तालकं च प्रदापयेत् ॥

अर्थ-हरिताल-श्वास, खांसी, क्षय, पित्त, वातरक्त, दद्रु, पामा, व्रण और कुष्ठरोगमें देनी चाहिये।

हरितालादीनामुत्पत्तिः ।

हरितालं हरेर्वीर्य्यं लक्ष्मीवीर्य्यं मनःशिला ।
पारदं शिववीर्य्यं स्याद्गन्धकं पार्वतीरजः ॥

अर्थ-विष्णुके वीर्यसे हरिताल,लक्ष्मीके वीर्य्यसे मनाशिल,शिवके वीर्य्यसे पारा और पार्वतीके रजसे गन्धककी उत्पत्ति है ।

विवरण। हरिताल-वंशपत्री, स्तबक (तबकिया)और पिण्डाख्य (गुबरिया)इन भेदोंसे कई प्रकारकी है दूसरी एक गोदन्ती हरिताल होतीहै ।

काशीसनामानि ।

कासीसं धातुकासीसं खाचरं धातुशेखरम् ।
शोधनं पांशुकासीसं केसरं हंसलोमशम् ॥

अर्थ-कासीस, धातुकासीस, खाचर, धातुशेखर, शोधन, पांशुकासीस, केशर, हंसलोमश (शुभ्र, कासीस, नेत्रौषध)

पुष्पकासीसनामानि ।

द्वितीयं पुष्पकासीसं वत्सकं च मलीमसम् ।
ह्रस्वं नेत्रौषधं योज्यं विशदं नीलमृत्तिका ॥

अर्थ-पुष्पकासीस, वत्सक, मलीमस,ह्रस्व,नेत्रौषध,विशद, नीलमृत्तिका ।

संस्कृतभाषामें	कासीस, पुष्पकासीस ।
हिन्दीभाषामें	कसीस, पुष्पकसीस ।
वंगभाषामें	धातुकासीस, पुष्पकासीस ।
मराठीभाषामें	हिराकस, श्वेतनीळी ।
गुजरातीभाषामें	हीराकशी बे जातनी छे नीली तथा धोळी।
कर्णाटकीभाषामें	कासीस ।
इंग्रेजीभाषामें	सल्फेट ऑफ् आयर्न । Sulphateof inoP विटिअलग्रीन् Vitriolgreen
लै०	फेरिसलफास Ferry Sulphas
फारसीभाषामें	जाकेसब्ज ।
अरबीभाषामें	जाजेअखदर, जाजेअस्फर ।

कासीसगुणाः ।

कासीसं तु कषायं स्याच्छिशिरं विषकुष्ठजित् । खर्ज्जूकृमिहरं चैव चक्षुष्यं कान्तिवर्द्धनम् ॥ पुष्पकासीसकं तिक्तं शीतं नेत्रामयापहम् । लेपेन पामाकुष्ठादिनानात्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-कसीस-कषेला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कान्तिवर्द्धक तथा विष, कुष्ठ, खर्ज्जू और कृमिका नाश करे है। पुष्पकासीस-कडवा, शीतल, नेत्ररोगनाशक, इसका लेप करनेसे पामा, कुष्ठादि और अनेक प्रकारके त्वचाके विकार दूर होते हैं।

अन्यच्च ।

कासीसं तुवरं शीतं चक्षुष्यं कान्तिवर्द्धनम् । अम्लमुष्णञ्च तिक्तञ्च केश्यं क्षारविषप्रणुत्॥वृष्यं च चित्रकुष्ठघ्नं मूत्रकृच्छ्राश्मरीहरम्। कफं वातं व्रणं कुष्ठं क्षयं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-कासीस-कषेला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी,कान्तिवर्द्धक, अम्ल, उष्ण, कडवा, केशोंको हितकारी, क्षार, विषनाशक, वृष्य, चित्रकुष्ठनाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, कफ, वात, व्रण, कुष्ठ और क्षयरोगका नाश करे है।

अपिच ।

पुष्पादिकासीसमपि प्रशस्तं सोष्णं कषायाम्लमतीव नेत्र्यम्।
विषानिलश्लेष्ममतिव्रणघ्नं श्वित्रक्षयघ्नं कचरंजनं च ॥
वातश्लेष्महरं केशनेत्रकण्डूविषप्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनं परिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पुष्पकासीस-अत्यन्त प्रशस्त,गरम, कषेला, खट्टा,अतिशय नेत्रोंको हितकारी तथा विष, वात, कफ, व्रण, श्वेतकुष्ठ और क्षयरोगका नाश करे है, केशरंजक, वात, कफ, नेत्र और केशोंकी खुजली विष, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूर करे है।

कासीसलक्षणम् ।

भस्मवन्मृत्तिकाम्लं च कासीसं धातु इत्यपि ।
तदेव किञ्चित्पीतं तु पुष्पकासीसमुच्यते ।

अर्थ-धातुकासीस-भस्मकी समान अम्लमृत्तिका होतीहै और पुष्पकासीस धातुकासीससे कुछेक पीला होता है ।

गैरिकनामानि ।

गिरिमृद्गैरिकं रक्तधातुर्लोहितमृत्तिका ।

अर्थ-गिरिमृत, गैरिक, रक्तधातु, लोहितमृत्तिका (गिरिधातु, गवेधुक, धातु, सुरंगधातु, गिरिमृद्भव, वनालक्त, गवेरुक, प्रत्यश्म, गिरिज, गैरेय, ताम्रधातु)

सुवर्णगैरिकनामानि ।

सुवर्णगैरिकं चान्यत्सुरक्तं स्वर्णगैरिकम् ।

अर्थ-सुवर्णगैरिक, सुरक्त, स्वर्णगैरिक, (स्वर्णधातु, शिलाधातु, सन्ध्याभ्र, बभ्रुधातु, सुरक्तक)

पाषाणगैरिकनामानि ।

पाषाणगैरिकं प्रोक्तं कठिनं ताम्रवर्णकम् ।

अर्थ-पाषाणगैरिक, कठिन, ताम्रवर्णक ।

संस्कृतभाषामें	गैरिक, सुवर्णगैरिक, पाषाणगैरिक ।
हिंदीभाषामें	गेरु, पीला गेरु, हिरोंजी ।
वंगभाषामें	गिरिमाटी ।
मराठीभाषामें	सोनगेरु, तांबेगेरु, हुरमुंजी ।
गुजरातीभाषामें	गेरु, सोनागेरु, हडमची ।
कर्णाटकीभाषामें	जाजु, होजाजु ।
इंग्रेजीभाषामें	ओकर Oker रेडलम्बरस्टोन Red lumber stone
लैटिन्भाषामें	बॉलरुब्रा Bole Rubra
फारसीभाषामें	गिलेसुर्खामिश्री ।
अरबीभाषामें	तीनेमगरेवी अहमर ।

गैरिकगुणाः ।

गैरिकं रक्तपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ।
चक्षुष्यमन्यद्बल्यं च विशेषाद्वान्तिनाशनम् ॥

अर्थ-गेरु-रक्तपित्त, रक्तविकार, कफ, हिचकी और विषका नाश करे है, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक और विशेषकरके वमन-निवारक ह ।

अन्यच्च ।

विशदो गैरिकः स्निग्धः कषायो मधुरो हिमः ।

चक्षुष्यो रक्तपित्तघ्नश्छर्दिहिक्काविषापहः ॥

अर्थ-गेरु-विशद,स्निग्ध,कषेला,मधुर,शीतल,नेत्रोंको हितकारी, रक्तपित्तनाशक, तथा वमन,हिचकी और विषविनाशक है ।

सुवर्णगैरिकगुणाः ।

सुवर्णगैरिकं स्निग्धं मधुरं तुवरं मतम् । चक्षुष्यं शीतलं बल्यं व्रणरोपणकारकम् ॥ विशदं कान्तिकृत्प्रोक्तं दाहं पित्तं कफं जयेत् । हिक्कां रक्तरुजं जूर्तिं विषं विस्फोटकं वमिम् ॥ अग्निदग्धव्रणं चार्शोरक्तपित्तं च नाशयेत् ॥

अर्थ-पीला गेरु-स्निग्ध, मधुर, कषेला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल,बलकारक, व्रणरोपण, विशद, कान्तिजनक तथा दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार,ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अग्निदग्धव्रण, बवासीर और रक्तपित्तको हरनेवाला है ।

द्विविधगैरिकगुणाः ।

गैरिकद्वितयं स्निग्धं मधुरं तुवरं मतम् ।
चक्षुष्यं दाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारके गेरु-स्निग्ध,मधुर,कषेले,नेत्रोंको हितकारी तथा दाह,रक्तपित्त,कफ,हुचकी और विषको हरनेवाले हैं ।

खडीनामानि ।

पाकशुक्ला शिलाधातुः कठिनी च खटिः खडी ।

अर्थ-पाकशुक्ला,शिलाधातु,कठिनी,खटि,खडी (खटी, खटिनी, खटिका, धवलमृत्तिका, श्वेतधातु, पाण्डुमृत्तिका, सितधातु, पाण्डुमृत, कक्खटी,वर्णरेखा, वर्णलेखा, मृत्तिकानखा, अनीलाधातु, वर्णलेखिका, शुक्लधातु, धातुपल, कठिनिका, लेखनी, मकल्ल ।

संस्कृतभाषामें	खटी ।
हिन्दीभाषामें	खरियामाटी, खडिया, गौरखडी ।
बंगभाषामें	खडिमाटी, चाखडि ।
मराठीभाषामें	खडु ।
गुजरातीभाषामें	खडी ।
कर्णाटकीभाषामें	वेणबहु ।

इंग्रेजीभाषामें	पाईपक्ले । Pipe clay
लैटिन्भाषामें	कार्बोनेट् आफ् कलशम् । Carbonate of calcium
फारसीभाषामें	गिलेसुफेद, गिलेखारिया ।
अरबीभाषामें	तिने अवयिद ।

खटीगुणाः ।

खटिका मधुरा तिक्ता शीतला व्रणदोषहा ।
पित्तं दाहं कफं रक्तदोषं नेत्ररुजं जयेत् ॥

अर्थ-खडिया-मधुर, कडवी, शीतल, व्रणनाशक तथा पित्त, दाह, कफ, रुधिरविकार और नेत्ररोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

खटी दाहास्रनुच्छीता मधुरा विषशोषजित् । कफघ्नी नेत्रयोः पथ्या लेखना बालकोचिता । तद्वत्पाषाणखटिका व्रणपित्तास्रजिद्धिमा । लेपादितद्गुणा प्रोक्ता भक्षिता मृत्तिका समा ॥

अर्थ-खडिया-दाह, रक्तदोष, विष, शोष और कफको दूर करे है, शीतल, मधुर, नेत्रोंको हितकारी, लेखन और बालकोंको हितकारी है । पाषाणखटिका (सेलखडी)-केभी गुण खडियाकी समान हैं तथा व्रण, पित्त और रक्तविकारको दूर करेहै, शीतल इसके लेप करनेमें यह गुण है और खानेमें तो मिट्टीकी समान है ।

कपर्दकनामानि ।

कपर्दको वराटश्च कपर्दी च वराटिका ।

अर्थ-कपर्दक, वराटक, कपर्दी, वराटिका (वराट, कपर्द, ऊद्दाहवी, चराचर, चर, वर्ज्य, बालक्रीडक)

संस्कृतभाषामें कपर्दक ।
हिन्दीभाषामें कवडी, कोडी ।
वंगभाषामें कडि ।
मराठीभाषामें कवडी ।

गुजरातीभाषामें कोडी ।
कर्णाटकीभाषामें कवडी ।
इंग्रेजीभाषामें कवरीझ Covries

कपर्दिकागुणाः ।

कपर्दिका हिमा नेत्रहिता स्फोटक्षयापहा ।
कर्णस्रावाग्निमांद्यघ्नी पित्तास्रकफनाशिनी ॥

अर्थ-कवडी-शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा स्फोट, क्षय, कर्णस्राव, अग्निमांद्य, रक्तपित्त और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

कटूष्णा दीपनी वृष्या गुल्मवातकफापहा ।
परिणामादिशूलघ्नी ग्रहणी क्षयनाशिनी ॥

अर्थ-कौडी-चरपरी, गरम, दीपन, वृष्य तथा गुल्म, वात, कफ, परिणामशूल, संग्रहणी और क्षयरोगका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

कपर्द्दः कटुतिक्तोष्णः कर्णशूलव्रणापहः ।
शूलगुल्मामयघ्नश्च नेत्रदोषनिकृन्तनः ॥

अर्थ-कौडी-चरपरी, कडवी, गरम तथा कर्णशूल, व्रण, शूल, गुल्म और नेत्ररोगको हरनेवाली है ।

कपार्दिकाभेदाः ।

वराटिका त्रिधा प्रोक्ता श्वेता शोणा त्रिधा परा। पीता च तीक्ष्णा चक्षुष्या श्वेता शोणा हिमा व्रणा ॥ अतिबिंदुभिरश्वेतैर्लांछिता रेखयाऽथवा । बालग्रहहरा नानाकौतुकेषु च पूजिता ॥ पीता गुल्मयुता पृष्ठे रसयोगेषु योजयेत् । सार्धनिष्कप्रमाणाऽसौ श्रेष्ठा योगेषु योजयेत् ॥ निष्कप्रमाणा मध्या सा हीना पादोननिष्कका ॥

अर्थ-कौडी सफेद, लाल और पीली इन भेदोंसे तीनप्रकारकी है, तहां पीली कौडी-तीक्ष्ण और नेत्रोंको हितकारी है, सफेद और लाल कौडी-शीतल और व्रणको भरनेवालीहै । काले बिंदुयुक्त तथा रेखाओंकरकेलांछित ऐसी कौडी-बालग्रहनाशक और अनेक प्रकारके कौतुकोंमें उपयोगी है और जिसकी पीठपर पीली गांठें हों ऐसी कौडी रसकर्म्ममें लेनी चाहिये । तोलमें डेढ तोलेवाली कौडी उत्तम होती है एक तोलेभरकी कौडी मध्यम और पाव तोले भरकी कौडी कनिष्ठ होती है ।

शुक्तिनामानि ।

शुक्तिर्मुक्ताप्रसूश्चैव महाशुक्तिश्च शुक्तिका ।
मुक्ता स्फोटोऽब्धिमण्डूकी मौक्तिकप्रसवा च सा ॥

अर्थ-शुक्ति, मुक्ताप्रसू, महाशुक्ति, शुक्तिका, मुक्तास्फोट, अब्धिमण्डूकी, मौक्तिकप्रसवा (दुर्नामा, दीर्घकोषिका, दीर्घकोशिका, पङ्कशुक्ति, मुक्तागार, महाशुक्ति, तौतिक, मौक्तिकशुक्ति, मुक्तमाता, मुक्तास्फोटा)

जलशुक्तिनामानि ।

जलशुक्तिर्वारिशुक्तिः कृमिसूः क्षुद्रशुक्तिका ।
शम्बूका जलडिम्बश्च पुटिका तोयशुक्तिका ॥

अर्थ-जलशुक्ति, वारिशुक्ति, कृमिसु(क्ति), क्षुद्रशुक्तिका, शम्बूका, जलडिंब, पुटिका, तोयशुक्तिका, (नरशुक्ति)

संस्कृतभाषामें	शुक्ति, जलशुक्ति ।
हिन्दीभाषामें	मोतीकी सीप, जलसीप
वंगभाषामें	झिनुक, शामुक ।
मराठीभाषामें	मोत्यांची शिंप, नदींताल शिंप ।
गुजरातीभाषामें	मोतीनी छीप, नदीना छिपना ।
कर्णाटकीभाषामें	मुक्तिनीसिंपु, तौरेयासिंपु ।
इंग्रेजीभाषामें	ओईस्टरशेल । oysteR shell

शुक्तिगुणाः ।

मुक्ताशुक्तिः कटुः स्निग्धा श्वासहृद्रोगनाशिनी ।
शूलप्रशमनी रुच्या मधुरा दीपनी परा॥(रा० नि०)

अर्थ-मोतीकी सीप-चरपरी, स्निग्ध, श्वासनिवारक, हृदयरोगहारक, शूलको दूर करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, मधुर और दीपन है।

अन्यच्च ।

मुक्ताशुक्तिस्तु मधुरा स्निग्धा रुच्या च दीपनी ।
कट्वी च कासशूलघ्नी हृद्रोगस्य च नाशिनी ॥
स्नायुरोगहरी चैव ज्वरघ्नी व्रणभेदिनी ॥(रा० नि०)

अर्थ-मोतीकी सीप-मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, दीपन, चरपरी तथा खांसी, शूल, हृदयरोग, स्नायुरोग और ज्वरका नाश करनेवाली है और व्रणभेदक है ।

अपिच ।

शुक्तिश्च शिशिरापित्तरक्तज्वरविनाशिनी ॥

अर्थ-सीप-शीत,पित्त,रुधिरविकार और ज्वरको हरनेवाली है।

जलशुक्तिगुणाः ।

जलशुक्तिः कटुः स्निग्धा दीपनी गुल्मशूलनुत् ।
विषदोषहरा रुच्या पाचनी बलदायिनी ॥

अर्थ-जलसीप-चरपरी,स्निग्ध, दीपन,गुल्मनाशक,शूलनिवारक, विषविकारहारक, रुचिकारक, पाचक और बलवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

जलशुक्तिः कटुः स्निग्धा दीपनी पाचका च सा ।
रुच्या बलप्रदा गुल्मनाशिनी चक्षुषोर्हिता ॥
विषदोषं च शूलं च नाशयेदिति कीर्तिता । (रा०नि०)

अर्थ-जलकी सीप-चरपरी,स्निग्ध,दीपन, पाचक, रुचिकारक, बलवर्द्धक,गुल्मनाशक,नेत्रोंको हितकारी तथा विषदोष और शूलका नाश करे है ।

विवरण । मोतीकी सीप और साधारण सीप इन भेदोंसे सीप दोप्रकारकी होतीहै।तहां मोतीकी सीप अत्यंत शुभ्र और सुफेद रंगकी समुद्रमें होतीहै । दूसरी सीप नदियोंमें होती है ।

शंखनामानि ।

शंखः समुद्रजः कम्बुः सुनादः पावनध्वनिः ॥

अर्थ-शंख, समुद्रज, कम्बु, सुनाद, पावनध्वनि(कम्बु,कम्बोज, अब्ज, त्रिरेख, जलज, अर्णोभव, अन्तःकुटिल, महानाद, श्वेतपूत, मुखर,दीर्घनाद, बहुनाद, हरिप्रिय, दीर्घनिस्वन, सुरचर, सम्यक्छब्द, जलोद्भव, विष्णुप्रिय, दुष्टद्रावी, धवल, स्त्रीविभूषण, पांचजन्य, अर्णवभव, अर्णवभवोदर ।

सं०	शंख ।	गु०	शंख ।
हिं०	शंख ।	त०	शंखमु ।
बं०	शाँक, शंख ।	इं०	कोंच । Conch
म०	शंख ।		

शंखगुणाः ।

शंखो नेत्र्यो हिमः शीतो लघुः पित्तकफास्रजित् ।

अर्थ-शंख-नेत्रोंको हितकारी, शीतल, हलका, तथा पित्त, कफ और रुधिरके विकारोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शंखः कटुः सरः शीतः पुष्टिवीर्य्यबलप्रदः ।
गुल्मशूलहरः श्वासनाशनो विषदोषनुत ।

अर्थ-शंख- चरपरा, सारक, शीतल, पुष्टि, वीर्य्य और बलवर्द्धक तथा गुल्म, शूल, श्वास और विषके विकारोंको हरे है ।

अपिच ।

शंखः शीतः कषायश्च लेखी चाजीर्णशूलजित ।

अर्थ-शंख-शीतल, कषेला, लेखन तथा अजीर्ण और शूलनाशक है ।

अपिच ।

शंखस्तु पौष्टिको बल्यो रसकाले कटुः स्मृतः । पटुः शीतो ग्राहकश्च चक्षुष्यो वर्णकृन्मतः ॥ नेत्रपुष्पं पंक्तिशूलं गुल्मं संग्रहणीं हरेत् । तारुण्यपिटिकागुल्मशूलश्वासहरः स्मृतः ॥ दक्षिणावर्तशंखस्तु त्रिदोषकामलापहः । विषदोषक्षयनेत्रग्रहपीडाविनाशकः ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-शंख-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कटुरसान्वित, खारी, शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी, वर्णकारक तथा नेत्रका फूला, पांक्तिशूल, गुल्म, संग्रहणी, तारुण्यपिटिका (मुहासे), गुल्म, शूल और श्वासनाशक ह । दक्षिणावर्त्तशंख-त्रिदोष, कामलारोग, विषदोष, क्षय, नेत्ररोग और ग्रहकी पीडाको दूर करे ह ।

शंखस्य प्रकारभेदाः ।

द्विधा स दक्षिणावर्त्तिर्वामावार्त्तिस्तु भेदतः ।
दक्षिणावर्त्तशंखस्तु पुण्ययोगादवाप्यते ॥
यद्गृहे तिष्ठति स वै स लक्ष्म्या भाजनं भवेत् ।

अर्थ-शंख-दक्षिणावर्त्त और बामावर्त्त इन भेदोंसे दो प्रकारका है । दक्षिणावर्त्त शंख पुण्यके योगसेही प्राप्त होता है और जिसके घरमें यह रहता है उसके लक्ष्मीकी अधिक वृद्धि होती ह ।

श्रेष्ठशंखलक्षणम् ।

शंखस्तु विमलः श्रेष्ठश्चन्द्रकान्तिसमप्रभः ।
अशुद्धो गुणदो नैव शुद्धस्तु सुगुणप्रदः ।

अर्थ-निर्मल और जिसकी चन्द्रमाके समान कान्ति हो ऐसा शंख उत्तम है । अशुद्ध शंख गुणदायक नहीं है और शुद्ध शंख गुणदायक है ।

कृमिशंखनामानि गुणाश्च ।

कृमिशंखः कृमिजलजःकृमिवारिश्च जन्तुकम्बुश्च ॥
कथितो रसवीर्य्याद्यैः कृतनिधिभिः शंखसदृशोऽयम् ॥

अर्थ-कृमिशंख, कृमिजलज, कृमिवारि, जन्तुकम्बु कृमिशंख-रसवीर्य्यादिकमें शंखके समान है ।

क्षुद्रशंखनामानि ।

कोशस्था लघुशंखास्तु क्षुद्रकाः क्षुल्लकास्तथा ।
शंखनकाश्च शम्बूकाः क्षुद्रशंखा नदीभवाः ॥

अर्थ-कोशस्थ, लघुशंख, क्षुद्रक, क्षुल्लक, शंखनक, शम्बूक, क्षुद्रशंख, नदीभव ।

क्षुद्रशंखगुणाः ।

शम्बूकाः शीतला नेत्ररुजास्फोटविनाशिनः ।
शीतज्वरहरास्तीक्ष्णा ग्राहिदीपनपाचनाः ॥

अर्थ-क्षुद्रशख शितल, नेत्ररोगनाशक, स्फोटकविनाशक, शीतज्वरनिवारक, तीक्ष्ण, ग्राही, दीपन और पाचक है ।

अन्यच्च ।

शम्बूकः सृष्टविण्मूत्रो मधुरः पित्तरोगहा ।

अर्थ-क्षुद्रशंख (घोंघा)-मल और मूत्रको करनेवाला, मधुर और पित्तरोगनाशक है ।

अपिच ।

क्षुल्लकः कटुकस्तिक्तः शूलहारी च दीपनः ।

अर्थ-क्षुल्लक (घोंघा) चरपरा, कडवा, शूलनाशक और दीपन है ।

कंकुष्ठनामानि ।

कंकुष्ठं कालकुष्ठञ्च विरंगं रंगदायकम् ।

अर्थ-कंकुष्ठ, कालकुष्ठ, विरंग, रंगदायक (रेचक, पुलक, शोधक, कालपालक)

संस्कृतभाषामें	कंकुष्ठ।
हिन्दीभाषामें	कंकुष्ठ, मुरदासिंग।
बंगालीभाषामें	पार्वतीयमृत्तिकाविशेष।
मराठीभाषामें	कुंकुष्ठ।
गुजरातीभाषामें	पीलीयो।

कंकुष्ठगुणाः।

कंकुष्ठं रेचनं तिक्तं कटूष्णं वर्णकारकम्।
कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कंकुष्ठ-दस्तावर, कड़वा, चरपरा, वर्णकारक तथा कृमि, सूजन, उदर, आध्मान, गुल्म, आनाह और कफरोगका नाश करे है।

अन्यच्च।

कंकुष्ठं तिक्तकटुकं वीर्य्यं चोष्णं प्रकीर्त्तितम्।
गुल्मोदावर्त्तशूलघ्नं रसजन्तुव्रणापहम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-कंकुष्ठ-कड़वा, चरपरा, उष्णवीर्य्य तथा गुल्म, उदावर्त्त, शूल, रस, जन्तु और व्रणविनाशक है।

अन्यच्च।

कंकुष्ठं पित्तकृद्भेदि विबंधकफगुल्मनुत्। भजेदेनं विरेकार्थं ग्राहिभिर्यवमात्रया॥ नाशयेदामपूतिं च विरेच्यं क्षणमात्रतः। सुभक्षितं च ताम्बूलं विरेकं तं विनाशयेत् ॥

अर्थ-कंकुष्ठ-पित्तकारक, भेदक तथा विबंध, कफ और गुल्मको दूर करेहै। इसको एक जौकी बराबर मलरोधी मनुष्योंको देनेसे क्षणमात्रमें दस्त होने लगते हैं और दुर्गंध आम दूर होजाती है तथा ताम्बूलके खानेसे वही दस्त बन्द हो जाते हैं॥

कंकुष्ठोत्पत्तिलक्षणम्।

हिमवत्पादशिखरे कंकुष्ठमुपजायते। तत्रैकं नलिकाख्यं स्यात्तदन्यं रेणुकं स्मृतम् ॥ पीतप्रभं गुरु स्निग्धं श्रेष्ठं कंकुष्ठमादिमम्। श्यामं पीतं लघु त्यक्तसत्त्वं नेष्टं हि रेणुकम्।

अर्थ-कंकुष्ठ हिमालय पर्वतके शिखरोंमें उत्पन्न होताहै;तहां एक नलिकाख्य और दूसरा रेणुक कहा जाताहै । इनमें पीला, भारी, चिकना ऐसा श्रेष्ठ कंकुष्ठ होताहै और काला, पीला,हलका और जिसमें सत्त्व न हो वह कनिष्ठ और उसको रेणुक कंकुष्ठ कहते हैं ।

अपिच ।

केचिद्वदन्ति कंकुष्ठं सद्योजातस्य दन्तिनः ।
वर्चश्च श्यामपीताभं तदतीव विरेचनम् ॥

अर्थ-कोई मुरदेसिंगको तत्कालके उत्पन्न हुवे हाथीके बच्चेकी विष्ठा कहतेहैं । यह श्याम और पीली प्रभावाला होता है तथा अत्यन्त दस्तावर है ।

शंखजीरकनामानि ।

कम्बुजीरः श्लक्ष्णजीरस्तथा श्लक्ष्णमृदापि च ।

अर्थ-कम्बुजीर, श्लक्ष्णजीर, श्लक्ष्णमृत [द्] ।

संस्कृतभाषामें	शंखजीरक ।
हिन्दीभाषामें	संगजराहत ।
मराठीभाषामें	शंखजिरें ।
गुजरातीभाषामें	शंखजीरु ।
इंग्रेजीभाषामें	सापस्टोन् । Soaplstone
लैटिन्भाषामें	सिलकिट ऑफ मेगनिश्या । Silicate of Magnesia
फारसीभाषामें	सङ्ग जराहत ।
अरबीभाषामें	हजरुल एरावी ।

अस्य गुणाः ।

शंखाभिधं जीरकं तु व्रणदाहरुजं जयेत् ।
प्रलेपाच्छोफवीसर्पकक्षारक्तविकारजित् ॥

अर्थ-शंखजीरक (सङ्गजराहत)-व्रण और दाहरोगको दूर करे है । इसका लेप करनेसे सूजन, विसर्प, कक्षा और रक्तविकार दूर होता है ।

स्फटीनामानि ।

स्फटी च स्फटिका प्रोक्ता श्वेता शुभ्रा च रंगदा ॥
दृढरंगा रंगदृढा दृढा रंगापि कथ्यते ॥

अर्थ-स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रंगदा, दृढरंगा, रंगदृढा, दृढा, रंगा (स्फटिकारि, स्फटिकारिका, रंगाङ्गा, सुरंगा, गतरंगा)

सं० स्फटिकारि।
हिं० फटकिरी।
बं० फटकिरी।
म० तुरटी, फटकी।
क० फटकी।

तै० फाटिक्के।
अ० विट्रील हाईट आलम्।
ल० हैड्राजिरमूसल् फ्युरेष्टम्।
फा० जाकसफेत।
अ० जाज कल्कतार।

अस्य गुणाः।

स्फटिका तु कषायोष्णा वातपित्तकफव्रणान्।
निहन्ति श्वित्रवीसर्पान् योनिसंकोचकारिणी॥ (भा०प्र०)

अर्थ-फटकिरी-कषेली, गरम तथा वात, पित्त, कफ, व्रण, श्वित्रकुष्ठ और विसर्पको दूर करे है तथा योनिको संकुचित करनेवाली है।

अन्यच्च।

स्फटिकी तुवरा स्निग्धा कट्वी रंगप्रदा मता। रसबन्धकरी कुष्ठव्रणप्रदरनाशिनी॥ विषदोषं मूत्रकृच्छ्रं वान्तिशोषं त्रिदोषकम्। प्रमेहं नाशयत्येवं पूर्वाचार्य्यैर्निवेदितम्॥ (रत्नाकर)

अर्थ-फटकिरी-कषेली, स्निग्ध, चरपरी, रंगप्रद, रसबन्धक तथा कुष्ठ, व्रण, प्रदर, विषविकार, मूत्रकृच्छ्र, वमन, शोष, त्रिदोष और प्रमेहरोगको हरनेवाली है।

चुम्बकनामानि गुणाश्च।

चुम्बकः कान्तपाषाणोऽयस्कान्तो लौहकर्षकः।
चुम्बको लेखनः शीतो मेदो विषगरापहः॥

अर्थ-चुम्बक, कान्तपाषाण, अयस्कान्त और लौहकर्षक। चुम्बकपत्थर-लेखन, शीतल तथा मेद, विष और उपविषको दूर करे है।

राजावर्त्तगुणाः।

राजावर्त्तः कटुस्तिक्तः शिशिरः पित्तनाशनः।
राजावर्त्तः प्रमेहघ्नश्छर्द्दिहिक्कानिवारणः॥

अर्थ-राजावर्त्त-(रेवटी)-कटु, तिक्त, शीतल, पित्तनाशक तथा प्रमेह, वमन और हिचकीको दूर करे है।

सौराष्ट्रीनामानि।

सौराष्ट्र्याढकी तुवरी पर्पटी कालिका सती।
सुजाता देशभाषायां गोपीचंदनमुच्यते ॥

अर्थ-सौराष्ट्री,आढकी,तुवरी,पर्पटी,कालिका,सती,सुजाता,इसको गोपीचंदन कहते हैं। (काक्षी, पार्वती, मसी,मृदाह्वया, मृत,मृत्स्ना, आसङ्ग, सुराष्ट्रजा, मृत्तालक, काली, मृत्तिका,कंसोद्भवा, मृत्तिका, सुरमृत्तिका, स्तुत्या, सौराष्ट्री)

संस्कृतभाषामें	सौराष्ट्री।
हिन्दीभाषामें	गोपीचंदन,सोरठकी मिट्टी।
वंगभाषामें	सौराष्ट्रदेशीय सुगन्धिमृत्तिकाविशेष।
मराठीभाषामें	गोपीचंदन।
गुजरातीभाषामें	गोपीचंदन।
लैटिन्भाषामें	सिलिकेट ऑफ एल्युमीना।

सौराष्ट्रीगुणाः।

गोपिकाचन्दनं शीतं दाहव्रणविषापहम्।
विसर्पशमकं लेपात्पतद्गर्भस्थिरीकरम् ॥

अर्थ-गोपीचंदन-शीतल,दाहनाशक,व्रणविनाशक, विषहारक, विसर्पनिवारक और इसका लेप करनेसे पतित गर्भ स्थिर हो जाताहै।

अन्यच्च।

गोपीचंदनकं दाहक्षतरक्तविकारनुत्।
पित्तं कफं च प्रदरं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-गोपीचंदन-दाह,क्षत, रुधिरविकार, पित्त, कफ और प्रदररोगका नाश करे है।

वालुकानामानि।

सिकता वालुका सिक्ता शीतला सूक्ष्मशर्करा ॥
प्रवाहोत्था महाश्लक्ष्णा सूक्ष्मा पानीयचूर्णका ॥

अर्थ-सिकता, वालुका,सिक्ता,शीतला,सूक्ष्मशर्करा,प्रवाहोत्था, महाश्लक्ष्णा, सूक्ष्मा, पानीयचूर्णका, (वालिका,प्रवाही, महासूक्ष्मा, पानीयवर्णिका, रेतज

सं०	बालुका ।	त०	विशिका ।	
हिं०	बालु, रेत (ती,ता,]	इं०	सॅन्ड ।	Sand
वं०	वाली ।	लै०	सीलीका ।	Silica
म०	बालु, रेती ।	फा०	रेग ।	
गु०	रेती, बेलु ।	अ०	रमल ।	
क०	हालुलु ।			

अस्य गुणाः ।

सिकता मधुरा शीता लेखनी तापनाशिनी ।
अग्निदग्धव्रणं चैव व्रणोरःक्षतनाशिनी ॥
श्रमकुष्ठहरी चास्याः स्वेदनं वातनाशनम् । (रत्नाकर)

अर्थ-बालु तथा रेता-मधुर, शीतल, लेखन, तापनाशक तथा अग्नि दग्धव्रण, व्रण, उरःक्षत, श्रम और कुष्ठका नाश करे है। इसका सेक वातनाशक है ।

कर्दमनामानि ।

पंकस्तु जलकल्कश्च चुलुकः कर्दमो मलः ।
चिकिलः पलितो द्राप: पललश्च निषद्वरः ॥

अर्थ-पंक, चुलुक, कर्दम, मल, चिकिल, षलित, द्राप, पलल, निषद्वर, (जम्बाल, साद, दम)

कृष्णमृत्तिकानामानि ।

मृन्मृदा मृत्तिका मृत्स्ना क्षेत्रजा कृष्णमृत्तिका ।

अर्थ-मृत, मृदा, मृत्तिका, मृत्स्ना, क्षेत्रजा, कृष्णमृत्तिका ।

संस्कृतभाषामें	पंक, कर्दम, मृत् ।
हिन्दीभाषामें	कींच, गारा, मिट्टी, काली मिट्टी ।
वंगभाषामें	कादा, माटी, कालमाटी ।
मराठीभाषामें	चिखल, माती, गारा ।
गुजरातीभाषामें	गारो, कालीमाटी ।
तैलिङ्गीभाषामें	नोबुलु ।
इंग्रेजीभाषामें	मडब्लॅकू क्ले । Mud blackClay
लैटिन्भाषामें	हैड्रस् सिलिकेट ऑफ् आल्युमीनीयम् । Hydrasis silicate of alumunum

पंकगुणाः ।

पंको दाहास्रपित्तास्रशोथघ्नः शीतलः सरः ।

अर्थ-कीच-दाह, रक्तपित्त, रुधिरविकार और सूजनको दूर करे है । शीतल और सारक है ।

अन्यच्च ।

कर्दमः शीतलो रूक्षो विषघ्नो वेदनापहः ॥
शोफदाहप्रशमनो व्रणशोधनरोपणः ॥

अर्थ-कीच-शीतल, रूखी, विषघ्न, वेदनानाशक, शोफनिवारक, दाहको शांत करनेवाली, व्रणशोधक और व्रणरोपक है ।

अपिच ।

कर्दमः शीतलः स्निग्धो विषपित्तास्रभग्नजित् ।
शोफदाहक्षतहरो हितः शोधनरोपणे ॥

अर्थ-कीच-शीतल, स्निग्ध तथा विष, रक्तपित्त, भग्न, सूजन, दाह और घावको दूर करे है । व्रणशोधक और व्रणको भरनेवाला है ।

कृष्णमृद्गुणाः ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।

अर्थ-कालीमिट्टी-घाव, दाह, रुधिरविकार, प्रदर और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमृत्स्ना रक्तदोषप्रदरक्षतदाहहा ।
मूत्रकृच्छ्रं कफं पित्तं नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-रुधिरविकार, प्रदर, क्षत, दाह, मूत्रकृच्छ्र, कफ और पित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कृष्णामृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।
प्रलेपाद्विनिहंत्येषा शोथं भल्लातसम्भवम् ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-क्षत, दाह, रुधिरविकार, प्रदर, कफ, पित्तको हरै और इसका लेप करनेसे भिलावेंसे उत्पन्न हुई सूजन दूर होती है ।

बोलनामानि ।

बोलं गन्धरसं पिण्डं निर्लोहं बार्बरं रसम् ।
सुगन्धं नालकं पौरं रसगन्धं सितं विदुः ॥

अर्थ-बोल, गन्धरस, पिंड, निर्लोह, बर्बररस, सुगन्ध, नालक, पौर, रसगन्ध, सित, (रक्तापह, मुण्ड, सुरस, पिण्डक, विष, बबर, सौरभ, रस, रसगन्धक, महागन्ध, विश्व, शुभगन्धक, विश्वगन्ध, व्रणारि, प्राण, बोल, गोप, गोस, पिण्डगोस, शश, गोसशश, गान्धार, मासिवर्धन, गोपरस, बोलज, गोपक, पिण्डल, गोल)

संस्कृतभाषाम	बोल ।
हिन्दीभाषामें	बोल, हीराबोल, बीजाबोल ।
वंगभाषामें	गन्धरस, बोल, हिराबोल, खुनखारापी ।
मराठीभाषामें	बोळ ।
गुजरातीभाषामें	हिराबोल।
कर्णाटकीभाषामें	बोल ।
तैलिङ्गीभाषामें	बालिम्, त्रोपोलम् ।
तामिलीभाषामें	वेल्लइपूपोलम् ।
बम्०	रक्तया बोल ।
इंग्रेजीभाषामें	मिर्हा । Myrha
लैटिन्भाषामें	बालासामोंडेड्रून् मिर्हा । Bulsa modedron myrha
फारसीभाषामें	मुर ।
अरबीभाषामें	मुरसाफ, मुरमकी ।

अस्य गुणाः ।

रक्तबोलः कटुस्तिक्तस्तुवरोष्णश्च पाचनः । मेध्योऽग्निदीपको गर्भाशयस्य च विशोधनः॥ सुगन्धिरक्तदोषघ्नः कफपित्तत्रिदोषनुत् । प्रदराश्मरिमेहघ्नो योनिशूलज्वरप्रणुत् ॥ कुष्ठापस्माररक्तातीसारस्वेदनिवारणः । ग्रहबाधां पौरुषत्वं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-बोल-चरपरा, कडवा, कषेला, गरम, पाचक, मेधाजनक, आग्निप्रदीपक, गर्भाशयशोधक, सुगंधि तथा रुधिरदोष, कफ, पित्त,

त्रिदोष, प्रदर, पथरी, प्रमेह, योनिशूल, ज्वर, कुष्ठ, अपस्मार, रक्तातिसार, पसीना, ग्रहबाधा और पुरुषताका नाश करे है।

शिलाजतुनामानि।

शिलाजत्वद्रिजतु च शैलनिर्य्यास इत्यपि।
गैरेयमश्मजं चापि गिरिजं शैलधातुजम् ॥

अर्थ-शिलाजतु, आद्रिजतु, शैलनिर्य्यास, गैरेय, अश्मज, गिरिज, शैलधातुज, (अश्र्य, शिलाज, अगज, शैल, शैलेय, शीतपुष्पक, शिलाव्याधि, अश्मोत्थ, अश्मलाक्षा, अश्मजतुक, जत्वश्मक)

सं०	शिलाजतु।	क०	कलुबेचरु।
हिं०	शिलाजीत।	इं०	आसफेल्ट, जुझपिच।
बं०	शिलाजतु।	ल०	आस्पल्टं पंझाबिनम्।
म०	शिलाजीत।		बिटुमेन जुडाईकम्।

अस्योत्पत्तिर्लक्षणं गुणाश्च।

निदाघे घर्मसन्तप्ता धातुसारं धराधराः। निर्य्यासवत्प्रमुञ्चन्ति तच्छिलाजतुकीर्त्तितम् ॥ सौवर्णं रजतं ताम्रमायसं तच्चतुर्विधम्। शिलाह्वं कटु तिक्तोष्णं कटुपाकं रसायनम्॥ छेदि योगवहं हन्ति कफमेदोश्मशर्कराः। मूत्रकृच्छ्रं क्षयं श्वासं वातास्रार्शांसि पांडुताम् ॥ अपस्मारं तथोन्मादं शोथकुष्ठोदरकृमीन्। सौवर्णं तु जपापुष्पवर्णं भवति तद्रसात् ॥ मधुरं कटु तिक्तं तु शीतलं कटुपाकि च। राजतं पाण्डुरं शीतं कटुकं स्वादु पाकि च ॥ ताम्रं मयूरकण्ठाभं तीक्ष्णमुष्णं च जायते। लौहं जटायुपक्षाभं तत्तिक्तं लवणं भवेत्॥ विपाके कटुकं शीतं सर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-उष्णकालमें सूर्यकी किरणोंसे पर्वत तापित होकर धातुओंके सारको गोंदकी समान छोडते हैं; उस सारको शिलाजीत कहते हैं, सौवर्ण, रजत, ताम्र और आयस इन भेदोंसे शिलाजीत चार प्रकारका है। शिलाजीत-कटु, तिक्त, उष्ण, कटुपाकी, रसायन,

छेदक, योगवाही तथा कफ, मेद, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, श्वास, वातरक्त, बवासीर पाण्डुरोग, अपस्मार, उन्माद, सूजन, कुष्ठ, उदररोग और कृमिरोगका नाश करे है। सौवर्ण (सुवर्ण की खानका) शिलाजीत-जपाके फूलके समान लाल रंगका होता है। मधुरसंयुक्त, कटुरसान्वित, तिक्तरसयुक्त, शीतल और पचनेमें चरपरा है। राजत (रूपेकी खानका) शिलाजीत-पाण्डुरंगका होता है। शीतल, कटु और पचनेमें स्वादिष्ठ है। ताम्र (तांबेकी खानका) शिलाजीत-मोरकी गरदनके रंगकेसा होता है। तीक्ष्ण और उष्ण है। लौह (लोहेकी खानका) शिलाजीत-जटायुकी पंखकी समान काले रंगका होता है। कडवा, लवणरसान्वित विपाकमें चरपरा, शीतल और सबमें श्रेष्ठ है।

अन्यच्च।

मासे शुक्रे शुचौ चैव शैलाः सूर्य्यांशुतापिताः।जतुप्रकाशं स्वरसं शिलाभ्यःप्रस्रवन्ति हि॥शिलाजत्विति विख्यातं सर्वव्याधिविनाशनम्।त्रप्वादीनान्तु लौहानां षण्णामन्यतमान्वयम्। ज्ञेयं सुगन्धं तच्चापि षड्योनिप्रथितं क्षितौ।लौहाद्भवति तद्यस्माच्छिलाजतु जतुप्रभम्। तस्य लौहस्य तद्वीर्य्यं रसश्चापि बिभर्ति तत्। त्रपुसीसायसादीनि प्रधानान्युत्तरोत्तरम्॥ यथायोगप्रयुक्ता हि श्रेष्ठश्रेष्ठगुणाः स्मृताः। (सु० सं०)

अर्थ-ज्येष्ठ आषाढके महीनेमें पर्वत सूर्य्यकी किरणोंसे अत्यन्त तपित होकर लाखकी समान प्रकाशमान अपने रसोंको शिलाओंसे बहाते हैं; वह रस शिलाजीत नामसे विख्यात है यह सर्व व्याधिका नाश करनेवाला है, सीसा इत्यादि और लोहादिक छह धातुओंसे यह पृथक् है इसे सुगन्धिवाला जानना। यह पृथ्वीमें छै स्थानोंसे होता है जो लोहसे उत्पन्न होता है वह लाखके रंगका है, वह उस लोहका वीर्य्य और रसभी धारण करता है। रांग, सीसा लोहादि खानजनित गुणोंमें उत्तरोत्तर प्रधान है, वह श्रेष्ठ गुणवाले यथायोग्य प्रयुक्त करने चाहिये।

श्रेष्ठशिलाजतुलक्षणम्।

गोमूत्रगन्धवत्कृष्णं स्निग्धं मृदु तथा गुरु।
तिक्तं कषायं शीतञ्च सर्वश्रेष्ठं तदायसम्॥

अर्थ-जिसमें गोमूत्रकी समान गंध आतीहो, रंग कृष्ण हो, चिकना, नरम, भारी, कडवा, कषेला और शीतल ऐसा शिलाजीत लौहकी खानसे उत्पन्न हुआ श्रेष्ठ जानना ।

शिलाजतुगुणाः ।

शैलजं कटुकं तिक्तं मेहघ्नञ्च रसायनम् । उष्णमुन्मादशोफघ्नं क्षयकुष्ठाश्मरीहरम् ॥ शोफोदरापस्मारघ्नं बस्तिरोगार्शनाशनन् । कण्डूञ्च पाण्डुरोगञ्च छर्दिं वातं कफं जयेत् ॥
वलीपलितकासघ्नं श्वासमूत्ररुजापहम् ॥

अर्थ-शिलाजीत-चरपरा, कडवा, प्रमेहनाशक, रसायन, गरम तथा उन्माद, सूजन, क्षय, कोढ, पथरी, शोफ, उदर, अपस्मार, बस्तिरोग, बवासीर, कण्डू, पाण्डुरोग, वमन, वात, कफ, वलीपलित, खाँसी, श्वास और मूत्ररोगको दूर करे है ।

अपिच ।

शिलाजं कफवातघ्नं तिक्तोष्णं क्षयरोगनुत् ।
वह्नौ क्षिप्तं भवेद्यत्तल्लिंगाकारमधूमकम् ॥

अर्थ-जो अग्निमें गेरनेसे धूमरहित और लिंगाकार खडा होजावे वह शिलाजीत उत्तम और शुद्ध जानना । शिलाजीत-कफवातनाशक, कडवा, गरम और क्षयरोगका नाशक है ।

अशुद्धशिलाजतुदोषाः ।

अशुद्धं दाहमूर्च्छायां भ्रमपित्तास्रशोणितम् ।
शिलाजतु प्रकुरुते मांद्यमग्नेश्च विड्ग्रहम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-अशुद्ध शिलाजीत-दाह, मूर्च्छा, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरविकार, अग्निमांद्य और मलबद्धताको करता है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे धातूपधातुवर्गः ॥ ६ ॥

अथ रत्नोपरत्नवर्गः ।

अथ रत्नस्य निरुक्तिः ।

धनार्थिनो जनाः सर्वे रमन्तेऽस्मिन्नतीव यत् ।
ततो रत्नमिति प्रोक्तं शब्दशास्त्रविशारदैः ॥ (भा०प्र०)

रत्नं क्लीबे मणिः पुंसि स्त्रियामपि निगद्यते ।
तत्तु पाषाणभेदोऽस्ति मुक्तादि च तदुच्यते ॥ (कोष)

अर्थ-धनकी इच्छावाले प्राणी इन रत्नोंमें अतीव रमतेहैं इसीकारण शब्दशास्त्रोंके ज्ञाताओंने रत्न ऐसा नाम रक्खा है। रत्न और मणि यह दोनों चमकनेवाले जवाहरात और मोती आदिमें कहे जाते हैं ।

रत्नानां निरूपणम् ।

वज्रं विद्रुममौक्तिकं मरकतं वैदूर्य्यगोमेदकं
माणिक्यं हरिनीलपुष्पदृषदौ रत्नानि नाम्ना नव ।
यान्यन्यान्यपि सन्ति कानिचिदिह त्रैलोक्यसीम्नि स्फुटं
नाम्ना तान्युपरत्नसंज्ञकतमान्याहुः परीक्षाकृतः ।(नि० र०)

अर्थ-नवरत्न-हीरा १ मूँगा २ मोती ३ मरकत ४ वैदूर्य ५ गोमेद ६ माणिक्य ७ नील ८ और पुष्पराग ९ इस प्रकार यह नौ हैं । और इस पृथ्वीपर इन्हीं रत्नोंकी सदृश दूसरे रत्न होते हैं उनको उपरत्न ऐसा परीक्षक लोग कहते हैं ।

अन्यच्च ।

मुक्ताफलं हीरकं च वैदूर्य्यं पद्मरागकम् ।
पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुत्मतं तथा ॥
प्रवालयुक्तान्येतानि महारत्नानि वै नव ।(विष्णुधर्म्मोत्तरे)

अर्थ-मोती,हीरा,वैडूर्य्य, माणिक, पुखराज, गोमेद, नील, पन्ना और मूँगा इन नवरत्नोंको महारत्न कहते हैं ।

रत्नगुणाः ।

रत्नानि भक्षितानि स्युर्मधुराणि सराणि च ।
चक्षुष्याणि च शीतानि विषघ्नानि धृतानि च ॥
मङ्गल्यानि मनोज्ञानि ग्रहदोषहराणि च ।

अर्थ-रत्न-मधुर,सारक, नेत्रोंको हितकारी,शीतल,विषनाशक, स्निग्ध,मंगलकारक, मनोज्ञ और ग्रहदोषको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

मणयो वीर्य्यतः शीता मधुरास्तुवरा रसात् ।

चक्षुष्या लेखनाश्चापि सारका विषहारकाः ॥

अर्थ-मणि(रत्न)-शीतवीर्य्य,मधुर, कषेली, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, सारक और विषहारक है ।

हीरकनामानि ।

हीरकं वज्रमशिरं षट्कोणं दृढगर्भकम् ।

अर्थ-हीरक,वज्र,अशिर,षट्कोण,दृढगर्भक (हीर, दधीच्यस्थि, वज्रक, सूचीमुख,वरारक,रत्नमुख्य,वज्रपर्य्यायनाम, अभेद्य, दृढाङ्ग, चन्द्र, मणिवर)।

संस्कृतभाषामें	हीरक, वज्र ।
हिन्दीभाषामें	हीरा।
वंगभाषामें	हिरे।
मराठीभाषामें	हिरा।
गुजरातीभाषामें	हिरो।
कर्णाटकीभाषामें	वज्र।
तैलिङ्गीभाषामें	वज्र।
इंग्रेजीभाषामें	डाएमोण्ड। Diamond
लैटिन्भाषामें	पिओरकार्बन,एडमस्। Pure carbon Adams
फा०	इल्माश।

हीरकगुणाः ।

हीरकः सारकः शीतः कषायो मधुरस्तथा ।
चक्षुष्यो वान्तिकृत्पापालक्ष्मीनाशकरो धृतः ॥

अर्थ-हीरा-सारक(कुछरदस्तावर) शीतल, कषेला, मधुर और नेत्रोंको हितकारी वमनकारक है। इसको धारण करनेसे पाप और अलक्ष्मीका नाश होताहै ।

हीरकभेदलक्षणगुणाः ।

स श्वेतस्तु स्मृतो विप्रो लोहितः क्षत्रियःस्मृतः। पीतो वैश्योऽसितः शूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्च सः॥रसायने मतो विप्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः।क्षत्रियो व्याधिविध्वंसी जरामृत्युहरः स्मृतः ॥ वैश्यो धनप्रदः प्रोक्तस्तथा देहस्य दार्ढ्यकृत् । शूद्रो नाशयति

व्याधीन्वयःस्तम्भं करोति च ॥ पुंस्त्रीनपुंसकानीह लक्षणीयानि लक्षणैः । सुवृत्ताः फलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ता बृहत्तराः ॥ पुरुषास्ते समाख्याता रेखाबिन्दुविवर्ज्जिताः । रेखाबिन्दुसमायुक्ताः षडस्रास्ते स्त्रियः स्मृताः ॥ त्रिकोणाश्च सुदीर्घास्ते विज्ञेयाश्च नपुंसकाः । तेषु स्युः पुरुषाः श्रेष्ठा रसबन्धनकारिणः ॥ स्त्रियः कुर्वन्ति कायस्य कान्तिस्त्रीणां सुखप्रदाः । नपुंसकास्त्ववीर्य्याः स्युरकामाः सत्ववर्ज्जिताः ॥ स्त्रियः स्त्रिभ्यः प्रदातव्यः क्लीबं क्लीबे प्रयोजयेत् । सर्वेभ्यः सर्वदा देयाः पुरुषावीर्य्यवर्द्धनाः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हीरा-जातिके भेदसे चार प्रकारका है, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र, तहां ब्राह्मण हीरा (सफेद हीरा) रसायनकार्य्य में उत्तम और सर्वसिद्धिदायक है । क्षत्रिय हीरा (लालरंगका) यह सर्व व्याधि, जरा और मृत्युनाशक है । वैश्यहीरा, (पीले रंगका) यह, धनप्रदायक, और शरीरको दृढ करनेवाला है । और शूद्र हीरा, (काले रंगका) होता है; यह व्याधिनाशक और अवस्था स्थापक है । हीरा स्त्री, पुरुष और नपुंसक, इन भेदोंसे तीन प्रकारका है, उत्तम-गोलाकार, चमकदार, बडा, रेखा और बिन्दु करके हीन हीरेको पुरुषजातिका जानना । रेखा और बिन्दुकरके युक्त तथा छै कोनवाले हीरेको स्त्रीजातिका हीरा जानना । त्रिकोणयुक्त और सुदीर्घ हीरेको नपुंसकजातिका जानना । इनमें पुरुषजातिका हीरा-रस (पारा) को बांधनेवाला और श्रेष्ठ है । स्त्रीजाति हीरा-कान्तिजनक और स्त्रियोंको सुखकारक हैं । नपुंसकजातिका हीरा वीर्य्यविहीन, कामवर्ज्जित और सत्त्वशून्य जानना । स्त्रीजातिका हीरा स्त्रियोंके, नपुंसक जातिका नपुंसकोंके और पुरुषजातिका हीरा सर्व प्राणियोंके लिये उपयोगी और वीर्य्यवर्द्धक हैं ।

हीरकगुणाः ।

वज्रं समीरकफपित्तगदांश्च हन्याद्वज्रोपमञ्च कुरुते वपुरुत्तमश्रि ।
शोषक्षयभ्रमभगन्दरमेहमेदपाण्डूदरश्वयथुहारि च षड्रसाढ्यम् ।

अर्थ-हीरा-वातापित्तकफरोगनाशक, शरीरको वज्रके समान दृढ करनेवाला, लक्ष्मीवर्द्धक, षड्रसयुक्त तथा शोष, क्षय, भ्रम, भगन्दर, प्रमेह, मेद, पाण्डु, उदररोग और सूजनको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च।

वज्रं रसायनं चैव षड्रसैश्च युतं सदा। देहदार्ढ्यकरं पुष्टिबलवीर्य्यविवर्द्धनम्॥ सुवर्णसुखकृद्वातकुष्ठपित्तक्षयभ्रमान्। कफं वातं च शोफं च मेदमेहभगन्दरान्। पाण्डुरोगोदरं मेदं नाशयेदिति कीर्तितम्॥

अर्थ-हीरा-रसायन, षड्रसयुक्त, देहको दृढकरनेवाला, पुष्टि, बल और वीर्य्यवर्द्धक है, वर्णको सुंदर करनेवाला,सुखकारक तथा वात-कुष्ठ, पित्त, क्षय, भ्रम, कफ, वात, शोफ, मद, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, उदर और मेदनाशक है।

अशुद्धहीरकदोषाः।

अशुद्धं कुरुते वज्रं कुष्ठं पार्श्वव्यथां तथा। पाण्डुतापं गुरुत्वञ्च तस्मात्संशोध्य मारयेत्॥ पीडां विधत्ते विविधां नराणां कुष्ठं क्षयं पाण्डुगदं च दुष्टम्। हृत्पार्श्वपीडां कुरुतेतिदुःखदामशुद्धवज्रं गुरुमात्महं त्यजेत्॥ (रत्ना०)

अर्थ-अशोधित हीरा-कोढ, पार्श्वशूल, पाण्डु, शरीरमें ताप और भारीपनको करे है। तथा अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, हृदय और पसलीमें शूल तथा आत्माका नाश करे है।

माणिक्यनामानि।

पद्मरागो लोहितको माणिक्यं शोणरत्नकम्।

अर्थ-पद्मराग, लोहित, माणिक्य, शोणरत्नक, (रत्नराट्, रविरत्नक, शोणरत्न, तरणिरत्न, शृंगारी, रंगमाणिक्य, तरुण, रत्ननायक, रागयुक्, रत्न, शोणोपल, सौगन्धिक, कुरुविन्द, कुरुबिल्व, लोहित, कुरुविन्दक, लक्ष्मीपुष्प, अरुणोपल)।

सं०	पद्मराग, माणिक्य।	तै०	माणिक्यं।
हिं०	मानिक, लाल।	इं०	रुबी। Ruby
बं०	माणिक।	लै०	रुबिनस्। Rubinus
म०	माणिक।	फा०	लालबदख्शानी।
गु०	माण्यक, चुनी।	अ०	लाल।
क०	माणक।		

माणिक्यगुणाः ।

माणिक्यं लेखनं शीतं कषायं मधुरं सरम् ।
चक्षुष्यं मंगलं दाहदुष्टग्रहविषापहम् ॥

अर्थ-मानिक-लेखन, शीतल, कषेला, मधुर, सारक, नेत्रोंको हितकारी, मङ्गलकारक तथा दाह, दुष्टग्रह और विषनाशक है ।

माणिक्यभेदवर्णाः ।

सिंहले तु भवेद्रक्तं पद्मरागमनुत्तमम् । पीतं काणपुरोद्भूतं कुरुविन्दमिति स्मृतम् ॥ अशोकपल्लवच्छायमिदं सौगन्धिकं विदुः । तुम्बुरुच्छायया नीलं नीलगन्धि प्रकीर्त्तितम् ॥ उत्तमं सिंहलोद्भूतं निकृष्टं तुम्बुरूद्भवम् । मध्यमं मध्यमं ज्ञेयं माणिक्यं क्षेत्रभेदतः ॥

अर्थ-सिंहल देशमें लाल रंगका पद्मराग नामवाला रत्न उत्पन्न होता है यह सर्वमें श्रेष्ठ जानना । कानपुर नामवाले देशमें कुरुविन्द नामवाला माणिक उत्पन्न होता है यह पीला और मध्यम जानना । अशोक वृक्षके पल्लवकी सदृश रंगके सौगन्धिक नामवाले माणिक्यको मध्यम जानना । तुम्बुरु देशमें उत्पन्न होनेवाले नीले रंगके माणिकको नीलगन्धि माणिक कहते हैं यह अत्यन्त निकृष्ट है अर्थात् सिंहल देशमें उत्पन्न होनेवाला माणिक अत्युत्तम, तुम्बुरु देशमें उत्पन्न होनेवाला अत्यन्त निकृष्ट और अन्य देशमें उत्पन्न होनेवाले सर्व मध्यम जानने ।

बहुमूल्यमाणिक्यगुणाः ।

बन्धूकगुञ्जाशकलेन्द्रगोपाजपासुमासृक्समवर्णशोभाः ।
भ्राजिष्णवो दाडिमबीजवर्णास्तथापरे किंशुकपुष्पभासः ॥
सिन्दूरपद्मोत्पलकुंकुमानां लाक्षारसस्यापि समानवर्णाः ।
चकोरपुंस्कोकिलसारसानां नेत्रावभासश्च भवन्ति केचित् ॥

अर्थ-बन्धूक पुष्पकी समान, गुञ्जाकी, इंद्रगोप कीडेकी और जपाके फूलकी समान वर्णवाला और शोभा संयुक्त तथा चमकदार, अनारके बीजकी सदृश रंगवाला माणिक होता है । और कोई कहते हैं टेसूके फूलकी समान प्रभायुक्त, सिंदूरकी सदृश, लाल कमलकी समान, कुम्कुमकी समान, लाखकी समान तथा

चकोर, कोकिला, और सारस इनके नेत्रोंकी कांतिकी समान वर्णवाले माणिक क्वचित् होते हैं ।

अन्यच्च ।

क्वचित्तु स्फाटिकोत्थानां देशे तुवरसंज्ञके । सधर्म्माणः प्रजायन्ते स्वल्पमूल्या हि ते स्मृताः ॥ वर्णानुयायिनस्तेषां रंध्रदेशे तथापरे । यज्जायन्ते तु ते केचिन्मौल्यलेशमवाप्नुयुः॥शोभाद्वितयवन्तो ये मणयः क्षतिकारकाः । उभयत्र पदं येषां तेन च स्यात्पराभवः ॥

अर्थ-कहीं तुवर देशमें स्फटिक मणिका माणिक बना लेते हैं वह स्वल्प मूल्यका होता है । रंध्रदेशमें उन्हींके रंगकी समान दूसरा बनाते हैं वह उससे भी कम कीमतके होते हैं वह मणियें हानिकारक हैं । और जिनके दोनों ओर पद हैं उन माणिकोंसे हार होता है ।

अथ तोल ।

गुञ्जाफलप्रमाणस्तु दशसप्ततिगुञ्जकात् । पद्मरागस्तुलयति यथा पूर्वं महागुणः ॥ बिम्बीफलसमाकारः षड्वसुदशतोलकः । पद्मरागस्तुलयति यथोत्तरमहागुणः ॥ अतः परं प्रमाणेन मानेन न च लक्ष्यते ।

अर्थ-तोल-एक गुञ्जासे लेकर १७ गुञ्जा प्रमाण तक पद्मराग मणि तुलती है-वह बडे गुणों करके युक्त होती है । पद्मराग मणि जितनी २ तोलमें अधिक होगी उतनी २ ही उसकी कीमत भी अधिक होगी । जिसका कंदूरीकी समान आकार है और ६-८-१० तोलेकी तोलेमें हैं उसकी कीमत यथाक्रमसे अधिक जाननी । इसके उपरान्त प्रमाणसे मालूम होता है ।

अथ मूल्यम् ।

षड्विंशतिसहस्राण्येकमणेः पलप्रमाणस्य । कर्षत्रयस्य विंशति रुपरिष्टात्पद्मरागस्य ॥ अर्द्धपलस्य द्वादश कर्षस्यैव षट्सहस्राणि । यच्चाष्टमासिकमितं तस्य सहस्रत्रयं मौल्यम् ॥ माषचतुष्टयं यत्स्यात्तस्य दशशतं मौल्यम् ॥ माषद्वयमितो

यस्तु पद्मरागः सुनिर्मलः । तस्य पंचशतं मौल्यं रौप्यं कर्षस्य चेरितम् ॥ माषकैकमितो यस्तु पद्मरागो गुणान्वितः । शतैकसंमितं वाच्यं मौल्यं तस्य विचक्षणैः ॥ अतो न्यूनप्रमाणास्तु पद्मरागा गुणोत्तराः ॥ स्वर्णाद्द्विगुणमौल्येन मूल्यं तेषां प्रकल्पयेत् । व्रणे मूल्यं चार्द्धतेजोहीनस्य मूल्यमष्टांशः । अल्पगुणो बहुदोषो मूल्यं नाप्नोति विंशांशम् ॥

अर्थ–जो माणिक तोलमें ४ तोलेभर हो उसकी कीमत २६०००, रुपये हैं । और जो माणिक ३ तोलेभर हो उसकी कीमत २००००, रुपये हैं । जो माणिक तोलम दो तोलेभरहो उसकी कमित १२०००, रुपये ह । और जो तोलमें एक तोलाभर हो उसकी कीमत ६०००, रुपये हैं । और जो तोलमें आठ मासे हो उसकी कीमत ३०००, रुपये हैं और जो तोलमें चार मासभर हो उसकी कीमत १०००, रुपये जानने जो पद्मराग तोलमें दो मासेका हो और निर्मळ हो उसका मूल्य, ५००, रुपये जानने । जो पद्मराग तोलमें एक मासेका है और गुणसंयुक्त हैं उसका मूल्य १००, जानने । और जो तोलमें इससे भी कम है तथा गुणोंमें श्रेष्ठ ह उसका मूल्य सुवर्णसे दुगुना जानना और जो उसमें व्रण हो तो आध मूल्यका जानना । और हीनतेजका हो तो कीमत आठवें भाग जाननी । जिसम अल्पगुण और बहुत दोष हों तो उसकी कीमत बीसवें भाग भी नहीं ।

रत्नपरीक्षा ।

बालार्ककरसंस्पर्शाद्यः शिखां लोहितां वमेत् । रंजयेदाश्रयं वापि स महागुण उच्यते ॥ दुग्धे शतगुणे क्षिप्तो रंजयेद्यः समंततः । वमेच्छिखां लोहितां वा पद्मरागः स उत्तमः । अन्धकारे महाघोरे यो न्यस्तः सन्महामणिः ॥ प्रकाशयति सूर्य्याभः स श्रेष्ठः पद्मरागकः ॥ पद्मकोशेषु यो न्यस्तः प्रकाशयति तत्क्षणात् ॥ पद्मरागवरो ह्येष देवानामपि दुर्लभः । सर्वारिष्टप्रशमनः सर्वसम्पत्तिदायकः ॥ बालार्काभिमुखं कृत्वा दर्पणे धारये-

न्मणिम् । तत्र कान्तिविभागेन च्छायाभागं विनिर्दिशेत्॥ अप्रणश्यति सन्देहे शिलायां परिघर्षयेत्। घृष्टो योऽत्यन्तशोभावान्परिमाणं न मुञ्चति ॥ स ज्ञेयोऽशुद्धजातीयो ज्ञेयाश्चान्ये विजातयः। अत्यन्तलोहितो यश्च पद्मरागः स उच्यते ॥

अर्थ-जो प्रातःकालके सूर्य्यकी किरणोंके स्पर्श करतेही लाल कान्तिको त्याग देता है और जो अपने आश्रितको प्रसन्न करे वह पद्मरागरत्न महागुणवाला ह। जो अपनेसे सौगुने दूधमें पडा हुआ भी चारों ओरसे कान्ति प्रगट करता है और जो लाल रङ्ग की कान्तिको फैलावे है वह पद्मरागरत्न अत्यन्त उत्तम है। महाघोर अंधकारमें रक्खा हुआ यह महारत्न यदि सूर्य्यकी समान प्रकाश करे तो उत्तम है। जो माणिक मुद्रितकमलमें रखनेसे तत्काल कमलको प्रफुल्लित करदे वह उत्तम पद्मरागरत्न देवताओंकोभी दुर्लभ है सम्पूर्ण अरिष्टोंको शान्ति करनेवाला और सम्पूर्ण सम्पत्तियोंको देनेवाला है। प्रातःकालके सूर्य्यके सन्मुख दर्पणमें इस मणिको धरे उसके कान्तिविभागसे छायाभागको जाने संदेहको दूर करनेके लिये इसको पत्थरपर घिसे जो घिसनेसे अत्यन्त शोभावाला हो और परिमाणको त्याग न करे तो शुद्ध पद्मरागमणि जाने और दूसरे विजातीय पद्मराग हैं जो अत्यन्त लाल हैं वेभी पद्मराग मणि हैं।

माणिक्यगुणाः।

सपत्नमध्येऽपि कृताधिवासं प्रमादवृत्तावपि वर्त्तमानम्।
न पद्मरागस्य महागुणस्य भर्त्तारमापत्समुपैति काचित् ॥
दोषोपसर्गप्रभवाश्च ये ते नोपद्रवास्तं समभिद्रवन्ति ।
गुणैः सुमुख्यैः सकलैरुपेतो यः पद्मरागं प्रयतो बिभर्त्ति ॥

अर्थः-शत्रुओंके बीचमें रहने और प्रमाद करनेपर भी इस महागुणवाली पद्मरागमणिके प्रभावसे इसका धारण करनेवाला कभी आपत्तिको प्राप्त नहीं होता जितने दोष हैं उनमेंसे कोई भी इसको प्राप्त नहीं होता जो पद्मराग मणिको धारण करता है वह सम्पूर्ण गुणोंसे संयुक्त हो जाता है।

अन्यच्च।

माणिक्यं मधुरं स्निग्धं वातघ्नञ्च रसायनम् ।
कफघ्नं दीपनं वृष्यं भूतघ्नञ्च क्षयार्त्तिनुत् ॥

अर्थ-माणिक्य-मधुर, स्निग्ध, वातविनाशक, रसायन, कफनाशक दीपन, वीर्य्यवर्द्धक, भूत और क्षयरोगको दूर करे है ।

अपिच ।

माणिक्यं मधुरं स्निग्धं वातपित्तप्रणाशनम् ।
रत्नप्रयोगप्रज्ञानां रसायनकरं परम् ॥

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, रत्नके प्रयोगमें श्रेष्ठ और रसायन है ।

अन्यच्च ।

माणिक्यं मधुरं स्निग्धं वातघ्नं च रसायनम् ।
पित्तं व्रणं नाशयति पूर्वैरिति निवेदितम् ॥

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातनाशक, रसायन, पित्तनाशक और व्रणको दूर करे है ।

मौक्तिकनामानि ।

मौक्तिकं शुक्तिजं मुक्ता शौक्तिकेयं शशिप्रभम् ।
अम्भःसारमिन्दुरत्नं लक्ष्मी मुक्ताफलं हिमम् ।

अर्थ-मौक्तिक, शुक्तिज, मुक्ता, शौक्तिकेय, शशिप्रभ, अम्भः सार, इन्दुरत्न, लक्ष्मी, मुक्ताफल, हिम (शुक्तिबीज, हारी, कुवल, सौम्य, तार, तारा, मौतिक, तौतिक, शीतल, नीरज, नक्षत्र, अम्भःसार, बिन्दुफल, मुक्तिका, शौक्तेयक, शुक्तिमणि, स्वच्छ, हिमबल, सुधांशुभ, सुधांशुरत्न, लक्ष, शशिप्रिय, हैमवत, भूरुह, शौक्तिक) ।

सं०	मुक्ता ।	त०	मात्यालु ।
हिं०	मोती ।	इं०	पर्ल । Pearl
बं०	मुक्ता ।	लैं०	मार्गरिटा । Margraira
म०	मोती ।	फा०	मखारिद ।
गु०	मोती ।	अ०	लोलो ।
क०	मौक्तिक ।		

मौक्तिकगुणाः ।

मुक्ता कषाया स्वाद्वी च बलपुष्टिप्रदायिनी ।
वृष्या नेत्रहिता राजयक्ष्मघ्नी विषनाशिनी ।
स्त्रीणां कान्तिरतिकरी धारणाद्ग्रहपापनुत् ।(आ० सं०)

अर्थ-मोती-कषेला, स्वादिष्ठ, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी तथा राजयक्ष्मा और विषविनाशक है । इसको धारण करनेसे-स्त्रियोंकी कान्ति और रति बढतीहै तथा ग्रह और पापका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

मौक्तिकं सुमधुरं सुशीतलं दृष्टिरोगशमनं विषापहम्। राजयक्ष्मपरिकोपनाशन क्षीणवीर्य्यबलपुष्टिवर्द्धनम् ॥ कफपित्तक्षयध्वंसि कासश्वासाग्निमांद्यजित् । पुष्टिदं वृष्यमायुष्यं दाहघ्नं मौक्तिकं मतम् । मुक्तानां हारविधृतिर्दाहपित्तविनाशिनी । कान्ति हर्षं नेत्रसुखं ददातीति प्रकीर्तितम् ॥ (नि.र.)

अर्थ-मोती-मधुर, शीतल, दृष्टिरोगको दूर करनेवाला, विषविनाशक, राजयक्ष्माको हरनेवाला, क्षीणवीर्य्यवालेको बल और पुष्टि देनेवाला है। मोती-कफ, पित्त, क्षय, खांसी, श्वास, मंदाग्नि और दाहको दूर करेहै, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक और आयुवर्द्धक है । मोतियोंका हार धारण करनेसे दाह और पित्त दूर होता है, कान्तिजनक, हर्ष बढाता है और नेत्रोंमें सुख होता है ।

मौक्तिकोत्पत्तिः ।

शुक्तिः शंखो गजः क्रोडः फणीमत्स्यश्च दर्दुरः ।
वेणुश्चाष्टौ समाख्याताः सुज्ञैर्मौक्तिकयोनयः ॥

अर्थ-पंडितोंने सीप, शंख, हाथी, सूअर, सांप, मछली, मेडक और बांस यह आठ मोतीके उत्पन्न होनेके स्थान कहे हैं ।

गजमौक्तिक ।

यद्दन्तावलकुम्भसम्भवमदः पीतारुणं संदरुक् ।
धात्रीदघ्नतयात्र रत्नमधमं काम्बोजकुम्भोद्भवम् ॥

अर्थ-गजमोती-काम्बोजदेशके बलवान् हाथियोंके: गंडस्थलके निकट किंचित् लाल और पीले रंगका मोती उत्पन्न होताहै. उसको स्त्री धारण करती हैं और वह अधम रत्न है ।

बराहमौक्तिक ।

एकाकी ससुखेन निस्पृहतया यः काननं गाहते

तस्यानादिवराहवंशजनुषः कोलस्य मूर्ध्नि स्थितम् ।
कंकोलाकृतिमिन्दुवत्सधवलं दैवादवाप्नोति तत्
यस्तं धारयते भवेत्सनिधिभिर्मर्त्यो धनाधीशवत् ॥

अर्थ–वराह मोती–आदि वराह अवतारके वंशका जो सूअर इकला सुखसहित निस्पृह वनमें विहार करता है उस सूअरके मस्तकमें मोती होताहै, वह मोती कंकोलकी समान आकृतिवाला, चन्द्रमाकी समान धवल होता है, यह मोती प्रारब्धके ही वशसे प्राप्त होताहै । इस मोतीके मिलनेसे दरिद्री धनाधीश होजाते हैं ।

वेणुमौक्तिक ।

मुक्ताः सन्ति कुलाचलेषु करकाकान्त्युद्भवा वंशजाः।
कर्कन्धूफलबन्धवो निदधते कंठेषु शुद्धांगनाः ॥

अर्थ–वंशमोती–कुलाचल पर्वतपर उत्तमकान्तिवाले बांस होतेहैं उन बांसोंमें बेरकी समान मोती उत्पन्न होताहै उस मोतीको स्त्रियां कण्ठमें धारण करती हैं ।

मत्स्यमौक्तिक ।

प्रोष्ठीगर्भगतस्तु मौक्तिकमणिर्गजैः समः पाटली-
पुष्पाभःस न लक्ष्यते भुवि जनैरस्मिन्कलौ पापिभिः॥

अर्थ–मत्स्यमोती–मछलीके पेटमें होतेहैं यह मोती गजमोतीकी समान आकृतिवाले और पाढलके फूलकी समान रंगवाले होतेहैं और यह मोती इस पृथ्वीपर पापीजनोंकी दृष्टि नहीं पडतेहैं ।

दर्दुरमौक्तिक ।

यन्मेघोदरसम्भवं तदवनीमप्राप्तमेवामरैर्व्योमस्थैरपनीयते विनियतं वर्षासु मुक्ताफलम्॥ तिग्मांशोरपि दुर्निरीक्ष्यमकृशं सौदामिनीसन्निभं देवानामपि दुर्लभं न मनुजस्यैतस्य प्राप्तिः पुनः ॥

अर्थ–वर्षाऋतुमें जो मेडक मेघोदरसे उत्पन्न होते और पृथ्वीके ऊपर नहीं गिरते हैं उन मेडकोंके उदरमें मोती उत्पन्न होतेहैं वह मोती पृथ्वीपर नहीं आते बीचमें देवता ग्रहण करलेते हैं वह मोती

सूर्य्यकी तेजसेभी अधिक और बिजलीकी समान प्रभावाले होते हैं देवताओंको भी दुर्लभ हैं और मनुष्यकी तो क्या बात है ।

शंखमौक्तिक।

शंखस्याच्युतहारणो जलनिधौ ये वंशजाः कम्बुका-
स्तेष्वंतः किल मौक्तिकं भवति वै तच्छुक्रतारानिभम्॥
कापोताण्डसमं सुवृत्तमसकृच्छ्रीकं सरूपं लघु
स्निग्धं स्पर्शकृतं हि तच्च न पुनर्मर्त्यैस्तदा साद्यते ॥

अर्थ-पांचजन्य शंखके वंशके जो शंख समुद्रमें हैं उन शंखोंमें सफेद तथा नक्षत्रकी समान कान्तिवाले और कबूतरके अंडेकी समान गोल मोती उत्पन्न होते हैं वह मोती झलकदार, स्निग्ध, हलके और लक्ष्मीजनक हैं तथा वह एकबार मनुष्योंको स्पर्श होने पर फिर हाथ नहीं लगते हैं ।

सर्पजमौक्तिक ।

शेषस्यान्वयिनां फणासु फणिनां यन्मौक्तिकं जायते वृत्त
निर्मलमुज्ज्वलं शशिरुचि श्यामच्छवि श्रीकरम्॥कंकोलाकृति
कोपि कोटिसुकृतैः प्राप्नोति चेन्मानवः स स्याद्वाजिगजाधि-
को नृपसमो जातोपि नीचे कुले॥आस्ते सद्मनि चेत्स पन्नगम
णिस्ते यातुधानामरा हर्तुं रंध्रमवेक्षते इतरतः कुर्य्यान्महा-
शांतिकम् ॥

अर्थ-सर्पजमौक्तिक-शेषके वंशमें जो उत्पन्न हुये सर्प उन सर्पोंके फणोंमें उत्पन्न होते हैं वह मोती गोल, निर्मल, उज्ज्वल, चंद्रमाकी समान श्याम छबिवाले और कंकोलकी समान आकृतिवाले होते हैं वह मोती किसी करोड जन्मतक पुण्य करनेवाले मनुष्यकेही हाथ लगते हैं जिस मनुष्यको यह मोती प्राप्त होते हैं उसके गज अश्वादिककी वृद्धि होती ह और वह नीचकुलकाभी मनुष्य राजाके समान हो जाता ह आर उन मोतियोंको घरमें रखनेसे निश्चय राक्षसबाधा दूर होती है तथा महाशान्ति होती है ।

लक्षणम् ।

श्वेतस्निग्धमतीव बधुरतरं स्यात्पारसीकोद्भवम्।
रूक्षं काञ्चनवर्णसंकरयुतं स्याद्बार्वरं मौक्तिकम् ॥

शोणं तूर्मजसंभवंविदुरतिस्निग्धं तथा दोषजम्
चातुर्वर्ण्ययुतं सुलक्षणमिति श्लक्ष्णं कविश्रीकरम् ॥

अर्थ-पारसदेशके समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला मोती-श्वेत, स्निग्ध और अत्यन्त प्रकाशमान होता है अरबके समुद्रमें उत्पन्न होनेवाला मोती रूखा और कुछ सुवर्णकी समान रङ्गवाला होता है। और अन्य समुद्रोंमें उत्पन्न होनेवाले मोती लाल, स्निग्ध, दोषजनक, चारवर्णयुक्त, सुलक्षण और चिकने तथा लक्ष्मीको करनेवाले होते हैं।

शुक्तिमौक्तिक।

षट्स्वेतेष्वपि रुक्मिणीव जगति ख्यातिं गता रुक्मिणी
नाम्ना शुक्तिमतीव चोत्तमगुणा सिंधौ समुज्जृम्भते ॥
तस्या गर्भभवन्तु कुंकुमनिभं जातीफलाकृत्तिनम्
स्थूलं स्निग्धमतीव निर्मलतमं भूमौ प्रकाशं सदा॥

अर्थ-जो सीप रूपेकी समान या सोनेकी समान दीप्तिमान अत्यन्त उत्तमगुणयुक्त समुद्रमें उत्पन्न होती है उस सीपमें कुंकुमकी समान प्रभायुक्त जायफलकी समान रूपवाले, स्थूल, स्निग्ध, अत्यन्त निर्मल और सदैव प्रकाश करनेवाले मोती उत्पन्न होते हैं।

मौक्तिकपरीक्षा।

यद्विच्छायं मौक्तिकं व्यंगकायं शुक्तिस्पर्शं रक्ततां चापि धत्ते।
मत्स्याक्षांकं रूक्षमुत्ताननिम्नं नैतद्धार्यं धीमता दोषदायि ॥
नक्षत्राभं वृत्तमत्यन्तमुक्तं स्निग्धं स्थूलं निर्व्रणं निर्मलं च।
न्यस्तं धत्तेगौरवं यत्तुलायां निर्मौल्यंतन्मौक्तिकं सिद्धिदायि॥

अर्थ-जो मोती कान्तिरहित, व्यंगशरीरवाला, सीपीमें लगा हुआ, लाल, मछलीकी आंखोंकी समान चिह्नित, रूखा और ऊँचा नीचा होता है ऐसे दोषदायक मोतीको बुद्धिमान् पुरुष नहीं धारण करे। जो मोती नक्षत्रकी समान कान्तिवाला, गोल, स्निग्ध, स्थूल, व्रणरहित, निर्मल और तोलमें भारी होताहै ऐसा मोती अमूल्य और सिद्धिदायक है।

प्रवालनामानि ।

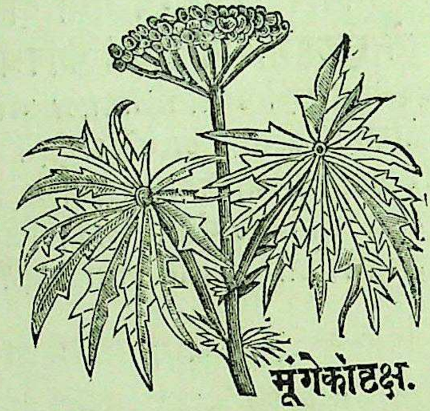

मूंगेकावृक्ष.

प्रवालोंगारकमणिर्विद्रुमोंभोधिपल्लवः ।
भौमरत्नं च रत्नांगो रक्तांगश्च लतामणिः ।

अर्थ-प्रवाल, अङ्गारकमणि, विद्रुम, अम्भोधिपल्लव, भौमरत्न, रत्नाङ्ग, रक्ताङ्ग, लतामणि (रक्तकन्द, रक्तकन्दल, रक्ताकार)

संस्कृतभाषामें	प्रवाल ।
हिन्दीभाषामें	मूंगा ।
वंगभाषामें	पला, मुङ्गा ।
मराठीभाषामें	पोंवळें ।
गुजरातीभाषामें	परवाला ।
कर्णाटकीभाषामें	अवलेहवत ।
तैलङ्गीभाषामें	प्रवालकं, पागडालु ।
इग्रेजीभाषामें	रेड़कोरल । Red coral
लैटिन्भाषामें	कोरेलियंरुब्रं । Coralium rubrum
फारसीभाषामें	मिरजान्, वेखामिरजां ।
अरबीभाषामें	एहेमखुसूसुद ।

प्रवालगुणाः ।

वीर्य्यवृद्धौ तथा पुष्टौ यस्येच्छा वर्तते परा ।
विद्रुमं शोधितं तेन सेवनीयं गुणप्रदम् ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंको वीर्यके बढानेकी और शरीरकी पुष्टि

इच्छा वर्त्तती है उनको शुद्धप्रवाल (मूँगा)का सेवन करना चाहिये और यह प्रवाल अनेक गुणदायक है।

अन्यच्च।

विद्रुमं सर्वदोषघ्नं दीपनं रुचिपुष्टिदम्।
क्षयपाण्डुज्वरश्वासकासमेदोगदाञ्जयेत्॥

अर्थ-मूँगा-सर्वदोषनाशक, दीपन, रुचिकारक, पुष्टिदायक तथा क्षय, पाण्डु, ज्वर, श्वास, खाँसी और मेदरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

प्रवालं मधुरं साम्लं कफपित्तार्त्तिदोषऽनुत्। वीर्य्यकान्तिकरं
स्त्रीणां धृतेर्मंगलदायकम्॥ क्षयपित्तास्रकासघ्नं दीपनं पाचनं
लघु। विषभूतादिशमनं विद्रुमं नेत्ररोगहृत्॥

अर्थ-मूँगा-मधुर, अम्ल, कफनाशक, पित्तनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक, कान्तिजनक, स्त्रियोंको धारण करनेसे मंगलदायक, क्षयनाशक, रक्तपित्तहारक, कासघ्न, दीपन, सारक, पाचक, हलका तथा ज्वर, विष, भूतादिबाधा, उन्माद, पाण्डुरोग, प्रमेह और नेत्ररोगको दूर करे है।

प्रवालमंजरीगुणाः।

प्रवालमंजरी सार्द्रा कामपुष्टिकरी नृणाम्।
सेविता सततं देहे वीर्य्यस्तम्भं करोति च॥

अर्थ-मूंगेकी कच्ची बेल-मनुष्योंके काम और पुष्टिको देनेवाली है और इसको निरंतर सेवन करनेसे वीर्य्यस्तम्भ होता है।

प्रवालोत्पत्तिलक्षणम्।

बालार्ककिरणारक्ता सागरसलिलोद्भवाश्च जलतापा।
न त्यजति निजां रुचिं निकषे घृष्टापि सा मृता जात्या॥
पक्वबिंबफलच्छायं वृत्तायतमवक्रकम्। स्निग्धमव्रणकं स्थूलं
प्रवालं सप्तधा शुभम्॥ आररंगं जलाक्रान्तिवक्रं सूक्ष्मं सको-
टरम्। रूक्षं कृष्णं लघु श्वेतं प्रवालमशुभं त्यजेत्॥

अर्थ-समुद्रमें बालसूर्य्यके किरणोंकी समान लाल मूंगेकी बेल उत्पन्न होती है वह बेल कसोटीपै घिसनेसेभी अपनी कान्ति और

रंगको नहीं छोडती तथा अमृतकी समान गुणकारी है। पक्की कन्दूरीके फलकी समान लाल, गोल, लम्बे, सरल, स्निग्ध, व्रणरहित और स्थूल इन सात लक्षणोंसे युक्त मूंगे उत्तम होते हैं । पीतलकी समान रंगवाले, पानीकी समान रंगवाले, वक्र (टेढे), सूक्ष्म, छिद्रयुक्त, रूक्ष, कृष्ण, हलके और श्वेत ऐसे मूंगे त्याज्य हैं ।

मरकतनामानि ।

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भं हरिन्मणिः ।

अर्थ-गारुत्मत, मरकत, अश्मगर्भ, हरिन्मणि (गारुत्मक, गरुडाश्म, मरक्त, राजनील, गरुडाङ्कित, रौहिणेय, सौपर्ण, गरुडोद्गीर्ण, बुधरत्न, अश्मगर्भज, गरलारि, वापबोल, गारुड, गरुडोत्तीर्ण, वाप्रबोल)

सं० मरकत ।
हिं० पन्ना ।
बं० पान्ना ।
म० पाचूरत्न ।
गु० लीलुंपानुं ।
क०. पाचि पच्चे ।

तै० नीलम् ।
इं० इमरील्ड । Emerold
लै० स्मेरेग्डस् । Smaragdus
फा० ज़ुमुर्रईप ।
अ० ज़मर्ईद ।

मरकतगुणाः ।

पाचिका शीतला रुच्या रसकाले मधुः स्मृता ।
पुष्टिकृद्विषहा वृष्या भूतबाधाम्लपित्तहा ॥

अर्थ-पन्ना-शीतल, रुचिकारक, मधुररसान्वित, पुष्टिकारक, विषनाशक, वीर्यवर्द्धक तथा भूतबाधा और अम्लपित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

ज्वरच्छर्दिविषश्वासं सन्तापाग्नेश्च मांद्यनुत् ।
दुर्नामपाण्डुशोफघ्नं तार्क्ष्यमोजोविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-पन्ना-ज्वर, वमन, विष, श्वास, सन्ताप, मन्दाग्नि, बवासीर, पाण्डुरोग और सूजनको दूर करेहै और ओजको बढानेवाला है ।

मरकतमणिपरीक्षा ।

स्वच्छं गुरु स्निग्धगात्रं च मार्दवसमेतव्यंगं बहुरंगम् । शृंगारीमरकतं बिभृयात् । शर्करिलं रूक्षं मलिनम् । लघुहीनकान्तिकल्मषं त्रासयुतं विकृतांगं मरकतमणिमपि नोपयुंजीत ।

अर्थ-स्वच्छ, भारी, स्निग्ध, मृदु, अव्यंग और बहुरंगवाला ऐसा पन्ना शृङ्गारी मनुष्योंको धारण करना चाहिये । खरखरा, रूखा, मलिन, हलका, कान्तिहीन, कल्मषयुक्त, त्रासयुक्त और विकृतांग धारण नहीं करे ।

अपिच ।

हरिद्वर्णं गुरु स्निग्धं स्फुटरश्मिरयं शुभम् । भासुरं भासनं ताक्ष्यं गात्रसमं सुसंमतम् ॥ कपिलं कर्कशं नीलं पाण्डु कृष्णं च लाघवम् ॥ चिपटं विकृतं कृष्णं रूक्षं ताक्ष्यं न शस्यते । (रत्नाकर)

अर्थ-हरेरंगवाला, भारी, स्निग्ध, कान्तिवान्, तेजस्वी, दीप्तियुक्त और गरुडकी समान रूपवाला ऐसा पन्ना उत्तम है । कपिलवर्ण, खरखरा, नीला, पाण्डुवर्ण, कृष्ण, हलका, चिपट, विकृत और रूखा ऐसा पन्ना उत्तम नहीं होता ।

पुष्परागनामानि ।

पुष्परागो जीवरत्नं पीतस्फटिक इत्यपि ।

अर्थ-पुष्पराग, जीवरत्न, पीतस्फटिक, (पुष्पराज, मंजुमणि, वाचस्पतिवल्लभ, पीत, पीतरक्त, पीताश्मा, गुरुरत्न, पीतमणि)

सं०	पुष्पराग ।	क०	पुष्पराग ।
हिं०	पुखराज ।	तै०	पुष्परागम् ।
बं०	पुष्पराज ।	इं०	टोपाज । Topag
म०	पुष्कराज ।	ल०	टोपाजीयो । Topagio
गु०	पुखराज, पीलु रत्न ।		

पुष्परागगुणाः ।

पुष्परागं विषच्छर्दिकफवाताग्निमांद्यजित् ।
दाहकुष्ठार्शशमनं दीपनं लघुपाचनम् ॥

अर्थ-पुखराज-विष, वमन, कफ, वात, मन्दाग्नि, दाह, कुष्ठ, और बवासीरको दूर करेहै, दीपन, हलका और पाचक है ।

अन्यच्च ।

पुष्परागोम्लः शीतः स्याद्वातलोग्निश्च दीपनः ।
वृष्यो वयःस्थापकश्च प्रज्ञाबुद्धिविवर्द्धनः ॥
वातनाशकरः प्रोक्तो मुनिभिः पारदर्शिभिः ।

अर्थ-पुखराज-अम्ल, शीतल, बादी, अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक, प्रज्ञाजनक, बुद्धिवर्द्धक और वातविनाशक है।

पुष्परागलक्षणम्।

पुष्परागं गुरु स्निग्धं स्वच्छं स्थूलं समं मृदु।
कार्णिकारप्रसूनाभं मसृणं शुभमष्टधा॥

अर्थ-पुखराज-भारी, चिकना, निर्मल, स्थूल, गोल, नरम, अमलतासके फूलकी समान पीलेरंगका और मसृण इन आठ प्रकारसे पुखराज उत्तम जानना।

अन्यच्च।

कृष्णं विद्धाङ्कितं व्यंगं धवलं मलिनं लघु। विच्छायं शर्कराभागं पुष्परागं सदोषलम्॥ स्वच्छायपीतगुरुगात्रसुरंगशुद्धं स्निग्धं च निर्मलमतीव सुवृत्तशीलम्। यत्पुष्परागममलं कलयेदमुष्य पुष्णाति कीर्तिमतिशौर्यसुखायुरर्थान्॥ अयं खलु पुष्परागो जात्यस्तथा चायं परीक्षकैरुक्तः।

अर्थ-जो पुष्पराग-काला, विद्ध, अंकित, व्यंग (झाईयुक्त) सफेद, मलिन, हलका, बेरंग और खरखरा ऐसा पुखराज दोषवाला होताहै। और जो दीप्तिवान्, पीला, भारी, उत्तमरंगदार, शुद्ध, स्निग्ध, निर्मल और उत्तम गोल ऐसा पुखराज श्रेष्ठ होताहै यह पुखराज कीर्ति, शौर्य, सुख, आयु अर्थको देवेहै।

नीलमणिनामानि।

नीलस्तु शौरिरत्नः स्यान्नीलाश्मा नीलरत्नकः।
नीलोपलस्तृणग्राही महानीलः सुनीलकः॥

संस्कृतभाषामें-नील, शौरिरत्न, नीलाश्मा, नीलरत्नक, नीलोपल, तृणग्राही, महानील, सुनीलक (मसार)

हिन्दीभाषामें	नीलमणि।
वंगभाषामें	नीलमणि।
मराठीभाषामें	नीलमणि।
गुजरातीभाषामें	नीलम्, कालुंनग।
कर्णाटकीभाषामें	नील।

तैलिङ्गीभाषामें	नीलं ।	
इंग्रेजीभाषामें	सेफायर	Saffire
लैटिनभाषामें	सेफायर्स	Saffirus

नीलगुणाः ।

श्वासकासहरं वृष्यं त्रिदोषघ्नं सुदीपनम् ।
विषमज्वरदुर्नामपापघ्नं नीलमीरितम् ॥

अर्थ-नीलम्-श्वास, खांसी, त्रिदोष, विषमज्वर, बवासीर और पापनाशक है, वीर्यवर्द्धक और अग्निप्रदीपक है ।

अन्यच्च ।

नीलः सतिक्तकोष्णश्च कफपित्तानिलापहः ।
यो दधाति शरीरे च सौरिमर्दनदो भवेत् ॥

अन्यच्च ।

अर्थ-नीलम्-कडवा, गरम, वातकफपित्तनाशक और इसको शरीरमें धारण करनेसे शनिग्रहकी बाधा दूर होती है ।

नीलस्य वर्णभेदाः ।

सितशोणपीतकृष्णच्छाया नीलाः क्रमादिमे कथिताः ।
विप्रादिवर्णसिद्धयै धारणमस्यापि वज्रवत्फलदम् ॥

अर्थ-सफेद, लाल, और काला इन भेदोंसे नीलम् चार प्रकारका है तहां सफेद रंगका ब्राह्मण, लालरंगका क्षत्रिय, पीले रंगका वैश्य और काले रंगका शूद्र होता है । नीलम् अंगमें धारण करनेसे हीरेकी समान फल देता है ।

गोमेदनामानि ।

पिंगस्फटिको गोमेदोऽगस्तिसत्त्वं तमोमणिः ।

अर्थ-पिंगस्फटिक, गोमेद, अगस्तिसत्त्व, तमोमणि (गोमेदक, पीतरत्नक, बाहुरत्न, स्वर्भानव)

संस्कृतभाषामें	गोमेदक ।	क०	गोमेद ।	
हिन्दीभाषामें	गोमेदमणि ।	तैलिङ्गीभाषामें	गोमेदकं ।	
वंगभाषामें	गोमेद ।	इं०	ओनिक्स	Onyx
मराठीभाषामें	गोमेदमणि ।	ल०	ओनिक्स ।	Onyx
गु०	गोमूत्र जेवुं पीलारंगनुं			

गोमेदकगुणाः ।

गोमेदकोम्लश्चोष्णश्च वातकोपविकारनुत् ।
दीपनः पाचनश्चैव धृतोयं पापनाशनः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, उष्ण, वातके कोपको शान्ति करनेवाली, दीपन, पाचक और इसको शरीरमें धारण करनेसे पापका नाश होता है ।

अन्यच ।

गोमेदं कफपित्तघ्नं क्षयं पाण्डुक्षयंकरम् ।
दीपनं पाचनं रुच्यं त्वच्यं बुद्धिप्रबोधनम् ॥

अर्थ-गोमेदमणि-कफपित्तनाशक, क्षयनाशक, पाण्डुरोगहारक दीपन, पाचक, रुचिकारी, त्वचाको हितकारी और बुद्धिप्रबोधक है ।

अपिच ।

गोमेदोम्लः पापकश्च चक्षुष्योष्णोग्निदीपनः ॥
लघुर्वातस्य कासस्य नाशकारी प्रकीर्त्तितः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, पाचक, नेत्रोंको हितकारी, गरम, अग्निप्रदीपक, हलकी तथा वात और खांसीको दूर करे है ।

गोमेदपरीक्षा ।

हिमालये वा सिन्धौ वा गोमेदमणिसम्भवः । स्वच्छकान्तिर्गुरुः स्निग्धो वर्णाढ्यो दीप्तिमानपि ॥ वलक्षः पिञ्जरो धन्यो गोमेद इति कीर्त्तितः।चतुर्धा जातिभेदस्तु गोमेदोऽपि प्रशस्यते ब्राह्मणः शुक्लवर्णः स्यात्क्षत्रियो रक्त उच्यते । आपीतो वैश्यजातिस्तु शूद्रस्तु नील उच्यते ॥ छाया चतुर्विधा श्वेतारक्तपीताऽसिता तथा । गुरुप्रवाढ्यः सितवर्णरूपः स्निग्धो मृदुर्वाति महापुराणः ॥ स्वच्छस्तु गोमेदमणिर्धृतोयं करोति लक्ष्मीं धनधान्यवृद्धिम् । लघुर्विरूपोऽतिखरोऽन्यमानः स्नेहोपलिप्तो मलिनः खरोऽपि॥करोति गोमेदमणिर्विनाशं सम्पत्तिभोगाबलवीर्य्यराशेः। ये दोषा हीरके ज्ञेयास्ते गोमेदमणावपि ॥ परीक्षा वह्नितः कार्य्या शाणे वा बहुकोविदैः।स्फटिकेनैव कुर्व-

न्ति गोमेदप्रतिरूपिणम्॥ शुद्धस्य गोमेदमणेस्तु मूल्यं सुवर्णतो द्वैगुणयाहुरेके। अन्ये तथा विद्रुमतुल्यमूल्यं तथापरे चामरतुल्यमाहुः॥ चतुर्विधानामेषां तु धारणं परिसम्मतम्।

(भोजराजकृतयुक्तिकल्पतरुः)

अर्थ–गोमादमणि–हिमालय और सिन्धुमें होतीहै। स्वच्छकान्तिवाली, भारि, चिकनी, अच्छेवर्णवाली, दीप्तिमान्, गोल और पिंजरयुक्त ऐसी गोमेदमणि उत्तम होती है, जातिके भेदसे गोमेदमणि चार प्रकारकी है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तहां ब्राह्मण सफेद रंगकी, क्षत्रिय लाल रंगकी, वैश्य पीले रंगकी और शूद्र नीले रंगकी होती है। इसी प्रकार चार तरहकी छाया होती है सफेद, लाल, पीली और काली। जो भारी, सफेदरंगकी, चिकनी तथा अत्यन्त पुरानी और स्वच्छ हो ऐसी गोमेदमणिको धारण करनेसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है। जो हलकी, विरूप, खरदरी, स्नेहसे लिपटी हुईसी और मलीन है उस गोमेदमणिको धारण करनेसे–सम्पत्ति, भोग, बल और वीर्य्यका नाश होताहै। जो दोष हीरेमें होते हैं वह दोष गोमेद मणिमेंभी हैं। इसकी परीक्षा अग्नि और शानसे करनी चाहिये स्फटिक मणिकोभी गोमेदमणि बनालेते हैं। शुद्ध गोमेदमणिका मूल्य सुवर्णसे दूना है और कोई मूँगेकी बराबर कहते हैं। कोई अमररत्नकी समान कहते हैं। इसका चार प्रकारका धारण करना शुभ है।

वैदूर्य्यं राष्ट्रकं केतुरत्नं मेघखराङ्कुरम्।

अर्थ–वैदूर्य्य, राष्ट्रक, केतुरत्न, मेघखरांकुर (बालवायज, बालसूर्य्य, बालसूर्यक, कैतव, प्रावृष्य, अभ्ररोह, शराब्दांकुर, वीदूररत्न, विदूरज, केतुग्रहवल्लभ)।

संस्कृतभाषामें	वैदूर्य्य।
हिन्दीभाषामें	वैडूर्य्य, वैदूर्य, लहसुनिया।
वंगभाषामें	वैदूर्य्य।
मराठीभाषामें	वैडूर्य्यरत्न।
गुजरातीभाषामें	माजरानी आँख जेवुं लसाणियो।
कर्णाटकीभाषामें	वडूर्य्य।
तैलङ्गीभाषामें	वैडुर्य्य।
इंग्रेजीभाषामें	केट्सआइ। Catseye

अस्य गुणाः ।

वैडूर्य्यमुष्णमम्लञ्च कफमारुतनाशनम् ।
गुल्मादिदोषशमन भूषितञ्च शुभावहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वैडूर्य्य-गरम, अम्ल, कल्याणकारक तथा कफ, वात और गुल्मादि दोषोंको दूर करे है । एवं इसको धारण करनेसे शुभ फलको देता है ।

अन्यच्च ।

वैदूर्य्यं रक्तपित्तघ्नं प्रज्ञायुर्बलवर्द्धनम् ।
पित्तप्रधानरोगघ्नं दीपनं गुल्मनाशनम् ॥

अर्थ-वैदूर्य्यमणि-रक्तपित्तनाशक, प्रज्ञा, आयु और बलवर्द्धक, पित्तप्रधानरोगनाशक, दीपन और गुल्मको दूर करेह ।

अपिच

वैडूर्य्यमुष्णमम्लं स्यादग्निदं च रसायनम् ।
शूलगुल्मोदरकफवातनाशकरं मतम् ॥
अन्ये गुणा हीरकवद्विज्ञेया विबुधैः किल ।

अर्थ-वैडूर्य्यमणि-गरम, अम्ल, अग्निप्रदीपक,रसायन तथा शूल, गुल्म, उदरराग, कफ और वातका नाश करे है और गुण हीरेकी समान जानेन ।

उत्तमवदूर्य्यलक्षणम् ।

वैदूय्य श्यामशुभ्राभं समस्वच्छं गुरु स्फुटम् ।
भ्रमच्छुभ्रान्तरीयेण गार्भितं शुभमीरितम् ॥

अर्थ-जो वैडूर्य्यरत्न (लहसुनिया)-श्याम और शुभ्र तथा विमलकांतिवाला हो, समगोल, स्वच्छ, भारी, स्फुट, भीतरसे जिसमेंसे धवल और चन्द्रमाकी समान श्याम कांति हो ऐसा वैडूर्य्य उत्तम होता है ।

इति रत्नानि ।

अथोपरत्नानि ।

वैक्रान्तनामानि ।

वैक्रान्तश्चैव विक्रान्तं नीलवज्रं कुवज्रकम् ।
गोनासः क्षुद्रकुलिशं जीर्णवज्रञ्च गोनसम् ॥

अर्थ-वैक्रान्त,विक्रान्त, नीलवज्र, कुवज्रक, गोनास, क्षुद्रकुलिश, जीर्णवज्र, गोनस ।

वैक्रान्तगुणाः ।

वैक्रान्तस्तु त्रिदोषघ्नः षड्रसो देहदार्ढ्यकृत ।
पाण्डूदरज्वरश्वासकासक्षयप्रमेहनुत् ॥

अर्थ-वैक्रान्तमणि-त्रिदोषनाशक, षड्रसान्वित, देहको दृढ करनेवाला तथा पाण्डुरोग, उदररोग, ज्वर, श्वास, खांसी, क्षय और प्रमेहको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वैक्रान्तो वज्रसदृशो देहलोहकरो मतः ।
विषघ्नो रसराजश्च ज्वरकुष्ठक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ- वैक्रान्तमणिके गुण हीरेके समान हैं,देहको दृढ करनेवाली पारेके विषको हरनेवाली तथा ज्वर, कुष्ठ और क्षयरोगको दूर करेहै।

सूर्य्यकान्तनामानि ।

दीप्तोपलः सूर्य्यकान्तो ज्वलनाश्माग्निगर्भकः ।

अर्थ-दीप्तोपल, सूर्यकान्त, ज्वलनाश्मा,अग्निगर्भक (रविकान्त, अर्कोपल, तापन, तपनमणि, सूर्य्याश्मा, दहनोपम, सूर्यमणि) ।

संस्कृतभाषामें	सर्यकान्त ।
हिन्दीभाषामें	आतिशीशीशा, सूर्यकान्त ।
वंगभाषामें	आतसपाथर ।
मराठीभाषामें	सूर्यकान्तमणि ।
गुजरातीभाषामें	अगनचशमानो काच ।
इंग्रेजीभाषामें	मेग्निफाइंग ग्लास ।Magnifying glass

सूर्य्यकान्तगुणाः ।

सूर्य्यकान्तो भवेदुष्णो निर्मलश्च रसायनः ।
वातश्लेष्महरो मेध्यः पूजनाद्रवितुष्टिदः ॥ (र०नि०)

अर्थ-सूर्यकान्तमणि-गरम, निर्मल, रसायन, वात और कफनाशक, मेधाजनक और इसका पूजन करनेसे सूर्य संतुष्ट होताहै ।

अन्यच्च ।

सूर्य्यकान्तस्त्रिदोषघ्नो मेध्योष्णश्च रसायनः

कफवातहरः प्रोक्तः पूर्वैरायुर्वेदैर्जनैः ॥ (रत्नाकर)

अर्थ–सूर्यकान्तमणि–त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, रसायन, कफ और वातको दूर करैहै ।

शुद्धः स्निग्धो निर्व्रणो निस्तुषस्तु यो निर्घृष्टो व्योमनैर्मल्यमेति।
यः सूर्य्यांशुस्पर्शनिर्व्यूतवह्निर्जात्या सोयं चक्षते सूर्य्यकान्तः॥

अर्थ–जो चिकना, व्रणरहित, तुषरहित, घिसनेसे आकाशकी समान निर्मल होजाय और धूपमें रखनेसे जिसमें अग्नि बलउठे ऐसा सूर्य्यकान्त (आतिशीशीशा) उत्तम होताहै ।

चन्द्रकांतनामानि ।

चन्द्रकान्तः सोममणिः सिताश्मा प्रस्तरोपलः ।

अर्थ–चद्रकान्त, सोममणि, सिताश्मा, प्रस्तरोपल (चान्द्र, चन्द्रमणि, चन्द्रोपल, इन्दुकान्त, चन्द्राश्मा, संप्लवोपल, शीताश्मा, चन्द्रिकाद्राव, शशिकान्त) ।

संस्कृतभाषामें	चंद्रकान्त ।
हिंदीभाषामें	चन्द्रकान्त ।
वंगभाषामें	चन्द्रकान्त
मराठीभाषामें	चन्द्रकान्तमणि ।
कर्णाटकीभाषामें	चन्द्रकान्त ।
तैलिंगीभाषामें	चन्द्रकान्तम् ।

चन्द्रकान्तमणिगुणाः ।

चन्द्रकान्तमणिः शीतः स्निग्धः स्वच्छः शिवप्रियः ।
अस्रदाहग्रहालक्ष्मीविनाशनो निरन्तरम् ॥

अर्थ–चन्द्रकान्तमणि–शीतल, स्निग्ध, स्वच्छ, शिवप्रिय तथा रुधिरविकार, दाह, ग्रह और अलक्ष्मीका नाश करैहै ।

चन्द्रकान्तोद्भवजलगुणाः ।

चन्द्रकान्तोद्भवं रूक्षं शीतं दाहविनाशनम् ।

अर्थ–चंद्रकान्तमणिका जल–रूखा, शीतल और दाहको दूरकरैहै।

चन्द्रकान्तस्य स्वरूपम् ।

पूर्णेन्दुकरसंस्पर्शादमृतं स्रवति क्षणात् ।

चन्द्रकान्तं तदाख्यातं दुर्लभं तत्कलौ युगे ॥ (यु० क०)

अर्थ-चन्द्रमाकी किरणोंके स्पर्शसे जिसमें अमृत(जल) टपकताहै उसीको चन्द्रकान्तमणि कहतेहैं यह कलियुगमें अत्यन्त दुर्लभ है ।

स्फटिकनामानि ।

शैवः शूकः श्वेतरत्नं स्फटिको निस्तुषोपलम् ।

अर्थ-शैव, शूक, श्वेतरत्न, स्फटिक, निस्तुषोपल (स्फाटिक, स्फाटक, स्फटिकात्मा, स्फाटीक, स्फाटिकोपल, भासुर, स्फटिकोपल, शालिपिष्ट, धौतशिल, सितोपल, विमलमणि, निर्मलोपल, स्वच्छ, स्वच्छमणि, अमररत्न, निस्तुषरत्न, शिवप्रिय) ।

सं०	स्फाटिक ।	गु०	फाटकमणि ।
हिं०	स्फाटिक, फटिकमणि ।	क०	स्फाटिक ।
वं०	फटिक् ।	त०	स्फाटिक ।
म०	स्फटीक ।	इं०	क्रिष्टल ।

फटिकगुणाः ।

स्फटिकः समवीर्य्यः स्यात्पित्तदाहार्तिशोषनुत् ।
तस्याक्षमालाजपतो धत्ते कोटिगुणं फलम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-स्फाटिकमणि-समवीर्य्य तथा पित्त, दाहकी वेदना और शोषको दूर करे है इसकी मालाके जपनेसे कोटिगुण फल होता है ।

पेरोजनामानि ।

पेरोजं हरिताश्मा च भस्माङ्गं हरितं द्विधा ।

अर्थ-पेरोज, हरिताश्म, भस्माङ्ग और हरित इन भेदोंसे दो प्रकारका है ।

संस्कृतभाषामें	पेरोज ।
हिन्दीभाषामें	फिरोजा ।
बंगभाषामें	उपरत्नविशेष ।
मराठीभाषामें	पेरोज ।
गुजरातीभाषामें	पीरोजो ।
कर्णाटकीभाषामें	पेरोज ।
इंग्रेजीभाषामें	टरकोइझ । Tirkois
लाटन्भाषामें	टरचेसीयस टरचीना । Terchesieus Turchina

फारसीभाषामें	फिरोजा ।
अरबीभाषामें	फिरोजज ।

अस्य गुणाः ।

पेरोजं सुकषायं स्यान्मधुरं दीपनं परम् ।
स्थावरं जङ्गमञ्चैव संयोगाच्च तथा विषम् ॥
तत्सर्वं नाशयेच्छीघ्रं शूलं भूतादिदोषजम् ।

अर्थ-फिरोजा-कषेला, मधुर, दीपन और किसीके संयोगसे स्थावर तथा जंगम विषको दूर करे है और भूतादि दोषोंसे उत्पन्न हुए शूलका नाश करे है ।

काचनामानि ।

काचः कृत्रिमरत्नं च पिंगाणो मुकुरोपि च ।

अर्थ-काच, कृत्रिमरत्न, पिंगाण, मुकुर ।

सं०	काच ।	इ०	ग्लास । Glass
हिं०	काँच कश्च ।	ल०	ग्लेसम् । Glesum
बं०	काच ।	फा०	आबगीनां ।
म०	कांच ।	अ०	ज़ुजाज ।
गु०	काच।		

अस्या गुणः।

काचा तु सारका लघ्वी व्रणनेत्रहितावहा ।
लेखनी शूलहृत्प्रोक्ता वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-कांच-सारक, हलका, व्रण और नेत्रोंको हितकारी, लेखन और शूलनाशक है ।

दुग्धपाषाणनामानि ।

दुग्धपाषाणिका क्षीरी माधवी मेदसन्निभा ।

अर्थ-दुग्धपाषाणिका, क्षीरी, माधवी, मेदसान्निभा (दुग्धपाषाण, दुग्धपाषाणक, दुग्धाश्मा, गोमेदसान्निभ, वज्राभ, दीप्तिक, दुग्धी, क्षीरक्षव, सौध)

संस्कृतभाषामें	दुग्धपाशाण ।
हिंदीभाषामें	शिरगोला ।

वंगभाषामें	शिरगोला।
मराठीभाषामें	शिरगोळा।
गुजरातीभाषामें	दुधियो पाणो।
कर्णाटकीभाषामें	रंगवालियहरेल्ल।

अस्य गुणाः।

दुग्धपाषाणको रुच्य ईषदुष्णो ज्वरापहः।
पित्तहृद्रोगशूलघ्नः कासाध्मानविनाशनः॥

अर्थ-दुग्धपाषाण-रुचिकारक, ईषदुष्ण, ज्वरनाशक तथा पित्त, हृदयरोग, शूल, खाँसी और आध्मानको दूर करे है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे रत्नोपरत्नवर्गः समाप्तः॥ ८॥

अथ विषवर्गः।

विषनामानि।

काकोलो गरलः क्ष्वेडो विषं स्याद्दारदोपि च।
सौराष्ट्रिकः शौक्लकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः॥

अर्थ-काकोल, गरल, क्ष्वेड, विष, दारद, सौराष्ट्रिक, शौक्लकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन (आहेय, अमृत, गरद, कालकूट, कसाकूल, हारिद्र, रक्तशृङ्गिक, नील, गर, घोर, हालाहल, हलाहल शृङ्गी, भुगर, जाङ्गल, तीक्ष्ण, रस, रसायन, जंगुल, जांगुल, वत्सनाभ, जीवनाघात, किषल, प्राणहर)

संस्कृतभाषामें	वत्सनाभ, अमृत।
हिन्दीभाषामें	वचनाग, मीठाविष।
वंगभाषामें	काटविष, अमृतविष।
मराठीभाषामें	बचनाग।
गुजरातीभाषामें	छिंगडियो, वछनाग।
कर्णाटकीभाषामें	वशनवी।
तैलिङ्गीभाषामें	नाभी।
इंग्रजीभाषामें	एकोनाईट। AConite
लैटिन्भाषामें	एकोनाइटंफेरोक्स। Aconitumferox
फारसीभाषामें	जहर।
अरबीभाषामें	विष।

वत्सनाभविषगुणाः ।

वत्सनाभोतिमधुरः सोष्णो वातकफापहः ।
कण्ठरुक्सन्निपातघ्नः पित्तसन्तापकारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-(वत्सनाभ मीठा)-अत्यन्त मधुर, गरम, वातकफनाशक तथा कण्ठरोग और सन्निपातको दूर करेहै पित्त और सन्तापको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

विषं प्राणहरं प्रोक्तं व्यवायि च विकाशि च ॥
आग्नेयं वातकफहृद्योगवाहि मदावहम् ॥

अर्थ-विष-प्राणनाशक, व्यवायी, विकाशी, आग्नेय, वातकफनाशक, योगवाही और मदकारक है ।

अपिच ।

रूक्षमुष्णं तथा तीक्ष्णं सूक्ष्ममाशु व्यवायि च। विकाशि विशदश्चैव लघ्वपाकिं च ते दश ॥ तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्यात्पित्तं सशोणितम्।तैक्ष्ण्यान्मतिं मोहयति मर्म्मबन्धान्भिनत्ति च॥शरीरावयवान्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्धि करोति च । आशुत्वादाशुवत्प्रोक्तं व्यवायात्प्रकृतिं हरेत् । विकाशित्वाद्दीपयति दोषान्धातून्मलानपि । अतिरिच्यते वैशद्याद्दुश्चिकित्स्यश्च लाघवात्॥दुर्ज्जरं चाविपाकित्वात्तस्मात्क्लेशयते चिरम् ।

अर्थ-रूक्ष, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, आशु,व्यवायी,विकाशी,विशद, लघु और अपाकी यह दश गुण विषमें रहते हैं । तहाँ रूक्षगुणसे वायु प्रकुपित होतीहै । उष्णगुणसे पित्त और रक्त कुपित होते हैं । तीक्ष्णगुणसे मतिको मोहता और मर्मबन्धनको छिन्न करताहै । सूक्ष्मगुणसे सर्व शरीरके अवयवोंमें हठसे प्रवेश करके क्रियाओंका प्रकाश करताहै । आशुगुणसे अत्यन्त शीघ्र अपने कार्योंको प्रकाशित करता है । व्यवायिगुणसे प्रकृतिको नष्ट करता है । विकाशिगुणसे शारीरक वातादि दोष, रसादि धातु और मूत्रादि मलके समूहको फैलाताहै । विशदगुणके द्वारा अत्यन्त दस्तोंको लाताहै, लघु गुणसे अतिशय दुश्चिकित्स्य जानना और अपाकि गुणसे दुर्जर तथा तज्जन्य बहुत कालपर्यन्त क्लेश होताहै ।

अन्यच्च ।

विषं रसायनं बल्यं वातश्लेष्मविकारनुत् । कटु तिक्तं कषायञ्च मदकारि सुखप्रदम् ॥ व्यवायि च शिरोद्दाहि कुष्ठवातास्रनाशनम् । अग्निमांद्यश्वासकासप्लीहोदरभगन्दरम् ॥ गुल्मपाण्डुव्रणार्शांसि नाशयेद्विधिसेवितम् ॥

अर्थ-विधिसेवित विष-रसायन, बलकारक तथा वात, श्लेष्म, कुष्ठ, वातरक्त, अग्निमांद्य, श्वास, खाँसी, प्लीहा, उदररोग, भगन्दर, गुल्म, पाण्डु और व्रणका नाश करे है तथा चरपरा, कडवा, कषेला, मदकारी, सुखकारी और व्यवायी है ।

अपिच ।

विषं व्रणहरं प्रोक्तं व्यवायि च विकाशि च । आग्नेयं वातकफहृद्योगवाहि मदावहम् ॥ तदेव युक्तियुक्तन्तु प्राणदायि रसायनम् । पथ्याशिनां त्रिदोषघ्नं बृंहणं वीर्य्यवर्द्धनम् ।

अर्थ-विष-व्यवायी, विकाशी, योगवाही, मादक है. इसीको युक्तिपूर्वक सेवन करनेसे बलदायक, रसायन, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा व्रण, कफ और त्रिदोषजनित रोग नष्ट होते हैं ।

विषस्य प्रकारभेदाः ।

वत्सनाभः स हारिद्रः सक्तुकश्च प्रदीपनः । सौराष्ट्रिकः शृङ्गकश्च कालकूटस्तथैव च ॥ हालाहलो ब्रह्मपुत्रो विषभेदा अमी नव ।

अर्थ-वत्सनाभ, हारिद्र, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृङ्गक, कालकूट, हालाहल और ब्रह्मपुत्र इन भेदोंसे विष नव प्रकारका है ।

१ अथ वत्सनाभस्य स्वरूपम् ।

सिन्धुवारसदृक्पत्रो वत्सनाभ्याकृतिस्तथा ।
यत्पार्श्वे न तरोर्वृद्धिर्वत्सनाभः स भाषितः ॥

अर्थ-संभालुके पत्तोंकी समान बछडेकी नाभिकी आकृतिवाला और जिसके निकट दूसरा वृक्ष नहीं जमे उसको वत्सनाभ विष कहते हैं ।

२ अथ हारिद्रस्य स्वरूपम् ।

हरिद्रातुल्यमूलो यो हारिद्रः स उदाहृतः ।

अर्थ-हलदीकी समान जिसका मूल हो उसको हारिद्र विष जानना

३ अथ सक्तुकस्य स्वरूपम्।

यद्ग्रन्थिः सक्तुकेनव पूर्णमध्यः स सक्तुकः।

अर्थ-जिसकी गांठ सक्तूकी सदृश बीचमेंसे भरी हुई हो उसको सक्तक विष जानना।

४ अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम्।

वर्णतो लोहितो यः स्याद्दीप्तिमान्दहनप्रभः।
महादाहकरः पूर्वैः कथितः स प्रदीपनः॥

अर्थ-जिसका वर्ण लाल अत्यन्त दीप्तिमान् और अग्निकी समान प्रभावाला हो उसको महादाह करनेवाला प्रदीपन विष जानना।

५ अथ सौराष्ट्रिकस्य स्वरूपम्।

सुराष्ट्रविषये यः स्यात्स सौराष्ट्रिक उच्यते।

अर्थ-जो सोरठ देशमें उत्पन्न होता है उसको सौराष्ट्रिक विष कहते हैं।

६ अथ शृङ्गिकस्य स्वरूपम्।

यस्मिन्गोशृङ्गके बद्धे दुग्धं भवति लोहितम्।
स शृङ्गिक इति प्रोक्तो द्रव्यतत्त्वविशारदैः॥

अर्थ-जिसको गायके सींगसे बांधनेसे गायका दूध लाल उतरने लगे उसको वैद्योंने शृङ्गिक (सिंगियाविष) कहा है।

७ अथ कालकूटस्य स्वरूपम्।

देवासुररणे देवैर्हतस्य पृथुमालिनः। दैत्यस्य रुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः॥ निर्यासः कालकूटोऽस्य मुनिभिः परिकीर्तितः। सोहिच्छत्रे शृङ्गबेरे कोङ्कणे मलये भवेत्॥

अर्थ-देव असुरोंके संग्राममें देवोंने जब पृथुमालि दैत्यको मारा तब उस दैत्यके रुधिरसे पीपलकी समान वृक्ष उत्पन्न हुआ इस वृक्षके गोंदको मुनि कालकूट विष कहत हैं यह अहिच्छत्र, शृङ्गबेर, कोंकण और मलबारमें उत्पन्न होता है।

८ अथ हालाहलस्य स्वरूपम्।

गोस्तनाभफलो गुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा। तेजसा यस्य दह्यन्ते समीपस्था द्रुमादयः॥ असौ हालाहलो ज्ञेयः किष्किन्धायां हिमालये। दाक्षिणाब्धितटे देशे कोङ्कणेपि च जायते॥

अर्थ-दाखोंके गुच्छोंके समान फल और तालके वृक्षोंकी समान वृक्ष होता है जिसके तेजसे समीपके वृक्ष जलजाते हैं उसको हालाहल विष जानना यह किष्किन्धापुर, हिमालय पर्वत, दक्षिण समुद्रके तटके देशोंमें और कोंकणदेशमें उत्पन्न होता है ।

९ अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम् ।

वर्णतः कपिलो यः स्यात्तथा भवति सारकः ।
ब्रह्मपुत्रः स विज्ञेयो जायते मलयाचले ॥

अर्थ-जिसका रङ्ग कपिलवर्ण और सारभी जिसका कपिलवर्ण होता है उसको ब्रह्मपुत्र जानना यह मलयाचल पर्वतमें उत्पन्न होता है ।

विषस्य वर्णभेदाः ।

ब्राह्मणः पाण्डुरस्तेषु क्षत्रियो लोहितप्रभः । वैश्यः पीतोऽसितः शूद्रो विष उक्तश्चतुर्विधः । रसायने विषं विप्रं क्षत्रियं देहपुष्टये । वैश्यं कुष्ठविनाशाय शूद्रं दद्याद्वधाय च ॥ (भा)

अर्थ-पाण्डु रङ्गका विष ब्राह्मण, लाल रंगका क्षत्रिय, पीले रंगका वैश्य और काले रंगका विष शूद्र होता है । रसायनमें ब्राह्मणविष, देहको पुष्टि करनेके लिये क्षत्रियविष कुष्ठको दूर करनेके लिये वैश्य और मारणके लिये शूद्र जातिका विष देना चाहिये ।

अन्यच्च ।

स्थावरं जंगमश्चैव द्विविधं विषमुच्यते ।
दशाधिष्ठानमाद्यन्तु द्वितीयं षोडशाश्रयम् ॥

अर्थ-स्थावर और जंगम इन भेदोंसे विष दो प्रकारका है तहां स्थावर विष १० प्रकार और जंगम विष १६ प्रकारका जानना ।

स्थावरविषस्य दशप्रकारा यथा ।

मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक्क्षीरं सारमेव च ।
निर्य्यासो धातवः कन्दः स्थावरस्याश्रया दश ॥

अर्थ-स्थावरविष-वृक्षादिकके मूल, पत्र, फल, पुष्प, छाल, दूध, सार, गोंद, धातु और कन्द इन दश स्थानोंमें रहता है । अमृतादिक विषको स्थावरविष कहते हैं ।

स्थावरविषस्य भक्षणदोषाः।

स्थावरं तु ज्वरं हिक्कां दन्तहर्षं गलग्रहम्।
फेनवम्यरुचिश्वासमूर्च्छाश्च जनयेद्विषम्॥

अर्थ-स्थावरविष-ज्वर, हिचकी, दन्तहर्ष, गलवेदना, मुखमें झागोंका आना, वमन, अरुचि, श्वास और मूर्च्छाको उत्पन्न करता है।

जङ्गमविषस्य स्वरूपम्।

सर्प्पाः कीटोन्दुरालूता वृश्चिका गलगोधिकाः। जलौका मत्स्यमण्डूकाः शलभाः सकृकण्टकाः॥ श्वसिंहव्याघ्रगोमायुतरक्षुनकुलादयः। दंष्ट्रिणोऽमी विषं तेषां दंष्ट्रोत्थं जंगमं मतम्॥

अर्थ-साँप, कीट, उन्दुर (मूसा), लूता (मकडी), वृश्चिक (बिच्छू), गलगोधिका, जलौका (जोंक), मत्स्य (मछली), मण्डूक (मेडक), शलभ (पतंग), कृकलास, कुक्कुर, सिंह, व्याघ्र, शृगाल, तेंदुआ और नौला इन सब जन्तुओंके दाँतोंके विषको जंगम विष कहते हैं।

जङ्गमविषस्य षोडशप्रकाराः।

दृष्टिर्निश्वासो दंष्ट्राश्च नखमूत्रमलानि च॥
शुक्रं लालामुखं स्पर्शे सन्दंशं स्रावमर्दितम्॥
गुदास्थिपित्तशूकानि दशषड् जङ्गमाश्रयाः।

अर्थ-जंगमविष-सर्पादिक विषेली जन्तुओंकी दृष्टि, निश्वास, दन्त, नख, मूत्र, मल, शुक्र, लार, मुख, स्पर्श, दंत, स्राव, गुददेश, अस्थि, पित्त और शूक इन १६ स्थानोंमें होता है।

जङ्गमविषस्य भक्षणदोषाः।

निद्रां तन्द्रां क्लमं दाहं सपाकं लोमहर्षणम्।
शोकश्चैवातिसारञ्च जनयेज्जंगमं विषम्॥

अर्थ-जंगमविष-निद्रा, तन्द्रा, क्लान्ति, दाह, पाक, लोमहर्षण, शोक और अतिसारको उत्पन्न करता है।

शोधितविषगुणाः।

ये दुर्गुणा विषेऽशुद्धे ते स्युर्हीना विशोधनात्।
तस्माद्विषं प्रयोगेषु शोधयित्वा प्रयोजयेत्॥

अर्थ-जो दुर्गुण अर्थात् दोष अशुद्ध विषयमें है वे दोष शोधित विषमें नहीं हैं इस कारण विषको शोधनपूर्वक औषधिमें लेना चाहिये ।

अथ विषसेवनप्रकारः ।

नानारसौषधैर्ये तु दुष्टा यांतीह नो गदाः । ते नश्यन्ति विषे दत्ते शीघ्रं वातकफोद्भवाः ॥ शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु वर्षासु च प्रदापयेत् । चातुर्मास्ये हरेद्रोगान्कुष्ठलूतादिकानपि । दातव्यं सर्वरोगेषु घृताशिनि हिताशिनि ॥ क्षीराशिनि प्रयोक्तव्यं रसायनरते नरः । ब्रह्मचर्य्यविधानं हि विषकल्पे समाचरेत् ॥ पथ्ये स्वस्थमना भूत्वा तदा सिद्धिर्न संशयः । आचार्येण तु भोक्तव्यं शिष्यप्रत्ययकारकम् ॥ विषे शुद्धिर्हि तदपि मात्रया नान्यथा भवेत् । सर्वरोगप्रशमनं दृष्टिपुष्टिकरं विषम् ।

अर्थ-वातकफोद्भवरोग नानाप्रकारकी औषधियोंको सेवन करनेसे नहीं दूर होते वे रोग विषके सेवन करनेसे दूर होजाते हैं सर्व ऋतुओंमें विष मात्राके प्रमाण विधिपूर्वक देना चाहिये। चार महीनेमें विष, कुष्ठ और लूतादि रोगोंको दूर करता है और यह सर्वरोगोंमें देना चाहिये । रसायनमें रत ऐसे मनुष्योंको दूध, घी और हितकारक अन्नका सेवन करना और ब्रह्मचर्यको धारण कर अनन्तर विषका सेवन करे इस प्रकार करनेसे रोगोंका नाश होता है । शिष्य और रोगीके निश्चयके लिये प्रथम विषवैद्यको भक्षण करना चाहिये । शोधित विष मात्राके अनुसार सर्वरोगोंमें देना हितकारक है । विष दृष्टिको स्वच्छ करनेवाला और शरीरकी पुष्टि करनेवाला है ।

विषमात्राप्रमाणम् ।

एकाष्टकं भवेद्यावदभ्यस्तं तिलमात्रया ।
सर्वरोगहरं नृणां जायते शोधितं विषम् ॥

अर्थ-शोधित विष प्रथम आठ दिनपर्यन्त तिलप्रमाण देना तदनन्तर एक तिल बढावे इस प्रकार करनेसे सर्व प्रकारकी व्याधियोंका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

प्रथमे सार्षपीमात्रा द्वितीये सार्षपद्वयम् । तृतीये च चतुर्थे च पञ्चमे दिवसे तथा ॥ षष्ठे च सप्तमे चैव क्रमवृद्ध्या विवर्द्धयेत् ।

सप्तसर्षपमात्रेण प्रथमं सप्तकं नयेत् ॥ एवं मात्रा विषं देयं
तृतीये सप्तके क्रमात् । वृद्धया हन्यात्प्रदातव्यं चतुर्थे सप्तके
तथा॥ एवं सप्त समायाते परां मात्रां भिषग्वरैः । स्थिरीकु-
र्य्याद्यथेच्छन्तु ततस्त्यागन्तु कारयेत् । सेवनक्रमहान्या तु
विषकल्पस्तु ईरितः । एवं मात्रासेवनं स्याद्गुञ्जामात्रं तु कुष्ठ-
वान्॥एवमेवाष्टपर्यन्तं परा मात्राधिका मता॥ विधिना मात्रया
काले भवेत्पथ्याशिनां नृणाम् ।

अर्थ-विष-पहिले दिन एक सरसोंकी बराबर, दूसरे दिन दो सरसोंकी समान, तीसरे दिन तीन सरसोंकी समान अर्थात् सात दिनपर्य्यन्त एक २ सरसों रोज २ बढाता जाय और दूसरे सप्ताहमें भी सात सरसों प्रमाण देता रहै, तीसरे सप्ताहमें फिर क्रमसे एक एक सरसों अधिक बढा दे इस प्रकार तीसरे सप्ताहमें क्रमसे विषकी मात्रा देनी चाहिये। चौथे सप्ताहमें क्रमसे वृद्धि कर देनी चाहिये। इसप्रकार सात सप्ताह बीतने पर श्रेष्ठ वैद्योंने विषकी परम मात्रा कही है यथेच्छ स्थिरकरके फिर इसका त्याग कर दे क्रमसे कमती करे। यह विषकल्पके सेवन करनेकी विधि है। इसप्रकार कुष्ठवाला एक गुंजा प्रमाण खाय आठ गुंजापर्य्यन्त इसकी परम मात्रा है । विधिपूर्वक मात्रा सेवन करता हुआ पथ्यसे रहै ।

विषसेवनमें पथ्यपदार्थ ।

घृतं क्षीरं सितां क्षौद्रं गोधूमांस्तण्डुलांस्तथा । मरीचं सैन्धवं
द्राक्षां मधुरं पानकं हिमम् ॥ ब्रह्मचर्य्यं हिमं देशं हिमं कालं
हिमं जलम् । विषस्य सेवको मर्त्यो भजेदतिविचक्षणः ॥

अर्थ-विष सेवन करनेवाले मनुष्यको घी, दूध, मधु, गेहूँ, चावल कालीमिरच, सैंधानमक, दाख मधुर और शीतल, पानक, ब्रह्मचर्य्य, शीतलदेश, शीतकाल और जल सेवन करना चाहिये।

मात्राधिकभक्षणस्य परीक्षा।

मात्राधिकं यदा मर्त्यः प्रमादाद्भक्षयेद्विषम्॥ अष्टौ वेगास्तदा
तेन जायंते तस्य देहिनः॥रोमाञ्चः प्रथमे वेगे द्वितीये वेपथु-
र्भवेत्।वेगे तृतीये दाहः स्याच्चतुर्थे पतनं भवेत्।फेनस्तु पंचमे

वेगे षष्ठे वैकल्यमेव च।जडता सप्तमे वेगे मरणं चाष्टमे भवेत्॥ विषवेगानिति ज्ञात्वा मंत्रतंत्रैर्विनाशयेत्। यावन्नाष्टमवेगन्तु संप्राप्नोति हि मानवः॥

अर्थ-जिस समय जो मनुष्य प्रमादके वश होकर मात्रासे अधिक विषको भक्षण करलेताहै उस मनुष्यके उसीसमय आठ वेग उत्पन्न होतेहैं तहां प्रथम वेगमें रोमाञ्च और दूसरेमें कम्प, तीसरे वेगमें दाह, चौथे वेगमें शरीरका गिरना, पांचवें वेगमें मुखमें झागोंका अजाना,छठे वेगमें विकलता,सातवें वेगमें जडता और आठवें वेगमें मरण होताहै। इसप्रकार विषके वेगोंको जानकर जबतक आठवाँ वेग न आवे तबतक मंत्र और तंत्रांसे नाश करे।

विषको उतारना।

अतिमात्रं यदा भुक्तं वमनं तस्य कारयेत्।दद्यात्तावदजादुग्धं यावद्भ्रान्तिर्न जायते॥ अजादुग्धं यदा कोष्ठे स्थिरीभवति देहिनः। विषवेगं ततो जीर्णं जानीयात्कुशलो भिषक्॥

अर्थ-जो कोई मात्रासे अधिक विषको खाले उसको वमन करावे जबतक वमन न हो तबतक बकरीका दूध पिलादे जिस समय बकरीका दूध कोठेमें स्थिर होजाय उसी समय विषका वेग उतर जायगा.

अन्यच्च।

विषं हन्याद्रसः पीतो रजनीमेघनादयोः।
सर्पाक्षिटंकणं वापि घृतेनः विषहृत्परम्॥

अर्थ-हलदी और चौलाई तथा सर्पाक्षि अथवा सुहागा और घी देनेसे विषका नाश होता है।

अन्यच्च।

पुत्रजीवकमज्जा वा पीता निम्बकवारिणा।
विषवेगं निहन्त्येव वृष्टिर्दावानलं यथा॥

अर्थ-जियापोता वृक्षकी मज्जाको नींबूके रसमें उबालकर पीनेसे विषवेगका नाश होता है जैसे वृष्टिसे दावानलका नाशहोता है।

अतिमात्रं यदा भुक्तं तदाज्यं टंकणं पिबेत्।

विषं स वेगतो नाशमाशु प्राप्नोति निश्चितम् ॥

अर्थ-जिस समय जो कोई मनुष्य मात्रासे अधिक विषको भक्षण करे उस मनुष्यको उसी समय सुहागा और घी मिलाकर पिलानेसे वर्त्तमान विषके वेगका शीघ्रही नाश हो जायगा।

आखुपाषाणनामानि।

शतमल्ले तु मल्लः स्याद्गौरीपाषाणकस्तथा।
आखुपाषाणकश्चैव लोहशंकरकारकः ॥

अर्थ-शतमल्ल, मल्ल, गौरीषाषाण, आखुपाषाण, लोहशंकरकारक।

संस्कृतभाषामें	आखुपाषाण।
हिन्दीभाषाम	शोमलखार, शंखिया।
मराठीभाषामें	सोमल, शंखिया।
गुजरातीभाषामें	शोमल, शोमलखार, शंखियो।
इंग्रेजीभाषामें	ओक्सेड ऑफ आर्सेनिक Oxide of Arsenic
लैटिन्भाषामें	ओक्सेडं आर्सेनीकम्। Oxidum Arsenicum
फारसीभाषामें	मिर्गवमूष।
अरबीभाषामें	सुंब्रुल (खा) र।

अस्य गुणाः।

खनिजं विषमाख्यातं दाहवांतिविरेककृत्।
मात्राधिकं यदा खादेत्तदा मृत्युमवाप्नुयात् ॥

अर्थ-खनिजविष-दाह, वमन और विरेचनको करनेवाला है मात्रासे अधिक खानेसे मृत्युको देवे है।

आखुपाषाणकः स्निग्धः पारदस्य नियामकः। लोहभेदकरश्चैव वीर्य्यकृत्कांतिवर्द्धनः ॥ त्रिदोषसर्वव्याधीनां नाशकः परिकीर्त्तितः। अशुद्धः स तु विज्ञेयः सप्तधातुविनाशकृत् ॥ दाहं चित्तभ्रमं चव लालास्राव तथा मृतम्। अनेकवेदनाश्चैव बहुव्याधिं तृषां तथा ॥ करोत्यतो मूर्खहस्ते न दातव्यः कदाचन। तत्समीपे नैव वाच्यः प्राणघातकरो ह्यसौ ॥

अर्थ-शंखिया-स्निग्ध, पारेको बांधनेवाला, लोहभेदक, वीर्य्यवर्द्धक

कान्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष और सर्वव्याधिनाशक है। अशुद्धशंखिया-सप्तधा तुनाशक तथा दाह, चित्तभ्रम, लालास्राव, मृति, अनेक प्रकारकी पीडा, बहुव्याधि और तृषाको उत्पन्न करे है यह मूर्खके हाथमें कभीभी नहीं देना और न कहना तथा उसके समीपभी न रखना क्योंकि यह प्राणनाशक ह।

अथ उपविषनामानि।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं तथैव कलहारिका।
करवीरोऽथ धुस्तूरः पञ्च चोपविषाः स्मृताः॥ (अमरकोश)

अर्थ-आकका दूध, सेहुंडका दूध, कलिहारी, कनेर और धतूरा यह पांच उपविष ह।

अन्यच्च।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लाङ्गली करवीरकः।
गुञ्जाहिफेनो धुस्तूरः सप्तोपविषजातयः॥ (भा०प्र०)

अर्थ-आकका दूध, सेहुण्डका दूध, कालिहारी, कनेर, घुघुची, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति हैं।

अपिच।

स्नुह्यर्कलाङ्गलीगुञ्जाहयारिविषमुष्टिकः।
जैपालोन्मत्ताहिफेनं नवोपविषजातयः॥

अर्थ-सेहुण्ड, आक, कालिहारी, घुघुची, कनेर, कुचिला, जमालगोटा, धतूरा और अफीम यह ९ उपविषकी जाति ह।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते शालिग्रामनिघण्टुभूषणे विषोपविषवर्गः समाप्तः॥ ९॥

अथ धान्यवर्गः।

धान्यनामानि।

धान्यं भोग्यं च भोगार्हमन्नाद्यं जीवसाधनम्।

अर्थ-धान्य, भोग्य, भोगार्ह, अन्न, आद्य, जीवसाधन (स्तम्बकरि, व्रीहि)

धान्यभेदाः।

शालिधान्यं व्रीहिधान्यं शूकधान्यं तृतीयकम्। शिम्बीधान्यं क्षुद्रधान्यमित्युक्तं धान्यपंचकम्॥ शालयो रक्तशाल्याद्या

व्रीहयः षष्टिकादयः। यवादिकं शूकधान्यं मुद्गाद्यं शिम्बिधान्यकम् ॥ कंग्वादिकं क्षुद्रधान्यं तृणधान्यं च तत्स्मृतम् ॥

अर्थ-शालिधान्य, व्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिम्बीधान्य और क्षुद्रधान्य इन भेदोंसे धान्य पांच प्रकारके कहे हैं। तहां रक्तशालि आदि शालिधान्य, साठीआदि व्रीहिधान्य, जौको आदिले शूकधान्य, मूँगको आदिले शिम्बी धान्य और कंगुनीको आदिले धान्योंको शूकधान्य कहते हैं और क्षुद्रधान्यको तृणधान्यभी कहते हैं।

शालिधान्यनामानि।

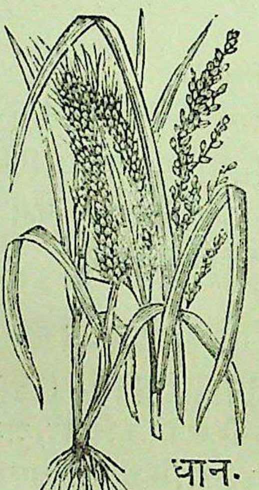

धान.

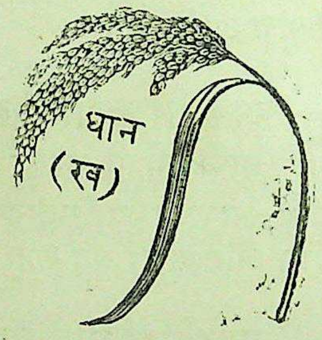

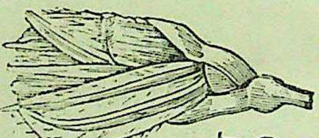

रक्तशालिः सकलमः पाण्डुकः शकुनाहृतः। सुगन्धकः कर्दमको महाशालिश्च दूषकः ॥ पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथा महिषमस्तकः। दीर्घशूकः काञ्चनको हायनो लोध्रपुष्पकः। इत्याद्याः शालयः सन्ति बहवो बहुदेशजाः। ग्रन्थविस्तारभीतेस्ते समस्ता नात्र भाषिताः ॥

अर्थ-रक्तशालि, कलम, पाण्डुक, शकुनाहृत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पाण्डक, पुण्डरीक, महिषमस्तक, दीर्घशूक, काञ्चनक और लोध्रपुष्पक इत्यादि अनेक प्रकारके शालिधान्य अनेक देशोंमें उत्पन्न होते हैं वह सब ग्रन्थ बढनेके भयसे यहां नहीं कहे।

संस्कृतभाषामें	शालि, तण्डुल ।
हिन्दीभाषामें	धान, शालिधान, चावल ।
बंगभाषामें	शालिधान्य, चाउल ।
मराठीभाषामें	साळी, भात ।
गुजरातीभाषामें	शाल्य, चाखा ।
कर्णाटकीभाषामें	नेलु ।
तैलिंगीभाषामें	धान्यमु, बीयमु ।
इंग्रेजीभाषामें	राइस । Rice
लैटिनभाषामें	ओरिझासिटाईवा । Oryza sativa
फारसीभाषामें	बिरंज ।
अरबीभाषामें	उरज ।

शालिधान्यलक्षणम् ।

कण्डनेन विना शुक्ला हैमन्ताः शालयः स्मृताः

अर्थ–जो विना छरे फटके सफेद हों उनको शालिधान कहते हैं और शालिधान हेमन्तऋतुमें होते हैं इस कारण इनका हैमन्तिक नामभी है ।

शालिधान्यगुणाः ।

शालयो मधुराः स्निग्धा बल्या बद्धाल्पवर्चसः ।
कषाया लघवो रुच्याः स्वर्य्या वृष्याश्च बृंहणाः ॥
अल्पानिलकफाः शीताः पित्तघ्ना मूत्रलास्तथा ।

अर्थ–शालिधान–मधुर, स्निग्ध,बलकारक,अल्पप्रमाणमलरोधक, कषेले, हलके, रुचिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाले, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिजनक,कुछेक वातकफको कुपित करनेवाले,शीतल,पित्तनाशक और मूत्रजनक हैं ।

अपिच ।

शालयो दग्धभूजाताः कषाया लघुपाकिनः । सृष्टमूत्रपुरीषाश्च रूक्षाः श्लेष्मापकर्षणाः ॥ कैदारा वातपित्तघ्ना गुरवः कफशुक्रलाः।कषायाः स्वल्पवर्चस्का मधुराश्च बलावहाः ॥स्थलजाः स्वादवः पित्तकफघ्ना वातपित्तदाः। किञ्चित्तिक्ताः कषायाश्च विपाके कटुका अपि।वापिता मधुरा वृष्या बल्याः पित्तप्रणाशनाः॥श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काः कषाया गुरवो हिमाः ।

वापितेभ्यो गुणैः किञ्चिद्धीनाः प्रोक्ता अवापिताः ॥रोपिता स्तु नवा वृष्याः पुराणा लघवः स्मृताः।तेभ्यस्तु रोपिता भूयः शीघ्रपाका गुणाधिकाः ॥छिन्नरूढा हिमा रूक्षा बल्याः पित्तकफापहाः। बद्धविट्काः कषायाश्च लघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥

अर्थ-जलीहुई पृथ्वीमें उत्पन्न हुये शालिधान-कषेले, लघुपाकी, मल आर मूत्रको करनेवाले, रूखे और कफको शोखनेवाले हैं। खेतमें उत्पन्न हुये शालिधान-वातपित्तनाशक, भारी, कफकारी, शुक्रजनक, कषेले, अल्पमलवर्द्धक, मधुर और बलवर्द्धक हैं। स्थलमें उत्पन्न हुये शालिधान-स्वादिष्ठ, पित्तकफनाशक, वातपित्तवर्द्धक, किञ्चित्कडवे, कषेले और पाकमें कटु हैं। वापितधान्य-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तनाशक, कफकारक, अल्पमलवर्द्धक, कषेले, भारी और शीतल हैं। अवापितधान्य वापितधान्यसे किञ्चित् हीन गुणवाले हैं। रोपितनवीनधान्य-वीर्य्यवर्द्धक हैं और वही पुराने होनेपर हलके होजाते हैं। और २ धानोंकी अपेक्षा रोपितधान्य अधिकगुणवाले और शीघ्रपाकी हैं। छिन्नरूढशालिधान्य-शीतल, रूखे, बलकारक, पित्तनाशक, मलरोधक, कषेले, हलके और किञ्चित् कडवेहैं।

रक्तशालिगुणाः।

रक्तशालिर्वरस्तेषु बल्यो वर्ण्यस्त्रिदोषजित्। चक्षुष्यो मूत्रलः स्वर्य्यः शुक्रलस्तृड्ज्वरापहः ॥ विषव्रणश्वासकासदाहनुद्वह्निपुष्टिदः।तस्मादल्पान्तरगुणाः शालयो महदादयः(भा. प्र.)

अर्थ-लालशालिधान्य (दाऊदखानि चावल)-सब धान्योंमें उत्तम हैं, बलवर्द्धक, शरीरके रंगको उज्ज्वल करनेवाले, त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी, मूत्रजनक, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाले, शुक्रजनक, तृषानिवारक, ज्वरहारक, विषविनाशक, व्रणनाशक, श्वासको दूर करनेवाले, खाँसीको हरनेवाल, दादको दूर करनेवाले और पुष्टिको देनेवाले हैं।महाशालि आदिके गुण रक्तशालिधानकी अपेक्षा कमहैं।

महाशालिधान्यगुणाः।

राजान्नशालिका स्निग्धा मधुरा चाग्निदीपनी।
बलकान्तिधातुपथ्यकारका च त्रिदोषहा ॥
लघ्वी गुणैरभ्यधिका ज्ञेया चैवोत्तरोत्तराम्।
श्वेता रक्तास्तथा कृष्णा ज्ञेयाश्च गुणदर्शिभिः॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-राजशालि (हंसराज, बाँसमती इत्यादि)-स्निग्ध, मधुर, अग्निप्रदीपक, बलकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, पथ्य, त्रिदोष नाशक और हलके हैं । ये सफेद, लाल और काले इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं इन तीनोंके गुण एक २ से अधिक हैं ।

अन्यच्च ।

रक्तशालिर्महाशालिः कलमा षष्टिका परा । खञ्जरीटा पसाहीच जीरकाऽन्या कपिञ्जला॥सौगन्धी शूकला चान्या बिलवासी कचोरका । गरुडा रुक्मवंती च कलमाऽन्या तथा परा ॥ बिल्वजा मागधी पीता ता अष्टादश शालयः ।

अर्थ-रक्तशालि, महाशालि, कमला, षष्टिका, खंजरीटा, पसाही, जीरका, कपिञ्जला, सौगन्धी, शूकला, बिलवासी, कचोरका, गरुडा, रुक्मवन्ती, कलमा, बिल्वजा, मागधा और पीता इन भेदोंसे शालिधान अठारह प्रकारके हैं ।

तेषां गुणाः ।

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नी चक्षुष्या मूत्ररोगहा । महाशालिर्गुरुर्वृष्या चक्षुष्या बलवर्द्धिनी ॥शीता गुरुस्त्रिदोषघ्नी मधुरा परषष्टिका । जीरका वातपित्तघ्नी कलमा श्लेष्मपित्तहा ॥ कपिञ्जला श्लेष्मला स्यान्मागधी कफवातला । बिलवासी गुरुश्चापि पित्तघ्नी शुक्रवर्द्धिनी॥शूकला पित्तवातघ्नी कचोरा पित्तनाशिनी । गरुडाऽन्या च वातघ्नी पित्तमूत्रगदापहा॥ रुक्मवन्ती लघुरुचिबलपुष्टिकरी मता।कलमान्या लघुः पथ्या वातश्लेष्मविवर्द्धिनी॥बिल्वजा मागधी पीता सामान्यास्ता गुणागुणैः॥ रुचिकृद्बलकृन्मूत्रदोषघ्नी च श्रमापहा ॥ दग्धग्रामाचले जाताः शालयो लघुपाकिनः । सुपथ्या बद्धविण्मूत्रा रूक्षाः श्लेष्मापकर्षिणः ॥ केदारप्रभवा वृक्षा वातपित्तविनाशिनः । रक्तपित्तविकारघ्ना वातलाः कफकारकाः॥ देशदेशे विभिन्ना-

नि नामानि परिलक्षयेत् । समान्गुणैश्च सर्वांस्तान्भूमिभागोद्भवान्विदुः॥शालयश्छिन्नरोहाश्च मूत्रला वातला हिमाः।हारीतः

अर्थ-रक्तशालिधान-त्रिदोषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और मूत्ररोगको दूर करे हैं। महाशालिधान-भारी, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको-हितकारी और बलकारी हैं। षष्टिक शालिधान-शीतल, भारी, त्रिदोषनाशक और मधुर हैं। जीरक शालिधान-वातपित्तनाशक हैं। कलमीधन-कफ और पित्तको दूर करे हैं। कपिञ्जल शालिधान-कफकारक हैं। मागधी शालिधान-कफ और वातको करे हैं। बिलवासी शालिधान-भारी, पित्तनाशक और शुक्रवर्द्धक हैं। शूकला शालिधान-पित्तवातनाशक हैं। कचोरा शालिधान-पित्तनाशक हैं। गरुड शालिधान-वातविनाशक तथा पित्त और मूत्ररोगको दूर करे हैं। रुक्मवन्ती शालिधान-हलके, रुचिकारक, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक हैं। दूसरे प्रकारके कलमधान-हलके, पथ्य और वातकफवर्द्धक हैं। बिलवजा, मागधी और पीता यह तीनों प्रकारके शालिधान गुण और दोषोंमें समान हैं। रुचिकारक, बलकारक, मूत्रदोषनाशक और श्रमरोगहारक हैं। दग्धग्राम और पर्वतमें उपजे शालिधान लघुपाकी हैं, पथ्य, मलमूत्ररोक, रूखे, और कफको सोखनेवाले हैं। खेतमें उपजे शालिधान-रूखे वातपित्तनाशक, रक्तपित्तनाशक, वातवर्द्धक और कफकारक हैं। इन सब शालिधानोंके नाम देश २ में भिन्न हैं। सर्व प्रकारके शालिधान सर्व प्रकारकी भूमिके भागोंमें उत्पन्न हुये गुणोंमें समान हैं। छिन्नरोहशालिधान-मूत्रजनक, वातकारक और शीतल हैं।

व्रीहिधान्यलक्षणम् ।

वार्षिकाः कण्डिताः शुक्ला व्रीहयश्चिरपाकिनः । कृष्णव्रीहिः पाटलश्च कुक्कुटाण्डक इत्यपि॥शाखामुखो जतुमुख इत्याद्या व्रीहयःस्मृताः ।कृष्णव्रीहिः स विज्ञेयो यत्कृष्णतुषतण्डुलः ॥ पाटलः पाटलापुष्पवर्णको व्रीहिरुच्यते।कुक्कुटांडाकृतिव्रीहिः कुक्कुटाण्डक उच्यते ॥ शालामुखः कृष्णशूकः कृष्णतण्डुल उच्यते। लाक्षावर्णं मुखं यस्य ज्ञेयो जतुमुखस्तु सः ॥व्रीहयः कथिताः पाके मधुरा वीर्य्यतो हिमाः । अल्पाभिष्य-

न्दिनो बद्धवर्चस्काः षष्टिकैः समाः ॥ कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे । (भा० प्र०)

अर्थ-व्रीहिधान-वर्षाकालमें पकतेहैं यह धान छरनेमें सफेद और बहुत देरमें पकतेहैं व्रीहिधान अनेक प्रकारके होतेहैं जैसे कृष्णव्रीहि, पाटल,कुक्कुटाण्डाकृति,शालामुख और जतुमुख इत्यादि । जिसके तुष और चावल काले रंगके होंय उसको कृष्णव्रीहि कहतेहैं।जिसका रंग पाडलके फूलकी समान हो उसको पाटलव्रीहि कहते हैं। जिसका आकार मुरगेके अंडेकी समान हो उसको कक्कुटाण्डव्रीहि कहतेहैं । जिसका शूक और चावल काला हो उसको शालिमुख कहतेहैं।जिसके मुखका रंग लाखकी समान हो उसको जतुमुखव्रीहि कहते हैं । सर्वप्रकारके व्रीहिधानपाकमें मधुर, शीतवीर्य्य, अल्प अभिष्यन्दि और मलरोधक ह । व्रीहिधानोंमें कृष्णव्रीहिधान अधिक गुणवालेहैं, शेष अल्प गुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

कृष्णव्रीहिस्त्रिदोषघ्नी मधुरा कार्श्यहा तथा ।
पित्तघ्नी पिच्छिला शुक्ररूपवर्णबलप्रदा ॥ (वै० नि०)

अर्थ-कृष्णव्रीहिधान-त्रिदोषनाशक, मधुर, कृशतानाशक, पित्तनिवारक,पिच्छिल तथा शुक्र,रूप और वर्ण तथा बलको देवेहैं ।

षाष्टिकलक्षणं नामानि च।

गर्भस्था एव ये पाकं यान्ति ते षष्टिका मताः । षष्टिकः शतपुष्पश्चप्रमोदकमुकुन्दकौ ॥ महाषष्टिक इत्याद्याः षष्टिकाः समुदाहृताः । ऋतेऽपि व्रीहयः प्रोक्ता व्रीहिलक्षणदर्शनात् ॥

अर्थ-जो बालमेंही पकजावें उनको षाष्टिक धान्य कहते हैं।षष्टिक, शतपुष्प,प्रमोदक,मुकुन्दक,महाषष्टिक(षष्टिका, षष्टिशालि, षष्टिज, स्निग्धतण्डुल , षष्टिवासरज) इत्यादिक षष्टिकधान्य कहलाते हैं । इनमें व्रीहिधानोंके लक्षण मिलनेसे यह व्रीहि कहे जाते हैं ।

अन्यच्च ।

यो व्रीहिः षष्टिरात्रेण पच्यते स तु षष्टिकः ।

अर्थ-जो धान ६० रातमें पकके तैय्यार होजायँ उनको षष्टिकधान्य कहते हैं ।

षष्टिकगुणाः ।

षष्टिका मधुराः शीता लघवो बद्धवर्चसः । वातपित्तप्रशमनाः शालिभिः सदृशा गुणैः । षष्टिका प्रवरा तेषां लघ्वी स्निग्धा त्रिदोषजित्॥स्वाद्वी मृद्वी ग्राहिणी च बलदा ज्वरहारिणी । रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्ततः स्वल्पगुणाः परे ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-षष्टिक(साठीधान)-मधुर,शीतल,हलके, मलरोधक, वातपित्तनाशक यह गुणोंमें शालिधानके समान हैं । सर्वप्रकारके धान्योंमें षष्टिक धान्य उत्तम हैं,हलके,स्निग्ध,त्रिदोषनाशक,स्वादिष्ठ, नरम,मलरोधक,बलदायक,ज्वरनाशक । इनके गुण लाल शालिधानोंकी समान जानने और २ धान इनसे हीनगुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

स्निग्धो ग्राही गुरुः स्वादुस्त्रिदोषघ्नः स्थिरो हिमः ॥
षष्टिको व्रीहिषु श्रेष्ठो गौरश्चासितगौरतः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-साठीधान-स्निध, मलरोधक, स्वादिष्ठ, त्रिदोषनाशक, स्थिर, शीतल और सर्वधानोंमें श्रेष्ठ हैं । यह वर्णके भेदसे कृष्ण और गौर दो प्रकारके हैं तहां कृष्णषाष्टिक धानोंकी अपेक्षा गौरषाष्टिक धान अधिक गुणवाले हैं ।

अपिच ।

स्निग्धो वातहरस्त्रिदोषशमनः पथ्यः सदा प्राणिनां श्रेष्ठो व्रीहिषु षष्टिकः श्रमहरः कृच्छ्रादिदोषापहः ॥ गौरश्चासितगौरतोपि नितरां सेव्यः करोत्युच्चकैः शुक्रं श्वासहरः क्षतक्षयहरः कासादिदोषापहः ॥

अर्थ-सफेद और काले दोनोंप्रकारके साठीधान-स्निग्ध,वातनाशक, त्रिदोषनाशक, पथ्य, सर्वप्रकारके व्रीहिधानोंमें श्रेष्ठ, मूत्रकृच्छ्रादिदोषनाशक, शुक्रजनक, श्वासनाशक तथा क्षत, क्षय और कासादिरोगोंको दूर करेहैं ।

विवरण। धानकी३।४जातिहैं शालि, शूक,शिम्बी और तृणधान्य इनमें शालिधान अनेक प्रकारके होते हैं देशके भेदसे इसके नाम

भिन्नरहैं। संस्कृतग्रन्थोंमें अनेक नाम कहेहैं जैसे कलम,सुगंधशालि, धान्योत्तम, राजभोग्य, सुवर्णशालि, प्रमोदक, षष्टिक इत्यादि अनेक जातिहैं वह सर्व नहीं लिखीं क्योंकि वर्त्तमानकालमें संस्कृत नाम प्रचलित नहीं हैं देश २ में जुदे २ नाम हैं जैसे इस देशमें हंसराज, वासमती, सुनखर्चा, बिंदली, दाऊदखानी, मुनिया,रायमुनिया, दलबादल, चवल, फतेपुरी, बंकीनागपुरी, मोथा इत्यादि प्रचलित हैं अगर इसी देशके नाम लिखें तो १०० पृष्ठकी पुस्तक तय्यार होजाय । जो साठ दिनमें पककर तैय्यार होजायँ उनको साठीधान कहते हैं । साठीधान और धानोंकी अपेक्षा हलके और पथ्यहैं । जौ, गेहूं, बाजरा, ज्वार इत्यादिको शूकधान्य कहते हैं । मूँग, उडद, मोठ, चने इत्यादिको शिम्बीधान्य कहते हैं । शमा, कंगुनी, कोदों आदि तृणधान्य हैं ।

यवनामानि ।

यवस्तु मेध्यः सितशूकसञ्ज्ञो दिव्यो क्षतः कंचुकिधान्यराजौ।
स्यात्तीक्ष्णशूकस्तुरगप्रियश्च शक्तुर्हयेष्टश्च पवित्रधान्यम् ॥

अर्थ–यव, मेध्य, सितशूक, दिव्य, अक्षत, कंचुकि, धान्यराज, तीक्ष्णशूक, तुरगप्रिय, शक्तु, हयेष्ट, पवित्रधान्य (शितशूक,हयप्रिय यवक, श्वेतशुङ्ग, प्रवेट, शीतशूक, कंचुकी, तुरंगप्रिय)

संस्कृतभाषामें	यव ।
हिन्दीभाषामें	जौ ।
बंगभाषामें	यव ।
गुजरातीभाषामें	जब ।
मराठीभाषामें	जव, जा ।
कर्णाटकीभाषामें	मुंडजयव ।
तैलिङ्गीभाषामें	यवधान्य ।
तामिलीभाषामें	वलिअरिसु ।
इंग्रेजीभाषामें	बिटरबार्ली, पेरलबार्ली । Bitter Rarley Poarl Rarley
लैटिन्भाषामें	होर्डियंहेपुझास्टिकम् । Hordeum Hexasticum
फारसीभाषामें	जव ।
अरबीभाषामें	शईर ।

यवस्य प्रकारभेदाः।

यवः सशूकनिःशूकहरिद्भेदैस्त्रिधा मतः।
सशूको गुणवांस्तस्मान्निःशूकोल्पगुणः स्मृतः॥
हरिद्वर्णो हीनगुणो मुनिभिः परिकीर्त्तितः।

अर्थ-जौ शूक, निःशूक और हरित् वर्ण इन भेदोंसे तीन प्रकारके हैं तहां शूकयुक्त जौ गुणोंमें अधिक हैं, निःशूक जौ हीन गुणवाले और हरित् वर्ण जौ उनसेभी हीन गुणवाले हैं।

अन्यच्च।

यवस्तु शीतशूकः स्यान्निःशूकोऽतियवः स्मृतः।
स्तोक्यस्तद्वत्स हरितस्ततः स्वल्पश्च कीर्त्तितः॥(भा. प्र.)

अर्थ-शीतशूकवाले जौको यव कहते हैं, शूकहीन जौको अतियव कहते हैं,हरे रंगके जौको स्तोक्य कहते हैं और साधारण यवोंको स्वल्पयव कहते हैं।

यवगुणाः।

रूक्षः शीतो गुरुः स्वादुः कषायो मधुरो यवः।
वृष्यो ग्राही कफघ्नश्च स्यात्पित्तश्वासकासनुत्॥(हा० सं०)

अर्थ-जौ-रूखे,शीतल,भारी,स्वादु,कषेले,मधुर,वीर्यवर्द्धक,मलरोधक, कफनाशक तथा पित्त,श्वास और खांसीको दूर करे हैं।

अन्यच्च।

यवः कषायो मधुरः शीतलो लेखनो मृदुः। व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रूक्षो मेधाग्निवर्द्धनः॥ कटुपाकोऽनभिष्यन्दी स्वर्य्यो बलकरो गुरुः। बहुवातमलो वर्णस्थैर्य्यकारी च पिच्छिलः॥ कण्ठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदःप्रणाशनः। पीनसश्वासकासोरुस्तम्भलोहिततृट्प्रणुत्॥ तस्मादतियवो न्यूनः स्तोक्यो न्यूनतरस्ततः॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जौ-कषेले, मधुर, शीतल, लेखन, मृदु, व्रणरोगमें तिलकी समान हितकारी, रूखे, मेधा और अग्निवर्द्धक, पाकमें कटु, अनभिष्यंदी, स्वरको शुद्ध करनेवाले, बलकारक,भारी, अत्यन्त वातको

करनेवाले, बहुत मलको करनेवाले, वर्णको सुन्दर करनेवाले, पिच्छिल तथा कण्ठरोग, त्वचारोग, कफ, पित्त, मेदरोग, पीनस, श्वास, खांसी, ऊरुस्तम्भ, रक्तविकार और तृषाको दूर करनेवाले हैं। जौसे अतियव और अतियवसे स्तोक्य हीनगुणवाले हैं।

अन्यच्च ।

यवः कषायो मधुरः सुशीतलः प्रमेहजित्तिक्तकफापहारकः ।
अशूकमुण्डस्तुयवोबलप्रदोवृष्यश्चनॄणांबहुवीर्य्यपुष्टिदः ।(रा.)

अर्थ-जौ-कषेले, मधुर, शीतल, प्रमेहनाशक, कडवे और कफनाशक हैं। अशूक अर्थात् मुण्डे जौ-बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य और पुष्टिकारक हैं।

गोधूमनामानि ।

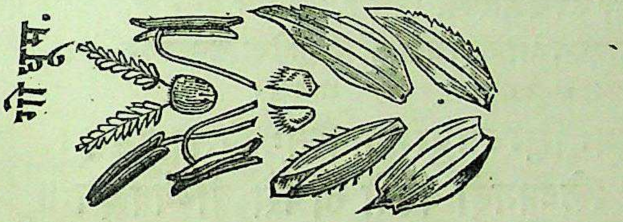

गोधूमो बहुदुग्धः स्यादरूपो म्लेच्छभोजनः ।
यवनो निस्तुषः क्षीरी रसालः सुमनश्च सः ॥

अर्थ-गोधूम, बहुदुग्ध, अरूप, म्लेच्छभोजन, यवन, निस्तुष, क्षीरी, रसाल, सुमन (गोधुम, सुमना,)

संस्कृतभाषामें	गोधूम ।
हिन्दीभाषामें	गेहूं ।
वंगभाषामें	गम ।
मराठीभाषामें	गहूं, काठे लाल रंगाचे(कों०-)पोटगुळधुवे।
गुजरातीभाषामें	घउं ।
कर्णाटकीभाषामें	गोदी ।
तैलिङ्गीभाषामें	गोदुमु ।
इंग्रेजीभाषामें	ह्वीट् । Wheat
लैटिन्भाषामें	ट्रिटिकम्, वल्गेरी । Tritlcnm Vulgare

फारसीभाषामें गंदुम ।
अरबीभाषामें हिंता ।

गोधूमगुणाः ।

मधुरो गुरुविष्टम्भी वृष्यो बल्योऽथ बृंहणः ।
ईषत्कषायः शीतश्च गोधूमः स्यात्त्रिदोषहा ॥ (हा०स०)

अर्थ-गेहूं-मधुर, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक, कुछेक कषेले, शीतल और त्रिदोषनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

गोधूम उक्तो मधुरो गुरुश्च बल्यः स्थिरः शुक्ररुचिप्रदश्च ।
स्निग्धोऽतिशीतोऽनिलपित्तहंता सन्धानकृज्जीवनकोऽल्परेची।

अर्थ-गेहूं-मधुर, भारी, बलकारी, देहको स्थिरकरनेवाले, शुक्रजनक, रुचिकारक, स्निग्ध, अत्यन्त शीतल, वातपित्तनाशक, सन्धानकारक, प्राणदायक और कुछेक दस्तावर हैं ।

अन्यच्च ।

गोधूमः स्निग्धमधुरो वातघ्नः पित्तदाहहृत् ।
गुरुः श्लेष्ममदो बल्यो रुचिरो वीर्य्यवर्द्धनः॥ (रा.नि.)

अर्थ गेहूं-स्निग्ध, मधुर, वातनाशक, पित्तघ्न, दाहनिवारक, भारी, कफकारी, मदकारक, बलवर्द्धक, रुचिजनक और वीर्य्यवर्द्धक हैं ।

अपिच लक्षणगुणाः ।

गोधूमः सुमनोऽपि स्यात्त्रिविधः स च कीर्त्तितः । महागोधूम इत्याख्यः पश्चाद्देशात्समागतः ॥ मधूली तु ततः किञ्चिदल्पा सा मध्यदेशजा । निःशूको दीर्घगोधूमः क्वचिन्नन्दीमुखाभिधः ॥ गोधूमो मधुरः शीतो वातपित्तहरो गुरुः । कफशुक्रप्रदो बल्यः स्निग्धः सन्धानकृत्सरः॥ जीवनो बृंहणो वर्ण्यो व्रण्यो रुच्यः स्थिरत्वकृत्।मधूली शीतला स्निग्धा पित्तघ्नी मधुरा लघुः॥शुक्रला बृंहणी पथ्या तद्वन्नंदीमुखः स्मृतः॥ (भा.प्र.)

अर्थ-गेहूं, महागोधूम, मधूली और दीर्घगोधूम इन भेदोंसे तीन

कफप्रद-कफकारक ऐसा नवीन पद है; परन्तु किसी प्राचीन ग्रन्थमें नहीं लिखा.

प्रकारके हैं तहां महागोधूम पश्चिम मरुदेश आदिमें होते हैं,मधूली गोधूम महागोधूमसे छोटा है यह मध्यदेश (देहली,आगरा,लखनऊ आदि) में होता है और दीर्घगोधूम,शूकरहित होता है और कहीं २ नन्दीमुखनामसे भी प्रसिद्ध है । गेहूं-मधुर, शीतल, वातपित्तनाशक, भारी, कफकारक, शुक्रजनक, बलकारक,स्निग्ध, सन्धानकारक, सारक, संजीवन, पुष्टिकारक, वर्णको सुंदर करनेवाले, रुचिकारी और शरीरको स्थिर करनेवाले हैं।मधूली गेहूं-शीतल,स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर, हलके, शुक्रजनक,पुष्टिकारक और पथ्य हैं तथा नन्दीमुखकेभी गुण इसीके समान जानेन ।

यवनालनामानि ।

यवनालो यावनालः शिखरी वृत्ततण्डुलः ।
दीर्घनालो दीर्घशरः क्षेत्रेक्षुश्चेक्षुपत्रकः ॥

अर्थ-यवनाल, यावनाल,शिखरी,वृत्ततण्डुल,दीर्घनाल,दीर्घशर, क्षेत्रेक्षु, इक्षुपत्रक ।

धवलयावनालनामानि ।

धवलो यावनालस्तु पाण्डुरस्तारतण्डुलः ।
नक्षत्राकृतिविस्तारो वृत्तो मौक्तिकतण्डुलः ॥

अर्थ-धवलयावनाल, पाण्डुर, तारतण्डुल, नक्षत्राकृतिविस्तार, मौक्तिकतण्डुल (जूर्णाह्व, देवधान्य, जूर्णल, बीजपुष्पक, जूर्नल, पुष्पगन्ध, सुगन्ध, सेगुरुंदक)

तुवरयावनालनामानि ।

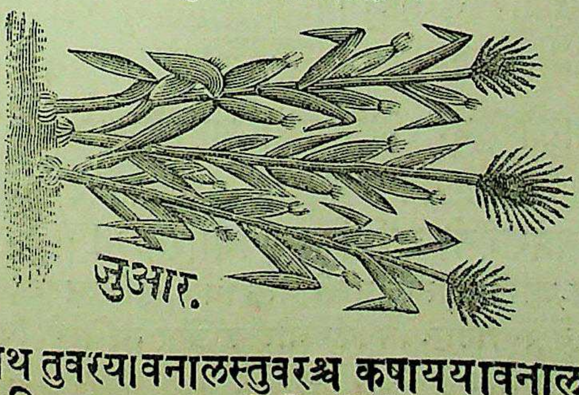

अथ तुवरयावनालस्तुवरश्च कषाययावनालश्च ।
अपि रक्तयावनाललोहितलोहिततुवरधान्याश्च ॥

अर्थ-तुवरयावनाल-तुवर,कषाययावनाल,रक्तयावनाल,लोहित लोहिततुवरधान्य ।

अपिच ।

ललिता क्रोष्टुपुच्छा च श्रीखण्डी च सुगन्धिका ।
कृष्णा भाद्रपदी चान्या श्वेता मंडा च जूर्णका ॥
रक्तिका कुब्जिकाद्याश्च बह्वयो जूर्णाह्वजातयः ।

अर्थ-ललिता,क्रोष्टुपुच्छा,श्रीखण्डी,सुगन्धिका, कृष्णा, भाद्रपदी, श्वेता,मंडा,जूर्णका,रक्तिका और कुब्जिका इत्यादि ज्वारकी अनेक जाति हैं ।

संस्कृतभाषामें	यावनाल, धवलयावनाल, रक्तयावनाल।
हिन्दीभाषामें	जुआर, सफेदजुआर, लालज्वार ।
वंगभाषामें	जोयार, जनार+श्वेतजनार, कालजनार, लालजनार, भुट्टो ।
मराठभाषामें	जोंधळे, ज्वारी ।
गुजरातीभाषामें	जारच, जुवार ।
कर्णाटकीभाषामें	जोलदहेसरु, कारुजोल ।
तैलङ्गीभाषामें	जोन्नलु ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्रेटमलिट । Great Millet
लेटिन्भाषामें	हॉलकस् वलगेरी Holcus vulgare सोरघम् वलगेरिस् Sorghum vulgare
फारसीभाषामें	जुरमका ।
अरबीभाषामें	हंतारुमिया-खंदरूस ।

यावनालगुणाः ।

यावनालो गुरुः शीतो रूक्षो ग्राही रुचिप्रदः ।
वृष्यो मलस्तम्भकरः स्वादुः पित्तकफापहः ॥
रक्तरोगप्रशमनो ऋषिभिः पूर्वमीरितः ॥

अर्थ-जुआर,भारी,शीतल,रूखी,मलरोधक, रुचिकारक,वीर्य्यवर्द्धक,मलस्तम्भक,स्वादिष्ठ, पित्तकफनाशक और रुधिरके विकारको शान्ति करनेवाली है ।

धवलयावनालगुणाः ।

धवलो यावनालस्तु पथ्यो वृष्यो बलप्रदः ।
त्रिदोषार्शोव्रणहरो गुल्मारुचिविनाशकः ॥

अर्थ-सफेदज्वर-पथ्य, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक तथा त्रिदोष, बवासीर, व्रण, गुल्म और अरुचिको दूर करे है।

शारदयावनालगुणाः ।

शारदो यावनालस्तु श्लेष्मलः पिच्छिलो गुरुः ।
शीतलो मधुरो वृष्यो बल्यः पुष्टिकरो मतः ॥
त्रिदोषशमनश्चैव पूर्ववैद्यानरूपितः । (नि० र०)

अर्थ-शारदयावनाल-कफकारक, पिच्छिल, भारी, शीतल, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक और त्रिदोषनाशक है ।

साजकनामानि ।

वर्जरी नालिका नाली नीलसस्यं च साजकः ।
अग्रधान्यं वर्जरीका तथा नीलकणा स्मृता ॥

अर्थ-वर्जरी, नालिका, नाली, नीलसस्य, साजक, अग्रधान्य, वर्जरीका, नीलकणा ।

संस्कृतभाषामें	वर्जरी, साजक ।
हिन्दीभाषामें	बाजरा ।
मराठीभाषामें	बाजरी ।
गुजरातभाषामें	बाजरो ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पाइक्डमिलेट् Spiked millet
लैटिन्भाषाम	पनासालया, स्पाईकटा Peniecllaria sPicate पेनीसेटं, टाइफोडियं Peninsetum typhodnium
फारसीभाषामें	गार्वसा ।
अरबीभाषामें	जार्वस ।

अस्य गुणाः ।

साजको वातलो हृद्यो बल्यः कान्तिकरो मतः ।
अग्निदीप्तिकरश्चोष्णो रूक्षः पित्तप्रकोपनः ॥
स्त्रीकामदो दुर्जरश्च पुंस्त्वपुष्टिहरो मतः । (नि० र०)

अर्थ-बाजरा-बादी, हृदयको हितकारी, बलकारी, कान्तिजनक, अग्निप्रदीपक, गरम, रूखा, पित्तको कुपित करनेवाला, स्त्रियोंके कामको बढानेवाला, देरमें पचनेवाला तथा पुरुषता और पुष्टिको हरनेवालाहै।

अन्यच्च।

वर्जरी दुर्जरा ज्ञेया कफवातप्रणाशिनी।

अर्थ-बाजरा-देरमें पचनेवाला और कफवातको हरनेवाला है।

शमीधान्यनामानि।

शमीजाः शिम्बिजाः शिम्बीभवाः सूप्याश्च वैदलाः।

अर्थ-शमीज, शिम्बिज, शिम्बीभव, सूप्य, वैदल।

शमीधान्यगुणाः।

वैदला मधुरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः।
वातलाः कफपित्तघ्ना बद्धमूत्रमला हिमाः॥
ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्ये त्वाध्मानकारकाः।

अर्थ-शिम्बीधान्य (मूँग, मसूर, मोठ, उडद, लोबिया, चने, अडहर, मटर, कुलथी इत्यादि)-मधुर, रूखे, कषेले, पचनेमें कटु, वातकारक, कफपित्तनाशक, मूत्रमलरोधक, शीतल इनमें मूँग और मसूरको छोडकर शेष सर्व आध्मानकारक हैं।

अन्यच्च।

शिम्बीधान्यं तु मधुरं शीतं रूक्षं कषायकम्। कटु पाके वातलं च मूत्रलं मलस्तम्भकृत्॥ मसूरमुद्गरहितं गुरु चाध्मानकारकम्। लेपादिना रक्तदोषमेदपित्तकफापहम्॥ (र० नि०)

अर्थ-शिम्बीधान्य-मधुर, शीतल, रूक्ष, कषाय, पाकमें कटु, बादी, मूत्रजनक, मलस्तम्भक इनमें मसूर और मूँगको छोडके शेष सर्व शिम्बीधान्य भारी और आध्मानकारक हैं। इनका लेपादिक करनेसे रक्तविकार, मेद, पित्त और कफका नाश होता है।

मुद्गनामानि।

मुद्गस्तु सूपश्रेष्ठः स्याद्वर्णार्हश्च रसोत्तमः।
भुक्तिप्रदो हयानन्दः सुफलो वाजिभोजनः॥

अर्थ- मुद्ग, सूपश्रेष्ठ, वर्णार्ह, रसोत्तम,भुक्तिप्रद,हयानन्द, सुफल, वाजिभोजन।

संस्कृतभाषामें	मुद्ग।	
हिन्दीभाषामें	मूग।	
वंगभाषामें	मुग।	
मराठीभाषामें	हिरवे मूग, पिवळे मूग।	
गुजरातीभाषामें	मग लीला, काला कच्छी।	
कर्णाटकीभाषामें	हेसयेरु।	
तैलिङ्गीभाषामें	पेसलु।	
पंजाबीभाषामें	मूजि।	
इंग्रेजीभाषामें	ग्रीन ग्रेन।	Green grain
लैटिन्भाषामें	फेसीओलस् मुगो।	Phascolus Muego.
फारसीभाषामें	बुनुमाष।	
अरबीभाषाम	मज।	

मुद्गगुणाः।

शीतः कषायो मधुरो लघुःस्यात्पैत्तास्रभूदोषहरः सरश्च।विपा-
कतोऽसौ कटुकप्रधानो मुद्गस्तथान्यः कथितोऽभिरम्यः(हा०)

अर्थ-मूँग-शीतल, कषेली, मधुर, हलकी, पित्त और रक्तके दोषको दूर करनेवाली सारक विपाकमें कटु और रमणीक है।

अन्यच्च।

कृष्णमुद्गा महामुद्गा गौरा हरितपीतकाः।श्वेता रक्तास्तु नि-
र्दिष्टा लघवः पूर्वपूर्वतः॥ प्रधाना हरितास्तत्र वन्यमुद्गास्तु
मुद्गवत्। मुद्गः कषायो मधुरः कफपित्तास्रजिल्लघुः॥ ग्राही
शीतः कटुः पाके चक्षुष्यो नातिवातलः॥ (राज० नि०)

अर्थ-मूँग-अनेक प्रकारके होते हैं जैसे कृष्णमुद्ग, अरुणमुद्ग, गौरवर्णमुद्ग,हारितमुद्ग,पीतमुद्ग श्वेतमुद्ग,और रक्तवर्णमुद्ग इनमें पूर्वसे पूर्व मूग लघु हैं अर्थात् रक्त मूँगसे सफेद मूँग, सफेद मूँगसे पीलेमूँग और पीले मूँगसे हरा मूँग हलका है इत्यादि सर्व मूँगोंमें हरा मूँग प्रधान है। वनमूँग (मोठ) के गुण भी मूँगके समान हैं। मूँग कषेली

मधुर, कफनाशक, रक्तपित्तनिवारक, हलका, मलरोधक, शीतल पचनेमें कटु, नेत्रोंको हितकारी और अत्यन्त वातकारक नहीं है।

अपिच।

मुद्गो रूक्षो लघुर्ग्राही कफपित्तहरो हिमः । स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो ज्वरघ्नो वनजस्तथा ॥ मुद्गो बहुविधः श्यामो हरितः पीतकस्तथा । श्वेतो रक्तश्च तेषां तु पूर्वः पूर्वो लघुः स्मृतः॥ सुश्रुतेन पुनः प्रोक्तो हरितः प्रवरो गुणैः । चरकादिभिरप्युक्त एष एव गुणाधिकः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मूँग-रूखा, हलका, मलरोधक, कफपित्तनाशक, शीतल, स्वादिष्ठ, अल्पवातकारक, नेत्रोंको हितकारी और ज्वरको दूर करे है। वनमूँग (मोठ) के गुणभी मूँगके समान हैं। मूँग अनेक प्रकारकी हैं जैसे श्याम, हरित, पीत, सफ़ेद, लाल। इनमें पहिले २ मूँग हलके हैं सुश्रुतने हरे मूगको उत्तम कहा है और चरकादिकभी इसी प्रकार कहते हैं।

अन्यच्च।

मुद्गः पित्तकफापहो व्रणहरः कण्ठामयघ्नो लघुः पथ्यो वातविरक्तजन्तुषु तथा नेत्रामये सर्वदा ॥ नैवाध्मानकरस्तथा निलहरो मन्दानले शस्यते भक्तानामपि चोत्तमः स्वरकरो मूत्रामयच्छेदनः ॥

अर्थ-मूँग-पित्तकफनाशक, व्रणविनाशक, कण्ठरोग निवारक, हलकी तथा वातरक्त, कृमिरोग और नेत्ररोगमें हितकारी है, आध्मानकारक नहीं, वातहारकभी नहीं, मन्दाग्निको दूर करनेवाली, भोजनके ऊपरभी पथ्य, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाली और मूत्ररोगको हरनेवाली है।

कृष्णमुद्गनामानि।

कृष्णमुद्गस्तु वासन्तो माधवश्च सुराष्ट्रजः ।

अर्थ-कृष्णमुद्ग, वासन्त, माधव, सुराष्ट्रज।

कृष्णमुद्गगुणाः।

कृष्णमुद्गस्त्रिदोषघ्नो मधुरो वातनाशनः ॥
लघुश्च दीपनः पथ्यो बलवीर्यांगपुष्टिदः

अर्थ-कालीमूँग-त्रिदोषनाशक, मधुर, वातनाशक, हलकी, दीपन, पथ्य तथा बल, वीर्य्य और शरीरको पुष्टि देनेवालीहै ।

हरिन्मुद्गनामानि ।

शारदस्तु हरिन्मुद्गो धूसरोऽन्यश्च शारदः ।

अर्थ-शारद और हरिन्मुद्ग यह दो नाम हरिन्मुद्गके हैं, धूसर और शारद यह दूसरी होती है ।

हरिन्मुद्गगुणाः ।

हरिन्मुद्गः कषायश्च मधुरः कफपित्तहृत्
रक्तमूत्रामयघ्नश्च शीतलो लघुदीपनः ॥

अर्थ- हरिमूँग-कषेली, मधुर, कफपित्तनाशक तथा रुधिरविकार और मूत्ररोगको दूर करे है, शीतल, हलकी और दीपन है ।

धूसरमुद्गगुणाः ।

तद्वच्च धूसरोमुद्गो रसवीर्य्यादिषु स्मृतः ।
कषायो मधुरो रुच्यः पित्तवातविबन्धकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-धूसर रंगकी मूँग रसवीर्य्यादिकोंमें तो हरीमूँगकी समानहै कषेली, मधुर रुचिकारी तथा पित्त, वात्त और विबन्धकारक है ।

मकुष्ठनामानि ।

मकुष्ठको मकुष्ठश्च वनमुद्गः कृमीलकः ।
अमृतोऽरण्यमुद्गश्च वल्लीमुद्गश्च कीर्त्तितः ॥

अर्थ-मकुष्ठक, मकुष्ठ, वनमुद्ग, कृमीलक, अमृत, अरण्यमुद्ग, वल्लीमुद्ग, मुकुष्ठ, मपष्ठ, राजमुद्ग, मयष्ठ, मकुष्टक, मकुष्ठक, मकुष्ठ, वरक, निगूढक, कुलीनक, खण्डी, मुद्गष्टक, मुद्गष्ट, मयष्टक, मुकुष्ठ, मयूष्ट, मयष्ट, मद्यक, मयुष्टक, मयुष्ट)

संस्कृतभाषामें	मकुष्ठ ।
हिन्दीभाषामें	मोठ ।
वंगभाषामें	वनमूँग ।
मराठीभाषामें	मटक्या ।
गुजरातीभाषाम	मठ ।
कर्णाटकीभाषामें	मुगु, हैसरुभेद ।
तैलिंगीभाषाम	कंकंपेसालु ।

इंग्रेजीमें एकोनेडेलिव्ड किडनीबिन। Aconite leaved Kidney bean
लैटिन्भाषामें फेसी ओलस् Phasaolus
एकोनिटि फोलीयम् aconite folium

फारसीभाषामें माषहिंदि।

मकुष्ठगुणाः।

सरक्तपित्तकफवातहन्ता चोष्णः कषायो मधुरः प्रदिष्टः।
ग्राही सुशीतो गुदकीलगुल्मं मकुष्ठकः सर्वगदान्निहन्ति ॥

अर्थ-मोठ-रक्तपित्त, कफ और वातनाशक है; गरम, कषैली, मधुर,मलरोधक,शीतल तथा गुदकील,गुल्म और रोगोंको दूर करेहै।

अन्यच्च

मकुष्ठकः कषायः स्यान्मधुरो रक्तपित्तजित्।
ज्वरदाहहरः पथ्यो रुचिकृत्सर्वदोषजित ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मोठ-कषेली, मधुर, रक्तपित्तनाशक, ज्वरनिवारक, दाहहारक, पथ्य, रुचिकारक और सर्वदोषनाशक है।

अन्यच्च।

मकुष्ठो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः।
वान्तिजिन्मधुरः पाके कृमिकृज्ज्वरनाशनः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मोठ-बादी, मलरोधक, कफपित्तनाशक, हलकी, वमननिवारक, पचनेमें मधुर, कृमिजनक और ज्वरनाशक है।

अपिच।

मुद्गष्टः शीतलो ग्राही कफपित्तक्षयापहः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मोठ-शीतल, ग्राही,तथा कफ,पित्त और क्षयको दूर करेहै।

अस्य सूपगुणाः।

मकुष्ठसूपोऽल्पबलः पाचनो दीपनो लघुः।
चक्षुष्यो बृंहणो वृष्यः पित्तश्लेष्मास्ररोगनुत्॥ (द्र०गु०)

अर्थ-मोठकी दाल-अल्पबलकारक, पाचक, दीपन, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त, कफ और रुधिरके दोषोंको दूर करे है।

माषनामानि।

माषस्तु कुरुविन्दः स्याद्धान्यवीरो वृषांकुरः।

मांसलश्च बलाढ्यश्च पित्र्यश्च पितृभोजनः ॥

अर्थ-माष, कुरुविन्द, धान्यवीर, वृषांकुर, मांसल, बलाढ्य, पित्र्य, पितृभोजन (बीजरत्न, बली)

संस्कृतभाषामें	माष ।	
हिन्दीभाषामें	उडद ।	
वंगभाषामें	माषकलाय ।	
मराठीभाषामें	उडीद ।	
गुजरातीभाषामें	उडद ।	
कर्णाटकीभाषामें	उडु ।	
तौलिंगीभाषामें	मिनुउलु ।	
इंग्रेजभाषामें	किड्नीबीन ।	Kidney bean
लैटिन्भाषामें	फेसीओलस् रेडीरेटस् ।	Phaseolus rediatus.
फारसीभाषामें	माष ।	
अरबीभाषामें	माषा ।	

माषगुणाः ।

माषः स्निग्धो बहुमलकरः शोषणः श्लेष्मकारी वीर्ये उष्णो झटिति कुरुते रक्तपित्तप्रकोपम् । हन्याद्वातं गुरु बलकरो रोचनो भक्ष्यमाणः स्वादुर्नित्यं श्रमसुखवतां सेवनीयो नराणाम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध,बहुमलकारक,शोषक, कफकारक, उष्णवीर्य्य, शीघ्र रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वातनाशक,भारी, बलकारी, रुचिकारक, स्वादिष्ठ तथा श्रम और सुखवान् मनुष्योंको सदैव सेवने योग्य है ।

अन्यच्च ।

स्निग्धोऽथ वृष्यो मधुरश्च बल्यो मरुत्कफानां परिबृंहणश्च।पाकेम्लकोष्णो विदितो हिमश्च माषोऽथ हृद्यः कथितो नरैश्च ॥

अर्थ-उडद-स्निग्ध,वीर्य्यवर्द्धक,मधुर,बलकारक,वात और कफको बढानेवाला,पाकमें अम्ल,उष्ण,शीतल और हृदयको हितकारी है।

अन्यच्च ।

माषो गुरुर्भिन्नपुरीषमूत्रः स्निग्धोष्णवृष्यो मधुरोऽनिलघ्नः ।

सन्तर्पणः स्तन्यकरो विशेषाद्बलप्रदः शुक्रकफावहश्च ॥

अर्थ-उडद-भारी, मलमूत्रका निकालनेवाला, स्निग्ध, गरम, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, वातनाशक, तृप्तिकारक, स्तनोंमें दूधको बढानेवाला तथा विशेषकरके बल,शुक्र और कफको करनेवाला है।

कषायभावान्न पुरीषभेदी न मूत्रलो नैव कफस्य कर्त्ता ।
स्वादुर्विपाके मधुरोऽथसांद्रः सन्तर्पणः स्तन्यरुचिप्रदश्च ॥

अर्थ-उडद-कषेलेपनसे मलभेदक नहीं है और मूत्रजनकभी नहीं ह और न कफको करनेवालाहै, पचनेमें स्वादु, मधुर, स्निग्ध,तृप्तिकारक, स्तनोंमें दूध प्रगट करनेवाला और रुचिकारक है।

अपिच।

माषः स्निग्धो बलश्लेष्ममलपित्तकरः सरः ।
गुरूष्णोनिलहा स्वादुः शुक्रवृद्धिविरेककृत् (वाग्भ०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध,बलकारक,कफजनक, मलकारक, पित्तकारक, सारक, भारी, गरम, वातविनाशक, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक और दस्तावर है।

अन्यच्च।

माषः साधारणः स्निग्धः शोषणोष्णः कफप्रदः।वृष्यः पित्तकरः पित्तकोपनो रोचको गुरुः॥बलयःसन्तर्पणःस्वादुः पुष्टिकृन्मूत्रशुक्रलः। मलभेदकरो दुग्धकारको मांसवर्द्धकः ॥मेदवृद्धिकरश्चैव श्वासश्रमनिवारणः। परिणामभवं शूलमर्दितं च विनाशयेत्। वातं चार्शं नाशयतीत्येवमार्यैर्निरूपितम्॥(२०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध, शोषण, गरम,कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक पित्तकारक, पित्तको कुपित करनेवाला,रुचिको उत्पन्न करनेवाला,भारी, बलकारक, तृप्तिजनक, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक, मूत्रजनक, मलभेदक, दुग्धकारक, मांसवर्द्धक, मेदवर्द्धक तथा श्वास, श्रम, परिणामशूल, अर्दितवात, वात और बवासीरको दूर करे है।

राजमाषनामानि।

राजमाषो महामाषश्चपलश्चवलः स्मृतः ।

अर्थ-राजमाष,महामाष,चपल,चवल(बर्बट), मलकर,द्विजसत,

नीलमाष, नृपमाष, नृपोचित, सितमाष, दीर्घबीज, निष्पाव, राजमाषक सुकुमार, दीर्घशिम्बी, क्षुधाभिजनक)

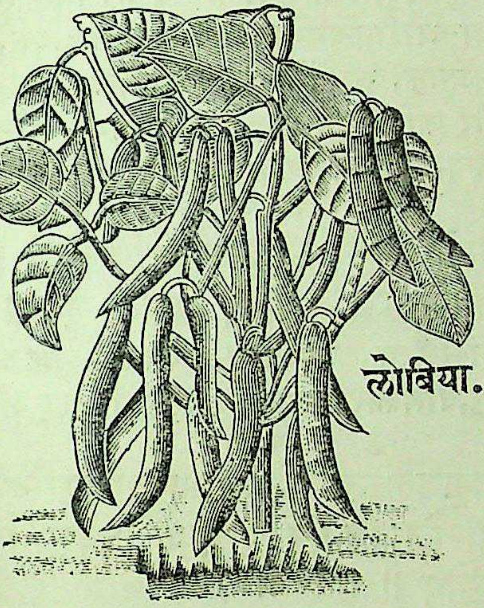

लोबिया.

संस्कृतभाषामें	राजमाष।
हिन्दीभाषामें	लोबिया।
वंगभाषामें	वरवटीकलाय, बोरा।
मराठीभाषामें	चंवळ्या (अळसुंदे।
गुजरातिभाषामें	चोला।
कर्णाटकीभाषामें	वरवटा, अलसंदे।
पंजाबीभाषामें	रैंस।
इंग्रेजीभाषामें	चाईनिझ डोलिकोस्। Chinese dolicos
लैटिन्भाषामें	डोलिकोस् सिनेन्सीस्। Dolichos sinensis
	विगना कटिऐंग्। Vigna catiang
फारसीभाषामें	लोबिया।
अरबीभाषामें	फरिका।

राजमाषगुणाः।

राजमाषो गुरुः स्वादुस्तुवरस्तर्पणः सरः।
रूक्षो वातकरो रुच्यः स्तन्यो भूरिबलप्रदः॥

श्वेतरक्तस्तथा कृष्णस्त्रिविधः सम्प्रकीर्त्तितः ।
यो महांस्तेषु भवति स एवोक्तो गुणाधिकः ॥ (

अर्थ-लोबिया-भारी, स्वादिष्ठ, कषेला, तृप्तिकारक, सारक, रूखा, वातकारक, रुचिजनक, स्तनोंमें दूध करनेवाला और बलकारक है। सफेद, लाल और काला इन भेदोंसे लोबिया तीन प्रकारके हैं इनमें बडा लोबिया अधिक गुणवाला जानना ।

अन्यच्च ।

राजमाषः सरो रुच्यः कफशुक्राम्लपित्तकृत् ।
स स्वादुर्वातलो रूक्षः कषायो विशदो गुरुः ॥ (च० सु० सं०)

अर्थ-लोबिया-सारक, रुचिकारक, कफकारी, शुक्रजनक, अम्लपित्तकारक, स्वादिष्ठ, वातकारक, रूखा, कषेला, विशद और भारी है ।

अपिच ।

रूक्षो गुरुर्बहुशकृच्चलकृच्च शिम्बीधान्याधमस्त्वमसि नागम एष मिथ्या । हे राजमाष तव राजपदं प्रदत्तं माषं विहाय विधिना तददृष्टमेव ॥ (वै० अ०)

अर्थ-हे राजमाष ! (लोबिया)-जो कि, तुम रूखे, भारी, बहुत मलको करनेवाले, शिम्बीधान्योंमें अधम हो यह बात मिथ्या नहीं है इसपरभी विधाताने तुमको और उरदोंको छोडकर राजपद दिया यह प्रारब्धका फल नहीं तो क्या है ? ।

अस्य सूपगुणाः ।

राजमाषभवः सूपः स्वादू रूक्षः कषायकः ।
ग्राही गुरुर्वातकरः स्तन्यकृद्रुचिकारकः ॥ (द्रव्यगुण)

अर्थ-लोबियेकी दाल-स्वादिष्ठ, रूखी, कषेली, मलरोधक, भारी, वातकारी, स्तनोंमें दूध प्रगट करनेवाली और रुचिको उत्पन्न करनेवाली है ।

निष्पावनामानि ।

निष्पावो राजशिम्बी स्याद्वल्लकः श्वेतशिम्बिकः ।

अर्थ-निष्पाव, राजशिम्बी, वल्लक, श्वेतशिम्बिक ।

संस्कृतभाषामें निष्पाव ।
हिंदीभाषामें भटवासु, भटरासु, राजशिम्बीके बीज ।

वंगभाषामें	राजशिम्बीबीज, भेटरासु ।
मराठीभाषामें	कडवेवाल,पांढरे पावटे,तांबडे पावटे।आँवरे।
गुजरातीभाषामें	ओलिया ।
कर्णाटकीभाषामें	आवरे, तोरेआवरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	आनपचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	लेबलेववल्गेरीस् Lablab Vulgaris

निष्पावगुणाः ।

निष्पावो मधुरो रूक्षो विपाकेऽम्लगुरुः सरः ।
कषायः स्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबंधकृत् ।
विदाह्युष्णोविषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥(भा० प्र०)

अर्थ-निष्पाव (भटवासु)-मधुर, रूखा, पाकमें अम्ल, भारी, वालकारी, कुछेक दस्तावर,कषेला,स्तनोंमें दूधको प्रगट करनेवाला तथा रक्तपित्त, मूत्र, वात और विबंधकारक है, दाहजनक, गरम तथा विष, कफ, सूजन और शुक्रको हरे है ।

अन्यच्च ।

निष्पावो वातपित्तास्रस्तन्यमूत्रकरो गुरुः ।
सरो विदाहि दृक्छुक्रकफशोफविनाशनः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-निष्पाव-वात, पित्त, रुधिरविकार, स्तनोंमें दूध और मूत्रको उत्पन्न करेहै ।भारी, सारक, दाहकारक तथा दृष्टि, शुक्र, कफ और सूजनको दूर करे है ।

अपिच ।

निष्पावो मधुरो रूक्षः पाकेम्लः सारको गुरुः ।
उष्णः शोषकरो बल्यः पुष्टिकृत्तुवरो मतः ॥
विषदृष्टिहरः प्रोक्तः पूर्ववैद्यैः कृपालुभिः । (रा० नि०)

अर्थ-भटवासु-मधुर, रूखा, पचनेमें अम्ल, सारक, भारी, गरम, सूजनको करनेवाला, बलकारक, पुष्टिकारक, कषेला तथा विष और दृष्टिको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

निष्पावस्तुवरो मेध्यो दीपनो मधुरो रसे ।
कंठशुद्धिकरो रुच्यो ग्राहको मुनिभिर्मतः ॥

निष्पावसदृशास्त्वन्ये गुणा ज्ञेयाश्चिकित्सकैः ।

अर्थ-सफेद और नील निष्पाव-कडवे, मेधाजनक, दीपन, रसमें मधुर, कंठशोधक, रुचिकारक और ग्राही हैं शेष गुण निष्पावकी समान जानने ।

रक्तनिष्पावगुणाः ।

रक्तनिष्पावको रुच्यो मधुरः शीतलो गुरुः ।
किञ्चित्कषायो बल्यश्च वातलः पुष्टिकृन्मतः ॥
आध्मानकृद्गुणास्त्वन्ये निष्पावसदृशा मताः ।

अर्थ-लाल निष्पाव-रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, किञ्चित्कषेला, बलकारी, वातकारक, पुष्टिकारक, आध्मानकारक और गुण निष्पावकी समान जानने ।

नदीनिष्पावगुणाः ।

नदीनिष्पावकस्तिक्तः कटुर्वातकरो गुरुः ।
रक्तप्रदः कफकरो रुचिकृत्तुवरो मतः ॥
विषदोषहरश्चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितः । (नि० र०)

अर्थ नदीनिष्पाव-कडवा,चरपरा, वातकारक,भारी,रक्तकारक, कफकारक, रुचिजनक,कषेला और विषके दोषोंको हरनेवाला है ।

मसूरनामानि ।

मसूरो रागदालिस्तु मङ्गल्यः पृथुबीजकः ।
सूरः कल्याणबीजश्च गुरुबीजो मसूरकः ॥

अर्थ-मसूर,रागदालि, मङ्गल्य, पृथुबीजक, सूर, कल्याणबीज, गुरुबीज,मसूरक(मङ्गल्यक, मसुर,व्रीहिकाञ्चन, गभोलिक, ताम्बूलराग, हालासक,मसुरा,मसूरा,मसूरिका, मसूरि,मङ्गल्या,माङ्गल्या)

संस्कृतभाषामें	मसूर ।
हिंदीभाषामें	मसूर ।
वंगभाषामें	मुसूरि, कलाय ।
मराठीभाषामें	मसूर ।
गुजरातीभाषामें	मसूर ।
कर्णाटकीभाषामें	चणगी ।

तैलङ्गीभाषामें	मसूरपप्पु, चिरशनमलु ।
तामिलीभाषामें	मिसुर, पुरपुर ।
इंग्रजीभाषामें	लेंटिल । Lentil
लाटन्भाषामें	ईरवलेन्स । Eravylens
फारसीभाषामें	बुनोसुर्ख ।
अरबीभाषामें	अदस् ।

मसूरगुणाः ।

मसूरो मधुरः शीतः संग्राही कफपित्तजित् ।
वातामयकरश्चैव मूत्रकृच्छ्रहरो लघुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मसूर-मधुर, शीतल, मलरोधक, कफपित्तनाशक, वातरोगको करनेवाली, हलकी और मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

रूक्षो विशोषी मधुरः प्रदिष्टः शूलार्तिगुल्मग्रहणीविकारान् ।
करोति वातामयवर्द्धनश्च पित्तास्रसंकृच्छ्रहरो मसूरः॥(हा. सं.)

अर्थ-मसूर-रूखी, विशोषक, मधुर तथा शूल, गुल्म और संग्रहणीरोगको उत्पन्न करनेवाली है, वातरोगोंको बढानेवाली तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्ररोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मासूरा लघवोऽतिरूक्षविशदाश्चक्षुष्यमूत्रग्रहाः
श्लेष्मापित्तनिबर्हणा रुचिकरा वातव्यथाकारकाः ।
विष्टम्भं जनयन्ति कोष्ठधमनं कृच्छ्राश्मरीछेदकाः
सर्वे पित्तविकारजेषु विहिता हृद्याश्च माधुर्यकाः ॥

अर्थ-मसूर-हलकी, अत्यन्त रूखी, विशद, नेत्रोंको हितकारी, मूत्रग्रहनाशक, श्लेष्मपित्तनाशक, रुचिकारक, वातरोगकारक, विष्टम्भजनक, मलरोधक, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और सर्व प्रकारके पित्तविकारोंको दूर करे है, हृदयको हितकारी और मधुर है ।

अपिच ।

मसूरो लेपनो वर्ण्यो रूक्षो बद्धमलो हिमः ।
वाताध्मानकरः किञ्चित्पित्तास्रकफहा लघुः ॥

कषायो मधुरो मेदोहंता चासौ प्रकीर्त्तितः ।
तत्पर्णशाकं तुवरं लघु तिक्तश्च कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-मसूरका लेप-वर्णको सुंदर करनेवाला और त्वचाके रोगोंको हरनेवाला है, मसूर-रूखी, मलवर्द्धक, शीतल, वातकारक, किंचित् आध्मानकारक,रक्तपित्त और कफनाशक,हलकी,कषेली,मधुर,मेदनाशक है । इसके पत्तोंका शाक-कषेला,हलका और कडवा है ।

चणकनामानि ।

चणको हरिमन्थः स्याद्वाजिमन्थश्च जीवनः ।

अर्थ-चणक,हरिमन्थ,वाजिमन्थ,जीवन (हरिमन्थक, हरिमन्थज, चण, सुगन्ध, कृष्णचञ्चुक, बालभोज्य, वाजिभक्ष्य, कंचुकी, बालभैषज्य, सकलाप्रिय)

संस्कृतभाषामें	चणक ।
हिन्दीभाषामें	चने, चना, छोला ।
वंगभाषामें	छोलारगाछ, बुट् ।
मराठीभाषामें	हरभेर ।
गुजरातीभाषामें	चण्या ।
कर्णाटकीभाषामें	कडले, विलीयकडले ।
तैलिङ्गीभाषामें	शलंगालु ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्राम । Gram
लैटिन्भाषामें	सीसरएरिएटिनं । Cicer Arietinum
फारसीभाषामें	नखूद ।
अरबीभाषामें	हुमस् ।

चणकगुणाः ।

चणकः शीतलो रूक्षो रक्तपित्तकफापहः ।
लघुः कषायो विष्टम्भी वातलः कुष्ठनाशनः ॥ (म. नि.)

अर्थ-चने-शीतल, रूखे, रक्तपित्तनिवारक, कफहारक, हलके, कषेले विष्टम्भकारक,वातवर्द्धक और कुष्ठनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

चणको मधुरो रूक्षो मेहजिद्वातपित्तकृत् ।

दीप्तिवर्णकरो बल्यो रुच्यश्चाध्मानकारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चने-मधुर, रूखे, प्रमेहनाशक, वातपित्तकारक, दीपन, वर्णकारक, बलकारक, रुचिकारी और आध्मानको करनेवाले हैं ।

अपिच ।

रक्ते कफे पीनसके तु कंठे गलामये वातरुजे सपित्ते ।
शीतः प्रतिश्यायकृमीन्निहन्ति शुष्कस्तथार्द्रश्चणकः प्रशस्तः ।
(हा० सं०

अर्थ-सूखे तथा गीले चने-रुधिरविकार, कफ, पीनस, कण्ठरोग गलरोग, वातरोग, पित्तरोग प्रतिश्याय और कृमिरोगको दूर करै हैं और शीतल हैं ।

अन्यच्च ।

चणको वातलः शीतः कफासृक्पित्तपुंस्त्वनुत् ॥ (रा० व०)

अर्थ-चने-बादी, शीतल तथा कफ, रक्तपित्त और पुरुषतानाशकहैं ।

अन्यच्च ।

चणकः शीतलो रूक्षः पित्तरक्तकफापहः । लघुः कषायो विष्टम्भी वातलो ज्वरनाशनः ॥ स चाङ्गारेण संभृष्टस्तैलभृष्टश्च तद्गुणाः । आर्द्रभृष्टो बलकरो रोचनश्च प्रकीर्त्तितः ॥ शुष्कभृष्टोतिरूक्षश्च वातकुष्ठप्रकोपनः । स्विन्नः पित्तकफं हन्यात्सूपः क्षोभकरो मतः ॥ आर्द्रोतिकोमलो रुच्यः पित्तशुक्रहरो हिमः । कषायो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चने-शीतल, रूखे, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, हलके, कषेले, विष्टम्भकारक, वादी और ज्वरनाशक हैं । वही चने अंगारों तथा तेलमें भुनेहुये पूर्वोक्त गुणोंको करनेवाले हैं । गीले भुनेहुये चने-बल कारक और रोचक हैं । सूखे भुने चने अत्यन्त रूखे तथा वात और कोढको कुपित करनेवालेहैं । सीजेहुये चने-पित्त और कफनाशक हैं । चनेकी दाल-क्षोभको करनेवाली है । कच्चे चन-अत्यन्तकोमल, रुचिकारक, पित्तनाशक, शुक्रनिवारक, शीतल, कषेले, वातकारक, मलरोधक, कफपित्तनाशक और हलके हैं ।

अन्यच्च ।

आमश्चणः शीतलरुच्यकारी सन्तर्पणो दाहतृषापहारी । गौल्यो

श्मरीशोषविनाशकारी कषाय ईषत्कफवीर्य्यकारी (रा.नि.)

अर्थ-कच्चे-चने-शीतल, रुचिकारक, तृप्तिजनक, दाहनाशक, तृषानिवारक, गौल्य, अश्मरीको दूर करनेवाले, शोषनाशक, किञ्चित्कषेले कफ और वीर्य्यकारक हैं।

अपिच भृष्टचणकगुणाः।

भृष्टस्तु चणकश्चोष्णो रुच्यो रक्तरुजाकरः। लघुर्बल्यः शुक्रलश्च
तेजोवृद्धिकरः स्मृतः॥ विना जलेन च भृष्टाश्चातिरूक्षाश्च वात-
लाः। कुष्ठप्रवर्द्धनाः प्रोक्ता गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत्॥ (र॰नि॰)

अर्थ-भुनेहुये चने-गरम, रुचिकारी, रक्तरोगकारक, हलके, बलकारक, शुक्रजनक, शरीरको तेज देनेवाले तथा पसीना, शीतलता, आम, वात और क्रमका नाशकरे हैं। सूखे भुनेचने अत्यन्त रूखे, बादी, कुष्ठवर्द्धक और गुण पाहिलेके समान जानने।

कृष्णचणकगुणाः।

कृष्णस्तु चणकः शीतो मधुरश्च रसायनः।
बलकृच्छ्वासकासघ्नः पित्तातीसारपित्तहा॥ (नि॰ र॰)

अर्थ-काले चने-शीतल, मधुर, रसायन, बलकारक तथा श्वास, खांसी, पित्तातीसार और पित्तको दूर करेहैं।

चणकशाकगुणाः।

चणकानां दलं चाम्लं किञ्चिद्वातप्रकोपनम्।
मलस्तम्भकरं रुच्यं तर्पणं चाग्निकारकम्॥
कफनाशकरं प्रोक्तं पूर्ववैद्यैः कृपालुभिः (र॰ नि॰)

अर्थ-चनेका शाक-अम्ल, किंचित् बातकारक, मलस्तम्भक, रुचिजनक, तृप्तिकारक, अग्निकारक और कफनाशक है।

अन्यच्च।

रुच्यं चणकशाकं स्याद्दुर्जरं कफवातकृत्।
अम्लं विष्टम्भजनकं पित्तनुद्दन्तशोथहृत्॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-चनेके पत्तोंका शाक-कषेला, कठिनतासे पचनेवाला, कफ और वातकारक, अम्ल, विष्टम्भजनक, पित्तनाशक और दांतोंकी सूजनको दूर करेहैं।

आढकीनामानि ।

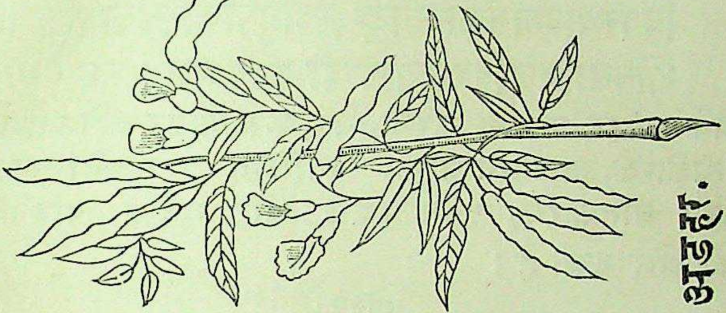

आढकी तुवरी वर्य्या मृत्तालं च मृतालकम् ।
काक्षी करवीरभुजा वृत्तबीजा सुराष्ट्रजम् ॥

अर्थ-आढकी, तुवरी, वर्य्या, मृत्ताल, मृत्तालक, काक्षी, करवीरभुजा, वृत्तबीजा, सुराष्ट्रज (पीतपुष्पा, मृत्स्ना, तुवरिका, मृतालक, शणपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	आढकी ।	
हिंदीभाषामें	अरहर ।	
वंगभाषामें	अडहर, आइरि ।	
मराठीभाषामें	तुरी ।	
गुजरातीभाषामें	तुरदाल्य ।	
कर्णाटकीभाषामें	कटलाकटु, तौगरी ।	
तैलिंगीभाषामें	कादुलु ।	
इंग्रजीभाषामें	पीजीअन्पी ।	Pigeon pea
लैटिन्भाषामें	केजेनस इंडिकस्	Cajanus indieus
फारसीभाषामें	शाखुल ।	

आढकीगुणाः ।

मृदुः कषाया च सरक्तपित्तं वातं कफं हन्ति मुखव्रणञ्च ।
गुल्मज्वरारोचककासछर्दिहृद्रोगदुर्नामहराढकी स्यात्॥ (हा०)

अर्थ-अडहर-कषेली तथा रक्तपित्त, वात, कफ, मुखव्रण, गुल्म, ज्वर, अरुचि, खांसी, वमन, हृदयरोग और बवासीरको दूर करेहै।

अन्यच्च ।

तुवर्यतिकषाया च मेदःश्लेष्मास्रपित्तजित् ।
विबन्धाध्मानकृत्स्वादुः स्वादुपाकाल्पवातला ॥
शीतला बद्धविण्मूत्रा लघ्वी रूक्षा प्रकीर्त्तिता (शो. नि.)

अर्थ-अडहर-अत्यन्त कषेली, मेद, कफ और रक्तपित्तनाशक है, विबन्धकारक, आध्मानकारक, स्वादिष्ठ, पचनेमें स्वादिष्ठ, किञ्चित् वातकारक, शीतल, मल और मूत्रको बांधनेवाली, हलकी और रूखी है ।

अपिच ।

आढकी मधुरा किञ्चिद्वातला च कषायका। गुर्वी रुच्या ग्राहिणी च रूक्षा वर्ण्या च शीतला।कफपित्तज्वरविषरक्तरुग्गुल्मवातनुत् । अर्शोनाशकरा प्रोक्ता घृतयुक्ता च वातहा ॥ कफपित्तहरा लेपैः सेकैर्मेदकफापहा। तुवरी दालिका पथ्या किञ्चिद्वातकरा मता ॥ कृमित्रिदोषशमनी घृतयुक्ता त्रिदोषहा ।

अर्थ-साधारण अडहर-मधुर, किञ्चित् वातकारक, कषेली, भारी, रुचिकारी, मलरोधक, रूखी, वर्णकारक, शीतल, तथा कफ पित्तज्वर, विष, रुधिरविकार, गुल्म, वात और बवासीरको दूर करे है और घीके साथ वातका नाश करे है । इसका लेप करनेसे कफ और पित्तका नाश होता है । इसका सेक करनेसे मेद और कफ दूर होते हैं । इसकी दाल-पथ्य, किञ्चित् वातकारक तथा कृमि और त्रिदोषका नाश करेहै और घीयुक्त त्रिदोषनाशक है ।

श्वेताढकीगुणाः ।

श्वेता तु तुवरी गुर्वी वातपित्तप्रकोपदा ।
अम्लपित्तकरा ग्राहिण्यपथ्याध्मानकारिणी ॥

अर्थ-सफेद अडहर-भारी, वातपित्तप्रकोपक, अम्लपित्तकारक, मलरोधक, पथ्य और आध्मानकारक है ।

रक्ताढकीगुणाः ।

रक्ता तु तुवरी रुच्या बल्या पथ्या ज्वरापहा ।
पित्तसन्तापहा [illegible] मता ॥

अर्थ-लाल अडहर-रुचिकारक, बलकारक, पथ्य, ज्वरनाशक तथा पित्त और सन्ताप इत्यादि नानाप्रकारके रोगोंको दूर करैहै ।

कृष्णाढकीगुणाः ।

कृष्णा तुतुवरी बल्या चाग्निदीप्तिकरा मता ।
पित्तदाहप्रशमनी ऋषिभिः परिकीर्त्तिता ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-काली अडहर-बलकारक, अग्निप्रदीपक, पित्त और दाहको शान्ति करनेवालीहै ।

कलायनामानि ।

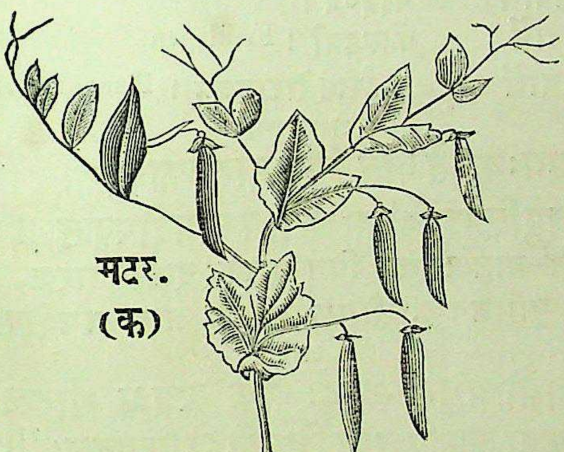

मटर. (क)

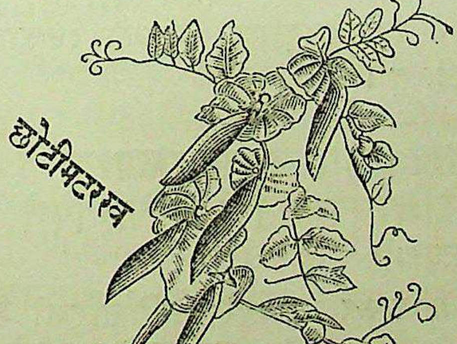

छोटीमटरख

कलायो मुण्डचणको हरेणू रेणुकः स्मृतः ॥

अर्थ-कलाय, मुण्डचणक, हरेणु, रेणुक, (सतीलवः, हरेणु,

खोण्डक, त्रिपुट, अतिवर्त्तुल, शमन, नीलक, कण्टी, सतील, सतीन, हरेणुक, सतीनक)

संस्कृतभाषामें	कलाय ।
हिन्दीभाषामें	मटर, केराव ।
बंगभाषामें	वाँटुला मटर, मठर, तेओडा मटर ।
मराठीभाषामें	वाटाण ।
गुजरातीभाषाम	मटाणा ।
कर्णाटकीभाषामें	वट्टकडले ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दइ०र्वे ।
इंग्रेजीभाषामें	फीलडपी । Field pea
लैटिन्भाषामें	पाईसम् सेटाइवम् । Pisum sativum

अस्य गुणाः ।

कलायः कुरुते वातं पित्तं दाहकफापहः ।
रुचिपुष्टिप्रदः शीतः कषायश्चामदोषकृत् ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-मटर-वातकारक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, कफहारक, रुचिकारक, पुष्टिजनक, शीतल, केषला आर आमदोषको करे है ।

अन्यच्च ।

कलायो मधुरः स्वादुः पाके रूक्षश्च शीतलः ।
"रक्तहा कफपित्तघ्नो भिन्नविट्कोतिवातलः"॥ (भा॰प्र॰)

अर्थ-मटर-(केराव)-मधुर, पचनेमें स्वादिष्ठ, रूखी, शीतल, रुधिरविनाशक, कफापित्तहारक, मलको निकालनेवाली और वातको करनेवाली ह ।

अपिच ।

किञ्चित्कषाया मधुराः प्रदिष्टा रक्तप्रशान्तिं जनयन्ति बल्याः । किञ्चित्सवातं विनिहन्ति पित्तं कलायका मुद्गसमानरूपाः॥ (हिं॰ सं॰)

अर्थ-मटर-किञ्चित्कषेली, मधुर, रक्तविकारको शान्ति करनेवाली, बलकारक, किंचित् वात और पित्तको दूर करे है । यह रूपमें मूँगकी समान होतीहै ।

त्रिपुटनामानि ।

त्रिपुटः खण्डिकोपि स्यात्कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥

संस्कृतभाषामें	त्रिपुट, खण्डिक।
हिन्दीभाषामें	खेसारी, कसूर×कस्सा।
बंगभाषामें	खेसारिकलाय।
मराठीभाषामें	लांग, लांक।
गुजरातीभाषामें	मटर।
तैलिङ्गीभाषामें	लांक।
इंग्रेजीभाषामें	चिकिलिंगवेच। Chickling Vetch
लैटिन्‌भाषामें	लेथिरस सेटिवस्। Lathyrus Sativus
	पिसं एवेन्स। Pisum Arvens
फारसीभाषामें	मासंग, जलवान्।
अरबीभाषामें	हबुल बकर, खलज।

त्रिपुटगुणाः।

त्रिपुटो मधुरस्तिक्तस्तुवरो रूक्षणो भृशम्।
कफपित्तहरो रुच्यो ग्राहकः शीतलस्तथा॥
किन्तु खञ्जत्वपङ्गुत्वकरो वातातिकोपनः। (भा० प्र०)

अर्थ-त्रिपुट (खेसारी)-मधुर,कडवा,कषेला,अत्यन्त रूखा,कफपित्तनाशक,रुचिकारक,मलरोधक, शीतल, अत्यन्त वातको कुपित करनेवाला और खंजापन तथा लंगडेपनको देनेवाला है।

अन्यच्च।

रूक्षो विशोषी मधुरः प्रदिष्टः स्नायुं करोत्यस्थिगतं बलिष्ठम्।
शूलं विबन्धभ्रमशोफकर्त्ता दाहार्शहृद्रोगविकारकारी॥ (हा.सं.)

अर्थ-त्रिपुट (कस्सा)-रूखा, शोधक, मधुर, हड्डीकी नसोंको बलवान करनेवाला तथा शूल, विबन्ध, भ्रम, सूजन, दाह,बवासीर और हृदय रोगको उत्पन्न करेहै।

अपिच।

लाङ्कस्तु शीतलो रुच्यो मधुरोवातकारकः। गुरुश्च तुवरो रूक्षः कफपित्तविनाशकः॥वृषभाणां हितः प्रोक्तः पर्णशाका तु वातला। रुच्या पित्तकफानां तु हननी परिकीर्तिता॥ (नि०र०)

अर्थ-त्रिपुट तथा लांक-खेसारी-शीतल, रुचिकारक, मधुर, वातकारक, भारी, कषेली, रूखी, कफपित्तनाशक और बैलोंको

हितकारी है । इसके पत्तोंका, शाक-बादी, रुचिकारी तथा पित्त और कफनाशक है ।

कुलित्थनामानि ।

कुलित्थस्ताम्रबीजश्च श्वेतबीजः सितेतरः ॥

अर्थ-कुलित्थ, ताम्रबीज, श्वेतबीज, सितेतर, (कालवृन्त, ताम्रवृक्ष, कुलत्थिका, ताम्रवृन्त, ताम्रबीज, कुलत्थ)

संस्कृतभाषामें	कुलित्थ ।
हिन्दीभाषामें	कुलथी ।
वंगभाषामें	कुलथी, कलाय ।
मराठीभाषामें	कुळीथ, हुलगे ।
गुजरातीभाषामें	कलथी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलुवलेतीसी ।
तैलिंगीभाषामें	वुलावुल ।
इंग्रेजीभाषामें	टुफ्लावर्डडोलीकोस् । Two flowered dolichos
लैटिन्भाषामें	डोलीकोस् बाईफ्लोरस् । Dolichos Biorotis
फारसीभाषामें	किल्लत, मुंखहिंदी ।
अरबीभाषामें	हबुलकिलत ।

कुलत्थगुणाः ।

कुलत्थस्तु कषायोष्णो रूक्षो वातकफापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुलथी-कषेली, गरम, रूखी तथा वात और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

कुलत्थः कफवातघ्नो ग्राह्युष्णो बृंहणः कटुः ।
गुल्मशुक्राश्मरीमेदःश्वासकासप्रमेहजित् ॥ (राज०)

अर्थ-कुलथी-कफवातनाशक, मलरोधक, गरम, पुष्टिकारक, चरपरी तथा गुल्म, शुक्र, पथरी, मेद, श्वास, खाँसी और प्रमेहको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कुलत्थः कटुकः पाके कषायः पित्तरक्तकृत् । लघुर्विदाही वीर्य्योष्णः श्वासकासकफानिलान् ॥ हन्ति हिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान् । स्वेदसंग्राहको मेदोज्वरक्रिमिहरः परः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-कुलथी-पाकमें कटु, कषेली, रक्तपित्तकारक, हलकी, दाहजनक, उष्णवीर्य्य तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, शुक्र, दाह, आनाह, पीनस, मेद, ज्वर और कृमिरोगको दूर करे है। तथा पसीनेको रोकनेवाली है।

अन्यच्च ।

उष्णो जयेन्मारुतपीनसं तु कासप्रतिश्यायविबन्ध-
गुल्मान् । हिक्कां सरक्तस्तु बलासपित्तं निहन्ति मेदश्च
कुलत्थकोऽयम् । (हा.)

अर्थ-कुलथी-गरम, वात, पीनस, खाँसी, प्रतिश्याय, विबन्ध, गुल्म, हिचकी, रक्त, कफ, पित्त, और मेदोरोगको दूर करे है।

अन्यच्च ।

वीर्य्ये चोष्णाः कुलत्थाः कफपवनहराः पित्तरक्तप्रदाश्च
पाकेम्लाः श्वासकासोदरहृदयशिरोबस्तिशूलापहाश्च ।
मूत्राघाताश्मरीघ्ना नयनगदहराः शुक्रविच्छेदनाश्च
श्रेष्ठा दुर्नामकुष्ठश्वयथुगदयकृद्गुल्मतूनीगदेषु ॥

अर्थ-कुलथी-उष्णवीर्य्य, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक, पचनेमें, अम्ल तथा श्वास, खाँसी, उदररोग, हृदयरोग, शिरोरोग, वस्तिशूल, मूत्राघात, अश्मरी (पथरी), नेत्ररोग, शुक्र, बवासीर, कोढ, सूजन, यकृत, गुल्म, और तूनीरोगको हरनेवली है।

अपिच ।

उष्णाः कुलत्थाः पाकेम्ला विषं स्थावरजङ्गमम् ।
कासार्शःकफवातांश्च घ्नन्ति पित्तास्रदाः परम् ॥ (वाग्भट)

अर्थ-कुलथी-गरम, पचनेमें अम्ल, तथा स्थावरविष, जंगमविष, खाँसी, बवासीर, कफ और वातका नाश करे है तथा रक्तपित्तको उत्पन्न करेहै।

तिलकनामानि ।

तिलस्तु होमधान्यं स्यात्पवित्रः पितृतर्पणः ।
पापघ्नं पूतधान्यं च जटिलस्तु वनोद्भवः ॥

अर्थ-तिल, होमधान्य, पवित्र, पितृतर्पण, पापघ्न, पूतधान्य, जटिल, वनोद्भव (स्नेहफल, पूरफल, तैलफल)

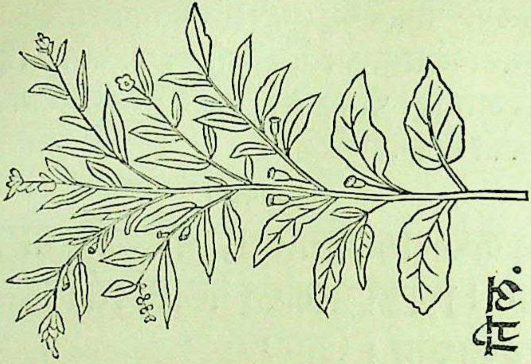

तिल.

संस्कृतभाषामें	तिल।
हिन्दीभाषामें	तिल, कालेतिल, तिली।
वंगभाषामें	तिलगाछ।
मराठीभाषामें	तीळ, काळ तीळ, चोख तीळ।
गुजरातीभाषामें	तल।
कर्णाटकीभाषामें	एलु
तालङ्गीभाषामें	तोवुक्कु, सञ्चिनूने, नुव्वुलु।
तामिलीभाषामें	वाल्लैनय।
द्राविडाभाषामें	वारिकतिल।
इंग्रेजीभाषामें	सिसेम नैजरसीडस्। Sisamum Niger seeds
लैटिन्भाषामें	सिसेमस् इंडिकम्। Sesam Indicum
फारसीभाषामें	कुञ्जद्।
अरबीभाषामें	सिमसिम।

तिलगुणाः।

तिलो रसे कटुस्तिक्तो मधुरस्तुवरो गुरुः। विपाके कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः कफपित्तकृत् ॥ बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः। दन्त्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राही वातघ्नोऽग्निमतिप्रदः ॥ कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लो मध्यमः स्मृतः। अन्ये हीनतराः प्रोक्तास्तज्ज्ञै रक्तादयस्तिलाः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तिल-चरपरे, कडवे, मधुर, कषेले, भारी, पचनेमें चरपरे, स्वादु, स्निग्ध, उष्ण, कफपित्तकारक, बलवर्द्धक, केशोंको हितकारी,

स्पर्शमें शीतल, त्वचाको हितकारी, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाले, व्रणरोगमें हितकारी, दांतोंको हितकारी, अल्पमूत्रकारक, मलरोधक, वातविनाशक और बुद्धिको उत्पन्न करे हैं । सर्वतिलोंमें काले तिल उत्तम हैं, सफेद तिल मध्यम हैं, यह वीर्यवर्द्धक हैं और रक्तआदि तिल हीनगुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

"ईषत्कषायो मधुरः सतिक्तः संग्राहिकः पित्तकरस्तथोष्णः।
तिलो विपाको मधुरो बलिष्ठः स्निग्धो व्रणे लेपनपथ्य उक्तः॥
दन्त्योऽग्निजननोल्पमूत्रः स्तन्योऽथ केश्योनिलहा गुरुश्च ।
तिलेषु सर्वेष्वसितः प्रधानो मध्यः सितो हीनतरास्तथान्ये॥"
(आ, सं,)

अर्थ-तिल-किञ्चित्कषेले, मधुर, कडवे, मलरोधक, पित्तकारक, गरम, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, व्रणके लेपमें पथ्य, दाँतोंको हितकारी अग्निजनक, अल्पमूत्रकारक, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाले, केशोंके हितकारी, वातहारी और भारी हैं । सर्व तिलोंमें काले तिल प्रधान हैं, सफेद मध्यम और दूसरे अधम हैं ।

अस्य पिण्याकगुणाः ।

पिण्याकं मधुरं रुच्यं तीक्ष्णं नेत्रविकारकृत् ।
मलावष्टम्भकं रूक्षं कफवातप्रमेहनुत् ॥
पित्तास्रबलपुष्टिञ्च ददातीति भिषङ्मतम् । (नि० र०)

अर्थ-तिलोंकी खल,-मधुर, रुचिकारक, तीक्ष्ण, नेत्रविकारको करनेवाली, मलस्तंभक, रूखी, कफ, वात और प्रमेहनाशकहै, रक्तपित्त, बल और पुष्टिको देनेवाली है ।

अतसीनामानि ।

अतसी पिच्छिला देवी मदगन्धा मदोत्कटा ।
उमा क्षुमा हैमवती सुनीला नीलपुष्पिका ॥

अर्थ-अतसी, पिच्छिला, देवी, मदगन्धा, मदोत्कटा, उमा, क्षुमा, हैमवती, सुनीला, नीलपुष्पिका (चणका, क्षौमी, रुद्रपत्नी, सुवर्चला, नीलपुष्पी, पार्वती, मसृणा, तैलोत्तमा)

अलसी.

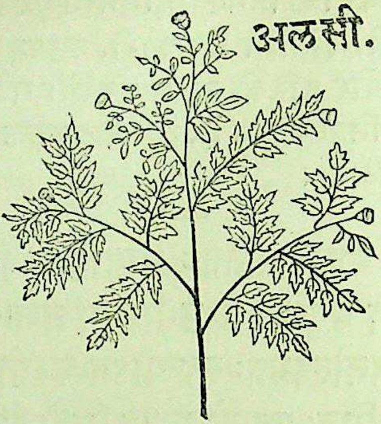

संस्कृतभाषामें	अतसी ।
हिन्दीभाषामें	अलसी, तिसी, मसीना ।
वंगभाषामें	मसिना तिसी ।
मराठीभाषामें	जवस, अळशी ।
गुजरातीभाषामें	अळशी ।
कर्णाटकीभाषाम	असगे ।
तैलङ्गीभाषामें	नल्लपगसिचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषाम	कामन् फलेक्षसीड्ज Common flaxseeds Linseeds
लैटिन्भाषामें	लीनीसेमीना । Lini Semina लीनंडसिटेटिसिम । Linum Usitatissimum
फारसीभाषामें	तुख्मेकतान ।
अरबीभाषामें	वजरुलकतान ।

अतसीगुणाः ।

अतसी मदगन्धा स्यान्मधुरा बलकारिका ।
कफवातकरी चेषत्पित्तहृत्कुष्ठवातनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अलसी-मदगन्धयुक्त, मधुर, बलकारक, किंचित् कफवातकारक, पित्तनाशक, तथा कुष्ठ और वातको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अतसी मधुरा तिक्ता स्निग्धा पाके कटुर्गुरुः ।
उष्णा दृक्छुक्रवातघ्नी कफपित्तविनाशनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अलसी-मधुर, कडवी, स्निग्ध, पचनेमें चरपरी, भारी, गरम तथा दृष्टि, शुक्र, वात और कफ पित्तका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अतसी शुक्रदृष्टिघ्नी स्निग्धा वातास्रजिद्गुरुः ॥ (म० नि०)

अर्थ-अलसी-शुक्रनाशक, दृष्टिनाशक, स्निग्ध, वातरक्तविनाशक और भारी है ।

अपिच ।

अतसी मधुरा स्निग्धा गुर्वी चोष्णा बलप्रदा ।
पाके कट्वी च तिक्ता च कफवातव्रणापहा ॥
पृष्ठशूलं च शोथं च पित्तं शुक्रं दृशं जयेत् ।
पर्णमस्याः कासकफवातनुच्छ्वासहृत्तथा ॥ (नि० र०)

अर्थ-अलसी-मधुर, स्निग्ध, भारी, गरम, बलकारक, पचनेमें चरपरी, कडवी तथा कफ, वात, व्रण, पृष्ठशूल, सूजन, पित्त, शुक्र और दृष्टिका नाश करेहै । इसके पत्ते-खाँसी, कफ, वात और श्वासको दूर करे हैं ।

सर्षपनामानि ।

सर्षपः कटुकस्नेहो भूतघ्नो रक्षिताफलः ।
उग्रगन्धो ग्रहघ्नश्च तन्तुभोथ कदम्बकः ॥

अर्थ-सर्षप, कटुकस्नेह, भूतघ्न, रक्षिताफल, उग्रगन्ध, ग्रहघ्न तन्तुभ, कदम्बक (सरिषप, कदम्बद, बिम्बट, कदम्ब, तन्तुक, कटुस्नेह, राजक्षवक)

गौरसर्षपनामानि ।

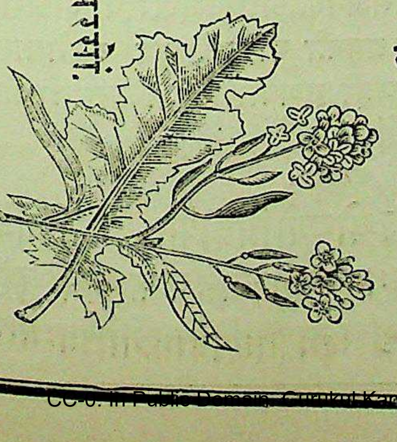

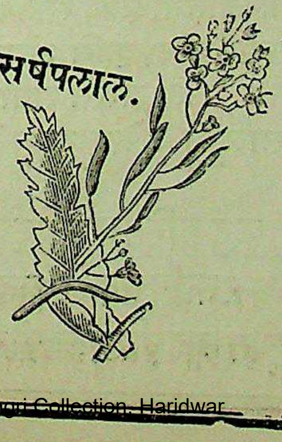

तीक्ष्णकश्च दुराधर्षो रक्षोघ्नः कुष्ठनाशनः ।
सिद्धप्रयोजनः सिद्धसाधनः सितसर्षपः ॥

अर्थ-तीक्ष्णक, दुराधर्ष, रक्षोघ्न, कुष्ठनाशक, सिद्धप्रयोजन, सिद्धसाधन, सितसर्षप(गौर, अनध्य,सिद्धार्थ,भूतनाशन, कटुस्नेह, ग्रहघ्न, कण्डूघ्न, राजिकाफल, गुरुघ्न)

संस्कृतभाषामें	सर्षप, गौरसर्षप ।
हिन्दीभाषामें	सरसों, सफेदसरसों ।
वंगभाषामें	सारिषा, सर्षें, श्वेतसर्षें ।
मराठीभाषामें	शिरस, श्वेताशिरस ।
गुजरातीभाषामें	शरशव ।
कर्णाटकीभाषामें	बिलीयसासिव ।
तैलिङ्गीभाषामें	पाञ्चाअश्वालु ।
इंग्रेजीभाषामें	सिनापिस्आल्बा ।Sinapisalba
लैटिन्भाषामें	ब्रेसिका कैंपेस्ट्रिस् । Brassficacampestris
फारसीभाषामें	सर्षफ ।
अरबीभाषामें	उफेंअबीयद ।

सर्षपगुणाः ।

सर्षपस्तु रसे पाके कटुर्हृद्यःसतिक्तकः।तीक्ष्णोष्णः कफवातघ्नो रक्तपित्ताग्निवर्द्धनः॥रक्षोहरो जयेत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिग्रहान् । यथारक्तस्तथा गौरः किन्तु गौरो वरो मतः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सरसों रस और पाकमें-चरपरी हैं, स्निग्ध, कडवी,तीक्ष्ण, गरम, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक,अग्निवर्द्धक तथा राक्षसबाधा, कण्डू, कुष्ठ, कोढ, कृमि और ग्रहकी बाधाको दूर करनेवाली हैं, लाल और सफेद सरसों समानही गुणवाली हैं, किन्तु तोभी सफेद सरसों लालकी अपेक्षा उत्तम हैं ।

अन्यच्च ।

सर्षपः कटुकस्तिक्तस्तीक्ष्णश्चोष्णोग्निदीपनः । किञ्चिद्रूक्षः पित्तलश्च रक्तपित्तकरो मतः॥ रूक्षो वातंकफं कण्डूं कुष्ठं शूलं कृमीञ्जयेत्।ग्रहपीडां च पीडांच नाशयेदिति कीर्त्तितः॥(नि.र.)

अर्थ-सरसों-चरपरी, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निदीपक, किञ्चित् रूखी, पित्तकारक, रक्तपित्तजनक, रूक्ष तथा वात, कफ, कण्डू, कुष्ठ, शूल, कृमि, ग्रहपीडा और पीडाको दूर करे है।

सिद्धार्थगुणाः।

सिद्धार्थः कटुकस्तिक्तो रुच्योष्णो वातरक्तकृत्।
ग्रहपीडार्शत्वग्दोषशोथव्रणविषापहः॥

अर्थ-सफेद सरसों-चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम, वातरक्तकारक तथा ग्रहपीडा, बवासीर, त्वचाके दोष, सूजन, व्रण और विषका नाश करे है।

सर्षपशाकगुणाः।

पर्णशाका सरा चाम्ला पित्तला तुवरा गुरुः।
स्वाद्वी चोष्णा च पट्वी च कफनाशकरी मता॥(नि०र०)

अर्थ-सिरसोंके पत्तोंका शाक-सारक, अम्ल, पित्तकारक, कषैला, भारी, स्वादिष्ठ, गरम, खारी और कफहारी है।

राजिकानामानि।

राजी तु राजिका तीक्ष्णगन्धा क्षुज्जनिकासुरी।
क्षवः क्षुताभिजनकः कृमिकः कृष्णसर्षपः॥

अर्थ-राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धा, क्षुज्जनिका, आसुरी, क्षव, क्षुताभिजनक, कृमिक, कृष्णसर्षप (क्षुधाभिजनन, कृष्णिका, कटु, असुरी, काकोदुम्बारिका, रक्तिक, रक्तसर्षप, अतितीक्ष्णा, मधुरिक, क्षवक, क्षुतक, क्षव, ज्वलन्ती, ज्वलत्प्रभा)

राजसर्षपनामानि।

राजक्षवकः कृष्णातीक्ष्णफला राजिका राज्ञी।
सा कृष्णसर्षपा विज्ञेया राजसर्षपाख्या च॥

अर्थ-राजक्षवक, कृष्णा, तीक्ष्णफला, राजिका, राज्ञी, कृष्णसर्षपा, राजसर्षप (कृष्णिका, सूरी, मुष्ठक, व्यष्टक, कटुक, क्षव, क्षुताभिजनन, क्षुधाभिजनन)

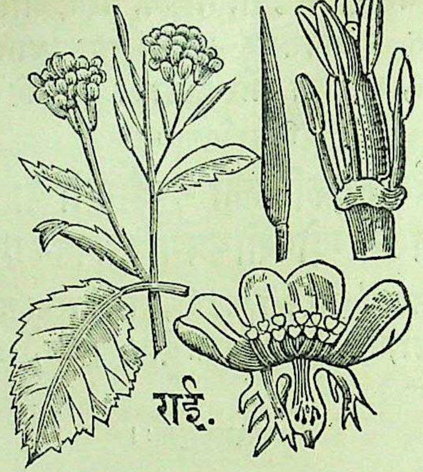

राई.

संस्कृतभाषामें	राजिका, राजसर्षप ।
हिन्दीभाषामें	राई, लाई ।
बंगभाषामें	राइसष, कालसर्षे, राजसर्षा, राइसरिषा ।
मराठीभाषामें	मोहरी, रायी ।
गुजरातीभाषामें	राई जम्बुसरी अने देशी ।
कर्णाटकीभाषामें	सासिराई ।
तैलिङ्गीभाषामें	वर्णालु ।
इंग्रेजीभाषामें	मस्टर्ड सीड्स् । Mustrd Seeds
लैटिनभाषामें	सिनापिस् नाईग्रा ब्रोसिका नाईग्रा । Sinapis nigra, Brossica Nigra
अरबीभाषामें	खरदल ।

राजिकागुणाः ।

आसुरी कटुतिक्तोष्णा वातप्लीहार्तिशूलनुत् ।
दाहपित्तप्रदा हन्ति कफगुल्मकृमिव्रणान् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-राई-चरपरी, कडवी, गरम, वात, प्लीहा और शूलनाशक है । दाहजनक, पित्तकारक, तथा कफ, गुल्म, और कृमिरोगको हरनेवालीहै

अन्यच्च ।

राजिका कफपित्तघ्नी तीक्ष्णोष्णा रक्तपित्तकृत् ।
किञ्चिद्रूक्षाग्निदा कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन्हरेत् ॥
अतितीक्ष्णा विशेषेण तद्वत्कृष्णापि राजिका । (भा० प्र०)

अर्थ-राई-कफपित्तनाशक, तीक्ष्ण, गरम, रक्तपित्तकारक, किञ्चित् रूखी, अग्निवर्द्धक तथा कण्डू, कुष्ठ, कोष्ठरोग और कृमिरोगको दूर करे है। काली राईके भी गुण राईकी समान हैं, विशेष करके अत्यन्त तीक्ष्ण है ।

राजसर्षपगुणाः ।

राजसर्षपकश्चोष्णः पित्तलो दाहकारकः ।
कटुस्तिक्तो गुल्मकुष्ठकण्डूव्रगरुजापहः ॥
वातशूलं नाशयतीत्येवं पूर्वैर्निवेदितम् ।

अर्थ-राजसर्षप- गरम, पित्तजनक, दाहकारक, चरपरी, कडवी तथा गुल्म, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और वातशूलका नाश करे है ।

राजिकापत्रशाकगुणाः ।

राजिकापर्णशाका तु कट्वी चोष्णा बलप्रदा ।
स्वाद्वी पित्तकरी ज्ञेया कृमिवातकफापहा ॥
कण्ठरोगहरा चोक्ता पूर्वैः सुज्ञचिकित्सकैः । (नि० र०)

अर्थ-राईके पत्तोंका शाक-चरपरा, गरम, बलकारक, स्वादिष्ट, पित्तकारक, कृमिनाशक, वातकफनाशक और कण्ठरोगको दूर करेहै.

तृणधान्यनामानि ।

क्षुद्रधान्यं कुधान्यं च तृणधान्यमिति स्मृतम् ।

अर्थ-क्षुद्रधान्य, कुधान्य, तृणधान्य ।

तृणधान्यगुणाः ।

तृणधान्यमनुष्णं स्यात्कषायं लघु लेखनम् ।
मधुरं कटुकं पाके रूक्षं च क्लेदशोषकम् ॥
वातकृद्बद्धविट्कञ्च पित्तरक्तकफापहम् । (भा० प्र०)

अर्थ-तृणधान्य-अनुष्ण, कषेले, हलके, लेखन, मधुर, पचनेमें चरपरे, रूखे, क्लेदशोषक, वातवर्द्धक, मलबन्धक तथा पित्तरक्त और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

तृणधान्यं लघु स्वादु पाके कटु च लेखनम् । मलबंधकरं रूक्षं तुवरं मधुरं मतम् ॥ क्लेदशोषकरं चोष्णं वातलं पित्तलं तथा ॥ कफनाशकरं चैव पूर्वैर्वैद्यैरुदाहृतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-तृणधान्य-हलके, स्वादिष्ठ, पाकमें कटु, लेखन, मलबंधक, रूखे, कषेले, मधुर, क्लेदशोषक, गरम, बादी, पित्तकारक और कफ नाशक हैं ।

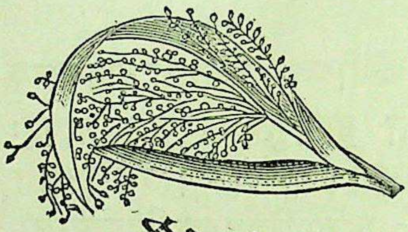

कंगनी.

स्त्रियां कंगुः प्रियंगु द्वे कृष्णा रक्ता सिता तथा ।
पीता चतुर्विधा कंगुस्तासां पीता वरा स्मृता ॥

अर्थ-कंगु, प्रियंगु (पियंगू, कंगू, कंगुका, कंगुनीका, कंगूनी, चीनक, पीततण्डुल ।

संस्कृतभाषामें	कंगु ।
हिन्दीभाषामें	कंगुनी, कांगनी, कङ्गनी ।
बंगभाषामें	कांगुनी, कांनिधान ।
मराठीभाषामें	कांग ।
गुजरातीभाषामें	कांग ।
कर्णाटकीभाषामें	नवणे ।
तैलिंगीभाषामें	कोर्रलु ।
लैटिन्भाषामें	पेनिकं मिलियेश्यं । Panicum Miliaceum
फारसीभाषामें	गल ।

कंगनी-काली, लाल, सफेद और पीली इन भेदोंसे चार प्रकारकी है, इनमें पीली कंगनी उत्तम है ।

कंगुगुणाः ।

कंगुस्तु वातसन्धानवातकृद्बृंहणो गुरुः ।
रूक्षा श्लेष्महरातीव वाजिनां गुणकृद्भृशम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कंगनी-भग्नसन्धानकारक, वातकारक, पुष्टिकारक, भारी, रूखी, कफनाशक और घोडोंके लिये अत्यन्त उपकारी है ।

अन्यच्च ।

प्रियङ्गुर्मधुरो रुच्यः कषायः स्वादु शीतलः ।
वातकृत्पित्तदाहघ्नो रूक्षो भग्नास्थिसन्धिकृत् ॥

अर्थ-कंगनी-मधुर, रुचिकारक, कषेली,स्वादिष्ठ, शीतल वादी, पित्त और दाहनाशक, रूखी,भग्न और हड्डीको जोडनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कङ्गुः शीतो वातकरो रूक्षो वृष्यः कषायकः । धातुवृद्धिकरः स्वादुर्गुरुश्चाश्वहितावहः ॥ भग्नास्थिसन्धानकरो गर्भपाते हितावहः । कफपित्तहरश्चायं कृष्णरक्ताच्छपीतकैः ॥ वर्णैश्चतुर्धा समतो गुणैश्चोत्तरतोऽधिकः ॥

अर्थ-कंगनी-शीतल,वातकारक,रूखी, वृष्य,कषेली,धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, भारी, अश्वोंको हितकारी, भग्नास्थिसन्धानकारक, गर्भके गिरानेमें हितकारी,कफापित्तनाशक है,यह कृष्ण,रक्त,सुफेद और पीली इन भेदोंसे चारप्रकारकी है इनमें एकसे एकके अधिक गुण हैं ।

चीनकनामानि ।

चीनकः काककंगुश्च सुश्लक्ष्णः श्लक्ष्णकः स्मृतः ॥

अर्थ-चीनक, काककंगु,सुश्लक्ष्ण, श्लक्ष्णक (कंगु)

संस्कृतभाषामें	चीनक ।
हिंदीभाषामें	चीना, चैना ।
वंगभाषामें	चिने ।
मराठीभाषामें	राळे ।
गुजरातीभाषामें	चीणो ।
कर्णाटकीभाषामें	चीनक ।
इंग्रेजीभाषामें	मीलेट । Millet
लैटिन्भाषामें	पेनिकंमिलेयरी । Panicum Miliari
फारसीभाषामें	उरजान ।
अरबीभाषामें	बारेगा ।

चीनकगुणाः ।

चीनकः कङ्गुभेदोऽस्ति स ज्ञेयः कंगुवद्गुणैः ॥(भा०प्र०)

अर्थ-चीनाधान कंगनीका भेद है। इसकारण इसके गुणभी कंगनीकी समान जानने।

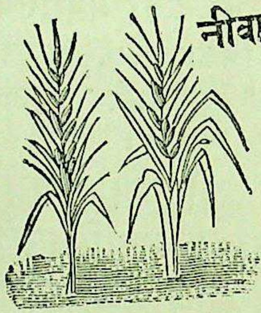

नीवार.

नीवारनामानि।

निवारोऽरण्यधान्यं स्यान्मुनिधान्यं तृणोद्भवम् ॥

अर्थ-नीवार, अरण्यधान्य, मुनिधान्य, तृणोद्भव (तृणधान्य, वनव्रीहि, अरण्यजालि, प्रसाधिका)

संस्कृतभाषामें	नीवार।
हिंदीभाषामें	तिली, तीनी, तोली।
वंगभाषामें	उडीधान्य।
मराठीभाषामें	देवभात।
गुजरातीभाषामें	वंटी।
कर्णाटकीभाषामें	ज्यरहुमेध।
तैलङ्गीभाषामें	निवरिवट्टु।
लैटिन्भाषामें	पेनिकं इटालिकं। Panicum Italicum

नीवारगुणाः।

नीवारो मधुरः स्निग्धःपवित्रः पथ्यदो लघुः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-नीवारधान्य-मधुर, स्निग्ध, पवित्र, पथ्य और हलके हैं।

अन्यच्च।

नीवारः शीतलो ग्राही पित्तघ्नः कफवातकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-नीवारधान्य-शीतल, मलरोधक, पित्तनाशन तथा कफ और वातकारक है।

अपिच।

नीवारः श्लेष्मलो रूक्षः कषायो वातलो हिमः।

लेखनो बद्धविण्मूत्रः स्वादुः पित्तहरो लघुः ॥ (शो, नि.)

अर्थ-नीवारधान्य-कफकारी, रूखे, कषेले, बादी, शीतल, लेखन, मल और मूत्रको बांधनेवाले, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक और हलके हैं।

वरकनामानि।

वरकः स्थूलकंगुश्च रूक्षः स्थूलप्रियंगुकः।

अर्थ-वरक, स्थूलकङ्गु, रूक्ष, स्थूलप्रियंगु (स्थूलकंगू)

वरकगुणाः।

वरको मधुरो रूक्षः कषायो वातपित्तकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वरक, (चीनाभेद)-मधुर, रूखे, कषाय और वातपित्तकारक है। यह कंगनीकाही भेद है।

संस्कृतभाषामें	वरक।
हिन्दीभाषामें	चीनाभेद।
वंगभाषामें	चीनाविशेष।
मराठीभाषामें	वऱ्या।
गुजरातीभाषामें	वऱ्यो।
लैटिन्भाषामें	पेनिकंमिलीयेरी कहते हैं।

नर्त्तकनामानि।

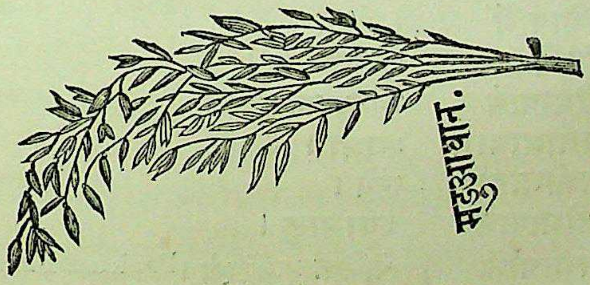

नर्त्तको नृत्यकुण्डश्च भूचरा च मलीयसः।
कठिनो गुच्छकणिशो लञ्छनो बहुपत्रकः ॥

अर्थ-नर्त्तक, नृत्यकुण्ड, भूचरा, मलीयस, कठिन, गुच्छ, कणिश, लञ्छन, बहुपत्रक।

संस्कृतभाषामें	नर्त्तक।
हिन्दीभाषामें	नर्त्तक मडुआ।
मराठीभाषामें	नाचणी, नागली।

गुजरातीभाषामें	नागली ।
कर्णाटकीभाषामें	टपिगुचणे ।
इंग्रेजिभाषामें	ट्रिक्स्पाइक्ड एल्युसीन । Thrick Spiked Elensinc
लैटिन्भाषामें	इल्युसाइन कारेकेना । Elensine Coracaua
फारसीभाषामें	मंडवा ।

अस्य गुणाः ।

नर्त्तकस्तुवरस्तिक्तो मधुरस्तर्पणो लघुः।बल्यःशीतःपित्तहरस्त्रिदोषशमनो मतः॥रक्तदोषहरश्चैव मुनिभिः पूर्वमीरितः।(नि.र.)

अर्थ-नर्त्तक-कषैले, कडवे, मधुर, तृप्तिकारक, हलके,बलकारक, शीतल, पित्तनाशक, त्रिदोषनिवारक, और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

श्यामाकनामानि ।

श्यामाकः श्यामकः श्यामस्त्रिबीजः स्यादविप्रियः ।
सुकुमारो राजधान्यं तृणबीजोत्तमश्च सः ॥

अर्थ- श्यामाक, श्यामक, श्याम, त्रिबीज, अविप्रिय, सुकुमार, राजधान्य, तृणबीजोत्तम ।

संस्कृतभाषामें	श्यामाक ।
हिन्दीभाषामें	समा ।
वंगभाषामें	शामाधान ।
मराठीभाषामें	सांवे, काथली ।
गुजरातीभाषामें	शामो ।
कर्णाटकीभाषामें	संधे ।
तैलिंगीभाषामें	श्यामालु ।
लैटिनभाषामें	पेनिकं फ्रुमेंटेश्यं । Panicum Frumentaceum ओपलिस मनस फ्रुमेंटेश्यं । Oplis menus Frumentaceum
फारसीभाषामें	शामाखू ।

श्यामाकगुणाः ।

श्यामाको मधुरः स्निग्धः कषायो लघुशीतलः ।
वातकृत्कफपित्तघ्नः संग्राही विषदोषनुत ॥ (रा० नि०)

अर्थ-समा-मधुर, स्निग्ध, कषेला, हलका, शीतल, वातकारक, कफपित्तनाशक,मलरोधक और विषके दोषोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

श्यामाकः शोषणो रूक्षो वातलः कफपित्तनुत् ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-समा-शोषक, रूखा, वादी और कफपित्तनाशक है ।

कोद्रवनामानि ।

कोद्रवः कोरदूषः स्यादुद्दालो वनकोद्रवः ॥

अर्थ-कोद्रव, कोरदूष (कुद्रव, कोरदूषक, कोरदुष्क, कोद्दार, कोद्दाल, कुद्दाल, मदनाग्रक,कोर्द्रव) उद्दाल और वनकोद्रव यह दो नाम वनकोदोंके हैं ।

संस्कृतभाषामें	कोद्रव ।
हिन्दीभाषामें	कोदों ।
बंगभाषामें	कोदोधान्य ।
मराठीभाषामें	हरिक, कोद्रू ।
गुजरातीभाषामें	कोदरो, जंगलीकोदरो ।
कर्णाटकीभाषामें	हारकं ।
तैलिङ्गीभाषामें	आलुवालु ।
इंग्रेजीभाषामें	पंकचर्ड पासपेलं । Punctured Paspalum
लैटिनभाषामें	पासपेलं स्क्रोबिट्युटेल्यम् । Paspalum Scrobicutalium
आत्कलीभाषामें	कोद्रु ।

कोद्रवगुणाः ।

कोद्रवो वातलो ग्राही हिमः पित्तकफापहः ।
उद्दालस्तु भवेदुष्णो ग्राही वातकरो भृशम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कोदों-वातकारक, मलरोधक, शीतल और पित्तकफनाशक हैं, वनकोदों-गरम, मलरोधक और वातकारक हैं ।

अन्यच्च ।

कोद्रवो मधुरस्तिक्तो व्रणिनां पथ्यकारकः ।
कफपित्तहरो रूक्षो मोहकृद्वातलो गुरुः ॥

अर्थ-कोदों-मधुर, कडवे,व्रणरोगवालोंको पथ्य,कफपित्तनाशक, रूखे, मोहकारक, वादी और भारी हैं ।

अन्यच्च ।

कोरदूषः परं ग्राही स्पर्शशीतो विषापहः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-कोदों-अत्यन्त मलरोधक,स्पर्शमें शीतल और विषनाशक हैं।

अन्यच्च ।

रूक्षो ग्राही कोद्रवः स्याद्रक्तपित्तविशोधनः ।
नात्यन्तकफकृत्प्रोक्तो रुच्यः स्वादुः प्रकीर्त्तितः॥(हा.सं.)

अर्थ-कोदों-रूखे, ग्राही, रक्तपित्तशोधक, अत्यन्त कफकारक नहीं, रुचिकारी और स्वादिष्ठ हैं ।

अपिच ।

कोद्रवो बद्धविण्मूत्रो वातलो लेखनो लघुः ।
विषपित्तकफामघ्नो कषायो रक्तपित्तजित् ॥
स्पर्शः शीतः परंग्राही मधुरो रूक्षशीतलः ॥
उद्दालकस्तु वीर्य्योष्णो लेखनो वातलो लघुः ।
रूक्षः स्वादुः कषायश्च श्लेष्मजिद्बद्धमूत्रविट् ॥ (शो.नि.)

अर्थ-कोदों-मलमूत्रबद्धक,वातकारक, लेखन, हलके, विषविनाशक, पित्तनिवारक, कफघ्न, आमनाशक, कषेले और रक्तपित्तको दूर करनेवाले,स्पर्शमें शीतल,अत्यन्त ग्राही,मधुर,रूखे और शीतल हैं। वनकोदों-उष्णवीर्य्य, लेखन, बादी, हलके, रूखे, स्वादिष्ठ, कषेले, कफनाशक और मलमूत्रबद्धक हैं ।

कटिधान्यनामानि ।

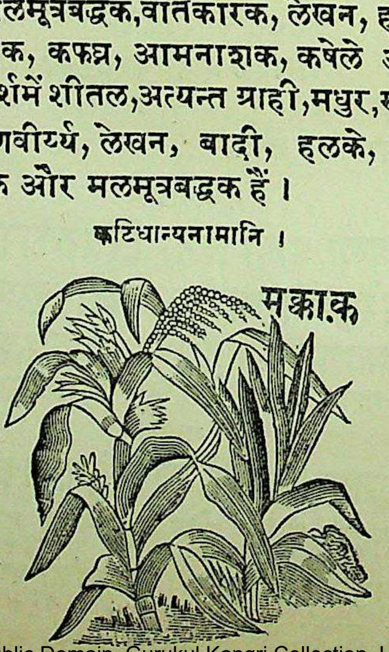

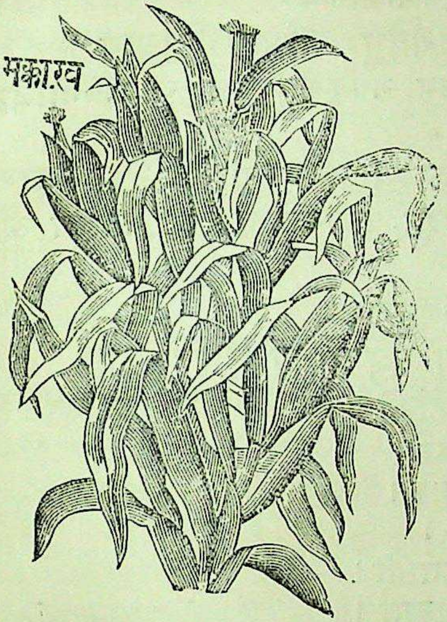

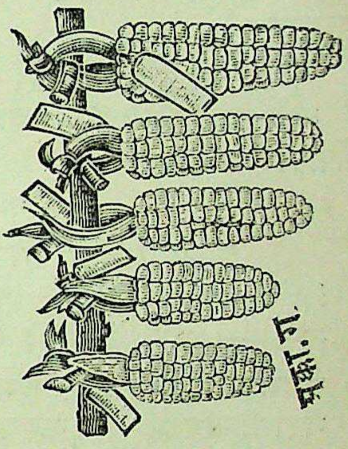

मकायस्तु महाकायो कटिजः कांडजः स्मृतः।
शिखालुः संपुटांतस्थो यावनालसमो गुणैः॥

अर्थ-मकाय, महाकाय, कटिज, कांडज, शिखालु, संपुटांतस्थ। इसके गुण ज्वारकी समान हैं।

संस्कृतभाषामें	मकाय, महाकाय।
हिन्दीभाषाम	मक्का, भुंटे।
मराठीभाषामें	मका।
गुजरातीभाषामें	मकाइ।
तैलङ्गीभाषामें	जनपटलु।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियन्कोर्नमेझ। Indian Corn Maize
लैटिन्भाषामें	झियामेझ। Zia—Maize

अस्य गुणाः

महाकायस्तृप्तिकरो वातलः कफपित्तहृत्।
विष्टम्भजनको रूक्षः कोमलो रुचिपुष्टिकृत्॥

अर्थ-मक्का-तृप्तिकारक, बादी, कफपित्तनाशक, विष्टम्भकारक और रूखी है। कच्चीमक्का-पुष्टि और रुचिको करनेवाली है।

गवेधुकानामगुणाश्च ।

गवेधुका तु विद्वद्भिर्गवेधुः कथिता स्त्रियाम् ॥

अर्थ-गवेधुका, गवेधु (गवेडु, गवडुका, कुन्त, क्षुद्रा, गोजिह्वा, गुन्द्रगुत्थ)

गवेधुः कटुका स्वाद्वी कार्श्यकृत्कफनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गरहेडुआ-कटु, स्वादिष्ठ, शरीरको कृश करनेवाला और कफनाशक है ।

वरटानामानि ।

कुसुम्भबीजं वरटा सैव प्रोक्ता वरट्टिका ॥

संस्कृतभाषामें कसूमके बीजोंको वरटा और वरट्टिका कहते हैं ।

हिन्दीभाषामें	कर्र, कर ।
वंगभाषामें	कुसुमफल ।
मराठीभाषामें	कडर्चा ।
गुजरातीभाषामें	कुसुम्बानावी ।
फारसीभाषामें	तुख्मकापशा ।
अरबीभाषामें	हबुल् अस्फर ।

अस्या गुणाः ।

वरटा मधुरा स्निग्धा रक्तपित्तकफापहा ।
कषाया शीतला गुर्वी स्वादुर्वृष्यानिलापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कर्र-मधुर, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, कषेली, शीतल, भारी, स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

चारुकनामगुणाश्च ।

चारुकः शरबीजं स्यात्कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।
चारुको मधुरो रूक्षो रक्तपित्तकफापहः ॥
शीतलो लघु वृष्यश्च कषायो वातकोपनः । (भा० प्र०)

अर्थ-सरपत्तके बीजोंको चारुक कहते हैं । चारुक-मधुर, रूक्ष, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, लघु, वृष्य, कषाय और वातको कुपित करै है ।

वेणुयवगुणाः ।

यवा वंशभवा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
बद्धमूत्राः कफघ्नाश्च वातपित्तकराः सराः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बांसके चावल-रूखे, कषेले, पचनेमें कटु, मूत्ररोधक, कफनाशक, वातपित्तकारक और सारक ह । इसके गुण और नाम प्रथम तृणवर्गमें लिख चुके हैं ।

यवनालगुणाः ।

यवनालो हिमः स्वादुर्लोहितः श्लेष्मपित्तजित् ।
अवृष्यस्तुवरो रूक्षः क्लेदकृत्कथितो लघुः (भा० प्र०)

अर्थ-पुनेरा-शीतल, स्वादिष्ठ, लाल, कफपित्तनाशक, अवृष्य, कषेला, रूखा, क्लेदकारक और हलका है ।

नूतनपुरातनादिभेदेन धान्यगुणाः ।

धान्यं सर्वं नवं स्वादु गुरु श्लेष्मकरं स्मृतम् । तत्तु वर्षोषितं पथ्यं यतो लघुतरं हितम् ॥ वर्षोषितं सर्वधान्यं गौरवं परिमुञ्चति । नतु त्यजति वीर्य्यं स्वं क्रमान्मुञ्चत्यतः परम्॥ एतेषु यवगोधूमतिलमाषा नवा हिताः॥ पुराणा विरसा रूक्षा न तथा गुणकारिणः ॥ पुराणा वर्षद्वयादुपरिस्थिता यवादयो नवाः स्वस्थान्प्रति हिताः पथ्याशिनां तु पुराणा हिताः ॥

अर्थ-सर्व नये धान्य-स्वादिष्ठ,भारी और कफको करनेवाले कहे हैं । एक वर्षके बीतजाने पर वह हलके होनेके कारण पथ्य होते हैं, वर्ष दिनके पीछे सर्वधान्य भारीपनको छोड देते हैं किन्तु अपने २ वीर्य्यको नहीं त्यागते क्रमसे दो वर्षके पीछे वीर्य्यको छोड-देते हैं । इनमें जौ, गेहूं, तिल, उडद यह नयेही हितकारी होते हैं, पुराने बेरस, रूखे और गुणकारीभी नहींहैं । यवादिक नवीन निरोगी मनुष्योंके लिये हितकारी कहे हैं । किन्तु पथ्य भोजन करनेवालोंको पुरानेही हितकारक कहे हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे धान्यवर्गः समाप्तः ॥ १० ॥

अथ शाकवर्गः ।

पत्र पुष्पं फलं नालं कंदं संस्वेदजं तथा ।
शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ॥

अर्थ-पत्र, पुष्प, फल, नाल, कंद और संस्वेदज इन भेदोंसे शाक छः प्रकारका है इनमें एकसे दूसरा भारी जानना अर्थात् पत्रसे पुष्प, पुष्पसे फल,फलसे नाल,नालसे कंद और कन्दसे संस्वेदज भारी है ।

शाकदोषाः ।

प्रायः शाकानि सर्वाणि विष्टम्भीनि गुरूणि च । रूक्षाणि बहुवर्चांसि सृष्टविण्मारुतानि च॥ शाकं भिनत्ति वपुरस्थि निहन्ति नेत्रं वर्ण विनाशयति रक्तमथापि शुक्रम् । प्रज्ञाक्षयं च कुरुते पलितं च नूनं हन्ति स्मृतिं गतिमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ शाकेषु सर्वेषु वसंति रोगास्ते हेतवो देहविनाशनाय । तस्माद्बुधः शाकविवर्जनन्तु कुर्य्यात्तथाम्लेषु स एव दोषः ॥

अर्थ-दोष और गुण-प्रायः सर्व प्रकारके शाक-विष्टम्भकारक, भारी, रूखे, बहुमल करनेवाले तथा विष्ठा और अधोगत वातको करनेवाले हैं । शाक-शरीर,हड्डी,नेत्र, रक्त,शुक्र और बुद्धिका नाश करे है । स्मरणशक्तिको हरेहै, गतिशक्तिको दूर करे है और विना-समयकेही बालोंको धवल करे है। सर्व प्रकारके शाकोंमें रोग रहते हैं और रोगही शरीरके नाश करनेके हेतु हैं, इसकारण बुद्धिमान् शाक भोजन करना छोडदेवे और ऐसेही दोष अम्लद्रव्य अर्थात् खटाईमें हैं, सो खटाईभी त्यागने योग्य है ।

शाकं सर्वमचक्षुष्यं चक्षुष्यं शाकपंचकम् ।
जीवन्ती वास्तु मत्स्याक्षी मेघनादः पुनर्नवा ॥

अर्थ-सर्वप्रकारके शाक नेत्रोंको अहितकारी हैं,किन्तु जीवन्ती, वास्तूक,मत्स्याक्षी,चौलाई और पुनर्नवा यह पांच शाक हितकारी हैं।

तत्रादौ वास्तूकशाकनामानि ।

वास्तूकं वास्तुकश्च स्यात्क्षारपत्रश्च शाकराट् ।
तदेव तु बृहत्पत्रं रक्तं स्याद्गौडवास्तुकम् ॥

अर्थ-वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र, शाकराट्, (पांशुपत्र,शाकश्रेष्ठ, शाकवीर, कंकेल्ल,घनावन, वास्तु, वसुक,हिलमोचिका,शाकराज, राजशाक, चक्रवर्ती) । दूसरा लाल पत्तोंका होता है उसके पर्याय यह हैं गौडवास्तुक (चिल्ली, चिल्लिका, तुनी, अम्ललोहिता,मृदुपत्री, क्षारदला, क्षारपत्रा, वास्तुकी, महद्दला और गौडवास्तु)

संस्कृतभाषामें	वास्तूक, गौडवास्तूक ।
हिन्दीभाषामें	बथुआ, चिल्ली, बडा बथुआ ।
वंगभाषामें	वेतुया, वेतोशाक ।
मराठीभाषामें	चाकवत, चिविल, चाकवताची भाजी ।
गुजरातीभाषामें	टांको, चील ।
कर्णाटकीभाषामें	चक्रवती, विलीपचिल्लीके ।
इंग्रेजीभाषामें	व्हाईट गुजफूट White goose foot परपल गुजफुट Purple goose foot
लैटिन्भाषामें	कनापाडपं आल्बं Chenopodum Album के. एट्रिप्लिसीस् । Che. atripolisis
फारसीभाषामें	मुसेलेसा सरमक ।
अरबीभाषामें	रोकूबतुल बजामेल कुतुफ ।

वास्तूकगुणाः ।

वास्तूकोऽग्निकरो रसे च मधुरः पित्तापहश्चक्षुषः
स्निग्धो वातविनाशनः कृमिहरः पित्तादिदोषापहः ।
वर्चोमूत्रविशोधनः प्रथमतः श्लेष्मामयानां तथा
शाकानामपि चोत्तमो लघुतरः पथ्यः सदा प्राणिनाम् ॥

अर्थ–बथुआ–जठराग्निजनक, मधुररसान्वित, पित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, वातविनाशक, कृमिनाशक, पित्तादिदोषनाशक, मलमूत्रविशोधक, शाकोंमें उत्तम और कफरोगवाले मनुष्योंको सदैव हितकारी है ।

अन्यच्च ।

सक्षारः कृमिजित्त्रिदोषशमनः सन्दीपनः पाचन-
श्चक्षुष्यो मधुरः सरो रुचिकरो विष्टम्भशूलापहः ।
वर्चोमूत्रविशोधनः स्वरकरः स्निग्धो विपाके गुरु-
र्वास्तूकः सकलामयप्रशमनश्चिल्ली तदेवोत्तमा ॥

अर्थ–बथुआ–क्षारयुक्त, कृमिनाशक, त्रिदोषनिवारक, दीपन, पाचन, नेत्रोंको हितकारी, मधुर, सारक, रुचिकारक, विष्टम्भनाशक, शूलनाशक, मलमूत्रशोधक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्निग्ध,

पाकमें भारी और सर्व प्रकारके रोगोंको शान्ति करनेवाला है। चिल्ली अर्थात् लाल बथुआ इससेभी उत्तम है।

अन्यच्च।

अर्शस्त्रिदोषारुचिजन्तुहारी विस्रंसनो बुद्धिबलाग्निकारी। क्षारो
विपाके कटु वास्तुकः स्यात्तद्वच्च चिल्ली लघुपत्रयुक्ता। (सुषेण)

अर्थ-बथुआ-बवासीर, त्रिदोष, अरुचि और कृमिनाशक है, विस्रंसन, बुद्धिजनक, बलकारक, जठराग्निवर्द्धक, क्षार, विपाकमें कटु और चिल्लीके गुणभी इसीकी समान हैं।

अपिच।

वास्तूकद्वितयं स्वादु क्षारं पाके कटूदितम्।
दीपनं पाचनं रुच्यं लघु शुक्रबलप्रदम्॥
सरं पित्तास्रप्लीहास्रकृमिदोषत्रयापहम्। (भा० प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारके बथुए-स्वादिष्ठ, क्षार, पाकमें कटु, दीपन, पाचन, रुचिकारक, हलके, शुक्रजनक, बलकारक, कुछेक दस्तावर, रक्त, पित्त, प्लीहा, रुधिरविकार, कृमि और त्रिदोषको दूर करे हैं।

अन्यच्च।

वास्तुकं मधुरं हृद्यं वातपित्तार्शसां हितम्॥ (हा० सं०)

अर्थ-बथुआ-मधुर, हृदयको हितकारी तथा वात, पित्त और बवासीररोगवालोंको हितकारी है।

चिल्लीगुणाः।

चिल्ली वास्तुकतुल्या च सक्षारा श्लेष्मपित्तनुत्।
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रघ्नी पथ्या च रुचिकारिणी॥ (रा० नि०)

अर्थ-चिल्ली अर्थात् लाल बथुआ-बथुएकीः समानही गुणवाला है। क्षार, कफपित्तनाशक, प्रमेहनाशक, मूत्रकृच्छ्रनिवारक, पथ्य और रुचिकारक है। बथुआ जौ और गेहूंके खेतमें अधिकतासे उत्पन्न होताहै इसके पत्तोंमें खार बहुत होताहै और यह सर्वत्र प्रसिद्ध है।

लोणीबृहल्लोणीनामानि।

लोणा लोणी च कथिता बृहल्लोणी च घोलिका॥

अर्थ-लोणा, लोणी, बृहल्लोणी, घोलिका।

संस्कृतभाषामें लोणा, लोणी, बृहल्लोणी, घोलिका।

हिन्दीभाषामें	लोनी, नोनिया, कुलफा ।
वंगभाषामें	वडणुनी, क्षुदेणुनी, वनणुनी ।
मराठीभाषामें	घोळ, लहान घोळ, मळेघोळ, रायघोळ, ।
गुजरातीभाषामें	लुणी झीणी, लुणी मोटी ।
कर्णाटकीभाषामें	गोलि ।
तैलिङ्गीभाषामें	अईलकुस ।
तामिलीभाषामें	कोरिलकीरइ ।
इंग्रेजीभाषामें	पर्सलेन । Purse Lane
लैटिन्भाषामें	पोर्चलेका ओलिरेसिया । Portulaca olcracea
फारसीभाषामें	खुरफा ।
अरबीभाषामें	वक्कतुलहुमक्का ।

लोणीगुणाः ।

लोणी रूक्षा गुरुः कट्वी वातश्लेष्महरी पटुः ।
अर्शोघ्नी दीपनी चाम्ला मन्दाग्निविषनाशिनी ॥

अर्थ-लोणी अर्थात् नोनियाका शाक-रूखा, भारी, कटु, वातकफनाशक, खारी, अर्शरोगनाशक, दीपन, अम्ल, मन्दाग्नि और विषविनाशक है ।

घोलिकागुणाः ।

घोलिकाम्ला सरा चोष्णा वातकृत्कफपित्तहृत् ।
वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नी श्वासकासप्रमेहनुत् ॥
पित्तलाम्ला ग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी ।

अर्थ-घोलिका अर्थात् बडी नोनिया, कुलफा-अम्ल, सारक, गरम, वातकारक, कफपित्तनाशक, वाणीके दोषको दूर करनेवाला, व्रणविनाशक, गुल्मनाशक, श्वासनिवारक, कासहारक, प्रमेहनाशक पित्तजनक, अम्ल तथा संग्रहणी, बवासीर, कुष्ठ और अतिसारको दूरकरे है

अन्यच्च ।

घोलिका रुचिदा पट्वी पित्तला चाम्लिका मता ।
सरा कफकरा चोष्णा वातत्वग्दोषनाशिनी ॥
गुल्मव्रणश्वासकासनेत्ररुङ्मेहशोथहा ।

अर्थ-नोनिया-रुचिकारी, खारी, पित्तजनक, अम्ल, सारक,

कफकारक, गरम तथा वात, त्वचाके दोष, गुल्म, व्रण, श्वास, खांसी नेत्ररोग, प्रमेह और सूजनको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च

राजपूर्वा घोलिका तु रूक्षा चाम्ला पटुः स्मृता ।
रुच्या कट्वी च गुर्वी च दीपिकाग्नेः कफापहा ॥
वातं चार्शचाग्निमांद्यं विषं शुक्रं च नाशयेत् ॥

अर्थ-बडी लोणी-रूक्ष, अम्ल, खारी, रुचिकारक, कटु, भारी, अग्निप्रदीपक, कफनाशक तथा वात, बवासीर, मन्दाग्नि, विष और शुक्रका नाश करे है ।

क्षुद्रघोलिकागुणाः ।

क्षुद्रघोलिका पित्तला सरा कफकरी च कट्वी जीर्णजूर्तिहा ।
श्वासकासहा गुल्मनाशिनी मेहशोथहा सा रसायनी ॥
वातहा मता चोष्णकारिणी चाम्लिका मता नेत्ररोगहा ।
चर्मदोषहा व्रणहरी मता पूर्ववैद्यकैः सा निरूपिता ॥ (नि.रा.)

अर्थ-छोटेपत्तोंके नोनियाका शाक-पित्तजनक, सारक, कफकारक, कटु, जीर्णज्वरनाशक और श्वास, खांसी, वायगोला, प्रमेह और सूजनको दूर करनेवाला है, रसायन, वातविनाशक, गरम, खट्टा तथा नेत्ररोग, चर्मविकार और व्रणका विनाश करे है, नोनिया और कुलफा यह दोनों गीली और रेतीली तथा खारी जमीनमें उत्पन्न होते हैं ।

चुक्रनामानि ।

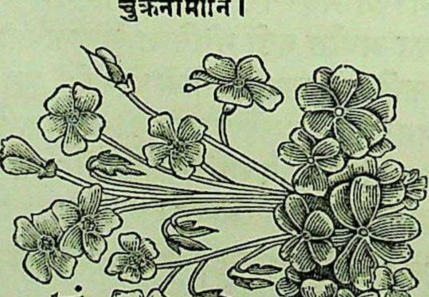

चुक्रं तु चुक्रवास्तूकं लिकुचं चाम्लवास्तुकम् ।

दलाम्लमम्लशाकाख्यमम्लादिहिलमोचिका ॥

अर्थ-चुक्र, चुक्रवास्तुक, लिकुच, अम्लवास्तुक, दलाम्ल, अम्लशाकाख्य, अम्लहिलमोचिका (चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचनी, शतवेधनी)

संस्कृतभाषामें	चुक्र, चुक्रिका ।
हिन्दीभाषामें	चूका, चूकाका शाक ।
बंगभाषामें	चुकापालङ ।
मराठीभाषामें	आंबचुका, लघु व थोर ।
गुजरातीभाषामें	चुको खाटी भाजी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलिचकोत ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लेडरडाक । Bladdeered Dock
लैटिन्भाषामें	रुमेक्स वेसिकेरिषस् । Rumex vesicarips
फारसीभाषामें	तुरशक वडा तुर्रं खुरासानी छोटा ।
अरबीभाषामें	हुमाजवुकले हामेजा ।

अस्य गुणाः ।

चुक्रोऽग्निदीपनश्चोष्णो रुचिकारी लघुः स्मृतः। पित्तलः सारकः पथ्यो ह्यत्यम्लः शूलनाशकः॥ गुल्माग्निमांद्यहृत्पीडाबद्धबिट्कामवातहा । स्वादुतृष्णावान्तिकफवातगुल्मापहो मतः । वातं च मुखवैरस्यं नाशयेदिति कीर्तितः॥(नि०र०)

अर्थ-चूका अग्निदीपक, गरम, रुचिकारक, हलका, पित्तकारक, पथ्य, अत्यन्त अम्लशूलनाशक तथा गुल्म, अग्निमांद्य, हृदयकी पीडा, मलबद्ध, आमवात, तृषा, वमन, कफवात, गुल्म, वात और मुखकी विरसताको दूर करे है तथा स्वादिष्ट है ।

अन्यच्च ।

चुक्रक दुर्ज्जरं भेदि वातजित्पित्तलं गुरु॥(राजवल्लभ०)

अर्थ-चूका-दुर्ज्जर अर्थात् कठिनतासे पचनेवाला, भेदक, वातनाशक, पित्तकारक और भारी है ।

मारिषनामानि ।

मारिषो बाष्पको मार्षः श्वेतो रक्तश्च स स्मृतः ॥
दीर्घनालो रक्तपर्णो बिन्दुपर्णश्च स स्मृतः ॥

अर्थ-मारिष, बाष्पक और मार्ष यह नाम मारिषके हैं, मरसा सफेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है, मरसाकी नाल बडी होती है, पत्ते लाल होतेहैं और पत्तोंके ऊपर बिन्दु होते हैं ।

संस्कृतभाषामें	मारिष ।
हिंदीभाषामें	सफेद मरसा, लाल मरसा, नवडा ।
वंगाभाषामें	श्वेतकाँटानटेरशाक, लाल काँटनटेरशाक ।
मराठीभाषामें	पोकळ्याची भाजी, माठाची भाजी ।
गुजरातीभाषामें	डांभो ।
औत्कलीभाषामें	नेउटाशाग ।
तैलिङ्गीभाषामें	डुगलकुरा ।
लैटिन्भाषामें	एमेरेंथस् ट्रिकलर । Amaranthus tricolor

मारिषगुणाः ।

मारिषो मधुरः शीतो विष्टम्भी पित्तनुद्गुरुः । वातश्लेष्मकरो रक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित्॥रक्तमार्षो गुरुर्नातिसक्षारो मधुरः सरः।श्लेष्मलः कटुकः पाके स्वल्पदोषउदीरितः॥(भा० प्र०)

अर्थ-मरसा-मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पित्तनाशक, भारी, वातकफकारक, रक्तपित्त निवारक और अग्निकी विषमताको दूर करैहै। लाल मरसा-अत्यन्त भारी नहीं, क्षार, मधुर, सारक, कफकारक, पचनेमें चरपरा और स्वल्पदोषयुक्त है ।

अन्यच्च ।

मारिषो रोचकः शीतो गुरुर्मेदस्त्रिदोषजित्॥(म० नि०)

अर्थ-मरसा-रुचिकारक, शीतल, भारी तथा मेदरोग और त्रिदोषनाशक है ।

तण्डुलीयनामानि ।

तण्डुलीयो मेघनादः काण्डेरस्तण्डुलेरकः ।
भण्डीरस्तण्डुली बीजो विषघ्नश्चाल्पमारिषः ॥

अर्थ-तण्डुलीय, मेघनाद, काण्डेर, तण्डुलेरक, भण्डीर, तंडुलीबीज विषघ्न, अल्पमारिष (तण्डुलीक, तण्डुल, तण्डुली, तंडुलीयक, ग्रन्थिल, बहुवीर्य्य, घनस्वन, सुशाक, पथ्यशाक, स्फूर्ज्जथु, स्वानिताह्वय, वीर, तण्डुलनामा)

कञ्चटनामानि ।

पानीयं तण्डुलीयं यत्तत्कञ्चटमुदाहृतम् ॥

अर्थ-पानीय तण्डुलीय, कञ्चट (मारिष जलज)

संस्कृतभाषामें	तण्डुलीय, कञ्चट ।
हिन्दीभाषामें	चौलाईका शाक, जलचौलाई ।
वंगभाषामें	क्षुदेनटे, चांपानटे,गोयाल,कांचडादाम ।
मराठीभाषामें	तांदुळजा, चवळाई ।
गुजरातीभाषामें	तांजलजो।
तैलिंगीभाषाम	मोलाकुरा, कुईकोरा ।
कर्णाटकीभाषामें	किरुकुशाले ।
तामिलीभाषाम	मुल्लाक्करइ ।
द्राविडीभाषामें	काण्डेमाट ।
इंग्रेजीभाषामें	हरमेफ्रोडाईट एमेरेंथ Hermaphrodite Amaranth
लैटिन्भाषामें	एमेरेंथस् टेन्युईफोलियस् AmaranthusTenifolius
फारसीभाषामें	सुपेजमर्ज ।
अरबीभाषामें	बुकलेयमानीय ।

तण्डुलीयगुणाः ।

तण्डुलीयो लघुः शीतो रूक्षः पित्तकफास्रजित् ।
सृष्टमूत्रमलो रुच्यो दीपनो विषहारकः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-चौलाई-हलकी,शीतल,रूखी,पित्तकफनाशक, रक्तविकारविनाशक,मलमूत्रनिःसारक,रुचिकारक,दीपन और विषहारक है ।

अन्यच्च ।

तण्डुलीयस्तु शिशिरो मधुरो विषनाशनः ।
रुचिकृद्दीपनः पथ्यः पित्तदाहभ्रमापहः ॥

अर्थ-चौलाई-शीतल,मधुर,विषनाशक,रुचिकारक, दीपन, पथ्य तथा पित्त, दाह और भ्रमको दूर करे है ।

अपिच ।

रसे विपाके मधुरोऽतिशीतो रूक्षस्तृषारोचकनाशनश्च ।
स दाहपित्तं रुधिरं विषं च विशेषतो हन्ति च तण्डुलीयः ॥

अर्थ-चौलाई-रस और विपाकमें मधुर, अत्यन्त शीतल, रूखा तथा तृषा, अरुचि, दाह, पित्त, रुधिरविकार और विषका विनाश करे है।

अन्यच्च।

स्वादुपाकमसृक्पित्तविषघ्नं तण्डुलीयकम्।

अर्थ-चौलाई-स्वादुपाकी तथा रक्तपित्त और विषनाशक है।

अस्य पत्रगुणाः।

तण्डुलीयकदलं हिममर्शःपित्तरक्तविषकासविनाशि।
ग्राहकं समधुरं च विपाके दाहशोषशमनं रुचिदायि॥ (रा. नि.)

अर्थ-चौलाईके पत्ते-छूनेमें शीतल, पित्तरक्तनाशक, विषघ्न, कासनिवारक, मलरोधक, पचनेमें मधुर तथा दाह और शोषविनाशक हैं।

अस्य मूलगुणाः।

तण्डुलीयकमूलं स्यादुष्णं श्लेष्मविनाशनम्।
रजोरोधकरं रक्तपित्तप्रदरसंहरम् ॥ (आ० सं०)

अर्थ-चौलाईकी जड-गरम, कफनाशक, रजरोधक तथा रक्तपित्त और प्रदररोगको दूर करनेवाली है।

कञ्चटगुणाः।

कञ्चटं तिक्तकं रक्तपित्तानिलहरं लघु। (भा० प्र०)

अर्थ-जलचौलाई-कडवी, हलकी तथा रक्तपित्त और वातका नाश करे है।

पाङंक्यनामानि।

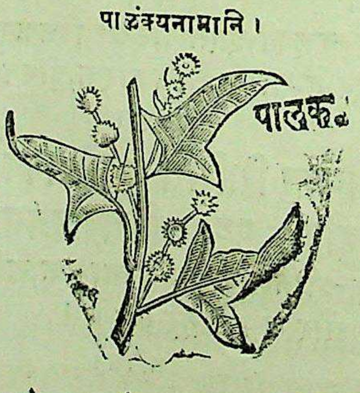

पालङ्क्यं तु पलंक्यायां मधुरा क्षुरपत्रिका।
सुपत्रा स्निग्धपत्रा च ग्रामिणी ग्राम्यवल्लभा ॥

अर्थ-पालङ्क्य, पलङ्क्या, मधुरा, क्षुरपात्रिका, सुपत्रा, स्निग्धपत्रा, ग्रामिणी, ग्राम्यवल्लभा (क्षुरिका, पालंक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका, चीरितच्छदा, पालंकी) ।

संस्कृतभाषामें	पालंक्य ।
हिन्दभिाषामें	पालगका शाग ।
वंगभाषामें	पालंशाक ।
मराठीभाषामें	पालख, पोईशाक ।
गुजरातीभाषामें	पालखनी भाजी ।
कर्णाटकीभाषामें	पालक्य ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पाईनेज Spinage
लैटिन्भाषामें	स्पाईनेश्या ओलिरेश्या Spinasia Oleracea
फारसीभाषामें	इस्पनाख ।
अरबीभाषामें	अस्पनाख ।

पालङ्क्यगुणाः ।

पालंक्या वातला शीता श्लेष्मला भेदिनी गुरुः ।
विष्टम्भिनी मदश्वासपित्तरक्तविषापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालगका साग-बादी, शीतल, कफकारक, भेदक, भारी, विष्टम्भजनक तथा मद, श्वास, रक्तपित्त और विषका विनाश करेहै ।

अन्यच्च ।

पालंक्यमीषत्कटुकं मधुरं पथ्यशीतलम् ।
रक्तपित्तहरं ग्राहि ज्ञेयं सन्तर्पणं परम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पालगका साग-किंचित् चरपरा, मधुर, पथ्य, शीतल, रक्तपित्तनाशक, मलरोधक और तृप्तिकारक है ।

अन्यच्च ।

पालक्यामिति वर्णयन्ति सुधियो गुर्वी सरा पिच्छिला ।
शीता श्लेष्मकरी च रक्तशमनी पित्तं विषं नाशयेत् ॥

अर्थ-पालगका साग-भारी, कुछेक दस्तावर, पिच्छिल, शीतल, कफकारक, रुधिरके विकारोंको शान्त करनेवाला तथा पित्त और विषका नाश करे है ।

कुणञ्जरनामानि ।

कुणञ्जरः कुणञ्जी च कुणंजोऽरण्यवास्तुकः ।

अर्थ-कुणञ्जर, कुणञ्जी,कुणञ्ज,अरण्यवास्तुक (क्षेत्रशाक,क्षुशाक, मञ्जरी, श्वेतमञ्जरी, अतिसारजनक, दुर्भिक्षवल्लभ) ।

संस्कृतभाषामें	कुणंजर ।
हिन्दीभाषामें	लेसुवा ।
वंगभाषामें	वनवेतुया ।
मराठीभाषामें	कुणजीरु ।
गुजरातीभाषामें	कणेझरो, कणेझो ।
कर्णाटकीभाषामें	गोरेंजेयपलेय ।
लैटिन्भाषामें	एमेरेन्थस् पोलिगोनोइंडिस् । Amaranthus Polygonoides

कुणञ्जरगुणाः ।

कुणञ्जरस्त्रिदोषघ्नो मधुरो रुच्यदीपकः ।
ईषत्कषायः संग्राही पित्तश्लेष्महरो लघुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुणञ्जर-त्रिदोषनाशक, मधुर, रुचिकारक, दीपन,किंचित्कषेला; मलरोधक, पित्तश्लेष्मनाशक और हलका है ।

विवरण-कुणंजरके क्षुप वर्षातमें उत्पन्न होते हैं, पत्ते चौलाईकी समान और बाल सफेद तथा लालरंगकी निकलती हैं ।

उपोदकीनामानि ।

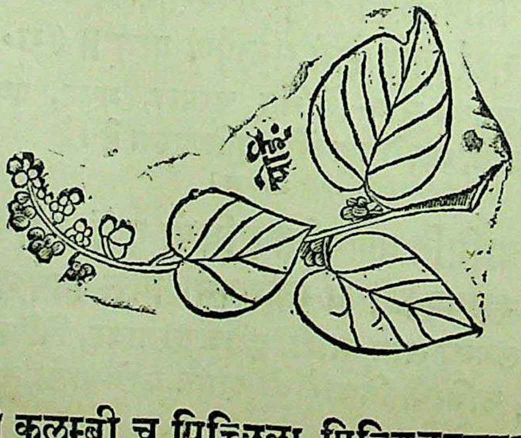

उपोदकी कलम्बी च पिच्छिला पिच्छिलच्छदा ।

मोहिनी मद्दशाकश्च विशाला बलिपोदकी ॥

अर्थ–उपोदकी, कलम्बी, पिच्छिला, पिच्छिलच्छदा, मोहिनी, मद्दशाक, विशाला, बलिपोदकी (उपोदिका, उपोदीका, उपोती, वृश्चिकप्रिया, अपोदिका, पूनीका, पूतिका)।

संस्कृतभाषामें	उपोदकी, पोदकी ।
हिन्दीभाषामें	पोईका साग ।
वंगभाषामें	पुइशाक ।
मराठीभाषामें	मायाळु, लघु व थोर ।
गुजरातीभाषामें	पोथी ।
इंग्रेजीभाषामें	रेडमलबारनाइटेशड । Red Malbar Night shabe
लैटिन्भाषामें	बसेला रुब्रा Bassella Ruba ब० आलबा । B. Alba

उपोदकीगुणाः ।

उपोदकी कषायोष्णा कटुका मधुरा च सा ।
निद्रालस्यकरी रुच्या विष्टम्भश्लेष्मकारिणी ॥

अर्थ–पोईका शाक–कषेला, गरम, चरपरा, मधुर, निद्रा और आलस्यको करनेवाला, रुचिकारक, विष्टम्भजनक और कफकारक है ।

अन्यच्च ।

पोतकी शीतला स्निग्धा श्लेष्मला वातपित्तनुत् ।
अकण्ठ्या पिच्छिला निद्राशुक्रदा रक्तपित्तनुत् ॥
बलदा रुचिकृत्पथ्या बृंहणी तृप्तिकारिणी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–पोईका शाक–शीतल, स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, कण्ठको अहितकारी, पिच्छिल, निद्राजनक, शुक्रजनक, रक्तपित्तनाशक, बलवर्द्धक, रुचिकारक, पथ्य, पुष्टिकारक और तृप्तिजनक है।

अन्यच्च ।

उपोदिका सरा स्निग्धा बल्या श्लेष्मकरी हिमा ।
स्वादुपाकरसा वृष्या वातपित्तमदापहा ॥

अर्थ–पोईका शाक-कुछेक दस्तावर, स्निग्ध, बलकारक, कफकारक, शीतल, स्वादुपाकी, वृष्य तथा वात, पित्त और मदनाशक है ।

अपि च ।

उपोदकी द्वितीया च क्षुद्रान्या वनजा तथा ।
चतुर्थी मूलपोती च गुणैः सर्वाः समाः स्मृताः ॥

अर्थ-पोई, लालपोई, छोटी पोई, वनपोई और मूलपोई इन सबके गुण पोईकी समान हैं ।

विवरण । पोईकी बेल घर बाहर सब स्थानोंमें उत्पन्न होजाती है । बेलका रंग सफेद और लाल होताहै, पत्ते गोल होते हैं और बीज लाल होते हैं ।

सहस्रमूलीनामानि ।

काण्डपत्री कोषपुष्पी घननीलसुमा शुभा ।
सहस्रमूलिका ज्ञेया वर्षाकाली च सा स्मृता ॥

अर्थ-काण्डपत्री, कोषपुष्पी, घननीलसुमा, शुभा, सहस्रमूलिका, वर्षाकाली ।

संस्कृतभाषामें	सहस्रमूली ।
हिन्दभिाषामें	सहस्रमूली ।
मराठीभाषामें	वेलिची भाजी ।
गुजरातीभाषामें	शिषमूली ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पैडरवर्ट । Spider Wort
लटिनभाषामें	कोमिलिया काम्युनास् । Comeyllia Communis

अस्या गुणाः ।

सहस्रमूलीका स्निग्धा मधुरा पित्तनाशिनी ।
किञ्चिद्वातकरी बल्या सरा चैव रसायनी ॥

अर्थ-सहस्रमूली-स्निग्ध, मधुर, पित्तनाशक, किञ्चित् वातकारक, बलकारक, सारक और रसायन है।

चञ्चुनामानि ।

चंचुश्च विजला चञ्चूः कलभी भीरुपत्रिका ।
चञ्चुरश्चञ्चुपत्रश्च सुशाकः क्षेत्रसम्भवः ॥

अर्थ-चंचु, विजला, चंचू, कलभी, भीरुपात्रिका, चंचुर, चंचुपत्र, सुशाक, क्षेत्रसम्भव (चिञ्चा, चिंचुकी, दीर्घपत्री)

महाचञ्चुनामानि।

बृहच्चंचु विषारिस्यान्महाचंचुः सुचंचुका।
स्थूलचंचुर्दीर्घपत्री दिव्यगन्धा च सप्तधा॥

अर्थ-बृहच्चंचु, विषारि, महाचञ्चु, सुचञ्चुका, स्थूलचञ्चु, दीर्घपत्री, दिव्यगन्धा।

क्षुद्रचंचुनामानि।

क्षुद्रचञ्चुस्तु चञ्चुः स्याच्चंचूः शुनकचंचुका॥
त्वक्सारा भेदनी क्षुद्रा कटुका पटुपत्रिका॥

अर्थ-क्षुद्रचंचु, चंचु, चंचू, शुनकचंचुका, त्वक्सारा, भेदनी, क्षुद्रा, कटुका, पटुपत्रिका।

संस्कृतभाषामें	चंचु।
हिंन्दीभाषामें	चंचु, चेचुना।
वंगभाषामें	चेचको।
मराठीभाषामें	लघुचंचु, थोरचंचु।
गुजरातीभाषामें	छुछ राजगरीनी भाजी।
तैलङ्गीभाषामें	चिन्तचेट्टु।

लैटिन्भाषामें काकोंरस् एक्युटेंग्युलेरीस्। Corchorus acutangularis

चंचुगुणाः।

चंचुस्तु मधुरा तीक्ष्णा कषाया मलशोषिणी।
ल्मोदरविबन्धार्शोग्रहणीरोगहारिणी॥

अर्थ-चंचु-मधुर, तीक्ष्ण, कषेला, मलशोषक तथा गुल्म, उदररोग, विबंध, बवासीर, और संग्रहणी रोगको दूर करेहै।

महाचंचुगुणाः।

महाचंचुः कटूष्णा च कषाया मलरोधिनी।
गुल्मशूलोदरार्शोर्तिविषघ्नी च रसायनी॥

अर्थ-बडा चंचुका शाक-चरपरा, गरम, कषेला, मलरोधक, रसायन, गुल्म, शूल, उदररोग, बवासीर और विषका नाश करे है।

क्षुद्रचंचुगुणाः।

क्षुद्रचंचुस्तु मधुरा कटूष्णा च कषायिका।

दीपनी गुल्मशूलार्शःशमनी च विबन्धकृत् ॥

अर्थ-क्षुद्रचंचु-मधुर, चरपरा, गरम, कषेला, विबन्धकारक तथा गुल्म, शूल और बवासीरको दूर करे है।

अन्यच्च ।

चंचुः शीता सरा रुच्या स्वाद्वी दोषत्रयापहा ।
धातुपुष्टिकरी बल्या मेध्या पिच्छिलिका स्मृता ॥

अर्थ-चंचुका शाक-शीतल, सारक, रुचिकारक,स्वादिष्ट,त्रिदोषनाशक, धातुवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलकारक, मेधाजनक और पिच्छिल है।

चचुबीजगुणाः ।

चचुबीजं कटूष्णं च गुल्मशूलोदरार्त्तिजित् ।
विषं त्वग्दोषकण्डूतिआखोर्दुष्टविषापहम् ॥

अर्थ-चंचुके बीज-चरपरे, गरम, तथा गुल्म, शूल, उदरकीपीडा, विष, त्वचाके दोष, खुजली,मूसेका विष और दुष्ट विषको दूरकरेहै।

विवरण--चुचुनाके छोटे २ क्षुप होते हैं विशेषकरके यह चौमासेमें होता है फूल पीला आता है औरफलीलगतीहैंइसकी अनेकजातिहैं,

नाडीकनामानि।

नाडीकं कालशाकञ्च श्राद्धशाकं च कालकम्

अर्थ-नाडीक, कालशाक, श्राद्धशाक, कालक।

अस्य गुणाः।

कालशाकं सरं रुच्यं वातकृत्कफशोफहृत् ॥
बल्यं रुचिकरं मेध्यं रक्तपित्तहरं हिमम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नाडीका शाक-कुछेक दस्तावर, रुचिकारी, वातकारक, कफनाशक,सूजनको दूर करनेवाला, बलकारक, रुचिजनक मेधाकारक, रक्तपित्तनाशक और शीतल है।

नाडीशाक-पट्टशाकनामानि ।

पट्टशाकस्तु नाडीको नाडिशाकश्च स स्मृतः ।

अर्थ-पट्टशाक, नाडीक,नाडीशाक (नाडीच,केंचुक, पेचुली, पेचु, विश्वरोचन)।

संस्कृतभाषामें पट्टशाक, नाडीशाक।

हिंदीभाषामें	पटुआसाग ।
वंगभाषामें	पाट्शाक, कोसटारशाक, नालते ।
मराठीभाषामें	नाडीशाक ।
गुजरातीभाषामें	नालानी भाजी ।
लैटिन्भाषामें	आईपोमिया रिप्टेन्स । Ipomoea Reptams

अस्य गुणाः ।

नडीकशाकं द्विविधं तिक्तं मधुरमेव च । रक्तपित्तहरं तिक्तं कृमिकुष्ठविनाशनम् ॥ मधुरं पिच्छलं शीतं विष्टम्भिकफवातकृत् । तच्छुष्कपत्रं ज्वरदोषनाशनं विशेषतः पित्तकफज्वरापहम् । जलं च तस्यापि च पित्तहारकं सुरोचनं व्यञ्जनयोगकारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-नाडीक शाक-तिक्त और मधुर इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहां तिक्त शाक-रक्तपित्तनाशक तथा कृमि और कुष्ठका नाश करे है । मधुर शाक-पिच्छिल,शीतल, विष्टम्भजनक और कफवातकारक है । नाडीके सूखे पत्ते-ज्वर और विशेषकरके पित्त, कफ, ज्वरनाशक हैं । नाडीका जल-पित्तनिवारक, रोचन और व्यंजनमें उपयोगी है ।

अन्यच्च ।

तच्छुष्कं जलदोषघ्नं पित्तश्लेष्मामवातनुत् ॥

अर्थ-नाडीके सूखे पत्ते-जलदोषनाशक, पित्त, कफ और आमवातविनाशक हैं ।

विवरण । नाडीकी बेल पानीमें होतीहै। इसकी डंडी पोली और गांठदार होती हैं । पत्ते लम्बे लम्बे होतेहैं । अफीमके विषको दूर करनेके लिये इसके पत्तोंका रस प्रयोग किया जाता है ।

कलम्बीनामानि ।

कलम्बी शतपर्वा च कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥

अर्थ-कलम्बी, शतपर्वा (कडम्बी, कलम्बू, कलम्बिका)

संस्कृतभाषामें	कलम्बी ।
हिन्दीभाषामें	कलमीशाक ।
वंगभाषामें	कलमी ।
तैलिङ्गीभाषामें	तोमिवच्चलिचेट्टु ।

अस्या गुणाः ।

कलम्बी स्तन्यदा प्रोक्ता मधुरा शुक्रकारिणी॥(भा०प्र०)

अर्थ-कलमीशाक-स्तनोंमें दूधको उत्पन्नकरनेवाला, मधुर और शुक्रजनक है ।

विवरण। कलमीशाक प्रायः खेतोंमें होता है ।

हिलमोचिकानामानि ।

हिलमोची त्रिवृत्पर्णी विषघ्नी हिलमोचिका ।

अर्थ-हिलमोची, त्रिवृत्पर्णी, विषघ्नी, हिलमोचिका (हिलमोचि, रोची, मोची, मत्स्याङ्गी, हेलञ्ची, मम्ची, मत्स्याक्षी, चक्राङ्गी, जलब्राह्मी, ब्राह्मी, शंखधरा, आचारी)

संस्कृतभाषाम	हिलमोचिका ।
हिन्दीभाषामें	हुरहुल ।
बंगभाषा	हिञ्चेशाक।
वम्	हुरहुची ।
आत्क०	हिरमिचा ।

अस्या गुणाः ।

शोथं कुष्ठं कफं पित्तं हरते हिलमोचिका॥(भावप्रकाश)

अर्थ-हिलमोचिका अर्थात् हुलहुराका शाक-सूजन, कोढ, कफ, पित्त इनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

हिलमोची सरा तिक्ता कुष्ठघ्नी कफपित्तजित् ।

अर्थ-हुरहुलशाग-कुछेक दस्तावर, कडवा तथा कुष्ठ और कफ, पित्तनाशक है ।

विवरण। यह ब्राह्मीकी समान होती है । प्रायः जलके निकटक स्थानोंमें देखीजाती है । फूल छोटा छोटा नीले रंगका आता है ।

सुनिषण्णकनामानि ।

सितवारः सितिमरः स्वस्तिकः सुनिषण्णकः ।
श्रीवारकः सूचिपत्रः पर्णाकः कुर्कुटः शिखी ॥

अर्थ-सितिवार, स्वास्तिक, सुनिषण्णक, श्रीवारक, सूचिपत्र, पर्णाक, कुर्कुट, शिखी (वितुन्न, सुनिषण्ण, चच्चु, सुतपत्र, शितिचार सूच्याह्वय, सूच्याह्व, सूचिपत्रक, श्रीवारक, बभ्रु, कुरण्ट, कुक्कुट, सचिदल, श्वेतावर, मेधाकृत, ग्राहक, शितिवार,

संस्कृतभाषामें	सुनिषण्णक।
हिंदीभाषामें	शिरिआरि, चौपतिया, उटिंगण, गुठवा। उटिंगणके बीज।
वंगभाषामें	सुषणीशाक, शुशुनीशाक।
मराठीभाषामें	कुरडू।
गुजरातीभाषामें	ओटीगण,ओटीगणनाबी। खडकातिरा।
तैलिंगीभाषामें	सुनिषण्णमनेशाकमु।
औत्कलीभाषामें	छुनछुनिया।
लैटिनभाषामें	ब्लेफारिस् इडयुलीम्। Blepharis Edulis
फारसीभाषामें	अंजरा, तुख्मेअंजरा।
अरबीभाषामें	अंजरा, तुख्मेअंजरा।

अस्य गुणाः।

सुनिषण्णो हिमो ग्राही मोहदोषत्रयापहः।
अविदाही लघुः स्वादुः कषायो रूक्ष दीपनः।
वृष्यो रुच्यो ज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-सुनिषण्णक-शिरिआरि-चौपतियाका शाक-शीतल, मलरोधक, मोहनाशक, त्रिदोषनिवारक, अविदाही, हलका, स्वादिष्ट, कषेला, रूखा, दीपन, वृष्य, रुचिकारक तथा ज्वर, श्वास, प्रमेह, कोढ और भ्रमको दूर करे है।

अन्यच्च।

सुनिषण्णो लघुर्ग्राही वृष्योऽग्निकृत्त्रिदोषहा।
मेधारुचिप्रदो दाहज्वरहारी रसायनः॥ (शो० नि०)

अर्थ-चौपतियाका शाक-हलका, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, जठराग्निजनक, त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, रुचिकारक, दाहनिवारक, ज्वरहारक और रसायन है।

अस्य बीजगुणाः।

सुनिषण्णकबीजन्तु मूत्रकृच्छ्रनिवारणम्।

अर्थ-उटिंगणके बीज-मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे हैं।

विवरण। सुनिषण्णक अर्थात् उटिंगणका छता क्षुपकी समान सजल स्थानोंमें होताहै पत्ते चार और चांगेरीकी समान होतेहैं उन

चार पत्तोंके बीचमें कलीसी निकलती है उसमें दो बीज चपटे लगेहुये होते हैं वह बीज तालमखानेकी सदृश चिकने होते हैं ।

मूलकस्य पत्रशाकगुणाः ।

पाचनं लघु रुच्योष्णं पत्रं मूलकजं नवम् ।
स्नेहसिद्धं त्रिदोषघ्नमसिद्धं कफपित्तकृत् ॥

अर्थ–नवीनमूलीके पत्तोंका शाक–हलका, रुचिकारकारी, गरम और पाचक है वही घी और तैलादिमें सिद्धकिया अर्थात् छौंकाहुआ त्रिदोषनाशक है और असिद्ध अर्थात् कच्चा कफपित्तकारक है ।

चम्पकपत्रशाकगुणाः ।

काञ्चनं पत्रशाकं तु कषायं कटुकं मधु ।
गंडमालारक्तपित्तकुष्ठवातांश्च नाशयेत् ॥

अर्थ–चम्पाके पत्तोंका शाक–कषेला, चरपरा, मधुर तथा गंडमाला, रक्तपित्त, कुष्ठ और वातका विनाश करे है ।

मुष्कपत्रशाकगुणाः ।

मोक्षपत्रस्य शाकन्तु तिक्तं च तुवरं मतम् ।
दीपनं गुल्ममेहघ्नमुष्णं वातकफकृमीन् ॥
जयेत्प्लीहामग्रहणीमेहपाण्डुगुदामयान् ।

अर्थ–मोखाके पत्तोंका शाक–कडवा, कषेला, दीपन, गरम तथा गुल्म, प्रमेह, वात, कफ, कृमि, प्लीहा, आम, संग्रहणी, मेह, पाण्डु और गुदाके रोगोंको दूर करेहै ।

करलीनामानि ।

करली दीर्घपत्रा च मध्यदण्डा प्रलम्बिका ।

अर्थ–करली, दीर्घपत्रा, मध्यदण्डा, प्रलम्बिका ।

हिन्दीभाषामें	करली ।
गुजरातीभाषामें	कुलीची भाजी ।
मराठीभाषामें	करलीनी भाजी ।
लैटिन्भाषामें	फेलेअयमट् युवरोझं ।

अस्या गुणाः ।

करली शीतला स्वादी वातला कफकृद्गुरुः ।

अर्थ-करली-शीतल, स्वादिष्ठ, वातजनक, कफकारक, और भारीहै

अन्यच्च ।

करली मधुरा तिक्ता वातला सारका मता ।

अर्थ-करलीके पत्तोंका शाक-मधुर, कडवा, बादी और सारक है।

विवरण । करलीके क्षुप वर्षाऋतुमें उत्पन्न होतेहैं, पत्ते लम्बे और पत्तेके बीचमेंसे एक बाल निकलती है इसमें सफेद फूल होताहै इसका फल नीले रंगका होताहै और इसके पत्तोंका शाक करतेहैं ।

शतपुष्पापत्रशाकगुणाः ।

शतपुष्पादलं सोष्णं मधुरं गुल्मशूलजित् ।
वातघ्नं दीपनं पथ्यं पित्तकृद्रुचिदायकम् ॥

अर्थ-सोयके पत्तोंका शाक-गरम, मधुर, गुल्मनाशक, शूलनिवारक, वातविनाशक, दीपन, पथ्य, पित्तजनक और रुचिकारक है।

मेथिकापत्रशाकगुणाः ।

मेथिकापत्रशाका तु तिक्ता वातहरा मता ।
रुचिकृद्दीपनी या च किंचित्पित्तप्रकोपनी ॥

अर्थ-मेथीके पत्तोंका शाक-कडवा, वातविनाशक, रुचिकारक, दीपन और कुछ २ पित्तको कुपित करेहै ।

राजिकापत्रशाकगुणाः ।

कटूष्णं राजिकापत्रं कृमिवातकफापहम् ।
कण्ठामयहरं स्वादु वह्निदीपनकारकम् ॥

अर्थ-राईके पत्तोंका शाक-चरपरा, गरम, स्वादिष्ठ, अग्निप्रदीपक तथा कृमि, वात, कफ और कण्ठरोगको दूर करेहै ।

सर्षपपत्रशाकगुणाः ।

सार्षपं पत्रमत्युष्णं रक्तपित्तप्रकोपनम् ।
विदाहि कटुकं स्वादु शुक्रकृद्रुचिदायकम् (रा० नि०)

अर्थ-सरसोंके पत्तोंका शाक-अत्यन्त गरम, रक्तपित्तप्रकोपक, दाहजनक, चरपरा, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक और रुचिकारक है।

अन्यच्च ।

कटुकं सार्षपं शाक बहुमूत्रमलं गुरु ।

अम्लपाकं विदाहि स्यादुष्णं रूक्षं त्रिदोषजित् ॥
सक्षारं लवणं तीक्ष्णं स्वादु शाकेषु निन्दितम् । (भा०प्र०)

अर्थ-रससोंके पत्तोंका शाक-चरपरा, बहुमूत्रमलकारक, भारी, अम्लपाकी, दाहजनक, गरम, रूखा, त्रिदोषनाशक, क्षारयुक्त, लवणरसयुक्त, स्वादु और सर्वशाकोंसे निन्दित है।

शिग्रुपत्रशाकगुणाः।

शिग्रुपत्रभवं शाकं रुच्यं वातकफापहम् ।
कटूष्णं दीपनं पथ्यं कृमिघ्नं पाचनं परम् ॥

अर्थ-सैंजिनेके पत्तोंका शाक-रुचिकारक, वातकफनाशक चरपरा, गरम, दीपन, पथ्य, कृमिनाशक और परम पाचक है ।

दद्रुघ्नपत्रशाकगुणाः ।

दद्रुघ्नपत्रं दोषघ्नमम्लं वातकफापहम् ।
कण्डूकासकृमिश्वासदद्रुकुष्ठप्रणुल्लघु ॥

अर्थ-परमारके पत्तोंका शाक-दोषनाशक, खट्टा, वातनाशक तथा कण्डू, खाँसी, कृमि, श्वास, दाद और कुष्ठनाशक और हलका है।

कासमर्दनामानि ।

कासमर्दोऽरिमर्दश्च कासारिः कर्कशस्तथा ।

अर्थ-कासमर्द, अरिमर्द, कासारि,: कर्कश (कालङ्कत, विमर्द, कासमर्दक, काल, कनक, जरण, दीपन, काशमर्द)।

संस्कृतभाषामें	कासमर्द (क)
हिन्दीभाषामें	कसौंदी ।
वंगभाषामें	कालकासुन्दा ।
मराठीभाषामें	रानकासाविंदा ।
गुजरातीभाषामें	कासोदरी जंगली तथा मोटो झाड ।
कर्णाटकीभाषामें	कासवदी फरहुल कसाद् ।
तैलङ्गीभाषामें	गुर्रपुताढचं ।
इंग्रेजीभाषामें	राउण्डपोंडेडकेश्या । Round pcdded cassia
लैटिन्भाषामें	केश्यासोफेरा । Cassia Sophera
	केश्याओकसिडेंटेलिस् । C. Occi dentails

अस्य पत्रगुणाः ।

कासमर्द्ददलं रुच्यं वृष्यं कासविषार्शनुत् ॥
मधुरं कफवातघ्नं पाचनं कण्ठशोधनम् ।
विशेषतः कासहरं पित्तघ्नं ग्राहकं लघु ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कसौंदीके पत्तोंका शाक-रुचिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, कासनाशक, विषघ्न, बवासीरको दूर करनेवाला, मधुर, कफवातविनाशक, पाचक, कण्ठशोधक, विशेषकरके खांसिको दूर करनेवाला, पित्तनाशक, ग्राही और हलका है ।

अन्यच्च ।

कासमर्दः सतिक्तोष्णो मधुरः कफवातनुत् ।
अजीर्णकासपित्तघ्नः पाचनः कण्ठशोधनः ॥

अर्थ-कसौंदी-कडवी, गरम, मधुर, कफवातनाशक, अजीर्णको हरनेवाली, खांसीको दूर करनेवाली, पित्तनाशक, पाचक और कण्ठशोधक है ।

अन्यच्च ।

कासमर्दोऽग्निदः स्वर्य्यः स्वादुस्तिक्तस्त्रिदोषजित् ॥

अर्थ-कसौंदीका शाक-अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्वादिष्ठ, कडवा और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण। कसौंदीके क्षुप प्रायः बाग और जंगलमें बहुत होतेहैं, पत्ते बराबर डंडीपर लगे होतेहैं, फूल पीला आता है, फली चपटी आतीहै

कौसुम्भशाकगुणाः ।

कौसुम्भशाकं मधुरं कटूष्णं विण्मूत्रदोषापहरं मदघ्नम् ॥
दृष्टिप्रसादं कुरुते विशेषाद्रुचिप्रदं दीप्तिकरं च वह्नेः ॥

अर्थ-कसूमके पत्तोंका शाक-मधुर, चरपरा, गरम, मल और मूत्रके दोषोंको हरनेवाला, मदनाशक, दृष्टिको बढानेवाला, रुचिकारक और अग्निको दीपन करे है ।

वर्षाभूशाकगुणाः ।

वर्षाभूवसुकौ पर्णकफमांद्यानिलापहौ ।
शाके रूक्षतरौ गुल्मप्लीहशूलापहारकौ ॥

अर्थ-पुनर्नवा और वसुकके पत्तोंका शाक-रूखा तथा कफ, मन्दाग्नि, गुल्म, प्लीहा और शूलको निर्मूल करे है ।

गोजिह्वाशाकगुणाः ।

गोजिह्वाकुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरी लघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गोभीका शाक-कोढ, प्रमेह, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर नाशक है तथा हलका है।

पटोलपत्रगुणाः ।

पटोलपत्रं पित्तघ्नं दीपनं पाचनं लघु ।
स्निग्धं वृष्यं तथोष्णं च ज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-परवलके पत्तोंका शाक-पित्तनाशक, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, गरम तथा ज्वर, खाँसी और कृमिरोगको दूर करे है।

गुडूचीपत्रशाकगुणाः ।

गुडूचीपत्रमाग्नेयं सर्वज्वरहरं लघु । कषायं कटु तिक्तं च स्वादुपाकं रसायनम् ॥ बल्यमुष्णं च संग्राहि हन्याद्दोषत्रयं तृषाम् । दाहप्रमेहवातास्रकामलाकुष्ठपाण्डुताः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका शाक- अग्निप्रदीपक, सर्व प्रकारके ज्वरको हरनेवाला, हलका, कसेला, चरपरा, कडवा, स्वादुपाकी, रसायन, बलवर्द्धक, गरम, मलरोधक, त्रिदोषनाशक, तृषानिवारक तथा दाह, प्रमेह, वातरक्त, कामला, कोढ और पाण्डुरोगको दूर करे है।

पर्पटशाकगुणाः ।

पर्पटो हन्ति पित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ।
संग्राही शीतलस्तिक्तो दाहनुद्वातलो लघुः ॥

अर्थ-पित्तपापडेका शाक-रक्तपित्त, ज्वर, तृषा, कफ, भ्रम और दाहको दूर करे है, ग्राही, शीतल, कडवा, बादी और हलका है।

सेहुण्डपत्रशाकगुणाः ।

सेहुण्डस्य दलं तीक्ष्णं दीपनं रोचनं हरेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणि च ॥

अर्थ-सेहुण्डके पत्तोंका शाक-तीक्ष्ण, दीपन, रोचक तथा आध्मान, आष्ठीलिका, गुल्म, शूल, सूजन और उदररोगको दूर करे है।

यवानीपत्रशाकगुणाः ।

यवानीशाकमाग्नेयं रुच्यं वातकफप्रणुत्

उष्णं कटु च तिक्तं च दीपनं गुल्मशूलनुत् ॥

अर्थ-अजवायनके पत्तोंका शाक-जठराग्निकारक, रुचिकारक, वातकफनाशक, गरम, चरपरा, कडवा, दीपन, गुल्म और शूलको दूर करे है ।

द्रोणपुष्पीपत्रशाकगुणाः ।

द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रूक्षं गुरु च पित्तकृत् ।
भेदकं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु ॥

अर्थ-गूमाके पत्तोंका शाक-स्वादिष्ट, रूखा, भारी, पित्तजनक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरका नाश करे है तथा चरपरा है ।

चणकपत्रशाकगुणाः ।

रुच्यं चणकशाकं स्याद्दुर्जरं कफवातकृत् ।
अम्लं विष्टम्भजनकं पित्तनुद्दन्तशोथनुत् ॥

अर्थ-चनेके पत्तोंका शाक-दुर्जर, कफवातकारक, खट्टा, विष्टम्भकारक, पित्तनाशक और दांतोंकी सूजनको दूर करे है ।

कलायपत्रशाकगुणाः ।

कलायशाकं भेदि स्याल्लघु तिक्तं त्रिदोषजित् ।

अर्थ-मटरके पत्तोंका शाक-दस्तावर, हलका, कडवा और त्रिदोषनाशक है ।

अथ पुष्पशाकम् ।

अगस्तिपुष्पगुणाः ।

अगस्तिकुसुमं शीतं चातुर्थिकनिवारणम् ।
नक्तांध्यनाशनं तिक्तं कषायं कटुपाकि च ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नं वातघ्नं मुनिभिर्मतम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगस्तियाके फूलोंका शाक-शीतल, चातुर्थिक अर्थात् चौथियाको दूर करनेवाला, रतोंधको हरनेवाला, कडवा, कसेला, कटुपाकी तथा पीनस,श्लेष्म पित्त और वातको विनाश करे है ।

जीवन्तीपुष्पशाकगुणाः ।

जीवन्तीपुष्पजं शाकं तुवरं मधुरं लघु ।

पथ्यं रुचिकरं वृष्यं कफपित्तविनाशनम् ॥

अर्थ-जैवन्तीके फूलोंका शाक-कसेला, मधुर, हलका, पथ्य, रुचिकारक, वृष्य और कफपित्तनाशक है।

कदलीपुष्पगुणाः।

कदल्याः कुसुमं स्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु।
वातपित्तहरं शीतं रक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-केलेके फूलोंका शाक-स्निग्ध, मधुर, कसेला, भारी, वातपित्तनाशक, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको क्षय करे है।

शिग्रुपुष्पगुणाः।

शिग्रोः पुष्पन्तु कटुकं तीक्ष्णोष्णं स्नायुशोथकृत्।
कृमिहृत्कफवातघ्नं विद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥
मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितं रक्तपित्तप्रसादनम्।

अर्थ-सौंजिनेके फूलोंका शाक-चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, स्नायुओंमें सूजन करनेवाला, कृमिनाशक, कफवातनाशक तथा विद्रधि, प्लीहा और गुल्मको दूर करे है। मधुशिग्रुके फलोंका शाक-नेत्रोंको हितकारी और रक्तपित्त प्रसादक है।

शाल्मलीपुष्पशाकगुणाः।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तु घृतसैन्धवसाधितम्। प्रदरं नाशयत्येव दुःसाध्यं च न संशयः॥ रसे पाके च मधुरं कषायं शीतलं गुरु। कफपित्तास्रजिद्ग्राहि वातलं च प्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-घी और सैंधानिमक डालकर बनायाहुआ शेमलके फूलोंका शाक दुःसाध्यप्रदरका निःसंदेह नाश करे है। रस और पाकमें मधुर, कसेला, शीतल, भारी, तथा कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, ग्राही और बादी है।

वरुणपुष्पगुणाः।

पुष्पं वरुणजं ग्राहि पित्तघ्नमामवातजित्।

अर्थ-बरनाके फूलोंका शाक-मलरोधक, पित्तनाशक और आमवातको दूर करे है।

मधूकपुष्पगुणाः।

मधूकपुष्पञ्च हृद्यं तर्पणं बृंहणं परम्।

अर्थ-महुवाके फूलोंका शाक-हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक और पुष्टिजनक है ।

कोविदारादिपुष्पशाकगुणाः ।

कोविदारकबुंदारशणशाल्मलिपुष्पकम् ।
ग्राहि शाकं प्रशस्तं च रक्तपित्ते विशेषतः ॥

अर्थ-कचनार, सफेद कचनार, सन और सेमलके फूलोंका शाक मलरोधक और रक्तपित्तरोगमें हितकारी है ।

अथ फलशाकम् ।

कूष्माण्डनामानि ।

कूष्माण्डं स्यात्पुष्पफलं पीतपुष्पं बृहत्फलम् ।

अर्थ-कूष्माण्ड, पुष्पफल, पीतपुष्प, बृहत्फल (घृणावास, तिमिष, ग्राम्यकर्कटी, कूष्माण्डक, कर्कारु, शिखिवर्द्धक, कुम्भाण्ड, कूष्माण्डी, कर्कोटिका, कुम्भाडी, बृहत्फला, सुफला, कुञ्जफला, नागपुष्पफला)

संस्कृतभाषामें	कूष्माण्ड ।
हिन्दीभाषामें	पेठा, कुम्हडा, कोहडा ।
बंगभाषामें	कुमडागाछ ।
मराठीभाषामें	कोहोळा ।
गुजरातीभाषाम	भुरुं कोलुं ।
कर्णाटकीभाषामें	दारकोहोळा ।
तैलङ्गभाषामें	पुल्लाहा, वर्डीका, गुम्माडि ।
उडी०	कखाडु, पानीकखारु ।
इंग्रेजीभाषामें	पंपकीन । Pumpkin
लैटिन्भाषामें	बेनीनकासा सेरिफेरा Benincassa Cerifera
फारसीभाषामें	भूराकुदु ।
अरबीभाषामें	महदेवा ।

अस्य फलगुणाः ।

मूत्राघातहरं प्रमेहशमनं कृच्छ्राश्मरीछेदनम ।

विण्मूत्रग्लपनं तृषार्तिशमनं जीर्णांगपुष्टिप्रदम् ॥
वृष्यं स्वादुतरं त्वरोचकहरं बल्यं च पित्तापहम् ।
कूष्माण्डप्रवरं वदन्ति भिषजो वल्लीफलानांपुनः॥(रा०नि०)

अर्थ-पेठा-मूत्राघात रोगको हरनेवाला,प्रमेहाको शान्ति करनेवाला,मूत्रकृच्छ्र और पथरीका नाश करनेवाला, मल और मूत्र तृषाकी पीडाको शान्ति करनेवाला, जीर्ण शरीरवालोंको पुष्टिदेनेवाला,वीर्य्यको बढानेवाला,स्वादिष्ठ,अरुचिको हरनेवाला, बलको करनेवाला,पित्तका नाशकरनेवाला औरसब बेलवाले फलोंमें उत्तम हैं।

अन्यच्च।

मूत्रावरोधशमनं बहुपित्तहारि कृच्छ्राश्मरीप्रशमनं विनिहन्ति पित्तम् ॥ पथ्यंसशोणितसमुल्बणपित्तरोगे तृष्णापहं त्रिषु समं तमुदाहरन्ति ॥ (सु०)

अर्थ-पेठा-मूत्रके रोधको दूर करनेवाला, अनेक प्रकारके पित्तोंको हरनेवाला, मूत्रकृच्छ्र और पथरीरोगको शान्ति करनेवाला, पित्त, नाशक तथा रक्तपित्तरोगमें हितकारी, तृषानिवारक है ।

अपिच।

कूष्माण्डं भेद्यभिष्यन्दि विष्टम्भि वातपित्तजित् । वस्तिशुद्धिकरं वृष्यं स्वादुपाकरसं गुरु ॥ विशेषात्पित्तनुद्बालमध्यं चैव कफापहम् ।पक्वं लघूष्णं सक्षारं दीपनं पाचनं तथा॥सर्वदोषहरं हृद्यं पथ्यं चेतोविकारनुत् ॥(शा० नि०)

अर्थ-पेठा-भेदक, अभिष्यन्दी, विष्टम्भकारक, वातपित्तनाशक, वस्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादुपाकी और भारी है । कच्चा पेठा-विशेष करके पित्तनाशक है । मध्यम अवस्थाका पेठा-कफनाशक है और पक्का पेठा-हलका,गरम,क्षारयुक्त,दीपन,पाचन, त्रिदोषनाशक हृदयको हितकारी, पथ्य और हृदय (मन) के रोगनाशक है ।

अन्यच्च

कूष्माण्डकफलं वृष्यं पुष्टिकृद्धातुवर्द्धकम्। वस्तिशुद्धिकरं बल्यमतिस्वादु च शीतलम् ॥ गुरु रूक्षं सारकं च हृद्यं कफकरं

मतम् । मूत्राघातं प्रमेहञ्च मूत्रकृच्छ्राश्मरीं तृषाम् ॥ अरोचकं वातपित्तं पित्तरक्तरुजं तथा । वातं रेतोविकारं च नाशयेदिति तन्मतम् ॥ तत्कोमलं चातिशीतं दोषकृत्पित्तहारकम् ॥ तन्मध्यमं कफकरं पक्वं किञ्चिच्च शीतलम् ॥ दीपकं च लघुस्वादु क्षारं वस्तेश्च शुद्धिदम् । सर्वदोषहरं पथ्यं पक्वमज्जा च माधुरी । वस्तिशुद्धिकरी वृष्या पित्तनाशकरी मता ॥ (नि० र०)

अर्थ-पेठा-वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वस्तिशोधक, बलकारक, अत्यन्त स्वादिष्ठ, शीतल, भारी रूखा, सारक, हृदयको हितकारी, कफकारक तथा मूत्राघात, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, अरुचि, वातपित्त, पित्त, रुधिरविकार, वात और शुक्रके विकारको हरे है, कच्चा पेठा-अत्यन्त शीतल, दोषकारक, पित्तकारक है। मध्यम अवस्थाका पेठा-कफकारक और पक्का पेठा-किञ्चित् शीतल, दीपन, हलका, स्वादिष्ठ, खार, वस्तिशोधक, त्रिदोषनाशक और पथ्य है। पक्के पेठेकी मूँग-मधुर, वस्तिशोधक, वृष्य और पित्तनाशक है।

विवरण । पेठा घरबाहर सब जगह बोयाजाता है और इसकी बेल चलती है यह फल बडा और इसका रंग नीला होता है जब यह फल पकजाता है तब इसके ऊपर सफेद रंगकी धूलसी जमजाती है।

पीतकूष्माण्डनामानि ।

कूष्माण्डं पीतपुष्पा च ग्राम्या पीतफला च सा ।
गुडयोगफला चैव पीतकूष्माण्ड इत्यपि ॥

अर्थ-कूष्माण्ड, पीतपुष्पा, ग्राम्या, पीतफला, गुडयोगफला, पीतकूष्माण्ड ।

संस्कृतभाषामें	(डंगरी) पीतकूष्माण्ड ।
हिन्दीमें	लालपेठा, गोलकद्दू, भिलयाकद्दू, काशीफल, सफुरियाकुम्मार ।
वंगभाषामें	विलातिकुमडा।
मराठीभाषामें	तांबडा भोंपळा ।
गुजरातीभाषामें	पतकोलु, शाकरकोलु ।
कर्णाटकीभाषामें	डंगर ।
तैलिंगीभाषामें	तियागुबाडिकाया।

इंग्रेजीभाषामें	दिगोर्ड । The gourd
लैटिन्भाषामें	कुकुर्बिटा मेसिमा । Cucurpita Mascima
फारसीभाषामें	बादरंग ।

पीतकूष्माण्डगुणाः ।

अपरं पीतकूष्माण्डं गुरु पित्तकरं परम् ।
अग्निमान्द्यकरं स्वादु श्लेष्मघ्नं वातकोपनम् ॥ (आ०सं०)

अर्थ-पीतकूष्मांड अर्थात् भिलया, लालकद्दू-भारी, पित्तजनक, मन्दाग्निकारक, स्वादिष्ठ, कफनाशक और वातको कुपित करे है ।

विवरण-लाल कद्दू अर्थात् भिलयाकद्दू सर्वत्र बोया जाताहै, इसकी पेठेकी माफिक बेल चलतीहै, पत्ते बडे बडे, फूल पीला और फल बहुत बडे बडे लगतेहैं ।

कूष्माण्डीनामगुणाश्च ।

कूष्माण्डी तु भृशं लघ्वी कर्कारुरपि कीर्तिता ।
कर्कारुर्ग्राहिणी शीता रक्तपित्तहरा गुरुः ॥
पक्वा तिक्ताग्निजननी सक्षारा कफवातनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-कूष्माण्डी (कोहडी) हलकी और इसको कर्कारु भी कहतेहैं, कर्कारु-मलरोधक, शीतल, रक्तपित्तनाशक और भारी है, अग्निदीपक, क्षारयुक्त और कफवातनाशक है ।

अलाबुनामानि ।

अलाबुः कथिता तुम्बी द्विधा दीर्घा च वर्त्तुला ।

अर्थ-अलाबू, तुम्बी (अलाबु, तुम्ब, तुम्बक, तुम्बा, पिण्डफला, महाफला, आलाबू, एलाबु, लाबु, लाबुका, तुम्बिका, तुम्बी, अलीबु, तुम्बक) यह दो प्रकारका होताहै एक लम्बा और दूसरा गोल ।

संस्कृतभाषामें	अलाबु, तुम्बी ।
हिन्दीभाषामें	कद्दू, तोम्बी, लम्बा, लौआ, ग्रहालौआ, रामतोरई ।
वंगभाषामें	लाउ, कदु ।
मराठीभाषामें	दुध्या भोंपाळ ।
गुजरातीभाषामें	दुधीयुं, दुधलुं ।
कर्णाटकीभाषामें	कंडुवलकायि ।

तैलिङ्गीभाषामें	तीयातुखडीकाया।
इंग्रेजीभाषामें	व्हाइटगुर्ड। White gourd
लैटिन्भाषामें	कुकुर्बिटा लाजिनेरिया। Cucurbita lagenaria
फारसीभाषामें	कुट्टाशिरिन् कुट्टुएदरोज।
अरबभिाषामें	युक्तिनेहुलुकरा।

अस्या गुणाः।

मिष्टतुम्बीफलं हृद्यं पित्तश्लेष्मापहं गुरु।
वृष्यं रुचिकरं प्रोक्तं धातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तोम्बी कद्दू हृदयको हितकारी, पित्तनाशक,भारी, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक और धातु तथा पुष्टिवर्द्धक है।

अन्यच्च।

तुम्बी सुमधुरा स्निग्धा पित्तघ्नी गर्भपोषकृत्।
वृष्या वातप्रदा चैव बलपुष्टिविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तोम्बी-मधुर, स्निग्ध, पित्तनाशक, गर्भपोषक, वृष्य, वातजनक तथा बल और पुष्टिकारक है।

अपिच।

अलाबूर्भेदनी गुर्वी पित्तघ्नी कफला हिमा।

अर्थ-कद्दू रामतोरई-भेदक,भारी, पित्तनाशक कफकारक और शीतल है।

अन्यच्च।

तुम्बी तु मधुरा स्निग्धा गर्भपोषणकारिणी। वृष्या वातप्रदा बल्या पौष्टिका रुच्यशीतला॥ मलस्तम्भकरी रूक्षा भेदका गुरुपित्तनुत्। काण्डमस्याश्च मधुरं वातलं कफकारकम्॥ स्निग्धं शीतं भेदकं च पित्तनाशकरं जगुः। (नि० र०)

अर्थ-तोम्बी-मधुर, स्निग्ध, गर्भको पोषण करनेवाली, वृष्य, वातजनक, बलकारक,पुष्टिजनक,रुचिकारक,शीतल, मलस्तम्भक, रूखी, भेदक और पित्तनाशक है। इसकी बेलके कांड-मधुर,बादी, कफकारक, स्निग्ध, शीतल, भेदक और पित्तनाशक हैं।

कटुतुम्बीनामानि।

कटुतुम्बी पिण्डफला राजपुत्री नृपात्मजा।

फलिनी तिक्ततुम्बी च तिक्तका कटु तिक्तका ॥

अर्थ-कटुतुम्बी, पिण्डफला, राजपुत्री, नृपात्मजा, फलिनी, तिक्ततुम्बी, तिक्तका, कटुतिक्तका (लम्बा, इक्ष्वाकु, कटुकालाबु, कटुफला, तुम्बिनी, वृहत्फला, दंतबीजा, तुम्बिका, तुम्बी, महाफला, तुम्बीका, क्षत्रियवरा, कटुतुम्बिनी)।

संस्कृतभाषामें	कटुतुम्बी ।
हिंदीभाषामें	तितलोकी, कडवीतोम्बी ।
वंगभाषामें	तितलाउ ।
मराठीभाषामें	कडू भोंपळा
गुजरातीभाषामें	कडवी तुंबडी ।
कर्णाटकीभाषामें	कहीसोरे ।
तोलङ्गाभाषामें	चतिआनव ।
इंग्रजीभाषामें	बोटलगुर्ड । Bottle gourd
लैटिन्भाषामें	लेजीनेरिया वलगेरिस । Legenaria Vulgaris क्युकर्युर्बिटालेजिनेरिया । Cucurbita Lagenaria
फारसीभाषामें	कदुदुतलख ।
अरबीभाषाम	करउल्मुर ।

अस्या गुणाः ।

कटुतुम्बी कटुस्तीक्ष्णा वान्तिकृच्छ्वासवातजित्
कासघ्नी शोधनी शोफव्रणशूलविषापहा ॥ (रा॰ नि॰)

अर्थ-कडवी तोम्बी-कटु, तीक्ष्ण, वान्तिजनक, श्वासको दूर करनेवाली, वातनाशक, कासनिवारक, शोधक तथा सूजन, व्रण, शूल और विषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कटुतुम्बी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ।
तिक्ता कटुर्विपाके च वातपित्तज्वरान्तकृत् ॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-कडवी तोम्बी-शीतल, हृदयको हितकारी, कडवी, पचनेमें कटु तथा पित्त, खांसी, विष और वातपित्तज्वरको दूर करेहै ।

अस्या पर्णगुणाः ।

पर्णं पाके तु मधुरं मूत्रशोधनमुत्तमम् ।

पित्तशान्तिकरं प्रोक्तमृषिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अर्थ-कडवीतोम्बीके पत्ते-पाकमें मधुर,मूत्रशोधक और पित्तको शान्तिकरैं हैं ।

कासश्वासविषच्छर्दिज्वरार्ते कफकर्षिते ।
प्रताम्यति नरे चैव वमनार्थं तदिष्यते ॥

अर्थ-कडवीतोम्बी-खाँसी,श्वास,विष,वमन और जो मनुष्य ज्वरसे तथा कफसे पीडित हैं उनके लिये इसकी वमन देनी चाहिये।

विवरण-कडवीतोम्बी और रामतोरईकी बेल एकसी होती है, फूलभी दोनोंपै सफेद आतेहैं, फलभी एकसे लगते हैं ।

कर्कटीनामानि।

एर्वारुः कर्कटी प्रोक्ता कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥

अर्थ-एर्वारु,कर्कटी (लोमशी, व्यालपत्रा, बृहत्फला, व्यालपत्री, लोमशा,स्थूला,तोयफला,हस्तिदन्तफला,कर्कटी,छर्दापनिका, पीनसा, मूत्रला, मूत्रफला, त्रपुषा, हस्तिपर्णी, लोमशकाण्डा, बहुकन्दा, चिर्भटी,कर्कटाक्ष,शान्तनु,वालुङ्की, त्रपुषी,इर्वारु, उर्वारु ईर्वारु)।

संस्कृतभाषामें	कर्कटी ।
हिन्दीभाषामें	ककडी ।
बंगभाषामें	काँकुड, बडकाँकड ।
मराठीभाषामें	कांकडी, वाळुक-कांकडी ।
गुजरातीभाषामें	कांकडी।
कर्णाटकीभाषामें	क्येयसौत ।
तैलिङ्गीभाषामें	दोसकाया ।
इंग्रेजभाषामें	ककंबर । Cucumber
लैटिनभाषामें	क्युक्युमिस् सेटिवम् । Cucunis Sativus
फारसीभाषामें	ख्याटजाव+दरंज ख्यारदराज ।
अरबीभाषामें	किस्साकदम् ।

अस्या गुणाः।

कर्कटी शीतला रूक्षा ग्राहिणी मधुरा गुरुः ।
रुच्या पित्तहरा सामा पक्का तृष्णाग्निपित्तकृत्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कच्ची ककडी-शीतल, रूखी, मलरोधक,मधुर,भारी, रुचिकारक और पित्तको दूर करे है । पक्की ककडी-गरम, अग्निवर्द्धक और पित्तकारक है ।

एर्वारुकं पित्तहरं सुशीतलं मूत्रामयघ्नं मधुरं रुचिप्रदम् । सन्ता-
पमूर्च्छापहरञ्च तृप्तिदं वातप्रकोपाय घनं तु सेवितम् (रा.नि.)

अर्थ-ककडी-पित्तनाशक, शीतल, मूत्ररोगनाशक, मधुर, रुचिकारक सन्ताप और मूर्च्छाको दूर करनेवाली, तृप्तिजनक और अत्यन्त सेवन करनेसे वातको कुपित करे है ।

अन्यच्च ।

कर्कट्यास्तु फलं पक्कं छर्दितृष्णाक्लमार्त्तिनुत् ॥

अर्थ-पक्की ककडी-वमन, तृषा और क्लान्तिको दूर करे है ।

अपिच ।

एर्वारुकं तु मधुरं रुच्यं रूक्षं च शीतलम् । तृप्तिकृद्ग्राहकं प्रोक्त-
मत्यन्तवातकारकम् ॥ गुरुवातज्वरकफकारकं तापहारकम् ।
पित्तं मूर्च्छां मूत्रकृच्छ्रं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ कोमलैर्वारुकं
तिक्तं लघु स्वाद्वतिमूत्रलम् । शीतं रूक्षं रक्तपितमूत्रकृच्छ्रा-
स्रदोषजित् ॥ तत्पक्कं पित्तलं चाग्निदीपनं च तृषापहम् ।
उष्णं त्रिदोषशमनं क्लमदाहहरं मतम् ॥ गृहे जीर्णं तु तज्ज्ञेयमु-
ष्णं पित्तकरं मतम् । कफवायोर्नाशकरं प्रोक्तमायुर्विदैर्जनैः ॥

अर्थ-ककडी-मधुर,रुचिकारक,रूखी,शीतल,तृप्तिकारक,मलरोधक,अत्यन्त बादी,वातज्वरकारक,कफकारक,तापनाशक तथा पित्त मूर्च्छा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करे है। कोमल ककडी-हलकी, कडवी, स्वादु, अत्यन्त मूत्रकारक, शीतल, रूखी है तथा रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, और रुधिरके विकारोंको दूर करे है,पक्की ककडी-पित्तजनक, अग्निप्रदीपक, तृषानिवारक,गरम,त्रिदोषनाशक,क्लमहारक, दाहनिवारक है और जो घरमें रक्खी हुई पकजावे ऐसी ककडी-गरम, पित्तकारक तथा कफ और वातको नष्ट करेहै ।

कर्कटी मधुरा रुच्या शीता लघ्वी च मूत्रला। त्वचा या कटुका

तिक्ता पाचकाग्निप्रदीपनी ॥ अवृष्या ग्राहिणी प्रोक्ता मूत्ररोधाश्मरीहरा । मूत्रकृच्छ्रं वमिं दाहं श्रमं चैव विनाशयेत् ॥ सा पक्का रक्तदोषस्य कारिण्युष्मा बलप्रदा ॥

अर्थ-दूसरे प्रकारकी ककडी-मधुर, शीतल, रुचिजनक, हलकी, मूत्रजनक, इसकी त्वचा-कटु, तिक्त, पाचक, अग्निप्रदीपक, अवृष्य, ग्राहिणी, मूत्ररोध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, वमन दाह और श्रमका नाश करे है । वही पक्की ककडी-रुधिरविकारकारक, गरम, और बलकारक है ।

तृतीया कर्टटी रुच्या मधुरा वातकारिणी ।
शीता मूत्रप्रदा गुर्वी कफकृद्दाहनाशिनी ॥
वमिं पित्तं भ्रमं मूत्रकृच्छ्रं मूत्राश्मरीं हरेत् ।

अर्थ-तीसरेप्रकारकी ककडी-रुचिकारक, मधुर, वातवर्द्धक, शीतल, मूत्रजनक, भारी, कफकारी, दाहनाशक तथा वमन, पित्त, भ्रम, मूत्रकृच्छ्र, मूत्ररोध, पथरीको दूर करे है ।

अरण्यकर्कटीगुणाः ।

अरण्यकर्कटी चोष्णा रसे तिक्ता च भेदिका ।
पाके कट्वी कफकृमिपित्तकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ-वनककडी-गरम, तिक्तरसान्वित, भेदक, पाकमें कटु तथा कफ, कृमि, पित्त, कण्डु और ज्वरको दूर करनेवाली है ।

तिक्तकर्कटीगुणाः ।

तिक्तकर्कटिका प्रोक्ता रसे पाके कटुःस्मृता ।
तिक्ता मूत्रकरी वान्तिकारिका मूत्रकृच्छ्रहा ।
आध्मानवातं चाष्ठीलां नाशयेदिति कीर्तिता ॥

अर्थ-कडवीककडी-रस और पाकमें कटु, तिक्त, मूत्रजनक, वमनकारक, मूत्रकृच्छ्रहारक तथा आध्मान, और अष्ठीलाको दूर करेहै।

चीनाकर्कटीगुणाः ।

चीनाकर्कटिका शीता मधुरा रुचिदा गुरुः ।
कफवाततृप्तिकरी हृद्या पित्तरुजापहा ॥
दाहशोषहरा प्रोक्ता मुनिभिश्चरकादिभिः ।

अर्थ-चिनाककडी-शीतल, मधुर, रुचिकारक, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, पित्तरोगनाशक तथा दाह और शोषको हरनेवाली है।

सर्व कर्कटीगुणाः ।

सर्वा कर्कटिका गुर्वी दुर्जरा वातरक्तदा।अग्निमांद्यकरीप्रोक्ता ऋषिभिःशास्त्रकोविदैः ॥ वर्षाशरदि चोत्पन्ना नो हिता न च भक्षयेत्। हेमन्तजा रुचिकरा पित्तहा भक्षिता हिता ॥ सैवार्धपक्वा संप्रोक्ता पीनसोत्पादनी मता।सम्यक्पक्वा च मधुराकफनाशकरी मता ॥ (नि० र०)

अर्थ-सर्वप्रकारकी ककडी-भारी,कठिनतासे पचनेवाली,वातरक्तको करनेवाली और मंदाग्निको करनेवाली है। वर्षा और शरद ऋतुमें उत्पन्न होनेवाली ककडी हितकारक नहीं है और न भक्षण करनी चाहिये। हेमन्त ऋतुमें होनेवाली ककडी-रुचिकारक,पित्तनाशक भक्षणकरनेयोग्य और हितकारी है, अधपकी ककडी-पीनसको उत्पन्नकरनेवाली है।अच्छे प्रकारसे पकीहुई ककडी-मधुर और कफनाशक है।

विवरण-ककडीकी अनेक जाति हैंकिन्तु सर्वप्रकारकी ककडियों में ग्रीष्म ऋतुकी ककडी उत्तम है, ककडी सर्वत्र होतीहैं।

त्रपुषनामानि

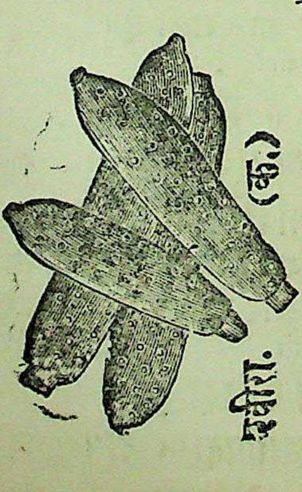

खीरा. (छो.)

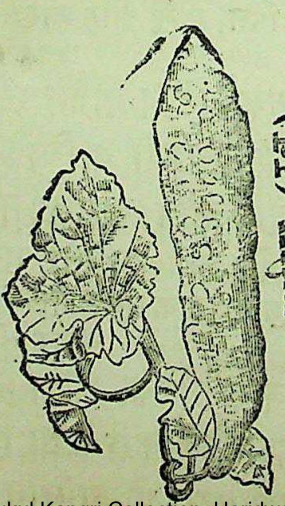

खीरा. (ब.)

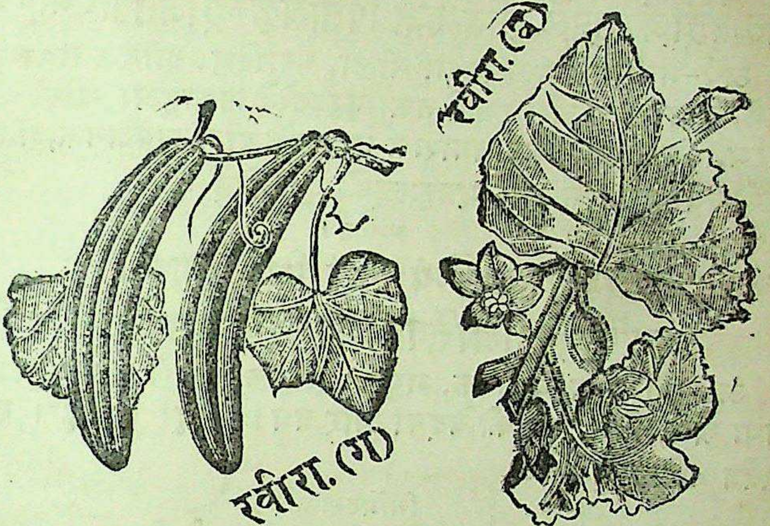

त्रपुषं कण्टकिफलं सुधावासं सुशीतलम् ।

अर्थ–त्रपुष, कण्टकिफल, सुधावास, सुशीतल(पीतपुष्पा, काण्डालु, कण्टालु, त्रपुकर्कटी, बहुफला, कण्टाकिलता, कोषफला, तुन्दिलफला, सुधावासा)।

संस्कृतभाषामें	त्रपुष।
हिंदीभाषामें	खीरा, क्षीरा, बालमखीरा।
वंगभाषामें	शँशा।
मराठीभाषामें	तवसें, कांकडी, खिरा।
गुजरातीभाषामें	तांसालि।
कर्णाटकीभाषामें	तसेंयकायि।
तैलिंगीभाषामें	दोजकइअ।
तामिलीभाषामें	महेवेहरिकोङ्कणो।
इंग्रेजीभाषामें	The Cocumber
लैटिन्‌भाषामें	(Cucumis salivus S. N. C. Hardwichii)
फारसीभाषामें	शियारखुर्द।

त्रपुषगुणाः।

त्रपुषं लघु नीलं च नवं तृट्क्लमदाहजित्।स्वादुपित्तापहं शीतं रक्तपित्तहरं परम् ॥ तत्पक्वमम्लमुष्णं स्यात्पित्तलं कफवात

नुत्।तद्बीजं मूत्रलं शीतं रूक्षं पित्तास्रकृच्छ्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नवीनखीरा-हलका, नीला, स्वादिष्ठ, शीतल तथा तृषा, क्लम, दाह, पित्त और रक्तपित्तको दूर करेहै।पकाहुआ खीरा-खट्टा, गरम, पित्तकारक, कफवातनाशक है। इसके बीज-मूत्रजनक, शीतल, रूखे तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्रको दूर करेहैं।

अन्यच्च।

स्यात्त्रपुषीफलं रुच्यं मधुरं शिशिरं गुरु।
श्रमपित्तविदाहार्त्तिवान्तिहृद्बहुमूत्रदम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-खीरा-रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, बहुमूत्रजनक तथा श्रम, पित्त, दाहकी वेदना और वमनको दूर करेहै। खीरा सर्वत्र प्रसिद्ध है।

चिर्भिटनामानि।

चिर्भिटं धेनुदुग्धं च तथा गोरक्षकर्कटी।

अर्थ-चिर्भिट, धेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी(सुचित्रा, चित्रफला, क्षेत्रचिर्भिटा, पाण्डुफला, पथ्या, रोचनफला, चिर्भिटिका, कर्कचिर्भिटा)।

मृगेर्वारुनामानि।

मृगाक्षी श्वेतपुष्पा च मृगेर्वारुमृगादनी। चित्रवल्ली बहुफला कपिलाक्षी मृगेक्षणा॥ चित्रा चित्रफला पथ्या विचित्रा मृगचिर्भिटा।मरुजा कुम्भसी देवी ज्ञेया चैकोनविंशतिः॥

अर्थ-मृगाक्षी, श्वेतपुष्पा, मृगेर्वारु, मृगादनी, चित्रवल्ली, बहुफला, कपिलाक्षी, मृगेक्षणा, चित्रा, चित्रफला, पथ्या, विचित्रा, मृगचिर्भिटा, मरुजा, कुम्भसी, देवी (कटुफला, लघुचिर्भिटा)।

संस्कृतभाषामें	चिर्भिट (टा) मृगेर्वारु।
हिन्दीभाषामें	कचरिया, गुरुभोहुँ-भकुर, सेंध, फूट, गोरखककडी।
वंगभाषामें	काकुड, गोमुक, फुटी।
मराठीभाषामें	चिबूड, शेंदाड, टकमकें।
गुजरातीभाषामें	चिभडां, राजगरां, कोठीबां।
तैलङ्गीभाषामें	वुडरंगपंडु।
इंग्रेजीभाषामें	पुबिसेंटक्युकंवर। Pubescent Cucumber
लैटिन्भाषामें	क्युक्युमिस् ब्युबीसेन्स। Cucumis Pubescens
क्यु०	ट्राइगोनस्। C. Trigonus

चिर्भिटगुणाः ।

चिर्भिटं मधुरं रूक्षं गुरुपित्तकफापहम् ।
अनुष्णं ग्राहि विष्टम्भि पक्कमुष्णञ्च पित्तलम् ॥

अर्थ-कचरिया, गुरुभिदु-मधुर, रूखी, भारी, पित्तकफनाशक, गरम नहीं, ग्राही और विष्टम्भकारक है । पकी कचरिया-गरम और पित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

बाल्ये तिक्ता चिर्भटा किञ्चिदम्ला गौल्योपेता दीपनी सा च पाके। शुष्का रूक्षा श्लेष्मवातारुचिघ्नी जाडयघ्नी सा रोचनी दीपनी च ॥

अर्थ-कच्ची कचरिया-कडवी, किञ्चित् अम्ल, गोल्य और पाकमें दीपन है । सूखी कचरिया-रूखी, कफनाशक, वातविनाशक, अरुचिनिवारक, जडतानाशक रोचन और दीपन है ।

अन्यच्च ।

चिर्भटः शीतलो ग्राही गुरुश्च मधुरः स्मृतः । मलस्तम्भकरः पितमूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः॥ दाहं प्रमेह वातं च शोषं चैव विनाशयेत् । तत्कोमलफलं वातकोपनं कफपित्तनुत् ॥ तत्पक्वं पित्तलं चोष्णं मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-कचरिया-शीतल, मलरोधक, भारी, मधुर, मलस्तम्भक तथा पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, वात और शोषका नाश करे है । कच्ची कचरिया-वातको कुपित करनेवाली, कफपित्तनाशक है । पकी कचरिया पित्तकारक और गरम है ।

अपिच ।

समस्तं चिर्भटं वातकफकृत्स्वादु शीतलम् ॥

अर्थ-सर्वप्रकारकी कचरिया- वातकफकारक, स्वादिष्ठ और शीतल है ।

चिर्भटपुष्पगुणाः ।

पुष्पञ्च चिर्भटस्यैव दोषत्रयकरं स्मृतम् ।
अपक्कं जीर्णकफकृत्पक्वं किञ्चिद्विशिष्यते (हा०सं०)

अर्थ-कचरियाके फूल त्रिदोषकारक हैं, कच्चा अजीर्ण और कफ करेहै और पका कुछेक विशेष होजाता है।

मृगाक्षीगुणाः।

मृगाक्षी कटुका तिक्ता पाकेम्ला वातनाशिनी।
पित्तकृत्पीनसहरा दीपनी रुचिकृत्परा। (रा०नि०)

अर्थ-सेंध-चरपरी, कडवी, पचनेमें खट्टी, वातनाशक, पित्तनाशक पीनसरोगको दूरकरनेवाली, दीपन और रुचिको करनेवाली है।

तिक्तं सुतीव्रं मधुरं च साम्लं वातापहं पित्तविनाशनं च।
श्लेष्माकरं रोचनपाचनं च कोठीवटं चाग्निकरं नराणाम्॥

अर्थ-सेंध-कडवी, तीव्र, मधुर, खट्टी, वातविनाशक, पित्तनाशक, कफकारक, रोचन, पाचक और मनुष्योंके अग्निको दीपन करेहै।

विवरण। चिर्भटा, फूट, सेंध, कचरिया इन सबकी बेल ककडी तथा खर्बूजेकी समान होती है।

खर्बूजनामानि।

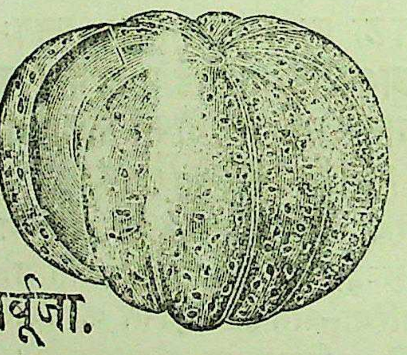

खर्बूजा.

दशांगुलं तु खर्बूजं कथ्यंते तद्गुणा अथ॥

अर्थ-दशांगुल, खर्बूज (फलराज, अमृताह्व, षड्भुजा, मधुफला, षड्रेखा, वृत्तकर्कटी, तिक्ता, तिक्तफला, मधुपाका वृत्तर्वारु षण्मुखा।

संस्कृतभाषामें	दशांगुल।
हिन्दीभाषामें	खरबूजा।
वंगभाषामें	खरमुज, खरबुजा।
मराठीभाषामें	खर्बूज।

गुजरातीभाषामें	लालिया शकरटेटी ।
कर्णाटकीभाषामें	षढजसोते ।
तैलिंगीभाषामें	खरबूज ।
इंग्रेजभाषामें	मेलन् Melon
लैटिन्भाषामें	कुक्युमिस् मेलो । Cucumis Melo
फारसीभाषामें	खुरपुजा ।
अरबीभाषामें	बित्तिख ।

अस्य गुणाः ।

खर्बूजं मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु । स्निग्धं स्वादुतरं शीतं वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥ तेषु यच्चाम्लमधुरं सक्षारञ्च रसाद्भवेत् । रक्तपित्तकरं तत्तु मूत्रकृच्छ्रकरं परम् ।

अर्थ–खर्बूजा–मूत्रकारक- बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, भारी, स्निग्ध, स्वादुतर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त और वातको नष्ट करे है । इसमें जो खरबूजा रसमें खट्टा, मीठा और खारी होता है वह रक्तपित्तको करनेवाला और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला होता है ।

अन्यच्च ।

तिक्तं बाल्ये तदनु मधुरं किञ्चिदम्लं च पाके निष्पक्वं चेत्तदमृतसमं तर्पणं पुष्टिदायि । वृष्यं दाहश्रमविशमनं मूत्रवृद्धिं च धत्ते पित्तोन्मादापहरकफदं षड्भुजं वीर्य्यकारि ॥ (रा० नि०)

अर्थ–कच्चा खर्बूजा–कडवा, ईषत् मधुर और पाकमें किंचित खट्टा है । पक्का खर्बूजा–अमृतकी समान तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, वृष्य, दाहको दूर करनेवाला, श्रमको हरनेवाला, मूत्रवर्द्धक तथा पित्त और उन्मादका नाश करनेवाला, कफकारक और वीर्य्यजनक है ।

अन्यच्च ।

खर्बुजं फलराजमुत्तमगुणं पक्वं रसं बृंहणं बल्यं स्वादुतरं हिमं गुरु महत्पित्तानिलार्त्तिं हरेत् । स्निग्धं मूत्रलसौदरामयहरं सौगन्धिमत्यादरान्नीतं पाणियुगे दशांगुलमतो नाम्ना कृतं विष्णुना ॥ (सुषेण)

अर्थ-फलोंमें राजा, उत्तम हैं गुण जिसके ऐसा पक्का खरबूजा पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, स्वादुतर, शीतल, भारी, पित्त और वातकी वेदनाको शान्ति करनेवाला, स्निग्ध, मूत्रजनक, उदररोगको दूर करनेवाला और अत्यन्त सुगंधिवाला है। विष्णुने इसको अत्यन्त आदरसे दोनों हाथोंमें लिया इसकारण इसका नाम दशांगुल है।

अपिच।

पक्वन्तु खर्बूजं तृप्तिकारकं पौष्टिकं मतम्। कफकृन्मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु ॥ स्निग्धं सुस्वादु शीतं च वृष्यं दाहश्रमापहम्। वातं पित्तं च उन्मादं नाशयेदिति तन्मतम्॥ तत्कोमलंमधुस्तिक्तं किञ्चिदम्लं च तन्मतम्। तत्तु वृद्धं च मधुरं रसे क्षारञ्च अम्लकम् ॥ रक्तपित्तं मूत्रकृच्छ्रं करोतीति बुधा जगुः।(रत्ना०)

अर्थ-पक्का खरबूजा-तृप्तिकारक, पुष्टिजनक, कफकारक, मूत्रवर्द्धक, बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, स्निग्ध, सुस्वादु, शीतल, वृष्य तथा दाह, श्रम, वात, पित्त और उन्मादरोगको हरनेवाला है। कच्चा खरबूजा मधुर, कडवा और किंचित् खट्टा है। पुराना खरबूजा-मधुर, क्षाररसान्वित, अम्ल तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला है। खरबूजा कईप्रकारका होता है। किन्तु ग्रीष्म ऋतुमें उत्पन्न होनेवाला सर्वमें श्रेष्ठ होता है।

कालिङ्गनामानि।

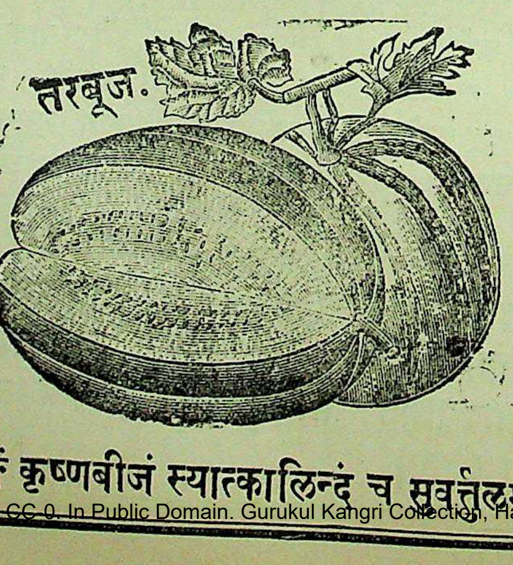

कालिङ्गं कृष्णबीजं स्यात्कालिन्दं च सुवर्त्तलम् ।

अर्थ-कालिंग, कृष्णबीज, कालिंद, सुवर्त्तुल (मांसफल, चित्रफल, चित्रवल्लिका, चित्र, मधुरफल, वृत्तफल, घृणाफल, मांसल, अल्पप्रमाणक, सुखाश, राजातिनिष, लतापनस, नाटाम्र, मेट, शीर्णवृन्त, बृहद्गोल, सुखवास, सेट, गोडुम्ब, रक्तबीज, चेलान, मूत्रल)

संस्कृतभाषामें	कालिङ्ग, शीर्णवृन्त ।
हिन्दीभाषामें	तर्बूज, सरदा तरबूज, लाल और कालेबीजोंका, कालिंग ।
वंगभाषामें	तरमुज, चेलना ।
मराठीभाषामें	कलिंगड ।
गुजरातीभाषामें	तडबूच, कालिंगडुं ।
कर्णाटकीभाषामें	कौंडे ।
तैलङ्गीभाषामें	तरबुजपुच्चकाया ।
औत्क०	तरपुज ।
इंग्रेजीभाषामें	वाटरमेलन् । Water Melon
लैटिन्भाषामें	साईट्रुलस् वलगेरीस् । Citrullus Vulgaris
फारसीभाषामें	हिंदवाना ।
अरबीभाषामें	बत्तिखहिंदी ।

कालिङ्गगुणाः ।

कालिङ्गं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलं गुरु ।
पक्कन्तु सोष्णं सक्षारं पित्तलं कफवातकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चा तरबूज-मलरोधक, नेत्रपित्त और शुक्रको हरनेवाला, शीतल और भारी है, पक्का तरबूज-गरम, क्षारयुक्त, पित्तजनक और कफवातनाशक है ।

अपिच ।

कालिंगो मधुरः शीतः पित्तदाहश्रमापहः ।
वृष्यः सन्तर्पणो बल्यो वीर्य्यपुष्टिविवर्द्धनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-तरबूज-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनिवारक, श्रमनाशक, वृष्य, तृप्तिकारक, बलवर्द्धक तथा वीर्य्य और पुष्टिवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

शीर्णवृन्तं कफकरं सक्षारं मधुरं लघु ।

अर्थ-तरबूज-कफकारक, क्षारयुक्त, मधुर और हलका है ।

अपिच।

चेलानं गुरु विष्टम्भि मधुरं वातपित्तजित्। (राजवल्लभ)

अर्थ-दूसरे प्रकारका तरबूज-भारी, विष्टम्भकारक, मधुर और वातपित्तनाशक है।

अन्यच्च

कालिंगं शीतलं बल्यं मधुरं तृप्तिकारकम्। गुरु पुष्टिकरं ज्ञेयं मलस्तम्भकरं तथा॥ कफकृद्दृष्टिपित्तघ्नं शुक्रधातोस्तु नाशकम्। तत्पक्कं पित्तलं क्षारं चोष्णं वातकफप्रणुत्॥ "मज्जास्तु मधुरो बल्यो रुचिकृद्धातुवर्द्धकः"। पर्णं तिक्तं रक्तवृद्धिकरं च प्रकाशितम्॥ (नि०र०)

अर्थ-कच्चा तरबूज-शीतल, बलकारक, मधुर, तृप्तिकारक, भारी, पुष्टिकारक, मलस्तम्भक, कफकारक तथा दृष्टि, पित्त, शुक्र और धातुका नाश करेहै। पक्का तरबूज-पित्तजनक, क्षारयुक्त, गरम और वातकफनाशक है। तरबूजकी मींग-मधुर, बलकारक, रुचिजनक और धातुवर्द्धक है। इसके पत्ते-कडवे और रक्तवर्द्धक हैं।

विवरण। तरबूजके खेत प्रायः नदीके निकट और रेतीमें होते हैं तरबूज दो प्रकारका होता है एक काले बीजोंका दूसरा लाल बीजोंका, काले बीजोंके तरबूजका गूदा गुलाबी और पीलेरंगका होता है और लाल बीजोंके तरबूजका गूदा लाल, गुलाबी और पील आदि सब रंगका होता है इस देशमें तरबूजको पौष और माघके महीनेमें बोते हैं, फाल्गुन और चैत्रमें क्षुप होकर पुष्प आजाते हैं और वैशाख ज्येष्ठमें फल लगते है। दूसरे प्रकारके अर्थात् काले बीजोंके तरबूज कार्त्तिक मासमें होते हैं। किसी २ देशमें तरबूज सदैव होते हैं और तोलमें १ मनपर्य्यन्त होता है।

कोशतकीनामानि।

कोशातकी स्वादुफला सुपुष्पा कर्कोटकी स्यादपि पीतपुष्पा।
धाराफला दीर्घफला सुकोशा धामार्गवः स्यान्नवसंज्ञकोऽयम्॥

अर्थ-कोशकी, स्वादुफला, सुपुष्पा, कर्कोटकी, पीतपुष्पा, धाराफला, दीर्घफला, सुकोषा; धामार्गव (कृतवेधना, जालिनी, राजकोशातकी, राजिमत्फला)

संस्कृतभाषामें	कोशातकी, धाराफला ।	
हिन्दीभाषामें	तोरई ।	
वंगभाषामें	घोषलता ।	
मराठीभाषामें	शिराळी, दोडकी ।	
गुजरातीभाषामें	तुरीयां थिसोडा ।	
कर्णाटकीभाषामें	धारवितरोई ।	
तैलिङ्गीभाषामें	वीरकाया ।	
इंग्रेजीभाषामें	एक्युटेंगलेडककम्बर ।	Acutengled Cucumber
लैटिनभाषामें	ल्यफाएक्युटेंगुला ।	Luffa acutengula

अस्या गुणाः ।

धाराकोशातकी स्निग्धा मधुरा कफपित्तनुत् ।
ईषद्वातकरी पथ्या रुचिकृद्बलवीर्य्यदा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तोरई-स्निग्ध, मधुर, कफपित्तनाशक, किंचित् बादी, पथ्य, रुचिकारक, बल और वीर्य्यको देनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पित्तानिलघ्नं कफजिद्विपाकात्पथ्यं ज्वरे स्वादु रसोपपन्नम् ।
हुताशनोद्दीपनभेदकं च कोशातकं शाकवरं वदन्ति ॥

अर्थ-तोरइयोंका शाक-पित्तवातनाशक, कफहारक, ज्वरमें पथ्य, स्वादुरसवाला, अग्निको दीपन करनेवाला और शाकोंमें इसको श्रेष्ठ कहते हैं ।

अपिच ।

धाराकोशातकी शीता मधुरा कफवातला ।
पित्तघ्नी दीपनी श्वासज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तोरई-शीतल, मधुर, कफकारक, बादी, पित्तनाशक, दीपन तथा श्वास, ज्वर, खांसी और कृमिका नाश करेहै।

महाकोशातकीनामानि ।

महाकोशातकी प्रोक्ता हस्तिघोषा महाफला ।
धामार्गवो घोषकश्च हस्तिपर्णश्च सस्मृतः ॥

अर्थ-महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, धामार्गव, घोषक, हस्तिपर्ण (बृहत्कोशातकी, हस्तिकोशातकी, ग्राम्यकोशातकी, ऐभी, महत्पुष्पा, सपीतका, हस्तिघोषातकी) ।

संस्कृतभाषामें	महाकोशातकी ।
हिन्दीभाषामें	घियातोरई, नेनुआ ।
बंगभाषामें	हस्तिघाषा+धुन्दुल ।
मराठीभाषामें	घोसाळी, घडघोसाळी, पारोशी ।
गुजरातीभाषामें	गलकां ।
कर्णाटकभिाषामें	अराहरे ।
तैलिंगीभाषामें	पुछाबीरकाया+एनुगवीर ।
लैटिन्‌भाषामें	ल्युफापेंटेंड्रा । Luffaprntaundra
फारसीभाषामें	खियार ।
उडि०	तराडि ।

अस्या गुणाः ।

महाकोशातकी स्निग्धा सरा पित्तानिलापहा ।(म० वि०)

अर्थ-घियातोरई-स्निग्ध,सारक तथा पित्त और वातका नाशकरेहै।

अन्यच्च ।

महाकोशातकी स्निग्धा रक्तपित्तानिलापहा। (भा० प्र०)

अर्थ-घियातोरई, बडी तोरई-स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक और वात विनाशक है ।

अपिच ।

हस्तिकोशातकी स्निग्धा मधुराध्मानवातकृत् ।
वृष्या कृमिकरी चैव व्रणसंरोपिणी च सा॥(रा० नि०)

अर्थ-घियातोरई, नेनुआ-स्निग्ध,मधुर, आध्मानकारक, वातवर्द्धक, वृष्य, कृमिजनक और घावको भरनेवाली है ।

तिक्तकोशातकीनामानि ।

कोषातक्यां कृतच्छिद्रा जालिनी कृतवेधना ।
क्ष्वेडा सुतिक्ता घण्टाली मृदंगफलिका मता ॥

अर्थ-कोषातकी, कृतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधना,क्ष्वेडा, सुतिक्ता,घण्टाली, मृदंगफलिका (तिक्तकोषातकी, तिक्ता,कृतवेधनिका कृष्णा, सुशोधनी, वन्या, कर्कशच्छदा) ।

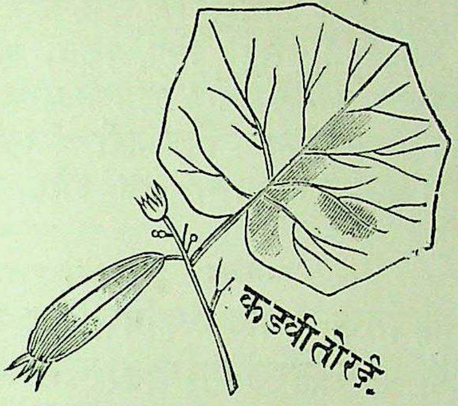

संस्कृतभाषामें	तिक्तकोशातकी ।
हिन्दीभाषामें	कडवी तोरई, जंगलीतोरई, झिमनी ।
वंगभाषामें	झिङ्गा ।
मराठीभाषामें	कडूदोडकी, दिवाली, कडूशिराळी ।
गुजरातीभाषामें	झुमखंडां कडवातें कडवी घी सोडी,धामार्गवते। कडवा तुरीया ।
कर्णाटकीभाषामें	काहिरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चेदुविर्कायां ।
उडि०	जनी ।
इंग्रेजीभाषामें	बिटरल्युफा । Bitter Luffa
लैटिन्भाषामें	ल्युफाएमेरा । Ruffa amara
फारसीभाषामें	तुरीयेतलख ।

अस्य गुणाः ।

तिक्तकोशातकी शीता किञ्चित्कट्वी कषायका । तिक्ता पक्काशयाध्मानमलामाशयशुद्धिकृत्॥लघ्वी रूक्षा वातकफपित्तपाण्डुविषापहा । यकृत्कुष्ठार्शशोथघ्नी कासोदरविनाशिनी ॥ कामलागुल्मशमनी फलं चास्यास्तु भेदकम् ॥ कटु तिक्तं च शीतञ्च स्निग्धं हृद्यं च दीपनम् ॥ कासारोचकमेहघ्नं ज्वरकुष्ठकफापहम्। श्वासं पित्तं च वातञ्च नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥

अर्थ-कडवी तोरईकी बेल-शीतल, किञ्चित्कटु, कषेली, कडवी, पक्काशय, आध्मान, मल और आमाशयको शुद्ध करनेवाली, हलकी, रूखी तथा वात, कफ, पित्त, पाण्डु, विष, यकृत, कुष्ठ, बवासीर, सूजन, खांसी, उदररोग, कामला और गुल्मको हरैहै । इसका फल भेदक, कटु, तिक्त, शीतल, स्निग्ध, हितकारी, दीपन तथा खाँसी, अरुचि, प्रमेह, ज्वर, कुष्ठ, कफ, श्वास, पित्त और वातका नाश करै है ।

अन्यच्च ।

तिक्तकोशातकं तिक्तं वातलं कफपित्तजित् ।
अवृष्यं कटुकं पाके सारकं वान्तिकारकम् ॥
एतत्फलं च बीजं च नस्यान्नासाशिरोर्त्तिजित् । (शो. नि.)

अर्थ-कडवी तोरई-कडवी, बादी, कफपित्तनाशक, अवृष्य, पचनेमें कटु, सारक और वमनकारक है । इसके फल और बीजोंके नास लेनेसे नासिका और शिरकी पीडा दूर होती है ।

विवरण-तोरई, घियातोरई और कडवी तोरई इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है, तहां तोरई सफेद रंगकी और धारयुक्त तथा पीले फूलकी होतीहै । घियातोरई नीलेरंगकी और लम्बे गोल तथा पीले फूलकी होतीहै और कडवी तोरई सफेद रंगकी जंगलमें वृक्षोंके ऊपर लगती है, फूल पीले और बीज काले होते हैं ।

चिचिण्डनामानि ।

चिचिण्डः श्वेतराजिः स्यात्सुदीर्घो गृहकूलकः ।

अर्थ-चिचिण्ड, श्वेतराजि, सुदीर्घ, गृहकूलक (चिचुण्ड, वेश्मकूल, बृहत्फला, अहिफला, दीर्घफला, चीनकर्कटिका ।

संस्कृतभाषामें	चिचिण्ड×अहिफला ।
हिंदीभाषामें	चचेंडा, चिचेंडा ।
वंगभाषामें	चिचिङ्गा, चिचिण्डा ।
मराठीभाषामें	टरकांकडी ।
गुजरातीभाषामें	पंडोलां ।
तैलिंगीभाषामें	पोटलाकाया ।
इंग्रेजीभाषामें	स्नेकगोर्ड । Srake Gourd
लैटिनभाषामें	ट्रिकोसैंथिस् ऐंगिवना Trichos—authis auguina

अस्य गुणाः ।

चिचिण्डो वातपित्तघ्नो बल्यः पथ्यो रुचिप्रदः ।
शोषिणोऽतिहितः किञ्चिद्गुणैर्न्यूनः पटोलतः ॥

अर्थ-चिचेंडा-वातपित्तनाशक, बलकारक, पथ्य, रुचिजनक, शोषरोगमें हितकारी और परवलोंसे गुणोंमें किञ्चित् न्यून है ।

विवरण । चचेंडेकी बेल तोरईकी समान होती है, फल बडे बडे लम्बे साँपकी समान होते हैं ।

पटोलनामानि ।

स्वादौ च स्वादुपूर्वा सा स्वादिष्ठा जनवल्लभा ।
राजपूर्व्वा सुशाका च स्वादुपत्रफला च सा ॥

अर्थ-स्वादुपटोल, स्वादु, स्वादिष्ठा, जनवल्लभा, राजपूर्व्वा, सुशाका, स्वादुपत्रफला (राजपटोल) ।

अस्य गुणाः ।

पटोलं पाचनं हृद्यं वृष्यं लघ्वग्निदीपनम् । स्निग्धोष्णं हन्ति कासास्रं ज्वरदोषत्रयकृमीन् ॥ पटोलस्य भवेन्मूलं विरेचनकरं सुखात् । नालं श्लेष्महरं पत्रं पित्तहारि फलं पुनः ॥ दोषत्रयहरं प्रोक्तं तद्वत्तिक्तपटोलिकाः । (भा० प्र०)

अर्थ-परवल-पाचक,हृदयको हितकारी,वृष्य, हलका, अग्निप्रदीपक,स्निग्ध,गरम तथा खाँसी,रुधिरविकार,ज्वर,त्रिदोष और कृमिका नाश करे है ।परवलकी जड सुखपूर्वक विरेचन करनेवाली है।परवलकी नाल-कफनाशक है । पटोलके पत्ते-पित्तनाशक हैं । इसके फल-त्रिदोषनाशक हैं, कडवे परवलके गुणभी इसीके समान हैं ।

अन्यच्च ।

पटोली बलकृत्स्वादुः पथ्या दीपनपाचनी । रुच्या पुष्टिकरी ज्ञेया वातपित्तज्वरापहा ॥ शोषत्रिदोषशमनी फलं वृष्यं रुचिप्रदम् । मधुरं स्वादु पथ्यं च पाचनं लघुदीपकम् ॥ हृद्यं स्निग्धं च उष्णं च कफरक्तत्रिदोषनुत् । कासज्वरकृमीन्हन्ति पर्णं वै पित्तनाशनम् । मूलं रेचकरं प्रोक्तं वल्ली चैव कफापहा ॥

अर्थ-परवल-बलकारक, स्वादिष्ठ, पथ्य, दीपन, पाचक, रुचिकारक, पुष्टिजनक, तथा वात, पित्त, ज्वर, शोष और त्रिदोषको शान्ति करे है इसके फल-वृष्य, रुचिकारक, मधुर, स्वादिष्ठ, पथ्य, पाचन, हलके, दीपन, हृदयको हितकारी, स्निग्ध, गरम, कफ, रक्तविकार, त्रिदोष, खाँसी, ज्वर और कृमिनाशक हैं। इसके पत्ते पित्तनाशक। इसकी जड विरेचन करानेवाली है। इसकी बेल कफनाशक है।

राजपटोलीनामानि।

मेकी राजपटोली च पर्वगी पीलुपर्णिका।
राजनामा सुपथ्या च वृत्तबीजा च पर्वरा॥

अर्थ-मेकी, राजपटोली, पर्वगी, पीलुपर्णिका, राजनामा, सुपथ्या, वृत्तबीजा, पर्वरा।

पर्वरं पाचनं हृद्यं वृष्यं वह्निकरं लघु। दीपनं स्निग्धमुष्णञ्च कासरक्तत्रिदोषहम्॥ कृमिजिन्मधुरं प्रोक्तं वैद्यैर्विद्याविचक्षणैः। कफनाशकरी वल्ली पत्रं पित्तस्य नाशकम्॥ मूलं तु रेचकं चास्य मुनिभिः परिकीर्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-पर्वर-पाचक, हृदयको हितकारी, वृष्य, अग्निजनक, हलका, दीपन, मधुर, स्निग्ध, गरम तथा खांसी, रुधिरविकार, त्रिदोष और कृमिनाशक है। इसकी बेल-कफनाशक। पत्र-पित्तनाशक और मूल-दस्त करानेवाली है।

तिक्तपटोलनामानि।

पटोलः कुलकः प्रोक्तः पाण्डुकः कर्कशच्छदः। राजीफलः पाण्डुफलो राजीमानोऽमृताफलः॥ तिक्तोत्तमो बीजगर्भः कुष्ठारिः कासमर्दनः॥ पञ्चराजीफलो ज्योत्स्ना कच्छुरो ज्वरनाशनः॥

अर्थ-पटोल, कुलक, पाण्डुक, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजीमान, अमृताफल, तिक्तोत्तम, बीजगर्भ, कुष्ठारि, कासमर्दन, पञ्चराजीफल, ज्योत्स्ना, कच्छुर, ज्वरनाशन (तिक्तक, पटु, पटुक, कर्कशदल, कुलज, वाजिमान, लताफल, राजफल, राजपटोल, वरतिक्त, तिक्तभद्रक, कटुफल, कटुक, कटु, अमृतफल, पाण्डुक, पाण्डु, नागफल, पञ्जर, ज्योत्स्नी, कच्छुघ्नी, प्रतीक, कुष्ठहा, कासभञ्जन)।

संस्कृतभाषामें	पटोल, तिक्तपटोल ।
हिंदीभाषामें	कडवे परवल ।
वंगभाषामें	पलतालता ।
मराठीभाषामें	कडुपडवळ ।
गुजरातीभाषामें	कडवापटोल, आंख्यफुटामणां ।
कर्णाटकीभाषामें	काहेपडवल ।
तैलिङ्गीभाषामें	सेसपदूला-कोम्मुपटोल ।
तामिलीभाषामें	कोम्बुपुडलै।
कानडीभाषामें	मोरहडी ।

लैटिन्भाषामें ट्रिकोसैंथस् कुकुमेरिना। Trichosanths cucumcrina

अस्य गुणाः ।

पटोलः कटुतिक्तोष्णः सरः पित्तबलासजित ।
कफकण्डूतिकुष्ठासृग्ज्वरदाहार्तिनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कडवे परवल,-कटु,तिक्त,गरम, कुछेक दस्तावर तथा पित्त, बलास, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रुधिरविकार, ज्वर, और दाहकी वेदनाको दूर करनेवाले हैं ।

अन्यच्च ।

पटोलं कफपित्तास्रव्रणकुष्ठज्वरापहम् । विसर्पनयनव्याधित्रिदोषगरनाशनम्॥पटोलपत्रं पित्तघ्नं नाडी तस्य कफापहा। फलं तस्य त्रिदोषघ्नं मूलं तस्य विरेचनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कडवे परवल-कफ, रक्तपित, व्रण कुष्ठ, ज्वर, विसर्प, नेत्ररोग, त्रिदोष और विषका विनाश करेहैं । पटोलपत्र-पित्तनाशकहैं परवलकी नाडी-कफनाशक इसके फल-त्रिदोषनाशक और इसकी जड-दस्तावर है ।

अन्यच्च ।

तिक्ता पटोली कटुका सारकोष्णा कटुःस्मृता । भेदनी पाचनी चैव अग्निदीप्तिकरी परा॥पित्त कफचकण्डूश्च कुष्ठरक्तविकारकम् । ज्वरं दाहं तृषां कोष्ठरोगं कृमिं च नाशयेत् ॥ फलमस्याः कटुस्तिक्तं पाके स्वादु लघु स्मृतम् । दीपनं पाचनं वृष्यं मललोमनकारकम् ॥ वातपित्तकफानां तु यथास्थाने

निवेशकम् । सारकं श्वासज्वरहृत्त्रिदोषकृमिनाशकम् ॥ पित्तनाशकरं पर्णं मूलं कफविनाशकम् । कफनाशकरं वल्ली तैलं वातकफापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कडवे परवल-चरपरे, सारक, गरम, कटु, भेदक, पाचक, अग्निप्रदीपक तथा पित्त, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रक्तविकार, ज्वर, दाह, तृषा, कोष्ठरोग और कृमिरोगका नाश करे हैं । इसके फल-चरपरे, कडवे, स्वादुपाकी, हलके दीपन, पाचन, वृष्य, मलअनुलोमक तथा वात, पित्त और कफको यथास्थानमें स्थापन करनेवाले, सारक तथा श्वास, ज्वर, त्रिदोष और कृमिरोगका नाश करे हैं । इसके पत्ते पित्तनाशक। इसकी जड-कफनाशक । इसकी बेल कफनाशक और इसका तेल-वात और कफनाशक है ।

विवरण। परवल मधुर और कडवे इनभेदोंसे दो प्रकारके होते हैं, तहां कडवे परवल औषधिमें अधिकतासे लियेजाते हैं । परवलकी बेल प्रायः जंगलमें होतीहै, फूल सफेद, फल नीले और पकनेपर लाल होजाते हैं ।

बिम्बीनामानि ।

बिम्बी रक्तफला तुण्डी तुण्डकेरी च बिम्बिका ।
ओष्ठोपमफला प्रोक्ता पीलुपर्णी च कथ्यते ॥

अर्थ-बिम्बी, रक्तफला, तुण्डी, तुण्डिकेरी, बिम्बिका, ओष्ठोपमफला, पीलुपर्णी (ओष्ठी, कर्मकरी, तुण्डिकेरी, तुण्डिकेरिका, तुण्डिकेर, झुण्डिकेशी, बिम्बा, बिम्बक, कम्बजा, दन्तच्छदोपमा, गोह्ली, रुचिरफला, छर्दिनी) ।

संस्कृतभाषामें	बिम्बी ।
हिंदीभाषामें	कन्दूरी ।
वंगभाषामें	तेलाकुच ।
मराठीभाषामें	गोडतोंडली, कोंडवली ।
गुजरातीभाषामें	घोलांमिठां ।
कर्णाटकीभाषामें	सीहिदोंडे, तोंडेहण्णु ।
तामिलभाषामें	कोवे ।
तैलिङ्गीभाषामें	दोंडातिरो ।
लैटिन्भाषामें	कोकसियाइण्डिक ।

अस्या गुणाः ।

बिम्बीफलं स्वादु शीतं गुरुपित्तास्रवातजित् ।
स्तम्भनं लेखनं रुच्यं विबंधाध्मानकारकम् ॥

अर्थ–कन्दूरी–स्वादिष्ठ, शीतल, भारी, रक्तपित्तनाशक, वातविनाशक, स्तम्भन, लेखन, रुचिकारक तथा विबन्ध और आध्मानकारक है ।

अन्यच्च ।

बिम्बीफलं स्वादु शीतं स्तन्यकृत्कफपित्तजित् ।
हृद्दाहज्वरपित्तास्रकासश्वासक्षयापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ–कन्दूरी–स्वादिष्ठ, शीतल, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाली, कफपित्तनाशक तथा दाह, ज्वर, रक्तपित्त, खांसी, श्वास और क्षयरोगका क्षय करे है ।

अन्यच्च ।

बिम्बिका मधुरा शीता कफवान्तिकरा मता । रक्तपित्तक्षयश्वासकामलापित्तशोफकान्॥रक्तरुग्विषकासांश्च रक्तपित्तज्वरान्हरेत् । फलमस्या गुरु स्वादु शीतलं लेखनं मतम् ॥ मलस्तम्भकरं स्तन्यमुदरे वातसंचयम् । रुच्यं पित्तं रक्तदोषवाताञ्छ्वासं च नाशयेत् । शोथवृद्धिदाहकासश्वासनाशकरं मतम् । पुष्पमस्याः कण्डुपित्तकामलानाशकारकम् ॥ अस्याः पर्णोद्भवा शाका शीतला मधुरा लघुः । ग्राहका तुवरा तिक्ता पाके कट्वी च वातला ॥ कफपित्तहरा प्रोक्ता पूर्वैर्वैद्यवरैः स्फुटम् । मूलमस्या हिमं मेहनाशनं धातुवर्द्धकम्॥हस्तदाहहरं भ्रान्तिवान्तिनाशकरं मतम् ।(इति रत्नाकरे)

अर्थ–कन्दूरी–मधुर, शीतल, कफकारक, वमनजनक तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, कामला, पित्तकी सूजन, रुधिरविकार, विषदोष, खाँसी,रक्तपित्त और ज्वरको दूर करेहै । इसके फल भारी, स्वादिष्ठ शीतल, लेखन, मलस्तम्भक, स्तन्यकारक, उदरमें वायुको संचित करनेवाले, रुचिकारक तथा पित्त, रुधिरविकार, वात, श्वास, सूजन, वृद्धि, दाह, खांसी और दमेको हरनेवाले हैं इसके फूल–कण्डू, पित्त, कामलाको दूर करनेवाले हैं । इसके पत्तोंका शाक–

शीतल, मधुर, हलका, मलरोधक, कसेला, पचनेमें, चरपरा, बादी तथा कफ और पित्तका नाशकरे है । इसकी जड-शीतल, प्रमेह-नाशक, धातुवर्द्धक तथा हाथ पांवोंकी दाह, वान्ति और भ्रान्तिको शान्ति करे है ।

तिक्तबिम्बीनामानि ।

तिक्ततुण्डी तु तिक्ताख्या कटुका कटुतुण्डिका ।
बिम्बी च कटुतिक्तादितुण्डी पर्य्यायगा च सा ॥

अर्थ-तिक्ततुण्डी, तिक्ताख्या, कटुका, कटुतुण्डिका, कटुबिम्बी, तिक्तबिम्बी, तुण्डीपर्य्यायगा ।

संस्कृतभाषामें	तिक्ततुण्डी ।
हिन्दीभाषामें	कडवी कन्दूरी ।
वंगभाषामें	कटुतराइ, तित्पलता, तेत् केन्दुरुकी ।
मराठीभाषामें	कडू तोंडली ।
गुजरातीभाषामें	कडवी घोली ।
कर्णाटकीभाषामें	तीतकुन्दुरु, कहितोंडे ।
लैटिन्भाषामें	सिफेलेन्ड्राइंडिका । Cephalandra Indica
	कोकासिनीयाण्मेरा ।

अस्या गुणाः ।

कटुतुण्डी कटुस्तिक्ता कफपित्तविषापहा ।
अरोचकास्रपित्तघ्नी सदा पथ्या च रेचनी ॥ (शा० नि०)

अर्थ-कडवी कन्दूरी-चरपरी, कडवी, सदैव पथ्य, रेचन करनेवाली तथा कफ, पित्त, विष, अरुचि, खाँसी और रक्तपित्तको नष्ट करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

तिक्तबिम्बीफलं तिक्तं वामकं वातकोपनम् ।
शोथरुग्विषपित्तघ्नं रक्तरुक्कफपाण्डुहम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कडवी, कन्दूरी-कडवी, वमनकारक, वातको कुपित करनेवाली तथा शोथरोग, विष, पित्त, रुधिरविकार कफ और पाण्डुरोगको हरनेवाली है ।

अपि च ।

तिक्तबिम्बीफलं चामं छर्द्दनं कफनाशनम् ।
पक्वं पित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कच्ची कडडी कन्दूरी-वमनकारक और कफनाशक है। पक्की कडवी कन्दूरी-पित्तनाशक, शीतल और रसपाकमें मधुर है ।

विवरण-कन्दूरी मधुर और कडवी इन भेदोंसे दो प्रकारकी होती है, तहां मधुर कन्दूरी प्रायः बागोंमें बोई जातीहै और कडवी कन्दूरी स्वयं वन तथा वाँसियोंमें उत्पन्न होजाती है इसकी वेल चलतीहै । पत्ते तीन अनीवाले होतेहैं । फूल सफेद, फल हरे और पकनेपर लाल होजाते हैं ।

कर्कोटकीनामानि ।

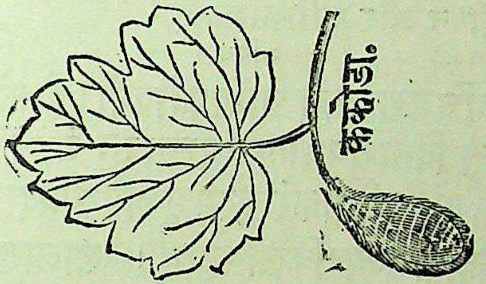

ककोंटकी पीतपुष्पी महाजालीति चोच्यते ।

अर्थ-ककोंटकी, पीतपुष्पी, महाजाली (पीतपुष्पा, महाजालिनिका, अवन्ध्या, बोधनाजालि, मनोज्ञा, मनस्विनी) ।

संस्कृतभाषामें	ककोंटकी ।
हिन्दीभाषामें	खेखसा, ककोंडा ।
वंगभाषामें	फलशाकविशेषण (काकरोल) ।
मराठीभाषामें	कांटली, कटौंली ।
गुजरातीभाषामें	कंटोली ।
लैटिन्भाषामें	मोमोर्डिकाडायोईका ।
तैलिङ्गीभाषामें	अगोरकर ।
म०	वेंपावल ।
तु०	काड कुंचाला ।
ता०	इगारवाल्लि ।
क०	मडुवागाळ ।

अस्या गुणाः ।

ककोंटी मलहृत्कुष्ठहृल्लासारुचिनाशिनी ।

कासश्वासज्वरान्हन्ति कटुपाका च दीपनी ॥

अर्थ-ककोडा-मलको हरनेवाला तथा कुष्ठ, हल्लास, अरुचि, श्वास,खाँसी और ज्वरको दूर करनेवाला,कटुपाकी और दीपन है।

अन्यच्च।

ककोंटकी कटूष्णा च तिक्ता विषविनाशिनी।
वातघ्नी पित्तहृच्चैव दीपनी रुचिकारिणी ॥(रा०नि०)

अर्थ-ककोडा-चरपरा, गरम, कडवा, विषनाशक, वातनाशक, पित्तहारक, दीपन और रुचिकारक है।

अपिच।

ककोंटकी रुचिकरा कट्वी चाग्निप्रदीपनी। तिक्तोष्णा वातकफहृद्विषं पित्तं विनाशयेत्॥ फलमस्यास्तु मधुरं लघु पाके कटु स्मृतम्। अग्निदीप्तिकरं गुल्मशूलपित्तत्रिदोषनुत् ॥ कफकुष्ठकासमेहश्वासज्वरकिलासनुत्। लालास्रावारुचिर्वातकिलासहृदयव्यथाः। नाशयेत्पर्णमस्याश्च रुच्यं वृष्यं त्रिदोषनुत्। कृमिज्वरक्षयश्वासकासहिक्कार्शनाशनम् ॥ कंदो माक्षिकसंयुक्तः शीर्षरोगे प्रशस्यते ॥ (नि० र०)

अर्थ-ककोंटकी-रुचिकारक, कटु, अग्निप्रदीपक, तिक्त, गरम तथा वात, कफ, विष और पित्तका नाशकरेहै। इसके फल-मधुर, लघु, पचनेमें कटु, अग्निप्रदीपक तथा गुल्म, शूल, पित्त, त्रिदोष, कफ, कुष्ठ, खाँसी,प्रमेह, श्वास,ज्वर, किलास,लालास्राव, अरुचि, वात, किलास और हृदयकी पीडाको दूरकरेहैं। इसके पत्ते-रुचिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक तथा कृमि, ज्वर, क्षय, श्वास, खाँसी,हिचकी और बवासीरको हरनेवाले हैं। इसका कंद-मधुके साथ मस्तकरोगमें हितकारीहै।

विवरण। ककोडकी बेल प्रायः झाडी और वाडोंके ऊपर फैल जातीहै, फलके ऊपर कांटे होतेहैं कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर,लाल पडजातेहैं।

कारवेल्लनामानि।

कारवेल्लं कठिल्लं स्यादुग्रकाण्डं सुकाण्डकम्।

अर्थ-कारवेल्ल,कठिल्ल,उग्रकाण्ड, सुकाण्डक (करैल, कारवेल्लक)

कारवेल्लीनामानि।

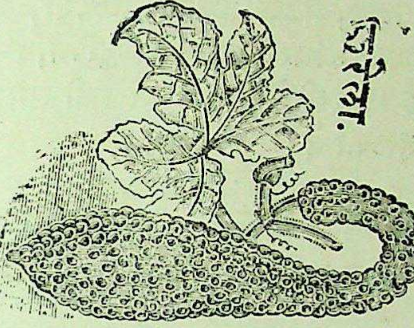

कारवेल्ली वारिवल्ली बृहद्वल्ल्यापरा स्मृता ।

अर्थ-कारवेल्ली, वारिवल्ली, बृहद्वल्ली (करका, करवल्ली, चिरिपत्र काठिल्लका, सूक्ष्मवल्ली, कण्टफला, पीतपुष्पा, अम्बुवल्लिका, कटिल्लक, सुषवी, राजवल्ली, शुषवी, ऊर्ध्वासित, तोयवल्ली, कण्डूर, काण्डकटुक, सुकाण्ड, उग्रकाण्ड, नासासंवेदन, पटु)।

संस्कृतभाषामें	कारवेल्ल, कारवेल्ली।
हिन्दीभाषामें	करेला, करेली ।
वंगभाषामें	बडकरेलाउच्छे, छोटकरलाउच्छे ।
मराठीभाषामें	कारलें, क्षुद्रकारली, लघुकारली।
गुजरातीभाषामें	कारेला, कडवा वेला।
कर्णाटकीभाषामें	हागल।
तैलिंगीभाषामें	करिला, काकरकाया।
औत्कलीभाषामें	शलरा।
इंग्रेजीभाषामें	हेरीमोर्डिका। Hairy Mordica
लैटिन्भाषामें	मोमोर्डिकाकरेटिया। Memordica Choratia मो. सिंबेलेरिया। M. Cymbalaria
फारसीभाषामें	कारेलाह ।
अरबीभाषामें	किस्सा, उलहिमार ।

कारवेल्लगुणाः।

कारवल्लं हिमं भेदि लघु तिक्तमवातलम् ।
ज्वरपित्तकफास्रघ्नं पाण्डुमेहकृमीन्हरेत् ॥

तद्गुणा कारवेल्ली स्याद्विशेषाद्दीपनी लघुः।(भा. प्र.)

अर्थ-करेला-शीतल, भेदक, हलका, कडवा, वातकारक नहीं तथा ज्वर, पित्त, कफ, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, प्रमेह और कृमिरोगका नाशकरे है। करेलीके गुणभी करेलेकी समानहैं, विशेषकरके पित्तनाशक और हलकी है।

अन्यच्च।

कारवेल्लमवृष्यञ्च रोचनं कफपित्तजित् (रा० नि०)

अर्थ-करेला-अवृष्य, रुचिकारक तथाकफऔरपित्तकानाशकरेहै।

अन्यच्च।

[कारवेल्लश्च वातघ्नः कफघ्नः पित्तकारकः।
उष्णो रुचिकरः प्रोक्तो रक्तदोषकरो नृणाम्] (हा०)

अर्थ-करेला-वातविनाशक, कफनाशक, पित्तकारक, गरम, रुचिकारक और रुधिरके विकारोंको करनेवाला है।

अपिच।

कारवेल्लं चातितिक्तमग्निदीप्तिकरं लघु। उष्णं शीतं भेदकं च स्वादु पथ्यं समीरितम्॥ अरुचिं च कफं वातं रक्तदोषं ज्वरं कृमीन्। पित्तं पाण्डुञ्च कुष्ठञ्च नाशयेदिति कीर्तितम्॥ बृहदुक्तं कारवेल्लं कटु तिक्तं च दीपकम्। अवृष्यं भेदकं स्वादु रुच्यं क्षारं लघु स्मृतम्॥ अवातलं पित्तहरं रक्तरुक्पाण्डुरोगहृत्। अरोचकं कफं श्वासं व्रणं कासं कृमींस्तथा॥ कोष्ठं कुष्ठं ज्वरं चैव प्रमेहाध्माननाशनम्। कामलां नाशयत्येव गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत्॥ जलजं कारवेल्लं स्यात्तिक्तं भेदकरं मतम्। कफं कुष्ठं पाण्डुरोगं कृमीन्पित्तञ्च नाशयेत्॥ यवजं कारवेल्लन्तु दीपनं तिक्तकं मतम्। हृद्यं ज्वरार्शःकासघ्नं कफवातकृमीहरम् (रत्नाकर)

अर्थ-करेली-अत्यन्तकडवी, अग्निप्रदीपक, हलकी, गरम, शीतल, दस्तावर, स्वादु पथ्य तथा अरुचि, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर कृमि, पित्त पाण्डुरोग और कुष्ठरोगको नष्टकरनेवाली है। करेला-कटु, तिक्त, दीपन, अवृष्य, भेदक, स्वादिष्ठ, रुचिकारक, क्षार, हलका, वातकारक नहीं, पित्तनाशक तथा रुधिरविकार, पाण्डुरोग, अरुचि,

कफ श्वास व्रण खाँसी, कृमि, कोठरोग, कुष्ठ, ज्वर, प्रमेह, आध्मान और कामला रोगको हरनेवाला है। और शेष गुण पूर्वकी नाईं जानने। जलमें उत्पन्न होनेवाला करेला-कडवा, भेदक तथा कफ, कुष्ठ, पाण्डुरोग, कृमि और पित्तरोगका नाश करे है। बनकरेला-दीपन, कडवा, हृदयको हितकारी तथा ज्वर, बवासीर, खाँसी और वातको दूरकरे है।

डिण्डिशनामानि गुणाश्च ।

डिण्डिशो रोमशफलो मुनिनिर्मित इत्यपि।
डिण्डिशो रुचिकृद्भेदी पित्तश्लेष्मापहः स्मृतः ॥
सुशीतो वातलो रूक्षो मूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-डिण्डिश, रोमशफल, मुनिनिर्मित। हिं० ढेंडश। ढेंडश-रुचिकारक, भेदक, पित्तकफनाशक, शीतल, बादी, रूक्ष, मूत्रजनक और पथरीको दूर करे है।

पिण्डारगुणाः ।

पिण्डारं शीतलं बल्यं पित्तघ्नं रुचिकारकम्।
पाके लघु विशेषेण विषशान्तिकरं स्मृतम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पिण्डार-शीतल, बलकारक, पित्तनाशक, रुचिकारक, लघुपाकी और विशेषकरके विषको शान्ति करे है।

भेण्डानामानि ।

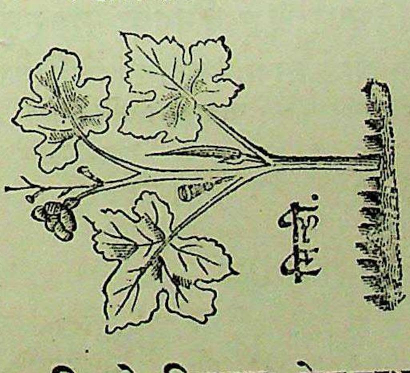

भेण्डा भिण्डातिका भिण्डो भिण्डकः क्षेत्रसम्भवः।
चतुष्पदश्चतुःपुण्ड्रः सुशाकः पिच्छिलः स्मृतः ॥

अर्थ-भेण्डा, भिण्डातिका, भिण्ड, भिण्डक, क्षेत्रसम्भव, चतुष्पद, चतुःपुण्ड्र, सुशाक, पिच्छिल (भिण्डीतक, अस्रपत्रक, कारपर्ण, वृत्तबीज)।

संस्कृतभाषामें	भिण्डा ।
हिन्दीभाषामें	भिण्डी ।
वंगभाषामें	स्वनामख्यातफलशाक वि० ।
मराठीभाषामें	भेंडे, रानभेंडे ।
गुजरातीभाषामें	भींडा ।
कर्णाटकीभाषामें	वेंडे ।
तैलिङ्गीभाषामें	भेडकाया ।
लैटिन्भाषामें	हिबिस्कस् एस्कुलेंटस् । Hidischus Esculentus
फारसीभाषामें	बामिया ।
अरबीभाषामें	कुवार ।

भेण्डागुणाः ।

करपर्णफलं रुच्यं पिच्छिलं गुरु वातलम्।वृष्यं श्लेष्मकरं बल्यं
शुक्रवृद्धिकरं परम्॥ कासे मन्दानले वाते पीनसेषु विनिंदितम् ।

अर्थ-भिण्डी-रुचिकारक, पिच्छिल, भारी, बादी, वृष्य, कफकारक, बलकारक, शुक्रवर्द्धक तथा खाँसी, मदाग्नि, वात और पीनसरोगमें अहितकारी है ।

अन्यच्च ।

भेण्डा त्वम्लरसा चोष्णा ग्राही च रुचिकारका ।
राजनामानिघण्टे च द्वंये वृष्या परा स्मृता ॥ (नि० र०)

अर्थ-भिण्डी-अम्ल, गरम, मलरोधक, रुचिकारक और वृष्यहै ।

वाताकुनामानि ।

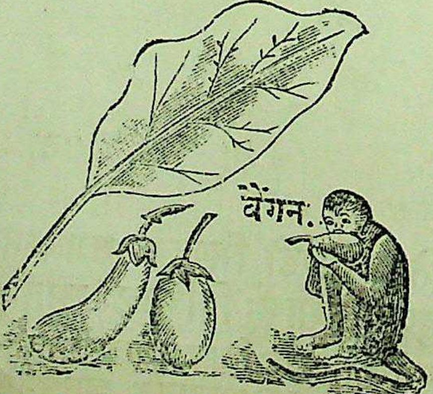

वार्त्ताकी कण्टवृन्ताकी कण्टालुः कण्टपत्रिका । निद्रालुर्मांसलफला वृन्ताकी च महोटिका ॥ चित्रफला कण्टकिनी महती कट्फला च सा । मिश्रवर्णफला नीलफला रक्तफला तथा ॥ शाकश्रेष्ठा वृत्तफला नृपप्रियफला स्मृता ।

अर्थ-वार्त्ताकी, कण्टवृन्ताकी, कण्टालु, कण्टपत्रिका निद्रालु, मांसलफला, वृन्ताकी, महोटिका, चित्रफला, कण्टकिनी, महती, कट्फला, मिश्रवर्णफला, नीलफला, रक्तफला, शाकश्रेष्ठा, वृत्तफला, नृपप्रियफला (हिंगुली, सिंही, भण्टाकी, दुष्प्रधर्षिणी, वार्त्ता, वार्त्ताकु, वातिकुण, वार्त्ताक, शाकबिल्व, राजकूष्माण्ड, महाबृहती, शाकबिल्वक, वार्त्तिक, वातिगम, वृन्ताक, वङ्गण, अङ्गण, बेर, नीलवृषा, भाण्टिका, नीलकण्टका)।

संस्कृतभाषामें	वार्त्ताकु।
हिन्दीभाषामें	बैंगन, भण्टा, भटा।
बंगभाषामें	बेगुनगाछ।
मराठीभाषामें	वांगे।
गुजरातीभाषामें	रिंगणा, रिंगणी।
कर्णाटकीभाषामें	वद्ने।
तैलङ्गीभाषामें	वंकाया, वङ्गणहिरिंगु।
औत्कलीभाषामें	वाइगुण।
तामिलीभाषामें	कुठिरकई।
इंग्रेजीभाषामें	ब्रिंजल्। Bringal
लैटिन्भाषामें	सोलेनंमेलंजीना। Solanum Melongena
फारसीभाषामें	वादंगान्।
अरबीभाषामें	बादंजान्।

वार्त्ताकुगुणाः।

वार्त्ताकी कटुका रुच्या मधुरा पित्तनाशिनी ।
बलपुष्टिकरी हृद्या गुरुर्वातेषु निन्दिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बैंगन-कटु, रुचिकारक, मधुर, पित्तनाशक, बलकारक, पुष्टिजनक, हृदयको हितकारी, भारी और वातरोगमें निन्दित है।

अन्यच्च।

निद्राकरं प्रीतिकरं गुरु स्यात्सवातलं कासविकारकारि।

श्रेष्ठं सुदीर्घं कफवर्द्धनञ्च सश्वासकासारुचिवर्द्धनञ्च॥ (हा.)

अर्थ-बैंगन-निद्राजनक, प्रीतिकारक, भारी, बादी, खाँसीके विकारोंको करनेवाला तथा कफ, श्वास, खाँसी और अरुचिको बढानेवाला है। लम्बा बैंगन श्रेष्ठ होता है।

अन्यच्च

अग्निप्रदा मारुतनाशिनी च शुक्रप्रदा शोणितवर्द्धिनी च।
हृल्लासकासारुचिनाशिनी च वार्त्ताकुरेषा गुणसप्तयुक्ता॥

अर्थ-बैंगन-अग्निवर्द्धक, वातविनाशक, शुक्रजनक, शोणितवर्द्धक तथा हृल्लास, खाँसी और अरुचिको दूर करनेवाला है।

सा बाला कफपित्तघ्नी पक्वा सक्षारपित्तला। सदाफला त्रिदोषघ्नी रक्तपित्तप्रसादनी॥ अङ्गारपक्वा वार्त्ताकुः किञ्चित्पित्तकरी मता। कफमेदोऽनिलहरा सरा लघुतरा परा॥ (रा० व०)

अर्थ-कच्चा बैंगन-कफपित्तनाशक और पक्का बैंगन-क्षारयुक्त और पित्तल है। मध्यम बैंगन-त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तको निर्मल करनेवाला है। अंगारोंपै भुनाहुआ बैंगन [बैंगनका भुरता] किंचित् पित्तकारक, कफ, मेद और वातविनाशक है, सारक और लघुतर है।

अन्यच्च।

वृन्ताकं कटु तिक्तमुष्णमधुरं क्षारं क्षुधादीपनं
हृद्यं रुच्यमपित्तलं कफमरुज्जित्सर्वशाकोत्तम्॥
सक्षारं कफवातहारि रुचिकृद्वह्नेस्तु संदीपनं
तिक्तोष्णं मधुरं तथा कटुरसमीषच्च पित्तप्रदम्॥ (त्रि०)

अर्थ-बैंगन-कटु, तिक्त, गरम, मधुर, क्षार, क्षुधाको दीपनकरनेवाला, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, अपित्तल, कफवातनाशक, और सर्वशाकोंमें उत्तम है। और किसी क्षारक साथ कफवातनाशक, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, तिक्त, गरम, मधुर, कटुरसान्वित और किञ्चित् पित्तको कुपित करे है।

अपिच।

वृन्ताकं स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकमपित्तलम्। ज्वरवातबलासघ्नं दीपनं शुक्रलं लघु॥ तद्बालं कफपित्तघ्नं वृद्धं पित्तकरं गुरु।

वृन्ताकं पित्तलं किञ्चिदङ्गारपरिपाचि तत्॥ कफमेदोनिलाघ्नमत्यन्तलघु दीपनम्।तदेव हि गुरु स्निग्धं सतैलं लवणान्वितम् ॥ अपरं श्वेतवृन्ताकं कुक्कुटाण्डसमं भवेत्। तदर्शःसु विशेषेण हितं हीनञ्च पूर्वतः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–बैंगन–स्वादु, तीक्ष्ण, गरम, पाकमें कटु, अपित्तल, ज्वर, वात और कफनाशक, दीपन, शुक्रजनक और हलका है, कच्चा बैंगन–कफपित्तनाशक, पक्का बैंगन–पित्तकारक और भारीहै। अंगारोंपै भुनाहुआ बैंगन किंचित् पित्तकारक है तथा कफ, मेद और वातनाशक और अत्यन्त हलका तथा दीपन है वही अंगारोंपै भुना हुआ बैंगन–तेल और लवणयुक्त, भारी और स्निग्धहै और दूसरा सफेद रंगका बैंगन मुरगेकी अंडेकी समान होता है वह सफेद बैंगन बवासीरवाले मनुष्योंको विशेष करके हितकारी है और पहिले बैंगनोंसे गुणोंमें हीन है। बैंगन सर्वत्र प्रसिद्ध है।

गोराणीनामानि।

गोराणी दृढबीजा च निशांध्यघ्नी च बाकुची।
सुशाका वक्रशिम्बी च गोरक्षफलिनी स्मृता॥

अर्थ–गोराणी, दृढबीजा, निशांध्यघ्नी, बाकुची, सुशाका, वक्रशिम्बी, गोरक्षफलिनी।

संस्कृतभाषामें	गोराणी।
हिन्दीभाषामें	ग्वारकी फली।
मराठीभाषामें	गोवारीच्या शेंगा, बावच्या।
गुजरातीभाषामें	गुवार।
तैलिङ्गीभाषामें	गोराचिकुड्ड।
लैटिन्भाषामें	सोयेमोपासिस् सोरेलियाइडिस्। Cyamopsis Psoralioide.

अस्या गुणाः।

बाकुचिका शिम्बिरूक्षा वातला मधुरा गुरुः।
सरा कफकरी चाग्निर्दीपनी पित्तनाशिनी॥ (नि० र०)
"पत्रमस्या निशांध्यघ्नं पित्तनाशकरं परम्"।

अर्थ–गुवारकी फली–रूखी, बादी, मधुर, भारी, दस्तावर, कफका-

रक, अग्निप्रदीपक और पित्तनाशक है । गुवारके पत्ते-रतौंधको दूरकरनेवाले और पित्तको हरनेवाले हैं ।

हरितनिष्पावीनामानि ।

निष्पावी ग्रामजादिः स्यात्फलिनी नखपूर्व्विका ।
मण्डपा फलिका शिम्बी ज्ञेया गुच्छफला च सा ॥

अर्थ-निष्पावी, ग्रामजा, फलिनी, नखपूर्व्विका, मण्डपा, फलिका, शिम्बी, गुच्छफला (विशालफलिका, निष्पावि, चिपिटा)।

शुभ्रनिष्पावीनामानि ।

अन्यांगुलिफला चैव नखनिष्पाविका स्मृता ।
वृत्तनिष्पाविका ग्राम्या नखपुञ्जफलाशना ॥

अर्थ-अङ्गुलिफला, नखनिष्पाविका, वृत्तनिष्पाविका, ग्राम्या, नखपुञ्जफला, अशना (कपिकच्छुफला)।

संस्कृतभाषामें	निष्पावी, अंगुलिफला ।
हिन्दीभाषामें	सम, सेंबी ।
वंगभाषामें	बारा, वरवटी ।
मराठीभाषामें	घेवडा, लघु घेवडा, थोर घेवडा, वालपापडी
गुजरातीभाषामें	वालोल, पांदडी ।
तामिलीभाषामें	मोच्चिकोटै ।
तैलङ्गीभाषामें	चिकुंडु, अनुमुलु ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाक्सीडेड डोलिकोस । Black secded Dolichos
लैटिन्भाषामें	डोलिकोस् लबलब । Dolichos Lablad
अरबीभाषामें	बिन्स ।

द्विविधनिष्पावीगुणाः ।

निष्पावौ द्वौ हरिच्छुभ्रौ कषायौ मधुरौ रसौ ।
कण्ठशुद्धिकरौ मेध्यौ दीपनौ रुचिकारकौ ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी (हरी और सफेद) निष्पावी-कषेली, मधुर, कण्ठशोधक, मेधाजनक, दीपन और रुचिकारक है ।

अन्यच्च ।

ग्रामजा वातला रुच्या तुवरा मधुरा मता । मुखप्रिया कण्ठशु-

द्धिकारिणी ग्राहिणी मता ॥ अग्निदीप्तिकरी चैव कफपित्तविनाशका । बृहत्तु ग्रामजा रुच्या वातला चाग्निदीपनी । मुखप्रिया च संप्रोक्ता शाकज्ञानविशारदैः ॥ कृष्णा तु ग्रामजा कण्ठ्या मेध्या चाग्निप्रदीपनी।तुवरा च रसे माध्वी रुच्या च ग्राहिणी मता ॥ प्रोक्तांगुलिफला वातकारिणी कफकारिणी । विषनाशकरी प्रोक्ता गुणास्त्वन्ये तु कृष्णवत् । पीतायास्त्वधिका ज्ञेयाः पूर्ववैद्यैर्विचारिभिः । (इति रत्नाकरे)

अर्थ-निष्पावी-बादी,रुचिकारक,कषेली,मधुर, मुखप्रिय,कण्ठको शुद्ध करनेवाली, मलरोधक, अग्निप्रदीपक और कफ तथा पित्तविनाशक है । बडी निष्पावी-रुचिकारक,बादी, अग्निप्रदीपक और मुखप्रिय है । काली निष्पावी-कण्ठको हितकारी,मेधाजनक,अग्निप्रदीपक,कषेली,मधुर,रुचिकारक और मलरोधक है।सफेद निष्पावी-बादी, कफकारक, विषविनाशक और शेष गुण काली निष्पावीकी समान जानने । पीली निष्पावीके गुण सर्वनिष्पावियोंसे अधिक हैं।

शिम्बीनामानि ।

असिशिम्बी खड्गशिम्बी शिंबनी नीलशिम्बिका ।
महाशिम्बी बृहच्छिम्बी स्थूलशिम्बी च शिम्बिका ॥

अर्थ-असिशिम्बी,खड्गशिम्बी, शिम्बिनी, नीलशिंबिका, महाशिंबी, बृहच्छिम्बी, स्थूलशिंबी, शिम्बिका ।

कोलशिम्बीनामानि ।

कोलशिम्बी कृष्णफला खड्गा सूकरपादिका ।
शिम्बी कुशिम्बी कुत्साम्रशिम्बी पुस्तकशिम्बिका ॥

अर्थ-कोलशिम्बी,कृष्णफला,खड्गा,सूकरपादिका,शिम्बी, कुशिम्बी, कुत्साम्रशिम्बी, पुस्तकशिम्बिका (पर्टपंकपादिका) ।

संस्कृतभाषामें	खड्गशिम्बी, कोलशिम्बी ।
हिंदीभाषामें	सेम, सुअरासेम, गोजियासेम ।
वंगभाषामें	शेमगाछ ।
मराठीभाषामें	खडसांबळ, आबईची शेंग ।

गुजरातीभाषामें	परबोलिया, तरवारडी ।
तैलिङ्गीभाषामें	कारुचिकट्टु ।
लैटिन्भाषामें	केनावोलिया एन् सिफोर्मिस् । Canavalia Ensiformis
अरबीभाषामें	गलाफुलगोल ।

द्विविधशिम्बीगुणाः ।

शिम्बिद्वयञ्च मधुरं रसे पाके हिमं गुरु ।
बल्यं दाहहरं प्रोक्तं श्लेष्मलं वातपित्तजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी सेम-मधुर,पाकमेंभी मधुर, शीतल,भारी, बलकारक,दाहनाशक,कफकारक और वातपित्तको जीतनेवाली हैं ·

अन्यच्च ।

कृष्णा सर्वं बली चोष्णा गुर्वी बल्या रुचिप्रदा ।
शुक्राग्निमांद्यजननी मलस्तम्भकरी मता ॥
तुवरा मादका वातकफनुत्पित्तला मता । (नि०र०)

अर्थ-काली सेम-गरम,भारी,बलकारक,रुचिकारक, शुक्रजनक, मन्दाग्निजनक,मलस्तम्भक,कषेली,मदकारक, वातकफनाशक और पित्तकारक है ।

अन्य

असिशिम्बी तु मधुरा कषाया श्लेष्मपित्तजित् ।
व्रणदोषापहंत्री च शीतला रुचिदीपनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सेम-मधुर, कषेली, कफपित्तनाशक, व्रणके विकारोंको हरनेवाली, शीतल और रुचिको दीपन करनेवाली है ।

कोलशिम्बीगुणाः ।

कोलशिम्बी समीरघ्नी गुर्व्युष्णा कफपित्तकृत् ।
शुक्राग्निमांद्यकृद्वृष्या रुचिकृद्बद्धविड्गुरुः ॥

अर्थ-सुअरासेम-वातनाशक,भारी,गरम,कफपित्तजनक,शुक्र और अग्निको मंद करनेवाली,वृष्य,रुचिकारक,मलरोधक और भारी है ।

दधिपुष्पीनामानि ।

दधिपुष्पी खड्गांगी खड्गपर्यंकपादिका कृपा ।

खट्वापादी वंश्या काकाकोलपालिका नवधा ॥

अर्थ–दधिपुष्पी, खट्वाङ्गी, खट्वा, पर्य्यंकपादिका, कूपा, खट्वापादी, वंश्या, काकाकोलपालिका।

संस्कृतभाषामें	दधिपुष्पी।
हिन्दीभाषामें	करियसेम, चमरियासेम।
वंगभाषामें	कट्राशिम्।
मराठीभाषामें	गोंडी कोंहळी।
गुजरातीभाषामें	अडदवेलय–कागडोलिया।
कर्णाटकीभाषामें	कूगरी।
लैटिन्भाषामें	मुक्युनामोनोंस्यरमा। Mucuna Mouospema

अस्या गुणाः।

दधिपुष्पी कटु मधुरा शिशिरा सन्तापपित्तदोषघ्नी।
वातामयदोषकरी गुरुस्तथारोचकघ्नी च ॥(रा॰ नि॰)

अर्थ–चमरियासेम–कटु, मधुर, शीतल, सन्तापनिवारक, पित्तनाशक, वातरोगकारक, भारी और अरुचिको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

दधिपुष्पी तु मधुरा कट्वी शीतोष्णदा मता। वृष्या हृद्या गुरुर्ज्ञेया मलस्तम्भाग्निमांद्यकृत् ॥ रुचिशुक्रप्रदा प्रोक्ता सन्तापारोचकाञ्जयेत्। त्रिदोषशमनी प्रोक्ता पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥ गुरु हृद्यं बीजमस्या रुचिदं स्तम्भकं मतम्। कफाग्निमांद्यकरणं वातं पित्तं च नाशयेत् ॥ (नि॰ र॰)

अर्थ–दधिपुष्पी–करियासेम–मधुर, कटु, शीतल, गरम, वृष्य, हृदयको हितकारी, भारी, मलस्तम्भक, मन्दाग्निकारक, रुचिकारक, शुक्रकारक, सन्तापनाशक, अरुचिको दूर करनेवाली और त्रिदोषनाशक है। इसके बीज–भारी, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, मलस्तम्भक, कफकारक, अग्निमांद्यकारक तथा वात और पित्तको दूर करे हैं।

सौभाञ्जनबीजगुणाः।

सौभाञ्जनफलं स्वादु कषायं कफपित्तनुत्।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्मनुद्दीपनं परम् ॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-सहिंजनेकी फली-स्वादिष्ठ,कषेली, कफपित्तनाशक तथा शूल, कोढ,क्षय, श्वास और गुल्मको दूर करे है तथा दीपन है ।

डोडिकानामगुणाश्च ।

डोडिका विषमुष्टिश्च डोडीत्यपि सुमुष्टिका ।
डोडिका पुष्टिदा वृष्या रुच्या वह्निप्रदा लघुः ॥
हन्ति पित्तकफार्शांसि कृमिगुल्मविषामयान् ।(भा०प्र०)

अर्थ-डोडिका, विषमुष्टि, डोडी,समुष्टिका । डोडी अर्थात् करेरुआ-पुष्टिकारक,वीर्य्यवर्द्धक,रुचिकारक,अग्निजनक, हलकी तथा पित्त,कफ,बवासीर, कृमि, गुल्म और विषक रागोंको दूर करे है ।

मुनिशिम्बीगुणाः ।

मुनिशिम्बी सरा प्रोक्ता बुद्धिदा रुचिदा लघुः । पाककाले तु मधुरा तिक्ता चैव स्मृतिप्रदा ॥ त्रिदोषशूलकफहृत्पाण्डुरोगविषापनुत् । शोषगुल्महरा प्रोक्ता सा पक्वा रूक्षवातला ॥ (नि.र.)

अर्थ-अगस्तियाकी फली-सारक, बुद्धिदायक, हलकी, पचनेमें मधुर, कडवी,स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष,शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष और गुल्मको हरनेवाली है । वही पकी हुई फली-रूखी और बादी करे है ।

शृङ्गाटकनामानि ।

सिंघाडे.

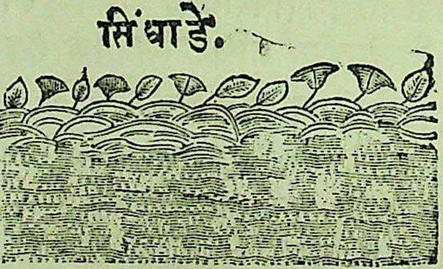

शृङ्गाटकं जलफलं त्रिकोणफलमित्यपि ।

अर्थ-शृङ्गाटक, जलफल, त्रिकोणफल (जलसूचि, संघाटिका, वारिकण्टक, शुक्तदुग्ध, शृङ्गाट, वारिकुब्जक, क्षीरशुक्त,जलकण्टक, शृङ्गरुह, जलवल्ली, जलाशय, शृङ्गकन्द, शृङ्गमूल, विषाणी, जलकन्द, त्रिकोट, त्रिकट, त्रिक) ।

संस्कृतभाषामें	शृङ्गाटक ।
हिन्दीभाषामें	सिंघाडे ।
वंगभाषामें	पाणिफल, सिंघाडे ।
मराठीभाषामें	शिंगाडे ।
गुजरातीभाषामें	शिंगोडा ।
कर्णाटकीभाषामें	सिंघाडे ।
तैलिङ्गभाषामें	पारिकेगड्डु ।
इंग्रेजीभाषामें	वाटरकेलट्राप । Water Caltrop
लेटिनभाषामें	ट्रापाबाईस्पाईनोझ । Trapa Bispinosa
फारसीभाषामें	सुरंजान् ।

अस्य गुणाः ।

शृङ्गाटकं हिमं स्वादु गुरु वृष्यं कषायकम् ।
ग्राहि शुक्रानिलश्लेष्मप्रदं पित्तास्रदाहनुत् (भा० प्र०)

अर्थ-सिंघाडे-शीतल, स्वादिष्ठ, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, कषेले, मलरोधक, शुक्रजनक, वातकारक, कफनाशक, तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करे हैं।

अन्यच्च ।

शृङ्गाटकः शोणितपित्तहारी लघुः खरो वृष्यतमो विशेषात् ।
त्रिदोषतापश्रमशोफहारी रुचिप्रदो मेहनदार्ढ्यहेतुः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-सिंघाडे-रक्तपित्तनाशक, हलके, खर, वृष्यतम, त्रिदोषनाशक, तापनिवारक, श्रमहारक, शोफनाशक, रुचिकारक और लिंगको दृढ करनेवाले हैं।

अन्यच्च ।

शृङ्गाटं गुरु विष्टम्भि शीतलं रक्तपित्तनुत् ॥ (रा०व०)

अर्थ-सिंघाडे-भारी, विष्टम्भकारक, शीतल और रक्तपित्तनाशक हैं।

अपिच ।

शृङ्गाटकश्चातिवृष्यो लघुर्ग्राही रुचिप्रदः । शुक्रलो वातकफकृद्गुरुर्मेहनदार्ढ्यकृत् ॥ तुवरो मधुरः शीतस्तर्पणः स्वादुपित्तजित् । दाहत्रिदोषमेहघ्नो रक्तदोषभ्रमापहः । शोफसन्तापहा प्रोक्तः पूर्ववैद्यैर्महार्षिभिः ॥ (नि०र०)

अर्थ-सिंवाडे अत्यन्त वृष्य, हलके, मलरोधक, रुचिकारक, शुक्रजनक, वात और कफकारी, भारी, लिंगको दृढकरनेवाले, कषेले, मधुर, शीतल, तृप्तिकारक, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक तथा दाह, त्रिदोष, प्रमेह, रुधिरविकार, भ्रम, सूजन और सन्तापको हरनेवाले हैं ।

विवरण-सिंघाडेकी बेल बडे२ सरोवरोंमें होतीहैं, बेलमें तीन धारवाले फल लगते हैं फलके ऊपर तीन कांटोंकी समान अणी होती है फलोंमसे एक मींग निकलती है उस मींगके शाकादि पदार्थ बनातेहैं और उसी मींगको सुखाकर उसका चून बनातेहैं उस चूनकीभी अनेक वस्तु बनाई जातीहैं इस देशमें सिंवाडेका चून फलाहार होगया है ।

अथ नालशाकम् ।

सर्षपनालगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णं सार्षपं नालं वातश्लेष्मव्रणापहम् ।
कण्डूक्रिमिहरं दद्रुकुष्ठघ्नं रुचिकारकम् ॥

अर्थ-सरसोंकी नाल-तीक्ष्ण, गरम, रुचिकारक तथा वात, श्लेष्म, व्रण, कण्डू, कृमि दद्रु और कुष्ठका नाश करे है ।

सूरणनालगुणाः ।

नालं तु सूरणं रुच्यं कफवातहरं लघु ।
अर्शसां तु विशेषेण हितं कामाग्निदीपनम् ॥ (म०वि०)

अर्थ-जमीकन्दकीनाल-रुचिकारी, कफ वातविनाशक, हलकी, कामाग्निदीपक और विशष करके अर्शरोगमें हितकारी है ।

अथ कन्दशाकम् ।

रसोननामानि ।

रसोनो लशुनोऽरिष्टो म्लेच्छकन्दो महौषधः ।
शुक्रकन्दो महाकन्दो वातारिर्दीर्घपत्रकः ॥

अर्थ-रसोन, लशुन, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, महौषध, शुक्रकन्द, महा-

कन्द, वातारि, दीर्घपत्रक (रसुन गृञ्जन, रसोनक, कटुकन्द, राहूच्छिष्ट, राहूत्सृष्ट, भूतघ्न, उग्रगन्ध, यवेनष्ट) ।

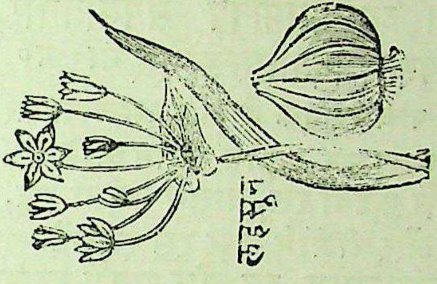

संस्कृतभाषामें	रसोना ।
हिन्दीभाषामें	लशुन लहशन, कांदा ।
बंगभाषामें	लसुन ।
मराठीभाषामें	पांढरी लसूण, तांबडी लसूण ।
गुजरातीभाषामें	लसण ।
कर्णाटकीभाषामें	बिलीयवेल्लुल्ली ।
तैलिङ्गीभाषामें	तेल्लाउल्लीगांडा ।
तामिलीभाषामें	वल्लइपाण्डु ।
इंग्रेजीभाषामें	गार्लिकरूट् । Garlic root
लैटिनभाषामें	एलियंसेटिवं । Ailium Sativum
फारसीभाषामें	सीर ।
अरबीभाषामें	सुम् ईस्कुर्दियून सुमलैहयार ।

अस्य गुणाः ।

पञ्चभिश्च रसैर्युक्तो रसेनाम्लेन वर्जितः । तस्माद्रसोन इत्युक्तो द्रव्याणां गुणवेदिभिः ॥ कटुकश्चापि मूलेषु तिक्तः पत्रेषु संस्थितः । नाले कषाय उद्दिष्टो नालाग्रे लवणः स्मृतः ॥ बीजे तु मधुरः प्रोक्तो रसस्तद्गुणवेदिभिः । रसोनो बृंहणो वृष्यो स्निग्धोष्णः पाचनः सरः ॥ रस पाके च कटुकस्तीक्ष्णो मधुरको मतः ॥ भग्नसन्धानकृत्कण्ठ्यो गुरुः पित्तास्रवृद्धिदः ॥ बलवर्णकरो मेधाहितो नेत्र्यो रसायनः ॥ हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूल-

विबन्धगुल्मारुचिकासशोफान् ॥ दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तुसमीरणश्वासकफांश्च हन्ति। मद्यं मांसं तथाम्लं च हितं लशुनसेविनाम् । व्यायाममातपं रोषमतिनीरं पयोगुडम् ॥ रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरन्तरम् (भा० प्र०)

अर्थ-लहसन-पांच रसयुक्त है और अम्लरस करके वार्जितहै इस कारण इसको एकरस ऊन अर्थात् रसोन कहते हैं। इसकी जडमें चरपरा रस, पत्तोंमें कडवा रस, नालमें कषेला रस, नालके अगले भागमें लवणरस और बीजोंमें मधुर रस रहताहै। लशुन-बृंहण,वृष्य स्निग्ध, उष्ण, पाचक,सारक, रस और पाकमें चरपरा, तीक्ष्ण,मधुर, भग्नसन्धानकारक, कण्ठको हितकारी,भारी, रक्तपित्तको बढानेवाली, बलकारक, वर्णको सुन्दरकरनेवाली, मेधाकारक, नेत्रोंको हितकारी, और रसायन है। तथा हृदयरोग, जीर्णज्वर, कुक्षिशूल, विबन्ध, गुल्म, अरुचि, खाँसी,सूजन,बवासीर, कोढ,मंदाग्नि,कृमि, वात, श्वास और कफको हरनेवाली है, लहसन सेवनकरनेवाले मनुष्यको मद्य, मांस और अम्ल (खटाई) हितकारीहै। व्यायाम (दंड, कसरत), धूपमें फिरना, क्रोध करना, अत्यन्त जल पीना, दूध और गुड यह लशुन भक्षण करनेवाले मनुष्यको निरन्तर त्यागने चाहिये।

अन्यच्च।

रसोन उष्णः कटुपिच्छिलश्च स्निग्धो गुरुः स्वादुरसोऽथबल्यः। वृष्यःसुमेधास्वरवर्णकारीभग्नस्यसन्धानकरःसुतीक्ष्णः(रा.नि.)

अर्थ-लशुन-गरम, चरपरी, पिच्छिल, स्निग्ध, भारी, स्वादिष्ठ बलकारक,वीर्य्यवर्द्धक,मेधाजनक, स्वरको उत्तमकरनेवाली, वर्णको सुंदरकरनेवाली, भग्नसन्धानकारक और तीक्ष्ण है।

अपश्च।

रसोनः सर्वांगं प्रसरति मरुन्नाशनकरःसरो वृष्यःस्निग्धो गुरुररुचिकासज्वरहरः। कफं श्वासं गुल्मं क्षपयति च केश्यः कृमिहरः प्रमेहार्शःकुष्ठश्वयथुहर उक्तस्त्वशिशिरः ॥ प्रभग्ने सन्धानो रुधिरयुतपित्त प्रकुरुते जराव्याधिध्वंसी पचयति च शूलप्रशमनः।

अर्थ-लहसन-शरीरमें सर्वप्रकारकी फैलीहुई वातकी पीडाका नाश करनेवाली, सारक, वृष्य, स्निग्ध, भारी, अरुचिको दूर करनेवाली, खाँसीको हरनेवाली, ज्वरका नाश करनेवाली तथा कफ, श्वास और गुल्मका विनाश करनेवाली, केशोंको हितकारी, कृमिनाशक, प्रमेह, ववासीर, कोढ और सूजनको क्षय करनेवाली, गरम, भग्नसन्धानकारक, रक्तपित्तको कुपित करनेवाली, शूलको शान्ति करनेवाली और जराव्याधिका नाश करे है ।

पलाण्डुनामानि ।

पलाण्डुर्यवनेष्टश्च दुर्गन्धो मुखदूषकः ।

अर्थ-पलाण्डु, यवनेष्ट, दुर्गन्ध, मुखदूषक (सुकन्दक, निकेतन, नीचभोज्य, लोहितकन्द, तीक्ष्णकन्द, उष्ण, मुखदूषण, शूद्रप्रिय, दीपन, कृमिघ्न, मुखगन्धक, बहुपत्र, विश्वगन्ध, रोचन, पलाण्डु, सुकन्द, सुकन्दक, मुकुन्दक) ।

राजपलाण्डुनामानि ।

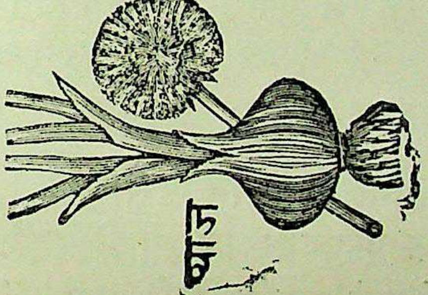

अन्यो राजपलाण्डुः स्याद्यवनेष्टो नृपाह्वयः । राजप्रियो महाकन्दो दीर्घपत्रश्च रोचकः ॥ नृपेष्टो नृपकन्दश्च महाकन्दो नृपप्रियः । रक्तकन्दश्च राजेष्टो नामान्यत्र त्रयोदश ॥

अर्थ-राजपलाण्डु, यवनेष्ट, नृपाह्वय, राजप्रिय, महाकन्द, दीर्घपत्र, रोचक, नृपेष्ट, नृपकन्द, महाकन्द, नृपप्रिय, रक्तकन्द, राजेष्ट ।

संस्कृतभाषामें	पलाण्डु, राजपलाण्डु ।
हिन्दीभाषामें	प्याज, लालप्याज ।
वंगभाषामें	पेंयाज, लालपेंयाज ।
मराठीभाषामें	पांढराकांदा, लालकांदा, पातीचा कांदा ।

गुजरातीभाषामें	डुंगली
कर्णाटकीभाषामें	लोहिबी उल्लि-केंपिन उल्लि ।
तैलङ्गीभाषामें	नीरउली ।
तामिलीभाषामें	वेङ्गयम् ।
इंग्रेजीभाषामें	बल्ब ओंयिन । (Bulb) onion
लैटिन्भाषामें	एलीयंसेपा । Allium sepa ।
फारसीभाषामें	प्याज ।
अरबीभाषामें	बसल् ।

पलाण्डुगुणाः ।

पलाण्डुः कटुको बल्यः कफपित्तहरो गुरुः ।
वृष्यश्च रोचनः स्निग्धो वान्तिदोषविनाशनः ॥ (रा. नि.)

अर्थ-प्याज-चरपरी, बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वृष्य, रोचन, स्निग्ध और वमनके दोषको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पलाण्डुर्वातकफहा शुक्रलः शूलगुल्मनुत् । (हा० सं०)

अर्थ-प्याज-वातकफनाशक, शुक्रजनक तथा शूल और गुल्मका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

पलाण्डुस्तु बुधैर्ज्ञेयो रसोनसदृशो गुणैः ।
स्वादुः पाकरसेऽनुष्णः कफकृन्नातिपित्तलः ॥
हरते केवलं वातं बलवीर्य्यकरो गुरुः । (भा० प्र०)

अर्थ-प्याजके गुण लहसुनके गुणोंकी समान जानने। प्याज स्वादुपाकी, स्वादिष्ठ, अनुष्ण, कफकारक, अत्यन्त पित्तकारक नहीं, वातविनाशक, बलकारी, वीर्य्यजनक और भारी है ।

राजपलाण्डुगुणाः ।

पलाण्डुर्नृपपूर्वः स्याच्छिशिरः पित्तनाशनः ।
कफहृद्दीपनश्चैव बहुनिद्राकरस्तथा ॥

अर्थ-लालप्याज-शीतल, पित्तनाशक, कफहारक, दीपन और अत्यन्त निद्राकारक है ।

अन्यच्च ।

वक्ष्यते नृपपलाण्डुलक्षणं क्षारतीक्ष्णमधुरो रुचिप्रदः ।
कण्ठशोषशमनोऽतिदीपनः श्लेष्मपित्तशमनोऽतिबृंहणः ॥

अर्थ–लालप्याज–क्षार, तीक्ष्ण मधुर, रुचिकारक, कण्ठशोषको दूर करनेवाली, अत्यन्त दीपन, कफ पित्तनाशक और अत्यन्त बृंहण है।

पलाण्डुबीजगुणाः ।

बीजं पलाण्डोर्वृष्यं स्याद्दन्तकीटप्रमेहजित् । (रत्नाकर)

अर्थ–प्याजके बीज–वृष्य तथा दांतोंके कीडे और प्रमेहको दूर करनेवाले हैं ।

मूलकनामानि ।

मूलकं हरिपर्णञ्च भूमिकाक्षार एव च ।
नीलकण्ठं महाकन्दं रुचिष्यं हस्तिदन्तकम् ॥

अर्थ–मूलक, हरिपर्ण, भूमिकाक्षार, नीलकण्ठ, महाकन्द, रुचिष्य, हस्तिदन्तक(राजालुक, करुकन्दक, हस्तिदन्त, मूलाह्व, दीर्घमूलक, दीर्घपत्रक, मृत्क्षार, कन्दमूल, सित, शंखमूल, रुचिर, दीर्घकन्दक, कुञ्जर, क्षारमूल, शिम्बी फल)

चाणक्यमूलकनामानि ।

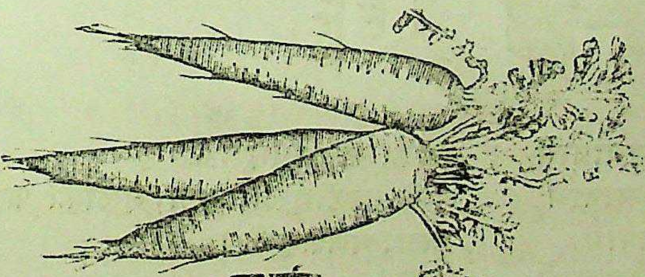

चाणक्यमूलकं चान्यद्द्वानेयं विष्णुगुप्तकम् ।
स्थूलमूलं महाकंदं कौटिल्यं मरुसम्भवम् ॥
शालमर्कटकं मिश्रं ज्ञेयं चैव नवाभिधम् ।

अर्थ–चाणक्यमूलक, वानेय, विष्णुगुप्तक, स्थूलमूल, महाकन्द, कौटिल्य, मरुसम्भव, शालामर्कट, मिश्र।

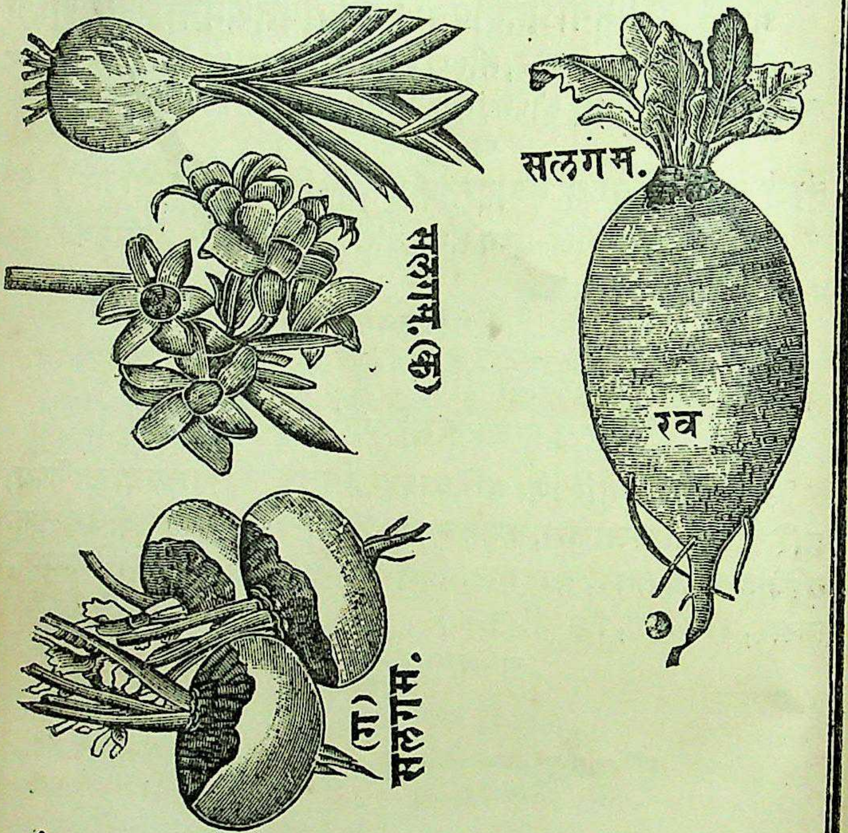
सलगम.
(क) सलगम.
ख
(ग) सलगम.

संस्कृतभाषामें	मूलक, चाणक्यमूलक।
हिन्दीभाषामें	मूली, बडीमूली, मूला, मूलीकी फली।
वंगभाषामें	मुला, चणकमूली।
मराठीभाषामें	मूळा।
गुजरातीभाषामें	मूला, मूलाफली, मोगरी।
कर्णाटकीभाषामें	मुलंगी।
तैलिंगीभाषामें	शूतिंदंपा।
इंग्रेजीभाषामें	रेडीश। Radish
लैटिन्भाषामें	रफेनम् स्लेटिवस्। Raphanus Slativus

फारसीभाषामें	तुख तुख्मतुख ।
अरबीभाषामें	फजल् बजरुल् ।

मूलकगुणाः ।

मूलकं तीक्ष्णमुष्णञ्च कटूष्णं ग्राहि दीपनम् ।
दुर्नामगुल्महृद्रोगवातघ्नं रुचिदं गुरु ॥

अर्थ-मूली-तीक्ष्ण,गरम, कटु,उष्ण,ग्राही, दीपन,तथा बवासीर, गुल्म,हृदयरोग और वातका नाश करे है,रुचिकारी और भारी है।

चाणक्यमूलकगुणाः ।

चाणक्यमूलकं सोष्णं कटुकं रुच्यदीपनम् ।
कफवातकृमीन्गुल्मं नाशयेद्ग्राहकं गुरु ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बडीमूली-गरम,चरपरी, रुचिकारक, दीपन, कफवातनाशक, कृमिघ्न, गुल्मनाशक, ग्राही और भारी है।

अन्यच्च ।

लघुमूलकमुष्णं स्याद्रुच्यं लघु च पाचनम् । दोषत्रयहरं स्वर्य्यं ज्वरश्वासविनाशनम् ॥ नासिकाकण्ठरोगघ्नं नयनामयनाशनम् । महत्तदेव रूक्षोष्णं गुरु दोषत्रयप्रदम् ॥ स्नेहसिद्धं तदेव स्याद्दोषत्रयविनाशनम् । (भा० प्र०)

अर्थ-छोटी मूली-गरम,रुचिकारक, हलकी, पाचक, त्रिदोषनाशक,स्वरको शुद्ध करनेवाली तथा ज्वर, श्वास, नासिकारोग,कण्ठरोग और नेत्ररोगको दूर करे है । बडी मूली-रूखी, गरम, भारी, त्रिदोषनाशक । वही मूली तेलमें सिद्ध की हुई त्रिदोषनाशक होजाती है ।

अन्यच्च ।

मूलकं गुरु विष्टम्भि तीक्ष्णमामं त्रिदोषकृत् । तदेव स्नेहपक्वं चेत्कफकृद्वातपित्तजित् ॥ शुष्कं त्रिदोषशमनं शोथघ्नं गरजिल्लघु । तत्पुष्पं कफपित्तघ्नं तत्फलं कफवातजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कच्ची मूली-भारी, विष्टम्भकारी, तीक्ष्ण और त्रिदोषजनक है । वही तेल घृतादिमें पकाई हुई-कफकारक और वातपित्तहारक होजाती है । सूखी मूली-त्रिदोषनाशक, शोथनिवारक,विषनाशक और हलकी है।मूलीके फूल-कफ पित्तनाशक और मूलीको फली-कफवातनाशक है ।

अपिच।

बालं तु मूलकं तिक्तं कटूष्णं च रुचिप्रदम्। लघ्वग्निदीपकं हृद्यं तीक्ष्णं तु पाचकं सरम्॥ मधुरं ग्राहकं बल्यं मूत्रदोषार्शनाशनम्। गुल्मक्षयश्वासकासनेत्ररोगविनाशकम् ॥ नाभिशूलं कफं वातं कण्ठरोगविनाशकम् । त्रिदोषदद्रुशूलघ्नमुदावर्त्तप्रणुत्परम् ॥ पीनसं च व्रणं चैव नाशयेदितिकीर्तितम् । जीर्णमूलं चोष्णवीर्य्यं शोषं च दाहपित्तकृत् ॥ रक्तदोषकरं चैव ऋषिभिः परिकीर्त्तितम् । पक्वमूलं तु कटुकं चोष्णमग्निकरं मतम् ॥ भक्षिते भोजनात्पूर्वं पित्तदाहप्रकोपनम्॥ भोजनोत्तरवेलायां भक्षितं बलदं हितम् ॥ वेसवारयुतं चार्शःशूलहृद्रोगनाशकम्। किंचिदुष्णा मूलशिम्बी कफवातविनाशिनी ॥ मूलपुष्पं कफकरं पित्तकृत्परिकीर्त्तितम् । (रत्नाकर)

अर्थ-कच्ची मूली-कडवी, चरपरी, गरम, रुचिकारक, हलकी, अग्निप्रदीपक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, पाचक, सारक, मधुर, ग्राही, बलकारी तथा मूत्रदोष, बवासीर, गुल्म, क्षय, श्वास, खांसी नेत्ररोग, नाभिशूल, कफ, वात, कण्ठरोग, त्रिदोष, दाद, शूल, उदावर्त्त, पीनस और व्रणका नाश करे है। पुरानी मूली उष्णवीर्य्य तथा शोष, दाह, पित्त और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है। पक्की मूली-चरपरी, गरम, अग्निजनक है, यह भोजनसे प्रथम भक्षण करीहुई पित्त और दाहको कुपितकरे है। भोजनके पीछे भक्षण की हुई-बलको करनेवाली और हितकारक है। वेसवारके साथ खाई हुई मूली-बवासीर, शूल और हृदयरोगका नाश करे है। मूलीकी फली-किंचित गरम और कफ वातनाशक हैं। मूलीके फूल-कफकारक और पित्तजनक हैं।

गर्जरनामानि।

गाजरं गृञ्जनं प्रोक्तं तथा नारंगवर्णकम् ॥

अर्थ-गाजर, गृञ्जन, नारंगवर्ण (पिण्डमूल, पीतकन्द, सुमूलक, स्वादुमूल, सुपीत, नारंग, पीतमूलक)।

गृञ्जननामानि ।

गृञ्जनं शिखिमूलं च यवनेष्टं च वर्त्तुलम् ।
ग्रन्थिमूलं शिखाकन्दं कन्दं डिण्डीरमोदकम् ॥

अर्थ-गृञ्जन, शिखिमूल, यवनेष्ट, वर्त्तुल, ग्रन्थिमूल, शिखाकन्द, कंद, डिंडीरमोदक ।

पिण्डमूलनामानि ।

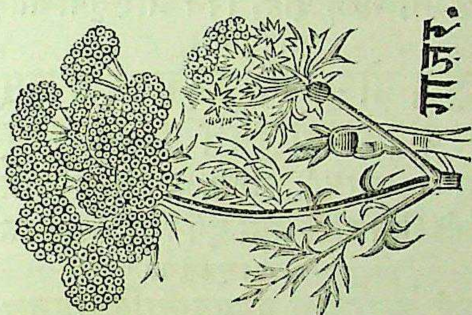

पिण्डमूलं गजीडं च पिण्डिकं पिण्डमूलकम् ।

अर्थ-पिण्डमूल,	गजीड, पिण्डक, पिण्डमूलक ।
संस्कृतभाषामें	गर्जर, गृञ्जन, पिण्डमूल ।
हिन्दीभाषामें	गाजर, जंगली गाजर, गोलमूली ।
वंगभाषामें	गाजर ।
मराठीभाषमें	गाजर, रानगाजर ।
गुजरातीभाषामें	गाजर, पतालुगाजर, अडवाउगाजर ।
कर्णाटकीभाषामें	सेठमूलं, चडिकेयमूलंगी ।
तैलिङ्गीभाषामें	गृञ्जनं ।
इंग्रेजीभाषामें	क्यारटरूट Carrotroot कारटसीड्स । Carrotseeds
लैटिन्भाषामें	डाक्सकेरोटा । Daucus carota
फारसीभाषामें	जर्दक, गजर, गजरेदस्ति तुख्मेजर्दक ।
अरबीभाषाभें	जजर, जजरेबरिं बजरुल्जजर ।

गर्जरगुणाः ।

गाजरं मधुरं तीक्ष्णं तिक्तोष्णं दीपनं लघु ।
संग्राहि रक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गाजर-मधुर, तीक्ष्ण, कडवी, गरम, दीपन, हलकी, मलरोधक तथा रक्तपित्त, बवासीर, संग्रहणी, कफ और वातका नाशकरे है।

अन्यच्च।

गाजरं मधुरं रुच्यं किञ्चित्कटु कफापहम्।
आध्मानक्रिमिशूलघ्नं दाहपित्ततृषापहम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-गाजर-मधुर, रुचिकारक, किञ्चित् चरपरी, कफनाशक तथा आध्मान, कृमि, शूल, दाह, पित और तृषाको दूर करे है।

गृञ्जनगुणाः।

गृञ्जन कटु चोष्णं हि कफवातरुजापहम्।
रुच्यं च दीपनं हृद्यं दुर्गंधं गुल्मनाशनम्॥

अर्थ-जंगलीगाजर-चरपरी, गरम, कफवातरोगनाशक, रुचिकारक, दीपन, हृदयको हितकारी तथा दुर्गंध और गुल्मका नाश करेहै।

पिण्डमूलगुणाः।

पिण्डमूलं कटूष्णञ्च गुल्मवातादिदोषनुत्।

अर्थ-गोलमूली-चरपरी, गरम तथा गुल्म और वातादि दोषोंको दूर करनेवाली है।

सूरणनामानि

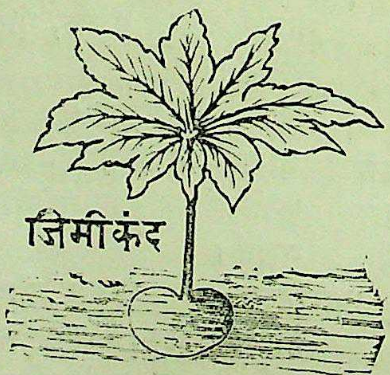

सूरणः कन्द ओल्लश्च कन्दलोऽशोंघ्न इत्यपि॥

अर्थ-सूरण, कंद, ओल्ल, कन्दल, अर्शोघ्न, (सूरण, ओल, कण्ठाल, कण्डुल, कन्दी. सुकन्दी, स्थूलकन्दक, दुर्नामारि, सुवृत्त, वातारि, कन्दशूरण, तीव्रकण्ठ, कंदार्ह, कन्दवर्द्धन, बहुकन्द, रुच्यकन्द, शूरणकन्द)।

संस्कृतभाषामें	शूरण ।
हिन्दीभाषामें	सूरन, जिमीकन्द ।
वंगभाषामें	ओल ।
मराठीभाषामें	गोडा सुरण । खाजेरा सुरण ।
गुजरातीभाषामें	सूरण ।
कर्णाटकीभाषामें	सूरण
तौलिङ्गीभाषामें	मंचाकन्दा, दोलकन्दा ।
तामिलभाषामें	सूरण ।
लैटिन्भाषामें	एमोर्फोफेलस् पेनिक्युलेटस् । Amorphophallus (-paniculatus
फारसीभाषामें	ओल ।

अस्य गुणाः ।

सुरणो दीपनो रूक्षःकषायःकण्डुकृत्कटुः । विष्टम्भी विशदो रुच्यः कफार्शःकृन्तनो लघुः ॥ विशेषादर्शसि पथ्यः प्लीहगुल्मविनाशनः । सर्वेषां कन्दशाकानां सूरणः श्रेष्ठ उच्यते ॥ दद्रूणां रक्तपित्तानां कुष्ठिनां न हितो हि सः।संधानो योगसम्प्राप्तसूरणो गुणवत्तमः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सूरण—जमीकन्द-रूखा, कषेला, खुजलीको करनेवाला, चरपरा,विष्टम्भकारक, विशद. रुचिकारक, कफनाशक,बवासीरको दूर करनेवाला हलका,विशेषकरकेअर्शरोगवालोंको हितकारी है तथा प्लीहा और गुल्मरोगोंका नाशकरे है यह दाद, रक्तपित्त और कुष्ठरोगवालोंको हितकारी नहीं है इसका सन्धान अधिक गुणकारी है ।

अन्यच्च ।

सूरणश्च कटुरुच्यर्दीपनः पाचनः कृमिकफानिलापहः।
श्वासकासवमनार्शसां हरः शूलगुल्मशमनोस्रदोषकृत्॥

अर्थ-जमीकन्द-चरपरा, रुचिकारक, दीपन, पाचक, कृमिघ्न, कफवातनाशक तथा श्वास,खांसी, वमन, बवासीर,शूल और गुल्म रोगको दूरकरेहै तथा रुधिरक विकारोंको उत्पन्न करे है ।

सूरणो दीपनो रुच्यः कफघ्नो विशदो लघुः ।
विशेषादर्शसां पथ्यो ग्राम्यकन्दस्तु दोषलः ॥

अर्थ-जमीकन्द-दीपन, रुचिकारक, कफनाशक, विशद, हलका, विशेष करके बवासीर रोगवालोंको पथ्य है और नगरका पैदाहुआ जिमिकन्द दोषजनक है।

वनसूरणनामानि।

वज्रकन्दः सुरेन्द्रः स्याद्वन्योऽन्यश्चित्रकन्दकः ।

अर्थ-वज्रकन्द, सुरेन्द्र, वन्य, चित्रकन्दक (सितसूरण, वनकन्द, अरण्यसूरण, वनज, श्वेतसूरण, वनओल्ल) ।

अस्य गुणाः।

तद्वद्वन्यो वज्रकन्दः कफघ्नः पित्तरक्तकृत् ।

अर्थ-जंगली सूरणके गुणभी सूरणकेही समान हैं, कफनाशक और पित्तकारक है।

अन्यच्च।

वज्रसूरणको रुच्यः कटूष्णः कृमिनाशनः।
गुल्मशूलादिदोषघ्नः स चारोचकहारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वनसूरण-रुचिकारी, चरपरा, कृमिनाशक, गरम, गुल्म, शूलादिकरोगनाशक और अरुचिको हरनेवाला है।

रक्तालुनामानि।

रक्तस्तु रक्तपिण्डालू रक्तालू रक्तपिण्डकः।
लोहितो रक्तकन्दश्च लोहितालुः षडाह्वयः ॥

अर्थ-रक्त, रक्तपिण्डालु, रक्तालु, रक्तपिण्डक, लोहित, रक्तकन्द, लोहितालु।

पिण्डालुनामानि।

श्वेतः पिण्डीतकः पिण्डकन्दो रोमशकन्दकः ।
कन्दग्रन्थिश्च पिण्डालुः पिच्छिलः स्वादुकन्दकः ॥

अर्थ-पिण्डीतक, पिण्डकन्द, रोमशकन्दक, कन्दग्रन्थि, पिण्डालु, पिच्छिल, स्वादुकन्दक।

संस्कृतभाषामें	रक्तालु, पिण्डालु।
हिंदीभाषामें	रतालु, पिण्डालु, काँदु, शकरकन्दी।
वंगभाषामें	लालपिण्डालु. गोलआलु, चुवडिआलु।

मराठीभाषामें	लाल रताळें, पांढरें रताळें ।
गुजरातीभाषामें	रतालु, सकरकन्द, श्वतालु ।
कर्णाटकीभाषामें	केपिनहेंडळ, विलयहेंडल ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिरेगड्डु ।
तामिलीभाषामें	यामस्कोलं ।
औत्क०	घराअलु ।
इंग्रेजीभाषामें	स्वीट्पोटेटो Sweet potato
लैटिन्भाषामें	बटाटास् एस् क्युलेटस् Batatas Esculafus ब. एड्युलीस् B. Edulis
फारसीभाषामें	जरदाक लहोरी ।

रक्तालुगुणाः ।

रक्तपिण्डालुकः शीतो मधुराम्लः श्रमापहः ।
पित्तदाहापहो वृष्यो बलपुष्टिकरो गुरुः ॥

अर्थ-रतालु-शीतल, मधुर, अम्ल, श्रमनाशक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, वृष्य, बलकारक, पुष्टिजनक और भारी हैं ।

पिण्डा [श्वेता] लुर्मधुरः शीतो मूत्रकृच्छ्रामयापहः ।
दाहशोषप्रमेहघ्नो वृष्यः सन्तर्पणो गुरुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पिंडालु-मधुर, शीतल, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, दाहनिवारक शोषनाशक, प्रमेहकोहरनेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक औरभारीहैं।

पिण्डालुकं कफकरं गुरु वातप्रकोपनम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-पिंडालु-कफकारक, भारी और वातको कुपितकरनेवालेहैं।

आलुकीगुणाः ।

राजालुभेदः सम्प्रोक्तश्चारुई इति नामतः ।
मलावष्टम्भकः स्निग्धो जडो बलकरो मतः ।
कफनाशकरश्चैव तैले पक्को रुचिप्रदः ॥ (नि० र०)

अर्थ-रतालुका भेद अरुई है। अरुई-मलस्तम्भक, स्निग्ध, जड, बलकारक, कफनाशक और यह तेलमें पकाईहुई रुचिकारक है ।

गजकर्णालुनामानि ।

आलुकं दीर्घनालश्च तीक्ष्णकन्दं सुकन्दकम् ।

महापत्रालुकं चैव हस्तिकर्णं च तत्स्मृतम् ॥

अर्थ-आलुक, दीर्घनाल, तीक्ष्णकन्द, सुकन्दक, महापत्रालुक हस्तिकर्ण ।

संस्कृतभाषामें	गजकर्णालु ।
हिंदीभाषामें	घुय्याँ, आलु ।
मराठिभाषामें	अळवाचा कांदा ।
गुजरातीभाषामें	अलवी ।
तैलिंगभाषामें	सारकंदा ।
इंग्रजीभाषामें	ग्रेटलीव्ड, केलेडचम् । Great leaved caledium
लैटिनभाषामें	एरम् इण्डिकम् । Erum indicum
अरबीभाषामें	ढुयांकलकाश ।

गजकर्णीगुणाः।

गजकर्णीतु तिक्तोष्णा तथा वातकफाञ्जयेत्।शीतज्वरहरी स्वादुः पाके तस्यास्तु कन्दकः॥ पाण्डुशोथकृमीगुल्मप्लीहानाहोदरापहः।ग्रहण्यर्शोविकारघ्नो वनसूरणकन्दवत्॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-गजकर्ण-कडवा, गरम, वातकफनाशक, शीतज्वरनाशक, इसका कन्द पाकमें स्वादिष्ठ तथा पाण्डुरोग, सूजन, कृमि, गुल्म, प्लीहा, आनाह,उदररोग, संग्रहणी और बवासीरको दूर करनेवाला है और वनसूरणके समान है ।

सुखालुनामानि ।

सुखालुर्मण्डपारोहो दीर्घकन्दस्तु कन्दकः ।
स्थूलकन्दो महाकन्दः स्वादुकन्दश्च सप्तधा ॥

अर्थ-सुखालु, मण्डपारोह, दीर्घकन्द, सुकन्दक, स्थूलकन्द, महाकन्द, स्वादुकन्द ।

सुखालुगुणाः ।

सुखालुः स्यान्मधुरः शिशिरः पित्तनाशनः ।
रुचिकृद्वातकृच्चैव दाहशोषतृषापहः ॥

अर्थ-सुखालु-मधुर, शीतल, पित्तनाशक,रुचिकारक, वातवर्द्धक था.दाह, शोष और तृषाको हरनेवालाहै ।

कासालुनामानि।

कासालुः कासकन्दश्च कन्दालुश्चालुकश्च सः।
आलुर्विशालपत्रश्च पत्रालुश्चेति सप्तधा॥

अर्थ-कासालु, कासकन्द, कन्दालु, आलुक, आलु, विशालपत्र, पत्रालु।

कासालुगुणाः।

कासालुरुग्रकण्डूतिविषश्लेष्मामयापहः।
अरोचकहरः स्वादुः पथ्यो दीपनकारकः॥ (रा० नि०)

अर्थ-कासालु-उग्र, कण्डूको हरनेवाला, विषघ्न, कफरोगनाशक, अरुचिको दूर करनेवाला, स्वादिष्ठ, पथ्य और अग्निको दीपन करैहै।

अन्यच्च।

कासालुकं कण्डुकरं मधुरं पथ्यकारकम्।
दीपनं रुचिदं प्रोक्तं कफवातरुजापहम्॥ (नि० र०)

अर्थ-कासालु-कण्डूको उत्पन्न करनेवाला, मधुर, पथ्यकारक, दीपन, रुचिकारक तथा कफ और वातरोगका नाश करनेवाला है।

फौंडालुनामानि।

फोण्डालुर्लोहितालुश्च रक्तपत्रो मृदुच्छदः॥

अर्थ-फोण्डालु, लोहितालु, रक्तपत्र, मृदुच्छद।

फोण्डालुगुणाः।

फोण्डालुः श्लेष्मवातघ्नः कटूष्णो दीपनीयकः॥

अर्थ-फोण्डालु-कफवातविनाशक, चरपरे, गरम और अग्निको दीपन करनेवाले हैं।

पानीयालुनामानि।

पानीयालुर्जलालुः स्यादनूपालुरवालुकः।

अर्थ-पानीयालु, जलालु, अनुपालु, अवालुक।

पानीयालुगुणाः।

पानीयालुस्त्रिदोषघ्नः सन्तर्पणकरः परः॥

अर्थ-पानीयालु-त्रिदोषनाशक और तृप्तिकारक है।

नीलालुनामानि।

नीलालू रसिकालुः स्यात्कृष्णालुः श्यामलालुकः।

अर्थ-नीलालु, रसिकालु, कृष्णालु, श्यामलालुक।

नीलालुगुणाः ।

नीलालुर्मधुरः शीतः पित्तदाहश्रमापहः ।

अर्थ-नीलालु-मधुर, शीतल तथा पित्त, दाह और श्रमको दूर करेहै ।

शुभ्रालुनामानि ।

शुभ्रालुर्महिषीकन्दो लुलायकन्दश्च शुक्लकन्दश्च ।
सर्पाख्यो वनवासी विषकन्दो नीलकन्दान्यः ॥

अर्थ-शुभ्रालु-महिषीकन्द, लुलायकन्द, शुक्लकन्द, सर्पाख्य, वनवासी, विषकन्द, नीलकन्द ।

शुभ्रालुगुणाः ।

कटूष्णो महिषीकन्दः कफवातामयापहः ।
मुखजाड्यहरो रुच्यो महासिद्धिकरः सितः ॥

अर्थ-भैंसाकन्द-चरपरा, गरम, कफ वात,रोगनाशक, मुखकी जडताको हरनेवाला, रुचिको करनेवाला और सफेद रंगका महासिद्धिकारक है ।

हस्तिकन्दनामानि ।

हस्तिकन्दो हस्तिपत्रः स्थूलकंदोतिकन्दकः । बृहत्पत्रोऽतिपत्रश्च हस्तिकर्णस्तु कर्णकः ॥ त्वग्दोषारिः कुष्ठहन्ता गिरिवासी नगाश्रयः।गजकन्दोनागकन्दो ज्ञेयो वै सप्तनामकः ॥

अर्थ-हस्तिकन्द, हस्तिपत्र, स्थूलकन्द, आतिकन्दक, बृहपत्र, आतिपत्र, हस्तिकर्ण, कर्णक, त्वग्दोषारि, कुष्ठहन्ता, गिरिवासी, नागाश्रय, गजकन्द, नागकन्द ।

हस्तिकन्दगुणाः ।

हस्तिकन्दः कटूष्णः स्यात्कफवातामयापहः ।
त्वग्दोषघ्नो महाकुष्ठविषवैसर्पनाशकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-हस्तिकन्द-चरपरा, गरम, कफवातरोगनाशक तथा त्वचाके विकारनाशक, महाकुष्ठ,विष और विसर्परोगको नाश करे हैं।

हस्तिकन्दः स्मृतश्चोष्णः कटुको मधुरो गुरुः ।

शोफं कफं रक्तदोषं वातं कुष्ठं विसर्पकम् ॥
त्वग्दोषं नाशयत्येवं मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-हस्तिकन्द-गरम, चरपरा, मधुर, भारी, तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, वात, कोढ, विसर्प और त्वचाके दोषाको दूर करेहै ।

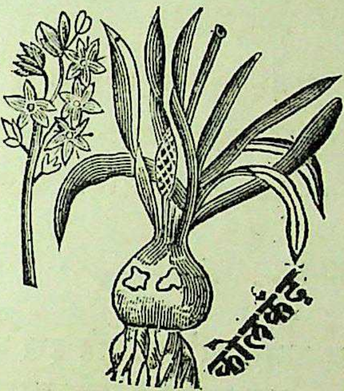

कोलकन्दनामानि ।

कोलकन्दः कृमिघ्नश्च पञ्जलो वस्त्रपञ्जलः ।
पुटालुः सुपुटश्चैव पुटकन्दश्च सप्तधा ॥

अर्थ-कोलकन्द, कृमिघ्न, पञ्जल, वस्त्रपञ्जल, पुटालु, सुपुट पुटकन्द

कोलकन्दगुणाः ।

कोलकन्दः कटुश्चोष्णः कृमिदोषविनाशनः ।
वान्तिविच्छर्दिशमनो विषदोषनिवारणः ॥

अर्थ-कोलकन्द-चरपरा, गरम, कृमिरोगनाशक, वान्तिको शान्त करनेवाला, दुष्ट वान्तिको हरनेवाला और विषके विकारोंको दूर करनेवाला है ।

वाराहीकन्दनामानि ।

वाराहीकन्द एवान्यैश्चर्मकारालुको मतः ।
अनूपे स भवेद्देशे वराह इव लोमवान् ॥

अर्थ-वाराहीकन्द, चर्मकारालुक, (विष्वक्सेनप्रिया, घृष्टि, बदराकच्छा, वनमालिनी, गृष्टि, बिल्वमूला, शूकरी, क्रोडकन्या, विष्वक्सेनकान्ता, वराही, कौमारी, त्रिनेत्रा, ब्रह्मपुत्री, क्रोडी, कन्या, माधवेष्टा गृष्टिका, शूकरकन्द, क्रोड, वनवासी, कुष्ठनाशक, बल्य, अमृत, महावीर्य्य, शम्बरकन्द, वराहकन्द, वीर, ब्राह्मीकन्द, महौषध, सुकन्दक, वृद्धिद, व्याधिहन्ता, मागधी) ।

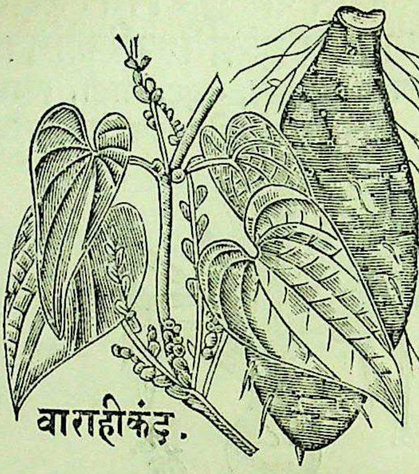

वाराहीकंद.

विवरण। यह कन्द अनूपदेशमें होताहै इस कन्दके ऊपर सूअर की समान बाल होतेहैं इस कारण इसको वाराहीकन्द कहतेहैं।

संस्कृतभाषामें	वाराहीकन्द।
हिन्दीभाषामें	गेंठी, भिवौंलीकन्द।
वंगभाषामें	चामालु, चुवाडिआलु।
मराठीभाषामें	डुकरकन्द।
गुजरातीभाषामें	वाराहीकन्द,सुअरिया सालिवणावेल्य।
कर्णाटकीभाषामें	हांदिगेट्टे।
तैलिंगीभाषामें	ब्राह्मदंचिट्टु। पाञ्चिताके, नेलताडिचेट्टु
लैटिन्भाषामें	डायोरकोरियासेटिवा। Diorcorea Sativa

वाराहीगुणाः।

वाराही पित्तला बल्या कट्वी तिक्ता रसायनी।
आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥ (भावप्रका०)

अर्थ-वाराहीकन्द-पित्तजनक, बलकारक, चरपरा, कडवा, रसायन तथा आयु, शुक्र और जठराग्निको बढानेवाला है और प्रमेह, कफ, कोढ और वातका नाश करे है।

अन्यच्च।

वाराही तिक्तकटुका विषपित्तकफापहा ॥
कुष्ठमेहकृमिहरा वृष्या बल्या रसायनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वाराहीकन्द-कडवा, चरपरा, वृष्य, बलकारक तथा विष, पित्त, कफ, कोढ, प्रमेह और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वाराहकन्दश्चार्शोघ्नो वातगुल्मनिवारणः । (आ०)

अर्थ-वाराहीकन्द-बवासीर, बात और गुल्मरोगका नाश करनेवाला है ।

अपिच ।

वाराहकन्दः कटुकस्तिक्तो बल्यश्च पित्तलः । रसायनः शुक्रलश्च वृष्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मधुरोष्णो वर्णकरः स्वर्य्यश्चायुर्विवर्द्धनः । कुष्ठं मेहं त्रिदोषञ्च कफं वातं कृमींस्तथा ॥ मूत्रकृच्छ्रहरः प्रोक्तो वैद्यैर्विद्याविशारदैः । (नि० र०)

अर्थ-वाराहीकन्द-चरपरा, कडवा, बलकारक, पित्तजनक, रसायन, शुक्रजनक, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, मधुर, गरम, वर्णकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, आयुवर्द्धक तथा कोढ, प्रमेह, त्रिदोष, कफ, वात, कृमि और मूत्रकृच्छ्र रोगको नाश करे है ।

विवरण । वाराहीकंदको कहीं गेंठी और कहीं अगोठी तथा सूअर कंदभी कहतेहैं। यह पृथ्वीमें गुडकी भेलीकी समान होताहै। पत्ते कटीले बडे बडे अनीदार होतेहैं, इसपर सूअरकी समान बाल होतेहैं ।

विष्णुकन्दनामानि ।

विष्णुकन्दो विष्णुगुप्तः सुपुष्टो बहुसम्पुटः ।
जलवासा बृहत्कन्दो दीर्घवृत्तो हरिप्रियः ॥

अर्थ-विष्णुकन्द, विष्णुगुप्त, सुपुष्ट, बहुसम्पुट, जलवासा, बृहत्कन्द, दीर्घवृत्त, हरिप्रिय ।

विष्णुकन्दगुणाः ।

विष्णुकन्दस्तु मधुरः शिशिरः पित्तनाशनः ।
दाहशोफहरो रुच्यः सन्तर्पणकरः परः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-विष्णुकन्द-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनाशक, शोफहारक, रुचिकारक और तृप्तिकारक है ।

धरणीकन्दनामानि ।

धरणी धारणीया च वीरपत्री सुकन्दकः ।

कन्दालुर्वनकन्दश्च कन्दाढ्यो दंडकंदकः ॥

अर्थ–धरणी, धारणीया, वीरपत्री, सुकन्दक, कन्दालु, वनकन्द, कन्दाढ्य, दण्डकन्दक।

धरणीकन्दगुणाः।

मधुरो धरणीकन्दः कफपित्तामयापहः।
वक्रदोषप्रशमनः कुष्ठकण्डूतिनाशनः ॥

अर्थ–धरणीकन्द–मधुर, कफपित्तरोगनाशक, मुखदोषको दूर करनेवाला तथा कोढ और खुजलीको हरनेवाला है।

नाकुलीकन्दनामानि।

नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धा रक्तपत्रिका।
ईश्वरी नागगन्धा चाप्यहिभुक्स्वरसा तथा ॥
सर्पादनी व्यालगन्धा ज्ञेया चेति दशाह्वया ॥

अर्थ–नाकुली, सर्पगन्धा, सुगन्धा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नागगन्धा, अहिभुक्, स्वरसा, सर्पादनी, व्यालगन्धा।

गन्धनाकुलीनामानि।

अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली। सर्पाक्षी फणिहंत्री च नकुलाढ्याहिभुक्च सा॥ विषमर्दनिका चाहिमर्दनी विषमर्दनी। महाहिगन्धाहिलता ज्ञेया स्याद्द्वादशाह्वया ॥

अर्थ–महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहन्त्री, नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता।

द्विविधानाकुलीकन्दगुणाः।

नाकुलीयुगलं तिक्तं कटूष्णं च त्रिदोषजित।
अनेकविषविध्वंसि किञ्चिच्छ्रेष्ठं द्वितीयकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–दोनों प्रकारके नकुलकंद–कडवे, चरपरे, गरम, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषोंका विध्वंस करनेवाले और सुगंधनाकुलीकन्द नाकुलीकन्दकी अपेक्षा कुछेक उत्तम है।

मालाकन्दनामानि।

अथ मालाकन्दः स्याद्दलकन्दश्च पंक्तिकन्दश्च।

त्रिशिखदला ग्रन्थिदला कन्दलता कीर्तिता षोढा ॥

अर्थ-मालाकन्द, बलकन्द, पंक्तिकन्द, त्रिशिखदला, ग्रन्थिदला, कन्दलता ।

मालाकन्दगुणाः ।

मालाकन्दः सुतीक्ष्णः स्याद्गण्डमालाविनाशकः ।
दीपनी गुल्महारी च वातश्लेष्मापकर्षकृत् ॥

अर्थ-मालाकन्द-तीक्ष्ण, गण्डमालारोगको हरनेवाला, दीपन, गुल्मनाशक तथा वात और कफका नाश करनेवाला है ।

बिदारीकन्दनामानि ।

विदारिका स्वादुकन्दा सिता शुक्ला शृगालिका । विदारी वृष्यकन्दा च बिडाली वृष्यवल्लिका ॥ भूकूष्माण्डी स्वादुलता गजेष्टा वारिवल्लभा । ज्ञेया कन्दफला चेति मनुसंख्याह्वया मता ॥

अर्थ-विदारिका, स्वादुकन्दा, सिता, शुक्ला, शृगालिका, विदारी, वृष्यकन्दा, बिडाली, वृष्यवल्लिका, भूकूष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वारिवल्लभा, कन्दफला ।

विदारीकन्दगुणाः।

विदारी मधुरा शीता गुरुः स्निग्धास्रपित्तजित् ।
ज्ञेया च कफकृत्पुष्टिबल्या वीर्य्यविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-विदारीकन्द-बिलारीकन्द-विलाईकन्द--मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्यको बढानेवाला है ।

क्षीरविदारीनामानि ।

अन्या क्षीरविदारी स्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्लरी। इक्षुवल्ली क्षीरकन्दः क्षीरवल्ली पयस्विनी ॥ क्षीरशुक्ला क्षीरलता पयःकन्दा पयोलता । पयोविदारिका चेति विज्ञया द्वादशाह्वया ॥

अर्थ-क्षीरविदारी, इक्षुगन्धा, इक्षुवल्लरी, इक्षुवल्ली, क्षीरकन्द, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, क्षीरशुक्ला, क्षीरलता, पयःकन्द, पयोलता, पयोविदारिका ।

क्षीरविदारीगुणाः ।

ज्ञेया क्षीरविदारी च मधुराम्ला कषायका ।

तिक्ता च पित्तशूलघ्नी मूत्रमेहामयापहा ॥

अर्थ-क्षीरविदारी-दूधविहारी-कंद-मधुर, अम्ल,कसेला,कडवा, पित्तनाशक,शूलनिवारक तथा मूत्ररोग और प्रमेहरोगको दूर करे है।

क्षीरकन्दो द्विधा प्रोक्तो विनालस्तु सनालकः ।
विनालो रोगहर्त्ता स्याद्वयःस्तम्भी सनालकः ॥

अर्थ-क्षीरविदारी विना नालवाला और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारका है,तहां विना नालका क्षीरकंद-रोगनाशक और नालयुक्त-वयस्तम्भक है । विदारीकंदके विशेष गुण दोष गुडूच्यादि वर्गमें देखो ।

चण्डालकन्दनामानि।

प्रोक्तश्चण्डालकन्दः स्यादेकपत्रो द्विपत्रकः ।
त्रिपत्रोऽथ चतुःपत्रः पञ्चपत्रश्च भेदतः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र, चतुःपत्र और पंचपत्र इन भेदोंसे पांच प्रकारका है ।

चण्डालकन्दगुणाः।

चण्डालकन्दो मधुरः कफपित्तास्रदोषजित् ।
विषभूतादिदोषघ्नो विज्ञेयश्च रसायनः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-मधुर, कफघ्न, रक्तपित्तनाशक, विषनिवारक, भूतादिबाधाओंको हरनेवाला और रसायन है।

तैलकन्दनामानि।

अथ तैलकन्द उक्तो द्रावककन्दस्तिलाङ्कितदलश्च ।
करवीरकन्दसंज्ञो ज्ञेयस्तिलचित्रपत्रको बाणैः ॥

अर्थ-तैलकन्द, द्रावककन्द, तिलाङ्कितदल, करवीरकंदसंज्ञ, तिलचित्रपत्रक ।

तैलकन्दगुणाः।

लोहद्रावी तैलकन्दः कटूष्णो वातापस्मारहारी विषारिः ।
शोफघ्नः स्याद्बंधकारी रसस्य द्रागेवासौ देहसिद्धिं विधत्ते ॥

अर्थ-तैलकन्द-लोहेको पतला करनेवाला, चरपरा, गरम तथा वात,अपस्मार,विष और सूजनको दूर करेहै, पारेको बांधनेवाला और तत्काल देहको सिद्धकरनेवाला है ।

त्रिपर्णीनामानि ।

त्रिपर्णिका बृहत्पत्रा या च्छिन्नग्रन्थिका च सा ।
कन्दालुः कन्दबहुलाप्यम्लवल्ली द्रुमारुहा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिका, बृहत्पत्रा, छिन्नग्रन्थिका, कन्दालु, कन्दबहुला, अम्लवल्ली, द्रुमारुहा ।

त्रिपर्णीगुणाः ।

त्रिपर्णी मधुरा शीता श्वासकासविनाशिनी ।
पित्तप्रकोपशमनी विषव्रणहरा परा ॥

अर्थ-त्रिपर्णिकन्द-मधुर, शीतल तथा श्वास, खाँसी, पित्त, विष, और व्रणका नाशकरनेवाला है ।

लक्ष्मणाकन्दनामानि ।

लक्ष्मणा पुत्रकन्दा च पुत्रदा नागिनी तथा ।
नागाह्वा नागपत्री च तुलिनी मक्षिका च सा ॥
अस्रबिन्दुच्छदा चैव सुकुन्दा दशधाह्वया ।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रकन्दा, पुत्रदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपत्री, तुलिनी, मक्षिका, अस्रबिन्दुच्छदा, सुकन्दा ।

अस्या गुणाः ।

लक्ष्मणा मधुरा शीता स्त्रीवन्ध्यत्वविना[illegible] ।
रसायनकरी बल्या त्रिदोषशमनी परा ॥

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-मधुर, शीतल, स्त्रीके बांझपनेको हरनेवाला, रसायन, बलकारक और त्रिदोषको शान्ति करनेवाला है ।

हस्तजोडिनामगुणाश्च ।

हस्तपर्य्यायपूर्वस्तु जोडिर्वैद्यवरैः स्मृतः ।
करजोडिरिति ख्यातो रसबद्धादिवश्यकृत् ॥

अर्थ-हस्तजोडि और करजोडि यह नाम हस्ताजूडी, हत्थाजूडीके हैं, हत्थाजोडी-पारेआदिको बाधनेवाली और वशीकरण है ।

गुच्छकन्दनामानि ।

गुच्छाह्वकन्दःस्तबकाह्वकन्दो गुलच्छकन्दश्च विघण्टिकाभिधः

अर्थ-गुच्छाह्वकन्द, स्तबकाह्वकन्द, गुलकन्द, विघण्टिका ।

गुलच्छकन्दगुणाः ।

गुलच्छकन्दो मधुरः सुशीतलो वृष्यप्रदस्तर्पणदाहनाशनः ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-गुलच्छकन्द-मधुर, शीतल, वृष्य, तृप्तिकारक और दाहनाशक है ।

मानकन्दनामानि ।

मानकः स्यान्महापत्रः कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।

अर्थ-मानक, महापत्र, (स्थलपद्म, विस्तीर्णपर्ण, माण, बृहच्छद, छत्रपत्र, माणक) ।

अस्य गुणाः ।

माणकः शोथहृच्छीतः पित्तरक्तहरो लघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मानकन्द-सूजनको दूर करनेवाला,शीतल,रक्तपित्तनाशक और हलका है ।

अन्यच्च ।

माणकः स्वादुः शीतश्च गुरुः शोथहरः कटुः ॥(राजनि०)

अर्थ-मानकन्द-स्वादिष्ठ, शीतल,भारी, सूजनको दूर करनेवाला और चरपरा है ।

शंखालुनामानि ।

शंखालुः शंखसंकाशो मध्वालुः स्यात्तु रोमशः ।

अर्थ-शंखालु, शंखसंकाश, मध्वालु, रोमश ।

काष्ठालुनामानि ।

काष्ठालुः स्वल्पकाष्ठं च ततः काष्ठालुकं स्मृतम् ।

अर्थ-काष्ठालु, स्वल्पकाष्ठ, काष्ठालुक ।

सर्वविधाऽऽलुगुणाः ।

आलुकं शीतलं सर्वं विष्टम्भि मधुरं रसम् ।
सृष्टमूत्रमलं रूक्षं दुर्जरं रक्तपित्तनुत् ॥
कफानिलकरं वृष्यं बल्यं स्तन्यविवर्द्धनम् ॥ (म० नि०)

अर्थ-सर्वप्रकारके आलु-शीतल, विष्टम्भकारक,मधुररसान्वित, मलमूत्रको करनेवाले, रूखे, दुर्जर, रक्तपित्तनाशक, कफवातकारक, वृष्य, बल्य और स्तनोंमें दूध प्रगट करनेवाले हैं ।

राजालवादिगुणाः ।

मधुराजालुकं शीतं मधुरं वायुकारकम् । पाके कटु च विज्ञेयं रुचिदं दाहपित्तनुत् ॥ शोषतृट्कफनुत्प्रोक्तमस्य कन्दस्तु शीतलः ! अग्निमांद्यं मलस्तम्भकफकृत्पित्तनुत्परः ॥ रक्तराजालुकं किञ्चिदुष्णं चाग्निप्रदीपकम्।कफवातहरं चैव ऋषिभिः पारकीर्तितम् ॥ श्वेतालु किञ्चित्कटुकमुष्णं वातकफापहम्।कृष्णालुकं तु मधुरं शीतवीर्य्यं श्रमापहम् ॥ पित्तदाहहरं चैव ऋषिभिः परिकीर्त्तितम्। कृष्णं वनालुकं रुच्यं महासिद्धिकरं परम् ॥ मुखजाड्यहरं प्रोक्तं मुनिभिस्तत्त्वदार्शिभिः । वनालुकं तृप्तिकरं त्रिदोषशमनं परम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मधुर राजालु-शीतल, मधुर, वातकारक, पाकमें चरपरे, रुचिकारक, दाहनाशक, पित्तनिवारक, शोषको दूर करनेवाले, तृषाको हरनेवाले,कफनाशक। इसका कन्द-शीतल,मंदाग्निकारक, मलस्तम्भक, कफकारक और पित्तनाशक है।लालराजालु-किञ्चित् उष्ण,अग्निप्रदीपक और कफ तथा वातको हरनेवाले हैं।सफेद आलु-किञ्चित चरपरे, गरम, वात कफनाशक हैं । कृष्णालुक-मधुर,शीतवीर्य्य, श्रमनाशक, पित्त और दाहको हरनेवाले हैं । काले वनआलु रुचिकारक, महासिद्धिदायक, मुखकी जडताको दूर करनेवाले हैं। वनालु-तृप्तिकारक और त्रिदोषको शान्तिकरनेवाले हैं ।

कसेरुनामानि ।

गुण्डकन्दः कसेरुः स्यात्क्षुद्रमुस्ता कसेरुका ।
सूकरेष्टः सुगन्धिश्च सुगन्धो गन्धकन्दकः ॥

अर्थ-गुण्डकन्द, कसेरु, क्षुद्रमुस्ता, कसेरुका, सूकरेष्ट, सुगन्धि, सुकन्द, कसेरुक, (कशेरु, राजकशेरुक)।

कसेरु द्विविधं तत्तु महद्राजकशेरुकम् ।
मुस्ताकृतिर्लघु स्याद्यत्तच्चिचोडमिति स्मृतम् ॥

अर्थ-कसेरु दो प्रकारके हैं एक कसेरु दूसरा चिचोड । तहां बड

कसेरु अर्थात् कसेरुको कसेरू कहते हैं और जिसका आकार मोथा के समान हो तथा हलका हो उसको चिचोड कहते हैं ।

संस्कृतभाषामें	कसेरु ।
हिन्दीभाषामें	कसेरू ।
वंगभाषामें	केशुर ।
मराठीभाषामें	कचरा, फुरडचा ।
कर्णाटकीभाषामें	सेकिनगड्डे ।
तैलिङ्गीभाषामें	इाट्टिकोति ।
लैटिनभाषामें	स्क्रिपस कैसूर । Seripus Kyseor

द्विविधकसेरुगुणाः ।

कसेरुकद्वयं शीतं मधुरं तु वरं गुरु ।
पित्तशोणितदाहघ्नं नयनामयनाशनम् ॥
ग्राहि शुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरं स्मृतम् ।(भा०प्र)

अर्थ-दोनों प्रकारके कसेरू-शीतल,मधुर, कसेले,भारी, रक्तपित्तनाशक,दाहनिवारक,नेत्ररोगको हरनेवाले,मलरोधक,शुक्रजनक, वातकफकारक,रुचिजनक और स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करे हैं ।

केमुकनामानि ।

केबुका केमुकः केम्बु सुपत्रा दलमालिनी ।
केलूटः स्वल्पविटपः स्वादुकन्दश्च पोलिनी ॥

अर्थ-केबुका,केमुक,केम्बु,सुपत्रा,दलमालिनी,केलूट, स्वल्पाविटप, स्वादुकन्द,पोलिनी,(पेचुक,पेचुनी,पेचु,पेचिका,दलसारिणी,केचुक)।

संस्कृतभाषामें	केमुक ।
हिन्दीभाषामें	केउँआ ।
वंगभाषामें	केउँगाछ केलूपपेंपा ।
मराठीभाषामें	कोबी ।
गुजरातीभाषामें	कोबी ।
इंग्रेजीभाषामें	कबज । (Cab bage)
लैटिन्भाषामें	कोस्टस् स्पेश्योसस् । Costus speciosus
फारसीभाषामें	कलाम ।
अरबीभाषामें	कंदकलब ।

अस्य गुणाः ।

केमुकः कटुकः पाके तिक्तं ग्राहि हिमं लघुः ।
दीपनं पाचनं हृद्यं कफपित्तज्वरापहम् ॥
कुष्ठकासप्रमेहार्शनाशनं वातलं कटु । (भा० प्र०)

अर्थ-केमुक-पचनेमें कटु,कडवा,मलरोधक,शीतल,हलका,दीपन, पाचक, हृदयको हितकारी, वातकारक, चरपरा तथा कफ, पित्त, ज्वर, कुष्ठ, खांसी, प्रमेह और बवासीरको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

केलूटकं तु मधुरं रूक्षमच्छं च शीतलम् ॥
भेदकं ग्राहकं रुच्यं गुरुपित्तकफापहम् ।
वातनाशकरं चैव कंदेप्येते गुणाः स्मृताः ॥ (नि० र०)

अर्थ-केमुक, मधुर, रूखा, स्वच्छ,शीतल,भेदक,मलरोधक,रुचिकारक, भारी, पित्तकफनाशक, वातनाशक और कन्दके गुणभी इसकी समान जानने ।

शाल्मलीकन्दनामानि ।

शाल्मलीकन्दकश्चाथ विज्जलो वनवासकः ।
वनवासो मलघ्नश्च मलहन्ता षडाह्वयः ॥

अर्थ-शाल्मलीकन्द,विज्जुल,वनवासक,वनवास,मलघ्न,मलहन्ता

शाल्मलीकन्दगुणाः ।

मधुरः शाल्मलीकन्दो मलसंग्रहरोधजित् ।
शिशिरः पित्तदाहार्तिशोषसन्तापनाशनः॥ (रा० नि०)

अर्थ-शाल्मलीकन्द-अर्थात् सेमलकी मूली-मधुर, मलसंग्रहके रुकनेको दूर करनेवाली,शीतल तथा पित्त, दाह, शोष और सन्तापको हरनेवाली है ।

कदलीकन्दगुणाः ।

कन्दः कदल्या रूक्षः स्याद्वातलस्तुवरो गुरुः।शीतो बल्यो मधुः केश्यो रुच्यो ऽग्निमांद्यकारकः॥कर्णशूलं चाम्लपित्तंदाहंरक्तरुजं तथा।सोमदोषरजोदोषकृमीन्कुष्ठं च नाशयेत्॥ (नि० रा०)

अर्थ-केलेका कन्द-रूखा, बादी,कसेला, भारी,शीतल,बलकारी

मधुर, केशोंको हितकारी, रुचिजनक, मंदाग्निकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमदोष, रजोदोष, कृमि और कुष्ठ रोगका नाश करे है ।

अथ संस्वेदजशाकनामानि ।

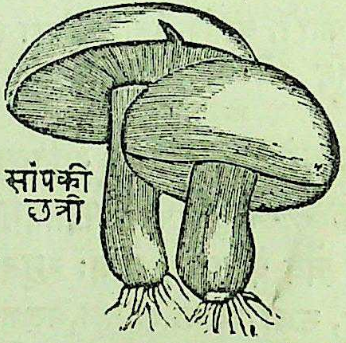

उक्तं संवेदजं शाकं भूमिच्छन्नं शिलीन्ध्रकम ।
क्षितिगोमयकाष्ठेषु वृक्षादिषु तदुद्भवेत् ॥

अर्थ-संस्वेदजशाक, भूमिच्छत्र, शिलीन्ध्रक, (भूछत्र, पृथिवीकन्द, शिलीन्ध्र, कवच, भूमिच्छत्र, भूमिस्फोट, धरांकुर, भूसुता, छत्र, छत्राक, उच्छिलीन्ध्र, स्वेदज)यह मृत्तिका, गोबर, काष्ठ और वृक्षादिकोंमें उत्पन्न होता है ।

संस्कृतभाषामें	संस्वेदजशाक ।
हिंदीभाषामें	सांपकी छत्री, छाता, छतोना ।
वंगभाषामें	छातकुड, छाता, भुँईछाति ।
मराठीभाषामें	भुईफोड, अळम्बी ।
कोकणीभाषामें	कामिल ।
गुजरातीभाषामें	फुग्य मींदडानी वली ।
इंग्रेजीभाषामें	मशरूम । Mrshroom
लैटिन्‌भाषामें	फंगाइं । Fungi

अस्य गुणाः ।

सर्वे संस्वेदजाःशीताःदोषला पिच्छिलाश्च ते । गुरवश्छर्द्यतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥ श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रजसम्भवाः । नातिदोषकरास्ते स्युःशेषास्तेभ्यो विगर्हिताः॥भा०प्र०)

अर्थ-सर्वप्रकारके संस्वेदजशाक-शीतल, दोषजनक, पिच्छिल, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगोंको उत्पन्न करें हैं। सफेद शुभ्रस्थानमें उत्पन्न होनेवाले तथा काठ, बांस और गायोंके स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाले अत्यन्त दोषकारक नहीं हैं और शेष सर्व त्यागने योग्य हैं।

अन्यच्च ।

शीता बल्या सुनेशानी गुरुर्भेदकरा मधुः । त्रिदोषकारिणी वृष्या कफदा च मता बुधैः॥भेदास्त्रयः समाख्याताः कृष्णो रक्तश्च पाण्डुरः।कृष्णा रसे च पाके च मधुरोष्णा गुरुः स्मृता॥ श्वेता तु पाककाले च गुर्वी रक्ताल्पदोषदा। (नि० र०)

अर्थ-सांपकी-छत्री शीतल, बलकारक, भारी, भेदक, मधुर, त्रिदोषजनक, वीर्य्यवर्द्धक और कफकारक है। यह कृष्ण, रक्त और पाण्डु इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है। तहां कालेरंगका मधुर, गरम और भारी है। सफेद-पाकमें भारी और लाल अल्पदोषजनक है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे शाकवर्गः समाप्तः ॥ ११ ॥

अथ वारिवर्गः ।

जलनामानि ।

पानीयं सलिलं नीरं कीलालं जलमम्बु च ।
आपो वार्वारिकं तोयं पयः पाथस्तथोदकम् ॥
जीवनं वनमम्भोर्णोऽमृतं घनरसोऽपिच ।

अर्थ-पानीय, सलिल, नीर, कीलाल, जल, अम्बु, आप्, वार्, वारि, तोय, पयस्, पाथस्, उदक, जीवन, वन, अम्भस्, अर्णस्, अमृत, वनरस (मेघप्रसव, कमल, भुवन, कबन्ध, पुष्कर, सर्वतोमुख, सलिल, सल, जड, क, अन्ध, कमन्ध, उद, दक, नार, शम्बर, अभ्रपुष्प, घृत, कृत्स्न, पर्य्य, पाथ, यादोनिवास, जीवनीय, कुलीनस, कुलीन, पिप्पल, कुश, विष, काण्ड, सवर, सर, कृपीट, चंद्रोरस, सदन, कर्बुर, व्योम, सम्ब, इरा, वाज, तामर, कम्बल, स्यन्दन, सम्बल, जलपीथ, क्षर, ऋत,

ऊर्ज्ज, कोमल, सोम, नारा, छद्म, क्षोद, नभ, मधु, पुरीष, रेत, कश, जन्म, वृबूक, बुस, तुग्या, कर्बूर, सुक्षेम, धरुण, सुरा, अरविन्दानि, धनुन्धतु, जामि, आयुधानि, क्षय, अहि, अक्षर, स्रोत, तृती, रहलू, रस, भेषज, सह, शव, षह, ओज, सुख, क्षत्र, आरया, शुभ, याद्व, भूत, भविष्य, महत, यश, मह, सर्णीक, स्नृतीक, स्तनि, गहन, गभीर, गम्भलंग, अन्न, हवि, सद्म, योनि, ऋतस्ययोनि, सत्य, रयि, सत, पूर्ण, सर्व, अक्षित. बर्हि, नाम, सर्पि, अप, पवित्र, इन्दु, हेम, स्वसर्ग, सम्बर, अम्ब, वपु, अम्बु, तुप, शुक्र, तेज, दर्भ, जलाष, वज्र, नीलकण्ठप्रिय) इत्याद्यनेकनामानि सन्ति ।

संस्कृतभाषामें	पानीय, सलिल ।
हिन्दीभाषामें	जल, पानी ।
बंगभाषामें	जल ।
मराठीभाषामें	उदक, पाणी ।
गुजरातीभाषामें	पाणी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुनीक ।
तैलिंगीभाषामें	नीरु ।
इंग्रेजीभाषामें	वाटर । water
लैटिन्भाषामें	एक्वा । Aqua
फारसीभाषामें	आब ।
अरबीभाषामें	माय ।

जलगुणाः ।

पानीयं श्रमनाशनं क्लमहरं मूर्च्छापिपासापहं तन्द्राच्छर्दिविबन्धहृद्बलकरं निद्राहरं तर्पणम् । हृद्यं गुप्तरसं ह्यजीर्णशमकं नित्यं हितं शीतलं लघ्वच्छं रसकारणं निगदते पीयूषवज्जीवनम् ॥

अर्थ-जल-पानी-श्रम, मूर्च्छा, प्यास, तन्द्रा, वमन, विबन्ध और निद्राको दूर करेहै, वलकारक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, गुप्तरसवाला, अजीर्णको हरनेवाला, निरन्तर हितकारी, शीतल, हलका, स्वच्छ, रसोंका कारण और अमृतकी समान सर्वप्राणियोंका जीवन है ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि पानीयानि पृथक्पृथक् । शृणुत्वं च समासेन गुणान्गुणविपर्य्ययम् ॥ द्विविधं चोदकं प्रोक्तमान्त-

रीक्षं तथौद्भिदम् । आन्तरीक्षं तु द्विविधं गाङ्गं सामुद्रिकं पयः ॥ गाङ्गसामुद्रविज्ञानं कथयिष्यामि साम्प्रतम् । धारितं येन पात्रेण लक्ष्यते तेन तद्विधम् ॥ धौतं शुद्धं सितं वस्त्रं चतुर्हस्तप्रमाणकम् । दण्डास्त्रिहस्ताश्चत्वारश्चतुष्कोणेषु बन्धयेत् । तस्मात्परीक्ष्यं तत्तोयं शुद्धे रौप्यमयेऽथवा । कांस्यपात्रे समुद्धृत्य परीक्षेत भिषग्वरः ॥ शुद्धकार्पासतूलं वा श्वेतशाल्योदनस्य वा । पिण्डिका तत्समाक्षिप्ता श्वेततां याति सा पुनः ॥ श्वेता तु निर्मला पिण्डीशुद्धञ्च निर्मलं पयः । तद्गाङ्गं सर्वदोषघ्नं गृहीताङ्गंसुभाजने ॥ तद्धारयेच्च मतिमान्बल्यं मेध्यं रसायनम् । श्रमक्लमपिपासाघ्नं कण्डूदोषनिवारणम् ॥ लघुमूर्च्छातृषाच्छर्दिमूत्रस्तम्भविनाशनम् ॥ गङ्गोदकस्य वृष्टिः स्याद्दिवसे वा प्रदृश्यते । आविलं समलं नीलं घनं पीतमथापि च । सक्षारंपिच्छिलं चैव सामुद्रं तन्निगद्यते ॥ सघनं कफकृच्चैव कण्डूश्लीपदकारकम् । सवातलं च विज्ञेयं रक्तदोषार्तिकारणम् ॥ (हा॰सं॰)

अन्यच्च ।

अर्थ–महर्षि आत्रेयजी हारीतसे कहते हुये कि, मैं अब पानियोंके भेद और गुण दोषकहताहूं तू सुन । पानी आन्तरीक्ष और औद्भिद इन भेदोंसे दो प्रकारका कहा है तहां आन्तरीक्ष (आकाशका) पानीकेभी दो भेद हैं एक गांग अर्थात् गंगाका और दूसरा सामुद्रिक अर्थात् समुद्रका: गंगा और समुद्रके जलके विज्ञानको कहताहूं । जिस पात्रमें रक्खा हो उसी पात्रके अनुसार लक्षण प्रतीत होते हैं । जलपरीक्षा–धुला हुआ शुद्ध और सफेद वस्त्र चार हाथ लेवे फिर तीन २ हाथ के दंडोंसे उस वस्त्रके चारों कोने बांध देवे इसके उपरान्त शुद्ध चांदीके बरतनमें अथवा काँसीके बरतनमें उस जलकी परीक्षा करे तथा शुद्ध कपासकी रुई वा शालिचावलोंके भातका पिण्ड बना उस जलमें डालदे जो सफेदपनेको प्राप्त होजावे और सफेद होकर वह पिण्ड निर्मल होजावे और वह जलभी शुद्ध और निर्मलहोजावे तो उसको गंगाका पानी जानना। वह गंगाजल सर्वदोष-

नाशक है, उस जलको सुंदर पात्रमें बुद्धिमान् ग्रहण करे, वह गंगाका जल-बलकारक, मेधाजनक, रसायन, तथा श्रम, क्लम, प्यास, कण्डू, मूर्च्छा, तृषा, वमन और मूत्रस्तम्भको दूर करे है और हलका है। अथवा दिनमें जो बरसताहै वह गंगोदक है। कलुषतायुक्त, मलसंयुक्त, नीला, घन, पीला, क्षारसहित और पिच्छिल हो ऐसे मेघके जलको सामुद्रिकजल जानना। समुद्रका जल-कफकारक, कण्डू, और श्लीपद रोगको उत्पन्न करनेवाला, वादी और रुधिरके विकारोंको करता है।

अन्यच्च।

पानीयं मुनिभिः प्रोक्तं दिव्यं भौममिति द्विधा। दिव्यं चतुर्विधं प्रोक्तं धाराजं करकाभवम्॥ तौषारञ्च तथा हैमन्तेषु धारं गुणाधिकम्। धाराभिः पतितं तोयं गृहीतं स्फीतवाससा॥ शिलायां वसुधायां वा धौतायां पतितं च तत्। सौवर्णे राजते ताम्रे स्फाटिके काचनिर्मिते॥ भाजने मृण्मये वापि स्थापितं धारमुच्यते। धारं नीरं त्रिदोषघ्नमनिर्देश्यं रस लघु॥ सौम्यं रसायनं बल्यं तर्पणं ह्लादि जीवनम्। पाचनं मतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान्॥ तृष्णां हरति नात्यर्थं विशेषात्प्रावृषि स्थितम्। धारं जलञ्च द्विविधं गाङ्गसामुद्रभेदतः॥ आकाशगंगासम्बन्धि जलमादाय दिग्गजाः। मेघैरन्तरितावृष्टिं कुर्वन्तीति वचः सताम्॥ गाङ्गमाश्वयुजे मासि प्रायो वर्षति वारिदः। सर्वथातज्जलं देयं तथैव चरके वचः॥ स्थापिते हेमजे पात्रे राजते मृण्मयेऽपिवा। शाल्यन्नं येन संसिक्तं भवेदक्लेदि वर्णवत्॥ तद्गाङ्गं सर्वदोषघ्नं ज्ञेयं सामुद्रमन्यथा। तत्तु सक्षारलवणं शुक्रदृष्टिबलापहम्॥ विस्रञ्च दोषलं तीक्ष्णं सर्व्वकर्मसमाहितम्। सामुद्रं त्वाश्विने मासि गुणैर्गाङ्गवदादिशेत्॥ यतोऽगस्त्यस्य दिव्यर्षेरुदयात्सकलं जलम्। निर्मलं निर्विषं स्वादु शुक्रलं स्याददोषलम्॥ फूत्कारविषवातेन नागानां व्योमचारिणाम्।

वर्षासु सविषं तोयं दिव्यमप्याश्विनं विना। अनार्त्तवं प्रमुञ्चंति
वारि वारिधरास्तु यत् ॥ तत्त्रिदोषाय सर्वेषां देहिनां परि-
कीर्त्तितम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मुनीश्वरोंने जल दो प्रकारका कहा है एक दिव्य और दूसरा भौम तहां दिव्यजल-धाराज, करकाभव, तौषार और हैम इन भेदोंसे चार प्रकारका है। इनमें धाराजल गुणोंमें अधिक है। धारारूपसे पतित हुये जलको स्वच्छ वस्त्रमें छानले वह जल निर्मल वा धुलीहुई शिलामें हो वा स्वच्छ भूमिमें गिरा हुआहो, उसमेंसे सुवर्ण, रजत, ताम्र, स्फटिकमणि, काच वा मृत्तिकाके पात्रमें भरलेना उसको धाराजल कहते हैं। धाराजल-त्रिदोषनाशक, गुप्तरस, हलका, शीतल, रसायन,बलकारक, तृप्तिजनक,आनन्दजनक,जीवन, पाचक, बुद्धिवर्द्धक तथा मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, श्रम, क्लम और तृषाको दूर करे है। यह गुण शरद् ऋतुमें कहे हैं,किन्तु वर्षाऋतुमें नहीं। धाराजल गांग और सामुद्र इन भेदोंसे दो प्रकारका है। पहिल आचार्य्योंने कहा है कि,आकाशगंगासम्बन्धी जलको दिग्गज (दिशाके हाथी) लेकर मेघोंमें छिपे हुए प्रायः आश्विनके महीनेमें मेघद्वारा वर्षातेहैं वह जल सर्वथा सबको देना चाहिये तैसेही चरकमें भी कहाहै। परीक्षा-सुवर्ण तथा चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें चावल डालकर जल भरदेवे, जो वह चावल न बिगडें और न उनका रंग बदले तो उनको गंगाजल जानना। यह गंगाजल सर्वदोषनाशक है। और जो वह चावल सडजावें और रंग बदल जावे तो उस जलको सामुद्रजल जानना। यह समुद्रजल सर्वदोषजनक है। समुद्रजल-खारी, निमकीन, शुक्र,दृष्टि और बलविनाशक है,दुर्गंधयुक्त, दोषकारक तीक्ष्ण और सर्वकर्मोंमें यह अहितकारी है। किन्तु आश्विनके महीनेंमें जो समुद्रसम्बंधी वर्षाका जल है वह गंगाजलकी समान गुणकारक जानना। कारण यह है, आश्विनके महीनेमें अगस्त्य ऋषिके उदय होनेसे सर्व जल-निर्मल, निर्विष, स्वादु, शुक्रजनक और अदोषकारी होजाते हैं। क्योंकि वर्षाऋतुमें आकाशमें विचरनेवाले साँपोंकी विषेली पवनसे दिव्यजलभी विषयुक्त होजातेहैं,किन्तु आश्विनके महीनेमें विषयुक्त नहीं होते। जो जल अपनी ऋतुको छोडकर और ऋतुओंमें बरसता है वह जल सर्वमनुष्योंके त्रिदोष करनेवाला है।

इति द्विधोदकं प्रोक्तं तथा वक्ष्ये चतुर्विधम् । रात्रिवृष्टिर्दिवावृष्टिर्दुर्दिना समयोद्भवा ॥ निशाजलं कफकरं घनं शीतगुणात्मकम् । समुद्रतोयस्य समं विज्ञेयं वातकोपनम् ॥ दिवासूर्य्यांशुसंतप्ता मेघा वर्षन्ति यत्पयः । तत्कफघ्नं पिपासाघ्नं लघु वातप्रकोपनम् ॥ दुर्दिने वृष्टिसंपातं वातोद्धतं सवातकम् । कफकृच्छोषहननं तर्पणं दोषकोपनम् ॥ तथा श्रावणवृष्टिश्च दोषरोषकरा नृणाम् । कण्डूत्रिदोषजननं पानीयं न प्रशस्यते ॥ सघनं नाभसं नीरं श्लेष्मकृद्वातकोपनम् । शमनं पित्तरोगाणां मधुरं रक्तदोषहृत् ॥ रूक्ष पित्तकरं चाम्लगुणं रक्तविकारकृत् । चित्रानक्षत्रसम्भूतं परं शस्तं त्रिदोषहृत् । कार्त्तिकीवृष्टिसम्भूतं स्वातिसम्पातशीतलम् ॥ नाशनं च त्रिदोषाणां सर्वसस्यविवर्द्धनम् । शीतलं बलकृद्वृष्यं तृड्दाहज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-इसप्रकार ऊपरका पानी दो प्रकारका कहा, अब चार प्रकारका कहतेहैं । रात्रिमें जो बरसता है, दिनमें जो बरसता है, दुर्दिनमें जो बरसताहै, और असमयमें जो बरसता है । रात्रिमें वर्षा हुआ जल-कफकारक, घन, शीतल गुणोंवाला, वातको कुपित करनेवाला और समुद्रके जलके समान है । दिनमें सूर्य्यकी किरणोंसे तप्त हुये मेघ जो पानीको बर्षाते हैं वह जल कफनाशक, प्यासको हरनेवाला, हलका और वातको कुपित करता है । दुर्दिनमें वर्षा हुआ जल-वातल, कफकारक, शोषनाशक, तृप्तिकारक और दोषोंको कुपित करे है । श्रावणके महीनेकी वर्षाका पानी-मनुष्योंके दोषोंको कुपित करनेवाला, कण्डूजनक, त्रिदोषकारक और यह जल उत्तम नहीं है । भादोंके महिनेकी वर्षाका जल-कफकारक, वातको कुपित करनेवाला, पित्तरोगोंकी शान्ति करनेवाला, मधुर और रुधिरके विकारोंको करे है । आश्विनके महीनेकी वर्षाका जल-रूखा, पित्तजनक अम्ल और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है । चित्रानक्षत्रमें वर्षाहुआ जल-त्रिदोषनाशक और अत्यन्त उत्तम होता है । कार्त्तिकमासकी वर्षाका जल-अति शीतल, त्रिदोषनाशक, सर्व प्रकारकी खेतियोंको बढानेवाला, शीतल, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा तृषा दाह और ज्वरको हरनेवाला है ।

धारकादिचतुर्विधजलस्य लक्षणम् ।

तथा धारं च कारं च तौषारं हैममेव च ।
चतुर्विधं समुद्दिष्टं तेषां वच्मि गुणागुणम् ॥

अर्थ-धार, कार, तौषार, हैम इन भेदोंसे जल चार प्रकारके हैं, अब इनके गुण और दोषोंको कहताहूं ।

धारं चतुर्विधं प्रोक्तं वक्ष्ये कारं महामते ।
श्रीमतां च महाप्राज्ञहिताय रुजशान्तये ।

अर्थ-धारसंज्ञक जल चार प्रकारका कहा है, अब कार जल श्रीमान् और बडे विद्वानोंके हितके लिये और रोगकी शान्तिके लिये कहताहूँ ।

अथ करकाः ।

स्वर्नद्याः शीतवातेन मेघविस्फूर्जसंकुलम् । शीताम्बुबद्धकाठिन्यं शिलाजातं हिमेन तु ॥ पश्चात्सूर्य्यांशुसन्तापात्किञ्चिद्द्रवते जलम् । वहन्ति मेघाः सलिलं शकलं शीतलं मतम् ॥
(हा० सं०)

अर्थ-शीतलपवनसे स्वर्गंगादि नदियोंका शीतल जल मेघके शब्दसे संकुलित हुआ कठिन होके पीछे शीतसे शिलारूप होजाताहै पश्चात् सूर्य्यकी किरणोंके सन्तापसे कुछेक द्रवीभूत (पतला) होजाताहै फिर मेघ उसको खण्ड खण्डरूप (ओलोंको) बरसाते हैं उन ओलोंका जल परमशीतल होताहै ।

अन्यच्च ।

दिव्यं वाय्वग्निसंयोगात्संहताः खात्पतन्ति याः ।
पाषाणखण्डवच्चापस्ताः कारिक्योऽमृतोपमाः ॥

अर्थ-दिव्य वायु और बिजलीके संयोगसे ताडित हुआ जो जल आकाशसे शिलारूपसे गिरता है उसको 'करकाजल' कहते हैं ।

गुणाः ।

करकाजं जलं रूक्षं विशदं च गुरु स्थिरम् ।
दारुणं शीतलं सांद्रं पित्तहृत्कफवातकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-ओलोंका जल-रूखा, विशद, भारी, स्थिर, दारुण, शीतल, गाढा, पित्तनाशक और कफकारक है ।

अन्यच्च ।

कारं शीतगुणं श्रमोपशमनं रूक्षं मरुलेष्मकृन्मूर्च्छामोहशिरोर्त्तिनाशनकरं हिक्काविनिर्वारणम्। शोफीनां व्रणिनां च नो हितकरं पित्तात्मकानां हितं शंसन्ति प्रवरा गुणैः प्रतिकृतिं तस्मान्न दूरे कृतम् ॥

अर्थ-ओलोंका जल-शीतगुणान्वित,श्रमनाशक, रूखा, वातकफकारक तथा मूर्च्छा,मोह, शिरकी पीडा और हिचकीको दूर करे है। सूजन, तथा व्रणरोगियोंको अहितहै और पित्तकी प्रकृतिवाले मनुष्योंको हितकारी है। यह अत्युत्तम है इसमें अनेक गुणहैं इसकरण इसको कदापि दूर नहीं करना चाहिये। (हा० सं०)

अथ तौषारलक्षणं गुणाश्च ।

अपि नद्याः समुद्रान्ते वह्निरापस्तदुद्भवाः । धूमावयवनिर्मुक्तास्तुषाराख्यास्तु ताः स्मृताः॥अपथ्याः प्राणिनां प्रायो भूरुहाणां च नो हिताः। तुषाराम्बु हिमं रूक्षं स्याद्वातलमपित्तलम्॥कफोरुस्तम्भकंठाग्निमेहगण्डादिरोगनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-नदीसे लेकर समुद्रतक अग्निहै उससे उत्पन्न हुये जल धुएँके अवयव हीन तुषार कहातेहैं, वह तुषार प्राणियोंको और वृक्षोंको अहितकारक हैं। तुषारका जल-शीतल,रूखा,बादी, अपित्तल तथा कफ, ऊरुस्तम्भ, कण्ठ, प्रमेह और गलगण्डादि रोगोंको दूर करे है।

अन्यच्च ।

तौषारं लघु शीतलं श्रमहरं पित्तार्त्तिशान्तिप्रदम् । दोषाणां शमनं जलार्त्तिहननं सर्वामयघ्नं परम्॥कुष्ठश्लीपदचर्चिकाविषहरं पामाविसर्पापहम्।क्षीणानां क्षतशोषिणां हितकरं संसेव्यते मानवैः ॥

(हा० सं०)

अर्थ-तुषारका जल-हलका,शीतल,श्रमनाशक,पित्तकी पीडाको शान्तिकरनेवाला,दोषनिवारक,जलके रोगोंको हरनेवाला, सर्वप्रकारके रोगोंका नाशकरनेवाला तथा कोढ, श्लीपद, मकडीका

विष, पामा और विसर्परोगका नाश करेहै । तथा क्षीणमनुष्य, क्षतरोगवाले और शोष रोगवालोंको हितकारी है ।

अथ हिमजललक्षणम् ।

हिमवच्छिखरादिभ्यो द्रवीभूयाभिवर्षति ।
यत्तदेव हिमं हैमं जलमाहुर्मनीषिणः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–हिमके समान शीतल पर्वतोंसे जो बर्फ गलकर जल टपकताहै उसको विद्वान् हिमजल कहतेहैं ।

हिमजलगुणाः ।

हैमं घनं च मधुरश्च कफात्मकश्च मूर्च्छाश्रमार्तिशमनं भ्रमनाशनञ्च । पित्तास्रजप्रशमनं रुधिरक्षतघ्नं शान्ति करोति हिमसम्भववारि सद्यः ॥

अर्थ–हिमजल–घन, मधुर, कफकारक तथा मूर्च्छा, श्रम, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरके विकार और क्षतरोगका नाशकरे है तथा शीघ्रही शान्तिको करे है ।

अन्यच्च ।

हिमन्तु शीतलं रूक्षं दारुणं सूक्ष्ममित्यपि ।
न तद्दूषयते वातं न च पित्तं न वा कफम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–हिमजल–शीतल, रूखा, दारुण, सूक्ष्म और न यह वातको दूषित करे, न पित्तको दूषित करे और न यह कफको दूषित करे है ।

अथ भौमजलम् ।

भौममम्भोनिगदितं प्रथमं त्रिविधं बुधैः। जाङ्गलं परमानूपं तत्साधारणं क्रमात् ॥ अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्च पित्तरक्तामयान्वितः । ज्ञातव्यो जांगलो देशस्तत्रत्यं जांगलं जलम् ॥ बह्वंबुर्बहुवृक्षश्च वातश्लेष्मामयान्वितः । देशोऽनूप इतिख्यातआनूपं तद्भवेज्जलम् ॥ मिश्रचिह्नस्तु यो देशः स हि साधारणः स्मृतः । तस्मिन्देशे यदुदकं तत्तु साधारणं स्मृतम् ॥ जाङ्गलं सलिलं रूक्षं लवणं लघुपित्तनुत् । वह्निकृत्कफहृत्पथ्यं विकारान्हरते बहून् ॥ आनूपं वार्य्यभिष्यन्दि स्वादु स्निग्धं

घनं गुरु। वह्निहृत्कफकृद्वृष्यं विकारान्कुरुते बहून् ॥ साधारणन्तु मधुरं दीपनं शीतलं लघु। तथा तृष्णादाहमदच्छर्दि दोषत्रयप्रणुत् ॥

अर्थ-भौमजल अर्थात् पृथ्वीका जल-जांगल, अनूप और साधारण इन भेदोंसे तीन प्रकारकाहै। जिस देशमें अल्पजल और थोडे वृक्ष हों और जहां प्रायः प्राणी पित्त तथा रुधिरके रोगवाले अधिक हो उस देशको जांगलदेश कहते हैं और उस देशके जलको जांगल जल कहते हैं। जिस देशमें बहुत जल और बहुत:वृक्षहों और जहांके जीव अधिकतर वात कफ रोगवाले हों उस देशको अनूप देश कहतेहैं और उस देशके जलको आनूप कहतेहैं। जिस देशमें जंगल और अनूप दोनों लक्षण मिश्रितहों रोगभीमिश्रितहों उस देशको साधारण कहतेहैं और उस देशके जलको साधारणजल कहतेहैं। जांगलजल-रूखा, निमकीन, हलका, पित्तनाशक, जठराग्निजनक, कफनाशक, पथ्य और अनेक प्रकारके विकारोंको हरनेवालाहै। आनूपजल-अभिष्यंदि, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, घन, भारी, जठराग्निनाशक, वृष्य और अनक प्रकारके विकारोंको करे है। साधरणजल-मधुर, दीपन, शीतल, हलका तथा तृषा, दाह, मद, वमन और त्रिदोषका नाश करे है।

अथाष्टविधं जलम्।

धारं पृथिव्यां पतितं पयस्तु तत्रैव जातं गुणभेदभिन्नम्।
नानाविधैर्भेदगुणैश्च सम्यग्जातं जलं चाष्टविधं वदन्ति ॥
नद्यो द्भिदं प्रस्रवणं च चौंडयं कौपं तडागं सरसोद्भवञ्च। वाप्योद्भवं तं प्रवदन्ति धीरा नीरं समासेन वदामि चात्र॥ (हा०सं०)

अर्थ-धारनामवाला जल पृथिवीमें पतित हुआ तहां गुणोंके भेदोंसे भिन्न होजाताहै फिर अनेक प्रकारके भेद और गुणोंसे आठ प्रकारका होता है। नादेय (नदीका), औद्भिद (जो पृथ्वीको तोडकर बहता है उसका जल) झरनेका, चौंडयका, कुएका, तडागका, सरका और वापीका इन भेदोंसे जल आठ प्रकारका कहाहै।

नदीजलम्।

नद्या नदस्य वा नीरं नादेयमिति कीर्तितम्।

नादेयमुदकं रूक्षं वातलं लघु दीपनम् ॥
अनभिष्यन्दि विशदं कटुकं कफपित्तनुत ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नदी और नदके जलको नादेय ऐसा कहते हैं नदीका जल-रुखा, बादी, हलका, दीपन, अनभिष्यंदि, विशद, चरपरा तथा कफ पित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

यच्छ्रीमताञ्चैव महीपतीनां सेव्यं तथा योग्यतमं प्रदिष्टम् ।
नादेयतोयं मधुरं तथा लघु रूक्ष तथोष्णं शमनञ्च वायोः॥
सन्दीपनं सस्यविनाशनञ्च हिमागमे वा शिशिरे निषेव्यम् ।
बलप्रदं पथ्यकरं नराणां प्रदिष्टमेतत्तु सदा भिषग्भिः ॥
(हा० सं०)

अर्थ-नदीका जल-लक्ष्मीवान् और राजाओंको अतियोग्य कहा है मधुर, हलका, रूखा, गरम, वातको शान्ति करनेवाला, अग्निप्रदीपक, खेतीका नाश करनेवाला, बलकारक और पथ्य है, यह जल शीतऋतुके आगममें तथा शिशिर ऋतुमें सेवन करना चाहिये ।

नद्यः शीघ्रवहा लघ्व्यः सर्वा याश्चामलोदकाः ।
गुर्व्यः शैवलसंछन्ना मंदगाः कलुषाश्च या ॥

अर्थ-शीघ्र बहनेवाली नदियोंका जल-हलका और निर्मल होताहै । और मंदबहनेवाली नदियोंका जल-भारी, काईसे ढका हुआ और कलुषतायुक्त होताहै ।

नदीसरस्तडागस्थे कूपप्रस्रवणादिजे ।
उदके देशदेभेन गुणान्दोषांश्च लक्षयेत् ॥

अर्थ-नदी सरोवर,तालाब, कूआ, झरना इनके जलोंमें देशभेदके द्वारा गुण और दोष जानने ।

अथ गंगाजलगुणाः ।

स्वादुपाकरसं शीतं त्रिदोषशमनं तथा ।
पवित्रमतिपथ्यञ्च गाङ्गं वारि मनोहरम् ॥

अर्थ-गंगाजल-स्वादुपाकी,शीतल, त्रिदोषकी शान्ति करनेवाला, पवित्र,अत्यन्त पथ्य और मनोहर है ।

यमुनाजलगुणाः ।

गाङ्गात्किञ्चिद्गुरुतरं स्वादु पित्तापहं परम् ।
वातलं वह्निजननं रूक्षं च यामुनं जलम्

अर्थ-यमुनाका जल गंगाजलसे किंचित् भारीहै, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक, वातजनक, जठराग्निजनक और रूखा है ।

नर्मदाजलगुणाः ।

अथ स्वच्छं प्रशस्तश्च शीतलं लघु लेखनम् ।
पित्तश्लेष्मप्रशमनं नार्मदं सर्वरोगनुत् ॥

अर्थ-नर्मदानदीका जल-निर्मल, शीतल, हलका, लेखन, पित्त और कफकी शान्ति करने वाला और सर्वप्रकारके दोषोंका नाशकरेहै ।

गोदावरीजलगुणाः ।

कण्डूकुष्ठप्रशमनं वह्निसंदीपनं परम् ।
पाचनं वातपित्तघ्नं वारि गोदावरीभवम् ॥

अर्थ-गोदावरी नदीका जल-कण्डू, कुष्ठ और वातपित्तनाशक है, अग्नि प्रदीपक और पाचक है ।

कावेरीनदीजलगुणाः ।

कावेरीसलिलं पथ्यं वातघ्नं बलवर्णकृत् ।
आग्नेयमतिशीतश्च दद्रुकुष्ठविनाशकृत् ॥

अर्थ-कावेरीनदीका जल-पथ्य, वातविनाशक, बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, जठराग्निको बढानेवाला, अत्यन्त शीतल तथा दाद और कुष्ठका नाश करे है ।

कृष्णवेणीजलगुणा ।

रूक्षं च शीतलं वारि वातरक्तप्रकोपनम् ।

अर्थ-कृष्णावेणीकाजल-रुखा, शीतल और वातरक्तकोकुपितकरेहै।

पूर्वदेशोद्भवा नद्यः सर्वा वातकफप्रदाः । पश्चिमाः पित्तलाः सर्वाः कफवातविनाशनाः ॥ पश्चिमोदधिगाः शीघ्रवहा याश्चामलोदकाः । पथ्याः समासात्ता नद्यो विपरीतास्ततोऽन्यथा ॥

अर्थ-पूर्वदेशकी सर्वनदी-वातकफकारक । पश्चिमदेशकी सर्वनदी पित्तकारक और कफवातविनाशकहैं । पश्चिमके समुद्रमें जानेवाली

नदियोंका जल और शीघ्र वहनेवाली नदियोंका जल निर्मल है। नदीका जल अल्पही पथ्य होता है और अधिक सेवन करना अहितकारक है।

नादेयं संप्रवक्ष्यामि समुद्रगामिस्रोतसाम्॥ ससैकता सपाषाणा द्विविधा चाम्बुवाहिनी॥सदादहा वा घनवारिकोष्णा मरुत्कफानां शमनञ्च तस्याः। नीरं वसन्ते हितकृद्विशेषान्नदीभवं नैव हिमागमे च॥ घनविमलशिलानां स्फालनाज्जातफेनं बहलसजलवीचीच्छन्नसंक्षोभहृत्तम्। ननु सुखमयशीतं नातिचोष्णं घनञ्च हरति पवनपित्तं श्लेष्मकृद्वारि सम्यक्॥ न घनविमलतोयं सैकतायाः प्रवाहो नच भवति लघुत्वं श्लेष्मकृद्धन्ति पित्तम्। भवति मधुरमेवं किञ्चिदुष्णं कषायं भवति पवनकारी शोषमूर्च्छां निहन्ति॥ हिमवत्प्रभवा नद्यः पुण्या देवर्षिसेविताः। घनपाषाणसिकतावाहिनी विमलोदकाः॥ हन्ति वातकफं तोयं श्रमशोषविनाशनम्। किञ्चित्करोति वा पित्तं त्रिदोषशमनं जलम्॥ पारिभद्रभवा याश्च विन्ध्यसिन्धुभवाश्च याः।शिरोहृद्रोगकुष्ठानां ता हेतुः श्लीपदस्य च॥ मलयप्रभवा नद्यः शीततोयाः सुधोपमाः।प्रतिपित्तं च वातं च शोषभ्रमश्रमापहाः॥गंगा सरस्वती शोणा यमुना सरयू शची। वेणा शरावती नीला उत्तरापूर्ववाहिनी॥ हिमवत्प्रभवा ह्येता हिमसंघातशीतलाः।समाः सर्वगुणैर्नद्यो वातश्लेष्महरा नृणाम्॥ आसां नवशतैर्युक्ता गङ्गा प्रोक्ता मनीषिभिः।तथा चर्मण्वती वेत्रवती पारावती तथा॥क्षिप्रा महापदी पीता मुत्सकन्या मनस्विनी।शेवती चैव शैलिन्यः सिन्धुयुक्ताः समुद्रगाः॥ वातपित्तहरं नीरं त्रिदोषघ्नं मतं परम्। श्रमग्लानिहरं वृष्यमुत्तराशानुगामि च॥तापी गोपतिगोलोमी गोमती सलिला मही।

सरस्वतीयुता नद्यो नर्म्मदा पश्चिमानुगाः ॥ आसां जलं घनं शीतं पित्तघ्नं कफकृत्तथा । वातदोषहरं हृद्यं कण्डूकुष्ठविनाशनम् ॥ पश्चिमाद्रिसमुद्भूता गौतमीपुण्यभावनाः । आसां शीतं जलं वापि कफवातविकारकृत्॥पित्तदं शमनं बल्यं मूत्रदोषविकारकृत् । पूर्णा पयस्विनी वेत्रा प्रणीता च वरानना॥ द्रोणा गोवर्द्धनी यान्या गौतम्यानुगता इमाः ।आसां जलं घनं नातिवातश्लेष्मविकारकृत् ॥ पूर्वसमुद्रगाश्चैव नद्यो नवशतैर्युताः । कावेरी वीरकान्ता च भीमा चैव पयस्विनी॥ विभावरी विशाला च गोवन्दनी मदनस्वसा।पार्वती चापरा नद्यो दक्षिणादिग्गमा इमाः ॥प्रत्येकशो नवशतैर्युता इमाः पृथक्पृथक् । सर्वासां परिसंख्या च शतानां चैकविंशतिः॥क्रोशेक्रोशे भवेत्कुल्या योजनेयोजने नदी। द्वियोजना च विज्ञेया महानीरा बुधैर्नदी ॥ (हा० सं०)

अर्थ-आत्रेयजी कहतेहैं कि, अब समुद्रमें जानेवाली नदियोंको कहताहूं, रेतवाली और पत्थरोंवाली इन भेदोंसे नदी दो प्रकारकी है। सदैव बहनेवाली नदी-घनजलवाली, गरम, वात और कफकी शान्ति करनेवाली हैं उनका जल विशेष करके वसंतऋतुमें हितकारी नहीं है। घन और निर्मल ऐसे पत्थरोंवाली नदीका जल-फेनयुक्त और तरंगोंके क्षोभसे गरम होजाता है, सुंदर, शीतल, अत्यन्त उष्ण नहीं, हलका, घन, वातपित्तनाशक और कफको करता है। बालु रेतवाली नदियोंका जल-घन नहीं, निर्मल,हलका भी नहीं, कफकारक, पित्तनाशक, मधुर, किञ्चित् गरम, कषेला, वातकारक तथा मूर्च्छा और शोषको दूर करे है। हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई नदी पवित्र हैं देव और ऋषियों करके सेवित हैं, भारी पत्थर और बालूकरके युक्त बहनेवाली हैं और उनका जल-निर्मल, वातकफनाशक, श्रम निवारक, शोषनाशक, किञ्चित् पित्तकारक तथा पित्त और त्रिदोषको शान्ति करे है।पारिभद्र. विन्ध्याचल और सिन्धुपर्वतसे उत्पन्न हुई नदियोंका जल-शिरोरोग, हृदयरोग,कुष्ठ और श्लीपदादिरोगोंका कारण है।मलय पर्वतसे उत्पन्न हुई नदियोंका

जल-शीतल,अमृतके समान तथा वात,पित्त,शोष,भ्रम और श्रमका नाश करे है। गंगा,सरस्वती, शोण, यमुना, सरयू, शची, वेणा, शरावती और नीला तथा उत्तर और पूर्वको बहनेवाली, हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई और हिमके संघातसे शीतल हुई यह सर्वनदी गुणोंमें समान और मनुष्योंके वात तथा कफको हरनेवाली हैं। इनमें ९०० नौसौ नदियोंयुक्त गंगा कही है । तथा चर्मण्वती, वेत्रवती, पारावती, क्षिप्रा, महापदी, पीता, मुत्सका, मनस्विनी, शेवती, शैवलिनी और सिन्धु,यह सर्वनदी समुद्रमें जानेवाली हैं। इन सर्वनदियोंका जल–वातपित्तनाशक,त्रिदोषनाशक,श्रमहारक, ग्लानिनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक और उत्तर दिशासे आता है तापी, गोमती, गोलोमी, गोमती, सालिला, मही, सरस्वती और नर्मदा यह सर्व पश्चिमसे बहती हैं इनका जल–घन, शीतल, पित्तनाशक कफकारक, वातविकारविनाशक, हृदयको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठका नाश करे है।पश्चिमके पर्वतसे उत्पन्न हुई गौतमी और पुण्यभावना आदि नदियोंका जल–शीतल कफ और वातके विकारोंको करे है। पित्तज दोषोंको शान्ति करे है, बलकारक और मूत्रदोषोंको उत्पन्न करे है। पूर्णा, पयस्विनी, वेत्रा, प्रणीता, वरानना, द्रोणा,गोवर्द्धनी आदि नदी गौतमी नदीका अनुगमन करती हैं। इनका जल–अत्यन्त घन नहीं है तथा वात और कफके दोषोंको उत्पन्न करे है।पूर्वके समुद्रमें गमन करनेवाली ९००नदी हैं। कावेरी, वीरकान्ता,भीमा, पयस्विनी, विभावरी, विशाला, गोवन्दनी,मदनस्वसा और पार्वती आदि नदी दक्षिण दिशाको गमन करनेवाली हैं। एक२नदी ९०० नदीयुक्त हैं और सर्वहिन्दोस्थानकी नदियोंकी संख्या २१०० हैं। कोशकोशमें कुल्या होती हैं,योजन२ में नदी होती हैं और बारह २ योजनमें महाजलवाली नदी होती है जिसको नद कहते हैं।

औद्भिदभूमिगुणाः ।

भूमिः पञ्चविधा ज्ञेया कृष्णा रक्ता सिता तथा।पीता नीला भवेच्चान्या गुणास्तासां प्रकीर्त्तिताः ॥ सा कृष्णा मधुरा क्षारा कषाया पीतवर्णिनी।रक्ता सा तु भवेत्तिक्ता मधुराम्ला सिता स्मृता॥नीला सकटुका ज्ञेया भूमिभागाज्जलं विदुः।सघनं मधुरं नीरं कृष्णभूमिपरिस्रुतम् ॥ पीतास्थितं कषायं च रक्तायाः क्षारमाधुरम्।सितायाः ह्यम्लमधुरं भूमिभागेन लक्षयेत्॥(हा॰सं)

अर्थ-पृथिवी-काली, लाल,सफेद, पीली और नीली इन भेदोंसे पांच प्रकारकी है,अब उनके गुण कहते हैं,काली पृथिवी मधुर और खारी है। पीले रंगकी पृथिवी कषेली है। लाल पृथिवी कडवी है। सफेद पृथिवी-मधुर और खट्टी है। और नीली पृथिवी चरपरी है। ऐसेही पृथिवीके भागका पानी कहा है। काली पृथिवीका जल-घन और मधुर होताहै। पीली पृथिवीका पानी-कषेला होताहै। लाल भूमिका जल-खारी और मधुर होता है सफेद भूमिका जल-अम्ल और मधुर होताहै ऐसे पृथिवीके भागसे जलको लक्षित करे, प्रायः पृथिवीके समान जलका स्वाद होता है।

औद्भिदजललक्षणं गुणाश्च।

विदार्य्य भूमिं निम्नाया महत्या धारया स्रवेत्।तत्तोयमौद्भिदं नाम वदन्तीति महर्षयः॥औद्भिदं वारि पित्तघ्नं सविदाह्यतिशीतलम्।प्रीणनं मधुरं बल्यमीषद्वातकरं लघु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पृथिवीको फाडकर जो नीचे बडी धारासे जल बहताहै उस जलको औद्भिद जल कहते हैं,औद्भिदजल-पित्तनाशक, अविदाही, अत्यन्त शीतल. प्रीणन, मधुर, बलकारक, किंचित् वातकारक और हलका है।

अथ प्रस्रवणजलस्य लक्षणं गुणाश्च।

शैलसानुस्रवद्वारि प्रवाहो निर्झरो झरः।स तु प्रस्रवणश्चापि तत्रत्यं नैर्झरं जलम् ॥नैर्झरं रुचिकृन्नीरं कफघ्नं दीपनं लघु। मधुरं कटुपाकं च वातलं स्यादपित्तलम् ॥

अर्थ-पर्वतमेंसे जो जल बहताहै उसको निर्झर,झर और प्रस्रवण कहतेहैं, हिन्दीमें झरनेका जल कहते हैं झरनेका जल-रुचिकारक, कफनाशक,दीपन,हलका, मधुर, कटुपाकी, वातजनक और अपित्तल है।

अथ चौंड्यस्य लक्षणं गुणाश्च।

शिलाकीर्णं स्वयं श्वभ्रं नीलाञ्जनसमोदकम्। लतावितानसंछन्नं चौण्ड्यमित्यभिधीयते ॥ अश्मादिभिरबद्धं यत्तच्चौञ्ज्यमिति चापरे। तत्रत्यमुदकं चौञ्ज्यं मुनिभिस्तदुदाहृतम्॥चौञ्ज्यं वह्निकरं नीरं रूक्षं कफहरं लघु। मधुरं पित्तनुद्रुच्यं पाचनं विशदं स्मृतम् ॥

अर्थ-जो गड्ढा चारों ओरसे शिलाओंकरके व्याप्त हो और जिसका जल नील अंजनकी समान निर्मलहो और जिसके ऊपर लता छारहीहों उसको चौण्ड्य कहतेहैं कोई आचार्य्य कहतेहैं कि, जो पत्थर आदिसे न बांधाहो उसको चौञ्ज्य कहतेहैं।उसके जलको चौञ्ज्य जल कहतेहैं । चौण्ड्यका जल-जठराग्निजनक, रूखा, कफनाशक, हलका, मधुर पित्तनाशक, रुचिकारक, पाचक और विशद है ।

अथ कौपस्य लक्षणं गुणाश्च ।

भूमौ खातोल्पविस्तारो गम्भीरो मण्डलाकृतिः । बद्धोऽबद्धः स कूपः स्यात्तदम्भः कौपमुच्यते॥ कौपं जलं यदि स्वादु त्रिदोषघ्नं हितं लघु । तत्क्षारं कफवातघ्नं दीपनं पित्तकृत्परम् ॥

(भा० प्र०)

अर्थ-भूमिमें थोडा चौडा गहरागोल गड्ढा खोदकर ईटपत्थरोंसे बनाले वा कच्चाही रहनेदेवे उसको कूप कहतेहैं और उसके जलको कौपजल कहतेहैं, कुयेका जल यदि स्वादिष्ठ हो तो त्रिदोषनाशक, पथ्य और जो हलका होताहै और खारी होय तो कफवातनाशक, दीपन और पित्तकारक होताहै ।

अन्यच्च ।

कफघ्नं कूपपानीयं क्षारं पित्तकरं लघु । (रा० नि०)

अर्थ-औरभी कुयेका जल-कफनाशक, खारी, पित्तकारक और हलका है ।

तडागजलस्य लक्षणं गुणाश्चः ।

प्रशस्तो भूमिभागस्थो बहुसंवत्सरोषितः । जलाशयस्तडागः स्यात्ताडागं तज्जलं स्मृतम् ॥ ताडागमुदकं स्वादु कषायं कटुपाकि च । वातलं बद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् ॥

अर्थ-उत्तम भूमिके भागमें बहुतवर्षोंके पुराने जलाशयको तडाग कहतेहैं, उसके जलको ताडागजल कहतेहैं । तालाबका जल स्वादिष्ठ, कषेला, कटुपाकी, वातवर्द्धक, मल और मूत्रको बाँधनेवाला तथा रक्तपित्त और कफका नाश करे है ।

सारसलक्षणं गुणाश्च ।

नद्याः शैलादिरुद्धाया यत्र संश्रित्य तिष्ठति । तत्सरोजलसंच्छन्नं तदम्भः सारसं स्मृतम् ॥ सारसं सलिलं बल्यं तृष्णाघ्नं मधुरं लघु । रोचनं तुवरं रूक्षं बद्धमूत्रमलं स्मृतम् ॥

अर्थ-जहां नदी पहाड आदिसे रुककर ठहर जावे उसको सर कहतेहैं, उसके जलको सारस कहतेहैं । सरका जल-बलकारक, तृषानाशक, मधुर, हलका, रोचन, कषेला, रूखा तथा मल और मूत्रको बांधनेवाला है ।

वाप्यलक्षणं गुणाश्च ।

पाषाणैरिष्टकाभिर्वा बद्धः कूपोऽबहूत्तरः । ससोपानो भवेद्वापी तज्जलं वाप्यमुच्यते ॥ वाप्यं वारि यदि क्षारं पित्तकृत्कफवातहृत् । तदेवमिष्टं कफकृद्वातपित्तहरं भवेत् ॥

अर्थ-पत्थर अथवा ईटोंसे जो बडा कुआ बनाया जावे और उसमें सोपान अर्थात् सीढीभीं लगाईजावें उसको वापी (बावडी) कहते हैं और इसके जलको वाप्य कहते हैं बावडीका पानी जो खारी होय तो पित्तकारक और कफवातहारक जानना । और जो मीठा होय तो कफकारक और वातपित्तहारक जानना ।

पाल्वलस्य लक्षणं गुणाश्च ।

अल्पं सरः पल्वलं स्याद्यत्र चन्द्रर्क्षगे रवौ ।
न तिष्ठति जलं किञ्चित्तत्रत्यं वारि पाल्वलम् ॥
पाल्वलं वार्य्यभिष्यन्दि गुरु स्वादु त्रिदोषकृत् ।

अर्थ-छोटे सरको पल्वल कहते हैं, इसमें श्रावण तथा वर्षामें जल रहता है फिर सूखजाता है, इसके जलको पाल्वल कहते हैं । पल्बल अर्थात् तलैयाका जल-अभिष्यन्दी, भारी, स्वादु और त्रिदोषकारक है।

विकिरस्य लक्षणं गुणाश्च ।

नद्यादिनिकटे भूमिर्य्या भवेद्वालुकामयी । उद्धाव्यते ततो यत्तु तज्जलं विकिरं विदुः ॥ विकिरं शीतलं स्वच्छं निर्दोषं लघु च स्मृतम् । तुवरं स्वादु पित्तघ्नं क्षारं तत्पित्तलं मनाक् ॥

अर्थ-नदीके निकट जो पृथिवी वालुयुक्त होतीहै उसमें गड्ढा खोदकर जो जलको निकालते हैं उस जलको विकिर (चोहेका) जल कहते हैं । विकिर (चोहेका) जल-शीतल, निर्मल, निर्दोष, हलका, कषेला, स्वादिष्ट और पित्तनाशक है और जो खारी होय तो पित्तकारक जानना ।

केदारस्य लक्षणं गुणाश्च ।

केदारं क्षेत्रमुद्दिष्टं केदारं तज्जलं स्मृतम् ।

कैदारं वार्य्यभिष्यन्दि मधुरं गुरु दोषकृत् ॥

अर्थ-केदार खेतको कहते हैं और इसको जलके कैदार कहते हैं। केदारका जल-अभिष्यन्दि, मधुर, भारी और दोषकारी है।

वृष्टिजललक्षणं गुणाश्च ।

वार्षिकं तदहर्वृष्टं भुमिस्थमहितं जलम् ।
त्रिरात्रमुषितन्तत्तु प्रसन्नममृतोपमम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जो वृष्टिका जल उसी दिन वर्षा हो और भूमिस्थित हो वह जल अहितकारीहै और जो वही जल तीन रात्रि रक्खा है तो स्वच्छ और अमृतकी समान होजाता है।

क्षारजलगुणाः ।

क्षारोदकं पित्तलं स्यात्सरं चाग्निप्रदीपनम् ।
कफवातहरं चैव प्रोक्तं पूर्वचिकित्सकैः ॥

अर्थ-खारीजल-पित्तकारक, सारक, अग्निप्रदीपक तथा कफ और वातका विनाश करे है।

समुद्रजलगुणाः ।

सामुद्रं दोषजनकं दाहकं रक्तदोषकृत् ।
अग्निमांद्यं श्लीपदं च त्वग्दोषञ्च कफं जयेत्॥ (वै०नि०)

अर्थ-समुद्रका पानी-दोषजनक, दाहकारक, रक्तके विकारोंको करनेवाला तथा मंदाग्नि, श्लीपद, त्वचाके दोष और कफका नाशकरेहै

सर्वऋतुसम्बन्धिजलगुणाः ।

वारि साधारणं वृष्यं दीपनं मधुरं लघु ॥

अर्थ-साधारण जल- वीर्य्यवर्द्धक, दीपन, मधुर और हलकाहै।

वार्षिकजलगुणाः ।

गुर्व्वभिष्यन्दि पानीयं वार्षिकं मधुरं सरम् ।

अर्थ-वर्षाऋतुका जल-भारी, क्लेदकारक, मधुर और सारकहै।

शारदीयजलगुणाः ।

शारदञ्चानभिष्यन्दि लघु तत्परिकीर्तितम् ।

अर्थ-शरदृऋतुका जल-अनाभिष्यंदि अर्थात् क्लेदहीन और हलका है।

हैमन्तिकजलगुणाः।

हैमन्तिकं जलं स्निग्धं वृष्यं बल्यं हितं गुरु।

अर्थ-हेमन्तऋतुका जल-स्निग्ध, वृष्य, बलकारक, हितकारी और भारी है।

शैशिरजलगुणाः।

शैशिरं कफवातघ्नं किञ्चिद्धैमन्तिकाल्लघु।

अर्थ-शिशिरऋतुका जल-कफ वातनाशक और हैमन्तिक जलसे किञ्चित् हलका है।

वासन्तिकजलगुणाः।

कषायं मधुरं रूक्षं विद्याद्वासंतिकं जलम्।

अर्थ-वसन्तऋतुका जल-कषेला, मधुर, और रूखा होता है।

ग्रैष्मिकजलगुणाः।

ग्रैष्मिकञ्चानभिष्यन्दि जलमित्येष निश्चयः॥ (रा० व०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका जल-क्लेदरहित होता है।

ऋतुपरत्वेन जलगुणाः।

हेमन्ते सारसं तोयं ताडागं वा हितं स्मृतम्। हेमन्ते विहितं तोयं शिशिरेऽपि प्रशस्यते॥ वसन्तग्रीष्मयोः कौपं वाप्यं वा नैर्झरं जलम्। नादेयं वारिनादेयं वसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः॥ विषवद्वनवृक्षाणां पत्राद्यैर्दूषितं यतः। औद्भिदं वान्तरिक्षं वा कौपं वा प्रावृषि स्मृतम्॥ शस्तं शरदि नादेयं नीरमंशूदकं परम्

(भा० प्र०)

अर्थ-हेमन्तऋतुमें सरोवर और तालावका जल पीना हितकारी है, जो जल हेमन्तऋतुमें हितकारी कहा है वह जल शिशिर ऋतुमें भी हितकारी, है वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें कुयेका, बावडीका और झरनेका जल पीना चाहिये, वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें नदीका जल नहीं देना चाहिये। कारण यह है कि, इसऋतुमें पतझड होता है इससे उन पत्तोंसे वह नदीका जल विषकी समान दूषित होजाता है। वर्षाऋतुमें औद्भिद वा अन्तरिक्षजल अथवा कुयेका जल पीना चाहिये और शरदृऋतुमें नदीका जल अथवा अंशूदक सेवन करना चाहिये।

अन्यच्च ।

शरदि स्वच्छमुदयादगस्त्यस्याखिलं हितम् ॥

अर्थ-शरदृऋतुमें अगस्त्यऋषिके उदय होनेसे सर्व जल निर्मल और हितकारी होजाते हैं ।

अन्यच्च ।

पौषे वारि सरोजातं माघे तत्तु तडागजम् ।फाल्गुने कूपसम्भूतं
चैत्रे चौण्ढ्यं हितं मतम्॥ वैशाखे नैर्झरं नीरं ज्येष्ठे शस्तं तथौ
द्भिदम् । आषाढे शस्यते कौपं श्रावणे दिव्यमेव च ॥ भाद्रे
कौपं पयः शस्तमाश्विने चौंज्यमेव च । कार्तिके मार्गशीर्षे
च जल मात्रं प्रशस्यते ॥ (वृद्धसुश्रुतात्)

अर्थ-पौषके महीनेमें सरोवरका जल, माघके महीनेमें तलावका फाल्गुणके महीनेमें कुयेका, चैत्रके महीनेमें चौण्डचका, वैशाखके महीनेमें झरनेका, जेठके महीनेमें उद्भिदका, आषाढके महीनेमें कुयेका, श्रावणके महीनेमें दिव्योदक, भादोंके महीनेमें कुएका, आश्विनके महीनेमें चौंज्य और कार्तिक तथा मार्गशीर्षके महीनेमें सर्व जल सेवन करने चाहिये ।

तथा चतुर्विधं तोयं वक्ष्यामि शृणु कोविद ।
पापोदकं रोगोदकमंशूदकारोग्योदकौ ॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि अब जलको-पापोदक-रोगोदक-अंशूदक और आरोग्योदक इन भेदोंसे चार प्रकारसे कहता हूं. हे हारीत ! सुन ।

पापोदक ।

पापं पापोदकं चैव करोत्येवमरोचकम् । विष्ठायुक्तं ग्राहि नीरं
कृमिकीटसमाकुलम् ॥ समलं नीलशैवालं पापन्तु नर्दितं च
यत्।स्नाने पाने न तच्छस्तं नराणां वा हयेषु च॥स्नानेन त्वगभ-
वान्रोगान्कण्डूकुष्ठविसर्पकृत् । पानेन कफगुल्मानां कृमीणां
वरसम्भवान् ॥ करोति विविधान्रोगांस्तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥

अर्थ-पापोदक अर्थात् पापीपानी-अरुचिकारक है । विष्ठायुक्त जल-मलरोधक है । कृमि, कीट, मल और नीलिकाई आदिसे मिलेहुये जलको पापोदक कहतेहैं । यह पापोदक-मनुष्य और

घोडोंको स्नान और पीनेमें अहितकारी है। और इस जलसे स्नान करनेसे त्वचाके रोग, कण्डू, कुष्ठ और विसर्प रोग उत्पन्न होता है। और इस जलको पान करनेसे-कफ, गुल्म और कृमिप्रभृति नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। इस कारण यह पापीजल कदापि नहीं पीना चाहिये।

रोगोदकम्।

बहुवृक्षलताकुञ्जछायाकूपोऽथ वा सरः। अव्ययश्चेद्धोऽप्येवं कृमिशैवालसंययुतम् ॥ क्लिन्नं सपिच्छिलं कृष्णं वृक्षमूलाश्रितं भवेत्। बहुवृक्षपर्णयुक्तं दुर्गन्धं मूत्रगन्धवत् ॥ रोगोदकं विजानीयात्करोति विषमान्गदान्।शूलं कुष्ठं च कण्डूं च सेविते न करोति हि ॥विण्मूत्रतृणनीलिकाविषयुतं तप्तं घनं फेनिलं दन्तग्राह्यमनार्त्तवं हि सजलं दुर्गन्धि शैवालजम्। नानाजीवविमिश्रितं गुरुतरं पर्णौघपङ्काविलं चन्द्रार्कांशुसुगोपितं न च पिबेन्नीरं सदा दोषलम् ॥ गुल्मं प्लीहार्शः पाण्डुश्च जलं वापिजलोदरम्।

अर्थ-बहुतसे वृक्ष और बहुतसी बेलोंके समूहकी छायामें कूवा वा सरोवर हो और उसमें पानी सदैव भरा रहता हो वह जल कृमि, शिवारयुक्त हो, क्लेदितहो, पिच्छिल हो, काले रंगका हो, वृक्षोंकी जडोंसे आश्रितहो और बहुत वृक्षोंके पत्तोंसे युक्त हो, दुर्गंधित हो मूत्रकी समान गन्धवाला हो उसको रोगोदक अर्थात् रोगी पानी-विषमरोग, शूल कुष्ठ और कण्डूरोगको उत्पन्न करता है। तथा जो जल विष्ठा, मूत्र, तृण, काई और विषसहित हो, गरमहो, घनहो,फेनिलहो,दांतोंको पकडताहो, अकालमें वर्षाहो, दुर्गन्धियुक्तहो,शिवारयुक्तहो, अनेक प्रकारके जीवोंसे मिलाहुवाहो अधिकतर भारीहो, पत्र और कीचडसे मैलाहो और जिसपर चन्द्रमा और सूर्य्यकी किरणें नहीं पडतीं हों वह जलभी रोगोदक जानना,यह जलभी नहीं पीना चाहिये। यह सर्व कालमें दोषजनक है तथा गुल्म, प्लीहा, बवासीर, पाण्डु ओर जलोदर रोगको उत्पन्न करता है।

अंशूदकम्।

दिवासूर्यांशुसन्तप्तं रात्रौ चन्द्रांशुशीतलम्।

अंशूदकमिति ख्यातं सर्वरोगनिवारकम् ॥
कफमेदोनिलघ्नं च दीपनं वस्तिशोधनम् ।
श्वासकासहरं नीरं चक्षुष्यं नेत्ररोगहृत् ॥

अर्थ-जो जल-दिनमें सूर्यकी किरणोंसे तप्त होताहै और रात्रिमें चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल होता है वह जल अंशूदक नामसे विख्यात है। अंशूदक सर्वरोगनिवारक है, कफ,मेद और वातविनाशक है। दीपन, वस्तिशोधक श्वास और खाँसीको हरनेवाला, नेत्रोंको हितकारी और नेत्ररोगनाशक ह।

आरोग्योदकम्।

पादशेषन्तु कथितं तच्चारोग्यजलं विदुः। कासश्वासहरं पथ्यं मारुतं चापकर्षति॥ सद्यो ज्वरं हरत्याशु समेदःकफनाशनम्। प्रतिश्यायं पाचयति शूलगुल्मार्शनाशनम्। दीपनञ्च हुताशस्य पाण्डुशोथोदरापहम्। अजीर्णञ्च जरत्याशु पीतमुष्णोदकं निशि ॥(हारीतसंहिता)

अर्थ-जो जल-अग्निपर औटानेसे चौथाई भाग बाकी रहजाय वह आरोग्योदक है। आरोग्योदक-खांसी और श्वासको हरनेवाला, पथ्य, वातविनाशक, नवीन ज्वरको शीघ्र हरनेवाला तथा मेद,कफ, प्रतिश्याय, शूल, गुल्म और बवासीरको दूर करै है। अग्निप्रदीपक और पाण्डुरोग, सूजन,उदररोग तथा रात्रिमें पिया-हुआ गरमजल अजीर्णको दूर करे है।

जलग्रहणकालः।

भौमानामम्भसां प्रायो ग्रहणं प्रातरिष्यते ।
शीतत्वं निर्मलत्वं च यतस्तेषां मतो गुणः ॥

अर्थ-भूमिसम्बधी जल प्रातःकालही ग्रहण करना चाहिये, कारण यह है कि जलमें मुख्य गुण शीतलता और निर्मलता, है, सो यह दोनों गुण प्रातःकालही होते हैं।

शीतजलगुणाः।

शीताम्बुमदमूर्च्छाघ्नं छर्दिपित्तज्वरापहम् ।
श्रमक्लमतृषादाहमदात्ययविषापहम् ॥

अर्थ-शीतजल-मद, मूर्च्छा, वमन, पित्तज्वर, श्रम, क्लम, तृषा' दाह, मदात्यय और विषका नाशकरेहै ।

उष्णोदकलक्षणं गुणाश्च ।

क्वाथ्यमानन्तु यत्तोयं निष्फेनं निर्मलीकृतम् । भवत्यर्द्धावशिष्टन्तु तदुष्णोदकमुच्यते ॥ उष्णोदकं सदा पथ्यं कासज्वरविबन्धनुत् ॥ कफवातामदोषघ्नं दीपनं वस्तिशोधनम् ॥ तत्पादहीनं वातघ्नमर्द्धहीनन्तु पित्तजित् । कफघ्नं पादशेषन्तु पानीयं लघु दीपनम् ॥ (राज०)

अर्थ-क्वाथ्यमानजलको अग्नि देते २ जब वह निष्फेन और निर्मल होकर अर्द्धशेष रहजाय तब उस जलको उष्ण जल कहते हैं। उष्ण जल सदैव पथ्य, तथा कास, ज्वर, विबन्ध, कफ, वात और आमदोषनाशक है, दीपन और वस्तिशोधक है। उष्ण जलका जब जलते २ एकपाद कम होजावे तब वह जल वातविनाशक होजाता है और जब जलते २ आधा बाकी रहजाय तब वह जल पित्तनाशक होजाता है और जब जलते १ एकही भाग शेष रहजाय तब वह जल कफनाशक, हलका और अग्निप्रदीपक होजाताहै ।

अन्यच्च ।

अष्टमेनांशशेषेण चतुर्थेनार्द्धके न च। अथवा क्वाथने चैव सिद्धमुष्णोदकं वदेत् ॥ श्लेष्मामवातमेदोघ्नं वस्तिशोधनदीपनम् । कासश्वासज्वरान्हन्ति पीतमुष्णोदकं निशि ॥

अर्थ-जो जल-औटाते २ आठवां भाग शेष रहगया हो, उसको वा औटाते २ चौथा भाग शेष रहगयाहो उसको अथवा औटाते २ आधा रहगयाहो उसको तथा केवल औटायेहुवेही जलको उष्णोदक कहते हैं। उष्णजल रात्रिमें पियाहुवा-कफ, आमवात और मेदरोगनाशक है। वस्तिशोधक, दीपन तथा खांसी, श्वास और ज्वरको हरनेवाला है।

ऋतुभेदे उष्णजलभेदः ।

हेमन्ते शिशिरे पादहीनं पादस्थितं मधौ
स्यात्पानीयं शरत्काले ग्रीष्मे चार्द्धावशेषितम् ॥

इच्छन्ति बहुदोषत्वात्प्रावृष्यष्टावशेषितम् ।

अर्थ-उष्णजल हेमन्त और शिशिर ऋतुमें चतुर्थांशहीन, वसन्तऋतुमें चतुर्थांश शेष, शरव् और ग्रीष्मऋतुमें अर्द्धशेष और वर्षाऋतुमें जल बहुत दोषयुक्त होताहै, इसकारण इस ऋतुमें उष्णजलको, औटाते २ जब आठवां भाग शेष रहजाय तब व्यवहारमें लाना चाहिये ।

अन्यच्च ।

त्रिपादशेषं सलिलं ग्रीष्मे शरदि शस्यते ।
हिमेऽर्द्धशेषं शिशिरे तथा वर्षावसन्तयोः ॥

अर्थ-कोई वैद्य ऐसा कहतेहैं कि उष्णजल ग्रीष्म और शरदऋतुमें तीन पादशेष रहनेपर और हिमऋतु, शिशिरऋतु वर्षा और वसन्त ऋतुमें अर्द्धशेष रहनेपर सेवन करना चाहिये ।

पर्य्युषितजलगुणाः ।

दिवाशृतश्च यत्तोयं रात्रौ तद्गुरुतां व्रजेत् । रात्रौ शृतं दिवा चापि गुरुत्वमधिगच्छति ॥ रात्रौ तप्तश्च शीतश्च न पेयं दिवसे जनैः । दिवातप्तश्च शीतश्च न पेयं निशि सर्वदा ॥

अर्थ-दिनका औटाया हुआ पानी रात्रिमें भारीपनको प्राप्त हो जाता है और रात्रिका औटाया जल दिनमें भारीपनको प्राप्त हो जाताहै। रात्रिमें औटाकर जो जल शीतल होजाय वह जल दिनमें नहीं पीना चाहिये और जो जल दिनमें औटाकर शीतल होजाय वह जल रात्रिमें नहीं पीना चाहिये ।

शृतशीतजलगुणाः ।

शृतशीतं त्रिदोषघ्नं यदन्तर्बाष्पशीतलम् ॥

अर्थ-जो जल औटाकर अपने आप ढके हुए वासनमें शीतल हुआहो वह जल त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

शृतशीतं न च स्निग्धं न रूक्षं च तदेव हि ।
न च श्लेष्मकरं तद्धि न च वायुं प्रकोपयेत् ॥

अर्थ-शृतशीत अर्थात् जो औटाकर ठंढा होगयाहो वह जल स्निग्ध नहीं है, न रूखा है, न कफकारक और न वायुको कुपित करेहै ।

अन्यच्च ।

स्वच्छं सज्जनचित्तवल्लघुतया नाप्यार्त्तवच्छीतलं पुत्रालिंगनवत्तथैव मधुरं बालस्य संजल्पवत् । पथ्यं दीपनपाचनं लघुतरं सश्वासकासापहं हिक्काध्माननवज्वरेऽपि शमनं श्लेष्मापहं श्वासजित् ॥ संशुद्धौ वरबस्तिशुद्धिकरणं हृत्पार्श्वशूलापहं गुल्मारोचकपीनसे निगदितं शीतोष्णमेतज्जलम् ॥

अर्थ-शृतशीतल-स्वच्छ, सज्जनके चित्तकी समान निर्मल, हलका,शीतल पुत्रके आलिंगनकी समान मधुर,पथ्य, दीपन, पाचक, लघुतर तथा श्वासयुक्त खांसी, हिचकी, अफारा, नवीन ज्वर, कफ और श्वासको दूर करे है । शुद्ध, वस्तिशोधक, हृदयरोग, पार्श्वकी पीडा और शूलको दूर करेहै । और गुल्म,अरुचि और पीनसरोगमें हितकारी है ।

अपिच ।

पित्तोत्तरे पित्तरोगे पित्तासृक्कफपित्तयोः । मूर्च्छाछर्द्दिज्वरे दाहे तृष्णातीसारपीडिते ॥ धातुक्षये विषार्त्ते च सन्निपाते विशेषतः । शस्तं विबन्धरोगे च शृतशीतं जलं सदा ॥

अर्थ-शृतशीतजल-कफ, वात और पित्तरोगमें, रक्तपित्त और कफ पित्तमें, मूर्च्छा. वमन, ज्वर, दाह, तृषा, अतिसार, धातुक्षय, विषसे पीडित रोगोंमें, सन्निपात रोगमें और विशेष करके विबन्ध रोगमें हितकारी है ।

अपिच ।

द्विपाचितं जलं पीतं विषतुल्यं सदा चरेत् ।

अर्थ-औटाकर शीतल कियेहुये जलको दुबारा गरम नहीं करना चाहिये । क्योंकि, गरम जलको दुबारा गरमकरके पानकरनेसे विषकी समान अपकार करता है ।

उष्णजलनिषेधः ।

मदात्यये सदाहे च रक्तपित्ते तथोर्ध्वगे ।
रक्तमेहे विशेषेण नोष्णं तोयं प्रशस्यते ॥ (हा० सं०)

अर्थ-गरमजल-मदात्यय, दाह, रक्तपित्त, ऊर्ध्वरोग, और रक्तप्रमेह रोगमें अहितकारी है ।

शीतलजलनिषेधः।

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे । आध्माने स्तिमिते
कोष्ठे सद्यःशुद्धौ नवज्वरे ॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषु
विद्रधौ । हिक्कायां स्नेहपाने च शीताम्बु परिवर्ज्जयेत् ॥
(भावप्रकाश)

अर्थ-शीतलजल-पसवाडेकी पीडा, प्रतिश्याय, वातरोग, गलग्रह, आध्मान, बद्धकोष्ठ, जो तत्काल जुल्लाब ले चुकाहो, नवीनज्वर, अरुचि, संग्रहणी, गुल्म, श्वास, खांसी, विद्रधि, हिचकीरोग और स्नेहपानमें त्याज्य है ।

अल्पजलपानविषयः।

अरोचके प्रतिश्याये मन्देऽग्नौ श्वयथौ क्षये। मुखप्रसेके जठरे
कुष्ठे नेत्रामये ज्वरे ॥ व्रणे च मधुमेहे च पिबेत्पानीयमल्पकम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-अरुचि, प्रतिश्याय, मन्दाग्नि, सूजन, क्षय, मुखप्रसेक, उदररोग, कुष्ठ, नेत्ररोग, ज्वर, व्रण, और मधुमेह रोगवाले मनुष्यको अल्प जल पीना चाहिये ।

गुल्मार्शोग्रहणीक्षयेषु जठरे मंदानले ध्मानके शोफे पाण्डुगलग्रहे व्रणगदे मेहे च नेत्रामये । वातारुच्यतिसारके कफयुते कुष्ठे प्रतिश्यायके चोष्णं वारि सुशीतलं शृतहिमं स्वल्पं प्रदेयं जलम् ॥

अर्थ-गुल्म, अर्श, संग्रहणी, क्षय, उदररोग, मन्दाग्नि, आध्मान, सूजन, पाण्डु, गलग्रह, व्रण, प्रमेह, नेत्ररोग, वात, अरुचि, अतिसार, कफ, कुष्ठ और प्रतिश्याय रोगमें उष्ण, शीतल अथवा शृतशीत जल अल्प पीना चाहिये

जलपानविधिः।

अत्यम्बुपानान्न विपच्यतेऽन्नमनम्बुपानाच्च स एव दोषः।
तस्मान्नरो वह्निविवर्द्धनाय मुहुर्मुहुर्वारि पिबेदभूरि ॥

अर्थ-बहुत जल पीनेसे भोजनका परिपाक नहीं होता और बिलकुल जल न पीनेसेभी अन्न नहीं पचताहै, इस कारण मनुष्य जठराग्निके बढानेके लिये वारंवार ठहर २ कर अल्प जल पीवै ।

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम् ।
भोजने चामृतं वारि रात्रौ वारि विषप्रदम् ॥

अर्थ-अजीर्ण अवस्थामें जल औषधीकी समानहै अर्थात् औषधीकी तुल्य गुण करेहै । जीर्ण अर्थात् भोजनके पचजानेंमें जल बलको देनेवाला है । भोजनमें जल अमृतकी समान गुण करे है और रात्रिमें जल विषके सदृश दोषजनक है ।

अन्यच्च ।

पिबेद्घटसहस्राणि यावन्नास्तमितो रविः ॥
अस्तंगते दिवानाथे बिन्दुरेको घटायते ॥

अर्थ-जबतक सूर्य्य अस्त नहीं होय तबतक चाहे हजारों घडे जल पियें किन्तु जब सूर्य्य अस्त होजाय तब एक बिन्दुभी जल नहीं पीना चाहिये अर्थाद् एक बिन्दु जलभी घटकी समान हो जाता है ।

ग्रीष्मे शरदि पातव्यं स्वेच्छया सलिलं नरैः ।
अन्यदा स्वल्पमेवैतद्वातश्लेष्मभयात्पिबेत् ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरदृऋतुमें जल स्वेच्छया अर्थात् जितनी अपनी इच्छा हो उतनाही पीना चाहिये और शेष ऋतुओंमें वात कफके भयसे अल्प जल पीना चाहिये ।

आदौ जलं वह्निविनाशकारि पश्चात्तदंते कफबृंहणं च ।
मध्ये तुपीतं समता सुखं च तस्याभियोगोभिमतःसकृच्च॥

अर्थ-भोजनकी प्रथम अवस्थामें जल पीनेसे मंदाग्नि होतीहै, भोजनके अंतमें जल पीनेसे कफ बढता है और भोजनके मध्यमें जल पीनेसे जठराग्नि प्रबल होतीहै ।

भुक्तान्तः परतः शस्तं पीतं वारि गुणात्मकम् । अध्वश्रान्ते क्षुधाक्रान्ते शोषक्रोधातुरेषु च ॥ विषमासनोपविष्टे च पीतं वारि रुजाकरम्। तस्मात्प्रसन्ने मनसि पानीयं मन्दमाचरेत् ॥ आदौ पीत्वा दहत्यग्निं मध्ये पीत्वा रसायनम्।तदन्ते च जलं पीत्वा तज्जलं दुर्जरं भवेत् ॥ भोजनादौ जलं पीत्वा चाग्निसादः कृशाङ्गता। अन्ते करोति स्थूलत्वमूर्ध्वमामाशयात्कफम् ॥ (हा० सं०)

अर्थ-भोजनके मध्यमें पीया हुवा पानी गुणकारक है। मार्गसे थकाहुवा और भूखसे व्याकुल हुवा तथा शोक और क्रोधसे पीडित हुवा और विषम आसनपै बैठा हुवा ऐसा मनुष्य पानीको पीवे तो रोगकी उत्पत्ति होती है। इसकारण प्रसन्न मनसे अल्प पानी पीवे। भोजनकी आदिमें पियाहुवा पानी मंदाग्निको करता है, भोजनके मध्यमें पियाहुवा पानी रसायन है और भोजनके अन्तमें पियाहुवा पानी दुर्जर होजाता है। भोजनकी आदिमें जल पीनेसे मंदाग्नि और शरीरमें कृशता होतीहै और भोजनके अन्तमें पानी पनिसे-स्थूलता और आमाशयके ऊपर कफ उत्पन्न होताहै।

पानीयं पानीयं शरदि वसन्ते च पानीयम्।
नादेयं नादेयं शरदि वसन्ते च नादेयम्॥

अर्थ-शरद् और वसन्त ऋतुमें पानी पीना चाहिये किन्तु नद और नदीका पानी शरद् और वसन्त ऋतुमें नहीं पीना चाहिये। कारण यह है कि, उक्त समयमें जल दूषित होकर दोषोंको दूषित करे है।

जलपानावश्यकता।

पानीयं प्राणिनां प्राणास्तदायत्तं हि जीवनम्। तस्मात्सर्वास्ववस्थासु कैश्चिद्वा वारि वार्यते॥ अन्नेनापि विना जन्तुः प्राणान्धारयते चिरम्। तोयाभावे पिपासार्त्तः क्षणात्प्राणैर्विमुच्यते॥ तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति। तस्मात्प्राणस्य रक्षार्थं वारि देयं पिपासवे॥

अर्थ-जल जीवोंका प्राणस्वरूप है इस कारण जीवन जलके आधीन है, अतएव मनुष्योंको किसी अवस्थामें भी जल त्याग नहीं करना चाहिये। अन्नके विना प्राणी बहुत काल पर्य्यंत जीते रहतेहैं, परन्तु जलके विना तो क्षणभरमेंही प्राणोंको त्यागदेतेहैं। तृषासे पीडित मनुष्यके मोह उत्पन्न होताहै और मोहसे प्राणोंका नाश होता है। अतएव प्राणोंकी रक्षाके लिये प्यासे मनुष्यको जल देना चाहिये।

प्रशस्तजलगुणाः।

अगन्धमव्यक्तरसं सुशीतं तर्षनाशनम्।
अच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते॥

अर्थ-दुर्गंधहीन, अव्यक्तरस, शीतल, तृषानाशक, स्वच्छ, हलका और हृदयको हितकारी ऐसा जल उत्तम कहा है ।

निन्दितजलम् ।

पिच्छिलं कृमिलं क्लिन्नं पर्णशैवालकर्दमैः । विवर्णं विरसं सांद्रं
दुर्गंधं न हितं जलम् ॥ कलुषाच्छन्नमम्भोजपर्णनीलीतृणा-
दिभिः । सुदुर्दर्शमसंस्पृष्टं सौरचान्द्रमसांशुभिः ॥ अनार्त्तवं
वार्षिकन्तु प्रथमं तच्च भूमिगम् । व्यापन्नं परिहर्त्तव्यं सर्वदोष-
प्रकोपनम् ॥ तत्कुर्य्यात्स्नानपानाभ्यां तृष्णाध्मानोदरज्वरान् ।
कासाग्निमान्द्याभिष्यन्द कण्डूगण्डादिकांस्तथा ॥

अर्थ-पिच्छिल, कृमियुक्त, पत्ते, काई और कींचसे बिगडाहुवा, बुरेरंगका, बुरेस्वादका, गाढा, दुर्गंधवाला, कलुषतायुक्त पुरैनके पत्तोंसे, नीलीसे और तृणोंसे ढकाहुवा, बुरीभूमिका जिसका स्पर्श बुराहो, जिसपर सूर्य्य और चन्द्रमाकी किरणें न पडतीं हों, विना समयका, जो वर्षकर प्रथमही भूमिमें भराहो और बिगडा हुवा ऐसा जल कभीभी काममें नहीं लेना चाहिये। यह जल अहितकारी और सर्वदोषोंको कुपित करैहै । इस जलमें स्नान और पान करनेसे तृषा, आध्मान, उदररोग, ज्वर, खाँसी मंदाग्नि, अभिष्यन्द, कण्डू और गलगण्डादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

दुष्टजलनिर्दोषीकरणम् ।

निन्दितं चापि पानीयं क्वथितं सूर्य्यतापितम् । ताम्रं सुवर्णं रजतं
पाषाणं सिकतां मृदम् ॥ भृशंसन्ताप्य निर्व्वाप्य सप्तधासाधितं
तथा । कर्पूरजातीपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ॥ शुचिसांद्रपट-
स्रावि क्षुद्रजन्तुविवर्जितम् । स्वच्छं कनकमुक्ताद्यैः शुद्धं
स्याद्दोषवर्ज्जितम् ॥ पर्णमूलविषग्रन्थिमुक्ताकनकशैवलैः ।
गोमेदेन च वस्त्रेण कुर्य्यादंबुप्रसाधनम् ॥

अर्थ-दुष्टजलके शोधनकी विधि-प्रथम दुष्टजलको खूब औटावे, फिर धूपमें धर देवे, पीछे सुवर्ण, रजत, लोह, पत्थर और बालूको गरम करके सातबार उस जलमें बुझावे फिर उत्तम मिट्टीके कोरे

पात्रमें भरकर उसमें । कपूर, चमेली, पुन्नाग और पाटलादिक फलोंसे तथा खस आदि सुगंधित वस्तुओंसे सुगंधित करे फिर श्वेत निर्मलवस्त्रमें छानलेवे । जिससे कि, उसमें छोटे२ जन्तु न रहैं तथा स्वर्ण मुक्तादिसे शुद्ध किया हुवा जल निर्दोष होजाता है । पर्ण, मूल, कमलकी गांठ, मोती, स्वर्ण, सिवार, गोमेद और वस्त्रादिसे जलको शुद्ध करना चाहिये ।

सुवासितजलगुणाः ।

सुवासितं जलं पुष्पैः पूतं शुक्लेन वाससा ।
नवे मृद्भाजने न्यस्तं माङ्गल्यं रुचिकृत्परम् ॥

अर्थ-सुगंधित पुष्पादिकोंसे सुवासित कियाहुवा श्वेतवस्त्रमें छानाहुवा और नवीन मृत्तिकापात्रमें रखाहुवा ऐसा जल मंगलजनक और रुचिकारक है ।

पीतजलपाकविधिः ।

आमं जलं जीर्य्यति यामयुग्माद्यामैकमात्राच्छृतशीतलं च ।
तदर्द्धमात्रेण शृतं कदुष्णं पयःप्रपाके विधिरेष उक्तः ॥

अर्थ-कच्चा जल पियाहुवा दो पहरमें पचताहै, औटाकर शीतल किया जल एक पहरमें पचता है और गरम जल १॥ डेढ घंटेमें पचता है, इस प्रकार जलपाककी विधि कही है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे वारिवर्गः समाप्तः ॥ १२ ॥

अथ दुग्धवर्गः ।

दुग्धं क्षीरं पयः स्तन्यं पीयूषं बालजीवनम् ॥

अर्थ-दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य, पीयूष, बालजीवन (ऊधस्य, अमृत, दोहज, अवदोह, दोहापनय)

सं०	दुग्ध ।	तै०	पालु ।
हिं०	दूध ।	इं०	मिल्क । Milk
बं०	दुध ।	लै०	लॅक्टस । Lactus
म०	दूध ।	फा०	शीरे ।
गु०	दुध ।	अ०	लवनुल ।
क०	हालु ।		

दुग्धगुणाः ।

दुग्धं सुमधुरं स्निग्धं वातपित्तहरं सरम्।सद्यःशुक्रकरं शीतं सात्म्यं सर्व्वशरीरिणाम्॥जीवनं बृंहणं बल्यं मेध्यं वाजीकरं परम्। वयःस्थापनमायुष्यं सन्धिकारि रसायनम्। विरेकवान्तिवस्तीनां तुल्यमोजोविवर्द्धनम्। जीर्णज्वरे मनोरोगे शोषमूर्च्छाभ्रमेषु च ॥ ग्रहण्यां पाण्डुरोगे च दाहतृषि हृदामये ॥ शूलोदावर्त्तगुल्मेषु वस्तिरोगगुदांकुरे ॥ रक्तपित्तातिसारे च योनिरोगश्रमक्लमे। गर्भस्रावे च सततं हितं मुनिवरैः स्मृतम्॥ बालवृद्धक्षतक्षीणाः क्षुद्व्यवायकृशाश्च ये। तेभ्यः सदातिशयितं हितमेतदुदाहृतम्॥ विदाहीन्यन्नपानानि यानि भुंक्ते हि मानवः।तद्विदाहप्रशान्त्यर्थं भोजनान्ते पयः पिबेत्॥(भा०प्र०)

अर्थ-दूध-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, कुछेक दस्तावर, तत्काल वीर्य्यजनक, शीतल, सर्वप्राणियोंकी आत्मा,जीवन,बृंहण, बलकारक, मेध्य,वाजीकरण,अवस्थास्थापक,आयुष्यकारक, संधिकर्त्ता और रसायनहै। ओजके बढानेमें विरेचन,वमन और वस्तिको समान गुण करे है, तथा जीर्णज्वर, मनरोग, शोष, मूर्च्छा, भ्रम, संग्रहणी, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, हृदयरोग, शूल, उदावर्त्त,गुल्मरोग वस्तिरोग, गुदांकुर, रक्तपित्त, अतिसार, योनिरोग, श्रम,क्लम और गर्भस्रावमें निरन्तर हितकारी है। जो बाल, वृद्ध, क्षतक्षीण, भूँखे और मैथुन करनेसे क्षीण होगये हैं उनको दूध सदैव अतिशय हितकारी है। मनुष्य जो दाहजनक अन्न और पानोंको सेवन करते हैं उनके दाहको शान्तिकरनेके लिये भोजनके अन्तमें दूध अवश्य पीना चाहिये।

अन्यच्च।

क्षीरं स्वादुरसं स्निग्धमौजस्यं धातुवर्द्धनम्।
वातपित्तहरं वृष्यं श्लेष्मलं शीतलं गुरु॥ (राजवल्लभ)
जीर्णज्वरे कफे क्षीणे क्षीरं स्यादमृतोपमम्।
तदेव तरुणे पीतं विषवद्धन्ति मानवम्॥ (वै०)

अर्थ-दूध-स्वादुरसान्वित, स्निग्ध, ओजस्य और धातुवर्द्धक, वातपित्तनाशक, वृष्य, कफकारक, शीतल और भारी है । दूध-जीर्णज्वर और कफके क्षीण होनेमें अमृतकी समान गुणकारी है और वही दूध तरुणज्वरमें पीना विषकी समान मनुष्यको मार डालता है ।

गोमहिषीछागलाविकगजतुरगखरोष्ट्रमानुषस्त्रीणाम् ।
क्षीरादिकगुणदोषौ वक्ष्येनुक्रमतो यथायोग्यम् ॥

अर्थ-गाय, भैंस, बकरी, भेड, हथिनी, घोडी, गधी, ऊँटनी, और स्त्रियोंके दूधके गुण और दोषोंको यथाक्रमसे कहताहूं ।

गोदुग्धगुणाः ।

धेनोः पयः स्यान्मधुरं सुशीतं रसायनं स्निग्धमलं गुरु स्यात् ।
भ्रमश्रमघ्नं विषहृत्सरं च कफावहं शुक्रकरं हि वर्ण्यम् ॥

अर्थ-गायका दूध-मधुर, शीतल, रसायन, स्निग्ध, भारी, भ्रमनाशक, श्रमहारक, विषविनाशक, सारक, कफकारक, शुक्रजनक और वर्णको सुंदर करेहै ।

अन्यच्च ।

गव्यं क्षीरं पथ्यमत्यंतरुच्यं स्वादु स्निग्धं पित्तवातामयघ्नम् ।
कांतिं प्रज्ञां बुद्धिमेधाङ्गपुष्टिं धत्ते स्पष्टं वीर्य्यवृद्धिं विधत्ते ॥

अर्थ-गायका दूध-पथ्य, अत्यन्त रुचिकारी, स्वादिष्ठ स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, कान्तिजनक तथा प्रज्ञा, बुद्धि, मेधा, अङ्गमें पुष्टि और वीर्यको बढावे है ।

अन्यच्च ।

गोक्षीरं जीवनं बल्यं रक्तपित्तानिलापहम् ।
आयुष्यं पुंस्त्वकृत्पथ्ये मेध्यं वृष्यं रसायनम् ॥

अर्थ-गायका दूध-जीवन, बलकारक, रक्तपित्तनाशक, वातनाशक आयु और पुरुषतावर्द्धक, पथ्य, मेधाजनक, वृष्य और रसायन है ।

अपिच ।

गव्यं दुग्धं विशेषेण मधुरं रसपाकयोः । शीतलं स्तन्यकृत्स्निग्धं वातपित्तास्रनाशनम् ॥ दोषधातुमलस्रोतः किञ्चित्क्लेदकरं गुरु । जरा समस्तरोगाणां शान्तिकृत्सेविनां सदा ॥

अर्थ-गायका दूध-विशेष करके रस और पाकमें मधुर, शीतल, स्तनोंमें दूध उत्पन्न करनेवाला, वातनाशक, रक्तनाशक, दोष, धातु, मल, स्रोत और किञ्चित् क्लेदकारक है, भारी और सदैव सेवन करनेवाले मनुष्योंके जरा तथा सर्वरोगोंको शान्ति करनेवाला है।

वर्णविशेषे गुणविशेषाः।

कृष्णाया गोर्भवेद्दुग्धं वातहारि गुणादिकम्।
पीताया हरते पित्तं तथा वातहरं भवेत्॥
श्लेष्मलं गुरु शुक्लाया रक्तचित्रा च वातहृत्॥

अर्थ-कालीगायका दूध-वातनाशक और अधिक गुणवाला है। पीली गायका दूध-पित्तनाशक और वातनाशक है। सफेद गायका दूध-कफकारक और भारी है। लाल और चितकबरी गायका दूध-वातनाशक है।

विवत्साबालवत्सायाः पयो दोषलमीरितम्।

अर्थ-जिन गायोंका बछडा नहीं है अथवा जिनका छोटा बछडा है उनका दूध दोषकारक है।

बष्कयिणीगोदुग्धगुणाः।

बष्कयिण्यास्त्रिदोषघ्नं तर्पणं बलकृत्पयः।

अर्थ-बाखरी गायका दूध-त्रिदोषनाशक, तृप्तिकारक, और बलवर्द्धक है।

देशविशेषे गुणविशेषाः।

जाङ्गलानूपशैलेषु चरन्तीनां यथोत्तरम्।
पयो गुरुतरं स्नेहो यथाहारं प्रवर्त्तते॥

अर्थ-जो गाय जांगल, अनूप और पर्वतोंमें चरती हैं उनका दूध यथाक्रमसे भारी जानना। अर्थात् जांगल देशकी चरनेवालियोंसे अनूप देशकी गायोंका, और अनूप देशकी चरनेवालियोंसे पर्वतोंमें चरनेवाली गायोंका दूध भारी है और जैसा यह आहार करती हैं वैसेही आहारके अनुसार घृत निकलता है।

आहारविशेषे गुणविशेषाः।

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातं क्षीरं गुरु कफप्रदम्।
तत्तु वर्ण्यं परं वृष्यं सुस्थानां गुणदायकम्॥
पलालतृणकार्पासबीजजातं गुणैर्हितम्। (भा० प्र०)

अर्थ-जो गाय अल्प अन्न आहार करती हैं उनका दुध-भारी कफकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, परमवृष्य, और आरोग्य, मनुष्योंको गुणदायक है। जो प्याल चरीकी कुट्टी, घास और बिनोले खाती हैं उनका दूध अत्यन्त हितकारक है।

अवस्थाविशेषगुणाः ।

तरुणीनां गवां दुग्धं मधुरं च रसायनम् । त्रिदोषशमनं चैव वृद्धाया दुर्बलं मतम् ॥ सगर्भायाः समुद्दिष्टं त्रिमासोर्ध्वं च पित्तलम् । क्षारं च मधुरं चैव मतं वै शोषकारणम्॥ प्रथमं च प्रसूताया निःसारं गुणहीनकम् । नूतनप्रसूतगोर्दुग्धं रूक्षं दाहकरं मतम् ॥ रक्तदोषस्य जनकं पित्तलं च मतं बुधैः । चिरप्रसूतादुग्धं तु मधुरं दाहकं पटु ॥ (निघण्टुरत्नाकरे.)

अर्थ-तरुणी गायका दूध-मधुर, रसायन और त्रिदोषनाशक है। वृद्धगायका दूध-दुर्बल है। जिस गायको ग्यावन हुवे तीन महीने बीतगये हों उस गायका दूध-पित्तकारक, खारी, मधुर और शोषकारक है। जो गाय पाहिलीवार व्याई है उसका दूध-सारहीन और गुणोंमें हीन है। जो गाय नवीन व्याई है उसका दूध-रूखा, दाहकारक, रक्तको कुपित करनेवाला और पित्तकारकहै। जिन गायको व्याये हुवे बहुत दिन बीत गये हैं उसका दूध-मधुर, दाहकारक और निमकीन है।

अन्यच्च गोदुग्धानां प्रशस्ताप्रशस्तभेदाः ।

शस्तं वत्सैकवर्णाया धवलीकृष्णयोरपि ।
इक्ष्वादा माषपर्णाद्या ऊर्ध्वशृङ्गी च या भवेत् ॥
तासां गवां हितं क्षीरं शृतं वाशृतमेव वा ॥

अर्थ-जिन गायोंका रंग बछडेके रंगसे मिलता है उन गायोंका दूध तथा काली और सफेद गायका दूध प्रशंसायोग्य है। जो गाय ईख और मषवन आदिको खाती हैं और जिन गायोंके सींग ऊपरको उठे हैं उन गायोंका दूध पक्व अथवा अपक्व हितकारी है।

गोदुग्धग्रहणकालनिर्णयः ।

गव्यं प्रत्युषसि क्षीरं गुरु विष्टम्भि दुर्जरम् ।

तस्मादभ्युदिते सूर्य्यें यामं यामार्धमेव वा ॥
समुत्तार्य्यं ततो ग्राह्यं तत्पथ्यं दीपनं लघु ॥ (रा०व०)

अर्थ-गायका दूध प्रातःकालमें-भारी, विष्टम्भकारी और दुर्ज्जर होता है । अतएव सूर्य्यके उदय होनेपर एक प्रहर अथवा अर्द्ध प्रहर समय व्यतीत होजानेपर गायका दूध ग्रहण करणा चाहिये । इसप्रकार ग्रहण करनेसे वह दूध-पथ्य, दीपन और हलका है ।

महिषीदुग्धगुणाः ।

स्निग्धं मरुच्छीतकरं च तन्द्रानिद्राकरं वृष्यतमं श्रमघ्नम् ।
बलप्रदं पुष्टिकरं कफस्य संजीवनं माहिषमुच्यते पयः॥(हा०सं०)

अर्थ-भैंसका दूध-स्निग्ध, वातकारक, शीतजनक, तन्द्रा और निद्राको करनेवाला, वीर्यवर्द्धक, श्रमनाशक, बलकारक, पुष्टिकारक, और कफको उत्पन्न करेहै ।

अन्यच्च ।

माहिषं बलवर्णाग्निनिद्राशुक्रकफप्रदम् । तीक्ष्णाग्निशमनं स्वादु रसे पाके च पुष्टिदम्॥ व्यायामश्रान्तदेहस्य श्रमघ्नमनिलापहम्।निष्कामस्यातिवृद्धस्य स्त्रीषु कामप्रदायकम् ॥ बलेन तरुणस्यापि विशेषात्कामदायकम् (कैटेण.)

अर्थ-भैंसका दूध-बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, अग्निजनक, निद्राकारक, शुक्रजनक, कफकारी, तीक्ष्ण, अग्निकी शांति करनेवाला, रस और पाकमें मधुर, पुष्टिकारक, तथा जिनका देह कसरत करनेसे थकगया है उनके श्रमको दूर करे है, श्रमनाशक वातविनाशक और निष्काम, वृद्ध, स्त्री और तरुणादिकके काम उपजानेवाला है ।

अन्यच्च ।

माहिषं मधुरं गव्यात्स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ।
निद्राकरमभिष्यन्दि क्षुधाधिक्यकरं हिमम्॥(भा०मि०)

अर्थ-भैंसका दूध-गायके दूधकी अपेक्षा मधुर है, स्निग्ध, शुक्रजनक, भारी, निद्राकारी, अभिष्यन्दि, क्षुधाको अधिक करनेवाला और शीतल है ।

छागीदुग्धगुणाः ।

छागं कषायं मधुरञ्च शीतं ग्राहि लघु पित्तक्षयापहारि ।
कासज्वराणांरुधिरातिसारेहितंपयश्छागलजं त्रिदोषजित् (हा.)

अर्थ-बकरीका दूध-कषेला, मधुर, शीतल, मलरोधक, हलका तथा पित्त, क्षय, खांसी, ज्वर और रक्तातिसारमें हितकारी तथा त्रिदोषनाशक है ।

छागीनामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ।
नात्यम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वदोषहरं पयः ॥
दीपनं लघु संग्राहि श्वासकासास्रपित्तनुत् । (सुश्रुत)

अर्थ-बकरियोंकी छोटी देह होतीहै और चरपरी और कडवी वनस्पतियोंको चरतीहैं । जल बहुत कम पीतीहैं और दिनभर जंगलमें विचरती फिरतीहैं इसीसे बकरियोंका दूध सर्वदोषनाशक, दीपन, हलका, मलरोधक तथा श्वास, खांसी और रक्तपितको दूर करेहै ।

मेषीदुग्धगुणाः ।

आविकं लवणं स्वादु स्निग्धोष्णं चाश्मरीप्रणुत् ।
अहृद्यं तर्पणं वृष्यं शुक्रपित्तकफप्रदम् ॥
गुरुकासेऽनिलोद्भूते केवले चानिले वरे । (भा० प्र०)

अर्थ-भेडका दूध-निमकीन, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, गरम, पथरीको दूर करनेवाला, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, वृष्य तथा शुक्र पित्त और कफकारक है । भारी तथा वातकी खांसी और केवल वातरोगमें हितकारी है ।

अन्यच्च ।

औरभ्रं मधुरं रूक्षमुष्णं वातकफापहम् ।
न शस्तं रक्तपित्तीनां वातिकानां हितं भवेत् ॥

अर्थ-भेडका दूध-मधुर, रूखा, गरम, वातकफनाशक, रक्तपित्त रोगवालोंको हितकारी नहीं है केवल वातरोगवालोंको हितकारी है।

मृगीदुग्धगुणाः ।

मृगीनां जांगलस्थानामजाक्षीरगुणं पयः । (भा० प्र०)

अर्थ-जंगलदेशकीमृगीकादूध-बकरीके दूधकीसमान गुणवालाहै।

अश्वीदुग्धगुणाः ।

रूक्षोष्णं वडवाक्षीरं बल्यं शोषानिलापहम् ।
अम्लं पटु लघु स्वादु सर्वमैकशफं तथा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-घोडीका दूध-रूखा, गरम, बलकारक, शोषनाशक, वातविनाशक, अम्ल, खारी, हलका, स्वादिष्ठ है । इसी प्रकार और जितने एक खुरवाले पशु हैं उन सबका दूध घोडीके दूधकी समान जानना।

उष्ट्रीदुग्धगुणाः ।

रूक्षं तथोष्णं लवणं कफस्य निवारणं वातविकारहारि ।
लघुप्रशस्तंकटुकंकृमीणांशोफार्शसामौष्ट्रपयोऽनुकूलम् ।(हा. सं.)

अर्थ-ऊँटनीका दूध-रूखा, गरम, नमकीन, कफनिवारक, वातहारक, हलका, अच्छा, चरपरा तथा कृमि, सूजन और बवासीरको दूर करेहै।

अन्यच्च ।

औष्ट्रं दुग्धं लघु स्वादु लवणं दीपनं तथा ।
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरं सरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ऊँटनकीका दूध-हलका, स्वादिष्ठ, निमकीन, दीपन, सारक तथा कृमि, कुष्ठ, कफ, आनाह, सूजन और उदररोगको दूर करे है ।

हस्तिनी दुग्धगुणाः ।

बृंहणं हस्तिनीदुग्धं चक्षुष्यं स्थिरताकरम् ।
स्निग्धं च मधुरं वृष्यं कषायानुरसं गुरु ॥

अर्थ-हथिनीका दूध-पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी, स्थिरताकारक, स्निग्ध, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किंचित कषेला और भारी है ।

गदर्भीदुग्धगुणाः ।

गर्दभ्यास्तु स्मृतं दुग्धं मधुरं बलकारकम् । रूक्षं चाम्लं दीपनं च बुद्धिमांद्यकरं मतम् ॥ पथ्यं रुचिप्रदं क्षारं कफवातविनाशनम् । बालरोगं च कासं च श्वासं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-गधीका दूध-मधुर, बलकारक, रूखा, अम्ल, दीपन, बुद्धिको मन्द करनेवाला, पथ्य, रुचिकारक, खारी, कफवातविनाशक तथा बालरोग, खाँसी और श्वासको हरनेवाला है ।

स्त्रीदुग्धगुणाः ।

सञ्जीवनं बृंहणमेव सात्म्यं सन्तर्पणं नेत्ररुजापहं च ।
पित्तस्य रक्तस्य च नाशनं च नारीपयः स्नेहनमेव शस्तम् ॥

अर्थ-स्त्रीका दूध-संजीवन, पुष्टिकारक, पथ्य, सात्म्य, तृप्तिकारक, नेत्ररोगनाशक, पित्तनाशक, रुधिरके विकारोंको हरनेवाला और स्नेहयुक्त है ।

अन्यच्च ।

प्रोक्तं तु मानुषीदुग्धं मधुरं शीतलं लघु । चक्षुष्यं तुवरं पथ्यं दीपनं पाचकं मतम् ॥ धातुवृद्धिकरं रुच्यं जीवनं स्नेहनं तथा । रक्तपित्ते च नस्यार्थं नेत्रशूलेऽक्षिपूरणे ॥ उत्तमं नेत्ररोगघ्नमभिघातविनाशकम् । वातं पित्तं नाशयतीत्येवमुक्तं चिकित्सकैः ॥
(नि० र०)

अर्थ-स्त्रीका दूध-मधुर, शीतल, हलका, नेत्रोंको हितकारी, कषेला, पथ्य, दीपन, पाचक, धातुवर्द्धक, रुचिकारक, जीवन और स्नेहयुक्त है । तथा रक्तपित्तपर इसका नास देना और नेत्रके फूलेपर इसको आंखमें भरना उत्तम है; नेत्ररोगनाशक, अभिघातविनाशक, वात और पित्तका नाश करे है ।

दुग्धस्य सात्म्यासात्म्यविधिः ।

अल्पाम्बुपानव्यायामात्कटुतिक्ताशने लघु । पिण्याकाम्लाशिनीनां तु गुर्वभिष्यंदि शीतलम् ॥ क्षीणानां दुर्बलानाञ्च तथा जीर्णज्वरार्दिते । दीप्ताग्निमानतन्द्राणां श्रमशोषविकारिणाम् ॥ व्यवायिनामल्परेतःश्वासिनां विषमाग्निनाम् । तथा च राजयक्ष्माणां क्षीरपानं विधीयते ॥ न शस्तं लवणैर्युक्तं क्षीरं चाम्लेन वा पुनः । करोति कुष्ठं त्वग्दोषं तस्मान्नैव हितं मतम् ॥
(हा० सं०)

अर्थ-जो मनुष्य-अल्पजल पीते हैं, कसरत करते हैं तथा चरपरे और कडवे पदार्थ खाते हैं उनके लिये दूध हलका है । और जो मनुष्य तिलोंकी पिट्ठी खाते हैं और अम्लरसका सेवन करते हैं उनके लिये दूध भारी, अभिष्यन्दि और शीतल है । क्षीण, दुर्बल, जीर्णज्वरसे पीडित, जिनकी जठराग्नि दीपन है, तन्द्राहीन, श्रमवाले,

शोषयुक्त, मैथुन करनेवाले, क्षीणवीर्य्यवाले, श्वासयुक्त, विषम, अग्नियुक्त और राजयक्ष्मारोगवाले मनुष्योंको दूधका सेवन करना चाहिये। लवणयुक्त अथवा अम्लद्रव्ययुक्त दूधका पीना श्रेष्ठ नहीं है । यह कोढ और त्वचाके रोगोंको उत्पन्न करता है इस कारण यह अहितकारी है ।

आमं क्षीरमभिष्यन्दि गुरु श्लेष्मामवर्द्धनम् ।
ज्ञेयं सर्वमपथ्यं तद्गव्यं माहिषवर्जितम् ॥
नारीक्षीरं त्वाममेव हितं न तु शृतं हितम् ॥

अर्थ-गाय और भैंसके दूधको छोडकर प्रायः सर्व दूध अभिष्यन्दी, भारी, कफकारी और अपथ्य होते हैं किन्तु स्त्रीका दूध कच्चाही हितकारी होता है और पक्का नहीं होता ।

धारोष्णादिदुग्धगुणाः ।

धारोष्णं गोपयो बल्यं लघु शीतं सुधासमम् ।दीपनं च त्रिदोषघ्नं तद्धाराशिशिरं त्यजेत् ॥ धारोष्णं शस्यते गव्यं धाराशीतं तु माहिषम् । शृतोष्णमाविकं पथ्यं शृतशीतमजापयः ॥ शृतोष्णं कफवातघ्नं शृतशीतं तु पित्तनुत् । अर्धोदकं क्षीरशिष्टमामाल्लघुतरं पयः ॥ जलेन रहितं दुग्धमतिपक्वं यथायथा । तथा तथा गुरु स्निग्धं वृष्यं बलविवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०

अर्थ-धारोष्ण (दुहनेके समय जो उष्ण होता है)-गायका दूध बलकारी, हलका, शीतल, अमृतकी समान दीपन और त्रिदोषनाशक है । जो गायके दूधकी धार शीतल होगई हो तो त्यागने योग्य है । गायका दूध-धारोष्ण प्रशंसायोग्य है । भैंसका दूध-धाराशीत उत्तम होता है । भेडका दूध गरमागरम हितजनक है और बकरीका दूध औटा कर शीतल किया हुवा हितकारी होता है । शृतोष्ण अर्थात् औटाकर गरम किये दूध कफवातनाशक और औटाकर शीतल किये हुए दूध पित्तनाशक होते हैं । आधा पानी मिलाकर शेष बचा हुआ दूध कच्चे दूधकी अपेक्षा हलका है । जलसे रहित जैसे२दूध बहुत औटता है वैसे वैसेही अधिक भारी, स्निग्ध, शुक्रजनक और बलवर्द्धक होता है ।

प्रभातादिभवदुग्धगुणाः।

रात्रौ चन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा । प्राभातिकं त-

दा प्रायः प्रादोषाद्गुरु शीतलम् ॥ दिवाकरकराघाताद्व्यायामानलसेवनात् । प्राभातिकात्तु प्रादोषं लघु वातकफापहम् ॥

अर्थ-रात्रिमें चन्द्रगुणकी अधिकतासे तथा व्यायाम न करनेसे प्रातःकालका दूध प्रायः सायंकालके दूधसे भारी और शीतल होता है । दिनमें धूपके लगनेसे तथा व्यायामकी गरमीके सेवन करनेसें सायंकालका दूध प्रातःकालके दूधसे हलका और वात तथा कफको दूर करे है ।

समयविशेष दुग्धसेवनगुणाः ।

वृष्यं बृंहणमग्निदीपनकरं पूर्वाह्णकाले पयो मध्याह्ने तु बलावहं कफहरं पित्तापहं दीपनम् । बाले वृद्धिकरं क्षये क्षयकरं वृद्धेषु रेतोवहं रात्रौ पथ्यमनेकदोषशमनं क्षीरं सदा सव्यते ॥ वदन्ति पेयं निशि केवलं पयो भोज्यं न तेनेह सहौदनादिकम् । भवत्यजीर्णेन शयीत शर्वरीं क्षीरस्य पानस्य न शेषमुत्सृजेत् ॥ दीप्तानले कृशे पुंसि बाले वृद्धे पयःप्रिये । मतं हिततमं दुग्धं सद्यःशुक्रकरं परम् ॥ भुक्ता ये बहुतीव्रचंडविदला ये चाम्लतिक्ता रसा रूक्षाः क्षारविदाहशोषककरा ये चातितापप्रदाः । काषायाः कटुरूक्षदुर्जरनरैः संसेव्यमाना हठात्तत्सर्वं बलकृत्करोति तरसा दुग्धं निशासेवितम् ॥

अर्थ-पूर्वाह्णकाल (प्रथम प्रहर) में पिया हुआ दूध-वीर्यबढानेवाला, पुष्टिको करनेवाला और अग्निको दीपन करे है । मध्याह्नकालमें पियाहुवा दूध-बलकारक, कफनाशक, पित्तहारक, अग्निप्रदीपक, बालकोंको बढानेवाला, क्षई रोगका क्षयकरनेवाला और वृद्ध मनुष्योंके वीर्यको देनेवाला है । और रात्रिके समयमें दूध पिया हुवा अनेक दोषोंकी शान्ति करता है, पथ्यहै, इसकारण दूध नित्य सेवन करना चाहिये । कोई वैद्य ऐसा कहते हैं कि, रातमे केवल दुधही पीना चाहिये, उसके साथ चावल आदिक न खाने चाहिय, क्योंकि रात्रिमें भात आदि भोजन करनेसे अजीर्ण होजाताहै और निद्रा नहीं आतीहै, तथा पीत दूधको बाकी न छोडे । जिनकी जठराग्नि दीप्तहै और जिनका शरीर कृशहै, बालक, वृद्ध और जिनको दूध प्याराहै उनके लिये दूध

अत्यन्त हितकारीहै और तत्काल शुक्रको उत्पन्न करेहै । जो मनुष्य अत्यन्त तीव्र तथा अनेक दोषोंको कुपित करनेवाले विदलोंको खातेहैं और जो मनुष्य–अम्ल, कडवे, रूखे, खारी, दाहजनक, शोषकारक, तापजनक, कषेले, चरपरे, रूखे और दुर्ज्जर पदार्थोंका सेवन करतेहैं उन सबको रात्रिमें सेवन किया हुवा दूध बलको देनेवाला है ।

निन्दितदुग्धम् ।

विवर्णं विरसं चाम्लं दुर्गंध ग्रन्थिलं पयः । वर्जयेदम्ललवणयुक्तं कुष्ठादिकृद्यतः ॥ क्षीर मुहुर्तत्रितयोषितं यदतस्तमेतद्विकृतिं प्रयाति । षष्ठे तु दोषं कुरुते तदूर्ध्वं विषोपमं स्याद्दुषितं दशानाम् ॥

अर्थ–जो दूध बुरे रंगका, बुरे स्वादवाला, खट्टा, दुर्गंधित और गांठदार हो उसको नहीं पीना चाहिये, तथा खटाई और नमकके पदार्थोंके साथभी दूध नहीं सेवन करना चाहिये । तीन मुहूर्त्ततक रक्खा हुवा कच्चा दूध विकरको प्राप्त होजाता है । अर्थात् बिगड जाताहै, छः मुहुर्त्ततक रक्खा हुवा दूध अनेक प्रकारके दोषोंको उत्पन्न करताहै और दश मुहूर्त्ततक रक्खा हुवा दूध विषकी समान होजाताहै ।

अन्यच्च ।

मुहुर्तपचकादुर्ध्वं क्षीरं भजति विक्रियाम् । तदेव द्विगुणे काले विषवद्धन्ति मानवम् ॥ अक्कथितं दशघटिकाक्काथितं द्विगुणास्ताश्च पयः पथ्यम् । कोष्णं च स्वरसाढ्यं यावत्तावत्पयः प्राश्यम् ॥ तस्माच्छृतं वाप्यश्टृतं पयस्तात्कालिकं पिबेत् ॥

अर्थ–पांच मुहूर्त्तके पश्चात् विना औटाया हुवा दूध विकारको प्राप्त होजाताहै और वही दश मुहूर्त्तके बाद विषकी समान मनुष्यको मार देता है । कच्चा दूध दश घडीतक और औटा हुवा दूध बीस घडीतक पीनेयोग्य और पथ्य होताहै ऐसा मतान्तर है । मंदोष्ण और जबतक रसयुक्त होय तबतक दूध पीनेयोग्य होताहै इसकारण औटा हुवा अथवा विना औटा हुवा तत्कालका दूध पीना चाहिये ।

क्षीरसात्म्यासात्म्यम् ।

जीर्णज्वरे कफे क्षीणे क्षीरं स्यादमृतोपमम् । तदेव तरुणे पीतं

विषवद्धन्ति मानवम् ॥ चतुर्थभागं सलिलं निधाय यत्नाद्यदावर्त्तितमुत्तमं तत् ॥ सर्वामयघ्नं बलपुष्टिकारि वीर्यप्रदं क्षीरमतिप्रशस्तम् ॥ येषां न सात्म्यं क्षीरेण पीतं चाध्मानकारकम् । तेषामर्द्धजलं दत्त्वा नागरं पिप्पलीयुतम् ॥ आवर्त्तयेत्क्षीरशेषं तत्पीत्वा सुखमाप्नुयात् । गव्यं पूर्वाह्णकाले स्यादपराह्णे तु माहिषम् ॥ क्षीरं सशर्करं पथ्यं यद्वा सात्म्यं च सर्वदा । स्निग्धं शीतं गुरु क्षीरं सर्वकालं न सेवयेत् ॥ दीप्ताग्निं कुरुते मंदं मन्दाग्निं नष्टमेव च । नित्यं तीव्राग्निनां सेव्यं सुपक्कं माहिषं पयः ॥ पुष्यन्ति धातवः सर्वे बलपुष्टिविवर्द्धनम् । खण्डेन सहितं दुग्धं कफकृत्पवनापहम् ॥ सितासितोपलायुक्तं शुक्रलं त्रिमलापहम् । सगुडं मूत्रकृच्छ्रघ्नं पित्तश्लेष्मकरं मतम् ॥

अर्थ-दूध-जीर्णज्वर, कफ और निर्बलतामें अमृतकी समान है और वही दूध नये ज्वरमें पिया हुवा विषकी समान मनुष्यको मार देवेहै । दूधमें चौथा भाग पानी मिलाकर औटावे जब वह पानी जल जाय तब सेवन करे, वह दूध श्रेष्ठ, सर्वरोगनाशक, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, वीर्यजनक और अत्यन्त प्रशंसायोग्य है । जिनको दूध नहीं पचता है और जिनके दूध पीनेसे अफारा हो जाताहै उनको चाहिये कि दूधमें आधा भाग पानी डालकर, एक तोला सोंठ और एक तोला पीपल डाललेवे फिर औटावे, जब पानी जल जाय तब उतारकर खूब लोट पोट करे । तदनन्तर सेवन करनेसे पच जाताहै और सुख उत्पन्न होताहै । गायका दूध पूर्वाह्णकालमें और भैंसका दूध अपराह्णकालमें पिना चाहिये शर्करायुक्त और गरम कियाहुआ दूध सर्व कालमें श्रेष्ठ है । स्निग्ध, शीतल, गाढा ऐसा दूध सर्व कालमें सेवन नहीं करना चाहिये। पकाहुआ भैंसका दूध-दीप्ताग्निको मंद करेहै और मन्दाग्निको नष्ट करे है । इस कारण सदैव तीव्राग्निवाले मनुष्यको पीना चाहिये और मंदाग्निवाले मनुष्यको कभी भी नहीं पीना चाहिये, सर्व धातुओंको पुष्टि करे और बल तथा पुष्टिवर्द्धक है, खांडयुक्त दूध-कफकारक और वातविनाशक है, मिश्रीके साथ दूध-शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है, गुडके साथ दूध-मूत्रकृच्छ्रनाशक और पित्तश्लेष्मकारक है ।

पर्य्युषितक्षीरगुणाः ।

क्षीरं पर्य्युषित सर्व्वं गुरु विष्टम्भि दुर्जरम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके बासी दूध-भारी, विष्टम्भकारी और देरमें पचते हैं ।

पीयूषकिलाटक्षीरशाकतक्रपिण्डमोरटानां लक्षणानि गुणाश्च ।

क्षीरं तत्कालसूताया घनं पीयूषमुच्यते । नष्टदुग्धस्य पक्वस्य पिण्डः प्रोक्तः किलाटकः ॥ अपक्वमेव यन्नष्टं क्षीर शाकं हि तत्पयः । दध्ना तक्रेण वा नष्टं दुग्धं बद्धं सुवाससा॥ द्रवभावेन सहितं तक्रपिण्डः स उच्यते । नष्टदुग्धं भवेन्नीरं मोरटं जय्यटोऽब्रवीत् ॥ पीयूषं च किलाटश्च क्षीरशाकं तथैव च । तक्रपिण्डा इमे वृष्या बृंहणा बलवर्द्धनाः ॥ गुरवः श्लेष्मला हृद्या वातपित्तविनाशनाः । दीप्ताग्नीनां विनिद्राणां विद्रधौ चाभिपूजिताः॥मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत । लघुर्बलकरो रुच्यो मोरटः स्यात्सितायुतः ॥

अर्थ-तुरतकी व्याई हुई गाय भैंसादिकके गाढे दूधको पयूिष (खीस) कहते हैं । जो दूध, अग्निसे जलकर पिण्डी बँध जाय उसको किलाट (मावा, खोया) कहते हैं । विना औटायेही जो कच्चा दूध फट जाय उसको क्षीरशाक (फटा दूध) कहते हैं । जो दूध दही अथवा मठेके पडनेसे नष्ट होगयाहो फिर उस दही वा छाछसे फटे हुए दूधको झीने वस्त्रसे बाँधकर उसका पानी निकाल डाले जब उसका पिण्ड होजाय और जलका उसमें कुछ अंश न रहे तब उसको तक्रपिण्ड कहते हैं । फटे दूधके पानीको जय्यटदेवने मोरट कहाहै । पयूिष, किलाट, क्षीरशाक और तक्रपिण्ड यह सब वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, भारी, कफकारी, हृदयको हितकारी और वातपित्तको दूर करे हैं । जिनकी जठराग्नि दीपन है जिनको निद्रा नहीं आती है और जिनको विद्रधिरोग है उन मनुष्योंको यह परमहितकारीहै । चीनीके साथ मोरट (फटे दूध) के पानीको पीनेंसे मुखशोष, तृषा, दाह, रक्तपित्त और ज्वर दूर होताहै तथा लघु, बलकारक और रुचिकारक है ।

क्षीरसन्तानिकागुणाः ।

सन्तानिका गुरुः शीता वृष्या पित्तास्रदाहनुत् ।

तर्पणी बृंहणी स्निग्धा बलासबलशुक्रदा ॥

अर्थ-दूधकी मलाई-भारी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तनाशक, दाहनिवारक, तृप्तिकारक, पुष्टिजनक, स्निग्ध तथा कफ, बल और शुक्रको करेहै ।

चण्डाहतक्षीरगुणाः ।

क्षीरं गव्यमथाजं वा कोष्णं दण्डाहतं पिबेत् ।
लघु वृष्यं ज्वरहरं वातपित्तकफापहम् ॥

अर्थ-गाय तथा बकरीके दूधको अल्प उष्ण करके रईसे मथकर पीवे वह मथाहुवा दूध हलका, वीर्य्यवर्द्धक, ज्वरनाशक तथा वात पित्त और कफको नष्ट करेहै ।

गोदुग्धादिभवफेनगुणाः ।

गोदुग्धप्रभवं किंवा छागीदुग्धसमुद्भवम् । भवेत्फेनं त्रिदोषघ्नं रोचनं बलवर्द्धनम् ॥ वह्निवृद्धिकरं वृष्यं सद्यस्तृप्तिकरं लघु । अतिसारेऽग्निमान्द्ये च ज्वरे जीर्णे प्रशस्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गायके दूधके झाग अथवा बकरीके दूधके झाग-त्रिदोषनाशक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, अग्निवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, तत्काल तृप्तिकारक, हलके तथा अतीसार, मंदाग्नि और जीर्णज्वरमें हितकारी हैं ।

पयसः केवलस्यापि पदार्था बलवृष्यदाः ।
हिताः सुगन्धिनः पुष्टिधातुवृद्धिकराग्निदाः ॥ (नि० र०)

अर्थ-पेडे-बरफी, रबडी इत्यादि शुद्ध दूधके बने हुये पदार्थ-बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, हितकारी, सुगन्धिजनक तथा पुष्टि, धातु और अग्निवर्द्धक हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे दुग्धवर्गः सामाप्तः ॥ १ २

अथ दधिवर्गः ।

दधि पयस्यं मंगल्यं विरलं च दधिद्रप्सम् ।

अर्थ-दधि, पयस्य, मंगल्य, विरल, दधिद्रप्स, (घनेतर, क्षीरज, क्षीरोद्भव, दिग्ध, तक्रजन्म, साम्लक)

संस्कृतभाषामें	दधि ।
हिन्दीभाषामें	दही ।
वंगभाषामें	दइ ।
मराठीभाषामें	दहीं ।
गुजरातीभाषामें	दहि ।
कर्णाटकीभाषामें	मसरु ।
तैलिंगीभाषाम	पेरुगु ।
इंग्रेजीभाषामें	करडूलूडमिल्क । Curdled Milk
फारसीभाषामें	दोग ।
अरबीभाषामें	जुगरात ।

साधारणदधिगुणाः ।

पाकेम्लमुष्णं दधि दीपनं च स्निग्धं कषायं सरसं गुरु स्यात्।
संग्राहि पित्तास्रकफप्रदं स्यान्मेदःप्रदं शोफकरं प्रसिद्धम् ॥

अर्थ-दही-पचनेमें खट्टा,गरम स्निग्ध,दीपन,कषेला,भारी,मलरोधक,रक्तपित्त कारक,कफकारक,मेदजनक और सूजनको उत्पन्न करेहै।

अन्यच्च ।

दध्यम्लं गुरुवातदोषशमनं संग्राहि मूत्रावहं बलं शोफकफार्त्यरुच्यशमनं वह्नेश्च शान्तिप्रदम् । कासश्वासपीनसेषु विषमे शीतज्वरे स्याद्धितं रक्तोद्रेककरं करोति सततं शुक्रस्य वृद्धिं पराम् ॥(रा० नि०)

अर्थ-दही-अम्ल,भारी,वातके विकारको दूर करनेवाला,मलरोधक मूत्रजनक,बलकारक,शोफनाशक,कफहारक, अरुचिनिवारक, आग्नको शान्त करनेवाला तथा खाँसी, श्वास, पीनस, विषमज्वर और शीतज्वरको दूर करे है और रक्तपित्त तथा शुक्रवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

दध्युष्णं दीपनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु। पाकेम्लं ग्राहि पित्तास्रशोफमेदःकफप्रदम् ॥ मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतके विषमज्वरे। अतीसारेऽरुचौ कार्श्ये शस्यते बलवर्द्धनम्॥ (म०वि०)

अर्थ-दही-गरम, दीपन, स्निग्ध, कुछेक कषेला, भारी, पाकमें अम्ल, मलरोधक तथा रक्तपित्त, सूजन, मेद और कफको करे है । मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय, शीत, विषमज्वर, अतिसार, अरुचि और कृशतामें दही हितकारी है तथा बलवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

दधि स्वाद्वग्निदं हृद्यं स्नेहनं रोचनं गुरु ।
पाकेऽम्लमुष्णं वातघ्नं माङ्गल्यं बृंहणं परम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-दही-स्वादिष्ट, अग्निजनक, हृदयको हितकारी, स्निग्ध, रुचिकारी, भारी, पाकमें अम्ल, गरम, वातनाशक, मंगलकारक और पुष्टिकारक है ।

दधिभेदाः ।

आदौ मंदं ततः स्वादु स्वाद्वम्लं च ततः परम् ।
अम्लं चतुर्थमत्यम्लं पंचमं दधि पञ्चधा ॥

अर्थ-प्रथम मन्द, फिर मधुर, फिर मधुरखट्टा, उसके उपरान्त खट्टा और फिर अत्यन्त खट्टा ऐसे दही पांचप्रकारका होता है ।

मन्दादीनां लक्षणानि गुणाश्च ।

मन्दं दुग्धवदव्यक्तं रसं किञ्चिद्घनं भवेत् ।मन्दं स्यात्सृष्टविण्मूत्रं दोषत्रयविदाहकृत् ॥ यत्सम्यग्घनतां यातं व्यक्तं स्वादुरसं भवेत् । अव्यक्ताम्लरसं तत्तु स्वादु विज्ञैरुदाहृतम् ॥ स्वादु स्यादत्यभिष्यन्दि वृष्यं मेदकफावहम् ॥ वातघ्नं मधुरं पाके रक्तपित्तप्रसादनम् ॥ स्वाद्वम्लं सान्द्रमधुरं कषायानुरसं भवेत् । स्वाद्वम्लस्य गुणा ज्ञेयाः सामान्यदधिवज्जनैः॥ यत्तिरोहितमाधुर्य्यं व्यक्ताम्लत्वं तदम्लकम् । अम्लन्तु दीपनं पथ्यं रक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ तदत्यम्लं दन्तरोमहर्षकण्ठादिदाहकृत् । अत्यम्लं दीपनं रक्तपित्तपुष्टिकरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जो दूध कुछेक जमकर गाढा पडगयाहो और जिसमें मधुर अम्लादिक किसी प्रकारका स्वाद न मालूम हो उस दहीको मंद

कहतेहैं । मंद दही-मलमूत्रको करनेवाला तथा त्रिदोष और दाहको करे है। जो जमकर गाढा होगया हो और जिसमें स्वादु रस मालूम हो तथा अम्लरस प्रगट न हो उसको स्वादु दही जानना स्वादु दही अत्यन्त अभिष्यन्दी, वीर्यवर्द्धक, मेदजनक, कफकारी, वातनाशक, पचनेमें मधुर और रक्तपित्तको कुपित करेहै । जो दधि अम्ल और मधुर दोनों रसयुक्त हो सान्द्र तथा कुछेक कषेला हो उसको स्वाद्वम्ल दही कहत हैं। स्वाद्वम्ल दहीके गुण सामान्य दहीकी समान जानने। जिस दहीकी मधुरता नाश होकर खट्टा होगया हो उस दहीको अम्लदही कहते हैं, अम्लदही-दीपन, रक्तपित्त और कफकारक है । जो दही अत्यन्त खट्टा हो, दांतोंको खट्टे करे, जिसके खानेसे रोमांच होआवे और कण्ठादिमें दाहको उत्पन्न करे उस दहीको अत्यम्लदधि कहते हैं। अत्यम्लदही-दीपन, रुधिरविकार, वात और पित्तको करे है ।

मधुरं भक्षयेच्चैव चात्यम्लं वर्जयेत्सदा ।
मधुरं दधिरोगघ्नमत्यम्लं रोगकारकम् ॥

अर्थ-मधुर दधि खाना चाहिये और अत्यन्त खट्टा दही नहीं खाना चाहिये। कारण यह है कि, मधुर दही रोगनाशक और अत्यन्त खट्टा दही रोगकारक है ।

गव्यदधिगुणाः ।

दधि गव्यमतिपवित्रं शीतं स्निग्धं च दीपनं बलकृत् ।
मधुरमरोचकहारि ग्राहि च वातामयघ्नञ्च ॥ (रा०नि०)

अर्थ-गायका दही-अत्यन्त पवित्र, शीतल, स्निग्ध, दीपन, बलकारक, मधुर, अरुचिको हरनेवाला, मलरोधक और वातरोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

गव्यं दध्युत्तमं बल्यं पाके स्वादु रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं स्निग्धं पुष्टिकृत्पवनापहम् ॥
उक्तं दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-गायका दही-उत्तम, बलकारक, पचनेमें स्वादिष्ठ, रुचिकारक, पवित्र, दीपन, स्निग्ध, पुष्टिकारक और वातविनाशक है । सर्व दहियोंमें गायका दही-गुणोंमें सबसे अधिक है ।

अरोचके पीनसकासकृच्छ्रे शीतज्वरे तद्विषमज्वरे च ।

दुर्नामरोगे ग्रहणीगदे च गव्यं प्रशस्तं दधि सर्वदैव ॥

अर्थ-गायका दही-अरुचि, पीनस, खांसी, मूत्रकृच्छ्र, शीतज्वर विषमज्वर, बवासीर और संग्रहणीरोगमें हितकारी है।

माहिषं दधि सुस्निग्धं श्लेष्मलं वातपित्तनुत्।
स्वादुपाकमभिष्यन्दि वृष्यं गुर्वस्रदूषणम् ॥

अर्थ-भैंसका दही-स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्वादुपाकी, अभिष्यन्दि, वीर्य्यवर्द्धक, भारी और रुधिरको दूषित करेहै।

अन्यच्च।

घनं माहिषमुद्दिष्टं मधुरं रक्तदोषकृत्।
कफशोफहरं स्वस्थं पित्तकृद्वातकोपनम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-भैंसका दही-गाढा, मधुर, रुधिरको दूषित करनेवाला, कफनाशक, स्वस्थ, पित्तकारक और वातको कुपित करेहै।

अपिच।

महिष्यास्तु दधि प्रोक्तं रक्तपित्तप्रसादनम्। वृष्यं स्निग्धं च मधुरं शोधनं कफकारकम्॥ गुर्वभिष्यंदि बल्यं स्याच्छुक्रलं च प्रकीर्त्तितम् ॥ पित्तं वातं श्रमं चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥
(नि० र०)

अर्थ-भैंसका दही-रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर, शोधन, कफकारक, भारी, अभिष्यंदी, बलकारक, शुक्रजनक तथा पित्त, वात और श्रमको दूर करेहै।

छागदधिगुणाः।

दध्याजं कफपित्तनाशनकरं वातघ्नमुष्णं तथा दुर्नामश्वसने च कासिनि हितं चाग्नेश्च संदीपनम्। वृष्यं बृंहणकान्तिदं बलकरं सर्वामयध्वंसनं आमार्शेष्वतिसारके निगदितं पथ्यं सदा प्राणिनाम् ॥

अर्थ-बकरीका दही-कफपित्तनाशक, वातविनाशक, गरम, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, कान्तिकारक, बलवर्द्धक, सर्वरोगनाशक, अग्निप्रदीपक तथा बवासीर, श्वास, खाँसी, आम, अर्श और अतिसाररोगको दूर करेहै और सदैव मनुष्योंको पथ्य है।

अन्यच्च।

आजं दधिभवे चोष्णं क्षयवातविनाशनम्। दुर्नामश्वासकासे-

षु हितमग्निप्रदीपनम् ॥ विपाके मधुरं वृष्यं रक्तपित्त प्रसादनम् । शस्तं प्राभातिकं प्रोक्तं वातपित्तनिबर्हणम् ॥ (अ॰हा॰)

अर्थ-बकरीका दही-गरम, क्षय, वातनाशक, बवासीर, श्वास और खाँसीमें हितकारी, अग्निप्रदीपक, पचनेमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तप्रसादन और प्रातःकालका बकरीका दही-श्रेष्ठ और वात-पित्त-निवारक है ।

अन्यच्च ।

दध्याजं कफवातघ्नं लघूष्णं नेत्रदोषजित् ।
दुर्नामश्वासकासघ्नं रुच्यं दीपनपाचनम् ॥ (रा॰ नि॰)

अर्थ-बकरीका दही-कफवातनाशक, हलका, नेत्रविकारनाशक, बवासीरको हरनेवाला, श्वासनाशक, कासघ्न, रुचिकारक, दीपन और पाचन है ।

आविकदधिगुणाः ।

कोपनं कफवातानां दुर्नाम्नां चाविकं दधि। दीपनीयन्तु चक्षुष्यं पाण्डुकृच्चापि वातुलम् ॥ रूक्षमुष्णं कषायं स्यादत्यभिष्यन्दि दोषलम् । रसे पाके च मधुरं कषायं कुष्ठवर्द्धनम् (अ॰हा॰)

अर्थ-भेडका दही कफ, वात और बवासीरको कुपित करनेवाला, जठराग्निको दीपन करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, पाण्डुरोगको उत्पन्न करनेवाला, बादी, रूखा, गरम, कषेला, अत्यन्त अभिष्यन्दि, दोषजनक, रस, और पाकमें मधुर, कषाय और कुष्ठको बढानेवाला है।

अन्यच्च ।

आविकं दधि सुस्निग्धं कफपित्तकरं गुरु ।
वाते च रक्तवाते च पथ्यं शोफव्रणापहम् ॥ (रा॰नि॰)

अर्थ-भेडका दही-स्निग्ध, कफपित्तकारक, भारी, वात और रक्तवातमें पथ्य तथा सूजन और बवासीरको दूर करे है ।

हस्तिनीदधिगुणाः ।

हस्तिनी दधिकषायलघूष्णं पक्तिशूलशमनं रुचिप्रदम् ।
दीप्तिदं खलु बलासगदघ्नं वीर्यवर्द्धनबलप्रदमुक्तं ॥

अर्थ-हथिनीका दही-कषेला, हलका, गरम, पक्तिशूलनिवारक, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, कफनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और बलदायक है ।

अन्यच्च ।

हस्तिन्या दधि वीर्य्योष्णं कषायं कफवातनुत् ।

अर्थ-हथिनीका दही-उष्णवीर्य्य ,कषेला और कफ तथा वातनाशक है ।

अश्वीदधिगुणाः ।

अश्वीदधि स्यान्मधुरं कषायं कफार्तिमूर्च्छामयहारि रूक्षम् ।
वातालपदं दीपनकारि नेत्रदोषापहं तत्कथितं पृथिव्याम् ॥

अर्थ-घोडीका दही-मधुर,कसेला,कफकी वेदना और मूर्च्छारोगको दूर करनेवाला, रूखा, अल्पवातकारक, दीपन और नेत्रोंके विकारोंको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

वाजिजं समधुरं बलवर्णस्वेददाहमुपयाति गुरुत्वम् ।
दीपनीयमतिदोषलं सदा चाक्षुषं दधि मरुत्प्रकोपि च ॥

अर्थ-घोडीका दही-मधुर, बलकारक, वर्णकारक, पसीनेको लानेवाला, दाहजनक, भारी, अग्निप्रदीपक, अत्यन्त दोषकारक, नेत्रोंको हितकारी और वातको कुपित करेहै ।

गर्दभीदधिगुणाः ।

गर्दभीदधि रूक्षोष्णं लघु दीपनपाचनम् ।
मधुराम्लरसं रुच्यं वातदोषविनाशनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गधीका दही-रूखा,गरम,हलका,दीपन,पाचन,मधुर, अम्ल, रुचिकारी और वातके दोषोंको दूर करे है।

उष्ट्रीदधिगुणाः ।

वातार्शकुष्ठक्रिमिनाशनं च औष्ट्रं विपाके कटु तिक्तकं च ।
सक्षारमम्लं कृमिकोष्ठनाशनं बलयञ्च सन्तर्पणमाशुकारि ॥

अर्थ-ऊंटनीका दही-बादीकी बवासीर,कोढ,कृमि और कोठेके रोगको दूर करे है। पाकमें कटु, तिक्त, क्षार,अम्ल बलकारक और तत्काल तृप्तिकारक है ।

अन्यच्च ।

विपाके कटु सक्षारं गुरु भेद्यौष्ट्रिकं दधि ।
वातमर्शांसि कुष्ठानि कृमीन्हंत्युदरं परम् ॥ (हा० सं०)

अर्थ-ऊंटनीका दही-पचनेमें कटु, खारी, भारी, भेदक तथा वात, अर्श, कुष्ठ, कृमि और उदररोगको हरे है।

मानुषीदधिगुणाः।

स्निग्धं विपाके मधुरं बल्यं सन्तर्पणं हितम्।
चक्षुष्यं ग्राहि दोषघ्नं दधि नार्य्या गुणोत्तमम् ॥(हा०सं०)

अर्थ-स्त्रीका दही-स्निग्ध, पचनेमें मधुर, बलकारक, तृप्तिजनक, पथ्य, नेत्रोंको हितकारी, मलरोधक, वातादिदोषनाशक और अधिक गुणवाला है।

वार्षिकदधिगुणाः।

वार्षिकं पित्तकृद्वातशमनं कफकोपनम्।
गुल्मार्शःकुष्ठरोगे च रक्तपित्ते न शस्यते ॥

अर्थ-वर्षाऋतुका दही-पित्तकारक, वातनिवारक, कफको कुपित करनेवाला तथा गुल्म, बवासीर, कुष्ठ और रक्तपित्तरोगमें हितकारी नहीं है।

शारदीयदधिगुणाः।

शारदं दधि गुर्वम्लं रक्तपित्ते न शस्यते ॥
शोफतृष्णाज्वरार्त्तानां करोति विषमज्वरम् ॥

अर्थ-शरद्ऋतुका दही-भारी, खट्टा, रक्तापित्तवर्द्धक, तथा सूजन, तृषा और ज्वरसे पीडित मनुष्योंके विषमज्वरको उत्पन्न करे है।

हैमन्तकदन्तिगुणाः।

गुरु स्निग्धं सुमधुरं कफकृद्बलवर्द्धनम्।
वृष्यं मेध्यं च हैमन्तं पुष्टिदं तुष्टिवृद्धिदम् ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुका दही-भारी, स्निग्ध, मधुर, कफकारक, बलवर्द्धक वीर्य्यजनक, मेधाकारक, पुष्टिदायक और तुष्टिवर्द्धक है।

शैशिरदधिगुणाः।

वृष्यं बलकरं पैत्तं श्रमस्यापहरं परम्।
शशिरं सघनं चाम्लं पिच्छिलं गुरु चैव च।

अर्थ-शिशिरऋतुका दही-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तजनक, श्रमनाशक, गाढा, खट्टा, पिच्छिल और भारी है।

वासन्तिकदधिगुणाः।

वातलं मधुरं स्निग्धं किञ्चिदम्लं कफात्मकम्।

बलकृद्वीर्य्यकृत्प्रोक्तं वसन्ते न प्रशस्यते ॥

अर्थ-वसन्तऋतुका दही-बादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारी, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक,वसन्तऋतुमें दही श्रेष्ठ नहीं है ।

ग्रैष्मिकदधिगुणाः ।

लघु चाम्लं भवेद्ग्रीष्मे चात्युष्णं रक्तपित्तकृत् ।
शोषभ्रमपिपासाकृद्दधि प्रोक्तं न ग्रैष्मिके ॥ (हारीतसं०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका दही-हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है ।

पक्वदुग्धभवदधिगुणाः ।

पक्वदुग्धभवं रुच्यं दधि स्निग्धं गुणोत्तमम् ।
पित्तानिलापहं सर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥

अर्थ-औटाये हुवे दूधका दही-रुचिकारक, स्निग्ध,गुणोंमें श्रेष्ठ, पित्तवातनाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और बलको बढावे है ।

निःसारदधिगुणाः ।

असारं दधि संग्राहि शीतलं वातलं लघु ।
विष्टम्भि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम् ।

अर्थ-जिस दहीका मक्खन निकाल लिया हो फिर उसको जमादिया हो ऐसा असार दही-मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, विष्टम्भकारक, दीपन, रुचिकारी और संग्रहणीरोगको दूर करे है ।

गालितदधिगुणाः ।

गालितं दधि सुस्निग्धं वातघ्नं कफकृद्गुरु ।
बलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-छानाहुआ और निचोडाहुआ दही-स्निग्ध, वातनाशक, कफकारक, भारी, बलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, मधुर और अत्यन्त पित्तकारक नहीं है ।

सितायुक्तदधिगुणाः ।

सितायुक्तं दधि प्रोक्तं पित्तदाहतृषाहरम् ।
रक्तदोषहरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-चीनीयुक्त दही-पित्त, दाह, तृषा और रुधिरके विकारको दूर करे है।

गुडयुक्तदधिगुणाः।

गुडयुक्तं दधि प्रोक्तं तर्पणं धातुवर्द्धकम्।
गुरुवातहरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम्। (नि० र०)

अर्थ-गुडमिश्रित दही-तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, भारी और वातविनाशक है।

दधिभक्षणनिषिद्धता।

न नक्तं दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम्।
नामुद्गसूपं नाक्षौद्रं नोष्णमामलकैर्विना॥ (सु० सं०)

अर्थ-रात्रिमें दही नहीं खाना चाहिये तथा घृतरहित दही मिश्री, मूंगकी दाल, मधु और आमलेके विना तथा उष्ण दही नहीं खाना चाहिये।

शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशो दधि गर्हितम्।
हेमन्ते शिशिरे चैव वर्षासु दधि शस्यते॥ (सु० सं०)

अर्थ-शरद,ग्रीष्म और वसन्तऋतुमें दही प्रायः अपकारी है और हेमन्त शिशिर तथा वर्षाऋतुमें दही हितकारी है।

अक्रमदधिभक्षणदोषाः।

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयान्भ्रमान्।
प्राप्नुयात्कामलाश्चापि विधिं हित्वा दधिप्रियः॥

अर्थ-विना नियमके दहीको खानेसे-ज्वर,रक्तपित्त, विसर्प, कुष्ठ, पाण्डु, भ्रम और कामलादिक अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं।

त्रिकट्वादियुक्तदधिगुणाः।

दधि त्रिकटुकयुक्तं राजिकाचूर्णमिश्रं कफहरमनिलघ्नं वह्निसंधुक्षणं च। तुहिनशिशिरकाले सेवितं चातिपथ्यं रचयति तनुदार्ढ्यं कान्तिमत्त्वं च नृणाम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-दहीमें त्रिकुटेका चूर्ण, सेंधानोंन और राईका चूर्ण मिलाकर हेमन्त और शिशिर ऋतुमें खानेसे कफको दूर करे, वातका नाश करे, अग्निको दीपन करे, अत्यन्त पथ्य तथा शरीरको दृढ करे और अङ्गमें कान्तिको उत्पन्न करेहै।

सरस्यमस्तुनश्च लक्षणानि गुणाश्च ।

दध्नस्तूपरि यो भागो घनः स्नेहसमन्वितः । स लोके सर इत्युक्तो दध्नो मण्डस्तु मस्त्विति ॥ सरः स्वादुर्गुरुर्वृष्यो वातवह्निप्रणाशनः। साम्लो वस्तिप्रशमनः पित्तश्लेष्मविवर्द्धनः। मस्तु क्लमहरं बल्यं लघु भक्ताभिलाषकृत् । स्रोतोतिशोधनं ह्लादि कफतृष्णानिलापहम् ॥ अवृष्यं प्रीणनं शीघ्रं भिनत्ति मलसञ्चयम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दहीके ऊपरके स्नेहयुक्त गाढे भागको लोकमें सर (मलाई) कहते हैं और दहीके जलको मस्तु (तोड) कहते हैं । दहीकी मलाई-स्वादिष्ठ, भारी, वीर्यवर्द्धक, वातविनाशक, जठराग्निका मंद करनेवाली, खट्टी, वस्तिरोगनाशक, पित्त और कफवर्द्धक है । दहीका जल-क्लमनाशक, बलकारक, भोजनमें रुचिको करनेवाला, शरीरके स्रोतोंको शोधनेवाला, आनन्दजनक, कफनाशक, तृषानिवारक, वातविनाशक, अवृष्य, तृप्तिकरनेवाला और शीघ्रही मलके संचयको भेदनेवाला है ।

दधिकूर्चिकलक्षणगुणाश्च ।

अर्धोदके पयस्युष्णे दध्यम्लं दधिकूर्चिका ।
वातघ्नी ग्राहिणी रूक्षा दुर्जरा दधिकूर्चिका ॥ (रा० व०)

अर्थ-गरम दूधमें दूधसे आधा भाग पानी मिलाले फिर उसमें खट्टा दही मिलालेवे उसको दधिकूर्चिका कहते हैं । दधिकूर्चिका वातनाशक, रूखी, मलरोधक और कठिनतासे पचनेवाली है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे दधिवर्गः समाप्तः ॥ १४ ॥

अथ तक्रवर्गः ।

तक्रं दण्डाहतं घोलं गोरसः कट्टरं द्रवः
मथितं कङ्करं चाम्लं मलिनं भग्नसन्धिकम् ॥

अर्थ-तक्र, दण्डाहत, घोल, गोरस, कट्टर, द्रव, मथित, कङ्कर,

अम्ल, मालिन, भग्नसन्धिक (गोरसज, कालशेय, विलोडित, अरिष्ट, उदाश्वित, प्रमाथित, अम्बर, कट्वर, घल, केवल, छाच्छिका)।

संस्कृतभाषामें	तक्र ।
हिन्दीभाषामें	छाछ मट्ठा ।
वंगभाषामें	घोल ।
मराठीभाषामें	ताक ।
गुजरातीभाषामें	छास, घोलवु ।
कर्णाटकीभाषामें	मज्जिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चल्ला ।
इंग्रेजभिाषामें	१ बटरमिल्क २ व्हे । Butter Milk Weay
फारसीभाषामें	मस्त, मठा ।
अरबीभाषामें	हमीज ।

तक्रभेदाः ।

तेषां नामानि भिन्नानि लक्षणानि समानि च । घोलन्तु मथितं तक्रमुदश्विच्छच्छिकापि च ॥ ससारं निर्जलं घोलं मथितं त्वसरोदकम् । तक्रं पादजलं प्रोक्तमुदश्वित्त्वर्द्धवारिकम् ॥ छच्छिका सारहीना स्यात्स्वच्छा प्रचुरवारिका ॥

अर्थ–घोल, माथित, तक्र, उदाश्वित और छच्छिका इन भेदोंसे तक्र पांच प्रकारका है । जो तक्र मलाई सहित मथा गया हो और पानी जिसमें न पडा हो उसको घोल कहते हैं और जिसमेंसे मलाई निकाललो हो विनापानी डाले मथा गया हो, उसको माथित कहते हैं । जिसमें तीन भाग दही हो और एक भाग पानी गेरकर मथा गया हो, उसको तक्र (मट्ठा) कहते हैं जिसमें आधा दही और आधा पानी पडाहो उसको उदाश्वित कहते हैं और जिसमें अँधाधुन्ध पानी पडा हो उसको सारहीन स्वच्छ छच्छिका (छाछ) कहते हैं ।

एतेषां गुणाः ।

वातपित्तहरं घोलं मथितं कफपित्तनुत् । तक्रं ग्राहि कषायाम्लं स्वादुपाकं रसं लघु ॥ वीर्योष्णं दीपनं वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् । ग्रहण्यादिमतां पथ्यं भवेत्संग्राहि लाघवात् ॥ किंचित्स्वा-

दुविपाकित्वान्न च पित्तप्रकोपनम् । अम्लोष्णं दीपनं वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् ॥ कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापि कफापहम् । न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः ॥ यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः । उदश्वित्कफकृद्बल्यं श्रमघ्नं परमं मतम् ॥ छच्छिका शीतला लघ्वी पित्तश्रमतृषाहरी । वातनुत्कफनुत्सा तु दीपनी लवणान्विता ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तहाँ-घोल-वातपित्तनाशक है । मथित-कफपित्तनाशक है । तक्र-मलरोधक, कसेला, खट्टा, पचनेमें स्वादु, रसमेंभी स्वादु, हलका, उष्णवीर्य्य, अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्ति करनेवाला, वातनाशक और संग्रहणी अतीसारादि रोगोंमें पथ्य है । तक्र हलका होनेसे ग्राही, स्वादुपाकी होनेसे पित्तको कुपित नहीं करता । अम्ल, उष्ण, दीपन, वृष्य, प्रीणन, वातनाशक, कषाय, उष्ण, विकाशि और रूक्ष होनेसे कफका नाश करे है । तक्रका पान करनेवाला मनुष्य कभी रोगी नहीं होता, तक्र से भस्म किये हुवे रोग फिर कभी नहीं होते । जैसे स्वर्गलोकमें देवताओंको अमृत है वैसेही मृत्युलोकमें प्राणियोंको तक्र है । उदश्वित्-कफकारक, बलवर्द्धक और श्रमनाशक है । छच्छिका (छाछ)-शीतल, हलकी, पित्तनाशक, श्रमहारक, तृषानिवारक और लवणके साथ छाछ वातनाशक, कफहारक और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

घोलं मारुतपित्तहारि मथितं वातापहं श्लेष्महृत्व
पित्तश्लेष्मविनाश्युदश्विदधिकं तक्रं त्रिदोषापहम् ।
मन्दाग्नावरुचौ तथैव नितरामन्येषु रोगेष्वपि
श्रेष्ठं तक्रमिदं वदन्ति मुनयस्तेनोत्तमं प्राणिनाम् ॥

अर्थ-घोल-वातपित्तनाशक, मथित-वात और कफनाशक है । उदश्वित्-पित्त आर कफनाशक है । और तक्र-त्रिदोषनाशक है, तथा मन्दाग्नि, अरुचि और अन्यरोगोंमें भी हितकारी है ।

तक्रं त्रिदोषशमनं स्वादुपाकरसं लघु ।

वीर्य्योष्णं मूत्रकृच्छ्रघ्नं कषायमम्लमग्निदम् ॥

अर्थ-तक्र-त्रिदोषनाशक, स्वादुपाकी, स्वादुरसान्वित,: हलका, उष्णवीर्य्य,मूत्रकृच्छ्ररोगनिवारक,कसेला,खट्टा औरजठराग्निजनकहै।

अम्लेन वातं मधुरेण पित्तं कफं कषायेण निहन्ति सद्यः ।

अर्थ-तक्र-अम्लपनसे वातका, मधुरपनसे पित्तका और कसेलपनसे कफका नाश करे है। इस प्रकार तक्र त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

तक्रं स्वादु कषायमम्लकरसं भक्ष्यं लघूष्णं हितं
गुल्मार्शःपरिणामशूलशमनं छर्दिप्रसेकापहम् ।
तृष्णारोचकशोफमेदगरजिच्छ्लेष्मानिलघ्नं परं
सेव्यं मूत्रगदापहं ज्वरहरं स्नेहोत्थपीडापहम् ॥

अर्थ-तक्र-स्वादिष्ठ, कसेला, खट्टा, भक्षनेयोग्य, हलका, गरम, हितजनक तथा गुल्म, बवासीर, परिणामशूल, वमन, प्रसेक, तृषा, अरुचि, सूजन, मेद, विष, कफ, वात, मूत्ररोग, ज्वर और स्नेहसे उत्पन्न हुई पीडाको दूर करे है ।

अन्यच्च।

आमातिसारे च विषूचिकायां वातज्वरे पाण्डुषु कामलायाम् ।
प्रमेहगुल्मोदरवातशूले नित्यं पिबेत्तक्रमरोचके च ॥

अर्थ-तक्र-आमातिसार,विषूचिका,वातज्वर,पाण्डुरोग,कामला, प्रमेह, गुल्म,उदररोग वातशूल और अरुचिमें सदैव पीना चाहिये ।

तथा च त्रिविधं तक्रं कथ्यते शृणु पुत्रक:यथायोगेन तत्सम्यक्छस्यते येषु रोगिषु ॥ समुद्धृतघृतं तक्रमर्द्धोद्धृतघृतञ्च यत् । अनुद्धृतघृतञ्चान्यदित्यैतत्त्रिविधं मतम् ॥ पूर्वं लघु च पथ्यं च त्रिदोषशमनं परम् ॥ ततः परं वृष्यतरं क्रमेण समुदीरितम् ॥ अनुद्धृतघृतं सान्द्रं गुरु विद्यात्कफात्मकम् । बलप्रदन्तु क्षीणानामामशोफातिसारकृत् (हा० सं०)

अर्थ-आत्रेयजी कहनेलगे कि, तक्र तीन प्रकारका है सो मैं कहताहूं। हे पुत्र! सुन, वह तक्र जिन रोगोंमें हितकारी है सो

दिखलाताहूं !घृतहीन, अल्पघृतयुक्त और घृतसंयुक्त ऐसे तक्र तीन प्रकारका है तहां घृतहीन अर्थात् जिस तक्रमेंसे घी निकाललियाहो ऐसा तक्र हलका, पथ्य और त्रिदोषनाशक है। अल्पघृतसंयुक्त अर्थात् जिसमेंसे थोडा घी निकाललियाहो ऐसा तक्र वीर्य्यवर्द्धक और घृतसंयुक्त अर्थात् जिसमेंसे घी नहीं निकालाहो ऐसा तक्र-गाढा, भारी, कफकारक, क्षीणमनुष्योंको बल देनेवाला तथा आम, सूजन और अतिसारको दूर करे है ।

तत्पुनर्मधुरं श्लेष्मप्रकोपनकरं परम् ।
वातघ्न पित्तशमनमम्लन्तु पित्तकृत्सदा ॥

अर्थ-मीठातक्र-कफकारक, वातनाशक और पित्तको शान्ति करे है । और खट्टा तक्र-सदैव पित्तकारक है ।

पक्वापक्वतक्रगुणाः ।

तक्रमामं कफं कोष्ठे हन्ति कण्ठे करोति च ।
पीनसश्वासकासेषु पक्वमेव प्रयुज्यते ॥ (अ०)

अर्थ-कच्चा तक्र-कोष्ठके कफको दूर करे और कण्ठमें कफको करे है इसकारण पीनस, श्वास और खांसीमें तो पक्काही तक्र देना चाहिये ।

दोषविशेषे व्याधिविशेषे च तक्रविशेषाः ।

वातेऽम्लं शस्यते तक्रं शुण्ठीसैन्धवसंयुतम् ॥ पित्ते स्वादुसितायुक्तं सव्योषमधिके कफे हिंगुजीरयुतं घोलं सैन्धवेन सुसंयुतम् । भवेदतीववातघ्नमर्शोऽतीसारहृत्परम् ॥ सुरुच्यं पुष्टिदं बल्यं वस्तिशूलविनाशनम्।मूत्रकृच्छ्रे तु सगुडं पाण्डुरोगे सचित्रकम् ॥

अर्थ-वातरोगमें-सोंठ और सैंधवलवणका चूर्ण मिलाकर खट्टातक्र पीना चाहिये, पित्तरोगमें बूरा मिलाकर मीठातक्र पीना । अधिक कफमें त्रिकुटेका चूर्ण डालकर पीना चाहिये । घोल-हींग, जीरा और सैंधवलवणयुक्त अत्यन्त वातनाशक है । तथा बवासीर और अतिसारको दूर करे है, रुचिकारक, पुष्टिजनक, बलकारक और वस्तिशूलको निर्मूल करे है ।घोल-मूत्रकृच्छ्ररोगमें गुडके साथ पीना चाहिये और पाण्डुरोगमें चीतेके साथ पीना चाहिये ।

तक्रसेवननिमित्तानि ।

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च तथा वातामयेषु च । अरुचौ स्रोतसां रोधं तक्रं स्यादमृतोपमम् ॥ तत्तु हन्ति गरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् । पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ॥ मेहं गुल्ममतीसारं शूलप्लीहोदरारुचीः । श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाकृमीन् ॥

अर्थ-शीतऋतु, मन्दाग्नि, वातरोग,अरुचि और छिद्रोंके रोधमें तक्र अमृतकी समान गुणकारक है । यह विष, वमन, प्रसेक, विषमज्वर, पाण्डुरोग, मेदरोग, संग्रहणी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, भगंदर, प्रमेह, गुल्म, अतिसार, शूलरोग, प्लीहा,उदररोग, अरुचि, श्वित्रकुष्ठ, कोष्ठरोग, कोढ, सूजन, तृषा और कृमिरोगको हरे है ।

अन्यच्च ।

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च कफोत्थेष्वामयेषु च ।
मार्गावरोधे कुष्ठे च वायौ तक्रं प्रशस्यते ॥

अर्थ-शीतकाल, मन्दाग्नि, कफसे उत्पन्न हुये रोग, मार्ग चलनेकी थकावट, कुष्ठ और वातके रोगोंमें तक्र हितकारी है ।

रोगविशेषे तक्रनिषेधः ।

नव तक्रं क्षते दद्यान्नोष्णकाले न दुर्बले ।
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगे रक्तपैत्तिके ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-क्षतरोग, उष्णकाल,दुर्बलता,मूर्च्छा, भ्रम, दाह और रक्तपित्त रोगमें तक्र देना नहीं चाहिये ।

गव्यादीनां तक्राणां विशिष्टगुणाः ।

यान्युक्तानि दधीन्यष्टौ तद्गुणं तक्रमादिशेत् । (भा०प्र०)

अर्थ-पहिले जो आठ प्रकारके दही कहे हैं उनहींके समान उन दहियोंके तक्रोंके गुण जानने ।

गोतक्रगुणाः ।

गव्यं त्रिदोषशमनं पथ्ये श्रेष्ठं तदुच्यते ।
दीपनं रुचिकृन्मेध्यमर्शोदरविकारजित् ॥

अर्थ-गायका तक्र-त्रिदोषनाशक,पथ्योंमें उत्तम,दीपन,रुचिकारक, मेधाजनक,तथा बवासीर और उदरके विकारोंको दूर करे है ।

महिषीतक्रगुणाः ।

माहिषं कफकृत्किञ्चिद्घनं शोफकरं नृणाम् ।
शस्तं प्लीहार्शोग्रहणीदोषेर्तीसारिणामपि ।

अर्थ-भैंसका तक्र-कफकारक, कुछ २ गाढा, मनुष्योंके सूजनको करनेवाला तथा प्लीहा,बवासीर संग्रहणी और अतिसारमें हित है ।

छागीतक्रगुणाः ।

छागलं लघु संस्निग्धं त्रिदोषशमनं परम् ।
गुल्मार्शोग्रहणीशूलपाण्ड्वामयविनाशनम् ॥ (हा० सं०)

अर्थ-बकरीका तक्र-हलका,स्निग्ध, त्रिदोषनिवारक तथा गुल्म, बवासीर, संग्रहणी, शूल और पाण्डुरोगको दूर करे है ।

आविकतक्रगुणाः ।

आवितक्रमपथ्यं स्यादम्लं दुर्गंधकारकम् ।
दीपनं कृटुकं चोष्णं लेखनं लघु पित्तकृत् ॥
रक्तदोषकरं चैव कफवातविनाशनम् ।

अर्थ-भेडका मट्ठा-अपथ्य, खट्टा, दुर्गन्धकारी, दीपन, चरपरा, गरम, लेखन, हलका, पित्तकारक, रुधिरके विकारोंको करनेवाला और कफवातविनाशक है ।

हस्तिनीतक्रगुणाः ।

हस्तिन्यास्तु स्मृतं तक्रमग्निमांद्यकरं गुरु ।
उष्णं च तुवरं तेजोवर्द्धकं कफवातहम् ॥

अर्थ-हथिनीका तक्र-मन्दाग्निकारक, भारी, गरम, कसेला, तेजवर्द्धक और कफ वातनाशक है ।

अश्वीतक्रगुणाः ।

अश्वीतक्रं तु तुवरं किञ्चिद्वातकरं मतम् ।
अग्निदीप्तिकरं रूक्षं नेत्र्यं मूर्च्छाकफापहम् ॥

अर्थ-घोडीका तक्र-कसेला, किञ्चिद्वातकारक, अग्निप्रदीपक, रूखा,नेत्रोंको हितकारी तथा मूर्च्छा और कफका विनाश करेहै ।

उष्ट्रीतक्रगुणाः ।

औष्ट्रं तक्रं तु विरसं गुरु हृद्यं च दोषलम् ।
पीनसश्वासकासेषु शस्तमुक्तं मनीषिभिः ॥

अर्थ-ऊँटनीका तक्र-बेस्वाद, भारी, हृदयको हितकारी, दोषजनक तथा पीनस, श्वास और खाँसीमें हितकारी है ।

गर्दभीतक्रगुणाः ।

गर्दभ्यास्तु स्मृतं तक्रं मधुरं दीपनं मतम् ।
रूक्षमम्लकरं चोष्णं वातनाशकरं परम् ॥

अर्थ-गधीका तक्र-मधुर, दीपन, रूखा, खट्टा, गरम और वातनाशक है ।

स्त्रीतक्रगुणाः ।

स्त्रीतक्रं ग्राहकं चाम्लं चक्षुष्यं तर्पणं गुरु ।
पाके च मधुरं बल्यं त्रिदोषस्य च नाशकम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-स्त्रीका तक्र-मलरोधक, खट्टा, नेत्रोंको हितकारी, तृप्तिकारक, भारी, पाकमें मधुर, बलकारक और त्रिदोषनाशक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तक्रवर्गः समाप्तः ॥ १९ ॥

अथ नवनीतवर्गः ।

म्रक्षणं सरजं सारं नवनीतं नवोद्धृतम् ॥

अर्थ-म्रक्षण, सरज, सार, नवनीत, नवोद्धृत, (मन्थज, हैयङ्गवीन [क], दधिसार, नवनी, कलम्बुट, दधिज ।)

संस्कृतभाषामें	नवनीत ।
हिन्दीभाषामें	नवनी, नोनी, मक्खन ।
वंगभाषामें	ननी, माखन ।
मराठीभाषामें	लोणी ।
गुजरातीभाषामें	माखण ।
कर्णाटकीभाषामें	बेण्णी ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेन्ना ।

इंग्रेजीभाषामें	बटर । Butter
लेटिन्भाषामें	बुटिरम् । Butyrum
फारसीभाषामें	मसका ।
अरबीभाषामें	ज़ुबूद ।

साधारणनवनीतगुणाः ।

शीतं वर्णबलावहं सुमधुरं वृष्यं च संग्राहकं वातघ्नं कफकारकं रुचिकरं सर्वाङ्गशूलापहम् । कासघ्नं श्रमनाशनं सुखकरं कान्तिप्रदं पुष्टिदं चक्षुष्यं नवनीतमुद्धृतनवं गोः सर्वदोषापहम् (रा० नि०)

अर्थ-नवीन (ताजी)नवनीत-शीतल, वर्णको सुंदर करनेवाला, बलकारक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, वातनाशक, कफकारक, रुचिकारक, शरीरके सर्वप्रकारके शूलोंको हरनेवाला, खाँसीको दूर करनेवाला, श्रमनाशक, सुखकारक, कान्तिजनक, पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी और सर्वदोषोंको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शीतं बलाढ्यं मधुराम्लवृष्यं श्लेष्मावहं पित्तमरुत्प्रणाशम्। शोफक्षयक्षीणकृशोतिवृद्धबालेषु पथ्यं नवनीतमुक्तम् ॥

(द्रव्यगुणदीपिका)

अर्थ-नवनीत-माखन-शीतल,बलकारक,मधुर,खट्टा,वीर्य्यवर्द्धक, श्लेष्मकारक, पित्तवातनाशक तथा शोफरोगी, क्षयरोगी, क्षणि, अत्यन्त कृश, वृद्ध और बालकोंको हितकारी है ।

अपिच ।

नवनीतं नवं ग्राहि हृद्यं चोल्वणदीपकम्।क्षयारुच्यार्दितप्लीहग्रहण्यर्शोविकारनुत्॥ चक्षुष्यं शिशिरं स्निग्धं वृष्यं जीवनबृंहणम् । क्षीणे द्रवं हिमं ग्राहि रक्तपित्ताक्षिरोगनुत्॥स्मृतिवाग्निशुक्रौजःकफमेदोविवर्द्धनम् ।वातपित्तकफोन्मादशोफालक्ष्मीज्वरापहम्॥सर्वदोषापहं शीतं मधुरं रसपाकयोः।(हा.सं.)

अर्थ-नवीन नौनी-ग्राही, हृदयको हितकारी, अग्निको दीपन करनेवाला, क्षयनाशक, अरुचिको हरनेवाला, लकुवा वायुको

दूर करनेवाला, प्लीहाका नाश करनेवाला, संग्रहणीको हरनेवाला, बवासीरको नष्ट करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, स्निग्ध, वृष्य, प्राणरक्षक, पुष्टिकारक, क्षीणमनुष्यको हितकारी, शीतवीर्य्य, मलरोधक, रक्तपित्तनाशक, नेत्ररोगनिवारक, स्मरणशक्तिको बढानेवाला, वातवर्द्धक, वीर्य्यकारक, अग्निजनक, ओजवर्धक, कफकारक, मेदजनक तथा वात, पित्त, कफ, उन्माद, सूजन, अलक्ष्मी, ज्वर और सर्वदोषनाशक है तथा पाक और रसमें मधुर है।

गव्यनवनीतगुणाः।

नवनीतं हितं गव्यं वृष्यं वर्णबलाग्निकृत्।
संग्राहि वातपित्तासृक्क्षयार्शोर्दितकासजित्।
तद्धितं बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः॥

अर्थ-गायका माखन-हितकारी, वीर्य्यवर्धक, वर्णकारक, बलकारक, अग्निप्रदीपक, ग्राही, तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, क्षय, बवासीर लकवा और खाँसीको दूर करे है। बालक और वृद्धोंको हितकारी और विशेषकरके यह माखन बालकोंको अमृतके समान गुणकारक है।

महिषीनवनीतगुणाः।

माहिषं नवनीतन्तु कषायं मधुरं रसे।
शीतं वृष्यप्रदं बल्यं ग्राहि पित्तघ्नतुन्दरम्॥ ((रा. नि,)

अर्थ-भैंसका माखन-कसेला, मधुररसान्वित, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, ग्राही, पित्तनाशक, और तुन्द (थोंद) को देता है।

अन्यच्च।

नवनीतं महिष्यास्तु वातश्लेष्मकरं गुरु।
दाहपित्तश्रमहरं मेदःशुक्रविवर्द्धनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-भैंसका नौनी-वातकफकारक, भारी, दाह, पित्त और श्रमनाशक, मेदजनक तथा शुक्रवर्द्धक है।

गव्यं वा माहिषं वापि नवनीतं नवोद्धृतम्।
शस्यते बालवृद्धस्य बलकृद्धातुवर्द्धनम्॥

अर्थ-गाय अथवा भैंसका मक्खन-नवीनही श्रेष्ठ होता है, बाल और वृद्धोंको हितकारी, बलकारक और धातुवर्द्धक है।

छागीनवनीतगुणाः ।

नवनीतमजायास्तु मधुरं तुवरं लघु। चक्षुष्यं दीपनं बल्यंहितकृत्क्षयकासनुत्॥गुल्मं प्रमेहं शूलञ्च कण्डूं नेत्ररुजं ज्वरम् । पाण्डुं च श्वित्रकुष्ठं च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-बकरीका नौनी-मधुर, कसेला,नेत्रोंको हितकारी, दीपन, बलकारक, हितकारक तथा क्षय, खांसी, गुल्म, प्रमेह,शूल, कण्डु, नेत्ररोग, ज्वर, पाण्डुरोग और श्वित्रकुष्ठको नष्ट करे है ।

आविकनवनीतगुणाः ।

नवनीतं स्मृतं चाव्याःपाके शीतं सरं लघु।योनिशूलेकफेवाते शोफे चार्शसि चोदरे॥जठराग्नौ सदा शस्तं कृमिज्वरकरं परम्।कण्डूं वांतिं चारुचिं च करोतीति बुधा जगुः॥(नि० र०)

अर्थ-भेडका माखन-पाकमें शीतल, कुछेक दस्तावर, हलका तथा योनिशूल, कफ, वात, सूजन, बवासीर, उदररोग और जठराग्निमें श्रेष्ठ है । कृमिकारक, ज्वरजनक तथा कण्डु, वमन और अरुचिको उत्पन्न करे है ।

हस्तिनीनवनीतगुणाः ।

हस्तिन्या नवनीतं तु तुवरं दीपनं लघु ।
तिक्तं मलस्तम्भकरं कृमिपित्तकफापहम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-हथिनीका माखन-कसेला, दीपन, हलका, कडवा, मलस्तम्भक, तथा कृमि, पित्त और कफनाशक है ।

अश्वीनवनीतगुणाः ।

अश्विन्या नवनीतन्तु तुवरं कटुकं मतम् ।
अचक्षुष्यं स्मृतं चोष्णं कफवातविनाशनम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-घोडीका माखन-कसेला, चरपरा, नेत्रोंको अहितकारी, गरम, तथा कफ और वातविनाशक है ।

गर्दभीनवनीतगुणाः ।

गर्दभ्या नवनीतन्तु बल्यं च तुवरं मतम् ।
उष्णं च दीपनं चैव कफं वातं विनाशयेत् ॥
मूत्रदोषं नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-गधीका माखन-बलकारक, कसेला, गरम, दीपन तथा कफ, वात और मूत्रदोषनाशक है।

उष्ट्रीनवनीतगुणाः।

उष्ट्रीजं नवनीतन्तु पाके शीतं लघु स्मृतम्।
अग्निदीप्तिकरं चैव व्रणघ्नं कृमिनाशनम् ॥ (नि. र.)

अर्थ-ऊँटनीका मक्खन-पाकमें शीतल, हलका, अग्निदीपक, व्रणनाशक और कृमिनाशक है।

स्त्रीनवनीतगुणाः।

स्त्रीजन्यं नवनीतं तु पाके लघु रुचिप्रदम्।
चक्षुष्यं दीपनं चैव सर्वरोगान्विषं हरेत् ॥

अर्थ-स्त्रीका नवनीत-पाकमें लघु, रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, सर्वप्रकारके रोग और विषनाशक है।

दुग्धजातनवनीतगुणाः।

दुग्धोत्थं नवनीतन्तु चक्षुष्यं रक्तपित्तनुत्।
वृष्यं बल्यमतिस्निग्धं मधुरं ग्राहि शीतलम् ॥ (भा. प्र.)

अर्थ-दूधमेंसे निकालाहुवा नौनी-नेत्रोंको हितकारी, रक्तपित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अत्यन्त स्निग्ध, मधुर, मलरोधक और शीतल है।

नवीननवनीतगुणाः।

नवनीतमिदं नवमेव हितं हिमशुक्रबलानलकांतिकरम्।
ग्रहणात्मकमर्दितपित्तमरुद्गुदजक्षतजक्षयकासहरम् ॥

अर्थ-नवीन अर्थात् ताजा माखन-हितकारी, शीतल, शुक्रजनक, बलकारक, अग्निप्रदीपक, कान्तिकारक तथा संग्रहणी, लकुवा, पित्त, वात, गुदरोग, क्षयरोग और खाँसी दूर करे है।

प्राचीननवनीतगुणाः।

सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्द्यर्शःकुष्ठकारकम् ॥
श्लेष्मलं गुरु मेदस्यं नवनीतं चिरंतनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पुराना नौनी-खारी, चरपरा, खट्टा, वमनकारक, बवासीरको उत्पन्न करनेवाला, कुष्ठकारक, कफकारी, भारी और मेदको करे है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे नवनीतवर्गः समाप्तः ॥ १६ ॥

अथ घृतवर्गः ।

घृतमाज्यं हविः सार्पिः पुरोडाश्नवनीतकम् ।
पवित्रं वह्निभोग्यं चतैजसं चाभिघारकम् ॥

अर्थ-घृत, आज्य, हवि, सर्पि, पुरोडाश, नवनीतक, पवित्र, वह्निभोग्य, तैजस, अभिघारक (आज, तोयद, पीथ, अमृत, अडिघार, होम्य, आयु, नवनीतज, भोजनार्ह, जविन ।

संस्कृतभाषामें	घृत ।	
हिन्दीभाषामें	घि, घृत, घी ।	
वंगभाषामें	घि, घृत ।	
मराठीभाषामें	तूप ।	
गुजरातीभाषामें	घी ।	
तालिङ्गीभाषामें	नेई ।	
इंग्रेजीभाषामें	क्लेरीफाईड बटर ।	Clerifted Butter
लैटिन्भाषामें	बुटीरम्, डेप्युरेटम् ।	Butyrum Deparatum
फारसीभाषामें	रोघनेजर्द ।	
अरबीभाषामें	समन्, दुहनुल्बकर ।	

घृतगुणाः ।

घृतं तु सौम्यं शीतवीर्य्यं मृदुमधुरमम्रृतमल्पाभिष्यन्दिस्नेहनमुदावर्तोन्मादापस्मारशूलज्वरानाहवातपित्तप्रशमनमग्निदीपनस्मृतिमतिमेधाकान्तिस्वरलावण्यसौकुमार्य्यौजस्तेजोबलकरमायुष्यं वृष्यं मेध्यं वयःस्थापनं गुरु चक्षुष्यं श्लेष्माभिवर्द्धनं पापालक्ष्मीप्रशमनं विषहरंरक्षोघ्नञ्च। (सुश्रुत)

अर्थ-घी-सौम्य, शीतवीर्य्य, कोमल, मधुर, अमृतकी समान गुणकारी, अल्प अभिष्यन्दी, स्निग्ध और उदावर्त्त, उन्माद, अपस्मार, शूल, ज्वर, आनाह, वात तथा पित्तको दूर करनेवाला अग्निप्रदीपक तथा स्मरणशक्ति, मति, मेधा, कान्ति, स्वर, लावण्यता, सुकुमारता, ओज, तेज और बलको करनेवाला है, आयुको बढानेवाला,

वीर्य्यको बढानेवाला, मेध्य, अवस्थाको स्थापन करनेवाला, भारी, नेत्रोंको हितकारी, कफकारी, पाप और अलक्ष्मीको शान्ति करनेवाला, विषविनाशक, और राक्षसबाधाको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

घृतं शीतं रसे पाके मधुरं जीवनं मतम्।स्नेहेषु चोत्तमं वृष्यं कान्तिकृद्धातुवर्द्धकम् ॥ कंठयं स्वर्य्यं चेन्द्रियाणां तृप्तिकृद्भेदकं मतम् । व्रण्यं वयःस्थापकं च भेदकं च मृदु स्मृतम्॥ चक्षुष्यं कफकृत्प्रोक्तमग्निदीप्तिकरं गुरु । बुद्धिमेधास्मृतिप्रज्ञातेजौजोबलपुष्टिकृत् ॥ सौकुमार्यस्य मेदस्य लावण्यस्य च वर्द्धकम् । श्लेष्मकृद्बालवृद्धानां हितकृद्रुचिदं मतम् । स्निग्धं रसायनं चैव क्षतक्षीणे हितं मतम्॥ विसर्पं चाग्निदग्धं च शस्त्रक्षीणे हितं मतम् ॥ अजीर्णोन्मादशूलानि ह्युदावर्तं क्षयं तथा । आनाहं रक्तपित्तं च वातपित्तं व्रणं तथा ॥ रक्तदोषं क्षतं दाहं योनिनेत्रश्रुतीरुजम् । दद्रुं शिरोरुजं शोथं त्रिदोषं चैव नाशयेत् ॥ निरामवातज्वरिणां हितं चामे विषोपमम् (नि०र०)

अर्थ-घी-रसमें शीतल, पाकमें मधुर, प्राणरक्षक, स्नेहोंमें उत्तम, वृष्य, कान्तिकारक, धातुवर्द्धक, कण्ठको हितकारी, स्वरको शुद्ध करनेवाला, इन्द्रियोंकी तृप्ति करनेवाला, भेदक, घावको भरनेवाला, अवस्थास्थापक, मृदु, नेत्रोंको हितकारी, कफकारक, अग्निप्रदीपक, भारी तथा बुद्धि, मेधा, स्मरणशक्ति, प्रज्ञा, तेज, ओज, बल और पुष्टि करनेवाला तथा सुकुमारता, मेद, लावण्यता और श्लेष्मको बढानेवाला है और बाल तथा वृद्धोंको हितकारी, रुचिकारी, स्निग्ध, रसायन, क्षतक्षय, विसर्प, अग्निदग्धव्रण, शस्त्रक्षत और क्षीणतामें हितकारी है। तथा अजीर्ण, उन्माद, शूल, उदावर्त्त, क्षय, आनाहवात, रक्तपित्त, वातपित्त, व्रण, रुधिरविकार, क्षत, दाह, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, दाद, शिरोरोग, सूजन और त्रिदोषको दूर करे है। तथा निराम वातज्वरवाले मनुष्यको हितकारी और आमज्वरपै विषकी समान दोषकारी है ।

अन्यच्च ।

ओजस्तेजोभिवृद्धिं जनयति सुखदं कान्तिकृत्सम्यगुक्तं पापालक्ष्मीश्रमघ्नं श्वसनकसनहाऽजीर्णजातज्वरघ्नम् । शूलोदावर्त्तरोगग्रहणिमदरुजं नाशयत्याशु पीडां पित्तघ्नं वातनाशि स्वरकरमगदं क्षुद्भ्रमे चैव सेव्यम्॥ चक्षुष्यं वृष्यमायुःस्मृतिधृतिकरणं राजयक्ष्माविनाशं रूक्षे क्षीणे च पथ्यं वलिपलितहरं सामदोषप्रकोपे । भूतोन्मादप्रमत्ते बहुतिमिरकरे कृच्छ्रपस्माररोगे सर्वेषां सर्वदैव प्रथितगुणगणं साधु पथ्यं घृतं स्यात् ।

अर्थ-घी-ओज और तेजको बढानेवाला, सुखको उत्पन्न करनेवाला, कान्तिजनक, पाप, अलक्ष्मी, श्रम, श्वास, खाँसी, अजीर्णसे उत्पन्न हुआ ज्वर, शूल, उदावर्त्तरोग, संग्रहणी और मदरोगका नाश करे है, पीडानाशक, पित्तनिवारक, वातविनाशक, स्वरको सुन्दर करनेवाला, तथा क्षुधा और भ्रम रोगमें सेवन करना चाहिये । नेत्रोंको हितकारी, वीर्यको बढानेवाला तथा आयु, स्मरणशक्ति और धारणाशक्तिको करनेवाला है । राजयक्ष्मा रोगका नाश करनेवाला, रूक्ष और क्षीणमनुष्यको हितकारी, वलीपलितविनाशक तथा आमदोष, भूतोन्माद, प्रमत्त, बहुतिमिर, मूत्रकृच्छ्र और अपस्मार रोगमें सब मनुष्योंको सर्वकालमें पथ्य है ।

गव्यघृतगुणाः ।

धीकान्तिस्मृतिदायकं बलकरं मेधाप्रदं पुष्टिकृद्वातश्लेष्महरं श्रमोपशमनं पित्तापहं हृद्धितम् । वह्नेर्वृद्धिकरं विपाकमधुरं वृष्यं वपुः स्थैर्य्यदं गव्यं हव्यतमं घृतं बहुगुणं भोग्यं भवेद्भाग्यतः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गायका घी-बुद्धि, कन्ति और स्मरणशक्तिदायक, बलकारक, मेधाजनक, पुष्टिकारक, वातश्लेष्महारक, श्रमनिवारक, पित्तनाशक, हृदयको हितकारी, अग्निप्रदीपक, पचनेमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, शरीरको स्थिरतादायक, हव्यतम, बहुगुणयुक्त और यह भाग्यसेही प्राप्त होता है ।

अन्यच्च ।

सर्पिर्गवां चाप्यमृतं विषघ्नं चाक्षुष्यमारोग्यकरं च वृष्यम् ।
रसायनं चेदमतीव मेध्यं स्नेहोत्तमांगं विबुधाः स्तुवन्ति ॥

अर्थ-गायका घी अमृतकी समान गुणकारी, विषविनाशक, नेत्रोंको आरोग्य करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, मेधाजनक और सर्व स्नेहोंमें उत्तम है।

माहिषघृतगुणाः।

सर्पिर्माहिषमुत्तमं धृतिकरं सौख्यप्रदं कान्तिकृद्वातश्लेष्मनिबर्हणं बलकरं वर्णप्रदाने क्षमम् । दुर्नामग्रहणीविकारशमनं मन्दानलोद्दीपनं चक्षुष्यं नवगव्यतः परमिदं हृद्यं मनोहारि च ॥ (रा. नि.)

अर्थ-भैंसका घी-उत्तम, धृतिकारक, सुखकारक, कान्तिजनक, वातश्लेष्मनिवारक, बलकारक, वर्णप्रदायक, बवासीर और संग्रहणीको हरनेवाला, मन्दाग्निको दीपन करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी नवीनगायके घीसे परम हृदयको हितकारी और मनोहारी है।

अन्यच्च ।

माहिषं तु घृतं स्वादु पित्तरक्तानिलापहम् ।
शीतलं श्लेष्मलं वृष्यं गुरु स्वादु विपच्यते ॥

अर्थ-भैंसका घी-स्वादिष्ठ, रक्तपित्तनाशक, वातविनाशक, शीतल, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी और स्वादुपाकी है।

छागीघृतगुणाः ।

आजमाज्यं करोत्यग्निं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ।
श्वासे कासे क्षये चापि हितं पाके भवेत्कटु ॥
कफार्शोराजक्ष्माणां नाशनं परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-बकरीका घी-अग्निजनक, नेत्रोंको हितकारी, बलवर्द्धक, श्वास, खाँसी और क्षय रोगमें हितकारी, पाकमें कटु तथा कफ और राजयक्ष्मारोगको दूर करे है।

मेषीघृतगुणाः।

पाके लघ्वाविकं सर्पिः सर्वरोगविषापहम् ।
वृद्धिं करोति चास्थ्नां वै वाश्मरीशर्करापहम् ॥ (हा. सं.)

अर्थ-भेडका घी-पाकमें लघु, सर्वरोगविनाशक, विषनाशक, हाड्डियोंको बढानेवाला, तथा पथरी और शर्कराको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

पाके लघ्वाविकं सर्पिर्नवं पित्तप्रकोपनम् ।
योनिदोषे कफे वामे शोफे कम्पे च तद्धितम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-भेडका घी-लघुपाकी, पित्तप्रकोपक, तथा योनिदोष, कफ, वात, सूजन और कम्पमें हितकारी है ।

हस्तिनीघृतगुणाः ।

हस्तिन्यास्तु घृतं तिक्तं लघु वै तुवरं मतम् ।
अग्निदीप्तिकरं प्रोक्तं कुष्ठक्रिमिविनाशनम् ॥
मलमूत्रस्तम्भकरं कफपित्तविनाशनम् ।
विषं रक्तविकारं च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हथिनीका घी-कडवा, हलका, कषेला, अग्निप्रदीपक, कुष्ठ और कृमिविनाशक, मलमूत्रस्तम्भक, कफ पित्तनाशक, विष और रुधिरके विकारोंको हरे है ।

अश्वीघृतगुणाः ।

वृद्धिं करोति देहाग्नेर्लघुपाके विषापहम् ।
तर्पणं नेत्ररोगघ्नं दाहनुद्वडवाघृतम् ॥

अर्थ-घोडीका घी-देह और अग्निको बढानेवाला, लघुपाकी, विषविनाशक,तृप्तिकारक, नेत्ररोगनिवारक और दाहहारक है ।

अन्यच्च ।

अश्वीघृतं तु मधुरं किञ्चिच्चाग्निप्रदीपकम् ।
तुवरं कटुकं चैव मलमूत्रावरोधकम् ।
किञ्चिच्च वातलं चोष्णं पाककाले लघु स्मृतम् ।
गुरु च कफमूर्च्छानां नाशनं परमं मतम् ।

अर्थ-घोडीका घी-मधुर, किञ्चित् अग्निप्रदीपक, कषेला, चरपरा, मलमूत्ररोधक, किञ्चित् वातकारक,गरम,लघुपाकी,भारी तथा कफ और मूर्च्छाको हरनेवाला है ।

गर्दभीघृतगुणाः।

गर्दभ्यास्तु घृतं बल्यं बुद्धिदं वामकं मतम् ।
अग्निदीप्तिकरं चोष्णवीर्य्यं पाके लघु स्मृतम् ॥
कषायं ग्लानिदं प्रोक्तं मूत्रदोषकफापहम् ॥

अर्थ-गधीका घी-बलकारक,बुद्धिदायक, वमनकारक,अग्निप्रदीपक, उष्णवीर्य्य, लघुपाकी, कषेला, ग्लानिको देनेवाला तथा मूत्रविकार और कफनाशक है ।

एकशफपशुघृतगुणाः।

मधुरं रक्तपित्तघ्नं लघु पाके च दीपनम् ।
सर्वमेकशफं सर्पिः कषायं कफनाशनम् ॥

अर्थ-एक खुरीवाले सर्वपशुओंका घी-मधुर, रक्तपित्तनाशक, लघुपाकी,दीपन, कषेला और कफनाशक है ।

उष्ट्रीघृतगुणाः।

औष्ट्रं घृतं चाग्निदीप्तिकारकं च पटु स्मृतम्।पाककाले च कटुकं विषार्शःकृमिनाशनम्॥शोथं वातं कफं चैव क्रोष्टुशीर्षं तथोदरम् । कुष्ठगुल्मोन्मादमोहमूर्च्छापस्मारजूर्तिहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-ऊंटनीका घी-अग्निप्रदीपक,नमकीन, पचनेमें चरपरा, विषविनाशक, बवासीरको हरनेवाला, कृमिनाशक तथा सूजन, वात, कफ, क्रोष्टुशीर्ष, उदररोग.कुष्ठ,गुल्म, उन्माद,मोह,मूर्च्छा,अपस्मार और ज्वरको दूर करे है।

स्त्रीघृतगुणाः।

कफेऽनिले योनिदोषे रोगेष्वन्येषु तद्धितम् ।
चक्षुष्यमाहुः स्त्रीणां च सर्पिः स्यादमृतोपमम् ॥(हा० नि०)

अर्थ-स्त्रीका घी-कफ,वात,योनिदोष और अन्य रोगोंमें हितकारी है । नेत्रोंको हितकारी और अमृतकी समान गुणकारी है ।

अन्यच्च।

स्त्रीघृतं रुचिदं नेत्र्यं पाके लघ्वग्निदीपनम् ।
वातं पित्तं कफं मेहं विषं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-स्त्रीका घी-रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, लघुपाकी, अग्निप्रदीपक तथा वात, पित्त, कफ, प्रमेह और विषविनाशक है ।

उष्ट्रीणां चापि नारीणां गर्दभीनां पयांसि च ।
घृते कार्य्येषु योज्यानि घृतं येषां न विद्यते ॥

अर्थ-जहां-ऊंटनी, स्त्री और गधीका घृत न मिलताहो तहां उनका दूधही प्रयोगमें लेना चाहिये ।

हैयंगवीनघृतगुणाः ।

मक्खन

हैयंगवीनं चक्षुष्यं रुच्यं चाग्निप्रदीपकम् ।
बल्यं वृष्यं धातुकरं विशेषाज्ज्वरनाशकम् ॥

अर्थ-हैयंगवीन-नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, बलकारक,वीर्य्यवर्द्धक,धातुकारक और विशेषकरके ज्वरनाशक है ।

दुग्धोद्भवघृतगुणाः ।

घृतन्दुग्धभवं ग्राहि शीतलं नेत्ररोगनुत् ।
निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ॥

अर्थ-दूधमेंसे निकाला हुवाघी-मलरोधक,शीतल,नेत्ररोगनाशक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वायुको दूर करे है ।

शतधौतघृतगुणाः ।

शतधौतं घृतं प्रोक्तं दाहमोहज्वरापहम् ।

अर्थ-सौबार धुलाहुवा घी-दाह, मोह और ज्वरनाशक है ।

नूतनघृतगुणाः ।

नूतनं तु घृतं तृप्तिकारकं दुर्बले हितम् ।
भोजने स्वादुदं प्रोक्तं नेत्र्यं पाण्डुरुजापहम् ॥

अर्थ-नवीन घी-तृप्तिकारक, दुर्बल मनुष्यको हितकारी,भोजनमें स्वाददायक, नेत्रोंको हितकारी, और पाण्डुरोगनाशक है ।

पुराणघृतम् ।

सर्पिः पुराणं तिमिरप्रतिश्यायामकासजित् । मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ उग्रगन्धं पुराणं स्याद्दशवर्षस्थितं घृतम् । लाक्षारससनिभं शीतं प्रपुराणमतः परम् ॥ यथायथा भवेज्जीर्णं गुणवत्स्यात्तथा परम् । (रा० व०)

अर्थ-पुराना घी-तिमिररोग, प्रतिश्याय, आम और खाँसीको दूर करेहै तथा मूर्च्छा, कुष्ठ,विष, उन्माद, ग्रहकी पीडा, और मृगीरोगनाशक है। दश वर्षका रखा हुवा और उग्र गन्धवाला तथा लाखके रंगकी समान लाल रंगका ऐसेही घीको पुराना घृत कहते हैं। दश वर्षसे अधिक रखे हुवे घीको प्रपुराना घृत कहते हैं। घी जितना २ अधिक पुराना होता है उतना २ ही अधिक गुणवान् जानना।

मतान्तरे ।

वर्षादूर्ध्वं भवेदाज्यं पुराणं तत्त्रिदोषनुत्।मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम् ॥ यथायथाऽखिलं सर्पिः पुराणमधिकं भवेत्। तथातथा गुणैःस्वैःस्वैरधिकं तदुदाहृतम्॥(भा०प्र०)

अर्थ-भावमिश्रने एक वर्ष बीतजानेपर घीको पुराना कहाहै। वह पुराना घी-त्रिदोषनाशक, तथा मूर्च्छा, कुष्ठ,विष उन्माद, अपस्मार और तिमिररोगनाशक है। घी जितने २ अधिक पुराने होते जाते हैं वैसे २ ही जो जो गुण जिस २ घीमें कहे हैं उन २ गुणोंको अधिक करते हैं।

नूतनघृतविषयाः ।

योजयेन्नवमेवाज्यं भोजने तर्पणे श्रमे।
बलक्षये पाण्डुरोगे कामलानेत्ररोगयोः ॥

अर्थ-भोजन, तर्पण, श्रम, बलक्षय, पाण्डुरोग, कामला और नेत्ररोगमें नवीनही घृत देना चाहिये।

ज्वरे विबन्धे च विषूचिकायामरोचके वा शमिते तथाग्नौ।
पानात्यये वापि मदात्यये वा शस्तं न सर्पिर्बहु मन्यते सुधीः
(हा० सं०)

अर्थ-ज्वर, विबन्ध, विषूचिका, अरोचक, मंदाग्नि, पानात्यय और मदात्ययरोगमें घी नहीं देना चाहिये।

अन्यच्च ।

शतवर्षसहस्रं वा स्थितं कौम्भमिति स्मृतम्।
एकादशशताद्यं च महाघृतमिति स्मृतम् ॥

अर्थ-सौ वर्षके पुराने अथवा एक सहस्र वर्षके पुराने घृतको कौम्भ कहते हैं और इसके उपरान्तके घृतको महाघृत कहते हैं।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे घृतवर्गः समाप्तः ॥ १७ ॥

अथ मूत्रवर्गः ।

स्रवणं मेहनं मूत्रं प्रस्रावं प्रस्रवं तथा ।

अर्थ-स्रवण, मेहन, मूत्र, प्रस्राव, प्रस्रव (गुह्यनिष्यन्द, स्रव) ।

संस्कृतभाषामें	मूत्र ।
हिन्दीभाषामें	मूत, पेशाब ।
वंगभाषामें	मुत, चोना, प्रस्राव ।
मराठीभाषामें	मूत, मूत्र ।
गुजरातीभाषामें	मुतर ।
कर्णाटकीभाषामें	मूत्र, आकलगोत ।
तैलङ्गीभाषामें	उच्चा ।
इंग्रेजीभाषामें	युरीन् ।
लैटिन्भाषामें	युरिना ।

मूत्रं गोजाविमाहिष्यं गजाश्वोष्ट्रखरोद्भवम् ।
मूत्रं मानुषजश्चान्यत्समासेन गुणाञ्छृणु ॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि-गाय, बकरी, भेड, भैंस, हाथी, घोडा,ऊंट और मनुष्य इनके मूत्रके गुण संक्षेपसे कहताहूं,तूं सुन ।

गोमूत्रगुणाः ।

तीक्ष्णं चोष्णं क्षारमेवं कषायं गौल्यं मेध्यं श्लेष्मवातं निहन्ति । भेद्यारक्तं पित्तशांतिं करोति गुल्मानाहोन्माददोषापहं च ॥ कण्डूकिलासमलशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मामवातगुदमारुतमूत्ररोधान् । कासं सकुष्ठजठरकृमिकोषजालं गोमूत्रमेकमपि पीतमहो निहन्ति ॥

अर्थ-गोमूत्र-गायका पेशाब-तीक्ष्ण, गरम, खारी,कषेला, गौल्य, मेधाजनक, कफवातनाशक, भेदक, रक्तपित्तको शान्त करनेवाला, तथा गुल्म, आनाह और उन्माददोषनाशक है । तथा किलास, मल, शूल, मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, आमवात, गुदरोग, मूत्ररोध, खाँसी, कोढ, उदररोग, और कृमिके समूहको नाश करे है ।

अन्यच्च ।

गवां मूत्रं कषायं स्यात्कटु तिक्तं लघु स्मृतम् । क्षारं चोष्णं च तीक्ष्णं च पावनं चाग्निदीपनम् ॥ भेदकं पित्तलं मेध्यं किञ्चिच्च मधुरं सरम् । लेखनं बुद्धिदं प्रोक्तं कफवातविनाशनम् ॥ कुष्ठं गुल्मं चोदरञ्च पाण्डुरोगं किलासकम् । शूलं चार्शश्च कण्डूं च श्वासं चामं ज्वरं तथा॥ आनाहवातं कासं च मलस्तम्भञ्च शोथकम् ।मुखाक्षिरोगं त्वग्रोगं कामिन्याश्चातिसारकम् ॥ मूत्ररोधं नाशयति ह्येतच्चैव गुणाधिकम् (र० नि०)

अर्थ-गायका मूत-कषेला, चरपरा, कडवा, हलका, खारी, गरम, तीक्ष्ण, पाचन. अग्निप्रदीपक,भेदक, पित्तकारक,मेधाजनक, किञ्चित् मधुर, सारक, लेखन, बुद्धिदायक तथा कफ, वात, कोढ, गुल्म, उदररोग, पाण्डुरोग, किलास,शूल, बवासीर, खुजली, श्वास, आम, ज्वर, आनाहवात, खाँसी, मलस्तम्भ, सूजन, मुखरोग, नेत्ररोग, त्वचाके रोग, स्त्रियोंका अतिसार और मूत्ररोधको दूर करेहै । यह गुणोंमें अधिक है ।

छागीमूत्रगुणाः ।

आजं मूत्रं तीक्ष्णमुष्णं कषायं योज्यं पाने शूलगुल्मार्त्तिनाशम् । कासे श्वासे कामलापाण्डुरोगे ह्यर्शोरोगे श्रेष्ठमेतद्वदन्ति (हा० सं०)

अर्थ-बकरीका मूत्र-तीक्ष्ण, गरम, कषेला तथा शूल, गुल्म, खाँसी, श्वास, कामला, पाण्डुरोग, और बवासीरको हरनेवाला है ।

आविकमूत्रगुणाः ।

सक्षारं कटुकं तीक्ष्णं मूत्रं वातघ्नमाविकम् ।
दुर्नामोदरशूलघ्नं कुष्ठमेहविशोधनम् ॥

अर्थ-भेडका मूत-क्षारयुक्त, चरपरा, तीक्ष्ण, वातनाशक तथा बवासीर, उदररोग, शूल, कुष्ठ और प्रमेहको दूर करे है ।

माहिषमूत्रगुणाः ।

क्षारं सतिक्तं कटुकं कषायं प्रभेदि वातस्य शमं करोति ।
पित्तप्रकोपं कुरुते सदा च कुष्ठार्शपाण्डूदरशूलनाशनम् ॥

अर्थ-भैंसका मूत-खारी, कडवा, चरपरा, कषेला, भेदक, वातको

शान्ति करनेवाला, पित्तको सदैव कुपित करनेवाला, तथा कुष्ठ, बवासीर, पाण्डुरोग और शूलनाशक है ।

गजमूत्रगुणाः ।

सतिक्तं लवणं भेदि वातघ्नं कफकोपनम् ।
क्षारमण्डलकुष्ठानां नाशनं गजमूत्रकम् ॥

अर्थ-हाथीका मूत-कडवा, नमकीन, वातनाशक, कफको कुपित करनेवाला, खारी और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है ।

अश्वीमूत्रगुणाः ।

छर्दिकासकफहरं कृमिकुष्ठविनाशनम् ।
दीपनं कटुतीक्ष्णोष्णं वातश्लेष्मविकारनुत् ॥ (हा. सं.)

अर्थ-घोडीका मूत-वमन, खांसी, कफ, कृमि, कोढ, वात और कफनाशक है, दीपन, चरपरा, तीक्ष्ण और गरम है ॥

गर्दभीमूत्रगुणाः ।

खरमूत्रं कटूष्णं च क्षारं तीक्ष्णं कफापहम् ।
महावातापहं भूतकम्पोन्मादहरं परम् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-गधीका मूत्र-चरपरा, गरम, खारी, तीक्ष्ण, कफनाशक तथा महावात, भूत, कम्प और उन्मादको दूर करे है ।

औष्ट्रमूत्रगुणाः ।

औष्ट्रं कफहरं रूक्षं कृमिदद्रुविनाशनम् ।
श्रेष्ठं कुष्ठोदरोन्मादशोषार्शःकृमिवातनुत् ॥

अर्थ-ऊंटनीका मूत-कफनाशक, रूखा, कृमि और दद्रुनिवारक है, श्रेष्ठ तथा कुष्ठ,उन्माद,शोष,बवासीर,कृमि और वातनाशक है।

मानुषमूत्रगुणाः ।

मानुषं क्षारकटुकं मधुरं लघु चोच्यते । चक्षूरोगहरं बल्यं दीपनं कफनाशनम् ॥ असूताया घनं मूत्रं प्रसूताया द्रवं लघु । न किंगुणविशेषः स्यात्समता पाकवीर्य्ययोः ॥

अर्थ-स्त्रीका मूत-खारी, चरपरा, मधुर,हलका, नेत्ररोगनाशक, बलकारक, दीपन और कफनाशक है । अप्रसूतस्त्रीका मूत्र गाढा होताहै, प्रसूता स्त्रीका मूत-पतला, हलका और अप्रसूताके मूतसे

कुछ विशेष गुणवाला नहीं है और पाक तथा वीर्य्यमें भी समानहीं है ।

गोजाविमहिषीणां तु स्त्रीणां मूत्रं प्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानां पुंसां मूत्रं हितं मतम् ॥

अर्थ-गौ, बकरी, भेड, भैंस इनोंमें स्त्रियोंका मूत्र उत्तम होताहै और गधा, ऊंट, हाथी, मनुष्य इनोंमें पुरुषका मूत्र उत्तम होता है ।

मूत्रविशेषगुणाः ।

सौरभेयकमूत्रन्तु घनं सान्द्रं प्रशस्यते । तच्च वृषणहीनानां किञ्चिल्लघुतरं स्मृतम् ॥ वृषमूत्रञ्च शोफघ्नं कृमिदोषविनाशनम् । कामलाग्रहणीपाण्डुनाशनश्चाग्निदीपनम्॥ अजागविगतं मूत्रं पाने शस्तं भिषग्वर । आविकं माहिषं चाश्वं तैलपाके विधीयते॥ गजमूत्रप्रलेपश्च कण्डूदद्रुविसर्पनुत् । कारभं खरमूत्रं वा तैले नस्ये विधायकम् । औष्ट्रं गोजाविनां च गजहयमहिषीमूत्रवर्गः खरोत्थं तिक्तं तीक्ष्णं लघूष्णं सलवणसुरसं पित्तलं भेदि रूक्षम् ॥ हृद्यं रुच्यं कृमिघ्नं हुतवहजननं कुष्ठमेदोविनाशं गुल्मानाहार्शशूलानिलकफविषजिच्छोफपाण्डूदरघ्नम् ॥सर्वेष्वपि च मूत्रेषु गोमूत्रं गुणतोधिकम् । अतो विशेषात्कथने मूत्रं गोमूत्रमुच्यते । प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् । शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत्॥ मानुषं विषजिन्मूत्रं विषूच्यामहरं च तत् । नस्ये चौष्ट्रं च पाने तु गवां चाव्याः प्रशस्तकम् ॥ तैलयोगे गर्दभस्य वस्त्यश्वमहिषन्तथा । दद्रुकण्डूविसर्पाणां लेपने हस्तिमूत्रकम् ॥

अर्थ-बैलका मूत-गाढा, सान्द्र और श्रेष्ठ होता है और वही बैल वृषणहीन अर्थात् बधियाका मूत-कुछेक हलका होताहै । बैलका मूत-सूजनको दूर करनेवाला, कृमिदोषनाशक तथा कामला, संग्रहणी इनको दूर करे है और अग्निप्रदीपक है । बकरीका मूत और गायका मूत पीनेमें उत्तम है, मेढेका मूत, भैंसका मूत और घोडेका मूत तैलपाकमें हितकारी है । हाथीके मूतका

लेप कण्डू, दद्रु और विसर्परोगनाशक है । ऊँटका मूत और गधेका मूत-तेलमें और नस्यमें उत्तम है, ऊँट, गाय, बकरी, भेड, हाथी, घोडा, भैंस और गधेका मूत्र यह सर्व मूत्रवर्ग कडवा, तीक्ष्ण, हलका, गरम, लवणरसान्वित, पित्तकारक, भेदक, रूखा, हृदयको हितकारी, रुचिजनक, कृमिनाशक, क्षुधाको बढानेवाला, कुष्ठ और मेदरोगनाशक तथा गुल्म, आनाह, बवासीर, शूल, वात, कफ, विष, सूजन, पाण्डु और उदररोगको दूर करे है । सर्वप्रकारके मूत्रोंमें गोमूत्र गुणोंमें अधिक है । अतएव जहां कहीं मूत्रशब्द आवे वहांपर गोमूत्र समझना चाहिये । गोमूत्र-प्लीहा, उदररोग, श्वास, खाँसी, सूजन, मलरोध, शूल, गुल्म, अफारा, कामला और पाण्डुरोगको दूर करे है । मनुष्यका मूत्र-विषविनाशक और विषूचिका रोगको नष्ट करे है, नासमें ऊंटका मूत्र उत्तम है, पानमें गोमूत्र श्रेष्ठ है । तैलयोगमें गर्दभका मूंत्र, वस्तिकर्म्ममें घोडे और भैंसका तथा दाद, खुजली और विसर्पके लेपमें हाथीका मूत्र लेना चाहिये ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे मूत्रवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ तैलवर्गः ।

तिलादिस्निग्धवस्तूनां स्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।

अर्थ-तिलादिक स्निग्धवस्तुओंके स्नेहको तैल कहते हैं (अभ्यञ्जन, म्रक्षण, तिलज, स्नेह) ।

संस्कृतभाषामें	तैल ।
हिन्दीभाषामें	तैल ।
वंगभाषामें	तैल, तेल ।
मराठीभाषामें	तेल ।
गुजरातीभाषामें	तेल ।
कर्णाटकीभाषामें	तैलं ।
तैलङ्गीभाषामें	नुने ।
इंग्रेजीभाषामें	आइल । Oil
लैटिन्भाषामें	ऑईलयम् । Oluem
फारसीभाषामें	रोगन, रोगनेकुंजद ।
अरबीभाषामें	दोहनुसिमासिग ।

तैलं वातहरं सर्वं विशेषात्तिलसम्भवम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके तेल वातनाशक हैं और विशेष करके तिलका तैल वातको हरे है।

तिलतैलगुणाः ।

कषायानुरसं स्वादु सूक्ष्ममुष्णं व्यवायि च ।
पित्तकृद्वातशमनं श्लेष्मरोगादिवर्द्धनम् ॥

अल्पं रुचिकरं मेध्यं कण्डूकुष्ठविकारनुत् । वृष्यं श्रमापहं ज्ञेयं तिलतैलं विदुर्बुधाः ॥ छिन्नभिन्ने च्युते घृष्टे भग्नाग्निदाहकेऽपि च । वाताभिष्यन्दिस्फुटने चाभ्यङ्गे तिलतैलकम् ॥ व्यालश्वसर्पभेकानां विषेभ्यङ्गावगाहने । पाने वस्तौ बलासे च तिलतैलं विधीयते ॥ तिलतैलं विधेयं स्यात्सर्वरोगनिवारणे ।(हा. सं.)

अर्थ-तिलका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ, सूक्ष्म, गरम, व्यवायि, पित्तकारक, वातनिवारक, कफादिरोगवर्द्धक, अल्परुचिकारक, मेधाजनक, खुजलीको हरनेवाला, कोढको दूर करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, श्रमनाशक, छिन्न अर्थात् खड्ग आदिके लगनेसे कटे हुएमें बरछी आदिके कटे हुएमें, गिरजानेसे जो चोट लगजाती है, उसमें घिसनेमें, पत्थर आदिके रगडनेसे छिलजानेमें, हाड आदिक टूटनेमें, अग्निसे जलजानेमें, वाताभिष्यन्दमें, फुटनेमें, भेडिया, कुत्ता, मेडक और सर्पके विषमें, मालिस, स्नान, वस्तिकर्म्म और बलासरोगमें तिलका तेल हितकारी है और सर्वरोगोंको दूर करनेके लिये तिलका तेल देना चाहिये ।

तिलतैलमलंकरोति केशान्मधुरं तिक्तकषायमुष्णतीक्ष्णम् ।
बलकृत्कफवातजं तु खर्जूव्रणकण्डूतिहरं च कान्तिदायि ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-तिलका तेल-केशोंको उत्तम करनेवाला, मधुर, कडवा, कषेला, गरम, तीक्ष्ण, बलकारक तथा कफ, वात, कृमि, खुजली, घाव, कंडू इनको दूर करनेवाला और कान्तिको देनेवाला है ।

तिलतैलं गुरु स्थैर्य्यबलवर्णकरं सरम् । वृष्यं विकाशि विशदं मधुरं रसपाकयोः॥ सूक्ष्मं कषायानुरसं तिक्तं वातकफापहम्।

वीर्य्योष्णं तु हिमं स्पर्शे बृंहणं रक्तपित्तकृत्॥ लेखनं बद्धविण्मूत्रं गर्भाशयविशोधनम्। दीपनं बुद्धिदं मेध्यं व्यवायि व्रणमेहनुत्। श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनं लघुताकरम्॥ त्वच्यं केश्यञ्च चक्षुष्यमभ्यङ्गे भोजनेऽन्यथा। छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते॥ भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धाविश्लिष्टदारिते। तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते॥ वस्तौ पानेन्नसंस्कारे नस्ये कर्णाक्षिपूरणे। सेकाभ्यङ्गावगाहेषु तिलतैलं प्रशस्यते॥ (भावमिश्रः)

अर्थ-तिलका तेल-भारी, स्थिरताकारक, बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, सारक, वृष्य, विकाशी, विशद,रस और पाकमें मधुर, सूक्ष्म, कषेला, कडवा, वातकफनाशक, उष्णवीर्य्य, स्पर्शमें शीतल, पुष्टिकारक, रक्तपित्तकारक, लेखन,मलमूत्ररोधक,गर्भाशयविशोधक, दीपन, बुद्धिदायक, मेधाजनक, व्यवायि, व्रण और प्रमेहनाशक, कान, योनि और शिरके शूलको दूर करनेवाला, लघुताकारक, त्वचाको हितकारी, केशोंको सुंदर करनेवाला नेत्रोंको हितकारी यह गुण तेलके मलनेके हैं। खानेमें यह गुण नहीं हैं और गुण इनसे उलटे हैं। छिन्न भिन्न, गिरजाना, पिसजाना, मसलजाना, घाव, पिचजाना, टूटजाना, फटजाना, बिधजाना, आगसे जलजाना, स्थानसे उतरजाना,चिरजाना, चोट लगनी, टेढा होजाना, मृग और व्याघ्रादिसे घायल होजानेपर, वस्तिकर्म, पान, अन्नसंस्कार, (तेलसे छौंकना) नासकर्म्म, कान और आंखोंमें भरना, सेक, मर्दन और अवगाहनमें तिलका तेल हितकारी है।

नास्ति तैलात्परं किञ्चिदौषधं मारुतापहम्।
तैलं संयोगसंस्कारात्सर्वरोगापहं स्मृतत्॥

अर्थ-तेलकी समान और कोई दूसरी वातनाशक औषधि नहीं है और, द्रव्योंके संयोगसे संस्कृत (पक्का) तेल सर्वरोगनाशक है।

घृताच्छ्रेष्ठतमं तैलं मर्दने न च भोजने।
घृतमब्दात्परं पक्कं हीनवीर्य्यं प्रजायते॥
तैलं पक्कमपक्कं वा चिरस्थायि गुणाधिकम्।

अर्थ-तेल-घृतसे गुणोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ है। यह मर्दन करनेमें है, भोजन करनेमें नहीं है। घी एकवर्ष बीतजानेपर पका हुवा हीनवीर्य्य होजाता है, परन्तु तेल तो पकाहुवा वा विनापका जितना जितना ज्यादे पुराना होगा उतनाही अधिकगुणवाला होता है।

न पित्तरोगे न च शोणिते च पथ्ये महावातविकारसंघे।
तिलोद्भवं तैलमुदाहरंति वाताश्रितान्हान्ति समस्तदोषान् ॥

अर्थ-तिलोंका तेल-पित्तरोग और रक्तरोगमें पथ्य नहीं है, महावातरोगके समूहमें पथ्यहै और सर्वप्रकारके वातरोगोंका नाश, करेहै।

सर्षपतैलगुणाः।

कटूष्णं सार्षपं तैलं रक्तपित्तप्रदूषणम्।
कफशुक्रानिलहरं कण्डूकृमिविनाशनम् ॥ (राज० नि०)

अर्थ-सरसोंका तेल-चरपरा, गरम, रक्तपित्तकारक तथा कफ; शुक्र, वात, खुजली और कृमिनाशक है।

अन्यच्च।

दीपनं सार्षपं तैलं कटुपाकि सरं लघु।
लेखनं स्पर्शवीर्य्योष्णं तीक्ष्णपित्तास्रदूषकम् ॥
कफमेदोऽनिलाऽर्शोघ्नं शिरःकर्णामयापहम्।
कण्डूकोष्ठकृमिश्वित्रकुष्ठदुष्टव्रणप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सरसोंका तेल-दीपन, पचनेमें चरपरा, सर, लघु, लेखन, स्पर्श और वीर्य्यमें उष्ण, तीक्ष्ण, रक्तपित्तको प्रकोपित करनेवाला तथा कफ, मेदरोग, वात, बवासीर, शिररोग, कर्णरोग, कण्डू, कोठ, कृमि, श्वित्रकुष्ठ, कुष्ठ, और दुष्ट व्रणको नष्ट करनेवाला है।

अपिच।

कटु तिक्तं तथा ग्राहि चोष्णं स्यात्कफवातनुत्।
कृमिकण्डूशोधनं स्यात्पित्तकृत्सार्षपस्नुतम् ॥
कर्णरोगे कृमिरोगे तथा वातामयेषु च।
कण्डूकुष्टामये चैव कफमेदोगदेषु च ॥

प्रशस्यं सार्षपञ्चैव रोगाणाञ्च विभावयेत् ।
वस्तिकर्म्मणि नो शस्तं पित्तदाहकरं महत् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-सरसोंका तेल-चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम, कफवातनाशक, कृमि और कण्डूनिवारक, पित्तजनक तथा कर्णरोग, कृमिरोग, वातरोग, कण्डू, कुष्ठ, कफ और मेदरोगमें हितकारी है, वस्तिकर्म्ममें उत्तम नहीं है और पित्त दाहकारक है ।

राजिकातैलगुणाः ।

श्वेतायाश्चैव रक्ताया राजिकायास्तु तैलकम् ।
केश्यं च तिक्तं कटुकं मूत्रकृच्छ्रकरं मतम् ॥
त्वग्दोषं वातदोषं च पूयं चैव विनाशयेत् ।
गुणास्त्वन्ये सर्षपानां तैलतुल्या इतीरितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लाल वा काली राईका तेल-केशोंको हितकारी, कडवा, चरपरा, मूत्रकृच्छ्रजनक तथा त्वचाके दोष, वातविकार और पूय (राध) को हरैहै । शेष गुण सरसोंके तेलकी समान जानने ।

तुवरीतैलगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णं तुवरीतैलं लघु ग्राहि कफास्रजित् ।
वह्निकृद्विषहृत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिप्रणुत् ॥
मेदोदोषापहं चापि व्रणशोथहरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तोरीका तेल-तीक्ष्ण, गरम, हलका, मलरोधक, कफनाशक रक्तविकारनिवारक, अग्निप्रदीपक, विषविनाशक तथा खुजली, कोढ, कोठ, कृमि, मेदोदोष, व्रण और सूजनको हरणकरे है ।

अतसीतैलगुणाः ।

अतसीप्रभवं तैलं घनं मधुरपिच्छिलम् ।
विपाके कटु चोष्णञ्च वातश्लेष्मनिवारणम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-अलसीका तेल-गाढा, मधुर, पिच्छिल, विपाककालमें कटु, उष्ण, वात और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

मधुरं त्वतसीतैलं पिच्छिलं चानिलापहम् ।

मदगन्धिकषायञ्च कफकासापहारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अलसीका तेल-पिच्छिल, वातविनाशक, मदगन्धियुक्त कषेला तथा कफ और खाँसीको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

उमातैलं च वातघ्नं स्वादूष्णं बलकृद्गुरु ।
कटुपाकमचक्षुष्यं त्वग्दोषकफपित्तकृत् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-अलसीका तेल-वातविनाशक,स्वादिष्ठ, बलकारी, भारी, कटुपाकी, नेत्रोंको हितकारी नहीं, तथा त्वग्दोष, कफ, और पित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

अतसीतैलमाग्नेयं स्निग्धोष्णं कफपित्तकृत्।कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गुरु ॥ मलकृद्रसतः स्वादु ग्राहि त्वग्दोषहृद्व्रणम् । वस्तौ पाने तथाभ्यङ्गे नस्ये कर्णस्य पूरणे ॥ अनुपानविधौ चापि प्रयोज्यं वातशान्तये ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अलसीका तेल-अग्निजनक, स्निग्ध, गरम, कफ पित्तकारक कटुपाकी,नेत्रोंको आहितकारी,बलकारी,वातहारी,भारी मलकारक, रसमें स्वादु, मलरोधक, त्वचाके विकार और व्रणको हरनेवाला तथा वस्तिकर्म्म,पान मर्दन, नास, कर्णपूरण और अनुपानविधिमें वातशान्ति करनेके लिये देना चाहिये ।

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कुसुम्भतैलमुष्णन्तु विपाके कटुकं गुरु ।
विदाहकं विशेषेण सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ (हा० सं०)

अर्थ-कसुमका तेल-गरम, पचनेमें चरपरा, भारी, विशेषकरके दाहकारक और सर्वदोषोंको कुपित करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

कुसुम्भतैलमम्लं स्यादुष्णं गुरु विदाहि च ।
चक्षुर्भ्यामहितं बल्यं रक्तपित्तकफप्रदम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कसूमका तेल-खट्टा, भारी, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी, बलकारी तथा रक्तपित्त और कफकारक है ।

अपिच ।

कुसुम्भतैलं बलदं क्षारं कटु विदाहकृत् । अचक्षुष्यं गुरुस्तीक्ष्णमुष्णं विट्स्तम्भकारकम् ॥ रक्तपित्तकरं चाम्लं त्रिदोषाणां च कारकम् ॥ कृमिवातहरं प्रोक्तं पूर्वाचार्य्यैर्महर्षिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-कसूमका तेल-बलवर्द्धक, खारी, चरपरा, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी, भारी, तीक्ष्ण, गरम, मलस्तम्भक, रक्तपित्तकारक, खट्टा, त्रिदोषजनक तथा कृमि और वातविनाशक है ।

गोधूमादितैलगुणाः ।

गोधूमयावनालव्रीहियवाद्यखिलधान्यजं तैलम् ।
वातकफपितशमनं कण्डूकुष्ठादिहारि चक्षुष्यम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गेहूं, ज्वार, व्रीहिधान्य और यवादिकोंका तेल-वात, कफ, पित्त निवारक, नेत्रोंको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठादिरोगनाशक है ।

एरण्डतैलगुणाः ।

एरण्डतैलं कृमिनाशनं च सर्वत्र शूलघ्नमरुत्प्रणाशनम् ।
कुष्ठापहं चापि रसायनं च पित्तप्रकोपानलशोधनं च ॥

अर्थ-एरंडका तेल-कृमिनाशक, सर्व प्रकारके शूलोंको निर्मूल करनेवाला, वातविनाशक, कुष्ठनाशक, रसायन, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निशोधक है ।

अन्यच्च ।

एरण्डतैलं तीक्ष्णोष्णं दीपनं पिच्छिलं गुरु । वृष्यं त्वच्यं वयःस्थापि मेधाकान्तिबलप्रदम् ॥ कषायानुरसं सूक्ष्मं योनिशुक्रविशोधनम् । विस्रं स्वादु रसे पाके सतिक्तं कटुकं सरम् ॥ विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् । हंति वातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥ वातशोणितविड्बन्धब्रध्नशोथामविद्रधीन् । आमवातगजेन्द्रस्य शरीरवनचारिणः ॥ एक एव निहंतायमेरण्डस्नेहकेसरी । (भा० प्र०)

अर्थ-अंडका तेल-या अंडीका तेल-तीक्ष्ण, गरम, दीपन, पिच्छिल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, त्वचाको हितकारी, अवस्थास्थापक, मेधाजनक, कान्तिकारक, बलदायक, कषेला, सूक्ष्म, योनि और शुक्रशोधक,

आमगन्धिवाला, रस और पाकमें स्वादिष्ठ, कडवा, चरपरा, कुछ कुछ दस्तावर तथा विषमज्वर, हृदयरोग, पीठ और गुह्यस्थानका, शूल, वात, उदररोग, आनाह, गुल्म, अष्ठीलिका, कमरका दर्द, वातरक्त, मलबद्ध, वर्ध्म (बद) सूजन, आम और विद्रधीरोगको नष्ट करेहै शरीररूपी वनमें विचरनेवाले आमवातरूपी मत्त हाथीके मारनेको यह एकही अंडीका तेलरूपी सिंह है ।

अन्यच्च ।

एरण्डतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्द्धनम् । वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम् ॥ हृद्बस्तिपार्श्वजानूरुत्रिकपृष्ठास्थिशूलिनाम् । आनाहाष्ठीलवातासृक्प्लीहोदावर्त्तशूलिनाम् ॥ हितं वातामयश्वासग्रन्थिब्रध्नविकारिणाम् ॥ (राजनि०)

अर्थ-अंडीका- तेल मधुर,भारी,श्लेष्मवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म, हृदयरोग और जीर्णज्वरको दूर करे है तथा हृदय, वस्ति,पार्श्व,जानु ऊरु,त्रिक,पृष्ठ और अस्थिशूलवाले मनुष्योंको एवं आनाह,अष्ठीला, वातरक्त, प्लीहा, उदावर्त्त, शूल, वातरोग, श्वास, ग्रन्थि और ब्रध्नरोगवाले मनुष्योंको हितकारी है ।

करंजतैलगुणाः ।

कारजं कटुकं पाके कटूष्णमनिलापहम् ।
कुष्ठशीर्षगदार्शोघ्नमेदशुक्रप्रमेहजित् ॥
अधोर्ध्वहरणं श्लेष्मकृमिविध्वंसनं लघु ।
मक्षिकादंशकीटादिनाशनं व्रणरोपणम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-करंजका तेल-पचनेमें चरपरा,गरम वातनाशक तथा कोढ, शीर्षरोग, बवासीर, मेद, शुक्र, प्रमेह, अध और उर्द्धवात, कृमि, माक्षिका और दंशादि कीडोंके विषको दूर करेहै हलका और व्रणको भरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

करंजतैलं तिक्तं स्यादुष्णं च व्रणपूरकम् । नेत्ररोगं विचर्चीञ्च वातं कुष्ठं व्रणं तथा ॥ कण्डूगुल्ममुदावर्त्तं योनिदोषं च नाशयेत् । अर्शोघ्नं लेपनाच्चैव नानात्वग्दोषनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-करंजका तेल-कडवा, गरम, व्रणको भरनेवाला तथा नेत्ररोग, विचर्ची, वात, कोढ, व्रण, कण्डू, गुल्म, उदावर्त्त, योनिविकार, बवासीर और लेप करनेसे नानाप्रकारके त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

इंगुदीतैलगुणाः ।

इगुद्यास्तु स्मृतं तैलं स्निग्ध शीतं च कान्तिदम् ।
मधुरं कफकृद्बल्यं चक्षुष्यं धातुवर्द्धकम् ॥
केशवृद्धिकरं चैव पित्तनाशकरं मतम् (नि० र०)

अर्थ-हिंगोटका तेल-स्निग्ध, शीतल, कान्तिजनक, मधुर, कफकारक, बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्धक, केशवर्द्धक और पित्तनाशक है ।

निम्बतैलगुणाः ।

निम्बतैलं किञ्चिदुष्णं तिक्तं कृमिकफापहम् ।
कुष्ठ व्रणं वातपित्तं पित्तं चार्शं ज्वरं तथा ॥
शोफोदरं रक्तरुजं कफ पित्तज्वराञ्जयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ- नीमका तेल-किंचित् गरम, कडवा तथा कृमि, कफ, कोढ, घाव, वातपित्त, पित्त, बवासीर, ज्वर, सूजन, उदररोग, रुधिररोग, कफ और पित्तज्वरनाशक है ।

शिग्रुतैलगुणाः ।

शिग्रुतैलं च कटुकं चोष्णमुक्तं च पिच्छिलम् ।
त्वग्दोषं च व्रणं वातं कफ कण्डूञ्च नाशयेत् ॥
शोथनाशकरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-सैंजिनेका तेल-चरपरा, गरम, पिच्छिल, तथा त्वचाके दोष, व्रण, वात, कफ, कण्डू और सूजनको दूर करे है।

ज्योतिष्मतीतैलगुणाः ।

ज्योतिष्मत्याः स्मृतं तैलं वामकं तिक्तकं मतम्। अत्युष्णं सारकं तीक्ष्णं पित्तलं स्मृतिबुद्धिदम् ॥ मेधाकरं लेखनं च रसायनकरं मतम् । अग्निदीप्तिकरं वातं त्रिदोषं च कफं जयेत् ॥
(नि० र०)

अर्थ-मालकांगुनीका तेल-वमनकारक, कडवा, अत्यन्त गरम, सारक, तीक्ष्ण, पित्तजनक, स्मरणशक्ति और बुद्धिदायक, मेधाकारक, लेखन, रसायन, अग्निप्रदीपक, वात, त्रिदोष और कफनाशक है ।

विभीतकतैलगुणाः ।

अक्षतैलं स्वादु शीतं वृष्यं केश्यं गुरु स्मृतम् ।
कान्तिप्रदं कफकरं वातं पित्तं च नाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-बहेडेका तेल-स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, केशोंको हितकारी, भारी, कान्तिजनक, कफकारी तथा वात और पित्तहारी है ।

हरीतकीतैलगुणाः ।

हरीतक्याः स्मृतं तैलं शीतलं तुवरं मधु ।
कटु पथ्यं सर्वरोगनानात्वग्दोषनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हरडका तेल-शीतल, कषेला, मधुर, चरपरा, पथ्य तथा सर्वप्रकारके रोग और नानाप्रकारके त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

कोशाम्रतैलगुणाः ।

कोशाम्रतैलं तिक्तं स्यादम्लं बल्यं च माधुरम् ।
पथ्यं रुचिकरं चैव पाचकं च सरं मतम् ॥
कृमिकुष्ठव्रणानां च नाशकं परिकीर्त्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-कोशमकी गुठलीका तेल-कडवा, खट्टा, बलकारक, मधुर, पथ्य, रुचिकारक, पाचक, सारक तथा कृमि, कुष्ठ और व्रणको दूर करे है ।

कर्पूरतैलगुणाः ।

शीतांशुतैलमाक्षेपशमनं वायुनाशनम् । स्वेदनं शूलहृच्चोग्रं
ज्वरघ्नं कफनुत्परम् ॥ आमवाते तथाध्माने ज्वरे च शिरसो
गदे । दन्तरोगे च भग्ने च देयं परियुज्यते ॥ (आ० सं०)

अर्थ-कपूरका तेल-आक्षेपको शान्ति करनेवाला, वातविनाशक, स्वेद अर्थात् पसीनेको लानेवाला, शूलनाशक, उग्रज्वर और कफको हरनेवाला है तथा आमवात, आध्मान, ज्वर, शिरोरोग, दन्तरोग और भग्नरोगमें कपूरका तेल देना चाहिये ।

अन्यच्च ।

कर्पूरतैलं कटुकं चोष्णं पित्तकरं मतम् ।
दंतदार्ढ्यप्रदं चैव कफवातविनाशकम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कपूरका तेल-चरपरा, गरम, पित्तकारक, दाँतोंको दृढ करनेवाला और कफ वातविनाशक है ।

त्रपुषादितैलगुणाः ।

त्रपुसैर्वारुकूष्माण्डचारबीजादितैलकम् ।
केश्यं कफप्रदं शीतं मधुरं गुरु च स्मृतम् ॥
वांतिकृद्वातपित्तस्य नाशनं परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-खीरे, ककडी, पेठा और चिरोंजी आदिका तेल-केशोंको हितकारी, कफकारी, शीतल, मधुर, भारी वमनकारक और वात पित्तनाशक है ।

भल्लातकतैलगुणाः ।

भल्लाततैलं कटुकं स्वादु चोष्णं च पित्तलम् । तिक्तं तीक्ष्णं च
तुवरमूर्ध्वाधोमार्गशोधकम् ॥ त्रिदोषं च क्रमीन्मेहं मेदं शुक्रं
कफन्तथा । अर्शं वातं च कुष्ठञ्च कण्डूं चैव विनाशयेत् ॥
गुणास्तुम्बरकस्यापि तैलस्यैते बुधैः स्मृताः ।

अर्थ-भिलावेका तेल-चरपरा, स्वादिष्ठ, गरम, पित्तकारक, कडवा, तीक्ष्ण, कषेला, अधोर्ध्व दोषको शोधनेवाला तथा त्रिदोष कृमि, प्रमेह, शुक्र, कफ, बवासीर, वात, कोढ और खुजलीको दूर करेहै तुम्बुरुके तेलके गुणभी इसीकी समान जानने ।

त्रिवृत्तैलगुणाः ।

त्रिवृत्तैलं तु शीतं स्याद्वातपित्तकफापहम् ।

अर्थ-निसोथके बीजोंका तेल-शीतल और वात-पित्त-कफ-नाशक है ।

देवदारुतैलगुणाः।

तैलन्तु देवदारोस्तु कटु तिक्तं कषायकम् ।
व्रणशुद्धिकरं वातकृमिकुष्ठविनाशकम् ॥

अर्थ-देवदारुका तेल-चरपरा, कडवा, कषेला, व्रणशोधक तथा वात, कृमि और कुष्ठनाशक है ।

रालतैलगुणाः ।

सर्जतैलं तु विस्फोटकुष्ठदद्रुविनाशकम् ।
क्रमीन्कफं च वातं च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-रालका तेल-विस्फोट, कुष्ठ, दद्रु, कृमि, कफ और वात-विनाशक है ।

आम्रतैलगुणाः ।

आम्रबीजभवं तैलं सुगंधि मधुरं मतम् ।
रूक्षं किञ्चित्पित्तलं च तिक्तं च विशदं मतम् ॥
कफवातहरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-सुगंधि, मधुर, रूखा, किंचित् पित्तकारक, कडवा, विशद और कफवातनाशक है ।

मधूकतैलगुणाः ।

मधूकतैलं मधुरं पिच्छिलं तुवरं मतम् ।
कफपित्तज्वरं चैव दाहं पित्तं च नाशयेत् ॥
पलाशपाटलायास्तु तैलस्यैते गुणा मताः ।

अर्थ-महुवेका तेल-मधुर, पिच्छिल, कषेला तथा कफ, पित्त, ज्वर, दाह और पित्तको दूर करेहै । पलाश और पाडलके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

वन्दाकतैलगुणाः ।

वन्दाकतैलं मधुरं गुरुः कटुरसं मतम् ।

अर्थ-वंदाका तेल-मधुर, भारी और कटुरसान्वित है ।

अंकोलतैलगुणाः ।

अंकोलतैलं वातघ्नमभ्यङ्गात्त्वग्रुजापहम् ।
कफनाशकरं प्रोक्तं पूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः ॥

अर्थ-अंकोलका तेल-वातनाशक इसको मलनेसे त्वचाके रोग दूर होते हैं और कफनाशक है ।

दन्तीतैलगुणाः ।

दन्त्यास्तैलं स्वादुकेश्यं लेपनात्सर्वकुष्ठहम् ।
वातहं प्राशनेनैव पित्तस्यास्रस्य नाशकम् ।

अर्थ-दंतीका तेल-स्वादिष्ठ, केशोंको हितकारी, लेप करनेसे सर्वप्रकारके कुष्ठोंको नष्टकरे है, पीनेसे वातको हरे और रक्तपितनाशक है ।

पुत्रजीवकतैलगुणाः ।

पुत्रजीविभवं तैलं कफवातविनाशकम् ।

अर्थ-जियापोताका तेल-कफवातविनाशक है ।

त्रायमाणतैलगुणाः ।

त्रायमाणभवं तैलं सर्वव्याधिविनाशकृत् ।

अर्थ-त्रायमाणका तैल-सर्वरोगनाशक है ।

शंखिनीतैलगुणाः ।

शंखिनीसम्भवं तैलं तीक्ष्णं तिक्तं कटु स्मृतम् । रक्तपित्तकरं चैव सारकं च मतं लघु ॥ कृमिकुष्ठार्शमेहघ्नं कफवातहरं परम् । शुक्रमेदहरं प्रोक्तं पूर्ववैद्योत्तमैः पुरा (इ० र०)

अर्थ-शंखिनीका तैल-तीक्ष्ण, कडवा, चरपरा, रक्तपित्तकारक सारक, हलका तथा कृमि, कोढ, बवासीर, प्रमेह, कफवात, शुक्र और मेदनाशक है ।

पुन्नागतैलगुणाः ।

पुन्नागतैलं कटुकं सरं तिक्तं च लेखनम् ।
पित्तलं वातरक्तघ्नं दाहनाशकरं मतम् ॥

अर्थ-पुन्नागका तैल-चरपरा, सारक, कडवा, लेखन, पित्तकारक वातरक्तनाशक और दाहको दूर करे है ।

कपित्थतैलगुणाः ।

कपित्थतैलं तुवरं स्वादु चाखुविषापहम् ।

अर्थ-कैथके बीजोंका तैल-कषैला, स्वादिष्ठ और मूसेके विषको हरे है ।

खसखसतैलगुणाः ।

खसबीजस्य तैलन्तु बल्यं वृष्यं गुरु स्मृतम् ।
स्वादु शीतं कफकरं वातनाशकरं मतम् ॥

अर्थ-खसखसका तैल-बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्वादिष्ठ, शीतल, कफकारक और वातविनाशक है ।

नारिकेलतैलगुणाः ।

नारिकेलभवं तैलं रसे पाके मधु स्मृतम् ।
बल्यं केश्यं वातहरमुष्णं नेत्ररुजापहम् ॥

अर्थ-नारियलका तैल-रस और पाकमें मधुर, बलकारक, केशोंको हितकारी; वातनाशक, गरम और नेत्ररोगनाशक है ।

पीलुतैलगुणाः ।

पीलुतैलं सरं चोष्णं कुष्ठवातक्षनापहम् । शोथं पित्तरुजं कण्डू

गण्डमालां विनाशयेत् ॥ अंत्रवृद्धिं रक्तदोषं नाशयेदिति च स्मृतम् । अम्लवेतसतैलस्याप्येत एव गुणा मताः ॥

अर्थ-पीलुका तेल-सारक, गरम, तथा कोढ, वात, क्षत, सूजन, पित्तरोग, कण्डू, गंडमाला, अंत्रवृद्धि और रुधिरके दोषोंको दूर करेहै अमलबेतके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

शिंशपादितैलगुणाः ।

शिंशपागरुगण्डीरनिर्गुण्डीसरलादिजम् ।
तैलं तु तुवरं तिक्तं कटुकं वातरक्तजित् ॥
विषकण्डूवातकफकुष्ठदुष्टव्रणाञ्जयेत् ।

अर्थ-सीसों, अगर, गण्डीर, निर्गुण्डी और सरलादिकका तेल-कषेला, कडवा, चरपरा तथा वातरक्त, विष, खुजली, वात, कफ कुष्ठ और दुष्टव्रणको नष्ट करे है ।

पृथ्वीकादितैलगुणाः ।

पृथ्वीकानीपजीमूतहस्तिकर्णार्कमूलजम् । काम्पिल्लकं च तैलन्तु तीक्ष्णं पाके कटु स्मृतम्॥ सरमुष्णं च तिक्तं च लघु कुष्ठकफापहम्। मेहमूर्च्छामदकृमिनाशनं परमं मतम्॥(रत्नाकर)

अर्थ-पृथ्वीका (हिंगुपत्री) जीमूत (देवदाली) मूली, हस्तिर्ण, पलाश, नीप (कदम्ब) और कवीलेका तेल-तीक्ष्ण, पचनेमें चरपरा सारक, गरम, कडवा, हलका तथा कोढ, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा, मद और कृमिको दूर करे है ।

तैलं स्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलं मतम् ।
अतः शेषस्य तैलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिवत् ॥

अर्थ-वाग्भटने सर्व तेल स्वयोनि अर्थात् जिस २ औषधीसे जो २ तेल उत्पन्न होताहै वह उसीके समान गुणकरे है ऐसा कहा है इसीसे जो तेल इस ग्रन्थमें नहीं कहे गये उनके गुण अपनी २ योनिके समान जानने ।

अवगाहनयुक्ततैलगुणाः ।

स्नेहोऽवगाहने युक्तः शरीरे बलमाहरेत् ।
शिरामुखै रोमकूपैर्धमनीभिश्च तर्पयेत् ॥

अर्थ-प्रथम तेलको मलकर पीछे जलसे स्नानकरे इसप्रकार करनेसे शरीरमें बल बढता है तथा शिरामुख, रोमकूप और धमनी नाडियोंके द्वारा तृप्तिकारक है ।

शिरसि तैलमर्द्दनगुणाः ।

नित्यं स्नेहार्द्रशिरसः शिरःशूलं न जायते । न खालित्यं न पालित्यं न केशाः प्रपतन्ति च ॥ दृढमूलाश्च कृष्णाश्च भवन्ति च घनायताः । इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग्भवति लोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन मस्तकमें तेल मलतेहैं, उनके शिरशूल नहीं उत्पन्न होताहै तथा केशोंकी अल्पता, पक्वता और केश नहीं पतन होते हैं और दृढ मूलसहित, काले और सघन केश होजातेहैं तथा इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होतीहै ।

कर्णतैलपूरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यं न मन्या न हनुग्रहाः ।
नोच्चैःश्रुतिन बाधिर्य्यं न कर्णे वातजा रुजः॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-जो मनुष्य कर्णमें नित्यप्रति तेल डालतेहैं-उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, कानसम्बन्धी ऊंचा सुनना आदि दुःसाध्यरोग, बधिरता और कानमें वातादिरोग उत्पन्न नहीं होते हैं ।

मर्दने तैल गुणाः ।

"घृतादष्टगुणं गुरु"

अर्थ-शरीरमें मलनेसे तेलमें घीकी अपेक्षा आठ गुण अधिक हैं ।

तैलं न सेवयेद्धीमान् यस्यकस्य च यद्भवेत् ।
विषसात्म्यगुणत्वाच्च योगे तन्न प्रयोजयेत् ॥

अर्थ-बुद्धिमान् पुरुषको चाहिये कि, जिस तिसके दिये हुये तेलको सेवन नहीं करे और उसमें विषकी समानता होनेसे विना विचारे किसी योगमें भी प्रयोग नहीं करे ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तैलवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ अर्कवर्गः ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि केवलार्कगुणं प्रिये ।

अर्थ-इसके उपरान्त केवल अर्कोंके गुण कहता हूं ।

हरीतक्यर्कगुणाः।

हरीतक्याः शूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः।

अर्थ-हरडका अर्क-शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और आनाह रोगनाशक है।

विभीतकार्कगुणाः।

विभीतकस्य तृट्छर्दिकफकासविनाशनः।

अर्थ-बहेडेका अर्क-तृषा, वमन, कफ और खाँसीको हरे है।

आमलक्यर्कगुणाः।

आमलक्यास्त्रिदोषास्रपित्तमोहं विनाशयेत्।

अर्थ-आमलेका अर्क-त्रिदोष, रक्तपित्त और मोहनाशक है।

नागरार्कगुणाः।

शुण्ठ्या विबन्धामवातशूलश्वासबलासहृत्।

अर्थ-सोंठका अर्क-मलबद्धता, आमवात, शूल, श्वास और कफनाशक है।

आर्द्रकार्कगुणाः।

आर्द्रकस्य ज्वरं दाहं हरेद्रुच्यग्निदीप्तिकृत्।

अर्थ-अदरखका अर्क-ज्वर और दाहको हरे है, रुचिकारक अग्निप्रदीपक है।

पिप्पल्यर्कगुणाः।

पिप्पल्याः श्वासकासामवातार्शोज्वरशूलहृत्।

अर्थ-पीपलका अर्क-श्वास, खाँसी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूलको नष्ट करे है।

मरीचार्कगुणाः।

मरीचकः श्वासकृमीन्हरेत्सर्वान्गदानपि।

अर्थ-कालीमिर्चका अर्क-श्वास, कृमि और अन्यान्य सर्व रोगोंको नाश करे है।

पिप्पलीमूलार्कगुणाः।

ग्रन्थिकस्य प्लीहगुल्मकफवातहरः परः।

अर्थ-पीपरामूलका अर्क-प्लीहा, गुल्म, कफ और वातविनाशक है।

चव्यार्कगुणाः।

चव्यार्कोऽत्यन्तरुचिकृद्विशेषाद्गुदजापहः।

अर्थ-चव्यका अर्क-अत्यन्तरुचिकारक और विशेषकरके गुदारोगनाशक है।

गजपिपल्यर्कगुणाः ।

अर्कस्तु गजपिप्पल्या वातश्लेष्माग्निमान्द्यनुत् ।

अर्थ-गजपीपलका अर्क-वात, कफ और मन्दाग्निनाशक है ।

चित्रकार्कगुणाः ।

चित्रकस्याग्निकृत्कासग्रहणीकफशोषहा ।

अर्थ-चीतेका अर्क-अग्निजनक तथा खाँसी, संग्रहणी, कफ और शोषको हरे है ।

यमान्यर्कगुणाः ।

यमान्याः पाचनो रुच्यो दीपनः शुक्रशूलहृत् ।

अर्थ-अजवायनका अर्क-पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्र और शूलनाशक है ।

अजमोदार्कगुणाः ।

अजमोदोद्भवो वातकफहा वस्तिशोधनः ।

अर्थ-अजमोदका अर्क-वात-कफनाशक और वस्तिशोधक है ।

पारसीकयमान्यर्कगुणाः ।

पारसीकयमान्यास्तु ग्राही पाचकमादकः ।

अर्थ-खुरासानी अजवायनका अर्क-मलरोधक, पाचक और मदकारक है ।

जीरकार्कगुणाः ।

जीरकस्य तु संग्राही गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

अर्थ-जीरेका अर्क-ग्राही और गर्भाशयशोधक है ।

कृष्णजीरकार्कगुणाः ।

कृष्णजीरस्य चक्षुष्यो गुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ।

अर्थ-कालजीरेका अर्क नेत्रोंको हितकारी तथा गुल्म, वमन और अतिसारको दूर करे है ।

कारवीजीरकार्कगुणाः ।

कारव्या बलकृच्चार्को ज्वरघ्नः पाचनः सरः ।

अर्थ-कलोंजीका अर्क बलकारक, ज्वरनाशक, पाचक और सारक है ।

धान्यकार्कगुणाः ।

धान्यकस्य तृषादाहवमिश्वासत्रिदोषजित् ।

अर्थ-धनियेका अर्क-तृषा, दाह, वमन, श्वास और त्रिदोषनाशक है ।

शतपुष्पाक गुणाः ।

मिश्या ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ।

अर्थ-सौंफका अर्क-ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगनाशक है ।

मिश्रेयार्कगुणाः ।

मिश्रेयाया वह्निमान्द्ययोनिशूलकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-सोयेका अर्क-मन्दाग्नि, योनिशूल और कृमिनाशक है ।

ज्वालामरिचार्कगुणाः ।

ज्वालामरीचकस्यापस्मारभूतत्रिदोषनुत् ।

अर्थ-लालमिर्चका अर्क-अपस्मार, भूत व त्रिदोषनाशक है ।

मेथिकार्कगुणाः ।

मेथिकायाः श्लेष्मवातज्वरामकफनाशनः ।

अर्थ-मेथीका अर्क-श्लेष्म, वात, ज्वर, आम और कफनाशक है ।

वनमेथिकार्कगुणाः ।

वनमेथ्याः सर्वरोगान्हरेत्कुञ्जरवाजिनाम् ।

अर्थ-वनमेथीका अर्क-हाथी और घोडोंके सर्व रोगोंको हरे है ।

चन्द्रसूरार्कगुणाः ।

चन्द्रसूरस्य हिक्कासृग्वातहृत्पुष्टिवर्द्धनः ।

अर्थ-हालोका अर्क-हुचकी, रुधिरविकार और वातनाशक है तथा पुष्टिवर्द्धक है ।

हिंग्वर्कगुणाः ।

हिङ्गुनः पाचनो रुच्यः कृमिशूलोदरापहः ।

अर्थ-हींगका अर्क-पाचन, रुचिकारक तथा कृमि, शूल और उदररोगनिवारक है ।

वचार्कगुणाः ।

वचाया वह्निवमिकृद्विबन्धाध्मानशूलहृत् ।

अर्थ-वचाका अर्क-अग्निजनक, वमनकारक तथा विबंध, आध्मान और शूलको हरे है ।

पारसीकवचार्कगुणाः ।

पारसीकवचायास्तु भूतोन्मादबलं हरेत् ।

अर्थ-खुरासानी वचका अर्क-भूतोन्माद और बलनाशक है ।

कुलिञ्जार्क गुणाः ।

कुलिञ्जनस्य स्वरकृद्धृत्कण्ठमुखशोधनः ।

अर्थ-कुलिंजनका अर्क-स्वरको शुद्ध करनेवाला तथा कण्ठ और मुखशोधक है ।

स्थूलग्रन्थिवचार्कगुणाः ।

स्थूलग्रन्थिवचस्यार्को विशेषात्कफकासहृत् ।

अर्थ-स्थूलग्रन्थि वचका अर्क-विशेष करके कफनाशक है ।

द्वीपान्तरवचार्कगुणः ।

द्वीपान्तरवचायास्तु हरेच्छूलं फिरङ्गकम् ।

अर्थ-चोपचीनीका अर्क-शूल और फिरंगरोगनाशक है ।

हपुषार्कगुणाः ।

हपुषाया हरेत्प्लीहं विषमोहञ्च दारुणम् ।

अर्थ-हाऊबेरका-अर्क-प्लीहा, विष और दारुणमूर्च्छाको हरेहै ।

क्षुद्रवपुषार्कगुणाः ।

वपुषायाः समीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलनुत् ।

अर्थ-छोटेहाऊबेरका अर्क-वात, बवासीर, संग्रहणी गुल्म और शूलनाशक है ।

विडङ्गार्कगुणाः ।

विफङ्गस्योदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ।

अर्थ-वायविडंगका अर्क-उदररोग, कफ, कृमि, वात और विबंध नाशक है ।

तुम्बुरोरर्कगुणाः ।

तुम्बुरोर्गुरुताश्वासप्लीहागुल्मकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-तुम्बुरुका अर्क-शरीरका भारीपन, श्वास, प्लीहा, गुल्म और कृमिको दूर करे है ।

वंशलोचनार्कगुणाः ।

वंशलोचनजस्तृष्णाक्षयश्वासज्वरान्हरेत् ।

अर्थ-वंशलोचनका अर्क-तृष्णा, क्षय, श्वास और ज्वरको हरे है ।

समुद्रफेनार्कगुणाः ।

समुद्रफेनजः शीतो रेचकः कफहृत्परः ।

अर्थ-समुद्रफेनका अर्क-शीतल, दस्तावर और कफनाशक है ।

जीवकार्कगुणाः ।

जीवकोत्थः शुक्रकफबलकृच्छीतलः समः ।

अर्थ-जीवकका अर्क-शुक्र,कफ और बलकारक और समशीतलहै ।

ऋषभकार्कगुणाः ।

आर्षभः पित्तदाहास्रकासवातक्षयापहः ।

अर्थ-ऋषभकका अर्क-पित्त, दाह, रुधिरविकार, खाँसी, वात और क्षयको क्षय करै है ।

मेदार्कगुणाः ।

सुनामेदोद्भवार्कस्तु दृश्यः स्तन्यः कफावहः ।

अर्थ-मेदका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, स्तनोंमें दूध करनेवाला और कफकारी है ।

महामेदार्कगुणाः ।

महामेदोद्भवः शीतो रक्तवातज्वरप्रणुत् ।

अर्थ-महामेदाका अर्क-शीतल तथा वात,रक्त और ज्वरनाशकहै ।

काकोल्यर्कगुणाः ।

काकोल्याः शुक्रलः शीतो पित्तशोषज्वरापहः ।

अर्थ-काकोलीका अर्क-शुक्रजनक, शीतल तथा पित्त, शोष और ज्वरनाशक है ।

क्षीरकाकोल्यर्कगुणाः ।

क्षीरकाकोलिकाजातो बृंहणो दाहवातहा ।

अर्थ-क्षीरकाकोलीका अर्क-पुष्टिकारक तथा दाह और वातविनाशक है ।

ऋद्ध्यर्कगुणाः ।

ऋद्ध्या बल्यस्त्रिदोषघ्नो रक्तपित्तविनाशकः ।

अर्थ-ऋद्धिका अर्क-बलकारी, त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तनाशक है ।

वृद्ध्यर्कगुणाः ।

वृद्ध्या गर्भगतः शीतः क्षतकासक्षयापहः ।

अर्थ-वृद्धिका अर्क-शीतल तथा क्षत, खाँसी और क्षयरोगनाशक है ।

मधुकार्कगुणाः ।

मधुयष्ट्याः केशकरः स्वर्य्यः पित्तानिलास्रजित् ।

अर्थ-मुलेठीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला तथा पित्त, वात और रुधिरके विकारोंको हरैहै ।

जलमधुयष्ट्यर्कगुणाः ।

जलयष्ट्या विषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः ।

अर्थ-जलमुलेठीका अर्क-विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षयरोगनाशक है ।

काम्पिल्लार्कगुणाः ।

काम्पिल्लस्य विरेकी स्यान्मेहनस्य विकारनुत् ।

अर्थ-कबीलेका अर्क-विरेचक और मूत्रविकारनिवारक है ।

आरग्वधार्कगुणाः ।

आरग्वधस्य पित्तास्रवातोदावर्त्तशूलहृत् ।
कण्डूमेहश्वासकासकृमिकुष्ठज्वरापहः ॥

अर्थ-अमलतासका अर्क-रक्तपित्त, वात, उदावर्त्त, शूल, कण्डू, प्रमेह, श्वास, खाँसी, कृमि, कोढ और ज्वरनाशक है ।

भूनिम्बार्कगुणाः ।

भूनिम्बस्य तृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-चिरायतका अर्क-तृषा, कोढ,ज्वर,व्रण और कृमिनाशकहै।

वत्सार्कगुणाः ।

भद्रमानस्तु पित्तास्रकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।

अर्थ-इन्द्रजौकाअर्क-रक्तपित्त,कृमि,विसर्प औरकुष्ठको नष्ट करेहै ।

मदनफलार्कगुणाः ।

मदनोत्थश्छर्दनेन चतुर्थज्वरकादिहृत् ।

अर्थ-मैनफलका अर्क-वमनकारक और चातुर्थिक (चौथिया) ज्वरनिवारक है ।

रास्नार्कगुणाः ।

रास्नोद्भवः समीरास्रवातशूलोदरापहः ।

अर्थ-रास्नाका अर्क-वातरक्त,वातशूल और उदररोगनाशक है।

नागभिन्नार्कगुणाः ।

नागभिन्नोद्भवा भोगीलूतावाखुविकारहृत् ।

अर्थ-नाकुलीका अर्क-सर्प, मकडी और मूसे आदिके विषको हरेहै ।

माचिकार्कगुणाः ।

माचिकाजस्तु पित्तास्रपक्वातीसारहा लघुः ।

अर्थ-मोईयेका अर्क-हलका,रक्तपित्त और पक्वातिसारनाशकहै।

तेजस्विन्यर्कगुणाः ।

तेजस्विन्याः श्वासकासकफहृद्वह्निदीपनः ।

अर्थ-तेजबलका अर्क-श्वास, खाँसी और कफनाशक है तथा अग्निप्रदीपक है ।

ज्योतिष्मत्यर्कगुणाः ।

ज्योतिष्मत्या वान्तिकरो वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदः ।

अर्थ-मालकांगुनीका अर्क-वमनकारक तथा अग्नि, बुद्धि और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

कुष्ठार्कगुणाः ।

कुष्ठस्य हन्ति वातास्रकासकुष्ठमरुत्कफान् ।

अर्थ-कूठका अर्क-वातरक्त, खाँसी, कोढ, वात और कफनाशक है।

पौष्करार्कगुणाः ।

पौष्करस्यारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ।

अर्थ-पोहकरमूलका अर्क-अरुचि, श्वास और विशेषकरके पसवाडेकी पीडाको दूर करे है ।

क्षीरिण्यर्कगुणाः ।

हेमाह्वाया रेकवान्तिकरः कण्डूविनाशनः ।

अर्थ-स्वर्णक्षीरीका अर्क-विरेचक, वमनकारक और कण्डूनाशक है ।

शृङ्ग्यर्कगुणाः ।

शृङ्गी हरेदूर्ध्ववातहिक्कातृष्णाक्षयज्वरान् ।

अर्थ-काकडाशिंगीका अर्क-ऊर्ध्ववात, हिचकी, तृषा, क्षय और ज्वरनाशक है ।

कट्फलार्कगुणाः ।

कट्फलोत्थः श्वासकासप्रमेहार्शोऽरुचिं हरेत् ।

अर्थ-कायफलका अर्क-श्वास, खाँसी, प्रमेह, बवासीर और अरुचिको दूर करे है ।

भार्ग्यर्कगुणाः ।

भार्ग्या हरेत्कफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारंगीका अर्क-कफ, श्वास, पीनस, ज्वर और वातविनाशक है ।

पाषाणभेद्यर्कगुणाः।

पाषाणभेदजो योनिरोगहृच्छ्वासगुल्महा।

अर्थ-पाषाणभेदका अर्क-योनिरोग, श्वास और गुल्मनाशक है।

धातक्यर्कगुणाः।

धातकीजस्तृषासारविषकीटविसर्पजित्।

अर्थ-धायके फूलोंका अर्क-तृषा, अतिसार, विष, कृमि और विसर्परोगनाशक है।

समङ्गार्कगुणाः।

माञ्जिष्ठजो विषश्लेष्मरक्तातीसारकुष्ठहा।

अर्थ-मजीठका अर्क-विष, श्लेष्म, रक्तातिसार और कुष्ठनाशक है।

कुसुम्भार्कगुणाः।

कुसुम्भजोवर्णकरो रक्तपित्तकफापहः।

अर्थ-कसूमका अर्क-वर्णको सुन्दर करनेवाला तथा रक्तपित्त और कफनाशक है।

लाक्षार्कगुणाः।

लाक्षाजः कृमिवीसर्प व्रणोरःक्षतकुष्ठहा।

अर्थ-लाखका अर्क-कृमि, विसर्प, व्रण, उरःक्षत और कुष्ठनाशक है।

हरिद्रार्कगुणाः।

हरिद्राया मेहशोथत्वग्दोषव्रणपाण्डुनुत्।

अर्थ-हलदीका अर्क-प्रमेह, सूजन, त्वचाके दोष, व्रण और पाण्डुरोगनाशक है।

आरण्यहरिद्रार्कगुणाः।

आरण्यकहरिद्रायाः कुष्ठवातास्रनाशनः।

अर्थ-वनहलदीका अर्क-कोढ, वात और रक्तविकार विनाशक है।

कर्पूरहरिद्रार्कगुणाः।

कर्पूरकहरिद्रायाः सर्वकण्डूविनाशनः।

अर्थ-कपूरहलदीका अर्क-सर्वप्रकारके कण्डूनाशक है।

दारुहरिद्रार्कगुणाः।

दार्व्या विशेषतो लेपान्नेत्रकर्णस्य रोगनुत्।

अर्थ-दारुहलदीका अर्क-विशेष करके लेप करनेसे नेत्ररोग और कर्णरोगको हरेहै।

रसाञ्जनार्कगुणाः।

रसाञ्जनोद्भवो नेत्रविकारव्रणदोषनुत्।

अर्थ-रसाञ्जन अर्थात् रसौतका अर्क-नेत्रविकार और व्रणदोष-निवारक है ।

अवल्गुजार्कगुणाः ।

बाकुच्याः कृमिविष्टम्भपाण्डुशोफकफापहः ।

अर्थ-बापचीका अर्क-कृमि,विष्टम्भ,पाण्डु,सूजन और कफनाशक है ।

चक्रमर्दार्कगुणाः ।

प्रपुन्नाटस्य हन्त्येव कण्डूदद्रुविषानिलान् ।

अर्थ-चकवडका अर्क-खुजली,दाद विष और वातविनाशक है ।

अतिविषार्कगुणाः ।

विषजो दीप्तिकार्य्यर्कः कफपित्तातिसारहा ।

अर्थ-अतीसका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा कफ, पित्त और अतिसारनाशक है ।

लोध्रार्कगुणाः ।

लोध्रजः शीतलो ग्राही चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ।

अर्थ-लोधका अर्क-शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ और पित्तनाशक है ।

बृहत्पत्रार्कगुणाः ।

बृहत्पत्रोद्भवो नेत्र्यो ज्वरातीसारशोथहृत् ।

अर्थ-पठानीलोधका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, ज्वर, अतिसार और सूजनको हरे है ।

भल्लातकार्कगुणाः ।

भल्लातकोद्भवो हन्याज्ज्वरोदरकृमिव्रणान् ।

अर्थ-भिलावेका अर्क-ज्वर, उदररोग, कृमि और व्रणनाशक है ।

गुडूच्यर्कगुणाः ।

गुडूच्या दीपनः श्वासकासपाण्डुज्वरापहः ।

अर्थ-गिलोयका अर्क-दीपन तथा श्वास, खाँसी, पाण्डुरोग और ज्वरको हरे है ।

बिल्वार्कगुणाः ।

बैल्वः श्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः ।

अर्थ-बेलका अर्क-कफनाशक, बलकारक, हलका, गरम और पाचक है ।

काश्मर्य्यर्कगुणाः ।

गाम्भारीजो भ्रान्तितृष्णाशूलार्शोविषदाहनुत् ।

अर्थ-कुम्भेरका अर्क-भ्रान्ति, तृषा, शूल, बवासीर, विष और दाहनाशक है ।

पाटलार्कगुणाः ।

पाटल्याश्छर्दिशोफास्रतृष्णादाहारुचीर्हरेत् ।

अर्थ-पाडलका अर्क-वमन, सूजन, रुधिरविकार, तृषा, दाह और अरुचिनिवारक है ।

अग्निमन्थार्कगुणाः ।

अग्निमन्थोद्भवः शोफकृमिपाण्डुबलासनुत् ।

अर्थ-अरणीका अर्क-सूजन, कृमि, पाण्डु, और कफनाशक है ।

श्योनाकार्कगुणाः ।

श्योनाकजस्तु गुल्मार्शःकृमिहृद्रुचिदीप्तिकृत् ।

अर्थ-श्योनाकका अर्क-गुल्म, बवासीर और कृमिनाशक और रुचिदीपक है ।

शालिपर्ण्यर्कगुणाः ।

शालिपर्ण्याः क्षतकृमिज्वरच्छर्द्यतिसारहा ।

अर्थ-शालिपर्णीका अर्क-क्षतरोग, कृमि, ज्वर, वमन और अतिसारनिवारक है ।

पृश्निपर्ण्यर्कगुणाः ।

पृश्निपर्ण्या ज्वरश्वासरक्तातीसारदाहहृत् ।

अर्थ-पिठवनका अर्क-ज्वर, श्वास, रक्तातिसार और दाहनाशक है ।

बृहत्यर्कगुणाः ।

वार्त्ताक्या ज्वरवैरस्यमलारोचकशूलहा ।

अर्थ-बृहती अर्थात् कटाईका अर्क-ज्वर, मुखकी विरसता, मलदोष, अरुचि और शूलनाशक है ।

श्वेतकण्टकार्यर्कगुणाः ।

कण्टकार्य्या गर्भकरः पाचनः कफकासहा ।

अर्थ-सफेद कटेरीका अर्क-गर्भकारक, पाचन तथा कफ और खाँसीको दूर करे है ।

कण्टकार्यर्कगुणाः।

कण्टकार्य्या दीपनश्च श्लेष्मशोफरुजापहः ।

अर्थ-कटेरीका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा श्लेष्म और सूजनको दूर करे है ।

गोक्षुरार्कगुणाः।

गोक्षुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्रोगवातहा ।

अर्थ-गोखुरूका अर्क-पथरी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, :हृदयरोग, और वातविनाशक है ।

जीवन्त्यर्कगुणाः।

जीवन्त्याः सारहृन्नेत्र्यो दोषत्रितयनाशनः ।

अर्थ-जीवन्तीका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा त्रिदोष और अतिसारनाशक है ।

मुद्गपर्ण्यर्कगुणाः।

मुद्गपर्ण्याः शोफदाहग्रहण्यर्शोऽतिसारहृत् ।

अर्थ-मुगवनका अर्क-सूजन,दाह,संग्रहणी और अतिसारनिवारकहै

माषपर्ण्यर्कगुणाः।

माषपर्ण्याः शुक्रकरो वातपित्तज्वरास्रजित् ।

अर्थ-मषवनका अर्क-शुक्रजनक तथा वात पित्त और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

श्वतरण्डार्कगुणाः ।

पञ्चांगुलोद्भवः शूलशिरःपीडोदरापहः ।

अर्थ-सफेद अण्डका अर्क-शूल,शिरकी पीडा और उदररोगनाशक है।

रक्तैरण्डार्कगुणाः

रुबुकोत्थोद्भवः श्वासकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ-लाल अंडका अर्क-श्वास,खाँसी,कोढ और आमवातनाशक है।

मन्दाराकगुणाः

मन्दारजो वातकुष्ठकण्डूव्रणविषापहः ।

अर्थ-मन्दारका अर्क-वात,कुष्ठ,कण्डू,व्रण और विषविनाशक है

अर्क्यकगुणाः

अर्क्यर्कः प्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-आकका अर्क-प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग और कृमिनाशक है ।

वज्र्यर्कगुणाः ।

वज्रीजो लेपतो हन्याद्व्रणशोफोदरव्रणान् ।

अर्थ-वज्री (एकप्रकारका सेहुंड) का अर्क-लेपसे व्रण, सूजन और उदररोगनाशक है ।

सातलार्कगुणाः ।

सातलोत्थः कफानाहपित्तोदावर्त्तशोफहा ।

अर्थ-सातलाका अर्थ-कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त और सूजनको हरे है ।

लांगल्यर्कगुणाः ।

लाङ्गल्या लेपतो हन्याच्छोफार्शोव्रणरोगहृत् ।

अर्थ-कलिहारीके अर्कका लेप करनेसे सूजन, बवासीर और वणको हरेहैं ।

श्वेतकरवीरार्कगुणाः ।

करवीरोद्भवो नेत्रशोफकुष्ठव्रणापहः ।

अर्थ-सफेद कनेरका अर्क-नेत्ररोग,सूजन,कोढ, व्रणाविनाशक है।

रक्तकरवीरार्कगुणाः ।

चाण्डातोत्थस्तु विषहृद्भक्षणे लेपने सुहृत् ।

अर्थ-लाल कनेरका अर्क-भक्षण करनेमें विषनाशक और लेप करनेमें विशेष उपकारी है।

धत्तूरबीजार्कगुणाः ।

धत्तूरजो हरेल्लेपाद्यूकाकृमिविषादिकम् ।

अर्थ-धतूरेका अर्क-लेपकरनेसे यूका, कृमि, विषदोषनाशक है ।

वासार्कगुणाः ।

वासोद्भवो ज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ।

अर्थ-अडूसेका अर्क-ज्वर,वमन,प्रमेह,कोढ, क्षयरोगनाशक है ।

पर्पटार्कगुणाः ।

पार्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ।

अर्थ-पित्तपापडेका अर्क-रक्तपित्त, भ्रम,तृषा, कफ,ज्वरको हरे है।

निम्बार्कगुणाः ।

निम्बजः श्रमतृट्कासज्वरारुचिवमिप्रणुत् ।

अर्थ-नीमका अर्क-श्रम,तृषा,खाँसी,ज्वर,अरुचि,वमननिवारक है।

महानिम्बार्कगुणाः ।

महानिम्बोद्भवो गुल्ममूषिकाविषनाशनः ।

अर्थ-बकायननीमका अर्क-गुल्म और मूषेके विषको हरे है ।

पारिभद्राकगुणाः ।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोफमेदकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-फरहदका अर्क-वात, श्लेष्म, शोफ, मेद, कृमि, विनाशक है ।

काञ्चनारार्कगुणाः ।

काञ्चनारो गण्डमालागुदभ्रंशव्रणापहः ।

अर्थ-कचनारका अर्क-गण्डमाला, गुदभ्रंश और व्रणविनाशक है ।

कोविदारार्कगुणाः ।

कोविदारस्तु पित्तास्रप्रदरक्षयकासहा ।

अर्थ-लालकचनारका अर्क-पित्त, रुधिरविकार, क्षय, खाँसीको हरे है ।

रक्तशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

शोभाञ्जनार्को रुचिकृच्छुक्रलो ग्राहि दीपनः ।

अर्थ-लालसैंजिनेका अर्क-रुचिकारक, शुक्रजनक, मलरोधक और दीपन है ।

श्वेतशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

मधुशिग्रूद्भवो हन्याद्विद्रधिश्वयथुकृमीन् ।

अर्थ-मधुशिग्रु वा सफेद सैंजिनेका अर्क-विद्रधि, सूजन और कृमिरोगनाशक है ।

शिग्रुजार्कगुणाः ।

शिग्रुजो विषहन्नेत्र्यस्तस्य नस्याच्छिरोर्तिहृत् ।

अर्थ-सामान्यसैंजिनेका अर्क-नत्रोंको हितकारी, विषविनाशक और इसका नासलेनेसे शिरकी पीडा दूर होती है ।

गिरिकर्ण्यर्कगुणाः ।

गिरिकर्ण्याः कर्णशूलशोफव्रणविषापहः ।

अर्थ-कोयलीका अर्क-कर्णशूल, सूजन, व्रण, विषविनाशक है ।

सिन्धुवारार्कगुणाः ।

सिन्धुवारोद्भवो हन्ति शूलशोफाममारुतान् ।

अर्थ-सम्हालुका अर्क-शूल, सूजन और आमवातनाशक है ।

निर्गुण्ड्यर्कगुणाः ।

निर्गुण्ड्यर्को हरेज्जन्तुव्रणकुष्ठारुचिं लघुः ।

अर्थ-निर्गुण्डीका अर्क-हलका तथा कृमि, व्रण, कोढ और अरुचिनाशक है।

कुटजार्कगुणाः ।

कौटजो दीपनः शीतः कफतृष्णामकुष्ठजित् ।

अर्थ-कुडेका अर्क-दीपन, शीतल तथा कफ, तृषा, आम और कुष्ठनाशक है ।

करञ्जार्कगुणाः ।

कारञ्जः कफगुल्मार्शोव्रणकृमिरुजापहः ।

अर्थ-करंजका अर्क-कफ, गुल्म, बवासीर, व्रण और कृमिरोगनाशक है ।

घृतकरञ्जार्कगुणाः ।

घृतकारञ्जको भेदी वातार्शःकृमिकुष्ठजित् ।

अर्थ-घृतकरंजका अर्क-भेदक तथा वात, बवासीर, कृमि और कुष्ठनाशक है ।

करञ्जार्कगुणाः ।

कारंजो वान्तिवातार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित् ।

अर्थ-करंजुयेका अर्क-वमन, वात, बवासीर, कृमि, कोढ और प्रमेहनाशक है ।

श्वेतगुञ्जार्कगुणाः ।

उच्चटार्कः केशकरो वातपित्तकफापहः ।

अर्थ-सफेद घुघुचीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला तथा वात पित्त और कफनाशक है ।

रक्तगुञ्जार्कगुणाः ।

गुञ्जाया हरते श्वासमुखशोषश्रमज्वरान् ।

अर्थ-घुघुचीका अर्क-श्वास, मुखशोष, श्रम और ज्वरनाशक है ।

शूकशिम्ब्यर्कगुणाः ।

कपिकच्छूद्भवो वृष्यो बृंहणो वाजिकर्म्मकृत् ।

अर्थ-कौंछका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक पुष्टिकारक और वाजीकरण है ।

मांसरोहिण्यर्कगुणाः ।

मांसरोहिण्युद्भवस्तु वृष्यो दोषत्रयापहः ।

अर्थ-मांसरोहिणीका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक और त्रिदोषनाशक है ।

चिह्लकार्कगुणाः ।

चैह्लः कुर्य्याद्धातुपुष्टिं तत्फलं मारयेज्जनान् ।

अर्थ-षिङ्ककका अर्क-धातुपुष्टिकारक,इसका फल प्राणनाशक है।

वेतसार्कगुणाः ।

वेतसो हरते दाहं शोथार्शोयोनिरुग्व्रणान् ।

अर्थ-वेतका अर्क-दाह, सूजन, बवासीर, योनिरोग और व्रणविनाशक है ।

जलवेतसार्कगुणाः ।

जलवेतसजो ग्राही शीतो वातप्रकोपनः ।

अर्थ-जलवेतका अर्क-मलरोधक, शीतल और वातप्रकोपक है ।

हिज्जलार्कगुणाः ।

हिज्जलार्कस्तु हरते चराचरविषं स्फुटम् ।

अर्थ-समुद्रफलका अर्क-स्थावर और जंगम दोनों प्रकारके विषोंको हरे है ।

अंकोटार्कगुणाः ।

अङ्कोटकस्य शूलामशोथग्रहविषापहः ।

अर्थ-अंकोलका अर्क-शूल, आम, सूजन, अंगग्रह और विषविनाशक है ।

बलार्कगुणाः ।

बलार्को ग्राहि वातास्रपित्तास्रक्षतनाशनः ।

अर्थ-खिरेंटीका अर्क-मलरोधक, वातरक्त,रक्तपित्त,क्षतनाशकहै

अतिबलार्कगुणाः ।

अतिपूर्वाबलार्कस्तु मूर्च्छामोहहरः परः ।

अर्थ-कंघीका अर्क-मूर्च्छा और मोहनाशक है ।

लक्ष्मणामूलार्कगुणाः ।

लक्ष्मणार्कन्तु या सेवेद्वन्ध्यापि लभते सुतम् ।

अर्थ-लक्ष्मणाके अर्कको वाँझ स्त्रीभी सेवन करे तो पुत्रवाली होती है ।

स्वर्णवल्ल्यर्कगुणाः ।

स्वर्णल्ल्याः शिरःपीडां त्रिदोषान्हन्ति दुग्धदः ।

अर्थ-स्वर्णवल्लीका अर्क-शिरकी पीडा और त्रिदोषनाशक है। तथा दुग्धायक है ।

कार्पास्यर्कगुणाः ।

कार्पास्यर्कः कर्णसंस्थः कर्णरोगान्विनाशयेत् ।

अर्थ-कपासका अर्क-कानमें डालनेसे कानके रोगोंको हरै है ।

वंशार्कगुणाः ।

वंशजः कफपित्तघ्नः कुष्ठघ्नो व्रणशोषजित् ।

अर्थ-बाँसका अर्क-कफ, पित्त, कोढ,व्रण और शोषानिवारक है।

नलार्कगुणाः ।

नलार्को वस्तियोन्यर्त्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ।

अर्थ-नलका अर्क-वास्तिकी पीडा, योनिकी पीडा, दाह, पित्त और विसर्परोगनाशक है ।

पाण्ड्यर्कगुणाः ।

पाण्ड्यो जयेज्ज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ।

अर्थ-पाण्डीरका अर्क-ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार और हृदयरोगनाशक है ।

शरपुंखार्कगुणाः ।

शरपुंखोद्भवः प्लीहगुल्मव्रणविषापहः ।

अर्थ-सरफोंकेका अर्क-प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषनाशक है ।

दुरालभार्कगुणाः ।

यवासजो मदभ्रान्तिपित्तहृत्कुष्ठकासहृत् ।

अर्थ-जवासेका अर्क-मत्तता, भ्रम, पित्त, कोढ और खाँसीको हरे है ।

मुण्ड्यर्कगुणाः ।

मुण्डीजोऽत्यन्तबलकृत्प्लीहमोहानिलार्त्तिजित् ।

अर्थ-मुण्डीका अर्क-अत्यन्त बलकारक तथा प्लीहा, मोह और वातरोगनाशक है ।

अपामार्गार्कगुणाः ।

अपामार्गभवश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः ।

अर्थ-चिरचिटेका अर्क-वमन, कफ, मेद और वातविनाशक है।

रक्तापामार्गार्कगुणाः ।

आरक्तापामार्गभवो धातुस्तम्भनकारकः ।

अर्थ-लालचिरचिटेका अर्क-धातुस्तम्भक है ।

कोकिलाक्षार्कगुणाः ।

कोकिलाक्षभवः शीघ्रं सेकाच्छोथं निवारयेत् ।

अर्थ-तालमखानेका अर्क-सेक करनेसे शोफको हरे है ।

अस्थिसंहारिकार्कगुणाः ।

अस्थिसंहारिकायास्तु भग्नसंधानकृत्स्थिरः ।

अर्थ-अस्थिसंहारकाका अर्क-टूटेहुए हाडोंको जोडनेवाला है ।

कुमार्य्यर्कगुणाः ।

कुमारिकाया ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटकाञ्जयेत् ।

अर्थ-घीकुआरका अर्क-ग्रन्थि,अग्निदग्ध और विस्फोटनिवारक है।

पुनर्नवार्कगुणाः ।

पुनर्नवायाः श्वेतायाः सर्वनेत्रामयापहः ।

अर्थ-विषखपरेका अर्क-सर्वप्रकारके नेत्ररोगनाशक है ।

रक्तपुनर्नवार्कगुणाः ।

पुनर्नवाया रक्ताया ग्राही पित्तास्रनाशनः ।

अर्थ-सांठका अर्क-मलरोधक और रक्तपित्तनाशक है ।

प्रसारिण्यर्कगुणाः ।

प्रसारिण्या वातहरो वृष्यः सन्धानकृत्सरः ।

अर्थ-पसरनका अर्क-वातविनाशक,वृष्य, व्रणनाशक,सारक है ।

शारिवार्कगुणाः ।

शारिवाया वह्निमांद्यकासामयविनाशनः ।

अर्थ-सरिवनका अर्क-अग्निमान्द्य और कासरोगनाशक है ।

भृङ्गराजार्कगुणाः ।

भृङ्गराजस्य दन्त्योऽर्कः केश्यो रुच्यः शिरोर्त्तिहा ।

अर्थ-भँगरेका अर्क-दांतोंको हितकारी,केशोंको सुंदरकरनेवाला रुचिकारक और शिरोरोगनाशक है ।

शणपुष्प्यर्कगुणाः ।

शणपुष्पीलतायास्तु ह्यर्कः पित्तकफान्तकः ।

अर्थ-शणपुष्पी, पटशनका अर्क-पित्त और कफनाशक है।

त्रायन्त्यर्कगुणाः।

त्रायन्त्यर्कः शूलविषविलेपिज्वरनाशनः ।

अर्थ-त्रायमाणका अर्क-शूल,विष और विलेपकज्वरनाशक है ।

मूर्वार्कगुणाः ।

मूर्वाया मेहहृद्रोगकण्डूकुष्ठज्वरापहः ।

अर्थ-मूर्वाका अर्क-प्रमेह, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वररोगनाशक है ।

काकमाच्यर्कगुणाः ।

काकमाच्या नेत्रहितश्छर्दिहृद्रोगनाशनः ।

अर्थ-मकोयका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा वमन और हृदयरोगनाशक है ।

काकनासार्कगुणाः ।

काकनासाभवो वाम्यः शोफार्शःश्वित्रकुष्ठहृत् ।

अर्थ-काकनासा (कौआठोडी) का अर्क-वमनकारक तथा सूजन बवासीर और श्वित्रकुष्ठनाशक है ।

काकजंघार्कगुणाः ।

काकजंघोद्भवो हन्याज्ज्वरकण्डूविषक्रिमीन् ।

अर्थ-काकजंघा(मसी)का अर्क-ज्वर,कण्डू,विष और कृमिरोगनाशक है ।

नागाह्वार्कगुणाः ।

नागाह्वाया हरेच्छूलं योनिदोषवमिक्रिमीन् ।

अर्थ-नागबला गंगेरनका अर्क-शूलरोग, योनिदोष, वमन और कृमिरोगनाशक है ।

मेषशृंग्यर्कगुणाः ।

मेषशृंग्याः श्वासकासव्रणश्लेष्माक्षिशूलहा ।

अर्थ-मेढाशिंगीका अर्क-श्वास, खाँसी, व्रण, कफ, नेत्ररोग और शूलनाशक है ।

हंसपद्यर्कगुणाः ।

हंसपद्या हन्ति लूताम्भूतरक्तव्रणान्विषम् ।

अर्थ-हंसपदीका अर्क-मकडीका विष, भूतोन्माद, रक्तव्रण और अन्यप्रकारके विषोंको हरे है ।

सोमवल्ल्यर्कगुणाः ।

सोमवल्ल्यास्त्रिदोषघ्नः क्षीरकृच्च रसायनः ।

अर्थ-सोमलताका अर्क-त्रिदोषनाशक,क्षीरजनक और रसायनहै

आकाशवल्ल्यर्कगुणाः ।

आकाशवल्ल्याः शीतोऽर्कः पित्तश्लेष्मामनाशनः ।

अर्थ-आकाशवेलका अर्क-शीतल तथा पित्त, कफ और आमनाशक है ।

पातालगरुडार्कगुणाः ।

पातालगरुडीजोऽर्को वृष्यो वातगदापहः ।

अर्थ-छिरहिंटेका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक और वातरोगनाशक है ।

वन्दाकार्कगुणाः ।

वन्दावृक्षोद्भवोऽर्कस्तु विषरक्षोव्रणापहः ।

अर्थ-बंदाका अर्क-विषदोष, राक्षसबाधा और व्रणविनाशकहै।

वटपत्रार्कगुणाः ।

वटपत्रभवश्चोष्णो योनिमूत्रगदापहः ।

अर्थ वटपत्रीका अर्क-गरम तथा योनिरोग और मूत्ररोगनाशकहै

हिंगुपत्र्यर्कगुणाः ।

हिंगुपत्र्या विबन्धार्शोश्लेष्मगुल्मानिलापहः ।

अर्थ-हिंगुपत्रीका अर्क-विबन्ध, बवासीर, श्लेष्म, गुल्म और वातरोगनाशक है ।

वंशपत्र्यर्कगुणाः।

वंशपत्र्याः पाचनोष्णो हृद्बस्तिगदसंघहृत् ।

अर्थ-वंशपत्रीका अर्क-पाचन, गरम तथा हृदयरोग और बस्तिरोगनाशक है ।

मत्स्याक्ष्यर्कगुणाः ।

मत्स्याक्ष्यर्को ग्राहि शीतः कुष्ठपित्तकफास्रजित् ।

अर्थ-मच्छेछीका अर्क-मलरोधक, शीतल तथा कोढ, पित्त, कफ और रुधिरके दोषोंको हरे है ।

सर्पाक्ष्यर्कगुणाः

सर्पाक्ष्या रोपणः सर्पवृश्चिकादिविषापहः ।

अर्थ-गंडिनीका अर्क-वणको भरनेवाला तथा सर्प और वृश्चिकादिके विषको हरनेवाला है ।

शंखपुष्प्यर्कगुणाः ।

शंखपुष्प्या विषहरः कान्तिस्मृतिबलाग्निदः ।

अर्थ-शंखपुष्पीका अर्क-विषनाशक तथा कान्ति, स्मरणशक्ति, बल और अग्निकारक है ।

अर्कपुष्पार्कगुणाः ।

अर्कपुष्पा कृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारहा ।

अर्थ-अर्कपुष्पीका अर्क-कृमि,श्लेष्म,प्रमेह और पित्तरोगनाशक है।

लज्जालुकार्कगुणाः ।

लज्जालुकाया भगरुग्रक्तपित्तातिसारहृत् ।

अर्थ-लज्जालुका अर्क-योनिरोग, रक्तपित्त और अतिसाररोगनिवारक है।

अलम्बुषार्कगुणाः ।

अलम्बुषासम्भवोऽर्कः कृमिपित्तकफापहः ।

अर्थ-अलम्बुषा(लज्जालुभेद)का अर्क-कृमि,पित्त और कफनाशक है।

दुग्धिकार्कगुणाः ।

दुग्धिकायाः कफकरो वृष्यः स्तम्भीकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-दुद्धाका अर्क-कफकारक, वृष्य, स्तम्भक और कृमिनाशक है।

भूम्यामलकार्कगुणाः ।

भूम्यामल्याः कासतृषाकफपाण्डुक्षतापहः ।

अर्थ-भुईआमलेका अर्क-खाँसी, तृषा, कफ, पाण्डु और क्षतरोगनाशक है।

ब्राह्म्यर्कगुणाः ।

ब्राह्म्या बुद्धिप्रदश्चार्कः षण्मासाभ्यासतः कविः ।

अर्थ-ब्राह्मीका अर्क-बुद्धिवर्द्धक,इसको छः महीने सेवन करनेसे कवि होजाता है।

ब्रह्ममण्डूक्यर्कगुणाः ।

ब्रह्ममण्डूकजः पाण्डुविषशोफज्वरान्हरेत् ।

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकीका अर्क-पाण्डु,विष, सूजन और ज्वरनाशक है।

द्रोणपुष्प्यर्कगुणाः ।

द्रोणपुष्प्या ज्वरश्वासकामलाशोफजन्तुहृत् ।

अर्थ-द्रोणपुष्पीका अर्क-ज्वर, श्वास, कामला, सूजन और कृमिरोगनाशक है।

सूर्य्यमुख्यर्कगुणाः ।

सूर्य्यमुख्युद्भवः स्फोटयोनिरुक्कृमिपाण्डुहा ।

अर्थ-सूर्य्यमुखीका अर्क-विस्फोट,योनिरोग,कृमि और पाण्डुरोगनाशक है।

वन्ध्याकर्कोटक्यर्कगुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकीजातः सर्पदंशव्रणापहः ।

अर्थ-बांझककोडेका अर्क-सर्पविष और व्रणविनाशक है।

मार्कंडिकार्कगुणाः ।

मार्कण्डिकाया दुर्गंधविषगुल्मोदरापहः ।

अर्थ-मार्कण्डिका (एक प्रकारका ककोडा) का अर्क-दुर्गंध, विष, गुल्म और उदररोगनाशक है ।

देवदाल्यर्कगुणाः ।

देवदाल्याः शूलगुल्मश्लेष्मार्शोवातजित्सरः ।

अर्थ-देवदालीका अर्क-शूल, गुल्म, श्लेष्म, बवासीर, वातनाशक है तथा दस्तावर है ।

धत्तूरार्कगुणाः ।

ग्राही धत्तूरजः शीतो वह्निकृद्व्रणदाहहा ।

अर्थ-धतूरेका अर्क-मलरोधक, शीतल, अग्निजनक तथा व्रण और दाहनाशक है ।

गोजिह्वार्कगुणाः ।

गोजिह्वाया मेहकासव्रणसारज्वरापहः ।

अर्थ-गोभीका अर्क-प्रमेह, खांसी, व्रण, अतिसार और ज्वरनाशक है ।

नागपुष्प्यर्कगुणाः ।

नागपुष्प्याः सर्वविषसर्वग्रहनिवारणः ।

अर्थ-नागदमनीका अर्क-सर्वप्रकारके विष और सर्वप्रकारके ग्रहदोषनिवारक है ।

बिल्वतर्य्यर्कगुणाः ।

बैल्वतर्य्यो मूत्रघाताश्मरीयोन्यनिलार्त्तिजित् ।

अर्थ-बेलतरीका अर्क-मूत्राघात, पथरी, योनिरोग और वातविनाशक है ।

छिक्कन्यर्कगुणाः ।

छिक्कन्या वह्निरुचिकृदर्शःकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-नाकछिकनाका अर्क-अग्निकारक, रुचिजनक तथा बवासीर, कोढ और कृमिनाशक है ।

कुकुन्दरार्कगुणाः ।

कौकुन्दरो ज्वरं रक्तं मुखशोषं कफं हरेत् ।

अर्थ-कुकुरोंदेका अर्क-ज्वर, रुधिरविकार, मुखशोष और कफनाशक है ।

सुदर्शनार्कगुणाः ।

सुदर्शनार्कश्चात्युष्णः कफशोफास्रवातजित् । (इं०लङ्कानाथः)

अर्थ-सुदर्शनका अर्क-अत्यन्त गरम तथा कफ, सूजन, रुधिर विकार और वातनाशक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेऽर्कवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ मधुवर्गः ।

मधुनामानि ।

माक्षिकं मधु च क्षौद्रं पवित्रं कुसुमासवम् ।
भृङ्गवातं सारघं च पित्र्यं पुष्परसोद्भवम् ॥

अर्थ-माक्षिक, मधु, क्षौद्र, पवित्र, कुसुमासव, भृङ्गवात, सारघ, पित्र्य, पुष्परसोद्भव (माक्षीक, पुष्पासव, पुष्परसाह्वय, माध्वीक, वरटीवांत, मकरन्दरस) ।

संस्कृतभाषामें	मधु, माक्षिक ।
हिन्दीभाषामें	मधु, सहत ।
वंगभाषामें	मधु, मौ ।
मराठीभाषामें	मध ।
गुजरातीभाषामें	मध ।
कर्णाटकीभाषामें	जेनतुप्प ।
तैलङ्गीभाषामें	तेनी ।
इंग्रेजीभाषामें	हनी । Honay
लैटिन्भाषामें	मेल । Mel
फारसीभाषामें	शहद, अगबीन ।
अरबीभाषामें	असलुल् नहल्।

मधुसामान्यगुणाः ।

शीतं कषायं मधुरं लघु स्यात्सन्दीपनं लेहनमेव शस्तम् ।
संशोधनं वा व्रणशोधनञ्च संरोपणं हृद्यतमञ्च बल्यम् ॥
त्रिदोषनाशं कुरुते च पुष्टिं कासक्षये वा क्षतजे च छर्द्याम् ।

हिक्काभ्रमे शोषणपीनसानां रक्तप्रमेहे श्वसनेतिसारे ॥
रक्तातिसारे च सरक्तपित्ते तृण्मोहहृत्पार्श्वगदेऽपि शस्तः ।
नेत्रामये वा ग्रहणीगदे वा विषे प्रशस्तं मधु ह्यल्पवातलम् ॥
(इति हारीतसंहितायाम्)

अर्थ-मधु (सहत)-शीतल, कषेला, मधुर, हलका, अग्निप्रदीपक, चाटनेमें उत्तम, संशोधक, व्रणको शोधनेवाला, घावको भरनेवाला, हृदयको हितकारी, बलकारी, त्रिदोषहारी, पुष्टिकारी तथा खाँसीमें, क्षयमें, क्षतमें, छर्दीमें, हिक्कारोगमें, भ्रममें, शोषमें, पीनसरोगमें, रक्तप्रमेहमें, श्वासमें, अतिसारमें, रक्तातिसारमें, रक्तपित्तमें, तृषामें, मोहमें, हृदयरोगमें, पार्श्वकी वेदनामें, नेत्ररोगमें, संग्रहणीमें और विषरोगमें हितकारी है और कुछेक वातकारक है ।

अन्यच्च ।

मधु शीतं लघु स्वादु रूक्षं स्वर्य्यं च ग्राहकम् । चक्षुष्यं लेखनं चाग्निदीपकं व्रणशोधकम् ॥ नाडीशुद्धिकरं सूक्ष्मं रोपणं मृदुवर्णकृत् । मेधाकरं च विशदं वृष्यं रुचिकरं मतम् ॥ आनन्दकृच्च तुवरं चाल्पवातप्रदं मतम् । कुष्ठार्शकासपित्तघ्नं रक्तदोषकफापहम् ॥ मेहक्रिमिमदग्लानितृष्णावान्त्यतिसारनुत् । दाहं क्षतं क्षयं मेदं क्षयं हिक्कां त्रिदोषकम् ॥ आध्मानवातं च विषं मलबन्धं च नाशयेत् । सर्वमेतद्व्रणानां तु रोपणं शोधकं मतम् ॥ अस्थिसन्धानकृत्तत्तु ततश्च विषवन्मतम् । उष्णद्रव्यैश्चोष्णकाले भक्षितं तापदायकम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मधु-शीतल, स्वादिष्ठ, रूखा, स्वरको शुद्धकरनेवाला, ग्राही, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, अग्निप्रदीपक, व्रणशोधक, नाडीको शुद्ध करनेवाला, सूक्ष्म, रोपण, मृदु, वर्णकारक, मेधाजनक, विशद, वृष्य, रुचिकारक, आनन्दजनक, कषेला, अल्पवातकारक, तथा कोढ, बवासीर, खाँसी, पित्त, रुधिरविकार, कफ, प्रमेह, कृमि, मद, ग्लानि, तृषा, वमन, अतिसार, दाह, क्षतक्षय, मेद, क्षय, हिचकी, त्रिदोष, आध्मान, वायु, विष और मलबद्धतानाशक है । सर्व-

प्रकारके मधु-व्रणोंको भरनेवाले, शोधनेवाले, टूटेहाडोंको जोडनेवाले हैं, यह गरम कियाहुवा, अथवा उष्णकालमें उष्ण द्रव्योंके साथ खाया हुवा विषके समान सन्तापको करता है ।

मधुजातिभेदाः ।

पौत्तिकं भ्रामरं क्षौद्रं माक्षिकं छात्रमेव च ।
आर्घ्यमौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः ।

अर्थ-पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र, माक्षिक, छात्र, आर्घ्य, औद्दालक और दाल यह आठ मधुकी जाति हैं ।

एतेषां लक्षणानि ।

पिंगला मक्षिका ज्ञेया महत्यल्पा च सा द्विधा। महती पुत्तिका नाम्नी स्वल्पा क्षुद्रेति कथ्यते॥ मध्यमा मक्षिका नीला मक्षिकेत्यभिधीयते । पुत्तिकाभ्रमरक्षुद्रामक्षिकासम्भवं मधु ॥ पौत्तिकादुच्यते छात्रं वरटीछत्रसम्भवम् । तपोवने जरत्कारोरार्घ्यं मधु तरूद्भवम् । औद्दालकन्तु वल्मीककारिकीटविनिर्मितम् । दालमित्यभिनिर्दिष्टं वृक्षकोटरकीटजम् ॥

अर्थ-पिंगलवर्ण मक्खी बृहत् और क्षुद्र इन भेदोंसे दोप्रकारकी है, तहां बृहत्मक्खी पुत्तिका और क्षुद्र मक्खी क्षुद्रानामसे कही जाती है । मध्यम आकारवाली नीले रंगकी मक्खी मक्षिकानामसे कही जाती है । पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा और मक्षिका नामवाली मक्खियोंसे पौत्तिकादि चार प्रकारके मधुकी उत्पत्ति होती है अर्थात् पुत्तिकानामवाली मक्खीसे पौत्तिक, भ्रमर नाम मक्खीसे भ्रामर, क्षुद्रासे क्षौद्र और मक्षिकासे माक्षिक नामवाले मधुकी उत्पत्ति होती है । वरटी नामवाले जो कीडे हैं उनके छत्तोंसे उत्पन्न हुवा जो मधु उसको छात्र, जिस वनमें जरत्कारु ऋषिने तप किया है उसमें जो महुवेके वृक्ष हैं उन वृक्षोंमेंसे जो उत्पन्न हुवा मधु उसको आर्घ्य, वल्मीककारी कीडोंके बनाये हुये मधुको औद्दालक और वृक्षोंकी कोटरोंमें जो कीडे रहते हैं उनके मधुको दाल कहते हैं ।

एतेषां लक्षणानि ।

माक्षिकं तैलवर्णं स्याद्घृतवर्णन्तु पौत्तिकम् ।

क्षौद्रं कपिलवर्णं स्याच्छ्वेतं भ्रामरमुच्यते ॥

अर्थ-माक्षिक मधु तैलवर्ण, पौत्तिक घृतवर्ण, क्षौद्र मधु कपिलरंगका और भ्रामर मधु सफेद रंगका होता है ।

पौत्तिकं तेषु वीर्य्योष्णं कषायानुरसान्वयात् । वातासृक्पित्तकृद्भेदि विदाहि मदकृन्मधु ॥ पैच्छिल्यात्स्वादुभूयस्त्वाद्भ्रामरं गुरु कीर्त्तितम् ।क्षौद्रं विशेषतो ज्ञेयं शीतलं लघु लेखनम् ॥ तस्माल्लघुतरं रूक्षं माक्षिकं प्रवरं स्मृतम् ।श्वासादिषु च रोगेषु प्रशस्तं तद्विशेषतः ॥ छात्रं श्वित्रक्रिमिहरं रक्तपित्तहरं गुरु । आर्घ्यं चक्षुष्यमायुष्यं कफपित्तामवातजित् ॥औद्दालकं कषायोष्णं कटु कुष्ठविषापहम् । दालं कफहरं रूक्षं दीपनं छार्द्दिमेहनुत ॥

अर्थ-पौत्तिकमधु-उष्णवीर्य्य, किंचित्कषेला, वातवर्द्धक, रक्तपित्तजनक, भेदक, मदकारक और मधुर है । भ्रामरमधु पिच्छिल, स्वादिष्ठ और भारी है । क्षौद्रमधु-अतिशयशीतल, हलका और लेखन है । माक्षिकमधु-अत्यन्त हलका, रूखा, सर्व मधुओंमें श्रेष्ठ और श्वासादिरोगोंमें हितकारी है । छात्रमधु-श्वित्र (कोढ) कृमि और रक्तपित्तरोगनाशक तथा भारी है । आर्घ्यमधु-नेत्रोंको हितकारी, आयुवर्द्धक, तथा कफपित्त और आमवातरोगनाशक है । औद्दालकमधु-कषेला, गरम, चरपरा, कोढ और विषनाशक है । दालमधु-कफनाशक, रूखा, दीपन, वमन और प्रमेहनाशक है ।

नवपुराणमधुगुणाः ।

बृंहणीयं मधु नवं वातश्लेष्महरं परम् ।
पुराणं लघु संग्राहि निर्दोषं स्थौल्यनाशनम् ॥ (रा०व०)

अर्थ-नवीनमधु-पुष्टिकारक और वातकफनाशक है । पुराना मधु हलका, मलरोधक, दोषरहित और स्थूलतानाशक है ।

मधुनः शर्करायाश्च गुडस्यापि विशेषतः ।
एकसंवत्सरे तत्तु पुराणत्वं स्मृतं बुधैः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मधु, खांड और गुड यह तीनों एक वर्ष व्यतीत होनेपर पुराने गिने जाते हैं ऐसा भावमिश्रने कहा है ।

पक्वापक्वमधुगुणाः ।

दोषत्रयहरं पक्वमाममम्लं त्रिदोषकृत् ॥ (रा० व०)

अर्थ-पक्वामधु-त्रिदोषनाशक और कच्चामधु-खट्टा और त्रिदोषजनक है ।

मधुनःशीतस्यगुणाविक्यम् ।

विषपुष्पादपि रसं सविषा भ्रमरादयः।गृहीत्वा मधु कुर्वन्ति तच्छीतं गुणवन्मधु ॥ विषान्वयात्तदुष्णात्तु द्रव्येणोष्णेन वा सह । उष्णार्त्तस्योष्णकाले च स्मृतं विषसमं मधु ॥ (भा.प्र.)

अर्थ-विषैले भ्रमरादिक विषैले फूलोंसे रसको इकट्ठा करके शहत बनाते हैं, वह शहत शीतल रहनेपर गुणदायक होता है, विषयुक्त रहनेसे यह मधु उष्ण किया अनेक अवगुणकारक है, ऐसेही उष्णकालमें, अथवा उष्णद्रव्यके साथ वा उष्णतासे पीडित मनुष्योंको मधु विषकी समान अहितकारी है ।

सिक्थकनामानि ।

मयनं तु मधूच्छिष्टं मधुशेषं च सिक्थकम् ।
मध्वाधारो मदनकं मधूषितमपि स्मृतम् ॥

अर्थ-मयन, मधूच्छिष्ट, मधुशेष, सिक्थक, मध्वाधार, मदनक, मधूषित, (सिक्थ, शिक्थ, शिक्थक, मधुज, मधुसम्भव, मादन, काच, विघस, उच्छिष्ट, मोदन, माक्षिकामल, क्षौद्रेय, पीतराग, स्निग्ध, माक्षिकज, क्षौद्रज, द्रावक, माक्षिकाश्रय, मधूत्थित)

सं० मधूच्छिष्ट ।
हिं० मोम ।
वं० मोम ।
म० मेण ।
गु० मिण ।
मोतदर, मैनामु ।
इं० एल्लोवेक्स ।
लै० सिरा आल्वा ।
फा० मोमेजर्द ।
अ० शया ।

अस्य गुणाः ।

मदनं मृदु सुस्निग्धं भूतघ्नं व्रणरोपणम् ।
भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-मोम-कोमल, स्निग्ध, भूतबाधाको हरनेवाला, व्रणको भरनेवाला, भग्नसन्धानकारक तथा वात विसर्प और रुधिरके विकारोंको हरे है।

अन्यच्च।

सिक्थकं पिच्छिलं स्वादु कटु स्निग्धं मृदु स्मृतम्। अस्थिसंधिकरं व्रण्यं वातकुष्ठविसर्पनुत् ॥ रक्तदोषं वातरक्तं भूतदोषं च नाशयेत्। स्फुटितस्याङ्गलेपेन त्वचःसंधिकरं मतम् ॥

अर्थ-मोम-पिच्छिल, स्वादिष्ठ, कटु, स्निग्ध, नरम, अस्थिसंधानकारक, व्रणको हितकारी, तथा वात, कोढ, विसर्प, रुधिरविकार, वातरक्त, भूतबाधा और लेप करनेसे फटीहुई त्वचाको आराम करे है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे मधुवर्गः समाप्तः ॥ १९ ॥

अथ इक्षुवर्गः।

इक्षुनामानि।

इक्षुर्दीर्घच्छदः प्रोक्तस्तथा भूरिरसोऽपि च।
गुडमूलोऽसिपत्रश्च तथा मधुतृणः स्मृतः ॥

अर्थ-इक्षु, दीर्घच्छद, भूरिरस, गुडमूल, असिपत्र, मधुतृण, (मधुयष्टि विपुलरस, गुडदारु, रसालु, कोशकार, इक्षुर, असिपत्रक, पयोधर, कर्कोटक, वंश, कान्तार, सुकुमारक, अधिपत्र, वृष्य, गुडतृण, मृत्युपुष्प, गुडद, गण्डीदी, खड्गपत्रक, गुडकाष्ठ, तृणाधिप)

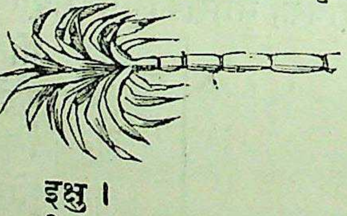

संस्कृतभाषामें	इक्षु।
हिन्दीभाषामें	ईख, गन्ना, गांडा, पौंडा, ऊष।
वंगभाषामें	आक, कुशिर।
मराठीभाषामें	ऊस।
गुजरातीभाषामें	शेरडी शेरडीनुं मूल।

कर्णाटकीभाषामें	कबु, कब्बिनमेरु ।
तैलिङ्गीभाषामें	चिरकु ।
इंग्रेजीभाषामें	श्युगरकेन । Sugar Cane
लैटिनभाषामें	सेक्करं आलव । Saceharum Officenarum
	सेक्करं आफसीनेरं
फारसीभाषामें	नेशकर ।
अरबीभाषामें	कमूबुस शक्कर ।

इक्षुसाधारणगुणाः ।

इक्षवो रक्तपित्तघ्ना बल्या वृष्याः कफप्रदाः ।
विपाके मधुराः स्निग्धा गुरवो मूत्रला हिमाः ॥

अर्थ-ईख-रक्तपित्तनाशक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारी, पचनेमें मधुर, स्निग्ध, भारी, मूत्रजनक और शीतल है ।

सितेक्षुगुणाः ।

स्निग्धश्च सन्तर्पणबृंहणश्च संजीवनः स्वादुरसः श्रमघ्नः ।
वृष्यश्च पित्तास्रशमं नयेच्च ह्यंतर्विदाही कफकृत्सितेक्षुः ॥

अर्थ-सफेद-ईख-स्निग्ध, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, संजीवन, स्वादिष्ठ, श्रमनाशक,वृष्य,रक्तपित्तको शान्ति करनेवाली,शरीरके भीतरकी दाहको हरनेवाली और कफकारक है ।

कृष्णेक्षुगुणाः ।

तद्वत्सुकृष्णो हि भवेद्गुणैश्च वृष्यो भवेत्तर्पणदाहहंता ।
सक्षारकिञ्चिन्मधुरोरसेन शोषापहर्त्ता व्रणशोफकर्त्ता॥(हा०सं०)

अर्थ-काली ईख-व काले गन्ने-गुणोंमें सफेद ईखकी समान हैं, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक, दाहनिवारक, क्षारयुक्त, मधुररसान्वित, शोषनाशक और व्रण तथा शोफजनक हैं ।

रक्तेक्षुगुणाः ।

रक्तेक्षुः शीतलः पाके मधुरो मृदु वृष्यकः । बलकान्तिप्रदश्चैव धातुवृद्धिकरो गुरुः ॥ तुवरः पित्तदाहघ्नो वातविस्फोटनाशकः । मूत्राघातं मूत्रकृच्छ्रं रक्तदोषं च नाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लालईख-शीतल,पाकमें मधुर,मृदु, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, कान्तिजनक,धातुवर्द्धक,भारी,कषेली तथा पित्त,दाह,वात,विस्फोट, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और रुधिरके विकारोंको दूरकरेहै ।

इक्षुभेदाः ।

पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः । कान्तारस्तापसेक्षुश्च काण्डेक्षुः सूचिपत्रकः ॥ नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकृत् । इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि ॥

अर्थ-पौण्ड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोरक, कान्तार, तापसेक्षु, काण्डेक्षु, सूचिपत्र, नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर, कोशकृत,यह ईखकी जातिहैं । अब इनके गुणोंको कहता हूं ।

पौण्ड्रकभीरुकयोर्गुणाः ।

वातपित्तप्रशमनो मधुरो रसपाकयोः ।
सुशीतो बृंहणो बल्यः पौण्ड्रको भीरुकस्तथा ॥

अर्थ-पौण्ड्रक और भीरुकनामवाली ईख-वातपित्तनाशक, रस और पाकमें मधुर, शीतल, पुष्टिकारक और बलवर्द्धक है ।

कोशकारगुणाः ।

कोशकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ।

अर्थ-कोशकारनामवाला गन्ना-भारी, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगनाशक है ।

कान्तारेक्षुगुणाः ।

कान्तरेक्षुर्गुरुर्वृष्यः श्लेष्मलो बृंहणः सरः ।

अर्थ-कान्तारनामवाला गन्ना-भारी,वृष्य, कफकारी, पुष्टिकारक और सारक है ।

दीर्घपोरवंशकयोर्गुणाः ।

दीर्घपोरः सुकठिनः सक्षारो वंशकः स्मृतः ।

अर्थ-दीर्घपोरवाली ईख-कठिन और वंशक ईख-क्षारयुक्त है ।

शतपोरकगुणाः ।

शतपर्वा भवेत्किञ्चित्कोशकारगुणान्वितः ।
विशेषात्किञ्चिदुष्णश्च सक्षारः पवनापहः ॥

अर्थ–शनपोरक नामवाली ईख–किञ्चित् कोशकारईखकी समान गुणवाली है, विशेषता यह है कि, किञ्चित् गरम, क्षार और वातनाशक है ।

मनोगुप्तागुणाः ।

मनोगुप्ता वातहारी तृष्णामयविनाशिनी ।
सुशीता मधुरातीव रक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ–मनोगुप्तानामवाली ईख–वातविनाशक, तृषारोगनाशक, शीतल अत्यन्त मधुर और रक्तपित्तविनाशक है ।

तापसेक्षुगुणाः ।

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वी मधुरा श्लेष्मकोपना ।
तर्पणी रुचिकृच्चापि वृष्या च बलकारिणी ।

अर्थ–तापसेक्षु–नरम, मधुर, श्लेष्मप्रकोपक, तृप्तिकारक, रुचिजनक, वीर्य्यवर्द्धक और बलकारक है ।

काण्डेक्षुगुणाः ।

एवंगुणैस्तु काण्डेक्षुः स तु वातप्रकोपनः ।

अर्थ–काण्डेक्षुके गुण तापसेक्षुकी समान हैं और विशेषकरके वातको कुपित करे है ।

सूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रिनीलपोराणां गुणाः ।

सूचीपत्रो नीलपोरो नैपालो दीर्घपत्रकः ।
वातलाः कफपित्तघ्नाः सकषाया विदाहिनः ॥

अर्थ–सूचीपत्रके नीलपोर–नैपाल और दीर्घपत्र यह चारोंप्रकारकी ईख–बादी, कफपित्तनाशक, कषेली और दाहजनक है ।

इक्षुमूलादिगुणाः ।

इक्षुमूलोऽतिमधुरो मध्ये मधुर एव च ।
ग्रन्थौ त्वच्यग्रभागे च विज्ञेयो लवणो रसः ॥

अर्थ–ईखके मूलमें मधुररस और मध्यभागमेंभी मधुररस तथा ग्रन्थि, त्वचा और अग्रभागमें लवणरस रहता है ।

बालयुवावृद्धेक्षुगुणाः ।

बालइक्षुः कफं कुर्यान्मेदोमेहकरश्च सः ।
युवा तु वातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्च पित्तनुत ॥

रक्तपित्तहरो वृद्धः क्षतहृद्बलवीर्य्यकृत् ।

अर्थ-बाल अर्थात् कच्ची ईख-कफकारी, मेदजनक, प्रमेहकारक, युवा अर्थात् कुछ २ पकी और कुछ २ कच्ची ईख-वातनाशक, स्वादिष्ठ, किञ्चित् तीक्ष्ण और पित्तनाशक है। वृद्ध अर्थात् पकी ईख-रक्तपित्तनाशक, क्षतनिवारक और बलवीर्य्यकारक है।

दन्तनिष्पीडितेक्षुगुणाः।

दन्तनिष्पीडितस्येक्षो रसः पित्तास्रनाशनः ।
शर्करासमवीर्य्यः स्यादविदाही कफप्रदः ॥

अर्थ-दाँतोंसे चूसीहुई ईखका रस-रक्तपित्तनाशक, शर्कराकी समान वीर्य्यवाला, दाहरहित और कफकारी है।

अन्यच्च।

वृष्यः शीतोस्रपित्तं शमयति मधुरो बृंहणः श्लेष्मकारी स्निग्धो हृद्यः सरश्च श्रमशमनपटुर्मूत्रवृद्धिं करोति। मेदोवृद्धिं विहन्याच्छमयति च मलं तर्पणश्चेंद्रियाणां दन्तैर्निष्पीड्य साक्षादमृतमयरसो भक्षयेदिक्षुदण्डः ॥

अर्थ-दाँतोंसे चूसीहुई ईखका रस-शीतल, रक्तपित्तनिवारक, मधुर, पुष्टिकारी, कफकारक, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, सारक, श्रमकोहरनेवाला, नमकीन, मूत्रवर्द्धक, मेदवृद्धिकोशान्तिकरनेवाला, त्रिदोषनाशक इन्द्रियोंको तृप्ति करनेवाला और अमृतोपम है।

अपिच।

दन्तैर्निपीडितरसो रुचिकृद्गुरुश्च सन्तर्पणो बलकरः कफकृच्छ्रमघ्नः। विष्टम्भकृच्च रुधिरस्य तथैवपित्तदोषं निहन्ति सकल वमनञ्च शोषम् ॥

अर्थ-दाँतोंसे चूसीहुई ईखका रस-रुचिकारी, भारी, तृप्तिकारी, बलकारी, कफकारी, श्रमहारी, विष्टम्भकारी, रुधिरके दोषोंको दूर करनेवाला, पित्तको हरनेवाला वमननिवारक और शोषहारक है।

यन्त्रनिष्पीडितेक्षुरसगुणाः।

मूलाग्रजन्तुजग्धादिपीडनान्मलसंकरात् ।

किञ्चित्कालं विधृत्वा च विकृतिं याति यान्त्रिकः ॥
तस्माद्विदाही विष्टम्भी गुरुः स्याद्यान्त्रिको रसः ।

अर्थ-ईखकी जड और अगला भाग जो कीडोंसे खायाहुवा होताहै और गाँठ ये सब कोलूमें पेली गईहों उनके मैल आदिके मिलनेसे तथा कुछ अधिक समयतक रक्खारहनेसे वह कोलूका पिला हुवा रस बिगडजाताहै अर्थात् खट्टा होजाताहै वह दूषित रस-दाहजनक, मलवर्द्धक, और भारी होताहै ।

पर्य्युषितेक्षुरसगुणाः ।

रसः पर्य्युषितो दुष्टो ह्यम्लो वातापहो गुरुः ।
कफपित्तकरः शोषी भेदनश्चातिमूत्रलः ।

अर्थ-ईखका बासी रस-अच्छा नहीं होता, खट्टा, वातनाशक, भारी, कफपित्तकारक, शोषजनक भेदक और मूत्रजनक है ।

इक्षुपक्वरसगुणाः ।

पक्वो रसो गुरुः स्निग्धः सुतीक्ष्णः कफवातनुत् ।
गुल्मानाहप्रशमनो किञ्चित्पित्तकरः स्मृतः॥(भा०प्र०)

अर्थ-ईखका पक्का अर्थात् अग्निपै औटाया हुवा रस-भारी, स्निग्ध, तीक्ष्ण, कफवातनाशक, गुल्म और अफारेको हरनेवाला और कुछेक पित्तकारक है ।

इक्षुविशेषगुणाः ।

भक्षितो भोजनात्पूर्वं चेक्षुः पित्तस्य शामकः ।
भोजनोत्तरकाले च भक्षितो वातकोपनः ॥
भोजने भक्षितश्चासावतिजाड्यकरो मतः ।(नि०र०)

अर्थ-भोजनसे पहिले भक्षणकरीहुई ईख-पित्तनिवारक है । भोजनसे पीछे खाईहुई ईख वातको कुपित करे है और भोजनके मध्यमें खाईहुई ईख अत्यन्त जडताकारक है ।

इक्षुरसविकाराणां गुणाः ।

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशनाः ।
गुरवो मधुरा बल्याः स्निग्धा वातहराः सराः ॥

वृष्या मोहहराः शीता बृंहणा विषहारिणः ।

अर्थ-इक्षुविकार अर्थात् ईखके रसके बनाये हुये पदार्थ-तृषा, दाह, मूर्च्छा, रक्तपित्त, वात, मोह और विषको हरे हैं, भारी, मधुर, बलकारी, स्निग्ध, सारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, और पुष्टिकारक हैं ।

फाणितलक्षणंगुणाश्च ।

इक्षो रसस्तु यः पक्वः किञ्चिद्गाढो बहुद्रवः । स एवेक्षुविकारेषु ख्यातः फाणितसंज्ञया ॥ फाणितं गुर्व्वभिष्यंदि बृंहणं कफशुक्रकृत् । वातपित्तश्रमान्हन्ति मूत्रवस्तिविशोधनम् (भा० प्र०)

अर्थ-कुछेक गाढा और बहुत पतला ऐसे पकायेहुये ईखके रसको फाणित कहते हैं, फाणित-भारी, अभिष्यन्दी, पुष्टिकारक, कफकारी, शुक्रजनक, तथा वात, पित्त, श्रम, इनको दूर करे है और मूत्र तथा वस्तिशोधक है ।

मत्स्यण्डीलक्षणं गुणाश्च ।

इक्षो रसो यः संपक्वो घनः किञ्चिद्द्रवान्वितः । मन्दं यत्स्पन्दते तस्मात्तन्मत्स्यण्डी निगद्यते ॥ मत्स्यण्डी भेदिनी बल्या लघ्वी पित्तानिलापहा । मधुरा बृंहणी वृष्या रक्तदोषापहा मता ॥

अर्थ-ईखका रस जो पकायाहुवा गाढा कुछ पतला और थोडा पिघलता है इसलिये इसको मत्स्यण्डी कहते हैं । मत्स्यण्डी-भेदक, बलकारक, हलकी, वातपित्तनाशक, मधुर, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक और रुधिरके दोषोंको हरे है ।

गुडनामानि ।

गुडः स्यादिक्षुसारस्तु मधुरो रसपाकजः ।
शिशुप्रियः सितादिः स्यादरुणो रसजः स्मृतः ॥

अर्थ-गुड, इक्षुसार, मधुर, रसपाकज, शिशुप्रिय, सितादि अरुण, रसज, (खण्डज, द्रवज, सिद्ध, मोदक, अमृतसारज, इक्षुरसक्काथ, गण्डोल, मधुबीजक, गुल, स्वादुखण्ड, स्वादु) ।

गुडलक्षणम् ।

इक्षो रसो यः संपक्वो जायते लोष्ठवद्दृढः ।
स गुडो गौडदेशे तु मत्स्यंड्येव गुडो मतः ॥ (भा० मि०)

अर्थ–ईखके रसको पकाकर मट्टीके डेलेकी समान दृढ करलेवे । उसको गुड कहते हैं । किन्तु गौडदेशमें मत्स्यण्डीको गुड कहतेहैं ।

संस्कृतभाषामें	गुड ।
हिन्दीभाषामें	गुड ।
वंगभाषामें	गुड ।
मराठीभाषामें	गूळ ।
गुजरातीभाषामें	गोल ।
कर्णाटकीभाषामें	होसवेल्लंद हेलरु, जुनोहलेयवेल्ल ।
तैलङ्गीभाषामें	वेल्लामु ।
इंग्रेजीभाषामें	ट्रीकलमोलासीस । Treacle-Molasseas
फारसीभाषामें	कंदेसिया ।
अरबीभाषामें	कंदेअस्वद ।

गुडगुणाः ।

गुडो वृष्यो गुरुः स्निग्धो वातघ्नो मूत्रशोधनः ।
नातिपित्तकरो मेदःकफक्रिमिबलप्रदः (राजवल्लभ)

अर्थ–गुड– वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, वातनाशक, मूत्रशोधक, पित्तकारक नहीं तथा मेद, कफ, कृमि और बलकारक है ।

पुरातनगुडगुणाः ।

पित्तघ्नः पवनापहो रुचिकरो हृद्यस्त्रिदोषापहः ।
संयोगेन विशेषतो ज्वरहरः सन्तापशान्तिप्रदः ।
विण्मूत्रामयनाशनोऽग्निजननः कण्डूप्रमेहान्तकृत्
स्निग्धः स्वादुरसो लघुःश्रमहरःपथ्यःपुराणोगुडः॥ (रा.नि.)

अर्थपुराना–गुड–पित्तनाशक, वातविनाशक, रुचिकारक हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ विशेष करके ज्वरनाशक, सन्तापको शान्ति करनेवाला, मल और मूत्ररोगनाशक, अग्निप्रदीपक, कण्डूनाशक, प्रमेहनिवारक, स्निग्ध, स्वादुरसान्वित, हलका, श्रमनाशक और पथ्य है ।

नूतनगुडगुणाः ।

गुडो नवःकफश्वासकृमिकारोऽग्निमान्द्यकृत् । श्लेष्माणमाशु वि-

निहन्तिसदार्द्रकेण पित्तंनिहन्ति च तदेव हरीतकीभिः।शुण्ठ्या समं हरतिवातमशेषमित्थंदोषत्रयक्षयकराय नमोगुडाय।(भा.प्र.

अर्थ-नवीनगुड-कफ, श्वास, और कृमिको उत्पन्न करेहै तथा मंदाग्निजनक है।सदैव अदरखके साथ सेवन किया हुवा गुड-कफको हरताहै, हरडके साथ सेवन कियाहुवा गुड-पित्तको दूर करता है और सोंठके साथ खायाहुवा गुड-सर्व वातके दोषोंको नष्ट करताहै अतएव हे त्रिदोषविनाशक गुड ! तुमको नमस्कार है।

अन्यच्च।

नूत्नो गुडो मधुः क्षारो गुरुश्चोष्णश्च संमतः। रक्तरुक्पित्तदोषाणामहितो मूत्रशोधनः ॥ वृष्यः स्निग्धः सरः प्रोक्तः कृमिमेदकरो मतः। शुक्रमज्जामांसरक्तकारकश्चाग्निदीपनः ॥ पित्तलो भेदको वातश्वासकासकफापहः। स शुद्धो रक्तकफकृत्स्वादुः स्निग्धश्च वातहा।मलमूत्रे यथामार्गं प्रवर्तयति चांजसा।स चैकहायनो रुच्यः पथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मूत्रविष्ठाशुद्धिकरो सद्यः स्वादुश्च पौष्टिकः। रसायनो लघुः स्निग्धो वृष्यो मेहश्रमापहः॥ त्रिदोषपण्डुसन्तापपित्तवातापहो मतः। संयोगेन ज्वरहरहृद्यश्चाजीर्णो लघुः स्मृतः ॥ सर्वदोषहरः श्रेष्ठः पुराणेषु च उत्तमः। अरिष्टादिषु योज्यः स्यादूर्ध्वं हीनगुणः स्मृतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-नवीनगुड-मधुर, खारी, भारी, गरम, रक्तरोगी और पित्तरोगियोंको अहितकारी है, मूत्रशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, चिकना, कुछ दस्तावर, कृमिकारक, मेदजनक, शुक्र, मज्जा, मांस और रक्तकारक है, अग्निप्रदीपक, पित्तजनक, भेदक तथा वात, श्वास, खाँसी और कफनाशक है, शुद्धकिया हुवा गुड-रक्तकारक, कफकारी, स्वादिष्ठ, चिकना, वातनाशक और मलमूत्रको यथामार्ग प्रवर्त्तानेवाला है, एकवर्षका पुराना गुड रुचिकारक पथ्य, अग्निप्रदीपक, मूत्र और मलको शुद्ध करनेवाला, हृदयको हितकारी, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक, रसायन, हलका, स्निग्ध, वृष्य तथा प्रमेह,

श्रम, त्रिदोष, पाण्डु, सन्ताप, पित्त और वातनाशक है, और किसीके संयोगसे ज्वरनाशक है, तीनवर्षका पुराना गुड-हलका, सर्वदोषनाशक, उत्तम, सर्वप्रकारके पुराने गुणोंमें श्रेष्ठ है, इसको अरिष्टादिकोंमें डालना चाहिये। तीन वर्षसे अधिक पुराना गुड हीनगुणवाला होजाताहै ।

गुदामये कामलशोषमेहे गुल्मामये पाण्डुहलीमके च ।
वाते सपित्तासृजि राजरोगे रुचिप्रदो रोगहरो गुरुः स्यात्॥
कासे शोषे गुडः श्रेष्ठश्चान्यत्रापि हितो मतः ।
योगयुक्तो विशेषेण हितो गुणगणालयः ॥ (हा० सं०)

अर्थ-गुड-गुदारोग, कामलारोग, शोष, प्रमेह, गुल्मरोग, पाण्डुरोग, हलीमक, वात, रक्तपित्त और राजरोगको हरेहै तथा रुचिको उत्पन्न करेहै। कास और श्वासरोगमें गुड हितकारीहै। और अन्यान्य रोगोंमेंभी हितकारक है और किसी अनुपानके साथ नानाप्रकारके रोगोंको हरनेवाला है।

खण्डनामामि ।

खण्डे रसोद्भवा शुक्ला सुपिष्टा पाण्डुरा तथा ॥

अर्थ-खण्ड, रसोद्भवा, शुक्ला, सुपिष्टा, पाण्डुरा, (पंशुलका)

संस्कृतभाषामें	खण्ड ।	
हिन्दीभाषामें	खांड ।	
बंगभाषामें	खाँड ।	
मराठीभाषामें	साखर ।	
गुजरातीभाषामें	खांड ।	
कर्णाटकीभाषामें	मालखंड ।	
तैलिंगीभाषामें	पांचदारा ।	
इंग्रेजीभाषामें	श्युगर ।	Sugar
लैटिन्भाषामें	साक्केरम् ।	Sacoharum
फारसीभाषामें	शक्कर ।	
अरबीभाषामें	शक्कर ।	

खण्डगुणाः ।

वातपित्तहरं शीतं स्निग्धं बल्यं मुखप्रियम् ।
चक्षुष्यं श्लेष्मकृच्चोक्तं खंडं वृष्यतमं मतम् ॥

अर्थ-खांड-वातपित्तनाशक, शीतल, स्निग्ध, बलकारक, मुखप्रिय, नेत्रोंको हितकारी, कफकारी और वीर्य्यवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

वातं निवारयति पित्तमपाकरोति तृष्णां छिनत्ति विनिहन्ति च मोहमूर्च्छाम् ॥ शोषं विघट्टयति तर्पयतीन्द्रियाणि शीतः सदा स मधुरः खलु शुद्धखण्डः ॥

अर्थ-खांड-वातनिवारक, पित्तहारक, तृषानाशक, मोह, मूर्च्छा और शोषको हरनेवाली, इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाली, शीतल और मधुर है

गुडखण्डगुणाः ।

गुडखण्डश्च मधुरः सितश्च वातपित्तहा ।
किञ्चिच्छीतगुणोपेतो बल्यो वृष्यो रुचिप्रदः ॥

अर्थ-गुडकी खांड अर्थात् शक्कर-मधुर, सफेद, वातपित्तनाशक किञ्चित् शीतगुणयुक्त, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक और रुचिकारक है ।

शर्करानामानि ।

शर्करा मीनाण्डी शुक्ला सिता च वालुकात्मजा ।
अहिच्छत्रा तु सिकता शुद्धा शुभ्रा सितोपला ॥

अर्थ-शर्करा, मीनाण्डी शुक्ला, सिता, वालुकात्मजा । अहिच्छत्रा, सिकता, शुभ्रा, शुद्धा, सितोपला, (शुक्लोपला, शार्क, श्वेता, मत्स्यण्डिका, गडोद्भवा)।

संस्कृतभाषामें	शर्करा ।	
हिन्दीभाषामें	बूरा, मिश्री, बतासे, कंद ।	
वंगभाषामें	चिनी, मिछरी ।	
मराठीभाषामें	पिठीसाखर, खडीसाखर ।	
गुजरातीभाषामें	शाकर ।	
कर्णाटकीभाषामें	गुडगुडातुगीतु।	
तैलिङ्गीभाषामें	फाटिकेपांचादारा ।	
इंग्रेजीभाषामें	प्युरिफाईड श्युगरकेंडी	Purified Sugor Candy
लैटिन्भाषामें	साक्करम्प्युरिफिकिटम्।	Sacekarum Purificatum
फारसीभाषामें	खडीशक्कर नबात ।	
अरबीभाषामें	सक्कर अबियद ।	

शर्करागुणाः ।

शर्करा शीतवीर्य्या च विपाके मधुरा सरा ।
दाहतृट्छर्द्दिमूर्च्छास्रकृमिकोपविनाशिनी ॥ (गणनि ०)

अर्थ-शर्करा (बूरा)-शीतवीर्य्य, विपाकमें मधुर, सारक तथा दाह, तृषा, वमन, मूर्च्छा, रुधिरविकार और कृमिरोगको नष्ट करेहै ।

मूर्च्छामोहतृषास्यशोषशमनी दाहज्वरध्वंसिनी श्वासच्छर्दिमदात्ययक्लमहरी हृद्या च सन्तर्पणी। क्षीणे रेतसि पावके च विषमे क्षीणे क्षते दुर्बले दुर्वातेपि च रक्तपित्तजगदे सेव्या सदा शर्करा॥ इक्षुजेषु विकारेषु सर्वेष्वपि मनोहरा। समस्तरोगशमनी तवराजाख्यशर्करा ॥ (सुषेणदेव)

अर्थ-मिश्री-मूर्च्छा, मोह और तृषाके शोषको शान्ति करनेवाली, दाहज्वरनाशक, श्वास, वमन, मदात्यय और क्लमको हरनेवाली, हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक तथा क्षीणवीर्य्य, विषमाग्नि, क्षीण, क्षत, दुर्बल, वातरक्त और रक्तपित्तरोगमें सदैव सेवन करनी चाहिये । सर्व प्रकारके इक्षुविकारोंमें तवराजशर्करा श्रेष्ठ और सर्व प्रकारके रोगोंको शान्ति करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

शर्करा मधुरा शीता बल्या वृष्या सरा मता। स्निग्धा कफकरी चैव क्षयं कासं तृषां जयेत्॥ विषदोषं मदं श्वासं मोहं मूर्च्छां वमिं तथा। अतिसारं रक्तदोषं पित्तं वातं कृमींस्तथा॥ भ्रान्तिं दाहं श्रमं चार्शं नाशयेदिति कीर्तिता । यथा यथा च धौता स्यात्तथा गुणकरी मता ॥ खण्डोपला च चक्षुष्या स्निग्धा धातुविवर्द्धिनी। मुखप्रिया च मधुरा शीता वृष्या बलप्रदा ॥ सरेन्द्रियतृप्तिकरी लघ्वी तृष्णाविनाशिनी। क्षतं क्षयं रक्तपित्तं मोहं मूर्च्छां कफं तथा ॥ वातं पित्तं च दाहं च शोषं चव विनाशयेत्। पौण्ड्रेक्षुजा शर्करा तु स्निग्धा हितकरी मता ॥ वृष्या क्षतक्षयं चैव क्षयं चैवारुचिञ्जयेत् । वंशेक्षुसम्भवा बल्या चक्षु

व्या धातुवर्द्धिनी ॥ रूक्षा च मधुरा चैव श्यामेक्षूणां बलप्रदा । श्रमघ्नी तर्पणी रुच्या रसेक्षुणां च शीतला ॥ स्निग्धा कान्तिकरी प्रोक्ता रक्तेक्षोः पित्तनाशिनी । (नि. र.)

अर्थ-शर्करा-बूरा-चीनी-मधुर, शीतल, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, सारक, स्निग्ध, कफकारक, तथा क्षय, खाँसी, तृषा, विषविकार, मद, श्वास, मोह, मूर्च्छा, वमन, अतिसार, रुधिरविकार, पित्त, वात, कृमि, भ्रम, दाह, श्रम और बवासीरको दूर करे है । यह जितनी२अधिक सफेद होगी उतनी२ ही अधिक गुणवाली है। मिश्री व कन्द-नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, मुखप्रिय, मधुर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, सारक, इन्द्रियांको तृप्त करनेवाली, हलकी, तृषानाशक तथा क्षत, क्षय, रक्तपित्त, मोह, मूर्च्छा, कफ, वात, पित्त, दाह और शोषको हरनेवाली है । पुण्ड्रकादि ईखोंकी-बूरा-स्निग्ध, हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, क्षतक्षय, क्षय और अरुचिको हरेहै । वंशक नामवाली ईखकी खांड-बलकारी, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक रूखी और मधुर है । काली ईखकी चीनी-बलकारक, श्रमनाशक, तृप्तिकारक, रुचिजनक है । रसेक्षुनामवाली ईखकी चीनी-शीतल, स्निग्ध और कान्तिजनक है। लालईखकी-बूरा-पित्तनाशक है ।

लसीकादीनामुत्तरोत्तरं नैर्मल्यादिनागुणवत्त्वमाह ।

लसीका फाणितगुडं खण्डमत्स्याण्डका सिता ।
निर्म्मला लघवो ज्ञेयाः शीतवीर्य्या यथोत्तरम् ॥
यथा यथैषां नैर्मल्यं गुणवत्स्यात्तथा तथा । (रा० व०)

अर्थ-लसीका (सीरा). फाणित (राब), गुड, खांड, चीनी और मिश्री यह क्रमसे निर्मल है, हलकी और शीतवीर्य्य है अर्थात् सीरेसे राब, राबसे गुड, गुडसे खांड, खांडसे चीनी और चीनीसे मिश्री-निर्मल, हलकी और शीतवीर्य्य है इनमें जो जो अधिक निर्मल होतीहैं उन उनकेही अधिक गुण जानने ।

यावनालशर्करानामानि ।

यावनाली हिमोत्पन्ना हिमानी हिमशर्करा ।
क्षुद्रशर्करिका क्षुद्रा गुडजा जलबिन्दुजा ॥

अर्थ-यावनाली,हिमोत्पन्ना,हिमानी,हिमशर्करा, क्षुद्रशर्करिका, क्षुद्रा, गुडजा, जलबिन्दुजा ।

तद्गुणाः ।

क्षुद्रा तु शर्करा किञ्चिदुष्णा तिक्तातिपिच्छला ।
स्निग्धा च मधुरा रुच्या सरा दाहविनाशिनी ॥
वातपित्तं रक्तदोषं नाशयेदिति कीर्त्तिता । (नि॰ र॰)

अर्थ-यावनालशर्करा (सीरेखिस्त)-किञ्चित् गरम, कडवी, अत्यन्तपिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, रुचिकारक, सारक, दाहनाशक तथा वात, पित्त और रुधिरके दोषोंको हरे है ।

यवासशर्करागुणाः ।

यवासशर्करा शीता रसे स्वाद्वी कषायका ।
वृष्या तिक्ता च मधुरा भ्रमं पित्तं तृषां जयेत् ।(रा॰नि॰)

अर्थ-यवासशर्करा (तुरंजबीन)-शीतल, स्वादिष्ठ, कषेली, वीर्य्यवर्द्धक, कडवी, मधुर तथा भ्रम, पित्त और तृषानाशक है ।

अन्यच्च ।

यवासशर्करा ज्ञेया बृंहणी पित्तहारिणी । ज्वरहृद्दीपनी शीता रेचनी च पुरातनी ॥ नार्य्याश्चापन्नसात्वया दुर्बलस्य तथा शिशोः । रेचनार्थं प्रयोज्येयं क्षीणस्य स्थविरस्य च ॥ (आ॰ सं॰)

अर्थ-यवासशर्करा (तुरंजबीन)-पुष्टिकारक, पित्तनाशक,ज्वरहारक, अग्निदीपक,शीतल और यह पुरानी दस्तावर है । गर्भवती स्त्री,दुर्बल बालक,क्षीण और वृद्धमनुष्योंको इससे दस्त कराने चाहिये।

मधुशर्करागुणाः ।

मधुजा शर्करा बल्या गुर्वी वृष्या च शीतला । मधुरा तर्पणी रूक्षा तुवरा छेदका तथा ॥ पाके स्वाद्वी वमिं दाहं पित्तं च अतिसारकम् । रक्तपित्तं तृषां पित्तं कफं चैव विनाशयेत् ॥
(नि॰ र॰)

अर्थ-मधुकी खांड-बलकारक,भारी, वीर्य्यवर्द्धक,शीतल, मधुर, तृप्तिकारक, रूखी,कषेली,छेदक,पचनेमें स्वादिष्ठ तथा वमन, दाह, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त, तृषा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुष्पशर्करागुणाः।

पुष्पोद्भवा शर्करा तु स्वाद्वी हृद्या च शीतला । गुर्वी पित्तं रक्तदोषं नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥ यावन्त्यः शर्कराः प्रोक्ताः सर्वा दाहप्रणाशनाः । रक्तपित्तप्रशमनाश्छर्द्दिमूर्च्छातृषापहाः॥

अर्थ-पुष्पशर्करा अर्थात् फूलसे बनाईहुई चीनी-स्वादिष्ठ,हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, पित्त और रुधिरके विकारोंको हरे है । जितनी प्रकारकी चीनी हैं वे सर्व प्रकारकी दाहनाशक रक्तपित्तको शान्त करनेवाली तथा वमन, मूर्च्छा और तृषाको हरनेवाली हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे इक्षुवर्गः समाप्तः ॥ २० ॥

अथ सन्धानवर्गः ।

काञ्जिकनामानि ।

काञ्जिकं कञ्जिकं काञ्जी कुण्डलं कुण्डगोलकम् ।
धान्यमूलं धान्ययोनिः कुल्माषं कुल्माभिशुतम् ॥

अर्थ-काञ्जिक, काञ्जिक, काञ्जी,कुण्डल, कुण्डगोलक, धान्यमूल, धान्ययोनि, कुल्माष, कुल्माभियुत, (आरनालक, सौवीर,कुल्माष, अभियुत, आवन्तिसोम,धान्याम्ल,कुञ्जल, सिद्धजल, सिद्धसलिल, कांचिक,काञ्चिका, भक्तवारि, तुषाम्बु, सन्धान, गृहाम्ल, महारस, तुषोदक, शुक्तचुक्र, धातुघ्न, उन्नाह, रक्षोघ्न, सुवीराम्ल, पङ्कवारि, वीर, अभिषव, अम्लसारक) ।

काञ्जिकलक्षणं गुणाश्च ।

संधितं धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः । काञ्जिकं भेदि तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु॥दाहज्वरहरं स्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् । माषादिवटकैर्यत्तु क्रियते तद्गुणाधिकम् ॥ लघु वातहरं तत्तु रोचनं पाचनं परम्। शूलाजीर्णविबन्धामनाशनं बस्तिशोधनम् ॥(भा० प्र०)

अर्थ-धान्यादिकोंके मांडको कुछ दिनों धरारहनादेवे उसको कांजी

कहते हैं कांजी–भेदक,तीक्ष्ण, गरम, रोचन, पाचक, हलकी, शरीरमें लगानेसे दाह और ज्वरको दूर करे और पीनेसे वातकफको हरे है । उडद आदिके बडोंकी बनाईहुई कांजी अधिक गुणवाली है हलकी, वातनाशक, रोचन, पाचन, तथा शूल, अजीर्ण,विबन्ध और आमनाशक और बस्तिशोधक है ।

निषेध ।

शोषे मूर्च्छाज्वरार्तानां भ्रमके दुर्विषार्दिते । कुष्ठानां रक्तपित्तानां काञ्जिकं न प्रशस्यते॥पाण्डुरोगे राजयक्ष्मण्यथ शोफातुरेषु च । क्षतक्षीणे परिश्रांते मन्दज्वरनिपीडिते ॥नरे नैव हितं प्रोक्तं काञ्जिकं दोषकारकम् ॥ (हारी० सं०)

अर्थ–शोष, मूर्च्छा, ज्वरसे पीडित, भ्रम, विषसे पीडित, कुष्ठ, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, राजयक्ष्मा, सूजनसे पीडित, क्षतक्षीण, मार्गचलनेसे थकेहुये और मन्दज्वरसे पीडित मनुष्योंको कांजी हितकारी नहीं किन्तु दोषकारी है ।

काञ्जिकविशेषगुणाः।

शूलवातार्दितानान्तु तथा जीर्णविबन्धिनाम् ।
श्रेष्ठं प्रोक्तं तथाम्लञ्च गुणाधिक्यं नरेषु च ॥ (हा० सं०)

अर्थ–शूल और वातसे पीडित तथा अजीर्ण और विबन्ध रोगवाले रोगियोंको कांजी अत्युत्तम है और अनेक गुण करे है ।

अन्यच्च ।

नूतनं मृन्मयं कुम्भं कटुतैलेन लेपयेत्।निर्मलं च जलं तस्मिन्राजिकाजाजिसैन्धवम्॥हिंगुविश्वानिशा चैव ओदनं वंशपल्लवाः । औदनस्य कुलित्थानां जलं वटकखांडवम् ॥सर्वं तस्मिन्निधायाथ मुद्रां दत्त्वा दिनत्रयम् । रक्षयित्वा ततो वस्त्रे गालितं काञ्जिकं मतम्॥तद्भेदकं वस्तिशुद्धिकरमुष्णं च तीक्ष्णकम्। रुच्यमम्लं पाचकं च लघु लेपे च दाहकम्॥ज्वरनाशकरं प्रोक्तं तत्पीतं कफवातहम्।शूलं शोथं भ्रमं दाहं मूर्च्छां पित्तज्वरं तथा ॥ अजीर्णाध्मानविड्स्तम्भानामनाशकरं मतम्।

काञ्जिके संस्थिताश्चैव वटका रुचिदा मताः॥शीताः कफकरा दाहशूलाजीर्णविनाशकाः। नेत्ररोगे हिता नोक्ता ऋषिभिः पाककोविदैः। (इति रत्नाकरे)

अर्थ-प्रथम कोरा मट्टीका घडा लेकर उसके भीतर तथा ऊपर तेलका लेप करदे फिर उसमें निर्मल स्वच्छ जल भर देवे उस जलमें राई, जीरा, सैंधानोंन, हींग, सोंठ, हलदी, भात, बांसके कोमल पत्ते, कुलथीके भातका जल और बडोंके टुकडे यह सब पदार्थ डालकर मुख बंद करके तीनदिनतक बंद किया रक्खा रहने देवे इसके उपरान्त उसको खोलकर वस्त्रसे छानले उसको कांजी कहते हैं। वह कांजी-भेदक, बस्तिशोधक, गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक, खट्टी, पाचक, हलकी, इसका लेप करनेसे दाह और ज्वर दूर होता है और यह पीनेसे कफ, वात, शूल, सूजन, भ्रम, दाह, मूर्च्छा, पित्तज्वर, अजीर्ण, आध्मान और मलस्तम्भको दूर करे है। कांजीमें पडेहुए बडे-रुचिकारक, शीतल, कफकारी, दाह, शूल और अजीर्णनाशक हैं और नेत्ररोगोंमें हितकारी नहीं हैं।

तुषोदकलक्षणं गुणाश्च ।

तुषोदकं यवैरामैः सतुषैः शकलीकृतैः।
तुषाम्बु दीपनं हृद्यं पाण्डुक्रिमिगदापहम् ॥
तीक्ष्णोष्णं पाचनं पित्तरक्तकृद्वस्तिशूलनुत्॥(भा० प्र०)

अर्थ-कच्चे तुषसहित जवोंको कूटकर भिजोदे जब उसमें खट्टापन होजाय तब वह तुषोदक होजाता है। तुषोदक-दीपन, हृदयको हितकारी, पाण्डु और कृमिरोगको दूर करे, तीक्ष्ण, गरम, पाचक तथा रक्तपित्तकारक और वास्तिकी पीडाको हरे है।

अन्यच्च।

तुषोदकं वातपित्तहरन्तु रक्तपित्तकरं प्रभेदकं च। विपाचनं स्याज्जरणं क्रिमिघ्नमजीर्णहन्तृ कटुकं च पाके ॥ (हा० सं०)

अर्थ-तुषोदक-वातपित्तनाशक, रक्तपित्तकारक, दस्तावर, पाचक, कच्चे अन्नको भस्म करता है, कृमिनाशक, अजीर्णनिवारक और पचनेमें चरपरा है।

सौवीरनामानि।

सौवीरकं सुवीराम्लं यवोत्थं गोधूमसम्भवम् ।

यवाम्लजं तुषोत्थं च तुषोदकश्चापि कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सौवीरक, सुवीराम्ल, यवोत्थ, गोधूमसम्भव, यवाम्लज, तुषोत्थ, तुषोदक ।

अस्य लक्षणं गुणाश्च ।

सौवीरन्तु यवैरामैःपक्वैर्वा निस्तुषैः कृतम्। गोधूमैरपि सौवीरमाचार्य्याः केचिदूचिरे ॥ सौवीरन्तु ग्रहण्यर्शःकफघ्नं भेदि दीपनम् । उदावर्त्ताङ्गमर्दास्थिशूलानाहेषु शस्यते॥(भा० प्र०)

अर्थ-कच्चे वा पक्के जौओंके तूर अलग करदेवे,फिर उसकी कांजी बनावे उस कांजीको सौवीर कहते हैं । कोई वैद्य कहते हैं कि, कच्चे अथवा पक्के गेहूँसे सौवीर बनाई जाती है।सौवीर-संग्रहणी,बवासीर और कफनाशक है, दस्तावर, दीपन तथा उदावर्त्त, अंगका टूटना, अस्थियोंमें पीडा और अफारेमें हितकारी है ।

अन्यच्च ।

सौवीरकं चाम्लरसं केश्यं मस्तकदोषजित् ।
जराशैथिल्यहरणं बल्यं सन्तर्पणं परम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सौवीर-खट्टी,केशोंको हितकारी, मस्तकरोगनाशक, जरा और शिथिलताको हरनेवाली, बलकारी और तृप्तिकारक है ।

आरनाललक्षणं गुणाश्च ।

आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः ।
पक्वैर्वा संधितैस्तत्तु सौवीरसदृश गुणैः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-विना तूरके कच्चे गेहूँको भिजोकर आरनाल नामवाली कांजी बनाई जाती है । वा पक्के गेहूँसे बनाईहुईकोभी आरनाल कहते हैं । आरनालके गुण सौवीरकी समान जानने ।

आरनालकगुणाः ।

जातं यवाम्लं कटुकं विपाके वातामयश्लेष्महरं सरक्तम् ।
पित्तप्रकोपं कुरुते सभेदि विदूषणं पित्तगदासृजञ्च ॥

अर्थ-जौसे बनाईहुई कांजी-पचनेमें कटु, वातनाशक, कफनिवारक,रक्त और पित्तको कुपित करनेवाली,दस्तावर और रक्तपित्तको दूषित करे है ।

सन्दीपनं शूलहरं रुचिप्रदं गोधूमजातं कथितं कषायम् ।

सन्दीपनं स्याज्जरणं कफघ्नं समीरदोषं हरते ततोऽपि॥ (हा॰स॰)

अर्थ-गेहूँसे बनाईहुई कांजी-अग्निको दीपन करनेवाली, शूलको हरनेवाली, रुचिको करनेवाली, कषेली, भोजनको भस्म करनेवाली, कफनाशक और वातके विकारोंको हरे है ।

धान्याम्ललक्षणं गुणाश्च।

धान्याम्लं शालिचूर्णश्च कोद्रवादिकृतं भवेत् ।
धान्याम्लं धान्ययोनित्वात्प्रीणनं लघु दीपनम् ॥
अरुचौ वातरोगेषु सर्वेष्वस्थापनेषु च ।

अर्थ-शालिधानोंके चूर्ण अथवा कोदोंके चूनसे जो कांजी बनाई जाती है उसको धान्याम्ल कहते हैं । धान्याम्ल-प्रीणन, हलकी, अग्निप्रदीपक तथा सर्वप्रकारके वातरोग और अरुचिरोगमें देनी चाहिये ।

शिण्डाकीलक्षणं गुणाश्च ।

शिण्डाकी राजिकायुक्तैः स्यान्मूलकदलद्रवैः ।
सर्षपस्वरसैर्वापि शालिपिष्टकसंयुतैः ॥
शिण्डाकी रोचनी गुर्वी पित्तश्लेष्मकरी स्मृता ॥

अर्थ-मूलीके पत्तोंके रसमें राई डालकर जो कांजी बनती है उसको शिण्डाकी कहते हैं । अथवा सरसोंके रसमें शालिधानोंका चून डालकर जो कांजी बनाइ जाती है उसकोभी शिण्डाकी कहते हैं । शिण्डाकी-रुचिकारक भारी और पित्तकफकारी है ।

शुक्तलक्षणं गुणाश्च ।

कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च । यत्र द्रव्येऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते ॥ शुक्तं कफघ्नं तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु । पाण्डुक्रिमिहरं रूक्षं भेदकं रक्तपित्तकृत् ॥

अर्थ-कंदमूल और फलादिकमें नोंन और तेल डालकर जो द्रव्य बनायाजाता है उसको शुक्त अर्थात् सिर्का कहतेहैं, सिर्का-कफनाशक, तीक्ष्ण गरम, रोचन, पाचक, हलका, पाण्डु और कृमिरोगनाशक, रूखा, दस्तावर और रक्तपित्तकारक है ।

सन्धानलक्षणं गुणाश्च ।

कन्दमूलफलाढ्यं यत्तत्तु विज्ञेयमासुतम् ।

तद्रुच्यं पाचनं वातहरं लघु विशेषतः ॥

अर्थ-कंद, मूल फलादिकोंमें राई आदिका चूर्णडालकर जो द्रव्य बनाया जाता है उसको आचार कहते हैं । आचार-रुचिकारक, पाचक, वातनाशक और विशेषकरके हलका है ।

मद्यनामानि ।

मदिरा प्रसवा हाला चपला च हलिप्रिया ।
अमृता वीरा मेधावी माधवी कापिशायनी ॥

अर्थ-मदिरा, प्रसवा, हाला, चपला, हलिप्रिया, अमृता, वीरा, मेधावी, माधवी, कापिशायनी (सुरा, मद्य, परिश्रुता, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, इरा, कादम्बरी, परिस्रुता, कश्य, प्रसन्नेरा, माणिका, कापिशी, गन्धमादिनी, कत्तोय, मद, कपिशिका, वारुणी, मत्ता, सीता, कामिनीप्रिया, मदगन्धा, माध्वीक, मधु, सन्धान, आसव, मदनी, सुप्रतिमा, मनोज्ञा, विधाता, मादनी, हली, गुणारिष्ट, सरक, मधुलिका, मदोत्कटा, महानन्दा, सीधु, मैरेय, वनवल्लभा, कारण, तत्त्व, मदिष्ठा, परिप्लुता, कल्प, साधुरसा, शुण्डा, हारहूर, माद्वीक, मदना, देवसृष्टा, कापिश, अब्धिजा, कल्या, मधूल) ।

संस्कृतभाषामें	मदिरा, मद्य ।
वंगभाषामें	मदिरा, मद् ।
गुजरातीभाषामें	दारू ।
मराठीभाषामें	मद्य, दारू ।
हिंदीभाषामें	मदिरा, (दे) दारु, सराब ।
कर्णाटकीभाषामें	शरे, साराइ ।
तैलिङ्गीभाषामें	कल्लु ।
अं०	वाइन ।
फारसीभाषामें	शराब ।

साधारणमदिरागुणाः ।

मद्यं साधारणं सूक्ष्मं सारकं दाहकं कटु। सुस्वादु तिक्तं च रसे पाकेम्लं च लघु स्मृतम् ॥ अग्निदीप्तिकरं रुच्यं हृद्यं चोष्णं कषायकम् । तीक्ष्णं विकासि च मतं मूत्रलं तुष्टिकृन्मतम् ॥ मलोत्सर्गकरं नाडीवस्तिशुद्धिकरं मतम् । बल्यं पुष्टिकरं

स्वर्य्यं प्रतिभाकारकं मतम् ॥ आरोग्यकारकं वर्ण्यं रक्तदूषणकारकम् । आनाहं च कफं वातं शूलं चैव विनाशयेत् ॥ विषशोकार्त्तपुरुषे स्वल्पाग्नौ च हितावहम् । सात्त्विकैः पुरुषैः पीतं गीतहास्यादिकारकम् । राजसैर्भक्षितं चेत्स्यात्साहसादिकरं मतम् । तामसैर्भक्षितं तच्च निद्रालस्यादिकारकम् ॥ बलं कालं च संज्ञात्वा पीतं तदमृतोपमम् । अन्यथा भक्षितं चेत्स्याद्विषवच्चापकारकम् ॥ अतीवमादकं तच्च दुर्गंधि विरसं गुरु । कृमिजुष्टं चातितीक्ष्णं घनं मृदु च दाहकम् ॥ दुष्टभाण्डस्थितं नूत्नमनूद्यमपि चिक्कणम् । उष्णमुष्णपदार्थैस्तु मिश्रितं मलितं तथा ॥ तीक्ष्णैर्द्रव्यैर्युतं तच्च न गृह्णीयान्नरः क्वचित् । स्त्रीद्विजैर्नैव तद्ग्राह्यं बुद्धिभ्रंशकरं यतः ॥ (नि० र०)

अर्थ–साधारण मदिरा–सूक्ष्म, कुछ कुछ दस्तावर, दाहजनक, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी, रस और पाकमें खट्टी, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, हृदयको हितकारी, गरम, कषेली, तीक्ष्ण, विकासी मूत्रकारक, तुष्टिकारक, मलको निकालनेवाली, नाडी और वस्तिको शुद्ध करनेवाली, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाली, प्रभाको उत्पन्न करनेवाली, अरोग्यताको देनेवाली, वर्णको सुंदर करनेवाली, रुधिरको दूषित करनेवाली तथा आनाह, कफ, वात और शूलनाशक है, विषसे विह्वलहुये, शोकसे पीडित हुये और मंदाग्निवाले मनुष्योंको हितकारी है, सात्विक मनुष्य इसको पीनेसे गीत और हास्यादिको करे है रजोगुणयुक्त पुरुषोंको यह पीहुई साहसादि गुणोंको उत्पन्न करे है और तमोगुणयुक्त पुरुषोंको पीहुई निद्रा और आलस्यको करनेवाली है बल और कालका विचार करके यह पीहुई अमृतकी समान गुण करे है, अन्य प्रकारसेवन कीहुई विषकी समान सन्तापको करे है और अत्यन्त नसीली, दुर्गन्धयुक्त, विरस, भारी, कोडेपडीहुई, अत्यन्त तीक्ष्ण, गाढी, मृदु, दाहक, बुरे बरतनमें रक्खी हुई, नवीन, अप्रिय, चिकनी, गरम पदार्थोंसे मिली हुई, मलिन और तीक्ष्ण द्रव्योंसे मिली हुई ऐसी मदिरा कभी नहीं पीनी

चाहिये । और स्त्री तथा ब्राह्मण तो इसको कभी भी नहीं पीवें कारण यह है कि, इसके पीनेसे बुद्धि भ्रष्ट होजाती है ।

अरिष्टलक्षणं गुणाश्च ।

पक्वौषधाम्बुसिद्धं यन्मद्यं तत्स्यादरिष्टकम् ।
अरिष्टं लघुपाकेन सर्वतश्च गुणाधिकम् ॥
आरिष्टस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः ।

अर्थ–जो पक्की औषधियोंके काढेसे मदिरा बनाई जाती है उसको अरिष्ट कहते हैं । अरिष्टनामवाली मदिरा लघुपाकी होनेसे सर्वप्रकारकी मदिराओंसे गुणोंमें अधिक है । अरिष्ट जिस २ वस्तुसे बनता है उसी२वस्तुके समान उस अरिष्टके गुण जानने ।

अन्यच्च ।

अरिष्टं दीपनं हृद्यं तुवरं पाचनं लघु।सरं च कटुकं चैव पित्तवातकफापहम् ॥ कुष्ठगुल्मार्शशोषघ्नं शोफसंग्रहणीहरम् । पाण्डुं प्लीहां चोदरं च ज्वरं शूलं कृमीन्क्लमम् ॥ आनाहं नाशयेत्प्रोक्तं सर्वमद्यैर्गुणाधिकम् ॥

अर्थ–अरिष्ट–दीपन,हृदयको हितकारी,कषेली, पाचक, हलकी, सारक,चरपरी तथा पित्त, वात, कफ, कोढ, गुल्म, बवासीर, शोष, सूजन, संग्रहणी,पाण्डुरोग,प्लीहा,उदररोग,ज्वर,शूल,कृमि,क्लम और अफारेको दूर करनेवाली है तथा सर्वमद्योंमें अधिक गुणवाली है ।

सुरालक्षणं गुणाश्च ।

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतं मद्यं सुरा स्मृता ।
सुरा गुर्वी बलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ॥
ग्राहिणी शोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ।

अर्थ–शालि और साठीधानोंकी पीठीसे जो मदिरा बनाईजाती है उसको सुरा कहते हैं.सुरा–भारी,बलकारक,स्तनोंमें दूधको उत्पन्नकरनेवाली, पुष्टिकारक,कफजनक, मलरोधक तथा सूजन, गुल्म, बवासीर, संग्रहणी और मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है ।

वारुणीलक्षणं गुणाश्च ।

पुनर्नवा शिलापिष्टैर्वारुणी विहिता मता ।

संहितैस्तालखर्जूररसैर्या सापि वारुणी ॥
सुरावद्वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ।

अर्थ-पुनर्नवाको शिलपर पीसकर जो मदिरा बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं । किसीके मतसे ताल और खजूरादिके रसमें जो मदिरा बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं । वारुणी मदिराके गुण सुराकी समान हैं विशेष करकेहलकी तथा पीनस, आध्मान और शूलको निर्मूल करे है ।

अन्यच्च ।

वारुणी पौष्टिकी हृद्या तीक्ष्णा दुग्धप्रदा मता।लघ्वी च श्लेष्मला शूलकसवांतिविबन्धहा ॥ आध्मानं पीनसं श्वासं मूत्रकृच्छ्रं च नाशयेत्।गुल्मं चार्शं नाशयतीत्येवमुक्तं चिकित्सकैः

अर्थ-वारुणीमदिरा-पुष्टिकारक,हृदयको हितकारी,तीक्ष्ण,दुग्धजनक,हलकी,कफकारी तथा शूल, खाँसी, वमन, विबन्ध, अफारा, पीनस,श्वास,मूत्रकृच्छ्र,गुल्म और बवासीरको हरेहै ।

सीधुलक्षण गुणाश्च ।

इक्षोःपक्वै रसैःसिद्धः सीधुः पक्वरसश्च सः। आमस्तैरेव यः सीधुःस च शीतरसः स्मृतः॥ सीधुःपक्वरसः श्रेष्ठःस्वराग्निबलवर्णकृत्।वातपित्तकरःसद्यः स्नेहनो रोचनो हरेत् । विबन्धमेदःशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ॥ तस्माहल्पगुणः शीतरसः संलेखनः स्मृतः ।

अर्थ-पकेहुये ईखके रससे जो मदिरा बनाई जाती है उसको सीधु कहते हैं और जो कच्चे ईखके रससे मदिरा बनाईजातीहै उसको शीतरस कहते हैं, पके ईखके रससे बनाईहुई सीधुनामवाली मदिरा-श्रेष्ठ,स्वर,अग्नि,बल और वर्णको करनेवाली, तत्काल वातपित्तकारक,स्निग्ध,रोचन तथा विबन्ध,मेद,सूजन,बवासीर, शोफोदर और कफरोगोंको नष्टकरे है, शीतरस नामवाली मदिरा सीधुसे कुछ अल्पगुणवाली और लेखन है ।

अन्यच्च ।

सीधुः कषायाम्लकमाधुरो वा सन्दीपनो मेदमलापमर्दः ।

आमातिसारानिलपित्तशूलश्लेष्मामयार्शोग्रहणीगदघ्नः (हा. सं.)

अर्थ-सीधुनामवाली मदिरा-कषेली, खट्टी, अग्निप्रदीपक, मेद और मलको हरनेवाली तथा आमातिसार, वात, पित्त, शूल, कफरोग, बवासीर और संग्रहणीको दूर करनेवाली है ।

गौडीमदिरागुणाः ।

तीक्ष्णोष्णा मधुरा गौडी वातघ्नी बलपित्तकृत् ।
कान्तितृप्तिकरी पथ्या वह्निकामप्रदीपनी ॥ (आ०सं०)

अर्थ-गौडी अर्थात् गुडादिसे बनाई मदिरा-तीक्ष्ण, गरम, मधुर, वातनाशक तथा बल, पित्त, कान्ति और तृप्तिकारक, पथ्य, अग्नि और कामको प्रदीपन करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

गौडी कषाया मधुराम्लशीता सन्दीपनी शूलमलापहंत्री ।
हृद्या त्रिदोषं शमयत्यजीर्णं पाण्ड्वामयार्शःश्वसनान्निहन्ति ।
(हा० सं०)

अर्थ-गौडी मदिरा-कषेली, मधुर, खट्टी, शीतल, अग्निप्रदीपक, शूल और मलको हरनेवाली, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक तथा अजीर्ण, पाण्डुरोग, बवासीर और श्वासविनाशक है ।

माध्वीकमद्यगुणाः ।

माध्वी सुरा तु मधुरा किञ्चिदुष्णा कषायका । तीक्ष्णा लघ्वी
च हृद्या च रूक्षा च च्छदनी मता ॥ पित्तं वातं च पाण्डुञ्च काम-
लां च प्रमेहकम् । गुल्मं चार्शः प्रतिश्यायं विषं कुष्ठञ्च नाशयेत् ॥

अर्थ-माध्वीनामवाली मदिरा-मधुर, किञ्चित् गरम, कषेली, तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, रूखी, छेदक तथा पित्त, वात, पाण्डुरोग, कामला, प्रमेह, गुल्म, बवासीर, प्रतिश्याय, विष और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

माध्वीकं शीतलाम्लं मधुरमपि तथा स्यात्कषायोष्णकञ्च
हन्यात्पित्तामयार्शः श्वसनमपि तथा चातिसारं प्रमेहान् ॥
शूलानाहोपमर्दं जरयति सकलं दीपयत्यग्निसात्म्यं
तस्माद्धांतामवातं वमनमपि तथा हन्ति सर्वांश्च रोगान् ॥

अर्थ-माध्वीक मदिरा-शीतल, खट्टी, मधुर, कषेली, गरम तथा पित्तरोग, बवासीर, श्वास, अतिसार, प्रमेह, शूल और आनाहको दूर करे है, सर्व वस्तुओंको पाचनकरनेवाली, अग्निको दीपन करनेवाली तथा वात, आमवात और वमनको हरनेवाली है तथा सात्म्य हैं।

पैष्टीमद्यगुणाः।

पैष्टी सन्दीपनी रुच्या कफकृद्वातनाशिनी।
पित्तला पाण्डुरोगाणां कारिणी बहुधा मता ॥ (हा०सं०)

अर्थ-पैष्टी मदिरा-अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको करनेवाली, कफकारी, वातनाशक, पित्तकारक और पाण्डुरोगको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च।

पैष्टी सुरा तु मधुरा तीक्ष्णाम्ला कटुका गुरुः।
दीपनी स्तन्यकफदा मेहपुष्टिकरी मता ॥ (नि० र०)

अर्थ-पैष्टी मदिरा-मधुर, तीक्ष्ण, खट्टी, चरपरी, भारी, दीपन, स्तनोंमें दूधको करनेवाली, कफकारी तथा प्रमेह और पुष्टिको करनेवाली है।

इक्षुभवमद्यगुणाः।

मद्यं तु चैक्षवं शीतं मदकृच्च समीरितम् ॥
यवमद्यं स्तम्भकं च रूक्षं चैव तु दीपकम् ॥
मोहकं चाग्निजनकं वृष्यं वातकफापहम्।

अर्थ-ऐक्षव मदिरा-शितल, मदकारक और जौकी मदिरा स्तम्भक, रूखी, अग्निसंदीपक, मोहकारक, अग्निकारक, वीर्यवर्द्धक और वातकफनाशक है।

सर्ववृक्षभवमद्यगुणाः।

सर्ववृक्षभवं मद्यं शीतलं गुरु मोहनम्।
बल्यं वृष्यं च हृद्यं च तृष्णासन्तापनाशकम् ॥

अर्थ-सर्ववृक्षोंकी मदिरा-शीतल, भारी मोहन, बलकारक, वृष्य, हृदयको हितकारी तथा तृष्णा और सन्तापनाशक है।

द्राक्षामदिरागुणाः।

द्राक्षा सुरा तु मधुरा श्रेष्ठा स्निग्धा रुचिप्रदा। विशदा दीपनी ल-

घ्वी किञ्चिदुष्णा बलप्रदा ॥ पुष्टिकृल्लेखनी वर्ण्या शुक्रला च सरा मता। किञ्चित्पित्तकरी मृद्वी वातला शोषमेदनुत् ॥ क्लेदं पाण्डुं कफं चार्शः कृमीन्मेहं च कामलाम्।रक्तपित्तं च कुष्ठं च नाशयेदिति कीर्त्तिता॥विषमं च ज्वरं चैव रक्तार्शश्चैव नाशयेत्

अर्थ-दाखोंकी मदिरा-श्रेष्ठ, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, विशद, अग्निप्रदीपक, हलकी, किञ्चित् गरम, बलकारक, पुष्टिकारक,लेखन, वर्णको सुंदर करनेवाली, शुक्रजनक, सारक, किञ्चित् पित्तकारक, मृदु, वातकारक तथा शोष, मेद, क्लेद, पाण्डुरोग, कफ, बवासीर, कृमि, प्रमेह, कामलारोग, रक्तपित्त, कोढ, विषमज्वर और खूनी-बवासीरको हरण करे है ।

खर्जूरमद्यगुणाः ।

खर्जूरमद्यं शीतं स्याद्रुच्यं वातकरं गुरु ।

अर्थ-खजूरकी मदिरा-शीतल,रुचिकारक,बादी और भारी है ।

तालमद्यगुणाः।

श्लेष्मदोषकरा वृष्या वातला श्लेष्मवर्द्धिनी ।
कासहृल्लासविध्वंसकरणा तालमंडिका ॥ (हा० सं०)

अर्थ-ताडकी मदिरा-कफकारी, वीर्य्यवर्द्धक, बादी, श्लेष्मवर्द्धक तथा खांसी और हृल्लासको हरे हैं ।

आसवलक्षणं गुणाश्च ।

यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ।
आसवस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः ॥

अर्थ-जो कच्ची औषधियोंके पानीसे मदिरा बनाई जातीहै उसको आसव कहते हैं । आसवके गुण जिन २ बीज और द्रव्योंसे वह बनाया जाता है उसी उसीके अनुसार जानने ।

सुरासवगुणाः।

सुरासवस्तीव्रमदो वातघ्नो वदनप्रियः ॥ (चरक०)

अर्थ-सुरासव-तीव्रमदकारक, वातनाशक और मुखप्रियहै ।

अन्यच्च ।

सुरासवः स्नेहनः स्याद्गुरुर्बल्यश्च दीपनः ।

ग्राहकः पुष्टिकृद्दुग्धरक्तमांसकफप्रदः ॥
मेदःकृद्ग्रहणीगुल्ममूत्राघातार्शशोफहृत्। (नि० र०)

अर्थ-सुरासव-स्नेहन,भारी,बलकारी,दीपन,मलरोधक,पुष्टिकारक तथा दूध, रुधिर, मांस, कफ और मेदको हरे है तथा संग्रहणी, गुल्म, मूत्राघात, बवासीर और सूजनको हरे है ।

गुडासवगुणाः ।

गुडासवः कटुस्तिक्तो बल्यश्चाग्निप्रदीपनः ।
सुस्वादुर्मूत्रलो वर्ण्यो बृंहणस्तर्पणो मृदुः ॥
सृष्टविट्कश्च वै प्रोक्तो मुनिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ।

अर्थ-गुडासव-चरपरी,कडवी,बलकारक,अग्निप्रदीपक,स्वादिष्ठ, मूत्रजनक, वर्णको सुंदर करनेवाली, पुष्टिकारक, तृप्तिकारी, मृदु और मलको करनेवाली है ।

मध्वासवगुणाः ।

मध्वासवो लघुस्तीक्ष्णो मधुरस्तुवरो मतः ।
छेदी रूक्षः प्रतिश्यायकुष्ठमेहविनाशनः ॥

अर्थ-मध्वासव-हलकी, तीक्ष्ण, मधुर, कषेली, छेदक,रूखी तथा प्रतिश्याय, कोढ और प्रमेहविनाशक है ।

द्राक्षासवगुणाः ।

द्राक्षासवः कफकरो रक्तपित्तार्शकुष्ठहा ।

अर्थ-द्राक्षासव-कफकारक तथा रक्तपित्त, बवासीर और कुष्ठ-नाशक है ।

शर्करासवगुणाः ।

शर्करायाश्चासवस्तु पाचकोग्निप्रदीपनः ।
रोचनश्च लघुः स्वादुर्वृष्यो वस्तिविकारहा ॥
वातं शोषं नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-शर्करासव-पाचक, अग्निप्रदीपक, रोचन, हलकी, स्वादिष्ठ, वीर्यवर्द्धक,वस्तिविनाशकतथा वात और शोषनाशक है ।

जाम्बवासवगुणाः ।

जाम्बवस्यासवश्चापि तुवरो ग्राहको मतः ।
वातकोपनकारी च मुनिभिः समुदाहृतः ॥

अर्थ-जाम्बवासव-कषैली, मलरोधक और वातको कुपित करेहै।

मैरेयमद्यगुणाः।

मैरेयकं तु मद्यं स्याद्वृष्यं धातुविवर्धकम्। सरं तृप्तिकरं चैव गुरु तीव्रमदप्रदम्॥ मुखप्रियं च मधुरं कटु प्रोक्तं कफप्रदम्। बलवर्द्धनकृच्चैव मेदोवातकृमीञ्जयेत्॥

अर्थ-मैरेयमदिरा-वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्धक, सारक, तृप्तिकारक, भारी, तीक्ष्णमदकारक, मुखप्रिय, मधुर, चरपरी, कफकारक, बलवर्द्धक तथा मेद, वात और कृमिको दूर करे है।

नवीनमद्यगुणाः।

नूत्नं मद्यं स्मृतं शीतं वातलं पित्तलं तथा।
त्रिदोषजनकं दाहि कफकृद्विशदं गुरु।
अहृद्यं च सरं चैव दुर्गंधि बृंहणं मतम्॥

अर्थ-नवीनमदिरा-शीतल, वातकारक, पित्तकारक, त्रिदोषजनक, दाहकारक, कफकारक, विशद, भारी, हृदयको अहितकारी, सारक, दुर्गंधयुक्त और पुष्टिकारक है।

प्राचीनमद्यगुणाः।

जीर्णं मद्यं भ्रामकं स्याद्दीपनं रुचिकृल्लघु। सुगंधि वृष्यं हृद्यं च स्रोतसां च विशोधकम्॥ लवणेन विना सर्वरसैर्युक्तं कफापहम्। वातं कृमीन्सर्वरोगान्नाशयेदिति कीर्तितम्॥ (नि०र०)

अर्थ-पुरानीमदिरा-भ्रमकारक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हलकी, सुगंधियुक्त वीर्य्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, स्रोतोंको शुद्ध करनेवाली, लवणरसको छोडकर सर्वरसोंकरके युक्त कफनाशक तथा वात, कृमी और सर्वरोगोंको हरे है।

विधियुक्तमद्यपानगुणाः।

विधिना मात्रया काले हितैरन्नैर्यथाबलम्। प्रहृष्टो यः पिबेन्मद्यं तस्य स्यादमृतं यथा॥ किन्तु मद्यं स्वभावेन यथैवान्नं तथा स्मृतम्। अयुक्तियुक्त रोगाय युक्तियुक्तं यथाऽमृतम्॥

अर्थ-मद्यपानकी विधिसे मात्राके माफिक समयपर हितजनक,

अन्नोंके साथ बलाबलको देखके हर्षसहित जो मनुष्य मदिराको पीता है उसके मद्य अमृतके समान गुण करे है, मद्य स्वभावसेही अन्नकी समान गुणकारक है, परन्तु अविधिसे जो पीवे है उसके रोगोंको करे है और विधिके साथ जो पीवे है उसके अमृतकी सदृश गुणोंको करे है।

सुराप्रयोगविधिः ।

कृशानां रक्तमूत्राणां ग्रहण्यर्शोविकारिणाम् ।
सुरा प्रशस्ता वातघ्नी स्तन्यरक्तक्षयेषु च ॥

अर्थ-कृशशरीरवाले, रुधिर, मूत्र, संग्रहणी और अर्शरोगवाले मनुष्योंको मदिरा विशेष हितकारी है, सुराको पीनेसे वातरोग, स्तन्य और रक्तक्षयरोग दूर होता है।

मतान्तरे ।

पूर्णे कषायपित्ते च योगयुक्ता सुरा हिता। बहुदोषहरा चैव श्लेष्मरोगे विशेषतः॥ श्रमज्वरातुरे शोषे शोफपाण्ड्वामये क्षये॥ मतेः क्लमेऽपस्मारे च पक्ष्मणाञ्च भ्रमेषु च॥ श्रान्ते वा विषपीते वा सर्पदष्टे जलोदरे। रक्तपित्ते तथा श्वासे वारुणी न हिता मता॥ (हा० सं०)

अर्थ-कषेलेपनसे युक्त हुवा पित्त जब पूर्ण होवे तब योगसे युक्त मदिरा हितकारक है बहुदोषोंका हरनेवाली और विशेषकरके कफके रोगोंको नष्ट करे है. परिश्रम, ज्वरसे पीडित, शोष, शोफ, पाण्डुरोग, क्षय, बुद्धिका थकना, अपस्मार, पलकोंका भ्रम, श्रान्त और जिसने विष पीलिया हो उसको, सर्पके काटेमें, जलोदरमें, रक्तपित्त और श्वासरोगमें मदिरा हितकारी नहीं है।

अथ मद्यानां गन्धनाशनोपायः ।

मुस्तैलवालगदजीरकधान्यकैला यश्चर्वयन्सदसि वाचमभिव्यनक्ति। स्वाभाविकं मुखजमुज्झति पूतिगंधं गन्धं च मद्यलशुनादिभवं च नूनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नागरमोथा, एलुआ, कूठ, जीरा, धनिया और इलायचीको चर्वण करके जो सभामें बोले हैं उनकी स्वाभाविक मुखकी दुर्गंध

दूर होती है और मद्य लशुनादिकी भी दुर्गंध दूर होती है यदि मद्यके विशेष गुणदोष और प्रकार देखनेकी इच्छा होय तो "भैषज्य-भास्कर" में देखो।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे सन्धानवर्गः समाप्तः ॥ २१ ॥

अथ संख्यावर्गः ।

क्षारद्वयम् ।

एकः पर्पटकः श्रेष्ठः पित्तज्वरविनाशनः ।

अर्थ-एक पित्तपापडाही पित्तज्वरको दूर करता है।

स्वर्जिकायावशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम् ।
मिलितं तूक्तगुणकृद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥

अर्थ-सज्जी और जवाखार दोनों मिलेहुएको "क्षारद्वय" कहते हैं यह मिलेभी अपने२गुणोंको करे हैं और विशेषकरके गुल्मरोगको हरे हैं।

द्विकटुकम् ।

पिप्पलीमरिचद्रूपम् ।

अर्थ-पीपल और कालीमिर्च इनको "द्विकटुक" कहते हैं।

क्षारत्रयम् ।

स्वर्जिका च यवक्षारष्टंकणक्षार एव च । क्षारत्रयं समाख्यातं त्रिक्षारः स च कथ्यते ॥ तत्तिक्तं बलशुक्रामकान्तिशूलोदरापहम् । वातं गुल्मं कफं चैव नाशयेदिति कीर्तितम् ॥

अर्थ-सज्जी, जवाखार और सुहागा यह "क्षारत्रय" अथवा त्रिक्षार कहे जाते हैं, क्षारत्रय-कडवे तथा बल, शुक्र, आम, कान्ति शूल और उदर रोगको हरे हैं और वात, गुल्म तथा कफको नष्ट करे हैं।

लवणत्रयम्

सैंधवं च विडं चैव रुचकं चेति विश्रुतम् । लवणत्रयमाख्यातं तच्च त्रिलवणं तथा॥वीर्य्योष्णं दीपनं तीक्ष्णं कफघ्नं पित्तवर्द्धनम् ॥

अर्थ-सैंधानोंन, विरियासंचर, और संचरलवण यह तीनों

मिलेहुए लवणत्रय वा त्रिलवण कहलाते हैं । लवणत्रय-उष्णवीर्य्य, दीपन,तीक्ष्ण, कफनाशक और पित्तको बढानेवाले हैं ।

त्रिकटु ।

पिप्पली मरिचं शुण्ठी त्रयमेतद्विमिश्रितम् । त्रिकटुत्र्यूषणं
व्योषं कटुत्रिकमुदाहृतम् ॥ त्र्यूषणं दीपनं हन्ति श्वासकास-
गलामयान् । गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान् ॥

अर्थ-पीपल, मिर्च और सोंठ इन तीनों औषधी एकत्र मिली हुईको-त्रिकटु, त्र्यूषण व्योष और कटुत्रिक (कटुत्रय, फलत्रिक) कहते हैं । त्रिकुटा-अग्निप्रदीपक तथा श्वास, खाँसी, गलरोग,गुल्म, प्रमेह, कफ, स्थूलता, मेद,श्लीपद और पीनसरोगको दूर करे है ।

कटूषणा ।

पिप्पली पिप्पलीमूलं विश्वमेतत्त्रिभिः समैः ।
कटूषणा च विज्ञेया बुधैस्त्र्यूषणवद्गुणैः ॥

अर्थ-पीपल, पीपलामूल और सोंठ यह तीनों समान मिलीहुई कटूषण कहलाती हैं इसके गुण त्रिकुटाके समान जानने ।

त्रिफला ।

पथ्याबिभीतधात्रीणां फलैः स्यात्त्रिफलासमैः ।
फलत्रिकञ्च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्त्तिता ।

अर्थ-हरड, बहेडा और आमला यह तीनों समान मिलेहुएको त्रिफला, फलत्रिक, वरा (त्रिफली, फलत्रय, फल) कहते हैं ।

मतान्तरे ।

एका हरीतकी योज्या द्वौ च योज्यौ विभीतकौ ।
चत्वार्य्यामलकान्येव त्रिफलैषा प्रकीर्त्तिता ॥

अर्थ-और किसीके मतसे-एक हरड, दो बहेडे और चार आमले मिलेहुएको त्रिफला कहते हैं ।

गुणाः ।

त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठहरी सरा ।
चक्षुष्या दीपनी रुच्या विषमज्वरनाशिनी ॥

अर्थ-त्रिफला-कफपित्तनाशक, प्रमेहको हरनेवाली,कुष्ठनिवारक, सारक, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, रुचिको करनेवाला तथा विषमज्वरनाशक है ।

अन्यच्च ।

त्रिफला मुखरोगघ्नी गलगण्डव्रणापहा । वयसः स्थापका वृष्या सरा हृद्या बलप्रदा॥हन्ति नाडीव्रणं कण्डूं मेधास्मृतिप्रसादिनी । रसायन्यस्रमेदोजिद्रोपणी क्लेदनाशिनी ॥

अर्थ-और भी त्रिफला-मुखरोगनाशक, गलगण्डरोगनिवारक, व्रणविनाशक, अवस्थास्थापक, वीर्य्यवर्धक, कुछकुछ दस्तावर, हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक, नाडीव्रण,और कण्ठरोगनाशक है, मेधा और स्मरणशक्तिको बढानेवाली,रसायन,रुधिरविकार और मेदरोगको हरनेवाली, व्रणको भरनेवाली और क्लेदनाशक है ।

मधुरत्रिफला ।

द्राक्षाकाश्मर्य्यखर्जूरीफलानि मिलितानि तु । मधुरत्रिफला ज्ञेया मधुरादिफलत्रयम्॥ मधुरत्रिफला वृष्या विशदा मधुरा मता । धातुवृद्धिकरी प्रोक्ता कफवातविनाशिनी ॥

अर्थ-दाख, कुम्भेर और खजूर यह तीनों मिलीहुई त्रिफला कहलाती है अथवा मधुर फलत्रय मधुरत्रिफला-वीर्य्यवर्द्धक,विशद मधुर, धातुवर्द्धक और कफवातविनाशक है ।

सुगन्धत्रिफला ।

जातीफलं तथैला च लवंगफलमेव च ।
सुगन्धत्रिफला प्रोक्ता तृतीयं च फलत्रिकम् ॥

अर्थ-जायफल, इलायची और लौंग इन तीनोंको सुगंधत्रिफला और सुगंधफलत्रिक कहते हैं ।

मतान्तरे ।

जातीफलं पूगफलं लवंगलतिकाफलम् ।
सुगन्धत्रिफला ज्ञेया सूरिभिस्त्रिफला स्मृता ॥

अर्थ-और किसीके मतसे जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनोंको सुगन्धत्रिफला कहा है ।

गुणाः ।

सुगन्धित्रिफला वृष्या मुखशुद्धिकरी मता ।
हृद्या रुचिकरा चैव कफस्य च विनाशिनी ॥

अर्थ-सुगंधित्रिफला-वीर्य्यवर्द्धक, मुखको शुद्ध करनेवाली हृदयको हितकारी, रुचिकारक और कफको हरे है ।

त्रिसुगन्धि ।

त्वक्पत्रकैलात्रिसुगन्धिमेतत्प्रकीर्त्तितं वातकफापहारि ।
वृष्यं विषघ्नं च सनागपुष्पं ज्ञेयं चतुर्जातकमेतदेव ॥

अर्थ-दालचीनी, तेजपत्र और इलायची इनको त्रिसुगंधि कहते हैं-त्रिसुगंधि वात और कफनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और विषविनाशक है । और इन तीनोंमें नागकेशर मिलीहुईको चतुर्जातककहते हैं ।

अन्यच्च ।

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धं त्रिजातकम् । नागकेसरसंयुक्तं चातुर्जातकमुच्यते ॥ तद्द्वयं पाचनं रूक्षं तीक्ष्णोष्णं मुखगंधहृत् । लघु पित्ताग्निकृद्वर्ण्यं कफवातविषापहम् ॥

अर्थ-दालचीनी, इलायची और पत्रज, यह तीनों समान २ मिलेहुएको "त्रिजातक"कहते हैं और इसमें नागकेशर मिला दीजाय तो "चातुर्जातक" कहते हैं । त्रिसुगंधि और चातुर्जातक पाचक, रूखे, तीक्ष्ण, गरम, मुखकी दुर्गंधको हरनेवाले, हलके, पित्तजनक, अग्निकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाले तथा कफ, वात और विषविनाशक हैं ।

अपिच ।

त्रिजातं पित्तलं रूक्षं रुच्यं चाग्निप्रदीपनम् ।तीक्ष्णं चोष्णं लघु वर्ण्यं कटु वृष्यं बलप्रदम्॥ रसायनं कफं वातं विषं श्वासं च पीनसम् । स्वरभेदं च कासं च मुखदोषं च नाशयेत् ॥

अर्थ-त्रिजात-त्रिसुगंधि-पित्तकारक, रूखे, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, तीक्ष्ण, गरम, हलके, वर्णको सुन्दर करनेवाले, चरपरे, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, रसायन तथा कफ, वात, विष, श्वास, पीनस, स्वरभेद, खाँसी और मुखके दोषोंको हरे है ।

मधुरत्रयम् ।

घृतं गुडं माक्षिकं च विज्ञेयं मधुरत्रयम् ।
विद्यात्त्रिमधुरं चैव प्रोक्तं वा मधुरत्रिकम् ॥

अर्थ-घी, गुड और शहत यह तीनों मिले हुएको मधुरत्रय, त्रिमधुर, मधुरत्रिक कहते हैं।

मतान्तरे ।

सिता घृतं माक्षिकं वा विज्ञेयं मधुरत्रिकम् ।
मधुरत्रितयं चाग्निदीपनं कान्तिकारकम् ॥
विषदोषं रक्तपित्तं तृष्णां चैव विनाशयेत् ।

अर्थ-और कोई कहतेहैं कि, चीनी, घी, और शहत यह तीनों मिलेहुये मधुरत्रय कहलातेहैं । मधुरत्रय-अग्निप्रदीपक,कान्तिकारक तथा विषविकार, रक्तपित्त और तृषाको दूर करेहै ।

त्रिसमम् ।

हरीतकी च शुण्ठी च गुडं चैकत्र मिश्रितम् ।
त्रिसमं भाष्यते सुज्ञैरथवापि समत्रिकम् ॥

अर्थ-हरड, सोंठ और गुड यह तीनों एकत्र मिले हुएको "त्रिसम" कहते हैं वा "समत्रिक" कहतेहैं ।

मतान्तरे ।

हरीतकी च शुण्ठी च गुडूच्येकत्र योजितम् ।
समत्रयं रुचिकरं चक्षुष्यं मलशोधनम् ॥
वातं पित्तं नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-और किसीके मतसे हरड, सोंठ और गिलोय यह तीनों मिलीहुई "त्रिसम" कहलाती है। त्रिसम-रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, मलशोधक तथा वात और पित्तनाशकहै ।

त्रिकर्षिका ।

नागरातिविषा मुस्ता त्रयमेतत्त्रिकार्षिकम् ।
त्रिकार्षिकं ज्वरं शोथं पित्तं वातं भ्रमं तथा ॥
आमं शूलमतीसारं ग्रहणीं च विनाशयेत् ।

अर्थ-सोंठ, अतीस और नागरमोथा यह तीनों मिले हुए "त्रिकार्षिक" कहलाते हैं त्रिकार्षिक-ज्वर, सूजन, पित्त, वात, भ्रम, आम, शूल, अतिसार और संग्रहणीको हरे है ।

त्रिसिता ।

गुडोत्पन्ना च मधुजा हिमोत्थेति त्रिधा सिता। सिता गुडोत्था सस्नेहा वृष्या क्षीणक्षतेहिता॥ मधुजा शर्करा बल्या गुर्वी वृष्या च शीतला। हिमोत्था शर्करा किञ्चिदुष्णा तिक्ता च पिच्छला

अर्थ-ईखकी चीनी, शहतकी चीनी और ज्वारकी खांड यह तीनों "त्रिसिता" कहलाती हैं। तहां ईखकी चीनी-स्नेहयुक्त, वीर्य्यवर्द्धक और क्षीण तथा क्षतवाले मनुष्योंको हितकारी है। शहतकी खांड-बलकारक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक और शीतल है । ज्वारकी खांड-किञ्चित् गरम, कडवी और पिच्छिल है ।

त्रिकण्टकम्।

शुण्ठी गुडूची दुःस्पर्शा त्रिकण्टकमिति स्मृतम् ।
त्रिकंटकानां क्वाथः स्यात्पित्तज्वरविनाशनः ॥
नेत्ररोगं वमिं चैव मस्तकस्य रुजं तथा ॥

अर्थ-सोंठ, गिलोय और जवासा यह तीनों मिलेहुएको "त्रिकण्टक" कहते हैं. त्रिकण्टकोंका काढा-पित्तज्वर, नेत्ररोग, वमन और मस्तकरोगको दूर करे है ।

कण्टकत्रितयम्।

दुस्पर्शा बृहती ह्यग्निदमनीति समांशकम् ।
कण्टकत्रितयं प्रोक्तं त्रिदोषभ्रमनाशनम् ॥
ज्वरं पित्तं च हिक्कां च तन्द्रालापं च नाशयेत् ।

अर्थ-जवासा, बडीकटेरी और अग्निदमनी यह तीनों बराबर मिली हुई "कण्टकत्रितय" कहलाती है । कण्टकात्रितय-त्रिदोष, भ्रम, ज्वर, पित्त, हुचकी, तन्द्रा और आलापको हरे है ।

कण्टकारीत्रयम् ।

त्रिकण्टक्षुद्राबृहती कण्टकारीत्रयं स्मृतम् ।
कण्टकारीत्रयं तन्द्राप्रलापभ्रमनाशनम् ॥
पित्तज्वरं त्रिदोषं च नाशयेदिति कीर्त्तितम् ।

अर्थ-गोखुरू, कटेरी और कटाई इन तीनों एकत्र मिलीहुईको "कण्टकारत्रिय" कहते हैं. कण्टकारीत्रय-तन्द्रा, प्रलाप, भ्रम, पित्त ज्वर, त्रिदोष इनको दूर करे है।

त्रिलोहम् ।

स्वर्णं रूप्यं तथा ताम्रं त्रिलोहमिति कीर्त्तितम् ।
त्रिलोहस्य गुणाः प्रोक्ताः पंचलोहसमा बुधैः ॥

अर्थ-सोना, चांदी और तांबा यह "त्रिलोह" कहलाते हैं त्रिलोहके गुण पंचलोहके समान जानने ।

अञ्जनत्रयम् ।

पुष्पाञ्जनं च कालाख्यं रसाञ्जनमिति त्रयम् ।
अंजनत्रयमेतद्धि नेत्रयोः परमं हितम् ॥

अर्थ-पुष्पांजन,कालाञ्जन और रसाञ्जन यह अंजनत्रय कहे जाते हैं, अंजनत्रय-नेत्रोंको परमहितकारी है ।

अथोपविषात्रयम् ।

निर्विषातिविषा चैव लाङ्गल्युपविषात्रयम् ।
विषात्रयं विषघ्नं च ज्वरातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-निर्विषी,अतीस और कलिहारी यह तीनों उपविष कहलाते हैं । उपविषात्रय विषनाशक और ज्वरातिसारविनाशक है ।

चतुरूषणम् ।

त्र्यूषणं सकणामूलं कथितं चतुरूषणम् ।
व्योषस्य ये गुणाः प्रोक्ता ह्यधिकाश्चतुरूषणे ॥

अर्थ-त्रिकुटेमें पीपलामूल मिलानेसे चतुरूषण कहा जाता है चतुरूषणके गुण त्रिकुटेसे कुछेक ज्यादे हैं ।

चातुर्जातकम् ।

त्रिगंधमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातं सकेसरम् ।
त्रिगंधं च चतुर्जातं रूक्षोष्णं लघुपित्तजित् ।
वर्ण्यं रुचिकरं तीक्ष्णं विषश्लेष्मामयाञ्जयेत् ॥

अर्थ-इलायची, दालचीनी, पत्रज और नागकेशर यह चारों मिलेहुएको चातुर्जातक कहते हैं । त्रिसुगंधि तथा चातुर्जातक रूखा, गरम, हलका, पित्तनाशक, वर्णको सुंदर करनेवाला, रुचिकारक, तीक्ष्ण, विष और कफरोगको नष्ट करे है ।

कटुचतुर्जातकम् ।

एलात्वक्पत्रं मरिचं चतुर्जातं कटु स्मृतम् ।
चतुर्जातं च कटुकं चातुर्जातसमं गुणैः ॥

अर्थ-इलायची, दालचीनी, तेजपात और कालीमिर्च इनको कटुचतुर्जातक कहतेहैं, कटुचतुर्जातक चरपरा और गुण चातुर्जातककी समान जानने ।

चातुर्भद्रकम् ।

नागरातिविषा मुस्ता त्रयमेतत्त्रिकार्षिकम् । गुडूचीसंयुतं चैव चातुर्भद्रकमुच्यते ॥ चातुर्भद्रं पाचकं स्याज्ज्वरजीर्णज्वरापहम् । त्रिदोषकण्ठरुक्छोथारुचिशूलामनाशनम् ॥

अर्थ-सोंठ,अतीस,नागरमोथा और गिलोय इन चारों एकत्र मिले हुएको चातुर्भद्रक कहते हैं. चातुर्भद्रक-पाचक तथा ज्वर,जीर्णज्वर त्रिदोष, कण्ठरोग, सूजन, अरुचि, शूल और आमनाशक है ।

चतुर्बीजम् ।

मेथिका चन्द्रशूरश्च कालाजाजी यवानिका । एतच्चतुष्टयं युक्तं चतुर्बीजमुदाहृतम् ॥ तच्चूर्णं भक्षितं नित्यं निहन्ति पवनामयान् । अजीर्णशूलमाध्मानं पार्श्वशूलं कटिव्यथाम् ॥

अर्थ-मेथी, हालो, कलौंजी और अजवायन इन चारों एकत्र मिलहुएको चतुर्बीज कहते हैं । इसका चूर्ण नित्य सेवन करनेसे वातरोग, अजीर्ण, शूल, आध्मान, पार्श्वशूल और कटिव्यथाको दूर करे है ।

चातुर्थिकगुणाः ।

आमलक्यभया कृष्णा चित्रकं च समंसमम् ।
सामान्यरोगहंता च चातुर्थिकगणः स्मृतः ॥

अर्थ-आमला,हरड,पीपल और चीता इन चारों एकत्र मिलेहुएको चातुर्थिकगण कहतेहैं यह अजीर्णादिरोगनाशक है ।

बलाचतुष्टयम् ।

महाबला चातिबला बला नागबला तथा ।
बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकांतिकृत् ॥
स्निग्धं ग्राहि समीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ।

अर्थ-सहदेई, कंधी, खिरेंटी और गंगरेन इन चारों एकत्र मिली हुईको बलाचतुष्टय कहतेहैं, बलाचतुष्टय-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कांतिजनक, स्निग्ध, मलरोधक तथा वातरक्त, रक्तपित्त और उरःक्षतरोगनाशक है।

कटुग्रंथिचतुष्कम।

कटुग्रन्थिचतुष्कं तु शुण्ठीलशुनमार्द्रकम्।
पिप्पलीमूलसंयुक्तं वातव्याधिहरं परम्॥

अर्थ-सोंठ, लहसुन, अदरख, और पीपरामूल यह चारों एकत्र मिलेहुएको कटुग्रन्थिचतुष्क कहतेहैं। कटुग्रन्थिचतुष्क-वातरोगनाशक है।

चतुस्समम्।

जातीफलं त्रिदशपुष्पसमन्वितञ्च जीरञ्च टङ्कणयुतं चरकेण चोक्तम्।चूर्णानि माक्षिकसितासहितानि लीढाआमातिसारमखिलं गुरु हन्ति शूलम्॥

अर्थ-जायफल, लौंग, जीरा और सुहागा इन चारोंको चतुस्सम कहतेहैं। इस चतुस्समका चूर्ण बनाकर उसमें मिश्री और सहत मिलाकर सेवन करनेसे आमातिसार और शूलरोग नष्टहोताहै।

पंचकोलम्।

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यं चित्रकनागरम्।
एकत्रमिश्रितैरेभिः पंचकोलकमुच्यते॥

अर्थ-पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ, यह पांचों एकत्र मिलेहुए पंचकोल कहे जाते हैं।

पंचकोलं रसे पाके कटुकं रुचिकृन्मतम्।
तीक्ष्णोष्णं पाचनं श्रेष्ठं दीपनं कफवातनुत्॥
गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नं पित्तकोपनम्।

अर्थ-पंचकोल-रस और पाकमें चरपरा, रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, पाचक, दीपन, कफवातनाशक तथा गुल्म, प्लीहा, उदररोग, आनाह और शूलनाशक है और पित्तको कुपित करे है।

द्वितीयपञ्चकोलम्।

पथ्याजमोदारुचकमत्युग्रं विश्वभेषजम्।
समभागानि चैतानि द्वितीयं पंचकोलकम्॥

पंचकोलं द्वितीयं तु पाचकं दीपनं स्मृतम् ।

अर्थ–हरड, अजमोदा, संचलनोंन, हींग और सोंठ यह सब औषधी बराबर मिलीहुई द्वितीय पंचकोल कहलाती हैं । द्वितीय पंचकोल पाचक और अग्निप्रदीपक है ।

पंचत्वक् ।

वटीवटोदुम्बरवेतसानामश्वत्थवृक्षेण समन्वितानाम् ।
त्वक्पंचकं पंचमहीरुहाणामिति व्रणघ्नं श्वयथुघ्नमेतत् ॥

अर्थ–वड, नदीवड, गूलर, वेंत और पीपल इन पांचोंकी छाल एकत्र मिली हुईको पंचत्वक् कहते हैं–यह व्रणविनाशक और सूजनको दूर करैहै ।

मतान्तरे ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारीषप्लक्षपादपाः ।
पचते क्षीरिणो वृक्षास्तेषां त्वक्पंचवल्कलम् ॥
त्वक्पंचकं हिमं ग्राहि व्रणशोफविसर्पजित् ।

अर्थ–किसीके मतसे–वड, गूलर, पीपल, पारिसपीपल और पाखर इन पांचों क्षीरीवृक्षोंकी एकत्र मिलीहुई छालको पंचत्वक्. वा पंचवल्कल कहते हैं त्वक्पंचक–शीतल, मलरोधक तथा व्रण, सूजन और विसर्परोगको नष्ट करे है ।

पञ्चपल्लवाः ।

पल्लवाः क्षीरिवृक्षाणां हिताः पित्तातिसारिणाम् ।
कषायास्तम्भना रूक्षाः फलं तेषान्तु वातकृत् ॥

अर्थ–पंचक्षीरीवृक्षोंके पत्तोंको पंचपल्लव कहते हैं, यह पंचपल्लव पित्तातिसारवाले रोगियोंको हितकारी हैं कषाय, स्तम्भक, रूक्ष और उन वृक्षोंके फल वातकारक हैं ।

अन्यच्च ।

पंचक्षीरिद्रुपत्रं तु शीतं स्वादु च तिक्तकम्।तुवरं स्तम्भकं ग्राहि लेखनं कफवातनुत् ॥ वातरक्तं मलस्तम्भमाध्मानं चातिसारकम् । नाशयेत्पित्तरोगं च लघु प्रोक्तं मनीषिभिः ॥ तेषां फलं तु विष्टम्भि ग्राहकं गुरु तूवरम् । अम्लं च मधुरं वृष्यं रक्त-

पित्तविनाशनम्॥कफवातं च हृल्लासं शोषं वातं च गुल्मकम् अरुचिं श्वासकासौ च नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥पक्कं गुणाधिकं ज्ञेयमिति पूर्वैर्निरूपितम् ॥

अर्थ-पंचक्षीरी वृक्षोंके पत्ते-शीतल, स्वादिष्ठ, कडवे, कषेले, स्तम्भक, ग्राही, लेखन, कफवातनाशक तथा वातरक्त, मलस्तम्भ, आध्मान, अतिसार और पित्तरोगको नष्ट करे हैं और हलके हैं, इनके फल-विष्टम्भकारक, मलरोधक, भारी, कषले, खट्टे, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्त, पित्त, कफ, वात, हृल्लास, शोष, वातगुल्म, अरुचि, श्वास और खाँसीको नष्ट करेहैं, इनके पक्के फल-अधिक गुणवाले हैं।

पञ्चांगम्।

त्वक्पत्रफलमूलानि पुष्पाण्येकस्य शाखिनः।
पञ्चांगमिति बोद्धव्यं प्राज्ञैरेकत्र मिश्रितम् ॥

अर्थ-एकवृक्षके पत्र, फल, मूल, छाल और फूल इन सब एकत्र मिलेहुएको पंचांग कहते हैं।

निम्बपञ्चांगम्।

निम्बस्य पुष्पफलत्वक्पत्रमूलं च पञ्चकम्।
पंचनिम्बमिति ख्यातं सर्वकुष्ठहरं परम् ॥

अर्थ-नीमके-फूल,फल,छाल, पत्ते और मूल इन सब एकत्र मिलेहुओंको पंचनिम्बक कहते हैं, पंचनिम्ब-सर्वकुष्ठरोगनाशक है।

अस्यगुणाः।

पंचनिम्बन्तु तुवरं तिक्तं शीतं मधु स्मृतम् । लघु ज्वरहरं कुष्ठपित्तनाशकरं मतम्॥ वातरक्तं च कण्डूतिं दाहं मेदं विषं ज्वरम् ।वातं च नाशयेदेतदिति पूर्वैर्निरूपितम् ॥

अर्थ-पंचनिम्ब-कषेले, कडवे, शीतल, मधुर,हलके तथा ज्वर, कोढपित्त वातरक्त, कण्डू, दाह, प्रमेह, विष, ज्वर, और वातको दूर करे है।

अपिच।

निम्बवृक्षस्य पञ्चांगं रक्तदोषहरं परम्।
पित्तं कण्डूं व्रणं कुष्ठं दाहं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-पंचनिम्ब अर्थात् निम्बपंचांग-रुधिरके दोषोंको हरनवाला तथा पित्त, कण्डू, व्रण, कोढ और दाहको दूर करे है ।

क्षारपञ्चकम् ।

पलाशमूलकक्षारौ यवक्षारः सुवर्च्चिका ।
तिलनालोद्भवक्षारः क्षारसंयुक्तपञ्चकम् ॥
क्षारपञ्चकगुल्मार्शोग्रहणीकृमिनाशनः ।

अर्थ-ढाकका खार, मूलीकी खार, जवाखार, सज्जी और तिलोंकी नालका खार यह पांचों मिलेहुए क्षारपंचक कहलाते हैं क्षारपंचक-गुल्म, बवासीर, संग्रहणी और कृमिरोगनाशक है ।

लवणपञ्चकम् ।

सैन्धवं रुचकं चैव विडमौद्भिदमेव च । सामुद्रेण समायुक्तं ज्ञेयं लवणपंचकम् ॥ लवणानां पंचकं तु शोषणं च रुचिप्रदम् । मलानुलोमकं दाहि नेत्र्यं वातं कफं हरेत् ॥ शूलं च नाशयत्येवमुक्तं पूर्वैर्मनीषिभिः ।

अर्थ-सेंधानोन, सञ्चल अर्थात् कालानोन, विरियासञ्चरनोन, औद्भिद और समुद्रनोन यह पांचों मिलेहुए लवणपञ्चक कहलाते हैं। लवणपञ्चक-शोषण, रुचिकारक, मलको अनुलोमन करनेवाले, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी तथा वात, कफ और शूलको नष्ट करेहै ।

लघुपञ्चमूलम् ।

शालिपर्णीपृश्निपर्णी वार्त्ताकी कण्टकारिका । गोक्षुरः पञ्चभिश्चैतैः कनिष्ठं पञ्चमूलकम् ॥ पञ्चमूलमिदं ह्रस्वं बृंहणं बलवर्द्धनम् । कषायतिक्तं नातिशीतोष्णं सर्वदोषजित् ॥

अर्थ-शालिपर्णी (सालवन) पृश्निपर्णी (पिठवन), कटाई, कटेरी और गोखुरू यह पांचों मिलेहुए लघुपञ्चमूल कहलातेहैं। लघुपञ्चमूल-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कषेला, कडवा, न अत्यन्त शीतल और न अत्यन्त गरम और सर्व प्रकारके दोषोंको दूर करे है ।

महत्पञ्चमूलम् ।

बिल्वश्योनाकगम्भारीपाटलागणिकारिका । एतन्महत्प-

ञ्चमूलसंज्ञकं समुदाहृतम् ॥ पंचमूलं महत्तिक्तं कषायं कफवातनुत् । मधुरं श्वासकासघ्नमुष्णं लघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ-बेल, स्योनापाठा, कुम्भेर, पाढल और अरणी यह पांचो एकत्र मिलेहुए महत्पञ्चमूल कहे जातेहैं ।महत्पंचमूल कडवा,कषेला, कफवातनाशक, मधुर, श्वास और खाँसीको हरनेवाला, गरम, हलका और अग्निप्रदीपक है ।

मध्यमपंचमूलम् ।

बला पुनर्नवा शूर्पपर्णावेरण्डमेव च।एकत्र योजितेनैव स्यान्मध्यपंचमूलकम् ॥ मध्यमं पञ्चमूलन्तु वृष्यं वातकफापहम् । किञ्चित्पित्तकरं प्रोक्तं पूर्वाचार्यैश्च सूरिभिः ॥

अर्थ-खिरैंटी,पुनर्नवा(साँठ)मुगवन, मषवन और अंड इन पांचों एकत्रमिले हुओंको मध्यमपंचमूल-कहतेहैं । मध्यमपंचमूल-वीर्य्यवर्द्धक, वातकफनाशक और किञ्चित् पित्तकारक है ।

बलाख्यपंचमूलम् ।

निशामृता मेषशृङ्गी गोपवल्ली विदारिका ।एतासां चैव मूलन्तु बलाख्यं दोषनाशकम् ॥ बलाख्यं पञ्चमूलन्तु भेदकं च प्रकीर्त्तितम् । शोफज्वराणां शमनं पूर्वाचार्यैरिहोदितम् ॥

अर्थ-हलदी,गिलोय, मेढाशिंगी,सारिवा और विदारीकंद इन पांचोंके मूलको बलाख्यपंचमूल कहतेहैं । बलाख्यपंचमूल-भेदक, तथा सूजन और ज्वरको शांति करेहै ।

जीवनपंचमूलम् ।

जीवकर्षभकौ वीरा जीवन्ती च शतावरी।जीवनीयमिदं प्रोक्तं चतुर्थं पंचमूलकम् ॥ जीवनं पंचकं वृष्यं चक्षुष्यं धातुवर्द्धकम् ॥ बल्यं दाहं कफं पित्तं ज्वरं तृषणाञ्च नाशयेत् ॥

अर्थ-जीवक,ऋषभक, बडीशतावर, जीवन्ती और शतावर इन सब एकत्र मिलीहुईको जीवनीयपंचमूल कहतेहैं।जीवनीयपंचमूल-वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी,धातुवर्द्धक, बलकारक, तथा दाह, कफ, पित्त ज्वर और तृषाको दूर करे है ।

तृणपञ्चमूलम् ।

शरेक्षुदर्भकाशानां नलस्य मूलमेव च ।
सौश्रुतश्चरकं चैव तृणाख्यं पञ्चमूलकम् ॥ (सु०)

अर्थ-शर, ईख, दाभ, काँस और नल इन पांचोंके मूलको तृणपंचमूल कहते हैं, इसीप्रकार सुश्रुत और चरकमें भी कहा है ।

अन्यच्च ।

कुशः काशः शरो दर्भ इक्षुश्चेति तृणोद्भवम् ।
पञ्चतृणमिदं ख्यातं तृणजं पंचमूलकम् ॥ (च०)

अर्थ-कुशा, काँस, सरपता, दाभ और ईख इन पाचोंके मूलको तृणपंचमूल कहते हैं ऐसा चक्रदत्तमें लिखा है ।

अन्यच्च ।

शालीक्षुकुशकाशैः स्याच्छरेण तृणपञ्चकम् ।
एषां मूलं तृषादाहपित्तासृङ्मूत्रसङ्गहृत् ॥

अर्थ-शालि, ईख, कुश, काँस और सरपता इन पाचोंके मूलको तृणपंचमूल कहते हैं ऐसा वैद्यकानिघण्टुमें लिखा है । तृणपंचमूल-तृषा, दाह, रक्तपित्त और मूत्रके रुकनेको दूर करे है।

अस्य गुणाः ।

तृणानां पंचमूलन्तु पित्तज्वरतृषापहम् ।
रक्तदोषाम्लपित्तञ्च स्त्रीरोगं रक्तपित्तकम् ॥
प्रमेहं नाशयेदेतदिति सुज्ञैर्निरूपितम् ।

अर्थ-तृणपंचमूल-पित्तज्वर, तृषा, रक्तविकार, अम्लपित्त, स्त्रीरोग, रक्तपित्त और प्रमेहरोगको हरे है ।

गोक्षुरादिपञ्चमूलम् ।

गोक्षुरो बदरी चेंद्रवारुणी कासमर्दिका । गोक्षुराद्यं पञ्चमूलं शिरीषेण समन्वितम् ॥ गोक्षुरादिकपञ्चानां मूलं कुष्ठार्शनाशनम् । वृष्यं वातं कफं गुल्मं व्रणं चामञ्च नाशयेत् ॥

अर्थ-गोखुरू, बेरी, इन्द्रायण, कसौंदी और शिरस इन पांचोंके मूलको गोक्षुरादिपंचमूल कहते हैं। गोक्षुरादिपञ्चमूल-कुष्ठ, बवासीर,

वात, कफ, गुल्म, व्रण और आमको दूर करे है तथा वीर्य्यवर्द्धकहै।

पञ्चमहाविषाणि ।

गौरपाषाणकश्चैव तालकश्च मनःशिला । वत्सनाभस्य सर्पस्य महापञ्चविषाणि च ॥ महाविषाणि पञ्चैव मादकानि तथा पुनः । सद्यःप्राणहराण्येव शुद्धानि ह्यमृतं जगुः ॥

अर्थ-शंखिया, हरिताल, मनशिल, वत्सनाभ और सर्पका विष यह पांच महाविषहैं। पंचमहाविष-मदकारक और तत्काल प्राणोंको हरनेवाले हैं यही शुद्ध किये हुए और युक्तिके साथ सेवन किये हुए अमृतके समान गुणकारक हैं ।

पञ्चोपविषाणि ।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं तथा लाङ्गलिकापि च । धत्तूरको हयारिश्च पञ्चैवोपविषाणि च ॥ उपपूर्वं पञ्चविषं मादकं प्राणहारकम् । शोधितं तत्तु बलदं वीर्य्यवृद्धिकरं परम् ॥

अर्थ-आकका दूध, थूहरका दूध,कलिहारी,धतूरा और कनेर यह पांच उपविष कहे जाते हैं । पंचउपविष-मदकारक, प्राणहारक यही शुद्ध किये हुवे-बलकारक और वीर्य्यवर्द्धक हैं ।

पञ्चगव्यम् ।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिस्तथैव च । समं योजितमेकत्र पंचगव्यमिति स्मृतम् ॥ पञ्चगव्यं देहशुद्धिकरं कफविनाशनम् । अजीर्णापस्मृतिज्वरं भूतबाधाश्च नाशयेत् ॥

अर्थ-गायका मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी यह पांचों बराबर एकत्र मिलेहुएको पञ्चगव्य कहलाते हैं । पञ्चगव्य-देहशोधक,कफनाशक तथा अजीर्ण,अपस्मार, ज्वर, और भूतबाधाको दूर करे है ।

पञ्चमाहिषम् ।

माहिषाम्बु दधि क्षीरं साभिघारं च तद्रसः ।
तत्पञ्चमाहिषं ज्ञेयं तद्वच्छागलपञ्चकम् ॥

अर्थ-भैंसका मूत्र, गोबर, दही, दूध और घी इनको पंचमाहिष कहते हैं इसी प्रकार छागलपंचक जानना ।

सुगन्धपञ्चकम् ।

कुंकुमागरुकर्पूरकस्तूरीचन्दनानि च ।
महासुगन्धमित्युक्तो नामतो यक्षकर्दमः ॥

अर्थ-केशर, अगर, कपूर, कस्तूरी और चंदन यह पांचों बराबर एकत्र मिलेहुएको यक्षकर्दम और सुगन्धपंचक कहलाते हैं ।

स्याद्यक्षकर्दमः शीतः सुगन्धिः कान्तिदायकः ।
त्वग्दोषं च शिरोरोगं विषं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-यक्षकर्दम-शीतल,सुगन्धिजनक,कान्तिकारक तथा त्वचाके रोग, शिरोरोग और विषके विकारोंको हरे है ।

सुगंधपञ्चकं शीतं रक्तपित्तकफाञ्जयेत् ।
पीनसं मुखदौर्गन्ध्यहरं रक्तरुजञ्जयेत् ॥

अर्थ-सुगंधपंचक-शीतल, रक्तपित्तनाशक, कफहारक, तथा पीनस, मुखकी दुर्गन्धता और रुधिरके विकारोंको हरे है ।

अम्लपञ्चकम् ।

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुक्रिकाचाम्लवेतसः । पञ्चाम्लकः समुद्दिष्टः स चोक्तश्चाम्लपञ्चकः ॥ फलाम्लपञ्चकं रुच्यं कफकृत्कासकारकम् । तिक्तं जाडयकरं चैव विष्टम्भशूलवातनुत् । शुक्रगुल्मार्शसां नाशं करोतीति बुधा जगुः ॥

अर्थ-बेर, अनार, विषांबिल, चूका और अमलवेत यह अम्लपंचक है । अम्लपंचक-खट्टे, रुचिकारी, कफ और खाँसीको उत्पन्न करनेवांले, कडवे, जडताकारक तथा विष्टम्भ, शूल, वात, शुक्र, गुल्म और बवासीरको दूर करे है ।

द्वितीयफलाम्लपञ्चकम् ।

बीजपूरकजम्बीरनारंगं चाम्लवेतसम् । फलैः पञ्चाम्लकः ख्यातस्तिंतिडीसहितः परः ॥ फलाम्लपंचकं चान्यच्छोफकृन्मदकारकम् । विष्टम्भशूलगुल्मार्शःशुक्रवातविनाशनम् ॥

अर्थ-विजोरानीम्बु,जम्भीरीनींबु,नारंगी,अमलवेंत और इमली यह दूसरा फलाम्लपंचक है । दूसरा फलाम्लपंचक-शोफकारक, मदजनक, तथा विष्टम्भ, शूल, गुल्म, बवासार, शुक्र और वातविनाशक है!

पञ्चगणः।

पृष्टिपर्णीबृहत्यौ च विदारी गोक्षुरस्तथा।
गणानां पंचकं प्रोक्तं प्लीहानाहप्रमेहजित्॥
भगन्दरं पाण्डुरोगं कुष्ठशूलोदरं जयेत्।

अर्थ-पिठवन,कटेरी,कटाई, विदारीकंद और गोखरू यह पांचों एकत्र मिलेहुये पंचगण कहलाते हैं। पंचगण-प्लीहा, आनाह, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, कुष्ठ, शूल और उदररोगको दूर करे है।

पञ्चसमम्।

शुण्ठी हरीतकी कृष्णा त्रिवृत्सौवर्च्चलं तथा।
इति पंचसमं नाम चूर्णं ज्वरहरं परम्॥

अर्थ-सोंठ,हरड,पीपल, निसोथ और कालानोन इन पांचोंको समभाग मिलेहुये पंचसम कहे जाते हैं,पंचसमका चूर्ण-ज्वरनाशक है।

द्वितीयपञ्चसमम्।

आमलसैन्धवचित्रकपथ्यापिप्पलिचूर्णमिदं ज्वरहारि।

अर्थ-आमला,सैंधानोन,चीता, हरड और पीपल यहभी पंचसम कहेजाते हैं इनका चूर्णभी ज्वरनाशक है।

पञ्चाङ्गलेपः।

पुनर्नवादारुशुण्ठीसिद्धार्थाञ्छिग्रुमेव च।
पिष्ट्वा चैवारनालेन प्रलेपः सर्वशोथहा॥

अर्थ-पुनर्नवा,दारुहलदी,सोंठ,सरसों,सहिंजना इन पांचोंको कांजीमें पीसकर लेप करनेसे सर्वप्रकारकी सूजन दूर होती है।

पञ्चभृङ्गः।

देवदाली शमी भृङ्गी निर्गुण्डी सतमालकः।
पञ्चभृङ्गभवः क्वाथो रोगिस्नाने प्रशस्यते॥

अर्थ-देवदाली,शमी(छोंकर),अतीस, निर्गुण्डी और तमाल इन पांचोंके पत्तोंके काढेसे रोगीके लिये स्नानकराना उत्तम है।

पंचमूत्रम्।

गोजाविकामहिषीणां मूत्रं गर्दभकस्य च।
पंचमूत्रं कटूष्णञ्च शोधनं वृष्यमीरितम्॥

अर्थ-गाय,बकरी,भेड, भैंस और गधा इन पांचोंके मूत्रको पंचमूत्र कहते हैं। पंचमूत्र-चरपरा,गरम, शोधन और वृष्य है।

पञ्चबीजम्।

राजिका चाजमोदा च जीरकं खसबीजकम्। कुबेराक्षयुतं चैव पंचबीजमुदाहृतम् ॥ मेथी ज्योतिष्मतीबीजं यवानीस्थूलजीरकम्। इक्षुरेण सुसंयुक्तं द्वितीयं पंचबीजकम् ॥ पञ्चबीजं ग्रहणिकां कण्डूतिं चाग्निमान्द्यकम्। वातंशोफं कफं चैव विषूचीं श्वासकासकम् ॥ शीतरोगं चामशूलं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥

अर्थ-राई, अजमोद,जीरा,खसखसके दानें और अजवायन यह सब एकत्र मिलेहुये पंचबीज कहेजाते हैं। मेथी,मालकांगनी,अजवायन,कलौंजी और तालमखाना यह सब एकत्र मिलेहुये द्वितीयपंचबीज कहलाते हैं। पंचबीज-संग्रहणी, कण्डू,मंदाग्नि, वात, सूजन, कफ, विषूचिका, श्वास, खाँसी, शीतरोग, और आमशूल इन सब रोगोंको हरे है।

पञ्चसिद्धौषधयः।

तैलकन्दः सुधाकन्दः क्रोडकन्दो रुदन्तिका। मत्स्याक्षीसहिताः पंच सिद्धौषध्यः प्रकीर्तिताः ॥ सिद्धानां चौषधीनां तु पंचकं रोगनाशनम्। रसस्य भस्मकरणे प्रोक्तं पूर्वभिषग्वरैः ॥

अर्थ-तैलकंद, सुधाकंद, क्रोडकंद, रुदन्ती और मत्स्याक्षी यह पांचों औषधी एकत्र मिलीहुई पंचसिद्धौषधी कहलाती हैं। सिद्धौषधीपंचक पारेकी भस्म करनेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको नाश करनेवाला है।

पञ्चरत्नानि।

कनकं हीरकं नीलं पद्मरागश्च मौक्तिकम्।
पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तमृषिभिः पूर्वदर्शिभिः ॥

अर्थ-सोना, हीरा, नीलम, पद्मराग और मोती इन पांचोंको पञ्चरत्न कहते हैं।

पञ्चसूरणाः।

श्वेतश्च वनजश्चैव चित्रदण्डस्तृतीयकः।
अत्यम्लपर्णी मालाख्यः सूरणः पञ्चधा स्मृतः ॥

अर्शोघ्नपंचकं सर्वार्शानाश्चैव विनाशनम् ॥

अर्थ-जमीकंद, जंगलीजमीकंद, चित्रदंडकंद, अत्यम्लपर्णी और मालाकंद यह पंचसूरण कहलाते हैं। पंचसूरण-सर्वप्रकारके अर्शरोगनाशक हैं।

पञ्चपित्तानि ।

वाराहच्छागमहिषमत्स्यमायूरपित्तकम्।
पञ्चपित्तमिति ख्यातं सर्वेष्वेव हि कर्म्मसु ॥

अर्थ-सुअर, बकरा, भैंस, मछली और मोर इनके पित्तोंको पञ्चपित्त कहते हैं इनको सर्व कर्म्मोंमें प्रयोग करना चाहिये।

औषधीपंचामृतम् ।

गुडूची मुशली शुण्ठी त्रिकण्टकशतावरी। तत्पंचकं त्वौषधीजं पञ्चामृतमुदीरितम् ॥ पञ्चामृतं त्वौषधीजं तुष्टिपुष्टिबलप्रदम्। वीर्य्यवृद्धिकरं चैव प्रोक्तं पूर्वमनीषिभिः ॥

अर्थ-गिलोय, मुशली, सोंठ, गोखरू और शतावर इनपांचों औषधी एकत्र मिलीहुईको औषधीपंचामृत कहते हैं। औषधी पंचामृत-तुष्टिकारक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक और वीर्य्यवर्द्धक है।

पञ्चामृतम् ।

दुग्धं सशर्करं चैव घृतं दधि तथा मधु।
पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं विधेयं सर्वकर्मसु ॥

अर्थ-दूध, मिश्री, घी, दही और शहत इन पांचों मिलेहुये पदार्थोंको पञ्चामृत कहते हैं। यह पञ्चामृत सर्व कर्मोंमें प्रयोग करना चाहिये।

षड्रसाः ।

रसाः स्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषायकाः। षड्द्रव्यमाश्रिताश्चैव तद्रसषट्कमुच्यते ॥ मधुरादिरसाः षड्वै चाग्निदीप्तिकरा मताः। पौष्टिका लघवश्चैव वातनाशकरा मताः ॥

अर्थ-मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु और कषाय इन छैंहों रसोंको षड्रस कहते हैं। यह मधुरादि षड्रस-अग्निप्रदीपक, पुष्टिकारक, लघु और वातविनाशक हैं।

क्षारषट्कम् ।

क्षाराणि तिललाङ्गल्यो माषापामार्गयोस्तथा।

मौष्ककं कौटजं चैव क्षारषट्कं विनिर्दिशेत् ॥
क्षारषट्कं वातगर्भगुल्मरक्तरुजापहम् ।

अर्थ-तिलोंकी नालका खार, कलिहारीका खार, उडदका खार चिराचिटेका खार,मोखेका खार और कुडेका खार इन सबको क्षार षट्क कहते हैं । क्षारषट्क-वात, गर्भ, गुल्म और रुधिरके विकारोंको हरे है ।

षडूषणम् ।

पञ्चकोलं समरिचं षडूषणमिति स्मृतम् ।
पंचकोलगुणं तत्तु रूक्षमुष्णं विषापहम् ॥

अर्थ-पंचकोलमें काली मिर्च मिलानेसे षडूषण कहा जाता है। षडूषणके गुण पंचकोलके समान जानने । पंचकोल-रूखा, गरम और विषविनाशक है ।

सुगन्धषट्कम् ।

जातीफलं लवङ्गञ्च कर्पूरं पूगवालकम् ।
सुगंधषट्कमेतद्धि सकंकोलमुदाहृतम् ॥
सुगन्धषट्कं रुचिकृद्धृद्यं दाहविनाशकृत् ।

अर्थ-जायफल, लौंग, कपूर, सुपारी, सुगन्धवाला और कंकोल यह सब एकत्र मिलीहुई औषधियोंको सुगन्धषट्क कहलाता है। सुगन्धषट्क-रुचिकारक हृदयको हितकारक और दाहविनाशक है।

महासुगन्धषट्कम् ।

कालागरु च कस्तूरी कर्पूरः श्वेतचंदनम्।कंकोलं चाहिगन्धा च महादिषट्सुगंधकम् ॥ महासुगंधिषट्कं तु वृष्यं चैव सुगन्धिकृत् । भूतबाधां कफं दाहं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-काली अगर,कस्तूरी,कपूर, सफेदचंदन, शीतलचीनी और नकुलकंद यह सब एकत्र मिलेहुये महासुगन्धषट्क कहलाता है। महासुगन्धषट्क-वीर्य्यवर्द्धक, सुगंधिकारक तथा भूतबाधा, कफ और दाहको दूर करे है ।

प्राणहरषट्कम् ।

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।

प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥

अर्थ-सडाहुवा मांस, वृद्धा स्त्री, भादोंकी धूप, तरुण दही, प्रभातकालमें मैथुन और निद्रा यह छः वस्तु तत्काल प्राणोंको हरनेवालीहैं।

प्राणकरषट्कम्।

सद्यो मांसं वरं चान्नं बाला स्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदके स्नानं सद्यः प्राणकराणि षट् ॥

अर्थ-ताजा, मांस, नवीन अन्न, बाला स्त्री, क्षीरका भोजन, घृतयुक्त भोजन और गरमजलसे स्नान करना यह छैः वस्तु तत्काल प्राणोंको करनेवाली हैं ।

सप्तोपविषाणि ।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लांगली करवीरकः । गुञ्जाहिफेनो धत्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥ सप्तोपविषवर्गोयं स वरः परिकीर्त्तितः । अयुक्त्या सेवितश्चायं मारयत्येव निश्चितम् ॥

अर्थ-आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी कनेर, चोंटली, अफीम और धतूरा यह सात उपाविषकी जाति हैं सप्तउपाविष वर्ग-अत्यन्त श्रेष्ठ है,और अनेक कार्य्योंमें लिया जाताहै । यह अयुक्तिके साथ सेवन कियाहुआ मनुष्यको मार देवे है ।

शरीरस्थ सप्तधातवः।

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः ।

अर्थ-रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र यह शरीरमें रहनेवाली सात धातु हैं ।

सुवर्णादिसप्तधातवः ।

स्वर्णं रूप्यञ्च ताम्रञ्च रंगं यशदमेव चासीसं लोहञ्च सप्तैते धातवो गिरिसम्भवाः ॥ वलीपलितखालित्यकार्श्याबल्यज्वरामयान् । निवार्य्य देहं दधति नृणां तद्धातवो मताः ॥

अर्थ-सोना, रूपा, तांबा, रांग, जस्त, सीसा और लोहा यह पर्वतसे उत्पन्न होनेवाली सात धातु हैं । यह सातधातु-देहमें वलिका पडना, विनासमय बालोंका धवल होजाना, मस्तकमेंसे बालोंका गिरजाना, कृशता, निर्बलता, वृद्धावस्था और रोगोंको दूर करके देहको धारण करती हैं इसीकारण इनको धातु कहते हैं ।

शरीरस्थधातूद्भवधातवः।

स्तन्यं रजो वसा स्वेदो दन्ताः केशास्तथैव च।
ओजश्च सप्तधातूनां क्रमात्सप्तोपधातवः॥

अर्थ-दूध, रज, वसा (चर्बी), स्वेद (पसीना), दांत, केश और ओज यह क्रमसे सातधातुओंकी उपधातु हैं अर्थात् रससे दूध, रक्तसे स्त्रीका रज, मांससे चर्बी, मेदासे पसीना, अस्थिसे दांत, मज्जासे केश और शुक्रसे ओज उत्पन्न होता है।

सप्तोपधातवः।

स्वर्णजं स्वर्णमाक्षीकं तारजं तारमाक्षिकम्। तुत्थं ताम्रभवं ज्ञेयं कंकुष्ठं वङ्गसम्भवम्॥ रसको जसदाज्जातो नागात्सिन्दूरसम्भवः। लोहाज्जातं लोहकिट्टमेते सप्तोपधातवः॥

अर्थ-स्वर्णसे सुवर्णमाखी, रूपेसे रूपामाखी, ताँबेसे नीलाथोथा, रांगसे कंकुष्ठ, जस्तसे खपरिया, शीसेसे सिंदूर और लोहेसे लोहकिट्ट उत्पन्न होतीहै इसप्रकार यह सातधातुओंकी सात उपधातु हैं।

सप्तसन्तर्पणम्।

द्राक्षादाडिमखर्जूरैर्मर्दिताम्बु सशर्करम्।
लाजाचूर्णं समध्वाज्यं सप्त सन्तर्पणं स्मृतम्।

अर्थ-दाख, अनार, खजूर यह तीनों चीनिके सरबतमें मिले हुए और इनमें खीलोंका चूर्ण मिलाहुवा तथा घी और शहद सहित यह सप्तसन्तर्पण कहाजाता है।

मतान्तरे।

द्राक्षादाडिमखर्जूरकदलीशर्करान्विता।
समध्वाज्यं च पित्तघ्नं सन्तर्पणमुदाहृतम्।

अर्थ-किसीके मतसे दाख, अनार खजूर, केला, शर्करा, मधु और घी यह पित्तनाशक और सन्तर्पण हैं।

सप्तविधक्काथः।

क्काथः सप्तविधश्चोक्तः पाचनः शोधनो मतः। क्लेदनः शमनश्चैव दीपनस्तर्पणस्तथा॥ शोषकश्चैकभेदस्तु गुणास्तस्य

ब्रवीमि ते । अर्द्धांशः पाचनश्चोक्तो रव्यंशः कोष्ठशुद्धिकृत् ॥ चतुर्थांशो घर्म्मकारी त्वष्टांशो रोगनाशनः । षष्ठांशश्चाग्निजनकः षोडशांशस्तु शोषणः ॥ पञ्चमांशस्तृप्तिकारी मुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-क्वाथ सात प्रकारका होता है, जैसे-पाचन १शोधन २ क्लेदन ३ शमन ४ दीपन ५ तर्पण ६ शोषक ७ तहां जो काढेका जल जलकर आधा रहगयाहो उसको अर्द्धांश कहते हैं । अर्द्धांश क्वाथ पाचन है । जिसका पानी जलकर बारहवाँ भाग शेष रहजाय उसको रव्यंश कहते हैं।रव्यंश क्वाथ कोठेको शुद्धि करे है जिस काढेका जल जलकर चौथा भाग बाकी रहजाय उसको चतुर्थांश कहते हैं । चतुर्थांशकाढा पसीनेको लानेवाला है जिस काढेका जल जलकर-आठवाँ भाग शेष रहजाय उसको अष्टांश कहते हैं । अष्टांश क्वाथ रोगनाशक है । जिसका जल जलकर छठा भाग बाकी रहाहो उसको षष्ठांश कहते हैं । षष्ठांश क्वाथ अग्निजनक है । जिसका पानी जलकर सोलहवाँ भाग बाकी रहजाय उसको षोडशांश कहते हैं । षोडशांश क्वाथ शोषक और जिस काढेका जल जलकर पाँचवाँ भाग बाकी रहजाय उसको पंचमांश कहते हैं पंचमांश काढा तृप्तिकारक है ।

सप्तोपरत्नानि ।

वक्रांतः सूर्य्यकान्तश्च चन्द्रकान्तस्तथैव च ।
कर्पूरकः स्फाटिकश्च पेरोजाख्यश्च काचकः ॥
सप्तोपरत्नगणिता मणयो लोकविश्रुताः ॥

अर्थ-वैक्रांत, सूर्य्यकांत, चन्द्रकांत, कपूर, स्फटिक, पिरोजा और कांच यह सात उपरत्न हैं ।

अष्टधातवः ।

हिरण्यं रजतं कांस्यं ताम्रं सीसकमेव च ।
रङ्गमायसरैत्यश्च धातवोष्टौ प्रकीर्तिताः ॥

अर्थ-सोना, चांदी, कांसा, तांबा, सीसा, रांग, लोहा और पीतल यह आठ धातु हैं ।

मतान्तरे ।

सुवर्णं रजतं ताम्रं लोहं कुप्यञ्च पारदम् ।
वंगञ्च सीसकञ्चैव अष्टौ देवसुसम्भवाः ॥

अर्थ-और किसीके मतसे सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्त, पारा, रांग और सीसा यह आठ धातु देवोंसे उत्पन्न हैं ।

अष्टविधचिकित्सा ।

शल्यं शालाक्यकायञ्च तथा बालचिकित्सितम् ।
अगदं विषतन्त्रञ्च भूतविद्यारसायनम् ॥
वाजीकरणमेवेति चिकित्साष्टविधा स्मृता ।

अर्थ-शल्य,शालाक्य,काय,बालचिकित्सा,अगद विषतंत्र, भूतविद्या,रसायन और वाजीकरण ऐसे चिकित्सा आठ प्रकारकी है ।

अष्टगंधाः ।

कर्पूरं चदनं मुस्ता कुङ्कुमं देवदारु च ।
रोचना केसरोशीरं गंधाष्टकमुदाहृतम् ॥

अर्थ-कपूर,चंदन,नागरमोथा,केसर, देवदारू, गोरोचन, नागकेसर और खस यह गंधाष्टक अर्थात् अष्टगंध है ।

अष्टवर्गाः ।

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ वृद्धिऋद्धिके। अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः॥ अष्टवर्गो हिमः स्वादुर्बृंहणः शुक्लो गुरुः । भग्नसन्धानकृद्बल्यः शरीरबलवर्द्धनः ॥ वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक,मेदा,महामेदा,वृद्धि ऋद्धि,काकोली आर क्षीरकाकोली यह आठ औषधी एकत्र मिली हुई अष्टवर्ग कही जाती है । अष्टवर्ग-शीतल,स्वादिष्ठ,पुष्टिकारक, शुक्रजनक,भारी, भग्नसन्धानकारक,बलकारक, शरीरवर्द्धक बलको बढानेवाला तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, तृषा, दाह,ज्वर, प्रमेह और क्षयरोगको दूर करे है ।

अष्टवर्गप्रतिनिधयः ।

मेदाभावे अश्वगन्धा महामेदे च शारिवा ।
जीवकर्षभकाभावे गुडूची वंशलोचना ॥
ऋद्ध्यभावे बला देया वृद्ध्यभावे महाबला ।

अर्थ-मेदाके अभावमें असगन्ध, महामेदाके अभावमें शारिवा, जीवकके अभावमें गिलोय, ऋषभकके अभावमें वंशलोचन, ऋद्धिके अभावमें खिरटी और वृद्धिके अभावमें सहदेवी देनी चाहिये ।

अष्टमंगलघृतम् ।

वचा कुष्ठं तथा ब्राह्मी सिद्धार्थकमतापि च । सारिवा सैन्धवश्चैव पिप्पली घृतमष्टमम् ॥ सिद्धं घृतमिदं मेध्यं पिबेत्प्रतिदिनेदिने । दृढस्मृतिः कुमाराणां पिबतामष्टमङ्गलम् ॥

अर्थ-वच, कूठ, ब्राह्मी, सरसों, सारिवा, सैंधव, पीपल और घी इन सबके द्वारा सिद्ध कियेहुये घृतको अष्टमङ्गलघृत कहते हैं इस घीको जो बालक प्रतिदिन पीतेहैं उनकी मेधाकी वृद्धि होती है और स्मरणशक्ति दृढ होजाती है ।

नवधातवः ।

हेमतारारनागश्च ताम्रवङ्गं च तीक्ष्णकम् ।
कांस्यकं कान्तलोहश्च धातवो नव कीर्त्तिताः ॥

अर्थ-सोना, चांदी, पीतल, सीसा, ताँबा, रांग, लोहा, काँसा और कान्तलोह यह नवधातु हैं ।

नवरत्नानि ।

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि तार्क्ष्यं च पुष्पं भिदुरं च नीलम् ।
गोमेदजं चाथ विदूरकं च क्रमेण रत्नानि नवग्रहाणाम् ॥

अर्थ-माणिक, मोती, मूँगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नील, गोमेद और वैदूर्य्य यह क्रमसे नवग्रहोंके नवरत्न हैं ।

क्षारदशकम् ।

शिग्रुमूलकपलाशचुक्रिकाचित्रकार्द्रकसनिम्बसम्भवैः ।
इक्षुशैखरिकमोचिकोद्भवैः क्षारपूर्वदशकं प्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-साहिंजना, मूली, ढाक, इमली, चीता, अदरख, नीम, ईख, चिरचिटा और केला इन दश वृक्षोंके क्षारको क्षारदशक कहतेहैं ।

दशांगधूपः ।

मधुमुस्तं घृतं गंधो गुग्गुलागरुशैलजम् ।
सरलः सिह्लसिद्धार्थं दशांगो धूप उच्यते ॥

अर्थ-शहत, नागरमोथा, घी, गन्धक, गूगल, अगर, भूरिछरीला, धूपसरल, शिलारस और सरसो इन सबको एकत्र कर दशांगधूप बनाई जाती है ।

दशमूलम् ।

उभाभ्यां पंचमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।
दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः ॥
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥

अर्थ-लघु और बृहत्पंचमूल दोनोंको मिलाकर दशमूल होताहै. दशमूलत्रिदोषनाशक तथा श्वास, खाँसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, आनाह, पसलियोंकी पीडा और अरुचिको दूर करे है ।

दशमूत्रम् ।

हस्तिमहिषोष्ट्रगवाजमेषाश्वगर्दभमानुषमानुषीणां दशानां मूत्रम् ।

अर्थ-हाथी, भैंस, ऊँट, गाय, बकरी, भेड, घोडा, गर्दभ, मनुष्य और स्त्री इन दश प्राणियोंके मूत्रको दशमूत्र कहतेहैं ।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते निघण्टुभूषणे संख्यावर्गः समाप्तः ॥ २२ ॥

॥ इति पूर्वार्ध समाप्तम् ॥

॥ श्रीः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषणे ।

उत्तरार्द्धम् ।

मङ्गलाचरणम् ।

स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्तव्यापारवेदी विनिवृत्तसंगः ।
प्रवृद्धकालोऽप्यजरो वरेण्यः पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥

अनूपादिवर्गः ।

देशस्तु त्रिविधो ज्ञेयो ह्यनूपो जांगलस्तथा ।
साधारणो विशेषेण ज्ञातव्यास्ते मनीषिभिः ।

अर्थ–अनूप, जांगल और साधारण इन भेदोंसे देश तीन प्रकारके हैं सो वह देश बुद्धिमानों करके जानना चाहिये ।

अनूपदेशका लक्षण ।

नदीपल्वलशैलाढ्यः फुल्लोत्पलकुलैर्युतः । हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवितः ॥ शशवराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः । प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्यो नीलसस्यफलान्वितः ॥ अनेकशालिकेदारकदलीक्षुविभूषितः । अनूपदेशो ज्ञातव्यो वातश्लेष्ममयार्त्तिमान् ॥

अर्थ–जिसमें नदी, तलैया और पर्वत अधिकहों तथा जो फूले कमल और कुमुदोंके समूहसे संयुक्त होय;हंस, सारस,जलमुर्गी और चकवादि पाक्षियों करके सेवितहो, खरगोस, सूअर, भैंसा,रुरू और रोहि इनके समूहसे आकुल होय,बहुतसे वृक्ष और पुष्पोंसे युक्तहोय, हरी दूब और फलोंसे परिपूर्ण होय और जो अनेक प्रकारके शालिधानोंके खेतोंसे केला और इक्ष्वादिवृक्षोंसे सुशोभित होय, अर्थात् यह सब जिसमें होंय उसको अनूपदेश कहते हैं अनूपदेश–वात और कफके रोगोंको उत्पन्न करता है ।

अन्यच्च ।

बहुतरशुभनद्यश्चारुपानीयपुष्टास्सरससरउपेता शाद्वलासारभूमिः । हरितकुशजलानां शालिकेदाररम्या दिनकरकरदीप्तिं वाञ्छते यत्र लोकः॥गुरुमधुररसाढ्या भाति चक्षुःसदार्द्रा विविधजनितवर्णाः शालिगोधूमयूषाः । मधुररसविभुत्तया मानवानां प्रकोपी भवति कफसमीरः स्यात्तदानूपदेशः॥

अर्थ-जिसमें निर्मल और मनोहर जलवाली बहुतसी नदी होंय तथा जिस देशकी पृथ्वी हरीदूब और रसवाले वृक्षोंसे अच्छादित होरही हो, हरी कुशा और जलसे भरेहुएहैं शालिधानोंके खेत, इन खेतोंसे विभूषित होरहीहै भूमि जिसकी और जिस देशके लोक सूर्यकी किरणोंकी अभिलाषा करते हैं,जहां भारी मधुर रसान्वित और निरंतर हरी ईख होती है,जहां नानाप्रकारके रंगके शालिधान और गोधूमादि होते हैं और जहां मधुर रसको भक्षण करनेसे कफ और वातकुपित होतेहैं,उस देशको अनूपदेश कहतेहैं।हिन्दी-खादर,तराई।

जांगलदेशलक्षणम् ।

आकाशशुभ्र उच्चश्च स्वल्पपानीयपादपः । शमीकरीरबिल्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः॥ हरिणैणर्क्षपृषतगोकर्णखुरसंकुलः। सुस्वादुफलवान्देशो वातलो जांगलः स्मृतः ॥

अर्थ-जो देश आकाशके समान स्वच्छ और ऊँचाहो जिसमें अल्पजलहो, बहुत थोडे वृक्ष होंय और शमी, करील, बेल, आक, पीलु और बेरी जिसमें अधिकतासे होंय तथा हरिण, एण, रीछ, चीता, रोझ और गर्दभादि, पशुओंसे जो देश भराहुआहो,जिसमें स्वादिष्ठ फल उत्पन्नहों उस देशको जांगलदेश कहते हैं, जांगलदेश वातकारक है ।

अन्यच्च ।

खरपरुषविशालाः पर्वताः कण्टकीर्णा दिशिदिशि मृगतृष्णाभूरुहाः शीर्णपर्णाः ॥ अतिखररविरश्मीपांशुसम्पूर्णभूमिः सरसि रसविहीनः कूपकारम्भकर्षः ॥ तदनुविरसस्याहारिणो गोमहिष्यः प्रभवति रसमांसे रूक्षभावश्च स-

म्यक् ॥ पुनरपि हिमवाहं शालिसस्यं न चेक्षुर्भवति रुधिरपि-
त्तं कोपमाशु ह्युपैति ॥

अर्थ-जिसमें तीक्ष्ण और कठोर पहाड स्थित हैं तथा कंटकोंसे व्याप्त होरही है दिशा जिसकी, जिसमें विनाही जलके मृगोंको जल प्रतीत होवे, जहां फटेहुये पत्तोंवाले वृक्ष अधिकतर होते हैं, जहां सूर्यकी धूपसे अत्यन्त गरम हुए रेतेसे पृथ्वी परिपूर्ण होरहीहै, जहां सरोवर और कुओंका पानी नीरस होकर सूखता जाताहै, जहां नीरसघान खानेसे हाथी, गाय, भैंस, इत्यादि पशु अधिक प्रसन्न नहीं होते, जहां रस और मांसमें रूक्षता उत्पन्न होतीहै, जहाँ शीतल पवन, शालिधानोंके खेत और ईख नहीं होतीहै. और जहां रक्त और पित्त कुपित होताहै उसको जांगलदेश कहते हैं। हिन्दी-कटेर खुस्कदेश ।

साधारणदेशका लक्षण ।

उभयगुणयुतं वा नातिरूक्षं न स्निग्धं न च खरबहुलं चेच्चा-
भितः कण्टकाढ्यम् ॥ भवति जलकीर्णं नातिशीतं न चोष्णं
समप्रकृतिसमेतं विद्धि साधारणञ्च ॥

अर्थ-जहाँ अनूप और जांगल इन दोनों देशोंके लक्षण मिलतेहों जहां न तो अत्यन्त रूक्षता होवे और न अधिक स्निग्धता होवे, जहां तेज और कांटे अधिक न होवें, जो चारों ओर पानीसे भर रहाहो जिसमें न अत्यन्त शीत होवे और न अत्यन्त गरमी होवे समान प्रकृतिवाला हो उसको साधारण देश कहते हैं।

अन्यच्च ।

यत्र द्वयोरपि च लक्षणयोर्निवेशो गोधूममाषचणकाभिधया-
वनालैः ॥ यो राजितः सममलो जनसौख्यदायी साधारणः
स गदितोऽखिलवैद्यराजैः ॥

अर्थ-जिसमें अनूप और जांगल दोनों देशोंके लक्षण मिलते होंय, जहां गेहूँ, उडद, चनें और ज्वार उत्पन्न होतेहोंय और जिसमें सरदी, गरमी समान हो उसको साधारण देश कहतेहैं।

अथ क्षेत्रभेदाः ।

क्षेत्रभेदं प्रवक्ष्यामि शिवेनाख्यातमंजसा ।

ब्राह्मं क्षात्रं च वैश्यीयं शौद्रं चेति यथाक्रमात् ॥

अर्थ-अब महादेवके कहेहुए क्षेत्रभेदको कहताहूँ-ब्राह्मक्षेत्र क्षात्रक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र और शौद्रक्षेत्र इन भेदोंसे क्षेत्र चार प्रकारका है सो यथाक्रमसे जानना।

ब्राह्मक्षेत्रका लक्षण।

प्रायो दर्भपलाशवारिबहुलं यत्रार्जुना मृत्तिका।
ज्ञेयं तत्प्रथमं द्विजातिसुखदं द्रव्यं तदुत्थं भवेत् ॥

अर्थ-जिसमें कुशा और पलाशके वृक्ष अधिक हों, जो क्षेत्र जलसे परिपूर्ण हो, जहांकी मृत्तिका सफेद हो उस क्षेत्रको ब्राह्मक्षेत्र कहते हैं। ब्राह्मक्षेत्रके उत्पन्न हुए द्रव्य ब्राह्मणोंको सुखदेनेवाले हैं।

क्षात्रक्षेत्र।

ताम्रभूमिवलयं विभूधरं यन्मृगेन्द्रमुखसंकुलं कुलम्।
घोरघोषिखदिरादिदुर्गमं क्षात्रमेतदुदितं पिनाकिना ॥

अर्थ-जिसका रंग ताम्रवर्ण हो, और जो पर्वत, सिंह और मृगादिकोंके समूहसे संयुक्तहो तथा भयंकर शब्द करनेवाले पशु पक्षी और खैर आदिके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो उसको 'शंकर' ने क्षत्रियक्षेत्र कहाहै।

वैश्यक्षेत्र।

शातकुम्भनिभभूमिभास्वरं स्वर्णरेणुनिचितं निधानवत्।
सिद्धकिन्नरसुपर्वसेवितं वैश्यमाख्यदिदमिन्दुशेखरः ॥

अर्थ-जिसका रंग सोनेकी समान पीतवर्ण हो। जिसकी मृत्तिकामें सुवर्णके कणसे मिलेहों, एवं सिद्ध, किन्नर और देवादिकों करके जो सेवित हो उसको 'शंकर' ने वैश्यक्षेत्र कहाहै।

शूद्रक्षेत्र।

श्यामस्थलाढयं बहुसस्यभूतिदं लसत्तृणैर्बब्बुलवृक्षवृद्धिदम्।
धान्योद्भवैः कर्षकलोकहर्षदं जगाद शौद्रं जगतो वृषध्वजः ॥

अर्थ-जिस पृथ्वीका रंग श्यामवर्ण हो, जिसमें नाना प्रकारकी घासें उत्पन्न होतीहों, जहां तृण और बबूरके पेड बहुत होवें, तथा जो नाना प्रकारके धान्योंके उत्पन्न होनेसे किसानोंको आनंद देनेवाली हो उस पृथ्वीको वृषध्वज (शंकर) ने शूद्रक्षेत्र कहा है।

चतुर्विधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः ।

द्रव्यं क्षेत्रादुदितमनघं ब्राह्मतः सिद्धिदायि क्षत्रादुत्थं वलिपलितजिद्विश्वरोगापहारि ॥ वैश्याज्जातं प्रभवतितरां धातुलोहादिसिद्धौ शौद्रादेतज्जनितमखिलव्याधिविद्रावकं द्राक् ॥

अर्थ-ब्राह्मण क्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सिद्धिदायकहैं । क्षत्रियक्षेत्रसे उत्पन्नहुए द्रव्य वालि और पलित तथा संसारके रोगोंको हरनेवाले होते हैं । वैश्यक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य धातु और लोहादिकी सिद्धिमें लियेजाते हैं और शूद्रक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सर्वप्रकारके रोगोंको हरनेवाले हैं । इन उपरोक्त ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य और शूद्र इन चारों क्षेत्रोंसे उत्पन्न हुये द्रव्य क्रमसे ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंको हितकारीहैं ।

अन्यच्च क्षेत्रभेदाः ।

ब्रह्मा शक्रः किन्नरेशस्तथा भूरित्येतेषां देवताः स्युः क्रमेण ।
प्रोक्तास्तत्र प्रागुमावल्लभेन प्रत्येकं ते पंचभूतानि वक्ष्ये ॥

अर्थ-ब्रह्मा,इंद्र, कुबेर और पृथ्वी यह ऊपर कहेहुए ब्राह्मादि क्षेत्रोंके क्रमसे देवता हैं ऐसा शिवने कहा है यह प्रत्येक क्षेत्र पंचभूतोंसे पांच प्रकारका है उसको कहताहूं ।

पार्थिवक्षेत्र ।

पीतस्फुरद्वलयशर्करिलाश्मरम्यं पीतं यदुत्तममृगं चतुरस्रभूतम् । प्रायश्च पीतकुसुमान्वितवीरुदादि तत्पार्थिवं कठिनमुद्यदशेषतस्तु ॥

अर्थ-जो क्षेत्र पीलेरंगके गोल कण और पाषाणोंसे शोभित हो तथा जिस क्षेत्रकी पृथ्वीका रंगभी पीतवर्णहो और जिस क्षेत्रमें वृक्ष लताभी पीले फूलवाले हों तथा जिसकी भूमि कठिन हो उसको पार्थिवक्षेत्र कहते हैं ।

आप्यक्षेत्र ।

अर्द्धचन्द्राकृति श्वेतं कमलाभं दृषच्चितम् ।
नदीनदजलाकीर्णमाप्यं तत्क्षेत्रमुच्यते ॥

अर्थ-जो क्षेत्र अर्धचन्द्राकार हो, जिसका वर्ण सफेदकमलके समान हो और जो पाषाणोंसे संयुक्त हो,नदी नदादि जलाशयोंसे व्याप्त हो उसको आप्यक्षेत्र जानना ।

तैजसक्षेत्र।

खदिरादिद्रुमाकीर्णं भूरिचित्रकवेणुकम्।
त्रिकोणं रक्तपाषाणं क्षेत्रं तैजसमुत्तमम्॥

अर्थ-जो क्षेत्र खदिरादिकके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो, जिसमें अनेक चीतेके और बाँसके वृक्षहों, जिसका आकार तिकोना हो और जिसमें लाल पाषाण हों उसको तैजसक्षेत्र कहते हैं॥

वायवीयक्षेत्र।

धूम्रस्थलं धूम्रदृषत्परीतं षट्कोणकं तूर्णमृगावकीर्णम्।
शाकैस्तृणैरंचितरूक्षवृक्षकं प्रकारयेत्तत्खलु वायवीयम्।

अर्थ-जिस क्षेत्रका रंग धूसर हो तथा जो धूँएके रंगके पाषाणोंसे संयुक्त हो और जिसके छःकोने हों जिसमें मृगादिपशु, शाक और तृण अधिकतासे हों. और जिसमें रूखे वृक्ष हों उस क्षेत्रको वायवीय क्षेत्र कहते हैं।

आन्तरिक्षक्षेत्र।

नानावर्णं वर्तुलं तत्प्रशस्तं प्रायःशुभ्रं पर्वताकीर्णमुच्चैः।
यच्च स्थानं पावनं देवतानां प्राह क्षेत्रं त्र्यक्षगस्त्वांतारिक्षम्॥

अर्थ-जिस क्षेत्रका रंग नानाप्रकारका हो, जो क्षेत्र गोलहो, तथा जो श्वेतपर्वतोंसे आकीर्ण और ऊँचा होवे और जिसमें देवतादि वास करते हों उसको महादेवने आंतरिक्षक्षेत्र कहा है।

पंचविधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः।

द्रव्यं व्याधिहरं बलातिशयकृत्स्वादु स्थिरं पार्थिवं
स्यादाप्यं कटुकं कषायमखिलं शीतं च पित्तापहम्।
यत्तिक्तं लवणं च दीप्यमरुचिं चोष्णं च तत्तैजसं
वायव्यं तु हिमोष्णमम्लमबलं स्यान्नाभसं नीरसम्॥

अर्थ-पार्थिवक्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-रोगनाशक, अत्यंत बलकारक, स्वादिष्ठ और स्थिर होते हैं। आप्यक्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-चर्परे, कषेले, शीतल और पित्तनाशक होते हैं। तैजस क्षेत्रके उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-कडवे, नमकीन, अग्निको दीपन करनेवाले, वातनाशक और गरम होते हैं। और

वायवीय क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-शीतल, गरम, खट्टे और अबलकारक होते हैं । और आंतरिक्ष क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले सब द्रव्य नीरस होते हैं ।

पांच क्षेत्रोंके देवता ।

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रोस्मादीश्वरोथ सदाशिवः ।
इत्येताः क्रमतः पंच क्षेत्रभूतादिदेवताः ॥

अर्थ-ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव ये क्रमसे पाँच क्षेत्रोंके पाँच देवता हैं ।

वृक्षोत्पत्तिः ।

जित्वा जवादरिसुसैन्यमिहाजहार वीरः पुरा युधि सुधाकलशं गरुत्मान् ॥ कीर्णैस्तदा भुवि सुधाशकलैः किलासीद्वृक्षादिकं सकलमस्य सुधांशुरीशः ॥

अर्थ-पूर्वकालमें जिससमय बलवान् गरुडजीने सर्वदेवसेनाको संग्राममें जीतकर अमृतके कलशको शीघ्रतासे छीनाथा उससमय जो अमृतकी बूँदें कलशमेंसे पृथ्वीके भागोंमें गिरीं उन्हीं बूँदोंसे यह। सब वृक्षादिक उत्पन्न हुए, और इन सबका स्वामी चन्द्रमा हुआ

वृक्षोंके ब्राह्मणादिभेद ।

तत्रोत्पन्नास्तूत्तमे क्षेत्रभागे विप्रीयाद्यौ विप्रुषो यत्रयत्र। क्षोणीजादिद्रव्यभूयं प्रपन्नास्तास्ताः संज्ञा बिभ्रते तत्र भूयः ॥ एवं क्षेत्रानुगुण्येन तज्ज्ञा विप्रादिवर्णिनः । यदि वा लक्षणं वक्ष्याम्यमोहाय मनीषिणाम् ॥

अर्थ-ब्राह्मणादिक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-ब्राह्मण, क्षत्रियक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-क्षत्रिय, वैश्यक्षेत्रोंमें उत्पन्न हुए द्रव्य-वैश्य और शूद्रक्षेत्रमें उत्पन्न हुए द्रव्य-शूद्र कहलाते हैं। ऐसे प्रत्येक क्षेत्रके अनुसार वृक्षोंके ब्राह्मणादि भेद हैं उनमें वैद्यको कदाचित् भ्रम न होजावै इसकारण उनके लक्षण कहता हूँ ।

तल्लक्षणानि ।

किसलयकुसुमप्रकाण्डशाखादिषु विशदेषु वदंति विप्रमेतान् ।
नरपतिमतिलोहितेषु वैश्यं कनकनिभेषु सितेतरेषु शूद्रम् ॥

अर्थ-जिसके पत्र, पुष्प, दण्डी और शाखादि बडे होंय, उसको ब्राह्मणजातिका वृक्ष कहते हैं । जिसके पत्र पुष्प प्रकाण्ड और

शाखादि लाल होवैं उसको क्षत्रियजातिका वृक्ष जानना । और जिसके पत्र पुष्पादि पीले होवैं उसको वैश्य तथा जिसके काले होवैं उसको शूद्रजातिका जानना ।

ब्राह्मणादिवृक्षोंको योजनेकी विधि।

विप्रादिजातिसंभूतान्विप्रादिष्वेव योजयेत् ।
गुणाढ्यानपि वृक्षादीन्प्रातिलोम्यं न चाचरेत् ॥

अर्थ-ब्राह्मणजातिके वृक्ष ब्राह्मणोंको देवै, क्षत्रियजातिके क्षत्रियोंको, वैश्यजातिके वैश्योंको और शूद्रजातिके शूद्रोंको देवै। अधिक गुणवाले वृक्षोंकोभी प्रतिलोम (उलटा) न करै, अर्थात् ब्राह्मणजातिके वृक्षोंको क्षत्रियादिकको, और क्षत्रियादिके वृक्षोंको ब्राह्मणवैश्यादिकोंको शूद्र-ब्राह्मण- और क्षत्रियको और शूद्रजातिके वृक्षोंको ब्राह्मणादिको न देवै ।

अथौषधिनिर्णयश्चतुर्विधः ।

किंचिद्दोषप्रशमनं किंचिद्धातुप्रदूषणम् ।
स्वस्थवृत्तौ मतं किंचित्त्रिविधं द्रव्यमुच्यते ॥

अर्थ-कोई औषधि वातादिक दोषोंको शान्त करनेवाली कोई रक्तादिक धातुओंको दूषित करनेवाली और कोई औषधि नीरोग प्राणियोंको हितकारक है, ऐसे इस संसारमें जितने द्रव्य हैं वह सब तीन प्रकारके जानने ।

तत्त्रिविधं यथा ।

द्रव्यं तु त्रिविधं प्रोक्तं जाङ्गमौद्भिदपार्थिवम् ।

अर्थ-फिर वही द्रव्य जंगम औद्भिद और पार्थिव इन भेदोंसे तीनप्रकारके हैं ।

जंगमद्रव्य ।

मधूनि गोरसाः पित्तं वसा मज्जासृगामिषम् ।
विण्मूत्रचर्म रेतोस्थि स्नायुः शृंगखुरा नखाः ॥
जंगमेभ्यः प्रयुज्यन्ते केशा लोमानि रोचनाः ।

अर्थ-शहत, गोरस, पित्त, चरबी, मज्जा, रुधिर, मांस, विष्ठा, मूत्र, त्वचा, वीर्य, हड्डी, नसैं, सींग, खुर, नख, केश, रोम और गोरोचन (गोलोचन) ये पशु मनुष्य और पक्ष्यादि चलते हुए जीवोंसे उत्पन्न द्रव्य व्यवहारमें आते हैं इनको जंगमद्रव्य कहते हैं ।

पार्थिवद्रव्यम् ।

सुवर्णं समलाः पंचलोहाः ससिकतासुधामनःशिलाले ।
मणयो लवणं गैरिकांजने भौममौषधमुदिष्टम् ॥

अर्थ-सोना, चाँदी, तांबा, जस्त, रांग, सीसा, लोहा, शिलाजीत, बालू, सोनामाखी, खपरिया, मुर्दासिंग, मनशिल, हरिताल, हीरादि नवरत्न, उपरत्न, सैंधवादिलवण, गेरू, खरियामट्टी, कसीस, सुर्मा इत्यादि पार्थिव अर्थात् ये औषधी पृथ्वीकी खानोंमेंसे निकलतीहैं इसकारण इनको भौम औषध कहते हैं ।

औद्भिदद्रव्यम् ।

वनस्पतिर्वीरुधश्च वानस्पत्यस्तथौषधिः ।
फलैर्वनस्पतिः पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैरपि ॥
ओषध्यः फलपाकांताः प्रतानैर्वीरुधः स्मृताः ।

अर्थ-धरतीको फोडकर जो द्रव्य. निकले उसको औद्भिदद्रव्य कहतेहैं और उस औद्भिदकी चार जाति हैं, वनस्पति १ वीरुध २ वानस्पत्य ३ और औषधि ४ जिनपै विना फूलकेही फल लगैं उनको वनस्पति तथा पादप कहते हैं, जैसे-वड, पीपल इत्यादि । और जिनपै फूल लगकर फल आतेहैं उनको वानस्पत्य तथा शाखी कहतेहैं । जैसे-आम, जामुन इत्यादि । और जो फल आनेके पश्चात् सूखजातेहैं उनको औषधि कहतेहैं । जैसे-गेहूँ, जौ आदि । और जिनकी वेल चलती है उनको वीरुध कहते हैं ।

अन्यच्च ।

ओषध्यः पञ्चधा ख्याता लता गुल्माश्च शाखिनः।पादपाः प्रसराश्चेति तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥ गुडूच्याद्या लताः प्रोक्ता गुल्माः पर्पटकादयः।आम्राद्याः शाखिनो ज्ञेया वटाश्वत्थादिपादपाः ॥ कंटकार्यादिकाः सर्वाः प्रसरा इति कीर्त्तिताः ।

अर्थ-लता, गुल्म, शाखि, पादप और प्रसर, इन भेदोंसे औषधि पांचप्रकारकी हैं उनके लक्षण कहताहूँ गिलोय, पान, सोमवल्ली, अपराजिता, स्वर्णवल्ली इत्यादि वीरुध अर्थात् लताहैं ।पित्तपापडा आदि गुल्म जानने, आम आदि शाखी जानने, वडपीपल इत्यादि पादप जानने, कटेरी आदि प्रसर जानने ।

अथ वृक्षादीनां पुंस्त्वादिकथनम् ।

स्त्रीता पुंस्ता क्लीबता च द्रुमादौ ज्ञेया युक्त्या लक्षणं तद्वदामि ।

अर्थ-वृक्षादिकोंमें स्त्री, पुरुष और नपुंसक, ये तीन भेद हैं, उनके लक्षण आगे कहता हूँ ।

स्निग्धं दीर्घं पेलवं चित्तहारि पुष्पाद्यं चेत्स्त्री मता सा भिषग्भिः ।

अर्थ-जिनके पुष्प फलादिक स्निग्ध, दीर्घ, कोमल और मनोहर होवैं, वह स्त्रीजातिके वृक्ष जानने ।

नो दीर्घा नातिह्रस्वाः किसलयसुमनःस्कंधकाण्डादयश्चेत्
स्थूलाः पारुष्यभाजस्त इह निगदिताः पूरुषा वैद्यवर्य्यैः ॥

अर्थ-जिनके पल्लव, पुष्प, स्कन्द, काण्ड आदि न तो अत्यन्त दीर्घ होंय और न अत्यन्त ह्रस्व होंय तथा: स्थूल और दृढ होवैं उनको पुरुषजातिके वृक्ष जानने ।

पुंसो वध्वाश्च लिंगं मिलति च यदि वा क्लीबता साभिधेया
स्वंस्वं स्वेस्वे नियुक्तं गदिजनफलदं भेषजं तत्कृतं च ॥

अर्थ-जिनमें पुरुष और स्त्री दोनोंके लक्षण मिलते होंय उनको नपुंसकजातिके वृक्ष जानना स्त्रीजातिके वृक्ष स्त्रियोंको, पुरुषजातिके पुरुषोंको और नपुंसकजातिके नपुंसकोंको देने चाहिये, इसप्रकार करनेसे रोगियोंको फलकी प्राप्ति होती है ।

द्रव्यं पुमान्स्यादखिलस्य जंतोरारोग्यदं तद्बलवर्द्धनञ्च ।
स्त्री दुर्बला स्वल्पगुणा गुणाढ्याः स्त्रीष्वेव क्वापि नपुंसकं स्यात् ।

अर्थ-सर्व पुरुषजातिकी औषधि-आरोग्यताजनक और बलको बढानेवाली हैं, स्त्रीजातिकी औषधि दुर्बल और अल्पगुणवाली तथा स्त्रियोंको अधिक गुण करनेवालीहै और नपुंसकजातिकी औषधि किसीकोभी हितकारी नहीं है ऐसा निघण्टुचूडामणिमें लिखा है ।

क्षुत्पिपासा च निद्रा च वृक्षादिष्वपि लक्ष्यते ।
मृज्जलादानतस्त्वाद्ये पर्णसंकोचतोंतिमा ॥

अर्थ-भूँख, पियास और निद्रा यह वृक्षादिकोंमेंभी पाई जातीहै,

क्योंकि वृक्ष मिट्टी खाते, और पानी पीते हैं जो इनको मिट्टी और पानी न मिले तो वह नष्ट हो जाते हैं अर्थात् सूखजातेहैं रातको वृक्षोंके पत्ते सकुचजाते और फिर सबेरेको खिलजाते हैं, इसकारण वृक्षादिकोंमें निद्रा पाई जाती है ।

वृक्षादीनां पंचभूतात्मकत्वकथनम्।

यत्काठिन्यं सा क्षितिर्योद्रवांभस्तेजस्तूष्मा वर्द्धते यत्स वातः।
यद्यच्छिद्रं तन्नभः स्थावराणामित्येतेषां पंचभूतात्मकत्वम् ॥

अर्थ-वृक्षोंमेंभी मनुष्योंकी तरह पंचभूत रहते हैं वृक्षोंमें कठिनता पृथ्वीका भाग है, गीलापन जलका भाग है, उष्णता अग्निका अंश है, वृक्षोंकी वृद्धि वायुका विभाग है, और वृक्षोंमें जो छिद्र होते हैं वह आकाशका अंश है ।

वृक्षादीनां परोपकारः।

मूलत्वक्सारनिर्य्यासनाडिस्वरसपल्लवाः ।
क्षाराः क्षीरफलं पुष्पं भस्म तैलानि कंटकाः ॥
पत्राणि शुंगाः कंदाश्च प्ररोहाश्चोपकारकाः ।

अर्थ-मूल, त्वक्, सार, निर्य्यास, नाड, स्वरस, पल्लव, क्षार, क्षीर, फल, पुष्प, भस्म, तैल, कंटक, पत्र, अंकुर और कंद यह सब वृक्षोंके अंग उपकार करनेवाले हैं इसकारण वृक्ष परोपकारी हैं मनुष्य तो कोई परोपकारी होते हैं परन्तु वृक्ष तो प्रायः सबही परोपकारी होते हैं अतएव जो मनुष्य परोपकारी नहीं होते वह वृक्षादिकोंसे भी जड हैं । (इ० भो० रा०) अब अंग्रेजी मतसे वृक्षोंका विशेष विवरण लिखते हैं। सब वृक्ष स्त्री और पुरुष इन भेदोंसे दोप्रकारके हैं, वृक्षोंके पुष्प ऋतु हैं, फल संतान हैं वृक्षोंके सन्तान भी स्त्रीवृक्ष और पुरुषवृक्षके संयोगसे होती है ऐसा इंग्रेजी ग्रन्थोंमें लिखा है किन्तु संस्कृतके ग्रन्थोंमें नहीं । एकदल और द्विदल इन भेदोंसे वृक्षकी दो जातिहैं, एकदल जातीके वृक्षमें उत्पन्न होतेही एक पत्ता निकलता है उसमें खडी हुई एक शिरा होतीहै और तिर्छी शिरायें अधिक नहीं होतीं, एकदल अंतर्वर्द्धक है । इसकी उत्पत्ति फलफूलादिके भीतरसे होती है, और इसमें शाखा नहीं होती । द्विदलवृक्षमें उत्पन्न होनेके समय प्रथम दो पत्र निकलते हैं इन पत्तोंमें तिर्छी नसें अर्थात् शिरायें अधिकतासे होती हैं, इसमें उत्पत्तिक्रिया डालियोंमेंसे अंकुरोंके फूटनेसे होती है और कलमेंभी बहुधा बांधी जाती हैं । एकदलको इंग्रेजीमें

“ओनिकोटीलीडोनस” और द्विदलको “काईकोट लेडोनस” कहते हैं। अंतर्वर्द्धकको “एडोजीनस” और बाह्यवर्द्धकको “एक्जोजीनस” कहते हैं। एकदल वृक्ष, केला, नारियल, ज्वार, बाजरा इत्यादि धान्य जानने। द्विदल वृक्षोंके बीजोंको दो दालें होती हैं। एकदल जातीके वृक्षको दो दालें नहीं होतीं। येही वृक्ष स्त्री पुरुषकी भाँति संगमसे फलरूपी संतानको उत्पन्न करते हैं, जैसी संतान वृक्षोंसे उत्पन्न होती हैं, तैसी पशु पक्षी अथवा मनुष्योंसे नहीं होतीं जैसे एकवृक्षसे करोड बीज उत्पन्न होतेहैं, तैसेही पत्ते, कंद, मूल, डंठलादिसेभी वृक्ष उत्पन्न होतेहैं। वृक्ष जिसप्रकार नरनारीसे संतानको उत्पन्न करते हैं सो कहते हैं। जब वृक्ष अपनी उमरमें आता है तब उसकी डंडीके अग्रभागमें कोपलपर पुष्पोंका वेष्टन दिखाई देता है उसको इंग्रेजीमें “केलीफ” कहते हैं। उस केलीफकी कली नीले रंगकी होती है, ढाकके फूलकी काली होती है जब वह कली उमरमें आवे तो वेष्टनको उघाडकर प्रफुल्लित हो बाहर फूल रूप दिखाई देतीहै। उसमें कोषभी होता है और पंखडी अलगरदिखाई देती है। पुष्पकोशको इंग्रेजीमें “कोरोला” कहते हैं, कमलादि पुष्पोंमें वेष्टन नहीं होता, उन फूलोंमें ऊपरकी पंखडियें खोरी और नीले रंगकी होती हैं इसको रोलाके भीतर नरनारी रूपसे तंतु होते हैं उसमें नरतंतुको इंग्रेजीमें “ष्टेमन” कहते हैं और नारी तंतुको “पिष्टल” कहते हैं नर तंतुओंके ऊपर रजसी लगी रहती है-जिसे संस्कृतमें पराग अथवा पुष्परज कहते हैं। अंग्रेजीमें “पोलन” कहते हैं। नारीतन्तु खुक्कल होता है, उसका मुख खुला हुआ होता है जिसको योनि कहते हैं, अंग्रेजीमें “ष्टिग्मा” कहते हैं, नारीतन्तु जिस स्थानसे उत्पन्न होते हैं उनको गर्भाशय कहते हैं अंग्रेजीमें “ओवरी” और लैटिनमें “डिस्क” कहते हैं। ष्टिग्मा व ओवरीके मध्य जो मार्ग होता है उसको इंग्रेजीमें “स्टाइल” कहते हैं स्टाइलमें छोटे २ वीर्यकण होते हैं जिनको इंग्रेजीमें “फोह्विला” कहते हैं। नरकेशरमें जो पुष्परज होतीहै वह पवनके द्वारा उडकर ष्टिग्माके भीतर जाय वहांसे ओवरीके भीतर जाकर गर्भबाँधती है, यह नरकेशर वह नारीकेशर एक २ पुष्पमेंभी होती हैं और पृथक् पुष्पमेंभी होती है उसका संयोग पवनसे अथवा पतगादि जीवोंसेभी होताहै, पतङ्गादि नरकेशरवाले पुष्पोंमें जाकर नारीकेशरवाले फूलोंमें जातेहैं व उनके शरीरमें लगाहुवा पुष्परज नारीकेशरके मुखमें जाकर गर्भबन्धनका कारण होता है।

इसप्रकार बहुत दूरसेभी संयोग होजाता है एकवर्गके वृक्ष समीप
होनेसे दूसरे नरपुष्पका रज नारीतंतुओंमें जानेसे संकर जातक
मिश्रितवृक्ष :त्पन्न होतेहैं। इसप्रकार एक जातिके नरनारी आदि
वर्गकी प्रथम संज्ञा इंग्रजीमें "रेनंक्युलेसी" लिखी है। इसप्रकार सर्व
वर्ग बाँधे हैं। तैसेही वृक्षोंके पत्तोंके द्वारा वृक्षोंके गुण शोधक नामोंसे
वृक्षोंके नाम लैटिनभाषामें लिखेगये हैं। उदाहरण टीफोलिया अ-
र्थात तीन पत्तोंका "राश्क बुर्धिआई" अर्थात् "राश्कब्रुर्धका" "गोते-
लमाण्डि फ्लोरा" बडे फूलका "मलटीफ्लोरा" छोटे फलका, "यूनी
फ्लोरा" छोटे फूलका, " थिसिलिफ्लोरा" डंठल आदिका नाम
कल्पित किया है। वृक्षवृक्षमें स्त्री पुरुष जातिके पृथक्२फूल हों तो
उन्हें अंग्रेजीमें "मोनीष्यस" कहते हैं अलग २वृक्षोंमें नरनारी जाति
के पुष्प होय तो उन्हें इंग्रजीमें "डारष्यस" कहते हैं। एकवृक्षमें हो
अथवा अलग २ वृक्षोंमें नरनारी जातिके पुष्प होंय तो उन्हें
इंग्रजीमें "डारष्यस" कहते हैं। एकवृक्षमें हो अथवा अलग२ वृक्षमें
हो तो इन दोनोंको "पोलीगोम्मा" कहते हैं। अपुष्प क्षुपको "क्रिप-
टोगेम्या" कहते हैं।

अथ नक्षत्रवृक्षाः।

अथ वक्ष्यामि नक्षत्रवृक्षानागमलक्षितान्।
पूज्यानायुष्यदांश्चैव वर्द्धनात्पालनादपि॥
विषद्रुधात्रीतरुहेमदुग्धाजम्बूस्तथाखादिरकृष्णवंशाः।
अश्वत्थनागौ च वटः पलाशाः प्लक्षस्तथाम्बष्ठतरुः क्रमेण॥
बिल्वार्जुनौ चैव विकंकतोथ सकेसराः शम्बरसर्जवंजुलाः।
सपानसार्काश्च शमीकदम्बास्तथाम्रनिम्बौ मधुकद्रुमः क्रमात्॥
अमी नक्षत्रदेवत्या वृक्षाः स्युः सप्तविंशतिः।
अश्विन्यादिक्रमादेषामेषा नक्षत्रपद्धतिः॥
यस्त्वेतेषामामजन्मर्क्षभाजां मर्त्यः कुर्य्याद्वेषजादीन्मदांधः
तस्यायुष्यं श्रीकलत्रं च पुत्रं नश्यत्येषां वर्द्धते वर्द्धनाद्यैः॥

अर्थ-अब नक्षत्रोंके वृक्षोंके नाम और लक्षण कहताहूँ जो अपने जन्मके नक्षत्रके वृक्षको पूजताहै, सींचता है और पालता है उसके आयुकी वृद्धि होती है। नक्षत्रवृक्षनाम-१ अश्विनी-कुचला २ भरणी-आमला ३ कृत्तिका-गूलर, स्वर्णक्षीरी-सत्यानासी ४ रोहिणी-जा.

मून ५ मृगाशिर-खैर ६ आर्द्रा-कृष्णागरु ७ पुनर्वसु-बाँस ८ पुष्य-पीपल ९ आश्लेषा-नागकेशर १० मघा-बड ११ पूर्वा-ढाक १२ उत्तरा-पाखर १३ हस्त-पाढ १४ चित्रा-बेल १५ स्वाती-अर्जुन १६ विशाखा-विकंकत (रामबबूर)१७ अनुराधा-पुन्नागवृक्ष १८ ज्येष्ठा-लोध१९मूल-साल २० पूर्वाषाढ-जलवेंत२१ उत्तराषाढ-पनस २२ श्रवण-आक २३धनिष्ठा-शमी २४ शततारका-कदम्ब२५ पूर्वाभाद्रपदा-आम२६ उत्तराभाद्रपदा-नीम२७रेवती-महुवेका वृक्ष । जो मनुष्य मदान्ध होके अपने जन्मनक्षत्रके वृक्षको औषधादिके काममें लाता है,उसकी आयु,लक्ष्मी,स्त्री और पुत्रादिक नष्ट हो जाते हैं और जन्मनक्षत्रके वृक्षको जल आदिके द्वारा बढानेसे आयुआदिकी वृद्धि होती है ।

आग्नेया विंध्यशैलाद्याःसौम्यो हिमगिरिःस्मृतः।अतस्तदोषधानि स्युरनुरूपाणि हेतुभिः॥अन्येष्वपि प्ररोहंति वनेषूपवनेषु च ।

अर्थ-विंध्यादिक पर्वत उष्णहैं और हिमालय पर्वत शीतल है । इसकारण विंध्यादिककी औषधी उष्णवीर्य्य और हिमालयपर्वतकी औषधि शीतवीर्य्य होती हैं।पर्वतोंके अतिरिक्त वन उपवनादिक भी उत्पन्नहोनेवाली औषधि अपने क्षेत्रोंके अनुसार वीर्यवान् होतीहैं

औषधीके छेनेमें मुहूर्त्तविचारः ।

भेषज्यं सल्लघुमृदुचरे मूलभे द्व्यंगलग्ने शुक्रेन्द्वीज्ये विदि च दिवसे चापि तेषां रवेश्च॥शुद्धे रिष्फे द्युनमृतिगृहे सत्तिथौ नोजनेभें ।

अर्थ-लघु चर और मूलनक्षत्रोंमें,शुक्रवार,चंद्रवार, गुरुवार,बुधशुक्रादि वारोंमें लग्नसे १२-७-८गृह पापोंसे हीन होय तो ऐसे शुभ कालमें औषधिको ग्रहणकरना देना और बनाना श्रेष्ठ है ।

औषधिलेनेकी विधि ।

यतध्वमुत्खातशुचिप्रदेशजा द्विजेन कालादिकतत्त्ववेदिना । यथायथं चौषधयो गुणोत्तराः प्रत्याहरंते यमगोचरानपि ॥

अर्थ-प्रथम पृथ्वीको झाड बुहारकर साफकरके कालादितत्त्वको जाननेवाला ब्राह्मण,औषधिका कौनसा अंग लिया जायगा इसको विचार कर पर्वतादिकामें भी छिपीहुई औषधियोंको ग्रहण करे ।

औषधिग्रहणमन्त्राः ।

स्वमारण्ये च एकान्ते प्रभाते मंत्रयुक्तितः । संग्राह्यमौषधं सिद्धं नो चेद्भवति काष्ठवत् । ॐनमस्तेऽमृतसम्भवे रसवीर्य्यविवर्द्धिनि । बलमायुश्च मे देहि पापान्मे जहि दूरतः॥ येनत्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां खनते भृगुः । येन वेन्द्रोऽथ वरुणस्तेन त्वामुपचक्रमे ॥ तेनाहं खनयिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना । ॐ आतप्तेतेमात्रियते तेजो वीर्य्योऽन्यथा भवेत्॥ अत्रैव तिष्ठ कल्याणि ममकार्यकरी भव॥मम कार्य्ये भूते सिद्धे ततः स्वर्गं गमिष्यसि । ॐह्रींचण्डेन्द्रं फट्स्वाहा ॥ अनेन मन्त्रेणानुसंयुतमातपे त्रिदिनं शुष्कनिहितं वीर्य्यधृग्भवेत् । अर्कपुष्यायां सर्वा औषध्य उत्पाटयन्ते ॥

अर्थ-स्वभावसे वनके एकान्त स्थानमें प्रभातके समय जाकर मन्त्रयुक्तिसे औषधिको ग्रहण करे तो कार्य्यकी सिद्धिहोतीहै, नहीं तो औषधि काठके समान जाननी । "ॐनमस्तेऽमृतसम्भवे" इत्यादि । इस मन्त्रको पढकर औषधिको उखाड लेवे और जो पत्र पुष्पादिक लेने होय तो वहभी इसी मन्त्रको पढकर लेवे, फिर उस औषधिको लेकर तीन दिन धूपमें सुखादेवे इसप्रकार करनेसे औषधि अत्यन्त वीर्य्यको धारण करनेवाली होजातीहै प्रायः पुष्यार्कयोगमें सब प्रकारकी औषधि उखाडी जातीहैं ।

औषधिउखाडनेकी विधि ।

गृह्णीयात्तानि सुमनाः शुचिः प्रातः सुवासरे । आदित्यसम्मुखो मौनी नमस्कृत्य शिवं हृदि ॥ साधारणधराद्द्रव्यं गृह्णीयादुत्तराश्रितम् ।

अर्थ-औषधि लानेके लिये प्रातःकाल उठकर स्नानआदिसे शुद्धहो शुभदिन वनमें जाकर सूर्य्यके सन्मुख उपस्थित हो मौनको धारणकर शंकरको हृदयमें नमस्कारकर साधारण भूमिमें उत्पन्न हुई, ऐसी औषधिको उत्तर दिशाकी ओरको मुखकरके उखाडे ।

दुष्टऔषधि ।

वल्मीककुत्सिताऽनूपश्मशानोषरमार्गजाः ।

जन्तुवह्निहिमव्याप्ता नौषध्यः कार्य्यसाधिकाः ॥

अर्थ-बाँबी, बुरीजमीन, अनूपदेश (खादर) श्मशानभूमि, ऊषर जमीनमें और मार्गमें उत्पन्न होनेवाली औषधि और जो कीडोंकी खाई हुईहो, अग्निसे दग्ध हुईहो, जिसको सरदी लगीहो, लूंकी, मारी, ऐसी औषधि कार्य्यको सिद्ध करनेवाली नहीं होती, इसकारण इनको नहीं लेवे।

औषधसंग्रह अथवा रखनेकी विधि।

धूमवर्षानिलक्लेदैः सर्वर्त्तुष्वनभिद्रुते ।
ग्राहयित्वा गृहे न्यस्येद्विधिनौषधसंग्रहम् ॥

अर्थ-धुँआ, वर्षा, पवन और सरदी इनसे रहित तथा जिसमें किसी प्रकारसे किसी तरहका विकार उत्पन्न न हो ऐसे उत्तम स्थानमें औषधियोंको भलेप्रकारसे रक्खे।

प्लोतमृद्भांडफलकशंकुविन्यस्तभेषजम् ।
प्रशस्तायां दिशि शुचौ भेषजागारमिष्यते ॥

अर्थ-कपडेकी थैलियोंमें, वा टुकडोंमें मिट्टीकी हांडियोंमें इमरतबानोंमें, मटकियोंमें, मलसोंमें, मलसियोंमें, सकोरोंमें, कटोरोंमें, प्यालोंमें, शीशियोंमें, बोतलोंमें, शीसोंमें, डिब्बोंमें, डिब्बियोंमें तखतोंपै, अलमारियोंमें, कीलोंपै खुंटीपै और मेखोंपै औषधी रखनी चाहिये और जिसमें सब औषधि रक्खीहों वह औषधी मंदिर अर्थात् औषधालय पूर्व अथवा उत्तरादिशा तथा उत्तम स्थानमें बनना चाहिये।

अतिस्थूलजटायाः स्युस्तासां ग्राह्यास्त्वचो ध्रुवम्। गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानि सकलान्यपि बुद्धिमान् ॥ महान्ति येषां मूलानि काष्ठगर्भाणि सर्वतः।तेषां तु वल्कलं ग्राह्यं ह्रस्वमूलानि सर्वशः॥ न्यग्रोधादेस्त्वचो ग्राह्याः सारः स्याद्बीजकादितः । तालीसादेस्तु पत्राणि फलं स्यात्त्रिफलादितः ॥ क्वचिन्मूलं क्वचित्कंदः क्वचित्पत्रं क्वचित्फलम् । क्वचित्पुष्पं क्वचित्सर्वं क्वचित्सारः क्वचित्त्वचः ॥ चित्रकं सूरणं निम्बो वासा च त्रिफलाक्रमात् । धातकी कंटकारी च खदिरः क्षीरपादपः ॥

अर्थ-लम्बी और स्थूल जडवाले वृक्षकी छाल लेवे,छोटीजडवाले वृक्षका सर्वांग लेवे,जिनकी जड बडी और चारों ओर छाल लिपट रहीहै उनका बक्कल लेवे, छोटी जडवाले वृक्षोंका पंचांग लेवे, वड इत्यादि वृक्षोंकी छाल लेनी चाहिये, विजयसारादिका सार नालिशादिके पत्र और त्रिफलादिके फल लेने चाहिये। किसीका मूल, किसीका कन्द, किसीके पत्ते, किसीका फल, किसीका फूल, किसीका पंचांग, किसीका सार और किसी वृक्षकी छाल लेनी चाहिये। चीतेकी छाल, सूरणका कन्द,नीम और अडूसे आदिके पत्र, त्रिफलेके फल, धायके फूल, कटेरी इत्यादिका पंचांग खदिरादिकका सार और दूधवाले वृक्षोंकी छाल लेनीयोग्य है।

क्वचिन्निंबस्य गृह्णीयात्पत्राभावे त्वचामपि ।
बालं फलं तु बिल्वस्य पक्कमारग्वधस्य च ॥

अर्थ-कहीं नीमके पत्ते न मिलें तो वहां छालभी लेलेवै, बेलका कच्चा फल और अमलतासादिका पक्का फल लेना चाहिये।

अंगेऽनुक्ते जटा ग्राह्या भागेऽनुक्तेऽखिलं समम् ।
पात्रेऽनुक्ते मृदः पात्रं कालेऽनुक्ते त्वहर्मुखम् ॥

अर्थ-जहां औषधिका कोई अङ्ग नहीं कहा होय वहां औषधिकी जड लेनीचाहिये, जहां तोल नहीं कहीहुई होय वहां सब औषधि समानभाग लेवे, जहां बासन नहीं कहा होय वहां मट्टीका बासन लेवे. जहां काल नहीं कहा होय वहां प्रातःकाल समझना।

नवान्येव हि योज्यानि द्रव्याण्यखिलकर्मसु।विना विडंगकृष्णाभ्यां गुडधान्याज्यमाक्षिकैः॥ पुराणं तु प्रशस्तं स्यात्तांबूलं कांजिकं तथा। शुष्कं नवीनद्रव्यं तु योज्यं सकलकर्मसु॥ आर्द्रं तु द्विगुणं युज्यादेष सर्वत्र निश्चयः। गुडूची कुटजो वासा कूष्मांडश्च शतावरी॥अश्वगंधा सहचरः शतपुष्पा प्रसारिणी। प्रयोक्तव्याः सदैवार्द्रा द्विगुणा नैव कारयेत्॥वासानिंबपटोलकेतकबलाकूष्मांडकेंदीवरी वर्षाभूकुटजाश्च कन्दसहिताः सा पूतिगन्धामृताः॥ऐन्द्री नागबला कुरंटकपुरा क्षत्रामृता स-

र्वदा सार्द्रा एव तु न क्वचिद्द्विगुणिताः कार्येषु योज्या बुधैः॥ घृतं तैलं च पानीयं कषायं व्यंजनादिकम् ।पक्त्वा शीतीकृतं चोष्णं तत्सर्वं स्याद्विषोपमम् ॥

अर्थ-सब कर्मोंमें सम्पूर्ण औषधि नवीन लेनी चाहिये, किन्तु वायविडङ्ग, पीपल, गुड,धान्य, घी और मधु, ये सब पुराने लेवे, अर्थात् नवीन न लेव। पान और काँजी पुरानी लेनी चाहिये सूखा और नवीनद्रव्य सब कार्योंमें लेवे, गीली औषधी मात्रासे द्विगुनी लेवे, ये सर्वत्र निश्चय है । असगन्ध, पियाबाँसा, सौंफ और पसर ये औषधी नित्य गीली लेवे, किन्तु द्विगुणी कदाचित् न लेवे। बांसा, नीम, पटोलपत्र, केतकी, खिरैटी, पेठा, नीलेकमल, शतावरी, सोंठ, इन्द्रजौ, कन्द, पसरन, गिलोय, इन्द्रायण, गङ्गेरन, पियावांसा, सौंफ और आमले ये सब द्रव्य गीले होनेपरभी वैद्य द्विगुणे न डाले. घी, तैल, जल, क्वाथ और भोजनकी वस्तु इनसबको एकबार पकाकर ठण्ढे होनेपर फिर गरम न करै यदि गरम करै तो विषकी समान अपकारी होजाते हैं।

द्रव्यलक्षण।

सूक्ष्मास्थिमांसला पथ्या सर्वकर्म्मणि पूजिता । क्षिप्ताम्भसि निमज्जेद्या भल्लातकयस्तथोत्तमाः ॥ वराहमूर्द्धवत्कंदो वाराहीकंदसंज्ञकः । सौवर्चलं तु काचाभं सैन्धवं स्फटिकप्रभम्॥ सुवर्णच्छविकं ज्ञेयं स्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् । इन्द्रपुष्पप्रतीकाशा मनोह्वा चोत्तमा मता॥श्रेष्ठं शिलाजतु ज्ञेयं प्राक्षतं न विशीर्य्यते।तोयपूर्णे कांस्यपात्रे प्रतानेन विवर्द्धते ॥ कर्पूरस्तुवरः स्निग्ध एला सूक्ष्मफला वरा ।श्वेतचन्दनमत्यन्तं सुगन्धि गुरुपूजितम् ॥ रक्तचन्दनमत्यंतं लोहितं प्रवरं मतम् । काकतुण्डनिभः स्निग्धो गुरुः श्रेष्ठोऽगुरुर्मतः ॥ सुगंधि लघु रूक्षञ्च सुरदारु वरं मतम् । सरलं स्निग्धमत्यर्थं सुगंधि च गुणावहम्॥ अतिपीता प्रगरक्ता तु ज्ञेया दारुनिशा बुधैः । जातीफलं गुरु स्निग्धं समं शुभ्रांतरं वरम्॥ मृद्वीका सोत्तमा ज्ञेया या स्याद्रो-

स्तनसन्निभा । करमर्दफलाकारा मध्यमा सा प्रकीर्तिता । खंड तु विमलं श्रेष्ठं चंद्रकांतसमप्रभम् ॥ गव्याज्यसदृशं रुच्यं गंधं मधुतरं मतम् ॥

अर्थ-हरड छोटी और बहुत गूदेवाली श्रेष्ठ होतीहै।जलमें डालनेसे डूबजावे वह भिलावा श्रेष्ठ होताहै। वाराहके मस्तककी समान वाराहीकंद उत्तम होताहै।काँचकी समान कालानोन उत्तम होताहै।स्फटिकमणिकी समान निर्मल और प्रभावाला सैंधानोन उत्तम होताहै। सोनामाखी सोनेकी समान पीली उत्तम होतीहै । मैनशिल इंद्रपुष्पकी सदृश श्रेष्ठ होतीहै । जो गिरनेसे नहीं फटे तथा जलसे भरेहुये काँसीके बासनमें गेरनेसे तारसे छोडे वह शिलाजीत उत्तम होताहै। कपूर चिकना और कषेला उत्तम होताहै।इलायची छोटे फलवाली उत्तम होतीहै । सफेद चंदन अत्यंत सुगंधिवाला और भारी उत्तम होताहै । लाल चंदन अत्यन्त लाल श्रेष्ठ होताहै।अगर कौवेके मुखकी समान स्निग्ध और भारी उत्तम होतीहै ।देवदारु सुगंधिवाली,हलकी और रूखी अच्छी होती है। सरल अत्यन्त चिकनी और सुगंधित उत्तम होतीहै । दारुहलदी अत्यंत पीली उत्तम होतीहै।जायफल भारी,चिकना,गोल और जो तोडनेसे भीतरसे सफेद निकले वह उत्तम होताहै । दाख गौके स्तनोंकी आकृतिवाली श्रेष्ठ होती है और करोंदेकी फलकी समान आकारवाली दाख मध्यम जाननी । खांड-चंद्रकांतकी समान धवल और निर्म्मल उत्तम होती है । शहत गायके घीके समान रुचिकारक और सुगंधिवाला उत्तम होताहै ।

स्वभावसे श्रेष्ठ ।

शालीनां लोहितः शालिः षष्टिकेषु च षष्टिकाः।शूकधान्येष्वपि यवो गोधूमः प्रवरो मतः॥शिम्बीधान्ये वरो मुद्गो मसूरश्चाढकी तथा।रसेषु मधुरःश्रेष्ठो लवणेषु च सैंधवः ।दाडिमामलकं द्राक्षां खर्जूरं च परूषकम्।राजादनं मातुलुंगं फलवर्गेषु शस्यते॥पत्रशाकेषु वास्तूकं जीवन्ती पोतिका वरा । पटोलं फलशाकेषु कंदशाकेषु सूरणम् ॥ एणः कुरंगहरिणौ जांगलेषु प्रशस्यते।पक्षिणां तित्तिरिर्लावो वरो मत्स्येषु रोहितः॥ह

रिणस्ताम्रवर्णः स्यादेणः कृष्णतया मतः । कुरंगस्ताम्र उद्दिष्टो हारिणः कृत्तिको महान् ॥ जलेषु दिव्यं दुग्धेषु गव्यमाज्येषु गोभवम् । तैलेषु तिलजं तैलमैक्षवेषु सिता हिता ॥

अर्थ- शालिधानोंमें लालशालिधान, षष्टिकधानोंमें साँठीधान, शूकधानोंमें जौ और गेहूं, शिम्बीधानोंमें मूंग, मसूर और अरहर, रसोंमें मधुर रस, लवणोंमें सैंधानोंन, फलोंमें अनार, आमला, दाख, खजूर, फालसा, खिरनी और बिजोरा, पत्रशाकोंमें-बथुआ, जीवन्ती पोईका साग, फलशाकोंमें परवल, कंदशाकोंमें जमीकंद, जंगली जीवोंमें काला, लाल और चितकबरा हिरन, पक्षियोंमें तीतर और लवा, मछलियोंमें रोहू, जलोंमें दिव्यजल, दूधोंमें गायका दूध, घृतोंमें गायका घी, तेलोंमें तिलका तेल और इक्षुविकारोंमें मिश्री उत्तम है । ताम्रके रंगके हिरनको हिरन कहते हैं, काले रंगके हिरनको एण और कुछेक लाल हिरनको कुरंग कहते हैं ।

स्वभावसे अश्रेष्ठ (बुरे) ।

शिम्बीषु माषान्ग्रीष्मर्तौ लवणेष्वौषरं त्यजेत् । फलेषु लकुचं शाके सार्षपाणां हितं मतम् ॥ गोमांसं ग्राम्यमांसेषु न हितं महिषीवसा मेषीपयः कुसुम्भस्य तैलं त्याज्यं च फाणितम् ॥

अर्थ-शिम्बीधानोंमें उडद, ऋतुओंमें ग्रीष्मऋतु, निमकोंमें खारी नोन, फलोंमें बडहर, सागोंमें सरसोंका साग, ग्राम्यमांसोंमें गायका मांस, चर्बियोंमें भैंसकी चर्बी, दूधोंमें भेडका दूध, तेलोंमें कसूमका तेल और इक्षुविकारोंमें राब त्यागने योग्य है ।

उपयोगविरुद्ध ।

शाकाम्लफलपिण्याककुलत्थलवणामिषैः ।
करीरदधिमांसैश्च प्रायः क्षीरं विरुध्यते ॥

अर्थ-शाक, खट्टेफल, तिलोंकी खल, कुलथी, निमक, मछली, बाँसके कल्ले, दही और मांसके साथ दूध भक्षण करना निषेध है ।

प्राणहारी च हारीतो हारिद्रालवणैः कृतः ।

अर्थ-हलदी और निमकके साथ हारीत-पक्षीका मांस खाना विषकी समान है ।

रुवोस्तैलेन संभृष्टं विषंमायूरमाहिषम् ॥

अर्थ–अंडेके तेलमें भुनाहुआ मोरका मांस और भैंसका मांस विषकी समान अपकारी है ।

वराहवसया भृष्टा बलाका तु हरत्यसून् ।

अर्थ– सूअरकी चरबीसे भुनाहुआ बलाका पक्षीका मांस भक्षण करनेसे शीघ्रही प्राण नष्ट होते हैं ।

संयुक्ता सैव वारुण्या कुल्माषैश्च विरुध्यते ।

अर्थ–बलाका पक्षीका मांस मदिराके साथ अथवा कुल्माषके साथ भक्षण करना संयोगविरुद्ध है ।

अविं कुसुम्भशाकेन मत्स्यतैलैः कणां त्यजेत् ।

अर्थ–भेडका मांस कसूमके सागके साथ तथा मछलीके तेलके साथ पीपल नहीं खानी चाहिये ।

माषैरिक्षुविकारांश्च कांजिकैस्तिलशष्कुली ।

अर्थ– उडदोंके साथ इक्षुविकार (गुड,खांड,बूरा, मिश्री इत्यादि) और कांजीके साथ तिलशष्कुली खानी निषेध है ।

कपोतः सार्षपे भृष्टो घृतं कांस्ये दशाहगम् ।

अर्थ–सरसोंके तेलमें भुनाहुआ कबूतरका मांस नहीं खाना चाहिये और कांसीके पात्रमें दशदिनका रक्खा हुआ घी खाना निषेध है ।

विषं घृतसमं क्षौद्रं मधुना गगनाम्बु च ।

अर्थ–बराबर भाग शहत और घी मिलाकर पीनेसे तथा सहतके साथ मेघके जलको पीनेसे विषकी समान अपकार करै है ।

मूलकं माषयूषेण मधुना न च भक्षयेत् ।

अर्थ–उडदोंके यूषके साथ अथवा मधुकेसाथ मूली नहीं खानी चाहिये।

नारिकेलजलेनापि कर्पूरं नैव भक्षयेत् ॥

अर्थ–नारियलके जल(दूध)के साथ कपूर भक्षण करना अनुचित है।

एकत्र सर्वमांसानि विरुध्यन्ते परस्परम् ॥

अर्थ–सर्वप्रकारके मांस एकत्र मिलाकर खाने नहीं चाहिये अर्थात् एक प्राणीके मांसके साथ दूसरे प्राणीका मांस मिलाकर नहीं खावै।

औषधी लेनेमें संकेत ।

लवणं सैन्धवं प्रोक्तं चंदनं रक्तचन्दनम् । चूर्णलेहासवस्नेहाः साध्या धवलचन्दनैः। कषायलेपयोः प्रायो युज्यते रक्तचन्दनम्।अन्तःसंमार्जने ज्ञेया ह्यजमोदा यवानिका ॥ बहिःसंमार्जने सैव विज्ञातव्याजमोदिका । पयःसर्पिःप्रयोगेषु गव्यमेव हि गृह्यते ॥ शकृद्रसो गोमयको गोत्रं गोमूत्रमुच्यते ।

अर्थ-जहां लवण लिखा है वहां सैन्धवलवण लेना चाहिये और चन्दनके स्थानमें लालचन्दन लेवै, परंतु चूरण अवलेह-आसव और तेल, इनमें सफेद चन्दन डाले, काढा और लेपादिकमें लाल चन्दन लेवै, अंतःसमार्जन (जो भक्षण करनेसे उदरको शुद्ध करै) औषधियों में अजमोदके जगह अजवायन लेनी चाहिये और बाहिःसम्मार्जन (जो शरीरके ऊपर लगानेस शरीरको शुद्ध करै)औषधियोंमें अजमोद की जगह अजमोदही डालै, जहां केवल दुग्ध और घृत लिखा है वहां गायका दूध घी लेवै, जहां शकृद्रस (गोबरका रस) लिखा है वहां गायके गोबरका रस लेवै, जहां केवल मूत्र लिखा है वहां गोमूत्र लेना चाहिये।

प्रतिनिधि ।

चित्रकाऽभावती दन्तीक्षारः शिखरिजोऽथवा। अभावे धन्वयासस्य प्रक्षेप्या तु दुरालभा॥ तगरस्याप्यभावे तु कुष्ठन्दद्याद्भिषग्वरः । मूर्वाभावे त्वचा ग्राह्या जिंगिनीप्रभवा बुधैः॥ अहिंस्राया अभावे तु मानकन्दः प्रकीर्तितः ।लक्ष्मणाया अभावे तु नीलकंठशिखा मता॥बकुलाऽभावतो देयं कह्लारोत्पलपंकजम् ।नीलोत्पलस्याभावे तु कुमुदं देयमिष्यते ॥ जातीपुष्पं न यत्रास्ति लवंगं तत्र दीयते। अर्कपर्णादिपयसो ह्यभावे तद्रसो मतः । पौष्कराभावतः कुष्ठन्तथा लांगल्यभावतः । स्थौणेयकस्याभावे तु भिषग्भिर्दीयते गदः ॥ चविकागजपिप्पल्यौ पिप्पलीमूलवत्स्मृते । अभावे सोमराज्यास्तु प्रपु-

न्नाटफलं मतम् ॥ यदि न स्याद्दारुनिशा तदा देया निशा बुधैः । रसांजनस्याभावे तु सम्यग्दार्वी प्रयुज्यते ॥ सौराष्ट्र्यभावतो देया स्फटिका तद्गुणा जनैः । तालीसपत्रिकाभावे स्वर्णताली प्रशस्यते ॥ भाङ्गर्यभावे तु तालीसं कंटकारी जटाऽथवा । रुचकाभावतो दद्याल्लवणं पांशुपूर्वकम् ॥ अभावे मधुयष्ट्यास्तु धातकीं च प्रयोजयेत् । अम्लवेतसकाभावे चुक्रं दातव्यमिष्यते ॥ द्राक्षा यदि न लभ्येत प्रदेयं काश्मरीफलम् । तयोरभावे कुसुमं बंधकस्य मतं बुधः ॥ लवंगकुसुमं देयं नखस्याभावतः पुनः । कस्तूर्य्यभावे कंकोलं क्षेपणीयं विदुर्बुधाः ॥ कंकोलस्याप्यभावे तु जातीपुष्पं प्रदीयते । सुगंधिमुस्तकं देयं कर्पूराभावतो बुधैः ॥ कर्पूराभावतो देयं ग्रन्थिपर्णं विशेषतः । कुंकुमाभावतो दद्यात्कुसुम्भकुसुमं नवम् ॥ श्रीखण्डचन्दनाभावे कर्पूरं देयमिष्यते । अभावे त्वेतयोर्वैद्यः प्रक्षिपेद्रक्तचन्दनम् ॥ रक्तचन्दनकाभावे नवोशीरं विदुर्बुधाः । मुस्ता चातिविषाभावे शिग्राभावे शिग्रा मता ॥ अभावे नागपुष्पस्य पद्मकेशरमिष्यते । मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वंद्वेऽपि वाऽसति ॥ वरी विदार्य्यश्वगन्धा वाराहीश्च क्रमात्क्षिपेत् । वाराह्याश्च तथाभावे चर्म्मकारालुको मतः ॥ वराहीकंदसंज्ञस्तु पश्चिमे गृष्टिसंज्ञकः । वाराहीकंद एवान्यश्चर्मकारालुको मतः ॥ अनूपसंभवे देशे वराह इव लोमवान् ॥ भल्लातकासहत्वे तु रक्तचन्दनमिष्यते ॥ भल्लाताभावतश्चित्रं नलश्चक्षारभावतः ॥ सुवर्णाभावतः स्वर्णमाक्षिकं प्रक्षिपेद्बुधः । श्वेतं तु माक्षिकं ज्ञेयं बुधै रजतवद्ध्रुवम् । माक्षिकस्याप्यभावे तु प्रदद्यात्स्वर्णगैरिकम् । सुवर्णमथवा रौप्यं मृतं यत्र न लभ्यते ॥ तत्र कान्तेन कर्माणि भिषक्कुर्य्याद्विचक्षणः । कान्ताभावे तीक्ष्णलोहं योजयेद्वैद्यसत्तमः ॥ अभावे मौक्तिकस्यापि मुक्ताशुक्तिं प्रयोजयेत् । मधु यत्र न लभ्येत तत्र जीर्णगुडो मतः ॥ मत्स्यंडय्यभावतो

दद्युर्भिषजः सितशर्कराम् । असंभवे सितायास्तु बुधैः खंडं प्रयुज्यते ॥ क्षीराभावे रसो मौद्गो मासूरो वा प्रदीयते । अत्र प्रोक्तानि वस्तूनि यानि तेषु च तेषु च ॥ योज्यमेकतराभावे परं वैद्येन जानता ।

अर्थ-चीतेके अभावमें दन्ती अथवा चिरचिटेका खार, धमासेके अभावमें जवासा,तगरके अभावमें कूठ,मूर्वाके अभावमें जिंगनीकी छाल, अहिंस्राके अभावमें मानकन्द, लक्ष्मणाकंदके अभावमें मयूरशिखा, मौलसिरीके अभावमें कुमुद,लालकुमुद और कमल, नीलेकमलके अभावमें कुमुद (नीलोफर), जायफलके अभावमें लौंग, आक इत्यादिके दूधके अभावमें आकआदिके पत्तोंका रस, पुष्करमूल और कलिहारीके अभावमें कूठ और थूनेरके अभावमें कूठ, जिस स्थानमें पीपरामूल न होय वहां चव्य और गजपीपल, वापचीके अभावमें चकवडके बीज, दारूहलदीके अभावमें हलदी, रसौतके अभावमें दारूहलदी, गोपीचंदनके अभावमें फिटकरी, तालीशपत्रके अभावमें स्वर्णतालीश,भारंगीके अभावमें तालीसपत्र वा कटेरीकी जड, कालेनोनके अभावमें पांशु लवण लेवै, मुरैठीके अभावमें धायके फूल, अमलवेतके अभावमें चूका,दाखके अभावमें कुम्भेरका फल, दाख और कुम्भेरके अभावमें दुपैरियाका फूल. नखद्रव्यके अभावमें लौंग, कस्तूरीके अभावमें शीतलचीनी,शीतलचीनीके अभावमें जायफल और कपूरके अभावमें सुगन्धमोथा वा गठिवन, केसरके अभावमें कसूमके नवीन फूल, श्रीखंडचन्दनके अभावमें कपूर, केसर और चन्दनके अभावमें लालचन्दन, लालचन्दनके अभावमें नवीन खस, अतीसके अभावमें नागरमोथा,हरडके अभावमें आंवला, नागकेसरके अभावमें कमलकेसर, मेदा और महामेदाके अभावमें शतावर, जीवक और ऋषभकके अभावमें विलाईकन्द,काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमें असगन्ध,ऋद्धि और वृद्धिके अभावमें वाराहीकन्द,और वाराहीकन्दके अभावमें चर्मकारआलू लेवै वाराही कन्दको पश्चिममें गृष्टि कहते हैं।चर्मकारआलू भी वाराहीकाही भेदहै ये सजल स्थानोंमें उत्पन्न होते हैं इसके ऊपर सूअरके रोम समान रोम होते हैं,भिलावेंके अभावमें लालचन्दन या

चीता, ईखके अभावमें नल, सोनेके अभावमें सोनामाखी, चांदीके अभावमें रूपामाखी, सोनामाखी और रूपामाखीके अभावमें स्वर्णमेरु, सोने और रूपेकी भस्मके अभावमें कान्तलोहकी भस्म, कान्तलोहके अभावमें तीक्ष्णलोह, मोतीके अभावमें मोतीकी सीप, सहतके अभावमें पुराना गुड, मिश्रीके अभावमें सफेद चीनी, सफेद चीनीके अभावमें सफेद खाँड और दूधके अभावमें मूँगका अथवा मसूरका रस लेवे । यहां कहीहुई प्रतिनिधि एकके अभावमें उसकी दूसरी वस्तु मिलानी चाहिये ।

रसवीर्य्यविपाकाद्यैः समं द्रव्यं विचिन्त्य चायुंज्याद्विविधमन्यच्च द्रव्याणां तु रसादिवत्॥योगे यदप्रधानं स्यात्तस्य प्रतिनिधिर्मतः । यत्तु प्रधानं तस्यापि सदृशं नैव गृह्यते॥ व्याधेरयुक्तं यद्द्रव्यं गणोक्तमपि तत्त्यजेत् । अनुक्तमपि युक्तं यद्योजयेत्तद्रसादिवित् ॥

अर्थ–किसी योगका कोई द्रव्य न मिले तथा जिसकी प्रतिनिधि नहीं कही हैं तो उस औषधिके वीर्य्य और विपाकादिके तुल्य वैद्य अन्य औषधिको समझकर प्रयोगमें डाले ।इस प्रतिनिधिकेही ऊपर न रहे । जो औषधि प्रयोगमें अप्रधान है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि डाले, और जो प्रधान है अर्थात् मुख्य औषधि है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि न लेवे,जैसे कि,मरिचादिगुटिकामें पीपल जवाखारादि अप्रधान औषधि हैं इनके बदलेमें दूसरी प्रतिनिधि गेरे किन्तु प्रधान मरिचके अभावमें प्रतिनिधि न लेवे, जो प्रयोगमें कहीहुई औषधि रोगमें अपकारीहै उसको उस योगमेंसे निकाल-देवे और जो औषधि रोगको दूर करनेवाली है, किन्तु वह उस योगमें नहीं है तोभी रसादिवित वैद्य उस योगमें मिलादेवै ।

द्रव्यांतर्गतपदार्थाः ।

रसो वीर्य्यं विपाकश्च ज्ञातव्यास्तेतियत्नतः ।
रसस्तु मधुरादिः स्याद्वीर्यं कार्यें समर्थता ॥
परिणामे गुणाढ्यत्वं विपाक इति संज्ञितम् ।

अर्थ–द्रव्योंमें रस, वीर्य्य और विपाक इनको यत्नपूर्वक जानना चाहिये,मधुरादिकको रस कहतेहैं, जो कार्यमें समर्थता करै उसको वीर्य और जो अन्तमें गुणोंको करै उसको विपाक कहते हैं ॥

द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च।पदार्थाः पंच तिष्ठंति स्वंस्वं कुर्वन्ति कर्म च॥रसाः स्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषायकाः॥षड्द्रव्यमाश्रितास्ते च यथापूर्वबलावहाः।तत्राद्या मारुतं घ्नंति त्रयस्तिक्तादयः कफम्।कषायतिक्तमधुराः पित्तमन्ये तु कुर्वते॥ये रसा वातशमना भवंति यदि तेषु वै।रौक्ष्यलाघवशैत्यानि न ते हन्युः समीरणम्॥ ये रसाः पित्तशमना भवंति यदि तेषु वै।तीक्ष्णोष्णलघुता चैव न ते तत्कर्मकारिणः॥ ये रसाः श्लेष्मशमना भवंति यदि तेषु वै । स्नेहगौरवशैत्यानि न ते हन्युः कफं तदा ॥

अर्थ-रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति ये पांच पदार्थ द्रव्यमें रहतेहैं और ये अपने २ कार्योंको करते हैं,स्वादु,अम्ल,लवण,तिक्त, कटु और कषेला ये छः रस द्रव्योंमें रहते हैं, और इनमें एकसे दूसरा बलहीन है अर्थात स्वादुरससे अम्लरस,अम्लरससे लवणरस, लवणरससे तिक्तरस,तिक्तरससे चरपरारसऔरचरपरेसे कषेलारस निर्बलहै। स्वादु,अम्ल और लवण ये तीनों रस वातनाशक हैं और तिक्त,कटु, कषेला ये तीनों रस कफको हरतेहैं तथा कषेला,तिक्त और मधुररस पित्तको शमन करते हैं, शेषके अम्ल, कटु और कषाय ये तीनों रस पित्तकारकहैं जो रस वातको दूर करनेवालेहैं, किन्तु उनमें रूक्षता, लघुता और शीतलता ये तीनों गुण होवैं तो वह कदापि वातको दूर नहीं करसक्के।जोरस पित्तको शान्त करनेवाले हैं जो उनमें तीक्ष्णता, उष्णता और लघुता ये तीनों गुण होवैं तो वह पित्तको नष्ट नहीं करसक्के ऐसेही जो रस कफको शमन करनेवाले हैं, यदि उनमें स्निग्धता,गुरुता और शीतलता ये तीनों गुण होवैं तो कदापि कफको दूर नहीं करसक्के ।

क्षारः कषायः पवनप्रकोपी मधुरोऽथ तिक्तः कफकोपनश्च ।
कट्म्लकौ पित्तविकारकारिणौ कट्म्लकौ वातशमौ प्रदिष्टौ॥
पित्तस्य नाशी मधुरः सतिक्तः कटूकषायौ शमनौ कफस्य ।
अन्योन्यमेतच्छमनं वदन्ति परस्परं दोषविवृद्धिमन्तः ॥

अर्थ-लवण और कषेला रस वातको कुपित करेहै, मधुर और कडवा रस कफको कुपित करनेवाला है, चरपरा और खट्टारस पित्तको कुपित करताहै और वातको शमन करताहै, मधुर और कडुवा रस पित्तको दूर करे है, चरपरा और कषेलारस कफको शमन करेहै और परस्पर दोषोंको बढानेवाले परस्परमें मिलेहुए दोष शमन करते ह ।

मधुरः श्लेष्मलः प्रायो जीर्णाच्छालियवादृते। प्रायोम्लं पित्तजनकं दाडिमामलकादृते ॥ अपथ्यं लवणं प्रायश्चक्षुषोन्यत्र सैंधवात् । तिक्तं कटुकभूयिष्ठमवृष्यं वातकोपनम् ॥ ऋतेमृतापटोलीभ्यां शुण्ठी शुष्काद्रसोनतः । कषायः प्रायशः शीतः स्तंभनश्चाभयां विना ॥

अर्थ-पुराने चाँवल, जौ, गेहूं, मूँग, सहत, मिश्री और जंगली जीवोंके मांसको छोडकर जितने मधुर रसवाले पदार्थ हैं सब पित्तको करतेहैं, सैंधव लवणको छोडकरके सम्पूर्ण लवण अपथ्य और नेत्रोंको अहितकारीहैं. गिलोय और परवलके सिवाय जितने कडवे पदार्थ हैं सब अवृष्य,वातको कुपित करनेवालेहैं,सोंठ,अदरख और लशुनको छोडकर जितने चर्परे पदार्थ हैं अवृष्य और वातको कुपित करनेवाले हैं, हरडको छोडकर जितने कषेले पदार्थ हैं प्रायः सबही शीतल और स्तम्भक हैं।

मधुररसवर्णनम् ।

मधुरं गौल्यमित्याहुरिक्ष्वादौ च स लक्ष्यते॥स्वादुः स्तन्यरसौजसां च बलकृद्वीर्यप्रदस्तृप्तिदः प्राहृद्यां रसनां करोति तदनुश्लेष्मप्रकोपप्रदः । पित्तानां दमनः श्रमोपशमनो वृष्यो नराणां हितः क्षीणानां क्षतपाण्डुनेत्रविरुजां हंता भवेन्माधुरः ॥

अर्थ-मधुर, गौल्य (गोल, रसंज्येष्ठ, गुल्म, स्वादु, मधूलक) ये सब मधुररसके पर्याय हैं, मधुररस इक्ष्वादिकमें रहताहै, मधुररस स्तनोंमें दूधको बढानेवाला, बल पुष्टिको करनेवाला, वीर्यजनक, हृदयको और जिह्वामें तृप्तिको करनेवाला, किंचित कफको कुपित करनेवाला,पित्तको दमन करनेवाला, भ्रमको शमन करनेवाला तथा,क्षीण,क्षत,पाण्डु,और नेत्ररोगवाले मनुष्योंको हितकारीहै ।

मधुरः पिच्छिलः शीतो धातुस्तन्यबलप्रदः ।
चक्षुष्यो वातपित्तघ्नः कुर्यात्स्थौल्यमलकृमीन् ॥

अर्थ-मधुररस-पिच्छिल, शीतल, धातु, स्तनोंमें दूध और बलको बढानेवाला, नेत्रोंको हितकारी, वातपित्तनाशक तथा स्थूलता, मल और कृमिको करनेवाला है ।

मधुरस्तु रसश्चिनोति केशान्वपुषः स्थौल्यबलौजवीर्यदायी ।
अतिसेवनतः प्रमेहशैत्यं जडतामांद्यमुखान्करोति दोषान् ॥

मधुररस-केशोंको सुन्दर करनेवाला,शरीरको स्थिरता देनेवाला तथा बल, ओज, वीर्य्यको देनेवाला है, यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो शीतलता, जडता, मन्दाग्नि, मुखरोग और प्रमेहादि रोगोंको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

सोऽतियुक्तो ज्वरश्वासगलगंडादिरोगकृत् । (रा० व०)

अर्थ-यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो ज्वर, श्वास, गलगण्डादि रोगोंको उत्पन्न करता है ।

अम्लरसवर्णनम् ।

अम्लस्तु चिंचाजंबीरमातुलुंगफलादिषु ।
अम्लोष्णोंतर्बहिः शीतो रुच्यः पित्तकफास्रदः ॥
विबन्धानाहदृष्टिघ्नो दंताक्षिभ्रूनिकोचकः ।

अर्थ-अम्लरस-इमली,जम्भीर और मातुलुंगादि फलोंमें होताहै, अम्लरस-गरम,बाहर अर्थात् स्पर्श करनेसे शीतल,रुचिकारक,पित्त, कफ और रुधिरको कुपित करनेवाला तथा विबन्ध, आनाह और दृष्टिको नष्ट करनेवाला और दांत,नेत्र,भौंहको सकुचानेवाला है ।

अन्यच्च ।

अम्लाभिधःप्रीतिकरो रुचिप्रदःप्रपाचनोयं मृदुतां च यच्छति।
भ्रांतिं च कुष्ठं कफपांडुतां च कार्श्यं च कासं कुरुतेतिसेवितः॥

अर्थ-अम्लरस-प्रीतिकारक,रुचिजनक, पाचक और मृदुताको करनेवाला है,इसको अधिक सेवन किया जाय तो भ्रान्ति, कुष्ठ, कफ, पाण्डुता और कृशताको करैहै ।

अन्यच्च ।

सोऽतियुक्तो भ्रमं कुर्य्यात्तृड्दाहतिमिरज्वरान् ।
कण्डूपाण्डुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-इसका अधिक सेवन किया जाय तो भ्रम, तृषा, दाह, तिमिर, ज्वर, कण्डू, पाण्डुता, वीसर्प, शोथ, विस्फोट और कुष्ठरोगको उत्पन्न करै है ।

लवणरसवर्णनम् ।

लवणस्तुवरः प्रोक्तः सैंधवादिषु दृश्यते ।
लवणः शोधनो रुच्यः पाचनः कफपित्तहा ॥
पुंस्त्ववातहरः कायशैथिल्यमृदुकारकः ।

अर्थ-लवणरस सैंधवादिक पदार्थोंमें देखा जाता है, लवणरस-शोधन, रुचिकारक, पाचक, कफपित्तनाशक, पुरुषतानाशक, वातहारक तथा शरीरमें शिथिलता और मृदुताको करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लवणो रुचिकृद्रसो नितांतं पचनः स्वादुकरश्च सारकश्च ।
अतिसेवनतो जरां च पित्तं शितिमानं च ददाति कुष्ठकारी ॥

अर्थ-लवणरस-रुचिकारक, पाचक, स्वादिष्ठ, सारक है इसको अधिक सेवन करे तो जरा, पित्त और कोढको करैहै ।

अपिच ।

सोतियुक्तोक्षिपाकास्रपित्तकोष्ठक्षतादिकृत् ।
वलीपलितखालित्यकुष्ठवीसर्पतृट्प्रदः ॥

अर्थ-इसको अधिक सेवन करनेसे नेत्रपाक, रक्तपित्त, कोढ और क्षतादिरोग उत्पन्न होतेहैं, शरीरमें वलीका पडना, कोढ, विसर्प और तृषा यह सब उत्पन्न होतेहै ।

तिक्तरसवर्णनम् ।

तिक्तन्तु पिचुमन्दादौ व्यक्तमास्वाद्यते रसः ।

अर्थ-कडवारस-नीम चिरायतादिमें रहता है तथा यह रस प्रायः गुप्त और बेस्वाद होता है ।

तिक्तः पित्तकफापहो ज्वरहरः कुष्ठादिदोषापहः शीतो रक्तगदापहः श्रमहरो रुच्यो न संक्लेदनः । जिह्वाकंठविशोधनो भवति तद्दाहापहो रोचनो वक्त्रोल्लासकरः प्रकुष्टकथितो निम्बादिके स्वादधृक् ॥

अर्थ-कडवारस-पित्त और कफको हरनेवाला, ज्वरको दूर करनेवाला, कुष्ठादि रोगोंको नष्ट करनेवाला, शीतल, रुधिरके विकारोंको दूर करनेवाला, श्रमनाशक, रुचिकारक, क्लेदकारक, जिह्वा और कंठको शुद्ध करनेवाला, दाहनाशक, रोचन आर मुखको प्रसन्न करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

तिक्तः शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत् । कृमिकुष्ठविषोत्क्लेददाहरक्तगदापहः ॥ रुच्यः स्वयमरोचिष्णुः कंठस्तन्यविशोधनः । वातलोऽग्निकरो नासाशोषणो रक्षणो लघुः ॥ सोऽतियुक्तः शिरःशूलमन्यास्तम्भश्रमार्तिकृत् । कम्पमूर्च्छातृषाकारी बलशुक्रक्षयप्रदः ॥

अर्थ-कडवारस-शीतल, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त, कफ, कृमि, कोढ, विष, उत्क्लेद, दाह, रुधिरविकार इनको दूर करै है, स्वयं अरुचिकारक होनेपरभी अरुचिवाले मनुष्योंको रुचिको उत्पन्न करै है, कंठ और स्त्रीके दूधको शोधै है, वातकारक, अग्निप्रदीपक, नासाको सुखानेवाला, रूखा और हलका है । कडवेरसको अधिक सेवन करनेसे-शिरःशूल, मन्यास्तंभ, श्रम, कम्प, मूर्च्छा और तृषारोग उत्पन्न होताहै तथा बल और शुक्रका नाश होताहै ।

कटुरसवर्णनम् ।

कटुस्तु पिप्पलीमूले मरिचादौ स लक्ष्यते॥ नेत्रस्राववहो मुखं विदहते कर्णाक्षिज्वालोद्वहन् बीभत्सं कुरुते श्रमं विदधते रूक्ष-

श्च तीक्ष्णो भृशम् । अग्निश्चोत्पथते क्षतं विदहते क्षीणस्य शस्तो न च वातं वर्द्धयते कफं प्रहरते रौद्रः कटुर्यो रसः ॥

अर्थ-चरपरारस-पीपलामूल और मिरचादिमें रहता है।चरपरारस-नेत्रोंमेंसे पानी टपकावे,मुखको जलावे, कानोंमें झलझलाहट करे, नेत्रोंमें ज्वाला उत्पन्न करै,भयंकरपनेको प्रगट करै,रूखा,तीक्षण अग्निको उत्पन्न करै,क्षतको दहन करनेवाला;क्षीण मनुष्योंको अहितकारी,वातको बढानेवाला,कफको हरनेवाला और रौद्रस्वरूप है।

अन्यच्च ।

कटुरुष्णश्च तीक्ष्णश्च विशदो वातपित्तकृत् । श्लेष्महृल्लघुराग्नेयः कृमिकण्डूविषापहः ॥रूक्षः स्तन्यहरश्चापि मेदःस्थौल्यापकर्षणः।अश्रुदो नासिकास्याक्षिजिह्वाग्रोद्वेगको मतः ॥ दीपनः पाचनो रुच्यो नासिकाशोषणो भृशम् । क्लेदमेदोवसामज्जाशकृन्मूत्रोपशोषणः ॥ स्रोतःप्रकाशको रूक्षो मेध्यो वर्चोविबन्धकृत् । सोतियुक्तो भ्रान्तिदाहमुखताल्वोष्ठशोषकृत्॥कंठादिपीडामूर्च्छांतर्दाहदो बलकान्तिहृत् ।

अर्थ-चरपरारस-गरम, तीक्ष्ण,विशद, वातपित्तकारक, कफनाशक, हलका, आग्नेय,कृमिनाशक, खुजलीको हरनेवाला, विषके विकारोंको दूर करनेवाला,रूखा, स्तनोंमें दूधको सुखानेवाला,मेदा और स्थूलताको हरनेवाला,आँसुओंको उत्पन्न करनेवाला,नासिका मुख,नेत्र और जिह्वाको उद्वेग करनेवाला,दीपन, पाचन, रुचिकारक,नासिकाको सुखानेवाला,क्लेद,मेद वसा,मज्जा,विष्ठा और मूत्रको सुखानेवाला,स्रोतोंको प्रकाशित करनेवाला,रूखा मेधाजनक और मलरोधक है।इसको अधिक सेवन करनेसे भ्रान्ति और दाह उत्पन्न होताहै।तथा मुख,तालु, ओष्ठ यह सूखजाते हैं, कंठमें पीडा उत्पन्न होवे, अंतर्दाह होवे, तथा बल और कान्ति नष्ट होवेहै ।

कषायरसवर्णनम् ।

कषायस्तुवरः प्रोक्तः स तु पूगीफलादिषु ।

अर्थ-कषाय,तुवर (तूवर,कुवर)यह कषायरसके पर्य्याय हैं।कषायरस सुपारी आदि पदार्थोंमें होता है ।

कषायो रोपणो ग्राही स्तम्भनः शोधनो हिमः ।
कफशोणितपित्तघ्नो जिह्वाजाडयकरो लघुः ॥

अर्थ--कषेलारस-व्रणको भरनेवाला, मलको रोकनेवाला,स्तम्भन, शीतल तथा कफ, रक्तपित्तको दूर करनेवाला, जिह्वामें जडताको करनेवाला और हलका है ।

मतान्तरम् ।

कषायः शोषणः स्तम्भी व्रणपाकार्त्तिनाशनः ।
कफशोणितपित्तघ्नो रूक्षः शीतो गुरुस्तथा ॥

अर्थ-कषेला रस-शोषण, स्तम्भक,वणपाककी पीडाको दूर करनेवाला,कफनाशक, रुधिरके विकारोंको हरनेवाला,पित्तनिवारक, रूखा, शीतल और भारी है ।

अन्यच्च ।

कषायनामानि रुणद्धि शोफं वर्णं तनोर्दीपनपाचनश्च ।
सत्त्वापहोऽसौ शिथिलत्वकारी निषेवितः पांडुकरोतिगात्रम् ॥

अर्थ-कषेलारस-सूजनको करे, वर्णको बिगाडदेवे,दीपन,पाचन, सामर्थ्यको नष्ट करे,शिथिलताको उत्पन्न करे और इसको अधिक सेवन कियाजाय तो शरीरमें पांडुता उत्पन्न होती है ।

अथ द्वन्द्वरसः ।

कटुः कषायश्च कफापहारिणौ माधुर्य्यतिक्तावपि पित्तनाशनौ।
कटम्लसंज्ञौ च रसौ मरुद्धरावित्थं च द्वन्द्वौ सकलामयापहौ॥

अर्थ-चरपरा और कषेलारस-कफको,मधुर और कडवारस पित्तको,चरपरा और खट्टारस वातको दूर करे है,इसप्रकार दो दो रस मिलेहुये सर्वप्रकारके रोगोंको हरे हैं।इन छः रसोंमें एकमें एक मिलनेसे अनेक भेद होजातेहैं सो कहते हैं ।

मिश्रितरसके ६३ भेद ।

मधुरोम्लं कटुस्तिक्तः कटुस्तुवर इत्यपि ।
क्रमादन्योन्यसंकीर्णा नानात्वं यांति षड्रसाः ॥

अर्थ–मधुर, अम्ल, चरपरा, कडवा, नमकीन और कषेला यह छः रस एक दूसरेके साथ मिलनेसे नानाप्रकारके भेदोंको प्राप्त होतेहैं और उनके गुणभी पृथक् २ होजाते हैं, वह सब नीचे लिखते हैं ।

सामान्येनात्र निर्दिष्टा गुणाः षड्रससम्भवाः । रसानां योगतस्तु स्यादन्य एव गुणोदयः॥संयोगाद्विषतां याति सममाज्येन माक्षिकम् । अमृतं तु विषं याति सर्पदष्टस्य वै यथा ॥

अर्थ–ये सामान्यतासे छः रसोंके गुण कहे हैं, किन्तु रसोंके मिलनेसे उनमें और औरही गुण उत्पन्न होजातेहैं, जैसे–घृतमें बराबर भाग सहत मिलानेसे विष होजाता है जिसप्रकार अमृतरूप जो दुग्धादि पदार्थ हैं वे साँपके डसनेसे विषरूप होजाते हैं ।

रसानां संयोगाः सप्तपंचाशद्भवन्ति ।
कल्पनात्तु त्रिषष्टिधा भवन्ति ॥

अर्थ–रसोंके संयोग सत्तावन ५७ हैं और कल्पना करके त्रेसठ ६३ जानने ।

तद्यथा ।

षट्पंचकाः षट्पृथग्रसाः स्युश्चतुर्द्विकौ पंचदशप्रकारौ ।
भेदास्त्रिका विंशतिरेकमेव द्रव्यं षडास्वादमिति त्रिषष्टिः ॥

अर्थ–पाँच पाँच रसके मिलनेसे छः भेद होतेहैं, और छः अलग अलग रस हैं और चार रसोंके मिलनेसे पन्द्रह भेद होते हैं और दोदोके मिलनेसेभी पन्द्रहभेद होतेहैं और तीनतीन रसोंके संयोगसेभी बीस भेद होते हैं और छेहोंरसोंका स्वादवाला एक ऐसे त्रेसठ ६३ भेद कहे हैं ।

दोदोके संयोगसे	१५	पांचपांचके संयोगसे	६
चारचारके संयोगसे	१५	पृथक् २ रस	६
तीनतीनके संयोगसे	२०	एकमें छहोंमिलहुवे	१

इस प्रकार सब मिलकर ६३ भेद होतेहैं ।

अब इनको समझनेके लिये नीचे कोष्टक लिखा है ।

रसोंके ६३ भेद जाननेके लिये नीचे यंत्र लिखते हैं ।

१ मधुराम्लौ	२ मधुरलवणौ	३ मधुरतिक्तौ
४ मधुरकटुकौ	५ मधुरकषायौ	६ अम्ललवणौ
७ अम्लतिक्तौ	८ अम्लकटुकौ	९ अम्लकषायौ
१० लवणतिक्तौ	११ लवणकटुकौ	१२ लवणकषयौ
१३ तिक्तकटुकौ	१४ तिक्तकषायौ	१५ कटुकषायौ
१६ मधुराम्ललवणाः	१७ मधुराम्लतिक्ताः	१८ मधुराम्लकटुकाः
१९ मधुराम्लकषायाः	२० मधुरलवणतिक्ताः	२१ मधुरलवणकटुकाः
२२ मधुरलवणकषायाः	२३ मधुरतिक्तकटुकाः	२४ मधुरतिक्तकषायाः
२५ मधुरकटुकषायाः	२६ अम्ललवणतिक्ताः	२७ अम्ललवणकटुकाः
२८ अम्ललवणकषायाः	२९ अम्लतिक्तकटुकाः	३० अम्लतिक्तकषायाः
३१ अम्लकटुकषायाः	३२ लवणतिक्तकटुकाः	३३ लवणतिक्तकषायाः
३४ लवणकटुकषायाः	३५ तिक्तकटुकषायाः	३६ मधुराम्ललवणतिक्ताः
३७ मधुराम्ललवणकटुकाः	३८ मधुराम्ललवणकषायाः	३९ मधुरलवणतिक्तकटुकाः
४० मधुरलवणतिक्तकषायाः	४१ मधुरलवणकटुकषायाः	४२ मधुरतिक्तकटुकषायाः
४३ मधुराम्लतिक्तकटुकाः	४४ मधुराम्लतिक्तकषायाः	४५ मधुराम्लकटुकषायाः
४६ अम्ललवणतिक्तकटुकाः	४७ अम्ललवणकटुकषायाः	४८ अम्लतिक्तकटुकषायाः
४९ अम्ललबणतिक्तकषायाः	५० लवणतिक्तकटुकषायाः	५१ मधुराम्ललवणतिक्तकटु०
५२ मधुराम्ललवणतिक्तकषा०	५३ मधुराम्ललवणकटुकषा०	५४ मधुराम्लतिक्तकटुकषायाः
५५ मधुरलवणतिक्तकटुकषा.	५६ अम्ललवणतिक्तकटुकषा.	५७ मधुराम्ललबणतिक्तकटु.
५८ मधुरः	५९ अम्लः	६० लवणः
६१ तिक्तः	६२ कटुः	६३ कषायः

मित्ररसौ ।

अन्योन्यं मधुराम्लौ लवणाम्लौ कटुतिक्तकौ च रसौ ।
कटुलवणौ च स्यातां मित्ररसे तिक्तलवणौ च ॥

अर्थ—मधुर और अम्लरस आपसमें मित्रहैं लवण और अम्लरस मित्र हैं, कटु और तिक्तरस मित्र हैं, कटु और लवणरस मित्र हैं, तिक्त और लवणरस मित्र हैं ।

परस्परविरुद्धरसौ ।

लवणमधुरौ विरुद्धावथ कटुमधुरौ च तिक्तमधुरौ च ।
साधारणः कषायः सर्वत्र समानतां धत्ते ॥

अर्थ—लवण और मधुररस परस्पर शत्रु अर्थात् विरुद्ध हैं, कटु और मधुर रस विरुद्ध हैं, तिक्त और मधुररसभी विरुद्ध हैं, और कषेला रस साधारण है ये सबके साथ साधारणपनेसे वर्त्ताव करेहैं।

अथ गुणाः ।

गुरुर्लघुस्तथा स्निग्धो रूक्षस्तीक्ष्ण इति क्रमात् । भूनभोवारिवातानां वह्नेरेते गुणाः स्मृताः ॥ गुरु वातहरं पुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकि च । लघु पथ्यं परं प्रोक्तं कफघ्नं शीघ्रपाकि च॥ स्निग्धं वातहरं श्लेष्मकारि वृष्यं बलावहम् । रूक्षं समीरणकरं परं कफहरं मतम्।तीक्ष्णं पित्तकरं प्रायो लेखनं कफवातनुत्॥

अर्थ—गुरु, लघु,स्निग्ध,रूक्ष और तीक्ष्ण,ये क्रमसे भूमि,आकाश, जल, वायु और अग्निके गुणहैं । तहां गुरुपदार्थ वातनाशक कफ और पुष्टिकारक और देरमें पचेहैं । लघुपदार्थ अत्यन्त पथ्य, कफनाशक और शीघ्र पचेहैं । स्निग्धपदार्थ वातहारक,कफकारक, वीर्य और बलको बढावैहैं । रूक्षपदार्थ वातकारक और कफहारक हैं । तीक्ष्णपदार्थ लेखन और कफवातनाशक हैं । ।

सुश्रुते तु गुणा एते विंशतिर्नात्र दर्शिताः [१]

अर्थ—इसीप्रकार सुश्रुतमेंभी बीस गुण कहेहैं, वह यहां ग्रन्थ बढनेके भयसे नहीं दिखाये ।

---

[१] शीतोष्णस्निग्धरूक्षमंदतीक्ष्णगुरुलघुपिच्छिलविशदश्लक्ष्णपरुषकठिनमृदुद्रवसांद्रस्थिरसरस्थूलसूक्ष्मा विंशतिः ।

॥ अथ गुणप्रस्तावाद्दीपनादयो गुणाः ॥

पचेन्नामं वह्निकृद्यद्दीपनं तद्यथा मिसिः।पचत्यामं न वह्निं च कुर्याद्यत्तद्धि पाचनम्॥नागकेशरवद्विद्याच्चित्रो दीपनपाचनः। न शोधयति यद्दोषान् समान्नोदीरयत्यपि ॥ समीकरोति विषमान् शमनं तद्यथाऽमृता । कृत्वा पाकं मलानां च भित्त्वा बंधमधो नयेत् ॥ तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी । पक्तव्यं यदपक्त्वैव श्लिष्टं कोष्ठे मलादिकम् ॥ नयत्यधः स्रंसनं तद्यथा स्यात्कृतमालकम् । मलादिकमबद्धं यद्बद्धं वा पिंडितं मलैः ॥ भित्त्वाऽधः पातयति यद्भेदनं कटुकी यथा । विपक्वं यदपक्वं वा मलादिद्रवतां नयेत्॥रेचयत्यपि तज्ज्ञेयं रेचनं त्रिवृता यथा । अपक्वं पित्तश्लेष्माणं बलादूर्ध्वं नयेत्तु यत्॥वमनं तद्धि विज्ञेयं मदनस्य फलं यथा।स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधो वा मलसंचयम् ॥ देहसंशोधनं तत्स्याद्देवदालीफलं यथा । दीपनं पाचनं यत्स्यादुष्णत्वादवशोषकृत् ॥ग्राही तच्च यथा शुंठी जीरकं गजपिप्पली । रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्च यद्भवेत् ॥ वातकृत्स्तंभनं तत्स्याद्यथा वत्सकटुंटुकौ । श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयति यद्बलात्॥छेदनं तद्यथा क्षारा मरिचानि शिलाजतु । धातून्मलान् वा देहस्य विशोष्योल्लेखयेच्च यत्॥लेखनं तद्यथा क्षौद्रं नीरमुष्णं वचा यवाः।यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषु हर्षो वाजिकरं हि तत्॥यथाश्वगन्धा मुसली शर्करा च शतावरी । यस्माच्छुक्रस्य वृद्धिः स्याच्छुक्रलं हि तदुच्यते॥ यथा नागबलाद्याः स्युर्बीजं च कपिकच्छुजम्। दुग्धं माषाश्च भल्लातफलमज्जामलानि च॥एतानि जनकानि स्यू रेचकानि च रेतसः। प्रवर्त्तिनी स्त्री शुक्रस्य रेचनं बृहतीफलम् ॥ जातीफलं

स्तंभकं स्यात्कालिंगं क्षयकारि च । रसायनं तु तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम् ॥ यथा हरीतकी दंती गुग्गुलुश्च शिलाजतु ॥पूर्वं व्याप्याखिलं कायं ततः पाकं च गच्छति ॥ व्यवायि तद्यथा भंगा फेनं चाहिसमुद्भवम् । संधिबंधांस्तु शिथिलान्यः करोतिविकाशि तत् ॥ विशोष्यौजश्च धातुभ्यो यथाक्रमुककोद्रवौ । बुद्धिं लुंपति यद्द्रव्यं मदकारि तदुच्यते ॥ तमोगुणप्रधानं च यथा मद्यं सुरादिकम् । व्यवायि च विकाशि स्याच्छ्लेष्मच्छेदि मदावहम् ॥ आग्नेयं जीवितहरं योगवाहि स्मृतं विषम् ॥ निजवीर्येण यद्द्रव्यं स्रोतोभ्यो दोषसंचयम् । निरस्यति प्रमाथि स्यात्तद्यथा मरिचं वचा ॥ पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यं रुद्ध्वा रसवहाः शिराः । धत्ते यद्गौरवं तत्स्यादभिष्यंदि यथा दधि ॥ विदाहि द्रव्यमुद्गारमम्लं कुर्यात्तथा तृषाम् । हृदि दाहं च जनयेत्पाकं गच्छति तच्चिरात् ॥ गृह्णाति योगवाहि द्रव्यं संसर्गिवस्तुगुणान् । पच्यमानं यथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलोहादिः ॥

अर्थ-अब प्रसंगवश दीपनपाचनादि गुणोंके लक्षण कहतेहैं । जो पदार्थ आम (कच्चे) को पकावे नहीं परंतु अग्निको प्रदीप्त करै वह दीपन कहाताहै जैसे कि-सौंफ । जो पदार्थ कच्चेको पकावे परन्तु अग्निको दीपन नहीं करे उसको पाचन कहतेहैं । जैसे कि-नागकेशर। जो अग्निको दीपन करताहै और कच्चेको पकाताहै उसको दीपन पाचन कहतेहैं । जैसे कि-चीता । जो पदार्थ तीनों दोषोंको शुद्ध नहीं करता अर्थात् ऊंचे तथा नीचे मार्गमें नहीं लेजासक्ता समान दोषोंको बढाता नहीं और विषम हुए दोषोंको सम करताहै वह पदार्थ शमन कहाताहै । जैसे कि, गिलोय । जो पदार्थ कच्चे वातपित्त और कफको पकाकर वायुके बन्धनको भेदन करके नीचे लेजाताहै अर्थात् मलोंको गिरा देता है वह पदार्थ अनुलोमन कहाताहै जैसे कि-हरड । जो पदार्थ कोठेमें चिपटे हुए पकानेयोग्य मल, कफ और पित्तहैं उनको विना पकायेही नीचे लेजाय वह स्रंसन कहाताहै जैसे कि-अमलतास । जो वातादि दोषोंसे बँधेहुये मल मूत्रको अलग अलग करके गुदद्वारसे बाहर निकालै उसको

भेदन कहतेहैं। जैसे कि, कुटकी। जो पदार्थ अधपके अथवा कच्च मलको द्रवरूप (पतला) करै और नीचेको गेरै वह पदार्थ रेचन कहाताहै जैसे कि-निसोथ। जो पदार्थ कच्चे पित्त, कफ तथा अन्नके समूहको मुखके मार्गसे बाहर निकाले वह पदार्थ वमन कहाताहै जैसे कि-मैंनफल। जो पदार्थ मलके समूहको अपने स्थानसे बाहर निकाले अथवा नीचे या ऊपर लेजाय वह पदार्थ देहशोधन कहाताहै जैसे कि-देवदाली। जो पदार्थ अग्निको दीपन करनेवाला, कच्चेको पकानेवाला और गरम होनेसे द्रवतारूप (गीलेपन) को सुखानेवालाहै वह द्रव्य ग्राही कहाताहै जैसे कि-सोंठ,जीरा और गजपीपल जो पदार्थ रूक्ष, शीतल, कषेला और लघुपाकी होनेसे वायुको उलटा करनेवाला होय वह पदार्थ स्तम्भन कहाताहै जैसे कि-कुडा और सोनापाठा। यह नीचे जानेवाले मलादिकको रोककर रखताहै इसलिये स्तम्भक कहाताहै। जो पदार्थ शरीरमें चिपटे हुए कफादिकदोषोंको बलात्कारसे उखाडडाले वह पदार्थ छेदन कहाताहै जैसे कि-जवाखार आदिखार, कालीमिरच और शिलाजीत। जो पदार्थ देहके धातुओंको अथवा मलको सुखाकर दुर्बल करै वह पदार्थ-लेखन है जैसे कि, मधु, उष्णजल, वच और इन्द्रजौ। जिस द्रव्यके प्रयोग करनेसे स्त्रीके साथ रमनेका उत्साह होय वह द्रव्य वाजीकरण कहाता है जैसे कि-असगन्ध, मुसली, मिश्री (चीनी) और शतावर। जिस द्रव्यसे वीर्य्यकी वृद्धि होय वह द्रव्य शुक्रल कहाताहै जैसे कि-नागबला आदि और कौंछके बीज। दूध, उडद, भिलावेंकी मींग और आमले ये अपने प्रभावसे,शीघ्रही रसादिकको उत्पन्न करके वीर्य्यको प्रकट करतेहैं और वीर्य्यकी अधिकता होनेपर उसकी प्रवृत्ति करतेहैं। स्त्रीवीर्यको प्रवर्त्तनेवाली, कटेरीका फल वीर्य्यका रेचक, जायफल वीर्य्यका स्तम्भन करनेवाला और तरबूज (इन्द्रजौ) वीर्य्यका क्षय करतेहैं। स्त्रीका स्मरण,कीर्त्तन,दर्शन, संभाषण, स्पर्श, चुम्बन, आलिंगन और मैथुन यह सम्पूर्ण क्रियाएँ वा एकही क्रिया वीर्य्यको प्रवर्त्तने (निकालने) वालीहैं। जो पदार्थ जरा और व्याधिका नाश करनेवाला होय वह पदार्थ रसायन कहाता है जैसे कि, दन्ती गूगल और शिलाजीत। जो पदार्थ प्रथम सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पश्चात् पाक अवस्थाको प्राप्त होय वह पदार्थ व्यवायी कहाताहै जैसे कि, भांग, और अफीम। अन्यद्रव्य परिपाकको प्राप्त होकर अपना

गुण करतेहैं और व्यवायी द्रव्य जो कच्चेही अपने गुणोंसे सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पीछे पकतेहैं। जो द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाले वीर्यमेंसे ओजको सुखाकर शरीरकी सन्धियोंके बंधनोंको शिथिल करतेहैं उनको विकाशी जानना, जैसे सुपारी और कोदों। जो द्रव्य अधिक तमोगुणवाला और बुद्धिका नाश करनेवाला होय वह मदकारी अर्थात् मादक द्रव्य कहाताहै जैसे कि, मदिरा आदिका जो पदार्थ व्यवायी, विकाशी, कफ नष्ट करनेवाला, मद करनेवाला, अग्निका अधिक अंशयुक्त, प्राणनाशक और योगवाही होय वह पदार्थ विष कहाताहै जैसे कि, वत्सनाभ और शकुक आदि। वत्सनाभ आदि द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पकते हैं इसलिये व्यवायी हैं। ओजको सुखाकर संधियोंके बंधनोंको शिथिल करनेवालेहैं इसलिये विकाशी हैं। तमोगुणका भाग अधिक होनेसे बुद्धिका नाश करके मद करनेवालाहै, अग्निका अधिक अंशयुक्तहै और जिस पदार्थके साथ मिलकर उसके गुणोंको ग्रहण करनेवाला होनेसे योगवाहीभीहै। जो द्रव्य अपनी शक्तिसे स्रोतोंसे दोषोंके समूहको निकाले वह द्रव्य प्रमाथी कहाताहै जैसे कि, मिरच और वच। जो पदार्थ रसको बहानेवाली शिराओंको पिच्छिल और भारीपनसे रोककर शरीरमें भारीपन करताहै वह पदार्थ अभिष्यन्दी कहाताहै जैसे कि-दही। जिस द्रव्यके खानेसे खट्टी डकार आवैं, प्यास लगे, हृदयमें दाह होय वह पदार्थ बिदाही कहाताहै, इस द्रव्यका पाक बहुत देरसे होताहै। जो अपने साथ मिली हुई वस्तुओंके गुणोंको ग्रहण करै वह पदार्थ योगवाही कहाताहै जैसे कि, सहत, तेल, घी, पारा और लोहा आदि।

अथ वीर्यम्।

मृदुतीक्ष्णगुरुस्निग्धलघुरूक्षोष्णशीतलम्।
वीर्य्यमष्टविधं प्राहुः शीतोष्णं द्विविधं परे॥

अर्थ-मृदु, तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध, लघु, रूक्ष, उष्ण और शीतल इनभेदोंसे वीर्य्य आठ प्रकारका है और किसी किसीके मतसे उष्ण और शीत इन भेदोंसे वीर्य्य दो प्रकारका है।

उष्णशीतवीर्य्ययोर्गुणानाह।

उष्णः पितकरो बल्यो वातश्लेष्महरो लघुः।
शीतलः पित्तहा बल्यः कफवातकरो गुरुः॥

अर्थ-उष्णवीर्य्य-पित्तकारक,बलवर्द्धक,वातकफनाशक और हलका है।शीतवीर्य्य-पित्तनाशक,बलकारक,कफकारक और भारीहै।

अन्यच्च।

यच्छीतवीर्य्यं गुरु पित्तहारि द्रव्यं नृणां वातकरं तदुक्तम्।
यदुष्णवीर्य्यं लघु वातहारि श्लेष्मापहं पित्तकरं च तत्स्यात्॥

अर्थ-जो द्रव्य शीतवीर्य्य हैं वह सब भारी,पित्तहारी और वातको करनेवाले हैं,जो द्रव्य उष्णवीर्य्य हैं वह सब हलके,वातविनाशक,कफनाशक और पित्तको उत्पन्न करे हैं।

रसानां वीर्य्यभेदमाह।

रसाः कट्वम्ललवणा उष्णवीर्या यथोत्तरम्।
तिक्तकषायमधुराः शीतवीर्य्या यथोत्तरम्॥

अर्थ-कटु,अम्ल और लवण यह तीनों रस यथाक्रमसे उष्णवीर्य हैं अर्थात चरपरे रससे खट्टा रस और खट्टे रससे लवण रस अधिक उष्ण वीर्य्य है,तिक्त,कषाय और मधुर यह तीनों रस यथाक्रमसे शीतवीर्य्य हैं अर्थात तिक्तरससे कषेला रस और कषेले रससे मधुररस अधिक शीतवीर्य्य हैं।

अथ विपाकः।

जाठरेणाग्निना योगाद्यदुदेति रसांतरम्। रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः॥ विपाकस्तु त्रिधा प्रोक्तःस्वाद्वम्लकटुकात्मकः। मिष्टः पटुश्च मधुरो ह्यम्लोम्लं पच्यते रसः॥ कषायकटुतिक्तानां पाकः स्यात्प्रायशः कटुः। श्लेष्मकृन्मधुरःपाकोवातपित्तहरोमतः॥ अम्लस्तु कुरुते पित्तं वातश्लेष्मगदापहः।कटुः करोति पवनं कफं पित्तं च नाशयेत॥ विशेष एष रसतो विपाकानां निदर्शितः।

अर्थ-जठराग्निकरके जो रस उत्पन्न हो और फिर उस रसके पकने पर जो परिणाम होताहै उसको'विपाक' कहतेहैं।विपाक तीन प्रकारका है, मधुर, नमकीन और अम्ल, मधुर और अम्ल रसवाले पदार्थोका विपाक मधुरही होताहे, अम्लपदार्थोंका अम्ल होताहै. तथा कटु, तिक्त और कषेले रसोंका विपाक चर्पराही होता है, मधुर विपाकवाले द्रव्य कफको उत्पन्न

करे हैं और वातपित्तको दूर करे हैं । अम्लविपाकवाले द्रव्य पित्तको उत्पन्न करे हैं और वातकफको हरे हैं । और कटुविपाकवाले द्रव्य वातको उत्पन्न करेहैं और कफपित्तको दूर करेहैं । विशेषकरके यह विपाक रसोंसे दर्शाया है ।

प्रभाव ।

रसादिसाम्ये यत्कर्म विशिष्टं तत्प्रभावजम्।दन्तीरसाद्यैस्तुल्यापि चित्रकस्य विरेचनी॥मधूकस्य च मृद्वीका घृतं क्षीरस्य दीपनम् । प्रभावस्तु यथा धात्री लकुचस्य रसादिभिः ॥ समापि कुरुते दोषत्रितयस्य विनाशनम्।क्वचित्तु केवलं द्रव्यं कर्म कुर्यात्प्रभावतः।ज्वरं हन्ति शिरोबद्धा सहदेवीजटा यथा ॥

अर्थ–औषधीके रस,गुण,वीर्य और विपाकमें जो गुण होवें उनसे अलग अपने प्रभावसे जिस गुणको करे उसका नाम प्रभाव है,जैसे दन्ती और चीता दोनों रस वीर्यविपाकादिमें समानभी हैं, किन्तु दन्ती रेचक है और चीता नहीं,इसको प्रभाव कहतेहैं । जैसे महुआ और दाख रसादिकमें समान हैं,पर दाख दस्तावर है । दूध और घी रसादिकमें समान हैं,परन्तु घी अग्निको दीपन करेहै । आमला और बडहर गुणोंमें तुल्य हैं,किन्तु आमला त्रिदोषनाशक है कहीं कहीं कवल द्रव्य प्रभावसेही कार्य करता है,जैसे सहदेवीकी जडको मस्तकमें बांधनेसे ज्वर दूर होताहै, ये प्रभावज गुण जानने ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे ऽनूपादिवर्गः समाप्तः ॥ २१ ॥

अथ मिश्रवर्गः ।

ब्राह्मे मुहूर्त उत्तिष्ठेत्स्वस्थो रक्षार्थमायुषः ।
शरीरचिन्तां निर्वर्त्य मैत्रं कर्म्म समाचरेत् ॥

अर्थ–स्वस्थ मनुष्य आयुकी रक्षाके लिये ब्राह्ममुहूर्तमें उठे, फिर शरीरसम्बन्धीय चिन्ता(मलमूत्रादित्याग)से निर्वर्त्य अर्थात् निबटकर हितको करनेवाले कार्य्योंको विचारे ।

स्वभावतः प्रवृत्तानां मलादीनां जिजीविषुः ।
न वेगान्धारयेद्धीरः कामादीनान्तु धारयेत् ॥

अर्थ-जीवनकी इच्छा करनेवाले धीर मनुष्यको चाहिये कि, स्वभावसे आयेहुये मलमूत्रादिक वेगको धारण नहीं करे, क्योंकि इनको धारण करनेसे अनेक प्रकारके विकार उत्पन्न होकर नानाप्रकारके रोगोंको उत्पन्न करतेहैं और जो धारण करे तो कामादिके वेगोंको धारण करे, क्योंकि कामादिके वेगोंको धारण करनेसे संसारके रोगोंसे छूटकर उत्तम सुख(मोक्ष) को प्राप्त होताहै ।

पादमलमार्गाणां शौचगुणाः ।

मेध्यं पवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
पादयोर्मलमार्गाणां शौचाधानमभीक्ष्णशः ॥

अर्थ-दोनों पांव और मलके मार्ग सदैव साफ रखने चाहिये, क्योंकि इनको साफ रखनेसे मेधाकी वृद्धि होती है, पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयु बढतीहै और अलक्ष्मीका नाश होता है ।

उषःपानगुणाः।

कासश्वासातिसारज्वरवमथुकटीकोष्ठकुष्ठप्रकारान् मूत्राघातोदरार्शःश्वयथुगलशिरःकर्णनासाक्षिरोगान् । ये चान्ये वातपित्तक्षयजकफकृता व्याधयः सन्ति जन्तोस्तांस्तानभ्यासयोगादपनयति पयः पीतमन्ते निशायाः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन प्रभातके समय उठकर जलपान करते हैं उनके खांसी, श्वास, अतिसार, ज्वर, वमन, कटिरोग, कोष्ठरोग, अनेक प्रकारके कुष्ठरोग, मूत्राघात, उदररोग, बवासीर, सूजन, गल, मस्तक, कर्ण, नासिका और नेत्ररोगादि तथा वात, पित्त, क्षय और कफसे उत्पन्न हुए सर्वप्रकारके रोग दूर होजाते हैं ।

नासिकया जलपानगुणाः ।

विगतघननिशीथे प्रातरुत्थाय नित्यं पिबति खलु नरो यो घ्राणरन्ध्रेण वारि। स भवति मतिपूर्णश्चक्षुषा तार्क्ष्यतुल्यो वलिपलितविहीनः सर्वरोगैर्विमुक्तः ॥

अर्थ-जो मनुष्य मेघरहित रात्रिके अन्तमें नित्य नासिकाके द्वारा जल पीते हैं, वे मनुष्य पूर्ण बुद्धिमान्, गरुडके समान नेत्रोंवाले और वलीपलित-रहित होजाते हैं तथा सब रोगोंसे छूटजाते हैं ।

दन्तधावनविधिः ।

प्रातर्भक्त्वा च मृद्वग्रं कषायकटुतिक्तकम् ।
भक्षयेद्दन्तधवनं दन्तमांसान्यबाधयन् ॥

अर्थ-प्रातःकालमें कषाय, कटु और तिक्तरसवाले वृक्षोंके कोमल अग्रभागको लेकर उसके द्वारा इसप्रकार दतौंन करै कि, जिससे मसूढे न छिलजायँ ।

मतान्तरम् ।

केप्यत्र करवीरार्ककरञ्जबकुलासनान् ।
दन्तकाष्ठार्थमन्ये तु सर्वान्कंटकिनो विदुः ॥

अर्थ-कोई कोई वैद्य कनेर, आक, करंज, मौलसिरी और सालकी लकडीके द्वारा दतौंन करना चाहिये ऐसा कहते हैं । और कोई कोई सर्व प्रकारके काँटोंवाले वृक्षोंकी दतौंन करनी चाहिये ऐसा कहतेहैं।

निषिद्धं यथा।

गुवाकतालहिन्तालखर्जूरैः केतकीमतैः ।
नारिकेलेन ताड्या च न कुर्य्याद्दन्तधावनम् ॥

अर्थ-सुपारी, ताल, हिन्ताल, खजूर, केतकी, नारियल और ताडी (पत्रवृक्ष) इन सब वृक्षोंकी दतौंन नहीं करनी चाहिये ।

दन्तधावने दिङ्निर्णयः ।

मृत्युः स्याद्दक्षिणास्येन पश्चिमास्येन चामयः ।
पूर्वास्येनोत्तरास्येन सम्पदो दन्तधावनात् ॥

अर्थ-दक्षिणकी ओर मुख करके दतौंन करनेसे मृत्यु, पश्चिमकी ओर मुखकरके दतौंन करनेसे रोग और पूर्व तथा उत्तरकी ओर मुख करके दतौंन करनेसे सम्पदाकी वृद्धि होती है ।

दन्तकाष्ठव्यवहारनिषिद्धजनाः ।

अर्दिती कर्णशूली च दन्तरोगी नवज्वरी ।
शोषी कासी च मूर्च्छार्त्तो दन्तकाष्ठं विवर्जयेत् ॥

अर्थ-अर्दितरोगी, जिसके कानमें शूलहो, दन्तरोगी, नवीन ज्वरवाला, शोषरोगवाला, कासरोगी और मूर्च्छारोगवाले मनुष्योंको दतौंन नहीं करनी चाहिये।

जिह्वालेखनगुणाः।

जिह्वानिर्लेखनं रौप्यं सौवर्णं ताम्रमायसम्।तन्मलापहरं शस्तं मृदु श्लक्ष्णं दशांगुलम् ॥ निहन्ति वक्त्रवैरस्यं जिह्वादन्ताश्रितामयम्। आरोग्यं रुचिमाधत्ते सद्यो दन्तविशोधनम् ॥

अर्थ-चांदी, सोना, तांबा अथवा लोहा इनकी नरम और निर्मल दशअंगुल लंबी जीभी बनाकर उसके द्वारा जिह्वाको घिसै इसप्रकार करनेसे मुखकी विरसता, सर्वप्रकारके जिह्वा और दन्तरोग नाश होते हैं। आरोग्य और रुचिकी वृद्धि होतीहै दन्त शुद्ध होजाते हैं।

चक्षुर्धावनविधिः।

दन्तमूर्ध्वमधो घृष्ट्वा प्रातः सिञ्चेच्च लोचने।
तोयपूर्णमुखस्तेन दृष्टिराशु प्रसीदति।

अर्थ-प्रथम दांतोंके ऊर्ध्व और अधोभाग घिसकर फिर मुखमें जल भरकर उस जलसे नेत्रोंको सींचै इससे नेत्रोंमें प्रसन्नता उत्पन्न होतीहै।

गण्डूषगुणाः।

गण्डूषमपि कुर्वीत शीतेन पयसा मुहुः। कफतृष्णामलहरं मुखांतःशुद्धिकारकम् ॥ सुखोष्णोदकगंडूषः कफारुचिमलापहः। दंतजाड्यहरश्चापि मुखलाघवकारकः ॥ विषमूर्च्छामदार्त्तानां शोषिणां रक्तपित्तिनाम्। कुपिताक्षिमलक्षीणरूक्षाणां स न शस्यते ॥

अर्थ-तदनन्तर ठंढे पानीसे कुल्ले करे, इससे कफ, तृषा और मुखका मल दूर होजाता है एवं भीतरसे मुख शुद्ध होजाता है उष्णजलके द्वारा कुल्ले करनेसे कफ, अरुचि, मल और दांतोंकी जडता दूर होती है। विष, मूर्च्छा और मदसे व्याकुल हुए, शोष रोगवाले, रक्तपित्तरोगी, नेत्ररोगी, जिनका मल क्षीण होगयाहो और रूखेशरीरवाले मनुष्योंको कदापि गरमपानीके द्वारा कुल्ले नहीं करने चाहिये।

मुखप्रक्षालनगुणाः ।

मुखप्रक्षालनं शीतपयसा रक्तपित्तजित् । मुखस्य पिडिकाशोषनीलिकाव्यंगनाशनम् ॥ कुर्य्याद्वापि कदुष्णेन पयसास्यविशोधनम् । कफवातहरं स्निग्धं मुखशोषविनाशनम् ॥

अर्थ-शीतलजलके द्वारा मुखको धोनेसे रक्तपित्त,मुखकी पिडिका,मुखशोष,नीलिका और व्यंग(झांई)दूर होती है।कुछ कुछ गरम जलसे मुखको शुद्ध करे इससे कफ वात दूर होकर स्निग्धता उत्पन्न होतीहै और मुखशोष दूर होताहै ।

अंजनधारणगुणानाह ।

नेत्रमंजनसंयोगाद्भवत्यमलतारकम् ।
दृष्टिर्निराकुला भाति निर्मलश्चन्द्रमा यथा ॥

अर्थ-नेत्रोंमें अंजन लगानेसे नेत्र निर्मल तारेयुक्त होजाते हैं अर्थात् आँखोंके तारे साफ होजाते हैं, दृष्टि स्थिर और चन्द्रमाके समान निर्मल होजाती है ।

रात्रौ जागरितःश्रान्तश्छर्दितो भुक्तवांस्तथा ।
ज्वरातुरः शिरःस्नातः कदाचिन्न तदाचरेत् ॥

अर्थ-रातमें जागाहो, थकाहुआहो, जिसको वमन हुईहो,ज्वरसे व्याकुल और जिसने शिरसे स्नान कियाहो,इतने मनुष्योंको कदापि अंजन नहीं लगाना चाहिये ।

कंकतीगुणाः ।

कंकती कान्तिजननी कण्डूघ्नी मूर्द्धरोगजित् ।
केशप्रसादनी केश्या रजोजन्तुमलापहा ॥

अर्थ-कंकती-कंघी,कंघा आदिसे बालोंको काढना कान्तिजनक, कण्डूरोगको हरनेवाला, शिरोरोगको दूर करनेवाला तथा रज, जुयें और केशोंके मलको दूर करेहै, केशोंको बढानेवाली और केशोंको हितकारी है ।

उष्णीषधारणगुणाः ।

उष्णीषं शिरसा धार्य्यं प्रभाते लघु नित्यशः ।
कश्यं चक्षुष्यमायुष्यं रजःशीतोष्णवारणम् ॥

अर्थ-प्रातिदिन प्रभातके समय बारीक वस्त्रकी हलकी पगडी धारण करे पगडी-बालोंको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी तथा धूल, शीत और गरमीको दूर करतीहै ।

श्मश्रुनखादिच्छेदनगुणाः ।

पञ्चरात्रान्नखश्मश्रुकेशरोमाणि कर्त्तयेत् ।
पौष्टिकं बल्यमायुष्यं शौचं रूपविराजनम् ॥
केशश्मश्रुनखादीनां कृन्तनं संप्रसादनम् ।

अर्थ- पांच पांच दिनके पश्चात नख, डाढी, केश और रोमोंको कटवातारहै अर्थात् हजामत बनवातारहै । बाल, दाढी, मूँछ और नखादिको कतरनेसे शरीर कांतिवान् होता है, पुष्टि, धन और आयुकी वृद्धि होती है तथा इससे पवित्रता और सुन्दरता उत्पन्न होतीहै ।

उत्पाटयेत्तु लोमानि नासायां न कदाचन ।
तदुत्पाटनतो दृष्टेर्दौर्बल्यं त्वरया भवेत् ।

अर्थ-नाकके बालोंको कदापि न उखाडे, क्योंकि नाकके बाल उखाडनेसे दृष्टि कम होजाती है ।

प्रभातद्रष्टव्याः ।

वैद्यः पुरोहितो मंत्री दैवज्ञोऽत्र चतुर्थकः ।
प्रभातकाले द्रष्टव्या नित्यं स्वश्रियमिच्छता ॥

अर्थ-ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवाले मनुष्योंको प्रतिदिन प्रभातके समय वैद्य, पुरोहित, मंत्री और दैवज्ञ (सिद्धान्तवेत्ताज्योतिषी) का दर्शन करना चाहिये ।

अग्निसेवनगुणाः ।

अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः ।
आमाभिष्यन्दशमनो रक्तपित्तप्रकोपनः ॥

अर्थ-अग्निको सेवन करनेसे वात, कफ, स्तम्भ, शीत और कम्प तथा आम और अभिष्यन्द नाशको प्राप्त होते हैं तथा रक्तपित्त कुपित होते हैं ।

धूमहिमगुणाः ।

धूमः पित्तानिलौ कुर्यादवश्यायः कफानिलौ ।

अर्थ-धूमको सेवन करनेसे पित्त और वायुकी वृद्धि होती ह और हिमको सेवन करनेसे कफ और वात बढती ह ।

शिशिरगुणाः ।

शिशिरं शीतलं रूक्षं वृष्यं वातप्रकोपनम् ।

अर्थ-शिशिर अर्थात् ओस-शीतल, रूखी, धातुवर्द्धक और वातको कुपित करनेवाली है ।

कुज्झटिगुणाः ।

रूक्षा तमोगुणप्राया कुज्झटिः कफपित्तला ॥

अर्थ-कुज्झटिका (कौल, कुहर, कुहासा) रूखा, तमोगुणयुक्त और कफपित्तकारक है ।

छत्रगुणानाह ।

छत्रं वर्षातपरजोवातावश्यायनाशनम् ।
वर्ण्यं दृष्टिकरं बल्यं गुह्यावरणशंकरम् ॥

अर्थ छत्र-छाता व छत्री-वर्षा,धूप,धूल, वायु और ओसको दूर करे है तथा वर्ण और दृष्टिको बढानेवाली, बलकारक, मंगलजनक, पिशाचादि बाधाको दूर करनेवाली और मनुष्योंका आवरण है ।

वृष्टिगुणानाह।

वृष्टिर्निष्यंदिनी शीता निद्राश्लेष्मबलप्रदा ॥
मलापहारिणी वायुदायिनी वह्निवारिणी ॥

अर्थ-वर्षा-कफादिकको टपकानेवाली,शीतल,निद्रा,श्लेष्म और बलको बढानेवाली है,मलनाशक,वायुवर्द्धक और मंदाग्निकारक है।

आतपगुणानाह ।

आतपः कटुको रूक्षः स्वेदमूर्च्छातृषावहः ।
दाहवैवर्ण्यजननो नेत्ररोगप्रकोपनः ॥

अर्थ-सूर्यकी धूप-चरपरी, रूखी तथा पसीना, मूर्च्छा, दाह, विवर्णता और नेत्ररोगोंको उत्पन्न करे है ।

छायागुणानाह ।

छायादाहश्रमस्वेदहरा मधुरशीतला ॥

अर्थ-छाया-दाह, श्रम और पसीनेको दूर करनेवाली है तथा मधुर और शीतल ह ।

अन्यच्च ।

छाया तमोऽस्रपित्तार्त्तिं निहन्यात्स्निग्धशीतला ।
विशेषतो वटच्छाया बलवर्णप्रसादनी ॥

अर्थ-छाया-तम, रुधिरविकार और पित्तकी पीडाको शान्त करे है, स्निग्ध और शीतल है, विशेषकरके बडकी छाया बलकारक तथा वर्णको प्रसन्न करनेवाली है ।

यष्टिधारणगुणानाह ।

स्खलतः संप्रतिष्ठानं शत्रूणाञ्च विरोधनम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण करना-स्खलितपद प्रतिष्ठापक और शत्रुविरोधक है तथा बलवर्द्धक और भयनाशक है ।

अन्यच्च ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यविष्टम्भवीर्य्यकृत् ।
रक्षः सर्पादिभयजिद्विशेषात्स्थाविरे मतम् ॥ ॥

अर्थ-लाठीका धारण-उत्साह, स्थिरता, विष्टम्भ और वीर्यको उत्पन्न करे है और राक्षस तथा सर्पादिकके भयको दूर करेहै, एवं बुढापेमें हितकारी है ।

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम् । स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमो मतः ॥ सर्वेष्वृतुषु सर्वैर्हि मर्त्यैरात्महितार्थिभिः । शक्त्यर्द्धेन च कर्त्तव्यो व्यायामो हंत्यतोऽन्यथा ॥ कुक्षौ ललाटे ग्रीवायां यदा घर्मः प्रवर्त्तते । शक्त्यर्द्धं तं विजानीयाद्यावदुच्छ्वासमेव च ॥ लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता । दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते ॥ व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् । विदग्धमपि दग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥ न च व्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्षणम् । न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात् ॥ न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिगच्छति । व्यायामक्षुण्णगात्रस्य प-

द्भ्यामुद्वर्तितस्य च॥ व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः । वयो बलं शरीरं च देशं कालमथापि च ॥ समीक्ष्य कुर्याद्व्यायामं युक्त्या शक्त्या च बुद्धिमान् । रक्तपित्ती क्षयी शोषी कासी श्वासी क्षतातुरः ॥ भुक्तवान्स्त्रीषु च क्षीणो व्यायामं परिवर्जयेत् । वातपित्तामयी बालो वृद्धो जीर्णी च तंत्यजेत्॥ अतिव्यायामतः कासो रक्तपित्तप्रतानकः । श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णाज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥

अर्थ-स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्योंके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और वसन्तऋतुमें ही हितकारी है परन्तु अपना हित चाहनेवाले सब मनुष्य ऋतुओंमें आधी शक्तिके अनुसार कसरत करें इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योंको नष्ट करदेताहै । आधी शक्ति उसको कहतेहैं जिसमें कोख, माथा और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे । कसरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्य्यमें सामर्थ्य, स्थिरता और क्लेशसहिष्णुता (क्लेशका सहलेना) उत्पन्न होतीहै । दोष (वातपित्तादि) क्षय होतेहैं, अग्नि बढतीहै, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुछभी खाले: वह सब दोषरहित होकर पक जातीहै, स्थूलताका नाश करनेके लिये कसरतकी समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है । शत्रुलोग कसरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढाई नहीं करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक बुढापा नहीं आसक्ता । जिस प्रकार सर्पोंका समूह गरुडपर चढाई नहीं करसक्ता उसी प्रकार रोगोंका समूहभी उस पुरुषपर जिसने कसरत करके अपना शरीर सुखायाहै आक्रमण नहीं करसक्ता, बुद्धिमान् मनुष्योंको चाहिय कि, आयु, बल, शरीर, देश, काल इन युक्ति और शक्तियोंका भलीभाँतिसे विचारकर कसरत करै । रक्तपित्त, क्षय, शोष, खाँसी, श्वास और व्रणरोगी और भुक्तवान् तथा मैथुन करनेसे क्षीण होगये अंग जिनके यह सब कसरत न करैं । वातपित्तरोगी, बालक (सोलह वर्षपर्यन्त) बूढा (सत्तर वर्षसे पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्योंको कसरत नहीं करनी चाहिये । अत्यन्त कसरत करनेसे रक्तपित्त, खाँसी, श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर, वमनादिरोग उत्पन्न होतेहैं ।

अपिच ।

सामर्थ्यं सकलक्रियासु लघुतामंगेषु दीप्तिं परामग्नेः पाटवमिन्द्रियेषु लघुतां छेदं परं मेदसः । उत्साहं मनसः शरीरदृढतां शान्तिबलाव्यापदां व्यायामः शिशिरे वसन्तसमये कुर्याद्धिमे सेवनम् ॥ वातामयः पित्तरुजान्वितश्च बालोतिवृद्धोतिकृशोतिजीर्णः । मन्दानलः स्निग्धरसान्नवर्ज्या व्यायामकालेषु विवर्जनीयाः ॥ स्थाल्यां यथानावरणाननायां न घट्टितायां नच साधुपाकः । अनाप्तनिद्रस्य तथा नरेन्द्र व्यायामहीनस्य न चान्नपाकः ॥

अर्थ-व्यायाम (कसरत) का करना सब कार्योंमें सामर्थ्य, शरीरमें हलकापन, देहमें प्रकाश, अग्निको दीपन, इन्द्रियोंमें लघुता, मेदाका नाश, मनमें उत्साह, शरीरमें दृढता, दुःखोंका शान्ति और बलको करे है । व्यायाम-शिशिर और वसन्तऋतुमें करनी चाहिये । वात और पित्तरोगी, बालक, अत्यन्त वृद्ध, अत्यंत कृश और अधिक जीर्ण हुई मन्दाग्निवाला आर स्निग्ध भोजन न करनेवाला, इन सबको व्यायाम नहीं करनी चाहिये । जिस प्रकार बटलोईके मुखपर पात्र नहीं ढकनेसे तथा उसको करछीसे नहीं चलानेसे अन्न अच्छेप्रकारसे नहीं पकता है उसी प्रकार हे राजन् ! निद्रा और व्यायाम रहितका अन्न अच्छे प्रकार नहीं पकता है ।

अंगमर्दनगुणानाह ।

संवाहनं श्रमहरं वृष्यं निद्रासुखप्रदम् ।
मांसासृक्त्वक्प्रसन्नत्वं कुर्याद्वातकफापहम् ॥

अर्थ-शरीरको मर्दन करना-श्रमनाशक, धातुओंको पुष्ट करनेवाला, निद्रा और सुखको देनेवाला, मांस, रुधिर और त्वचाको निर्मल करनेवाला तथा वातकफनाशक है ।

शरीरघर्षणगुणमाह ।

उद्धर्षणं हृष्टिकरं कण्डूकोष्ठविनाशनम् ।
तेजनं त्वग्गतस्याग्नेः शिरासुखविरेचनम् ॥

अर्थ-शरीरको घिसनेसे दृष्टि बढती है तथा कण्डू और कोष्ठरोग दूर होता है, त्वचामें स्थित जो अग्नि उसके तेजकी वृद्धि होती है और शिराओंमें सुखकी वृद्धि होती है ।

पथभ्रमणगुणमाह ।

अध्वा मेदःकफस्थौल्यसौकुमार्यविनाशनः ।

अर्थ-पथभ्रमण करनेसे मेद, कफ, स्थूलता और सुकुमारता नष्ट होती है ।

अतिभ्रमणगुणाः ।

यत्तु चंक्रमणं नातिदेहपीडाकरं भवेत् ।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥

अर्थ-जिस भ्रमण करनेसे शरीरमें क्लान्ति उत्पन्न न होवै उस भ्रमणसे आयु, बल, मेधा और अग्निकी वृद्धि होती है और इन्द्रियोंमें प्रफुल्लता उत्पन्न होती है ।

पादुकाधारणगुणाः ।

पादत्रधारणं वृष्यमौजस्यं चक्षुषोर्हितम् ।
सुखप्रचारमायुष्यं बल्यं पादरुजापहम् ॥

अर्थ-पादुकाधारण अर्थात् जूतेके पहिरनेसे वीर्य्य और ओजकी वृद्धि होती है, नेत्रोंको हितकारी, गमनके समय सुखकारी, आयु और बलवर्द्धक तथा पाँवोंकी पीडाको दूर करे है ।

अधारणे दोषा यथा ।

पादाभ्यामनुपानद्भ्यां नृणां चंक्रमणं सदा ।
अनारोग्यमनायुष्यमिन्द्रियघ्नमदृष्टिकृत् ॥

अर्थ-सर्वदा विनाजूतेके भ्रमणसे अर्थात् नंगे पाँवों फिरनेसे आरोग्यता, आयु, इन्द्रिय और दृष्टिशक्ति नाश होती है ।

हस्त्यादिगमनगुणाः ।

हस्त्यश्वरथदोलाद्यैर्भ्रमणं वातकोपनम् ।
स्थितीकरणमंगानां बल्यं वह्निविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-हस्ती, अश्व, रथ और डोलाआदिमें चढकर भ्रमण करनेसे वात कुपित होती है, सम्पूर्ण अंग स्थिर होते हैं, बल बढता है और जठराग्नि बढती है ।

विश्रामगुणाः ।

विश्रामो बलकृत्स्वेदश्रमनुत्सौस्थ्यदः शुभः ॥

अर्थ-विश्राम अर्थात् आराम करना-बलकारक तथा स्वेद, श्रम इनको दूर करनेवाला और सुस्थता तथा मंगलजनक है ।

पादप्रक्षालनगुणाः ।

पादप्रक्षालनं पादमलरोगश्रमापहम् ।
दृष्टिप्रसादनं वृष्यं रौक्ष्यघ्नं प्रीतिवर्द्धनम् ॥

अर्थ-पाँवोंको धोनेसे पैरोंका मैल, पैरोंका रोग और श्रम दूर होता है, दृष्टिशक्तिको प्रसन्न करे है, वीर्य्यवर्द्धक, रूक्षतानाशक और प्रीतिवर्द्धक है ।

प्राग्वातगुणानाह ।

प्राग्वातो मधुरः क्षारो वह्निमांद्यकरो गुरुः । वैरस्यगौरवोष्णाशाग्निकरोप्स्वौषधीषु च ॥ भग्नेऽपीष्टः क्षताद्येषु स्रावश्वयथुरोगकृत् । सन्निपातज्वरश्वासत्वग्दोषार्शोविषक्रिमीन् ॥ कोपयेदामवातञ्च घनसंघातकारकः ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी पवन अर्थात् पुरवाई हवा-मधुर, खारी, मन्दाग्निकारक, भारी औषधि और जलमें विरसता, गुरुता और उष्णता करनेवाली, भग्न और क्षतादि रोगोंमें हितकारी, नासास्राव, सूजन, सन्निपातज्वर, श्वास, त्वचाके विकार, बवासीर, विष, कृमि और आमवातादि रोगोंको बढानेवाली और मेघको संचय करे है ।

तथा च ।

शीतोऽतिमाधुर्य्यगुणः प्रयुक्तो वातप्रकोपी बलकृद्विशेषात् ।
वाताधिकानां व्रणशोफिनां च प्राचीप्रवृत्तः पवनो न शस्तः ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी पवन-शीतल, अत्यन्त मधुरतायुक्त, वातको कुपित करनेवाली, बलकारक यह वायु जिनके शरीरमें वात अधिकतर होवे तथा व्रण शोफरोगवालोंको अहितकारी है ।

आग्नेयपवनगुणाः ।

किञ्चित्सतिक्तो मधुरान्वितः स्यात्कफः समीरोद्भवरोगकारी ।
सुशीतलः शोफवतां व्रणानां शस्तो न चाग्नेयसमीरणश्च ।

अर्थ-आग्निकोणकी पवन- कुछ २ कडवी, मधुररसान्वित, कफ और वातसे उत्पन्न हुये रोगोंको करनेवाली, शीतल और सूजन युक्त व्रणोंको अहितकारी है ।

दक्षिणमारुतगुणाः ।

दाक्षिणो मारुतो बल्यश्चक्षुष्यः सस्यघातकः । मधुरश्च विदाही च कषायान्तरसो लघुः ॥ रक्तपित्तप्रशमनो न च मारुतकोपनः । गण्डूपदादिकीटानां जनकः प्राणकारकः ॥

अर्थ-दाक्षिणदिशाकी पवन-बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, खेतीका नाश करनेवाली, मधुर, दाहजनक, अन्न और पानीमें कषेले रसको उत्पन्न करनेवाली, हलकी, रक्तपित्तनाशक, परंतु वातको कुपित करनेवाली नहीं है, गण्डूपदादि कीडोंको उत्पन्न करनेवाली और आयुवर्द्धक है ।

ग्रन्थान्तरे ।

तिक्तः कषायो मधुरोऽतिमन्दः सुगंधसंशीतगुणैः प्रकृष्टः ।
वदन्ति संज्ञां मलयानिलेति प्रकृष्टरामाजनचित्तहारी ॥
मनोभवस्य प्रकरो मरुत्स्यात्कफोद्भवः सम्भवति प्रचारः ।
न चातिशीतो न तथोष्णको वा शुभश्च याम्यांप्रभवः समीरः ।

अर्थ-दाक्षिण दिशाकी पवन-कडवी, कषेली, मधु, अत्यन्त मंद, सुगंध, शीतल, मलयानिलसंज्ञक अर्थात् मलयाचलकी पवन स्त्रियोंके चित्तको हरनेवाली, कामदेवको दीपन करनेवाली, कफसे उत्पन्नहुये रोगोंको करनेवाली, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त उष्ण और शुभ है ।

नैर्ऋत्यमारुतगुणाः ।

रूक्षोष्णवातप्रशमः समीरः कट्वम्लपित्तासृजिदोषकारी ॥
प्रशोषणो देहबलस्य वायुः कफान्वितो नैर्ऋतिकः समीरः ॥

अर्थ-नैर्ऋत्यकोणकी पवन-रूखी, गरम, वातको शांत करनेवाली, चरपरी, खट्टी, पित्त और रुधिरको कुपित करनेवाली, मनुष्योंके देहके बलको शोषणकर्त्ता और कफसंयुक्त है ।

पश्चिमपवनगुणाः ।

पश्चिमोऽग्निवपुर्वर्णबलारोग्यविवर्द्धनः । कषायः शोषणः स्वर्यो रोचनो विशदो लघुः ॥ अपां लघुत्ववैशद्यशैत्यवैम-

ल्यकारकः। सर्वद्रव्येष्व भिव्यक्तप्रभावरसवीर्य्यकृत् ॥ व्रणसंरोपणस्त्वच्यो दाहशोथतृषापहः ॥

अर्थ-पश्चिमदिशाकी पवन-अग्नि, शरीर, वर्ण, बल और आरोग्यताको बढानेवाली है, कषेली, शोषण, स्वरको सुधारनेवाली, रुचिकारक, विशद, हलकी, निर्मल, जलमें लघुता, श्वेतवर्णता, शीतलता और निर्मलताकारक है, सर्वद्रव्योंमें व्यक्तप्रभाव रस और वीर्यजनक है व्रणको सुखानेवाली, त्वचाको सुंदर करनेवाली तथा दाह, सूजन और तृषाको हरनेवाली है।

वायव्यपवनगुणाः।

वायव्यजातो मरुतः प्रशस्तः कषायसंशुष्कगुणप्रसन्नः।
करोति वातस्य वशं नराणां शस्तो न निंद्यो व्रणशोफिनाञ्च॥

अर्थ-वायव्यकोणकी पवन-श्रेष्ठहै, कषेली और शुष्कगुणवाली है, मनुष्योंको पवनके वश करती है, व्रणशोफवालोंको हितकारी है, निंदित नहीं है।

उत्तरवायुगुणाः।

औत्तरो मारुतः स्निग्धो मृदुर्मधुर एव च। कषायान्नरसः शीतः
सर्वदोषप्रकोपनः ॥ क्षीणक्षतविषार्त्तानां हितो दाहतृषापहः।

अर्थ-उत्तरदिशाकी पवन-स्निग्ध, मृदु, मधुर, अन्न और जलमें कषायरसको उत्पन्न करनेवाली, शीतल, सर्वदोषोंको कुपित करनेवाली तथा क्षीण, क्षत और विषसे पीडित मनुष्योंको हितकारी, दाह और तृषाको हरनेवाली है।

मतान्तरम्।

स्वादुः कषायश्च कफप्रकोपी वायुः कुबेरस्य दिशः प्रवृत्तः।
करोति मेघागमनं जलस्य शीतो न चोष्णो न च निन्द्य एषः॥

अर्थ-उत्तर दिशाकी पवन-स्वादिष्ठ, कषेली, कफको कुपित करनेवाली, सजलमेघोंको लानेवाली, शतिल, न निन्द्य और न गरम है।

ऐशानवायुगुणाः।

शीतोतिगौल्यः कफवातकोपं करोति चैशानदिशः प्रवृत्तः।
शस्तश्च नासौ व्रणशोफकासश्वासे तथा वातविकारिणाञ्च ॥

अर्थ-ईशान दिशाकी पवन-शीतल, अत्यन्त गौल्य, कफवातको कुपित करनेवाली तथा व्रण, सूजन, खाँसी, क्षय और श्वासरोगवालोंको हितकारक नहीं है।

नीहारादिसंयुक्तवायुगुणाः।

शीताधिकः सनीहारः सविद्युत्स्तनयित्नुवान् ॥

अर्थ-तुषार अथवा बर्फ-बिजली और मेघसंयुक्त पवन-अत्यन्त शीतल है।

विष्वग्वायुगुणाः।

विष्वग्वायुरनायुष्यः प्राणिनां नैकदोषकृत्।
सर्वर्त्तुलिंगको हन्ता हृद्योत्पातपुरःसरः ॥

अर्थ-विष्वग्वायु अर्थात् घूमताहुआ बबूला प्राणियोंकी आयुनाशक, त्रिदोषकोपक, सबऋतुओंका लक्षणकारक, प्राणनाशक और हृदयमें उद्वेग उत्पन्न करे है।

व्यजनानिलगुणाः।

मूर्च्छास्वेदतृषादाहश्रमघ्नो व्यजनानिलः ॥

अर्थ-पंखेकी पवन-मूर्च्छा, पसीना, तृषा, दाह और श्रमनाशक है।

तालपत्रवायुगुणाः।

तालपत्रकरम्भाया दलस्य व्यजनो हिमः। मधुरोऽतिश्रमघ्नः
स्यादार्द्रत्वात्कफकोपनः ॥ निद्राकरः प्रीतिकरः शोकरोग-
विकारहा। दाहपितश्रमग्लानिनाशनो भ्रमशान्तिकृत् ॥

अर्थ-ताडके पत्ते और केलेके पत्तोंके पंखेकी पवन-शीतल, मधुर, अत्यन्त श्रमनाशक, आर्द्रपनसे कफको कुपित करनेवाली, निद्राजनक, प्रीतिकारक, रोगशोकादिको दूर करनेवाली तथा दाह, पित्त, परिश्रम, ग्लानि और भ्रमको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च।

तालवृन्तभवो वातस्त्रिदोषशमनो लघुः ॥

अर्थ-ताडके पंखेकी पवन-त्रिदोषनाशक और हलकी है।

वंशव्यजनवायुगुणाः।

वंशव्यजनजो वातो रूक्षोष्णो वातपित्तदः ॥

अर्थ-बाँसके पंखेकी पवन-रूखी, गरम और वातपित्तकारक है।

अन्यच्च ।

वैणवं व्यजनं तन्द्रानिद्राकरणमेव च ।
रूक्षोऽतिकषायरसो न च वातप्रकोपनः ॥

अर्थ-बाँसके पंखेके पवन-तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करेहै, रूखी, अत्यंत कषेली और वातको कुपित करनेवाली नहीं है ।

उशीरमूलादिव्यजनगुणाः ।

उशीरमूलरचितं व्यजनं शिखिपिच्छकैः ।
व्यजनेन सुगंधः स्यान्मन्दशीतगुणात्मकः ॥
ग्लानिमूर्च्छाभ्रमशोषविसर्पविषदर्पहा ।

अर्थ-खस और मोरके परोंसे बनायेहुए पंखेकी पवन-सुगंधिकारक, मंद, शीतल तथा ग्लानि, मूर्च्छा, भ्रम, शोष, विसर्प, विष इनको दूर करे है ।

वालव्यजनवायुगुणाः ।

वालव्यजनमौजस्यं मक्षिकादीन्व्यपोहति ॥

अर्थ-चमरचमरी आदिकी वायु ओजवर्द्धक और मक्खीआदिको दूर करे है ।

मयूरपक्षादिनिर्मितव्यजनवायुगुणाः ।

मायूरा वस्त्रजा वैत्रा वाता दोषत्रयापहाः ॥

अर्थ-मोरके पक्ष, वस्त्र और वेंतके पंखेकी पवन, त्रिदोषनाशक है।

ऋतुविशेषेवायुगुणाः।

शिशिरे पूर्वकृद्वायुराग्नेयो हेमन्ते मरुत्। वसन्ते दक्षिणो वायुर्ग्रीष्मे नैर्ऋत्यकस्तथा ॥ वर्षासु पश्चिमो वायुर्वायव्यः शरदि स्मृतः । शिशिरे च हेमन्ते च कथितश्चोत्तरोऽनिलः ॥ अपराह्णे वर्षा वदन्ति निपुणास्तस्मिन्निशीथे शरत्प्रोक्तः शैशिरिकस्ततो हिमऋतुः सूर्योदयादग्रतः । मध्याह्ने च तथा वदन्ति निपुणा ग्रीष्मो ऋतुः स्यात्ततो वासन्तः कथितो ऋतुस्तु मुनिभिः पूर्वापराह्णे सदा ॥

अर्थ-शिशिरऋतुमें पूर्वकी पवन उत्तम है, वसंतऋतुमें दक्षिणकी पवन, ग्रीष्मऋतुमें नैर्ऋत्यकोणकी पवन, वर्षाऋतुमें पश्चिमकी पवन और शरदृऋतुमें वायव्यकोणकी पवन उत्तम है। शिशिर और वसंतऋतुमें उत्तरकी पवन भी श्रेष्ठ है। दिनके तीसरे पहरको वर्षाऋतु, अर्धरात्रि शरदृऋतु, आधीरातके पश्चातको शिशिरऋतु, सूर्योदयके समयको हेमंतऋतु, दुपहरके समयको ग्रीष्मऋतु और दिनके पूर्वभागको वसन्तऋतु कहते हैं।

अभ्यंगगुणाः ।

वातव्याधिं हरति कुरुते सर्वगात्रेषु पुष्टिं दृष्टिं मन्दामपि वितनुते वैनतेयोपमां च । निद्रां सौख्यं जनयति जरां हंति शक्तिं विधत्ते धत्ते कांतिं कनकसदृशीं नित्यमभ्यंगयोगात् ॥

अर्थ-सदैव शरीरमें तेलको मलनेसे वातरोग दूर होता है, सम्पूर्ण अंग पुष्ट होता है, गरुडके समान दृष्टि होजाती है, निद्रा और सुख उत्पन्न होता है, बुढापा दूर होता है, शरीरमें शक्ति उत्पन्न होती है और सुवर्णके समान वर्ण होजाता है।

पादाभ्यंगगुणाः ।

पादाभ्यंगोऽथ निद्राकृच्चक्षुष्यः पादरोगहा । चक्षुषि प्रतिरंध्रे द्वे शिरे पादगते नृणाम्॥ अतश्चक्षुःप्रसादार्थी पादाभ्यंगं समाचरेत् ।

अर्थ-पांवोंमें तेलको मलना-निद्राजनक, नेत्रोंको हितकारी, पांवोंके रोगोंको हरनेवाला है। नेत्रोंके दोनों छिद्रोंमें जो दो शिरा हैं वह दोनों शिरा पावोंमें लगीहुई हैं इसकारण पावोंमें तेलको मलना नेत्रोंको हितकारी है अतएव नेत्रोंका हित चाहनेवाले मनुष्य सदैव पावोंमें तेलका मर्दन करें ।

अभ्यंगवर्जितजनाः ।

वर्ज्योऽभ्यंगः कफग्रस्तस्नानसंशुद्धाजीर्णिभिः ॥

अर्थ-कफग्रस्त, स्नानादिसे शुद्ध हुवा और अजीर्णरोगवाले मनुष्यको तैलादिका मर्दन करना निषध है।

अवगाहनयुक्ततैलगुणाः ।

स्नेहोऽवगाहने युक्तः शरीरे बलमाहरेत् ॥

अर्थ-शरीरमें तेलको मलकर जलमें डूबकर स्नान करनेसे शरीरमें बल उत्पन्न होता है ।

तैलमर्दनविधिः ।

शिखामुखै रोमकूपैर्धमनीभिश्च तर्पयेत् ॥

अर्थ-शरीरमें इस प्रकारसे तेलको मले जिससे बालोंकी जडमें रोमकूपोंमें और शिराओंमें तेल प्रवेश होजाय ।

शिरस्थितैलमर्दनगुणाः ।

नित्यं स्नेहार्द्रशिरसः शिरःशूलं न जायते । न खालित्यं न पालित्यं न केशाः प्रपतन्ति च ॥ दृढमूलाश्च कृष्णाश्च भवन्ति च घनायताः । इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग्भवति लोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य रोजरोज तेलसे शिरको मलतेहैं, उनके शिरमें शूलरोग कदापि उत्पन्न नहीं होता है, यथा केशोंकी अल्पता पक्वता और केश पतित नहीं होते हैं और केश दृढमूलयुक्त, कृष्ण और अत्यन्त सघन होजाते हैं इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोंमें सुदृश्यता उत्पन्न होती है ।

कर्णतैलपूरणगुणाः ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यं न मन्या न हनुग्रहाः ॥
नोच्चैः श्रुतिर्न बाधिर्य्यं न कर्णे वातजा रुजः ॥

अर्थ-जो मनुष्य-प्रतिदिन कानोंमें तेल डालते हैं उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, ऊंचा सुनना, बधिरता और वातसे उत्पन्न हुए कर्णरोग नहीं होतेहैं ।

उद्वर्त्तनगुणाः ।

उद्वर्त्तनं वातहरं कफमेदोनिलापहम् । स्थिरीकरणमंगानां त्वक्प्रसादकरं परम् ॥ उद्वर्त्तनं हरिद्राद्यैः कण्डूवैवर्ण्यरौक्ष्यजित् । तिलेनोद्वर्त्तनं कण्डूरौक्ष्यत्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-तेल लगानेके पश्चात् उबटन करना, वातरोग, कफ, मेद और वायुको दूर करेहै, शरीरमें स्थिरता और त्वचामें निर्मलता करेहै, हरिद्रादिकके द्वारा उबटन करनेसे-कण्डू, विवर्णता और रूक्षता नाश होती है और तिलोंके द्वारा उबटन करनेसे-खुजली, रूखापन और त्वचाके विकार नष्ट होते हैं ।

अन्यच्च ।

स्यादुद्वर्त्तनमंगकांतिजनकं मेदःकफालस्यजित् ।

अर्थ-उबटन-शरीरमें कान्तिजनक तथा मेद, कफ और आलस्यको दूर करै है ।

मुखप्रलेपगुणाः ।

मुखलेपाद्दृढं चक्षुः पीनो गंडस्तथाननम् ।
कान्तमव्यंगपिडकं भवेत्कमलसन्निभम् ॥

अर्थ-मुखपर लेप करनेसे नेत्र पुष्ट होतेहैं, कपोल दृढ होतेहैं और मुख कान्तिसंयुक्त झाँई और मुहासे रहित तथा कमलके समान निर्मल होजाता है ।

अथ स्नानगुणमाह ।

स्नानं पवित्रमायुष्यं श्रमस्वेदमलापहम् ।
शरीरबलसन्धानं केश्यमोजस्करं परम् ॥

अर्थ-स्नान करनेसे शरीरमें पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयुकी वृद्धि होतीहै तथा परिश्रम,पसीना और मैल दूर होता है, बल बढताहै, केशोंकी और तेजकी वृद्धि होती है ।

उष्णाम्बुना स्नानगुणमाह ।

उष्णाम्बुनाधःकायस्य परिषेकः सुखावहः । तेनैव तूत्तमाङ्गस्य बलघ्नं केशचक्षुषोः॥ विनिहन्ति शिरःस्नानं तृष्णाताल्वास्यशोषणम् ।मलोष्णपिडिकाकण्डूशिरोरोगांश्च पित्तजान् ॥

अर्थ-उष्णजलसे आधे शरीरको धोनेसे सुखकी वृद्धि होतीहै और गरम पानीके द्वारा शिरसे स्नान करनेसे केशोंका और नेत्रोंका बल कम होताहै तथा तृष्णा,तालुशोष,मुखशोष कुपितमल (वातपित्त और कफका कुपित होना) शरीरकी गरमी, पिडका, कण्डू, मस्तकरोग और पित्तसे उत्पन्न हुए रोग दूर होतेहैं ।

तथाच ।

नैर्मल्यं वपुषः करोति कुरुते निष्पापमूर्त्तिपरां पुण्यं वर्द्धयति त्वचं रचयते वर्णप्रभां कोमलाम् । कंडूं हन्ति रतिश्रमं विघटयत्यंगेषु सौख्यप्रदं शुक्रौजोबलवर्द्धनं रतिकरं स्नानं सुखोष्णांभसा ॥

अर्थ-सुखसहित उष्णजलसे स्नान करनेसे-शरीर निर्मल होता

है, पाप दूर होताहै, पुण्यकी वृद्धि होतीहै,त्वचाका रंग उत्तम होता है, वर्ण,कान्ति और कोमलता उत्पन्न होतीहै,खुजली दूर होतीहै, रतिका श्रमनाश होताहै, अंगोंमें सुख उत्पन्न होताहै, वीर्य, ओज और बलकी वृद्धि होतीहै और शक्ति उत्पन्न होतीहै ।

द्रव्यविशेषेण स्नानगुणमाह ।

मधुकामलकैः स्नानं पित्तघ्नं तिमिरापहम् ।
स्नानं वचाघनैरिष्टं श्लेष्मघ्नं तिमिरापहम् ॥
स्नानं कृष्णतिलैश्चापि चक्षुष्यमनिलापहम् ।

अर्थ-मुलैठी और आमलेको मलकर स्नान करनेसे पित्त और तिमिररोग दूर होताहै, वचा और नागरमोथेको मलकर स्नान करनेसे कफ और तिमिररोग नाश होताहै,काले तिलोंको मलके स्नान करनेसे नेत्रोंकी दृष्टि बढती है और वायु नष्ट होताहै ।

स्नानस्यविशेषगुणमाह ।

अस्नातस्य शरीरस्य ऊष्मा सर्वांगगोचरम् ।
स्नानेनैकत्वमायाति तेन दीप्यति पावकः ॥

अर्थ-नहीं स्नान करनेसे-अग्न्याशयमें स्थित अग्नि सर्वांगमें फैल जातीहै,वही अग्नि स्नानके द्वारा एकत्रित होकर मनुष्योंकी अग्नि दीपन होतीहै ।

स्नाननिषिद्धजनाः ।

स्नानमर्दितनेत्रास्यकर्णरोगातिसारिषु ।
आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ॥

अर्थ-अर्दित,नेत्र,मुख और कर्णरोगमें,अतीसार,आध्मान,पीनस, अजीर्णादि रोगोंमें तथा भोजनके अंतमें स्नान करना निषेध है ।

शरीरमार्जनगुणाः ।

दौर्गन्ध्यं गौरवं कण्डूं कच्छूं मलमरोचकम् ।
स्वेदबीभत्सतां हन्ति शरीरपरिमार्ज्जनम् ।

अर्थ-वस्त्रादिकसे शरीरको मार्ज्जन करनेसे-दुर्गंधता, भारीपन, खुजली,कच्छू,मल, अरुचि, पसीना और घृणा दूर होतीहै ।

वस्त्रधारणगुणाः ।

कौशेयौर्णिकवस्त्रं च रक्तवस्त्रं तथैव च।वातश्लेष्महरं तत्तु शी-

तकाले विधारयेत् ॥मेध्यं सुशीतं पित्तघ्नं कषाय वस्त्रमुच्यते। तद्धारयेदुष्णकाले तत्रापि लघु शस्यते ॥शुक्लं तु शुभदं वस्त्रं शीतातपनिवारणम्।न चोष्णं न च वा शीतं तत्तु वर्षासु धारयेत्। यशस्यं काम्यमायुष्यं श्रीमदानन्दवर्द्धनम् । त्वच्यं वशीकरं रुच्यं नवनिर्मलमम्बरम् ॥ कदापि न जनैः सद्भिर्धार्य्यं मलिनमम्बरम् । तत्तु कण्डूकृमिकरं ग्लान्यलक्ष्मीकरं परम् ॥

अर्थ-रेशमी,ऊनी और लाल रंगके वस्त्र-वात और कफको दूर करे हैं इस कारण इनको शीतकालमें पहिरना चाहिये। लाल,पीले आदि मिश्रित रंगके बारीक वस्त्र पवित्र, शीतल और पित्तको दूर करे हैं इनको ग्रीष्मकालमें पहिरे इनमें जहांतक होसके बहुत महीने पहिरे । सफेद वस्त्र-मंगलकारक, शीत और धूपको दूर करनेवाले हैं। न यह गरमहैं और न यह शीतलहैं इस कारण वर्षाऋतुमें धारण करना चाहिये। नवीन और निर्मल वस्त्र-यशको देनेवाले, कामदेवको बढानेवाले, आयुको बढानेवाले, लक्ष्मीको देनेवाले, आनन्दवर्द्धक, त्वचाको उत्तम करनेवाले,वशीकरण और रुचिकारक हैं। श्रेष्ठ पुरुष कभीभी मलिन अर्थात् मैले वस्त्रोंको नहीं पहिने, क्योंकि इनको पहिननेसे-खुजली, कृमिरोग, ग्लानि और अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता आती है ।

रत्नाभरणधारणगुणाः ।

धन्यं माङ्गल्यमायुष्यं श्रीमद्व्यसनसूदनम् ।
हर्षणं काम्यमौजस्यं रत्नाभरणधारणम् ॥

अर्थ-रत्नाभरणका धारण-धन,मंगल, आयु और लक्ष्मीवर्द्धक है। व्यसननाशक तथा हर्ष, काम और ओजवर्द्धक है ।

गुर्वादर्चनगुणाः।

स्वर्ग्यं यशस्यमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
धनधान्यकरं नित्यं गुरुदेवद्विजार्चनम् ॥

अर्थ-गुरु और देवादिका पूजन-स्वर्ग, यश और आयुको देनेवाला है। अलक्ष्मीनाशक तथा धन और धान्यवर्द्धक है।

दर्पणगुणाः ।

दर्पणं श्रीमदायुष्यं पापोपशमनं परम् ।

अर्थ-दर्पणमें मुख देखनेसे-लक्ष्मी और आयुकी वृद्धि होती है तथा पापका नाश होता है।

अनुलेपनगुणाः।

प्रीत्योजोवर्द्धनं वृष्यं स्वेददौर्गंध्यनाशनम्।
तन्द्रातापोपशमनं श्रमघ्नमनुलेपनम्॥

अर्थ-शरीरमें सुगंधादि वस्तुओंका लेप करनेसे-हर्ष, ओज और वीर्यकी वृद्धि होती है तथा पसीना, दुर्गंध, तन्द्रा, ताप और श्रम दूर होता है।

अन्यच्च।

अनुलेपस्तृषामूर्च्छादुर्गंधस्वेददाहजित्।
सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रीत्योजोबलवर्धनः॥
रू स्नानानर्हलोकानामनुलेपोऽपि नो हितः॥

अर्थ-चंदनादिका लगाना-तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंध, पसीना और दाहको दूर करे है, सौभाग्य, तेज, त्वचाका वर्ण, प्रीति, ओज और बलवर्द्धक है जिनको स्नान करना निषेध है उनको चंदनादिकाभी लगाना निषेध है।

पुष्पादिधारणगुणाः।

सुगंधिपुष्पपत्राणां धारणं कांतिकारणम्।
पापरक्षोग्रहहरं कामदं श्रीविवर्धनम्॥

अर्थ-सुगंधित पुष्पपत्रादिका धारण-कांतिजनक, पाप, राक्षस और ग्रहबाधाको दूरकरनेवाला, कामोद्दीपन और लक्ष्मीको बढानेवाला है।

भोजनाग्रे लवणार्द्रकादिभक्षणगुणाः।

भोजनाग्रे सदा पथ्यं जिह्वाकंठविशोधनम्। अग्निसंदीपनं हृद्यं लवणार्द्रकभक्षणम्॥ आयुर्घृते गुडे रोगो मृत्युर्लीनो विदाहिषु। आरोग्यं कटुतिक्तेषु बलं मांसे पयःसु च॥

अर्थ-भोजनसे पहिले सैंधवनिमकके साथ अद्रखका खाना सदैव पथ्यहै, जिह्वा और कंठको शुद्ध करेहै, हृदयको हितकारी और अग्निप्रदीपक है। भोजनसे पहिले घृतभक्षण करनेसे आयुकी वृद्धि होतीहै, गुड खानेसे रोग उत्पन्न होतेहैं, दाहजनक पदार्थ खानेसे मृत्यु होतीहै, कटु और तिक्तरसके पदार्थ खानेसे आरोग्यता उत्पन्न होतीहै, मांस और दूध खानेसे बलकी वृद्धि होतीहै।

क्रमादन्नादीनां गुणाधिक्यमाह ।

अन्नादष्टगुणं पिष्टं पिष्टादष्टगुणं पयः ।
पयसोऽष्टगुणं मांसं मांसादष्टगुणं घृतम् ॥
घृतादष्टगुणं तैलं मर्दनान्न तु भक्षणात् ।

अर्थ–अन्न, पिष्टक, दुग्ध, मांस, घृत इनके उत्तरोत्तर आठगुण अधिक हैं अर्थात् अन्नसे आठगुण अधिक पिट्ठीमें हैं, पिट्ठीसे आठगुण अधिक दुग्धमें हैं, दुग्धसे आठ गुण अधिक मांसमें हैं, और मांससे आठगुण अधिक घृत खानेमें हैं और घीकी अपेक्षा आठगुण अधिक तेलमें हैं, परन्तु तेलमें आठ गुण अधिक मर्दन करनेमें हैं खानेमें नहीं ।

आहारगुणाः ।

आहारः प्रीणनः सद्यो बलकृद्देहधारकः ।

अर्थ–आहार–तृप्तिकारक, तत्काल बलजनक और देहकी रक्षा करनेवाला है ।

आहारे दिङ्निर्णयः ।

आयुष्यं प्राङ्मुखो भुंक्ते यशस्यं दक्षिणामुखः ।
श्रियं प्रत्यङ्मुखो भुंक्ते ऋतं भुंक्ते ह्युदङ्मुखः ॥

अर्थ–पूर्वकी ओर मुखकरके आहार करनेसे आयुकी वृद्धि दक्षिणकी ओर मुखकरके आहार करनेसे यशकी प्राप्ति और पश्चिमकी ओर मुखकरके आहार करनेसे संपदाकी प्राप्ति होतीहै । उत्तरकी ओर मुख करके आहार करनेसे सत्यकी प्राप्ति होतीहै , इसकारण उत्तरकी ओर मुख करके आहार करै ।

भक्षणविषयेअन्नादीनांपरिमाणमाह ।

कुक्षावन्नेन भागौ द्वावेकं पानेन पूरयेत् ।
वायोः संचरणार्थञ्च चतुर्थमवशेषयेत् ॥

अर्थ– आहारके समय–उदरके दो भाग अन्नसे भरे, एकभाग पीनेकी वस्तुओंसे भरे और बाकीका एकभाग वायुके विचरनेके लिये रहने देवे ।

आचमनगुणाः ।

दन्तान्तरगतञ्चान्नं शौचेनैवाहरेच्छनैः ।
कुर्य्यादनिर्गतं तद्धि मुखस्यानिष्टगंधताम् ॥

अर्थ-भोजन करनेके समय जो अन्न दाँतोंमें घुसजाता है, वह अन्न आचमनके द्वारा धीरे धीरे निकालदेवे, जो आचमनके द्वारा दाँतोंसे अन्न बाहिर नहीं निकालते उनके मुखमें दुर्गंध आने लगतीहै ।

भोजनान्ते कर्त्तव्यता।

भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यदि दीयते ।
अचिरेणैव तद्वारि तिमिराणि व्यपोहति ॥

अर्थ-भोजनके अंतमें हाथमें हाथ घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे वह जल नेत्रोंके तिमिररोगको दूर करैहै ।

भुक्त्वाचम्य करं वामं दत्त्वा कुक्षौ ततः पठेत् । भुक्तं माहेन्द्रहस्तेन वैश्वानरमुखेन च ॥ गंडूरस्य च कंठेन समुद्रस्य च वह्निना । वातापिर्भक्षितो येन पीतो येन महोदधिः ॥ यन्मया खादितं पीतं तदगस्त्यो जरिष्यति ।

अर्थ-भोजन करनेके पश्चात् आचमन करके कोखमें वामहात धरके "भुक्तं माहेद्र, इत्यादि" इस मन्त्रको पढै तो भोजन शीघ्र जीर्ण होजाता है ।

सुखासीनः क्षण तिष्ठेद्यावन्न लभते सुखम् ।

अर्थ-फिर थोडी देरतक आराम करे जब तक सुख न हो ।

भुक्त्वा पादशतं गत्वा वामपार्श्वेण संविशेत् ।
एवञ्चाधोगतं चान्नं सुखं तिष्ठति जीर्य्यति ॥

अर्थ- भोजन करनेके पश्चात् सौ कदम धीरे धीरे चले, फिर बाईं करवटसे सोरहै तो अन्न पाकस्थानमें जाकर जीर्ण होजाता है ।

भोजनान्ते उपवेशनादिगुणाः ।

भुक्तोपविशतस्तुन्दं शयानस्य वपुर्भवेत् ।
आयुश्चंक्रममाणस्य मृत्युर्धावति धावतः ॥

अर्थ-भोजनके अंतमें उपवेशन अथवा शयन करनेसे स्थूलताकी वृद्धि, धीरे धीरे चलनेसे आयुकी वृद्धि और दौडनेसे मृत्यु होतीहै ।

ताम्बूलगुणाः ।

ताम्बूलं कटुतिक्तमुष्णमधुरं क्षारं कषायान्वितं

वातघ्नं कृमिनाशन कफहरं दुःखस्य विच्छेदनम् ।
स्त्रीसम्भाषणभूषणं धृतिकरं कामाग्निसंदीपनं
ताम्बूले निहितास्त्रयोदश गुणाः स्वर्गेपि ते दुर्लभाः ॥

अर्थ-पान-चरपरा, कडवा, गरम, क्षारगुणयुक्त, मधुर, कषेला, वातविनाशक, कृमिनाशक कफहारक, दुःखोंको दूर करनेवाला, स्त्रीसंभाषणक विषय आभूषण, धारणशक्ती और कामको बढानेवाला है, यह १३ गुण पानमें विद्यमान हैं सो स्वर्गमेंभी दुर्लभ हैं

पूगफलगुणाः ।

शुष्कमग्निकरं पूग कषायं मधुरं परम् ।
पक्वन्तु वातलं रूक्षं भेदनं कफनाशनम् ॥
गुर्वभिष्यंदि मधुरं तोयधृग्वह्निनाशनम् ।

अर्थ-सूखी सुपारी-अग्निवर्द्धक, कषेली और मधुरयुक्त ह । पक्की सुपारी-वातवर्द्धक, रूखी, भेदक और कफनाशक है। कच्चीसुपारी-भारी, क्लेदजनक, मधुर और मंदाग्निकारक है ।

ताम्बूलपत्रगुणाः ।

ताम्बूलपत्रं तीक्ष्णोष्णं कटुवातकफापहम् ।
पित्तकृत्स्रंसनं वृष्यं वह्निकृद्बस्तिशोधनम् ॥

अर्थ-ताम्बूलपत्र-तीक्ष्ण, गरम, चरपरा, वात-कफनाशक, पित्तकारक, स्रंसन, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निजनक और वस्तिशोधक है ।

पर्णमूलादिगुणाः ।

पणमूले भवेद्व्याधिः पर्णाग्रे पापसम्भवः ।
जीर्णपण हरेदायुः शिरावह्नि विनाशयेत् ॥

अर्थ-पानकी जडका खानेसे-नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होतेहैं, पानके अग्रभागको भक्षण करनेसे पाप उत्पन्न होता है और जीर्णपानको भक्षण करनेसे आयुक्षीण होती है और शिरा अग्निकी विनाश करती है ।

चूर्णगुणाः ।

चूर्णं समीरणश्लेष्ममेदोहरमुदाहृतम् ।

अर्थ-चूना-वात, कफ और मेदनाशक है ।

शंखचूर्णगुणाः।

शंखचूर्णं कटुक्षारमुष्णं कृमिहरं परम्।

अर्थ-शंखका चूना-चरपरा, क्षार, गरम और कृमिनाशक है।

खदिरगुणाः।

खदिरः कुष्ठसवीर्पमेहपित्तकफापहः।

अर्थ-कत्था-कोढ, वीसर्प, प्रमेह, पित्त और कफनाशक है।

एलागुणाः।

एला मूत्रविबन्धघ्नी तृट्छर्दिकफवातजित्।

अर्थ-इलायची-मूत्रविबन्धनाशक तथा तृषा, वमन, कफ और वातनाशक है।

लवंगगुणाः।

आध्मानानाहशूलघ्नं लवंगं पाचनं लघु।

अर्थ-लौंग-अफारा, आनाह और शूलनाशक है, पाचक और हलकी है।

जातीफलगुणाः।

जातीफलं तृषाछर्दिशूलघ्नं वातपित्तजित।

अर्थ-जायफल-तृषा, वमन, शूल और वातपित्तनाशक है।

जातीकोषगुणाः।

जातीकोषो लघुस्तृष्णातोददौर्गन्ध्यजिन्मतः।

अर्थ-जावित्री-हलकी-तृषा, वेदना और दुर्गंधको दूर करे है।

कर्पूरगुणाः।

कर्पूरं शीतलं पाके चक्षुष्यं कफनाशनम्।
पक्वकर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्तरम्।

अर्थ-कपूर-पचनेमें शीतल, नेत्रोंको हितकारी और कफनाशक है। पक्के कपूरसे कच्चा कपूर अधिकगुणवाला है।

पूगस्य बालमध्यादिभेदेन गुणमाह।

आदौ पूगं विषं घोरं द्वितीये भेदि दुर्जरम्।
तृतीयादिषु पातव्यं सुधातुल्यं रसायनम्।

अर्थ-कच्चीसुपारी-विषकेसमान अहितकारीहै, मध्यम अवस्थाकी सुपारी-भेदक और दुर्जर है और [illegible] सुपारी अमृतकेसमान हित-

कारी और रसायन है, इसकारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाकी सुपारीकोत्यागकर तृतीय अर्थात् शुष्कसुपारी भक्षण करनी चाहिये।

ताम्बूलभक्षणनिषेधः ।

ताम्बूलमहितं प्रोक्तं शरीरे रूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषे पित्तास्रमदमूर्च्छाक्षिरोगिषु ॥

अर्थ-रूक्ष, दुर्बल, ज्वर, मुखशोष, रक्तपित्त, मद, मूर्च्छा और नेत्ररोगवाले मनुष्योंको ताम्बूल भक्षण करना नहीं चाहिये।

ताम्बूलस्यानुपयोगगुणाः ।

ताम्बूलानुपयोगात्स्याच्छ्लेष्मपित्तानिलान्वितः ।
देहदृक्केशदन्ताग्निश्रोत्रवर्णबलक्षयः ॥

अर्थ-ताम्बूल नहीं खानेसे-मनुष्योंके कफ-पित्त और वातका कोप होता है तथा देह, नेत्र, केश, दन्त, अग्नि, कर्ण, वर्ण और बलआदिका नाश होता है ।

अध्ययनादिगुणाः ।

सतताध्ययनं वादः परतंत्रविलोकनम् ।
सद्विद्याचार्यसेवा च बुद्धिमेधाकरो गणः ॥

अर्थ-निरंतर शास्त्रका अध्ययन-शास्त्रार्थ, उत्तमशास्त्रोंका दर्शन सद्विद्याका ग्रहण और गुरुकी सेवा यह सब मनुष्योंकी बुद्धि और मेधाको बढाते हैं ।

बुद्धिगुणमाह ।

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।
ऊहापोहोर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥

अर्थ-गुरुजनोंकी शुश्रूषा, गुरुके वाक्योंको श्रवण करना, गुरुके वचनोंको ग्रहण और धारण करना तथा तर्कका मीमांसाजनक ज्ञान और ईश्वरविषयका ज्ञान यह छः बुद्धिके गुण हैं ।

सद्योमांसादिगुणाः ।

सद्योमांसं नवान्नं च बालास्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकं चैव सद्यः प्राणकराणि षट् ॥

अर्थ-तत्कालका मांस, नवीन अन्न, बालास्त्री, क्षीरभोजन, घृत और उष्णजल, ये छः तत्काल प्राणजनक हैं ।

पूतिमांसादिगुणाः ।

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥

अर्थ-दुर्गंधितमांस,वृद्धास्त्री,भादों और क्वारकी धूप, पांच दिनका दही,प्रभातके समय मैथुन और निद्रा ये छः तत्काल प्राणनाशक हैं।

वयोभेदे नारीणां बालादिकथनम् ।

बालेतिगीयते नारी यावत्षोडशवत्सरम् । तस्मात्परं तु तरुणी यावत्स्यात्त्रिंशतं भवेत्॥ तत ऊर्ध्वं भवेत्प्रौढा यावत्पंचाशतं पुनः । वृद्धा ततः परं ज्ञेया सुरतोत्सववर्जिता ॥

अर्थ-सोलहवर्षकी स्त्रीको बाला, सोलह वर्षके बाद तीस वर्षतककी तरुणी, तीस वर्षसे पचास वर्षतककीको प्रौढा और पचास वर्षसे अधिक उमरवालीको वृद्धा कहते हैं । वृद्धनारी रतिक्रियामें वर्जित है ।

बालादिस्त्रीसंसर्गगुणाः ।

बाला तु प्राणदा प्रोक्ता तरुणी प्राणधारिणी ।
प्रौढा करोति वृद्धत्वं वृद्धाभरणमादिशेत् ॥

अर्थ-बालास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी वृद्धि होती है,तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी रक्षा होती है, प्रौढा स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे वृद्धता आती है और वृद्धास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे मृत्यु होती है ।

बालादिभेदे मैथुनकालनिर्णयः ।

निदाघशरदोर्बाला प्रौढा वर्षावसंतयोः ।
हेमन्ते शिशिरे योग्या न वृद्धा क्वापि शस्यते ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरद्ऋतुमें बालास्त्रीके साथ,वर्षा और वसंतऋतुमें प्रौढास्त्रीके साथ, हेमन्त और: शिशिरऋतुमें तरुणीके साथ मैथुन करैं,किन्तु वृद्धास्त्रीके साथ किसी ऋतुमें मैथुन न करै ।

मैथुननिषेधः ।

नर्त्ते च षोडशाद्वर्षात्सप्तत्याः परतो न च ।
आयुष्कामो नरः स्त्रीभिः संयोगं कर्त्तुमर्हति ॥

अर्थ-आयुकी अभिलाषा करनेवाले मनुष्य सोलहवर्षसे कम सत्तर वर्षसे अधिक आयुवाले स्त्रीसे मैथुन नहीं करैं ।

मैथुनकालनिर्णयः ।

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्च सेवेत प्रमदां नरः ।
सर्वेष्वृतुषु ग्रीष्मे तु पक्षान्मासाद्व्रजेद्बुधः ॥

अर्थ-बुद्धिमान् मनुष्य वर्षा, शरद्, हेमन्त, वसन्त और शीत ऋतुमें तीन दिनके बाद मैथुन करें और ग्रीष्मऋतुमें पंद्रह दिन अथवा एक महीनेके अंतरसे मैथुन करे ।

अतिमैथुनगुणाः ।

ग्लानिकम्पोरुदौर्बल्यं धात्विन्द्रियबलक्षयः ।
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या जायन्तेऽतिव्यवायतः ॥

अर्थ-अत्यन्त मैथुन करनेवाले मनुष्योंके शरीरमें ग्लानि, कम्प, घुटनोंमें दुर्बलता होती है । धातु, इन्द्रियबल इनका क्षय होता है और राजयक्ष्मा वृद्धि तथा उपदंशादिरोग उत्पन्न होते हैं ।

सन्तानोत्पत्तिकालंनिर्दिशन्नाह ।

पंचपञ्चाशतो नारी सप्तसप्ततितः पुमान् ।
द्वावेतौ न प्रसूयेते प्रसूयेते व्यतिक्रमात् ॥

अर्थ-पचपन वर्षकी स्त्री और सतत्तर वर्षका पुरुष, ये दोनों सन्तानको उत्पन्न नहीं करसक्ते, कारण यह है कि, पचपन वर्षकी स्त्रीके रजमें और सतत्तर वर्ष आयुवाले पुरुषके वीर्य्यमें सन्तानको उत्पन्न करनेवाली शक्ति नष्ट होजातीहै, परन्तु पचपन वर्षसे कमकी स्त्री और सतत्तर वर्षसे कमका पुरुष सन्तान उत्पत्ति करसक्ते हैं ।

सुखशय्याशनगुणाः ।

सुखशय्याशनं सेव्यं निद्रापुष्टिधृतिप्रदम् ।
श्रमानिलहरं वृष्यं विपरीतमतोन्यथा ॥

अर्थ-सुखशय्या और उत्तमद्रव्यका भोजन-निद्रा, पुष्टि और धीरजको बढाते हैं, श्रम और वातनाशक तथा वीर्यजनक हैं और इससे विपरीत शय्या और विपरीत भोजन विपरीतगुणकारक हैं ।

भूमिशय्यागुणाः ।

भूशय्याऽनिलपित्तघ्नी बृंहणी शुक्रवर्द्धिनी ।

अर्थ-पृथ्वीमें सोना-वात और पित्तनाशक, पुष्टिकारक और शुक्रवर्द्धक है ।

खट्वापटशय्ययोर्गुणाः ।

खट्वा तु वातला प्रोक्ता पटो रूक्षोऽतिवातलः ।

अर्थ-खाटपर सोनेसे वात बढती है और पटशय्यापै सोनेसे रूक्षता और वात बढती है ।

ज्योत्स्नागुणाः ।

ज्योत्स्ना कषायमधुरा दाहासृक्पित्तनाशिनी ।

अर्थ-ज्योत्स्ना (चांदनी) कषेली और मधुर, तथा दाह और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्धकारगुणाः ।

तमो भयावहं तिक्तं दृष्टितेजोवरोधनम् ।

अर्थ-अन्धकार-भयकारक, कडुवा, दृष्टिशक्ति और तेजको रोकनेवाला है ।

मैथुनगुणाः ।

व्यवायो धात्वपचयं कुरुते रत्यपत्यदः ।

अर्थ-मैथुन-धातुनाशक, रति और सन्तान देनेवाला है ।

अतिमैथुनगुणाः ।

अतिव्यवायाज्जायन्ते श्वासकासज्वरादयः ।

अर्थ-अत्यंत मैथुन करनेसे-श्वास, कास और ज्वरादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

मैथुनाकरणगुणाः ।

असेवनान्मेहमेदोग्रन्थिरग्नेश्च मार्दवम् ।

अर्थ-मैथुन नहीं करनेसे- प्रमेह, मेद, ग्रन्थि और मंदाग्नि उत्पन्न होती है ।

परिमितमैथुनगुणाः ।

स्मृतिमेधायुरारोग्यपुष्टीन्द्रिययशोबलैः ।
अधिका नाशु जरसो भवन्ति स्त्रीषु संयताः ॥

अर्थ-नियमानुसार मैथुन करनेसे-स्मरणशक्ति, अभ्यासशक्ति, आयु,आरोग्य, पुष्टि, इन्द्रियशक्ति, यश और बल इनकी वृद्धि होतीहै और नियमानुसार मैथुन करनेवाला मनुष्य शीघ्र वृद्धताको नहीं प्राप्त होताहै ।

निद्रागुणाः ।

निद्रा तु सेविता काले धातुसाम्यमतन्द्रिताम् ॥

पुष्टिवर्णबलोत्साहानग्निदीप्तिं करोति च ॥

अर्थ-नियमानुसार निद्रा लेनेसे-धातुकी समता, तन्द्रानाश, पुष्टि, वर्ण, बल, उत्साह और अग्नि दीपन होताहै ।

रात्रिजागरदिवास्वप्नयोर्गुणाः ।

रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा ।
कफमेदोविषार्त्तानां रात्रौ जागरणं हितम् ॥
दिवास्वप्नं च तृट्छूलहिक्काजीर्णातिसारिणाम् ।

अर्थ-रात्रिमें जागनेसे शरीरमें रूक्षताकी वृद्धि और दिनमें सोनेसे शरीरमें स्निग्धताकी वृद्धि होतीहै इस कारण दिनमें सोना और रात्रिमें जागना अनुचित है । किन्तु कफ, मेद और विषग्रस्त-रोगियोंको रात्रिमें जागना हितकारक है, तथा तृष्णा, शूल, हिक्का, अजीर्ण और अतिसाररोगवालोंको दिनमें सोना हितकारक है ।

दिवा वा यदि वा रात्रौ निद्रा सात्मीकृता तु यैः ।
न तेषां स्वपतां दोषो जाग्रतां वा विधीयते ॥

अर्थ-जिनको दिनमें निद्रा लेनेका और रात्रिमें जागनेका अभ्यास है उनको दिनमें निद्रा और रात्रिमें जागनाही उचितहै ।

हेमन्तशिशिरकृत्यम् ।

शीते शीतानिलस्पर्शसंरुद्धो बलिनां बली । पक्ता भवति हेमन्ते मात्राद्रव्यगुरुक्षमः ॥ स यदा नेन्धनं युक्तं लभते देहजं तदा। रसं निहंत्यतो वायुः शीतः शीते प्रकुप्यति॥ तस्मात्तुषारसमये स्निग्धाम्ललवणान्रसान् । उदकानूपमांसानां मेध्यानामुपयोजयेत्॥ बिलेशयानां मांसानि प्रसहानां भृतानि च । भक्षयेन्मदिरां सीधुं मधु चानुपिबेन्नरः ॥ गोरसानिक्षुविकृतीर्वसां तैलं नवौदनम् । हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णञ्चायुर्न हीयते॥ अभ्यंगोत्सादनं मूर्ध्नि तैलं जेन्ताकमातपम् । भजेद्भूमिगृहञ्चोष्णमुष्णं गर्भगृहं तथा॥शीते सुसंवृतं सेव्यं यानं शयनमासनम् । प्रावाराजिनकौशेयप्रवेणीकुथकास्तृतम् ॥ गुरू-

ष्णवासा दिग्धांगो गुरुणाऽगुरुणा सदा । शयने प्रमदां पीनां विशालोपचितस्तनीम् ॥ आलिंग्यागुरुदिग्धाङ्गीं सुप्यात्समदमन्मथः । प्रकामञ्च निषेवेत मैथुनं शिशिरागमे ॥ वर्ज्जयेदन्नपानानि लघूनि वातलानि च । प्रवातं प्रमिताहारमुदमन्थं हिमागमे॥हेमन्ते शिशिरे तुल्ये शिशिरेऽल्पं विशेषणम् । रौक्ष्यमादानजं शीतं मेघमारुतवर्षजम्॥तस्माद्धैमन्तिकः सर्वः शिशिरे विधिरिष्यते।निवातमुष्णन्त्वधिकं शिशिरे गृहमाश्रयेत ॥ कटुतिक्तकषायाणि वातलानि लघूनि च । वर्ज्जयेदन्नपानानि शिशिरे शीतलानि च ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुमें शीतल पवनके चलनेसे मनुष्यके शरीरकी उष्णता बाहर नहीं निकलती इसकारण इस ऋतुमें बलवान् मनुष्योंकी पाचकाग्नि अत्यन्त प्रबल होकर बहुत भोजन और भारी पदार्थोंको पचानेको समर्थ हो जातीहै,ऐसेही जो प्रबल अग्नि उचित नियमसे पकानेकी वस्तु न पावे तो वह शरीरकी रस धातुका क्षय करना आरम्भ करती है,रसक्षयके हेतुसे शीतल वायु कुपित होनेके कारण, इस ऋतुमें स्निग्ध द्रव्य,अम्ल और नमकीन पदार्थ, पवित्र जल,अनूप देशके जीवोंका मांस और प्रसहजातिके जीवोंका मांस भक्षण करे तथा सीधुनामक मदिराको पीकर फिर सहत पीवे हेमन्त ऋतुमें दूध,इक्षुविकार,वसा,तेल और नवीन चावलोंका भात भक्षण करना चाहिये । हेमन्त ऋतुमें गरम करके जल पीवे,इससे मनुष्योंकी आयु नष्ट नहीं होती है । इस ऋतुमें अभ्यंग,उत्सादन, (हलदी आदिका मलना) जेन्ताक (एक प्रकारका स्वेद) आदिका व्यवहार है । ईटोंके अथवा मृत्तिकाके बनेहुए उष्ण गृहमें अथवा उष्ण गर्भगृहमें वासकरना चाहिये । इस ऋतुमें कम्बल, चर्म्म (पोस्तीन आदि) रेशमीन प्रवेणी और विचित्र कम्बलआदिसे भलीभाँति ढकीहुई सवारी (अश्वादि) सेज और आसनको व्यवहार करे। सदैव मोटा और गरम कपडा पहिने, अगरको घिसकर गाढा लेप करे। शयन करनेके समय मद पीकर कामयुक्त चित्तसे मोटी ताजी,उठेहुवे स्तनवाली, अगर आदि सुगन्धियें जिसके शरीरमें लगरही हैं, ऐसी तरुणी स्त्रीके साथ लेटकर आलिंगन करे और

इच्छानुसार मैथुन करके फिर सोरहै । इस ऋतुमें हलके, वातवर्द्धक भोजन और पानीय अर्थात् पीनेके द्रव्य, प्रबल वायु, अल्प आहार और उदमन्थ (जलमें घोले हुवे सत्तू) त्यागदेवे । हेमन्त और शिशिर ऋतु दोनों समान हैं, अंतर केवल इतनाहीहै कि, शिशिर ऋतुमें आदान जात (इस ऋतुमें सूर्य्यके द्वारा शरीरके चिकने पदार्थ ग्रहण किये जातेहैं) रूखापन, मेघवायु और वर्षासे उत्पन्न हुवा शीत अधिक होताहै,इसकारण हेमन्त कालके आचार व्यवहार शिशिर कालमें आचरण करे । इस ऋतुमें वायुरहित उष्ण गृहमें रहना चाहिये और चरपरे कडवे, कसेले रसवाले द्रव्य,वातको बढानेवाले द्रव्य, हलके द्रव्य और ठंडे खानेके पदार्थ और पीनेके द्रव्य त्यागदेवे ।

वसन्तकृत्यम् ।

हेमन्ते निचितः श्लेष्मा दिनकृद्भाभिरीरितः । कायाग्निं बाधते रोगांस्ततः प्रकुरुते बहून् ॥ तस्माद्वसन्ते कर्म्माणि वमनादीनि कारयेत् । गुर्व्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नञ्च वर्जयेत् ॥ व्यायामोद्वर्त्तनं धूमं कवलग्रहमंजनम् । सुखाम्बुना शौचविधिंशीलयेत्कुसुमागमे ॥ चन्दनागुरुदिग्धाङ्गो यवगोधूमभोजनः । शारभं शाशमैणेयं मांसं लावकपिंजलम् ॥ भक्षयेन्निगदं सीधुं पिबेन्माध्वीकमेव वा । वसन्तेऽनुभवेत्स्त्रीणां काननानां च यौवनम् ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुमें संचित हुवा कफ सूर्य्यकी तीक्ष्ण किरणोंसे चलायमान होकर देहकी अग्निको मंद करता है इसकारण वसन्त ऋतुमें बहुतप्रकारके रोग उत्पन्न होतेहैं,अतएव वसन्तऋतुमें कफके दूर करनेको वमनादि क्रियाकरे । इसऋतुमें भारी, खट्टी, तथा मधुर रसवाली वस्तु और दिनमें सोना छोडदेवे । व्यायाम, उबटन, धूमपान, कवलग्रहण (अदरख आदिके रसके कुल्ले करना) आँखोंमें अंजन लगाना,कुछेक गरम जलसे शौचादि क्रियाकरना,यव,गोधूम, शरभका मांस खरगोशका मांस हिरनका मांस लवेका मांस और चातकका मांस भक्षण करना, और सीधु तथा माध्वीक नामक मदको पीना ठीक है इसऋतुमें बनोंकी और स्त्रियोंके यौवनकी सुन्दरता बढती है ।

ग्रीष्मकृत्यम् ।

मयूखैर्जगतः सारं ग्रीष्मे पेपीयते रविः। स्वादु शीतं द्रव्यस्निग्धमन्नपानं तदाहितम् ॥ शीतं सशर्करं मन्थं जाङ्गलान्मृगपक्षिणः । घृतं पयः सशाल्यन्नं भजन्ग्रीष्मे न सीदति ॥ मद्यमल्पं न वापेयमथवा सुबहूदकम् । लवणाम्लकटूष्णानि व्यायामञ्चात्र वर्जयेत् । दिवाशीतगृहे निद्रां निशि चन्द्रांशुशीतले॥ भजेच्चन्दनदिग्धाङ्गः प्रवाते हर्म्यमस्तके ॥ व्यजनैः पाणिसंस्पर्शैश्चन्दनोदकशीतलैः ॥ सेव्यमानो भजेतास्यां मुक्तामणिविभूषितः । काननानि च शीतानि जलानि कुसुमानि च ॥ ग्रीष्मकाले निषेवेत मैथुनाद्विरतो नरः ।

अर्थ-ग्रीष्मऋतुमें सूर्यकी किरणोंसे पृथ्वीके सर्व स्निग्ध पदार्थ सूख जातेहैं इसकारण इस ऋतुमें स्वादिष्ठ, शीतलद्रव्य और स्निग्धगुणवाले भोजन और पीनेके द्रव्योंका व्यवहार करना चाहिये। इसऋतुमें बूरा मिलाहुवा तक्र, जंगली पशु और जंगली पक्षियोंका मांस, सांठीके चावलोंका भात खावे, दूध पीवे, जिनको मदिरा पीनेका अभ्यासहै वह थोडीसी या बहुतसा जल मिली हुई मदिरा पीवे परन्तु जिनको मदिरा पीनेका अभ्यास नहीं है, उनको इस ऋतुमें मदिरापान अयोग्यहै ग्रीष्मऋतुमें लवण, खट्टे और चरपरे रसके पदार्थ, उष्णवस्तु और व्यायाम (कसरत) करनी छोडदें। शरीरमें चन्दन लगाकर दिनके समय हवादार शीतल घरमें और रात्रिके समय पवन और चंद्रमाकी किरणोंसे संयुक्त छतपर शयन करे जब दुपहरको प्रचंडसूर्य्यकी गरमीसे शरीर तप्तहोजाय तो चन्दनके जलको पंखेपर छिडककर शीतल बयारसे और दासदासियोंका हाथ छूनेसे, सावधान होनेके पीछे मणिमुक्ता धारणकर आराम करना चाहिये। फिर मैथुनसे निवृत्तकर शीतल पुष्पवाटिका, शीतलजल और शीतल सुगन्धियुक्त पुष्पोंका व्यवहार करे ।

वर्षाकृत्यम् ।

आदानदुर्बले देहे पक्ता भवति दुर्बलः । सवर्षास्वनिलादीनां दूषणैर्बाध्यते पुनः ॥ भूबाष्पान्मेघनिस्यन्दात्पाकादम्ला-

जलस्य च। वर्षास्वग्निबले क्षीणे कुप्यन्ति पवनादयः॥तस्मात्साधारणः सर्वो विधिर्वर्षासु चेष्यते।उदमन्थं दिवास्वप्नमवश्यायं नदीजलम् ॥ व्यायाममातपञ्चैव व्यवायश्चात्र वर्जयेत्। पानभोजनसंस्कारान्प्रायः क्षौद्रान्वितान्भजेत् । व्यक्ताम्ललवणस्नेहं वातवर्षाकुलेऽहनि ॥ विशेषशीते भोक्तव्यं वर्षास्वनिलशान्तये । अग्निसंरक्षणवता यवगोधूमशालयः॥ पुराणा जांगलमांसैर्भोज्या यूषैश्च संस्कृतैः । पिबेत्क्षौद्रान्वितं चाल्पं माध्वीकारिष्टमम्बु वा ॥ माहेन्द्रं तप्तशीतं वा कौपं सारसमेव वा ।प्रघर्षोद्वर्त्तनस्नानगन्धमाल्यपरो भवेत्॥ लघुशुद्धाम्बरं स्थानं भजेदक्लेदिवार्षिकम् ।

अर्थ-आदान कालमें देहकी दुर्बलताके हेतुसे अग्निभी दुबल हो जाती है, यह दुर्बलाग्नि वर्षाकालमें वातादि दोषोंकरके अधिक दुर्बल होजाती है इसऋतुमें पृथ्वीमेंसे वाफ उठतीहै, मेघ गरजतेहैं जलका अम्ल पकजाताहै और अग्निका बल न्यूनहोनेसे त्रिदोष कुपित होतेहैं इस कारण इसऋतुमें साधारण विधिका आचरण करना चाहिये,वर्षाकालमें मट्ठेमें जल मिलाकर पीना,दिनमें सोना हिम और नदीके जलको सेवनकरना, कसरत करना, धूपमें बैठना और मैथुन करना, यह सब छोडना चाहिये,इसऋतुमें पानी और भोजनमें सहत मिलाकर सेवन करना चाहिये और वर्षायुक्त दिनमें अत्यंत शीत होय तो वायुको शान्त करनेके लिये अम्ल और लवण रस तथा स्नेहयुक्त द्रव्य भक्षण करै। अग्निकी रक्षा करनेको पुराने जौ, गेहूं, सांठीके चावल और जंगली पशुओंके मांसका भक्षण,शोधित यूष मधुयुक्त थोडीसी माध्वीक मदिरा अथवा अरिष्ट पान करै मेघजल वा तप्तशीतल जल (जो जल गरम होकर शीतल किया होय) या कूपजल या सरोवरका जल पान करै, इस ऋतुमें शरीरका घर्षण,उबटन, स्नान,चंदनादि सुगंधित द्रव्य और पुष्पोंकी मालाका धारण, हलके और शुद्धवस्त्रका पहरना और क्लेदरहित स्थानमें वास करना चाहिये ।

शरत्कृत्यम् ।

वर्षाशीतोचितांगानां सहसैवार्करश्मिभिः । तप्तानामाचितं

पित्तं प्रायः शरदि कुप्यति॥तत्रान्नपानं मधुरं लघु शांतं सतिक्तकम् । पित्तप्रशमनं सेव्यं मात्रया सुप्रकांक्षितैः ॥ लावान्कपिञ्जलानेणानुरभ्रान्छरभान्छशान् । शालीन्यवांश्च गोधूमान्सेव्यानाहुर्घनात्यये॥तिक्तस्य सर्पिषः पानं विरेको रक्तमोक्षणम् । घगाधरात्यये कार्यमातपस्य च वर्ज्जनम् ॥ वसां तैलमवश्यायमौदकानूपमामिषम् । क्षारं दधि दिवा स्वप्नं प्राग्वातश्चात्र वर्जयेत्॥ दिवा सूर्यांशुसंतप्तं निशि चंद्रांशुशीतलम् । कालेन पक्कं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम् ॥ हंसोदकमिति ख्यातं शारदं विमलं जलम् । स्नानपानावगाहेषु शस्यते तद्यथामृतम् ॥शारदानि च माल्यानि वासांसि विमलानि च । शरत्काले प्रशस्यंते प्रदोषे चेन्दुरश्मयः ॥

अर्थ-वर्षाकालमें उस कालका शीतसे संचित हुआ पित्त शरदू ऋतुमें सूर्यकी किरणोंसे संतापितहो (अनुबंधरूपसे वात और पित्तभी कुपित होते हैं) कुपित होताहै इसकारण पित्तको शमन करनेके लिये क्षुधातुर मनुष्य मधुर,शीतल,हलका और कडवा अन्न तथा पीनेके द्रव्य यथोचित मात्राके अनुसार सेवन करै और लवा, कपिञ्जल (सफेद तीतर), एण (कालाहरिण), मेढा, शरभ और खरगोसआदि जीवोंका मांस,सौंठीके चावलोंका भात और जौ,गेहूं खावै। पित्तको शान्त करनेके लिये तिक्तरसयुक्त घृत (पंचातिक्त, घृतादि)पीना चाहिये जो तिक्त घृतके पीनेसे पित्त शान्त न होवे तो जुल्लाबकी औषधियोंको सेवनकर पित्तको शान्त न करे इससेभी शान्त होवै तो रक्तमोक्षण(फस्त)कराना चाहिये। इस ऋतुमें शरीरको धूप न लगने दे, तथा वसा (चरबी) तेल, हिम, जल और अनूपदेशके जीवोंका मांस, खार,दही, दिनका सोना और प्रबल पूर्वदिशाकी वायुका सेवन छोडदेना चाहिये । वर्षाके समय मेघ वर्षनेसे जल नवीन होजाते हैं । वह इस जलके साथ विषैले पदार्थ मिलजाते हैं और जलका अम्ल पकजाता है जब शरद् ऋतुमें यह जल स्वभावसे पकजावे और अगस्त्यके उदयसे विषरहित होजाय तब उसको लेकर

सारेदिन सूर्यकी धूपमें और रातभर चंद्रमाकी किरणोंमें रखकर शीतल करे इसजलको ‘हंसोदक’ कहते हैं। शरद् ऋतुमें स्नान, पान और कुल्ला करनेको हंसोदकही श्रेष्ठ है । तथा अमृतके समान है, इस ऋतुमें पुष्पोंकी माला तथा निर्मल वस्त्रोंको धारण करना चाहिये और प्रदोष (रात्रि) कालमें चंद्रमाकी किरणोंको सेवन करना चाहिये ।

अथ ग्रथकर्तुर्वंशवर्णनम् ।

चन्द्रान्वये माथुरवैश्यवर्य्य आह्लादगोत्रो द्विजवृन्दसेवी । दान्तः सुशीलः शिवभक्तियुक्तो विद्यानिधिःसर्वकलाप्रवीणः॥ आसीत्पुरा धर्म्मविदां वरिष्ठः श्रीबालमुकुदः करुणाकरश्च । यस्य प्रतापी बहुपुण्यकारी बभूव गोवर्द्धनदासपुत्रः॥ हरियशराजो हरिजनभक्तः सुजनसुधर्म्मी विदितसुपुत्रः। गोपालदासस्तनयो बभूव योगेश्वरस्तस्य कुले महात्मा ॥ विज्ञानयुक्तः प्रथितप्रबोधो महाजनः सर्वगुणैकसिन्धुः । तस्य सुतः पुरुषोत्तमदासोबुद्धियुतः कथितो गुणशीलः ॥ कोविदरतमहाजनसेवी सज्जनसंगरतो विनयी च । मोतीराम इति ख्यातस्तनयस्तस्य धार्म्मिकः॥ तत्सुतः पद्मनेत्रोभूत्समृद्धो धार्म्मिको वशी । घनश्यामदासनामा तस्य पुत्रो गुणाग्रणीः । सीतारामश्च विख्यातस्तस्य पुत्रः प्रतापवान् । विनिर्मितो यस्य विशालकूपः प्रवर्तते पट्टरगंजमध्ये । अशीतिहस्तस्य मुखं विलोक्य मतिर्भवत्येव नु दीर्घिकायाः ॥ न तत्समोन्यः कूपोस्ति मुरादाबादपत्तने । अद्भुतो दर्शनीयश्च कीर्तिर्जागर्त्ति भूतले ॥ तस्य पुत्रास्त्रयः श्रेष्ठा दिल्सुखरायमहर्द्धिमान् । मध्यमो रामजीरामो हरिभक्तो महाशयः ॥ कनीयान्सत्यवा[illegible]वागग्म्यानंदरूपश्च विश्रुतः । तस्य पुत्रो महानग्रः शालिग्रामो व्यजायत ॥ तेनासौ निर्म्मितो ग्रन्थो भिषजानां सुखावहः । सर्वलोकोपकाराय ज्ञानाय च शुभाशुभम् ॥ शाके वसुक्षितिवसुक्षितिसम्मितेब्दे आषाढशुक्कविमला-

तिथिपञ्चदश्याम् । वारे भृगौ समगमत्परिपूर्णतां वै ग्रन्थो निघण्टुशिरभूषणनामधेयः ॥

अर्थ-चन्द्रवंशीय माथुरवैश्य महाश्रेष्ठ आह्लादगोत्रमें अनेक सज्जन हुए, उनमें ब्राह्मणोंके सेवक, परमचतुर, सुशील, शिवभक्तियुक्त, विद्यानिधान, सर्वगुणोंमें प्रवीण, धर्म्मज्ञजनोंमें श्रेष्ठ, करुणासिन्धु श्रीबालमुकुन्दजी पहिले हुए, जिनके बडे प्रतापी और पुण्यकारी गोवर्धनदासजी हुए, उनके हरिभक्तोंके भक्त हरियशराय हुए, जो बडे महात्मा और मनुष्योंमें धर्म्मात्मा विख्यात हुए उनके महायोगेश्वर गोपालदासजी पुत्र हुए जो बडे विज्ञानी सब बातोंके जाननेवाले, महापुरुष, सम्पूर्ण गुणोंके सागर थे उनके सुत महाबुद्धिमान्, गुणज्ञ और शीलवान्, पंडितोंमें रत्न, महात्माओंके सेवक, सज्जनोंकी संगतिमें रहनेवाले, नीतिवान् पुरुषोत्तमदास हुए उनके महाधर्म्मात्मा मोतीरामजी हुए उनके पुत्र धर्म्मपरायण और जितेन्द्रिय कमलनयन हुये, उनके पुत्र गुणियोंमें अग्रगण्य श्रीघनश्यामदास हुए उनके पुत्र संसारमें विख्यात और महाप्रतापी सीतारामजी हुए, जिन्हान पट्परगंजमें बहुत बडा कुआ बनाया, जिसके ८० हाथके मुखका विस्तार देखकर यह जान पडता है कि, यह कोई बडा सरोवर है मुरादाबादमें इस कुएकी समान दूसरा कुवा नहीं है, यह एक अद्भुत और देखने योग्य वस्तु है, जिसकी आज प्रशंसा हो रही (यह चौडे कुवेके नामसे प्रसिद्ध) है उन सीतारामजीके महाबुद्धिमान् तीन पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ दिलेराम, मध्यम रामजीदास, जो बडे हरिभक्त और महायशस्वी थे और छोटे सत्यवान् आनन्दरूप[1] खुसालराय विख्यात हुए उनका पुत्र महानम्र मैं शालिग्राम

---

[1] आनन्दरूप जो खुशालरायनामसे विख्यातहुए :उनका वृत्तान्त यह है, संवत् २८६० में एक मीरखां नामक म्लेच्छ अपनी चतुरंगिनी सेनासहित मुरादाबादपर चढ आया, उस समय चौधरी खुसालराय (जो कि, बडे तेजस्वी और प्रतापवान् मुरादाबादमें मुख्य थे) उन्होंने अनेक प्रकारके भोजन सम्पूर्ण सेनाके वास्ते और अश्वादिकके लिये दाना, घास इत्यादि सामग्री पहुँचाई और नगरको लूटसे बचाया, उस समय मेरे पिता आनन्दरूपजीकी १९ वर्षकी अवस्था थी, उन्होंने भी बहुत कुछ मिष्टान्नआदि सामग्री मीरखांको भेंट की. उस समय मेरे पिताजीसे लोक कहने लगे कि, आपने भी खुसालकी समता करी तुम भी दूसरे खुसालरावहो उस दिनसे सब नगरनिवासी खुसालराय कहने लगे, इस कारण वह खुसालरायनामसे विख्यात हुए ।

हुआ मैंने वैद्योंको ३ सुख देनेवाला सर्व संसारके उपकारके लिये और शुभाशुभके जाननेके लिये यह ग्रंथ बनाया है शके १८१८ आषाढ सुदी पूर्णमासी शुक्रवारको यह "निघण्टुभूषण" समाप्त हुआ ॥

इति श्रीमाथुरवैस्यवंशोद्भवकविकुलकुमुदकलानिधिशालिग्रामवैस्यकृते
शालिग्रामनिघण्टुभूषणे उतरार्द्धे मिश्रवर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

शुभमस्तु ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

श्रीहरिः ।

अथ परिशिष्टभागः ।

मायाफलनामानि ।

मायाफलं माइफलं च माइका छिद्राफलं मायि च पंचनामकम्।

अर्थ-मायाफल, माइफल, माइका, छिद्राफल और मायि (मायुक, केशरञ्जन, शिशुभेषज)

संस्कृतभाषामें	मायाफल ।
हिन्दीभाषामें	माजूफल ।
वंगभाषामें	माइफल ।
गुजरातीभाषामें	मांयां ।
मराठीभाषामें	मायफळ ।
इंग्रेजीभाषामें	गाल्लनट् । Gallant
लैटिन्भाषामें	करकस् इन्फेक्टोरिया। Quarcus infectoria
फारसीभाषामें	माज़ुस् ।
अरबीभाषामें	आप्स समरतुल तुरफा ।

मायाफलगुणाः ।

मायुकं शीतलं रूक्षं कषायं लघु दीपनम् ।
विपाके कटुकं ग्राहि कफपित्तहरं परम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-माजूफल-शीतल, रूखा, कषेला, हलका, अग्निप्रदीपक पचनेमें चरपरा, मलरोधक और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

उष्णं मायफलं प्रोक्तं तीक्ष्णं शैथिल्यनाशकम् ।
प्रशस्तं वातहृत्प्रोक्तं पूर्वैर्नैघण्टकारकैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-माजूफल-गरम, तीक्ष्ण, शिथिलतानाशक, प्रशस्त और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

मायाफलं वातहरं कटूष्णकं शैथिल्यसंकोचककेशकार्ष्ण्यदम् ।
(रा० नि०)

अर्थ-माजूफल-वातनाशक, चरपरा, गरम, शिथिलताको संकुचित करनेवाला और केशोंको काला करनेवाला है ।

विवरण । माजूके वृक्ष वनोंमें होते हैं,आकृति सरूकी समान होती है, इसके फलोंमें मक्खीकी समान नीले रंगके कीडे घुसजाते हैं और उन फलोंका रस निकालकर फलोंको खुक्कल कर देते हैं उसमें अपने बच्चे रखते हैं, जिसप्रकार अण्डेमें जीव बढताहै उसीप्रकार इसमें जीव बढता है,पूर्ण होनेपर निकल जाताहै, इसकारण सब फल काणे होते हैं जो फल काणे नहीं होते उनमें मराहुआ जीव निकलता है । यह वास्तवमें फल नहीं होता किन्तु वृक्षमेंही फलसे दीखतेहैं इसकारण इनकी छाल और बीज नहीं होते ।

समुद्रफलनामानि ।

समुद्रनामप्रथमं पश्चात्फलमुदाहरेत् ।
समुद्रफलमित्यादि नाम वाच्यं भिषग्वरैः ॥

अर्थ-समुद्रफल, (अब्धिफल, उदधिफल, सिन्धुफल, अम्बुधिफल) इत्यादि ।

संस्कृतभाषामें	समुद्रफल ।
हिन्दीभाषामें	समुद्रफल ।
मराठीभाषामें	समुद्रफळ ।
गुजरातीभाषामें	समदरफल ।
कर्णाटकीभाषामें	समुद्रकरकाया ।
तैलिंगीभाषामें	व्यारंगचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	व्यारंगटोनिया एक्युटेंग्युला । Barringtonia Acutangula व्या० रेसिमोसा । B. racemosa

समुद्रफलगुणाः ।

फलं समुद्रस्य कटूष्णकारि वातापहं भूतनिरोधकारि ।त्रिदोषदावानलदोषहारि कफामयभ्रान्तिविरोधकारि । (रा०)

अर्थ-समुद्रफल-चरपरा, गरम, वातविनाशक, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोष, दावानलदोष, कफरोग, और भ्रान्तिको हरनेवालाहै ।

अन्यच्च ।

समुद्रस्य फलं चोष्णं तिक्तं चैव त्रिदोषजित्।वातं च भूतबाधां च कफं भ्रान्तिं शिरोरुजम्॥दोषं दावानलाख्यं च नाशयेदिति कीर्त्तितम्।जलेन घृष्ट्वा पीतं चेत्कृमिनाशकरं परम्॥(नि०र०)

अर्थ-समुंद्रफल-गरम, कडवा, त्रिदोषनाशक तथा वात, भूतबाधा, कफ, भ्रान्ति, शिरोरोग और दावानलाख्य दोषोंको दूर करे है। इसको जलमें घिसकर पीनेसे कृमिरोग दूर होता है।

विवरण। इसके वृक्ष कोंकणदेशकी ओर अधिकतासे होतेहैं, इस वृक्षपर डोरे आते हैं उन डोरोंमेंसे तीन धारवाले बडी इलायचीके समान फल निकलते हैं। उनको समुद्रफल कहते हैं।

ब्रह्मदण्डीनामानि।

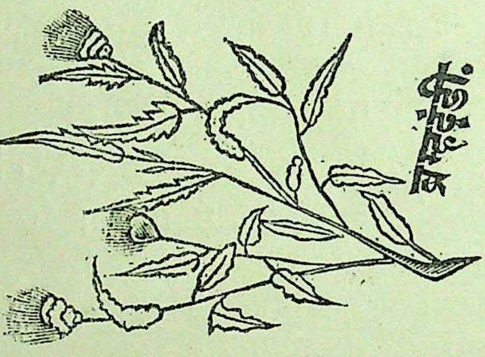

ब्रह्मदण्डयजदण्डी च कण्टपत्रफला च सा॥

अर्थ-ब्रह्मदण्डी, अजदण्डी, कण्टपत्रफला।

संस्कृतभाषामें	ब्रह्मदण्डी।
हिन्दीभाषामें	ब्रह्मदंडी, (ऊटकटारा)।
बंगभाषामें	छागलदाँडी, वामनदाँडी।
मराठीभाषामें	ब्रह्मदंडी।
गुजरातीभाषामें	ब्रह्मदंडी, तलकंटो।
कर्णाटकीभाषामें	ब्रह्मदंडी।
इंग्रेजीभाषामें	थिस्टल। Thistle
लैटिन्भाषामें	ट्रिकोलीपीग्लेबरारिना। Tricholapsis glaberrina

ब्रह्मदण्डीगुणाः।

ब्रह्मदंडी भवेदुष्णा तिक्ता कफविनाशनी।
वातरोगश्च शोफं च नाशयेदिति कीर्त्तिता॥ (नि० र०)

अर्थ-ब्रह्मदंडी-गरम, कडवी, कफनाशक तथा वातरोग और सूजनको दूर करेहै।

विवरण । इसका क्षुप होता है, इसके पत्ते और फलोंपर कांटे होते हैं यह प्रायः जंगलमें अधिकतासे होती है ।

रेवट्चीनीनामानि ।

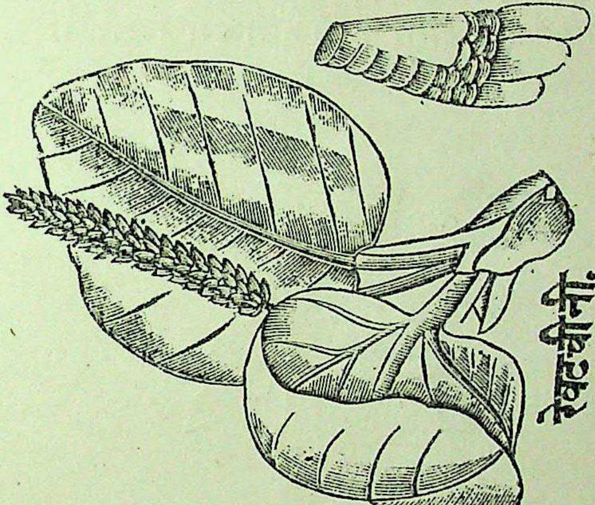

रेवट्चीनी च पीता च गंधिनी पीतमूलिका ।

अर्थ-रेवट्चीनी, पीता, गंधिनी, पीतिमूलिका (पीतमूली) ।

संस्कृतभाषामें	पीतमूली ।
हिन्दीभाषामें	रेवत (ट्) चीनी ।
वङ्गभाषामें	रउचीनी ।
मराठीभाषामें	रेवाचीनी ।
इंग्रजीभाषामें	रुबर्ब ।
लैटिन्भाषामें	रेइरेदिक्स ।
फारसीभाषामें	रेवन ।
अरबीभाषामें	रावन ।

रेवट्चीनीगुणाः ।

रेवट्चीनी कटुस्तिक्ता बल्या सा मृदुरेचनी ॥
दन्त्यजीर्णमतीसारं वह्निमांद्यमरोचकम् ॥
विट्संगं शीतपित्तञ्च दुष्टव्रणविरोहिणी ।

अर्थ-रेवट्चीनी-चरपरी, कडवी, बलकारक, मृदुरेची तथा अजीर्ण अतिसार, मंदाग्नि, अरुचि, विड्बंध, शीतपित्त और दुष्टव्रणको दूर करे है।

विवरण। रेवट्चीनीका क्षुप होताहै, जड अर्थात् कंद पीले रंगका होताहै इसीको रेवट्चीनी कहते हैं। इसके सत्तको उझारे देवन कहते हैं।

चाहनामानि।

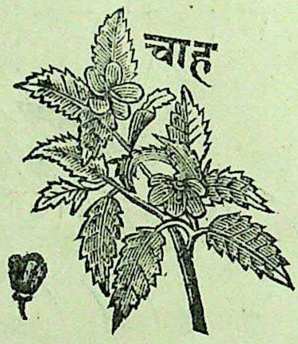

चाहं तु चविका चाहा द्वितीया तृष्णपत्रिका। जायते दक्षिणे देशे सा चाहेति प्रकीर्त्तिता॥ निर्गुण्डीपत्रवत्पत्रा परद्वीपादिहागता। अपरा तृणचाहेति तृणरूपा सुराष्ट्रजा॥

अर्थ-चाह, चविका, चाहा। यह नाम चाहके हैं। दूसरे प्रकारकी चाहके नाम उष्णपत्रिकादि है चाह दाक्षिणदेशमें उत्पन्न होती है, चाह इसनामसे सर्वत्र प्रसिद्ध है। इसके पत्ते निर्गुण्डीके पत्तोंकी समान होते हैं और यह दूसरे द्वीपसे आई है अर्थात् पहिले हिन्दुस्तानमें नहीं होतीथी। और एक तृणचाह होती है जिसको संस्कृतमें तृणचाह, तृणरूपा और सुराष्ट्रजा कहते हैं

संस्कृतभाषामें	चाह।
हिन्दीभाषामें	चाः।
वंगभाषामें	चाह।
मराठीभाषामें	चहा।
गुजरातीभाषामें	चा।
इंग्रेजीभाषामें	टी। Tea
लैटिन्भाषामें	थियाचीनेनसीस्। Theachinensis
फारसीभाषामें	चाखताई।

चाहगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णा तुवरा चाहा दीपनी पाचनी लघुः । कफपित्तहरी चैव किंचिद्वातप्रकोपिनी ॥ द्वितीया तृणरूपा या सुसुगंधा सुराष्ट्रजा । ज्वरघ्नी पाचनी हृद्या कफकासनिबर्हणी ॥

अर्थ-चाह-तीक्ष्ण, गरम, कषेली अग्निको दीपन करनेवाली पाचक, हलकी, कफपित्तनाशक और कुछेक वातको कुपित करनेवाली है । दूसरी तृणरूप, सुगंधित और सुराष्ट्रदेशमें जो उत्पन्न होती है वह तृणचाह ज्वरनाशक, पाचक, हृदयको हितकारी तथा कफ और खाँसी दूर करे है ।

विवरण । चाहा पहिले चीन आदि देशोंसे आतीथी किन्तु अब भारतके अनेक भागोंमें चाहकी खेती अधिकतासे होनेलगी है । हमारे भारतवासियोंको भी देखादेखी चाहका अधिक शौक बढने लगाहै ।

तामाखुनामानि ।

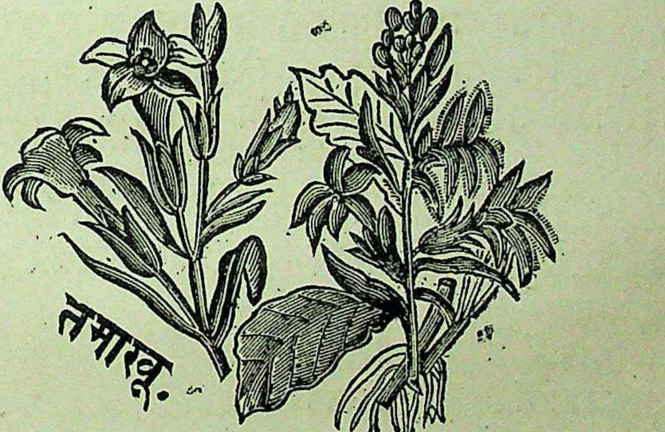

तमाखुः क्षारपत्रा च कृमिघ्नी धूम्रपत्रिका ।

अर्थ-तमाखु,क्षारपत्रा,कृमिघ्नी,धूम्रपत्रिका(वज्रभृङ्गी,ताम्रकुट्टिक)

संस्कृतभाषामें	क्षारपत्रा ।
हिन्दीभाषामें	तमाखु ।
वंगभाषामें	तमाकू ।
मराठीभाषामें	तम्बाखु ।
गुजरातीभाषामें	तमाकु ।

इंग्रेजीभाषामें	इंडियनटोबाको । Indian Tabacco
लैटिन्भाषामें	नैकोटिनाटोबाकं । Nicotiana tbbacum
फारसीभाषामें	तम्बाकु ।
अरबीभाषामें	तम्बाक ।

तमाखुगुणाः ।

तमाखुः पित्तलस्तीक्ष्णश्चोष्णो वस्तिविशोधनः । मदकृद्भ्रामकस्तिक्तो दृष्टिमांद्यकरः सरः ॥ वामकः कटुको रुच्यो वातस्यानुविलोमकः । कफकासश्वासवातकोष्ठवातकृमीञ्जयेत् ॥ दंतशुक्रदृष्टिरुजो लिक्षायूकादिकान्गदान् । वृश्चिकादिविष शोथं नाशयेदिति कीर्त्तितः ॥

अर्थ-तमाखु-पित्तकारक,तीक्ष्ण, गरम,बस्तिशोधक, मदकारक, भ्रमकारक, कडवा, दृष्टिको मन्द अर्थात कम करनेवाला, सारक, वमनकारक, चरपरा, रुचिकारक,वातानुलोमक तथा कफ, खाँसी, श्वास, वात, कोष्ठवात, कृमिरोग, दंतरोग, शुक्रदोष, दृष्टिरोग, लीख, जूँ, वृश्चिकआदिका विष और सूजनको दूर करैहै ।

विवरण । तमाखुके क्षुप सर्प देशोंमें होते हैं ।

ईषद्गोलनामानि ।

ईषद्गोलं स्निग्धबीजं श्लक्ष्णजीरश्च कीर्त्तितः ।

अर्थ-ईषद्गोल,स्निग्धबीज,श्लक्ष्णजीर(स्निग्धजीरक,श्लक्ष्णजीरक)

संस्कृतभाषामें	ईषद्गोल ।
हिन्दीभाषामें	ईसबगोल ।
मराठीभाषामें	इसबगोल ।
गुजरातीभाषामें	उथमुंजरुं ।
तैलङ्गीभाषामें	हस्पगुल ।
इंग्रेजीभाषामें	ईस्पगुलसीड । Isphagl Seed
लैटिनभाषामें	प्लैन्टेंगोईस्पगुल । Plantango isphagula
फारसीभाषामें	ईस्पग़ुल ।
अरबीभाषामें	बजरकतूना ।

ईषद्गोलगुणाः ।

ईषद्गोलं परं वृष्यं मधुरं ग्राहि शीतलम् ।

पिच्छिलं तुवरं किंचिद्वातकृत्कफपित्तहृत् ॥
रक्तातीसारास्रपित्तं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ।

अर्थ-ईसबगोल-अत्यन्तपुष्टिकारक, मधुर, मलरोधक, शीतल, पिच्छिल, कषेला, किंचित् वातकारक, कफपित्तविनाशक, रक्तातिसार और रक्तपित्तनाशक है ।

विवरण । ईसबगोल खेतोंमें बोयाजाताहै इसके क्षुप होतेहैं, ईसबगोल किसीप्राचीन ग्रंथमें नहीं लिखा केवल मोरेश्वरकृत वैद्यामृत और निघंटुसंग्रहमें लिखाहै मालुम होताहै कि, यह प्रथम यूनानी चिकित्साकी पुस्तकोंमेंसे अनुभव करके लिखागयाहै ।

सुधामूलीनामानि।

अमृता जीवनी जीवा सुधामूल्यमृतोद्भवा ।
प्राणदा प्राणभृत्प्रोक्ता वीरकंदा मता बुधैः ॥

अर्थ-अमृता, जीवनी, जीवा, सुधामूली, अमृतोद्भवा, प्राणदा, प्राणभृत् और वीरकन्दा ।

संस्कृतभाषाम	सुधामूली ।
हिन्दीभाषामें	सालममिश्री ।
मराठीभाषाम	सालंमिश्री ।

सुधामूलीगुणाः ।

दीपनी तु सुधामूली शुक्रकृद्बलवर्द्धनी। रक्तदोषहरी हृद्या कामसंजननी परा॥ रसायनी परं वृष्या वयःस्था पुष्टिदा मता ।
(आ० सं०)

अर्थ-सालममिश्री-अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, बलकारक, रक्तदोषनिवारक, हृदयको हितकारी, कामदेवको उत्पन्न करनेवाली, रसायन, अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक और पुष्टिकारकहै ।

विवरण । सालममिश्री हिमालय और तिब्बत आदि पर्वतोंपर उत्पन्न होती है, कन्द सफेदरङ्गका होता है । दूसरी सालममिश्री काबुल-बलख बुखारा आदि देशोंसे आती है। और अनेक धूर्त्त आलू, प्याज, लहुन, अरबी आदि कन्दोंके द्वारा कृत्रिम सालममिश्री बनाकर बेचते हैं ।

रक्तमरिचनामानि ।

कटुवीरोज्ज्वला तीक्ष्णा तीव्रशक्त्यजडे तथा ॥

अर्थ-कटुवीरा, उज्ज्वला, तीक्ष्णा, तीव्रशक्ति, अजडा (कुमरिच, रक्तमरिच)

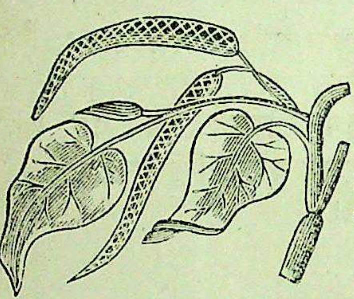
पीपलझाल (क)

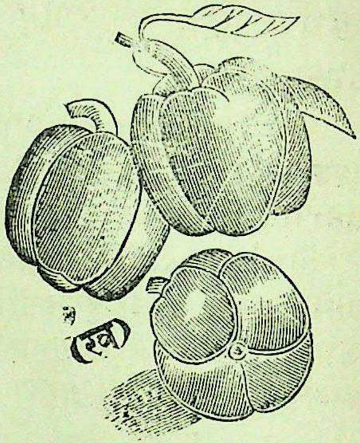
(ख)

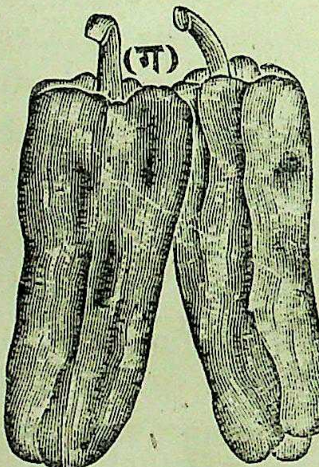
(ग)

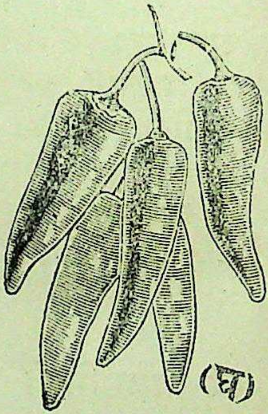
(घ)

संस्कृतभाषामें	कटुवीरा ।
हिन्दीभाषामें	लालमिरच ।
वंगभाषामें	लंकामरिच, झाल ।
मराठीभाषामें	लालमिरची ।
औत्कलीभाषामें	नोकोमरिच ।
इंग्रेजीभाषामें	कायन्नपेपर ।
लैटिन्भाषामें	काप्सिवाक्से ।
फारसीभाषामें	फिल्फिलेसुर्ख ।

कटुवीरागुणाः ।

कटुवीराग्निजननी बलासघ्नी च दाहिनी। हन्त्यजीर्णं विषूचीश्च व्रणं क्लिन्नं सुदारुणम् । तन्द्रां मोहं प्रलापञ्च स्वरभेदमरोचकम् ॥

अर्थ–लालमिरच–अग्निप्रदीपक, बलासनाशक, दाहजनक, तथा अजीर्ण, विषूचिका, दारुण और क्लिन्न व्रण, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, स्वरभेद और अरुचिको दूर करेहै ।

विवरण । लालमरिचके क्षुप मकोयके क्षुपके समान होते हैं, फूल सुफेद रंगके आते हैं फल अपक्व अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले होकर लाल होजाते हैं । मिरच छोटी बडी देशी, देशान्तरीय अनेक प्रकारकी होती है ।

वनकुलत्थनामानि ।

कुलत्था दृक्प्रसादा च प्रोक्तारण्यकुलत्थिका ।
कुलानी लोचनहिता चक्षुष्या कुम्भकारिका ॥

अर्थ–कुलत्था, दृक्प्रसादा, अरण्यकुलत्थिका, कुलानी, लोचनहिता, चक्षुष्या, कुम्भकारिणी (कुलत्थिका, कुलमाष, कुरुबिल्वक काननोत्था, चिपिटा)

संस्कृतभाषामें	कुलत्था ।
हिन्दीभाषामें	वनकुलथी, चाक्षु ।
वंगभाषामें	वनकुलथी ।
मराठीभाषामें	रानकुळीथ, रानहुलगे ।
गुजरातीभाषामें	चमेडच, आंख्यतुभरण ।
कर्णाटकीभाषामें	कएणकुटकीनबीज ।
इंग्रेजीभाषामें	फोरलीव्डकेशिया । Four leved cassia
लैटिन्भाषामें	केशियाएबसस् । Cassiaasbus
फारसीभाषामें	चश्मक् ।
अरबीभाषामें	चाश्मिझज् तश्मीज ।

अस्य गुणाः ।

वन्योद्भवः कुलित्थस्तु कटुस्तिक्तश्च शीतलः । व्रणरोपणकारी च चक्षुष्योऽर्शविनाशकः ॥ कफशूलविषस्फोटकंडूहिक्काविनाशकः । नेत्ररोगमलस्तम्भमाध्मानं च विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-चाक्षु (कुलित्थ)-चरपरी, कडवी, शीतल, व्रणको भरनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, बवासीरको दूर करनेवाली तथा कफ, शूल, विष, स्फोट, कण्डू, हिक्का, नेत्ररोग, मलस्तम्भ और आध्मान रोगको हरनेवालीहै।

विवरण। वनकुलथीके क्षुप वनमें होतेहैं। फूल कोयलके समान लगतेहैं इसके ऊपर फली आती हैं दूसरे प्रकारकी वनकुलथीका क्षुप छत्तासा होताहै।

माहाराष्ट्रीनामानि।

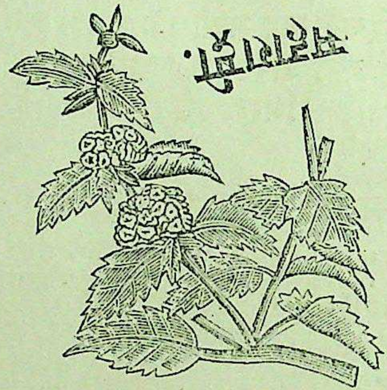

महाराष्ट्र्यां च राष्ट्री च तीक्ष्णा मरहट्टिका मता॥

अर्थ-महाराष्ट्री, राष्ट्री, तीक्ष्णा, मरहट्टिका।

संस्कृतभाषामें	महाराष्ट्री।
हिन्दीभाषामें	मरेठी।
मराठीभाषामें	मराठी।
गुजराथीभाषामें	मरेठी।
इंग्रेजीभाषामें	पेनिरोयल Pennyroyal
लैटिन्भाषामें	मेन्थाप्युलेजियं MenthaPulegium
फारसीभाषामें	बाबुनेगाउ।
अरबीभाषामें	उक्हीवान।

महाराष्ट्रीगुणाः।

महाराष्ट्री कटुस्तीक्ष्णासोष्णा वातकफार्त्तिहृत्॥ (शो० नि०)

अर्थ-मरेठी-चरपरी, तीक्ष्ण, गरम तथा वात और कफकी पीडाको दूर करेहै।

विवरण। मरेठीके बडे २ क्षुप होतेहैं, पत्ते तुलसीके समान और इसमें पीले तथा लाल रंगके डोरे लगतेहैं यह अकरकरेके समान होतीहै।

कीटमारीनामानि ।

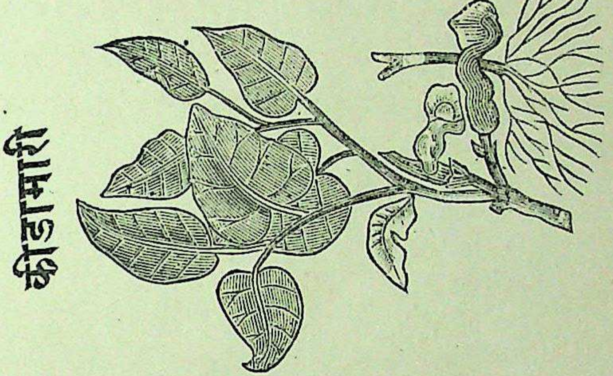

कीटारिः कीटमारी च भृंगी कीटकहा तथा ॥

अर्थ-कीटारि, कीटमारी, भृंगी, कीटकहा ।

संस्कृतभाषामें	कीटमारी ।
हिन्दीभाषामें	कीडामारी ।
मराठीभाषामें	किडामार ।
गुजरातीभाषामें	कीडामारी ।
तैलिङ्गीभाषामें	गीरीदागुटापा ।
इंग्रेजीभाषामें	बेक्टीएटेडबर्थवर्ट Bracteab Birthwort
लैटिन्भाषामें	एरिष्टोलोचियाब्रेकटीका Aristoloehia bracteata

अस्या गुणाः ।

वातश्लेष्मज्वरहरा संध्यस्थीनि प्रसारिणी ॥

अर्थ-कीडामारी-वातकफज्वरनाशक, तथा संधि और अस्थियोंको फैलानेवालीहै ।

विवरण । कीटमारीके क्षुप होतेहैं विशेष करके खेतोंमें उत्पन्न होजातीहै, इसपर डोरे आते हैं वह डोरे कच्ची अवस्थामें हरे रंग और रेखायुक्त होते हैं । पकनेपर उनमेंसे अपने आप फटकर काले रंगके बीज निकलतेहैं ।

सर्पदंष्ट्रानामानि ।

सर्पदंष्ट्रा पीतपुष्पा गुच्छपत्रा विषापहा ॥

अर्थ-सर्पदंष्ट्रा, पीतपुष्पा, गुच्छपत्रा, विषापहा ।

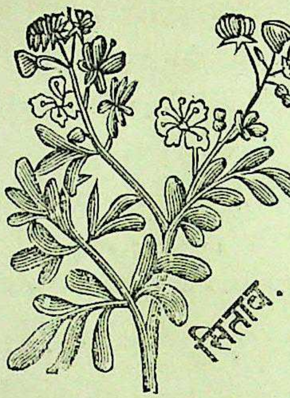

संस्कृतभाषामें	सर्पदंष्ट्रा ।
हिन्दीभाषामें	सिताव ।
मराठीभाषामें	सताप ।
गुजरातीभाषामें	सताब ।
इंग्रेजीभाषामें	कोमनरु Commonrne
लैटिन्भाषाम	रुटाग्रेवियोलेन्स Ruta Graveeolans
फारसीभाषामें	इस्पंद ।
अरबीभाषामें	हरमल ।

सर्पदंष्ट्रागुणाः ।

सर्पदंष्ट्रा सरा चोष्णा तिक्ता कफविनाशिनी ।
वातनाशकरी प्रोक्ता विचारज्ञैश्चिकित्सकैः ॥ (नि०र०)

अर्थ-सिताव-सारक, गरम, कडवी, कफनाशक और वातको हरनेवाली है ।

विवरण । सितावके क्षुप बाग, पुष्पवाटिका और घरगमलोंमें मनुष्य लगालेते हैं । सिवाय निघण्टुरत्नाकरके और किसी प्राचीन ग्रन्थमें सिताव नहीं है ।

उष्ट्रकंटनामानि ।

उष्ट्रकंटोथ कण्टालुः करमादन एव सः ॥

अर्थ-उष्ट्रकण्ट, कण्टालु, करमादन (उत्कंटक, कंटफल, शृगाल, शुनकाशन, तीक्ष्णाग्र, वृत्तगुच्छ, मुखदंतरुजापह, उत्कटोत्कट)

संस्कृतभाषामें	उष्ट्रकंट ।

हिन्दीभाषामें	ऊटकटीरा ।
मराठीभाषामें	उटकटारा, उतांटी ।
गुजरातीभाषामें	उत्कंटो, शूलियो ।
इंग्रेजीभाषामें	थिस्टल । Thistle
लैटिन्भाषामें	एकिनोप्स एकीनटस् । Echinops echinatus

अस्या गुणाः ।

उत्कण्टकः कटुस्तिक्तः कफवातहरो लघुः ।
तन्मूलपानतः स्त्रीणां शीघ्रप्रसवकारकः ॥ (शो॰नि॰)

अर्थ-ऊँटकटीरा-चरपरा, कडवा, कफवातनाशक,हलका,इसकी जडको जलमें पीसकर पीनेसे स्त्रियोंके शीघ्रप्रसव होजाता है ।

अन्यच्च ।

उत्कंटा रुचिदा चोष्णा तिक्ता वृष्याप्युदाहृता । मूत्रकृच्छ्रं पित्तवातं मेहं तृष्णां च हृद्रुजम् ॥ विस्फोटकं नाशयति बीजमस्यास्तुशीतलम् ।वृष्यं तृप्तिपरंचैव मधुरंचप्रकीर्त्तितम्॥
(नि॰ र॰)

अर्थ-ऊंटकटीरा-रुचिकारक,गरम,कडवा,वीर्य्यवर्द्धक तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तवात, प्रमेह, तृषा, हृदयरोग और विस्फोटकको दूर करे है । इसके बीज-शीतल,वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक और मधुर हैं ।

विवरण। ऊंटकटेरीके क्षुप होते हैं,इसके पत्ते और फलोंमें कांटे होते हैं । इसकी डालियोंमें तीक्ष्ण अणिवाले कांटेयुक्त डोरे लगते हैं । हमारे देशमें कोई कोई अजान वैद्य सत्यानासी कटेरीकोही ऊंटकटीरा गाते ह ।

नखरञ्जकनामानि।

तिमिरः कोकदंता च द्विवृन्तो नखरंजकः ।

अर्थ-तिमिर, कोकदंता, द्विवृन्त, नखरंजक (मेंदिका,रागगर्भा, रंजका, नखरंजिनी, सुगन्धपुष्पा, रागांगी, यवनेष्टा) ।

संस्कृतभाषामें	नखरंजक ।
हिंदीभाषामें	मेहदी ।
वंगभाषामें	मेदी ।
मराठीभाषामें	मेंदी ।
गुजरातीभाषामें	मेदी ।

तैलिङ्गीभाषामें	गोरंटम् ।
इंग्रेजीभाषामें	हेना । Henna
लैटिन्भाषामें	लॉङ्झोनिया आल्बा । Lansonia alba
फारसीभाषामें	हिना ।
अरबीभाषामें	हिन्नाअकान् काफलयुन ।

अस्या गुणाः ।

रक्तरंगा दाहहंत्री वान्तिकृच्छ्लेष्मकुष्ठहा ॥
बीजमस्या ग्राहकं तु शोषकं च प्रकीर्त्तितम् ॥
भूतग्रहाणां दोषं च ज्वरं चैव विनाशयेत् ।

अर्थ-मेंदी-दाहनाशक, वमनकारक, कफ और कोढको दूर करे है । इसके बीज-मलरोधक, शोषक तथा भूतबाधा, ग्रहदोष और ज्वरको दूर करे हैं ।

विवरण । मेहदीके वृक्ष बागोंमें बोएजाते हैं, पत्ते छोटे छोटे होते हैं, मेहदीके फूल मौरकी समान, छोटे सफेदरंगके और सुगन्धियुक्त होतेहैं इसके पत्तोंकोपीसकर हाथपांवपर लगानेसे लाल होजाते हैं तथा गरमी और हाथपांवादिकी दाह दूर होजाती है । कितनेक देशी वैद्य इसके बीजोंको रेणुका कहते हैं ।

अन्धपुष्पीनामानि ।

अन्धपुष्पी च रोमालुर्गोलोमी दार्विकापि च ।
अधोमुखा धेनुजिह्वा अधःपुष्पी च सप्तधा ॥

अर्थ-अन्धपुष्पी, रोमालु, गोलोमी, दार्विका, अधोमुखा, धेनुजिह्वा, अधःपुष्पी (अवाक्पुष्पी, सुरसा, गन्धपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	अन्धपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	अन्धाहुली, औंधाहुली ।
वंगभाषामें	चोरहुली ।
भाषामें	पाथरी ।
गुजरातीभाषामें	उन्धाफुली ।
लेटिन्भाषामें	ट्राईकोडेस्माइंडिकं। Trichodesma indicum

अस्या गुणाः ।

अन्धपुष्पी च चक्षुष्या गूढगर्भापकर्षिणी ॥

अर्थ–अंधाहुली–नेत्रोंको हितकारी और गूढगर्भको अपकर्षण करनेवाली है ।

विवरण–अंधाहुलीका क्षुप होता है उसकी डंडी कुछ लालीलिये होती है, पत्ते लम्बे गोल और रोमयुक्त होते हैं, फल असमानी रंगका और नीचेको रहता है ।

दण्डोत्पलनामानि ।

दण्डोत्पला सहदेवा विषमज्वरनाशिनी । दण्डोत्पला त्रिधा प्रोक्ता पुष्पवर्णप्रभेदतः । गोवन्दनी देवसहा पीतदंडोत्पलं स्मृतम् । रक्तदण्डोत्पला प्राहुर्विश्वदेवा तथापरा ॥ श्वेतदंडोत्पलं प्रोक्तं दंडोत्पला च देविका ।

अर्थ–दण्डोत्पला, सहदेवा और विषमज्वरनाशिनी यह साधारण दण्डोत्पलके नाम हैं । दण्डोत्पल पुष्पोंके भेदसे तीनप्रकारका है । पीत, रक्त और श्वेत, गोवन्दनी, देवसहा, (गंधवल्ली, सहदेवी, सहा) यह पीलेदण्डोत्पलके नाम हैं । विश्वदेवा, (सहदेवा) यह लालदण्डोत्पलके नाम हैं । दण्डोत्पला, देविका यह सफेद दंडोत्पलके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	सहदेवा, दण्डोत्पला ।
हिन्दभिाषामें	दण्डोत्पल तीनप्रकारका ।
वंगभाषामें	डानिपोलाडानकुनी, दंडकलस ।
मराठीभाषामें	ओसारी ।
गुजरातीभाषामें	शेदरडी । (Ageratnm (Conyzoides)
लैटिन्भाषामें	वरनोनियासाई निरिया । Vernonia Cineria

विधदण्डोत्पलगुणाः ।

दण्डोत्पलं क्षयश्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ॥

अर्थ–तीनों प्रकारके दंडोत्पल–क्षय, श्वास और खाँसीको दूर करे हैं तथा अग्निको दीपन करे हैं ।

विवरण । दण्डोत्पलके क्षुप प्रायः अनूप देशमें होते हैं, फूल सफेद, पीला, लाल और किसी किसीपै कालेरंगकाभी आताहै,

पत्ते रानतुलसीकी समान होते हैं, दण्डोत्पलकी टोपी बनाकर शिरपै धारण करनेसे ज्वर दूर होताहै ।

रुदन्तीनामानि ।

स्याद्रुदंती स्रवत्तोया संजीवन्यमृतस्रवा ।
रोमांचिका महामांसी चणपत्री मधुस्रवा ॥

अर्थ-रुदंती, स्रवत्तोया, संजीवनी, अमृतस्रवा, रोमाञ्चिका महामांसी चणपत्री, मधुस्रवा (सुधास्रवा)

संस्कृतभाषामें	रुदन्ती ।
हिन्दीभाषामें	लाणा (पु) रुदन्ती, रुद्रवन्ती ।
मराठीभाषामें	रुदन्ती ।
गुजरातीभाषामें	पलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	अलुगुणि ।
लैटिन्भाषामें	क्रेसाक्रेटिका । Cressa Cretica

रुदन्तीगुणाः ।

रुदन्ती कटुतिक्तोष्णा क्षयक्रिमिविनाशिनी ।
रक्तपित्तकफश्वासमेहहारी रसायनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रुदन्ती-चरपरी, कडवी, गरम, रसायन तथा क्षय, क्रिमि, रक्तपित्त, कफ, श्वास और प्रमेहनाशक है ।

अन्यच्च ।

रुदन्ती वह्निकृद्वृष्या पित्तघ्नी च रसायनी॥ (रा० व०)

अर्थ-रुदन्ती-अग्निजनक, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनाशक और रसायन है ।

विवरण । रुदन्तीके बहुत छोटे २ क्षुप होते हैं, यह क्षुप प्रायः खारी भूमि और जलके समीप उत्पन्न होते ह, पृथ्वीपर फैल जाते हैं, पत्ते चनोंके पत्तोंकी समान होते हैं इसपै ओस पडनेसे जलके बिन्दु टपकते हैं उन जलके बिन्दुओंसे नीचेकी पृथ्वी भीगी रहती है इसकारण इसको रुदंती कहते हैं ।

चिरपोटानामानि ।

चिरपोटा दीर्घपत्रा कुंतली तिक्तका मता ॥

अर्थ-चिरपोटा, दीर्घपत्रा, कुंतली, तिक्तका (पपोंटी, रक्तहंत्री फलाम्ला, ज्वरकारिणी)

संस्कृतभाषामें	चिरपोटा ।
हिंदीभाषाम	षनसोखा, पटकोना, चिरपोटन (प०)
मराठीभाषामें	चिरपोटाणी ।
गुजराथीभाषामें	पर्पोटी ।
लेटिन्भाषामें	फाईसेलिस् ।मनामा Physalis Minima P.Indiea
अरबीभाषामें	काकनुज ।
अरबीभाषामें	हवुल्लबुहल्ल्याहुदहबअल्काकद ।

अस्या गुणाः ।

चिरपोटा हिमा रूक्षा भेदिनी श्वासकासजित् ।

अर्थ-षनसोखा-शीतल, रूखा, भेदक तथा श्वास और खाँसीको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

पर्पोटी पानलेपाभ्यां रक्तविद्राविणी ध्रुवम् ।
तस्याः पक्कफलं पित्तश्लेष्मलं ज्वरकारि च ॥

अर्थ-चिरपोटेके पत्तोंको पीसकर लेप करनेसे रक्तद्रावण होता है इसके पक्के फल पित्त, कफ और ज्वरको उत्पन्न करनेवाले हैं ।

विवरण । इसके क्षुप होते हैं, इसमें बडे २ बोदने लगते हैं उनके भीतर सफेद रंगके फल होतेहैं वह फल कच्चा अवस्थामें कडवे और पकनेपर खट्टे तथा मीठे होजाते हैं ।

कुरण्डकानामानि ।

कुरण्डका क्षेत्रभूषा कुरण्टी क्षेत्रनाशिनी ॥

अर्थ-कुराण्डिका, क्षेत्रभूषा, कुरंटी, क्षेत्रनाशिनी (विकट, सकुरण्ड)

संस्कृतभाषामें	कुरण्डिका ।
हिन्दीभाषामें	कुरंडवृक्ष (दादमारि० दे०)
मराठीभाषामें	लघुकुरंडिका, थोरकुराण्डिका ।
गुजरातभाषाम	नानोआगियो, मोटोआगियो ।
लैटिन्भाषामें	एमानियावेसिकेटोरिया । Ammania Vesieatoria

कुरण्डकागुणाः ।

कुरण्डका सरा रुच्या गुर्वी चाग्निप्रदीपनी । नाशिनी कफवातानां वैद्यैस्तु परिकीर्त्तिता ॥ बृहत्कुरंडिका शीता पाके मा-

ध्वी कटुः स्मृता । तिक्ता क्षारा च रूक्षा च सरा वृष्या जडा मता ॥ वातला पित्तला वस्तौ वातकारिकफापहा । रक्तदोषं मूत्रकृच्छ्रं नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-कुरंड-सारक, रुचिकारक, भारी, अग्निप्रदीपक तथा कफ और वातको दूर करे है । बडा कुरंड-शीतल,पचनेमें मधुर, चरपरा, कडवा, क्षार, रूखा, सारक, वीर्य्यवर्द्धक, जड, वातकारक, पित्तजनक, वस्तिमें वातकरनेवाला तथा कफ, रुधिरविकार और मूत्रकृच्छ्रको दूर करे है ।

विवरण । कुरण्ड प्रायः घरबाहर खेतबागोंमें अधिकतासे होताहै फूल सुफेदरंगका आता है ।

कुम्भिकानामानि ।

कुम्भिका वारिपर्णी च वारिमूली खमूलिका ।
आकाशमूली कुतृणं कुमुदा जलवल्कलम् ।

अर्थ-कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमूली, खमूलिका,आकाशमूली, कुतृण, कुमुदा, जलवल्कल (श्वेतपर्णा, अशकुम्भी, पानीयपृष्ठज, कुम्भी,वारिमूली,खली,पर्णी,पृश्नी,वारिकर्णिका,दलाढक,वारिकर्णि

संस्कृतभाषामें	कुम्भिका, वारिपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	जलकुम्भी, कुम्भी (काई) ।
वंगभाषामें	पाना, टोकापाना ।
मराठीभाषामें	जलमंडवी ।
गुजरातीभाषामें	जलकुम्भी ।
कर्णाटकीभाषामें	हांवलं ।
तैलिङ्गीभाषामें	तुटिकूर ।

कुम्भिकागुणाः ।

वारिपर्णी हिमा तिक्ता लघ्वी स्वाद्वी सरा कटुः ।
दोषत्रयहरी रूक्षा शोणितज्वरशोषकृत् ॥

अर्थ-जलकुम्भी-शीतल, कडवी, हलकी,स्वादिष्ठ, सारक, चरपरी, त्रिदोषनाशक रूखी तथा रुधिरविकार और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण।जलकुम्भी अर्थात् काई प्रायः बडे छोटे सब तालाबोंमें जलके ऊपर हरे पीले रंगकी पडी होती है ।

शैवालनामानि ।

शैवालं जलनीली स्याच्छैवलं जलजं च तत्

अर्थ-शैवाल, जलनीली; शैवल, जलज, (शेषान, शेवाल, शिवल, शेपाल, जलनीलिका, जलनील, अम्बुचामर, जलकुन्तल, मंजुल,सैवाल,शेबाल,वारिचामर,सलिलकुण्डल,हठपर्णी,अम्बुताल, जलशूक, जलाश्वन, अरक, जलकेश, कावार, जलपृष्ठजा)

संस्कृतभाषामें	शैवाल ।
हिन्दीभाषावें	सिवार ।
वंगभाषामें	शेओयाला ।
मराठीभाषामें	शेवाळ ।
गुजरातीभाषामें	शेवाल, लील ।
तैलिङ्गीभाषामें	नाचु ।
कर्णाटकीभाषामें	हांवळ ।
लैटिन्भाषामें	सिरैटोफिल्लमसबमर्सम । Serratophyllum Submersum
फारसीभाषामें	पशमेंदरा, जामेंगूक, जबाल ।
अरबीभाषामें	तुहलब ।

शैवालगुणाः ।

शैवालं शीतलं स्निग्धं सन्तापव्रणनाशनम् ॥

अर्थ-सिवार-शीतल,स्निग्ध तथा सन्ताप और व्रणको दूर करेहै।

अन्यच्च ।

शैवालः शीतलः स्निग्धस्तिक्तः स्वादुर्लघुः कटुः ।
सरः सन्तापव्रणजिज्ज्वरपित्तत्रिदोषहा ।
रक्तदोषस्य शमनो विज्ञेयश्च चिकित्सकैः ॥

अर्थ-सिवार-शीतल, स्निग्ध,कडवी, स्वादिष्ठ, हलकी,नमकीन, सारक, तथा सन्ताप, व्रण, ज्वर, पित्त, त्रिदोष और रुधिरके विकारोंको दूर करे है ।

विवरण। सिवारभी जलके ऊपर वालोंसी आच्छादित रहतीहै । यह कई प्रकारकी होतीहै सिवार इस देशमें, चीनी साफकरनेमें विशेष करके काममें लीजातीहै ।

अत्यम्लपर्णीनामानि ।

अत्यम्लपर्णी तीक्ष्णा च कण्डूरा वह्निसूरणा।

वल्ली करवडादिश्च वनस्थारण्यवासिनी ॥

अर्थ-अत्यम्लपर्णी, तीक्ष्णा, कण्डूरा, बल्लिसूरणा, करवडवल्ली, वनस्था, अरण्यवासिनी ।

संस्कृतभाषामें	अत्यम्लपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	रामचना (खटुआ)
मराठीभाषामें	कडमडवल्ली, आबटवेल ।
गुजरातीभाषामें	खाट खटूबवलय ।
कर्णाटकीभाषामें	हेग्गोली ।
लैटिन्भाषामें	वाईटीस पेंडाफाईला Vitis pentaphylla

अस्या गुणाः ।

अत्यम्लपर्णी तीक्ष्णाम्ला प्लीहशूलविनाशिनी
वातहृद्दीपनी रुच्या गुल्मश्लेष्मामयापहा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अत्यम्लपर्णी-तीक्ष्ण, अम्ल, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिकारक, तथा प्लीहा, शूल, वात, गुल्म और कफ इन रोगोंको दूर करै है ।

विवरण-बडी बेल होतीहै, पत्ते जिमीकंदकी समान एक डंडीमें पाँच पाँच होते हैं, फल करोंदेकी समान झुमकोंमें लगते हैं इस बेलके पत्ते,डंडी सब खट्टी होतीहै ।

मखान्ननामानि ।

मखान्नं पद्मबीजाभं पानीयफलमित्यपि ॥

अर्थ-मखान्न, पद्मबीजाभ, पानीयफल ।

संस्कृतभाषामें	मखान्न ।
हिंदीभाषामें	मखाना ।
वंगभाषामें	मखाना ।
मराठीभाषामें	मखाणे ।
गुजरातीभाषामें	मखाना ।
दे०	गीलागिच ।
लैटिनभाषामें	युर्यलोफेरोक्स । Euryeli ferox

मखान्नगुणाः ।

मखान्नं पद्मबीजस्य गुणैस्तुल्यं विनिर्दिशेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मखानेके गुण कमलगट्टेकी समान हैं ।

विवरण-मखाने कमलगट्टोंको भूनकर बनाये जातेहैं इस कारण इसक गुण कमलगट्टेकी समान जानने ।

मर्यादवल्लीनामानि ।

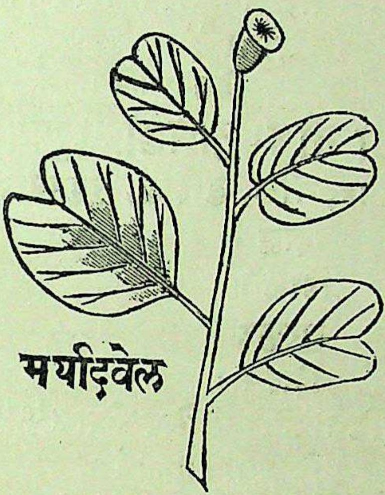

मर्य्यादा मारवल्ली च सागरा मन्मथापि च ।
युग्मपत्रा रक्तपुष्पा तथा सागरमेखला ॥

अर्थ-मर्य्यादा, मारवल्ली, सागरा, मन्मथा, युग्मपत्रा, रक्तपुष्पा, सागरमेखला ।

संस्कृतभाषामें	मर्य्यादालता ।
हिन्दीभाषामें	मरजादवेल ।
दक्षिणीभाषामें	दोपाचीलता ।
वंगभाषामें	छगलंकुरी (ढा०) ।
कोकणीभाषामें	मर्य्यादावेल ।
गुजरातीभाषामें	मरजादवेलय ।
लैटिनभाषामें	आईपोमिया बिलोब । Ipomoea biloha

अस्य गुणाः ।

मर्य्यादवल्लिका शीता ग्राहिणी सारका गुरुः ।
पाककाले चोषणा स्याद्वातला गर्भकर्षिणी ॥
विषूचिकां च शूलं च वान्तिं चामं च नाशयेत ।(नि०र०)

अर्थ-मरजादवेल-शीतल, मलरोधक, सारक, भारी, पचनेमें चरपरी, वातकारक, गर्भको अपकर्षण करनेवाली तथा विषूचिका, शूल, वमन, और आमको दूर करे है ।

विवरण । मरयादवेल प्रायः अनूपदेशमें अर्थात् नदीके निकट अधिकतासे होतीहै, इसके पत्ते अश्मन्तकवृक्षकी समान दो दो एकत्र होते हैं, फूल लाल होता है ।

झिल्लनामानि ।

झिल्लो रक्तापहो नीलः सुझिल्लो मृदुपत्रकः ॥

अर्थ-झिल्ल, रक्तापह, नील, सुझिल्ल, मृदुपत्रक ।

संस्कृतभाषामें	झिल्ल ।
हिन्दीभाषामें	झिल ।
मराठीभाषामें	सुरकुट ।
गुजरातीभाषामें	झिल्य ।
लैटिन्भाषामें	इंडिगोफोरा पोसिफलोरा । Indigofora pansiflora

अस्य गुणाः ।

झिल्लो वातास्रकं हन्ति शीतवीर्य्योऽग्निदीपनः ।

अर्थ-झिल्ल वातरक्तको दूर करनेवाला, शीतल और अग्निको दीपन करनेवाला है ।

विवरण-झिलका क्षुप होता है, इसकी छाल लाल रंगकी होती है, पत्ते बहुत छोटे होते हैं, फूल लाल होता है, फली छोटी होतीहै ।

एकवीरनामानि ।

एकवीरो महावीरः सकृद्वीरः सुवीरकः ।
एकादिवीर्य्यपर्य्यायो वीरश्च षड्विधाह्वयः ॥

अर्थ-एकवीर, महावीर, सकृद्वीर, सुवीरक, एकादिवीर्य्यपर्याय, वीर ।

संस्कृतभाषामें	एकवीर ।
हिन्दीभाषामें	एकवीर ।
मराठीभाषामें	असाणा ।
गुजरातीभाषामें	एकलकंटो ।
कर्णाटकीभाषामें	गंडुविक्क ।
लैटिन्भाषामें	ब्रायोडेलियामोण्टेना । Briodelia montana

एकवीरगुणाः।

एकवीरा स्मृता तिक्ता चात्युष्णा वातहा मता।
पक्षाघातं पृष्ठकटीशूलं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-एकवीर वृक्ष- कडवा, अत्यन्त गरम, वातनाशक तथा पक्षाघात, पृष्ठ और कटिशूलको दूर करेहै।

विवरण-एकवीरके जंगलमें बडे बडे वृक्ष होते हैं, इसमें बडा, मोटा और अलग २ एक एक काँटा होताहै, पत्ते पाखरकी समान होते हैं, फल छोटे छोटे और झुमखोंमें लगते हैं।

कंथारीनामानि।

कंथारी कंथरी कंथा दुर्धर्षा तीक्ष्णकण्टका।
तीक्ष्णगंधा क्रूरगंधा दुःप्रवेशाष्टधाभिधा ॥

अर्थ-कंथारी, कंथरी, कंथा, दुर्धर्षा, तीक्ष्णकण्टका, तीक्ष्णगंधा, क्रूरगंधा, दुःप्रवेशा (अहिंस्रा, जालि, गृध्रनखी, कंथारिका, क्रूरकर्मा, वक्रकंटकी, कन्या, कपालकुलिका, अम्लफला, गुच्छगुल्मिका।

संस्कृतभाषामें	कंथारी।
हिन्दीभाषामें	कंथारी, कंतार।
मराठीभाषामें	कंथार।
गुजरातीभाषामें	कंथार।
कर्णाटकीभाषामें	कांतरु।
लैटिनभाषामें	कॅपेरिस सिपिएरिया।

अस्या गुणाः।

कंथारी दीपनी रुच्या कटूष्णा तिक्तका मता।
रक्तदोषं कफं वातं ग्रन्थिरोगं च नाशयेत् ॥
स्नायुरोगं च शोफं च नाशयेदिति:कीर्त्तिता। (नि० र०)

अर्थ-कंथारी-अग्निदीपक, रुचिकारक, चरपरी, गरम, कडवी तथा रुधिरविकार, कफ, वात, ग्रन्थिरोग, स्नायुरोग और सूजनको दूर करे है।

विवरण। कंथारी तीन चार जातिकी होतीहै. एक हरी डंडीकी होतीहै उसके पत्ते गोल होतेहैं, फूल सुफेद रंगके और सुफेद केशर युक्त होतेहैं, फल छोटे छोटे चनेके बराबर होते हैं।

आरिनामानि ।

आरिः संदानिकोद्दाला ज्ञेया खदिरपत्रिका ॥

अर्थ-आरि, संदानिका, उद्दाला, और खदिरपत्रिका (बल्लिखदिर, स्वादिखल्लरी) ।

संस्कृतभाषामें	आरि ।
हिन्दीभाषामें	आरी खैरबेल ।
मराठीभाषामें	आरई बेल्याखेर आराटी ।
कर्णाटकीभाषामें	सीगुरी ।
गुजरातीभाषामें	खेरवेल्य ।
लैटिन्भाषामें	एकेश्यापिनेटा । Acacia penata

अस्या गुणाः ।

आरिः कषायकटुका तिक्ता रक्तार्तिपित्तजित् ।
त्रिदोषघ्नी रसे पाके चाम्लोष्णानिलकासहा॥(रा०नि०)

अर्थ-आरी-कषेली, चरपरी, कडवी, रस और पाकमें अम्ल,गरम तथा रुधिरविकार, पित्त,त्रिदोषवात और खांसीको दूर करे है।

विवरण। आरीकी वेल होती है, इसपै, कांटे होते हैं, पत्ते छोटे छोटे खैरकी समान होते हैं, फली चपटी नीली रंगकी होती है, फूल तन्तुयुक्त कीकरके फूलकी समान होते हैं ।

भ्रमरच्छल्लीनामानि ।

भृंगाह्वा भ्रमराह्वा च क्षीरद्रुर्भृंगमूलिका ।
उग्रगंधा च भृंगत्वक्छल्ली भ्रमरछल्लिका ॥

अर्थ-भृंगाह्वा, भ्रमराह्वा, क्षीरद्रु, भृंगमूलिका, उग्रगंधा, भृगत्वक्, छल्ली, भ्रमरछल्लिका ।

संस्कृतभाषामें	भ्रमरछल्ली ।
हिन्दीभाषामें	भमरछल्ली ।
मराठीभाषामें	भ्रमरसाली ।
गुजरातीभाषामें	भमरछाल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	उप्पुशक्के ।
लैटिन्भाषामें	हाईमोनोडिक्टियं एक्सेलसं Hyruonodictyom Axoel (Sum)

अस्या गुणाः ।

भृंगाह्वा कटुका चोष्णा तिक्ता रुच्याग्निदीपनी ।
कण्ठ्या च सर्वदोषघ्नी प्रोक्ता पूर्वैर्भिषग्वरैः (नि०र०)

अर्थ-भ्रमरछल्ली-चरपरी, गरम, कडवी, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाली, कण्ठको हितकारी और सर्वदोषनाशक है ।

विवरण। भ्रमर, शालीक वृक्ष बडे २ जंगलमें होतेहैं, पत्ते बादामके समान होतेहैं, फली अत्यन्त पतली आतीहै इसकी लकडी सफेद रंगकी और अत्यन्त श्रेष्ठ होतीहै प्रायः इसकी लकडीके तलवारके म्यान बनाये जातेहैं ।

अजगंधानामानि ।

तिलवन.

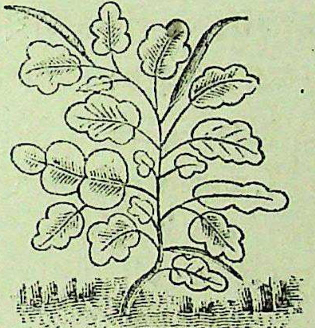

अजगंधा बस्तगंधा खरपुष्पा सुगंधिका ।
काबरी बर्बरागंधा तुंगी पूतिमयूरिका ॥

अर्थ-अजगंधा, बस्तगंधा खरपुष्पा, सुगंधिका, काबरी, बर्बरागंधा, तुंगी, पूतिमयूरिका, (अविगंधा, अविगंधिका, ब्रह्मगर्भा, ब्राह्मी)

संस्कृतभाषामें	अजगंधा ।
हिंदीभाषामें	तिलवन ।
मराठीभाषामें	कानफोडी ।
गुजराथीभाषामें	तलवणी ।
कर्णाटकीभाषामें	नीलवणी ।
तैलङ्गीभाषामें	वामिंटा, अजगंधि ।
मला०	काविला, पावक्का ।
लैटिनभाषामें जिनेन्ड्रोप्सीसपेंटाफिला	Gynandropsis pentaphylla

अजगंधागुणाः ।

अजगंधा कटूष्णा स्याद्वातगुल्मोदरापहा ।
कर्णव्रणार्तिशूलघ्नी पीता चेदंजने हिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तिलवन- चरपरी, गरम, तथा वात, गुल्म, उदररोग, कर्णरोग, व्रण और शूलको दूर करे है । इसमें पीली तिलवन अंजनमें हितकारी है ।

विवरण । तिलवन वनबाग जंगल आदिमें होतीहै यह दो प्रकारकी है, एकपर सफेद फूल और दूसरीपर नीलपीत मिश्रित रंगके फूल आतेहैं दोनोंमें फली आतीहैं बीज काले रंगके निकलते हैं ।

वृद्धदारुकनामानि ।

वृद्धदारुक आवेगी जन्तुको दीर्घवल्लरी ।
वृद्धा कोटरपुष्पी स्यादजांत्री छगलांत्रिका ॥

अर्थ-वृद्धदारुक, आवेगी, जन्तुक, दार्घवल्लरी, वृद्धा, कोटरपुष्पी, अजांत्री, छगलांत्रिका (ऋक्षगंधा, छगलांत्री, जुंग, ऋष्यछगलांघ्री, छगला, अंत्री, जुंगा, छगली, जुंगक, श्याम, वृष्यगंधा, दीर्घबालुका, छागलांत्रिका, वृद्धकोटरपुष्पी)

जीर्णदारुनामानि ।

जीर्णदारुर्द्वितीया स्याज्जीर्णा फंजी सुपुष्पिका ।
अजरा सूक्ष्मपत्रा च विज्ञेया च षडाह्वया ॥

अर्थ-जीर्णदारु, जीर्णा, फंजी, सुपुष्पिका, अजरा और सूक्ष्मपत्रा ।

संस्कृतभाषामें	वृद्धदारु, जीर्णदारु ।
हिन्दीभाषामें	विधारा, कालाविधारा ।
वंगभाषामें	वितारक, वाजतारक, विद्धडक ।
मराठीभाषामें	श्वेतवरधारा ।
गुजरातीभाषामें	वरधारो ।
लैटिन्भाषामें	रोरियासेंटेलोइ डेझि । Roureasantaloi (Des)
कर्णाटकीभाषामें	एरडुमुष्ठे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चंद्रपुडी ।

द्विविधवृद्धदारुगुणाः ।

वृद्धदारुद्वयं गौल्यं पिच्छिलं कफवातहृत् ।
बल्यं कासामदोषघ्नं द्वितीयं स्वल्पवीर्य्यदम् (रा० नि०)

अर्थ-दोनों विधारे-गौल्य, पिच्छिल, कफवातनाशक, बलकारक, तथा खाँसी और आमदोषको दूर करे हैं। इनमें दूसरा विधारा अल्पवीर्य्यवाला है।

अन्यच्च ।

साधारणो वृद्धदारुः कटुस्तिक्तः कषायकः । रसायनोष्णो मधुरो मेध्यः स्वर्य्यः सरोग्निदः ॥ कान्तिधातुकरो बल्यो रुच्यः पुष्टिकरो लघुः । उपदंशं पांडुरोगं क्षयं कासं प्रमेहकम् ॥ वातरक्तं चामवातं वातं शोफं कफं जयेत् । (नि०र०)

अर्थ-विधारा-चरपरा, कडवा, कषेला, रसायन, गरम, मधुर, मेधाजनक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, सारक, अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक, धातुजनक, बलकारक, रुचिकारक, पुष्टिको करनेवाला, हलका तथा उपदंश, पांडुरोग, क्षय, खाँसी, प्रमेह, वातरक्त, आमवात, वात, सूजन और कफको दूर करनेवाला है।

विवरण-विधारा समुद्र शोषकी समान जानपडता है क्योंकि, समुद्रशोष और विधारेके फूल, पत्ते, वेल, काण्ड आदिमें कुछभी अन्तर नहीं दीखता। इसीकारण कितनेक वैद्य विधारा और समुद्रशोषको एकही मानतेहैं। विधारा दो प्रकारका होताहै एक वृद्धदारु, दूसरा जर्णिदारु, जीर्णदारुकों फंजी कहतेहैं फंजीके गुणदोष आगे लिखेहैं।

समुद्रशोषगुणाः ।

समुद्रशोषः सम्प्रोक्तो वातलो ग्राहको मतः ।
अतिपित्तकरश्चैव कफकृच्च मतो बुधैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-समुद्रशोष-वातकारक, ग्राही, अत्यन्त पित्तकारक, और कफको उत्पन्नकरनेवाला है।

समुद्रपुष्पगुणाः ।

समुद्रपुष्पं तुवरं मधुरं शीतलं मतम् ।
रक्तदोषं कफं पित्तं कामलां च विनाशयेत् ॥
गर्भिणीकष्टशमनं मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-समुद्रफूल-कषेला, मधुर, शीतल तथा रुधिरविकार, कफ, पित्त, कामला और गर्भिणीके कष्टको दूर करे है, समुद्रशोष और समुद्रफूल यह दोनों विधारेका ही भेद हैं।

फंजिकानाम गुणाश्च ।

फज्यां तु फजिका पद्मा ह्यजांत्री चापराजिता । फंजी तु शीतला वृष्या ग्राहका तुवरा कटुः ॥ ऊषणा मधुरा बल्या स्निग्धा कफकरा गुरुः । विष्टम्भकारिणी वातपित्तहृद्रोगकासहा ॥ क्लेशामदोषशमनी इति पूर्वभिषग्वराः । (नि० र०)

अर्थ-फंजी-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, कषेली, चरपरी, गरम, मधुर, बलकारक, स्निग्ध, कफकारक, भारी, विष्टम्भकारक तथा वात, पित्त, हृदयरोग, खाँसी, क्लेश और आमदोषको दूर करे है ।

विवरण । फंजीकी वेल खेतकी बागपर लगादेते हैं, फल समुद्रशोषकी समान होते हैं, । पत्तेभी समुद्र शोषकी समान किन्तु कुछ छोटे होतेहैं इसके पत्तोंके पतोडे बनाते हैं ।

संस्कृतभाषामें	फंजी, फांजिका, पद्मा, अजांत्री, अपराजिता
हिन्दीभाषामें	फंजी ।
मराठीभाषामें	फांजी ।
गुजरातीभाषामें	फांग्य ।
लैटिन्‌भाषामें	क्लिविया ओर्नेटा ।

वेल्लतरुनामानि ।

वेल्लतरुर्दीर्घमूलो वीरद्रुर्बहुवारकः ॥

अर्थ-वल्लतरु, दीर्घमूल, वीरद्रु, बहुवारक । (क्षुधाकुशलसंज्ञक, वीरवृक्ष, कृच्छ्रारि)

संस्कृतभाषामें	वेल्लतरु ।
हिन्दीभाषामें	वरवेल, बिलवान्तर ।
मराठीभाषामें	वेल्लतूर ।
तैलिङ्गीभाषामें	वेणुतुरुचेट्टु ।
कर्णाटकीभाषामें	आडडू ।
तामिलीभाषामें	विडात्तर ।
लैटिन्‌भाषामें	डेस्मान्थस सिनेरियस ।

अस्य गुणाः।

वेल्लतरुस्तु कटुकः पथ्यश्चोष्णोग्निदीपनः। रसे पाके च तिक्तः स्याद्ग्राहको वातरोगहा ॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीसंधिशूलघ्नो योनिरोगहा। मूत्राघातस्य शमन ऋषिभिः परिकीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ–वेलंतर–चरपरा, पथ्य, गरम, अग्निप्रदीपक, रस और पाकमें कडवा, मलरोधक, वातरोगनाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, संधिशूल, योनिरोग और मूत्राघातरोगको दूर करे है।

विवरण। वेलन्तरके वृक्ष मारवाडदेशमें तथा नर्मदानदी और चर्म्मण्वती आदि नदियोंके तटपर होते हैं, इसपर कांटे होतहै, पत्ते छोंकरके समान छोटे २ होते हैं, फूल पांचों रंगके आते हैं।

कर्कटनामानि।

कर्कटः कार्कटः कर्कः क्षुद्रधात्रीसमः स्मृतः।
क्षुद्रामलकसंज्ञश्च प्रोक्तः कर्कफलश्च षट् ॥

अर्थ–कर्कट, कार्कट, कर्क, क्षुद्रधात्री, क्षुद्रामलकसंज्ञ, कर्कफल, (गांगेरुक, कर्कटक, मृगलेंडक, तोदन, कृन्दन, मृगाविट्सदृश)

संस्कृतभाषामें	कर्कटफल।
हिन्दीभाषामें	गंगेरुवा, काठआमला।
वंगभाषामें	काट आमला।
मराठीभाषामें	कुडकां काकणां।
गुजरातीभाषामें	करपटां।
कर्णाटकीभाषामें	वालिगे।
लैटिन्भाषामें	गेरुगा पिनेटा। Garugapindatta

अस्या गुणाः।

तोदनं ग्राहकं चाम्लं लघूष्णं चाग्निदीपकम्। पित्तलं च फलं चास्याः पक्वन्तु मधुरं मतम् ॥ स्निग्धं च तुवरं प्रोक्त कफवातहरं स्मृतम्। गांगेरुकं तु तुवरमम्लं चोष्णं गुरुस्मृतम् ॥ रक्तपित्तकफकरं सारकं वातहारकम्। पक्वं गांगेरुकफलं रुचिंर च गुरु स्मृतम्॥ वातरक्तहरं पित्तनाशकं मुनयो जगुः ॥ (नि०र०)

अर्थ-काठआमला-मलरोधक, खट्टा, हलका, गरम, अग्निप्रदीपक और पित्तकारक है । इसके पक्केफल-मधुर, स्निग्ध, कषेले और कफवातनाशक हैं दूसरे प्रकारका काठआमला-कषेला, खट्टा, गरम, भारी, रक्तपित्तकारक, कफकारक, सारक, वातविनाशक है। इसके पक्के फल-रुचिकारी, भारी, वातरक्तहारी और पित्तको नष्ट करनेवाले हैं ।

विवरण । काठआमलेके वृक्ष प्रायः पर्वतोंपर अधिकतासे होते हैं पत्ते पंक्तिवार होते हैं,फल आमलेकी समान बहुत छोटे २ होते हैं ।

किंकिणीनामानि ।

किंकिणी व्याघ्रघटी च गोविंदी कटुकन्दरी ॥

अर्थ-किंकिणी, व्याघ्रघंटी, गोविंदी, कटूकंदरी, (ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद, वर्त्तल, व्याघ्रनखी, कृशांगी, कंटकलता, कारंभा, तापसप्रिया)

संस्कृतभाषामें	किंकिणी ।
हिन्दीभाषामें	किंकिणी ।
मराठीभाषामें	वाघटी ।
गुजरातीभाषामें	वागाटी ।
इंग्रेजीभाषामें	थोर्नीकेपरब्रश । Thorny caperdrush
लैटिन्‌भाषामें	केपेरिस होरिडा । Gappsris Aorrida

अस्या गुणाः ।

किंकिणी तुवरा तिक्ता पित्तश्लेष्महरा हिमा ।
तत्फलं वातलं त्वामं पक्कं स्वादु त्रिदोषजित् ॥ (म.नि.)

अर्थ-किंकिणी-कषेली, कडवी,पित्तकफनाशक और शीतल है । इसके कच्चे फल-वादी और पक्के फल त्रिदोषनाशक हैं ।

अन्यच्च ।

व्याघ्रघंटा पित्तलोष्णा रुच्या विषकफापहा ।
फलं चास्यास्तु तिक्तोष्णं विषूचीकफवातजित् ।
त्रिदोषहारिणी प्रोक्ता वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-किंकिणी-पित्तकारक, गरम, रुचिकारक तथा विष और कफनाशक है । इसके फल- कडवे, गरम तथा विषूचिका, कफ, वात और त्रिदोषनाशक हैं ।

विवरण । किंकिणीके वृक्ष वन और पर्वतोंपर होते हैं । इस वृक्षपर बेरकि समान बांके कांटे होते हैं, फल लम्बे, गोल और बीचमें गांठदार होते हैं फलका मध्यमभाग हिंगोटकी समान होता है ।

गोरक्षीनामानि ।

गोरक्षी सर्पदंडी च दीर्घदंडी सुदंडिका ।
चित्रला गंधबहुला गोपाली पंचपर्णिका ॥

अर्थ-गोरक्षी, सर्पदंडी, दीर्घदंडी, सुदंडिका, चित्रला, गन्धबहुला, गोपाली, पंचपर्णिका ।

संस्कृतभाषामें	गोरक्षी ।
हिन्दीभाषाम	गोरखइमली ।
मराठीभाषामें	गोरखचिंच ।
गुजरातीभाषामें	रुखडो ।
लेटिनभाषामें	एडन्सोनिया डिजिटेट ।
अरबीभाषामें	हवहबु ।

अस्या गुणाः ।

गोरक्षी मधुरा तिक्ता शिशिरा दाहपित्तनुत् ।
विस्फोटवान्त्यतीसारज्वरदोषविनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गोरखइमली-मधुर, कडवी, शीतल तथा दाह, पित्त, विस्फोट, वमन, अतीसार और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होता है एक डण्डीमें सेमलकी समान पांच २ पत्ते होते हैं, फूल बडा और सफेद कमलकी समान होता है, फल तोंबी अथवा तोरईकी समान आते हैं ।

पातालतुम्बीनामानि ।

गर्त्तालाबु च भूतुम्बी देवी वल्मीकसम्भवा ।
दिव्यतुम्बी नागतुम्बी शक्रचापसमुद्भवा ॥

अर्थ-गर्त्तालाबु, भूतुम्बी, देवी, वल्मीकसम्भवा, दिव्यतुम्बी, नागतुम्बी, शक्रचापसमुद्भवा ।

संस्कृतभाषामें	पातालतुम्बी ।
हिन्दभाषामें	पातालतोम्बी ।

गुजरातीभाषामें	पातालतुम्बडी ।
मराठीभाषामें	नागतुम्बी ।
लैटिन्भाषामें	बोविस्टास्पिपासिस् । Bovista sp eieces

भूतुम्बीगुणाः ।

भूतुम्बी कटुका तिक्ता विषदोषविनाशिनी । प्रसूतिकादोषसम्भूतातिसारहरा परा ॥ दंतबंधं ज्वरं शोथं सस्वेदं सप्रलापकम् । जयेदात्मप्रभावेण ह्यचिंत्या वस्तुशक्तयः ॥

अर्थ-भूतुम्बी-चरपरी, कडवी, विषदोषविनाशक तथा प्रसूतके समयका अतिसार, दाँतोंकी जडता और सूजन, स्वेद तथा प्रलापयुक्त ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । पातालतुम्बी खेतोंमें और कैरोंमें होतीहै इसपर बहुत बारीक और पीले रंगके छींटेवाले विच्छूके डंकके समान कांटे होते हैं,फांदेके बीचमें तोम्बीकी समान पातालतुम्बी होती है।इसमें अनेक चमत्कारिक गुण हैं जो कि,अन्य औषधियोंमें नहीं देखे जाते ।

हेरंबनामानि ।

हेरम्बः खरपत्रः स्यात्कंटकी दंतधावनः ।

अर्थ-हेरम्ब, खरपत्र, कंटकी, दंतधावन ।

संस्कृतभाषामें	हेरम्ब ।
हिंदीभाषामें	हरम्ब-वज्रदंती ।
मराठीभाषामें	दातूणी, हेरम्बवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	वज्रदन्ती ।
लैटिन्भाषामें	एपिकार्पस ओरीएण्टेलीस। EpiearpusOrientalis

अस्य गुणाः ।

हेरम्बवृक्षः कफहा वातनाशकरो मतः ।
हेरम्बवृक्षमूलं तु प्रोक्तं वांतिकरं बुधैः ॥

अर्थ-हेरम्बवृक्ष-कफनाशक और वातको दूर करे है । हेरंब वृक्षकी जड वमनकारक है ।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते बेरोंकी समान होतेहैं, इसकी दतोन करते हैं ।

वृश्चिकानामानि ।

वृश्चिका नखपर्णी च पिच्छिलाप्यलिपत्रिका ।

अर्थ-वृश्चिका, नखपर्णी, पिच्छिला, अलिपत्रिका (दुस्पर्शा, धूम्रपुष्पा, दहना, नक्रदंष्ट्रिका, सर्पदंष्ट्री, विषघ्नी, सूतवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	वृश्चिका ।
हिन्दीभाषामें	विछवाघास ।
वङ्गभाषामें	विछुटी ।
मराठीभाषामें	आग्या, विचवा ।
कर्णाटकीभाषामें	इंगुल, मासला, होत्रगोत्रे ।
तामिलीभाषामें	कायचोरी ।
तालिंगभाषामें	दुलगाद ।
तु०	पच्चीरिंगी ।
मल०	कोसादुवा ।
गुजरातीभाषामें	खाजवणी ।
लाटिन्भाषामें	जिरार्डिनिया हिटरोफाईला Gyrard inia heterophylla

अस्या गुणाः ।

वृश्चिका पिच्छिलाम्ला स्यादंत्रवृद्ध्यादिदोषनुत ॥(रा.नि.)

अर्थ-विछवा-पिच्छिल,खट्टी और अंत्रवृद्ध्यादि दोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

वृश्चिकाली तु बल्या स्यात्तिक्ता कट्वी विबन्धनुत ।
हृद्या चोष्णा वस्तिशुद्धिकारिणी रक्तपित्तहा ।
अरोचकं नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-विछवा-बलकारक,कडवी,चरपरी,विबन्धनाशक, हृदयको हितकारी,गरम,वस्तिशोधक,रक्तपित्त और अरुचिको दूरकरेहै ।

विवरण । विछवा कईप्रकारका होताहै, इसके बेल क्षुप और वृक्ष होतेहैं । इसपर कौंछकी समान रुआ होताहै ।

तुवरनामानि ।

तुवरः सागरोद्भूतः कुष्ठहाऽलसकापहः ॥

अर्थ-तुवर, सागरोद्भूत, कुष्ठहा, अलसकापहा ।

संस्कृतभाषामें	तुवर ।
हिन्दीभाषामें	तवरक ।
मराठीभाषामें	तीमर ।
गुजरातीभाषामें	तवरियां चेरियां ।
लैटिन्भाषामें	एविसिनीया टामेंटासा Avicenia tomentosa

तुवरगुणाः ।

तुवरस्तुवरश्चोष्णो रसे पाके च तिक्तकः ।
कफव्रणकृमीमेहकुष्ठज्वरविनाशनः ॥
आनाहमर्शशोफं च नाशयेदिति ते जगुः । (नि० र०)

अर्थ-तुवर-कषेला, गरम,रसमें और पचनेमें कडवा,तथा कफ व्रण, कृमि,प्रमेह,ज्वर,आनाह,बवासीर और सूजनको दूर करे है ।

विवरण। इसके वृक्ष समुद्र और नदियोंके तट पर होते हैं, फल इमलीके समान होते हैं इसके फलको पशुओंको देनेसे दूध अधिक बढ जाताहै ।

एरण्डचिर्भिटनामानि ।

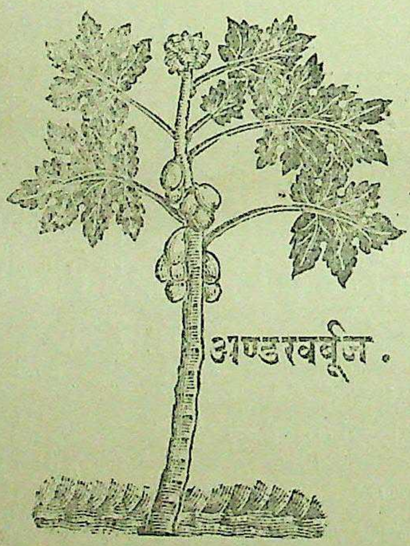

एरण्डचिर्भिटो वृक्षश्चिर्भिटा नलिकादलः ।
वातकुम्भफलः प्रोक्तः स चैव मधुकर्कटी ॥

अर्थ-एरण्डचिर्भिटवृक्षको चिर्भिटा और नालिकादल कहते हैं। इसके फलोंको वातकुम्भफल और मधुकर्कटी कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	वातकुम्भ ।
हिन्दीभाषामें	अंडखरबूजा पोपैया ।
मराठीभाषामें	पोपैया ।
गुजरातीभाषामें	पोपयो, एरंडकांकडी, झाडचीभडी ।
तैलिङ्गीभाषामें	पोपडचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	पेपो Papaw
लैटिन्भाषामें	केरिकापापैया । Caricapa paya
कर्णाटकीभाषामें	पप्पलहु ।
तुर्कीमें	वप्पागाई ।
तैलिङ्गभाषामें	बोप्पई ।
मला०	पप्पायम् ।
तामिलीभाषामें	पप्पाई ।

अस्य गुणाः ।

वातकुम्भफलं ग्राहि कफवातप्रकोपनम् ।
तत्पक्कं मधुरं रुच्यं पित्तनाशकरं गुरु ॥

अर्थ-अंडखर्बूजा-मलरोधक, कफ और वातको कुपित करे है, पक्का अण्डखर्बूजा- मधुर, रुचिकारक, पित्तनाशक और भारी है।

अन्यच्च ।

मधुरेण्डफलं पक्कं किञ्चित्तिक्तञ्च माधुरम् ।
वृष्यं कफकरं हृद्यमुन्मादस्य विनाशकम् ॥
वर्ध्मरोगहरं चैव स्निग्धं वातविनाशनम् ।

अर्थ-पक्का अंडखर्बूजा-किंचित् कडवा, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारी, हृदयको हितकारी, उन्मादरोगको हरनेवाला, वर्ध्मरोगको विनष्ट करनेवाला, स्निग्ध और वातविनाशक है।

विवरण। अंडखर्बूजेके वृक्ष प्रायः अंडके समान होते हैं। बल्कि यह अंडकाही भेद है। पत्तेभी अंडकेसे होते हैं किन्तु यह वृक्ष बहुत लम्बे और सीधे होते हैं। फल बडे २ लम्बे और गोल तीन चार एकत्र लगते हैं।

क्षुद्रबादामनामगुणाश्च ।

बदामः क्षुद्रसंज्ञस्तु क्षुद्रबीजोम्लमाधुरः ।
तुवरो ग्राहि पित्तघ्नः शिशिरः कफशुक्रकृत ॥

अर्थ-क्षुद्रबादाम और क्षुद्रबीज यह दो नाम देशीबादामके हैं। देशीबादाम-खट्टा, मधुर, कषेला, मलरोधक, पित्तनाशक, शीतल, कफ तथा शुक्रको करे है।

विवरण। देशीबादामके वृक्ष प्रायः बाग और वन सर्वत्र होते हैं, पत्ते बराबर शाखाओंमें दोनों ओर होते हैं, फल अपक्क अवस्थामें हरे और खानेमें कषेले तथा खट्टे होते हैं और पकजानेपर लाल तथा मधुर होजाते हैं।

संस्कृतभाषामें	क्षुद्रबादाम।
वंगभाषामें	क्षुद्रबादाम।
हिन्दीभाषामें	देशीबादाम।
मराठीभाषामें	हिरवा बदाम।
गुजरातीभाषामें	बदाम लीली।
कर्णाटकीभाषामें	नतवदं।
तैलिङ्गीभाषामें	वदम।
इंग्रेजीभाषामें	आमण्ड। Almond
लैटिन्भाषामें	टरमिनेलियाकेटापा। Termmanalia catappa

काम्बोजीनामगुणाश्च ।

कांबोजिन्यां च काम्बोजी बहुपुष्पा बहुप्रजा ।
काम्बोजी ग्राहिणी वातशोफरक्तविभेदकृत् ॥

अर्थ-काम्बोजिनी, काम्बोजी, बहुपुष्पा और बहुप्रजा यह काम्बोजीके संस्कृत नाम हैं।

काम्बोजी-मलरोधक तथा वात, सूजन और रुधिरके विकारोंको दूर करे है।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होता है, पत्ते आमलेके पत्तोंकी समान होते हैं, इसकी शाखा लम्बी लम्बी होतीहैं, फल गोल और अपक्क अवस्थामें हरे होते हैं और पकनेपर काले होजातेहैं।

संस्कृतभाषामें	काम्बोजी ।
हिन्दीभाषामें	कम्बोई ।
वंगभाषामें	काम्बोजी ।
मराठीभाषामें	चिफली ।
गुजरातीभाषामें	खेडा कम्बोई ।
लैटिन्भाषामें	फाईलेन्थस् मलटीफलोरस् । Phylanthus Multi Florus फाइलेन्थस् रेक्टिक्युलेटस् । Phylanthus Recticuletus

अथ निर्विषीनामानि ।

निर्विषापविषा चैव विविषा विषहा परा ।
विषहंत्री विषाभावा ह्यविषा विषवैरिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-निर्विषा, अपविषा, विविषा, विषहा, विषहंत्री, विषाभावा, अविषा और विषवैरिणी यह निर्विषीके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	निर्विषी ।
हिन्दीभाषामें	निर्विषीघास ।
वंगभाषामें	निर्विषीघास ।
मराठीभाषामें	निर्विषी कचऱ्यासारखें झाड असतें ।
गुजरातीभाषामें	निर्विषी ।
कर्णाटकीभाषामें	निर्विषी ।
फारसीभाषामें	जदवार ।
लैटिन्भाषामें	डेल्फिनियं डिनुडेटं । Delphineum Denudatum

अस्या गुणाः ।

निर्विषी कटुका शीता व्रणरोपणकारिणी ।
कफवातं रक्तदोषं विषं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-निर्विषी-कटु, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा कफ, वात, रुधिरविकार और विषको नष्ट करे है ।

विवरण। निर्विषीघास मोथेकी समान होती है यह प्रायः हिमालय, मलयाचल, काश्मीर और केदार आदि पर्वतोंपर अधिकतास

उत्पन्न होती है, इसका कंद अतीसकी समान होता है. यह सां बिच्छू आदि अनेक प्रकारके विषोंको दूर करे है ।

अथ नागजिह्वानामगुणाश्च ।

नाह्यौ च नागजिह्वाख्या तिक्तपत्रा क्षितौक्षुपः ।
कृमिहृत्क्षारकर्म्मा च तथामभिजकः स्मृतः ॥

अर्थ-नाहु, नागजिह्वा, तिक्तपत्रा, क्षितौक्षुप, कृमिहृत, क्षारकर्म्मा, मभिजक यह नागजिह्वाके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	नागजिह्वा ।
हिन्दीभाषामें	छोटा किरायता ।
वंगभाषामें	नागजिह्वा ।
मराठीभाषामें	तानवडीचें झाड ।
गुजरातीभाषामें	मामेजवो ।
लैटिन्भाषामें	हिपियन् ओरिएण्टल् । Hipian orientale

गुण-नागजिह्वा (छोटा किरायता)-कटु, अत्यन्त तिक्त तथा कृमिदोष, वातरोग और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण। छोटे किरायतेके प्रायः चौमासेमें अनेक क्षुप उत्पन्न होजाते हैं, पत्ते अंगुलीकी समान लम्बे और पतले २ होते हैं फल, छोटे छोटे गोल आते हैं ।

अथ माकन्दीनामानि ।

माकन्दी बहुमूला च मादिनी गंधमूलिका । एकविंशतिमूली च श्यामला गिरिकंदका॥ मायिनी गिरिवर्य्या च गिरिमध्या गिरिप्रिया । वराहेष्टा गिरिमती वर्त्ती चतुर्दशाभिधा ॥
(रा० नि०)

अर्थ-माकन्दी, बहुमूला, मादिनी, गंधमूलिका, एकविंशतिमूली, श्यामला, गिरिकन्दका, मायिनी, गिरिवर्य्या, गिरिमध्या, गिरिप्रिया, वराहेष्टा, गिरिमती और वर्त्ती यह नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	माकन्दी ।
हिन्दीभाषामें	माईमूल ।
वंगभाषामें	माद्राणी ।
मराठीभाषामें	मायमूले माईंनी-मोमिनी-मायिणी।

गुजरातीभाषामें	गरमर ।	
कर्णाटकीभाषामें	मागिणी ।	
लैटिन्भाषाम	कोलन्सवोर्वटस् ।	Colens Bor Brutus

अस्या गुणाः ।

माकन्दी मधुरा तिक्ता कटुका दीपनी परा ।
रुच्याल्पवातकृत्पथ्या जठरामयनाशिनी ॥

अर्थ-माकन्दी-मधुर, तिक्त, कटु, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, अल्पवातकारक, पथ्य और उदररोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

मायिनी तिक्तका तीक्ष्णा मधुराग्निप्रदीपनी। रुच्या बलकरी
चैव प्लीहवातकफाञ्जयेत् ॥ गुल्मोदरानाहशीतज्वरनाशकरी
मता । कन्दस्तु पाके मधुरो निकाशी पाण्डुशोफजित् ॥
कृमिप्लीहापाण्डुगुल्मसंग्रहण्युदरार्शजित् ॥ (नि० र०)

अर्थ-माई-तिक्त,तीक्ष्ण, मधुर, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, बलकारक तथा प्लीहा, वात, कफ, गुल्म, उदररोग, आनाह और शीतज्वरको नष्ट करेहै । इसका कन्द-पाकमें मधुर, विकाशी तथा पांडुरोग और सूजनको दूर करेहै तथा कृमि, प्लीहा, पांडु, गुल्म, संग्रहणी उदररोग और बवासीरको दूर करेहै ।

विवरण । माकंदी-खेत और बागोंमें बोई जाती है, इसके क्षुप होतेहैं, नीचे अंगुलीकी समान जड होती है, इसकी डंडी और कन्दी दोनोंका शाक बनातेहैं ।

झुल्लपुष्पनामगुणाश्च ।

झुल्लपुष्पे ज्वलत्पुष्पः कृच्छ्रहा लघुवृक्षकः ।
पीतपुष्पः पंक्तिपत्रस्तथा लज्जालुकः स्मृतः ॥
झुल्लपुष्पः स्पृष्टमूत्रो मूत्रकृच्छ्रहरः परः ।

अर्थ-झुल्लपुष्प, ज्वलत्पुष्प, कृच्छ्रहा, लघुवृक्षक, पीतपुष्प, पंक्तिपत्र और लज्जालुक वह संस्कृत नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	जलपुष्प ।
वंगभाषामें	झलई ।

मराठीभाषामें	रेर।
गुजरातीभाषामें	झरेर।
लैटिन्भाषामें	बाईओफिटंसेन्सेटिवम्। Byophytnm Sensatioum

गुण-ज्वलत्पुष्प-मूत्रजनक और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करेहै।

विवरण। इसका छोटा क्षुप होताहै, फूल पीला आताहै, लज्जावंतीकी समान इसके पत्तेभी मनुष्यके स्पर्शसे तत्काल सिकुड जातेहैं।

अथ ओखराडीनामगुणाश्च।

ओखराड्यां भिस्सटा च तडागमृत्तिकोद्भवा।
भिस्सटा भस्मतैलेन संयुता मरिचैर्युता॥
मस्तके परितो लेपाद्व्रणान्हन्ति चिरोत्थितान्।

अर्थ-ओखराडी भिस्सटा और तडागमृत्तिकोद्भवा यह नामहैं।

संस्कृतभाषामें	ओखराडी।
बंगभाषामें	ओषड।
मराठीभाषामें	ओखराडय।
गुजरातीभाषामें	आखराडय।
लैटिन्भाषामें	मोल्युगोहिटी। Mollu Gohirta

गुण-इसकी भस्म बनाकर तेल और कालीमिरचोंके चूर्णके साथ मिलाकर शिरपर लेप करनेसे बहुत दिनोंके व्रण दूर होजाते हैं।

विवरण। इसके छत्ते होतेहैं, विशेषकरके जिस नदी या तालावका जल सूख जाताहै उसमें यह अधिकतासे होताहै, इसमें बीज अधिक होतेहैं, यह अनेक प्रकारके रोगोंमें अनुपान विशेषके साथ प्रयोग किया जाताहै, मूत्रके रुकनेपर अथवा मूत्रकृच्छ्रमें यह अत्यन्त हितकारीहै, इसको पीसकर शिरपर लगानेसे शिरकी खुजली, दाद शोष और व्रण दूर होजातेहैं।

झावुकनामगुणाश्च।

झावुकः पिचुलो झावुरफलो बहुग्रन्थिकः।
झावुकः कटुकस्तिक्तः मूत्रकृच्छ्रविनाशकः॥

अर्थ-झावुक, पिचुल, झावू, अफल और बहुग्रन्थिक यह झाऊके संस्कृत नाम हैं।

संस्कृतभाषामें	झावुक ।
हिन्दीभाषामें	झाऊका वृक्ष ।
वंगभाषामें	झाऊगाछ ।
मराठीभाषामें	झावू, तिलव्यावृक्षभेद ।
गुजरातीभाषामें	झावू ।

विवरण-झाऊके वृक्ष-प्रायः नदियोंकी रेतीमें होतेहैं, पत्ते सरूकी समान होतेहैं, किन्तु सरूकी माफिक लम्बे और सीधे नहीं होते, पेड झांददार होतेहैं, इसकी लकडी बहुत गांठदार और दृढ होती है, इसमें छोटे २ अनेक फल होतेहैं ।

राजाद्रिनामगुणाश्च ।

राजाद्रिः स्याद्राजगिरिर्ज्ञातव्या राजशाकिनी ॥

संस्कृतभाषामें राजाद्रि, राजगिरि और राजशाकिनी यह नाम हैं

हिन्दीभाषामें	कलगाघास ।
बंगभाषामें	राजशाक, कलईशाक ।
मराठीभाषामें	राजगिरा ।
गुजरातीभाषामें	राजगरो ।
कर्णाटकीभाषामें	डोलगेदो निएरडु ।
फारसीभाषामें	अंगोझा ।
अरबीभाषामें	हमाहम ।

गुणाः ।

लघुराजगिरः प्रोक्तः कफकृत्सारको गुरुः । निद्रालस्यकरः पथ्यः सारकश्चेति शीतलः ॥ मलावष्टम्भकरणो रुचिदोतिगुरुः स्मृतः । पित्तनाशकरश्चैव ऋषिभिः परिकीर्तितः ॥

अर्थ-छोटा राजगिर-कफकारक, सारक, भारी, निद्रा और आलस्यको उत्पन्न करनेवाला, पथ्य, सारक, अत्यन्त शीतल, मलावष्टम्भकारक, रुचिकारी, भारी और पित्तनाशक है ।

विवरण । इसके बडे २ क्षुप होतेहैं, इसकी डंडी मोटी होतीहै, इसके कच्चे पत्तोंका शाक बनातेहैं इसके बीजोंका फलाहार करतेहैं ।

सप्तपुत्री (कोशातकी) नामानि ।

लघुकोशातकी ग्राम्या सप्तपुत्री स्मृता बुधैः ॥

अर्थ-लघुकोशातकी, ग्राम्या और सप्तपुत्री यह नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	सप्तपुत्री ।
हिन्दीभाषामें	सतपुतीतोरई ।
वंगभाषामें	सातपुती ।
मराठीभाषामें	सातपुती ।
गुजरातीभाषामें	झुमखडां ।

अस्या गुणाः ।

सप्तपुत्री शीतला स्याद्धृद्या पाके कटुः स्मृता ।
स्निग्धा पित्तविषं कासं ज्वरं वातञ्च नाशयेत् ॥

अर्थ–सतपुतीतोरई–शीतल, हृदयको हितकारी, पचनेमें कटु, स्निग्ध तथा पित्त, विष, खाँसी, ज्वर और वातको नष्ट करे है ।

विवरण । सतपुती तोरईकी वेलभी तोरईकी समान होतीहै, पत्तेभी तोरईकी समान होतेहैं, फल कन्दूरीसे कुछ मोटे और परवलकी समान गुच्छोंमें सात सात लगतेहैं ।

वनप्सानामानि ।

वनप्सा सूक्ष्मपत्रा च नीलपुष्पा ज्वरापहा ॥

अर्थ–वनप्सा, सूक्ष्मपत्रा, नीलपुष्पा और ज्वरापहा यह गुलवनप्साके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	वनप्सा, पुष्पवनप्सा ।
हिन्दीभाषामें	गुलवनप्सा ।
वंगभाषामें	वानप्सा ।
मराठीभाषामें	वनप्सा ।
गुजरातीभाषामें	वनप्सा ।

अस्या गुणाः ।

वनप्सा कटुतिक्तोष्णा शीतज्वरनिवारणी ।
कासश्वासहरा बल्या वातपित्तकफापहा ॥

अर्थ–वनप्सा–कटु, तिक्त, गरम शीतज्वरनाशक, खाँसी और श्वासको हरनेवाली और त्रिदोषको दूर करेहै ।

विवरण । वनप्सा प्रायः पर्वतोंपर होतीहै, इसके क्षुप छोटे २ कालापन लिये कुछ हरे अथवा धूसर रंगके होतेहैं फूल सपेद और नीलरङ्गके आतेहैं कितनेक वैद्य त्रायमानको वनप्सा कहते हैं सो त्रायमानलता और वनप्साकी कुछभी आकृति नहीं मिलती ।

आलुकनामगुणाश्च ।

आलुकं स्वादुकन्दश्च म्लेच्छकन्दं सुकन्दकम् ।

अर्थ-आलुक, स्वादुकन्द, म्लेच्छकन्द और सुकन्दक यह आलूके संस्कृत नामहैं ।

संस्कृतभाषामें	आलुक ।
हिंदीभाषामें	आलू ।
वं०-गु०-म०	सर्वभाषाओंमें प्रायः " आलू " इसी नामसे प्रसिद्ध है ।
इंग्रेजीभाषामें	पुटेटो । Potato

अस्य गुणाः ।

आलुकं स्निग्धमुष्णञ्च वृष्यं वातकफापहम् ।
दीपन रुचिदं हृद्य मधुरं ग्राहि शोथनुत् ॥

अर्थ-आलू-स्निग्ध, गरम, वृष्य, वातकफनाशक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, मधुर, मलरोधक और सूजनको दूर करेहै ।

विवरण-आलू अर्वाचीन कन्दहै, इसको हिन्दोस्तानमें आये हुए अनुमान एकसो वीस १२० वर्षसे अधिक नहीं हुए, पहले अमेरिकामें होताथा पश्चात् यह यूरोप आदि देशोंमें आया अब सम्पूर्ण भारतवर्षमें आलूकी खेती अधिकतासे होतीहै, यह सफेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है । पर्वतोंपर आलू बहुत बडा और अधिक स्वादिष्ठ होताहै ।

अथ पुष्पगोभीनामानि ।

पुष्पगोभी स्वादुशाका मध्यपुष्पा बृहद्दला ॥

अर्थ-पुष्पगोभी, स्वादुशाका, मध्यपुष्पा, बृहद्दला (पीतपुष्पा और पुष्पशाका) यह नाम पुष्पगोभीके हैं ।

संस्कृतभाषामें	पुष्पगोभी ।
हिन्दीभाषामें	फूलगोभी, गोभीका फूल, गोभी ।
वंगभाषामें	गोभी ।
मराठीभाषामें	गोभी ।
इंग्रेजीभाषामें	कालीफ्लावर । Cauli flaweer

अस्या गुणाः ।

पुष्पगोभी गुरु स्वाद्वी वातशोफप्रकोपनी ।
मधुरा ग्राहिणी बल्या वह्निमांद्यकरी मता ॥

अर्थ-फूलगोभी-भारी, स्वादिष्ठ, वात और शोथको प्रकुपित करनेवाली मधुर, मलरोधक, बलकारक और अग्निको मन्दकरेहै।

पत्रगोभीगुणाः।

पत्रगोभी सरा रुच्या वातला मधुरा गुरुः।

अर्थ-पत्रगोभी-सारक, रुचिकारक, वातकारक, मधुर और भारी है।

ग्रन्थिगोभीगुणाः।

ग्रन्थिगोभी महाबल्या दुर्जरा ग्राहि शीतला।

अर्थ-गांठगोभी-अत्यन्त बलकारक, बहुत देरमें पचनेवाली, मलरोधक और शीतल है।

विवरण। गोभी पहले यूरोप आदि अन्य देशोंमें होतीथी किन्तु अब समस्त हिन्दोस्तानमें होनेलगी है। अनुमान गोभीको हिन्दोस्तानमें आये साठ ६० वर्षसे अधिक नहीं हुए। पहले जब गोभी भारतमें आई थी तब इसको बहुत कम मनुष्य खाते थे, बहुतसे मनुष्य इसको प्रथम प्याज, सलजमकी माफिक घृणाकी दृष्टिसे देखते थे किन्तु अब गोभी उत्तम शाकोंमें गिनीजाती है।

फूलगोभी, मूत्रगोभी (बंदगोभी, करम कल्ला) और गांठगोभी इन भेदोंसे यह तीन प्रकारकी होतीहै।

इति शालिग्रामनिघण्टुभूषणे परिशिष्टभागः समाप्तः।

श्रीशंकरः। शुभमस्तु। कल्याणमस्तु।

समाप्तोऽयं परिशिष्टभागः।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.

SAMPLE STOCK VERIFICATION
1988
VERIFIED BY R.K.

COMPILED

112654